पृष्ठ १६५१से ४४५२ (य र ल) शब्द संख्या १२४०५

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी बृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

सपादक

(संपादन, परिवर्द्धन एवं संशोधन कर्ता)

सीताराम लाळस

व्युत्पत्ति आदि द्वारा परिष्कारक

स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच

[आशुकवि, कविभूषण, व्याकरण साहित्य, कोशादि तीर्थ
श्री रामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता

सीताराम लाळस

स्व० उदयराज उज्वळ

प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति

जो ध पु र .

प्रकाशक :
चौपासनी-शिक्षासमिति
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण

मूल्य रु०

मुद्रक :
हरिदत्त थानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस,
जोधपुर

नर कांई चिंतवै, करै परमेस्वर कांईं
नर तो धारै सहज, करै मुसकल्ल गुसांईं
रांवण मन जाणतौ, करूं सीता पटराणी
रांडि मंदोदरि हुई, लंक पुनि हुई विरांणी
कहियौ न हुवौ दसकंध रौ, खांवंद रा अखरां खरां
कवि ओप अग्यांनी नर कहै, नव्वां री तेरा करां

—ओपो आढो

अपनी बात

राजस्थानो शब्दकोष के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द सुहृदय पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष है। वर्षों की लगन से जो कार्य सम्पन्न होता है, उसमें व्यवधानों की संख्या भी कम नहीं होती। लेकिन हमारा कर्त्तव्य व्यवधानों से विचलित होना नहीं है अपितु काय की गति को कायम रखने में निहित है। कोष के कार्य को गति देने के लिए समिति की ओर से हर सम्भव प्रयत्न किये जा रहे हैं।

मैं इस उप समिति के पहले की उप समिति के सभी सदस्यों और अध्यक्षों को धन्यवाद देता हूं कि जिनके प्रयासों से यह कार्य यहां तक आगे बढ़ पाया।

मुझे विश्वास है कि कोष के विद्वान सम्पादक श्री सीतारामजी लालस, चौपासनी शिक्षा समिति के उत्साही सदस्यों और राजस्थान सरकार के सहयोग से यह कार्य यथा-समय सम्पन्न हो सकेगा।

प्रहलादसिंह
अध्यक्ष
उप-समिति राजस्थानी शब्द-कोष
व कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति,
जोधपुर।

जोधपुर,
३-१२-१९७३

प्रकाशकीय

चौपासनी शिक्षा समिति की विभिन्न गतिविधियों में राजस्थानी शब्दकोष का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह कार्य शिक्षा समिति द्वारा संचालित राजस्थानी शोध संस्थान के अन्तर्गत प्रारम्भ किया गया था परन्तु कालान्तर में इस कार्य के वृहद स्वरूप को देखते हुए इस कार्य के संचालन के लिये शिक्षा समिति ने इस कार्य में विशेष रुचि रखने वाले अपने सदस्यों की एक उप-समिति का गठन किया। तब से शिक्षा-समिति की ओर से यह उप-समिति इस कार्य की देख-भाल करती है।

समय समय पर शिक्षा-समिति की ओर से इस समिति के गठन में परिवर्तन भी किये गये हैं परन्तु समिति के सभी सदस्यों ने यथा शक्ति इस कार्य को आगे बढाने का स्तुत्य प्रयास किया है। हम स्वर्गीय कर्नल श्यामसिंहजी का आभार कभी नही भूल सकते जिन्होंने हर प्रकार से इस कार्य को गति देने में अपना असाधारण योग दिया है।

कोष कार्यालय के नियमित सचालन के लिये राजस्थान सरकार द्वारा आवर्तक अनुदान दिया जाता है तथा कोष की छपाई व कागज आदि के लिये राजस्थान सरकार एव केन्द्रीय सरकार द्वारा अनावर्तक-अनुदान दिया जाता है। अन्य साधनों से भी अर्थ-व्यवस्था की जाती है।

हम राजस्थान सरकार के भूतपूर्व शिक्षा मत्री श्री चदनमलजी बैद तथा शिक्षा आयुक्त श्री महेन्द्रसिंहजी के बडे आभारी हैं कि इस कार्य के महत्व को समझते हुए उन्होंने अपने कार्यकाल में कोष को सरकारी अनुदान दिलवाने में बड़ी उदारता और सहृदयता से अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया। साथ ही कोष के सम्पादक श्री सीताराम लालस को, जो कि अब ६१ वर्ष के हो गये हैं, २ वर्ष तक और सवैतनिक कार्य करने की स्वीकृति देने की जो कृपा की है उससे भी हमारी एक बड़ी कठिनाई हल हो गई है।

कोश के इस चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द मे य से ल तक के वर्ण छप चुके हैं। आगे इसी खण्ड के ३ भाग और निकलेंगे जिनके सम्पादन का बहुत सा कार्य सम्पन्न हो चुका है और हमें आशा है कि सरकार और विज्ञ पाठकों का सहयोग इसी प्रकार मिलता रहा तो २—३ वर्षों में यह कार्य पूर्ण हो जायगा।

कागज और छपाई की बढती हुई मंहगाई के कारण इस जिल्द का मूल्य हमें रुपये रखना पड रहा है।

अन्त मे हम पहले की उप-समितियों के सदस्यो और अध्यक्षो तथा उन सभी सज्जनों का आभार प्रकट करते हैं, जिन्होने इस महत्वपूर्ण कार्य में अपना अमूल्य सहयोग दिया है।

प्रेमसिंह
मंत्री

जोधपुर, ३-१२-१९७३. उप-समिति राजस्थानी शब्द कोष व चौपासनी, शिक्षा समिति :

॥ श्री ॥

* निवेदन *

-:दूहा सोरठा:-

नारायण भूले नही, अपणी माया ईश । रोग पेल ओखद रचे, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढ़ो होय, साच अमर संसार में। कैतो बोवो काय, ओ सेवट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सू पूरे आस सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईशर किरपा सू उदय ॥४॥
खत ऊजळा सदेश, उदयराज ऊजल अखै । दीपै थांरा देश, ज्यारा साहित जगमगे ॥५।

भारत संसद में सन् १६५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भासावा मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो ।

राजस्थानी रै विरोध में अक्सर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो । ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूं जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सारू तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सू मैनत सूं कोश रो काम शुरु कियो ने इण में खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उणा बाबत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बाद एटला पोकरण ने अरज करी । इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदद देणी चालू कर दीवा । सीतारामजी मथाणिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दीयो और म्हैं दोनू तारीख १-५-५१ सूं सन् १६५२ रा आखिर तक सामिल कोंम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई, इण सू सन् १६५३ लगायत सन् १६५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बंद रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं रो लगन ही । म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १६५६ में कोश में सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जबाब उणां तारीख २६-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु माबार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई । उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त मे ने दिसम्बर रा शुरू में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ·

कोश रो काम उणां री सहायता सू सन् १६५७ री जनवरी सू सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्योंकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियां पेली बणी हुई ही । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणा अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १६५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हें पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिहजी री रुपीया री सहायता सू पूरो हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूं श्री नीबांज ठाकुर साहब सूं रुपियां री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासणी जोधपुर सू हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मतद ही इण वास्ते बैकुंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवा हां । तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो:—

चांद बावड़ी

ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना को है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यंत्री (मेकेनिकल) के बल सचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द ग्रौर धातु को आंचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, ग्रपभ्रंश विविध भाषाग्रों के बल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए ग्रापने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। ग्राशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण सतुष्ट होगी ग्रौर श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाग्रों रो जानकार है ने ग्रन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान ग्राया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा ग्राता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणा म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है:—

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied.

Sd. W. S. Allen M. A. P. H. D.
Professor Comprative Philology
In the University of Cambridge

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूं शुरु होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुराना प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो ग्रठे दिया जावे है इणा में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानो मे

कोम मरू बाणरो सुणे बध्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे बडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पथ धन छोड लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे ससार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे । गिले सुखलाध हितकर चित सभाजा, दिनो दिन किता सनमान दरसै ॥३॥
पांण मरू बांन है प्रात रो परपर, वेण परताप राजस्थान ऊचो । रखी नह पढण में भावखा प्रात री, निरखता जाय है प्रात नीचो ॥४॥
बणाई चारणों व्याकरण विधोवित्र, बणेगी कोश ही लाखसबदो। सीत रो परीश्रम प्रथग फलियो सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले काम सीधो ॥६॥
रोडले स्मामसो सपूतो सिरोमण, कमधज ग्राज ग्रखियाज कीधी । वार विपरीति मे हजारों खरचवै, दाद उजल 'उबे' देस दीधी ॥७॥
चारणों दोय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह बडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण ने बनाया वस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके ।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदियापुर रान के कोष बल घर के ।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके ।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन घर के ।
प्रात की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परपरा बिबुधन दीनमाल वीरपद वाला है ।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूं में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है ।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित बिदाजा है ।
जीवित उठेगी प्रीय राजस्थानी ग्राशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेगे जिशाला है ।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. हु० उदयराज उज्जल
Sd Nami chand Jain
Civil Judge. Jodhpur.

संकेत और चिह्न

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्रा०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य, रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमान काल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	स०	संस्कृत
गो० र०	गोरादि	स० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	स० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गो खिड़ियौ
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
*	शब्द के आगे	...	यह शब्द कविता मे ही प्रयोग होता है।
'	शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर	...	यह ध्वनी—लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहां आता है।
—	शब्द के नीचे	...	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'...'	शब्द के दोनों ओर सिरों पर	...	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इन वर्टिड कौमा)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोष	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधान माळा	उदयराम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदान लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नाम माळा	वीरभाण रतनू, उदयराम बारहठ
ऐ० जै०का०सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य सग्रह	सपा. अगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयराम बारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रबध	पद्मनाभ
गी० रां०	गीत रामायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० ब०	गुण रूपक बध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खा आढ़ौ
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० नां० मा०	डिंगळ नाम माळा	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवी०	देवियाण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्र०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	सपा० अगरचन्द नाहटा
नां० मा०	नांम माळा	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगळ कोश	नागराज पिंगळ
ना० द०	नागदमण	सांइयां झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी०	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० प० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियो
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्रं०	पीरदांन ग्रन्थावळि	पीरदान लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्या०	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ०मा०	भक्तमाळ	ब्रह्मदास
भिक्खु०, भि०द्र०	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
	"	"
मा० कां० प्र०	माधवानल कांम कंदला प्रबध	कवि गणपति

मा॰ म॰-	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुन्शी देवीप्रसाद
मा॰ वचनिका-	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरां बाई	...
मेघ॰	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे॰ म॰	मेहाईमहिमा	हिंगळाजदान कवियौ
र॰ ज॰ प्र॰	रघुवरजस प्रकास	किसनौ आढौ
र॰ रू॰	रघुनाथ रूपक	मंछाराम
र॰ वचनिका	रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियौ
र॰ हमीर	रतना हमीर री वारता	महा॰ मानसिंह जोधपुर
रा॰ जैं॰ रासौ	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा॰ जै छंद	राउ जैतसी रौ छंद	बीठू सूजौ नगराजोत
रां॰ रा॰	रामरासौ	माधोदास दधवाड़ियौ
रा॰ रू॰	राज रूपक	वीरभांण रतनू
रा॰ वं॰ वि॰	राठौड़ वंस री विगत	अज्ञात
रा॰ सा॰ स॰	राजस्थानी साहित्य संग्रह	संग्रह, सम्पादन स्वामि नरोत्तमदास
ल॰ पिं॰	लखपत पिंगळ	हमीरदान रतनू
ला॰ रा॰	लावा रासौ	गोपाळदान कवियौ
लो॰ गी॰	राजस्थानी लोकगीत	संग्रह सम्पादन
वं॰ भा॰	वंश भास्कर	सूर्यमल मीसण
व॰ स॰	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा
वि॰ कु॰	विनयकुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचंद्र
वि॰ सिं॰	विड़दसिणगार	कविराज करणीदान कवियौ
वी॰ मा॰	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी॰ स॰	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी॰ स॰ टी॰	वीर सतसई री टीका	किसोरदान बारहठ
वेलि॰	वेलि क्रिसन रुकमणी री	अज्ञात
वेलि टी॰	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
शा॰ हो॰	शालि होत्र	अज्ञात
शि॰ वं॰	शिखर वंशोत्पत्ति	गोपाळदान कवियौ
शि॰ सु॰ रू॰	शिवदान सुजस रूपक	लालदान बारहठ
स॰ कु॰	समय सुन्दर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समयसुन्दर
सू॰ प्र॰	सूरज प्रकाश	कविराजा करणीदान
ह॰ नां॰ मा॰	हमीर नाम माळा	हमीरदान रतनू
ह॰ पु॰ वां॰	श्रीहरीपुरुषजी की वाणी	श्री हरीपुरुषजी
ह॰ र॰	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा॰ झा॰	हालां झालां रा कुंडळिया	,, ,,

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

य

य—देवनागरी लिपि का २६ वाँ व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है तथा जो यत्न भेद के अनुसार घोष, प्राण भेद के अनुसार अल्प-प्राण तथा प्रयत्न भेद के अनुसार ईषत्स्पृष्ट है एवं स्थिति भेद के अनुसार अंतस्थ है।

यंछा—देखो 'इच्छा' (रू भे)

उ०—करखि प्राण केविया, दमा अमरखि दुरवंछा।
सु रिख बाण सामत्र, जाण सुर नारिख यंछा।

—रा. रू.

यंत—सं पु [सं. यन्तृ] १ सारथी, गाडीवान। (डि को)

२ परिचालक।

यंता—वि. [स यंतृ] चलाने वाला।

उ०—नियता यंता ना चपळ चित चिंता भन चुके, प्रचेता चेता ना जियत हम प्रेता बन चुके।

—ऊ. का.

यंत्र—स पु. [स यंत्रम्] १ मशीन, कल।

उ०—गढ कैलास जिम ऊचउ, गरुई पोलि, सधर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी नणी पद्धति, **यंत्र** नणी स्रेणी, ढीकली तणी परपरा;

—व स

२ औजार।

३ अस्त्र, हथियार। (व स)

४ वाद्य, बाजा।

उ०—**यंत्र** बजाया साज कर, कारीगर करतार।
पचों का रस नाद है, दादू बोलणहार।

—दादू वाणी

५ तावीज।

उ०—पाघ ऊपर चौकडी तरवारिया री पड रही छै। पण अेक अतीत री दियोडो **यंत्र** पाघ मे रहतो और महाराजा करणसिंहजी री दीन्ही स्यालियासीगी सदा पाघ रै माही रहती तिणसू सरीर री रक्षा रहती।

—पदमसिंह री बात

६ जादू, टोना।

उ०—हिवै ईया रै देस माहे धान घणा। वहवारिया रै लाखे स्यान हुवो। केळेकोट, वगे, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुवा होडनै एकै वरतीयै नु कह्यो, जु "धान म्हाहरै घणो। ज्यु करो, ज्यु धान रा पईसा हुवै।" ताहरा महाजन मेह बधायो। ताहरा **यंत्र** लिखि अर हिरण रै सीग मे यंत्र घालीयो। घालि नै हिरण छोडि दियो।

—लाखे फूलाणी री वात

यंत्रकार—स. पु. [स यंत्र+कार] यंत्र को संचालन करने वाला, मैकेनिक।

यंत्रणा—स स्त्री. [सं] कष्ट, पीडा। (डि. को)

यंत्रमात्रका—स स्त्री यौ [स. यंत्र+मातृका] ६४ कलाओ मे से एक जिसमें यंत्रों का बनाना व उनका व्यवहार करना शामिल है।

यंत्रमुक्त—स. पु [स] एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

उ०— कोदंड धनुस चडाव्या, कुंत करासि कीध, छुरी पासु परसु पट्टिस सक्ति करमुक्त **यंत्रमुक्त** मुक्तामुक्त दुस्फोट तरवारि अग्नि तेल लोहबद्ध लुडि एव विध आयुध विसेसि ढाचा भरियां, पत्तियुद्ध प्रवर्तिउ।

—व. स.

यंत्रराज—स. पु [स] ग्रहों एवं तारों की गति जानने का एक यंत्र।

यंत्रवाद—स पु [स] ७२ कलाओं मे से एक।

यंत्रवादी—वि. [स] यंत्रवाद का ज्ञाता।

उ०—वागधर सुजाण चित्र-जाण धातुनिस्पत्तिजाण ज्योतिसजाण मंत्रवादी **यंत्रवादी** तंत्रवादी धातुवादी अंजनवादी रसायवादी गजवैद्य।

—व. स.

यंत्रवाहक—[स.] मशीन चालक।

उ०—राय पवायण राजा वडठउ छत्र, डावइ पखइ मंत्रि, वीर पउनार दीवटीया वयगरणा **यंत्रवाहक** चमरहारि छडायता मागिक विनाणी सूयार सूडकर समाहणी मीठाबोला सरसतरूणा इसी सभा अनड एतला देस तणउ अधिपति।

—व. स

यंत्रविद्या—स स्त्री [स] मशीन या कलों को बनाने या संचालित करने की विद्या।

यंद, यंदर—देखो 'इंद्र' (रू भे)

उ०—१ भीमक वमचाळ, केविया का काळ। अरजुन का वाण, दुरज्योधन का माण, रस विलास का **यंद**, वचनका हरचद। सुमेर का भार, कूमेर का भडार। अनेक स्थानदान वाळा घूकळा उडावै छै, उदैपुर का बाग मैं वाग वजावै छै।

—बगसीराम पुरोहित री बात

उ०—२ चद **यंद** ममद हमाऊ परखी दीठ चोजा, कमोदनी गोम मछा लोकीक कवद।

—क कु बो.

यंदरा—१ देखो 'इंदिरा' (रू. भे)

२ देखो 'इन्द्राणी' (रू भे)

यंदु, यंदू—देखो 'इंदु' (रू भे) (अ. मा.)

यंद्र—देखो 'इंद्र' (रू भे) (अ मा., ना. मा.)

उ०—वारधेस जोम गाज गाळिया त्रिकूट-वासी, राजचील जाळिया

तारखी तेज रूप । कुमखी कुळ मां यंद्र ढाळिया गिरद काळा, वीर 'मिवा' वाळे रिमा राळिया विघम ।

—हुकमीचद खिडियौ

यंद्रजीत—'इंद्रजीत' (रू. भे.)

यंद्रपुर, यंद्रपुरी—देखो 'इंद्रपुरी' (रू. भे.) (अ मा.)

उ०—जुध बाखाना बरे 'जोगावत' वेधि घड़ा यंद्रपुर बसियौ। मह चौंडा मळखा रिणमाला, कमधज कुटंब ऊजळौ कियौ ।

—गीत हटीमीघ जोगावत रौ

यंद्राण—देखो 'इंद्र' (रू. भे.)

यंद्राणी—देखो 'इंद्राणी' (रू. भे.) (अ. मा.)

यंद्रावरज—देखो 'इंद्रावरज' (रू. भे.)

यंद्रावरध—देखो 'इंद्रावध' (रू. भे.)

यंद्रासण—देखो 'इंद्रासण' (रू. भे.)

उ०—'ऊदलौ' 'जगौ' 'सायब' 'करन' आफळे, यंद्रासण लेयण कारण अवाया । वधै लेता जमी भात सु वधारा, वधै ज्यू यज त्याग कलै वाया ।

— उजैण रै भगडा रौ गीत

यंद्रिय, यंद्री—देखो 'इंद्रिय' (रू. भे.)

यंनाम—देखो 'इनाम' (रू. भे.) (ए का.)

यंनामी—वि [अ. इनाम + रा. प्र. ई] इनाम प्राप्त करने वाला ।

उ०—आबादान गावा मे किसाणा नै बसाया, उदकी भी यंनामी देसवासी चैन पाया ।

—शि व

यंबर—देखो 'अंबर' (रू भे.)

उ०—आह गयद विहवा लगा, वळ वळ दाखै पाण। उदध छोळ यंबर लगा, फेर मथै महराण ।

—गज उद्धार

यंम—स. पु.—१ कपट, छल । (अ मा.)

२ देखो 'यम' (रू. भे.)

य—स. पु. [स य] १ गाड़ी, यान, सवारी । २ हवा, वायु । ३ कीर्ति, यश । ४ सम्मेलन । ५ यव, जौ । ६ बिजली, विद्युत । ७ रोक, रुकावट । ८ यमराज । ९ त्याग

१०. योग । ११. सयम । १२. प्रकाश, रोशनी । १३ गणेश । १४ ईश्वर । १५. पुरुष । १६ छन्द शास्त्र मे यगण का संक्षिप्त रूप । (एका.)

वि.—जाने वाला । (एका.)

क्रि. वि.—पुन., और । (एका.)

यक—देखो 'एक' (रू. भे.)

उ०—१ चव आद खटकाळ दुकळ, गुरु यक पाय मत अठवीसय । हरि गीत सौ जिण अत लघु सौ राम गीत मनी सय ।

—र.ज.प्र.

उ०—२ धुर चवदह नव फेर धर, अत गुरु लघु अक्ख । यक तुक मिळ मोहरा उभै, सौ दुमिळा कवि सक्ख ।

—र.ज.प्र.

यकअंगी—वि. [स एक + अंगी] १ एक अंग वाला ।

२ जिसके केवल एक ही पति या पत्नी हो ।

यककुंडळ—स पु [स एक कुंडल] शेष नाग । (ह ना मा)

यकता—देखो 'एकता' (रू भे.)

यकबारगी—देखो 'एक बारगी' (रू भे.)

यकलंक, यकलिंग—देखो 'एकलिंग' रू.भे.)

उ०—यण प्रकार राणौ भीम, कीरति को······भोजनाळाबिलद चिनकी समद, आचार को इद, मरणाया साधार, हिंदुपति पातस्याह यकलंक को अवतार, महिमा अपार, यसौ राणौ भीम ।

—बगसीराम प्रोहितरी बात

यकलास—देखो 'इकळास' (रू भे.)

यकवीस, यकवीस—देखो 'इक्कीस' (रू. भे.)

उ०—त्रिघ्री तेरह लघुव दीजै, लघु यकवीस चित्रणी लीजै । सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई ।

—र ज. प्र

यकहत्तर—देखो 'इकोतर' (रू. भे.)

उ०—विध यकहत्तर छपय वद, सत्तर गुरु लघु बार । अजय जिको गुरु घट बधै, बे लघु नाम निहार ।

—र ज. प्र.

यकांवन—देखो 'इक्यावन' (रू भे.)

उ०—'मेवै' राज मत्रामैं यकांवन साल पायौ, मत्रामैं तरेपन सैर सीकरी नैं बसायौ ।

—शि व.

यकार—स पु [स य + कार] १ छद शास्त्र मे 'यगण' गण का नाम ।

२ य वर्ण का नाम ।

यकावन—देखो 'इक्यावन' (रू. भे.)

यकीन—स. पु [अ. यकीन] विश्वास, प्रतीति ।

उ०—१ दादू गल काटे कलमा भरे, अया विचारा दीन । पंचो वक्त नमाज गुजारे, साबित नहीं यकीन ।

—दादूवाणी

उ०—२ दादू सिदक सबूरी साच गह, साबित राख यकीन । साहिब सौ दिल लाइ रहु, मुरदा ह्वै मिस्कीन ।

—दादूवाणी

यक्ष—[स यक्ष] देखो 'जक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ तव गौ नाथ चौरासी सिद्ध कहे—जे थे दोनू ही पूरब जनम मे यक्ष था, सो कुबेर रै खजानै पर रुखाळा था ।

—डाढाला सूर री बात

उ०—२ यक्ष राक्षस अरु भूत पिसाचर, यह तो हम नहिं कोई। चारण सिद्ध नाग अरु गंधरब, देव जात नहिं होई।

—सुखराम जी महाराज

यक्षकरद्दम—स. पु [स यक्षकर्दम] कपूर, अगर, कस्तूरी एवं ककोल को बराबर मिलाने से बना लेप।

उ०—कुकम तणा छड़ा दीधा, पद्मिनी तणा पगर भरिया छइ, दमणउ कुरबक महमहइ छइ, केतकी तणा समूह, **यक्षकरद्दम** तणा पोता दीधा छइ, कस्तूरी तणा स्तवक दीधा छइ।

—व स.

यक्षग्रह—स पु. यौ [स यक्ष+ग्रह] १ पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह, जिसकी दशा लगने पर मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है। २ प्रेत-बाधा।

यक्षतरु—स पु यौ [स यक्ष+तरु] वट-वृक्ष, बड का पेड।

यक्षधूप—स पु यौ [स यक्ष+धूप] गूगल, लोबान।

यक्षनायक—देखो 'जक्षनायक' (रू भे.)

यक्षपत, यक्षपति—देखो 'जक्षपति' (रू. भे)

यक्षपुर, यक्षपुरी—देखो 'जक्षपुरी' (रू भे)

यक्षराज—देखो 'जखराज' (रू भे)

यक्षरात्रि—देखो 'जक्षरात' (रू. भे)

यक्षरूप—स. पु [स] महादेव।

यक्षलोक—देखो 'जक्षसलोक' (रू भे)

यक्षवित, यक्षवित्त—स पु. [स यक्ष+वित्त] कजूस, कृपण।

यक्षस्थळ—स पु यौ [स यक्ष+स्थल] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति—देखो 'जक्षाधिप' (रू भे.)

यक्षावास—स पु. यौ [स यक्ष+आवास] वट-वृक्ष।

यक्षिणी—देखो 'जखणी' (रू भे)

यक्षी—देखो 'जखि, जखी' (रू भे.)

यक्षेंद्र—देखो 'जखेन्द्र' (रू भे)

यक्षेस्वर—देखो 'जखेसर' (रू भे)

उ०—चक्रवर्त्तिरिद्धि, चउद रत्न, नव निधान, सोल महस्र **यक्षेस्वर**, ३२ सहस्र नरवर, ३६ महस्र कुलागना, ३२ महस्र वारागना।

—व.स.

यखु—स. पु [स इषु] तीर, बाण। (अ. मा.)

यखुग्रास—स पु यौ. [स इषु+ग्रास] धनुष। (अ. मा)

यखूधीयता—स पु यौ—तरकस। (ना. मा)

यगण—स. पु [स] छन्द-शास्त्र मे आठ गणो मे से एक, जिसमे प्रथम एक लघु एव बाद मे दो गुरु होते हैं।

यगताळीस—देखो 'इकताळीस' (रू भे) (डिं. को)

यग्य—देखो 'जिग' (रू भे)

उ०—भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर **यग्य** करायौ, देवी री आग्या हुई-हमैं भाऊ पाछौ दिखण नू परौ जावै, दूजै महीनै आय साह सू जग करै तौ भाऊ री फतै हुवै। —बा. दा. ख्या.

यग्यकारी—स पु. [स यज्ञकारी] यज्ञ करने वाला।

यग्यक्रतु—स. पु [स यज्ञक्रतुः] विष्णु का नाम

यग्यक्रिया—स. स्त्री—१ यज्ञ का काम।

२ कर्मकाड।

यग्यकोप—स. पु. [स. यज्ञकोप] रावण के पक्ष का एक राक्षस, जो राम के द्वारा मारा गया था।

यग्यदत्त स. पु [स. यज्ञदत्त] १ काम्पिल्य नगर का एक अग्नि-होत्रि ब्राह्मण, जिसके पुत्र का नाम गुणनिधि था।

२ भगदत्त राजा के पुत्र 'वज्रदत्त' का नामातर।

३ वसिष्ठकुलोत्पन्न एक ब्राह्मण, जो यज्ञकर्म मे निपुण था।

४ एक राजा, जो भविष्य पुराण के अनुसार शतानीक राजा का पुत्र था।

यग्यपति—स. पु [स. यज्ञपति] १ विष्णु भगवान, २ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

यग्यपसु—स. पु यौ [स. यज्ञ+पशु] १ यज्ञ मे बलि दिया जाने वाला पशु। २ घोडा। ३ बकरा।

यग्यपात्र—स पु यौ. [स यज्ञ+पात्रम्] यज्ञ मे काम आने वाले पात्र।

यग्यपाळ—स पु यौ [स यज्ञ+पाल] यज्ञ का सरक्षक।

यग्यपुरुष—स पु [स यज्ञ+पुरुष] विष्णु।

यग्यबाहु—स पु [स यज्ञबाहु] १ अग्नि का एक नाम २ शाल्मलि द्वीप का एक राजा, जो भागवत के अनुसार प्रियव्रत राजा का पुत्र था। इसकी माता का नाम बर्हिष्मती था।

यग्यभाग—स पु यौ [स यज्ञ+भाग] १ यज्ञ का वह भाग (अश) जो देवताओ को दिया जाता है।

२ इन्द्र आदि देवता, जिन्हे उक्त अश या भाग मिलता है।

यग्यभाजन—स पु यौ [स यज्ञ+भाजन] यज्ञ मे काम आने वाले पात्र, बर्तन।

यग्यभूमि—स स्त्री. यौ [स यज्ञ+भूमि] वह स्थान जहा यज्ञ किया जाय।

यग्यमडप—स पु यौ [स यज्ञ+मडप] यज्ञ हेतु बनाया जाने वाला मडप।

यग्यमडळ—स पु यौ. [स यज्ञ+मडल] यज्ञ करने हेतु घेरा गया स्थान।

यग्यमंदिर—स पु यौ [स यज्ञ+मदिरम्] यज्ञशाला।

यग्यमय—स पु. [स यज्ञमय] विष्णु।

यग्ययूप—स पु यौ [स यज्ञ+यूप] बास या लकडी का वह खभा जिस के यज्ञ मे बलि दिए जाने वाले पशु को बाधा जाता है।

यग्यवराह—स पु [स यज्ञवराह] वराहरूपधारी श्री विष्णु का नामान्तर।

यग्यवाह—स पु यौ [स यज्ञ+वाह] १ यज्ञ करने वाला।

२ कार्तिकेय का एक अनुचर ।
३ अगस्त्य कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
४ स्कंद का एक सैनिक ।

यग्यवाहन—स. पु यौ [स. यज्ञ+वाहन] १ विष्णु ।
२ ब्राह्मण ।
३ शिव ।
४ यज्ञवाही, याज्ञिक ।

यग्यवक्ष—सं पु यौ. [स यज्ञ+वृक्ष] वट-वृक्ष ।

यग्यसत्रु—स पु. [स. यज्ञ+शत्रु] एक राक्षस जो लका निवासी खर नामक राक्षस का अनुगामी था ।

यग्यसरण—स. पु. यौ [स. यज्ञ+शरण] यज्ञमण्डप ।

यग्यसाळा—देखो 'जिगसाळा' (रू. भे.)

यग्यसास्त्र—स पु यौ. [स यज्ञ+शास्त्र] वह शास्त्र, जिसमे यज्ञ एव उसकी क्रिया का विवेचन हो ।

यग्यसील—स. पु. [स यज्ञ+शील] १ वह जो यज्ञ करता हो ।
२ ब्राह्मण ।

यग्यसूकर—स पु यौ. [स यज्ञ+शूकर] विष्णु ।

यग्यसूत्र—स पु. यौ [स यज्ञ+सूत्र] जनेऊ, यज्ञोपवीत ।

यग्यसेन—स. पु. [स यज्ञसेन] १ पाचाल नरेश द्रुपद राजा का नामातर ।
२ विष्णु ।

यग्यसेनी—देखो 'जग्यासेनी' (रू. भे)

यग्यस्तंभ—स पु यौ [स. यज्ञ+स्तभ] यज्ञ मे बलि दिये जाने वाले पशु को बाधने का खभा ।

यग्यस्थळ—स. पु यौ [स यज्ञ+स्थल] वह स्थान, जहा यज्ञ होता हो, यज्ञमडप ।

यग्यहोता—स. पु. [स यज्ञ+होतृ] १ यज्ञ मे देवताओं का आह्वान करने वाला ।
२ मनु के एक पुत्र का नाम ।

यग्यहोत्र—स पु. [स. यज्ञहोतृ] १ यज्ञ मे देवताओं का आह्वान करने वाला २ उत्तम मनु के पुत्रो मे से एक ।

यग्यांग—स. पु. यौ. [स. यज्ञ+अग] १ यज्ञ की सामग्री ।
२ विष्णु ।
३ गूलर ।
४ खदिर ।

यग्यात्मा—स पु [स यज्ञात्मा] विष्णु ।

यग्याधिपति—स पु [स यज्ञाधिपति] यज्ञ के स्वामी, विष्णु ।

यग्यारसौ—देखो 'इगियारसौ' (रू. भे)

यग्यारि—स पु [स यज्ञारि] १ शिव, महादेव ।
२ राक्षस ।

यग्यारेक—देखो 'इगियारेक' (रू भे.)

यग्योपवीत—देखो 'जग्योपवीत' (रू. भे.)

यछरज—देखो 'अचरज' (रू. भे)

यछे—अव्यय—चाहे ।

उ०—जाणायउ राजा थारोऊ हो जाए, दुई का मील्यां छै येक परांण । जे किम यछे दूरी था, कूलह की वेडी, मीयलै जजीर ।
—बी. दे.

यजंगम—देखो 'अजगम' (रू. भे)

यज—स. पु [स] १ विजय, जीत । (डि. को.)
२ वस्त्र विशेष ।

उ०—चलाखा मलाखा देवदूस्य बधालग कोठालग कलइग कोकची पचवरण यज, दुरगी यज, मागलुरी यज, गढगजी सवागजी चुगजी पटगी पटपाट्ट ।
—व. स.

यजवां—स पु—पारसियो के अनुसार ईश्वर का एक नाम । (मा. म)

यजन—देखो 'जजण' (रू भे)

उ०—भजन, यजन कर पिता थानै पाया, अमर अगाध्या अवनी पै आप आया । —गी. रा.

यजनकरता—स पु [स. यजन+कर्ता] यज्ञ करने वाला ।

यजमांन—देखो 'जजमान' (रू. भे)

यजमानलोक—स. पु. [स यजमानलोक] वह लोक जिसमे यज्ञ करने वाले मृत्यूपरात निवास करते है ।

यजमांनी—देखो 'जजमानता, जजमानी' (रू भे)

यजार—देखो 'इजारबद' (रू भे.)

उ०—सुरखी बनि सूथनि भारनकी, लटकी लर स्याम यजारन की । कुरती कचिया मखतूलन की, उर माळ चमेलिय फूलन की ।
—ला. रा

यजुरवेद—देखो 'जजुवेद, जजुरवेद, (रू भे)

यजुरवेदी—देखो 'जजुरवेदी' (रू. भे)

यजुरवेदीयौ—स पु [स यजुर्वेदिन्] यजुर्वेद का ज्ञाता ।

उ०—मघला सामक अथरवणी, यजुरवेदीया जाण । रघुवेदी सवि रथि चड्या, पडित गोकारि पुराण ।
—मा का प्र.

यडग—देखो 'अडिग' (रू. भे)

यण—देखो 'अण' (रू. भे)

उ०— तिका यण वार अवतार सकती तणा, भाव भकती तणा घणा भूका । फजर ग्रह राण तप तेज मुग्व फाबिया, ढाबिया सूळ 'ओकारण' ढूका ।
—मे म

यतन, यतन्न—देखो 'जतन' (रू. भे.)

उ०—गादह दाध्यउ दग करि, सासू कहइ वचन्न । करहउ ए वूडइ मनइ, म्रोडउ करइ यतन्न ।

—ढो. मा.

यतमांमी—स पु [ग्र इहतिमाम+रा. प्र. ई] व्यवस्थापक —नैंरासी

यतलाक नवेस—स पु एक राज्याधिकारी —नैंरासी

यतवत—क्रि. वि. इधर-उधर ।

उ०—जन हरिदास सतगुरु सबद, ग्रतरि लागा बाग । हरि हेरत हरि मन हरया, यतवत लहे न जाग ।

—ह पु. वा.

यति—देखो 'जती' (रू भे)

यतिदेवर—स पु [स] चूहा । (डि को.)

यतिधरम—स पु यौ [स यति+धर्म] सन्यास ।

यतिभंग, यतिभ्रष्ट—स पु. यौ. [स. यति+भग या यति+भ्रष्ट] छंद शास्त्र में वह दोष, जब किसी छंद मे यति उचित स्थान पर न होने के कारण लय या प्रवाह बिगड जाता है ।

यतिसांतपन—स पु—तीन दिन का एक व्रत जिसमे केवल पचगव्य और कुश जल पीकर रहना पडता है ।

यती—सर्व—१ उतना ।

२ देखो 'जती' (रू भे)

यतीम—स पु [ग्र] १ वह बालक जिसके माता-पिता मर गये हो, ग्रनाथ ।

२ ऐसा बडा मोती जो सीप मे एक ही होता हो ।

३ बहुमूल्य रत्न ।

यतीमखांनौ—स पु. [ग्र यतीम+फा खान] वह स्थान जहा ग्रनाथ बालको का पालन-पोषण होना है, ग्रनाथालय ।

यतीस्वर—स पु यौ [स यति+ईश्वर] योगीराज, यतिराज, यतीश्वर ।

उ०—श्रीयुगप्रधान यतीस्वरु, देखता हो हुवै सफली दीह । नित विजय हरख वछित दीयै, धरि भावं हो गावै धरममीह ।

—ध व ग्र

यतौ—सर्व.—१ इतना ।

उ०—१ जुध 'पाल' हुवौ मन मोद जिनो, ग्रन भूप न ग्रावत ग्याव यतौ । वरणी रिव ऊगम सेन विधू, चद ऊगम सूरजपाल मिधू ।

—पा. प्र.

उ०—२ ग्राद तिको यज ग्रत मे, इधक मु खलत ग्रक । ग्रकारादि कहिया यता, सम ग्रखरोट ग्रसक ।

—र रू

२ जहा ।

यत्न—देखो 'जतन' (रू भे.)

यत्र—देखो 'जत्र' (रू. भे)

यत्रतत्र—ग्रव्य. [स] १ जहा-तहां, इधर-उधर ।

२ यहा-वहां सभी जगह, ग्रनेक स्थानो पर ।

३ कुछ यहा, कुछ वहा ।

यथा—देखो 'जथा' (रू. भे.)

उ०—कुच मरदन, कप्पड ग्रधर, लीइ कुरामी लाग । सुहड यथा समरगणि, भडता कोइ न भाग ।

—मा. का. प्र.

यथाक्रम—देखो 'जथाक्रम' (रू भे.)

यथानियम—देखो 'जथानियम' (रू भे)

यथापूरब—ग्रव्य. [स यथा+पूर्व] जैसा पहले था वैसा ही । पूर्ववत्, ज्यों का त्यों ।

यथायोग्य—देखो 'जथाजोग' (रू. भे.)

यथाविधि—देखो 'जथाविधि' (रू. भे)

यथासक्ति, यथासगती—देखो 'जथासकती' (रू. भे.)

यथोचित—ग्रव्य. [स यथा+उचित] जैसा उचित हो वैसा । उपयुक्त ।

यदपि—देखो 'जदपि' (रू. भे.)

उ०—मीरा को प्रभु साची दासी बणाउ । झूठे धंधा रे मेरा फदा छुडाउ । लूटेहि लेत विवेक का डरा । बुद्धिबळ यदपि करू बहुतेरा ।

—मीरा

यदा—देखो 'जद' (रू. भे)

उ० --एक दिन मरणौ हो राजाजी यदा तदा, छोडो नी काम बिमेस । बीजौ तौ तारण जग मे को नही, तारै जिणजी रौ धरम एक ।

—जयवाणी

यदि—देखो 'जदी' (रू भे)

यदु—देखो 'जदु' (रू भे)

यदुनदन—देखो 'जदुनदण' (रू भ)

यदुनाथ—देखो 'जदुनाथ' (रू. भे.)

यदुपति—देखो 'जदुपति' (रू भे.)

यदुभूप, यदुराज—स. पु. [स]—श्रीकृष्ण ।

यदुवंस—देखो 'जदुवस' (रू भे)

यदुवंसमणि—स. पु. यौ. [स यदु+वश+मणि] श्री कृष्ण ।

यदुवसी—देखो 'जदुवसी' (रू. भे.)

यदुवर, यदुवीर—देखो 'जदुवर, जदुवीर' (रू भे)

यद्यपि—देखो 'जदपि' (रू. भे)

यधक—देखो 'ग्रधिक' (रू भे)

यभ—१ देखो 'इभ' (रू. भे)

उ०—दळ सभक्त खळ दाह, यभ बाज ग्रगाथाह, गह रचण गजगाह, नरनाह रघुनाथ ।

—र. ज. प्र.

यम—स. पु. [सं. यम] १ दमन, निग्रह।
२ नियंत्रण।
३ आत्म संयम।
४ चित्त को धर्म में रखने वाले कर्मों का साधन।
५ योग के आठ अंगों में से प्रथम।
वि. वि.—योग के आठ अंग निम्न हैं—
(१ यम, २ नियम, ३ आसन, ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार, ६ धारणा, ७ ध्यान और ८ समाधि)
६ एक साथ उत्पन्न बच्चों का जोड़ा।
७ देखो 'जम' (रू. भे.)
क्रि. वि.—१ ऐसे, इस प्रकार।
उ०—१ सुणत वचन रणजीत यम आगम असुर समाज। मनहु जुत्थ मातंग पर, लखि गमन्यौ म्रगराज।
—ला. रा.
उ०—२ प्रथम बीय सत बार पढ, ग्रग पद विधो अठार। चौथै पनरह मात रच, यम गाथा उचार।
—र. ज. प्र.
२ ज्यूं, जैसे।
उ०—त्याहा जइ तेह नि विरहि, लगाडू प्रीतकरि यम नारि। गुण प्रेमी कल थामि नहीं, राई थिक तेहनु अवतार।
—नळाख्यान
यमक—देखो 'जमक' (रू. भे.)
यमककरिणिक—स. पु. सेना में व्यूहरचना का प्रबन्धक।
उ०—सौवरण-करिणिक देवकरिणिक मडल करिणिक उष्ट्रकरिणिक हस्तिकाकरिणिक घोडककरिणिक यमककरिणिक पुरोहितकरिणिक।
—व. स.
यमघंट—१ देखो 'जमघट' (रू. भे.)
२ देखो 'जमघटजोग' (रू. भे.)
यमचक्र—देखो 'जमचक्र' (रू. भे.)
यमजातना—देखो 'यमयातना' (रू. भे.)
यमजित—वि. [सं.] मृत्यु को जीतने वाला। मृत्युंजय।
स. पु.—शिव, महादेव।
यमणी, यमबौ—देखो 'जीमणी, जीमबौ' (रू. भे.)
उ०—पग न चापू पुरुष कोणना, न यमूं कुहन छाब्यू अन्न, वाट जोऊ माहा प्रीउडा केरी, राखी तेहनि चरणि मन। —नळाख्यान
यमियोड़ौ—देखो 'जीमियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री यमियोड़ी)
यमदंड—देखो 'जमदंड' (रू. भे.)
यमदग्नि—देखो 'जमदग्नि' (रू. भे.)
यमदूत—स. पु. यौ. [सं. यम+दूत] १ कौआ।
२ नौ समिधों में से एक।
३ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र।
४ वह घोड़ा जिसके शरीर का रंग श्वेत हो किन्तु चारों पैर श्याम वर्ण के हों (अशुभ) (शा. हो.)
५ वह घोड़ा जिसके होठ परस्पर न मिलते हों (अशुभ) (शा. हो.)
६ देखो 'जमदूत' (रू. भे.)
यमन—स. स्त्री.—संगीत में एक राग विशेष।
यमनक्षत्र—देखो 'जमनखतर' (रू. भे.)
यमनाथ, यमनाह—देखो 'जमनाह' (रू. भे.)
यमपद—स. पु.—शाक विशेष।
उ०—येठीमधु नइ यावनी, यवपत्रडी यवानि। यक्षलता योमिम हरी, यमपद पानि पानि।
—मा. का. प्र.
यमपुर, यमपुरी—देखो 'जमपुर' (रू. भे.)
यमभगिनी—देखो 'जमभगनी' (रू. भे.) (डि. को.)
यमया—देखो 'जमया' (रू. भे.)
यमयातना—स. स्त्री. यौ. [सं. यम+यातना] पुराणानुसार मृत्यु के बाद यम द्वारा दी जाने वाली यातना या कष्ट।
रू० भे०—यमजातना।
यमराज—स. पु. [सं.] १ एक ग्रन्थकार, जिसने 'भास्करसंहिता' के अन्तर्गत ज्ञानार्णवतंत्र की रचना की थी।
२ देखो 'जमराज' (रू. भे.)
उ०—यमराज उधारे, रामण मारे, ते हरण कम अमना है। कह बुद्ध किलकी ईस उमंकां, कळ पुरण सीकना है।
—र. ज. प्र.
यमल—स. पु.—१ वाद्य यन्त्र विशेष।
उ०—एकि बलबुद्धि आयुवृद्धिकार सीतल सर, अन्यायक पाणी आपता त्रमा चूरट, एकि वीणा वेणु म्रदग यमल सग पटह कमालप्रमुख अगुणपचास वादित्रस्वर साभलावइ मधुर।
—व. स.
२ देखो 'जमल' (रू. भे.)
उ०—श्रीराम यमलां रूखमणी, दीसनि सकल सरूप। नारद तुंवर गीत गावई, विप्रदान अघट्ट। मगळीक अनेक वरत्या, बिडद बोलई भट्ट।
—रुकमणी मगळ
यमलोक—देखो 'जमलोक' (रू. भे.)
यमवारौ—देखो 'जमारौ' (रू. भे.)
उ०—रात हुई मट मासनी, चिनवे मनरे मायजी। दुख रा दाधा माणसा, यमवारौ किम जायजी।
—जयवाणी

यमवाहन—देखो 'जमवाहरण' (रू. भे.)

यमहंता—देखो 'जमहंता' (रू. भे.)

यमहर—देखो 'जमहर' (रू. भे.)

उ०—चदरण कमलताल पुरण मेल्हइ जाल, चद्रकाति उवलइ, पुष्प मय्या बलइ, हार भावइ अगार, कदलीहर मानइ **यमहर**, जे जलसीकर ने उद्वेग करइ, जे सीतलोपचार इग विकारइ, इगि परि प्रज्वलित स्नेहपटल विरहानल दीपनेइ।

—व. स

यमालय—स पु यौ [स यम+आलय] यम के रहने का स्थान, यमपुरी।

यमि—स पु. [स] इन्द्रियो को वश मे रखने वाला।

स. स्त्री—यमुना नदी। (डि. को)

यमुना—देखो 'जमना' (रू. भे.)

यमनोत्तरी—देखो 'जमनोतरी' (रू. भे.)

यमेस—स पु [स यमेश] भरणी नक्षत्र का नामान्तर।

यम्रत—देखो 'अम्रत' (रू भे)

ययाति—स पु—राजा नहुष के पुत्र एव राजा पुरू के पिता, जिनका विवाह शुक्राचार्य जी की पुत्री से हुआ था।

वि वि—इन्होने शुक्राचार्य जी से जर्जर अवस्था को प्राप्त होने के अभिशाप के कारण अपने पुत्र पुरु से यौवनावस्था को प्राप्त किया और पुरु को जर्जर अवस्था प्रदान कर १००० वर्ष तक जीवन का सुख भोगा। अन्त मे पुरु को पुन यौवनावस्था लौटाकर उन्हे राज्य-पद दिया एव स्वय ने वृद्धावस्था को अगीकार किया।

ययावर—देखो 'यायावर' (रू. भे)

ययी—स पु—१ शिव।

२ बलि चढाया जाने वाला घोडा।

३ घोडा।

४ मार्ग, रास्ता।

५ बादल।

यरंद, यर—देखो 'अरि' (रू भे)

उ०—१ खुलत रिव नयरा सुरा, पख पळचर खरर। डगमगत **यर** घूमत, भाज पख्खत उरर।

—र ज प्र.

उ०—२ अरक आकरो 'मान' भूपत तपै आजरो, थटै दळ कळह समान थाता। पेमकम भरै सुत 'मान' ओवड पणा, **यरां** मन करो अभमान आता।

—चिमनजी आढो

यरथाट—देखो 'अरिथाट' (रू. भे)

उ०—चुग नही सळे पळचार स-चीना, चख्खरग काज लभै नह चारो। 'धीरजीयो' **यरथाट** थकावरण, हाल गयो दळ मेळग हारो।

—सुखजी खडियो

यरहर—देखो 'अरिहर' (रू. भे.)

उ०—दूसरा 'माल' सग लिया चुतरग दळ, **यरहरां** मार सेरण उबारै। रग भडा महल जूझा गहल गठबड, सहल रमना पडै दहल मारै।

—कल्याणदासजी महडू

यरावौ—देखो 'इरावौ' (रू भे.)

उ०—दाया बैर का तो ब्याहि बेटी दूर कीना, भूधरी का **यरावा** डायजा मे छोड दीना।

—शि. व.

यळ—देखो 'इळा' (रू. भे.)

उ०—१ करुणा निधान कोदड कर, नित चालरण **यळ** रीत नय। रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग अधार औधेस जय।

—र ज प्र.

उ०—२ चाररणा वररग सकट सुणै, लाख वात अजल न लै। कमध यळ सीम राखरग कथा, घरणा खळा खपरग घलै।

—पा. प्र.

यळधीस—स पु. [स. इलाधीश] राजा, नृप (डि. को)

यळनाथ—स पु [स इलानाथ] राजा, नृप (डि को)

यळप्रभ—स पु [स इलाप्रभा] नगर, शहर (अ मा)

यलम—देखो 'इलम' (रू भे)

उ०—उतन विलायत किलकता कानपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा। **यलम** धुर वहरण अगरेज दाटरण यळा, भरतपुर ऊपरा हुआ भेळा।

—कविराजा बाकीदास

यलल्लाह—देखो 'इलल्ला (रू भे)

उ०—रहै पीरदोना मदत्ति तिहारी, यलल्लाह के हाथ है जीति हारी। —ला रा

यळसुवन—स पु [स इला+सूनु] पृथ्वीपुत्र मगल। (अ मा)

यळा—स स्त्री [स इला] १ इन्द्र की रारणी इन्द्राणी। (ना. मा)

२ देखो 'इळा' (रू भे) (अ मा)

उ०—फौजा देख न कीधी फौजा, दोयरण किया न खळा इळा। खवा खाच बूडै खावदरै, उराहिज बूडै गई यळा। —बा दा.

यळाइन्द—स पु [स इला+इन्द्र] राजा, नृप। (डि को)

यलापत, यलापति—स पु [स इला+पति] राजा, नृप।

यवन—स पु [स] १ कृष्ण के द्वारा मारे गए 'कालायवन' राजा का नामान्तर।

२ हैहय राजा का एक साथी, जिसे सगर ने पराजित किया था।

३ एक लोक समूह, जो गाधार देश के सीमा भाग में स्थित 'अरिआ' एव 'अर्कोशिया' प्रदेश मे रहते थे।

४ देखो 'जवन' (रू. भे)

यवमध्य–स. पु [स यव+मध्य] १ एक प्रकार का चाद्रायण व्रत।
उ०–कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित महासिंहाविक्रीडित गुणरत्न संवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सर्वतोभद्र **यवमध्य** चद्रायण वज्रमध्य चद्रायण ग्राचाम्ल वर्द्धमान।

—व स

२ पाच दिवस मे समाप्त होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।
३ एक प्राचीन नाप।

यवरोटिका–स स्त्री [स यव+स रोटिका] यव की बनी रोटी या चपाती।
उ०—एक कुभोजन ग्रन्यत्त प्रथम कवले मक्षिकापात, एकुथिना रथा ग्रतरगता कमारिका, एका **यवरोटिका** ग्रन्यत्काकभक्षिता च एक पकुला रथ्या।

—व स

यवागू–स पु [स] जौ या चावल का वह माड जो सडा कर कुछ खट्टा कर दिया गया हो।

यविनर–स पु [स] १ द्विह्य कुलोत्पन्न एक सुविख्यात राजा, जो मत्स्य के अनुसार अजमीढ राजा का, एव भागवत, विष्णु एव वायु के अनुसार द्विमीढ राजा का पुत्र था।
२ उत्तर पचाल देश का एक राजा, जो भागवत पुराण के अनुसार भर्यस्व राजा का पुत्र था।

यवियस–स पु [स] १ एक राजा, जो वायु के अनुसार ऋक्ष राजा का पुत्र था।
२ एक ग्राचार्य, जो वायु के एव ब्रह्माड के अनुसार, व्यास की सामशिष्य परपरा मे से हिरण्यनाभ ऋषि का शिष्य था।

यस–स पु–१ भोजन, अन्न।
२ सुतभ देवो मे से एक।
३ विकुठ देवो मे से एक।
४ देखो 'जस' (रू भे)

यसड़ौ—देखो 'इसडौ' (रू भे)

यसनामिक–वि [स यशनामिक] यशस्वी।
उ०—**यसनामिक** कल्प ताहरु, पुरीमादागी विरुद, वामाकुल वडभागीयो, 'पार्श्वनाथ' सरर। जिन सासननी भूपति, वर्द्धमान जिनभाग, दुसम पचम ग्रारके, सकल प्रवर्त्ते ग्राग।

—कवियण

यसब—स. पु [ग्र यश्ब] एक हरा कठोर पत्थर जो दिल धडकने की बिमारी के लिए ग्रौषध रूप मे काम ग्राता है।

यसवंत–यशस्वी।

यसस्कर–स पु [स यशस्कर] शिवदेवो मे से एक।
वि –यशस्वी,

यसस्वी–देखो 'जसवान' (रू भे)
उ०—देव ग्रनाथनाथ जगन्नाथ त्रिभुवनस्वामी, विमलवाहन चक्षुस्मत **यसस्वी**–ग्रभिचद्र–प्रसेनजित–मरुदेवनइ ग्रन्वयि 'नाभि नरेस्वरकुल–नभस्थल–मयूखमाली।

—व. स.

यसारत–देखो 'इसारौ' (रू. भे.)
उ०—नमे कदम्मा तदि निजर, **यसारत** बरियाम। तदि पाए बैठो मत्री, सभे तीन सल्लाम।

—सू प्र.

यसु–स पु [स ग्रयस्] लोहा। (ग्र मा.)

यसुमति–देखो 'जसुमती' (रू भे)

यसू–वि [स यादृशकम्] जैसा।
उ०—एणी पिरि चीतव (ता) ताहा सगेवरनी तीरि, वरटापति सुदर ता दीठु कनक **यसू** सरीर।

—नळाख्यान

यसोदा–देखो 'जसोदा' (रू भे)

यसोदानदन–देखो 'जसोदानद' (रू. भे)

यसोदेवी–स स्त्री –ग्रनुवशीय सम्राट बृहन्मनस की पत्नी।

यसोधन–स पु–पाडववसीय दुर्मुख पाचाल नामक राजा का पुत्र।

यसोधर–१ भूतकाल के १८ वे तीर्थकर का नाम।
२ भविष्यतकाल के १६ वे तीर्थकर का नाम।
३ देखो 'जसोधर' (रू. भे)

यसोधरा—देखो 'जसोधरा' (रू भे)

यस्टकुटी–स स्त्री –पहाड। (ग्र मा)

यस्टि–स स्त्री–१ लकडी का शस्त्र।
उ०—**यस्टि** सपन, पठमु, हल, मुसल, कुलिस, कातर, करपत्र, तरवारि, कुद्दाल, यत्र, गोफल, डाहिगि, सडासिका, कुहाडी, छिपुस, इति छत्रीस दडायुधानि।

—व स

यह–सर्व [स इद] निकट की वस्तु, व्यक्ति ग्रथवा विचार (सज्ञा) के लिए प्रयुक्त शब्द, जो वह का विपरीतार्थक होता है।
रू० भे०–यह, येह।

यहां–क्रि. वि [स इह] इस स्थान पर।

यहि, यही–सर्व –निश्चित रूप से यह, यह ही।
रू० भे०–यह, येई, योई, योही, यौही।

यहीं–क्रि वि –इस स्थान पर ही।
रू भे –याही।

यहु–१ देखो 'यही' (रू भे)
उ०—क्रोध विरोध भरया सुर केवि रे, निकलक निरदोस **यहु** नित सेव रे।

—ध व. ग्र.

२ देखो 'यह' (रू भे)

उ०—दादू सिर करवत वहै, अग परस नहि होइ। माहि कळेजा काटिये, यहु व्यथा न जाणे कोई।

—दादूवाणी

यहूद–स पु –देश का नाम, जहा हजरत ईसा पैदा हुए थे।

यहूदी–सं पु –१ यहूद देश का निवासी।

२ उक्त देश की एक जाति।

स. स्त्री –३ यहूद देश की भाषा।

वि०–यहूद देश का, यहूद देश सम्बन्धी।

यां—सर्व०–१ इन।

उ०–१ जिकण नू मीणा रा मारण रौ निम्चय जगाइ उणरौ वडौ पुत्र कुभराज तिणहू छोटौ कन्हड **यां** दोही बधवा नू बडी वगत रै साथ वरणनू बुलाइ मीणा रै मावण जिमडौ एक बाडौ जुदौ ही बणायौ। —व भा.

उ०—२ बिलै इग्यारस वरस भगति ऊपरि प्रभ भीजै। पिप्पळ तुळछी पान राम **यां** ऊपरि रीजै। —पी ग्र

२ इन्होंने।

उ०—१ नद राव सब्वैजी कहायौ, 'गढ अठै मती घाळज्यौ, परै जागळू री हद मैं घातौ।" सू **यां** मानी नही। —द दा.

उ०–२ एना आद छतीस कुळ, सीम 'अजो' पत धार। हलचल्ली मेछा धरा, **यां** झल्ली तलवार। —रा. रू

३ इस।

क्रि वि –१ इस प्रकार, इस तरह।

उ०—१ लघु तै दीरघ पुन पुलिन, **यां** मात्रा इधकाय। त्या छोटे न वड किय 'पता', वडे महान बढाय।

—जैतदान बारहठ

उ०—२ महाराजा भामी महळ, नर सुर नागा नूर। कुसळ नही कम केमरै, **यां** दाखै अकरूर। —पी ग्र

२ इससे।

उ०–लग मत्ता चौवीस छद मत्त लेखजै, मुज **यां** अधिका मत उपछद विसेखजै। वरण मत सम नही असम पद जाणजै, वै छदा मिळ दडक मत्त बखाणजै।

—र ज प्र

३ यहा।

उ०—तठै वीरमदेजी रै सामा जोय पातमाहजी फुरमायौ कै वीरम तुम अब तलक **यां** ई हौ। —द. दा

रू भे याह

यांन–स पु [स यान]–१ सवारी, वाहन।

२ विमान।

३ गति, चाल।

क्रि वि.—इस प्रकार, इस तरह।

यांनी–देखो 'यानै' (रू. भे.)

यांनै–अव्य.— मतलब यह है कि, अर्थात।

रू भे —यानी

यांम–देखो 'जाम' (रू. भे)

यांमल–देखो 'जमल' (रू भे)

यांह–१ देखो 'यहा' (रू भे)

उ०—ते सनान तणी चिंता करनु राजा **यांह**, दमन नाम रिमि ईछा आवु मदिर तेणि ताह।

—नळाख्यान

२ देखो 'या' (रू भे)

उ० – पचीसा नू ही कूट मारिया, जानीवासै ऊपर जाय नै जानिया नू कूट मारिया, जानी सोह मारिया, आबू भाई लूणो थौ तठै खबर मेलणी, तितरै एकण **यांह** रै रजपूत कह्यौ—'हू जाईस' नरै कह्यौ 'तू क्यू कर जाईस ? —नैणसी

या–सर्व –यह

उ०—१ मतवाला हो पोढग्या, सुध–बुध दीन्ही भूल। पर हाथा रा हो गया, **या** हिडदा मे सूल।

—अज्ञात।

उ०—२ **या** कहता ही पातसाह री सैन सू वजीर रौ तीर मकुवाण री छाती रै पार फूटौ।

—व भा

उ० – ३ एक अखडी ब्रह्म की, जा घट झिलमिल जानि। हरीया उत्तिम साध की, **या** ही रीत पिछानि।

—अनुभव वांणी

क्रि वि –अथवा।

उ० –मख्व वस तारणी, राम **या** भागीरथी। —रामरासौ

याक–स पु –हिमालय पहाड पर प्राय तिब्बत मे होने वाला एक चौपाया जानवर, जो बोझा ढोने के काम आता है।

याकूत–स पु [अ] एक प्रकार का लाल रग का बहुमूल्य पत्थर।

याग–देखो 'जाग' (रू भे) (डि. को)

यागवलक–देखो 'याग्यवल्क्य' (रू भे)

यागि–देखो 'जाग' (रू भे)

उ०—जो फल पामइ तपसी सवे, जे फळ हुइ वाद छोडवै। जे फल पामइ कीधइ **यागि**, जे फल भेट्या हुइ प्रियागि।

—का दे. प्र

याग्य–स पु –भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

याग्यतुर–स पु –ऋषभ नामक अश्वमेध करने वाले राजा का पैतृक नाम।

याग्यदत्त–स पु –वशिष्ठकुलोत्पन्न याज्ञवल्क्य नामक गोत्रकार का नामान्तर।

याग्यवल्क्य–स पु –१ विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
२ वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
३ एक आचार्य, जो व्यास की ऋकशिष्य परम्परा मे से बाष्कल नामक ऋषि का शिष्य था।
४ एक आचार्य, जिसके आश्रय मे विष्णुयशम् नामक ब्राह्मण के घर, कल्कि नामक विष्णु का ग्यारहवा अवतार उत्पन्न होने वाला है।
५ विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्रो मे से एक।
६ एक प्रसिद्ध ऋषि, जो वैशम्पायन के शिष्य थे।
७ राजा जनक के दरबार मे रहने वाले एक ऋषि, जिनकी पत्नियो का नाम मैत्रेयी एव गार्गी था।
८ योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वशज, एक स्मृतिकार।

याग्यसेनी–स पु [सं] यज्ञसेन की पुत्री, द्रौपदी।

याग्यिक–स पु. [स] यज्ञ करने या कराने वाला।

याचक–देखो 'जाचक' (रू भे)

याचनी–स पु –अमुक वस्तु मुझे दो–ऐसी याचना करने वाला।
(जैन)

याजक–स पु [स] १ यज्ञ कराने वाला।
२ राजा का हाथी।
३ मस्त हाथी।

याजन–स स्त्री [स याजन] यज्ञ की क्रिया।

याजि–स पु –यज्ञ करने वाला।

यातना–स स्त्री [स] १ अत्यन्त शारीरिक कष्ट या पीडा।
२ यम द्वारा पापियो को दिया जाने वाला दण्ड।

यातायात–स पु यौ [स यात+आयात] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया, गमनागमन, आना जाना।
२ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का साधन।

यातुधान–देखो 'जातुधान' (रू भे)

यात्र, यात्रा–देखो 'जातरा' (रू भे)
उ०—१ सिद्ध वडहि सदाई जी, दीपै सुर दाई। प्रगटी पुण्याई जी, जिण यात्रा पाई।
—ध व ग्र

यात्राळू–वि [स यात्रा+रा प्र ळू] यात्री।
उ०—महाराज कोई यात्राळू जाड छै। सीने पौहर हुवो छै। पछै धूप चाढसी, तिगो थी नगारो हुवो छै। कूच हुसी।
जैसा सरवहिया री बात

यात्री–देखो 'जातरी' (रू भे)
उ०—किता केइ सारग माँहि कलेस, आवै केइ यात्री लोक असेस। सरै छै काम तिया मतमेव, दीयै सुख वञ्छित रिसभदेव।
—ध. व ग्र

याद–सं स्त्री. [फा.] १ स्मरण शक्ति, स्मृति।
२ स्मरण करने की क्रिया या भाव।
क्रि प्र –करणी, कराणी दिराणी, होणी।

यादगार, यादगारी, यादगीर, यादगीरी–स. स्त्री. [फा यादगार] स्मृति चिन्ह, स्मारक।
उ०—इण समय मे आवरणे री फळ यादगीर रै बगैर कुछ बाकी नही रहसे।
—नी. प्र.

याददास्त–स स्त्री [फा याददाश्त] १ स्मरण शक्ति, स्मृति।
२ स्मरण रखने के लिए लिखी हुई कोई बात।

यादबगसी–स पु –राजा का एक विशेष अधिकारी।

यादम–स पु [अ आदम] आदमी, पुरुष।
उ०—लाज सरम छोडी नै भागा नै कहण लागा, या री कोई मुनि यादम लडै तो तिण मे लडिये पिण क्या जागा केने ही जगमालि थे।
—गीदोली री बात

यादव–'देखो' जादव' (रू भे)
उ०—भारमिघ राठौडा री भाणेज, भगवतसिंघ नरूका री भाणेज, भारथसिघ यादवां री भाणेज।
—बा दा ख्या

यादवकुळ, यादवकुळि–स पु यौ [स यादव+कुल] यादव वश।
उ०—आदिपुरुष अवतार धरि, यादवकुळि जयवत। असुरवस निकदीउ, ते प्रणमू श्रीकत।
—का. दे प्र

यादवपति–देखो 'जादवपत' (रू भे)
उ०—यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वादवा, नगरी द्वारिका सिणगार। घर घर माहे हो महोच्छव मड रह्यौ, हरस सू जावै नर नार।
—जयवाणी

यादववंश–स पु –यदु राजा का वश, जिसमे श्री कृष्ण हुए थे।
उ०—राजकुली ३६, सूर्यवस, सोमवस, यादववंस, कदब, परमार, इक्ष्वाक, चाहुमान, चालुक्य, मोरी, सेलार संधव······
—व स

याबू–स पु [फा] छोटे डील–डौल का घोडा, टट्टू।

यायावर–स पु [स] १ इधर–उधर घूमने वाला।
२ एक स्थान पर टिक कर न रहने वाला जरत्कारु ऋषि।
३ वह ब्राह्मण जिसके घर पर गार्हस्पत्य अग्नि सदा प्रज्वलित रहती हो।
४ ययरी नामक नागकन्या के वशज, चारण।
रू भे –ययावर।

यार–स पु [फा] १ मित्र, दोस्त।

उ०—श्रौ पतीत पावन प्रभु, इणरी करो उचार। इणि रौ नाम कल्याण छै, श्रौ अरिजण रौ **यार**।

—पी ग्र

२ साथी, मददगार।

३ वह व्यक्ति जिसका किसी स्त्री से अनुचित सम्बन्ध हो, उपपति।

उ०—मालजदा मन माहि राड सूझै दिनराती, मालजादि मन माहि **यार** सूझै अकुळाती।

—ऊ का

४ प्रेमी।

उ०—नैन हमारे **यार** सु, रहीया उलिझि उलिझि। हरीया त्याग ना हुवै, सुलभाया न सुलिझि।

—अनुभव वाणी

यारी—स स्त्री [फा.] १ मित्रता, दोस्ती।

उ०—इण परवाणी साह उचारै, सुगता सितर बहोतर मारै। इण थी जो राखै भड **यारी**, हुवै कमध सुज पचहजारी।

—रा रू

क्रि. प्र.—करणी, होणी।

२ स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।

याळ—स स्त्री [तु] घोडा, सिंह आदि के गर्दन के बाल। अयाल।

उ०—१ कसता विजैसंड कोदंड कथा, बगावै अथा बेर रै जेरबधा। सटा **याळ** जाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नागवाळी लखे दाग पावै।

—व भा

उ०—२ लसै पति पट्टर पिठ्ठ निसक, कसै कर बग्गनि कथ्थुर वक। गुहे कच **यालन** के भरि बन्ध, मिनासिन पीत क नादिक सत्थ।

—ला रा

२ गर्दन।

यालुक—स पु—अनन्त, असीम।

यावनी—स पु—करक शालि नामक ईख, रसाल।

उ०—येठीमधु नट **यावनी**, यवपञ्जडी यवानि। यक्षलता योसिम हरी, यमपद पानि पानि।

—मा का प्र

यास्क—स पु [स] १ निरुक्त नामक सुविख्यात ग्रंथ का कर्ता, जो 'शब्दार्थतत्व' का परम ज्ञाता माना जाता है।

यि—सर्व—ये।

उ०—अग सिंघि चमरी वन माहा नाटा, कमल मीन गया वारि, इद्दु ऊहोलाई **यिनु** गुण गाई स्वाधी हारि।

—नळाख्यान

यिऊं—क्रि. वि—ऐसा, ऐसे।

उ०—नै खापरौ रात पोहर १ पाछली थकी प्रावू निजीक उठै उतरियौ, जाणियौ "हू तौ कुसळै पडियौ, अठै घडी १ बैसा" **यिऊं** उतर बैठो, तितरै धरती फाटण लागी, तरै इण जाणियौ श्रौ कासू हुवै छै।

—नैणसी

यिभ—देखो 'इभ' (रू भे)

यिम—देखो 'इम' (रू भे)

उ०—नारीमाहा **यिम** एक तू छि, पुरुष माहि तेह। विध्या नाद अमूलक ए रत्न सरज्या बेहि।

—नळाख्यान

यिमरत—देखो 'अमरत' (रू. भे)

उ०—अमरत दध नहै तिय अधर, विधु **यिमरत** न बखाण। के जन अजरामर करण, जम हर **यिमरत** जाण।

—र. ज प्र.

यिहां—क्रि वि—यहा।

उ०—नैसध नामि देस मनोहर, वीरसेन वसुधेस। प्राणीमात्र नही को दूखियु, **यिहां** धरमिष्ट नरेस।

—नळाख्यान

यी—सर्व—यह।

उ०—**यी** वरणा रित बोळवी, रीनी सरद श्रद्द। हिम रुत आधी बीच त्यौं, फेर प्रगट्टयौ फद।

—रा रू.

यु—देखो 'य' (रू भे)

उ०—१ जो रागी सोभत री १ गाम मारै नौ रायमल जोधपुर रा २ गाम मारै। **यु** रहता थका दयारी बेध चालियौ जाड।

—नैणसी

उ०—२ तरै राठौड प्रिथीराज वू पावत जैतमाल नै कह्यौ—नु मत रोवै। परमेश्वर कीयौ तौ हू कृपा रै पेट री जो **यु** चद्रसेन नू रोवाडू।

—राव चद्रसेन री वात

युंमल—देखो 'जग्ल' (रू भे)

युक्त—१ देखो 'जुक्त' (रू भे)

२ देखो 'जुगत' (रू भे)

युक्ति—स स्त्री [स] १ साहित्य मे एक अलकार विशेष, जिसमे कोई अपना रहस्य छिपाने के लिये किसी क्रिया द्वारा अन्य को वचन करे (ठगे)।

२ देखो 'जुकती' (रू भे.)

३ देखो 'जुगती' (रू भे)

युक्तियुक्त, युक्तियुत–वि. [स. युक्ति + युक्त] १ युक्ति सगत, ठीक, वाजिब ।

उ०—इत्यादि **युक्तियुत** बच उदार, सत्कार सवन भेजे सु ढार । पय थान करन पोरस प्रकास, पहुच्यौ दळ औरगजेब पास ।

—ऊ का

युग–देखो 'जुग' (रू भे)

उ०— श्रा वस्त्र याहारि ग्रोरसु नाहि थाम् रूप प्रकास । वस्त्र **युग** ने आपिया नि सील दीधी ग्रास ।

—नळाख्यान

युगति–देखो 'जुगती' (रू भे)

युगमंधर–देखो 'जुगमधर' (रू भे)

उ०—पूरब विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठाम, पुडरीकणी नगरी तिहा श्री सीमधर स्वाम, वप्र विजय पच्चीसमी विजयापुर नो नाम, पच्छिम विदेह बीजो **युगमंधर** की जै प्रणाम ।

- ध व ग्र

युगळ, युगल–देखो 'जुगळ' (रू भे)

उ०—इण अवसर श्रीक्रस्णजी, सा ने वदन काज । आवे प्रणमी चरण **युगल**, बेठा श्री महाराज ।

- जयवाणी

युगलियौ–देखो 'जुगलियौ' (रू भे)

उ०—त्रिण कोडा कोडि सागर सुखम बीय अरो, देह दो कोस दोई पल्ल आयु धरो । बोर परिमाण आहार बीजै दिनै, **युगलीया** मानवी एह कहिया जिणै ।

- ध व ग्र

युगवर–देखो 'जुगवर' (रू भे.)

उ०—**युगवर** 'जबू' जेहवउ, रूपइ 'वइर-कुमार' 'पच-नदी' साधी जिगई, सुभ लगन सुभ वार ।

- ऐ जै का

युगांतक–देखो 'जुगातक' (रू भे)

युगादि–देखो 'जुगादि, जुगादी' (रू भे)

युगादिदेव–स पु [स] सृष्टि के आरभ के देवता ।

उ०- समीहितार्थकारी, सर्वातिशयसर्वस्वधारी, व्यवहार पर-मार्थप्रवृत्तिप्रथमावतार, ससारभयभीतभविकजनरक्षावज्राकुर, युगादिकृतावतार **श्रीयुगादिदेव** ।

—व स

युगेस–१ फलित ज्योतिष मे शनि के अनुसार बृहस्पति के साठ वर्षो के राशिचक्र मे पाच-पाच वर्ष के युगो के अधिपति ।

२ देखो 'जुगेस' (रू भे)

युग्मपद–स. पु [स] शृगार मे एक आसन विशेष ।

युतवेध–देखो 'जुतवेध' (रू भे)

युतिस्ट–स पु.—छप्पय छद का एक भेद, जिसमें ३८ गुरु, ७६ लघु से ११४ वर्ण या १५२ मात्राए होती हैं । इसे भुजगम भी कहते हैं

युत्थ–देखो 'जूथ' (रू भे.)

उ०—फनपतिसिंध की करि फलह, बहुरे सुभट समाज । मनु गयदनि **युत्थ** हनि, आये थहि मृगराज ।

—ला. रा

युद्ध–देखो 'जुध' (रू भे.)

युद्धवाद–स पु [स] ७२ कलाओ में से एक ।

युधिस्ठिर–देखो 'जुधिस्ठर' (रू भे)

युरोप–स पु. [अ] पूर्वी गोलार्द्ध मे एशिया के पश्चिम मे स्थित एक महाद्वीप ।

रू० भे०–यूरप, यूरोप, योरोप ।

युरोपियन–स पु [अ] युरोप देश का निवासी ।

वि –युरोप महाद्वीप से सम्बन्धित, युरोप का ।

रू० भे०–यूरोपियन, योरोपियन ।

युवक–वि [स] १६ से ३५ वर्षो तक की अवस्था वाला जवान ।

युवति, युवती–देखो 'जुवति' (रू भे)

युवनासव–देखो 'जुवनासव' (रू भे)

युवराज, युवराजकुमार–देखो 'जुवराज' (रू भे)

उ०—कुवर रूपवत सुकुमाल, सिव भद्र नो वरण सभाल । राज चिता काम-काज, जिण ने पदवी दी **युवराज** ।

—जयवाणी

युवरासी–स. स्त्री –१ एक तीर्थ का नाम ।

उ०—बदरीनाथ केदार गगोतरि, बैजनाथ कैलासी । पचवटी पपापुर रुक्मिणि, देव कपिल **युवरासी** ।

—मीरा

युवा–देखो 'जवाण' (रू भे)

उ० गोपाळ भगत-निवारण प्रभ, परम अभ्रत्त परम्म सु प्रभ । सदा अप्रमाद जोगारणद सिद्ध, नही तू बाळ **युवा** नहि व्रद्ध ।

—ह. र.

युवावरणी–स स्त्री –जवान स्त्री ।

उ०—वय बाळ विहाय **युवावरणी**, कटिवद्ध भयौ करनी करनी । त्रिमना अनुराग विराग वह्यौ, चितव्रत्तिय जोग प्रयोग चह्यौ ।

—ऊ. का.

युव्वनास–देखो 'जुवनासव' (रू भे)

उ०—सुत **युव्वनास** सेसट सवेस, निज हुवौ मानधाता नरेस । पुरु-कुसीमान सुतवस रूप, पुर कुस्ससु तरा सभून भूप ।

—सू प्र.

यूं–क्रि वि.–१ इस प्रकार, ऐसे ।

उ०—१ मत्र सक्ती मत्र यूं, ज्यो तीडी ले जाय। ग्रमग दुबाह 'दुरग' यूं, लेगो साह धकाय।

—रा. रू.

उ०—२ घडी उग त्रवक लागत धाय, चढी चित गीस लेडीपत चाय। मुणे कथ 'पेम' कमध मधीर, धुणं खग बोलन यूं रणधीर।

—पे. रू.

उ०—३ यूं करतां दिन ऊगो। गव मालदेजी गी फौज थाणं ऊपर दोडी।

—नैणसी

रू० भे०—यु।

यूंही—क्रि वि—१ निरर्थक, निरुद्देश्य।

उ०—उनाळा ग चौक मे, चौमासा रा मेडी मे, सियाळा ग ग्रोरियें, पौढावौ म्हाग जोडी ग रतन सियाळी राजन यूंही गियांजी।

—लो गी

रू० भे०—युंही, यूही।

यूथ—देखो 'जूथ' (रू भे)

यूथनाथ—देखो 'जूथनाथ' (रू भे)

यूथप—देखो 'जूथप' (रू भे)

यूथपति—देखो 'जूथपति' (रू भे)

यूथपाळ—देखो 'जूथपाळ' (रू भे)

यूनांन—स. पु.—यूरोप का एक देश, जो एशिया के सबसे अधिक पास पडता है।

यूनांनी—स. स्त्री.—यूनान देश की भाषा।

वि.—१ यूनान देश का निवासी।

२ यूनान देश से सम्बन्धित।

यूनाइटेड—वि. [अ.] मिला हुआ, सयुक्त।

यूनाइटेड किंगडम—स. पु. [अ.] आधुनिक इगलैण्ड, जिसमे इगलैण्ड, स्काटलैण्ड एव आयरलैण्ड शामिल हैं।

यूनाइटेड स्टेट्स—स. पु. [अ.] सयुक्त राज्य, जिसमे छोटे-छोटे राज्य सम्मिलित है।

यूनियन—स. स्त्री. [अ.] कुछ व्यक्तियों का किसी उद्देश्य से बनाया हुआ सगठन, सघ।

यूनिवरसिटी—स. स्त्री. [अ.] उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने की सस्था, विश्वविद्यालय।

यूनीफारम—स. स्त्री. [अ.] किसी विशिष्ट समुदाय के लिए निर्धारित पोशाक, वर्दी।

यूरप—देखो 'युरोप' (रू. भे.)

यूराल—स. पु.—१ एशिया व यूरोप के बीच मे स्थित एक पहाड।

२ उक्त पहाड के आस-पास का प्रदेश।

स. स्त्री.—३ उक्त पहाड से निकलने वाली नदी।

यूरोप—देखो 'युरोप' (रू. भे.)

यूरोपियन—देखो 'युरोपियन' (रू. भे)

यूह—देखो 'जूथ' (रू. भे)

यूही—देखो 'यूंही' (रू. भे.)

उ०—आळस वाळा राजवी घर रा घर मे दारू पी गेटी खाय सूय रैणौ घर रौ काम परोपकार वीरता देम सेवा आदि आछा काम न करणा में वृथा यूही वेस ऊमर गमावै है।

—वी. स. टी.

ये—सर्व. [यह का ब. व.] समीपस्थ वस्तुओं या प्राणियो के लिए प्रयुक्त शब्द।

येई—देखो 'यही' (रू. भे.)

येऊ—अव्य.—यह भी।

येक—देखो 'एक' (रू. भे.)

उ०—ओडणपुर येक येक पुड असमर, हाते मू ठज हात लिया। कोप खधार थके तळ काठा, दाणव भात नवी दळिया।

—महाराणा हम्मीरसिंघ री गीत

येकण—देखो 'एकाण' (रू. भे.)

येकणि—क्रि. वि.—अकेले मे, एकात मे।

उ०—राजा प्रोहित येकणि साथी, वाह लागा पूछइ धनी वात। नयनी रूप मे रूवडी, कोट कोगीसा अत न पार।

—वी. दे.

येकल—देखो 'एकल' (रू. भे.)

येकलौ—देखो 'एकलौ' (रू. भे)

(स्त्री० येकली)

येटलौ—वि (स्त्री येटली) जितना।

उ०—निद्रा वसि छि, सूनी त्यजू, आ वनथी बीजू वन भजू। जागी नहि देखि येटलि, कुडनपुर जसि तेटलि।

—नळाख्यान

येठीमधु—स स्त्री—मुलैठी।

उ०—येठीमधु नइ यावनी, यवपत्रडी यवानि। यक्षलता योसिम हरी यसपद पानि पानि।

मा कां प्र

येण—सर्व—इस।

उ०—अभैदान जेसाग बीकाग अप्पै, तिका आज जोधाग रै राज तप्पै। आई आवडा नाम विख्यात येळा, इद्रबाई जिका येण वेळा।

—मे. म.

येता—क्रि वि—जिस प्रकार, जेम।

उ०—दादू पडदा पलक का, येता अतर होइ। दादू विर ही गम बिन, क्योंकरि जीवै सोई।

—दादूवाणी

येतौ–सर्व (स्त्री. येती) इतना ।

उ०—१ बरुण **येती** कठा आगमू विचारै, चवै इम तरगा सू मूह **चढियौ** । करण दरियाव री रीत लख कैलपुर, पुरदर भरण री चीत पडियौ ।

—महाराणा राजसिंहजी री गीत

उ०—२ ईडर मालीमार ऊपरै, आरण वधारे **येती** । नवकोटी मारवाड खगा नर, सीहै लीध सहेती ।

—श्री आसथानजी री गीत

येम–क्रि वि –१ जिस प्रकार जैसे ।

२ जिससे ।

येलम–देखो 'इलम' (रू भे)

उ०—भावनगर को तुरक यक, सब तुरकन सिरताज । कुमती पटो विनोट क्रत, सब **येलम** उसताज ।

—ला रा

येला–देखो 'एला' (रू भे.)

येलापत, येलापति, येळापती–देखो 'इळापत' (रू भे)

येह–देखो 'यह' (रू भे)

येहड़ौ–सर्व –(स्त्री. येहडी) ऐसा ।

उ०—**येहड़ौ** ज्याग आहडा, इसै तूभ घर बीया न होय । दत देता ग्रीखम दरसाणी, सीत वदीत हुई सगळोय ।

—जोगीदास कवारियौ

उ०—२ चदबदनी मुख चोज हसगति चालबौ, हावभाव रावत हवोळै हालबौ । तार जरी पोसाख बीध तन नेहडी, उदपुरी उणियार विराजे **येहड़ी** ।

— बगसीराम प्रोहित री वात

येहां–अव्य –१ यहा ।

२ ऐसे ।

यं–सर्व –१ इस ।

उ०—भील ही भगत थारै भला, कैसे ना मोजा करै । हस्। मत बूकि विरला हुवै, **यं** रै काजि अवतरै ।

—पी ग्र

२ इन ।

यंसं–क्रि. वि –ऐसा, इस प्रकार ।

उ०—दिन नौ **यंसं** सकुचिवा लागो जैसे रिसाई कौ देखे दास कौ देगहार सकुचं ।

—वेलि

यों–क्रि वि. [स. एवमेव] १ इस प्रकार, ऐसे ।

उ०—१ **यों** कह्यौ, तरै लाडक पण आरे हवौ । तरै तोत करनै रावळ नै लाडक चडमडिया । रावळ लाडक नू खामडौ राख्यौ ।

—नैणसी

उ०—२ राहु गिळै ज्यो चद को, गहण गिळै ज्यो सूर । करम गिळै **यों** जीव को, नख सिख लागै पूर ।

—दादूवाणी

२ उसी तरह, वैसे ही ।

उ०—दादू चंबुक देखि कर, लोहा लागै आइ । **यों** मन गुण इद्री एकसौं, दादू लीजै लाइ ।

—दादूवाणी

सर्व –इसके ।

उ०—रोम रोम रस पीजिए, एती रसना होइ । दादू प्यासा प्रेम का, **यों** बिन त्रस न होइ ।

—दादूवाणी

योंही–क्रि. वि.–१ इसी प्रकार से, ऐसे ही ।

२ देखो 'यू ही' (रू भे)

यो–देखो 'यौ' (रू भे)

उ०—१ जु राति अरु दिन की सधि सध्या वदरा उठै । अर ए वाल अवस्था योवन की सधि उठै । तातै **यो** भाव लियौ ।

—वेलि टी.

उ०— २ जदी रजपूतारणी घणी ही रजपूत है समजावै । पण **यो** मानै नही ।

—पचमार री वात

योई–देखो 'यही' (रू भे.)

उ०—जनम मरण का कारण **योई**, मूल वासना जाणा । ध्यान अग्नि कर जाळी वासना, जन्म मरण मिटाणा ।

—श्री सुखरामजी महाराज

योग–देखो 'जोग' (रू भे)

उ०— ओछा बोल न बोलीइ रे, दिल मे राखी **योग** । बोल बोल वेऊ हस्यारे, हाथ देई तालि जोग रे ।

—प. च चौ.

योगकन्या–स स्त्री [स] यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जो मथुरा लाई गई थी तथा जिसके विषय मे यह मान्यता है कि कस ने उसे मारना चाहा था परन्तु वह उड कर आसमान पर चली गई ।

योगज–स पु [स.] योग साधना की एक अवस्था जिसमे योगी मे अलौकिक वस्तुओं को प्रत्यक्ष कर दिखाने की शक्ति आ जाती है ।

योगजात्रा–देखो 'योगयात्रा' (रू भे)

योगदंड–स पु [स] योगी के हाथ मे रखा जाने वाला डडा ।

उ०—करतल कलित **योगदंड**, स्कधप्रतिष्ठित योगपट्ट प्रसाधित–प्रचड चडिकामत्र, पिसाचसाधन स्वतत्र, साकिनीनिग्रह साहसिक रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलिपलित, वसीकरणि अमूढ, लक्ष खडी चापडीप्रमुख विद्याकुतूहली अ साधक, आकासपातालबंधक ।

—व स.

योगदरसन–स पु. [स योगदर्शन] दर्शनकार महर्षि पतंजलि रचित योगसूत्र ।

योगनाथ–स. पु. [स] शिव ।

योगनिद्रा–देखो 'जोगनिद्रा' (रू. भे.)

योगनिद्राळु–देखो 'जोगनिद्राळु' (रू. भे)

योगनी–देखो 'जोगणी' (रू. भे)

योगनीइग्यारस, योगनीएकादसी–स स्त्री [स योगिनिएकादशी] आषाढ कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

योगपट्ट–स. पु यौ [स. योग+पट्ट] एक प्राचीन पहनावा, जो पीठ पर से जाकर कमर मे बाधा जाता था और जिससे घुटनो तक का अग ढका रहता था, योगियो का पहनावा ।

उ०—करतल कलित योगदड, स्कध प्रतिष्ठित **योगपट्ट**, प्रसाधित प्रचडचडिका मत्र ।

—व. स

योगपति–स पु. यौ. [स योग+पति] १ विष्णु ।

२ शिव ।

योगपदक–स पु. यौ [स. योग+पदक] चार अगुल चौडा एक प्रकार का उत्तरीय वस्त्र जो पूजन आदि के समय पहना जाता है ।

योगपाद–स. पु यौ [स] ऐसा कृत्य जिससे अभीष्ट की प्राप्ति हो । (जैन)

योगपारंग–स. पु यौ [स योग+पारग] शिव, महादेव ।

वि –योग-साधन मे प्रवीण ।

योगपीठ–स. स्त्री यौ [स योग+पीठः] देवताओ का योगासन ।

योगफळ–स पु यौ [स योग+फल] दो या दो से अधिक राशियो को जोडने से प्राप्त होने वाली राशि ।

योगबळ–देखो 'जोगबळ' (रू भे)

योगभ्रस्ट–देखो 'जोगभ्रस्ट' (रू भे)

योगमाता–देखो 'जोगमाता' (रू भे)

योगमाया–देखो 'जोगमाया' (रू भे)

उ०—वेदो चारणा वेकरै गाम रहै कछ्र देस माहे । वेदै रै बडो द्रव्य । सयणी बेटी । महासक्ति **योगमाया** ।

—सयणी री बात

योगमाल–स स्त्री –बहोतर कलाओ मे से एक ।

—व. स

योगमूरतिधर–सं. पु. [स. योग+मूर्तिधर] शिव महादेव ।

योगयात्रा–स. पु. यौ [स योग+यात्रा] यात्रा के लिए उपयुक्त योग (फलित ज्योतिष) ।

रू० भे०–योगजात्रा ।

योगराजगुग्गळ–स. पु. [स योगराज गुग्गल] गुग्गल प्रधान कई द्रव्यो के योग से बनी हुई वात रोग नाशक एक प्रसिद्ध औषधि विशेष ।

रू० भे०–जोगराजगुग्गळ, जोगराजगूगळ ।

योगरूढ़, योगरूढ़ि–सं पु यौ. [स योग+रूढ] दो शब्दो के योग से बना वह शब्द, जो अपना सामान्य अर्थ छोडकर विशेष अर्थ प्रकट करता है ।

योगरोचना–सं. स्त्री. यौ. [स योग+रोचना] इन्द्रजाल करने वालो का एक विशेष प्रकार का लेप जिसको लगाने से आदमी अदृश्य हो जाता है ।

योगवांणी–स स्त्री यौ. [स. योग+वाणी] योग का उपदेश ।

योगवांन–स पु [स योगवत्] योगी ।

योगवासिस्ठ–स पु. [स. योगवाशिष्ठ] वशिष्ठ मुनि का बनाया हुआ वेदान्त शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

रू० भे०–जोगवासिसट, जोगवासिस्ट ।

योगवाही–स. पु यौ [स. योग+वाहिन] भिन्न गुणो की दो या कई औषधियो को एक मे मिलाने योग्य करने वाली औषधि या द्रव्य ।

योगव्रत्ति–स स्त्री यौ [स योग+वृत्ति] योग के द्वारा प्राप्त होने वाली चित्त की वृत्ति ।

योगसक्ति, योगसगती–देखो 'जोगसकति' (रू. भे.)

योगसास्तर, योगसास्त्र–स पु. यौ [स. योग+शास्त्र] पतजलि ऋषि द्वारा रचित योग-साधना पर एक ग्रन्थ ।

रू० भे०–जोगसास्त्र ।

योगसासतरी, योगसासत्री, योगसास्त्री–स पु यौ. [स योग+शास्त्री] योग-शास्त्र का ज्ञाता ।

योगसिद्ध–स पु यौ [स योग+सिद्ध] योग-शास्त्र की सिद्धि प्राप्त कर लेने वाला योगी ।

योगसिद्धि, योगसिधी–स स्त्री यौ [स योग+सिद्धि] योग के द्वारा प्राप्त सिद्धि ।

रू० भे०–जोगसिधी ।

योगसूत्र–स पु यौ [स. योग+सूत्र] पतजलि द्वारा रचित योगशास्त्र के सूत्रो का सग्रह ।

योगांग–स. पु यौ [स योग+अग] योग के आठ अग–यम, नियम, आसन–प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।

योगांत–स पु [स योग+अन्त] ज्योतिष के अनुसार मगल ग्रह की कक्षा के सातवे भाग का एक अश ।

योगांतराय–स पु [स योग+अन्तराय] आलस्य आदि दस प्रकार की बाते, जो योग मे विघ्न डालती हैं ।

रू० भे०–जोगातराय ।

योगागम–स पु यौ. [स. योग+आगम] योग–दर्शन ।

रू० भे०–जोगागम ।

योगाचार–स पु यौ [स योग+आचार] १ योग का आचरण, योग–साधन ।

२ बौद्धों का एक सम्प्रदाय, जो महायान की शाखाओं में से एक है, जिसके अनुसार दीखने वाले पदार्थ शून्य हैं।

योगाभ्यास—सं. पु., यौ. [सं. योग+अभ्यास] योग-शास्त्रानुसार योग का साधन।
रू० भे०—जोगाभास, जोगाभ्यास।

योगाभ्यासी—सं पु. यौ [सं योग+अभ्यासी] योग की साधना करने वाला, योगी।
रू० भे०—जोगाभ्यासी।

योगारूढ़—सं पु यौ [सं योग+आरूढ] वह जिसने अपनी चित्त-वृत्तियों का निरोध कर योगाभ्यास शुरू कर दिया हो।
रू० भे०—जोगारूढ।

योगासन—सं. पु यौ [सं योग+आसन] योग-साधन का एक आसन, योग की मुद्रा या बैठने का ढंग।
रू० भे०—जोगासन।

योगिणी—सं स्त्री —देखो 'जोगणी' (रू भे)

योगिणीपुर—देखो 'जोगणपुर' (रू भे)
उ०—कीयो कुंड सुरताण, मामि मोरउ ग्रहि वरगउ, पदमणि श तू जाउ, काजि करणह ममधउ। भलो न कीयो किरतार, केम गहिलोत बधीजइ, कीयो मंत्र मंत्रीया, राय राखवि त्रिय दीजइ। तदिन जीभ खडवि मरउ, योगिणिपुर नवि दीखसउ। पदमिणी नारि इम उच्चरइ, अब कह सरणागति पइठिसिउ।
—प च चौ

योगिनिद्रा—देखो 'जोगनिद्रा' (रू भे)

योगिनी—देखो 'जोगणी' (रू भे)
उ०—तव तूठी योगिनी, हुई प्रसिद्धि प्रसनी, ब्रह्मा रुद्र करि वाच वाच निस्चल करि दीन्ही। जिहा हकारउ मोहि, तोहि सानउ करि जागइ, आदि अंत उतपत्ति, विगति तौ सह पीछानइ। आस्थान आप जोगिन हइ, विप्र पथ आश्रम करयउ, आगद अग ऊलट घणउ, तब धीनी गढ सचरयउ।
—प च चौ

योगिराज—स पु. [स. योगी+राज] योगियों में श्रेष्ठ या बड़ा योगी।
रू० भे०—योगीराज।

योगींद्र—देखो 'जोगिंद्र' (रू भे)

योगी—देखो 'जोगी' (रू भे.)

योगीकुंड—स. पु [स] हिमालय का एक तीर्थ।
रू० भे०—जोगीकुंड।

योगीनाथ—स पु. [स] शिव, महादेव।
रू० भे०—जोगीनाथ।

योगीराज—देखो 'योगिराज' (रू. भे)

योगीस, योगीस्वर—देखो 'जोगीस' (रू. भे.)
उ०—और जिकेइ विरोधी न था त्याह स्रीनारायण को स्वरूप जाण्यौ। वेद का अरथी था। त्याह कह्यौ मूरत वंद वेद आयौ योगीस्वरां जाण्यौ जोग तत योही।
—वेलि

योगीस्वरी—देखो 'योगेस्वरी' (रू. भे.)

योगेंद्र—देखो 'जोगिंद' (रू भे)

योगेस, योगेस्वर—देखो 'जोगीस' (रू भे.)
उ०—१ जैसे योगेस्वरां कै माया का पटल दूरि वै छै। तैसौं ही तो रात्रि दूरि हुई छै। अर प्राणायाम योगेस्वरा का इहै जोति प्रकास हुऔ।
—वेलि
उ०—२ तपनि तू माधव दीठउइ, पीवु माधव-प्रेम। नारि निमेस धरी रही, जगि योगेस्वर जेम।
—मा का प्र.

योगेस्वरी—स. स्त्री [स योगेश्वरी] दुर्गा, देवी।
रू० भे०—जोगेसरी, जोगेस्वरी, योगीस्वरी।

योग्य—वि. [स] १ उपयुक्त, ठीक।
उ०—सिवाणौ गढ सीह लकौ है, सरणियळ जायगा है, और किलौ कडनोडौ है जिणसूं राजवियां रै रहणा योग्य नही।
—नैणसी
२ लायक, काबिल। ३ प्रवीण, होशियार। ४ विद्या, शील, गुण, शक्ति आदि से सपन्न, श्रेष्ठ। ५ दर्शनीय, सुन्दर। ६ आदरणीय, सम्माननीय। ७ उचित, ठीक, मुनासिब।
रू० भे०—जोग्य।

योग्यता—स स्त्री [स] १ योग्य होने की अवस्था या भाव। २ क्षमता, सामर्थ्य। ३ लायकी, काबलियत। ४ विद्वत्ता। ५ गुण, सिफ्त। ६ ठीक या अनुकूल होने का भाव, उपयुक्तता। ७ शक्ति, सामर्थ्य, औकात। ८ बड़प्पन, महत्ता। ९ इज्जत, प्रतिष्ठा।

योजक—वि. [स] जोडने या मिलाने वाला।

योजन—स पु [स] दूरी का एक माप, जो दो कोस, चार कोस, या आठ कोस का होना है।
उ० भिक्खु अणगार निज नाम मन सुद्ध भणौ, तीन गढ छत्र त्रिण राज त्रिभुवन तणौ। वचन गुप्ते वली नाम वाचयमा, योजन वाणि सु गाजै ज्यारू समा।
—ध. व ग्र
रू० भे०—जोजन।

योजनगंधा—स स्त्री. [स] १ व्यासमाता सत्यवती का नामान्तर। २ कस्तूरी। ३ सीता।
रू० भे०—जोजनगधा।

योजना–स. स्त्री. [स] १ किसी कार्य को निष्पन्न करने हेतु प्रस्तावित कार्यक्रम। २ व्यवस्था, आयोजन। ३ प्रस्ताव। ४ प्रयोग, इस्तेमाल।

योतिस–देखो 'ज्योतिस' (रू. भे.)

उ०—दिन थोडे दिल्ली गयौ, नगर हुवौ जस नाम लाल। **योतिस** जाणी अति घणी मन।

—प. च. चौ.

योत्राड़णी, योत्राड़बौ–क्रि. स. [स. युज्]–जुताना, जुतवाना।

उ०—रामसिंघजी कन्है जाइ अर कहियौ। पधारौ ज्यूं म्हारा गाडा **योत्राडि** अर म्हा ही नू साथि ले आवौ।

—द. वि

योत्राड़ियोड़ौ–भू का कृ–जुताया हुआ।

(स्त्री. योत्राडियोडी)

योनि–स स्त्री. [स] १ स्त्री की जननेन्द्रिय, भग।

२ उद्भव स्थान, जिसमे कोई वस्तु पैदा हो।

३ खान।

४ देह, शरीर।

५ उक्त के आधार पर प्राणियो के विभाग या वर्ग।

वि वि पुराणानुसार ८४ लाख योनिया कही गई हैं—जलचर ६ लाख, मनुष्य ४ लाख, स्थावर २७ लाख, कृमि ११ लाख, पक्षी १० लाख और चौपाये २३ लाख।

६ जन्म।

७ जल, पानी।

८ अंत करण।

९ पुराणानुसार कुश द्वीप की एक नदी।

रू० भे०–जूण, योनी।

योनिकंद–स स्त्री. [स] योनि मे एक प्रकार की गाठ हो जाने का स्त्रियो का रोग, जिसमे रक्त या पीब निकलता रहता है।

योनिजंत्र–देखो 'योनियत्र' (रू भे.)

योनिफूल–स पु यौ [स योनि+फूल] योनि के अन्दर की एक ऊभरी हुई गाठ जिसके ऊपर एक छेद होता है जिसमे वीर्य गर्भाशय मे जाता है।

योनिभ्रंस–स. पु. [स योनिभ्रश] गर्भाशय का अपने स्थान से कुछ हट जाने का योनि का एक रोग।

योनियंत्र–स. पु. [स.] गया, कामाक्षा आदि कुछ विशिष्ट तीर्थ स्थानो मे बने हुए सकीर्ण मार्ग जिनमे से निकलने पर मोक्ष–प्राप्ति होना माना जाता है।

रू० भे०–योनिजत्र।

योनिसंकोचन–स पु. यौ [स. योनि+सकोचन] १ योनि को सिकोडने की क्रिया।

२ ऐसी औषध जिसके प्रयोग से योनि संकुचित हो जाती है।

योनिसूळ–स. पु [स. योनिशूल] बहुत पीड़ा होने वाला योनि का एक रोग।

योन्यासन–स. पु. यौ. [स. योनि+आसन] योग के ८४ आसनो के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमे उपस्थ को संकुचित करके उस पर बाये पाव की एडी सम्यक प्रकार से स्थापित करके बाई जाघ पर दाहिने पाव को रखा जाता है तथा दोनो हाथो के अगूठे, तर्जनी और मध्यमा से अनुक्रमवार दोनो तरफ के कान, आख और नासा पुटो को बद किया जाता और दृष्टि को भ्रूमध्य रखकर स्थिर होकर बैठा जाता है। इससे इन्द्रिया, प्राण और चित्त का रुधन होता है।

योरोप–देखो 'युरोप' (रू भे)

योरोपियन–देखो 'युरोपियन' (रू भे)

योसा–स स्त्री [स योषा] युवती, नारी।

योही–देखो 'यही' (रू भे.)

उ०—**योही** भवरजी सीकरी गायी रौ देस, नाहर थोडा सरवर बौ घणा जी म्हारा राज।

—लो. गी

यौं–क्रि. वि–ऐसा, ऐसे, इस प्रकार।

उ०—छुभा रूप छवि परख, सरव जख वदन सुरगे। **यौ** लागे रस रूप, अखिर फिर कागद अगे।

–रा रू

यौ–सर्व–१ यह।

उ०—अब मोहि दरस दिखाव माधवे, **यौ** औसर लाभे नाही। दिन दिन घटती जाय माधवे, प्रीति घटै तो जिनि मिळौ।

ह पु. वा

क्रि. वि–२ ऐसे, इस प्रकार।

उ०–१ इसमै 'अभमाल' का प्रताप देखि इद्र का गरब भजै। नरइद की कीरति सुणि सुरिंद्र **यौ** लजै।

—सू प्र

उ०–२ आद कठ चव अखिरा, अत दोय ठहराव। **यौ** सुबध घट अखिया, बिगडै कठ बणाव।

—र. ज प्र

रू० भे०–यो।

यौगिक–स पु. [स] १ वह शब्द जो प्रत्यय एव प्रकृति से बना हो।

२ अट्ठाईस मात्राओं के छदों की सज्ञा।

वि–१ मिला हुआ, मिश्रित।

२ योग अर्थात् जोड़ से सम्बन्धित।

यौध–देखो 'जोध' (रू. भे)

उ०—राजा पूछे कुण नमे रे, तब वनि ते कहे यौष। 'कनक-केतू' रा रजपूत छा रे, नमे कीवी बात अमोचोरे।

—जयवाणी

यौवनियौ—देखो 'जोबन' (अल्पा. रू भे.)

उ०—बित्त धरज्यौ धरम चाह, **यौवनियौ** ।। आकरणौ ।। प्यार दिना री एह चटक छै, नेट नही निरवाह।

—ध व. ग्र

यौवंन, यौवरण—देखो 'जोबन' (रू. भे)

उ०—१ भीम राइ अवनी मुगु रे, पुत्री नि पीडा नन। विहिवा नु समय थयु रे, अबला थई **यौवंन**।

—नळाख्यान

उ०- २ मु एह तीन बाळक अवस्था माहे मु ग्रे छै। नै **यौवरण** आपे जागे छै।

—वेलि टी

यौवन—देखो 'जोबन' (रू. भे.)

उ०—**यौवन** वय आव्या थकां, कीवी सगाई अभिरांम। 'द्रुय' राजा नी पुत्रिका, 'प्रभावती' इण नाम।

—जयवाणी

यौवनी—वि.—यौवनसपन्न, यौवनयुक्त।

उ०—दादू मन पगुळ भया, सब गुण गये बिलाइ। है काया **नवयौवनी**, मन बूढा ह्वै जाइ।

—दादूवाणी

यौही—देखो 'यही' (रू. भे.)

उ०—जोग पथ पग मनि धरै, धरै तो सीस उनारि। हरीदास जन यू कहै, **यौही** अरथ विचारि।

—ह. पु वा.

र

र—स पु. [स] देवनागरी लिपि की वर्ण माला का सत्ताईसवा व्यजन, जिसका उच्चारण स्वर और व्यजन के मध्यवर्ती तथा जीभ के अग्र भाग की मूर्द्धा के साथ कुछ हलकासा स्पर्श करने से होता है।

रंक—वि. [स रक, रङ्क] १ गरीब, निर्धन।

उ०—१ जग माही जमवत री, सीधी हुती सुभाव। दिन उज्जळ नहि बदळती, **रक** मिळी चाहै राव।

—ऊ का

उ०—२ डोकरी काची-अठै वा बात कोनी भाया, सगळा नै दूध एक सरीखो मिळै, चाहै राजा व्है चाहै **रंक**, अर चाहै कोई लखपती सेठ-साहूकार व्है, चाहै कोई नोटायतो।

—फुलवाडी

उ०—३ ताजदार बैठो तखत, रज मे लोटै **रंक**। गिर्णे दुवानू हेक गत, निरदय काळ निसक।

—बा दा.

उ०—४ रोळै लेरा लक रा निसक रा विभाड राम, हाथा झोक **रंक** रा लक रा देग हार।

—र ज प्र

२ दरिद्र कगाल।

उ०—**रंक** कुकवि दोनू रहै, कोस हुत सो कोरा। आखा सुपन अलक्रुती, होरा नर्णो नह होस।

—बा दा

३ भिखारी, फकीर।

उ०—माया पापनि पैस करि, कीया कळे जै घाव। हरीया बौह बळवत सु, **रंक** न पहुचै राव।

— अनुभव वाणी

४ कृपण, कजूस।

उ०—स्वालिक मिळीया खिल खुसी, हरीया होय निहाल। पानै पडीया **रंक** कै, कौटी बदळै लाल।

— अनुभव वाणी

५ क्षुधा पीडित, भूखा।

६ नीच।

उ०—निकै **रंक** चडामिराज रा कुळ री कन्या किरण रीति लहै।

— व. भा

७ आलसी, सुस्त।

८ उदास, सुस्त।

रू० भे०—रकि, रकु, रकू, राक।

अल्पा रको

रंकता—स स्त्री [स रक+ता प्र] १ गरीबी, निर्धनता।

२ कृपणता, कजूसी।

३ नीचता।

रंकार—स स्त्री—१ राम नाम का जाप, स्मरण।

उ०—हुए गळतार **रंकार** सुख हैकपै। तानवा ग्राह बळ साह तूटा।

—द दा.

२ उक्त जाप करते समय मुह से निकलने वाली ध्वनि।

उ०—रसना नख चख रीच मैं, रोम रोम **रंकार**। जन हरीया सुख ब्रम का जहा नही मकार।

— अनुभव वाणी

३ राम-नाम।

उ०—सब अख्यर सहजा पढै, पढि पढि मिटया सनेह। एक सबद **रंकार** हुय, हरीया अगम अछेह।

—अनुभव वाणी

रंकि—देखो 'रंक' (रू. भे.)

उ०—ससि-वयणी को सुंदरी, चाली चित्रा नंकि। चंद्रोदय चक्कवि गरणी, रोयरिंग लागी रंकि।

—मा. कां. प्र

रंकु, रंकू—स पु [स. रंकु] १ एक प्रकार का हरिण जिसकी पीठ पर सफेद चित्तियां होती हैं।

२ मृग, हरिण। (ह. ना. मा.)

३ देखो 'रंक' (रू भे)

उ०—कुंडल सरिसउ लाधउ वालौ, रंकु लहइ जिम रयण झमालौ। तिणि दिणि दीठउ सुमिणइ सूरौ, अम्ह घरि आविउ पुन्नह पूरौ।

— मानिभद्र सूरि

रंकौ—देखो 'रंक' (अल्पा. रू भे)

उ०—लोक जठै रंकौ नहीं, नह सकौ परथाट। मोटा जस डंको घुरै, पाधर वकौ, घाट।

—बा दा

रंगंगण, रंगंगणि, रंगंगणौ—स पु [स रंग+अंगणम्] १ रंगमंच, अभिनय स्थल।

उ०—नृप आयस लही वर वेस, रंगंगणि कीधउ प्रवेस।

—हीराणंद सूरी

२ युद्ध भूमि, रण भूमि।

रंग—स पु [फा, स] १ दृश्य पदार्थ का वह गुण जो उसके आकार या रूप से भिन्न होता है और जिसकी अनुभूति आंखों से की जाती है, वर्ण।

वि० वि०—वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि रंग वास्तव में प्रकाश की किरणों में ही होता है और वस्तुओं के भिन्न रासायनिक गुणों के कारण ही हमारी आंखों को उनका अनुभव वस्तुओं में होता है। किसी वस्तु पर पडने वाले प्रकाश के तीन भाग होते हैं—पहला वह भाग जो परावर्तित हो जाता है, दूसरा जो वर्त्तित हो जाता है तथा तीसरा वह जो उस वस्तु द्वारा सोख लिया जाता है। परन्तु सभी वस्तुओं में ये गुण समान रूप से नहीं होते। कुछ पदार्थ ऐसे होते हैं, जिनमें से प्रकाश परावर्तित नहीं होता—या तो वर्त्तित होता है या सोख लिया जाता है। जैसे—शुद्ध जल। ऐसे पदार्थ प्राय बिना रंग के होते हैं। जिन पदार्थों पर पडने वाला सारा प्रकाश परावर्तित हो जाता है, वे श्वेत दिखाई पडते हैं। जो पदार्थ अपने ऊपर पडने वाला सारा प्रकाश सोख लेते है, वे काले दिखाई देते है।

प्रकाश का विश्लेषण करने पर पाया गया कि उसमे अनेक रंगो की किरनें मिलती हैं, जिनमें ये सात रंग मुख्य है—बैंगनी, नीला, श्याम या आसमानी, हरा पीला, नारंगी और लाल। जब ये सातो रंग मिलकर एक हो जाते हैं तब हमे सफेद दिखाई देते हैं और जब इन सातो मे से एक भी नहीं रहता, तब हम उसे काला कहते हैं। किन्ही दो रंगो के सम्मिश्रण से एक तीसरा रंग बन जाता है और कुछ रंग एक दूसरे के परिपूरक भी होते हैं। बाजार में मिलने वाली बुकनियो के नियम प्रकाश के नियमों से भिन्न होते हैं।

२ कुछ विशिष्ट रासायनिक क्रियाओ से बनाया जाने वाला वह पदार्थ जिसे द्रवमान करके किसी वस्तु, (विशेष कर वस्त्र) को रंगा जाता है। (Colour)

उ०—१ चल रंगरेजा से नहि चाहू, भल नहि सोभा भग। अनमिल देखिर जळै अंग मे, राड कसू मल रंग।

—ऊ का

उ०—२ घसीजै केसर चंदन घोल, रचीजै पूज सदा रंग रोल। अवल्ले फूले धूप उखेव, दीयै सुख वछित रिखभदेव।

—ध. व. ग्र.

उ०—३ नाई सिमकारी न्हाकतौ बोल्यौ—यू स्हाचो काई अदाता। केस कोई चिपकयोडा थोडाई है। रंग देखो तो भवरा नै मात करै।

— फुलवाडी

३ रूप, स्वरूप।

उ०—रमै तू राम जुवा धरि रंग, तु ही ज समद तु ही ज तरंग। अनोअन माय तुहाळौ अम, हमे न ममाय छतौ थयौ हम।

—ह र

४ शरीर का वर्ण।

उ०—गोचर रूप न रंग न रेख, अगोचर अम्रन कूप अलेख। थिरा नभ थावर जंगम थान, महा पद आपद मान अमान।

—ऊ का

५ छवि, नूर, सौन्दर्य।

उ०—चढतै जोवन रंग चूवै, पायल वाजै पाय। चालै सुंदर चोहटै, जाण पटाभर जाय।

— अज्ञात

६ रौनक, शोभा, ठाट।

७ अनुराग, लगाव, इश्क।

उ०—१ जठै किसतूरी पाणा रा वध पळाण्या। रे तो निदर सा भवर रसिया मिजमान जाण्या। जठै पारसी म बोली, पना वधाई दीनी, मन चायो आयो रंग भीनी।

पना

उ०—२ माळवगढ राजा मुंध, कुंवरी माळवणीह। ढोलइ तिणा वहु प्रीति छइ, अति रंग नेह घणीह। — ढो मा.

उ०—३ हरीया मो दिन बार थिन, ग्राय मिळै सतसंग। ग्रब तो चढ़ै न ऊतरै, लागा हरि का रंग।

—अनुभव वाणी

उ०—४ अगा तक राग रंग राता, प्राग गयो मृग रीभियै। मैंगळ मद मतवाळा अधा, स्परस स्वाद बंदीजिय।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—५ गोता री परणी प्रिया, रातै तिण सु रंग। मील धरै न करै मही, पर स्त्री प्रसंग।

—ध व ग्र

७ हर्ष, आनन्द, खुशी, प्रसन्नता।

उ०—१ राम गये बनवास, साथहि सब रंग ले गये। ले गये (म्हारी) काया को सिणगार, तुळसी की माळा दे गये।

—मीरां

उ०—२ स स वासंमि थरीस्रा थड़ी, सिद्ध स पुरिसि सिरा। वांछित पामीउ वल्लह, हु ग्रवधारिसि रंग।

—मा कां प्र

उ०—३ मीरां का पिवजी घरां न वसत है, म्हारा वसै परदेस। मीरां की तीज सुरंगी हांसी, म्हारे घर रहसी रंग काचो।

—लो गी

उ०—४ दैव बरस्या लागी छै, गोठां जीम रंग करौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ रंग बिण ब्याह, वेग बिण गमनि, सुंदरि बिण ग्रिह वास जिसौ। गुरलाण कहै वनियाण ससोभ्रम, त्याग पखै कुळ जनम तिसौ।

—अज्ञात

८ रति क्रीड़ा, संभोग मैथुन, केलि।

उ०—१ राजा रूप न रीभियै, माथा बडु नहि काम। थे राण्या सु रंग करो (म्हे) धूड़ धमासा माय।

—जमसाद जाडेजा री वात

उ०—२ लोग गावण लू बियौ, घोरां घण घररांय। सागीगर रंग माण अब, प्याला भर मद पाय।

—अज्ञात

उ०—३ अकबर रत्ता राग सू, रंग त्रिया रस लुद्ध। जा उनमत प्रगाढ़ियो, सा सुणियो निस ग्रद्ध।

—रा रू

उ०—४ मैं म्हारा बालम खेलस्यां जी कई रंग ढोल्या रै बीच। बादळी बरसै क्यूं नी ए, बीजळी चमकै क्यूं नी ए।

—लो गी

उ०—५ राज बिना हकीकत की ही मो म्हे तो जावस्यूं। रंग भोग विलास करनै अलोप हुई।

—बीरमदे सोनगरे री वात

९ सुख।

उ०—दादू रंग भर खेलू पीव सौं, तह बारह मास बसंत। सेवक सदा अनंद है, जुग जुग देखूं कंत।

—दादूवाणी

१० उत्सव।

उ०—राजा मिळ नाम थापीयो, कवर रीसालू नाम बै। घर घर रंग वधावणा, त्रिप घर मंगळ गान बै।

—रीसालू री वात

११ नृत्य, गायन।

उ०—१ राग छत्तीसं होवती जी, मादल ना थोंकार। नाटक विध बत्तीसना जी, रंग विनोद अपार।

—जयवाणी

उ०—२ रंग राग विनोद विमानस्य बहुय। चढि चाडति सुंदर मिदस्य सहुय। सिणगारक कुंदण ककरणस दिपत, मोताहळ हार विभूखणस वणित।

—गु रू ब.

१२ अभिनय।

१३ खेल, तमाशा।

उ०—अरस गुलाब अबीर उडायौ, सरस पिचरका छिब सरसायौ। वीर नाद मोट चंग बजायौ, रंग फाग सम जग रचायौ।

—ऊ का

१४ अभिनय का स्थान, रंगमंच।

उ०—बजि म्रदंग चंग रंग उपंग वारंग, अनंग छबि चंग उमंग अंग अंग। त्रिभंग रति बहु तरंग रंग रंग, रंजत नृप अंग सुरंग चतुरंग।

—सू प्र

१५ सभा स्थान।

१६ वेश्या, गणिका। (अ मा)

१७ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

उ०—रंग राग बाग अगराग सू न कीजै। पातिसाह महंमद साह चिंता मै छीजै।

—रा रू.

१८ युवावस्था, यौवन।

१९ मन की मर्जी, मन की मौज।

उ०—१ खत्रवट चलै 'जसौ' खेडेचौ, डिगियौ ब्रह्मंड भुजा डहै। रंग पारकै न रीझै राजा, राजा रंग आपरै रहै।

—गु रू ब

उ०—२ मानस कोई सरळ रौ नाव नही लेवै आप आप रै रंग रहै।

कुंवरसी सांखला री वारता

२० नशा, मस्ती ।

उ०—अपणाया कर एक जको बळ जुध सू आगो। रेवत-नैणा बिब-सुरा रै रंग न लागो।

—मेघ

२१ स्वभाव, प्रकृति ।

२२ दशा, हालत, ढग, अवस्था ।

उ०—अठै रह कासू बफादारी लेयस्या। हालो घरा हाला। मो सूरै इसडो रंग खीवै री दीठो, जे सगा सू विकार पैदा हो बिगाड हुवै ।

—मूरे खीवै काधळोत री बात

उ० – २ कुवरसी कही तीज रै दिन आयमे तो खरो पण की ठाव आऊं इठै तो ओ रंग छै।

—कुवरसी साखला री वारता

२३ चाल-ढाल, गति-विधि ।

उ०—मागस एक खोखर रै गाव मेल्ह खबर मगाई-जे उहा रै किनरो'क लोक कुण कुण काम आयो। कासू रंग विचार छै, सो सारी खबर लेय आवो। सो मागस उठै जाय खबर रंग देख पाछो आयो। —मूरै खीवै काधळोत री बात

२४ ढग, आसार, हालात, वातावरण ।

उ०—१ करनाळ बजावा जिण वखत मताव आतज्यो। नही तो देखो जसी रंग वरतज्यो।

—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ जे रंग दीठो तो कजियो करस्या, नही तो रग देख बरतस्या ।

—भाटी सुदरदास बीकूपुरी री वारता

२५ व्यवहार ।

उ०—तद सुलतान री रंग फोट कही-ठाकुरा, पटायन चाकर दरबार रा छो, आ कासू कही। अठै तो बकरी म्हारै भावै हाथी छै।

—अमरसिह गजसिहोत री बात

२६ प्रभाव, असर, रौब ।

उ० —१ वृढिया ओलो खावै पण गोमदो गाव रा आवा काम पूरा करणा चावै। पण अटकळ जाणे न ढग, कोरी करडावण रो रंग ।

—दमदोख

उ० --२ जे जन हरि के रग रगै, सो रंग कदे न जाइ। सदा सुरगै सत जन, रग मे रहे समाइ ।

— दादूवाणी

२७ गौरव, प्रतिष्ठा, मान, इज्जत, ।

उ० — बाधै तै बार किना बळिराव, बिरोयो दाणव केना वाव। जीत्यो तै बार किना बळ जग, रहावण तात जनेता रंग ।

— ह र

२८ धन्यवाद, साधुवाद, शाबासी ।

उ०—१ रंग देऊं वा नरा काछ रा पूरा काठा। रंग देऊं वा नरा माछ्र देवण हिय माठा।

—ऊ. का.

उ०—२ तद साहजादे ऊपर सू तरवार भलाई सो लेय गौड आय पहुचो कहियो-रंग छै, राठौड था बिना हिंदुवा री मरजाद सरम कुण राखै। यू कहि जाय पोहच्यो सो ड्योढी माहे निसरतै नै बाही सो खवे आय बाजी

—अमरसिंह गजसिहोत री बात

उ०—३ कट पडियौ ठाकर कनै, अपछर बरियौ अग। मग लडघौ सुरनाग रै, (उग) 'रूपावत' नै रंग ।

—अज्ञात

उ०—४ भड भडै के लडथडै भारथ, अडै के अखडैत। बड बडै के हडहडै बीजळ, जडै के जरदैत। अडवडै के धडहडै आमत, जुडै के कज जैत। विच समर हेकण घडै राघव, वडै रंग बिरदैत ।

—र ज प्र.

२९ कृपा, अनुग्रह ।

३० जोश, आवेश ।

उ०—ताजण लाग्या ताजणा, मरदा कै खटक्या बोल। रजपूता के रंग चढ्यो, वै ढुळक्या कायर लोग ।

डूगजी जवारजी री छावळी

३१ युद्ध, लडाई ।

उ०—१ कहियौ हमि हाडै कवर, गिणौ न सो जिम 'गग'। आज निमा न जडा अरर, रूपगो सोनै रंग ।

व भा

उ०- २ दोनू ही साहिब म्हारी पीठ पाछै खडा रहो ललकारा करो। चाकरा रो रग देखा।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

३२ युद्ध भूमि, रणागन ।

३३ पानी, जल । (ना० मा० को०)

३४ चौपड के खेल मे गोटियो की वह दशा, अवस्था (रग) जो जीत की प्रतीक मानी जाती है।

३५ ताम के पत्तो के चार रगो मे से कोई एक जो काट माना जाता है।

३६ वह घोडा, जिसके मुख पर हरिन के से रग के चकते होते है।

(अशुभ)

३७ तरह, भाति, प्रकार ।

उ०—१ केहास विह धज रंग कन्न। प्रतहास सौस रिम चहर पन्न।

—सू प्र

उ० २ निमग रिन अग करग लादग। रग तरग वह नरग रग रंग।

— सू प्र

३८ रागा नामक धातु।
३९ सुहागा।
४० किसी विशेष अवसर पर अफीम की मनुहार के समय, अद्भुत व विलक्षण या आदर्श के कार्य करने वाले किसी व्यक्ति की प्रशसा में पढा जाने वाला दोहा, सोरठा, छप्पय इत्यादि।

उ०—१ ईस उमा अरधग, भर प्यालों में भग रौ। रंग हो 'भारथ' रग, उग वेळा दै आपनै। असला रा उछरग, गळिया गळिया भोगणा, रंग हो 'भारथ' रग, उग वेळा दै आपनै। गोविंद विरादर सग, प्याला मद पावै पिवै। रंग हो 'भारथ' रंग, उग वेळा दै आपनै।

—ला रा

वि० वि० एक प्रथा के अनुसार मांगलिक अवसरों पर-विशेष कर दीपावली, होली व अक्षय तृतीया इत्यादि पर राज दरबारों, रजवाडो या सामतो (ठाकुरो) के यहा अमल गाला जाता था। उस समय राजा या ठाकुर सर्व प्रथम अपने चारण-कवि को अमल की मनुहार अपने हाथ से करता था। तब वह कवि मनुहार लेने से पूर्व उन व्यक्तियो की प्रशसा मे दोहे या सोरठे कहता कि जिन्होने समाज हित मातृ भूमि की रक्षार्थ या किसी आदर्श के लिये अथवा स्वामीभक्ति मे अद्भुत रूप से प्राणोत्सर्ग किया हो। जैसे - निमाज के ठाकुर सुरतानसिंह पर महाराजा मानसिंह का कोप हुआ और महाराजा ने ठाकुर की हवेली पर अपनी सेना भेजकर तोपो से हमला कर दिया। उस समय सयोग वश वहा एक स्पावत शाखा का राठौड राजपूत सुरतानसिंह की हवेली पर आया हुवा था और उसने वहा की दाल खा ली थी। उस दाल के बदले अथवा उससे खाये हुए नमक का बदला चुकाने के लिये वह स्पावत महाराजा की सेना से लडा और अपने प्राणो का उत्सर्ग करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ। इसलिये उपर्युक्त अवसरो पर उस स्पावत की प्रशसा मे दोहे कहे जाते हैं -

कर चढियो ठाकर करे, अपछर वरिया अग।
सग लडयो सुरतारा रै, (उग) 'स्पावत' नै रग।

ऐसे ही अनेको उदाहरण इतिहास मे और भी मिलते है।

मुहा०—१ रग आणौ किसी वस्त्र या वस्तु पर किसी रग विशेष का लगना या चढना। नशा आना। जोश आना। क्रोध आना। मस्ती आना।
२ रग उडणौ- धूप या हवा के कारण किसी वस्त्र या पदार्थ का रग फीका पडना। होस-हवास खो बैठना। कान्ति या आभाहीन होना। फीका पडना।
३ रग जमणौ=वस्त्र या वस्तु पर कोई रग ठीक बैठना। किसी उत्सव का ठाट जमणा। मस्ती आना।
४ रग फिरणौ=मन मुटाव होना। अन्तर पडना। स्वभाव, प्रवृत्ति या वातावरण बदल जाना।
५ रग फोडणौ—झगडा करना। क्रोध करना। दुर्व्यवहार करना।
६ रग मे आणौ=मस्ती मे आना, प्रसन्न दिखाई देना। जोश या आवेश बढाना, क्रोध करना।
७ रग रैणौ=प्रेम या मेल रहना, इज्जत या मान रहना।
८ रग लागणौ=प्रेम होना, ईश्वर भक्ति मे मन का लगना। किसी कार्य की धुन सवार होना।
रू० भे० रगि, रगी।

रग-आंवास—स पु [स रग+आवास] रग महल, केलि गृह।
उ० जेथि **रगआंवास**, तेथि क्रीडति कुरगह। जेथि नृपति बैसता, तेथि उडत विहगह।

—गु रू ब

रंगकार—स पु [स रगकार] १ चित्रकार।
उ० **रगकार** तैलार बिनु, चिनु कलार दरवेस। सार वध 'लावै' समुर, पुर नहि करत प्रवेस।

—ला रा

२ वस्त्र रगाई आदि का कार्य करने वाली एक जाति या वर्ग।
३ उक्त जाति का व्यक्ति, रगरेज।

रगकेळ, रंगकेळि—स स्त्री [स रग+केलि] १ रति क्रीडा, मैथुन।
उ० गुरू गुर ह चिरजीव, जिग जोडी रा मेळ। ह तरगी थू तरग पिव, करजै रस **रगकेळ**।

—अग्यात

२ आनन्द, मौज।
रगक्षेत्र—स पु [स] १ अभिनय स्थल, रगमच।
२ युद्ध भूमि रणक्षेत्र।
रगड़—देखो 'रघड' (रू भे)
रंगजरणी, रगजननि—स स्त्री [स रग+जननी] लाख, लाक्ष।

(डि को)

रगजीव—स पु [स रग+जीवक] चित्रकार।
रगट—देखो 'रघड' (रू भे)
उ० - **रंगट** भट फुट भ्रकुट मरकट। कुळट नट वट उलट कटकट।

—सू प्र

रंगढग—स पु—१ हालचाल, आसार, हालात।
२ व्यवहार, बर्ताव।

३ चाल—ढाल, गतिविधि ।
४ सजावट, ठाट ।
उ०—निजर नाखी, भोमी नाकी पग किमनजी कमरै रै रंगढंग सू ढीलौ, लट्टू हुयग्यौ ।

—दमदोम

५ लक्षण—गुण ।

रंगणौ, रंगबौ—क्रि. अ.—१ लीन होना, तल्लीन होना, तन्मय होना, अनुरक्त होना ।
उ०—१ मुनेसर मन, अनग सुमनि । रंगै बह अग, विवै रग रति ।

—रामरासौ

उ०—२ काई रे स्वरूप कहू हरि रौ, रूप कहूणौ स्वरूप कहूणौ, रामैया रा रग माहि रंगियौ रहूणौ ।

—मी रा

उ०—३ जे जन हरि के रग रंगे, सो रग कदे न जाइ । सदा सुरंगे सत जन, रग मे रहे समाइ ।

—दादूबाणी

२ आसक्त होना, मोहित होना ।
उ०—रहौ सधीर राजवण, नैण न नाखौ नीर । रंगै मत डण रग मे, चगौ भीजै चीर

—अज्ञात

३ ओत—प्रोत होना ।
उ०—इसडा पिता रा प्रताप मे जुडौ ही नाम काढण रै काज पराई पुहवी लेण रा बीर रस मे रगियौ ।

—व भा

४ रग मे युक्त होना ।
उ०—१ मरै नही झक मार, निके जीवण ने नाना । मारै जू वा मसळ, रहै रंगिया नख राता ।

—ऊ का

५ भोगना ।
उ०—ऊभा धकै अनेक ऋांग रंगारण सूर नर ।

—रा रू

उ०—२ जुध दुरग दन बढिया जिता, खित पाडे मुगळा खळा । दळ साह डोहि आयौ दुभ्रळ, वेढक रंगिया वीजळा ।

—सू. प्र

क्रि स—६ वस्त्रादि किसी पदार्थ को किसी रग विशेष या कई रगो मे रगना, रग से युक्त करना ।
उ०—१ लोडै, पीजै, कात लपेटे । वणै रंगै फाडै कई वार ।

—स्वरूपदास

उ०—२ नाहरी उस कहै सुणीजै नाहर, तज बधिया गिरवास उनाळ । अण ठामा नित करै ऊथाळा, भाला नित रंगै भूपाळ

—रामसिंघ हाडा बूंदी रौ गीत

७ अनुकूल करना ।
८ प्रभाव मे करना ।
९ प्रेम मे फसाना ।
१० निरर्थक लिखना या किसी के विरुद्ध लिखना ।
रगणहार, हारौ (हारी), रगणियौ —वि. ।
रगिग्रोडौ, रगियोडौ, रग्योडौ —भू का कृ ।
रगीजणौ, रगीजबौ । —भाव वा /कर्म वा ।

रंगत—स स्त्री [स रग+त प्रत्य] १ दशा, हालत, अवस्था, ढंग ।
उ०—१ राजाजी सू गीस रै पाण तुरत की नी बोलीजियौ तौ वे थूक गिटता रह्या । आख्या काढता रह्या । दीवाणजी आ रंगत देख वारी मन री बात समझग्या ।

—फुलवाडी

उ०—२ डर रै कारण लोगा रा मू डा लुकथुका पडग्या । आ रगत देख मामी नै हसी आयगी ।

—फुलवाडी

उ०—३ पण जे भगवान सिनख नै आपरी जरूरता पोखण सारू ई कमाई री सुमत देतौ तौ आज दुनिया री रगत ई दूजी व्हैती ।

—फुडवाडी

उ०—४ वखत रै सागै—सागै दुनिया री रगत ई बदळती जावै ।

—वरसगाठ

२ आनन्द, मौज ।
उ०—प्रीत भरीजै नैण बिची इण नीर न आवै । नाग विजोगा नाय सजोगा रगत लावै ।

—मेघ

३ रग, वर्ण ।
उ०—रग—बिरगा चीर, अमोलख भूखण भारी । सुग करता पान ज नैणा रंगत न्यारी ।

—मेघ

४ शोभा, छवि ।
उ०—धू दिस रळिया राज अमीणौ धर जा सोवै । तारण भनक समाण, रूपाळी रगत होवै ।

—मेघ

५ सुर्खी, आभा कान्ति, झलक ।
६ प्रभाव, छाप ।
७ इच्छित कार्य पूर्ण होने पर मिलने वाला सुख ।
उ०—डागैरी डोकरी मा रै चाव रूख मे पान—फूल सू रंगत आई ।

—दमदोम

८ सतोष, चैन, शान्ति ।

ज्यू०—इण नै बैठा नै रगत नी है ।

६ मजलिस, गोष्ठी, महफिल ।

उ० एक नाथ सोनजी री दानाई सू सीम'र गाव में आसरा ही लगा बैठ्यो । नग, मुलक अर भाग री रगत छिरगी है ।

—दसदोख

१० रग स युक्त होने की दशा अवस्था या भाव ।

(सा म)

.११ रगाई का कार्य व उस कार्य का पारिश्रमिक ।

रंगथळ—देखो 'रगस्थळ' (रू भे)

उ०—बगा वीर धारिया धू पर, असन कु वारी बाळाट सुदर । रमत सात **रगथळ** ऊपर सुधा सिखर झळ स अधधफर ।

—सा वचनिका

रगना—स स्त्री—१ स्त्री, औरत । (ह ना मा)

२ रमणी, सुदरी ।

रगनाथ—स पु–१ विष्णु का एक नामान्तर ।

उ० सरब परिवार सहित **रगनाथ** जी रै मदिर पधारिया रगनाथ जी नू गगाजळ चढावण नू ।

—बा दा ख्यात

२ एक तीर्थ स्थान ।

उ० दिस पूरब जगन्नाथ, दिखण **रगनाथ** बिराजै । पछिम द्वारकनाथ, उदध लहरै सद गाजै ।

- गजउद्धार

रंगनिवास—स पु–१ रग महल, क्रीडा भवन, केलिगृह । अन्त पुर ।

उ० गीदोली गुजरान सू, असपत री थी आस । रायो **रगनिवास** मे न जगमाल जुआरा ।

बा दा

- रति क्रीडा या भोग विलास का स्थल ।

रंगपांचम—स स्त्री—चैत्र कृष्ण पचमी ।

रगपीत—स पु [स पीतरग] १ वृहस्पति का एक नामान्तर ।

(अ मा)

२ ब्रह्मा ।

रगपुर—स पु–रग महल, अन्त पुर ।

उ० मारवाड स परण्योडा **रंगपुर** मे रयारी । मिनराई न दोरनी आणी न प्यार ।

—दसदोख

रगबिरग, रगबिरगी—वि (स्त्री रगबिरगी) विविध रगो का, अनेक रगो वाला ।

उ०—बनावण आचळ रग मजीठ, बधावणी लेहरे काळौ रग । मर्न कुण जाणै किण गूढ गाठ, हवै सह धरती **रगबिरंग** ।

- साभ

रगभवन—स पु–अन्त पुर, रगमहल ।

रगभीनी—स स्त्री–१ वेश्या, रडी ।

उ० पाणी सू पोसाक री, धरयौ रग धुपीज । द्यौ रगभीनी दूसरी, **रगभीनी** नू रीझ ।

—बा दा

२ प्रेम या रग मे डूबी हुई स्त्री ।

उ०—घर आ मिळवै **रगभीनी** परी ।

—रसील राज री गीत

वि स्त्री–१ अनुराग या रति क्रीडा मे मग्न ।

उ०—अनरा माहै घडी प्रहर रात जाता वीरमदे री बेटी, नका घणी सहेलिया रै झूमरै, आभा री बीज, **रगभीनी** हसणी, कलिया रै झु ड आय ऊभी रही ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

२ रग मे युक्त, रगमे भरी हुई, रगवाली । रग मे भीगी हुई ।

उ०—पाणी सू पोसाक री, धरयौ रग धुपीज । द्यौ **रगभीनी** दूसरी रगभीनी नू रीझ ।

— बा दा

३ सुदरी ।

रगभीनो—वि (स्त्री रगभीनी) १ प्रेम या रति क्रीडा मे मग्न ।

उ०—१ सायबाजी म्हारै महल पधारी नै आज, किरपा करी सायबा महल पधारौ । **रंगभीना** रसराज ।

— रसीलराज री गीत

उ०—२ सालुडो मगाद्यो सागानेर रो, अजी **रगभीना** राजा जी ।

- रसीलराज री गीत

२ प्रेमी, रसिक ।

उ०—आवौ आवौ जी **रंगभीना** म्हारै महल, प्यालौ तौ लिया हाजर खडी ।

—मीरा

३ रग मे युक्त, रगवाला ।

४ रग मे भीगा हुआ ।

रगभू—देखो 'रगभूमि'

उ०—इसा **रंगभू** इण रा अटू ऊचा, मिटावे जिका हेठ पखी ममूचा । उदै हाट की बगडा दन ईसा, सुहावै लियां आर राका ससी सा ।

—व भा

रगभूति—स स्त्री–आश्विन मास की पूर्णिमा की रात्रि ।

रगभूमि, रगभोमि, रंगभोमी, रंगभौमि, रंगभौमी—स स्त्री–

[स रग+भूमि] १ रगमच, अभिनय स्थल ।

उ०—चऊद राज कीधी **रंगभूमि**, अनेकि रूपि नचाविउ करमि । नव नव मुहरा नव नव वस, भमड अनारिज आरिज देस ।

—वसिग

२ रंग शाला, नाट्य शाला।

उ० मुरंग रंगभोमि मे तरंग है न तानकी। दमक ढोलकी न त्यू घमक घुंघरान की।

—ऊ का

३ उत्सव मनाने का स्थान।

४ क्रीडा स्थल।

५ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

६ ग्रखाडा।

७ महफिल।

उ०- प्रथ्वी पै रंगभौमि हुई। पथ्वी है इहै मेळगर हुग्रा। मेळगर इहै जु ग्राखाडा की सब सामग्री ताइफौ।

— वेलि टी

रंगमल्ली—स स्त्री [स] बीन, वीणा।

रंगमहल, रंगमहलि—स पु [स रंग+फा महल] १ भोग विलास व रति क्रीडा करने का भवन, रंगपुर, ग्रन्त पुर।

उ०—१ मीचौ मीचौ नवल हुसियार राज ग्रावौ रंगमहल मे। बना क्योंकर ग्रावा थारे रंगमहल मे ग्रावै ग्रावै बावाजी री लाज म्हानै ग्रावै ताऊजी री लाज राज किस विध ग्रावा थारा महल मे।

—लो गी

उ०—२ तठा उपरात करि राजान विलासत रंगमहल मे प्रेम झड लागि नै रही छै। सुरतान—समय हुवौ छै। महला री हवा मागीजै। काचुग्रा री कस छूटी। मोतिया री माळ तूटी। जागै मुख री लका लूटी। इण भात सुख—सेज्रै पौढिया।

रा सा स

उ०— ३ पिक—बाग जाग वैर्ग पतग, हिरणाखी हसा—गमणि। रंगमहल मिध राजान सुर, रमति राज—पुत्री रमणि।

—गु रू व

उ०—४ थर करि ग्रमल पदम छत्र धारे। मुदरि नवलापुरी सिगारे। रंगमहलि दपति दुति राजै, छक मुसनाकि काम रुति छाजै।

— गु रू व

२ ग्रामोद—प्रमोद व मनोरंजन करने का स्थान।

रू० भे०—रंगमैंल।

रंगमांण—स पु.—भोग विलास, रतिक्रीडा।

उ०— लालाजी थाहरी ठाकुर हुतो सो ग्रबै नही छै। साखली सू रंगमांण हुग्रा छै।

— लाली मेवाडी री वात

रंगमातौ—वि. (स्त्री रंगमाती) १ उन्मत, मस्त, प्रसन्न चित्त।

उ०—मद वहती सदा सदा रंगमाती। दाहण दुरगा दयण घता।

—लाखा फूलाणी री गीत।

२ रसिया, रसिक।

रंगमाळ—स. पु —वीस मात्रा का एक मात्रिक छद जिसके ग्रन्त मे गुरु होता है।

उ०—वीस मात्र पाये विमल नवा ग्रति गुरु नेव। रंगमाळ रूपक रा, इण तक रा उवेव।

—ल पि

रंगमैंल—देखो 'रंगमहल' (रू भे)

उ०—१ पग खोळा मे महकता फूल भरया ठाकर रंगमैंल मे पधारया तौ ठकराणी री मूडौ उतरग्यौ।

फुलवाडी

उ०—२ रंगमैंल मे पाच सात जणिया बैठी ही। नाई नै पिछाणता थका ई वै बारै जावण लागी तद दीवाणजी कह्यौ— ग्रा हा, बारै क्यू जावौ।

—फुलवाडी

रंगरंगीलौ—वि (स्त्री रंगरंगीली) १ छैल—छबीला, शौकीन।

२ प्रेमी, रसिक।

उ० साभा रा सिणगार, सयणा रा सुख दायक। रंगरंगीला केसर रा क्यारा छोगाला छबीला प्राण प्यारा।

—र हमीर

रू० भे०—रगारंगीलौ।

रंगरजवौ—देखो 'रंगरेजौ' (रू. भे)

उ०—रंग है किण घण री कुण चीर, केहि पथ रंगरजवौ निन ग्राय। उयूणी ग्राथूणी दे छोळ, सुखावे ग्रावे ग्रवर माय।

—साभ

रंगरळियाल, रंगरळी—स स्त्री —१ रतिक्रीडा, सभोग।

उ० १ जुवनी जुव—जन भवरा—भवरी, गावत धमाळ वहार मिळी। बिरछ वेल ज्यौ ग्रब मिळ के होयगी, रसीलाराज मे रंगरळी।

- रसीलै राज री गीत

उ०—२ ग्रागळीया जग री रसी, सूग नगी फरीयाद। 'स्यारा' 'जमरी' सू मिळै, कीजी रंगरळीयाह।

—सयाराम दरजी री वात

२ ग्रानन्दोत्सव, हर्ष, खुशी।

उ०—१ घणा भात, मगत जणा नै राजी किया। घणी रंगरळियात हुई।

--पनक दरियाव री वात

उ०—२ घणी ग्राजी रंगरळी सू राजस कीवी। लोग सगळी खुस हाल सबोळी रासियां।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ अलिम पति कूच करायो रे, वेगो दिल्ली गढ़ आयो रे घरि घरि गूडी ऊछळीया रे, बहु मगन धुनी रंगरलीयां।

—प च चौ

३ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, मौज।

उ०- मुरधर नाह 'सुमेर' मुरद्धर माभळी। जुड़ आया जोधाण रचाई रंगरळी।

--किसोरदान बारहठ

४ चैन, आराम, सुख, सतोष।

५ प्रेम, अनुराग।

रू० भे०—रंगरेळ, रंगरेळि, रंगरेलि, रंगरेळी, रंगरोळ, रंगरोल, रंगरोळि, रंगरोलि, रंगरोळी, रंगरोली, रंगिरोल, रंगिरोली, रंगिरोल।

मह०——रंगरोलौ

रंगरस-स पु यौ [स] १ आनन्द, हर्ष।

२ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

३ रतिक्रीड़ा, भोगविलास।

४ कोमल मोडे पान व मेहदी को पीसकर वर-वधू के हाथ मे रखने की क्रिया या प्रथा। (पुष्करणा ब्राह्मण)

रंगरसियौ, रंगरसीयौ-वि [स रग + रसिक] १ प्रेमी, प्रियतम, रसिक।

उ० -१ ग्रहा पराक्रम रूप गुण, दिल रा दाईदार। हदफ हेत रै हालियौ, रंगरसियौ रिझवार।

- र हमीर

उ०- २ साकुर कसीया साज, रंगरसीया ठाकुर लिया। अलगा ग्रहीयौ आज वालमीयो वाटा वहै।

- पना

रंगराग-देखो 'रागरंग' (रू भे)

उ० १ जन रंगराग करावत करै जदि। नरग समदन नीध ख्यात्री नदि।

—सू प्र

उ०—२ रंगराग अगर केसर अतर, उच्छबि छक आमोद अति। अनपुरा आदि उदियापुरा, परसौ कमधज छत्रपति।

—सू प्र

उ० ३ मध के आगे दरपण दीखायो छै। गुरु के आगे रंगराग करायो छै। नागर वेल को पान गम न चबायो छै।

—बगसीराम प्रोहित री बात।

उ०—४ हमे सयाराम नै 'जसा' रंगराग मागे छै। जका नै इद भी वखाणे छै। रंगराग री धोरी लागी छै। विरह भोलो भागो छै।

—सयाराम दरजी री बात

रंगराज-स पु—तास के मुख्य सात भेदो मे से एक।

रंगरातौ-वि [स रग + रक्त] (स्त्री. रंगराती) १ प्रेम या अनुराग मे लीन, प्रेमासक्त।

उ० १ मारू मैं'ला आयो है माभल रात। अजी काई लटपटिया पच रो। अलबेलिया नैणा री मदमातो, रंगरातौ मग साथ।

—रसीलेराज रौ गीत

उ० - २ रंगरातौ चीत कवट-हर राजा, अवग हूत ऊतरियौ। तो मुख दीठै लाख-लियाणी, 'विजा', जगत सहु वीसरियौ।

—ईसरदास बारहठ

२ भोग विलास या रतिक्रीड़ा मे सलग्न, विलासी।

उ० १ जानो आहैडा जठै, तीरा करग तातोह। रंगरातौ निस दिन रहै, मद जोवन मातोह।

—र हमीर

उ० - २ बद तुड़ाय हाथी वहै, मुख रंगराती मीच। मदमाती हम मुख करौ, चमको छाती बीच।

—महादान महडू

३ छैल छबीला, रंगीला, रसिया, प्रेमी, रसिक।

४ जो किसी के प्रभाव मे हो। किसी मे प्रभावित हो।

उ० —राणाजी (हो) मै साधुन रंगराती।

- मीरा

रंगरास-स पु [स रग + रास] १ रतिक्रीड़ा, भोग विलास, मैथुन।

उ० अमला री बेटी सू अठै बोहत रंगरास हुवो। अठै उण हीज दिन उण रै पेट आसा रही।

—नैणसी

२ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

३ उत्सव, आनन्द, हर्ष।

४ नृत्य-गायन।

५ खेल-तमाशा।

६ रग का खेल।

रंगरूट-स. पु [अ रिक्रूट] नया भर्ती होने वाला सिपाही, सैनिक।

रंगरेज-स पु [फा] (स्त्री रंगरेजण, रंगरेजणी) १ वस्त्र रंगाई का कार्य करने वाली एक मुसलमान जाति।

(मा म)

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

उ०—अतै रंगरेजण कहै-अरे कायर लपट लोभी कुडा ठाकर होवणा रंगरेजण ही भुर रही है। रे इण साक्षात सती रूपी घण रा कापडा रगता आ मन करगतै पोसाक मगावसी जद म्हारा दाळद्र गमाय देसी, सो उणने जीवतै राड करदी कायर।

—वी स टी.

रंगरेजौ-स पु (स्त्री रंगरेजण) रंगरेज जाति का व्यक्ति।

उ०—चल रंगरेजा मे नही चाहूं, भल नहिं सोभा भंग। ग्रलमित देखिर जळै ग्रग मे, गाड कसूंमल रग।

—ऊ का.

रू० भे०—रगरजवौ।

रंगरेटा—म. स्त्री.—सिक्ख सम्प्रदाय के ग्रन्तर्गत एक जाति विशेष।

उ०—चडाळ तेग बहादुर रे साथे काम ग्रायौ, उण रा सिख रंगरेटा कहावे 'रगरेटा गुरु दा बेटा'।

—बा. दा. ख्यात

रंगरेळ, रंगरेळि, रंगरेलि, रंगरेळी—देखो 'रगरळी' (रू भे.)

उ०—१ कपडा भीना कुमकुमै, ग्रलका ग्रतर उजेळ। चद वदन्या ग्रावै चतुर, रमण जीत रंगरेलि।

—पना

उ०—२ वसीकरण छइ म्यु नुझ पामइ, ग्रथवा मोहन वेलि। साच कहौ ते ग्रतर खोली, जिम थायइ रंगरेलि।

—वि कु.

उ०—३ साहब स्याम ससाळ, सहेन सहेलिया। रूडै नीर सुगध धरा रंगरेळियां।

—बा. दा ख्यात

उ०—४ महाराज सिलामत, ग्रापरै तौ पुत्र हुवौ छै, सो रंगरेळी हुई छै।

—रीसालू री वारता।

रंगरेलौ—देखो 'रगीलौ' (रू भे.)

उ०—माडूं रग रग माडणा, कत न राखै कोय। धव रंगरेला पग धरै, सदा मावरन सोय।

—रेवतसिह भाटी

रंगरोळ, रंगरोल, रंगरोळि, रंगरोलि, रंगरोळी, रंगरोली—देखो 'रगरळी' (रू. भे.)

उ०—१ नाजा ग्रागीया दही, पछै विलब करवौ नहि। करबा ग्रागीया रंगरोल, भीरा-लूण बासीयौ घोल दहीवडा बनाविया घोल, नाखयौ राई तणौ भोल।

—व स

उ०—२ माभि रे राई माभी रे, म्हारी माभी हुया रंगरोल रे। सघ सहु को हरखियउ, वारु दीधा तवल तबोल रे।

—स कु

उ०—३ ग्रग इग्यारे मन थुण्या सहैली हे ग्राज थया रंगरोल कि।

—वि कु

उ०—४ मृग जोड नितु टेयरी, माता दइ हीचोल। नितु नितु मानि घूघरी, प्रेम करी रंगरोळ।

—मा. का. प्र

उ०—५ त्रस्णा-पीडित तारुणी, पणिकर कुकम-रोळ। निरमळ पाणी-नइ गगाइ, रुधिर तणा रंगरोळ।

—मा. का प्र

रंगरोलौ—१ देखो 'रगरळी' (मह., रू. भे.)

उ०—भोजन भक्ति किधी उपरले माल, मध्यान्ह काल, केल पत्र छाया इसा मडप निपाया, निरमल पाणीए पखाली, ग्रागे मेली सोनानी थाली, कीधा रंगरोला, भाजा मेलीया रूपा-सोना ना कचोला।

—व. स.

२ देखो 'रगीलौ' (रू भे)

रंगलौ—देखो 'रगीलौ' (रू भे.)

उ०—ग्राज्यौ रंगलौ तीजा पावणा, हमा समदर जब छोटी जी नाई, जब समदर खारी होय।

लो गी

रंगवाई—देखो 'रगाई' (रू भे.)

रंगवाग—स. पु. [स रग+फा बाग] वह उद्यान जहा केवल महिलाए ही जा सकती हो, जनाना बाग।

उ०—घोडौ इसौ तातो खडियौ, दिन ऊगै रंगवाग निजर पडियौ।

—र हमीर

रंगविद्याधर—स पु—ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

रंगसाई—स. स्त्री—रग मे सुसज्जित करने की क्रिया।

उ०—बर बेहडा वाद सोभा वणाई, वदै तोरणा रंगसाई वधाई। रचै कुभ सौवन्न थभा ग्रगेह, वर्णै ग्राद्रवै वम सौवन्न वेह।

—सू. प्र.

रंगसाज—स पु [फा] १ वस्तुग्रो पर रगाई या चित्रकारी का कार्य करने वाला व्यक्ति।

२ चित्रकार।

३ रग बनाने वाला।

रंगसाजी—स स्त्री [फा] १ रग साज का कार्य।

२ रगाई या चित्रकारी।

रंगसाळ, रंगसाळा—स स्त्री [स रग+शाला] १ नाट्य शाला, ग्रभिनय कक्ष, ग्रभिनय स्थल, रगमच।

उ०—साय जनाना मे मैल करायो नै रंगसाळ करार्ई।

—नैणसी

२ वह स्थान जहा महफिल लगती है

उ० ग्रागोण रंगसाळ मे नाहरसिंघ गजसिंघोत गळियोडा ग्रमल सूं बकडियौ भरयां।

—बा. दा ख्यात

रंगस्थळ—स पु [स. रगस्थल] १ युद्ध स्थल।

उ०—चोड नगर के **रंगस्थळ** में जवनन सूं जुद्ध करै बिन ही मनान परलोक पायौ।

—व भा

२ अभिनय स्थल, रगमच।

३ क्रीडा स्थल, ग्रामोद-प्रमोद गृह।

४ वह स्थान जहा रति क्रीडा की जाय।

रू० भे०—रगथळ।

रंगाई—स. स्त्री —१ रगने का कार्य।

२ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।

रू० भे०—रगवाई।

रंगाउळिय, रंगाउळीय—देखो 'रगावळी' (रू भे)

उ०—अकडी अरड मउ अगि छाई, रोपियउ टोप मिरि 'जडत राइ'। राइ जडति' पहरि **रंगाउळीय** सज मट करि हाथळ मकळीय।

—रा. ज सी

रंगाणौ, रंगाबौ—क्रि. स. (रगणौ क्रि का प्रे रू) १ रगने का कार्य करवाना, रगन के लिये प्रेरित करना, रगाई कराना।

२ किसी रग मे तरबतर या ग्रोतप्रोत कराना, रग मे डुबवाना।

३ किसी मे लीन या तल्लीन होने के लिये प्रेरित करना।

४ प्रेम मे फसवाना।

५ प्रभाव मे कराना, अनुकूल कराना।

६ व्यर्थ या किसी के विरुद्ध लिखवाना।

रगाणहार, हारौ (हारी), रगाणियौ —वि।

रगायोडी - भू का कृ.

रगाईजणौ, रगाईजबौ। कर्म वा।

रगावणौ, रगावबौ। रू भे।

रंगाभरण—स पु—ताल के मुख्य साठ भेदों मे से एक। (सगीत)

रंगायोडौ—भू. का कृ—१ रगने का कार्य करवाया हुआ, रगने के लिये प्रेरित किया हुआ, रगाई कराया हुआ २ किसी रग मे तरबतर या ग्रोतप्रोत कराया हुआ, रग मे डुबाया हुआ ३ किसी मे लीन या तल्लीन होने के लिये प्रेरित किया हुआ ४ प्रेम मे फसवाया हुआ ५ प्रभाव मे कराया हुआ, अनुकूल कराया हुआ ६ किसी के विरुद्ध या व्यर्थ लिखवाया हुआ। (स्त्री. रगायोडी)

रंगार—स पु—१ प्राय मेवाड और मालवे मे रहने वाली एक राजपूत जाति।

२ रग देने वाला व्यक्ति

उ०—कानी राती हुवई, माधव केरइ नामि। रग नथी **रंगार** परि, ऊकालई गुण कामि।

—मा का प्र

रंगाळ, रंगाल—वि—१ रग का, रग सम्बन्धी।

२ रगीन।

३ रगीला।

रंगालय—स. पु. [स रग + ग्रालय] १ नाट्य शाला, रगमंच रग स्थल।

२ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

रंगाळी—वि—१ रग का, रग सम्बन्धी।

२ रग से युक्त, रगीन।

उ०—मडतै **रंगाळा** मनीरिया जीमण मे घणा सुवाद लागै है, ऊपर सूं काकटिया गटकावण मे ही जी जागै है।

—दमदोव

३ रगीलौ।

रंगावट—स स्त्री.—१ रगने की क्रिया या भाव।

२ रगाई।

रंगावणौ, रंगावबौ—देखो 'रगाणौ, रगाबौ' (रू भे)

रगावणहार, हारौ (हारी), रगावणियौ —वि।

रगाविग्रोडौ, रगावियोडौ, रगाव्योडौ —भू का. कृ.।

रगावीजणौ, रगावीजबौ। —कर्म वा।

रंगावळ, रंगावळि, रंगावळी—स. पु.—१ एक प्रकार का कवच विशेष।

उ०— टोप **रंगावळ** सारका, भिडजा रज भरियाह। राव पधारै 'पाल' पर, पिड वज पाखरियाह। —पा. प्र

२ रान का कवच, उरुत्र।

उ०—१ जिणमाल, जुग्राग करत जगदी, जूसण बावै जम्मजडा। हद ग्रोप विटोप **रंगावळि** हाथळ, सुमात्रा करि सिद्ध सडा।

—गु. रू. ब.

उ०—२ **रंगावळि** सत्थळ हत्थे हत्थळ भूळरियाळा धू टोप। जडिया ले जूसण बधै कस्सण, सिद्धक जाणै सक्कोप।

—गु. रू ब

उ०—३ करि सिलहि जीणसाला किलकिल, घर टोप **रंगावळि** ग्रमर धकिक।

—मा वचनिका

रंगावियोडौ—देखो 'रगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री रगावियोडी)

रंगि—देखो 'रग' (रू भे)

उ०—१ मान। ग्रागदउ भणी, ऊलट माड न ग्रगि। मुधी मोतिन—जीभडी, मलीउ माधव **रंगि**।

—मा का. प्र.

उ०—२ ग्राभा चित्र रचित नेगि **रंगि** ग्रनि ग्रनि, मणि दीपक वरि सुत्र मणि। माडि रहे चद्रवा नगे मिसि, फणा सहस्रेई सहस-फणि।

— वेलि.

उ०—३ मारवणि मनि रंगि, वाटड तिरिए आवी वहइ। कुंभी एकणि सगि, तालि चरंती दिट्ठिया।

—ढो. मा

२ देखो 'रंगी' (रू. भे.)

रंगिका—स. स्त्री.—२८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १६ व १२ पर यति होती है। इसके अन्य नाम—सार, ललित, नरेन्द्र आदि भी हैं।

रंगिया—स. स्त्री.—मृत पशु की उतारी हुई खाल को रंगने का कार्य करने वाली एक जाति या वर्ग। जटिया रंगर। (बीकानेर)

रंगियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लीन, तल्लीन, तन्मय या अनुरक्त हुवा हुआ. २ आसक्त या मोहित हुवा हुआ. ३ ओत-प्रोत हुवा हुआ. ४ रंग से युक्त हुवा हुआ. ५ भीगा हुआ. ६ किसी रंग विशेष या कई रंगों में रंगा हुआ, रंग से युक्त किया हुआ. ७ अनुकूल किया हुआ. ८ प्रभाव में किया हुआ. ९ प्रेम में फंसाया हुआ।

(स्त्री रंगियोड़ी)

रंगिरोल, रंगिरोली, रंगिरौल—देखो 'रंगरळी' (रू. भे.)

उ०—चदन भरी कचोली (भरी) यनि रंगिरोली, प्रीसइ रस घोली, हाथि लिउ पान कुली, पहिरणि पीत पटुली, काचली कानी आली, उढणि नवरंग फाली रूपनी चित्रमाली, अही मीआलक।

—व स

रंगी—स. स्त्री.—१ शारदा, सरस्वती। (अ मा)

२ शतमूली।

३ कैवर्त्ति की लता।

४ २८ वर्णों का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पि प्र)

५ निसाणी छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ६ गुरु और ११ लघु वर्ण होते हैं।

वि.—१ हसमुख, विनोद शील।

२ मनमौजी, मस्त।

३ छैल—छबीला, शौकीन।

४ सुंदर, मनोहर।

उ०—धरम्म बिना देखो धरनी में, भये किते हक भगी। धरम्म प्रताप धरापति धारत रजधानी वह रंगी।

—ऊ का

रू० भे०—रंगि।

५ देखो 'रंग' (रू भे)

रंगील—वि. [फा] १ जिस पर कोई रंग चढ़ा हो, रंगा हुआ, रंगदार, रंग से युक्त।

२ चित्रित, शोभित।

३ चमत्कार पूर्ण, अद्भुत।

४ जो स्वभाव से विनोद प्रिय हो और आमोद-प्रमोद रुचि रखता हो। मस्त, मौजी।

५ विलास प्रिय, विलासी।

रंगीली—स. स्त्री—१ स्त्री, नारी।

२ प्रेमिका, प्यारी।

उ०—परगह ले बाधी पगा, सेठी गूघर साथ। हजा रो मारो हुकम, हुओ रंगीली हाथ।

—बा दा.

वि. स्त्री.—१ हर्ष और आनन्द से युक्त, मस्ती भरी।

उ०—म्हारै आज रंगीली रात, मनडा रा म्हरम आइया।

—मीरा

२ रंगों से युक्त, विविध रंगों वाली।

उ०—रे सावरिया म्हारै आज रंगीली गणगौर छै जी।

—मीरा

३ सुन्दर, खूबसूरत।

४ मजेदार, बढिया।

उ०—पी पी ब्यू पिक बैण, पीपरी वरण रंगीली। देव दुकाना मिळै, मुफत रै मोल चगीली।

—दसदेव

५ छैल—छबीली, शौकीन।

६ छिनाल, आवारा।

रू० भे०—रगली।

रंगीलीटोडी—स. स्त्री.—सब शुद्ध स्वरों की सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। (संगीत)

रंगीलौ—वि. (स्त्री रंगीली) १ रंग भरा, रंग से युक्त, रंगीन।

२ आकर्षक।

उ० रंगीलौ चग बाजणू, म्हारै वीरै जी म्हायौ चग बाजणू। म्हारै रेगर मढ कै नायौ ए, रंगीलौ चग बाजणू।

—लो गी

३ आनन्द व मस्ती भरा, हर्ष व खुशी देने वाला।

उ०—बसत पचमी पछै, नीकळै काची केळा, कूपळ दानरा तणी रंगीली रुत री वेळा।

—दसदेव

४ प्रेम व अनुराग से युक्त, प्रिय, प्रेमी।

उ०—आप रंगीला, सेज रंगीली और रंगीलौ सारो साथ छै जी।

—मीरा

५ मौजी, मस्त, विनोदी, रसिक।

६ रंग से भीगा हुआ, रंग से सराबोर।

रू० भे०—रंगरेली।

रंगोचंगो—वि.—१ बढ़िया, मजेदार ।
२ हर्षोन्मत्त, आनन्दित ।
३ मस्त, मौजी ।

रंघड़—सं पु—१ राजपूत ।
उ०—जगम जाट न छेड़िये, हाटां बीच किराड़ । रंघड़ कदै न छेड़िये, जद तद करै बिगाड़ ।
—अग्यात
२ एक राजपूत जाति जो आजकल मुसलमान हो गई है ।
वि—१ सुभट, भट, योद्धा, सैनिक, वीर, बहादुर ।
उ०—सेखावत हरीसिंघ बाहदुर, ठावा दुहूँ भुज ठोड़ । 'पातल' सुत जुध प्रगटिया, रंघड़ बतीस राठौड़ ।
—जुगतीदान देथौ
२ अड़ियल अक्खड़ ।
रू० भे०—रंगड़, रंगट, रागड़, राघड़ । अल्पा—रागड़ौ, राघड़ौ ।

रंच—वि [सं न्यञ्च, प्रा णच] १ अत्यल्प, अल्प, थोड़ा, किंचित, तनिक ।
उ० १ सिल्प कनक कामनि त्याग करै, धन मत प्रपंच न रंच धरै ।
—ऊ का
उ० २ वरसी करणा पण पिता कियौ, कोई रंच न कियौ विचार । धनुस चढ़ौ के मन चढ़ौ, म्हारी राम भवर भरतार ।
गी रा.
उ०—३ पय कर मीठो पाक, जो अमरित सीचीजिये । उर कड़वाई आक रंच न मूकै राजिया ।
—किरपाराम
उ०—४ हठ इंद्री निग्रह करै, जोग जप तप ग्यान । हरीया सहजा सबद का, रंच न पावै ध्यान ।
—अनुभव वाणी
२ तुच्छ, न्यून ।
सं. स्त्री—१ पार्वती, दुर्गा, देवी । (क कु. बो)
रू० भे०—रंचक ।

रंचक—देखो 'रंच' (रू भे) (अ मा)
उ०—अरगै रंचक दोस रै अति दड न रायां ।
- व भा

रंज—सं पु [फा०] १ दुख, गम ।
२ मनक का शोक ।
३ खेद, अफसोस ।
४ चिंता, फिकर ।
५ दर्द, पीड़ा, सताप ।
६ नाराजगी ।
७ विपत्ति, मुसीबत ।
८ आघात, चोट ।
वि. [सं. रंज, रञ्ज] १ अनुरक्त, आशक्त ।
२ लिप्त, संलग्न ।
३ रंगा हुआ ।
४ प्रसन्न, खुश ।
उ०—जाई बेटी जानकी, राम जमाई रंज । भाग बडाई जनक री, गाई बेद अगज ।
—र. ज प्र
रू० भे०—रंजि, रंजी ।
५ देखो 'रज' (रू भे)

रंजक—सं पु [सं] १ चित्रकार, चितेरा ।
२ लाल चंदन ।
३ सिन्दूर ।
४ एक प्रकार का हरिन । मृग ।
उ०—पाछे रंजक सुडियारा काळै गोरे अग खरगोस जाणै न पावै । जहा देखे तहा मारि गिरावै ।
—सू. प्र
५ पित्त के अन्तर्गत पेट की एक अग्नि । (सुश्रुत)
[फा] ६ रंगरेज, रंगसाज ।
७ बन्दूक या तोप की प्याली में रखी जाने वाली बारूद की थोड़ी सी मात्रा ।
उ०—१ अहि खग भ्रिग दम हस अळूझै, सुणै न सबद गात नह सूझै । दहू दळा वळि हुवै दिखाई, रंजक झळा गोळा रमनाई ।
—सू प्र
उ०—२ ईरा भात वात कहता नो बार लागै । रंजक जागी । कना तोपखाना री ईक पलीनी दागी । हर गोळी छूटी ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
८ अग्नि ।
उ०— घडा री धणी पण कई बार अकेलौ ही लोहा मिळचौ । सोर में पण रंजक । तिण भात रजपूती री तीख रौ तख भख ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
वि—१ रंगने वाला, रंग चढाने वाला ।
२ रंज या उदासी मिटाने वाला ।
३ हर्ष या खुशी देने वाला, आनन्द कारक ।
४ उत्तेजना या प्रोत्साहन देने वाला ।
५ आकर्षित या मोहित करने वाला ।

रंजण—सं पु. [सं. रञ्जनम्, प्रा. रंजण] १ रंगने की क्रिया या भाव ।

२ चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव ।

३ आनन्द, हर्ष ।

४ पित्त ।

५ लाल चदन की लकडी ।

६ मूंज ।

७ सोना, स्वर्ण ।

८ जायफल ।

९ कमीला नामक वृक्ष ।

१० छप्पय छन्द का एक भेद जिसमे २१ गुरु व ११० लघु कुल १५२ मात्राए होती हैं । मतान्तर से छप्पय छन्द का बावनवा भेद जिसमे १९ गुरु तथा ११४ लघु कुल १५२ मात्राए होती हैं ।

—र. ज. प्र.

वि—१ रज या उदासी मिटाने वाला, आनन्द व खुशी देने वाला ।

उ०—१ मत्रीसर घरि आवीउ सयल लोक रंजण सुलक्खण । पूरव पुण्य पसाउ लइ त्रिणिण नारि विलसइ वि अक्खरिण ।

—हीराणंद सूरी

उ०—२ दुखिया नं सुख ना दातार । भय भजण रंजण अवतार ।

—वृ रन.

उ०—३ चंदण देह कपूर रस, सीतळ गग प्रवाह । मन रंजण तन उल्हवण, कदै मिळैसी नाह ।

—ढो मा

२ पालन-पोषण करने वाला ।

उ०—जगत ठांम जग सामि, जगत रोपण जग रंजण । जग वदण जग जेठ, जगत भेदण जग भजण ।

—पीरदान लालस

३ शान्ति या संतोष देने वाला ।

उ०—वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस । मन सवेग धरयउ नही जी, किम ससार नरेस ।

—स. कु.

रू० भे०—रंजन ।

रंजणौ—वि. (स्त्री रंजणी) १ प्रसन्न या खुश करने वाला, प्रसन्न या खुश होने वाला ।

उ०—१ कोडि बरीसणौ लखधीर वडाकर गजिंद रूपक रंजणौ । वैर वराह लिग्रा दळ बादळ भूप खळा दळ भजणौ ।

—ल पिं.

उ०—२ भारांणी दुख भजणो, गुण रंजणौ गहीर । जास खजानै जगत रो, साहिब कीधौ सीर ।

—बां. दा.

२ रगने वाला ।

३ आकर्षित करने वाला ।

उ०—गरब सत्रा गजणा, रमा सुचित रंजणा । भुजा सजोर भजणा, चढाय सिभ चाप ।

—र. ज. प्र.

४ तृप्त करने वाला, तृप्त होने वाला ।

५ दीप्तिमान करने वाला ।

उ०—भारत भू भरतार, रजव्वट रंजणौ । अवतरियौ नर गक गनीमां गंजणौ ।

—किसोरदांन बारहठ ।

रंजणौ, रंजबौ—क्रि अ [स रजनम्] १ प्रसन्न होना, खुश होना, हर्षित होना ।

उ०—१ मुखि आवै हरि मत्र वदन कजि अ त विकस्सै । कियौ ग्रेह परवेस रंजौ पुरवेस दरस्सै ।

—रा रू.

उ०—२ लूणीग फसले लाग देखी करी, राख्या आपणाइ पासौ जी । रूडी रहणी देखी रंजिया, सह को कहइ साबासौ जी ।

—स कु.

उ०—३ कल्याणमल्ल राय रंजिया उदर नगर मझार । सा० सहजू उत्सव करइ, वरत्यौ जय जयकार ।

—कवि गुण विजय

२ तृप्त होना, सतुष्ट होना ।

उ०—१ गिळै गूद मादडी मयळ मासज मन रंजै । कोलर तोडि करक, गूह गरजी सन भजै ।

—गु रू' व

उ०—२ लोक खुस्याल सह थया रे, रंज्या रांणी भूप ।

—श्रीपाल रास

३ मोहित होना, मुग्ध होना, आकर्षित होना, रीझना ।

उ०—१ सिघल द्वीपे सूकि ने रे, आयस हुअउ अलोप रे । राजा रो मन रंजीयौ रे देख्यौ नगर अनोप रे ।

—प. च. चौ

उ०—२ जोना नवरस रसिए जुगि सविह धुरि सिणगार । रागइ सुर-नर रंजियइ अवळा नमु आधार ।

—ढो. मा

४ शोभायमान होना, शोभित होना ।

उ०—१ चादर हौज फुहार नीर चलि, अम्रत नदी आय फिर ऊझळि । रंजत सुजळ केइक अनरासै, केइक होद भरया कुमकुम्मै ।

—सू. प्र.

उ०—२ भजै पग ग्राह मातृ त्रिव म्याम, रंजै पग ग्राह जिमा बळराम। देखै पग मेव करै दुडड द, घरक्कै पग्ग निरम्मळ चद।

—ह र

५ उलझना, फसना।

६ प्रभावित होना, प्रभाव मे ग्राना।

७ रंगीजना, रंगमय होना।

८ चमकना, दीप्तिमान होना।

क्रि स—९ प्रसन्न करना, खुश करना, ग्रानन्द देना, हर्ष या खुशी देना।

उ०—१ नयणा रो अंजन मावरो म्हारै हिवडा रो रंजणहार।

—मी र

उ०—२ थे नी भूखा नी भावट भजउ, राजि निज सेवक तणा मन रंजउ राजि०।

—वि कु.

१० तृप्त करना, सतुष्ट करना।

११ ग्राकर्षित करना, मुग्ध या मोहित करना, रीझाना।

१२ चमकाना, दीप्तिमान करना।

१३ प्रभावित करना, प्रभाव मे लाना।

१४ रंगना, रंग से युक्त करना, रंग चढाना।

१५ निर्भय करना, निश्चिन्त करना, भय मुक्त करना।

उ०—सर सिन्धर नारै पदम अठारै, मेल उतारै जगत मर्व। भिड रावण भजै गाहिम गजै, ग्रमरा रंजै ब्रहम ग्रवै।

—र ज प्र

रंजणहार, हारो (हारी), रंजणियो —वि।

रंजिग्रोडो, रंजियोडो, रंज्योडो —भू का. कृ।

रंजीजणो, रंजीजबो। —भाव वा /कर्म वा।

रंजवणो, रंजवबो। —रू भे।

रंजत—स स्त्री (स रंज) १ तृप्ति, सतोष।

उ०—१ भागजी कह्यौ—मासी थनै ई राड करिया बिना रंजत नी व्है। थारा बेटा पटिया तुडाना व्हैला, थू ठेकी जावै जकी यात करै नी, वयु बिरथा ग्राडी—डोढी खमकती फिरै।

—फुलवाडी

उ० २ गाव रै लोगा नै म्है जाणू। ग्रक री टक्कोस नी मेनै जितै थानै रंजत ई नी व्है।

—फुलवाडी

२ हर्ष, खुशी, ग्रानन्द।

रंजन—देखो 'रंजण' (रू भे)

रंजवणी, रंजवबो—देखो 'रंजणी, रंजबो' (रू भे)

उ० कवगामउ भट १३ कलमू मिहरि मागउ रंजविग्रउ। जगु सुतरगि नउ १४ नवह तिव्यु (त्यु) ग्रायासि सउग्रउ।

—कवि पल्ह

रंजवियोडो—देखो 'रंजियोडो' (रू भे)

(स्त्री रंजवियोडी)

रंजाट—रगा हुग्रा, लीन।

उ०—१ उण वेळा रजपूत वे, राजस गुण रंजाट। सुमिरण लागा वीर सब, वीरा रौ कुळवाट।

—वी स.

उ०—२ भूप ऊछाहरा माजै महुंडा तरिंदा भेडै। रामेडा गरिंदा छेडै नाहरा रंजाट।

—राजा रामसिंघ हाडा रौ गीत

रंजाणो, रंजाबो—क्रि स. ['रंजणी' क्रिया का प्रे. रू.] १ प्रसन्न करना/कराना, हर्षित करना/कराना, ग्रानन्दित करना/कराना।

२ तृप्त करना/कराना, सतुष्ट करना/कराना। ३ मोहित करना/कराना, मुग्ध करना/कराना, ग्राकर्षित करना/कराना, रीझाना। ४ शोभायमान करना/कराना, शोभित करना/कराना, सज्जित कराना। ५ उलझवाना, फसवाना। ६ प्रभावित कराना, प्रभाव मे लाना। ७ चमकाना, दीप्तिमान करना/कराना। ८ रंगमय कराना, रंगाना। ९ भय मुक्त करना/कराना, निर्भय करना/कराना, निश्चिन्त करना/कराना।

रंजाणहार, हारो (हारी), रंजाणियो —वि।

रंजायोडो। भू का कृ।

रंजाईजणो, रंजाईजबो। —कर्म वा।

रंजायोडो—भू का कृ—१ प्रसन्न या हर्षित किया हुग्रा/कराया हुग्रा ग्रानन्दित किया हुग्रा/कराया हुग्रा २ तृप्त किया हुग्रा/कराया हुग्रा, सतुष्ट किया हुग्रा/कराया हुग्रा ३ मोहित या मुग्ध किया हुग्रा/कराया हुग्रा, ग्राकर्षित किया हुग्रा/कराया हुग्रा, रीझाया हुग्रा. ४ शोभित या शोभायमान किया हुग्रा/कराया हुग्रा, सज्जित किया हुग्रा/कराया हुग्रा ५ उलझवाया हुग्रा, फसवाया हुग्रा ६ प्रभावित किया हुग्रा/कराया हुग्रा, प्रभाव मे लाया हुग्रा। ७ चमकाया हुग्रा, दीप्तिमान किया हुग्रा/कराया हुग्रा ८ रंगमय कराया हुग्रा, रंगाया हुग्रा ९ भय मुक्त, निर्भय या निश्चित किया हुग्रा/कराया हुग्रा।

(स्त्री रंजायोडी)

रंजि—१ देखो 'रज' (रू भे)

उ०—जिका पार जोवता वार लग्गै वरणता, तडित सार ग्रवतार ग्रणी गुरु धार ग्रनता। वेदाणी तन मजि रंजि ग्राभीच लगन्ने, घडे सघर पुळ सज्जि धूप डबर वासन्ने।

—रा रू.

२ देखो 'रज' (रू. भे)

रंजित–वि. [सं. रञ्ज्] १ रंग में युक्त, रंगीन। २ भीगा हुग्रा, सना हुग्रा। ३ रज से भरा हुग्रा, धूलि धूसित। ४ प्रेम में फसा हुग्रा, ग्रनुरक्त। ५ लिप्त, मलग्न।

रंजियोड़ो–भू. का कृ.–१ प्रसन्न, खुश या हर्षित हुवा हुग्रा. २ तृप्त या सतुष्ट हुवा हुग्रा ३ मोहित, मुग्ध या ग्राकर्षित हुवा हुग्रा, रीझा हुग्रा. ४ शोभित या शोभायमान हुवा हुग्रा ५ उलझा हुग्रा, फसा हुग्रा ६ प्रभाव में ग्राया हुग्रा, प्रभावित ७ रंगमय हुवा हुग्रा, रंगा हुग्रा ८ चमका हुग्रा, दीप्तिमान हुवा हुग्रा. ९ प्रसन्न या खुश किया हुग्रा, ग्रानन्द, हर्ष या खुशी किया हुग्रा १० तृप्त या सतुष्ट किया हुग्रा ११ ग्राकर्षित, मुग्ध या मोहित किया हुग्रा, रीझाया हुग्रा १२ चमकाया हुग्रा, दीप्तिमान किया हुग्रा १३ प्रभाव में लाया हुग्रा, प्रभावित किया हुग्रा १४ रंग से युक्त किया हुग्रा, रंग चढाया हुग्रा, रंगा हुग्रा १५ भय मुक्त या निर्भय किया हुग्रा, निश्चिन्त किया हुग्रा। (स्त्री रंजियोडी)

रंजिस–स स्त्री [फा रंजिश] १ किसी प्रकार की चिन्ता, फिक्र या उदासी।
२ ग्रप्रसन्नता।
३ नाराजगी।
४ मन मुटाव, मनोमालिन्य।
५ शत्रुता।

रंजी–१ देखो 'रज' (रू भे)
उ०—१ **रंजी** मिलना स्वेत, वाळ्मय धोरा पीळा। चादै नगी उजास, रुपेली राता सीळा।
—दसदेव
उ०—२ **रंजी** ग्रासमाण ढकी चद यो छयाळी रहै, हूंट ताळी मुनिद्रा व्है ग्रनाळी तमाम।
मुरारदान कवियो
उ०—३ ग्राखो नगर पोडा री **रंजी** सू ढकग्यो नी ई वै माठ नी भेली।
—फुलवाडी
२ देखो 'रज' (रू भे)

रंजीदगी–स. स्त्री. [फा] १ रंजिश होने की ग्रवस्था या भाव।
२ चिन्ता उदासी।
३ दुख, सताप, रज, गम।
४ वैमनस्य, शत्रुता।

रंजीदो–वि [फा रजीद] १ दुखी, सतप्त, गमगीन।
२ नाराज, ग्रप्रसन्न।
३ ग्रसतुष्ट।

रंड–स स्त्री. [स. रड] १ बाझ केकोडा नामक एक लता, जिसमे फल नही लगते।
उ०—भाइ काला नाग तू, चढै विलोती **रंड**। बाझ वली विद्यारथी, रवै भगता भड।
—मा का प्र
२ देखो 'राड' (मह, रू भे.)
उ०—तिण रै बेटी नाम लीला। सु बाळ **रंड**।
—देवजी बगडावता री वात
३ देखो 'रडी' (रू भे.)

रंडकारो–स. पु [स रडा+रा कारो] १ किसी स्त्री के सम्बोधन मे प्रयोग किया जाने वाला ग्रपशब्द।
उ०—सो सपूत हवै सो तो पिण माता रा यत्न करै ग्रनै कपूत हवै ते ऊधा ग्रवळा बोलै। माता नै **रंडकारा** री गाळ बोलै।
—भि द्र

रंडनी–१ देखो 'रडी' (रू भे)
उ०—वना विहार ते बहै मना रिये नही मने। इसा महा ग्रभाग नित **रंडनी** जने।
—ऊ का
२ देखो 'राड' (रू. भे)

रंडपोखो–स पु [स रडा+पोषक:] वेश्याग्रों का पोषण करने वाला, व्यभिचारी। वेश्या गमन करने वाला।
उ०—**रंडपोखां** रा राज मे, रुळगी भूखा रैत। सूका नित सीरा करै, दत न चूका देत।
—ऊ का

रंडमाळ, रंडमाळा, रंडमाला–देखो 'रुण्डमाळा' (रू. भे)
उ०—स्मसान बसनि, ग्रसुभ गति, **रंडमाला** भूखण, ग्रनेकि दूखण, इस्या ईस्वर नरा करता भगति किम पामीइ मुगति?
—व स

रंडवो–स पु. [स रड] १ वह पुरुष जिसकी स्त्री मर चुकी हो, विधुर।
२ वह पुरुष जिसकी शादी न हो सकी हो, ग्रविवाहित व्यक्ति।
रू० भे०–रडुग्रो, रडुवो।

रंडा–वि.–१ मूर्ख, ग्रज्ञानी।
उ० निरगुण थी सरगुण हुग्रा, वया जाणै **रंडा**।
—केसोदास गाडण
२ देखो 'राड' (रू भे)
उ० –१ मेलै पग सदा ग्रग्र ग्रखडा, **रंडा** प्रिय रावदा है। पढ दुरस प्रमादी सुरमद मादी, महत पुरस माचदा है।
ऊ का

उ०—२ जलि बलि जा रे जीभडी, जउ न बखाणी नाथि।
रंडा तूं मुखि रहिसि तूं, बोलसि बीजां साथि।

—मा का प्र.

३ देखो 'रंडी' (रू भे)

रंडापक—वि —विधवा स्त्री के समान।

उ०—जावक पावक जिम रंडापक जीवै, माना ठोटा सू बडानक सीवै।

—ऊ का

रंडापण, रंडापणी—देखो 'रंडापो' (रू भे)

उ०—सूरा रण मे जाय के, तोडा करो तिमक। ना मुझ चढै रंडापणो, ना तुझ चढै कळंक।

—अग्यात

रंडापो—स पु —१ विधवा होने की अवस्था या भाव, वैधव्य, विधवापन।

उ० - १ बापडी भोळी-ढाळी किन्याबा नै कुकर्म मे नाख'र बेगी सी विधवा बणा देवै। सुवाग री नी रंडापै री चतरी चावै।

—दसदोख

उ० - २ यो सवाग खारो लगे, जद कायर भरतार। रंडापो लागै भलो, होय सूर सिरदार।

—वी स टी

२ विधवा का सा जीवन, दुखी जीवन।

उ०— दुख भरिया रो सुणो न दिलकी, बिलकी फिरै बिचारी रे। घणी जीवता देखी घर मे, भोगै रंडापो भारी रे।

—ऊ का

रू० भे०—रंडापण, रंडापणो, रडेपडो रंडेपो, रडापो रडापो।

रंडाळ—१ देखो 'रांड' (मह, रू भे)

उ०- कुळहीन सग चरमा बितुंड, बबोल उरद्ध सिर सल्लि मुंड। रंडाळ बाळ बिथुरे असुभ, नउवा बिहीन सिर रत्त कुंभ।

—ला रा

२ देखो 'रंढाळ, रंढाळो' (मह, रू भे)

रंडाळो—१ व्यभिचारी।

२ देखो 'रंढाळ, रंढाळो' (रू भे)

उ०- बसिया मैंणा लोधिया भीला भुरजाळा, भोम बिगाड़ भोमिया आया भरमाळा। पीहर 'पाल' बिख्यायता घर ठाभण बाळा। जिके बिगाड़ जगत रा, रजपूत रंडाळा।

—पा प्र

रंडि—देखो 'रंडी' (रू भे)

रंडी—स स्त्री [स रंडा] १ धन लेकर नाचने गाने व सभोग करने वाली स्त्री, वेश्या।

२ वह विधवा स्त्री जो व्यभिचार से धन कमाकर जीविका चलाती हो।

३ स्त्रियो की एक गाली।

रू० भे०—रंड, रंडली, रंडा, रंडि।

४ देखो 'रांड' (रू भे.)

रंडीजणौ, रंडीजबौ—देखो 'रांडीजणौ, रांडीजबौ' (रू. भे.)

रंडीजियोडी—देखो 'रांडीजियोडी' (रू. भे)

रंडीजियोडी—देखो 'रांडीजियोडी' (रू. भे)

रंडीबाज—वि [स रंडा + फा बाज] १ वेश्यागामी, व्यभिचारी।

उ०—भूंडा ही करदे भलो, कदियक आछो काम। रंडीबाजा रसिया, नामरदा रा नाम।

—प्रभुदान आसियो

रंडीबाजी—स स्त्री —१ 'रंडीबाज' होने की अवस्था या भाव।

२ रंडी या वेश्या के साथ किया जाने वाला सभोग, व्यभिचार।

रंडुवौ, रंडुवौ—देखो 'रंडवौ' (रू भे.)

रंडेपडो—देखो 'रंडापो' (रू. भे)

उ०—क्यों भेळीजे त्रिकटगढ, क्यों तूटै दस सीस। तो नै दीन रंडेपडो, छोडावण तेतीस।

—मेहो गोदारो

रंढ—देखो 'रंढ' (रू. भे) (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ मत पराक्रम सूरमा, मत्र म हुआ उदमाद। रोस फुंणिंदा रंढ त्रिया, हम्मीरा हठ वाद।

—गु. रू ब.

रंढरांण, रंढरांणो—देखो 'रंढराण' (रू भे)

उ०- १ भूपा रूप 'लाखो' वस भाण, राखै रीति सार्म रंढरांण।

—ल. पिं

उ० —२ मलण माण असुराण रंढरांण वेढीमणा, आण ताराण दुनियाण आभो।

—महेस बारहट

उ०- ३ काढै माल धिलाणामल, धूणै जोधाणा। तो गम भग्ग गायसिंघ, राहै रंढरांणा।

—द. दा

रंढाळ, रंढाल, रंढाळो, रंढालो—देखो 'रंढाळ' (रू भे)

उ०—१ हुवा तेगो वस हुवो हिंदूकार हरि हंस। राव राज जाणौ राणा रावळ रंढाळ।

—नैणसी

उ०—२ मूळ सकड दोयण मुख, कर लागो कूटाळ। वीकमसी वीसूतमौ, रतनो पूछ रंढाळ।

—नैणसी

उ० — ३ गंगो दाणो पूरवै, रावल रण रंढाल । भारथ में योद्धा भिडै, रिणयोद्धा जिम काल ।

— प. च चौ

उ०—४ राणी हे सखि राणो हे अनि रंढाल ।

— प. च चौ

उ०—५ सकनावत छळि धणी सिघाळा, आया चापा वस उजाळा । रिणमलोत रिणताळ रंढाळा, भेळा चापावता भुजाळा ।

—रा रू.

उ०—६ सूर कहै गजसिंघ नू, रवि धीर रंढाळा । कळह करौ तदि 'केहरी', आय मर्ड आळा ।

—सू प्र.

उ०—७ तबल वाज गजराज, सकबध अकबर तणा, रहचिया मीर हालै रंढाळ । मनै आफाळिया भला खुरमाण सू, काछ पचाळ मोराठ काळै ।

— नैणसी

रंडू—देखो 'राडू' (रू. भे)

रंण—देखो 'रण' (रू भे)

रंणभरण—देखो 'रणभरण' (रू भे)

रंणथंभ—देखो 'रणथभ' (रू. भे)

रंत—देखो 'रत्त' (रू भे)

रंति—देखो 'रति' (रू भे.)

रंतिदे, रंतिदेव—स पु [स रन्तिदेव] १ एक चन्द्रवशी राजा, जो बडा दानी था और जिसने बहुत से यज्ञ किये थे ।

(पौराणिक)

२ विष्णु का एक नामान्तर ।

रू० भे०—रतीदे, रतीदेव ।

रंतिनदी—स स्त्री [स | चबल नदी ।

रंतीदे, रंतीदेव—देखो 'रतिदेव' (रू भे)

उ०—नमजो चबल हेत हिये मे आदर आणो । रंतिदे भूकत जिगन री कीरत जाणो ।

— मेघ

रंद—देखो 'रध्र' (रू भे.)

उ०—पिड पिसण रा गुड पडे, उड गोल्या अग चूक । रंद जाग बर-दुरग रा, बाधा थया बदूक ।

—रेवतसिंह भाटी

रंदणौ, रंदबौ—क्रि स.—१ लकडी को साफ करने के लिये रंदा फेरना, लकडी पर रदा लगाना ।

२ देखो 'रधणो रधबो' (रू. भे)

रंदाई—सं स्त्री.—१ रदा लगा कर लकडी को साफ करने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'रधाई' (रू. भे)

रंदाणौ, रंदाबौ—क्रि. स.—१ रदा लगा कर लकडी को चिकनी व साफ कराना ।

२ देखो 'रधाणो रधाबो' (रू. भे)

उ० —१ तेजाजी ओ लापी रंदाऊ बाबा लसपसी, ऊपर लीलोडा नारेळ ।

—लो. गी.

उ०—२ नणदल बाई रे लापसडी रंदाव, हे ओ धण वारी रे हजा ।

—लो. गी.

रंदायोड़ो—भू का. कृ —१ रदा लगवाया हुआ ।

२ देखो 'रधायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. रदायोडी)

रंदेज, रंदोज—देखो 'रधीण' (रू. भे)

रंदौ—स पु.—१ बढई का एक उपकरण जिससे लकडी साफ व चिकनी बनाई जाती है ।

२ कमान की डोरी, प्रत्यञ्चा ।

३ ऊट के पिछले पैर के ऊपर के भाग मे होने वाला एक रोग ।

४ उक्त रोग से पीडित ऊट ।

रंध—देखो 'रध्र' (रू भे)

रंधक—स पु [स] रसोइया, बावरची ।

वि —अनिष्ट कारक ।

रंधण, रधन—स पु —१ रसोई या भोजन बनाने की क्रिया ।

२ स्त्रियों की चौसठ कलाओ में से एक । (व. स.)

रधणौ, रंधबौ—क्रि अ —खिचडी, खीच आदि का पकना ।

रदणो, रदबो (रू भे)

रंधर—देखो 'रध्र' (रू भे)

उ०—कनक अग रग क्रति सोभ नाभ सुदर । सुनेस मोह रूप भोम, राम जाणि रंधरं ।

—सू. प्र.

रंधाण—देखो 'रधीण' (रू भे)

उ०—पीसण खाडण लीपणौ, राधण रधांण । छै कूटी छ'कायनी, जयणा करै जाण ।

— ध व. ग्र

रंधाई—स स्त्री —किसी खाद्य पदार्थ को पकाने की क्रिया या भाव ।

—रू. भे रदाई

रंधाणौ, रंधाबौ—क्रि स —भोजन या कोई खाद्य पदार्थ पकाना, पकवाना ।

उ०—१ माम रंधाणा रंगवा बेमवार प्रणाग। गुणा त्याग किया नही, जाजे घ्रम भाग।

—पा प्र

उ०—२ तरै जगमालजी नै नेजमी रा रमणा री बात याद आई। तरै लापसी, बाफळा, निवर, दाळिया, गाबुनिया करार्ड मग मैं-पाच अथवा छः मैं मग घान रंधावौ।

—जगमाल मालावत री वात

उ०—३ जीग मेरी आई ये, तुमळा रंधाळू ये थानै चावळया।

—लो गी.

रधाण हार, हारो (हारी), रधाणियो - वि

रधायोड़ौ —भू का कृ

रधाईजणी, रधाईजवौ —कर्म वा.

रदाणी, रदावौ, रधावणी, रधाववौ —रू भे

रंधायोड़ौ-भू का कृ—पकाया हुआ, पकवाया हुआ।

(स्त्री-रधायोडी)

रंधावणी, रधाववौ- देखो 'रधाणी, रधावौ' (रू भे)

उ०—जीर रधावै कार्तिक रे,तापम बैठो मे माग।

— नयवाणी

रधावियोड़ौ –देखो 'रधायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री रधावियोडी)

रंधियोड़ौ–भू का कृ—पका हुआ, सीजा हुआ।

(स्त्री रंधियोडी)

रधीण, रधीज स पु – १ खिचड़ी, लपसी, हलवा आदि पकवान।

२ ठण्डी रोटी का खाद्य या पानी में पका कर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

रू० भे०—रदज, रदाज, रधाण, रादण, राधण।

रंध्र–स पु [स] १ छिद्र छेद, सूराख।

उ०—१ केहर रा नग रध्र सू, गज मोतिया निराट।

मूरत कीरत मेल रा बीज वर्य अवदात। —बा दा

उ०—२ वेवे कवाण भूयाण वध। अममान छिवत रोमाण अन्ध।

जल मही रध्र मेंदै चकास उडता विहग वेधै पकास।

- वि स

२ गह्वर, गुफा।

उ०—१ दरीवन भू बदरा रंध्र देरी।

पली उडुना चक्कवा हम पर्वं। —सू प्र

३ दीवार का वह छेद जिसमें से तीर या बन्दूक की गोलियां चलाई जाती थी तीरकश।

४ नरकश, तूणीर।

५ योनि, भग।

६ त्रुटि, कमी, दोष।

७ दुर्बल या कमजोर स्थल। (लाक्षणिक)

रू० भे०—रद, रध, रधर।

रंब—देखो 'रभा' (रू भे)

उ०—वीर बावन नर्त बजै रिम वीणका,

पूर रत जोगणी खपर भर पीण का।

लीया गण आवीयो ईस सिर लीण का,

रब पद ऊपरा भणक घुघरण का।

— रिवदान बारहट

रंबो–स पु०—१ लोहे का मोटा छड जो वजनी चीज उठाने के काम आता है।

२ लोहे का मोटा डंडा जो दीवार मे छेद करने के काम आता है

रू० भे०—रभो,

रंभ–स पु [स आरम्भ] १ शुरुआत, आरंभ, प्रारम्भ।

उ०—पयदळ नह पार मन्या नह साहण,

कटक पयाणा रभ किये।

मान कर्या दूजा महळीका लागा लियनौ लग किये।

- महाराणा लाखा री गीत

२ युद्ध समर।

उ०—मांग जोध वंग भाख्या सभ, रिणमल्ल मागा आगिणो रभ। —मा वचनिका

३ एक प्रकार का बाण तीर।

४ बाण।

५ जोर का शब्द या आवाज।

६ एक प्रकार का हरिन।

७ महिषासुर का पिता। (पौराणिक)

८ एक राजा जो आयु राजा का पुत्र था, उसकी माता का नाम प्रभा था।

९ एक रभ जो विविशति राजा का पुत्र था।

१० राम-सेना का एक वानर।

११ रभ-करभ नामक दो दानवो म से एक।

रू० भे०—रभ।

१२ देखो 'रभा' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ अति मद्य नती किरि रुमी चालती, सरस्वती बोलती रुपि पारवती नवयौवनारभ कि बीजी रम।

—व स

उ०—२ लावै मर पाणी भरै, गोरी गात अनूप।

रगा आगै पाणी भरै, रंभ अलौकिक रूप। —बा. दा

उ०—३ रूप सवारै जोगणी माळ सुधारै रंभ।

थभ चलेबौ सोम रवि, पेखे व्योम अचभ । —रा रू

उ०—५ नितवणी जघ सु करभ निरूपम, रंभ खभ विपरीत रुख । जुग्रळि नाळि नमू गरभ जेहवी, वयणे वाखाणे विदुख । —वेलि

उ०—६ लहत द्रब्ब माख लाख, रंभ खभ रोपियो ।
'अजौ' नरिंद जेणवार, इद्र नेम ओपियो । —सू प्र

उ०—७ लहलहती नाचै लता, पवन सगीनी पाय ।
पखावरदारी करै, रंभ बिचै वणराय । —बा दा

उ०—८ रंभ खभ कुंजर सूंड राजै जुगळ जघा जामली ।
कज पौहप कुरम चरण कामा पहिर नूपर प्रावली । —मा. वचनिका

रंभगांण—स० पु० [स रभा+गायन] अप्सराओ का गायन ।
उ०—तहक नीसाण गिरवाण हरखाण तन,
चिता मरमाण रंभगांण चालै । —र रू

रंभा—स स्त्री [स] १ इन्द्रलोक की एक अप्सरा, जो नल कूबर की स्त्री थी और अद्वितीय सुदरी थी । यह कश्यप एव प्राधा की पुत्री थी ।
उ०—१ सुकेशी उरवसी, घ्रितेची मैना रभा ।
इद्रलोक अपछरा, इसी उणहारि अचभा । —गु रू ब

उ० २ हसगमणी, माख्यात पदमिणी, आभै री बीज, भादवै री आकास परी, मोत्या मणी, सोना री काब, किरत्या री भूमकौ । इद्रलोक री अपछरा । रूप री रंभा । चित्राम री पूतळी । —फुलवाडी

२ इद्रलोक की परी, अप्सरा । (ना मा)
उ०—१ बाजिद नाग विमाण भाण नक रहै अचभा ।
वीर वडाळा वरण रचै वरमाळा रभा । —र रू.

उ०—२ 'अभमाल' आप छळि करि अचट,
वप विहडाय रंभा वरू । —सू प्र

३ पार्वती, गौरी ।
उ०—नमौ रूप लद्दा सवद्दा रसीली, नमौ लच्छि रंभा नमौ वोम लीली । नमौ मोहणी कमळा मूख सूनी,
नमौ वोम धूनारणी सभ धूनी । —मा वचनिका

४ मयदानव की पत्नी व मदोदरी की माता ।
५ प्रेमिका ।
उ०—घट मै देख्या एक अचभा, आपौ आपी खेलै रंभा ।
घट मै वल्हा केवळ नामा, वाचै राचै आनम रामा । —अनुभव वाणी

६ वेश्या, रडी ।
७ उत्तर दिशा ।
८ कदली, केला । (डि. को)
रू०भे०—रब, रभ ।

रंभाणौ, रंभाबौ—क्रि अ [स रवण] १ गाय का बोलना ।
उ०—धेनू चरतोडी धोरा खड धाती, ऊखा भरतोडी लोरा भड आती । रातीबासै री मानी रंभाती, जाया गोपा सै जाती जभाती । —ऊ का.

२ ममत्व भाव से हुलसकर दौडना ।
रभावणौ, रभावबौ, रभणौ, रभबौ —रू भे.

रंभातर, रंभातरु—स. पु [स रभा+तरु] केले का वृक्ष, कदली वृक्ष ।

रंभातीज—स स्त्री [स रभा+तृतीया] जेष्ठ शुक्ला तृतीया ।
वि वि —प्रताप जयन्ती भी इसी दिन मनाई जाती है । (वी वि)

रंभापत, रंभापति, रंभापती—स पु [स रभा+पति] १ इन्द्र । (अ मा)
२ कुबेर पुत्र-नलकूबर ।

रंभाळ—देखो 'रभा'
उ० गळमाळ रंभाळ गु थाळ ग्रहै ।
वरमाळ सुछाळ भूटाळ कहै । —पा प्र

रंभावणौ, रंभावबौ—देखो 'रभाणौ, रभाबौ' (रू भे)
उ०—भैंस्या रिडकै रिडगाया रंभावै, प्राणी निरखानुर पाणी कुण पावै । —ऊ का.

रंभोरू—वि [स रभा+उरु] कदली-वृक्ष के तने के समान जघावाली सुन्दरी ।
उ०—माथरवाडैमी वाडै मे मोती, प्रानन अभौरू रंभोरू रोती । —ऊ का

रंभौ—देखो 'रवौ' (रू भे)

रमतारांम—स पु —वह साधु जो एक स्थान पर टिक कर न रहता हो, रमताजोगी । स्वच्छन्द रहने वाला साधु ।
उ०—रमताराम एक रग रता, माया मोह विखै नही मता ।
उतिम साध सु लच्छन पीरा, सो कहीयै अजरामर वीरा । —अनुभववाणी

रमाभमा—देखो 'रिमझिम' (रू भे)
उ०—रंमाभमा, रमाझमा, झमा झमा रम ।
ठमका रमका भका रमका ठमक । —र. ज प्र

रयणी, रयबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू भे)

ररंकार—देखो 'ररकार' (रू भे.)

उ०— हरिदास जन यू कहै, रऽंकार मूळ निज नाम ।
मूल मंत्र सतगुरु दिया, दुख सुख दोय दूर सराय ।
—ह पु वा

र—स पु. [स र] १ पावक, अग्नि, आग । (डि को)
२ काम पिपासा, कामाग्नि । (एका)
३ जलन ।
४ गर्मी, ताप, आंच ।
५ प्रेम, स्नेह ।
६ गति, वेग, चाल, रफ्तार ।
७ माना, स्वर्ग ।
८ रगण का संक्षिप्त रूपान्तर । (पिंगल)
वि०—प्रखर, तीव्र, तेज ।

रअ—देखो 'रत' (रू भे) (जैन)

रअय्यत—देखो 'रइयत' (रू भे)
उ०—जिण मैं आठ हजार सिरकार रा नावेदार नै दस हजार रअय्यत । —बा दा ख्यात

रइं—१ देखो 'रइ' (रू भे)
२ देखो— 'रई' (रू भे)
३ देखो 'रति' (रू भे)

रइंण, रइणि—देखो 'रयण' (रू भे)
उ०—निरखियां 'भीम' मले भड़े नारीयण, देखता देवता तणी दाढी ।
विमल नर रइंणि री बाह सुरति हि करतार नाढी ।
—पी ग्र

रइ—स. पु —१ धैर्य, सतोष ।
उ०— सेवग स्हारा 'लखा'—ससोभ्रम, अधिपति बीजा थया अकूप ।
रइ किम करै अवर नदि रावळ, रेवा नदी तणा रजरूप ।
—ईसरदास बारहट
२ देखो 'रति' (रू भे)
उ०— जल्ह नरिंदह केरी धूय, गणा नामि रइ सम रूय ।
उछड नरवई सामुहीय । — सालिभद्र सूरि
३ देखो 'रै' (रू भे)
उ०—१ कोइक पूरब भव मबळ मु रे, आइ मिल्यो सजोग ।
भविकथना रइ जोग मिलइ इण्या रे वलियो तम वियोग ।
—प च चौ
उ०— २ सयणा रइ मेलइ करी रेलो, सफल हुवइ अवतार रे सनेही । —वि कु
उ०—३ मारू त्रिहु वरसं वडी, तसा रइ उणिहार ।
मा कू मगी परणाविस्यां, मालउ राजकुमार ।
—ढो. मा

उ०—४ उत्तर आज मउसरउ, सीय पडेसी थट्ट ।
सोहागिण घर आगणइ, दोहागिण रइ घट्ट ।
—ढो मा.
४ देखो 'रै' (रू भे)
५ देखो 'रई' (रू भे.)

रइअत—देखो 'रइयत' (रू भे)

रइण—देखो 'रयण' (रू भे)

रइणाइर—देखो 'रत्नाकर' ।
उ०—घण ग्रीस्म दुक्खिजण घडिय धाट, रइणाइर बाधउ जोधि राट । जाधि मेवाड कालिय जडाह । भगवट्ट दीघ मोटा भडाह ।
—रा ज सी

रइणि—देखो 'रयण' (रू भे)
उ० — सा बाळा प्री चितवइ, खिणखिण रयणि विहाइ । तिण हर हार परठ्ठ्यउ ज्यू दीवळउ बुझाइ ।
—ढो मा

रइन—देखो 'रयण (रू भे)
उ० इण स्याम बादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन । बन मोर बोलइ पिच्छ खोलइ द्विरद गोनइ पुनि नइन ।
- वि कु

रइबारी—देखो 'रैबारी' (रू भे)
उ०—१ था सुता म्ह जागिस्या, म्हे निचिती होइ । रइबारी ढोलउ कहइ करहउ आछउ जोइ ।
—ढो मा
उ० —२ राजवीउ आथाइत जेउ, तइ केल्हण रइबारी वेउ ।
राउल भणी गया परि सुणी, वगइ मागइ वशामणी ।
—का दे प्र

रइयत, रइयति—स स्त्री [अ रईयत] प्रजा, रिआया, जनता ।
उ० —आयौ भरथ अवध अभग, सहै पावडी उतमग । रइयत कीध अन उछरग, इम आवास जाय उम ।
—र रू.
रू० भे०—रअय्यत, रइअत, रईयत, रायत, रोयत ।

रइवल्लह—स पु [स रतिवल्लभ] रति पति, कामदेव ।
उ०—नरु सो मिरि धूलि भद्द जा जुगह पहाणो । मलियउ जिणि जगि मल्लमल्ल रइवल्लह माणो ।
—जिन पद्म सूरि

रइवास—देखो रहवास' (रू भे)

उ०—डिडवांणउ पालटि धाइ दाइ। रइवास लीध कासिन्नी राइ।

—रा. ज. सी.

रइहीण, रइहीणु—वि. [स. रति+हीन] जो रति-विहीन हो, कामेच्छा से विरक्त हो।

उ०—वात सुणी पाछउ वलइ जा नवि देखइ सग। चउवीस [वास] रहइ जिमु रइहीण [अणगु]।

—सालिभद्र सूरि

रई—स स्त्री—१ दही विलोने की मथनी, मथन-दण्ड। (डिं को)

उ०—१ आगे सुर असुर नाग नेत्रै नहि, राखियौ जई मदर रई। महण मथे मू लीध महमहण, तुम्हा किणै सीखव्या तई।

—वेलि

उ०—२ सयोगिणि चीर रई कैरव स्त्री, घर हट ताळ भमर गोघोख। दिणयर ऊगि एतला दीधा, मोखिया बध बधिया मोख।

—वेलि

२ भूमी, चौकर।

रू० भे०—रइ, रयी।

३ देखो 'रति' (रू भे)

४ देखो 'रइ' (रू भे)

रईय—देखो 'रचित' (रू. भे.)

उ०—मोवन ए रासि करेवि वधव आगलिउ गिण ए। मिनह ए रईय मगि चूड राय रहइ सभा ग्यगमण।

—सालिभद्र सूरि

रईयत—देखो 'रइयत' (रू भे)

उ०—इमो जोर घालियो कै के जाळोर री माहै वसिया, के जेसळमेर री माहै वसिया। रईयत सरब गई।

—नैणसी

रईवत—देखो 'रैवत' (रू भे.)

रईस—स पु [अ.] १ अमीर, धनवान, धनाढ्य।

उ०—नवलजी रै काळजै मे लाट ऊपडी—मेरी आज आ हालत जीवता ही हुयगी ? कै जवाई ही वैरी बणग्यो। ते लोग रईस अर हू जू वा रौ खायोडौ कंगलौ कलीर।

—दमदोख

२ नाजुक, कोमल।

उ०—केई दिना सू पडधा भाव है। रईस किराणौ है, घणा दिना तक रोकणौ वाजिब कोनी।

—फुलवाडी

३ प्रतिष्ठित व्यक्ति।

४ रियासत का स्वामी, भूस्वामी, शासक।

५ अध्यक्ष, प्रधान।

रू० भे०—रहिम, रहीस।

रउ—१ देखो 'रव' (रू भे)

उ०—दादुर मोर करइ अनि सोर, प्रीयु प्रीयु बोलइ ए बप्पीउ रउ। मेहरउ टबकइ बिजुरी झबकइ, कहउ क्यू करि ठउर रहइ हियरउ।

—स. कु.

२ देखो 'रौ' (रू भे.)

उ०—त्रीजइ पुहरि उत्साथियउ, आडवळा रउ घट्ट।

—ढो मा.

रउताई—देखो 'रावताई' (रू भे)

रउद, रउद्द—देखो 'रुद्र' (रू भे)

उ०—चापलउ तुरी दीपक्क चक्ख, नाटारभि नाचइ खूत नक्ख। खाफरा खडग वाहण सखद, रिणि किमन चडिय भाजण रउद्द।

—रा ज सी

रउद्र—१ देखो 'रौद्र' (रू भे)

२ देखो 'रुद्र' (रू भे)

रउद्र—१ देखो 'रौद्र' (रू भे)

उ०- नीमाण वाजि नरगा नफेरि, रउद्र गति डउ डि भरहरी भेरि। मरुआडि सेन हालिया समत, माइयर जाणि फाटा सपत्त।

—रा ज सी

२ देखो 'रुद्र' (रू भे)

उ०—माट रउ गाइ मुहि मूछ मोडि, केल्हणि कटक्क तांणिया कोडि। काळइ कलूळि जागळ काजि, रउद्रां दळ नागिय देवराजि।

—रा. ज सी.

रउद्रि—१ देखो 'रुद्र' (रू भे.)

उ० - रीमाइ रोडि वाजा रउद्रि, मेवळा जाणि मेल्ही समुद्रि। मोटा गढ जीपिय हेळ मत्त, छह खड खिरट सिरि खेड छत्त।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'रौद्र' (रू भे)

उ०—सहगहिय थाट वेऊ सरीठ, गठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ। सूरा सधीर वाजइ सगेस, पडिकाळे ऊठइ जिरह पोस।

—रा. ज. सी.

रएयत, रऐयत—देखो 'रइयत' (रू. भे)

रओड़ी—देखो 'रमोई' (अल्पा रू भे)

रखोड़ी–देखो 'रखोड़ी' (रू भे)

रक्तंबर–स पु [स रक्त + अंबर] १ लाल रंग का वस्त्र।

२ गेरुआ वस्त्र धारी सन्यासी या परिव्राजक।

३ सूर्य, रवि।

उ०–सिविता रवि सूर तपन सही। रक्तंबर अबर ज्योत रही।

–पा प्र

रू० भे०–रातंबर.

रकत–१ देखो 'रक्त' (रू भे) (ना मा)

उ०–रकत रकत भारिया, मुछ भारिया खरगा। सिरा अब निरलग, भजे भड़ पग करगा।

–रा रू

२ देखो 'रगत' (रू भे)

रकतकंद–स. पु [स रक्त + कन्द] १ प्रवाल, मूंगा।

(नि रो)

२ लाल लहसन।

३ रतालू।

रकतबीज–देखो 'रक्तबीज' (रू भे)

उ०–दानव सहित रकतबीजादिक, मार लिया महमाई।

–मे म

रकताक, रकताग–देखो 'रक्ताग' (रू भे) (डि को)

रकबौ–स पु [अ रकबः] क्षेत्रफल।

रकम–स स्त्री [अ रकम] १ धन, दौलत, सम्पत्ति।

२ गहना, आभूषण।

उ०–देवराज तुरग दब, तोरा सगा रगद। मगनमाल मगोल नग, रकमा आन रगद।

–रा रू

३ व्यापार में लगाई जाने वाली पूंजी।

उ०–थारै साथै म्हारै ई कमाई री जोग राज जावै तो काई भूंडो। आप सात हजार रिपिया लगाय दो म्हारी री सगळी रकम री जिम्मो म्हारी।

–फुलवाड़ी

४ रुपया, पैसा।

५ धन की एक निश्चित मात्रा।

६ लगान, राजस्व कर।

उ०–पग री बैठा कोई राज री रकम रा आगोदा हाई हजार रिपिया री थैली भरियोड़ी भेल दी, दलाल-देवता रै सागै बगा नाली घर कैरी री बला ले जावौ सा।

–दसदोख

७ आमदनी, आय।

८ छाप, मुहर।

९ लिखावट।

१० चलता-पुर्जा व्यक्ति, धूर्त, पाखण्डी। (लाक्षणिक)

रू० भे०–रक्कम।

मह रू भे–रकमाण।

रकमाणा–देखो 'रकम' (मह रू. भे)

उ०–जाट भया सिध जम नाथाणा, छुट गई तेरी रकमांणा। सिर परि भार और का धारी अपना साहिब गयौ विसारी।

—अनुभववाणी

रकांन–स. पु–नियम, प्रथा, लाग, दस्तूर।

रकाब–स स्त्री [फा] १ ऊंट या घोड़े की जीन का पावदान, पागड़ा।

उ०–रत रीझ उतर हजूर कियो। दरवेसिय पाव रकाब दियो।

—रा रू

रू० भे०–रकाव, रकेब रकेबी रकेब।

२ देखो 'रकाबी' (रू भे)

रकाबदार–स पु [फा] १ मिठाई बनाने वाला कारीगर, हलवाई।

२ बावर्चियों में खाना सजाने वाला, खानसामा।

३ किसी बादशाह या रईस के साथ खाना लेकर चलने वाला नौकर।

४ रकाब पकड़ कर घोड़े पर चढ़ाने वाला सईस।

रकाबी–स स्त्री [फा] १ तश्तरी प्लेट।

२ नगीरदान का ढक्कन।

रू० भे०–रकाबी, रकेब, रकेबी।

रकार–स पु [स] १ 'र' वर्ण या अक्षर का रूप।

२ राम नाम का पूर्वाक्षर।

उ०–सती मन मांह रकार सभार, लगा धक धूनन री ललकार।

—ऊ का

३ छन्द शास्त्र में रगण नामक गण का सक्षिप्त रूप।

–पि प्र

रकाव–देखो 'रकाब' (रू भे)

उ०–इण भांत नीसरा गोहोर वागा अमल कीधा, आगा रा गोरा छांटि पाघा रा पेच लीधा। घोडा रा उबटा तागि रकाबा पाव धारिया।

—पना

रकेब–१ देखो 'रकाब' (रू. भे.)

उ०—मिलह पूर करि सूर, मस्त्र कमि पकड़ै साबळ। पाव **रकेबां** परठि, बहसि चढ़िया अतुळीबळ।

—सू प्र

२ देखो 'रकाबी' (रू भे)

रकेबी–१ देखो 'रकाबी' (रू भे.)

उ०—ताहरा पहिलो जागियो कोई राज दिसा का राणीजी दिसा समाचार आयो। इम जागि अर **रकेबी** हाथा नाखि दी।

—द वि

२ देखो 'रकाब' (रू भे)

उ०—१ चढियो मछर चडेह, रोपै राम **रकेब** है। भोळो भग पडेह, मिव नाटा रभ 'सूर उत'।

—गु रू. ब

उ० —२ के आरव ऊधरा हेक धजराज हरेबी। आरुहता उत्तग अग जुगि लगै **रकेबी**।

—रा रू

रक्कम–देखो 'रकम' (रू भे.)

उ०— तोरा सपन दकूळ, सपन जवहर वर **रक्कम**।

—रा रू

रक्केब–१ देखो 'रकाब' (रू भे)

उ०—चडै सेन चतुरग गै मद्द कादो। चडै राम **रक्केब** दे साहिजादो।

—गु रू ब

रक्खरण–वि –रखने वाला।

उ०—मिलि मत्री परधान मै, विधि दक्खै विच्चार। जळ **रक्खरण** गढ जोधपुर, के रक्खै जोधार।

—गु रू ब

२ देखो 'रक्षण' (रू भे)

रक्खरणी–देखो 'रखणी' (रू भे)

उ०—मामरथ भभीखण रक रावै सरणा, तमा आपण मुदत लक नेहा रजवट्ट **रक्खरणा**।

—र ज प्र.

रक्खरणौ, रक्खबौ–१ देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू भे.)

उ०—१ किन्ने **रक्खरणहार** नहि, आज 'मर्दो' अनभग। रैनायर' मे थट्टियौ, तुज्जि भरोसे जग।

—ला रा

उ०—२ आया वरस चहोतरै, मावरण मावळ पक्ख। आयौ धर मारू 'अजौ,' गुज्जर थारगा **रक्ख**।

—रा रू

उ०—३ पारभ करण आरभ मे, लियण लभ सोरभ–जस। रखपाळ मडोवर राखिया, भू इडे **रक्खै** अडस।

—गु. रू. ब.

उ० —४ कल्ह तुभदा पित्र सो, 'अजमाल' उपदा। जदा **रक्खंदा** मजै, राजस रागदा। रज्ज दिगदा **रक्खिया** अन–नयरदा, दिलू उमदा 'अभै' दिट्ठू, तू घाट निन्हदा।

—सू प्र

उ०—५ कियो अभै नृप कूरमा, पावा लियो बचाय। प्रभू परीखत **रक्खियो**, जेम जळतो लाय।

—रा. रू.

२ देखो 'रखणी, रखबौ' (रू भे)

रक्खणहार, हारो (हारी), रक्खणियो —वि.

रक्खिओडो, रक्खियोडो, रक्योडो भू का. कृ.

रक्खीजणौ, रक्खीजबौ —कर्म वा.।

रक्खपाळ–देखो 'रक्षपाल' (रू. भे)

उ०—रिणमल्ल धरा छळ **रक्खपाळ**। गडकियउ माड गोत्र गोवाळ।

—रा. ज सी

रक्खवाळौ–देखो 'रुखाळौ' (रू भे)

उ०—हरि रायण रत्थ तारण हत्थ बाधि कत्थ वेगिय। वाजै सचाळौ कुभवाळौ, **रक्खवाळौ** रैणाय।

—रा रू

रक्खस–देखो 'राक्षस' (रू भे)

उ०—मिलिजि कह्यौ र जनक नृप मळ। सजय होहु **रक्खस** नृप वीमळ।

—व भा.

रक्खसी–स स्त्री –१ एक प्रकार की लिपि।

उ०—हस लिवी, भूय लिवी जक्खा तह **रक्खसोह** बोधव्वा। उड्डी जवरिग तुरक्की कीरी दविडी य सिधविया।

—व स

२ देखो 'राक्षस' (स्त्री)

रक्खियोडौ–१ देखो 'राखियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'रखियोडौ' (रू भे)

(स्त्री रक्खियोडी)

रक्खी–१ देखो 'रखी' (रू भे)

उ०—नीनू जणा मोच अर कळाप करता जावता हा के मारग मे एक डोकरियो थकियो। धोळी पाग, धोळी ई अगरखी अर हळदिया धोती। धोळी ई ग्वन। धाटी दिगै मिगै। बूढो खखर। ग्वाधै **रक्खी** टिरै। हाथ मे चिटियो।

फुलवाडी

२ देखो 'रिमि' (रू भे.)

रक्त (रक्त)—स पु. [स. रक्त, रक्त] १ जीव-जन्तुओ और प्राणियो के शरीर की नाड़ियो मे बहने वाला लाल रग का तरल पदार्थ, खून, लहू, रुधिर, शोणित।

उ०—देवी रावसं थांम रे रक्त रती, देवी दुरजटा विकटा जम्मदूती। —देवी.

२ लाल रग।

३ केसर।

४ सिन्दूर।

५ लाल चदन।

६ कुसुम।

७ भारत का पका हुआ फल।

८ कमल।

९ पुष्प, फूल (ना मा)

१० ताम्र, ताबा।

११ पतग नामक वृक्ष की लकडी।

१२ एक प्रकार का बेत।

१३ एक मछली विशेष।

१४ एक जहरीला मेढक विशेष।

१५ एक बिच्छु विशेष।

१६ प्रवाल।

वि०—[स रक्त] १ रगा हुआ, रगीन।

२ लाल रग का, लाल, सुर्ख।

३ जिसका रजन हुआ हो।

४ अनुरक्त, आसक्त।

५ प्रिय, प्यारा, माशूक।

६ सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर।

७ क्रीडा-प्रिय, खिलाडी।

८ शुद्ध, स्वच्छ, साफ।

रू० भे०—रकत, रगत, रगतर, रगति, रगत, रगतर, रगत्र, रत, रक, रत्त।

रक्तकंठ—स पु [स रक्त-कण्ठिन्] १ कोयल।

२ बैंगन।

वि०—मधुर कण्ठ वाला।

रक्तकमळ—स. पु [स.रक्त | कमल] लाल रग का कमल।

रू भे. —रगत कमल

रक्तकास्ठ—स. पु [स रक्त-काष्ठ] १ पतग की लकडी।

२ लाल चदन।

रू भे —रगतकाम्ठ,

रक्तकुस्ठ—स पु. [स रक्त-कुष्ठ] एक प्रकार का रोग जिसमे सारे शरीर मे जलन होती है। कभी कभी कुष्ठ की भाति शरीर गलने लगता है। विसर्प रोग।

रू. भे —रगतकुस्ठ, रगतकोढ।

रक्तगभ—स. स्त्री [स रक्तगर्भा] मेहदी।

रक्तगुल्म—स पु [स०] एक रोग जिसमे गर्भाशय मे रक्त की गाठ बध जाती है।

रू. भे. —रगतगुल्म

रक्तग्रीव—स पु [स] १ कबूतर, २ राक्षस।

रक्तचंचु—स पु [स] तोता, शुक।

रू० भे०—रगतचच, रगतचूच।

रक्तचदन—स पु [स] लाल रग का चदन। (अमत)

रू० भे०—रगतचदन, रतचदण, रतचदन।

रक्तता—स स्त्री [स] १ लाल होने की अवस्था या भाव।

२ लालिमा, ललाई, सुर्खी।

रक्ततुंड—स पु [स रक्त तुड] तोता, सुग्गा।

रू० भे०—रगततुड

रक्तदंता, रक्तदता, रक्तदतिका—स स्त्री [स रक्त दता] शुभ और निशुभ को खाने के लिये धारण किये गय दुर्गा के रूप का नाम, चडिका।

उ०—दूजै दिन कवर तो पहली सुरधपुर जाइ रक्तदंता री पूजन कीधो।

—व भा

रू० भे०—रगतदता, रगतदतिका, रगतदती।

रक्तधरा—स स्त्री [स] रक्त को धारण करने वाली मास के भीतर की दूसरी कला या झिल्ली। (वैद्यक)

रू० भे०—रगतधरा।

रक्तनायक—स पु—एक आभूषण विशेष।

उ०—मध्यनायक कण्ठनायक नीलनायक पीतनायक श्वेतनायक रक्तनायक रत्ननायक······इति आभरणानि।

—व स

रक्तनेत्र—स पु—१ कोयल, २ चकोर।

३ कबूतर, ४ सारस पक्षी।

रू० भे०—रगतनैत्र।

रक्तपक्ष, रक्तपख—स पु [स रक्त पक्ष] गरुड।

रू० भे०—रगतपक्ष, रगतपख, रगतपाख।

रक्तपात—स पु [स] १ भयंकर मारकाट की दशा। खूनी झगडा।

२ खून गिरने का रोग या दशा।

रू० भे०—रगतपान

रक्तपिंड—स. पु. [स] अपने ही रक्त के बनाए हुए धूलि पिंड, जो युद्ध में घायल होकर पडा हुआ वीर, अपने पितरो को पिंड दान करने के लिए बनाता है।

रू० भे०—रतपड, रतपिंड ।

रक्तपित, रक्तपित्त—स. पु. [स रक्तपित्त] १ एक प्रकार का रोग जो पित्त के कुपित होने से होता है। इसमे मुख, नाक, गुदा, योनि आदि इन्द्रियो से खून गिरने लगता है।

उ०—रक्तवात भस्मवात, उस्णवात अग्निवात लोहवात लूतिवात हरखावात ग्रामवात सोफवात विगछावात, कफवात साकिनीवात **रक्तपित्त** अम्लपित्त राजिकापित्त ।

—व स

रू० भे०—रगतपित, रगतपित्त ।

रक्तपित्ती—स पु [स रक्तपित्त] रक्तपित्त का रोग ।

रू० भे०—रगतपित्ति, रगतपित्ती ।

रक्तप्रदर—स. पु. [स] स्त्रियो के प्रदर रोग का एक भेद जिसमे योनि द्वार से रक्त गिरता है।

रू० भे०—रगतप्रदर ।

रक्तप्रमेह—स. पु. [स] पुरुषो का एक रोग जिसके कारण पुरुष का पेशाब खून के रग का, बदबूदार व गरम आता है।

रू० भे०—रगतप्रमेह ।

रक्तबीज—स पु [स] १ एक असुर जो शुभ-निशुभ का सेनापति था।

उ०—मुड चड महिसासुर मारे, सुभ निसुभ सकल सहारे।
जतमे **बक्तबीज** तन ज्यो ज्यो तै निरबीज किये हनि त्यो त्यो ।

---मे म

वि. वि.—इसके सम्बन्ध मे ऐसा कहा जाता है कि इसके रक्त की प्रत्येक बूद जो धरती पर गिरती थी उससे एक राक्षस की उत्पत्ति होती थी। दुर्गा ने इसके रक्त का शोषण कर इसका विनाश किया।

२ अनार, दाडिम ।

रू० भे०—रकतबीज, रक्तबीज, रगतबीज, रगतबीज, रतबीज ।

रक्तमंडळ—स. पु [स. रक्तमडल] एक प्रकार का साप ।

रू० भे०—रगतमडळ ।

रक्तमोचन—स पु. [स] शरीर से रक्त का मोचन, निवारण

रू० भे०—रगतमोचन निवारण ।

रक्तलोचन—देखो 'रक्तनैत्र' ।

रक्तवरण—सं. पु [स. रक्तवर्ण] वीर बहूटी नामक लाल रग का कीडा ।

रू० भे०—रगतवरण

रक्तवात—स पु. [स] एक प्रकार का रोग ।

उ०—अथ रोगा कास स्वास, ज्वर भगदर गुल्म वात गल्लवात **रक्तवात** भस्मवात उस्णवात अग्निवात लोहवात

—व. स.

रक्तबिंदु—स पु. [स.] १ किसी रत्न मे दिखाई देनेवाला एक प्रकार का लाल दाग। (दोष)

२ खून की बूद ।

रू० भे०—रगतबिंदु ।

रक्तबीज—देखो 'रक्तबीज' (रू भे)

रक्तवस्टि—स स्त्री [स रक्तवृष्टि] आसमान से होने वाली लाल रग के पानी की वर्षा ।

रू० भे०—रगतवस्टि ।

रक्तस्राव—स पु [स] १ रक्त का बहना, रक्त-पतन ।

२ घोडो का एक रोग जिसमे घोडे की आखो से रक्त के समान लाल रग का पानी गिरने लगता है।

रू० भे०—रगतस्राव,

रक्तांग—स पु [स.] १ केसर ।

२ लाल चंदन ।

३ मगल ग्रह ।

४ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्प सत्र मे दग्ध हुआ ।

५ प्रवाल, मूगा ।

रू० भे०—रक्ताक, रक्ताग, रगताग ।

रक्ता—स स्त्री [स.] १ सगीत मे पचम स्वर की चार श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति ।

२ गुजा का पौधा ।

३ लाख ।

रू० भे०—रगता ।

रक्ताकार—स पु [स] मूगा, प्रवाल ।

रू० भे०—रगताकार ।

रक्ताचळ—स पु [स. रक्ताचल] उदियाचल पर्वत ।

रक्तातिसार—स. पु. [स.] एक प्रकार का अतिसार (रोग) जिसमे खून की दस्ते लगती हो।

रू० भे०—रगतातिसार ।

रक्तोत्पळ—स पु. [सं रक्तोत्पल] लाल रंग का कमल।
रू० भे०—रगतोत्पळ।

रक्ष, रक्ख—स पु [स रक्ष] १ बचाव, रक्षा, हिफाजत।
२ रखवाली, चौकीदारी, चौकसी।
३ प्रशासन, शासन।
४ छप्पय छन्द का साठवा भेद जिसमें ११ गुरु और १३० लघु मात्राए होती है। मतान्तर से ११ गुरु एव १२६ लघु मात्राए भी मानी जाती है। इसका दूसरा नाम मनहर भी है।
५ देवता।
उ०--गृह्यक यक्ष रक्ष गधरव्वह, सिद्ध पिसाच भजन नव सरव्वह।
—मे. म
वि –१ रक्षा करने वाला, रक्षक।
२ रखवाला, चौकीदार।
रू० भे०—रक्ख, रख्ख।

रक्षक–वि [स] १ रक्षा करने वाला, बचाने वाला।
उ० करुणानिधान करुणामय नित निराकामी। उस प्राणियावरन का रक्षक अतरयामी।
--ऊ का
२ पालन-पोषण करने वाला।
३ चौकसी करने वाला।
स पु –चौकीदार, पहरेदार।
रू० भे०–रख्खक, रछ्छक, रछक।

रक्षण—स पु –१ रक्षा या हिफाजत करने की क्रिया या भाव।
२ रक्षा, हिफाजत।
३ सहारा, आसरा।
४ पालन-पोषण।
वि.–रक्षा करने वाला बचाने वाला।
रू० भे०–रखरण, रछरण।

रक्षणकरता–वि [स रक्षण + कर्त] रक्षा करने वाला, रक्षक।

रक्षपाळ–स पु [स रक्षपाल] १ जिसका काम रक्षा करना हो, रक्षक।
२ चौकीदार।
रू० भे०–रख्खपाळ रखपाळ, रछपाळ।

रक्षफळ–स पु [स] केरडा। रू भे–रखफळ

रक्षस–देखो 'राक्षस' (रू भे)

रक्षा–स स्त्री [स] १ वह कार्य या प्रयत्न जिससे आघात, आक्रमण, विनाश, मृत्यु आदि से किसी का बचाव होता हो। बचाव या हिफाजत के लिये किया जाने वाला प्रयास, रक्षण सुरक्षा।

उ० —१ जिण रवि सू रक्षा जग जाणी, पौरस अस वस प्रगटाणी जग म वस उग्र गुण जोई, ऊन रवि वस समो नह कोई।
—रा. रू.
उ० -२ अगनिकुमार अगनि वन आवौ, देवनाथ महि वामण दावौ। समद प्रजापति आदि सुरेसर, कमधा धणी नणी रक्षा कर।
—रा रू
२ सहारा, आसरा, शरण।
३ देख-रेख निगरानी।
४ गोद।
५ बच्चों को रोग, भूत-प्रेत, नजर आदि से बचाने के लिये बांधा जाने वाला यन्त्र, सूत्र, तावीज, कवच।
६ राखी का बधन।
७ भस्म।
रू० भे०–रख्छया, रच्छ्या, रच्छा, रछिया।

रक्षाप्रदीप–स पु [स] भूत प्रेत या अन्य बाधा से रक्षा के लिये जलाया जाने वाला दीपक (तत्र)

रक्षाबधन–स पु [स रक्षा बधनम्] १ श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला हिन्दुओं का एक त्यौहार। इस दिन सभी बहन अपने भाइयों के हाथों में राखी बाधती है।
२ उक्त दिवस को बाधी जाने वाली राखी।

रक्षाभूसरण–स पु [स रक्षाभूषणम्] भूत प्रेत आदि से रक्षार्थ बांधा जाने वाला यन्त्र, भूषण।

रक्षामंगळ–स पु [स रक्षामगल] एक प्रकार का अनुष्ठान जो भूत-प्रेत, रोगादि के अनिष्ट से बचने के लिये किया जाता है।

रक्षामरण, रक्षामरिण, रक्षामिरण–स स्त्री [स रक्षामणि] किसी ग्रह के प्रकोप से बचाव के लिये पहनी जाने वाली कोई मणि या रत्न।

रक्षाराम-देखो 'रामरक्षा' (रू भे)
उ० ग्रह रवन पजर निमन् रक्षाराम बचाय। ईस तणा वळ ऊजिरा, आर गीत लगाय।
--रा रू

रक्षावत–वि –रक्षक, सहायक।

रक्षित–वि –१ जिसकी रक्षा करली गई हो। जो खतरे से बाहर हो।
२ पालित, पोषित, प्रति पालित।
३ रखवाली किया हुआ, सरक्षण मे लिया हुआ।
४ सभाला हुआ, व्यवस्थित किया हुआ।
५ किसी कार्य विशेष या व्यक्ति विशेष के लिये निश्चित करके

रक्खा हुआ। (Reserved)
६ सजित।
रू० भे०—रखित, रच्छित।

रख—१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)
उ०—१ मुज दुरलभ **रखां** बळ सिधा माधका, जोगीराजा दुरलभ जग।
—बा. दा.
उ०—२ जतै एक तौ इंद्रायणी नै प्रपच (छ) रा बैकुंठ मू आयनै **रखां** नै जीमाड नै ग्यान चरचा सुणनै दहु वखत बैकुंठ जानी।
—मयाराम दरजी री वात
२ देखो 'रिख' (रू भे)
उ०—१ भुवन सांन मादूळ, भूल वनचरा विचाळै। जिमो चद जग वद, बीज **रख** त्र द समाळै।
—रा रू

रखड़णौ, रखड़बौ—क्रि अ—इधर-उधर, मारा-मारा फिरना।

रखड़ी—१ देखो 'राखड़ी' (रू भे)
उ०—१ बीरा म्हारै माथा नै महमद लाज्यौ, म्हारी **रखड़ी** बैठ घडाज्यौ जी, म्हारै रिमक झिमक भाली आज्यौ।
—लो गी
उ०—२ माथा नै ममद बनडी पहरल्यौ ये हां ये बनी, **रखड़ी** की अधिक बहार, बनडी नै भावै टहर को बाजरौ।
—लो गी
२ देखो 'राखी' (अल्पा रू भे)

रखण—देखो 'रक्षण (रू भे)

रखणआतप—स पु [स आतप रक्षण] सूर्य्य, रवि। (ना. मा)

रखणी—स स्त्री—१ रखने की क्रिया या भाव।
२ रखने का ढग।

रखणौ—वि—१ रक्षा करने वाला।
२ रखने वाला।
रू० भे०—रखवणौ।

रखणौ, रखबौ—देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू भे)
उ०—१ रजनी सजनी माहरी, तु रहिजै जुग चियारि। दिणयर दीसतु **रखै**, नीसत नयणा-बारि।
—मा. का प्र.
रखणहार, हारौ (हारी), रखणियौ —वि।
रखिग्रोडो, रखियोडो, रख्योडो। —भू का. कृ.।
रखीजणो, रखीजबौ। कर्म वा।

रखत—स पु. [स ऋक्थ] १ धन, द्रव्य। (अ. मा.)
उ०—१ चालुक्य री **रखत** रहियौ जिकौ सौ समस्त ही रका रै कनै लुटवाय लीधौ।
—ब. भा
उ०—२ मह **रखत** नखत सहेत, लूटै छत्र लिया। दिल्लेस निजर दुभाळ महपति मेलिया।
—सू. प्र
२ आभूषण, गहना, जेवर।
३ उत्तराधिकार मे मिली हुई सम्पत्ति।
४ सामान।
५ स्वर्ण, सोना।
६ मोती। (ना मा)
[स ऋक्ष] ७ नक्षत्र, तारा।
[स. रक्षित] ८ रक्षित व्यक्ति।
९ रक्षित भूमि।
[स रक्षण] १० रक्षा।
११ रखवाली।
१२ पालन-पोषण।
१३ परहेज।
उ०—काया **रखत** तपस्या कीजै, दान वलै धन सार दीजै।
—ध व ग्र
रू० भे०—रकत, रिकथ, रखत्त, रखित।

रखतैत—वि—रक्षा करने वाला, रक्षक।

रखत्त—देखो 'रखत' (रू भे)
उ०—प्रवीण कविराण पौच, गज्जरा ज नौग्रही। हिमकर **रखत्त** हस्त, भेद जाणि मोभही।
—सू प्र

रखपाळ—देखो 'रक्षपाळ' (रू भे)
उ०—'करन' 'तेजळ' कुळ—कळाधारी नवे कोट। 'हराउत' खागधारी रेणा **रखपाळ**।
—नैणसी

रखफळ—देखो 'रक्षफळ' (रू भे) (अ मा)

रखभ—देखो 'रिखभ' (रू भे) (ह ना मा)

रखभमडळ—देखो 'रिखभमडळ' (रू०भे०)

रखब—देखो 'रिखभ' (रू भे)
उ०—स्वर वाजत्र का भेद दिखाय सो कैसे खडज **रखब** गधार मधम पचम धईवत निखाद सप्त सुर के अलाप करि कोकिलू की वाणी मैं बोलतै है।
—सू प्र.

रखवाई—सं स्त्री—१ रखने की क्रिया या भाव ।
२ रखने की मजदूरी ।
३ देखो 'रखवाळी' (रू भे)

रखवाणी, रखवाबौ—देखो 'रखाणौ, रखाबौ' (रू भे)

रखवार, रखवारौ—वि० - १ रक्षा करने वाला ।
२ चौकसी करने वाला, चौकीदारी करने वाला ।
उ० --खडग बंध नर खडा रहै, पौहरै रखवार ।
—पा प्र

रखवाळ, रखवाल, रखवाळक, रखवालक—देखो 'रखवाळौ' (रू. भे)
उ०—१ गहवु आयस महद प्रधान, ऊदलपुरि ऊतार उथान ।
मन्दिरा रमः मह्रम भाथाळ, राजडीउ मेल्हिउ रखवाळ ।
—का. दे प्र.

उ०—२ गहिवू प्रनरि चीत वीनि वदि न (न) भूपाल ।
मदिर माहा मि किम जवाड द्वारि बह रखवाल ।
—नळाख्यान

उ०—३ मारभलि नाना सुभ भूपाल,
इणि वणि अछइ अम्हि रखवाल । —मालिभद्र सूरि

रखवाळण, रखवालण—१ देखो 'रखवाली' (रू भे)
उ०—इण कारण 'चादय' हुत अखी ।
रखवालण हुवोय मोर रखी । —गा प
२ देखो 'रखवाळी' (रू भे,)
उ० रखवाळण रा चार भाई अर उणरो बूढो बाप धुराधुर
दोडता आया । बाई नी जबरो ऊ धो काम करियो ।
—फुलवाड़ी

रखवाळणी, रखवाळबौ—देखो 'रखवाळणी, रखवाळबौ' (रू भे)
उ०—१ तिण मारी ताकूका जिकण रिख मग रखवाळै ।
हरण मवाह मारीन गंज लिखवट धम पाळै ।
—र ज प्र

उ०—२ जो रखवाळत जगत मैं भाजी जबर भळ ।
नौ करता त्रिभुवण तणी, सिरजन नह साहूळ । —बा दा
उ०- ३ महल कवण रखवालस्यै जी, कवण करसी सार ।
एकण जाया बाहिरो जी, सूनौ सह ससार ।
- जयवाणी

रखवाळणहार, हारौ (हारी), रखवाळणियौ वि ।
रखवाळिओड़ौ, रखवाळियोड़ौ, रखवाळयोड़ौ —भू का कृ
रखवाळीजणौ रखवाळीजबौ —कर्म वा ।

रखवाळी—स स्त्री—१ रक्षा, हिफाजत बचाव ।
उ०—१ राज म्हारी रखवाळी करण हार हो नौ रक्षा करो ।
- पनदरी री वारता

२ निगरानी, चौकसी, चौकीदारी ।
उ० लांबी मीच्यां लीली राखी, म्हे मोती निपजाया ।
पाक्या जद तक की रखवाळी करसा नै सभळाया ।
—चेतमानखौ

३ निरीक्षण, देखरेख ।
४ रखवाली करने की मजदूरी ।
५ निगरानी का कार्य ।
वि० स्त्री० --रक्षा करने वाली, निगरानी करने वाली ।
रू० भे०—रखवाळण

रखवाळू, रखवाळे, रखवाळौ—देखो 'रखवाळौ' ('रू भे)
उ०—१ तहा राजा कहण लाग्यो अवति रो रखवाळौ छै ।
राजा रो रखवाळौ छै । —पचदडी री वारता

उ०—२ इळ रखवाळौ खान 'इनायत' ।
आसनजा अजमेर सिहायत । —रा रू

रखस—देखो 'राक्षस' (रू भे)

रखाराज—देखो 'रिखिराज' (रू भे)

उ०- रचै मिळा नाळिया रूप रा नचै वीर मेळा ।
रचै गान चाळिया धूप रा रखाराज ।
—दुरगादत्त बारहट

रखाई—स स्त्री—१ रखने की क्रिया या भाव ।
२ हिफाजत, रक्षा ।
३ निगरानी, चौकसी ।
४ उक्त कार्य का पारिश्रमिक ।

रखाणौ, रखाबौ—क्रि स ('रखणौ या राखणौ' क्रिया का प्रे. रू)
१ किसी आधार या तल पर किसी वस्तु को रखवाना, धरवाना, टिकवाना । रखने के लिए प्रेरित करना ।
२ नष्ट होने या बिगड़ने से बचाव कराना ।
३ रक्षा कराना, बचाव के लिए प्रेरित करना ।
४ पालन कराना, पोषण कराना ।
५ एकत्र, इकट्ठा या सग्रहीत कराना ।
६ सुपुर्द कराना ।
७ अधिकार मे कराना, कब्जे मे कराना, अधीन कराना ।
८ नियुक्त कराना ।
९ रुकवाना ।
१० पकड़वाना ।
११ चोट कराना ।
१२ धारण कराना ।
१३ आरोपित कराना, आक्षेप कराना ।
१४ लदवाना ।

१५ कोई विषय विचारार्थ प्रस्तुत करवाना, सामने रखवाना ।
१६ आवास की दृष्टि से किसी को कही ठहरवाना, ठहराने की व्यवस्था कराना ।
१७ गहने या वस्तु गिरवी रखवाना, रहन धरवाना ।
१८ रखवाली, निगरानी या देखरेख कराना ।
१९ सामाजिक या पारिवारिक सम्बन्ध बनवाना ।
२० अवलबित कराना ।

रखाणहार, हारौ, (हारी), रखाणियौ — वि ।
रखायोडौ —भू. का. कृ
रखाईजणौ, रखाईजबौ —कर्म वा ।
रखवाणौ, रखवाबौ, रखावणौ, रखावबौ । —रू. भे. ।

रखायोड़ौ—भू का. कृ —१ किसी आधार या तल पर रखवाया हुआ, धरवाया हुआ, टिकवाया हुआ, रखने के लिये प्रेरित किया हुआ २ नष्ट होने या बिगड़ने से बचाव कराया हुआ. ३ रक्षा कराया हुआ, बचाने के लिये प्रेरित किया हुआ ४ पालन-पोषण कराया हुआ. ५ एकत्र, इकट्ठा या सग्रहीत कराया हुआ ६ सुपुर्द कराया हुआ ७ अधिकार मे कराया हुआ, कब्जे मे कराया हुआ, अधीन कराया हुआ ८ नियुक्त कराया हुआ ९ रुकवाया हुआ १० पकडवाया हुआ ११ चोट कराया हुआ १२ धारण कराया हुआ १३ आरोपित कराया हुआ, आक्षेप कराया हुआ १४ लदवाया हुआ १५ विचारार्थ प्रस्तुत करवाया हुआ, सामने रखवाया हुआ (विषय) १६ आवास की दृष्टि से ठहरवाया हुआ १७ गिरवी रखवाया हुआ, रेहन धरवाया हुआ (गहने आदि) १८ रखवाली, निगरानी या देख रेख कराया हुआ. १९ सामाजिक या पारिवारिक सम्बन्ध बनवाया हुआ २० अवलबित कराया हुआ ।
(स्त्री. रखायोडी)

रखाळ, रखाळू—देखो 'रुखाळौ' (रू भे)
उ० तिथ **रखाळू**अ 'ढेब' थयौ घुर ढोल पात्र 'अमरण' गयौ ।
—पा प्र.

रखावणौ, रखावबौ—देखो 'रखाणौ, रखाबौ' (रू. भे)
रखावणहार, हारौ (हारी), रखावणियौ । —वि. ।
रखाविप्रोडौ, रखावियोडौ, रखाव्योडौ । भू का कृ. ।
रखावीजणौ, रखावीजबौ । —कर्म वा. ।

रखावियोड़ौ—देखो 'रखायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री रखावियोडी)

रखि—देखो 'रिखि' (रू भे)
उ०—सउं परिवारिहिं सु दलिहिं हस्तिनागपुरि नगरि आवइ ।
अन्न दिवसि **रिखि** नारदह नारि कज्जि आदेसु पामइ ।
—मानिभद्र सूरि

रखित—१ देखो 'रखन' (रू. भे)
उ०—उठै 'गजण' आवियौ, अभग दळ लिया अथाहां । राव दुवां जिम **रखित**, पेस न कियौ पतिसाहा ।
—सू प्र
२ देखो 'रक्षित' (रू भे.)

रखियोड़ौ—देखो 'राखियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. रखियोडी)

रखिस—देखो 'रिखीस' (रू भे)

रखी—स. स्त्री [स. रक्षी] १ एक प्रकार का थैला जो कधो पर इस प्रकार लटकाया जाता है कि शरीर के दोनो ओर लटकता रहे । इसके दोनो सिरो पर थैलिया बनी होती हैं ।
रू भे०—रखली ।
२ देखो 'रिखी' (रू भे)
उ०—१ नठै हेक **रखी** नापतो हुतो । नठै आय पागडौ छाड नमसकार कीधौ । रखी सुनमान दीधौ । तरै आप रजक पगे मेलियौ ।
- कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

रखीकेस—देखो 'रिसिकेस' (रू भे)
उ०—सेवता सोम द्वादस प्रमाण, सही जाणै करती सहमाय । रुखवाळी जगळ धरा राय, केदार द्वारका **रखीकेस** । बळ गगा गोमती प्रागवेस ।
– रामदान लालस ।

रखीराज—देखो 'रिसिराज' (रू. भे)

रखीसर, रखीसुर, रखीस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू भे)
उ० -१ जोबन की अरणोदै सुख ऊपर प्रकासी छै । सूरज की उदै **रखीसुर** ध्यान करण लागा छै । जोबन कै उदै ऊर ऊलग लागा छै ।
—वगसीराम प्रोहित री वात
उ०—२ रमी अधारी हुय गयो छै । जु **रखीस्वर** छै सु मध्यावदरण को समय चूक चूकि जाय । **रिखीसर** पणि राति अर दिन री खबर नही पावै छै ।
—वेलि टी.

रखे—अव्य —१ कदाचित, शायद, सभवत' ।
उ०—जाति-समरण पामिया रे, बलै भाई दोनु वात । उतरता इम चितवे रे, **रखे** पड नीलो पान के ।
—जयवाणी

२ ऐसा न हो।

उ०—गरी कुछ आई नट नरयौ माम्यादि नू पामू । पातिसाह
नहद मुखि बोलत, वली **रखे** हट हामू ।

—का दे प्र

३ कभी नहीं।

उ०—राजि व्यापार नृ पूंजी माल, अटकलि टाम देट उधार ।
रखे बधारै रिण नै रोग, लखण लीजै ज्यू हमै न लोग ।

—ध व ग्र.

४ देख।

उ० नटै रिमाळ, नै हिरण याद आयौ **रखे** आज ठीक हुई छै
हिरण कुमळ आवै तो भलो।

—रीमाळ री वात

रू० भे०-रखैं।

रखेड़ियौ—स पु—१ केवल राख लपेट कर घूमने वाला साधु।
२ ढोंगी साधु।

रखैल, रखैली—स स्त्री—वह स्त्री जो बिना विवाह किये पत्नी के रूप
में पुरुष के पास रहे, उपपत्नी।

रखेस रखेसर, रखेसुर, रखेस्वर—देखो 'रिखीस्वर' (रू भे)

उ०—१ तरै मारग में हरद्वार आद। तठै रोसम **रखेसर** री
बेलो तपस्या करै छै।

रा व वि

उ०—२ अरणी धाम तीरथ अठै अरण **रखेसुर** रहता। तपस्या
करता सगाजी प्रगट हुवा।

—नैणसी

उ०—३ ब्रह्मा के रीकै नो मारीच १ आत्रेय २ भृगु ३ अगराज
४ पुलहक्रत ५ पुलहस्त ६ वसिस्ट ७ ए सात **रखेस्वर** हुवा।

रा वसावळी

उ०—४ पारा उत्तर दिस था आवै नै मदोवर **रखेस्वर** तपस्या
कीवी तिण स नाम मदोवर कहीजयौ।

—नैणसी

रखैं—देखो 'रखे' (रू भे)

उ०—नरक रा भाई निरखि, माने र्हातमन मोई। उण हुती
रहज्यौ अलग, करो **रखैं** मत कोई।

—र व प्र

रखोपौ—स पु—रक्षा का स्थान।

उ०—कोटह कोटह करणा **रखोपां**, मोटा गढा नवा रखा। चाह—
आणि चिहु पाखे भीति भला गढ सराह्या।

—का दे प्र

रखौ—स पु [स रक्षा] १ परहेज।
२ रक्षा बचाव।

रख्ख—देखो 'रक्ष' (रू भे)

रख्खरा—देखो 'रक्षण' (रू. भे)

रख्खरगौ, रख्खबौ—देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू भे.)

उ०—पथी एक सदेसडउ, भल मारग नउ भख्ख। आतम तुझ
पामइ अलइ, आळग रूडा **रख्ख**।

—ढो मा.

रख्खणहार, हारौ (हारी), रख्खणियौ —वि।
रखिखयोड़ो, रखिखयोड़ौ, रख्ख्योड़ौ। भू का कृ।
रख्खीजणौ, रख्खीजबौ। —कर्म वा।

रखिखयोड़ौ—देखो राखियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री रखिखयोड़ी)

रख्यण—देखो 'रक्षण' (रू भे)

रख्या—देखो 'रक्षा' (रू भे)

उ० पगि केसवरायजी री **रख्या** करि ससाधिया हौज रहिया।
आहल एक लिगार ही नाई।

—द वि

रग—स स्त्री [फा] १ शरीर के अन्दर की नस, रक्त सिरा, नाड़ी,
स्नायु।

उ०—१ हरे हय नाम हली हमगीर। सवी रग रोम खली सुख
सीर।

ऊ का

उ०—२ जन हरीया सिवरन सहज रसना रग रग माहि। रोम
रोम ररकार हय ससकार मुख माहि।

—अनुभववाणी

सहा०- १ रग दबणी—अपनी कमजोरी के कारण किसी का
सामना न कर सकना, दबना।

२ रग फड़कणी- आने वाली आपत्ति की आशका होना।

३ रग रग जाणणी—किसी के स्वभाव व प्रकृति से पूर्णतया
अवगत होना, भलीभांति जानना।

४ रग रग नाचणी—खुशी मे झूमना, किसी अच्छी बात या
कार्य से अत्यन्त हर्षित होना।

५ रग रग पिछाणणी—देखो 'रग रग जाणणी

६ रग रग फड़कणी—आवेश, गुस्सा, उत्तेजना, प्रसन्नता आदि
के लक्षण प्रगट होना।

७ रग रग बाढ़णी—टुकड़े-टुकड़े करना, किसी शस्त्र से शरीर
के अग-प्रत्यग को काट कर मारना।

८ रग रग मे विस घुळणी—किसी बात, घटना या कार्य से किसी
के प्रति मन मे प्रतिशोध उत्पन्न होना, क्रोध व घृणा के भाव उग्र
रूप मे प्रगट होना, मन मे ग्लानि पैदा होना।

१० रग रग सीनल होना=तृप्त होना, सुखी होना, आनन्दित होना, मरना, अवमान होना, शान्त होना।
२ पत्ते की नस।
३ एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो ओढने के काम आता है।
४ देखो 'रिगवेद' (डि. को.)
रू० भे०—रगी, रग्ग।

रगड़, रगड़क—स. स्त्री. [स. घर्षणम्] १ रगडने की क्रिया या भाव।
२ किन्ही दो वस्तुओ, अगो या अग पर किसी वस्तु का होने वाला घर्षण।
३ उक्त घर्षण मे पडने वाला निशान, चिन्ह।
४ उलझन, झगडा।
५ कठोर परिश्रम।
६ किसी गतिमान वस्तु का, चलते समय किसी से किया जाने वाला स्पर्श।
उ०—तेज धमकतौ तावडौ, चमकै जागै साग।
ले ले **रगड़क** आवना, लूआ लेवै प्राग। —लू
७ घिसाव।

रगड़कौ—देखो 'रगडक' (रू भे)
उ०—दूजी वेळा वळै पग्स करगा रै मिस आपरा हाथ सू उग री पग अळगो लेय बोल्या—ओ कोई गं'गो थोडौ ई जकौ थाग पग मे पजावू मोती जडी रिमजोळा मे **रगड़कौ** लाग जावैला।
—फुलवाडी

रगड़णौ, रगड़बौ—क्रि. स [स घर्षणम्] १ घर्षण करना, घिसना।
उ०—१ आपणै नवलौ ऊजळौ करचौ, कोरा री धार सिलडी पर **रगड रगड़** मागीडी तीखी-तेज काढी।
—दसदोख
उ०—२ ऊजळौ उत्तम रेत, ओकळौ मूं ले आवै।
वदी जिगा विवाह साज, सुभकाज सजावै।
ग्रह रेणुका राख दान, निरमळ कर निरखै,
वासग वरतण **रगड़**, ऊजळा थोरा हरखै।
—दसदेव
२ किन्ही दो वस्तुओ या अगो का परस्पर स्पर्श कराना, अग का किसी वस्तु से स्पर्श कराना।
३ पीसना, घोटना।
४ अभ्यास के लिये किसी कार्य का वार वार करना।
५ परिश्रम करना।
उ०—राजी हुया काम मे **रगड़ै**, नराजिया करै नुकसाण।
छोटकिया मोटोडा छोडौ, मिळौ सगीग्या चाहौ माग।
—चडीदान सादू
६ व्यर्थ तग करना, परेशान करना।
७ घसीट मे लिखना।
८ घसीटना।
९ मसलना
१० सभोग या मैथुन करना।
रगडण हार, हारौ (हारी), रगडणियौ —वि.
रगडाडणौ, रगडाडबौ, रगडाणौ, रगडाबौ, रगडावणौ रगडावबौ —प्रे. रू.
रगडिओडौ, रगडियोडौ, रगड्योडौ भू. का. कृ.
रगडीजणौ, रगडीजबौ —कर्म वा.

रगड़ाणौ, रगड़ाबौ—क्रि. स [रगडणौ' क्रिया का प्रे. रू] १ घर्षण कराना, घिसवाना।
२ किन्ही दो वस्तुओ या अगो का परस्पर स्पर्श करवाना, अग का किसी वस्तु से स्पर्श करवाना।
३ पिसवाना, घुटवाना।
४ अभ्यास के लिये किसी कार्य को वार वार कराना।
५ परिश्रम कराना।
६ व्यर्थ तग करवाना, परेशान करवाना।
७ घसीट मे लिखवाना।
८ घसीटवाना।
९ मसलवाना।
१० सभोग या मैथुन कराना।
रगडाणहार, हारौ (हारी), रगडाणियौ —वि.
रगडायोडौ —भू का. कृ
रगडाईजणौ, रगडाईजबौ —कर्म वा
रगडावणौ, रगडावबौ —रू भे.

रगड़ायोड़ौ—भू का कृ—१ घर्षण कराया हुआ, घिसवाया हुआ २ किन्ही वस्तुओ या अगो का परस्पर स्पर्श करवाया हुआ, अग का किसी वस्तु से स्पर्श करवाया हुआ. ३ पिसवाया हुआ, घुटवाया हुआ ४ किसी कार्य का वार वार अभ्यास कराया हुआ ५ परिश्रम कराया हुआ. ६ व्यर्थ तग करवाया हुआ, परेशान करवाया हुआ. ७ घसीट मे लिखवाया हुआ ८ घसीटवाया हुआ ९ मसलवाया हुआ १० सभोग या मैथुन के लिए प्रेरित किया हुआ।
(स्त्री रगडायोडी)

रगड़ावणौ, रगड़ावबौ—देखो 'रगडाणौ, रगडाबौ' (रू. भे)
रगडावणहार, हारौ (हारी), रगडावणियौ —वि
रगडाविओडौ, रगडावियोडौ, रगडाव्योडौ —भू का कृ
रगडावीजणौ, रगडावीजबौ —कर्म वा.

रगड़ावियोड़ौ—देखो 'रगडायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री रगडावियोडी)

रगड़ियोड़ौ—भू का कृ—१ घर्षण किया हुआ, घिसा हुआ। २ किन्हीं दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श किया हुआ, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श कराया हुआ। ३ पीसा हुआ, पाटा हुआ। ४ किसी कार्य का बार बार अभ्यास किया हुआ। ५ परिश्रम किया हुआ। ६ व्यर्थ में तंग किया हुआ, परेशान किया हुआ। ७ घसीट में लिया हुआ। ८ घसीटा हुआ। ९ मसला हुआ। १० संभोग या मैथुन किया हुआ।
(स्त्री रगड़ियोड़ी)

रगड़ी—वि—रगड़ा या झगड़ा करने वाला, झगड़ालू।

रगड़ौ—सं पु—१ झगड़ा, टंटा, फिसाद।

उ० पूगी करणी री वांनी—हैं ! रहै थारै कनोनी, मोटा-चाटाळ रै रगडै में ना पड़ो।

—दसदोख

२ उलझन, समस्या, झंझट।

उ० त्रिगुणी बौपड़ी पसा रू गत नव पलगा जी।
जोग विजोग म जोग भोग मव, माया में रगड़ा जी।

—श्री सुखरामजी महाराज

३ विपत्ति, आपत्ति, संकट।

उ० विमाज विभौ रुक हागल विगड़ै, रवद गमाई जगत रहै।
भगारी नारी जिका भूंपड़ा, रगड़ौ नलबा नगो रहै।

—बां दा

४ निरन्तर किया जाने वाला श्रम।
५ रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगटळ, रगटाळ—सं पु—१ ऊंट का रोग जिसमें उसके पिछले पैर की नस ऊंची चढ़ जाती है और उसका पैर बराबर नहीं टिक पाता।
२ उक्त रोग से पीड़ित ऊंट।
३ ऊंटों का एक पागरण।
४ देखो 'रगटाळ'

रगण—सं पु—१ छंद शास्त्र के आठ गणों में से एक गण या तीन अक्षरों का वह शब्द (समूह) जिसका पहला व अंतिम वर्ण दीर्घ होता है तथा मध्य का लघु होता है। इसका मात्रिक रूप ऽ।ऽ ऐसा होता है।
२ गजानन, गणेश। (अ मा)

रगणी, रगबौ—क्रि स—१ रेंगना, रेंगते हुए चलना।
२ पशु का रंभाना।

रगत—देखो 'रक्त' (रू भे) (ग मा ह ना मा)

उ० १ नहीं रगत देंगि गळ वाहै। चंद्रग्रहण ग्रहै ग्रक नाहै।

—सू प्र

उ०—२ कर मुख रगत सुबगत आनिम घणी, डारि द्युं फू कि थकी गढ चीतोड़। राण सू पदमणी चिड़ी-जिम पाकड़ू, कवण हिंदू करै हम नणी होड़।

—प च चौ.

उ० ३ क्रोध रगत लोचन किया। —रामरासो

रगतकमळ—देखो 'रक्तकमळ' (रू. भे)

रगतकाम्ठ—देखो 'रक्तकाष्ठ' (रू भे)

रगतकुम्ठ, रगतकोढ—देखो 'रक्तकुष्ठ' (रू भे)

रगतगुल्म—देखो 'रक्तगुल्म' (रू भे)

रगतचखु—देखो 'रक्तचक्षु' (रू भे)

रगतचदण, रगतचदन—देखो 'रक्तचदण' (रू भे) (अमरत)

उ० - कठ जनोई पाट री, रगतचदन री पीली किमाड। गीसम मार री पाटली, ऊंचा धरि धरि नोरणवार। —बी दे

रगतचूंच—देखो 'रक्तचंचु' (रू भे) (अ मा)

रगतजीभ—सं पु. [सं रक्त जिह्वा] सिंह।

रगततुंड—देखो 'रक्ततुंड' (रू भे)

रगतदता, रगतदंतिका, रगतदती—देखो 'रक्तदंता' (रू भे)

रगतधरा—देखो 'रक्तधरा' (रू भे)

रगतधातु—सं पु [सं रक्त + धातु] १ लाल रंग की कोई धातु, तांबा। २ गेरू

रगतधारा—सं स्त्री [सं रक्त + धारा] रक्त की धारा।

रगतनेत्र—देखो 'रक्तनेत्र' (रू भे)

रगत पत्नी—देखो 'रगतवर्णी' (रू. भे)

रगतपक्ष, रगतपख, रगतपांख—देखो 'रक्तपक्ष' (रू भे.)

रगतपात—देखो 'रक्तपात' (रू भे)

रगतपित, रगतपित्त—देखो 'रक्तपित्त' (रू भे)

रगतपित्ति, रगतपित्ती—देखो 'रक्तपित्ती' (रू भे)

रगतप्रदर—देखो 'रक्त प्रदर' (रू भे)

रगतप्रमेह—देखो 'रक्तप्रमेह' (रू भे)

रगतबवाळी—सं स्त्री—दुर्गा का एक नामान्तर।

उ०—रगतबवाळि निमो रुद्राया, सु सु क्रपा करै महमाया।

—पी ग्र

रगतबिंदू—सं पु [सं रक्त + बिंदु] रक्त की बूंद, कतरा।

रगतबीज—देखो 'रक्तबीज' (रू भे)

उ०—देवी धूम लोचन्न, हुकार घोम्यौ, देवी जाडवा मे रगतबीज सोख्यौ।

—देवि

रगतभव–म पु [स रक्तभव] मास, ग्रामिष। (डि. को.)

रगतमंडळ–देखो 'रक्तमडळ' (रू भे)

रगतमल–म पु [स रक्त+मल्ल] भैरव का एक नाम।

उ०—काळा गोरा कवर, रगतमल लागौ कळवौ। मारण भद्र हनुमान, कौडलौ नरसिंघ फळवौ।

—मा वचनिका

रगतमोचन–देखो 'रक्तमोचन' (रू. भे)

रगतर–देखो 'रक्त' (रू भे)

रगतवंसी–स. पु–एक प्रकार का विषैला सर्प।
रू० भे०–रगतपळी।

रगतवरण–देखो 'रक्तवरण' (रू भे)

रगतविंदु–देखो 'रक्तविंदु' (रू भे)

रगतवीज–देखो 'रक्तबीज' (रू भे)

रगतग्रस्टि–देखो 'रक्तग्रस्टि' (रू भे)

रगतसंधक, रगतसिंधक–म. पु [स. रक्त+सन्धक] १ फूल, पुष्प। (ह ना मा)
२ लाल कमल।

रगतस्राव–देखो 'रक्तस्राव (रू भे)

रगताग–१ देखो 'रक्ताग' (रू भे)
२ देखो 'रक्नाग' (रू भे)

रगता–देखो 'रक्ता' (रू भे)

रगताकार–देखो 'रक्ताकार' (रू भे)

रगतातिथ, रगतातिथी–देखो 'रिक्ता' (रू भे)

उ०—खुरपण जीमणी, वार थावर खरौ। रगतातिथ ने मेह ग्रग गाळ रौ।

—रुकमणी हरण

रगतातिसार–देखो 'रक्तातिसार' (रू भे)

रगताळ–म पु [म रक्त+आलुच्] रक्त प्रवाह, खून की धारा।

उ०—१ काळ लकाळ करठाळ जडियो कमध, व्है विकराळ रगताळ वाई। भाळ छकडाळ वगनाळ चूनाळ भिद, नाळ गौ भाळ भर धरण नाई।

—नेजसी सिंढियो

रगतासुर–म पु [स रक्तासुर] एक असुर।

उ०—रगतासुर आगै स्वद, भेळा होय भुजाळ। सामद्र माहे सांपरत, नदिया मिळै निराळ।

—मा वचनिका

रगति–देखो 'रक्त' (रू. भे)

उ० -१ काबिया रग मोहरा करै, रग बा भंसा रगति। जदि चाहि मदा ज्वालामुखी, सखै ताम तोपा सगति।

—सू. प्र.

उ०- २ दबटे बाज जुतै दुजडा हथ, गिरा गिरीस पूजिया गात। केवी रगति कमळ तिण कारण, जुगति पतौ मन क्रम दे जात।

—राजसिंघ राठौड

रगतेस–देखो 'रगतासुर' (रू भे)

उ०—छडीला दीसै छकर, जोगिरण रिम खीआई। भड माफी रगतेस भड बकतौ ग्रव मभाई।

—मा. वचनिका

रगतोत्पळ–देखो 'रक्तोत्पळ' (रू भे)

रगत्त–देखो 'रक्त' (रू भे)

उ०- १ केसर छूटी द्वारका, दिल्ली बूद रगत्त। थई पुराणां उग्रता, मिटी कुराणा वत्त।

—रा रू

उ०—२ भयाणक भेस गरा लड भार। तुहू वळ धार रगत्त दुसार।

—सू प्र.

रगत्तर–देखो 'रक्त' (रू भे)

उ०- अपाकर टोप बगत्तर अग, रगै नह चक्र रगत्तर रग।

—मे म

रगत्यौ–स पु–१ बलिदान किया हुआ वह बकरा जो प्रसूती गृह मे जच्चा के पलग के नीचे भूमि मे गाड दिया जाता है।

उ०—धरा जोउ है जीव घर, समहर मतौ मोय। अज रगत्या री है न अज, काट गाड दे कोय।

- रेवतसिंह भाटी

२ चौसठ भैरवों मे से एक।
रू० भे०–रगतियौ, रगित्यौ।

रगत्र–देखो 'रक्त (रू भे)

उ० चटक्कट पत्र रगत्र चटट्टि। समै अनुरागर रगै चवसट्टि।

—मे म

रगदरा–१ मोटी–ताजी व हृष्ट पुष्ट स्त्री।
२ वेडौल व भद्दे आकार की स्त्री।

उ०—रीजावण विध चित धरी, हळवळ मन होवोह। रगदरा ज्यौ नह राजवरिंग, जीवित नो जोवोह। —र हमीर

रगबळ–वि.–कुबड़ा ।

रगबोळणौ, रगबोळबौ–१ वस्त्र या किसी चीज को मिट्टी या कीचड़ में मसलना, लथपथ करना ।
२ रगड़ना, मसलना ।
३ पछाड़ना, झकझोरना ।

रगबोळियोड़ौ–भू का कृ –१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ किया हुआ. २ रगड़ा हुआ, मसला हुआ ३ पछाड़ा हुआ, झकझोरा हुआ ।
• (स्त्री रगबोळियोड़ी)

रगबेद, रगवेद–देखो 'रिगवेद' (रू भे)

रगी–स स्त्री –१ सरस्वती । (अ मा)
२ देखो 'रग' (रू भे)

रगुबसी–देखो 'रघुवसी' (रू भे)

उ०– जात्री मेळै कमळ जोयंवा, जगत गुहारै जुग्रो जुग्रो । रगुबसीयां ग्रनै राठोड़ा, हेक वळै अवतार हुग्रो ।

– दुरसौ आढौ

रगु–१ देखो 'रग' (रू भे)
२ देखो 'राग' (रू भे)

रगुबीर–देखो 'रघुवीर' (रू भे)

उ० ग्रळै पाय रैणा तरी **रगुबीरं** । सिरलेस्वरं ज्याग ग्राग सरीर ।

—सू प्र

रगत–देखो 'रकत' (रू भे)

उ० देवी **रगत** ग्रथाळ गळमाळ करा ।

—देवि

रघु'स–स पु –देखो 'रिगवेद' ।

उ०-- पहल जोतकी पुराण, नारकेस वे नवं । **रघुं'स** नाम जस्र ग्रथ च्यार वेद के नवं ।

—सू प्र

रघु–स पु [स] १ सूर्यवशी एक प्रसिद्ध राजा जो सम्राट दिलीप (द्विलीप) का पुत्र एव अज राजा का पिता था ।

उ०- सभ्रम दिलीप **रघु** तिरण सकाज । 'रघु' रै सुत ग्रज राजाधिराज ।

सू प्र.

२ दशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र, राम ।

उ० १ बिढ़ **रघु** दसरथ पुत्र बलाग । सभे जग विस्वामित्र सहाग ।

– सू प्र

उ०-- २ ग्रज सुत दीह मगत मे ग्राया । अति **रघु** जान वणावै आया ।

— रामरासौ

३ रघु राजा के वशज ।
४ देखो 'रघुवस'
रू० भे०–रघ ।

रघुईस–स पु [स रघुईश] श्रीरामचद्र भगवान ।
रू० भे०—रघईस

रघुकुळ–स. पु. [स रघु + कुल] रघु राजा का वश, कुल ।

रघुकुळतिलक–स पु –श्री रामचन्द्र, श्रीराम ।
रू० भे० - रघकुळ तिलक

रघुचंद–स पु [स रघुचद्र] श्री रामचद्र भगवान ।
रू० भे०–रघचद ।

रघुदेव–स पु [स रघुदेव] श्री रामचद्र भगवान ।
रू० भे०–रघदेव ।

रघुनद, रघुनंदण, रघुनदन–स पु [स रघु + नदन] १ श्री रामचन्द्र, श्रीराम । (ना. मा.)

उ० –थे तो पूत सपूत हो हो रघुबर जी । ईश्वर थे पिता वचन क्यों पाळ, हो **रघुनंदन** जी ।

-- गी रा

रू० भे०–रघनद, रघनदण, रघनदन, रघुनदन ।

रघुनाथ–स पु [स] १ श्री रामचन्द्र ।

उ०-- भड़ परखण भूपाळ नाम ऊभौ अगि तारौं । रामायण **रघुनाथ**, जोध परख कपि जाणौं ।

-- सू प्र

२–ईश्वर, परमेश्वर
रू० भे०–रघनाथ, रगुनाथ ।

रघुनायक–स पु [स] श्रीरामचन्द्र ।

उ०—नर च्यार ग्रमी नाचै निरू, निज हरि आगळ नाचियो । जालणी जिका रहियो न जग, ज्या **रघुनायक** जाचियो ।

--- र. ज प्र.

रू० भे०–रघनायक ।

रघुपत, रघुपति–स. पु. [स रघुपति] श्री रामचन्द्र ।

उ०— १ तिलक छाप तुलिछिका माळ धारिया महाबळ । हरबळ लगसग हवौ 'ग्रभा' **रघुपति** च आगळ ।

—सू. प्र.

रू० भे०–रघुपति, रघूपती, रघपति, रघपती ।

रघुभूप–स पु.–श्री रामचद्र भगवान ।
रू० भे०–रघभूप ।

रघुबर—देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—भूप **रघुबर** सभल धनु सर।

—र. ज. प्र.

रघुबीर—देखो 'रघुवीर' (रू. भे.) (डिं. को.)

रघुइंद्र—स पु [स.] श्री रामचद्र भगवान।

रू० भे०—रुघयद, रुघयदि।

रघुरांण—सं. पु [स. रघुराज] श्री रामचद्र भगवान।

रू० भे०—रुघराण।

रघुरांणी—स. स्त्री. [म रघु, राज्ञी] सीता, जानकी।

रू० भे०—रुघराणी।

रघुरांम—स. पु. [स रघुराम] श्री रामचद्र भगवान।

रू० भे०—रुघराम।

रघुरज, रघुराइ, रघुराई, रघुराउ, रघुराजा, रघुराय, रघुराया—स पु. [स रघु+राज] १ श्री रामचन्द्र।

उ०—१ सभा भूप दसरथ सुत, रूप दसौ **रघुरज**।

—रामरासौ

उ०—२ राज मौहरि उपनि **रघुराई**। भिड़ जेण विध लखमण भाई।

—सू प्र

उ०—३ अस्तुति कर सब देव सिधाया, जग मे जय जय धुन छाई। आनद भयौ भवन सारा मे, राज विराज्या **रघुराई**।

—गी रा

उ०—४ कळ मन 'कन' जिण जगपत। रट **रघुराय**, थिर सुख थाय।

—र ज. प्र.

उ०—५ राज तणी इच्छा **रघुराया**। अखिल चराचर जीव उपाया।

—ह र

२—ईश्वर, परमेश्वर।

३ विष्णु का नामान्तर।

रू० भे०—रुघराई, रुघराउ, रुघराज, रुघराजा।

रघुबंस—स. पु. [स. रघुवश] १ इक्ष्वाकुवशीय राजा रघु का वश।

उ०—नमौ **रघुबंस** तणा रवि राम, विखू मग लक वडा बरियाम।

—ह र

२ श्रीरामचद्र।

३ ईश्वर, परमेश्वर।

४ कालिदास द्वारा रचित 'रघुवश' नामक महाकाव्य।

रू० भे०—रुघवस।

रघुबंस कुमार—स. पु. यौ. [स. रघुवश+कुमार] १ श्री रामचन्द्र।

२ रघु के वंश का कोई राजकुमार।

रघुबंसमणि—स पु [स. रघुवशमणि] श्री रामचन्द्र भगवान।

रू० भे०—रुघवसमणि।

रघुबंसरव, रघुबंसरवि—स. पु [स. रघुवशरवि] श्री रामचद्र भगवान।

रू० भे०—रुघवसरव।

रघुबंसी—स. पु. [स. रघुवशी] १ राजा रघु के वश मे उत्पन्न व्यक्ति।

२ श्री रामचन्द्र।

रू० भे०—रगुवसी, रघवसी।

रघुबर—स पु [स] १ रघु के वश मे श्रेष्ठ, श्री रामचन्द्र।

उ०—१ नह हुई न होवै है नही, सो छब जोड समान की। मिळ वसौ 'मल्ल' मन मदिर, जो सी **रघुबर** जानकी।

—र. रू.

उ०—२ ये तौ पूत सपूत हो हो **रघुबर** जी। थे पिता वचन ल्यो पाळ, हो रघुनदनजी।

—गी. रा.

उ०—३ लिछमन जती सील व्रत लेकै, मास्त्रन ग्रग समाई। बरस चतुर दस बन **रघुबर** की, करी कठिन सिरकाई।

—ऊ का.

२—ईश्वर, परमेश्वर।

३ विष्णु।

रू० भे०—रघुवर, रुघवर।

रघुबीर—स पु. [स] १ राजा रघु के वश मे वीर व्यक्ति, श्री रामचन्द्र।

२ विष्णु, ईश्वर। (डि को)

३ राम भ्राता लक्ष्मण।

रू० भे०—रघुवीर, रघुवीर, रुघबर, रघवर, रघवीर, रुघवीर।

रघुबेदी—देखो 'रिगवेदी' (रू. भे)

उ०—सघला सामक अथरवणी, यजुरवेदीया जाण। **रघुबेदी** सवि रथि चड्या, पडित पोकारि पुराण।

—मा. का. प्र.

रघूपति, रघूपती—देखो 'रघुपति' (रू. भे.)

उ०—१ सदा निन आनद नाम सहस्स। **रघूपति** उच्चित अस्रन रस्स।

—ह र.

उ०—२ वदै मुनेस जेण वार, देखि भूप बीनती। सव सहाय काज सेलि, पुत्र नो **रघूपती**।

—सू प्र.

रड़—स. स्त्री—१ करुण-क्रन्दन।

२ रुदन ।
३ चिल्लाहट ।
४ देखो 'रड़ो' (मह रू भे)
५ देखो 'रड़ी' (मह रू. भे)

रड़क—सं स्त्री —१ कंकर, कुस या कोई कण आंख में गिर जाने से होने वाली पीड़ा ।
२ टक्कर ।
उ० जिण भणणणणणा नाद खणणाण खागा **रड़क** । आजि खग णणणण वज्जिगाळ वधा वरण ।
—महादान महडू ।

३ हमला ।
४ ध्वनि विशेष, आवाज ।
उ० रवना गाजीया गोड़ **रड़क** नगारा धूजीया धोम धाक ।
— गो रू

५ रगड़ ।
६ लगाव ।
७ वैर, बदला, दुश्मनी ।
उ० - गाय भेळी करता तीन दिन हुयग्या । भाग रा फिरता गाम दूर रया । खरड़ा घिसग्या । लोगा धरोळा पता माथै नव भिड़'र धाल्ली **रड़का** काढी ।
—दसदोख

८ देखो 'रिड़क' (रू भे)

रड़कणौ, रड़कबौ—क्रि अ —१ आंख मे कोई कंकर, कुस या कण के गिरने से दर्द होना, चुभना, कसकना, खटकना ।
२ मानसिक कष्ट से कोई बात या घटना मन में बराबर खटकना मानसिक कष्ट होना ।
उ० – १ जवना–गंगा रो झील ज्यो गाजो–सुरो, निरोगो अर बादळा रै पाणी ज्यू निरमळ व्हैगो, पण मन रै किणी खूणा मे एक ठोड़ किरकर **रड़कती** ही ।
फुलवाड़ी

उ० २ खूब गमेड़ा खाय, गैला री वाणी पडै । आ अगम–जुगती पाय, **रड़कं** नित मे राजिया ।
किरपाराम

३ टक्कर होना टक्कर लगना ।
उ० १ गो उणरी मार खावतो हाथी तोप घावरी राव रै हाथी कनै आगो सो राव रा हाथी रै पाखतै पग रै उसी रगड़ लगायी सो हाड जाय **रड़कियौ** ।
—डाढाळा सूर री वात

४ किसी बात को सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से मन मे क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा होना । बुरा मालूम होना ।
उ०—१ हाथ री चाल अर सैण्या इसी है कै आंख मे धाली ई नो **रड़कं** नी ।
—वरसगाठ

उ० –२ भेळा मिनखा मे सदा सू ह–हल्लो हुतो आयो है, पण कंदी नी आख मे धाल्या नी **रड़कं** ।
—दसदोख

५ ध्वनि या आवाज होना, बजना ।
६ लुढ़कना घुड़कना ।
उ०— आगै चढ़ता गढ सू कावरी एक **रड़कयौ** नै नाहरी नमत नै आवता रै माथा नै सूडी घालै ज्यु होप सू डा मे आयौ ।
—राव रिड़मल री वात

७ परस्पर टकराना ।
८ देखो 'रिड़कणौ, रिड़कबौ (रू भे)
उ० उणरै स गाड़ रै नजीक पहुचिया सो भेसा **रड़कती** गणै छं ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रड़कणहार हारो (हारी), रड़कणियो —वि ।
रड़किओड़ो, रड़कियोड़ो रड़कयोड़ो -भू का कृ ।
रड़कीजणो, रड़कीजबो भाव वा ।
रड़कणो रड़कबो । —रू भे

रड़कली—सं स्त्री —कोई छोटी पहाड़ी ।

रड़कियोड़ो—भू का कृ —१ आंख मे चुभा हुआ, कसका हुआ, खटका हुआ २ मानसिक कष्ट हुवा हुआ, मन मे खटका हुआ ३ टक्कर हुवा हुआ, टक्कर लगा हुआ ४ किसी बात के सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा हुवा हुआ बुरा मालूम हुवा हुआ ५ परस्पर टकराया हुआ ६ ध्वनि या आवाज हुवा हुआ, बजा हुआ ७ लुढ़का हुआ, घुड़का हुआ ।
८ देखो 'रिड़कियोड़ो' (रू भे) (स्त्री रड़कियोड़ी)

रड़क्कणौ, रड़क्कबौ—१ देखो 'रड़कणौ, रड़कबौ' (रू. भे)
उ०—१ पवाजे खड़क्कै पगी धड़क्कै कायरा प्राण ।
बड़क्कै उरेव ह्वैडा **रड़क्कं** भू सीस ।
—चिमनजी रो गीत

उ०—२ देखता गेहवो जग धड़क्कै आगरो दिल्ली ।
बवी जैन साग रा **रड़क्कं** वारवार ।

झड़क्कं खाग रा बाढ भड़क्कं कायरा झुंड,
हमल्ला नाग रा माथा रड़क्कं हजार।
—सूरजमल मीसण

२ देखो 'रिड़कणौ, रिड़कबौ' (रू भे)

रड़क्कणहार, हारौ (हारी), रड़क्कणियौ —वि.।
रड़क्किग्रोड़ौ, रड़क्कियोड़ौ, रड़क्कयोड़ौ —भू का कृ.
रड़क्कीजणौ, रड़क्कीजबौ —भाव वा.
(स्त्री. रड़क्कियोड़ी)

रड़ड़ाट—स. स्त्री [अनु.] ध्वनि विशेष।

रड़णौ, रड़बौ—क्रि.स [स रद्] १. रुदन करना, रोना।
उ०—चौरंग चूरिया वर सत 'चादै', भिड़ै नवली भांति।
गोरड़ी काढे गात गोखें, रड़ै गळती राति।
—चादा वीरमदेवोत मेड़तिया रौ गीत

२ चिल्लाना, क्रन्दन करना।
३ कुचलना, रौंदना।
४ अव्यवस्थित करना, उथल पुथल करना।
५ युद्ध करना।
६ प्रवाहित होना, बहना।
७ घुड़कना, डोलना।
८ दूध का गर्म होना।

रड़णहार, हारौ (हारी), रड़णियौ —वि.
रड़िग्रोड़ौ, रड़ियोड़ौ रड़योड़ौ —भू का कृ
रड़ीजणौ, रड़ीजबौ, —भाव वा
रड़णौ, रड़बौ, रढ़णौ, रढ़बौ —रू भे

रड़व, रड़वौ—स पु—अत्यधिक परिश्रम का कार्य।

रड़बड़—स स्त्री—१ लुढ़कने या धड़कने की क्रिया या भाव।
२ पदार्थों, वस्तुओं आदि की परस्पर टक्कर से उत्पन्न ध्वनि, आवाज।
३ कार्य।
४ टक्कर, भिड़न्त।
५ आवारागर्दी।
६ कुचले जाने की क्रिया या भाव।
रू० भे०—रड़ब्बड़, रड़भड़, रड़ब्बड़, रड़वड़, रड़ब्बट।

रड़बड़णौ, रड़बड़बौ—क्रि अ १ किसी चीज का इधर उधर लुढ़कना, ठोकरें खाना।
उ०—१ उळझ आखड़, रुड रड़बड़, पग्ग भड़पड़ वीर बड़बड़।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दड़त पड़िसै धणा दड़दड़, रुड राकस तुंड रड़बड़।
खाग खामा वहै खड़खड़, त्रिगडा त्रड़त्रड़।
—पी ग्र.

२ इधर उधर मारा मारा फिरना, आवारा घूमना, भटकना।
उ०—सगपण करतौ थकौ, तू रड़बड़ियौ संसार रे। एक एक री जून मे, तू उपनौ अनंत वार रे। जयवाणी
३ ध्वनि होना, आवाज होना।
४ टकराना, भिड़ना।

रड़बड़णहार, हारौ (हारी), रड़बड़णियौ --वि.।
रड़बड़िग्रोड़ौ, रड़बड़ियोड़ौ, रड़बड़योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़बड़ीजणौ, रड़बड़ीजबौ -- भाव वा.
रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ, रड़भड़णौ, रड़भड़बौ, रड़वड़णौ, रड़वड़बौ, रड़वड़णौ, रड़वड़बौ। —रू. भे

रड़बड़ाट—स स्त्री—ध्वनि विशेष।
रू० भे.—रड़भड़ाट

रड़बड़ियोड़ौ—भू का कृ—१ इधर उधर लुढ़का हुआ, ठोकरें खाया हुआ २ इधर उधर फिरा हुआ, आवारा घूमा हुआ ३ ध्वनि हुवा हुआ, आवाज हुवा हुआ ४ टकराया हुआ, भिड़ा हुआ।
(स्त्री रड़बड़ियोड़ी)

रड़बौ—स पु—१ बूढा व बदसूरत ऊंट।
२ मनीरा (हिन्दवाणी) का ऐसा फल जो दूषित, विकृत या अनुपयोगी हो।

रड़ब्बड़—देखो 'रड़बड़' (रू भे)

रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ—देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू भे.)
उ० रड़ब्बड़ मुंड पड़ै चदि रुंड।
तिमा विण मुंड वणै गज तुंड। —रा रू.

रड़ब्बड़ियोड़ौ—देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री रड़ब्बड़ियोड़ी)

रड़भड़—देखो 'रड़बड़' (रू भे)

रड़भड़णौ, रड़भड़बौ—देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू भे)
उ०—पिस्त-पिस्त अर साधू-साधू, सागै हुवै जद सागीड़ा लड़ै-भगड़ै। पण कैदी भाई जेळ मे कदै ही नी रड़भड़ै।
—दमदोख

रड़भड़ाट—देखो 'रड़बड़ाट' (रू भे)

रड़भड़ियोड़ौ—देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री रड़भड़ियोड़ी)

रड़मलपण, रड़मलपणौ—स पु—वीरता, बहादुरी।

रड़माल–देखो 'रिड़माल' (रू भे)

रड़वड़णौ, रड़वड़बौ–देखो 'रडवडणौ, रडवडबौ' (रू भे)

उ०—१ सूरज पर चाद जेड़ी ना कुछ चीजा नी प्रीत री ठोकरा मे रड़वड़ै। —फुलवाड़ी

उ०—२ विखिन्न पड़ वप भई, मुड़ रडवड़ै धरत्ती।
मई गड़ बहडा, थड़ गड़ भई दुमत्ती। —रा रू.

उ०—३ ग्यान बिना ए जीवड़ो, रड़वड़ियौ ससार।
जो थारै निरणौ हुवै, ग्यान अपूरब धार। —जयवाणी

उ०—४ अणभग पाखड़िया आहव मडिया धूजै रणतासुर धड़हड़िया। अका रड़वड़िया इन आरड़िया रिम गाहट जाणी रुड़िया।

—रा वचनिका

रडवडणहार, हारौ (हारी), रडवडणियौ —वि
रडवडियोड़ौ, रडवडियोड़ौ, रडवड्योड़ौ —भू का. कृ
रडवडीजणौ, रडवडीजबौ —भाव वा.

रड़वड़ियोड़ौ–देखो 'रडवडियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. रड़वडियोड़ी)

रड़वड़–देखो 'रडवड' (रू भे)

रड़ि–देखो 'रड़ी' (रू भे)

रड़ियोड़ौ–भू का कृ–१ रोया हुआ, रुदन किया हुआ २ क्रन्दन किया हुआ, चिल्लाया हुआ ३ कुचला हुआ, रौंदा हुआ. ४ उथल पुथल किया हुआ, अव्यवस्थित किया हुआ ५ युद्ध किया हुआ ६ प्रवाहित हुवा हुआ, बहा हुआ ७ धुड़का हुआ, ढोला हुआ।
(स्त्री रड़ियोड़ी)

रड़ी–स स्त्री–१ टीला, मगरा।

उ०—१ डूंगरा चढि ऊचे रड़ी, गावै हरि का गीत।
विरहन स जीवन मिलो सुवा मिरगा प्रीत। —अनुभववाणी

उ०—२ रुनी रड़ी चढेही, जोई दिसि जाना-तणी।
ऊभी हाथ मलेहि, विलखी हुई वल्लहा। —ढो मा.

२ छोटी पहाड़ी।

उ०—तठै हणवत जी री देहरी छै। कन्है रड़ी माथै 'मोजन' री थान छै। इण तरफ नू नीससी नाडी धवळी ढक छै। —मोजन रै मरुळ री बात

३ ककरीली पहाड़ी भूमि।

उ०—आभग ईसा रै कहै रावळ जेसळ कपूरदेसर री पाळ कनै रड़ी सी थी उण कुड रा पाणी ऊपर समत १२१२ रा सावण वद १२ आदीतवार मूळ नखत्र रावळ जेसळ जेसळमेर री राग मडाई। —नैणसी

रू भे–रड़ी, रड़ि।

४ देखो 'रड' अल्पा –रडकली, (रू भे.)

रड़ौ–स पु–१ टीला, मगरा।

उ०—जद ब्राह्मण नाव इसो, एक सौ बीस बरस री ऊमर मे, तिण जैसळ नू कह्यो–म्हारा सेन कनै रड़ौ है, जठै स्रीकृस्ण गदा सू पाणी प्रगट कर पाडवा नू पायौ। —बा दा. ख्यात

२ छोटा पहाड़।

३ ककरीला व ऊचा-नीचा पहाड़ी भूखड।

रू० भे०—रड़ौ।

रढक–स पु [स रणक] १ धोबी
स. स्त्री –२ टक्कर, भिड़त।

उ० –ठहक ढक भबकता कायरा गेलवा, क्रोध धक कढीनै नाग काळा। आय हका रढक लीयै कुण आहाडा, वगा रगा भचक कुमिआळ वाळा। —गणजी आढौ

३ चोट, आघात, प्रहार।

४ लड़ाई, युद्ध।

वि०—रचना करने वाला रचने वाला, रचयिता।

उ०—रथ रूपी पिजर रढक सकळ निपना साम रो। और रो डर नही भर अवस राति दिवस उण राम रो। —ऊ का.

रढण–वि०—रचने वाला।
रू० भे०—रचवण

रढणअजवासी–स पु–ईश्वर, परमात्मा। (ना मा)

रढणा–देखो 'रचना' (रू भे)

रढणी–स स्त्री–१ रचने की क्रिया या भाव।

२ रचने का ढग।

३ देखो 'रचना' (रू भे.)

उ०—दुनिया झूठै रढणी, साच न गैड़ै जाय। साई झूठ न रचई, हरीया सचि सुहाय। —अनुभववाणी

रचणौ-वि. (स्त्री रचणी) १ बनाने वाला, तैयार करने वाला।
२ निर्माण करने वाला, सृष्टा।
३ उत्पन्न करने वाला, उत्पादक।
४ शृंगार करने वाला, सजाने वाला।
५ स्थापित करने वाला।
६ फैलाने वाला।
७ कुछ करने वाला।
८ लगाने वाला।
९ लेख लिखने वाला।
१० निश्चित करने वाला।
११ एकत्र करने वाला।
रू० भे०-रचणौ।

रचणौ, रचबौ-क्रि स [स रचन] १ बना कर तैयार करना या बनाना।

उ०—१ वेध्याउ याह्नि वदन ज **रचिऊं** व्याहारिसार इदु नू हरिऊ। नर नीधी ताहा स्वाग थई छि, मुख मनोहर करिऊ।
—नळाख्यान

उ०—२ खेडेचा विन खोड, परमेस्वर **रचियौ** पुरुस। जसवन धारी जोड, नर दूजौ दीसै नहीं।
—ऊ. का.

२ सृजन करना, निर्माण करना।

उ०—१ ईंडी कनक अछेह देह धरि हरि निग द्वारे। **रचै** नाभ नीरज्ज, रज्ज अज प्रज गुण सारै।
—रा रू

उ०—२ नाम चरण सेवक सदा रे, मधुकर पंकज जेम। प्रमुदित चित नी चूप सु रे, रास **रच्यौ** मै एम।
—वि कु

३ उत्पादन करना, उत्पन्न करना।

उ०—१ देखे भव दरियाव, **रची** पग सू स्री रमण। नग अपूरब नाव, नाविक बिण निरभर नदी।
—बा दा

४ शृंगार करना, सजाना।

उ०—लाज वस्त्र सील सुपेद जघाळ जुगत अन। **रचि** असाम नवरग, करै मधि चित्र देव क्रन।
—रा रू.

५ स्थापित करना।

उ०—अई रू ख्वा सारू हुई, छ्वडउ पडियउ नाम। तड हुती चदउ कियउ, लड **रचियउ** आकास।
—ढो. मा

६ फैलाना।

उ०—१ साह किताके मरबगल, **रचै** फद दिन रात। मच्छ गळा-गळ माहि बस, बच जावै हर बात।
—बां. दा.

उ०—२ साची एक ब्रह्म की वाता, दूजी सकळ भ्रान की जाता। जुग मा बौत **रचै** पाखडा, एक न जाणै नाथ अखंडा।
—अनुभववाणी

७ कुछ करना।

उ०—१ सतरै प्रकार नी पूजा **रचै** है तिग माही सू तोने दस वीस रुपया देस्या।
—सि द्व.

उ०—२ कळह **रचै** दसकध, नवग्रह बध निवारियौ। हुवा धनुस गुण सबद व्है, गतमद जग मदगध।
—बा दा.

उ० ३ रिण **रचिया** सा रोड, रोग रिण छाडे गया। उग घर तौ आगा-लगै, मरणै मगळ होड।
—मा वचनिका

उ०—४ समर उजेंग **रचै** नव-महमौ। सूर महस भेदै नव थान।
—गु रू ब

८ लगाना।

उ०—जेहा जीण जडाव, गजगाथा सिस कु अरग्गर। **रचि** सगस हय राव, दीधा तें नाम्बा दुआ।
- बा दा.

९ लेख लिखना, रचना करना।

उ०— भाखा अज मारू सुर भाखा, भाखा प्राकृत जान भर। पायौ **रचण** रूपगा पंडौ, मेहाही धारी महर।
—बा दा

१० निश्चित करना।
११ एकत्र करना।

उ०—इग मे मरजी री काई बात। मरजी री बात व्हैनी तौ पचायती थापग री भी मेळी क्यू **रचियौ**।
— फुलवाडी

१२ देखौ 'राचणौ, राचबौ' (रू भे)

उ०—१ उग दिन सू मगळा महल सोगारी तबज्या करणौ लागिया अर कु वरजी नू इसा खम किया जे **रच** रहिया छै।
—कु वरसी साखला री वारता

उ० २ पाणी ल्यावै डोरि करि, हाथ भात पचाय। रावण साधन रचि रच्यौ, मानिन नावै दाय।

—अनुभववाणी

रचणहार, हारी (हारी), रचणियौ —वि.
रचियोड़ौ, रचियोड़ो, रच्योड़ौ —भू. का कृ.
रचीजणौ, रचीजबौ —कर्म वा.
रचणौ, रचबौ। —रू. भे.

रचन—सं. स्त्री.—१ रचने की क्रिया या भाव।
२ रचने का ढंग।

उ०—रचन रचन गुणज्यो हिवै, आगौ भाव प्रधानौ रे। दायौ दान इसी परै, जेम लही तुमे मागो रे।

—वि. कु.

रचना—सं. स्त्री. [सं.] १ रचने या रचना करने की क्रिया या भाव।
२ निर्माण या रचना करने की कला, कौशल।

उ०—करतां फाड़ दुकूल नू, सीवै तिण सुधार। इण विध री **रचना** अठै, तारां तारणहार।

—बां. दा.

३ लीला, माया।

उ०—**रचना** ईश्वर री ईश्वरता गोवै। मन इम सहज विण सभव नाह मोवै।

—ऊ. का.

४ निर्माण, सृजन, सृष्टि, उत्पादन।
५ निर्मित या उत्पादित वस्तु।
६ बनावट, स्वरूप।
७ बनाने का ढंग, प्रकार।
८ सजावट, शृंगार।
९ केश विन्यास।
१० व्यूह, जाल, फंदा।
११ कल्पना।
१२ कोई ग्रंथ, काव्य-कृति, ग्रन्थ।
१३ स्थापित करने की क्रिया।
१४ कार्य, काम।

उ०—भळै म भोळा-मकार बाजौ, दीन-दुखिया रा दुख मेटण रो गुमान करौ। थारै वैठा आ **रचना** व्हे नौ मात्र खटणी।

—फुलवाड़ी

१५ विश्वकर्मा की पत्नी का नाम।

रचयिता—वि० [सं. रचयितृ] १ रचने वाला, निर्माण करने वाला
२ लिखने वाला, लेखक।

रचांनी—देखो 'रछांनी' (रू. भे.)

उ०—नाई **रचांनी** खोलतौ खोलतौ कै'वण लागौ बापजी, एक बात कैणी वै दू। इलाज री दोरी है।

—फुलवाड़ी

रचाइणौ, रचाइबौ—देखो 'रचाणौ, रचाबौ' (रू. भे.)

उ०—केता राजा पछाड़ै, **रचाड़ै** खेत नरा कता।
अराड़ै सचाड़ै वीर विहड़ै अपार।

—बुधसिंह सिढायच

रचाइणहार, हारौ (हारी), रचाइणियौ —वि.
रचाड़ियोड़ौ, रचाड़ियोड़ौ, रचाड़्योड़ौ —भू. का कृ.
रचाईजणौ, रचाईजबौ —कर्म वा.

रचाड़ियोड़ौ—देखो 'रचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रचाड़ियोड़ी)

रचाणौ, रचाबौ—क्रि. स. ['रचणौ' क्रिया का प्रे. रू., 'राचणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ बनाकर तैयार करवाना, बनवाना।
२ सृजन कराना, सृष्टि कराना।
३ उत्पादन कराना, उत्पन्न कराना।
४ शृंगार कराना, सजवाना।
५ स्थापित कराना।
६ फैलवाना।
७ करने के लिए प्रेरित करना, करवाना।

उ०—१ वीर नाद माई नग बजायौ, रग फाग मम जग **रचायौ**।

—ऊ. का.

उ०—२ उकटिया उदियापुर ऊपर, मेवाड़ा मिळिया तिण सौसर। राणा कवर थी गुंज **रचायौ**। प्रगट करै काट देस पगायौ।

—रा. रू.

८ लगवाना।
९ लेख लिखवाना।
१० निश्चित कराना।
११ एकत्र कराना।
१२ जमाना,
१३ आयोजन करना। ऊ. का
१४ रंजित करना/कराना।

उ०—बरड़ा महदड़लो दिन चार हाथ **रचाल्यौ** बनड़ा काजळिया दिन चार नैण घुळाल्यौ। —लो. गी.

१५ अनुरक्त करना/कराना। १६ शोभित करना/कराना।
१७ प्रसन्न करना/कराना। १८ प्रभावित करना/कराना।
रचाणहार, हारौ (हारी), रचाणियौ —वि.

रचायोड़ौ —भू. का. कृ.
रचाईजणौ, रचाईजबौ —कर्म वा.
रचाड़णौ, रचाड़बौ, रचावणौ, रचावबौ —रू भे.

रचायोड़ौ—भू. का कृ.—१ बनाकर तैयार करवाया हुआ, बनवाया हुआ २ सृजन कराया हुआ, सृष्टि कराया हुआ. ३ उत्पादन कराया हुआ, उत्पन्न कराया हुआ ४ शृंगार कराया हुआ, सजवाया हुआ. ५ स्थापित कराया हुआ ६ फैलवाया हुआ. ७ कुछ करने के लिये प्रेरित किया हुआ ८ लगवाया हुआ ९ लेख लिखवाया हुआ १० निश्चित कराया हुआ ११ एकत्र कराया हुआ १२ जमाया हुआ १३ आयोजन किया हुआ १४ रंजित किया हुआ।
(स्त्री रचायोड़ी)

रचावणौ, रचावबौ—देखो 'रचाणौ, रचाबौ' (रू भे)

उ०—१ आयौ आयौ सावणिया रौ मास, सुसरोजी बियाव रचावियौ।

—लो गी

उ०२—पण ब्याव रचावै जैडी हीमत नी किणी री कोनी। ब्याव रो बुदबुदो नी ऊठता ई मिटग्यो।

—फुलवाड़ी

रचावणहार, हारौ (हारी), रचावणियौ —वि.
रचाविओड़ौ, रचावियोड़ौ रचाव्योड़ौ भू का कृ.
रचावीजणौ, रचावीजबौ —कर्म वा

रचावियोड़ौ—देखो 'रचायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री रचावियोड़ी)

रचित, रचिय—वि [स रचित] १ रचा हुआ, बनाया हुआ।
२ निर्मित, सृजित।
३ उत्पादित।
४ सजाया हुआ, शृंगारा हुआ।
५ लिख कर तैयार किया हुआ।
६ स्थापित।
रू० भे०—रईय।

रचियोड़ौ—भू का कृ.—१ बनाकर तैयार किया हुआ, बनाया हुआ २ निर्माण किया हुआ, निर्मित, सृजित. ३ उत्पन्न किया हुआ, उत्पादित ४ शृंगार किया हुआ, सजाया हुआ. ५ स्थापित किया हुआ. ६ फैलाया हुआ. ७ किया हुआ ८ लगाया हुआ. ९ लिखा हुआ, लिखित. १० निश्चित किया हुआ. ११ एकत्र किया हुआ।
१२ देखो 'राचियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री रचियोड़ी)

रच्चण—देखो 'रचण' (रू. भे)

रच्चणौ—देखो 'रचणौ, (रू. भे)

उ०—धरती जेहा भरवमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठा जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि।

—अज्ञात

रच्चणौ, रच्चबौ—१ देखो 'रचणौ, रचबौ' (रू भे)
२ देखो 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे.)

रच्चियोड़ौ—१ देखो 'रचियोड़ौ' (रू भे)
२ देखो 'राचियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री रच्चियोड़ी)

रच्छ—देखो 'रक्ष' (रू भे)

उ० पाड़िया जुधा बिपच्छ, राम पाय सेव रच्छ। ओर मोर रूप अच्छ, लच्छ लच्छ लच्छ।

—र. ज. प्र.

रच्छक—देखो 'रक्षक' (रू भे)

उ० वळ के अगराज कुळवट के अंकुर। पाणी के रच्छक, थळवट के कोहर।

— रा रू

रच्छया, रच्छ्या—देखो 'रक्षा' (रू भे)

उ०—सो थिर राखण काज क भूखण साजिया। जड़िया रच्छ्या जंत्र मनोज मुनि दिया।

—बा दा.

रच्छा—देखो 'रक्षा' (रू भे)

उ०—म्हारी रच्छा कीज्यौ हे मा देसाणा री राय। जग जननी जगदंबा धावळ वाळी धाय।

—राघवदास भादो

रच्छिक—देखो 'रक्षक' (रू भे)

उ०—पर एती जगि रिण जीपियौ। दस सहस रच्छिक दीपियौ।

—सू प्र.

रच्छित—देखो 'रक्षित' (रू भे)

रच्छी—स स्त्री —धूलि, रज ?

उ०—झुकियौ वेळ झड आधी फर आधी, हाथा ताळी हणि लुकियौ नहि लाधौ। कच्छीरौ करकर रच्छी रळिजावै, तड़फै मच्छीनळ पच्छी पुळजावै।

—ऊ का.

रछक—देखो 'रक्षक' (रू भे)

रक्षपाळ—देखो 'रक्षपाळ' (रू भे.)

उ०—१ 'आमक्रत' तणी 'बीठल' तणी कहै रम। पान **रक्षपाळ** प्रक्रिया खड्ग पाण।

—बा दा

उ०—२ मत **रक्षपाळ** दूसरा 'गोकळ', पाळण सत्र दिसी दळ पूर। रावत तणी भरोस रागी, मैला रमैं हिंदवी सूर।

—सग्रामसिंह चूंडावत री गीत

रक्षस—देखो 'राक्षस' (रू भे.)

उ० भरयो पुर अघ जगत अभावण, आगम अन कीधो फिर आवण। जबर दुत मेलै समुभावौ, **रक्षस** अजू समजै तो रावण।

—र रू.

रक्षांनी—स स्त्री—नाई की वह छोटी पेटी या मंजूषा जिसमें हजामत बनाने के उपकरण रहते हैं।

उ०—देसोता री स्वार, बैठे आय रावरी नाई किराब निराट, **रक्षांनी** सू राजिया।

—किरपाराम

रक्षाकरण—स स्त्री १ माता, जननी। (अ मा)

वि०—रक्षा करने वाला, रक्षक।

रक्षिक—देखो 'रक्षक' (रू भे.)

उ० 'कुंभ' राण बाळक जुगत राजऊ न जाणै, राव जतन कजि रहै, **रक्षिक** चीतोड़ धराणै।

—सू प्र.

• **रक्षिपाळ**—स स्त्री [स रक्षा + पालनम्] रक्षा

उ०—करयो—राण मं आय वसो, जगनेंद्र आपोरी **रक्षिपाळ** करसी।

—बा दा ख्यात

रक्षिया—देखो 'रक्षा' (रू भे.)

उ०—विनपति मृगो अधिक हरखाणी, हीर वात निरखी हरखाणी जपियो सखि कनिया ले जावी, करि **रक्षिया** पग पान करावी।

—सू प

रज—स स्त्री [स रजस] १ धूल, बालूरेत, गर्द।

(अ मा, डि को, ह ना मा)

उ०—१ सारी सयणाराण **रज** ले सरणाटा। मावण मुकी सो देती सरणाटा।

—ऊ का

उ०—२ मोरा कु सकजा गिनै आणा होय निकज। हरीया हरिजन जाणीयै, जिमी राह की **रज**।

—अनुभववाणी

२ पृथ्वी, भूमि।

३ रात, रात्रि।

उ०—**रज** पलटै दिन ही घटै, सूर पलट्टै छाह। सूरा हदा बोलिया, बैण पलट्टै नाह।

—राव रिणमल री बात

४ गौरव, प्रतिष्ठा, इज्जत, मर्यादा।

उ०—१ कमधज भुज निमज सकज सु सुगह कज। राखै **रज** रिणतूर रहै।

—गु. रू. ब.

उ०—२ आपरी रास **रज** सुरग वसियौ 'अनौ'। राज विध भोगवै महाराजा।

—अनोपसिंह री गीत

रू० भे०—रज रजि, रजी, रंज, रजी, रज्ज, रज्जी, रज्जु, रज्जू, रय।

५ कीर्ति, यश।

उ०— लोयण लाज लाज रा लगर, भागी साज राज रा भाव। मा रा ओटभ **रज** रा मारग, **रज** रा कोट तणी महाराव।

—आईदान पाल्हावत

६ चांदी, रजत।

उ०— सुभ सुभट मति कति लोक सब्ब। दुति करति नजर धरा **रज** दरब्ब।

—सू. प्र.

स पु—७ जल, पानी।

८ बादल, मेघ।

९ बाप्प, कोहरा।

१० स्तन धारी मादा प्राणियों के योनि द्वार से प्रतिमास निकलने वाला रक्त जो गर्भकाल मे बद रहता है। आर्तव। (अनेका)

उ०- नरुवर सारा मूळ बिन, **रज** वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ सो दादू गहिता।

—दादूबाणी

११ पुष्परज, मकरद, पराग। (डि को)

१२ केसर।

१३ धार्मिक क्षेत्र मे, प्रकृति के तीन गुणो मे से दूसरा गुण, रजोगुण। (सांख्य)

उ०—१ सत **रज** तम रस पच रहत रस, ता रस सू मन लागा। यम्रत जरै प्राण रस पीवै, भरम गया भै भागा।

—ह पु वा

उ०—२ सतगुण अधिक सोई है ग्याना, **रज** तम दोई अग्यांना। रज तम गुण का वेग प्रचंडा, सत्वगुण ग्यान नसाया।

—स्री सुखराम जी महाराज

१४ आकाश, गगन।

१५ धूल का कण, जर्रा।

उ०—१ तौ पण प्रताप मेछा तणी, अनस दाप बाधौ अकस। राव राण काण लेखै न **रज**, एक पाण थभै अरस।

—रा. रू.

उ०—२ रगा करै रज रज हुए, रिव ढकै **रज** हूत। रज जेती धर ना दिये, रज रज व्है रजपूत।

—नाथूराम महियारियौ

१६ अंधकार।

१७ मानसिक अन्धकार, अज्ञान।

१८ मैल।

१९ पाप। (अनेका)

२० भुवन—लोक।

२१ कांति, आभा, नूर।

उ०—लोयण लागणिया लगिया लजवाळा। कोयण काजळिया रळिया **रज** वाळा।

—ऊ. का

२२ शौर्य, पराक्रम, वीरता।

उ०—मुख नह नूर उछाह मन, बळ नह कंध विसेख। मारवडिया लोयण मही, **रज** हदी नह रेख।

—वा दा.

२३ रौब, प्रभाव।

२४ क्षत्रित्व, रजपूती। (अनेका)

उ०—पडपच करै न लाज जिका पिड, खोटौ लाभ कुलाभ खरौ। **रज** बेचवा न आयौ राणौ, हाटा वीच 'हमीर' हरौ।

—पृथ्वीराज राठौड

२५ क्षत्रिय, रजपूत।

उ०—चेतै नह चारण चव्या, **रज** वौ नह गिरा रज्ज। खाय खपै खळ खूमडा, भोम जाय जिण भज्ज।

—रेवतसिंह भाटी।

२६ राज्य, सत्ता।

उ०—१ ताहरा पतिसाह जी हिंदुवा कानी देखि अर कहियौ जु राठौड छै सु तौ **रज** रा धणी छै। राजा छै।

—द. वि

उ०—२ उमरावा दाखी अरज, कुसळि करण **रज** काज। जगत अछांनी जाणणै, सो मानी महाराज।

—रा. रू.

२७ टुकड़ा, खण्ड।

उ०—१ निहसै खळा 'नवल्ल' री, अगै दळा दुझाल। हिव पडियौ **रज रज** हुवै, सादू सूरज माल।

—रा. रू.

२८ वीर्य की बूंद या कतरा।

उ०—तरवर साखा मूळ बिन, **रज** वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ, सौ दादू गहिता।

—दादूबांणी

स पु.—२९ एक सप्तर्षि, जो वसिष्ठ एवं ऊर्जा के पुत्रो मे से एक था।

३० धर नामक वसु का एक पुत्र।

३१ विरज राजा का पुत्र एक राजा।

३२ स्कद का एक सैनिक।

रू० भे०—रज्ज।

रजक—स. पु [स] (स्त्री रजकी) १ वस्त्र धोने वाला धोबी। (डि. को.)

उ०—अरि गज घटा पीठि पछटै इम। जळ मिल तटा **रजक** पछटै जिम।

—सू प्र.

रू० भे०—रजिक।

२ देखो 'रजिक' (रू भे)

उ०—कुवर तुहाळौ खीकमळ, नित झळहळतौ नूर। देखनडा दुख दूर व्है, पाय **रजक** सुख पूर।

—बा दा.

रजग—देखो 'रजिक' (रू भे)

उ० -काळ रहदा गाळ **रजग** रोजी जाकी।

—केसोदास गाडण

रजगुण—देखो 'रजोगुण' (रू भे)

रजडंबर, रजडंमर—स पु [स रजस् + आडबर] धूल या गर्द का गोटा, गुब्बारा जो आकाश मे छाकर अंधकार कर देता है।

उ०—मिळै **रजडंबर** सु ब्रहमड। भुरग्गौ विसवासुर तिमर भुड।

—अज्ञात

रजढांणी—स स्त्री—राजधानी।

उ०—अहमद इकवीस मद जोगी रजदांणी ।

—कंमोदास गाडण

रजणी—देखो 'रजनी' (रू भे)

रजणीचर—देखो 'रजनीचर' (रू भे)

रजणी, रजवी—देखो 'राजणी राजवी' (रू भे)

उ०—१ राम रहूं नी मे रजू, मैं न रहूं रज राम ।
हरीया जामण अर मरण, जाह नाह हरि स नाम ।

—अनभव वांणी

उ०—२ राम मरण नरप भीम गळ ना रजै ।
खाश्रपत राम राम राम करणा छजै । —र. ज. प्र

रजतत—स पु [स राज + तत्व] शूरता, वीरता ।

रजत—स स्त्री [स रजतम] १ चांदी, रूपा । (अ मा, डि को, ह ना मा)

उ० —१ दव पिसर दस मु खरै, रमक नरै विस गीत ।
हेम रजत पातर हरै, पातर करै पलीत । —बा दा

उ० —२ वसि रतन हौदा वांधि, मोवनी रजत प्रमाणि ।

—सू प्र

२ स्वर्ण, सोना (अ मा, डि को)
३ पृथ्वी, भूमी । (ना मा)
४ स्वर्ण कलश । (अ मा)
५ रक्त, रुधिर ।
६ हाथी दांत ।
७ कठहार ।
८ भारतवर्ष के मध्यावर्त का नाम । (पौराणिक)
९ नक्षत्र ।
वि०—१ लाल ✱ (डि को)
२ शुभ्र श्वेत । ✱ (डि को)
३ चांदी का बना, रुपहैला ।
४ उज्वल ।
रू० भे०—रजित, रयत ।

रजतकूट—स पु [स] मलय पर्वत की एक चोटी ।

रजत-धात, रजतधाता रजतधातु—स पु [स रजत धातु] १ स्वर्ण सोना । (ह ना मा)
२ चांदी ।

रजताचळ—स पु [स रजताचल] १ कैलाश पर्वत । (डि को)
२ अस्ताचल ।

रजतात—स पु [स रजतात] सूर्य भानु । (ह ज को)

रजताद्रि—स पु [स] कैलाश पर्वत ।

रजथांन—देखो 'राजस्थान' (रू भे)

रजधर—देखो 'राजधर' (रू भे)

उ०—सिरधर छत्रधर अवर गल मन,
नाटधर रजधर 'सीघ' तण ।
पूगी दळ पतसाह पेस्वा, फेरै कमळ न सहस फण ।

—महाराणा प्रताप रौ गीत

रजधरम—स पु [स. राजधर्म] १ क्षत्रित्व, रजपूती ।

उ०—१ 'आसकरन' तणा 'नींवा' हरा वापयण, रजधरम मार मुरड़ै रहायो । प्रथी साधार वदधार होना पहल, प्रथी साधार वद अर्थ पायो ।

—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

उ० —२ रजधरम राखियो भूप 'राणा' हरै ।
राजधरम राखियो गरट गामी । —द. दा

२ वीरत्व, पराक्रम ।
३ राज्यधर्म ।
४ देखो 'रजोधरम' (रू भे)

रजधाणी, रजधान, रजधांनी—देखो 'राजधानी' (रू भे)

उ०—१ पुर चळ चळ मगर अन न पाणी ।
रिधी मार लीधी रजधाणी । —रा रू.

उ० —२ धरम बिना देखी धरणी मे भयो रिते हर भगी ।
धरम प्रताप धरापति धारन, रजधानी वरणी । —ऊ का

रजधारी—देखो रजधर (रू भे)

रजन—स स्त्री - वारुन । (ना मा)

रजना—स स्त्री -संगीत की एक मूर्च्छना ।

रजनि रजनी—स स्त्री [स. रजनी] १ रात्रि, निशा, रात ।
(अ. मा डि को, ना मा, ह ना मा)

उ०—दादू धरती को अम्बर करै, अम्बर धरती होइ । निस अंधियारी दिन करै, दिन को रजनी सोइ ।

—दादूवाणी

२ लाल लाक्षा ।
३ हल्दी । (अ मा)
४ जतुका नामक लता
५ दारु हल्दी ।
६ एक पौराणिक नदी ।
७ रात्री ।
८ गई ।

उ०—गुडियंत जूह गडाड ए, सरजीत जाणि पहाड ए। मदगंध मद ऊमंड ए, हय पाई **रजनी** ऊडु ए।
—गु रू. ब

रू० भे०—रजणी, रजीनी, रयणि, रयणी, रयनि, रयनी।

रजनीकर—स. पु [स] चन्द्रमा।

रजनीचर—स. पु. [स] १ चन्द्रमा, चांद।

२ राक्षस, असुर।

उ०—देखि देखि दानव अति दारुन, राजिव नयन भये रोसारुन। **रजनीचरन** करन निरमूळहि, मारदूळ चढि गहिय त्रिशूळहि।
—मे म

रू० भे०—रजणीचर,

रजनीति—देखो 'राजनीति' (रू भे)

उ०—तिण रीति सु बुद्धि धरम सी निकौ, धुरा दृस्टि ऊडी धरै। जग वाली पालि बाधै जरु, काज **रजनीति** हि करै।
—ध व ग्र

रजनीपत, रजनीपति, रजनीपती—स पु [स रजनी+पति] चन्द्रमा। (डि को)

रजनीमुख—स पु [स] सायंकाल, संध्या। (डि को)

रजनीस—स पु [स रजनीश] चन्द्रमा।

उ०— नरवर नदियाण सुरसरी सुरतर, सरपा राज सेरावन सेस। सरा नखत **रजनीस** मानसर, अवनीसा ओपम अवधेस।
—र रू

रजपती, रजपत्ती—स पु [स रज- भूमि + स पति] भूपति, राजा।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोनै आळ भ्रमे त्रयलोक। सोई सत्य सद्रढ, रेखा सार अक **रजपत्ती**।
- रा रू

रजपाट—देखो 'राजपाट' (रू भे)

उ०—हणौ राज भूलकर्ड **रजपाट**, भडै रिण दीयण दे मग भाट।
—प रू

रजपूत—स. पु (स्त्री रजपूतण) १ सिपाहि, सैनिक।

उ०—इमडी बाता सुणि भीमराजजी उठ मुजरौ कर कही बावाजी माहिब हू तो आपरा **रजपूत** छू।
—मारवाड रा अमरावा री वात

२ योद्धा, भट, वीर।

उ०—१ एक बुरहान पठाण वडौ **रजपूत** पेहली राव मालदे रै वाम थौ। पछै छाड नै नागौर रा धणी रै वाम वमीयो थौ, सु बुरहान नै प्रिथीराज जी धणौ सुख थौ।
—राव मालदै री वात

उ०—२ रायसिह साथै वीको ईडरियौ नै पठाण हबीब वडा **रजपूत** था सु बाजिया।
—नैणसी

३ अनुचर, सेवक।

उ०—ताहरा दलै कह्यौ-वीरमजी आज वाळा दिन थाहरा दिया छै। थे माहरै गुढै आवस्यो तो म्हे थारा हीडा करस्या। थाहरा **रजपूत** छा।
—नैणसी

४ देखो 'राजपूत' (रू. भे) (डि को.)

उ०—१ रुळया खुळया **रजपूत** बिरामण मिळगा बिटळा। वैस्य मिळ गया विकळ सूद्र कुळ रळगा मिटळा।
—ऊ. का.

उ०—२ फेर पाछौ आयनै बोल्यौ-म्हारी मा कह्यौ है **रजपूत** तो लेखै लेवै धणी हैं।
—भि द्र.

रजपूतण—देखो 'रजपूताणी' (रू भे)

उ०—पग थू सानजा भीमा। वयू म्हारै हाथ सू एक **रजपूतण** नै राड बणावै।
—रातवासौ

रजपूतपण, रजपूतपणौ—स पु—क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—वित धाड थकै अनरी गृह्वै। **रजपूतपणौ** तन रो न रहै।
—पा प्र.

रजपूतवट—स पु—रजपूती का गौरव, क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ० – निमा ही वागा रा वणाव, निमा ही मूछा रा मरट, निमा ही भुजा रा आसला, निमा ही पोरस रा गाढ, निमा ही कामवट रा अग, निमा ही **रजपूतवट** रा आचार देख नै महाराजा राजेसर अजमे रै पाणी रासेसा छै।
—रा सा स

रजपूताणी—देखो 'राजपूताणी' (रू भे)

उ०— १ **रजपूतांणी** रच गीताणी सिरखी। नैणा जळ भरनी सैणा थळ निरखी।
—ऊ का

उ०—२ जाया **रजपूताणियां**, वीरत दीधी वेह। प्राण दियै पाणी पुणण, जावा न दियै जेह।
—बां. दा

रजपूताई, रजपूती–देखो 'राजपूती' (रू भे) (हि. को.)

उ०—१ सबै काछो, जैतसी भतीज, तू **रजपूताई** मे साचो छै, कळिया वैरा रो बाहक छै, तिको थो वैर वाळि ।

—जैतसी ऊदावत री बात

उ०—२ हरीया दुबिध्या दूरि करि, सामो पकडो एक । **रजपूती** जिसकी रहै, छाडि न जावै टेक ।

—अनुभववाणी

उ०—३ सहिजाला सीचाला सहिळा, ते दूरा सरणा तरणा धवसाण । रावो रै किरहिक **रजपूती** सत्र हिंदू की सुरताण ।

—बा दा

रजबंद, रजबध–स पु [स रजबन्ध] १ मासिक धर्म रुक जाने की स्थिति ।

२ देखो 'रजाबंद' (रू भे)

उ० जयचद रा तो सिर जपू **रजबंद** सब दिन रहू । इण भावर सू राजस सगड, सो सो कोस दिसा चहू ।

—पा प्र

रजबट–देखो 'रजवट' (रू भे)

उ० —पन प्रसंक पिसन सिराई न सिहु । **रजबट** बटै रहौर सिहु ।

—ऊ का

रजबनांमो–स पु [फा रजम + नाम] फारसी भाषा मे अनूदित महाभारत का ग्रंथ ।

उ० —भारत रो तरजमो फारसी मे अकबर करायो, नाम **रजबनांमो** ।

-बा दा ख्यात

रजबळी, रजबली–स पु –१ राजा । (हि को)

२ वीर, बहादुर ।

रजबो–स पु –१ साग आदि पातळ मे दी जाने वाली खटाई ।

उ० साग उतार-उतार दूकडिया मे घालजै छै । सिरस पाणी सू ठ लूण इळदी सेसबार दीजै छै । दही रो **रजबो** दीजै छै ।

— रा सा स

२ देखो 'रजमो' (रू भे)

रजमंडळ–स पु –धूलि समूह, धूल का गुब्बारा, गर्द के बादल ।

उ०--हैमरा तीस सत लसकरा कह हुई, बहै सिलुर सहर समर बेहा । आराडा सड **रजमंडळ** थोभाड्यो, पराडा अगम सर सगम पेहा ।

—महाराजा जसवतसिह री गीत

रजमी–स. स्त्री.–एक प्रकार की लाल रग की मिट्टी ।

रजमो–स पु –१ साहस, पुरुषार्थ, वीरत्व ।

उ०—रजब **रजमा** पाइया गुरु दादू दरबार । घरे अघर का मुख लह्या, मनमुख सिरजग हार ।

—रजबदास जी महाराज

२ शक्ति, बल ।

उ०—क्या कहिए कहणी कहा, **रजमां** रहणी माहि । सो साहिब के हाथि है, दे तो अचिरज नाहि ।

—ह. पु वा.

३ रजोगुण ।

रू० भे०–रजबो ।

रजरोगी–वि –राज्य प्राप्त करने की इच्छा वाला ।

उ०—जोगी कहौ, भव भोगी कहौ, **रजरोगी** कहौ, कौ केमेड है । न्याई कहौ, ओ अन्याई कहौ, कुकराई कहौ जग जेमेड है ।

--ऊ का

रजवती–स स्त्री [स ऋतुमती] रजस्वला स्त्री ।

रजवड–१ देखो 'राजवरा' (रू भे)

उ०—थारै तू घटिया मे मोतो सूरज ऊग्या । म्हारी **रजवड़** घ गारयो गीग जाग्यौ ।

—लो. गी.

२ देखो रजवाडा (रू भे)

रजवट, रजवट्ट–स पु –क्षत्रित्व, रजपूती, वीरत्व । (हि को)

उ०- १ रो रघुराम रै रघराम, **रजवट** धारिया रघुराम ।

—र ज प्र.

उ०- २ अकबर हियै उचाट, रात दिवस लागो रहै । **रजवट** वट समराट, पाटण राण 'प्रतापसी' ।

—दुरसो आढो

उ० ३ एकण दिसि राजळ असम्म, आतिसपति दिसि एक । भगराईं वेह सुभट, रायरा **रजवट** टेक ।

—प च. चौ.

उ० -४ चित्रांगा कोट जमराा विचै गज भिडजा कीधा गरा । **रजवट्ट** माभ नडिया रहै, रिण पडिया 'ऊदा' हरा ।

—रा रू.

रू० भे०–रजवट रजवाट, रजव्वट ।

रजवरा–देखो 'राजवरा' (रू भे)

उ० – वनडी थारै ए घू घटिए रै कारणै काजळी देसा रा हमनी ल्याया म्हारी **रजवरा**. घू घटियो छीन जवो । मारू देसा रा

कुंवला ल्याया, म्हारी रजवण, **बनडी हीरां** ए **जड्यौ मोत्यां** ए जड्यौ। थारे घूंघटिए में चांद पवाम्यौ म्हारी रजवण।

—लो. गी.

रजवांण—स. स्त्री.—राजपूती, क्षत्रित्व।

रजवाइत—सं. पु.—१ राज्यत्व, राजापन।

स. स्त्री —२ राज्य करने की क्रिया या भाव।

रजवाड़, रजवाड़ौ—म. पु.—१ रियासत या राज्य।

उ०—१ तद संवत १५८८ जेठ वद ३ नै मालदे राव हुवौ। पण वडौ दुस्ट, सू माराई रजवाडा सू किसौ कियौ। —द. दा.

उ०—२ मूळी रौ पापा **रजवाड़ां** मे रैवणियौ स्याणौ हाजरियौ, राजनीत सू रग्योडौ-सुधरयोडौ मिनख। स्यात भ्रर जात नै जांणै विडद भ्रर वडाई बखाणै। —दमदोम

रू० भे०—रजवाडी।

रजवाट—देखो 'रजवट' (रू भे)

उ०—'बखत' सुत भ्राउवै भाट खग वजाई, काट घण दळा **रजवाट** केवै।

—ठा सिवनाथसिंह वृपांवत रौ गीत

रजवाडौ—देखो 'रजवाडो' (रू. भे.)

उ०—रावा सिर-हर राव, राज सिर-हर **रजवाडां**। म थरहर हैजमा मक थक, थरहर सीवाडा।

—पना

रजवार—देखो 'राजकुमार' (रू भे)

उ०—म्हारै मन वसियो भवर, उर वसीयौ **रजवार**। मो मृगणी रो साहिबौ, नीला को भ्रसवार।

—पना

रजव्वट—देखो 'रजवट' (रू भे)

उ०—भारत भू भरतार, **रजव्वट** रजणौ। भ्रवनरियौ नर एक गनीमा गजणौ।

—किसोरदान बारहठ

रजस्वळा—स. स्त्री. [स रजस्वला] वह स्त्री जिसकी ऋतुमति की भ्रवस्था चल रही हो।

उ०—१ **रजस्वळा** नारीह, कथा गोप किण सूं कहूं। समझौ हरि सारीह, सरम मरम री मावरा।

—रामनाथ कवियौ

उ०—२ लता जु पुहपवती छै। मु ए **रजस्वळा** कही छै। ताह सो पवन परस करै छै। इह मनवाळा को भ्रग छै।

—वेलि टी

रू० भे०—रज्जसुळा।

रजा—स स्त्री [भ्र.] १ इच्छा, मरजी, मंसा।

उ०—१ भ्रमरसिंह गजसिंहजी रै वडौ कुंवर। सांचोर रा चहुवांणां रौ दोहितौ। सो गजसिंहजी री **रजा** नही।

—भ्रमरसिंह राठौड री बात

उ०—२ स्त्री दीवांण रै भला हुवै ज्यु करज्यौ पिण खानजादां नै लिखीयौ छै। भ्रागै तौ धणीया री **रजा**।

—राव रिडमल री बात

२ कृपा, दया, भ्रनुग्रह।

उ०—१ रग मन रावि रजा मे रहिए, बिन हरि **रजा** बहौत दुख सहिए।

—ह. पु वा.

उ०—२ राम वाळी **रजा** सीस ज्यारै रहै। कृण त्यानै हुवा हीणां सारा कहै।

—र. ज प्र.

उ०—३ हम खिजमत कबूल, हम्म फरजन्न तुमारे। हम सिरि ऊपरि **रजा**, हुकम हम कीयौ भ्रारे।

—गु रू. ब.

उ०—४ इव करता घणा वरस बीतिया बाशाह री **रजा** महरबानी घणी रहै।

—राठौड राजसिंह री वारता

३ भ्राज्ञा, हुक्म।

उ०—१ ध्यावता निजर तो सू धरै, तो नियाण निसचै तिरै। राजाधिराज तोरी **रजा**, ईसर वा सिर ऊपरै।

—ह. र.

उ०—२ **रजा** तुम्हारी राम कहो त्यू मैं करू। मन गहि पवन सवाहि भ्रटकि उलटी धरू।

—ह पु वा

उ०—३ रीस करो भावै रळियावत (यन) राज भावै खर चाह गुलाम। माहरै सदा ताहरी माधव, **रजा** सजा सिर ऊपर राम।

—प्रथीराज राठौड़

४ भ्रनुमति, स्वीकृति, सहमति।

५ छुट्टी, रुखसत।

६ खुशी, प्रसन्नता।

७ भ्राशा, उम्मीद, चाह।

८ राजा होने का भाव।

रजाइस—स स्त्री—१ आज्ञा, हुक्म ।

२ राज्यत्व ।

रू० भे०—रजायस ।

रजाई—सं स्त्री—१ सर्दी के बचाव के लिये ओढ़ने का लिहाफ या
चोला जिसमें रूई भरी हुई होती है ।

उ०—ग्यान पथरणी धरियो गूदा, मेरी विशा **रजाई** सूदा ।

—ऊ. का.

२ राज्य प्रथा । राज्यत्व ।

रजापण, रजापणी—स पु—१ हर्ष, प्रसन्नता ।

२ सहमति ।

३ देखो 'राजापणी' (रू भे)

रजाबद—देखो 'रजामंद' (रू भे)

उ०—१ बादशाह इण बहुत **रजाबद** हुवौ ।

—गौड़ गोपालदास री वारता

उ०—२ इसौ **रजाबद** हुवौ नीको क्यू वस्तारा बरणी मे नहीं
आवै ।

—कु. बरसी सांखला री वारता

रजाबंदी—देखो 'रजामंदी' (रू भे)

उ०—बादशाह न साहिब काम करै तिण म **रजाबदी** प्रभू री
चाहै मन री चाही न करै ।

—नी प्र

रजाबध—देखो 'रजामंद' (रू भे)

उ० भीवंजी सह्या, पठाण रीसाणौ जाय छै, तिको इसा नै
चाह वेली राखीजै, किण हेक वेळा आडो आवै, तिण सू अठै
पाछौ ल्याय, सोऊ जीमाय नै सीख देस्या, पाछौ **रजाबध** करि हमि
हसाय नै सीरा सा नै सीख करा ।

—जगमाल मालावत भाटी री वात

रजाबंधी—देखो 'रजामंदी' (रू भे)

उ०—मब रै मुहडै आज भरमस री भरमल होय रही छै । भली
ही **रजाबधी** सगळा नू हुई ।

—कु बरसी सांखला री वारता

रजामंद—वि [फा रिजामंद] १ जो प्रसन्न या खुश हो ।

उ० मो जलाल सारा नू रीझ मौज जमा दीठा जिसी दीवी ।
सारा **रजामंद** हुवा ।

—जलाल बूबना री वात

२ मंजूर ।

३ जो किसी काम या बात पर सहमत हो तैयार हो । राजी ।

उ०—तरै बादसाह कहियो—तुम जलाल रै पास जावो और छोटी
रा तारीख हमारे ठहरावो तो हम **रजामंद** हैं ।

—जलाल बूबना री बात

रू० भे०—रजबद, रजबध, रजाबद, रजाबध ।

रजामंदी—स स्त्री [फा रिजामंदी] १ 'रजामंद' होने की अवस्था
या भाव ।

२ प्रसन्नता, खुशी ।

उ०—ज्यं क्यू करै सो समार रा भला व प्रभू री **रजामंदी**
नू करै ।

—नी प्र.

३ सहमति, अनुमति ।

उ०—नी वळद, कुत्तो गोधू अर मिनख री **रजामंदी** सू ऊमर
रा श्री नवा जमा लग्न व्हैगी ।

—फुलवाडी

४ इच्छा, मर्जी ।

रू० भे०—रजाबदी, रजाबधी ।

रजायस—देखो 'रजाइस' (रू भे)

रजि—देखो 'रज (रू भे)

उ०—नगा आंस नाळ, वजै विकराळ । धरा **रजि** धोम, वगी
उडि वोम ।

—मू प्र

रजिक—१ देखो 'रजक' (रू भे)

उ०—वध वहूका वध धप छोळा जळधारा । दियै फूल दारवा,
रजिक पाडिजै अपारा ।

—मू प्र

२ देखो 'रिजक' (रू भे)

रजित—देखो रजत (रू भे)

उ०—वन वट कुळ वरियाम, माल पेनीस सकाजा । सुना दियण
वामनं **रजित** श्रीफळ साभ राजा ।

—मू प्र.

रजितमई, रजितमय—वि—१ चादी का चादी सम्बन्धी ।

२ श्वेत ।

रजियोडो- देखो राजियोडो, (रू भे)

(स्त्री रजियोडी)

रजिस्टर—स. पु [अ.] पंजिका, पुस्तिका ।

रजिस्टरी—स स्त्री [अ] १ राज्य के नियमानुसार किसी सरकारी

कार्यालय में प्रतिज्ञा-पत्र आदि को किसी पंजिका में दर्ज कराने का कार्य । पंजीयन ।
२ डाकखाने में, सामान्य दर से अधिक दाम देकर, पजीकृत करा कर, भेजा जाने वाला पत्र, पार्सल आदि ।
३ किसी जमीन या मकान आदि की खरीद के दस्तावेज ।

रजिस्ट्रार—स. पु [अ.] किसी विश्व विद्यालय, हाईकोर्ट, वोर्ड आदि के कार्यालय मे होने वाला पजीयक का पद ।
२ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति ।
३ कानूनी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाला अधिकारी ।

रजी—देखो 'रज' (रू भे.) (अ. मा , ह. ना. मा)
उ० — १ उडे तुरग तें रजी समग्ग धावती अटे ।
छके छकान छावनी छिना, विछावनी छटे ।
—ऊ. का.

उ०—२ दळ दोऊ दिस आवरे, सूर दमामा देह ।
हरीया रवि छायौ रजी, आया गया न छेह ।
—अनुभव वाणी

उ०—३ कोसिक ज्याग अभग सिहायक, दागव घायक दूसरी पाय रजी रघुराम परस्सत, आ त्रीय गौतम उधरी ।
—र ज प्र

उ०—४ झळहळ वृग माबळ भूल, गुडिली गयग मिळि गोधूल ।
ऊपर रजी धार अधार, दौडे खग्ग रा दळकार ।
—गु रू व

रजीडट—देखो 'रेजीडेंट' (रू भे.)

रजीदानी—स. स्त्री. [म रजः+फा. दान +रा प्र. ई] स्याहि सुखाने के लिए बारीक रेत रखने का पात्र, जिसके ढक्कन मे चलनी की तरह छिद्र होते है । बालूदानी ।

रजीनी—देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रजु—१ देखो 'रज्जु' (रू. भे)
२ देखो 'रज्जू' (रू भे.)

रजुआत—म. स्त्री [अ रजूआत] १ मित्रता, मेल-जोल ।
उ०—रावळ साहप रा वागड धणी । पे सदा चीतोड रा राणा री चाकरी करता पछै सै दिलीरा पातसाहा सु पिण रजुआत रखै छै । —नैणसी
२ लगाव, झुकाव ।

रजुता—स स्त्री.—१ रज्जू होने की अवस्था या भाव ।
२ सरलता, सीधापन
३ सहमति ।

रजू—१ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)
उ०—१ राम रजू तौ मे रजू, मैं न रजू रज राम । हरीया जांमण अर मरण, जाह तांह हरि सूं काम ।
—अनुभव वांणी

उ०—२ दोनुं चितोड नु चालीया । चितोड जाइ रजू हुवा ।
—चौबोली

उ०—३ पीछै भीवराजजी घोडा ५० सूं चढ दिल्ली गया । नै पातसाह हमायूं रै पावा लागा । तद पातसाहजी चाकरी मैं रजू किया । —द. दा.

उ०—४ पाछती भोमिया था त्यानू मेल्हिया और मारिया सो लोग सगळा रजू हुइ गया । — ठा. जे.

२ देखो 'रज्जु' (रू. भे)

रजूबाकी—स स्त्री —ऋण का लेखा जोखा करने के बाद ऋण की अवशिष्ट रहने वाली रकम ।

रजूनांमौ—स. पु. [अ. रजू+फा. नामः] स्वीकृति-पत्र, सहमति-पत्र ।
उ०— स १७१६ चैत्र मैं एक दिन आलमगीर कहायौ साहिजान जी कैद मैं हा त्यानू , जो हजरत पातसाही इनायत करग का मेरे ताई रजूनांमा लिखदेवौ । —द. दा.
रू० भे०—रज्जुनामौ ।

रजोकुळ—स. पु —राज्य कुल ।

रजोगुण—स. पु. [स] धार्मिक क्षेत्र मे, प्रकृति के तीन गुणो मे से दूसरा गुण । इसकी अभिव्यक्ति, सात्विक तथा तामसी वृत्ति के बीच की दशा होने पर होती है ।
उ०—रजोगुण ब्रह्मगुण तातसी, तिकौ ग्यान पतिसाह गिणी । तामसी रूप सकर तणौ पति गुणा सा राम पिणि ।
—पी. ग्र

रू० भे०—रजगुण ।

रजोगुणी—स पु —१ ब्रह्मा । (ना. मा.)
स स्त्री —२ रजोगुण वाली वृत्ति या भावना ।
वि —रजोगुण के भाव वाला ।
उ० —अबै इण वखत मैं वे रजपूत रजोगुणी राज राग रग मे रजीयोडा बीर है ।
—वी. स. टी.

रजोदरसण—स. पु. [स रजो-दर्शन] स्त्रियों की रजस्वला होने की अवस्था या दशा ।

रजोधरम—स. पु. [स. रजोधर्म] स्त्रियो का मासिक धर्म ।
रू० भे०—रजधरम ।

रजोमूरती—स पु [स रजामूर्ति] ब्रह्मा ।

उ०—तू ही भोळगी भेस सभू मुळावै । रजोमूरती तेम तूंही रुळावै ।

—मे म

रज्ज—१ देखो 'रज' (रू भे)

उ० १ साम नगी बळ सूरमा, रिमा गिरी तिन रज्ज । ऊथाळै अगमान छळ, भाळै प्राण सकाज्ज ।

—रा रू

उ० २ गाज ऊभोळिया रज्ज सू गडळा । थाम मैं पत्र दीपै किरै धूमळा ।

—गु. रू ब

उ०—३ टाळिया गहरा घेर बकी धरा । रज्ज उड़ै रवी धोमनै धूधळै ।

—सू प्र

२ देखो 'राज' (रू भे.)

उ०—प्रोरंग पतिसाही ग्रही, दहवटि करि दातार । रज्ज पियारा राजियां, भाट दुनियादार ।

—ध व ग्र

रज्जणी, रज्जबी—देखो 'राजणी राजबी' (रू भे)

उ० दळ पीत लोभय, सूरूप बीज सोभय । निरवग पीठ रज्जयं, मवाण पाणि सज्जय ।

—र ज प्र

रज्जसुळा—देखो 'रजस्वळा' (रू भे)

रज्जियौ—देखो 'राजवी' (रू भे)

उ० —प्रोरंग पतिसाहि ग्रही, दहवटि करि दातार । रज्ज पियारा रज्जियां, भाट दुनियादार ।

—ध व ग्र

रज्जी—१ देखो 'रज' (रू भे)

२ देखो 'रज्ज' (रू भे)

३ देखो रज्जु (रू भे)

४ देखो 'राजा' (रू. भे)

रज्जु—स पु [स] १ रस्सी, डोरी, रस्सा ।

उ०—रज्जु बिलखी नै कमर, पडसै नृप सभार ।

—वि कु.

२ आगडोर ।

३ स्त्रियों के सिर की चोटी ।

४ शरीरस्थ रग विशेष ।

५ एक प्रमाण विशेष (जैन)

वि. वि—जैन मतानुसार ३, ८१, २७, ९७०, इतने मण के वजन को 'एक भार' कहते हैं । ऐसे १००० भार का लोहे का गोला उसे कोई देवता ऊंचे स्थान से नीचे को डाले, वह गोला ६ मास, ६ दिन, ६ पहर और ६ घडी मे जितना क्षेत्र पार कर, उल्लंघन कर नीचे आवै, उतने क्षेत्र को एक रज्जु प्रमाण जगह कहते है ।

६ देखो 'रज' (रू भे)

७ देखो 'रज्जू' (रू भे)

रू० भे०—रजु, रजू, रज्जी ।

रज्जुनामी—देखो 'रजूनामौ' (रू भे)

रज्जू—वि.—१ प्रसन्न, राजी ।

२ सहमत, एकमत ।

३ अनुकूल ।

४ प्रत्यक्ष, सामने, रूबरू ।

रू० भे०—रजु, रजू, रज्जी ।

५ देखो 'रज्जु' (रू भे)

उ०—१ रज्जू मे सरप सीप माही रूपा, भ्रम होता है योई । तमगुण यू समान सुसमी, कहते मानव होई ।

— स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ तरु जड सरप दराड दिस्ट मिटी, सुद्ध रज्जू आतम धारी । जाग्रत स्वप्न सुसुपती तुरीया, ज्यारू ई भरम बिलारी ।

—स्री सुखरामजी महाराज

रटत—देखो 'रट' (रू. भे.)

रटती—स स्त्री —माघ कृष्णा चतुर्दशी, जिस दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करना उत्तम माना जाता है ।

रट—स स्त्री —१ ईश्वर या इष्ट के नाम को बार बार उच्चारण करने की क्रिया या भाव ध्वनि जप ।

उ०—रट हरि सुख पति ध्यान रहायो । सजण कर सिणगार सगायो ।

—रा रू

२ किसी शब्द का बार बार किया जाने वाला उच्चारण या उच्चारण करते हुए याद करने का अभ्यास ।

रटक—स स्त्री —१ मुकाबला, सामना, भिडन, टक्कर ।

उ०— काळीगे ऊपरै करै काडसि कटक ।
राकसा हुति रहमाण लीजै रटक । —पी. ग्र.

२ तीव्र गति से किया जाने वाला आक्रमण, हमला ।

३ युद्ध, लडाई झगडा ।

उ०— साहा नणी धरा सिर साटै, रहतौ व्याय लेतौ **रटक**।
गत दिन पैला अनै आपरा, करि साथै लेगौ कटक।
—राजा केसरीसिंघ शेखावत रौ गीत

क्रि. वि –४ चाव से।

उ०—गुठा जीमता गटक, अब नहि भावै वानै।
रात्र रोगतां **रटक**, जरै नह सीरौ ज्यानै।
—जुगतीदान देथौ

रू० भे०—रटक्क, रटाका, रट्टक।

अल्पा०—रटकौ, रटक्कौ।

रटकणौ, रटकबौ–क्रि स.–१ दौडना, भागना।

उ०—धाडा पाड कर **रटके** धूरत, धन पटके धरधूम।
नटके साधू बनै निराळा, मटके माळा मूस।
—ऊ. का

२ मुकाबला करना, सामना करना, टक्कर लेना।
३ आक्रमण करना, हमला करना, किसी पर टूट पडना।
४ युद्ध या लडाई करना।
रटकणहार, हारौ (हारी), रटकणियौ —वि
रटकिओडौ, रटकियोडौ, रटक्योडौ —भू का कृ
रटकीजणौ, रटकीजबौ —कर्म वा
रटक्कणौ, रटक्कबौ —रू. भे।

रटकियोडौ–भू का कृ–१ दौडा हुआ, भागा हुआ २ मुकाबला किया हुआ, सामना किया हुआ, टक्कर लिया हुआ. ३ आक्रमण या हमला किया हुआ, किसी पर टूट कर पडा हुआ ४ युद्ध या लडाई किया हुआ।
(स्त्री० रटकियोडी)

रटकौ–देखो 'रटक' (रू भे)

रटक्क–देखो 'रटक' (रू भे)

उ०—वधि चक्क उचक्कन राह विर्यं, करि हक्क कटक्क **रटक्क** कियं। —सू प्र

रटक्कणौ, रटक्कबौ–देखो 'रटकणौ, रटकबौ' (रू भे.)

रटक्कियोडौ–देखो 'रटकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. रटक्कियोडी)

रटक्कौ–देखो 'रटक' (अल्पा, रू. भे)

उ०–१ रिम न **रटक्कां** राचणा, जगी जुडै न जग। मिव जोगण भैरू सगत, विलखै लग्ग वाग्ग। —रेवतसिंह भाटी

उ०–२ भटक्का हजारां बहै, सगीवा बटक्का भडै। **रटक्कां** बटक्का, रिमा करै गाढै राव।
—बुधसिंह सिंढायच

रटण, रटणी–स स्त्री.–१ रटने की क्रिया या भाव, रट, जाप।
२ घोषणा।
३ जिव्हा, जीभ। (अ मा)

रटणौ, रटबौ–क्रि स [स रटनम्] १ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार-बार उच्चारण करना, जाप करना, जपना, रटना। भगवत् भजन करना।

उ०–१ धन वे पुरख वडा पण धारी, खलक सिरोमण सुजस खटै। उमगै दान ऊधर्म आाचा, राम राम मुख हूत **रटै**।
—र. ज

उ०—२ उदर भरण घर घर भटै, **रटै** नही स्रीराम।
सूम करै कवडी सटै, ते गुण घटै तमाम। —बा. दा.

उ० –३ अथ ओमकार अक्षर उचार, निस दिवस नाम **रट** राम राम। —ऊ. का.

उ०—४ राम राम रसना **रटै** सोई जुग मे साध।
हरीया सिवरन सहज का, वाका मता अगाध।
—अनुभव वाणी

२ किसी शब्द का बार बार उच्चारण करके याद करने का अभ्यास करना।
३ किसी के गुण गाना, कीर्ति या यशोगान करना।
४ कहना, बोलना।

उ०—१ दस मुगि जबाब अवरग हू, रावत जसवत रा **रटै**।
नह दिया साह खावद नरिंद, सीस दिया खावद सटै।
—सू प्र.

उ०—२ **रटै** हेक 'पदमो' 'रतनावत'
दूजौ 'पदम' **रटै** 'दौलावत'। —सू प्र.

५ विलाप करना, रुदन करना, रोना।

उ०— १ लागी दळि कळि मळयानिळ लागै, त्रिगुण परसतै सुधा त्रिस। **रटति** प्रत सिसि मधुप रू खराट, मात सबनि मधु दूध सिसि। — वेलि

उ०—२ राजस्थान **रटै** कविराजा, कीरत दान कहाणी। गयौ जहान हूत गुण ग्राहक, 'मान' हरौ माडाणी।
—ऊ. का

६ जोर से बोलना, चिल्लाना, चीखना।
७ घोषणा करना।
८ गर्जना।
९ भूकना।
रटणहार, हारौ (हारी), रटणियौ —वि०।
रटिओडौ, रटियोडौ, रट्योडौ —भू का कृ.

रटीजणी, रटीजबी —कर्म वा
रट्टणी, रट्टबी, रठणी, रठबी, —रू भे

रटाण—स स्त्री —१ अनाज या फलादि की परिपक्वावस्था।
२ रटन की ध्वनि।

रटा—स स्त्री —टक्कर

उ० रिमा धू उथाळी चढी रीम री रटा री जायी। भाली किना ईस री जटा री जायी भूत।

—सूरजमल मीसण

वि० गायक, गान वाला।

उ०—दली घटा छूटा घण दामणि, मेना पटा मिळाव मर।
कवि जस रटा थटा गण केवी, हरिदन छटा अजीत हर।

—महाराजा मानसिंहजी री गीत

रटाका—देखो 'रटक' (रू भे)

उ० ल अडा रटाका पूर ऑरदा नाडवा लागा,
महावीर वीज म पाड्वा लागा मूठ।

मुखदान कविया

रटाणी, रटाबौ—क्रि स [‘रटणी’ क्रिया रा प्र रू.] इष्ट व ईश्वर के नाम का बार बार उच्चारण कराना, जाप कराना, जपाना, रटाना। भगवत भजन कराना।
२ किसी शब्द का बार बार उच्चारण करवा कर याद करने का अभ्यास कराना।
३ किसी के गुण गाने या यशोगान करने के लिये प्रेरित करना।
४ बोलाना।
५ रुदन या विलाप कराना रुलाना।
६ घोषणा कराना।
रटाणहार हारी (हारी), रटाणियौ — वि
रटायोडौ भू का. कृ
रटाईजणी, रटाईजबी कर्म वा
रटावणी रटावबी रू भे

रटायोडौ—भू का कृ —१ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार बार उच्चारण कराया हुआ, जाप कराया हुआ, रटाया हुआ, भगवत भजन कराया हुआ २ किसी के गुण या यश गाने के लिये प्रेरित किया हुआ ३ किसी शब्द का बार बार उच्चारण कराकर याद करने का अभ्यास कराया हुआ ४ बोलाया हुआ ५ रुदन या विलाप कराया हुआ रुलाया हुआ ६ घोषणा कराया हुआ।
(स्त्री रटायोडी)

रटावणी रटावबौ—देखो रटाणी, रटाबौ (रू भे.)
रटावणहार हारौ (हारी) रटावणियौ वि।
रटाविश्रोडौ, रटावियोडौ, रटाव्योडौ —भू. का. कृ।
रटावीजणी, रटावीजबौ कर्म वा।

रटावियोडौ—देखो 'रटायोडौ' (रू भे)
(स्त्री रटावियोडी)

रटियोडौ—भू. का कृ —१ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार–बार उच्चारण किया हुआ, जाप किया हुआ, जपा हुआ, रटा हुआ, भगवत् भजन किया हुआ २ याद करने के लिये किसी शब्द का बार–बार उच्चारण किया हुआ ३ किसी के गुण, यश या कीर्ति का गान किया हुआ. ४ कहा हुआ, बोला हुआ. ५ विलाप या रुदन किया हुआ, रोया हुआ ६ जोर से बोला हुआ चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ घोषणा किया हुआ. ८ गर्जा हुआ ९ भूका हुआ।
(स्त्री रटियोडी)

रट्टक—देखो 'रटक' (रू भे)

उ० रट्टक तीरा की रवी, धर धमकट चित धार। फिर दट कर दीधी फते, 'लालहरण' की लार।

- जुगतीदान देथौ

रट्टणी, रट्टबौ—देखो 'रटणी रटबौ' (रू भे)

उ०-- रीझ दिया रिझ्माल नै, नव कोट नमै नर। राव मुखा इम रट्टियौ कमधज जाई कर।

डा जुझारसिंह मेडतियौ

रट्टियोडौ—देखो रटियोडौ (रू भे)
(स्त्री रट्टियोडी)

रट्ठ—स स्त्री —१ कनाके की मर्दी, तेज सर्दी।
२ देखो 'राठ' (रू भे)

रट्ठवड, रट्ठवर, रट्ठोड, रट्ठोर, रट्ठौड, रट्ठौर—देखो राठौड' (रू भे)

उ० १ आज विहाणौ रट्ठवड, लछमी लकाळा।

— सू प्र.

उ० २ वस प्रगट धिन भासकर, रट कुळवट रट्ठोड। भल तो 'पातल' मूछ्छ बट जग उग्रवट जस जोड।

—जैतदान बारहठ

उ० ३ रनवता ध्वज धज धुर रहत। है तीन इम रट्ठोर रत।

— ऊ का

रठ–वि.–दृढ, मजबूत।

रठठ–सं. स्त्री.–१ भारी बोझ के कारण गाडी या शकट में चलते समय निकलने वाली ध्वनि विशेष।
२ तलवार।

उ०—'तेजलै' बियै कर **रठठ** भेळैं तुरी, घोम पुड कठठ काय भटकनी वीज।

—मूळो वीरामियौ

रठठणौ, रठठबौ–क्रि अ–भारी बोझ के कारण गाडी या शकट का चलते समय आवाज करना।

रठठाणौ, रठठाबौ–क्रि स–घीसना, घसीटना।

उ०—आडीआ डागरा घातिआ चरू **रठठाविजै** छै। ताह चरवा रा निहाव्या मू पहाडे पडिमादानें रहिआ छै।

—रा मा. स

रठठायोड़ौ–भू का. कृ–घसीटा हुआ, घीसा हुआ।
(स्त्री रठठायोडी)

रठियोड़ौ–भू का. कृ–आवाज किया हुआ।

रठणौ, रठबौ–देखो 'रटणौ, रटबौ' (रू भे)

रठवड़–देखो 'राठौड' (रू. भे.)

रठावठ–स स्त्री–मारकाट, मारपीट।

रठीठ–वि.–दृढ, मजबूत।

रठौर–देखो 'राठौड' (रू भे)

उ०—वाल वय हूमैं जयकार हुवौ **रठौर** रग। जग मग दीन्ह अग नाहि अरमायौं है।

—माधु सेवादास

रड–देखो 'रढ' (रू भे)

रडकवी–देखो 'रडी' (अल्पा., रू भे)

उ०—नाहरा 'बेमवटै' कह्यौ, भाद्रवै री तेरस **रडकवी** करै चौगान मुहै आय ऊभौ रहै।

—मूळवै मागावत री वात

रडणौ, रडबौ–देखो 'रटणौ, रडबौ' (रू भे)

उ०–१ खीजइ मूभइ **रडइ** बाल जिम मयरु मनावट। कमलिणि कारणि मरण ममाधि मा किमइ न पामइ।

—मालिभद्र सूरि

उ०–२ अम्नदिणनरि गिरिसिहरे राजा रमलि करेइ। कुती करयल अडवडिउ **रडयउ** भीमु रडेट।

—मालिभद्र सूरि

उ०—३ रोती **रडती** आवजे।

—धरम पत्र

उ०—४ राय **रडइ** अवनी पडइ, कूटइ कूटइ वेणि। अस्त्रपात इम उल्लरइ, सबळ न खूटइ सेणि।

—मा. का. प्र.

उ०—५ कापडीआ माहि कामिनी, सो नर सूतउ भालि। काम–कदला कही **रडइ**, अवर न बीजी आलि।

—मा. का. प्र

उ०—६ भाद्रवडइ सरोवर भरिया, नीर निरतर होइ। रिदया–भीतरि हुं **रडु**, नीर निवारि न कोइ।

—मा का. प्र.

रडबड–देखो 'रडबड' (रू भे)

उ०—तडफड साकुर हिज तुड। **रडबड** उड गडा जिम रुड।

—गो रू.

रडवडणौ, रडवडबौ–देखो 'रडबडणौ, रडबडबौ' (रू. भे)

उ०—**रडवडता** गलीए मूआ रे, मडा पड्या ठाम ठाम। गलि माहे थट गदगी रे, छै कुण नाखण दाम।

म. कृ.

रडव्वड–देखो 'रडबड' (रू. भे.)

उ०—भजीयइ भाजि मरगड मूट। **रडव्वड** रंगा करडक रूट।

—गु रू ब.

रडाळ, रडाळौ–देखो 'रढाळ, रढाळौ' (रू भे)

रडियोड़ौ–देखो 'रडियोडौ' (रू. भे) (स्त्री रडियोडी)

रडी–देखो 'रडी' (रू भे)

उ०—राजा कह्यौ, **रडी** मारजी हरी निरा वात इसे उपर आगा उभौ राख।

—मूळवै मागावत री वात

रडौ–देखो 'रडौ' (रू भे)

उ०—तू छै साध कीयोह, गोल्हाणी आगै **रडौ**। पेधर डिगीयौ पावडौ, बुढौ दीहाडोह।

—देपाळ धध री वात

रडु–देखो 'रढ' (रू भे)

उ०—मारुवाडि का देसमट, एक न जाई **रडु**। कदि ही होइ अवमरगाउ, कड फाकउ कट निट्टु।

—ढो. मा.

रढ़-स पु.-१ हठ, जिद्द ।

उ०—१ मरै कानडदे नौ थणू ही काळो-वे कुण ? म्हे कुण ? पण वैर रढ़ माड रही ।

—नैणसी

उ०—२ ऐसी बालक पृथ्वी धर्णी है, ए निट् गव गमाव । रढ नवि छाडै प्रागणी है, भावे नी घर आय ।

— प च. चौ.

२ गर्व, अभिमान ।

उ०— रढ़ मेल्ण रामण रढ़राण ।

—ह ना मा

३ अहंकार । (अ मा, ह ना मा)

४ काट, झगड़ा ।

५ बल, शक्ति, पौरुष ।

वि —१ आन—बान वाला, महान, बड़ा ।

२ वीर, बलवान ।

३ दृढ़, मजबूत ।

रू० भे०—रढ़, रड़, रड्, रढि रढ़, रढ़, रढ्‌ ।

रढणौ, रढबौ—देखो 'रडणौ, रडबौ' (रू भे)

उ० रढे साद काढ़ बढ़ै नाग सीस बदन्ने वहे मोळ पचास थीग । काळी नागनी जुद्ध मानी कमन्ने, वढी जम्मना पूर सिंदूर खुले ।

— नागदमण

उ० २ मिटै नाथी 'आसोप' दभल भड़ाहड़ नग दारण । रढ़ै 'नन्द' गाम रो, स्याम काम रो सुधारण ।

— सू प्र

रढणहार, हारी (हारी), रढणियौ —वि ।

रढियोड़ौ, रढियोड़ौ, रढ्योड़ौ —भू का कृ ।

रढीजणौ, रढीजबौ कर्म वा ।

रढरांण, रढरामण, रढरांवण-वि —१ दृढ़, मजबूत, अडिग ।

उ०—मकवाण नर केक नवो नह माग । रण वे पखिया रढरांण ।

—लिखमीदान ऊजळ

२ अपनी आन पर मरने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ ।

उ०—१ 'सुरतौ' गजौ' लखण जुध सार, 'हरी' नगा मोहरी हजारा । 'रामौ' 'करन' नणौ रढरांमण, वाधै गर्ने गर्ने जिम वामण ।

— रा रू

उ०—२ सुरताण सू दीवाण सचिन, नाग मर तुडतांण । दे पांण जमदढ पाण दाखव राग जिम रढरांण ।

—नैणसी

३ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—बूंदराव रिणमल्ल, राउ 'जोधो' रढरांमण । 'सूजौ' 'वाघौ' 'गांगव' 'माल' गढ कोट पलट्टण ।

—गु. रू. ब.

४ हठी, जिद्दी ।

५ वीर, बहादुर ।

उ०— रकेवा पाव दिया रढराण हवो असवार सैंधव रढराण ।

—गो. रू.

६ दुष्ट ।

रू० भे०—रढराण, रढराणौ, रढरामण, रढराव ।

रढराव, रढरावण—देखो 'रढरामण' (रू भे)

उ०—१ भुजां रढराव वेहथ जोर ।

—गो रू.

रढाळ, रढाळौ—वि —१ हठी, जिद्दी ।

उ०—१ भारत कोट हणी सु भाऊ, रच भारथ रढाळौ । पड़िया सीस पर्छ पालटसी । अनड़ पळोंधी आळौ ।

—आवडदान लाळस

उ०—२ साह मार, वध डीड सगाहु, गाजू सूरति सिरी रढाळ । दुलहाण जोय वीदड़' रा दुलहा, मन उलही मेळे वरमाळ ।

—कल्याणदास राव

२ वीर, योद्धा ।

उ०—१ राम नणौ रिणछोड़ रढाळा धाधू वधि वाजण पाराळा । 'सुन्दर' सुत सामत' सिधाळा, 'रैणायर' 'लखमण' रखवाळा ।

—रा रू.

उ०—२ 'करमसिंघ' कळिमत्थ रूक गजसिंघ' रढाळा । वीदा रिणमाहल 'भीम' भारमल भुजाळा ।

—गु रू ब

३ शक्तिशाली बलवान ।

उ०—अगद मेलियौ मद दूत अपपर, वळ अकळा मजबूत वडाळौ । वप सिणगार धूत गळ बैठौ, रचै सभा अदभूत रढाळौ ।

—र रू.

रू० भे०—रडाळ, रडाळौ, रढाक, रढाल, रढाळौ, रढाळौ, रडाळ, रढाळौ, रढियाळौ, रढीलौ ।

रढि–१ देखो 'रडी' (रू भे)
२ देखो 'रढ' (रू. भे)

रढिग्राळौ–देखो 'रढाळौ' (रू. भे)
उ०—के काई कामण करय , रे **रढिग्राळा** मित्त । तिणकी सुध भूली गई, चोरी लीधौ चित्त ।
—ढो. मा

रढियोडौ–देखो 'रडियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. रढियोडी)

रढीलौ–देखो 'रढाळौ' (रू भे)
उ०—ग्रालिम ग्रडीलौ रे तिण ही परि ढीलौ रे। होवै न **रढीलौ** तुरक गयौ गुमे रे ।
—प च चौ

रढु, रढू, रढूढ–देखो 'रढ' (रू भे)
उ०—देवी **रढूढ** रे रूप दमकथ रूठी। देवी सील रे रूप सोमित्र ग्रठी ।
— देवि

रणंकणौ, रणंकबौ–देखो 'रणकणौ, रणकबौ' (रू भे)
उ०—१ **रणंक** निका घोर रुडी रचाई, ठणकै किना भल्लरी ठोर ठाई ।
—व भा.

उ०—२ बेलै कळाधार धीग उडाळा पखाळा खमै, **रणंकै** भेरी बीरूप सूरा भरै रीस ।
—राव मत्रमाळ री गीत

उ०—३ वढै वीर तोणा मनाहा भणका बजै । ग्रच्छरा **रणंकै** नगा नूपरा रवास ।
—चिमनजी री गीत

रणंकियोडौ–भू का कृ–ध्वनि हुवा हुग्रा, ध्वनित । भकृत ।
(स्त्री रणकियोडी)

रणंकौ–स पु–किसी वाद्य या ग्राभूषण की ध्वनि, भणकार ।
उ०—धे धी कट्ट धा धा कट्ट, ताधिमक ताधिमक, रमा भमा ठमा ठमा क्रमं एण रीत । **रणंका** भणका खानि भाति का रमाल सामा, राज्जादौ देखै नाटक सगीत ।
—ल पि.

रणंजय–स पु–सूर्यवंशी एक राजा ।
उ०—जिण नृप वहनि सुजाव कनजय । जेण सुजाव नरेस **रणंजय** ।
—सू प्र

रणंताळ–देखो 'रणताळ' (रू भे)
उ०—राठौड रचेवा **रणंताळ**, वामग छहै बीजळा भाळ । बाघे कदील सघै विबाण, कोसीस भुजै दीना कबाण ।
—गु. रू. ब.

रण–सं. पु [स रणम्] १ युद्ध समर, जग ।
उ०—१ पास ग्राए की लाज कुळ काज विचारो। मेरा **रण** मरणा कै जीवणा सुधारो ।
—रा. रू.

उ०—२ 'पीथल' जयचद प्रगट मार खाई **रण** मीठी। नवरोजी परनार दिली गळ गई सह दीठी ।
—ऊ. का.

उ०—३ गाहै गजराजा गुडा रुहिर मचावै कीच । ज्यारै नवग्रह पाधरा, जे बका **रण** बीच ।
—बा. दा

२ रणा क्षेत्र, समर भूमि, युद्ध का मैदान ।
उ०—सजै फौज काळळ घरर घणा नीसाणा घर । ग्रनळ धुग्रा रवणा **रण** ऊजाथै ।
—गु रू ब

३ शोर गुल, ग्रावाज, ध्वनि ।
४ वीणा का स्वर ।
५ गति, चाल ।
६ स्वर का अल्पतम ग्र श ।
७ निर्जन वन ।
उ०--ग्रोपौ ग्राढौ कहै ईसवर, नित राखू चित धारी नाम । तू छती माय देवग सुरर तू ही, **रणा** तणी बसती तू राम ।
--ग्रोपौ ग्राढौ

८ नगक की भील ।
६ वीणा बजाने का गज ।
[स ऋण] १० ऋण, कर्जा ।
रू० भे०—रगा, रणि, रणी, रण, रर्णा, रन, रन्न, रिण, रिणी ।

रणककरण–स पु–१ एक प्रकार का बाजा जो राजा की सवारी के ग्रागे बजता था ।
वि० वि०—एक भाति से कुछ छल्ले पिराय होते थ जिनको हिलाने से छन छन की ग्रावाज होती थी । यह एक राज चिन्ह माना जाता था ।
२ युद्ध के समय धारण किया जाने वाला कारण नामक ग्राभूषण विशेष ।

रणक–स स्त्री–१ पायल या नूपुर की ग्रावाज, भनकार ।
उ०—१ रग पायलटी **रणक** मिळी भणाक मजीर । नगा जगमगी चमक, सावन भमक सरीर ।
— ग्रग्यात

उ०—२ पायल री **रणक** रै समचै दीवाणजी री रू रू ऊभौ व्हैगौ ।
—फुलवाडी

२ किसी शस्त्र या वाद्य की आवाज़।

उ०—रणक घट ब्रह्राज गाज ज्यूं ही गज गाजन। सिर म कुम सिन्दाज, बीज उपमा ज विराजन।

—सू प्र

३ याद, स्मरण।

रू० भे० रणाक, रनक।

रणकणौ, रणकबौ—क्रि अ—१ किसी आभूषण या वाद्य की छन-छन आवाज होना, झनकार होना, मधुर ध्वनि होना, बजना।

उ०—१ नाचत रणकत नेउरी ए, बिहु आगलि इन्द्र अनेउरी ए। टिगमिग जावै जग महुए, रणहि गुण गावै सुर वहुए।

—वृ स्त

उ०—२ आभर पग रा झण झणौ, ज्यूं बिछिया री तेज। किकण रणकै कमर री, मिस वदनी री सेज।

—अग्यात

२ शस्त्र खनकने की या टकराने की आवाज होना।

३ रटन की आवाज होना।

उ०—रमणी बरहीना निरख नवीना, राम राम रणकंदा है। कद्रप रा कीटा फबतन फीटा, भवर गुफा भणकंदा है।

—ऊ का

रणकणहार, हारौ (हारी), रणकणियौ —वि

रणकिओड़ौ, रणकियोड़ौ, रणकयोड़ौ —भू का कृ

रणकीजणौ, रणकीजबौ, —भाव वा

रणकाणौ, रणकबौ, रणणकणौ, रणणकबौ, रणणौ, रणबौ, रणवणणौ, रणवणबौ, रनकणौ, रनकबौ —रू भे

रणकाणौ, रणकाबौ—क्रि स—१ किसी वाद्य या आभूषण को बजाना।

२ शस्त्र से आवाज करना।

३ रट लगाना।

रणकाणहार, हारौ (हारी), रणकाणियौ —वि

रणकायोड़ौ —भू का कृ

रणकाईजणौ, रणकाईजबौ —कर्म वा.

रणकारणौ, रणकारबौ, रणकावणौ, रणकावबौ —रू भे

रणकायोड़ौ—भू का कृ—१ बजाया हुआ. (वाद्य या आभूषण) २ आवाज किया हुआ (शस्त्र) ३ रट लगाया हुआ।

(स्त्री रणकायोड़ी)

रणकार—स स्त्री १ आभूषण या वाद्य की झनकार।

उ०—१ ठमके आभर रणकार साथण देसे। म्हारा घण हेताळ सरदार सगन आछी लागै सा।

—लो गी

उ०—२ जग जय नदा वहै, तीयै डरा रस मार। भेर भूगळ माथै, सरणाइ रणकार।

—साहू लाधौ

२ ध्वनि, रट।

३ गुंजन।

४ शस्त्र के टकराने की आवाज।

रू० भे०—रणुकार।

रणकारणौ, रणकारबौ—देखो 'रणकाणौ, रणकाबौ' (रू. भे)

उ०—झालर घट जठै झणकारत, राव हजार गिरा रणकारत। ध्यान गिनान प्रभु गुण धारत, स्याम सदा अप काम सुधारत।

—अग्यात

रणकारियोड़ौ—देखो 'रणकायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री रणकारियोड़ी)

रणकारौ—स पु—१ आभूषण या शस्त्र के खनकने की आवाज, झनकार।

उ०—१ रम झम बिछिया रा बजना रणकारा। झम झम जहरि रा उठना झणकारा।

—ऊ. का.

उ०—२ रेसमी गाभा रा सरणाटा उडावती। गैंणा रा रणकारा पाड़ती। सौरम री भभरोळा बिखेरती।

—फुलवाड़ी

उ०—३ घूघरा रा तद्या रणकारा सुणण सारू हजार कान व्है तौ ही थोड़ा। एक एक तनकार माथै इंदरपुरी रौ राज वारै तौ ही थोड़ौ।

—फुलवाड़ी

उ०—४ नाई कह्यौ—सदाना, उणी काई गैंणौ पैर्‌यौ। हील हिलता ई रणकारा उठै।

—फुलवाड़ी

२ राम नाम की रट या जाप से होने वाली ध्वनि।

३ नगारे या वाद्य की ध्वनि।

रणकाळौ—वि—युद्धोन्मत्त।

उ० किसं काम आवण रणकाळौ, बाधै माथै मोड़ बिनाळौ। भुजडंड पकड़ ऊठियौ भाळौ, लेवा भचक रूठियौ 'लालौ'।

—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

रणकावणौ, रणकावबौ—देखो 'रणकाणौ, रणकाबौ' (रू भे.)

उ०—कपट कोट दड़वट्ट गमावड, निन नयवाद घटा रणकावड जी।

—वि कु

रणकाबियोड़ौ–देखो 'रणकायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री रणकाबियोडी)

रणकाहल–स. पु.–युद्ध वाद्य विशेष।

उ०—सरणाई सरनूर **रणकाहल** नफेरी तबल अनेक भेर तणे निरघोसि करी कटक सोभनू छड़।
—व. स

रणकियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ झनकार, आवाज या ध्वनि हुवा हुआ (आभूषण वाद्य) २ खनकने या टकराने से आवाज हुवा हुआ (शस्त्र) ३ रटने की आवाज हुवा हुआ।
(स्त्री रणकियोडी)

रणकोविद–वि.–युद्ध कला मे प्रवीण, रणकुशल।

रणकौ–देखो 'रणकारौ' (रू भे)

उ०—डाळ डाळ बैठा पछी उण रै बधावा रा गीत गावण मंडिया। वा मीठा गीता रै **रणकै** बादळ अणाद नीद मू जागनै बैठौ व्हियौ।
—फुलवाड़ी

रणक्षेत्र–स पु [स. रणक्षेत्रम्] युद्ध का मैदान, रणभूमि।
रू० भे०–रणखेत।

रणखण–स पु [स रण+क्षण] युद्ध के समय।

उ०—खगवाही मिळियो खळा, मिळियौ **रणखण** पण।
—रा रू

रणखेत–देखो 'रणक्षेत्र' (रू भे)

उ०—नैनबध बारनैत, मेळ **रणखेत** महना। विना दिवाळी बध, जीण खाली मेमना।
—रा रू

रणगळियार–स पु–१ घायल।

उ० आदौ **रणगळियार** उठायौ, लागि नजान अणपुर लायौ।
—व. भा.

वि–२ रणोन्मत्त।

उ०—अर च्यारिही भाया ममेत माधाणी हाडौ मुकुदसिंह गोड अरजुनसिंघ राठौड रत्नसिंह जिसटा जोधार काली रा कळस **रणगळियार** होइ हाथिया रै माथै हाथ करता माथिया रै मूरना रौ माग लगावता साहजादा रै समीप हालिया।
—व भा

रणगहल, रणगहिलउ–वि.–रणोन्मत्त, युद्धोन्मत्त।

उ०—पप नीरि परवै पवग, असिगइ साख असहाय अग। हीरह मतेजि ऊन्हई हठाळ, **रणगहिलउ** चडियउ राइपाळ।
—रा. ज सी.

रणचंगौ–वि.–युद्ध कला मे प्रवीण, रण कुशल।

उ०—माणीगर दातार मे, **रणचंगौ** जस खग। जायौ नह अर जनमसी, जलाल जैमो नग।
—जलाल बूबना री बात

रणचरचा–स स्त्री.–एक प्रकार की कला। (व स)

रणछोड़–स पु–१ परमेश्वर, ईश्वर। (ह ना मा)
२ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।

उ०—१ नमौ जदुराज हळद्धर-जोड। रैणायर-रूप नमौ **रणछोड़** नमौ सिसुपाळ मनावण सक, जरासध जीपण सेन उजक।—ह र.

उ०—२ दीज्यौ म्हानै द्वारिका को वास, रूडा **रणछोड़** जी हो।
—मीरा

वि०—युद्ध मे भागने वाला, कायर। रू० भे० रिणछाड़

रणजीत–वि [स] युद्ध मे विजयी रहने वाला।

रणजेब–स स्त्री [स रण+फा जेब] एक प्रकार की तलवार विशेष।

उ० –उठी 'विलद' दळ असुर, बधि मुरग्वा जनेबा। पेसकबज खजरा, जकड वगिया **रणजेबां**।
भू प्र

रणझण, रणझरण–स स्त्री [अनु] ध्वनि विशेष, झनकार।

उ० –घम घमत घूघरी, पाग नेउरी **रणझण**। डम डमत डाकली नाळ नाळी वज्जै नण।
–देवि
रू० भे०—रणभणण,

रणझणकार, रणझणणण–स स्त्री [अनु] मधुर झनकार।

उ० –१ हार निगादर बहिरखा, सखी नेउर रणझणकार कि।
का दे प्र

उ० –२ **रणझणणण** नाद खरमाण खाणा रडक, बाज खराखराण कडीयाल बदी बडक।
—महादान महडू

रणझणणौ, रणझणबो–क्रि अ–मधुर ध्वनि होना।

उ०—मरहट्ठी गादहि किमिउ कुकुणउ वामइ, मालवी वाग्र किमिउ मारग्य भामइ, गोवर कीडउ किमिउ भ्रमर जिम **रणझणइ**
—व. स.

रणझुणी–वि जिससे मधुर झनकार निकलती हो।

रणणंक–देखो 'रणकार'

रणलंकणी, रणलंकबौ—देखो 'रणकणो, रणकबौ' (रू. भे.)

उ०—रणणकै खुरसाण खागधारा खणणकै। रणणकै रणरणण कलस पाखर भणणकै। —व. भा.

रणणंकियोड़ौ—देखो 'रणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री रणणंकियोड़ी)

रणण—स. स्त्री.—देखो 'रणक'

उ०—थई थई थई टबनि पाय, वेणु वीणा करि बजाय। झं झं झणणिय नाग, रणण रणण नेउरी।
मुरियाभ सुर करि प्रणाम, मागति अब मुनिधाम। समयसुंदर सुजस नाम जय जय जय सामरी। —स. कु.

रणणी, रणबौ—देखो 'रणकणो, रणकबौ' (रू. भे.)

रणतभवर—स. पु. [स. रणस्तम्भ-पुर] १ राजस्थान का एक प्रदेश रणथंभोर (ऐतिहासिक)

उ०—मालपुरो बगरहड़ो रा सीसोदिया नूं दिया। टोडो मालपुरो रा कछवाहा नूं दिया। रणतभंवर खालसे रास्वियो। कई परगना नरूका नूं दिया।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

२ उक्त प्रदेश का गढ़ या किला।

उ०—गढ़ रणतभवर रो आवो विनायक करो राज नीचींती विरदड़ी। —लो. गी.

३ उक्त किले में स्थित गणेशजी की मूर्ति।

४ मांगलिक अवसरों पर उक्त गजानन के नाम पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।

रणताळ, रणताळि—स. पु.—१ युद्ध, संग्राम। (डिं. ना. मा.)

उ०—१ विकट रूप वीदणी, सरस घट ओध आडंबर। लगन प्रथम रणताळ, समळ-मगळ सिधू-सुर।
—रा. रू. व.

उ०—२ ऊनै राव बसी बस ऊनै गोपाळ। गोना नेग ग्रस्ही तोनि कीन् रणताळ।
—शि. व.

२ युद्ध स्थल रण भूमि।

उ०—१ वनै रन खाल रणताळ रद मांचियो। स्वेत किरमार दैवगा समर राचियो।
—र. रू.

उ०—२ खिन पडियो नह पलचरा खाधो, पावक घट मकियो नह प्रजाळ। सीहल सुत नरो तन बहता, त्रिजड़ा लाग गयो रणताळ। —गरजण गौड़ री गीत

उ०—३ चर सुरति निसाचर सपत चार, परि रूद्र वयन्नर ससि पहार। आरुहिय असिम वनियउ अकूप, रणताळि रयक्खण देस रूप।
—रा. ज. सी.

रू० भे०—रणनाळ, रिणताळ। अल्पा —रणताळी।

रणताळौ—देखो 'रणताळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ० गड़क्कै जगाळा नाळा कुंडाळा भणकै गोरा, तोड़वै तेजाळा रणताळा मे नत्रीठ।
—रावत सारंगदेव री गीत

रणतुर, रणतूर, रणतूरव—स. पु.—एक समर-वाद्य विशेष।

उ०—१ ढोल नगारै ढमढिमाट, पटह नगारै गुमगुमाटि, रणतुर नरो रणरणाटि घोरा नरो हिमाटि।
—व. स.

उ०—२ निज धाम वामी कामिनी वे, लडड वेधक वयण सु। रणतूर नउर रडण वेणी धनुख रूपी नयण सु।
—वि. कु.

उ०—३ बिहु पखै पाट पाखरया घोड़ा, बिहु पखै रणतूरव वाजिवा लागा।
—व. स.

उ०—४ बजवाइउ कोठी सहर बेव, हालिया हुटय आगी हरेव। नांमिया समाण सीहनदि, रणतूर सहि पाखर रवदि।
—रा. ज. सी.

रणत्कार—स. पु.—शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

उ०—जिकै वासुकि नाग री तरह लगलगाट करती सिलहवध री रडिया नूं कतरती सिर मे पैठता रणत्कार पड़ी।
—व. भा.

रणथब, रणथबोर, रणथभ, रणथभोर—स. पु. [स. रण+स्तम्भ]
१ राजस्थान का रणथम्भोर प्रदेश व उस प्रदेश का गढ़।

उ०—१ वढियो सुरुस पतो वाढाळी, वभियो सुरजन देख वढ। गढ़ चित्तौड़ गरव तणा गरजै, गाडौ गो रणथंब गढ।
—रावत पत्ता री गीत

उ०—२ राउ रणथभ तणाह, जउहर जउहर जेहवा। कीधा भोजा कउ कवरि, वधता बीस गुणाह।
—अ. वचनिका

२ विजय स्मारक।

वि.—युद्ध को थाम कर रखने वाला योद्धा, वीर।

उ०—जीव दियौ जसवत जद चमकै लोक अचभ। थिर पर

राजस्थान रौ, थभ गिरधौ रणथंभ ।

—ऊ. का

रू० भे०—रणथभ, रनथभ ।

रणथंभण—वि. [म. रण स्तम्भन] योद्धा, वीर ।

उ०—घट 'पातल' उवजौ घणौं, **रणथंभण** राठौड । थे मरिया सू थाहरी, ठाली रहसी ठोड ।

—ऊ. का.

रणथट्ट—स पु. [म रण स्थात] १ युद्ध की शोभा, युद्ध की स्थिति ।

उ०—कट थट्ट गयौ खग भट्ट कहै । **रणथट्ट** घणा भट पास रहै ।

—पा प्र

रणथळ—देखो 'रणस्थल' (रू भे.)

रणधीर—म. पु.—१ विष्णु, ईश्वर, परमेश्वर । (डि को)

२ श्री कृष्ण का एक नामान्तर ।

३ योद्धा, वीर ।

वि—रण मे धैर्य रखने वाला ।

रणधीरोत—म पु—राठौड़ो की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रणनंदीतूरध—म पु.—एक युद्ध—वाद्य या समर वाद्य विशेष ।

(व स)

रणपखर—स पु.—एक प्रकार का कवच ।

उ०—किसी किसी पाखर, **रणपखर** जीणपखर गुडि पखर ।

—का. दे. प्र

रणप्रिय—स. पु. [स] १ बाजपक्षी ।

२ विष्णु ?

रणबंकडौ, रणबंकौ, रणबांकुरौ, रणबांकौ—वि [स. रणवक्र] १ युद्ध कला मे प्रवीण । युद्ध—कुशल ।

२ वीर, योद्धा ।

रू० भे०—रणवकौ, रनवकौ ।

रणबुद्ध—वि—युद्ध मे कुशल ।

रणभणु, रणभणू—सं. पु [अनु.] ध्वनि विशेष ।

उ०—राउल माहि **रणभणू** राय थयु पगि मद । ब्राह्मण—वडउ माभरड, सभा—नगाउ ते चद ।

—मा का प्र

रणभमर, रणभांमर—वि [स रण भ्रमरः] १ युद्धोन्मत्त ।

उ०—'माहव' को 'किरतौ' दळ मांहि, वाधै लड़ण जिकौ खग वाहै । 'जैतौ' 'वीक' तणौ जोरावर, 'भाऊ' तणौ सिवौ **रणभांमर** ।

—रा. रू.

२ युद्ध प्रिय ।

रणभूमि, रणभोम—स. स्त्री [स रणभूमि] लडाई का मैदान, युद्ध स्थल ।

उ०—सूर बाहर चढै चारणा सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आबू । बिहड खळ खीचिया तणा दळ विभाडै, पोढियौ सेज **रणभोम** 'पाबू' ।

—बा. दा.

रणमंडण—स पु [स रणमडनम्] युद्ध के आभूषण, साज-सज्जा ।

वि०—युद्ध की शोभा बढाने वाला वीर ।

रू० भे०—रणमाडण ।

रणमंडप—स पु [स रणमडप] १ पृथ्वी भूमि ।

२ युद्ध स्थल, लडाई का मैदान ।

रणमंडा—स स्त्री—पृथ्वी, भूमि । (डि को)

रणमत्त—स पु [स] हाथी, गज ।

वि०—युद्ध का मतवाला ।

रणमल्ल—स पु [स] योद्धा, सुभट, वीर ।

रणमांडण—देखो 'रणमडण' (रू भे.)

रणमांनी—वि. [स रणमानिन्] वीर, बहादुर, पराक्रमी ।

उ०—इण कुळ ही देवट अभिमानी, मही भुजग हुवौ रणमानी । कुळ जिण रा देवडा कहाय, दान समर अनुपम दरसाय ।

—व. भा.

रणरक—स पु—हाथी के दोनो दातो (बाहर दिखने वाले) के बीच का स्थान ।

रणरंग—स पु. [स] १ युद्ध की उमग या उत्साह ।

२ समर भूमि, युद्धस्थल ।

३ युद्ध, सग्राम ।

रणरणक—स पु—१ कामदेव का एक नाम ।

२ प्रबल इच्छा, पिपासा ।

३ विकलता, घबराहट, त्वरा ।

४ देखो 'रणकार'

रणरणाट, रणरणाटि—स स्त्री—किसी वाद्य की आवाज, ध्वनि, शब्द ।

उ०--ढोल तणी ढमढिमाट, पटह तणी गुम गुमाटि, रणतूर तणी रणरणाटि घोडा तणी हिंसाटि।

—व म

रणरसियौ, रणरसु–वि [सं. रणम्+रसिक] युद्ध रसिक, पराक्रमी, वीर, योद्धा।

उ०—१ मन्नी ग्रमीणो माहिवो, जम सूं मारै जंग। ग्रोळं ग्रग न राखही, रणरसियौ रै रंग।

-बा दा.

उ० --२ नीकै हुकी ऊठइ करग, ग्रज्जुन पामइ सुर वरि मरण। गोमि ऊठइ वेउ भूमेवा, रणरसु जोइ देवी देवा।

---सालिभद्र सूरि

रणराग–सं स्त्री –सिंधु राग, वीर राग।

उ० -दोनी मावळा रणराग दुहौ। हिक वार पावू मन मोद हवौ।

--पा प्र.

रणरीठ–वि –युद्ध में तलवार चलाने वाला, योद्धा।

रणरुह, रणरूह, वि –जिसे युद्ध की उमंग हो, उन्माद हो।

उ०—दिल्ली हत दुरुह, ग्रकबर चढियो एकदम। राणा रसिक रणरूह, पलटै केम प्रतापसी।

—दुरसौ ग्राढौ

रणरोहि, रणरोही–सं स्त्री.–१ निर्जन-वन, शून्य-जंगल, बीहड़ वन।

उ०- गुणी सपत सुर गाय, कियौ किसब मरम कनै। जाणै रूनी जाय, रणरोही में राजिया।

किरपाराम

रू० भे० रनरोई, रनरोहि, रनरोही।

रणलछमी, रणलखमी, रणलिछमी–युद्ध में विजय प्राप्त कराने वाली एक देवी, विजय लक्ष्मी।

रणवंकौ–देखो 'रणबंकौ' (रू. भे.)

उ०--कर वागा नर भूकिया, निजर परक्खै नाव। ग्रगसका ग्रागै हुता, रणवका उमराव।

--रा रू.

रणवट्ट–सं पु –१ क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०-- रिमराह नियार वधै रणवट्टां 'खेम' समोभ्रम गोकि खळा। रूकै रिमराह बहादर राजै, भार वहै निज भूमवळा।

—गु रू ब

२ युद्ध का मार्ग।

रू० भे०—रणवाट।

रणवणणौ, रणवणवौ–देखो 'रणकणौ, रणकबौ' (रू. भे.)

उ०—रणवणीया सवि सख तूर ग्रवरु ग्राकपीठ। हय गयवर खरि खणीय रेणु ऊडीक जगु झखीउ।

—सालिभद्र सूरि

रणवाइ सं पु.–युद्ध की चुनौती,।

उ०—दिवस मान जा इग परि जाइ ता ग्रच्चभू को रणवाइ। एतइ ग्राविउ कटकु ग्रपार पडव धाया लेई हथियार।

—सालिभद्र सूरि

रू० भे०–रणवाद।

रणवाट–देखो 'रणवट्ट' (रू भे)

उ० --कहर खग झाटगा वीर दूजा 'कुमळ' खाटगा विरद फौजा गजा खभ। पाट रा थभ रणवाट रा थभ पण, थाट रा राज रा सिमल रा थभ।

—मेरसिंह मेड़तिया रौ गीत

रणवाद–देखो 'रणवाइ' (रू भे)

रणवावौ–वि –योद्धा, वीर।

रणवास–सं पु –१ ग्रन्त पुर, रनिवास, जनानखाना।

उ०—१ पछै इंद्र मात ग्रामेर वरा पधारचा, दिई जिग नीव ग्रवदान दाखी। करी घणा कृपा रणवास पावन करण, चरण रज रागिया सीस चाटी।

—मे. म

उ० - २ बूंदी महाराज छत्रसाल जी ने उदैपुर राणी ग्रडसीजी सिकार रमता चूक कर गोळी चलाई सो मुरछा ग्राय गई, इतरै बूंदी रणवास में मौळियौ गयौ तद वारै माता कयौ थे मत मन करौ इण म्हारौ दूध लजायौ।

—वी स टी.

२ ग्रन्त पुर में रहने वाला स्त्री-समुदाय।

उ०—पाती बाची ग्रा नौ सजन समाज। पाती बाची ग्रा नौ सारै रणवास।

--गी रा

३ रानी।

उ०- राजा निय रणवास हू, ग्रवनी एक सू बत्त। ग्रप सोभा खत्री धरम निज सोभा पतिव्रत्त।

—गु रू. बं

रू० भे०–रणिवास, रनवास, रनिवास।

रणवति, रणवती–सं पु.–सैनिक योद्धा।

रणसिंगौ, रणसिंघौ, रणसींगौ-सं. पु.-१ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक वाद्य जो सींग का बना होता है।

उ०—१ तुरी करनाळ **रणसींगौ** वाज रह्यौ छै।

—रा. सा. स.

उ०—२ दया **रणसिंघौ** वाजियौ, जागौ जागौ नरनार। सुगन नगर मे चालणौ तुमे वेगा हुयजो त्यार रे।

—जयवाणी

रणसुणौ, रणसूणौ-वि.-युद्ध मे झूझ कर वीरगति प्राप्त करने वाला।

रणस्तंभ-देखो 'रणथंभ' (रू. भे.)

रणस्थल-सं. पु. [स.] युद्ध का मैदान, रणक्षेत्र।

रू० भे०-रणथळ।

रणांक-देखो 'रणक' (रू. भे.)

रणांगण, रणांगन-सं. पु. [सं. रण+अंगन] रणभूमि, रणक्षेत्र।

उ०—ईम अरजन **रणांगण** रूधउं, बाण पंजरि घणउं दळ सूधउ आकुलउ अति सुयोधन हूउ, कउण जीवइ किहां कुण मूउ।

—मालिसूरि

रू० भे०-रिणंगण।

रणि-१ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ चाणा धणी माडिया चावै, वीठळ खळा सरिस खग वाहि। अडियौ 'जसै' मेल्हियौ ऊभौ, पडियैं **रणि** पायौ पतिसाहि।

—विठळदास चापावत रौ गीत

उ०—२ रामा अवतारि वहै **रणि** रावण, किसी सीख करुणाकरण।

—वेलि

२ देखो 'रेण' (रू. भे.)

३ देखो 'रिण' (रू. भे.)

४ देखो 'रिणी' (रू. भे.)

रणियु-देखो 'रिणी' (रू. भे.)

उ०—तेहनि सुत नल नामि सुंदर, जाणे मन्मथ यणियु। देव पितर नि मनुष्य तणौ रे, राय टल्यु ते **रणियु**।

—नळाख्यान

रणिवाउल, रणिवाउलौ-वि. [स. रणवातुल] युद्धोन्मत।

उ०—पहिली तुरक तणी ऊठवणी, **रणिवाउला** विछूटा। घोड माटे देई हीदू नी, फोज माहि जई फूटा।

—का. दे. प्र.

रणिवास-देखो 'रणवास' (रू. भे.)

रणी-वि.-१ योद्धा, वीर।

२ देखो 'रण' (रू. भे.)

३ देखो 'रेण' (रू. भे.)

४ देखो 'रिणी' (रू. भे.)

रणुंकार-देखो 'रणकार' (रू. भे.)

उ०—**रणुंकार** की धुन सू, यूं कर जीव जगीजे ए। श्रवण सुची रुची धारके, सार अनहद को लीजे ए।

—श्री सुखरामजी महाराज

रणु-देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—करि करवालु जु करीउ करग्गि समहरि **रणु** माडइ। फारक पायक तुरग, नाग नवि कोइ छडइ।

—मालिभद्र सूरि

रणेचर-सं. पु. [स. रणचर] विष्णु।

वि.-१ योद्धा, वीर।

२ मांसाहारी।

रणेत-देखो 'रनेत' (रू. भे.)

रणेस-सं. पु. [स. रणेश] १ विष्णु।

२ शिव।

वि.—योद्धा, वीर।

रणोई-सं. स्त्री. [स. रण+रा. रोही=सुनसान] २ युद्धस्थल, रण भूमि।

उ०—रण खेता मे ऊगै नाही दूब, कोई **रणोई** तो बोलै आधी रात न ए मोरी सइया।

—अज्ञात

रू० भे०-रिणोई, रिणोही।

रणौ-देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—माया रहै मागिया पखै रुण, गढपति रामा पती रणौ। मांटा खत्री दूवौ मेवाडा, राण राखी वस तणौ **रणौ**।

—दुरसौ आढौ

रतग-सं. पु.-रक्त, खून।

उ०—१ रवड खग वाहतौ रामावत, रेणा पुट भेदियौ **रतग**। भुजग सुपंद लाल रग भेदियौ, भूली तिण आंट भुयग।

—चतुरा रामावत रौ गीत

उ०—खळ कटै महेना जरद खगा रतग, खळक धावा **रतंग** दरद खाथै। तठै लड़वा घणी मेल रीभव पतग, मरद मुजडी जडी मतग माथै।

—गुलाबसिंह चूंडावत रौ गीत

वि. [स. रक्त+अग] रक्तिम, लाल।

रतनागर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—रा रतनागर नाम रोमती, जादव जगत नरेस। हरख वदन हुआ हरि ओमी, वीधु अग्र प्रवेस।

—रुकमणि मंगळ

रतंबर—वि. [सं. रक्ताम्बर] रक्त वर्ण, लाल।

उ०—कस्य काजळ जळ थलं रार डांमिया रतंबर। अग नगाव भाछटै ग्रोढ न्हाखे सिर अंबर।

—पा प्र.

रत—सं पु [सं रतम्] १ रति-क्रीडा, मैथुन, संभोग।

उ०—१ वीरपाळ साह री बेटी गौरज्या विधवा वरस तेरह री गुमकारजी ऊपर तप करती। नवै वरस ब्याह हुआ जद जबरी सु बीमळदे उण सू रत कियो।

—बा. दा. ख्यात

उ० २ रत ज्यू दत जाचक रमण, जाचै बे कर जोड। नती भणी नव नार ज्यू, मूढ कृपण मुख मोड।

— बा दा

२ प्रेम, प्रीति, प्यार।

[सं. रति] ३ कामदेव की स्त्री रति।

उ०—रावण ससा दिगज रूप दइकबन रमैं, निरलज सुपनखा तिण नाम नरक अनग मे। सीतानाथ आगळ सार आई विण समै, भाळ सकाति अदभुत नरम सुचि रत सभ्रम।

— र रू.

४ सुहाग।

५ हर्ष, खुशी, आनन्द।

[सं रात्रि] ६ रात्रि, रात।

उ० --१ सो पीउ छांद हथडै, सग्ग पत्नीभन। जागा डोलो जागवी, गळती सभम रत।

— ढो मा

उ०—२ सखि सगदा वीट धर, जळ सू जामी पन्न। सिगाही अवगुण कुभडी, करली साभिम रत।

— ढो मा

[सं ऋतु] ७ ऋतु, मौसम।

उ० १ माघ मिघ विलर घणा, भु ट बीहती चालर रे। चालर नट सालड वरसा रत घणु ए।

—नळदवदती रास

उ०—२ आवी सब रत आमली, त्रिया नरद मिणगार। जिका त्रिया न फाटही, दूर गया भरतार।

—ढो मा

[सं. रक्त.] ८ रक्त, खून, रुधिर।

उ०—१ उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, बहे रत जेम सावण बहाळा। आप आपी वरी जोयनै आडिया, लड़ै रिण भळभला निराताळा।

—र. रू.

उ०—२ दहै दीचाळ रत खाळ खळकै धरा। जुड़ै धडपड़ै भडदड जडाळै।

—नैणसी

उ०—३ भव-नार फिरै रत पत्र भरै, जुड बाक गिरै काई छाक जरै।

—रा. रू.

उ०—४ कठठी वे घटा करै काळाहणि, समुहे आमहो सामुहो। जोगिणि आवी आडग जाणे, बरसै रत बेपुडी वहे।

—वेलि.

वि. [सं रत] १ प्रेम मे फसा हुआ, अनुरक्त, आशक्त।

उ०—१ नारी नागिनि एकसी, बाघिनी बडी बलाइ। दादू जे नर रत भये, तिनका सरवस खाइ।

—दादू बाणी

उ०—२ लगी हास विलास, विती अग्यान ग्रान सध्यान। मायकाज निमीत, रतं भूप चू प मदनाय।

—रा. रू.

२ मुग्ध, मोहित।

३ मस्त, मग्न।

उ०—१ महीना चार होय गया छै, स्यारामजी मैला मै रत होय रहा छै।

—सयाराम दरजी री बात

उ०—२ संसे बन मे रत थको, करतो केळि किल्लोळ। निडर थको विचरत सदा, सग लियै सब टोळ।

—गज उद्धार

४ लीन, तल्लीन, तन्मय।

उ०—१ रहे रत ध्यान अठयामी रिवख, लहै नह पार ब्रहम्मा लक्ख।

—ह. र.

उ०—२ राता तन चिना रत चिता रत, गिरि कदरि घरि बिन्है गरा। निद्रावस जग गह महानिसी, जामिण कामिण जागरण।

—वेलि

उ०—३ यह मत तज ईसर भज ईसर, करुणाकर सधर सुतन दसरथ को। यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुबर रे।

—र. ज. प्र.

५ प्रसन्न, खुश।

६ प्रिय।

उ०—और वस्त रत नही मुहि भावै (हो रांणाजी) यह गुरुग्यान हमारा। —मीरां

७ युक्त।

उ०—१ सपेख अग नग सासमी, रत रोम मारग रासती। निह नाक पाग विछेद पाडै, बाग ढक रघुबीर। —र. रू.

[स रक्तम्, रक्त] ८ लाल।

उ०—बाबहिया रत पंखिया, बोलह मधुरी वाणि। काढ लवतउ माठि कर, परदेसी प्रिउ आणि। —ढो. मा

रू० भे०—रति, रत्त।

रतकील, रतकीलर—स. पु. [स रतकील] श्वान, कुत्ता। (अ मा)

रतखाळ, रतखाळौ—स. पु. [स. रक्त+रा खाळ] रुधिर का नाला, खून की धारा।

उ०—१ पडै बुरजा धजा ऊपरै पाथरा, सूर जमहर करै पडै सारा। पडै परनाळ रतखाळ चीखळ पडै, बीढि पडै गौड गढ पडै बारा। —उदैभाण हरभाण गौड री गीत

उ०—२ रिळिया रिगताळा तट किरमाळा, सीस भुजाळा मूंडाळा। चालै रतखाळा नेग विचाळा, पख्खरियाळा पोखन्त। —भगतमाळ

रतग—स स्त्री—कोयल। (अ मा)

रतगुरु—स पु [स.] पति, खाविंद।

रतचंदण, रतचदन—देखो 'रक्तचदन' (रू भे)

उ०—घणा रत इत्र फटा खिळ घाट। पडै रतचंदण जाणि कपाट। —सू प्र

रतजगौ—देखो 'रातीजोगौ' (रू भे) (मा म)

रतडउ—देखो 'रातौ' (अल्पा, रू भे)

रतण—देखो 'रत्न' (रू भे)

उ० - दियौ गाजना गयद, दियै तोखार विवह परि। दियै गाव कोठारि, दियै रतण थाळा भरि। —जगदेव पवार री वात

रतणाकर—देखो 'रत्नाकर' (रू भे.)

उ०—वरणा पवारथा रतणाकर री धारा गोमन जोर। धजा पताका तटतट राजा भालर री झक भोर। —मीरां

रतदांन—देखो 'रतिदान' (रू भे)

उ०—एह समिए एक अगन, मामी मिळी सुजान। देह अग रतदांन मोही, विरह सनावत वान।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

रतद्रग—देखो 'रक्तनेत्र' (अ मा.)

रतन—स. पु—१ सूर्य, रवि। (अ मा)

२ चन्द्रमा, शशि। (अ. मा, ना. डि. को.)

३ उडगन, तारा।

उ०—रतनां छाई रात। —अग्यात

४ दृग, नैत्र, आख। (ना डि. को.)

उ०—मो सजन चालतडा, रोय रोय रातै रतन। पडीया विसरा चीसरा, आसु मोती अन। —ढो. मा.

५ अमृत, सुधा। (अ. मा., ह ना मा)

६ जल। (अ. मा., ह ना मा)

७ छप्पय छद का आमठवा भेद जिसमे ६ गुरु व १३४ लघु होते है। मतान्तर मे १२ गुरु व १२८ लघु भी होते हैं।

८ एक छद विशेष जिसमे प्रथम दो जगण, एक सगण, एक नगण तथा अंत लघु–गुरु होते है।

९ डिंगल के वेलिया सागोर (छोटा साणोर) छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ४ लघु ३० गुरु कुल ६४ मात्राए होती हैं तथा इसी क्रम मे शेष द्वालो मे ४ लघु ५८ गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं। —पि. प्र.

१० एक मात्रिक छद विशेष जिसमे १३ मात्राए व अत गुरु–लघु होता है। (र ज. प्र)

रू० भे०—रतन्न, रतन्नि।

११ देखो 'रत्न' (रू भे.)

उ०—१ मुरधर मे 'पातल' मरद, इणरो रतन अमोल। लोकां ने तो लादसी, मरिया पाछे मोल। —ऊ. का.

उ०—२ पायौ जी म्है तो राम रतन धन पायौ।

—मीरां

उ०—३ सूरज खाखळ रतन सल, पोहमी रिण जळ पक। कायर कटक कळक इम, कुकवी सभा कळक। —बा दा.

उ०—४ भूप जडावै मुगट मभ, रोहणगिर उतपन्न। निज दीपग प्रतिनिधि रतन, प्रभा अपूरब भन्न। —बा. दा.

उ०—५ कु भाथळ मोताहळा, भरिया वन गिर भात। चद्र वरणा गज रतन मै, वगड बगियाइ दात। —बां दा.

उ०—६ मोर मुकट वनमाळ, माळ तुलमी नव मजर। रुचि कुडळ कळ रतन, तिलक मजुल पीताबर। —रा रू.

रतनकर—देखो 'रत्नकर' (रू. भे) (ना. मा, ह ना. मा)

रतनकचोळियौ, रतनकचोळौ—स पु—कटोरा, प्याला।

उ०—१ पेट गया की जी लोथ, मिरगानैणी जी राज, मूंडो तो कहियै रतनककोळियां जी, म्हारा राज। —लो. गी

उ०—२ महदी भीजै भींजै रतनककोळं बीच। नेम रस महदी रावणी। —लो गी

रतनकांबळ, रतनकांबल—देखो 'रत्नकंबळ' (रू भे)

उ०—पदि वस्त्र पाहिरावड, देवदूखिन वस्त्र, रतनकांबल, चीर, सोनइरी पामरी सीरोदक स्यामा अर्धांतरी ... । —व स

रतनकूट—देखो 'रत्नकूट' (रू भे)

रतनगरभ—देखो 'रत्नगरभ' (रू भे)

रतनगरभा—देखो 'रत्नगरभा' (रू भे)

रतनगिर, रतनगिरी—देखो 'रत्नगिरि' (रू भे)
(अ मा, ह ना मा)

रतनघर—देखो 'रत्नघर' (रू भे) (पि. प्र)

रतनचंद्र—देखो 'रत्नचंद्र' (रू भे)

रतनचौक—स पु—एक आभूषण विशेष।

उ०—जडाव रा बाजूबंध काकण रतनचौक मारमी बीनी विराज रही छै। बळै जडी मोतैरी बगडीदार विराजै छै। —रा सा स

रतनजोत, रतनजोतियौ—स स्त्री—१ एक प्रकार की मणि।

स पु—२ काश्मीर व कुमाऊ की पहाडियों मे पाया जाने वाला एक क्षुप विशेष।

३ पुनर्नवा नामक क्षुप विशेष।

४ एक प्रकार का पौधा जिसके दूध के लगाने से तलवार का घाव मिट जाता है।

उ०—आगांमिर रतनजोत रा, पग रो प्रथर प्रभाव। मान रहै मग घाव नौ, मगा भरै औ घाव। —रेवतसिंह भाटी

रतनपारख—देखो 'रत्न परीक्षा' (रू भे)

रतनपारखी, रतनपारखू—देखो 'रत्न परीक्षक' (रू भे)

रतनपेच—स. पु—शिर मे पगडी के साथ धारण करने का आभूषण विशेष।

उ०—मोतिया का तुर्रा रतनपेचू के बीच सेसा दरसात। मानू नवग्रह पास तारा गण आत। —मू प्र

रतनभरी—देखो रत्नभरिता (रू भे)

उ०—गनड अनिरांध मागाध आवड। करण तरण कुलु राउ जगावड। मद गंगा ऊगमनड दीस नाधी रतनभरी मजुस।

—सालिभद्र सूरि

रतनमालती—स स्त्री १ एक प्रकार की लता।

२ उक्त लता का फूल। (अ. मा)

रतनमैं—वि. [स. रत्न—मय] रत्नों से युक्त।

उ०—मुख मिस मधि तिलक रतनमैं मंडित, गयौ जु हुतौ पूठि गळि। आयै क्रिसन माग मग आयौ, भाग कि जाणै भालियळि। —वेलि

रतनरांणौ—स पु—१ ऊमरकोट के सोढा राणा रतनसिंह की याद मे गाया जाने वाला एक लोक गीत।

रतनरासी—देखो 'रत्नरासि' (रू भे)

रतनसांन, रतनसानु—देखो 'रत्नसानु' (रू भे)

रतनसिंहोत—स पु—राठौडों की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

रतनागरभ—देखो 'रत्नगरभा' (रू भे) (डि को.)

रतनाळिय—स पु—१ एक मासाहारी पक्षी जिसकी चोंच लाल होती है।

उ०—सिर साग तजै त्रट साग ग्रही। रतनालिय अवर लाग रही। —पा प्र

२ रुधिर—नाली।

रतनाकर, रतनागर, रतनाघर—देखो 'रत्नाकर' (रू भे)
(अ मा, डि ना मा, ह ना मा)

उ०—१ वय किसोर कल्है जोर जोवन परगट्टै। अगामायौ अब मै, नि किरि रतनाकर तट्टै। —रा रू

उ०—२ बदळी ए म्हारी चाद छिपायौ रतनागर मु नीर जे भरियौ बरसण न पेरी ए लगायौ। —लो गी

उ०—३ मथै रतनागर माहव मत्र। रमा सु पसाय सु नीर रतन्न। —मा वचनिका

उ०—४ वरसमांही मथी करम नर उजागर। काम काम प्रवसाण साम का रतनागर। —रा रू

रतनार—वि—१ लाल रंग का, लाल।

२ सुर्खी लिए हुए, सुर्ख।

रू० भे०—रतिनार।

स पु—पुरुवंशीय रंतिभार राजा का नामान्तर।

रतनारा, रतनारी—स स्त्री—१ लालिमा, लाली।

२ सुर्खी।

रतनाळ, रतनाळिय, रतनाळी, रतनाळीय, रतनाळौ—वि—लाल, सुर्ख

उ०—१ जो जो झांवड़ियां जाती जनमाळी। री री झांखडियां राती रतनाळी। —ऊ. का.

उ०—२ धन धन देव देव जगनाथ। अमर काया रतनाळीय आंख। —बी दे.

उ०—३ इण भाति री तू जी हलका ज्यौं लचकती, रतनाळा लोचनां, अणिआळा काजळ सारीजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—४ बाहुडीयां रतनाळीयां, छकी भूह नैणेह। जण जण साथ न बोलही, मारु सुगध घणेह। —ढो. मा.

रतनावळी—देखो 'रत्नावली' (रू. भे.) (अ मा)

रतन्न—१ देखो 'रतन' (रू. भे)

उ०—१ 'वीक' हर राउ माभळि बचन्न, गीमाड किया राता रतन्न। ऊमिय वीमि लागउ अवीह, साभळिण कथिने जइतसीह। —रा. ज. सी.

उ०—२ राता किया रतन्न, तै विछडता दिन तिकरण। विछुहा मोती व्रन्न, वे आसू सालै अजै। —अग्यात

२ देखो 'रत्न' (रू भे)

उ०—१ नमो कम-केमि-बिधूसरण कन्ह।
रूकम्मणि-प्राग पुरक्ख रतन्न। —ह. र.

उ०—२ अगम अगोचर राखिय, कर कर कोटि जतन्न। दादू छाना क्यों रहे, जिम घट राम रतन्न। —दादूबाणी

उ०—३ जम गाडा भरियौ जुडै, जग सो करो जतन्न। श्री आभरणा आभरण, रतना मिरै रतन्न। —बा दा

रतन्नगरभा, रतन्नप्रभा—देखो 'रत्नगरभा' (रू भे)

उ०—मुवपि सोळ स्रगार, लाज वत्रीसइ लक्खण। खम्या धरम धीरज, मील मतोख मतोगुण। रभा देवागना, रतन्नगरभा पति रत्ती। गगा गवरि निछम्मि, जिमी मीतामनवती। अखेराज वस जसराज ध्रू, ध्रू जिम धारण नह फिरी, 'अमरेस' पुत्र जिण जमियौ, धन चहुवाण कर्णांगिरी। —गु. रू व

रतनासबोध—म पु—मागर, समुद्र।

रतन्नि,—१ देखो 'रत्न' (रू भे.)

उ०—१ वरण मामलो गात कीरो वसत्ते, तिसी भूखणे जोत मोती रतन्न। —रा रू

उ०—२ रमणी धणी रूपि रतन्नि, निरखी एकाणक मतम। पग जाळोर नगर पदमनी, दीठी गउखि जागि दामिनी। —ढो. मा.

२ देखो 'रतन' (रू भे)

रतपंड—देखो 'रक्तपिंड' (रू. भे)

उ०—पिंड विहंड बह भरत रतपंड। सिहंड ध्वज मुख वयंड ध्वजसड। —सू. प्र.

रतपति, रतपती—देखो 'रतिपति' (रू. भे.) (अ. मा.)

रतपरस—सं. पु. [स. ऋतु—स्पर्श] श्वान, कुत्ता। (अ. मा)

रतपिंड—देखो 'रक्तपिंड' (रू. भे.)

उ०—वहै वप वीजळ खडविहंड। पड़ै धर तांम किया रतपिंड। —सू. प्र.

रतफळ—सं पु—वट वृक्ष। (अ मा, नां मा., ह. नां मा)

रतबंध—देखो 'रतिबध' (रू. भे.)

रतबीज—देखो 'रक्तबीज' (रू. भे.)

रतमुंहौ—वि [स रक्त+मुख] १ लाल मुह वाला।

२ जिसका मुख रक्त से सना हो।

रतमेळ—देखो 'रतिमेळ' (रू. भे)

रतरस—स. पु. [स रतिरस] शृंगार रस। प्रेम रस।

रतराज—देखो 'रितुराज' (रू. भे)

रतळ—देखो 'रताळ' (रू. भे)

रतवंती—देखो 'रतिवंती' (रू. भे)

रतवा—सं स्त्री—१ एक प्रकार की घास जो घोडो के लिये अच्छी समझी जाती है।

२ गेहू की फसल का एक रोग।

३ बालको का एक रोग, जिसके कारण शरीर पर लाल लाल फुसिया हो जाती हैं।

रतवाह, रतवाहौ—देखो 'रातीवाहौ' (रू भे)

उ०—१ रतवाह पात्र पर...। —पा प्र.

उ०—२ पडसा रतवाहे रवदा पर, आवै आप करीजो ऊपर। —पा प्र.

रतवोल—स पु—श्वान, कुत्ता। (अ मा.)

रतसाई—स पु. [स ऋतुस्वामी] कुत्ता, श्वान। (अ मा)

रतांजणि, रतांजणी—स स्त्री.—वनस्पति विशेष।

उ०—१ रामोडी नइ रासना गीगिणी रुद्र—जटाय। राग रतांजणि रूमडी, रतिवति रग धराय। —मा का. प्र.

उ०—२ रायण राग रतांजणी रवणी न रुद्राख। रूकरुदनी रायसलि, रोहड रोहिणि राख। —मा. कां. प्र.

रतांनी—वि—लाल मुह वाली (भेड)।

रता—स. स्त्री.—दक्ष प्रजापति की एक कन्या, जो धर्म ऋषि की पत्नी थी।

वि.–अनुरक्त, आसक्त, रत।

रसाळ, रसाळू–स. पु.–बिदालू नामक कंद, जिसकी तरकारी बनती है।

उ०—१ असरकंद आलू अला, सूरण रोम रसाळ। वच्छ नाग बाकु भिया, भेडागारी भालि। —मा. का. प्र.

उ०–२ अजरस अर्साकंद रसाळू का विसतार। अबु नीबू अगीर कंभ का आचार। —सू. प्र.

रू० भे०–रसाळू।

रति–स. स्त्री. [सं.] १ धर्म ऋषि के पुत्र कामदेव की स्त्री जो दक्ष प्रजापति की पुत्री थी।

उ०—१ इक दिस कान्ह इक दिस राधा। रति मनमथ दोऊ लग लाजै। —रसीलैराज रौ गीत

उ०–२ वसुदेव पिता मन थिया वासुदे, प्रदुमन सुन पित जगत पति। सासू देवकी रामा सु बहू, रामा सासू बहू रति। —वेलि

उ०–३ दीसती मनोहारिणी हसी की स्वरग आवी उरवसी, सुवरणा चंपक गोरी, इमीउ आवी गोरी, राजहंस गति कि दीसती सद रति, वचन विग्यानवती सरस्वती। —व. स.

२ रति क्रीडा, काम क्रीडा, सभोग, मैथुन।

उ०—१ सर्करिस संमसमा सध्या समयै, रति वछति रमसमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पन्थ पगिया, कमळ पत्र सूरिज किरणि। —वेलि

उ० २ सतिरति किया सिणगरि मिळिवा, विचित्र रविता समाचरत। नीठै निसि नीवाह सर्मकित, करग सु लगा रति समक्रत। —वेलि

उ०– ३ सध्या रौ समय रमी छै। कामणी रति बांछै छै। —वेलि टी

३ मैथुन या सभोग की इच्छा काम वासना।

उ०—मेक तौ रात निता मो राता छै। परमेस्वर स्यू लीन हुआ। अर दूसरा रति सो राता छै। —वेलि टी

४ प्रीति प्रेम, अनुराग।

५ आनन्द, तृप्ति, सतुष्टि।

६ किसी मे रत होने की दशा या भाव, आसक्ति।

७ कान्ति, दीप्ति, आभा, सुन्दरता, छवि, शोभा।

उ० –कुळ वैदही जनकजा रति कोटी अभिराम। —अवधान माळा

८ सौभाग्य।

९ गुप्त भेद, रहस्य।

१०–शृंगार रस मे स्थाई भाव। (साहित्य)

११ अलकापुरी की एक अप्सरा।

१२ ऋषभदेव के वंशज, विभुराजा की पत्नी और पृथुषेण की माता।

१३ सोना, औषधि आदि तोलने का एक तोल विशेष।

१४ घुघची।

रू० भे०—रति, रइ, रइ, रई, रती, रत्ति।

१५ देखो 'रितु' (रू भे)

उ०—१ माहव स्याम समाळ, सहेत सहेलिया। रूडै नीर सुगध, घणा रगरेलिया। रति अनुकूळ विलास घणा रळियामणा, भीसण दीसै इद्र लिबू हू भामणा। —बा. दा.

उ०– २ रति छह मेह अगाळेह दूजी रयण। तेह रावण जुगा चार ताई। —छत्तरसिंह हाडा रौ गीत

३ घर अबर घडहडै, छिपा धूमर भर छाए। रज अबर अरडाव जेठ रति जिम चढि आए। —सू. प्र

१६ देखो 'रात' (रू भे)

उ०—राजा झूलरि रागिया मोहैं ईही भाति। किरि वेधाणै किरतिया, चदौ पूनम रति। —गु. रू. व.

१७ देखो 'रत' (रू भे)

उ०—१ मनैसर मत अनग सुमति। रगै बद अग सिवै रग रति। —रामरासौ

उ० २ दीया दे दे पोदनी, रहनी पीया रति। जन हरिया जम आयवे लेगौ आगै घाति। —अनुभववाणी

१८ देखो 'रत्ती' (रू भे)

रतिक–देखो रतीक (रू भे)

रतिकर–वि. [सं.] १ आनन्द व सुखप्रद।

२ कामी, विलासी विलासप्रिय।

स. पु.–कामी व्यक्ति।

रतिकळह–स. पु. [सं. रतिकलहम्] रतिक्रीडा, सभाग, मैथुन।

रतिकळा, रतिकला–स. स्त्री. १ श्रीकृष्ण की एक प्राणसखी।

२ मैथुन कला।

रतिकांत–स. पु. [सं.] रतिपति कामदेव।

रतिका–स. स्त्री. [सं.] सगीत के ऋषभ स्वर की एक व अतिम श्रुति।

रतिकील–स. पु. [सं.] १ कुकर, श्वान। (ह. ना. मा.)

रतिकुहर–स. पु. [सं.] योनि, भग।

रतिकेळि–स. स्त्री.–सभोग, मैथुन।

रतिक्रिया—स स्त्री —संभोग, मैथुन ।

रतिगुण—स. पु. [सं.] एक देवगधर्व जो, कश्यप एवं प्राधा के पुत्रों में से एक था ।

रतिग्रह—स. पु [सं रतिगृह] १ योनि, भग ।
२ केलिगृह ।

रतिताल—स पु —संगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो में से एक ।

रतिदान—स पु —सभोग की आकाक्षा वाली स्त्री के साथ किया जाने वाला सभोग, मैथुन ।

उ०—देवराने **रतिदान** जाच जाचू फिर जाचू । रीझावरा दिन रात नाच नाचू फिर नाचू । —ऊ का

रू० भे०—रतदान

रतिनाग—स पु. [स] कामशास्त्र के अनुसार सोलह प्रकार के रतिबधो मे से एक ।

रतिनाथ, रतिनायक—स पु [स] कामदेव । (डि. को)

रतिनार—स पु. [स] १ पुरुवंशीय रतिभार राजा का नामान्तर ।
२ देखो 'रतनार' (रू. भे)

रतिनाह—स पु [स रतिनाथ] रतिपति कामदेव ।

रतिपति, रतिपती—स पु [स रतिपति] कामदेव ।

उ०—१ अन परमल पसर पसरिया आबा, मुक पिक बोलै सुखद सरारा । **रतिपति** तारा धनुख जठै रुच, बरसारी देखरा ज्यू बारा । —बा दा

उ०—२ **रतिपति** रयरिा दिवस सतापति, व्यापति बिरह दुख दियु दियु रे । राजुल कहइ सखि सामि सु दर विरा, कइसइ टौर रहइ जियु जियु रे । —स कु

रू० भे०—रतपति, रतपती, रतीपति, रतीपती ।

रतिपद—सं पु —नव अक्षर का एक वृत्त जिसमे आठ लघु और अन्त मे एक गुरु होता है । (र. ज. प्र)

रतिप्रिय—स. पु. [स] कामदेव ।
वि —कामुक, विलासी ।

रतिप्रिया—वि स्त्री [स] कामुक (स्त्री), अधिक मैथुन या सभोग कराने वाली ।
स स्त्री —शक्ति की एक मूर्ति (तात्रिक) ।

रतिप्रीता—स. स्त्री [स.] काम वासना मे रत रहने वाली स्त्री, कामुक स्त्री ।

रतिबध—स. पु. [स] काम शास्त्र के अनुसार, मैथुन का एक ढग ।

रतिबाह—देखो 'रातीवाही' (रू भे)

उ० —अर बूडना बचना बीजा चतुरग नू चळ-विचळ हुवौ जागि **रतिबाह** देर मचाराक माइ वाढियौ । —वं. भा.

रतिभवन—सं. पु. [सं.] १ योनि, भग ।
२ मैथुन करने का स्थान, कक्ष । केलिगृह ।
रू० भे०—रतिभौन ।

रतिभाव—स. पु [सं] १ शृगार रस का स्थाई भाव (साहित्य) ।
२ प्रेम, प्रीति ।
३ स्त्री पुरुष का परस्पर प्रेम ।

रतिभौन—देखो 'रतिभवन' (रू. भे)

रतिमंदिर—स पु [स.] १ योनि, भग ।
२ वह स्थान जहा पर मैथुन या सभोग का कार्य किया जाता है । केलिगृह ।

रतिमित्र—स. पु [स.] काम शास्त्रानुसार मैथुन का एक आसन ।

रतिमेळ—स. पु —मैथुन क्रिया ।
रू० भे०—रतमेळ ।

रतिया—देखो 'रात' (अल्पा., रू भे)

उ०—पनरा दिना **रतिया** पर एक पुजाई । - केसोदास गाडरा

रतियाव—स पु —देखो 'रातीवाही' (रू भे)

रतिरमण—स. पु [स.] १ कामदेव ।

उ०—कुअर-कमला **रति-रमण**, मयरा महाभड नाम । पकज पूजिय पय-कमळ, प्रथम जि करू प्रणाम । —मा का. प्र.

२ रतिक्रीडा ।
रू० भे०—रतिरयण ।

रतिरयण—देखो 'रतिरमण' (रू भे)

उ०—**रतिरयण** मुदि नर नारि रमति, गाळि प्रमदति गावही । मुख गान दिन निस स्वास मगळ, बैरा चग वजावही ।
—रा रू.

रतिराज, रतिराय—स पु —कामदेव, मदन ।

उ०—१ कर गहि लीधी ढोलिये, मायधरा कत सकाज । हाथा हाथ मीलावीयौ, रति जारौ रतिराज । —पना

उ०—२ नवरग सनेह आगद नव, उभळ प्रफुळ उभाळ सू । **रतिराज** जोड नर रजिज, महाराज 'अभमाळ' सू ।
—सू. प्र.

उ०—३ त्रिरिण बरस माहि निज प्राणि माधि मु धु नतावी आरा, पनर बरस पोढइ राजान, रूपवत **रतिराय** समारा ।
—ढो. मा.

रतिराम—स पु —रति क्रीडा ।

उ० —नह उन्हालु सीत रति, नह पावस प्रकास । जिणि मदिरि नवि जारगीइ, निहा रमइ **रति-रास** । —मा. का. प्र.

रतिलीन—स पु —संगीत में ताल का एक भेद ।

रतिलीला—स स्त्री [स] रतिक्रीड़ा ।

रतिवंत—वि (स्त्री रतिवंती) १ सुन्दर, खूब सूरत मनोरम ।

२ प्रियतम, प्रेमी ।

३ रसिक ।

४ बलवान, शक्तिशाली ।

रतिवती—वि स्त्री —१ प्रेम से युक्त, प्रेममय ।

उ० **रतिवंती** आरति करै, राम सनेही आव । दादू अवसर अब मिळै, यहु विरहनि का भाव । —दादूबाणी

२ सुन्दरी, रूपसी ।

३ प्रियतमा, प्रेमिका ।

रू० भे० —रतवती,

रतिवर—स पु [स] कामदेव ।

रतिवरद्धन—स पु [स रतिवर्द्धन] वैद्यक में कई प्रकार की वस्तुओं के योग से बनने वाला एक पुष्टिकारक मोदक ।

रतिवल्लभ—स पु [स] कामदेव, मदन ।

रतिवाउ—देखो 'रातीवाहौ' (रू भे)

उ० - पाछ पौलि पार्गी करइ कूड़ दीघउ **रतिवाउ** । निहर्गीय पव पनाल वाल अनु रारासि जाउ । — मानिभद्र सूरि

रतिवास, रतिवासौ रतिवाह रतिवाहौ—देखो 'रातीवाहौ' (रू भे)

उ० १ मायपुरै **रतिवास** जठै डेरा तज भागौ । सफर नट सुध समैं, लोह हकौ नह लागौ । वरस नितागु विचैं, सुकन एकौ नह कीधौ, राग्गौ सडसी छोड, पटौ रतनारौ लीधौ । देवसा कवर मरैं दुसट, पड़ियौ वादौ पुजियौ । सौकमा कमध सोरा सितम, तैं जीवर कासू कियौ । - अरजुनजी बारहठ

उ० —२ अर नागपुर री राजा केसास नूं भलाय अगिहलपुर राजनवी रा अनीक में **रतिवाह** देरा बगाय हाकियौ हुवौ । - - व. भा

उ० -३ मेवासे रा सर, भरे कोचर में भाभा । **रतिवाहा** रै राज प्रास करि जागड़ प्राभा । - ध व ग्र

रतिविदग्धा—स स्त्री [स] हस्तिनापुर की एक वेश्या ।

रतिसरवस्वा—स. स्त्री [स रतिसर्वस्वा] श्रीकृष्ण री एक प्राण सखी ।

रतिसाधन—स पु [स] १ पुरुष का शिश्न ।

२ मैथुन सम्बन्धी साधन ।

रतिसास्त्र—स पु [स रतिशास्त्र] काम शास्त्र ।

रतिसुंदर—स पु [स] काम शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध ।

रती—स स्त्री —१ शक्ति, बल ।

२ देखो 'रत्ती' (रू भे) (अ मा)

उ० १ हेक **रती** नह हालियौ सोनौ राखण साथ । लेजावण लाभी करै, आथ साथ असमाथ —बा दा.

उ० -२ महातम ध्येय **रती** नहि गम्य । रती निगमागम गेय अगम्य । ऊ का

उ०—३ सत्र आह आसी, गयौ डूब सारा । **रती** मात हाथी रही सूंड धारा । - भगतमाळ

उ०—४ हरिजन सोनी सोळवौ, **रती** न कोट समाय । हरीया साकट लोह ज्यूं काटै भरघौई थाय । अनुभववाणी

३ देखो 'रति' (रू भे)

उ० - भूपाळ सिंघ धन भूपती, रिझवार रीझन वट **रती** । अग लियां पौरस आसतां अवधेस जुध अगासक । —र ज. प्र

४ देखो 'रात' (रू भे)

उ० रिम दौड़ियौ दिवस रिण **रतीया** । मौहर खबर पूगि सहतिया । — रा. रू

रतीक—देखो 'रत्तीक' (रू भे)

रतीपति, रतीपती—देखो 'रतिपति' (रू भे)

उ०—विगत विमोह बिमल्ल विग्यान । **रतीपति** तात प्रकत्त राजान । - ह र

रतीयन, रतीयेक—देखो 'रत्तीक' (रू भे)

उ० १ हरीया लेख लिलाट का मेटया कभी न जाय । या मै तिल भरि ना वधै, **रतीयन** घाटै थाय ।

—अनुभव वाणी

उ० —२ कामी नर कै काम कौ हरीया **रतीयेक** सुख । या तै अधिकौ ऊपजै, मेर प्रवाणै दुख । — अनुभववाणी

रतीवांन—देखो रतिवंत'

उ० - इत्तै ई मे तो एक लवधड़ग काळी काबळ ओढियोड़ी, **रतीवाळी** जोवनी जागती सुरती आय धमकी । —वरसगाठ

रतीवाहौ—देखो 'रातीवाहौ' (रू भे)

उ०- पछै राठौड़ किसनदास रायमलोत **रतीवाहौ** मारगम ५० तथा ६० सूं दीयौ । —नैणसी

रतुओ—स पु —बरसात की मौसम में होने वाला एक पौधा, जिसके पत्ते छोटे व गोल होते है तथा फूल पीले होते है ।

रतोपळ—देखो रक्तोत्पळ' ।

रतोर—सं. पु.—लाल मुंह का बड़ा चूहा।

रतौ—देखो 'रातौ' (रू भे.)

उ०—१ जीरौ करै फजीतीया, रोय गेय **रता** नैंग। हरीया हरि बिन जीव की, मजन ना कोई सैंग। —अनुभववाणी

उ०—२ रमता राम एक रग **रता**, माया मोह विर्खं नही मता। उतिम माध सु लछन थोरा, मो कहीयै अजरांमर वीरा। —अनुभववाणी

उ०—३ राग रौ लीध गुढवाड, ममहर **रतौ**। मालगढ वामि जिगि लीध गढ मेड़तौ। —सू प्र

उ०—४ मरद छती आपह मतो, थर्पं मोटी थाप। रावत वट **रतौ** रहै, वौ रावत परताप। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

रत्त—देखो 'रक्त' (रू भे)

उ०—१ एक असुर ऊबरै, ताम भागी **रत्त** भरना। भाग मुख छिव छिबै, नैंगा तरवरै तरना। —मा वचनिका

उ०—२ गडगगड जोगगिग **रत्त** गिळन। हडहड नारद रिवय हसन। —गु. रू ब

उ०—३ मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल। ढण्डोलि ढल्ल माग्गि मुगल्ल। रळतळइ **रत्त** सोवइ सपत्त, मम्भळइ मत्त विमथरइ वत्त। —रा. ज मी

उ०—४ घुम्मै खेतरपाळ रे घन **रत्त** घुटक्के। —व भा

२ देखो 'रत' (रू भे)

उ०—१ धरि पूठी घर मामहा, मह जुवागा मत्थ। मन **रत्त** मनमत्थ मू, मन चाहै मनरत्थ। —गु. रू. ब.

उ०—२ रत्ता मामी धरम मू, गमा काम ही **रत्त**। मन मोटा दिन पद्धरा, भड वका गहमत्त। —गु रू ब

३ देखो 'रात' (रू. भे)

उ०—मखि ममदा वीट घर जळ गु जामी, पत्त। किगाही अवगुरा कू भडी, कुरळी माभिम **रत्त**। —ढो मा.

४ देखो 'रातौ' (रू. भे)

रत्तउ—देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—अहर रग **रत्तउ** हुवइ, मुख काजळ ममि-अन्न। जांण्यउ गु जाहल अछइ, तेगा न ढूकउ मन्न। —ढो मा

रत्तक—स पु—लाल रंग का एक पत्थर विशेप। (ग्वालियर)

रत्तड़ी—देखो 'रात' (अल्पा , रू. भे.)

रत्तड़ौ—देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ नीखा लोयगा कटि करळ, उर **रत्तड़ा** बिबीह। ढोला थाकी मारुई, जागि बिलूधउ सीह। —ढो. मा.

उ०—२ केहर कुंभ विदारियौ, तोड दुहत्था दत। रुहिर कळाई **रत्तड़ी**, मद तर तै महकत। —बा. दा.

उ०—३ केहरि मरू कळाइया रुहिरज **रत्तड़ियांह**।

(स्त्री रत्तडी) —हा. झा.

रत्तडउ—देखो 'रातौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—क्षरा ऐक जि रवि **रत्तडउ**, आथमतइ आकासि। दैवइं दुस्ट करि लिगिउ, निम माहरि घरवासि। —मा. कां. प्र.

रत्तर—देखो 'रक्त'

उ०—पियै भर **रत्तर** पत्तर पूर, बगत्तर टोप उडै खगवूर। —पे रू.

रत्तळ—देखो 'रक्त' (रू भे)

उ०—गयदा ढळ ऊथळ- पथळ गयडोथळ, मूळ नही सळ दुभळ मुडै। **रत्तळ** भळ खळळ बळळ खळळ गिगरीथळ, जोध रिगामल अपल जुडै। —गु रू. ब

रत्ति—१ देखो 'रति' (रू भे)

२ देखो 'रत्ती' (रू भे)

३ देखो 'रात' (रू भे)

रत्ती—स स्त्री [स. रक्तिका] १ आठ चावल के बराबर या माशे के आठवें अंश के बराबर का एक तोल जो, प्राय. सोना जवाहरात आदि तोलने मे काम आता है।

वि वि —मतान्तर स छठा अश भी माना जाता है।

२ उक्त मान का बाट।

३ उक्त मात्रा के बराबर सोना या अन्य पदार्थ।

४ चिरमी या घुंघची का दाना जो उक्त तोल के बराबर माना जाता है।

[स रक्ती]—५ शोभा, छबि, कान्ति।

उ०—पगराज प्रमागा प्रगट वदियौ 'अभमनी'। मह जागियौ ममार, राज भाळाहळ **रत्ती**। —सू प्र.

६ प्रेम, अनुराग।

उ०—परगिजै त्रिभुवन पत्ती, भगतवछळ गगा भत्ती। मेघ किनिया रूपमत्ती, राम मा **रत्ती**। —पी ग्र.

वि०—१ अत्यल्प, तनिक, किंचित, रचमात्र।

२ लाल, रक्ताभ।

उ०—१ या मुख झूठी आखवै, पुगी माह दवार। अरज हुवना अमपती, कीधी **रत्ती** रार। —रा. रू.

उ०—२ 'जगपती' उगा आम मैं, रत्ती आग ममाग। वनमपती मळ आळवा, कर नर्मा कवाग। —ग रू

३ अनुरक्त, आशक्त।

४ लीन।

५ देखो 'रात' (रू भे)

रत्तीक–वि रत्तीभर, तनिक, थोड़ा सा।

रू० भे० रतिक, रत्तीक, रत्तीयक।

रत्तो– देखो 'रातो' (रू भे.)

उ० – १ रत्ता ना नाम जिकै घणा रूप। गदै न पड़ै नर सो भव कूप। —ह र

उ० २ भ्रातर रत्ता राग मू रग भिया रम लद्ध। जा उतपात प्रगट्टियो, सो मुणियो निम-ग्रद्ध। —ग रू

उ०—३ नंकला न के पाग गोळा नुगना। रमै वाथियै वोलिया वाप रत्ता। —गा रू

उ० ४ मेवाड़ी नीमे मरणा, रत्तो रिगा गिरमार। नाह मवाह भुजवळ, लूटै मोह मगार। —गु रू व

रत्थ–देखो रथ' (रू भे)

उ० - हेकण रायगा प्राग छूटगा वीगगा हामं। भैनवकै भूलोक रत्थां चमायो मु भाग। - वादरदान दधवाड़ियो

रत्थ्या–स पु [स] मार्ग।

उ०—वैरम वैगगी त्यागी तन नावै, वेला नेला विधि सहजा वगा आवै। पत्थ्या पारगा दै भिक्षाटगा भाजी, रत्थ्या करपट लै चगपटवत राजी। — ऊ का

रत्थी–देखो 'रथी' (रू भे)

रत्थौ–देखो 'रथ' (रू भे.)

उ०— काळ भैरव रुद्र भद्र काळी, हरखि हसि दीध नारद ताळी। दखण मू दियो राठौड़ वत्था, रवी रहनाग आकास रत्था। -गु रू व

रत्न–स पु [स] १ आभूषणों मे जड़ने, कण्ठाहार बनाने या औषधियों मे काम आने वाले, विशिष्ट प्रकार के छोटे व चमकीले खनिज पदार्थ या पत्थर, जो बड़े कीमती होते है। हीरे, जवाहरात, मोती, मणियां आदि।

वि वि –इनकी सख्या ५ ९ या १४ मानी जाती है।

२ कोई अमूल्य वस्तु।

३ कोई सर्व श्रेष्ठ वस्तु।

उ०— अब यो प्रसिद्ध आतपत्र मात्र आरण्यन को, छत्र छत्र-धारिन नछत्र मृग माना को। जाना रह्या नेरे यो अमोल रत्न दाता 'जसू'। पोल मे विधाता पायो मोल मानधाता को। —ऊ. का.

४ पुरुषों की ७२ कलाओं मे से एक। (व. स)

५ पाच, नौ व चौदह की सख्या। *

वि०–१ जो अमूल्य हो।

२ जो सब श्रेष्ठ हो।

३ पाच, नौ व चौदह।

देखो 'रत्नत्रय'।

रू० भे०—रतण, रतन, रतन्न, रत्नि।

रत्नकबळ, रत्नकबल–स पु–एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—पछट भला वस्त्र पहिराया ने कुगा कुगा, देव दुष्य वस्त्र रत्नकबल पामडी खीरोदक ममज्जर चीगी बुलबुल चमसा अतलस लाहि अटागा सामा सेला मूलमूल · · · · ···

—व स.

रू० भे०—रतनकावळ, रतनकाबल।

रत्नकर–स पु [स] कुबेर।

रू० भे०—रतनकर।

रत्नकूट–स पु [स] १ एक पर्वत का नाम। (पौराणिक)

२ एक बोधिसत्व।

रू० भे० - रतनकूट।

रत्नकूटा–स स्त्री [स] अत्रि ऋषि की पत्नियों मे से एक।

रत्नगरभ–स पु [स रत्नगर्भ] समुद्र सागर।

रू० भे०—रतनगरभ।

रत्नगरभा–स स्त्री [स रत्नगर्भा] १ पृथ्वी भूमि।

२ नर रत्न उत्पन्न करने वाली (स्त्री)

रू० भे० --रतनगरभा, रतनागरभ, रतन्नगरभा, रतन्नग्रभा।

रत्नगिरि–स पु [स] बिहार का एक पर्वत। (ऐतिहासिक)

रू० भे०–रतनगिरि, रतनगिरी, रत्नागरि, रत्नागिरि।

रत्नग्रीव–स पु [स.] काचन नगरी का एक राजा, जो विष्णु का परम भक्त था।

रत्नधर–स पु [स] समुद्र, सागर।

रू० भे०–रतनधर।

रत्नचंद्र–स पु [स] रत्नो के अधिष्ठाता एक देवता।

रत्नचूड–स पु [स] पाताल लोक का एक राजा।

रत्नजटित, रत्नजड़ित–वि. [स. रत्नजटित] जिसमे रत्न जड़े हुए हो।

उ०—रत्नकरंड ऊघाड्यौ, **रत्नजटित** छइ हार। आभरण बीजा घणा, अनोपम छइ सार। —नळदवदंती रास

रत्नजालक, रत्नजालि—सं. पु.—एक प्रकार का आभूषण। (व स)

उ०—चंद्रावली सूरयावली नक्षत्रावली श्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडांमणि मुद्रानतक दसमुद्रिका अंगुलीयक अंगूथला हेमजालक मणिजालक **रत्नजालक** मानक। —व. स.

रत्नत्रय—सं पु—जैन दर्शनानुसार—सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र इन तीनों का समूह।

रत्नदांमा—सं स्त्री [सं. रत्नदामा] राजा जनक की स्त्री व सीता की माता का नाम।

रत्नदीप—देखो 'रत्नप्रदीप'

रत्नधेनु—सं स्त्री [सं रत्न+धेनु] रत्नों की बनी गाय, जिसके दान का बड़ा माहात्म्य माना है।

रत्ननाभ—सं पु [सं] विष्णु का एक नामान्तर।

रत्ननिधांन—वि [सं रत्ननिधानम्] जिसके पास रत्नों की निधि हो।

उ०—किहा मातंग ग्रहागण किहा ऐरावन, किहा दुरगत विपणि किहा चिंतामणि, किहा दग्ध सर किहा कल्पतरु, किहा निरद्धन सतान किहा **रत्ननिधांन**, किहा ऊखर किहा कमलागर, किहा मुनि सकल गुणावास। —व स.

रत्ननिधि—सं. पु [सं.] १ समुद्र, सागर।
२ सुमेरू पर्वत।
३ विष्णु का एक नामान्तर।

रत्नपरीक्षक—सं पु. [सं.] रत्नों की परीक्षा करने वाला जौहरी।

रू० भे०—रतनपारखी, रतनपारखू, रत्नपारख, रतूनपारखि, रत्नपारखी।

रत्नपरीक्षा—सं स्त्री [सं] १ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। (व स)
२ हीरे, पन्ने, जवाहरात आदि की जाच कला।

रू० भे०—रतनपारख।

रत्नपारख—देखो 'रत्नपरीक्षक' (रू भे)

उ०—एक ठामि बइठा जवहरी, एक जाणे हेम परीक्षा करी। घणा तिहा छइ **रत्नपारख** ग्राहक जोवा बइठा लक्ष। —नळदवदंती रास

रत्नपारखि, रत्नपारखी—देखो 'रत्नपरीक्षक' (रू भे)

उ०—तेर पसाइता, चऊद चडियात, पन पउतार, सोल महा-मसाणी, सतर आडणीय, अढार भूभार, अगुणीस माणिक्य विनाणी, वीरा **रत्नपारखि**, परिवारि वसु सभाइ बइठौ। —व. स

रत्नप्रदीप—सं. पु. [सं.] १ दीपक के समान प्रकाशित रहने वाला एक कल्पित रत्न विशेष। ऐसा माना जाता है कि पाताल में इसीसे प्रकाश रहता है।
२ रत्न का दीपक।

रत्नप्रभा—सं. स्त्री. [सं] १ पृथ्वी, भूमि।
२ एक नरक। (जैन)

रत्नबाहु—सं. पु [सं] विष्णु का एक नामान्तर।

रत्नभरिता—वि स्त्री. [सं. रत्न भरिता, प्रा. रयण भरिया] जो रत्नों से भरी हुई हो, परिपूर्ण हो।

रू० भे०—रतनभरी।

रत्नमाळया, रत्नमाळा, रत्नमाळिका—सं. स्त्री. [सं. रत्न+माला]
१ रत्नों का हार रत्नों की माला, मणिमाला।
२ राजा बलि की कन्या का नाम।

रत्नमाळी—सं पु [सं रत्नमालिन्] एक प्रकार के देवता (पौराणिक)

रत्नरासि, रत्नरासी—सं पु [सं रत्न राशि] १ रत्नों का ढेर।
२ समुद्र, सागर।

रू० भे०—रतनरासी।

रत्नवती—सं स्त्री. [सं] पृथ्वी, भूमि।

रत्नसांनु—सं. पु [सं रत्नसानु] सुमेरू पर्वत का नाम।

रू० भे०—रतनसान, रतनसानु।

रत्नसागर—सं पु. [सं] १ समुद्र में वह स्थान जहा रत्न निकलते हैं।
२ वह समुद्र जिसमें रत्न पाए जाते हों।

रत्नसाळा—सं स्त्री [सं रत्नशाला] १ वह स्थान या कक्ष जिसमें रत्न रक्खे जाते हों।
२ वह महल जिसकी दीवारों में रत्न जड़े हों।

रत्नांगद—सं पु [सं.] पाड्य देश के वज्रांगद राजा का नामान्तर।

रत्ना—सं स्त्री [सं] यादव राजा अक्रूर की पत्नियों में से एक।

रत्नाकर—सं पु [सं] १ समुद्र, सागर।
२ रत्नों की खान।
३ गौतम बुद्ध का एक नामान्तर।
४ वाल्मीकि ऋषि का पुराना नाम। (पौराणिक)
५ एक दैत्य जो एक बैल के द्वारा मारा गया था। (पौराणिक)

रू० भे०—रइणाइर, रतनागर, रतनाकर, रतनागर, रतनाघर, रयणागर, रयणायर, रयणायरु, रैणाइर, रैणायर, रैणाइर, रैणाइर, रैणायर, रैणावर।

रत्नागरि, रत्नागिरि—देखो 'रत्नगिरि' (रू भे)

उ०—भद्र जाती हस्ती विंध्याचल, राजहंस मानसरोवरि,

चिंतामणि, रोहणाचलि, रत्न रत्नागरि प्रवरताइ..... .. ..
—व. स

रत्नाचळ—सं. पु. [सं. रत्नाचल] १ बिहार का एक पर्वत (ऐतिहासिक)

२ पहाड़ के रूप मे लगाया जाने वाला रत्नों का ढेर, जिसका दान करने का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

रत्नाद्रि—सं. पु. [सं] एक पर्वत विशेष।

रत्नाधिपति—सं. पु. [सं] १ धनपति कुबेर।
२ रत्न सम्पदा का मालिक।

रत्नाभूखण—सं. पु. [सं. रत्नाभूषण] ऐसा आभूषण जिसमें रत्न जड़े हो।

रत्नावळि, रत्नावलि—सं. पु. [सं. रत्नावली] १ एक राजकन्या, जिसे रत्नेश्वर नामक शिवमंदिर में शिव की तपोपासना करने के कारण, पाताल लोक का रत्नचूड़ नामक राजा पति के रूप मे प्राप्त हुआ।
२ एक प्रकार का व्रत।

उ० –संगसिंह भद्र, महाभद्र भद्रोत्तर, सर्वतो भद्र, **रत्नावलि**, कनकावलि, मुक्तावलि, यवमध्य, वज्रमध्य, चद्रायण, सूरायण, पक्षोपवास। —व. स
३ देखो 'रत्नावळी' (रू. भे.)

रत्नावळी, रत्नावली—सं. स्त्री [सं. रत्नावली] १ मणियो या रत्नो की माला, हार।

उ०— १ हार अरद्ध हार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक ककण केयूर नूपुर करणफूल कुडल एकावली कनकावली **रत्नावली** वज्रावली पद्मावली चद्रावली सूर्यावली। —व. स

उ० —२ मुख भरि सूनी सुंदरि, पेलि सुगन मधराति। रतन चोल **रत्नावली**, प्रिउ नै कहइ ए बात। — कवि धरम कीरति
२ दीपक राग की पुत्र वधू एक रागिनी। (संगीत)
३ एक अर्थालंकार विशेष।

रू० भे०—रतनावळी, रत्नावलि, रयणावली।

रत्नोत्तमा—सं. स्त्री —एक तान्त्रिक देवी।

रत्याव—देखो 'रातीवाहो' (डि. को.)

रत्र—देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ० —१ पन्ना भरि **रत्र** हेको हिक पारण, आरां करकठ कढावन मारण। वकावत 'केहरि' केहरि वाण, नखायुध राजन भाजन नाग।
— मे. म

उ० —२ 'जसै' पाखिया सेन भड नेतबधा जिकै लगै परमळ मदळ लोह लागै। सबळ पत्र भरै **रत्र** पीन सकै सकति, अलिअळा तणा गुंजार आगै। —गु. रू. ब.

रथतर—सं. पु. [सं. रथन्तर] १ एक अग्नि जो पांचजन्य नामक अग्नि का पुत्र था।
२ एक साम जो मूर्तिमान स्वरूप मे ब्रह्मा की सभा में उपस्थित रहता था।

रथंतरी—सं. स्त्री [सं. रथन्तरी] १ पुरुवंशीय राजा दुष्यंत की माता।

रथ—सं. पु. [सं] १ पुराने जमाने की एक प्रकार की सवारी जिसमें दो या चार पहिये होते थे और जिसमें दो से लेकर दस तक घोड़े जोते जाते थे। स्यदन। (डि. ना. मा.)

उ० —२ जेतइ वीर मस्तक पड़इं तेतइ कायर पगि पिंडि चडइं, हाथिउ हाथिइ, घोडौ घोडइ, **रथ** रथइ, पायक पायकइ।
—व. स.

२ उसी प्रकार की कोई गाड़ी, बहल।
३ वाहन, सवारी।

उ०—१ हर रथ माठौ होय, सकत **रथ** होय सयाणौ। मितरथ देवै पूठ, घटै उतराध पयाणौ। —चौथ बीठू।

उ०—२ राजा मानधाता पूछै। कहो गरुड़-पंख तोनुं किसैं वासतैं रोकियौ छै। गरुड पख कहै छै हुं ठाकुरां री **रथ** छूं, सौ ऊपर असवार हवौ तौ ठाकुरा री दरसण करावइ ल्याऊ।
—चौबोली

उ०— ३ तुरियद जिसा **रथ** आपताप। सुरतरा सेत रा बळ अमाप। —सू. प्र.
४ सप्त राज्य लक्ष्मियों में से एक।

उ०—करि तुरंग रथ पायक सेन भाडागार, ५ कोस्टागार ६. गढ ७ सप्तांग राज्य लक्ष्मी। —व. स
५ आत्मा का यान, शरीर।
६ सेना।
७ पैर, पग।
८ क्रीड़ा या विहार का स्थान।
९ कनिष्ठा के मूल के पास होने वाला एक सामुद्रिक चिन्ह।

उ०—मणिबंध तीन मणि जव प्रमाणि। मच्छ कच्छ कुंभ गज रथ मडाणि। —सू. प्र.
१० किसी चट्टान को काट कर बनाया हुआ शिला मन्दिर।
११ छन्द शास्त्र के अनुसार डगण के द्वितीय भेद का नाम।
रू० भे०—रत्थ, रथु, रथ्थ। अल्पा., रथडौ।
मह०—रत्थौ।

रथकरता—सं. पु. [सं. रथ+कर्त्ता] १ बढ़ई।
२ रथ बनाने वाला कारीगर।

रथकार–सं. पु.–रथ बनाने वाला, बढ़ई।

उ०—वस्त्रकार विभूसणकार पुंतार ग्रम्व शिक्षाकार **रथकार** माल्यकार प्रतीहार छुरीकार छत्रधार वागाहीधर वागधर।
—व स

रथकारक–देखो 'रथकार' (रू भे)

उ०—मोटौ रिसि बलदेव मुनिसर, प्रतिबोध्या पसु वरग जी। दान सुपात्र दियौ **रथकारक**, पाम्यउ पांचमउ स्वरगजी।
—स कु.

रथकारतिक–स पु [स कार्त्तिकेय+रथ'] मोर, मयूर। (ह ना मा)

रथकुमार–स. पु –[स] मोर। (ना मा)

रथक्रत–स. पु. [स रथकृत] एक यक्ष, जो धातृ नामक आदित्य के साथ चैत्र माह में भ्रमण करता है।

रथक्रांत–स पु.–सगीत मे एक ताल।

रथखांनौ–स पु–वह स्थान या कक्ष जहा रथ रक्खे जाते है, रथागार।

रथड़ो–देखो 'रथ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ **रथडा** बहल जुपाड्या जी, ऊटा कसिया भार।
—मीरा

उ०—२ राज म्हानै **रथड़ौ** जुताय दो हो, रा श्री म्हारा भर जोडी रा भरतार भवरजी रथडौ जुताय दो हो। —लो गी

रथचरण–स. पु. [स.] चक्रवाक पक्षी।

रथचरया–स. स्त्री [स. रथचर्या] एक प्रकार की विद्या। (व. स)

रथजातरा, रथजात्रा–देखो 'रथयात्रा' (रू. भे)

रथध्वज–स. पु [स] विदेह देश के 'कुशध्वज–जनक' राजा के पिता।

रथध्वांन–स पु–वीर नामक अग्नि का नामान्तर।

रथपति–स पु. [स.] रथ का नायक, रथी।

रथप्रभु–स पु [स.] १ वीर नामक अग्नि का नामान्तर। २ रथ का मालिक।

रथबाहण–देखो 'रथवाहन' (रू भे)

रथमोड़ण–वि–शत्रु के रथ को पीछा घुमाने वाला।

उ०—ग्रथ कुमार उद्धतस्कधबधुर, वज्रमय भुजादड, विस्तीरण वक्ष स्थल, रणरसिक, समर भरधुरि धवल, अतुलबल पराक्रम, **रथमोड़ण** परदलगा, सूर वीर। —व स

रथयात्रा–स. स्त्री [स.] आषाढ शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला एक पर्व। इसमे प्राय: जगन्नाथजी, बलरामजी और सुभद्राजी की प्रतिमाओं को रथ पर सवार करा कर सवारी निकालते हैं। इस रथ को लोग स्वयं खींचते हैं।

उ०—तीरथ यात्रा, **रथयात्रा** सद्पचासनदिक्कुमारिकास्नात्र–ध्वजारोपण। —व. स.

वि. वि.–बौद्धो और जैनियो मे भी उनके देवताओ की रथ यात्राऐ निकाली जाती है।

रू० भे०–रथजातरा, रथजात्रा।

रथराजी–स स्त्री –वसुदेव की पत्नियों मे से एक।

रथवर–स. पु. [स] एक यादव राजा, जो भीमरथ राजा का पुत्र था।

रथवांन–स पु [स रथवान्] १ रथ को हाकने वाला, सारथी

उ०—भारत मे अरजुन के आगे, आप भयै **रथवांन**। उणने अपने कुळ को देखा, छूट गये तीर कमान। —मीरा

रथवाह–स पु. [स.] घोडा।

रथवाहक–स. पु. [स.] रथ को चलाने वाला।

रथवाहन–स. पु. [स.] मत्स्य नरेश विराट का एक भाई।

रू० भे०—रथबाहण

रथसप्तमी, रथसातम–स. स्त्री. [स. रथ सप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी।

रथसाळ, रथसाळा रथसाला–स स्त्री [स रथशाला] वह कक्ष या स्थान जहा रथ रक्खा जाता है, रथागार।

उ०—जिन मदिर धवल मदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादसाल लेखसाल पौसधसाल **रथसाला** हस्तिसाल तुरगसाल व्यायामसाल टकसाल·········
—व स.

रथसेन–स पु [स] पाण्डव पक्ष का एक योद्धा, जिसके रथ के अश्वो का रंग मटर के फूल जैसा था और उनकी रोमावली श्वेतलोहित वर्ण की थी।

रथस्वन–स पु [स] एक यक्ष, जो मित्र नामक सूर्य के साथ ज्येष्ठ मास मैं भ्रमण करता है।

रथांग–स. पु [स रथ+अग] १ रथ या गाडी का कोई भाग, अग।

२ रथ का चक्का, पहिया।

३ विष्णु का सुदर्शन चक्र।

उ०—धानखी **रथांग** धार मेर विबुधाल पारगा, किन्नरा अप्सरा नरा धरा ओपवै सुधाव।
—भगतराम हाडा रौ गीत।

४ चक्रवाक नामक पक्षी। (डि को)

५ कुम्हार का चक।

रथांगधर–स. पु. [स] विष्णु।

रथांगपाणि—स. पु. [सं. रथांगपाणि] १ विष्णु।
२ श्रीकृष्ण।

रथाक्ष—स. पु. [सं] स्कन्द का एक सैनिक।

रथारूढी—स पु. [सं] रामचन्द्र के अश्वमेधीय अश्व के संरक्षण में शत्रुघ्न के साथ जाने वाला एक योद्धा।

रथालि, रथाली—स स्त्री [स रथ + आली] रथों की पंक्ति, कतार।

उ०—तुरग मातंग रथालि पाला, ते पारथ ने वारि हुया पखाला। बाणावली कोरव नी बि खंड, करइ शस्त्रे बलवंड चंड।
—सालिसूरि

रथि—१ देखो 'रथ' (रू. भे)

उ०—रिग्वेदा सामक अथर्वणी, यजुर्वेदीया जाण। रथवेदी गति रथि चक्रा, पवित्रा पोकारि पुराण। —मा का प्र

२ देखो 'रथी' (रू भे.)

रथी—स पु [स रथिन्] १ रथ पर सवार होकर युद्ध करने वाला योद्धा।

२ वह रथपति योद्धा जो अकेला हजार योद्धाओं से युद्ध कर सकता हो।

३ सारथी।

उ०—अ सहरी भ्रू ह नयण अग हूंता, विसहर राणि की अलक वक्र। वाली किरि वांकिया बिराजै, चद रथी तारक चक्र।
—वेलि

४ रथ की सवारी करने वाला।

५ मृतक के शव को अन्तिम संस्कार के लिये ले जाने हेतु बांस या लकड़ी का बनाया हुआ ढांचा, सीढ़ी, शवयान।

उ०—हरि हरि उचार नर पुर, हुए हेर बास बिरमी हूई। उण वार रथी रण ऊपड़े, आप सुखासण आरूढ़ी। —रा रू

६ चिता।

उ०—सीढ़ी सूं उतारनै रथी माथै सुवाणियौ नीं उणरौ मन नी डिगियौ। —फुलवाड़ी

रू० भे०— रत्थी, रथि।

७ देखो 'रथ' (रू भे)

उ०—सील बल भीसम ने साध्यौ, बरनी व्यास बड़ाई। चूक करण न रथी चक्र का, सील प्रताप सभाई। —ऊ का

रथीतर—स. पु. [स] १ मनु वैवस्वत कुलोत्पन्न एक राजा जो नाभाग वंशीय पृषदश्व राजा का पुत्र था। (पौराणिक)

२ बौधायन श्रौत सूत्र में निर्दिष्ट एक आचार्य।

रथु—देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—कूड़ करीउ गोविंदि देवि रथु धरणिहिं खूतउ। मारीउ अरजुनि करणु कूडि रणि अण भूभंतउ।
—सालिभद्र सूरी

रथ्य—देखो 'रथ' (रू भे)

रद—स पु [स] १ दांत, दंत। (अ. मा, डि. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ साह सुजा गजै समर, सामना र सलेम। सद बिण पाछौ मेल्हियौ, जिम्हग रद बिण जेम। —व. भा.

उ०—२ आणद सु जु उदौ उहास हास अति, राजति रद रिखपति रूप। नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन केस, राकेस मुख। —वेलि.

उ०—३ टक अमर मग मतग आनन, मेक सित रद मंडित। प्रम नेत हेत सिंदूर पूरित, पास स्रति रव पडित। —रा रू.

२ हाथी दांत।

उ० सिंधुर गाजै सिंह रा, आयौ किर आसाढ। ऐ नकियौ आसाढ नूं रद आसाढ़ी चाढ। —बा. दा.

३ चीर फाड़।

४ खरोंच।

५ वस्त्र विशेष।

उ०— रदा फरदा मुसवरा चौपसीदा ललचात। कदा केळसी कामरणी, बेहद हदा वणात। —पना

६ श्वेत। (डि. को)

७ देखो 'रद्द' (रू भे)

उ०—१ चाप अंग हर चाप, जाप धकस जपिया, उभै राम जुध कारण, नाम अरपिया। लछवर धनख साथ तेज निज हर लिया, रद कर मद दुजराम अवधपुर आविया।
—र ज. प्र.

उ०—२ अटक हीण असपती, पाप छिन ओसर पायौ। रद करया रज्जिया दुरद जेहौ मद पायौ। —रा रू.

उ०— आपा मारि मरै जो कोई, हरि सरणा मैं हटक न होई। आपा मारि मरै जनै सदका, विन आपै मूवा सौ रद का।
—अनुभववाणी

रदएक—स पु गजानन, गणेश।

रदकार—स स्त्री —पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। (व स)

रदघर, रदच्छद, रदछद, रदछदन—स. पु [स रदगृह, रदच्छद, रदछद] ओष्ठ, होठ। (अ. मा, डि को., ह ना. मा)

रदछदरमण—स पु —पान, ताम्बूल। (अ मा)

रददांन—स. पु —रति एवं प्रेम के समय दांतों से कसकर दबाना जिससे चिन्ह पड जाय।

रदबर—स. पु.—ओष्ठ, होठ। (ह. नां. मा.)

रदन—स. पु., [स रदनः] दन्तपंक्ति, दंतसमूह, दांत।
(अ मा., डिं. को., ह ना. मा.)

उ०—**रदन** छदन वदन सरूप। —रामरासौ

रदनच्छद, रदनछद, रदनछदन—स. पु. [स. रदन.+छद] ओष्ठ, होठ।

रदनवसन—स पु [स रदन+वसनम्] ओष्ठ, होठ। (अ मा)

रदनावळी—स स्त्री. [स रदनावलि] दन्तपंक्ति।

उ०—कुंद कली **रदनावळी**, अद्भुत अधर प्रवाल। मोवन देह सुहामणी, निरमल ससिदळ भाल। —स कु

रदनोरी—स स्त्री—१ लक्ष्मी, गृह लक्ष्मी।

उ०—भागी नागा बिन दागा बिन भूमें। घर री **रदनोरी** मदना बिन घूमें। —ऊ का

२ सुदन्ती, सुन्दरी।

रदपट—स पु [स] ओष्ठ, होठ।

रदबद—स. पु.—घुल-मिल जाने की अवस्था।

उ० —नापो दरबार रे मांगे लोगा सू **रदबद** हुवो। सौ लोग सारो राजी रहै। —नापै सांखला री वारता

रदबदळ, रदळबदळ—देखो 'रद्दोबदळ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै नीवाब जुलफारखां री मारफत पातसाह मोजदीन सू **रदबदळ** कराइ। रायजी रघनाथजी नु दीली मेलीया।
—रा. व. वि.

उ०—२ नद ऊगे कह्यो, थारा घणी ने छुडावै तौ म्हासू **रदळबदळ** करि। —कहवाट सरवहिया री वात

उ०—३ अबु नु मेहमद मुराद कह्यौ—राजा रा लोग मु थे अमनाव छौ। इणा री **रदळबदळ** थे करो। —नैणसी

रदलोही—स पु—रक्तातिसार।

रदि, रदी—१ हाथी, गज।

२ देखो 'हिरदौ' (रू भे.)

उ०—बाहुक वलतु वाणी वदि, गद गद कंठ दुख अनि **रदि**। मनी मांचवि मौन सुजान, कस्ट पड़ि करिसी वात
— नळाख्यान

३ देखो 'रद्दी' (रू भे.)

रदीफ—स. पु. [अ] १ घोडे पर सवार के पीछे बैठने वाला व्यक्ति।

२ गजल मे काफिए के बाद आने वाला शब्द या शब्द-समूह।

स. स्त्री.—३ पीछे चलने वाली स्त्री।

४ पीछे की ओर की सेना।

रदौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ सीत-पती कह, सोच अथं दह। देह अभै करि, राम रदे धरि। गावत पामर, झूठ पयबर, ऊंबर सौ वित काय गमावत। —र. ज. प्र.

२ देखो 'रद्दी' (रू. भे.)

रदोबदळ—देखो 'रद्दोबदळ' (रू. भे.)

रद्द—वि [अ] १ निरस्त, खारिज, रद्द।

उ०—ठाकर आपरी आंट में पट्टौ कर दियौ तौ कोई व्हे, बाणियौ आपरी अकल आपै जद चावै तद उणनै रद्द कर सकै।
—फुलवाडी

२ जिसे निरर्थक मान लिया गया हो, व्यर्थ, अप्रयोज्य।

३ परिवर्तित, बदला हुआ।

४ नापसद।

५ दूषित।

६ हीन, न्यून।

उ०—हानै दळ हद्द जाणि जळद्द गयण गरद्द मिळि तद्द। फतै सिरि हद्द, रैण रहद्द रावा मद्द थिय रद्द।
—गु. रू. ब.

७ पराजित।

उ०—राजा दखिण विराजियौ, गा दखणी हुइ रद्द। साह सुपारिस साभळै, की फत्तै मरहद्द। —गु रू. ब.

८ देखो 'रद' (रू. भे.)

उ०—उर कोप आणे अप्रमाणे सिद्ध जाणे सद्दय। ओपै अखाड़ै गै उडाडै रूक भाडै रद्दय —रा. रू.

९ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रद्दी—वि. [अ रदी] १ विकृत, दूषित।

२ बेकार, खराब।

३ जो उपयोगी न हो।

४ निम्नकोटी का, न्यून।

५ निकम्मा।

स० स्त्री०—पुराने अखबार या फालतू कागजों का ढेर या समूह।

रू० भे०—रद, रदी।

रद्दीखानो—स पु [अ रद्दी+फा. खान] वह स्थान या कक्ष जहां खराब या निकम्मी वस्तुएं पटक दी जाती है।

रद्दोबदळ—देखो 'रद्दोबदळ' (रू. भे)

रद्दौ—स. पु.—१ कुछ ऊंची उठी हुई किनारो का, पीतल या लोहे का बडा थाल, जिसमे मिठाई रक्खी जाती है।

२ दीवार की चुनाई में पत्थर की एक पंक्ति।

३ मिट्टी की दिवार का चारों ओर में बराबर उठा हुआ भाग।

रू० भे०—रहौ।

रहीबदळ—स स्त्री. [अ.] १ अदल-बदल, हेर-फेर।

२ किन्हीं दो या अधिक वस्तुओं का परस्पर होने वाला स्थानान्तरण, हस्तान्तरण।

रू० भे०—रदबदल, रदोबदळ, रद्दोबदळ।

रमंकणी, रमंकबौ—देखो 'रणकणौ, रणकबौ' (रू भे)

रमंकियोड़ौ—देखो 'रणकियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. रनकियोड़ी)

रम—देखो 'रण' (रू भे) (अ मा)

उ०—सीता लखमण साथ, परम रा पदवी पाई। गोह भील गोविंद, रहै रन मा रघुराई। —पी ग्र

उ०—प्रज करै नारै खिरै रन जपै दिन रात। अगा आगम केत ज्यौं, झड़ लागी बरसात। —रा रू

रनक—स पु—१ लोहा। (अ मा)
२ नाश, नष्ट।
३ देखो 'रणक' (रू भे)

रनथंभ—देखो 'रणथभौर' (रू भे)

उ०—भायन विहायन लौं मनन समर माई। राखि रनथंभ राज सौंपन समायौ ना। —सूरयमल्ल मिश्रण

रनधील—सं पु [स. हिरण्याधीश] १ कुबेर। (डि. को)

रनबंको—देखो 'रणबंकौ' (रू भे)

उ०—रनबंका ध्वज धज धुर रहत है कोन हम रठौर हत। —ऊ का

रनरोई, रनरोहि, रनरोही—देखो 'रणरोही' (रू भे)

रनवास, रनवा—देखो 'रणवास' (रू भे)

उ०—१ इह बादसाह नहि परहि हत्थ, सकधरणधीस रनवास सत्थ। —ऊ का.

उ०—२ नद थो इतोरो राजा रै रनवास हैनो नाई तैरी वह सुणीयो। —चौबोली

उ०—३ रनवा महित सिकार रमाणी। नकट मथान गयौ नानाणी। —सू प्र

रनारांणी, रनारांणी—स स्त्री १ युद्ध की देवी।

२ दुर्गा का एक नामान्तर।

उ०—देवी वैरणवी महेसी ब्रह्माणी, देवी इंद्राणी ब्रह्माणी रनारांणी। —देवि.

४ निर्जन वन की रक्षा करने वाली एक देवी।

रनिवास—देखो 'रणवास' (रू भे.)

रनेत—स पु.—भाला।

रन्न—देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ अनियत भिक्षा गोचरी, रन्न वन्न काउ सग लेस्यु जी। समभाव सत्रु नइ मित्र सुं, सवेग सुद्ध धरस्यु जी। —स. कु.

उ०—२ पहाड झाड वन्न ए, रहद् कीध रन्न ए, उडति डाब डबरे, लग (१) सिलीग अबरे। —गु रू. बं.

रपखूतांणी—देखो 'राजपूतांणी' (रू भे)

उ०—तरै अक्काई कह्यो, जुहार जुहार, पिण ग्रैहणी तो उतारे आपि नै जोर रपखूतांणी काई हलगी दीसै छै, जाणै पावाहर री हाह तो रपखूतांणी अमनै आपिनै थाग हाच ऊपरा जीवतू नै हथियार वगाया। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

रपट—स. स्त्री—१ रपटने या फिसलने की क्रिया या भाव।
२ ऐसा स्थान जहा से पाव रखने ही फिसल जाना हो।
३ उतार, ढलाव।
४ देखो 'रपोट' (रू भे)
५ देखो 'लपट' (रू भे)

उ०—मा रजक री रपट। बाज री झपट।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात।

रपटक—स स्त्री—ऊट की एक चाल विशेष।

उ०—खारच री काठी धरनी पर टाकर रा ऊठ रपटक चाल सू जाय रह्या हा। ठाकर ई लारै धर मजला, धर कुचला मे हा। —रातवासौ

रपटणी—वि स्त्री—१ जिस पर मे पाव या कोई वस्तु फिसल जाती हो। (स्थान)

उ०—ऊची नीची राह रपटणी पाव नही ठहराय। सोच-सोच पग धरू जतन स, बार बार डिग जाय। —मीरा

२ ढालू, नीची।

रपटणौ, रपटबौ—क्रि. अ—१ फिसलना।

उ०—बनी म्हेला मे ओढी रा सेजा मे निरखा धनसपुरी। बना ओढ र निकलो जी क चानणी मे रपट परी। —लो. गी

२ तीव्र एव अबाध गति मे चलना।

३ दौडकर जाना या आना, दौडना।

उ०—पाछी री पाछी गाव रपटू, म्हनै केई काम मारणा है। —फुलवाड़ी

४ झपटना, छलाग लगाना।

उ०—अणगिण भेळा व्हियोडा कबूडा जिण भात मिनकी रै रपटियां कानी कानी उड जावै, उणी भांत थारा बा रै आया हीया मे एकठ व्हियोडी सगळी बाता कानी कानी बिखरगी।
—फुलवाड़ी

५ घसीटना।

रपटणहार, हारौ (हारी), रपटणियौ —वि.।

रपटिग्रोडौ, रपटियोडौ, रपट्योडौ —भू का कृ।

रपटीजणौ, रपटीजबौ —भाव वा.।

रफड़णौ, रफड़बौ —रू भे

रपटियोड़ौ–भू का कृ–१ फिसला हुआ २ तीव्र या अबाधगति मे चला हुआ. ३ दौड कर गया या आया हुआ, दौडा हुआ ४ झपटा हुआ, छलाग लगाया हुआ ५ घसीटा हुआ।
(स्त्री रपटियोडी)

रपुर–स पु [स हरिपुर] स्वर्ग।

रपोट–स स्त्री [अ रिपोर्ट] १. सूचना, इत्तला।
२ किसी घटना या वारदात के सम्बन्ध मे लिखा जाने वाला प्रतिवेदन, जो किसी सरकारी अधिकारी को प्रस्तुत किया जाता है।

उ०- १ चोधरयां थाणां मे रपोट कर दी, पछा मुळजमा रौ परचौ कटा दियौ। —दसदोख

उ०—२ करणी माथै पचायत बोर्ड मे रपोट कराई, वात जोर खायौ। —दसदोख

३ किसी कार्य की प्रगति आदि का विस्तृत-विवरण, कार्य-विवरण। ४ टिप्पणी।

रू० भे० रपट

रफ–वि [अ.] १ जिसमें चिकनाई या सफाई न हो, खुरदरा, भौडा (कागज, वस्त्रादि)
२ जो नमूने के रूप मे विचारार्थ तैयार किया गया हो, जिसे अन्तिम रूप न दिया गया हो। (लेख, विवरणादि)
३ जो नाजुक न हो, कोमल न हो।

स पु [अ] १ मचान, मच।
२ दरवाजे का बडा ताक।
३ सोने-चादी के आभूषणों की खुदाई को साफ करने का एक लोहे का औजार।

रफड़णौ, रफड़बौ–क्रि स [देशज] १ रगडना, मलना।

उ०—१ मांढै सग रम रळै, सावरणा सुदर भावै। काया कचन हुवै, रफड उगण सू जे न्हावै। —दसदेव

उ०—२ भाख फाटी, तारा झड़या अर कूकडै बाग मारी। करणी रफड रफड़ मल मल न्हायौ-धोयौ अर मिळणी खातर मन री दियौ सजोयौ। —दसदोख

२ देखो 'रपटणौ, रपटबौ' (रू. भे.)

रफड़ियोड़ौ–भू का. कृ.–१ रगडा हुआ, मला हुआ।
२ देखो 'रपटियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री रफडियोडी)

रफतंब–वि –दूर किया हुआ।

उ०—आसिका रह कब्ज करदा, दिल वजा रफतंब। अल्लह आले नूर दीदम दिल हि दादू बद। —दादूबाणी

रफता, रफता, रफते-रफते–क्रि. वि. [फा रफ्त रफत] १ धीरे-धीरे, शनै शनै।
२ क्रमश।
रू० भे०–रफ्ता, रफ्ता।

रफनाळ–स स्त्री –एक प्रकार की बन्दूक।

उ०—ध्रुव मोर जुजरबा अन मधीर, तद चलै रामसगी त तीर। तमचा दुनाळी रफनाळ नाम। तद झडै कुरावीणा तमाम।
—पे. रू

रफा–वि [अ रफअ] १ पौछा हुआ, मिटाया हुआ, साफ किया हुआ।
२ दूर किया हुआ, हटाया हुआ।
३ निवृत्त।
४ शान्त।
५ पूर्ण किया हुआ।
६ दबाया हुआ।

रफादफा–वि [अ.] १ मिटाया हुआ, साफ किया हुआ।
२ निपटाया हुआ, सम्पूर्ण किया हुआ।
३ तय किया हुआ।
४ शान्त किया हुआ।

रफू–स पु [फा] १ भागने की क्रिया या भाव।
२ कीमती वस्त्रों मे, यदा कदा फटने पर, की जाने वाली एक सिलाई विशेष।
३ उक्त सिलाई करने की क्रिया या भाव।

वि –चपत, गायब, अलोप।

रफ्ता, रफ्ता–देखो 'रफते–रफते' (रू भे)

रफ्फी–स स्त्री –गर्द, धूलि, रज जो प्राय हवा मे उडती रहती है और वस्त्रों वस्तुओं आदि पर पडती रहती है। (शेखावाटी)

रब–स पु [अ] १ ईश्वर, परमात्मा, खुदा, ब्रह्म।

उ०—१ मुरख कथन न मानियौ, लमियौ मूढ लजाड। तोनू रब न दियौ नखत, दोनू रखन दिखाड। —वं भा

उ—२ विरहन को बैराग मा रब मा ना कोई रग। हरख

म सा हासा नही, सत सा ना कोई सग । —अनुभववाणी

२ पति ।

३ बडा भाई ।

४ अभिभावक ।

५ मालिक, स्वामी ।

उ०—दुजळ 'मदू' 'देपाळदे', भाखै श्रा वाणी, अपणावा घर आपणी काय देवा पाणी । तकणा घर दोय राजवी, **रब** नाह रहाणी । —वी मा

रू० भे०—रब्ब ।

रबकणौ, रबकबौ—क्रि अ.—अवारा की भांति व्यर्थ घूमना, भटकना, मारा मारा फिरना ।

रबकियोड़ौ—भू का. कृ.—अवारा की भांति व्यर्थ घूमा हुआ, भटका हुआ, मारा मारा फिरा हुआ ।
(स्त्री. रबकियोड़ी)

रबकौ—स. पु.—१ सकट, कष्ट ।
२ अवारा घूमने की क्रिया या भाव ।

रबड़—स. पु [अ रबर] १ वट जाति के एक वृक्ष का सूखा हुआ दूध या इस दूध का बना पदार्थ जिससे खिलौने, बर्तन, ट्यूब-टायर आदि अनेक वस्तुए बनती हैं। यह नर्म एव लचीला होता है।

उ०--चौमासै मे पेटा री, माईत मरै बेटा री अर गरीबा रै पेटा री सूझ बूझ किणी नही रै सकै । **रबड़** री दडी दाई ठोकर मारै जकारै ही आगै भाज मीर हवै । —दसदोख

२ उक्त पदार्थ का कोई टुकडा या अश ।

रबड़णौ, रबड़बौ—क्रि अ.—भैस का दौडना ।

रबड़ौ—स पु.—भैस आदि के दौडने की क्रिया या भाव ।

रबड़णौ, रबड़बौ—क्रि स.—१ किसी तरल पदार्थ मे कलछी आदि डाल-कर चारो ओर फिराना ।
२ देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू भे)

उ०—श्री मिरावौ जात री बेलदार ही। जेठ री बळती लाय मे बीस पच्चीस कोस गाव गाव **रबड़णा** रै उपरात ई उण मिरावा सू पेटौ नी पाड़ियौ । —फुलवाड़ी

रबड़ियोड़ौ—भू का कृ.—१ किसी तरल पदार्थ मे कलछी डालकर चारो ओर फिराया हुआ ।
२ देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. रबड़ियोड़ी)

रबड़ी—स स्त्री.—दूध को औटाकर गाढा एव लच्छेदार बनाते हुए चीनी मिलाकर तैयार किया जाने वाला व्यजन, बसौंधी ।

उ०—काजू किसमिस रा कलेवा, दूध-**रबड़ियां** री दफारी, सेब सतरा री मनवार, पान-सिपारिया रा पुडा,...... —दसदोख

रबद—१ देखो 'रुद्र' (रू भे)
२ देखो 'रौद्र' (रू भे)

रबाण, रबाणी—वि [अ रब+रा आणि] ईश्वर का परमेश्वर का, खुदा का ।

उ०—दादू गाफिल छो वतै अन्दर पीरी पसु । तखत **रबाणी** बीच मे, पेरै तिन्ही वसु । —दादूबांणी

रबाब—स. स्त्री.—१ सारगी की तरह का एक प्रकार का वाद्य ।

उ०--१ नै उण वीण **रबाब** जिकू बनीसू जत्र तयार करने श्रौ दूहौ सायौ । —नैणसी

उ०—२ म्रदग ढोल मगळी, **रबाब** तार सारली । वजति वेरि वेरिय, भणकि भकि भेरिय । —रा. रू

उ०—३ आइ नै करहौ वाधि नै ऊपर पधारीया । देखै तौ मदली ऊपर **रबाब** पडीयौ छै । —लाखा फूलाणी री वात

२ भय, आतक, रौब ।
३ प्रभाव ।

रबाबियौ—स पु.—१ रबाब नामक बाजा बजाने वाला व्यक्ति ।
२ ढोलियों की एक शाखा जो उक्त बाजे (रबाब) पर गायन करती है ।

उ०--मिरासी नाम मरदानां तेगबहादुर रै साथ मारागयौ, जिण रा मिरासी मरदाना पथ रा मिरासी **रबाबी** है । —बा दा ख्यात

रबारी—देखो 'रैबारी' (रू भे)

उ० १ रहिया **रबारी** जागरी वर्जी वागुरी धाय । गरा गाता गधरव पाणि सत्रुग्री समवाय । —मा रा प्र

उ०—२ जाट वाणीया मीरवी रजपूत बसै । घरनी हळवा ३० वे । काठा कवळा । अरट डीवटा ८ । सेवज चिणा हुवै । तळाव साम ८ पाणी । वाहळी को नही । **रबारी** लुभा री बसायौ, लुभडावास कहीजै । —नैणसी

रबि—देखो 'रवि' (रू भे)

रबिलआलमीना—स पु [अ रब्बुल आलमीन] समस्त ब्रह्माड का स्वामी, ईश्वर ।

उ०—श्रनि बडे तुरा बिकटा श्रगी, **रबिलआलमीनां** रटै । खळ सहै रमग श्ररटै खगा, असुरायण दळ ऊपटै । —सू प्र.

रू० भे०—रब्बुलआलमीन ।

रबी—स स्त्री [अ रबीअ] १ वसतऋतु ।
२ उक्त ऋतु मे तैयार होकर कटने वाली फसल

उ०—साख ऊनाळी फसल रबी। —नैणसी

३ देखो 'रवि' (रू. भे.)

उ०—रबी ध्रुव चदह ध्यान धरेम। आदेम आदेम आदेम आदेम।
—ह र.

रब्ब—देखो 'रब' (रू भे.)

उ०—१ गुडै हय बिम्भळ गात गनीम, रटै मुख नब्बिय रब्ब रहीम। 'छेली' कर छूटक वार छडाळ, भलौ धरकत पटाभर भाळ। —मे म.

उ०—२ अल्ला एक करीम, रब्ब रहमाण सभारे। कहि सदाइ खालिक्क, उत्तम वत्तेय विचारे। —गु रू. ब.

उ०—३ दादू गाफिल छो वतं, मंभे रब्ब निहार। मभई पिव पाग जो, मभई सु विचार। —दादूवाणी

रब्बडिया—स. स्त्री—पवार वश की एक शाखा।

रब्बड़ियौ—स पु—पवार वश की रब्बडिया शाखा का व्यक्ति।

रब्बलग्रालमीन—स. पु—देखो 'रबिलग्रालमीना' (रू भे.)

उ० खाविंद चहन खुद खलक खैर, गफ्फूर गैर इसाफ गैर। वालिक नहि खालिक मुसलमीन, अल्ला है रब्बलग्रालमीन।
—ऊ का

रब्बारौ—देखो 'रैबारी' (रू भे.)

उ०—रब्बारा थप्पले, घग्घ पाकेट भयकर। नेसा चमळक नयण, झाळ झासु डा नीझर। —सू प्र.

रभस—स. स्त्री. [स.] शीघ्रता, जल्दी। (ह. ना. मा.)

रमेणक—स. पु. [स.] तक्षक कुलोत्पन्न एक नाग जो जनमेजय के सर्प सत्र मे मारा गया था।

रमंकौ—स. पु.—पायल या किसी आभूषण की ध्वनि या शब्द।

उ०—रमा-झमा रमा-झमा रमा-झमा झमा रमा। ठमका रमकां झका रमंकां ठमक। —र. ज. प्र.

रम—स. पु. [स.] १ हर्ष, आनन्द।

२ कामदेव।

३ पति।

४ प्रेमी, आशिक।

[स. रिपु] ५ शत्रु, वैरी, रिपु।

रू० भे०- रिम।

वि.—१ सुन्दर, मनोहर। (ग्र. मा.)

२ प्रिय, प्यारा।

३ आनन्ददायक, मनोरजक।

रमइयौ—देखो 'रामइयौ' (रू. भे.)

उ०—बालपने की प्रीत रमइयाजी, कदे नही आयौ थारो तोल।
—मीरा

रमक—स. स्त्री—१ ध्वनि विशेष, झनकार।

२ एक चाल विशेष, जेवर पहन कर चलने की क्रिया विशेष।

उ०—रमक बताय गया सावरे नादाणिया। कदै मिळै रमराज सावळडा। —रसीलेराज रौ गीत

३ लहर, तरग।

स. पु—१ प्रेमी, उपपति।

२ प्रेमपात्र।

रमकडौ—देखो 'रमकडौ' (रू भे)

उ०- ठीक व्हैता ई म्हू उण नै लियनै आबूला। ए देख थारै वास्तै उणी थेली भर रमकडा भेज्या है अर कैवायौ है कै इणा मे सू धापू नै एक ई मत दीजै। —अमरचूनडी

रमकियौ—देखो 'रामनियौ' (रू. भे)

रमकीलौ—वि (स्त्री रमकीली) छैल-छबीला, रसीला, रसिया, चटकीला।

उ०—नमीली रमीली चकीली अगीली रगीली बकीली रकीली रमकीली समकीली चटकीली जीव री जडी। —र. हमीर

रमजा—स स्त्री.—१ छवि, शोभा।

उ०—लगी पिया वे दो नैणा दी रमजां। उन रमजा दे नाल मोही गई मावरा। —रसीलेराज रौ गीत

२ हसी मुस्कराहट।

३ मजाक।

रू० भे०—रमझा, रमूझा।

रमजांन—स. पु [अ रमजान] एक अरबी महीना विशेष। इस महिने मे मुसलमान रोजा रखते है।

रमजोळ—देखो 'रिमझोळ' (रू भे)

रमझम—देखो 'रिमझिम' (रू. भे)

उ० - १ डोळा हीडोळा होकर हुचकाती, अणवट ठोकर दे गडी उचकाती। रमझम बिछिया रा बजता रणकारा, झमझम जेहरि रा उठता झणकारा। —ऊ. का.

उ०—२ इसा मे भरमल पोसाख कर गाहणो पैहर हास-काम-लोचनी आभै री बीज सावण री तीज पाबासर रौ हस ज्यू मल्हकती थकी सु घै भीनै गात रमझम करती आई।
—कु वरसी साखला री वारता

रमझमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे.)

उ०—रमझमतै चालै हमला रै हीयडै मालै हो। रीसै नयण निहालै, पिण घात किसी परि घालै हो। —वि. कु.

रमझा—देखो 'रमजा' (रू भे)

रमझोळ—देखो 'रिमझोळ' (रू भे)

उ०—१ वेग पवन हुता वही, झळम माज रमझोळ। वीर पुत्री मीयां वकट, धावै छोल धगाळ।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ० २ मांळ सिणगार ठविया थका फूला रा चोम पैहरिया थका टोप झगियाळा काजळ ठामिया थका बाका नैणा री झोक नाखती पायल रै ठमकै मू घूघरै रै घमकै मू विछिया रै छमकै मू रमझोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती बाजारि चालि जाए छै। -रा मा म

उ०—३ झीणी गिरिमै ऊपरि वाजणी पायल रा घूघरा रमझोळ झणकिआ जाणी कळहस रा बच्चा बकोर करि रहिआ छै।
—रा. मा. म

उ० -४ गोवन कलग मुहामणा जी, करी जरी रमझोल। महर दोय मावन करोजी, नित्र रचित चकडोल।
—प च वी

रमझोळी—म पु—१ हमजोली।

२ देखो 'रिमझोळ' (रू भे)

रमठ—म पु—एक म्लेच्छ जाति जो माधाता के राज्य काल मे उनके राज्य मे बसती थी।

रमड़णो, रमड़बो—देखो 'रमणो, रमबो' (रू भे)

उ०—डाबा कथनोटा जूटणनै घुमडै, महिलो महिलो ज्यू डाबर मे रमडै। ऊ का

रमडोल—म. पु—नाचदल, रिपुदल।

उ०—काठरा जुधा घण थोळ दूजा 'किसन', भेड खग वाह रमडोल कूटा। वीरवर भुजान भमतोळ पाछो वळे तोळ रा कीया समसर 'सूरा'। मेगराज आढो

रमडोल—वि—सीधा, सादा।

उ०— राळ खोळ रमडोळ माला, जीवा हरख हिलोळ है। वोळ करै झाळ धमरोळा फोगा पोल किलोळ है। —दमदेव

रमण—स पु [स] १ हर्ष, आनन्द या आह्लाद देने वाली कोई क्रिया या घटना, क्रीडा, आमोद प्रमोद।

२ रतिक्रीडा, संभोग, मैथुन।

उ०—१ महल मज नह रमण उमाहे। चौकी नाम न खिलवनि चाहे। —सू प्र.

३ कामदेव।

४ पति, स्वामी, प्रीतम। (अ मा, ह ना मा)

उ०—ललना रमणी सिरोमणी लिखमी। जास रमण जामी जगत। —ह ना मा ·

५ हर्ष, आनन्द।

६ विहार, भ्रमण।

७ सूर्य का सारथि अरुण।

८ अण्डकोश।

९ कूल्हा, कमर।

१० एक वसु जो धर नामक वसु का पुत्र था।

११ दो मगण एक छन्द विशेष। (र. ज. प्र)

१२ प्रथम दो लघु फिर एक गुरु इस प्रकार तीन वर्ण का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पि प्र)

१३ योद्धा वीर।

उ० -अति चढै तुरा विकटा अगै, रबिलआलमीना रटै। खळ खटै रमण झपटै खगा, असुरायणा दळ ऊपटै। —सू प्र.

वि—१ सुन्दर, मनोहर मनोज्ञ। (ह ना मा.)

२ आनन्ददायक।

उ०—कब सिनान कर धूप कर, अधपत ले एकत। रब मजीर सुगता रमण, करी उती नभ पत। —पा. प्र

३ रमण करने वाला।

४ रमण करने योग्य।

५ प्रिय, प्यारा।

६ देखो 'रमणी' (रू भे)

७ देखो 'रमणो'

उ०—घणा मेळै घमसाण, रावस आहेडै रमण। चड मड वे भ्राता चढै, प्राजळिता निज प्राण। —मा वचनिका

रू० भे०—रवन।

रमणक—स पु [स] १ जम्बू द्वीप के एक खण्ड या वर्ष का नाम।

२ उक्त खण्ड का राजा।

३ देखो 'रमणीक' (रू. भे)

रमणि—देखो 'रमणी' (रू भे)

उ०— १ अति रीझै इक विरद उचारै, सुख उपजै सुज सुमति सभारै। राज रमणि महाराज रिझावै, अति हित निरख हरख उपजावै। —रा रू

उ०—२ नेमजी हो भुगति रमणि मोह्या तुमे हो राजि, पिण तिण मा नहि स्वाद। —वि कु

रमणियौ—वि—१ रमण करने वाला।

२ खेलने वाला।

३ भोग विलास करने वाला।

रमणी—स स्त्री [स.] १ स्त्री, औरत, नारी।

उ०—१ रमणी बरहीना निरख नवीना, राम राम रणकदा है।

कद्रप रा कीटा फबत न फीटा, भवरगुफा भणकदा है।
—ऊ. का.

उ०—२ रमणी जेह कुरूप रयु कहीयै ताम सरूप हो।
—वि कु

२ रमण करने योग्य युवती, सुन्दर स्त्री।

उ०—बोलै केहै जोरि करागि बावनी। हरिहा रमणी नज हठ चालि दुवाई रावळी।
—मा वचनिका

३ पत्नी प्रियतमा।

उ०- १ गत गवर कटि केहरी, रमणी नाटक रग। कुच गिरवर नागरा कमळ, ते है कुमळे ग्रग।
—वा दा

उ०—२ मनगमगी रमणी हम्यु जी, मेवग्यृ ताहरा पाय।
—वि कु

४ सुगन्ध वाला।

५ रागिनीय पद्धति की एक रागिनी। (सगीत

६ साधु सन्त मियों द्वारा की जाने वाली यात्रा। भ्रमण।

रू०भे०—रमणि, रवणि, रवनी।

रमणीक, रमणीय—वि [स.] १ सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ।
(अ मा, ह ना मा)

उ—१ रमणीक दीप 'पाबू' रही, सिध अगमागम सूझसी। थान नै थान ना थापना, 'पाल' प्रथी मह पूजसी।
—पा प्र

उ० २ अति गथिर चचर आउखउ, रमणीक यौवन रूप। जलवरणी सनतकुमार ज्यु, जीव जोई देह सरूपी रे।
- स कु

उ०—३ त्रिद पत्र सुगध, बधे मारुत्ति पान मादिक। रन नखत गहाम, आमास पासि रमणीयं।
- रा रू

२ रमण करने योग्य।

उ०—दीयरा रमणीय कवेसुर दासा, जग्र समर सुरतर निज जांत धजब भूप दरसै तो वाळा, अवनी मोह रूप उद्योत।
—र रू

स स्त्री—१ स्त्री, सुन्दरी।

२ प्रथम एक लघु वर्ण तदनन्तर तीन गुरु वर्ण, यह क्रम चार बार होने पर बनने वाला एक छन्द विशेष।

उ० - प्रथम लुघू गुर गुर पछै, ठवि चत्र फेरा ठीक। महस च्यारि त्रिगसी मतरि, रूप छद रमणीक।
— ल वि

रमणीयता—स स्त्री [स.] सुन्दरता।

रमणौ—स पु–१ खिलौना।

२ खेल का कोई उपकरण, साधन।

३ शिकार खेलने का मैदान, शिकारगाह।

उ०—१ रमणं रमण सिकार, सझै दळ पूर सकाजा। नौबति बाजा निहसि, रजा ढाकै ग्रहराजा।
—सू प्र.

उ०—२ और ही अनेक राजभान रा ऊठ छै। सू साथ रौ घूमरो किया थका रमणं सिर आण खडा हुवा है।
—रा सा स

४ जगल, वन या मैदान जहा पर प्रायः रमण या विचरण करते रहते है।

वि०- खेलने वाला।

रमणौ, रमबौ—क्रि स [स रमण] १ कोई खेल खेलना, खेलकूद करना, क्रीडा करना, खेलना।

उ० १ बाधरौ उठै ऊभी छानी रह्यौ छै। रात आधी गया गाभळ रमरान् नीसरी, सु देवीजी री भाखरी गई।
—नैणसी

उ०—२ पगल्या ने पायल लाय भवर म्हारे पगल्या ने पायल लाय, हाजी म्हारा बिछिया रतन जडाय, भवर म्हानै खेलण दो गणगौर बिलाला म्हानै रमण दो दिन चार।
—लो गी.

२ कोई नाटक या तमाशा करना।

उ०—१ तीरथ जात समस्त, सकल साथा मिळ सगा। राम तमासा रमे, हलस नाचै हुडदंगा।
—ऊ का.

उ० २ लुगाई री न रा बिना रखवाळण, रूवरागी, महारांणी, अर गुजरी री आ रामत कुण रमती।
—फुलवाडी

३ भोग विलास करना, रतिक्रीडा, सभोग या मैथुन करना, रमण करना।

उ० १ ताहरा गया नू भीतर एकै मोहल मे राखी। अर गया नू कही 'ह पातसाह नू जीपीस, तै राते तैसु रमीस। ईतरै ह थारै मोहल माहे कोई नाईस।
--देपाळ धध री बात

उ० २ परीरगत स्वास उसास प्रभाव, प्रिया प्रिय पास पलोटत पाव। रमे रग राग विलास सुरग, परस्पर प्रीतम प्रीत प्रसग।
—ऊ का.

उ०—३ राजा देवर म्हानै जी राखल्यो दूजी है दोरागी। ऊगणी कहिय भायला नौ कोई चोथा देवर आवजी, देवरिया प्यारा रा जी वो देवर छिनगारा रम रया पर नारिया।
—लो० गी०

उ०—४ दूजी की बस री बात नी देख दीवाणजी सेजा रम्योडी लुगाया नै मन ही मन याद करण लागा। कदास याद करघा की निवास मिळै।
—फुलवाडी

उ०—५ सिकारागण जाग वैरी पनग, हिरणाखी हसा-गमणि।

रण-महरण सिंघ राजान सुर, **रमति** राज-पुत्री रमणि ।
—गु रू ब.

४ भोग विलास के लिये रह जाना, रहना । मन लग जाने के कारण कहीं ठहरना, निवास करना, टिकना ।

५ आनन्द करना, मौज करना ।

६ शिकार में जंगली जानवरों को मारना, शिकार खेलना ।

उ०—१ एकदा प्रस्ताव राजा प्रिथीराज सिकार नीसरीया । सिकार **रमता रमता** एक दिन सवालख में आइ नीसरीया ।
—द्वारका री वात

उ०—२ एक दिन री समाजोग छै । रावळ रतनदे सिकार चढ़िया छै । सरब रजपूत साथै छै । मालो पण साथै छै । सिकार **रमी** अर अपूठा वळिया ।
—नैणसी

७ आनन्द पूर्वक इधर उधर घूमना, भ्रमण करना, विहार करना ।

उ०— असि चढ़ि बिस बनि **रमैं** अकेलौ । चौकीदास खवास न चेलौ । जळ बन जनु **रमतौ** जोवै । हरख उछाह ताम तिन होवै ।
- सू प्र

८ साधु संतों का विचरण करना, चला जाना ।

उ०--१ आतम ग्यान समद्र अथागी । **रमता** परम हंस वैरागी ।
- सू प्र.

उ०--२ जाहर जुग जोगी है प्रणभोगी, औघट घाट **रमंवा** है ।
—अनुभववाणी

९ चुपके से कहीं चले जाना, गायब हो जाना, अज्ञात स्थान पर चले जाना । लुप्त हो जाना ।

उ०— १ यूं कहि गुरु चेलौ **रमिया** नै कह्यौ तूं वात मानीस नहीं, पण तिण वात री औ सहनाण छै जो थारौ आप आज सूं पनरै दिनै मरै तो मोह साच मानै ।
नैणसी

उ०—२ नगर आइ जोगी **रम** गया रे, मो मन प्रीत न पाइ । मैं भोळी भोळापन कीन्हौ, राख्यौ नहीं बिलमाइ ।
—मीरां

१० किसी में या सर्वत्र व्याप्त होना, मौजूद रहना, वर्तमान रहना । समाना ।

उ०—१ रोम रोम में **रम** रयौ रैन सबद दईव । --र ज प्र

उ०—२ **रमै** आप नूं आप मा, नमै आपना आप । राण खवारे आप नो, साहिब सिमो सताप ।
पी ग्र

उ०—३ घट घट माहै **रम** रही, तू सकळ सभाही । जगम थावर जेतळा, तो विण को नाहीं ।
— गज उद्धार

उ०—४ मोहि पिया अबकै मिळौ, पलक न छोड़ु वास । रोम रोम मे **रमि** रहू बिध जिण फूलां वास ।
---र हमीर

११ लीन होना, रचीजना, लिप्त होना ।

१२ अनुरक्त होना, आसक्त होना, मोहित होना ।

१३ चारों ओर में लोक प्रिय होना, व्यापक होना ।

१४ युद्ध करना, रणक्रीडा करना ।

उ०—बळै दीचाळ तणौ रणहाणि, पड़ै ध्रू रेणु भिखै पीठाण । मरुधर सहण उनर मांड, **रमैं** रण मीर अनै राठौड ।
—राउ जैतसी रो रासौ

रमणहार, हारौ (हारी), रमणियौ — वि ।

रमिओड़ौ, रमियोड़ौ, रम्योड़ौ — भू का. कृ ।

रमीजणौ, रमीजबौ — भाव वा.

रमणौ, रमनौ — रू. भे ।

रमत—देखो 'रामत' (रू भे)

उ०—१ बाळपणौ **रमत** में गमायौ, भर जोबन अहकारी । बुढापा में माळा लीधी, अब इण सुगेला थारी । -- अग्यात

उ० २ इण गामरिये भाई रे साथै पैंतीवार अठै आई नीं म्हनै औ लगायौ के म्हे गुकसीचणी री **रमत** रमू हूं ।
फुलवाडी

रमताराम—वि –घूमते फिरने वाला, निरन्तर, भ्रमण करते रहने वाला, परिभ्रमण करने वाला ।

उ० भजिए **रमताराम** पद बड पाए है । हरिहा जनहरिदास हरि परम उदार अपार हमारा नाथ है ।
ह पु वा

स पु —१ ईश्वर, परमात्मा ।

उ० १ सहस कळा सूरज न ऊगा, अर्ध को ऊगा ज्यु पूरा । भूत प्रेत जाकिन डर नाही, **रमताराम** हमारै माही ।
अनुभववाणी

उ० २ नमो नमो **रमताराम** नारायण निरसिंध, सकळ निरन्तर नरहरि
---ह पु वा

उ० ३ बाई ऊदा हरै ना पछा भक मारौ मन लाग्यो **रमताराम** सू ।
—मीरां

रमतियौ—देखो 'रामतियौ' (रू भे)

उ० -१ ए गिरिया दूजी रीढ घरदौ—वाने कुण गावै । म्हारा तो **रमतिया** सर्व पगा ।
—फुलवाडी

उ०—२ 'सउ मासी म्हानै काई देसी, दादी ?, 'लाडू' । 'भळै ?' दूध, दही **रमतिया** गेंगा । 'साचै ई ?' 'हा, बेटा ।'
—वरसगांठ

रमतू—स पु —एक पक्षी विशेष ।

उ०—मीर सिकारू बाहरर नजर होत है । लगतू **रमतू** के आतुरी । चरज सीचाणु सों लाग आतुरी ।
—सू प्र.

रमयोड़ौ—देखो 'रमियोडौ' (रू. भे)

रमल—स पु [अ] १ फलित ज्योतिष में भविष्य फल निकालने की एक विधि या ढग।

वि. वि—इसमे एक पासे को फेक कर उसकी बिंदियो की गणना की जाती है। तदनुसार फल निकाला जाता है।

२ उक्त फल निकालने की विद्या।

रमलि, रमली—स स्त्री [स रमणिका प्रा रमणिआ, अ रमलिआ] क्रीडा, खेल, विनोद।

उ०—१ आह मनमाहि नरिंदौ पारधि सभावइ। सइ दलि **रमलि** करतउ वणा तडि आवइ। —मालिभद्र सूरि

उ०—२ जिसी **रमलि** कीजइ रवाडी तिसी एक भली वाडी, जेह दीठइ आणंद हूआ। —व. स

उ०—३ कामीय केलिनि परिमलि, **रमलि** करइ बहु भगि, रमइ रमालि तरुणीय, करणीय नव नव रगि। —प्राचीन फागु-सग्रह

२ रतिक्रीडा, सभोग, भोग।

उ०—१ ककण चूडि अनइ आभरण, हारे तेजि तपइ रवि किरण। केलक सरीसी **रमलि** करत, गोरी गाइ राग वसत। —प्राचीन फागु-सग्रह

उ०—२ दीपइ ए राना कणयर दिणयर किरि अवतार। पारधि पाडल परिमलि **रमलि** करइ मधुकार। —धनदेव गणि

रमांइण—देखो 'रामायण' (रू भे)

उ०—उभै पतिसाह भिडै अग-भग। **रमांइण** भारथ ए रिण-जग। —गु रू ब

रमा—स स्त्री. [स.] १ लक्ष्मी, कमला। (अ मा, ह. ना. मा)

उ०—लोकमाता सिधु सुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रमा। अवर ग्रहै अस्थिरा इदिरा, रामा हरि वल्लभा **रमा**। —वेलि

२ सीता।

उ०—**रमा** हुतासणि मरणि न्हाण। इथि रामण त्रिय छाह हराण। —सू. प्र.

३ दुर्गा।

उ०—ओ३म नमस्ते चडका चद्रभाळ री नवीन आभा। छटा मणि माळ री भुजाटा रही छाय। आरोहा लकाळ री क सत्रा धू भाळ री आग, **रमा** रूप जयौ काछ पचाळ री राय। —नवलजी लाळस

४ पत्नी।

५ स्वामिनी।

६ प्रजा।

७ सम्पत्ति, धन।

८ चचलता।

उ०—मझि अग उनग ग्रहास समा, रवि वाहण रेवत मोह **रमा**। —मा. वचनिका

रू० भे०—रमाय।

रमाइण—देखो 'रामायण' (रू. भे.)

रमाएकादसी—स. स्त्री—कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

रमाकत—स पु [स रमाकान्त] १ विष्णु।

उ०—**रमाकंत** री वक बे भ्रू ह रजी, लखै कामसुर साम री चाप लज्जी, त्रिहू लोक रा ख्याळ रै भाळ टीकौ, नग भूप सोभा लखै रूप नीकौ। —र रू.

२ राम।

रमाक, रमाकड, रमाकडौ—वि. [स रम्+रा प्र आक, आकड] खेलने मे निपुण, खिलाडी।

रमाड़णौ, रमाड़बौ—देखो 'रमाणौ, रमाबौ' (रू भे.)

उ०—१ कथा तु ही कथ क्रीडा तु ही काम। **रमाड़** मो पग लाधौ हिव राम। —ह. र.

उ०—२ गोपीनाथ रा हाथ आया गडुदे, अही गारडी जाण छाव्यो अडुदे। अही मूठ वाजीन जेही उपाडै, रमे गारडी जेम काळौ **रमाड़ै**। —नागदमण

रमाडणहार, हारौ (हारी, रमाडणियौ —वि।

रमाडिओडौ, रमाडियोडौ, रमाड्योडौ —भू का. कृ।

रमाडीजणौ, रमाडीजबौ — कर्म वा।

रमाड़ियोड़ौ—देखो 'रमायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री रमायोडी)

रमाधोर—स पु. [सं.] रावण। (अ मा.)

रमाज—वि [अ रम्माज] १ भेद जानने वाला, भेद बताने वाला।

उ०—साथे ऊवारा सुमेर पाथै तेग्मा अचूक बाण, रागवाला गडि बेळा वेरसा **रमाज**। रिमदा ऊवेड जाडा मेरमा गजा रा गोड, मामता समान राखै येरसा समाज। —महाराज सनमानसिंघ हाडा रा जोधारां री गीत

२ गुप्तचर, भेदिया।

रमाडणौ, रमाडबौ—देखो 'रमाणौ, रमाबौ' (रू. भे)

उ०—गुरि दीनविउ अवसरि राउ सविहु बेठा करउ पसाउ। तुम्हि सदावउ नवउ अखाडउ नव नव भगि पूत्र **रमाडउ**। —मालिभद्र सूरि

रमाड़ियोड़ौ—देखो 'रमायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री रमाड़ियोड़ी)

रमाणौ, रमाबौ—क्रि. स ['रमणौ' क्रिया रा प्रे रू] १ कोई खेल खिलाना, खेल में लगाना, खिलाना।

उ०—१ रिमि रूप **रमाया** मत्ल माहि खाया रोम गमाया गुण गाया। धिणियाणी धाया विलय न लाया, आराधा न मुगि आया। —पी ग्र

उ०—२ लेग कन अच्छरा गैणाग माग आवा लागी। पग मूरा वीरा सू जमावा लागी प्रीत। ललवका उछटै भैरू चडका **रमावा** लागी, गावा लागी जोगणी वीराग मत्र गीत।

—सूरजदान कवियौ

२ कोई नाटक या तमासा कराना।
३ मौज कराना, आनन्द कराना।
४ भोग विलास, रतिक्रीडा, सभोग या मैथुन करने के लिये प्रेरित करना, रमण कराना।

उ०—चाकर कर बतळावज्यौ, आगळ राखू हाथ। पग दाबू पोढ़री दिऊ, सेज **रमाऊ** साथ।

—कुवरसी सांखला री वारता

५ भोग विलास के लिये रखना, कही ठहराना, निवास कराना, टिकाना।
६ शिकार कराना, शिकार खिलवाना।
७ घूमने, भ्रमण करने या विहार करने के लिये प्रेरित कराना।
८ गायब कराना, लुप्त कराना।
९ लीन कराना, लिप्त कराना।
१० अनुकूल करना, अपने अन्दर मिलाना।
११ नव विवाहित वर के साथ उसके ससुराल मे सालियो आदि द्वारा मनोविनोद कराना।

वि वि.—इसमे पहेलिया व कुछ अटपटी बाते पूछी जाती है और वर द्वारा समुचित उत्तर न देने पर हसी ठिठोली की जाती है।
१२ वेष्ठित करना, परिवेष्ठित करना, लपेट करना।

उ०—१ काना बिच कुडळ गळे बिच सेली अग भभू। **रमाय**। तुम देख्या बिन कल न पड़त है, गिह अगणो न सुहाय।

—मीरा

उ०—२ गोपीचद भरथरी के लाग्यौ, तन मे खाक **रमाणौ** जी।

—मीरा

१३ भुलावा मे डालना, फुसलाना।
रमाणहार, हारौ (हारी), रमाणियौ —वि.।
रमायोड़ौ —भू का. कृ.।
रमाईजणौ, रमाईजबौ —कर्म वा.।
रमाड़णौ, रमाड़बौ, रमाड़णौ, रमाड़बौ, रमावणौ, रमावबौ —रू. भे.।

रमाद—स पु [स रमा+द] कुबेर। (ना मा)

रमाधव—स पु [स.] विष्णु।

रमानद, रमानदण, रमानदन—स पु [स रमानद, रमानदनः] कामदेव। (ह ना मा.)

रमानरेस—स पु [स रमा+नरेश] विष्णु।

रमानाथ—स पु. [स] विष्णु।

उ० तीन पथ तनै बीडा जाणगी अजोध्यानाथ, झौकबी मारणी कीट जादनाथ रूप। राजवी सीसोद नाथ सदा चीत साथ राखै **रमानाथ** रूप भूप अवरील रूप। —हुकमीचद खिड़ियौ

रमानिवास—स पु [स रमा+निवास] विष्णु।

रमापत, रमापति, रमापती—स पु [स रमा+पति] विष्णु।

(डि को)

उ० —रमउ **रमापति** रागिय आगिय आयगइ पासि। नीगिल तव तिव द्वीपइ ए दीपइ ए ग्यान प्रकासि।

—जयसेखर सूरि

रमाबर—देखो 'रमावर' (रू भे) (ना मा)

रमाय—देखो 'रमा' (रू भे)

उ० —रहे नित मन **रमाय** सुरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह र

रमायण—देखो 'रामायण' (रू भे)

उ०—आन दसा सू जब मन थाका, करम भरम सगि नासेंगे। राम **रमायण** रा मतिवाळा प्रद् प्रीति पिछाणेंगे।

—ह पु वा

रमायोड़ौ—भू का कृ—१ कोई खेल खिलाया हुआ, खेल मे लगाया हुआ २ कोई नाटक या तमासा कराया हुआ ३ मौज कराया हुआ, आनन्द कराया हुआ ४ भोग विलास, रतिक्रीडा, सभोग, मैथुन करने के लिये प्रेरित किया हुआ, रमण कराया हुआ ५ भोग विलास के लिये रक्खा हुआ, कही ठहराया हुआ, निवास कराया हुआ टिकाया हुआ ६ शिकार कराया हुआ, शिकार खिलवाया हुआ ७ घूमने, भ्रमण करने या विहार करने के लिये प्रेरित किया हुआ ८ गायब कराया हुआ, लुप्त कराया हुआ। ९ लीन किया हुआ, लिप्त किया हुआ. १० अनुकूल किया हुआ, अपने अन्दर मिलाया हुआ ११ नव विवाहित वर

को सुसराल मे सालियों द्वारा मनोविनोद कराया हुआ. १२ वेष्टित किया हुआ, परिवेष्ठित किया हुआ, लेपन किया हुआ. १३ भुलाया हुआ, फुसलाया हुआ।

(स्त्री. रमायोडी)

रमारम, रमारमण–स पु [स रमा+रमण] लक्ष्मीपति, विष्णु।

रमाराव–स पु [स. रमाराज] विष्णु।

उ०—**रमाराव** रा वंदिया पाव राजा। वजै चाय दूणी घणी धाय बाजा। —रा रू

रमावणो, रमावबो–देखो 'रमाणो, रमाबो' (रू भे)

उ०- १ इंद्र धनुख तणियो अजब, चातुक धुन मन चाव। बीज न मावै बादळा, रसिया तीज **रमाव**। —बा दा

उ०—२ अला वन मा जाइ मुरळी बजावै, राजा राम ना ओथि राधा **रमावै**। —पी ग्र

रमावर–स पु [स] लक्ष्मीपति विष्णु।

रू० भे०—रमाबर।

रमावियोडो–देखो 'रमायोडो' (रू. भे)

(स्त्री रमावियोडी)

रमावीज–स पु [स] लक्ष्मीबीज नामक एक तांत्रिक मत्र, श्रीं।

रमास्याम–स पु [स रमा+स्वामी] लक्ष्मीपति विष्णु।

रमिझोळ–देखो 'रिमझोळ' (रू भे)

उ०—अमवारी वणी छ गीना रा **रमिझोळ** लाग रह्या छ।

— जगमाल मालावत री वात

रमियोडो–भू का कृ–१ कोई खेल खेला हुआ, खेलकूद किया हुआ, खेला हुआ २ कोई नाटक या तमाशा किया हुआ ३ भोग विलास, रतिक्रीडा, सभोग या मैथुन किया हुआ, रमण किया हुआ. ४ भोग विलास के लिये रहा हुआ, मन लग जाने के कारण कहीं ठहरा हुआ, निवास किया हुआ, टिका हुआ ५ आनन्द या मौज किया हुआ. ६ शिकार खेला हुआ. ७ आनन्द पूर्वक इधर उधर घूमा हुआ, भ्रमण किया हुआ, विहार किया हुआ ८ चुपके से कहीं गया हुआ, गायब हुवा हुआ। लुप्त हुवा हुआ ९ सर्वत्र व्याप्त हुवा हुआ, मौजूद रहा हुआ, वर्तमान रहा हुआ, समाया हुआ १० लीन हुवा हुआ, लिप्त हुवा हुआ, रगा हुआ. ११ अनुरक्त, आसक्त या मोहित हुवा हुआ १२ चारों ओर लोक प्रिय या व्यापक हुवा हुआ।

(स्त्री. रमियोडी)

रमीईयौ–१ देखो 'रामइयौ' (रू भे)

उ०—भली करी तै आवतै, विरहा मेरै अग। एक **रमीईयौ** रमि रह्यौ, लगै न दूजा रग। —अनुभववाणी

२ देखो 'राम' (अल्पा., रू भे.)

रमीस–देखो 'रमेस' (रू भे.)

उ०—**रमीस** प्रमीस हुणं अघरीस, तवै जस आलम जेण तमाम। महा **बळवान** अभग महीप, रटा जन लाज रखै रघुराम।

—र. ज प्र

रमूंजा, रमूंझा–देखो 'रमजा' (रू. भे.)

उ०—अरु कयौ, 'महरबान, रावळ मोसू घणी **रमूंझा** कीवी।

—द दा.

रमेकडो–स पु [स रम्+प्र एकडो] १ खिलौना, खेलने का उपकरण।

उ०—मोती जड्या काकरण वाळी हाथ धकै करती वा अबूझ री गळाई बोली–म्हारो हाथ इरण मे पजायनै बतावो। औ तो धणू तो मजेदार **रमेकडो** व्है ज्यू है। —फुलवाडी

२ योनि, भग। (बाजारू, ग्रामीण)

रू० भे०—रमकडो

रमेस–स पु [स रमेश] विष्णु।

रू० भे० —रमीस, रमैस।

रमेस्वर–स पु [स रमेश्वर] विष्णु।

रमैनी–स स्त्री –कबीर के बीजक का एक भाग।

रमैयौ–देखो 'रामइयौ' (रू भे)

उ०- तुम दरसण की आस **रमैया**, कब हरि दरस दिखावै। चरण कवळ की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुख पावै।

—मीरां

२ देखो 'राम' (अल्पा, रू. भे)

रमैस–देखो 'रमेस' (रू. भे)

रम्म–देखो 'रम्य' (रू भे)

उ० सो धम्म **रम्म** जो गुण महिय, दान सील तव भाव मउ। भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नर भव आलिम नीगमउ।

—अभयतिक यति

रम्मणो, रम्मबो–देखो 'रमणो, रमबो' (रू भे.)

उ०– धरै इक पाप धरै इक ध्रम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म सरज्जै आप त्रिधा ससार, हुवौ मझ आप ही **रम्मणहार**।

—ह. र.

रम्मणहार, हारौ (हारी), रम्मणियौ —वि.।

रम्मिओडो, रम्मियोडो, रम्म्योडो —भू. का. कृ.।

रम्मीजणो, रम्मीजबो —भाव वा

रम्मत–देखो 'रामत' (रू भे)

रम्माल–वि. [अ.] 'रमळ' विद्या का जानने वाला, ज्योतिषी।

रम्य–वि. [सं.] १ जिसमें मन रमता हो, रमणीय।

२ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर।

३ प्रिय।

स. पु. १ वीर्य।

२ चम्पा का पेड़।

३ परवल की जड़।

४ वायु के सात भेदों में से एक।

रू. भे —रम्म।

रम्या–स स्त्री. [सं] १ मेरु की नौ कन्याओं में से पांचवी कन्या, जो 'रम्यक' राजा की पत्नी थी।

२ धैवत स्वर की तीन श्रुतियों में से अन्तिम श्रुति का नाम। (संगीत)

३ महेन्द्रवारुणी।

४ लक्ष्मणा नामक कंद।

५ गंगा नदी।

६ रात, रात्रि।

रय–सं पु [सं] १ पुरूरवस राजा का पुत्र एक राजा।

२ स्वायंभुव मनवन्तर के वशिष्ठ ऋषि का पुत्र एक प्रजापति।

३ प्रवाह, धारा।

४ गति, वेग, तेजी। (अ मा.)

५ उत्साह, धुन।

६ सतोष, सब्र।

उ०— हसा बुगां पत्तरी, वीछड़ीया परवाण। बुग छीलरीया रय करै, हसीया हंस बिलगाण। — अनुभव वाणी

७ देखो 'रज' (रू. भे)

८ देखो 'रव' (रू भे.)

रयण–स. पु. [स. रत्न प्रा रयण] १ रत्न।

उ०—१ वाडय। सभलि वीनती, सूर देवराय माल्हि। यौवन मद हम जालविउ, एक रयण जिम राखि। — मा का प्र

उ०— २ कापड माल अमल, हेम सिणगार रयण विभूखण। परिमळ चदन अगर, पान कपूरह अस्सण। —गु. रू ब.

२ राजा, नृपति।

उ०—'पातल' पाण कृपाण री, रयण विलोकै राड। असणी जाणक इद्र री, पड़ै सीस पाहाड।

—किसोरदान बारहठ

३—समुद्र।

स स्त्री [स रजनी] ४ रात, रात्रि, निशा।

उ०— १ रति रयण सुदि नर नारि रामति गाळि प्रमदति गावही सुख गात दिन निस स्याम मगळ बेण चग बजावही।

—रा रू.

उ०—२ जिण रुत वहु बादळ झरै, नदिया नीर बहाय। तिण रुत साहिब वल्लहा, सो किम रयण विहाय।

—ढो मा.

५ पृथ्वी, भूमि।

उ० —रयण दियण पाताळ न राखै, कनक श्रवण रुधो हविळास। सहि पुडि सग दानारज सारै, विसन किसै पुडि मारै वास।

—दुरसौ आढ़ौ

६ धूलि, रज।

७ मोतियों से स्वस्तिकादि की की जाने वाली रचना।

रू० भे०—रड़ण, रड़णि, रदण, रदणि, रइन, रेण, रैण।

मह०—रयणो।

रयणपत, रयणपति–स पु [स रजनी+पति] १ चन्द्रमा, शशि। (डिं को)

उ०—सहसत सत असत अवर तत परगत, अरस ईसत रस भरथ असत। जगपत हित सुखदति उग भत जिम, प्रभुत दात तिन रयणपत। —र रू

[रा. रयण=भूमि+स. पति] २ राजा, नृप।

रयणमइ, रयणमई, रयणमए, रयणमय–वि [स रत्न+मय, प्रा रयणमई] रत्नों से युक्त।

उ०—सोवन ए राति रतेहि बधत्र आगलिउ गिरा ए, मित्तह ए रत्न मणिबद्ध राय रतन सभा रयणमए। राइहि ए मति जिणद नवउ प्रसाद करावीउ ए, कचण ए मणिमय थभ रयणमइ बिंब भरावीया ए। — मालिभद्र सूरि

रयणा–स स्त्री [सं रय+रा प्र णा=गति] १ गति, चाल।

उ०—झालै भार जुझारो झाले, सीस आपाणे सरब सही। राणा बड़ै ऊबरे राणा, रवि रयणा ज्यां वात रही।

—अज्जा झाला री गीत

२ रचना।

उ०—सयुक्तबंध एक दममड अगड, पणयालीस अज्झयणा। पणयालीस उद्देस वलीपद, सहस सख्यात नी रयणा।

—वि कु.

३ देखो 'रैणा' (रू भे)

रयणागर, रयणायर, रयणायरु—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ घर बसियौ घण मेह, चीत न बसियौ चूंडग। रेह सगै नौ रेह, रयणागर रहनू थियौ।

—फेफागद री वात

उ०—२ रासि रसाउलु नगीउ थुणीजइ, किम रयणायरु हीयइ तरीजइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ रयणायर पुत्री रमा, टाटी कर दुरभाव। रयणायर ते डूबवे, सूमा केरी नाव। —वा दा

उ०—४ अनतनाथ रा गुण अगम अनता, साभलजी मह मना। रयणायर मे गिणती रयणे, मुनि न कहै मतिमना।

—ध व ग्र

रयणावळी—देखो 'रत्नावळी' (रू. भे)

रयणि, रयणी—१ देखो 'रजनी' (रू. भे)

उ०—१ पाखडिया ई किउ नही दैव अवाहू ज्याह। चकवीकइ हट पखडी, रयणि न मेळउ त्याह। —ढो मा

उ०—२ मुणीयै अगजी आजगी, रयणी गई रे मबे। अग फूरक ठीक पीगा, ग मूकनै दुखल मबै।

—रीसाळू री वात

२ देखो 'रैणा' (रू. भे)

रयणीहत—स पु. [स रजनी+हत] सूर्य, रवि।

उ०—सविता रवि सूर पतग सही, रकनबर अबर ज्योत रही। किरणाळ प्रभाकर भाण कहे। रयणीहत मित्र सुचित्र रहे। —पा प्र

रयणौ—देखो 'रयण' (मह., रू भे)

उ०—सद्गुरु आवी समोसरया, साभलि नलगि अभ्भयणौ जी। जानि समरण पामियउ, सजम परम रयणौ जी।

—स कु

रयत—देखो 'रय्यत' (रू भे)

उ०—गरथ लेत गोमेह, रात दिवम रोमै रयत। माय माय मोमेह, मुनमी खोमै मुरधरा। —ऊ. का.

रयतदोस, रयदोस—स पु.—दूषित आहार लेने से बनने वाला दोष।

(जैन)

रयनाक—स पु.—समुद्र, सागर

उ०—कवि 'गंग' अकब्बर अक्कभन (अन)। नृप निपान सब बस करिय। राना प्रताप रयनाक मभ, छिन डुब्बत छिन अच्छरिय। —कवि गग

रयनि, रयनी—देखो 'रजनी' (रू. भे)

रयय—देखो 'रजत' (रू भे.)

रयबारी—देखो 'रैबारी' (रू. भे.)

उ०—नागरबेली नित चरइ, पाणी पीवइ गंग। ढोला रयबारी कहइ, करहउ एक सुचग। —ढो. मा.

रयवाडी—देखो 'रैवाडी' (रू. भे)

उ०—१ महाराय! रयवाड़ी ये रमवांनौ छे लाग। जईये रमवा आज प्रभु, फूल रह्यौ छे बाग। —श्रीपाल राम

उ०—२ श्रेणिक रयवाड़ी चढ़यउ पेखियउ मुनि एकांत। वर रूप कांति मोहियउ, राय पूछई कहउ रे विरतत।

—स. कु.

रया—स स्त्री. [अ. रिआया] प्रजा, जनता।

उ०—१ गरीब रया री तौ भगवान माथा सू ई विस्वास उठग्यौ हो। चौडै बात करण री हीमत तौ किणी री नी ही पण पीढ़िया सू विस्वा रा तायोडा अभ्यागत मन ई मन उण कुचमादी नै ई भगवान री ठौड आपरा हिवडा मे थरप लियौ।

—फुलवाडी

उ०—२ क्यू मीन री मरजी माथै, जीवण री पडगी हडताळ। हिरणी बोली रया करै काई, रखवाळा री पडग्यो काळ।

—चेतमानखा

रयासत—देखो रियासत' (रू. भे.)

रयिस्ठ—स. पु [स. रैस्ठ] १ कुबेर।

[स रजस्थ] २ अग्नि, आग।

रयी—देखो 'रई' (रू भे.) (डि. को.)

रयोसयौ—वि—१ शेष, अवशिष्ठ।

२ बचा-खुचा।

रय्यत—सं. स्त्री. [अ. रअय्यत] प्रजा, जनता, रिआया।

उ०—काबिल कलाम कहियत करीम, रहमान इल्म रय्यत रहीम।

—ऊ. का.

रू. भे —रयत, रैत।

ररंकार—स. पु. [स. रकार] राम नाम की ध्वनि, जप, माला।

उ०—१ रट रे ररंकार धार मन ईस्वर। तोइ निधि पार उतारण तेम। औ मसार अलप घन 'ओपा', जळ-निधि तणा बुदबुदा जेम। —ओपौ आढौ

उ०—२ प्रति उतिम सिवरत महज, नाभ कवळ प्रसथान। रोम रोम ररंकार हुय, भाग बडै का दान। —अनुभववाणी

रू० भे०—ररंकार।

ररं—सं. स्त्री. [प्रा. रड] रटन, रट।

ररणौ, ररबौ—क्रि स –१ रटना, जपना।

उ०—रसना पतसीत न कू ररियौ, भव दड जिका जम रै भरियौ। रसना पतसीत नणो ररियौ, भव दड जिका जम ना भरियौ। —र ज प्र

२ कहना, कथना।

उ०- ररै ममा माया रमा, बीर गिण न महबीर। विरण माथै वळ वाढणा, धर साचा रणधीर। —रेवतसिंघ भाटी

३ बोलना।

उ०—नृप मांन के बक सुभाव बिलोकत चित्त की भ्रांति अचभौ धरै। चतुरानन आन पढावै विचच्छन, तो उन जीभ नकार ररै। —बा. दा

ररौ—स. पु.–१ राम नाम का प्रथम अक्षर।

उ०- १ पोथी पुसतग टीपणौ, विद्या दूरि वहाय। ररीया मर्वाहि छाडिकै, ररै मर्म चित लाय। —अनुभववाणी

उ०—२ तीकम पाळगर जन रखन रा मो। रात दिना मुख नाम ररौ मो। —र. ज प्र

२ 'र' वर्ण या अक्षर।

रळ, रल—स .पु.—तुच्छ, न्यून।

उ०—१ प्रासमुद्द धरहि धरिणय ठक्केक्कड कवि चोरि। राकीउ रल जिम काढीइउ आथमनई सूरि। —मालिभद्र सूरि

उ०—२ अस्त दिवसि अभरणु मकुटब रल जिम विलवइ पाडइ बुब। पूछइ भीमु करी एकतु भाविउ दूख किसु आचतु। —मालिभद्र सूरि

रळक—स. स्त्री –१ फिसलन।

२ लपट।

३ झुक्का।

रळकणौ, रळकबौ—क्रि अ –१ फिसलना, रपटना, खिसकना, सरकना।

उ०—१ माता रै मन्दिर महलां मालुडौ रळक्यौ ए माय। नेडौ बजाजी रो बेटौ मालूडौ ले आवै ए माय। —लो गी

उ०—२ खावासजी नै एकाएक विस्वास नी व्हियौ के उण रै पाखती ऊभी आ कोई लुगाई बोलै है। जे एकर ई कोयल। आ बोली सुणलै तौ बोलणौ भूल जावै। गळा रै माय बोली रा आखर रळकता दीसै। मूडा मे दांता री ठौड जाणै तारा खिवै। —फुलवाडी

२ प्रगट होना, निकलना।

उ०—१ वा घणी ई सवर राखियौ तौ ई उण रै मूडा सूं माडै ई बोल रळक पडिया —फुलवाडी

उ०—२ हिवडा मे ओळ्योडी मन री अखूट दरद आखरा री रूप धार माडाणी रळक पड्यौ। —फुलवाडी

उ०—३ भोळा टाबर री गळाई उण रै मूडा सू बोल रळक पड्या—देखू, म्हारी पग इण म पजावौ। कैडीक फूठरी लागै। —फुलवाडी

३ टपकना, गिरना, ढुलकना।

उ०—१ कान्ही मागी अर भटियाणी रै पगा हाथ लगाय सिधावती वेळा गूगी अर खवासजी री आख्या सू ठळाक ठळाक आसू रळक पड्या। —फुलवाडी

उ०—२ कागद मावट नै जवरू ऊचौ जोयौ तौ कावी री प्याला जैडी मोटी-मोटी आख्या मे पाणी देख्यौ। टप करतौ एक बळबळतौ आसू उण रा गाल माथै कर रळक्यौ तौ नौ कागद नाख नै नाठग्यौ। —अमर चनडी

४ गेंद के समान लुढकना। घुटकना।

५ लटकना, झूमना।

उ०—१ गोडा रळकती काळी भवर आटी री फरणाटा देय ठकराणी भचकै आडी फिरी। —फुलवाडी

उ०—२ माथा सू ई हेटै रळकंता भड ला रा काळा-भवर केस जाणै काळा रग री नाव उजागर करता व्है। —फुलवाडी

उ०—३ बिमळा कमळा सी गमळा अगा रो काडिया रळकता कमना केसा री। भूखण आभूखण मनसा भरियाडी वळा मनवछित केळा करियोडी। —ऊ क

वि० वि०—यहा 'रळकणौ' का शाब्दिक अर्थ यद्यपि लटकना ही होगा क्योकि केश मस्तक मे होकर कमर की ओर लटक रहे है। लेकिन शब्द की भावना को समझने के लिय यहा लटकते बालो मे होने वाली हरकत की ओर ध्यान देना आवश्यक है। मस्तक की हरकत के अनुसार बालो का हिलना डुलना स्वाभाविक ही है और बाल हिलने के साथ साथ पीठ, कमर आदि अगो को स्पर्श करते है इसस उनमे एक फिसलन पैदा होती रहती है और हिलने डुलने म बालो मे लटकने व फिसलने की दोनो क्रियाए साथ साथ होती है। अत यहा 'रळकणौ' का अर्थ लटकना व फिसलना मिश्रित रूप मे है। किसी खूटी के बधी रस्सी को भी लटकना माना जा सकता है परन्तु वहा 'रळकणौ' का भाव नही आ सकता।

६ किसी आधार पर लटक कर झूमना, झूलना, हिलना-डुलना।

उ०—केहरी लक लग थग कदल भळकि पदम नग डग भरै।

ऐ वात पलकि नम्ब मैं दिया, **रळकि** हार उर ऊपरै।
—पना

७ धीरे धीरे बहना।

उ०—मिळगती भरनी गौ काळजौ ठाडौ हेम व्हैगौ।
बळबळनी रेत रै माथै ढाळौढाळ पाणी **रळकण** लागौ।
—फुलवाडी

८ प्रस्थान करना, जाना।

उ०—**रळक्या** मेला मारू ढळती सी रात, दिन तो उगायो राणी सोकरी रे देस मे जी म्हारा राज।
—लो गी

९ मिटना, धूमिल होना।

उ०—अळगा अळगा गावडा, कन्डा कन्डा कोस। लूआ **रळक्या** गाहडा, पथी कुण नै दोस।
—लू

रळकणहार, हारौ (हारी), रळकणियौ —वि.।

रळकिम्रोडौ, रळकियोडौ, रळक्योडौ —भू का. कृ।

रळकीजणौ, रळकीजबौ —भाव वा।

रळणौ, रळबौ —रू भे।

रळकाणौ, रळकाबौ—क्रि स [‘रळकणौ’ क्रिया का प्रे रू] १ फिसलाना, रपटाना, खिसकाना, सरकाना।

२ प्रगट करना निकालना।

उ०—मन रो भेद जीव मे राखी जगा जगा **रळकाई** ना।
—गजानन वर्मा (बादळी)

३ गेंद के समान लुढकाना, घुडकाना।

४ टपकाना, गिराना, ढुलकाना।

उ०—मेली-मेली सुन्दर गोरी घोडे री लगाम। आसू तौ **रळकाया** कायर मोर ज्यू, जी म्हारा राज।
—लो गी

५ लटकाना।

६ किसी आधार पर लटका कर हिलाना-डुलाना।

७ धीरे-धीरे बहाना।

८ प्रस्थान कराना, जाने के लिये प्रेरित करना।

९ मिटाना, धूमिल करना।

उ०—लूआ फिर फिर रोहिया, **रळकाया** मैं राह। पथ मेटण मिस मारिया, पथी दारुण दाह।
—लू

१० अनाज के ढेर मे से अच्छा व साफ अनाज पृथक करने के लिये उस पर हल्के हल्के हाथ फिराना। इसी प्रकार से अन्य पदार्थ भी।

उ०—इण भात रा मूग हाथा सूं **रळकायजै** छै। चुण-वीण काकरा काढजै छै।
—रा सा स.

११ फैलाना, तानना।

उ०—छापरियो देस नै तबूडा तारिया ए अबा, डूंगरियै **रळकाई** रेसम डोर।
—लो. गी.

रळकाणहार, हारौ (हारी), रळकाणियौ —वि.।

रळकायोडौ —भू. का कृ.।

रळकाईजणौ, रळकाईजबौ —कर्म वा।

रळकावणौ, रळकावबौ —रू भे.।

रळकायोडौ—भू का. कृ.—१ फिसलाया हुआ, रपटाया हुआ, खिसकाया हुआ, सरकाया हुआ २ प्रगट किया हुआ, निकाला हुआ ३ गेंद के समान लुढकाया हुआ. ४ टपकाया हुआ, गिराया हुआ, ढुलकाया हुआ. ५ लटकाया हुआ. ६ किसी आधार पर लटका कर हिलाया हुआ. ७ धीरे धीरे बहाया हुआ. ८ प्रस्थान कराया हुआ, जाने के लिये प्रेरित किया हुआ. ९ मिटाया हुआ, धूमिल किया हुआ १० हल्के हल्के हाथ फेरा हुआ (अनाज आदि पदार्थ) ११ फैलाया हुआ, ताना हुआ। (स्त्री रळकायोडी)

रळकावणौ, रळकावबौ—देखो ‘रळकाणौ, रळकाबौ’ (रू. भे.)

रळकावणहार, हारौ (हारी), रळकावणियौ —वि।

रळकाविम्रोडौ, रळकावियोडौ, रळकाव्योडौ —भू. का कृ।

रळकावीजणौ, रळकावीजबौ —कर्म वा।

रळकावियोडौ—देखो ‘रळकायोडौ’ (रू भे) (स्त्री रळकावियोडी)

रळकियोडौ—भू का कृ—१ फिसला हुआ, रपटा हुआ, खिसका हुआ, सरका हुआ २ प्रगट हुवा हुआ, निकला हुआ ३ टपका हुआ, गिरा हुआ, ढुलका हुआ ४ गेंद के समान लुढका हुआ, घुडका हुआ ५ लटका हुआ, लूमा हुआ ६ किसी आधार पर लटक कर झूमा हुआ, झूला हुआ, हिला-डुला हुआ ७ धीरे धीरे बहा हुआ ८ प्रस्थान किया हुआ, गया हुआ ९ मिटा हुआ, धूमिल हुवा हुआ। (स्त्री रळकियोडी)

रळकौ—स पु.—१ कभी-कभी आने वाला शीतल हवा का झौंका।

२ थोडे समय के लिये होने वाली बरसात की झडी।

उ०—छिन एक वाळौ परवा भाग, दोय घडी जे **रळकौ** दे दे तो, ताली भर जाय आगरा माय।
—लो. गी

३ पानी या द्रव पदार्थ का हल्का बहाव, प्रवाह।

४ दूसरी बार सींच कर जाव मे पानी देने की एक क्रिया।

५ पतले गोबर का किया जाने वाला लेपन।

रळचळ—स पु—बहाव, प्रवाह।

उ०——वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सू सर साबळ झळहळ ए। अटडे काछसळ कुटकै कम्मळ, मोरी **रळचळ** खळहळ ए।
—गु. रू. ब.

रळणौ, रळबौ—क्रि. प्र.—१ मिलना, सम्मिलित होना ।

उ०—१ जे हुडियार हुना सूग्रर होट तौ हिंदू मुसलमान रळि जावौ । जो गाइ होय तो हिंदू मुसलमान रळ जावौ ।

—द. वि.

उ०—२ गट जोडी तो जुडगी पण मन-मेळ जोडी मिळगौ नहीं । मूळी लाबी ग्रर जुवान । पसजी ग्रोछी, गट मीणगियौ बडो विरान । दो-दो दस मागे रळग्या ।

—दमदोल

उ०—३ मिर कुकिया सह साह, गीहासण जिण सामने । रळगी पगन राह, फाबै किम तोनै 'फता' । —केसरीसिंह बारहट

उ०—४ पण छोटा-मोटा टाबर ग्रर जुवान घर्णा कोड सू डागै रै सग मे रळ्ळै है । —दमदोल

२ मिश्रण होना, मिश्रित होना ।

उ०—घर जाणै इसा-इसा'र छल्यो है । घर हाळा नो ग्राटै रे लूण दाई रळग्या । —दमदोल

४ घुलना, मिलना, रमना ।

उ० १ रळ रही नैन मे नींद गुमानीडा । नार नर्म की मार बोलन की । - रमीलै राज री गीत

उ०—२ नागा नगर गयाह, मन मेळ मिळिया नही । मिळिया बिन मिळियाह, जासू मन रळिया नही । —ग्रग्यात

उ०—३ डागै री विसवास जम्यौ ग्रर दायजै-टीकै री मोल मायो न थम्यौ । सगै-सगै री रळग्यौ जी, मीठा ह्या ज्यू सक्कर घी । —दमदोल

उ०—४ ग्रब धणी ख्यानी हुई छै । राजा ग्रर साह रग रळीया छै । —बीजड वीजोगण री वात

४ समाना, मिलना, विलीन होना ।

उ०—१ ज्यू जळ बूठो थळ म रळियो । ऊगी बू पळ काचो । पीळो रीतर पडग्यौ करसा, श्र ग्रनी न राची ।

—चेन मानखा

उ०—२ ग्रासोडा हिम माय, रौ ग्राला भेळा हवै । ज्यू सागर मे जाय, रळै नदी जळ राजिया । —किरपाराम

उ०—३ रिण लडै पडै कणियाणरो, विकट जोध 'दोळौ' वळै । 'सबळ' रो काम ग्रायो 'सुरिंद', रामजोत भेळो रळै ।

—बखती खिड्यौ

उ०—४ मन गुरु सैन दई जर ग्राकै, जोत मे जोत रळी ।

—मीरा

५ शोभित होना ।

उ०—रसिया नैणा रळ रह्यौ, काजळ तीगी कोर । सिया बटाऊ कारणै, चदाबदनी चोर । —ग्रग्यात

६ प्रवेश पाना, पैठना, घुमना ।

उ०—१ पळ्वै धारा पाण सीन रळैगौ ग्रमरापुरा । उजळै गो गीन बू दी ममर ग्राथाण । डमर घुळता बास मळैगौ ग्रदोत दीहा, चमरा दुळता जोत भळैगौ चहूग्राण ।

—दुरगादत्त बारहठ

उ०—२ छेकड नै'राळै गावा मे जाणी ई पड्यौ । उतरादै चाल-चल्ले मे रळणौ पड्यौ । —दमदोल

७ फैलना, छितराना ।

उ०—कुजर क्रीडइ रवि रलइ, जात्र न जाइ जेह । [मायव कहइ] मुगि मानिनी, मिय-विहूणा नेह । —मा का प्र

८ उछलकर गिरना ।

उ० घमघम गल बम हरन घाव । रमझम ग्रच्छर भाखर राव । मिळै कर सुळ गळै बरमाळ, चडी पत्र रत्र रळै दइचाळ ।

—मे म

९ लीन होना, मग्न होना ।

१० पडना ।

उ०—नूरी सवि चटकी गई, रलिउ मुताहल-हार । ग्राभरणा ऊतरि पडइ, खाट खमई नही भार । —मा का प्र

११ लगना, स्पर्श होना ।

उ०—इण भाति गोल्या रो चाळो करै छै । ग्याला भी फिरै छै । जठै ग्रतर मै रळिया थका जामा पहरिया छै । माहोमाहि गुलाब छिडकीजै छै । —पता

१२ बरसना, वृष्टि होना ।

उ०—रळियौ जळ सुरराज, धर ग्रबर इक धार सू । करण ग्रभय व्रज काज, गिरि नख धार्‍यौ कान्हडा ।

—रामनाथ कवियौ

१३ नष्ट होना, बरबाद होना ।

१४ चिरना फटना ।

१५ ढलना

उ०—रलीया हे सखी रलिया दिन ने रात । रहता हे सखि रहता हे दिवस बहुजी । —प. च चौ (१४)

१६ देखो 'रळकणौ, रळकबौ' (रू. भे)

उ०—माग जडचा गज मोतिया, कडघा रळंता केस । ताळी हंस दे तीजणी चाळी कामण वेस । —ग्रग्यात

रळणहार, हारौ (हारी), रळणियौ वि. ।

रळिग्रोड़ौ, रळियोड़ौ, रळयोड़ौ —भू का कृ ।

रळीजणौ, रळीजबौ —भाव वा

रळतळ–देखो 'रळतळ' (रू भे)

उ०—खळहळा चलै **रळतळां** खाळ । बीजळा भळा बीमळा बाळ । गूछळा गळा गूथळा गट्टु । निघळी वळा माकळा सट्टु ।

—गु रू ब

रळतळणौ, रळतळबौ–क्रि अ –१ फिसलना, रपटना ।

उ०—**रळतळइ** रत नई मगर कुजर ग्रग्व जेहवा कच्छ ।

—रुक्मणि मगळ

२ फैलना ।

उ०--१ रुधिर धर **रळतळी** बहु नाचट नमथ महावळी । ग्राळ भड ग्रायावळी । - ग्र वचनिका

उ०—२ गिग ग्रगगि तेगि भहिर **रळतळिया** । घगा हाथ ह पडै घगा । ऊधा पत्र वुदवुद जळ ग्राक्रति, तरि चालै जोगिगी नगा । —वेलि

उ० ३ वोट भड कचरिया रायमल कांपिये, जुड़गा मोटा करै 'कुभ' जायौ । **रळतळै** रुधर रणभोम रहियौ नही, ऊपटै नदी जळ माह ग्रायौ । —महारागा रायमल री गीत

३ गिरना पड़ना, धराशायी होना ।

उ०- -पुळिया घगावगा गळिपाळै, **रळतळिया** पैला खळ रोद । ग्रमर्पात वळा पड़ना ग्राम्ही साम्ही धार वक्यौ सीसोद ।

--केसरीसिंह सीसोदिया रौ गीत

रळतळणहार, हारौ (हारी), रळतळणियौ —वि ।

रळतळिग्रोड़ौ, रळतळियोड़ौ, रळतळयोड़ौ भू का कृ ।

रळतळीजणौ, रळतळीजबौ —भाव वा ।

रळत्तळणौ, रळत्तळबौ —रू भे ।

रळतळियोड़ौ–भू का. कृ –१ फिसला हुआ, रपटा हुआ २ फैला हुआ. ३ प्रवाहित हुवा हुआ, बहा हुआ ४ धराशायी हुवा हुआ, गिरा हुआ, पड़ा हुआ ।

(स्त्री० रळतळियोड़ी)

रळतळी–देखो 'रळतळ' (रू भे)

रळत्तळ–स. स्त्री –राठौड़ वीर गोगादे की तलवार का नाम । यह तलवार प्रहार के समय झटका लगने पर लम्बी फैल जाती थी ।

उ०—ग्रखै कव ग्रोपग दीपत एम, जिका भड गोग **रळत्तळ** जेम ।

—पे रू.

क्रि वि.–तीव्र गति से, वेग से ।

रू० भे०—रळतळ, रळतळी, रळथळी ।

रळत्तळणौ, रळत्तळबौ–देखो 'रळतळणौ, रळतळबौ' (रू भे)

उ०—खगा वहि धार हुए बि बि खण्ड, पडै धर हिंदु मळेछ प्रचड । **रळत्तळि** नीर जिही रुहिराळ, खळाहळि जाणि कि भाद्रव खाळ । —वचनिका

रळत्तळणहार, हारौ (हारी), रळत्तळणियौ —वि. ।

रळत्तळिग्रोड़ौ, रळत्तळियोड़ौ, रळत्तळयोड़ौ —भू का कृ

रळत्तळीजणौ, रळत्तळीजबौ —भाव वा.

रळत्तळियोड़ौ–देखो 'रळतळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री रळत्तळियोड़ी)

रळथळी–देखो 'रळतळ' (रू. भे)

उ०--जोपस वाळी जवारिका जैग कीध जवाहर, गोगादे ने **रळथळी** दीधी कर मेहर —(मा म)

—सबळी लालस

रळपट–स स्त्री –१ हंसी, दिल्लगी, मजाक, मखौल ।

२ उद्दण्डता, बदमाशी ।

वि –१ उद्दण्ड, बदमाश ।

२ व्यर्थ, फालतू ।

उ०—पकवान पहमे **रळपट** हसै, फरगट मुख फेकदा है ।

--ऊ का.

३ अविश्वास पात्र ।

४ लम्पट, बद चलन ।

५ आवारा ।

रू० भे०–रुळपट ।

रळमिळ–देखो 'रिळमिळ' (रू. भे.)

उ०- -१ ज्यू पाणी काढै न्यू देवाळो धोरै धोरै बैवनौ क्यारां क्यारां **रळमिळ** जावै । —फुलवाड़ी

उ०—२ कदे न ल्याया भवरजी सूतळीजी, हाजी ढोला । कदे वी बुणी नहीं खाट । कदेय न सूता **रळमिळ** सेज मे जी, ग्रो जी पियाजी । अब घर आग्रौ, थारी प्यारी उडीके महल मे जी । लो गी

उ०—३ सूवटा री ग्रौ भूलगौ मीठा सुर मे धरती री कूख बधावै के म्हारी इच्छा–रागगी नै **रळमिळ** मीठा गीत सुणावै ।

—फुलवाड़ी

उ० ४ हसी हव्या राजाजी की बात पूछगी चावै उग वगत वळै हसी आय जावै । बोली हसी मे **रळमिळ** जावै ।

रळमिळणौ, रळमिळबौ–क्रि. अ.–१ हिलना–मिलना, मिलना–जुलना ।

उ०--चार कूट की बावडी, जी मे भीनल नीर । आपां **रळमिळ** न्हायस्या, म्हारी लाल नणद रा वीर । —लो गी.

२ फैलना फैलकर समाना।

उ०—वै गोळा मूरज रौ रूप किरिया इण री ग्यांनी नौ म्है ई नी जांणू, पण वै धरती माथै गिरिया पैंली पैंली सगळी दुनिया में बाता बणनै रळमिळग्या। —फुलवाड़ी

३ सम्मिलित होना, मिश्रित होना।

उ०—चौकमा मुलाबी डील रा परम वाता ई बादळा री पाणी मोत्या ज्यू जरणी। काळा भज्या में सगळांमना मोती ई मोती रळमिळग्या। —फुलवाड़ी

४ घुल-मिल जाना।

रळमिळणौ, रळमिळबौ —रू भे

रळमिळियोड़ौ—भू का कृ—१ हिला-मिला, मिला-जुला २ फैला हुआ, फैलकर समाया हुआ ३ सम्मिलित हुवा हुआ, मिश्रित हुवा हुआ ४ घुला-मिला हुआ।

(स्त्री रळमिळियोड़ी)

रळरळ—वि —सुन्दर, मनोहर।

उ० रूप झळहळ नित रळरळ, रूप झमाझम प्रबळ पैठळ। प्रबळ थिर नर महत पुरि घळ प्रगट दळ नर सोभ टक पळ।

—र रू

रळरळक रळळळक—म स्त्री—सुन्दरता चमक आभा। पराग।

उ० मळळळत पारागकन भरै, सगराज नदी रळळळक हुयौ प्रलपाळक बाळक रोम प्रजाळक, जोगणि नाळक नेच जगौ।

—मा वर्चनिका

रळवळणौ, रळवळबौ—देखो 'रळमिळणौ, रळमिळबौ' (रू भे)

रळवळियोड़ौ—भू का कृ—देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू भे)

*__रळा__—म स्त्री.—याद।

उ०— आ दूणागे मगा था गो बरस दूजै आवे पाछे आया आवै। दूजे तीजे बरस रळा आवे न्है।

मारवाड़ रा अमराव री वारता

रळाणौ, रळाबौ—क्रि स ['रळणौ' क्रिया का प्रे रू] १ मिलाना।

उ०—मार्थे राळा भवर केमा री चौरमा अड़ता नागी मरगांधिया भवरा पापरी काळो रग भर चिवगाड़ आ केसा म रळाय नतीजा व्हैगा। —फुलवाड़ी

२ मिश्रण करना, एक-मेक करना।

उ०—गुद रै माथै पुजनी विदामा व्हाता मगा मार्ड गजिरा लाड़ मारया, पागा रै माथै कायफल कमरकस काळा गोळा काळी मिरचा रळाय नाड़ बाध्या। फुलवाड़ी

३ आत्मसात करना, समाहित करना, रमाना।

४ लीन करना, मगन करना।

५ घुलाना, घोलना।

उ०—१ बाईजी म्हारा ओ, आयी हो बाइ सा' काळबिये री जान, केसर नौ रळायो जाभा नीर मे। —लो. गी.

उ०—२ दो महीना सू निकलिक करू के म्हारा डील मे आतस घणी, पाव सेर कड़कड़ पाणी मे रळाय नै पीवू तौ की ठडक बापरै। —फुलवाड़ी

६ शोभित करना।

७ फैलाना, छितराना, बिखेरना।

८ प्रवेश करना/कराना, पेठाना, घुमाना।

९ गिराना, पटकना।

१० बरसाना वृष्टि करना।

११ नष्ट या बरबाद करना।

१२ चीरना, फाड़ना।

१३ रगड़ना।

१४ लगाना।

रळाणहार, हारौ (हारी), रळाणियौ — वि।

रळायोड़ौ — भू का कृ।

रळाईजणौ, रळाईजबौ —कर्म वा।

रळावणौ, रळावबौ — रू भे

रळायोड़ौ—भू का कृ—१ मिलाया हुआ २ मिश्रण किया हुआ, एक-मेक किया हुआ ३ आत्मसात किया हुआ, समाहित किया हुआ, रमाया हुआ ४ लीन किया हुआ, मगन किया हुआ ५ घुलाया हुआ, घोला हुआ ६ शोभित किया हुआ ७ फैलाया हुआ, छितराया हुआ, बिखेरा हुआ ८ प्रवेश कराया हुआ, पेठाया हुआ, घुमाया हुआ ९ गिराया हुआ, पटका हुआ १० बरसाया हुआ वृष्टि किया हुआ ११ नष्ट या बरबाद किया हुआ १२ चीरा हुआ फाड़ा हुआ १३ रगड़ा हुआ १४ लगाया हुआ।

(स्त्री रळायोड़ी)

रळावळौ—वि —मिश्रित।

उ० गांव मे सूती रजी री घणी नराजी सू नाड़ हेरर सूदी मिनखां री भर उरदू-फारसी रा अटपटा रळावळा उळटा-सुळटा सबदां सू बात करण'र बोल्यौ —दसदोख

रळावणौ देखो 'रळियामणौ' (रू भे)

उ० गगना मे ओ मारूजी मैंल जो देख्यौ मैंला रा थभ रळावणा जी। —लो गी.

(स्त्री. रळावणी)

रळावणौ, रळावबौ - देखो 'रळाणौ रळाबौ' (रू भे)

उ०—कालिंदर ई पाछा दरसण नी दिया। सेवट हाथ भाटक श्रासू रळावती रळावती घरै आई। —फुलवाडी

रळावणहार, हारौ (हारी), रळावणियौ —वि.

रळावियोड़ौ, रळावियोड़ौ, रळाव्योड़ौ —भू का कृ

रळावीजणौ, रळावीजबौ —कर्म वा.

ळावियोड़ौ—देखो 'रळायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री रळावियोडी)

ळि—देखो 'रळी' (रू भे)

उ०—१ जनक हरखै जानकी राज रळि बहरंग। मुरै वरखा पोहप छवि, नौबत घुरै निहग। —रामरासौ

उ०—२ रुखमणी मनि रळि अगी अमी ढळी, पदम वाचा प्रति नाथ तूठा। —रुखमणी मगळ

लिआमणउ, रलिग्रामणु, रलिआमणौ—देखो 'रळियामणौ' (रू भे)

उ०—१ रागपुरउ रलिआमणउ रे लाल, श्री आदीसर देव मन मोहघउ रे। —स कु.

उ०—२ छद दरिसण रलिग्रामणु आमणु दमणु जाई। जिम मुभ पहुचइ आखडि, आखड़िया न उमाई। —स कु.

ळिमळि—देखो 'रिळमिळ' (रू भे)

उ०—पीया मु परची भयौ, हरीया रळिमळि बेल। मेरै साम सुहाग की, है अजरामर बेल। —अनुभववाणी

ळिमिळणौ, रळिमिळबौ—देखो 'रळमिलणौ, रळमिलबौ' (रू. भे.)

उ०—खोडउ हुनउ डाभिज्यउ, बाध्यउ भूख मरेसि। थे बिहु सज्जण रळिमिल्यउ, हू बिच दुख्व महेसि। —ढो. मा

ळिमिळियोड़ौ—देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री रळिमिळियोडी)

ळिय, रलिय—देखो 'रळी' (रू भे)

उ०—१ बत्तीस बद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नच्चड रलिय। इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मउ गउ (दय) गलिय। —अभयतिलक यति

उ०—२ सहजनि निरुवम रूववरु पचड राजकुमार। तहविह मायडिय रलिय लगि काराविय सिणगार। —प्राचीन फागु-सग्रह

उ०—३ रळियां जायोडा गळिया मे रळिया। —ऊ का.

ळियामणौ, रलियामणौ, रळियावणौ, रलियावणौ—वि. (स्त्री. रळियामणी, रलियामणी)

१ सुन्दर, मनोहर, सुहावना।

उ०—१ सैया सियावर घर आया है, श्रवध नगर रळियामणौ, सुख सपत छाया है। —गी. रा.

उ०—२ रूपाळौ रळियामणौ धोळागिर रौ थान। तर नीभरण भकर तटै, सिखर मेर समान। —दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ राजग्रही नगरी हो अति रलियामणी। 'गुणसिल' नामे बागजिलेसर। —जयवाणी

२ आनन्द दायक, उत्साह वर्धक।

उ०—१ रति अनुकूळ विलास घणा रळियामणा। भीखण दीसै इद्र लिवू हू भामणा। —श्रा. दा

उ०—२ मनन मोल अठाणुअइ, श्रावण पचमी अजुआलइ रे। राम भण्यो रलियामणौ श्री समयसुदर गुण गाइ रे। —स कु

उ०- ३ पना विळकुळी कहै, अबै सुख पावणी। श्रावतां आज को दिन, रळियावणौ। —पना

३ मौज व मस्ती देने वाला।

उ०—राज छोड्यउ रलियामणौ, तुम जाण्यउ अथिर ससार। वयरागे मन वालियु, तुमे लीधउ सयम भार। —स. कु.

४ मोहक, आकर्षक।

उ० - १ मूरति मोहन वेलडी, प्रगटी पुण्य पडूर। रिखभ तणी रलियामणी, प्रणमता सुख पूर। —स. कु

उ०—२ मूरति अति रलियामणी, निरखण चाहै नैण। जेह करावै जातरा, साचा ते हिज सैण। —ध. व ग्र.

५ मधुर, प्रिय।

उ०—१ त्रिकनै हो चोक चचर मरब्बच, साभळि पटहनी घोसणा मउ प्रगट निवारयो हो तेह, वचन सुणी रलियामणा। —वि. कु.

उ०—२ ते नटुइ हो करि सोल सिंगार कि, गीत गायई रलियामणा —स. कु.

६ सुखी।

उ०—सुख प्रामियो सजणा दुख थियौ दुजणा। लोक रळियामणौ निर्यै भामणा। —गु. रू. बं.

७ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—दिन-दिन ओहला पूरता, बोल्या पूरा माम। मुत्त जायौ रलियामणौ, सहुनी पूगी श्राम। —वि. कु.

रू० भे०—रळावणौ, रलिआमणउ, रलिग्रामणु, रलिआमणौ, रळियावणउ, रळियावणिय, रळियावणौ, रळीआमणु, रळीआमणौ, रळीयामण, रळीयामणौ, रळीयावणौ।

रळियाइत, रळियात, रळियायत, रळियायित, रळियारत—स स्त्री—

१ आनन्द, खुशी।

उ०—१ उठी नै साम्ही गई, जोडी दोनूं हाथ । विनय सहित वंदना करी, मन में थई रळियात । —जयवाणी

उ०—२ रमता गवाळिया रळियारत रोवै, धुन में धुन लागी धुन में मन मोवै । —र वा

२ लाड, प्यार ।

वि—१ प्रसन्न, खुश, मुदित ।

उ०—१ राव कल्याणमल्ल अर सरब राजलोक कुंवर दुलहणि देखि घणा रळियाइत हुआ । —द वि

उ०—२ पाणी सुगम कीयो कुंमर, जेह हतो दुल्लभ । रळियाइत सहु को थया, पीधौ परिघल अभ । —वि कु

उ०—३ वहइ राजिमती रळियात थकी, सुभ भाग वडउ माहिला मद मस्ती । —म. कु.

उ०—४ रळियाय राजा थयो रे, साभळि नाम वचन । कुमरी सुखदायक थयो रे, नाम सर्म दीधो मन । —श्रीपाल रास

उ०—५ राज नम हमसू मिळै, हमह मिळै सुख—मान । हजरत रळियायित हुयौ, हमि पूछी कुसळात । —गु. रू ब.

२ उत्साहित । आशान्वित ।

उ०—समाचार सविस्तर वाच्या, पिंगळराय ही गहगह्या । श्रोता तिनु पहचत परधान, रळियात थया चिति परधान ।

—ढो मा

३ आशक्त ।

उ० खंजन नेत्र विसाळ गति, नासिका दीपक लोय । ढोली रळियायत हुवौ, जे धण दीठी जोय । —ढो. मा

रू० भे०—रळियायत, रळीआइत, रळीआईत, रळीआईती, रळीआत, रळिआति, रळीयाइत, रळीयाईत, रळीयाईती, रळीयात रळीयायत रळीयायित, रळीयावत ।

रळियालउ, रळियाळौ, रलियालौ—वि (स्त्री रळियाळी) १ सुन्दर मनोहर ।

उ० बाह बिहु लटकाली, अति अंगे लुब झुबाली हो । रंगी नै रलियालौ हीरणी करि चपक डाली हो । —वि कु.

२ प्रिय, प्यारा ।

उ० दुख महोदधि पाज, भव जल तारण जहाज, आज हो रगइ रे रलियालउ साहिब भेटियइ जी । —वि कु

३ प्रसन्न, खुश, आनन्दित ।

उ० रामत रमता सुर में रमा रळियाळा ।

—केसोदास गाडण

स. पु—ईश्वर, परमेश्वर ।

रलियावणउ, रळियावणिय, रळियावणौ—देखो 'रळियामणौ' (रू भे.)

उ०—१ कान्हउ कुतिपुत्रसउ रमलि करतउ रगे, घण वणराए रलियावणउ पहुतउ गिरिवर स्रिगे । —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ घर घर में थीणा घणा, घर घर घूमै माट । राग रग रळियावणौ, धरपुड साभळ घाट । —बा. दा.

उ०—३ राज कवर रळियावणा, नयणा रा हे धन जीवण जेह के ।

—गी रा

उ० ४ भात भात रा रळियावणा रूडा पखेरू रळिया करता हा ।

—फुलवाडी

(स्त्री रळियावणी)

रळियावत—देखो 'रळियायत' (रू भे)

उ० —रीस करी भावै रळियावत, राज भावै खर चाढ गुलाम । माहरै सदा ताहरी साहिब, रजा सजा सिर ऊपर राम ।

—प्रथ्वीराज राठौड

रळियोडौ—भू का. कृ—१ मिला हुआ. २ सम्मिलित हुवा हुआ ३ मिश्रण हुवा हुआ ४ घुला-मिला हुआ, रमा हुआ. ५ समाया हुआ, आत्मसात हुवा हुआ ६ एकमेक हुवा हुआ, एक हुवा हुआ ७ शोभित हुवा हुआ ८ प्रवेश पाया हुआ, पैठा हुआ, घुसा हुआ ९ फैला हुआ, छितराया हुआ १० उछल कर गिरा हुआ ११ लीन हुवा हुआ, मग्न हुवा हुआ १२ पडा हुआ १३ बरसा हुआ, १४ नष्ट या बरबाद हुवा हुआ १५ चिरा हुआ, फटा हुआ ।

१६ देखो 'रळकियोडो' (रू भे)

(स्त्री रळियोडी)

रळी, रली—स स्त्री [स रति प्रा रइ या रयली] १ इच्छा, कामना, चाह ।

उ०—१ सुरा वज अमीर 'अगजीत' सू, रम सधीर अप्पणा रळी । बाना अथाह जाबा बश्रौ, साह नबाबा साभळी ।

—रा. रू.

उ०—२ वदन केसर चपक कली, प्रतिमा पूजी मन नी रली ।

—म कु.

उ०—३ आपणी रली चउसठी देवेंद्र जन्माभिसेक करइ, मेरु पर्वति मिली सुवरणमइए वस्त्रनी वृस्टि निरतर करइ,......

—व स

२ उत्कंठा ।

उ० १ दादू दरसन की रळी हमको बहुत अपार । क्या जाणू कब ही मिळै, मेरा प्राण अधार । —दादूवाणी

उ०—२ चोली मइ चरणा चीर सखरा, मुखडा मुसवद ए। रली रग स्यु लइ जसोभद्रा, जाणइ जेठ प्रसाद ए।
—स. कु.

३ उमग, उत्साह।

उ०—१ सुखदुख पामै ते सहै हो जी, कौतकिया नो राव। मलपइं मन नी रली तो पिण सुविसेखे वली होजी
—वि. कु.

उ०—२ सुणिज्यइ गाजन नदण मूर महाबली। सही विचारी वात कोइक रिण री रली। —प. च. चौ.

४ उत्साह या उमग पूर्वक किया जाने वाला कार्य।

५ आनन्द, खुशी, हर्ष। (अ. मा., ह ना. मा.)

उ०—१ छतीस राग छाजती, निहाव घाव नोबत्ती। भजै विभाम भैरव, रळी कळी कळी रव। —रा रू.

उ०—२ कोडि वरीस मत्री स्त्री करमचद उत्सव करत रली। समय मुदर गुरू के पद पकज, लीनौ जेम अली। —स कु

उ०—३ रळी रग राग नाना विधि, मुनि, मडळ के छाजै। पति सू प्रीति जीनि गुण दूजा, वेणु गगन मे बाजै।
—ह. पु. वा

उ०—४ कटक थया अगिणत चहु कोदा, सोच हुवौ मोटो मीसोदा। सहस त्रीस दळ देख सपांणं, रळी करै मन जैमिघ राणं
—रा. रू.

उ०—५ धजा तोरण सोहिय धाम धाम। रळी रग वाधाय जै सीत राम। —सू. प्र.

उ०—६ आजे रळी वधामणा, आजे नवला नेह। सखी अम्हीणी गोठ मइ, दूधे वूठा मेह। —ढो. मा.

६ खेल, क्रीडा, राम।

उ०—१ रली रलीउ आविउ मागम माहि, एक दिवस बालापणि जाइ। —वस्तिग

उ०—२ आवौ महेल्या रळी करा हे, पर घर गवण निवारि।
—मीरा

उ०—३ पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कान कवार विहरि गळी व्रज कुज री, मुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —बा. दा.

७ रतिक्रीडा, विलास, भोग।

उ०—१ पदमणि लग-थग पानळी, रळी नणं छक रूप। साय धण कळी गुलाब सम, उघड मीळी अनूप —पनां

उ०—२ दादा रै साईनी ऊमर वाळी रै साथै रळी पूरण रै आणंद री म्हारै ई मन में रै' जाती। —फुलवाडी

उ०—३ थारै राजाजी नं पूछ लेजै के वै व्याव करण मारू त्यार व्है तो म्हनै ई की आट कोनी। नीनर ठाली रळियां रै भरोमै इण गवाड़ी साम्ही मूडो ई करियौ तौ म्हारै पाडुवां नै ओळखौ ई हो।
—फुलवाड़ी

उ०—४ दो दिन री अग रळियां पांच बरसा ताई फोडा घालैला।
—फुलवाड़ी

८ मनोरजन, विनोद, मौज।

९ विहार।

१० ठाट-बाट, वैभव।

रू. भे.—रळि, रळिय, रलिय।

रळीआमण, रळीआमणौ—देखो 'रळियांमणौ' (रू भे.)

उ० —१ मरव गुण आंणनइ वंसि वली भांणनइ, वीर अवतरज्यौ चहूआणनइ ए। वली रळीआमणूं, अरधासन बीरम तणउं, पामिस्यू सोनिगिर नूं बइसणउं ए। —का. दे. प्र.

उ०—२ वनिता रूपे रळीआमणी। —धरमपत्र

(स्त्री रळीआमणी)

रळीआइत, रळीआईत, रळीआईती, रळीआत, रळीआति—देखो 'रळियायत' (रू. भे)

उ०—१ पहीरामणी रै अणावौ, तेड़ो नइ जादव राउ ए। रुक्मणीउ रळीआईत, उलहस अगि न माई रे।
—रुक्मणी मगळ

उ०—२ चाउरि मडी चतुरनइ, राय थयु रळीआति। कइ ब्रह्मा कइ देव गुरु, क्षितिपति मडइ ख्याति। —मा. का. प्र.

रळीमन—वि०—प्रसन्न, खुश।

उ०—कामणीया तणं ताणीयै कसणं, मोहै दूजा तणा मण। 'राजड' राण रहै रळीमन, कसीया जरदाळं कसण।
—जोगीदास कबारीयौ

रळीयांमण, रळीयांमणौ, रलीयांमण, रलीयांमणौ—'देखो' 'रळियामणौ'
(रू. भे.)

उ०—१ फूलै फलै रलीयांमणा, देखाडै छे कुमरी आराम। जल ना कुंड मुहामणा, लेइ नै छे तिहा नाम सुठाम।
—वि. कु.

उ०—२ राजवीया ने साथि, आव्या हो राजकुमार रलीयांमणा। अमरपुरी अवतार, नगर विराजे हो मनुम्य मुहामणा।
—सीपाल राम

(स्त्री रळीयामणी)

रळीयाइत, रळीयाईत, रळीयाईती, रळीयात, रळीयायत, रळीयायित रळीयावत—देखो रळियायत' (रू. भे)

उ० —१ लका जाळि सीत मुधि लायो, रळीयाईती कीधी स्री स्याम। —ह. नां. मा.

उ०—२ पोढउ ए पदबध गणि, हुड-तणइ मनि हीक। रळीयायत थई गीभविम्, राजकुमर रजीक। —मा. कां. प्र.

उ०—३ राजा रळीयावत थउ, दीधउ पच पमाउ। उचित वली

आपिउ घणउ, चूकउ नही काइ चाउ । —मा का. प्र

उ०—४ बेहू जणा **रळीयायत** थया, घणा भव ना पाप ज गया । धरि तेडी नइ दिइ सम्मान, श्रद्धा पूरवक दीधू दान । —नळदवदंती रास

उ०—५ कवर चूडा नू मालम कीयौ । मडोवर मूं राठौडा नाळेर मेलीया छै । इसो कवर चूडो साभळ मन **रळीयावत** हुवौ । वधाई कीजै छै । —राव रिणमल री वात

रळीयावणौ–'देखो रळियामणौ' (रू भे)

(स्त्री रळीयावणी)

रळीरंग–स स्त्री–खुशी व आनन्द के उत्सव ।

उ० इसो कवर चूडो साभळ मन मे रळीयावत हुवौ । वधाई कीजै छै । वाजा वाजै छै । **रळीरग** होवै छै । —राव रिणमल री वात

रू भे रगरळी ।

रळौ–वि (स्त्री रळी) १ कायर ।

२ अशक्त, कमजोर ।

स पु–१ ऊन की एक चाल विशेष ।

२ देखो 'रुळौ' (रू भे)

रवंद–वि १ तीव्र, तेज ।

उ०–उतर आज स उतरउ, पाळउ पडइ **रवंद** । का बासदर सेवियइ, कइ तरुणी कइ सद । —ढो मा

२ कोलाहल युक्त ।

रव–स स्त्री [स] १ आवाज, ध्वनि, स्वर, शब्द । (ह ना मा)

उ०–१ हुरगरिया हरिया हुए भरिया, भरिया ताळ तळायी । दादरिया करिया **रव** दीरघ, भीभरया भरणायी । —ला गी

उ०—२ मिळ आवन तोड कि बोड मही । जमना दळ वेळ समद्र जही । उर माळ भणाभण ऊभरिय, पवणा तुरिय **रव** पाखरिय । —रा रू

उ०—३ छतीस राग छाजती, निहाव घाव नोबती । भजै विभास भैरव, रळी सळी सळी, **रव** । —रा रू

२ गुजार, गान, चहचाहट, कलरव ।

उ०—हाजी रामजी, करे सरोवर सरस, दरस रघुवीर रा जी म्हारा राम । हाजी रामजी, कोयल नै कळहस, सारी सुक **रव** सर जी म्हारा राम । —गी रा

३ शोरगुल, कोलाहल ।

उ०—भड अनड उड **रव** वागि वहिभड । उरड अरहड दुजड ओभड । —गु प्र

४ करुण क्रन्दन, चीख-पुकार ।

उ०—१ दाहा सब होना दैमोनी, स्वाहा सब समसाणं । आहा हव हुयस्यो भरिया उर, हा हा **रव** हिंदवाणं । —ऊ का

उ०—२ भरियौ भादरवौ झाली पड भागौ, लगतां आसू में आसू भड लागौ । छपनै घोगरव आरव **रव** छायौ, सूरज ससि मडळ गरविन गहणायौ । —ऊ. का.

५ गर्जना, नाद ।

उ०—१ धनु भजन रो **रव** घोर घणौ, विचळायौ है मड ब्रह्माड तणौ । —गी. रा.

उ० २ धरती नू प्रथी नै सौ स्याम जु तर व्रक्ष । जळधर मेघ गरज **रव** कीया । आपस मे मिळ गया छै । लपटाय रह्या छै । —वेलि टी.

६ महीन धूलि, रज, गर्द ।

उ०—१ गडि गडि गोळा नाळि, विज खडडै किरि अबर । अगन वाग ऊछळै, धोम धू हा **रव** डम्भर । —गु रू. ब.

उ०—२ देसौत **रवां** धोय हाथ ऊजळा कर विमायता ऊपर विराजमान हुवा छै । —रा. सा स.

७ कण, जर्रा ।

उ०—व्याकुळन भमर **रव** वळन धूळी रवण, 'सूर' री चढै तिण वार 'गजगाह' । —कल्याणदास महडू

रू भे—रउ, रय ।

८ दो लघु गगण के दूसरे भेद का नाम ।

९ एक छोटा कीडा जो पशुओ के शरीर पर चिपक कर रक्त चूसता रहता है ।

१० देखो 'रवि' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ जमना जा गग मिळी, गग जा मिळी समदा । आभा भरिया इद, साख पूरी **रव** चदा । —महाराणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ पग हाथ पडै नम माथ परवै, लग चाव मुरा **रव** दाव लखै । अग एक थकै तडपै, असुरा, सिर चीर नरा अग सेल सरा । —रा रू

रवक–स स्त्री–१ वह स्थान या भूमि जहा वर्षा का पानी एकत्र होने के कारण घास अच्छी होती है ।

२ गुरुड का वृक्ष ।

रवणा–स. स्त्री [स] नदी । (ह ना. मा)

रवजा–देखो 'रविजा' (रू भे) (अ मा.)

रवण–स पु [स] १ ऊट ।

२ कोयल ।

३ फूल ।

४ कासा नामक धातु ।

५ पीतल ।

६ शब्द, ध्वनि, आवाज, बोली ।

उ०—१ हाऊल हमम हसा **रवण**, घरा दमाम भेरी घुरै ।

गजसिंघ लियरा जाळोर गढ, चढियौ हय गय पक्खरै ।
—गु रू ब.

७ धूलि, गर्द ।

उ०—गूदळै व्योम ढकै गरद, रवि लुक्कै धू ग्रा रवण । ग्रालम्म पयाणौ एण पर, कोप तेरा भल्लै कवरा । —रा. रू.

८ विदूषक ।

वि.—१ शब्द या ग्रावाज करने वाला, शब्दायमान ।

२ चिल्लाने वाला, पुकारने वाला ।

३ उष्ण गरम, तपा हुग्रा ।

४ तीक्ष्ण, उग्र ।

५ चचल, चपल ।

रू० भे०—रवन ।

रवणक—स पु [स] ऊट । (डि को)

रवणरेती—स स्त्री.—यमुना के किनारे व गोकुल गाव के ग्राम पास की रेतीली भूमि ।

रवणि—स स्त्री —वनस्पति विशेष ।

उ०—रावरा राग रसाजरगी, रवणी नइ रुद्राख । रुक रुदती रायमलि, रोहड रोहिणी लाग । - मा ग प्र

रवणौ, रवबौ—क्रि. स.—ग्रावाज, करना, बोलना ।

रवत—देखो 'रावत' (रू भे)

रवतांडव—स पु [स रवि+ताण्डव] १ सूर्य का नग्न नृत्य, प्रलय नृत्य ।

उ०—कनकाळ दिलीस काज, वै सावत पक्खरैत वै । रूळयौ देखो राज, रवतांडव ज्यू राजिया । —किरपाराम

२ नृत्य ग्रौर सगीत, नाच—गान ।

रवतांणी—देखो 'रावतारगी' (रू भे.)

उ०—एक रवतांणी एक खतराणी नारि । दोना को ग्रमलराव राखी यक सारि । —शि. व

रवताई—देखो 'रावताई' (रू भे.)

रवताळ, रवताळौ—देखो 'रावताळौ' (रू. भे)

उ०—१ राग नजदीक जो होत रवताळ रिग, पिसरण चौ न लागत दाव पूरौ । —ग्ररजुर्नसिंह चू डावत री गीत

उ० —२ 'रांम' तणौ रिगछोड रढाळा, धावू वधि वाजरग धाराळा । 'सुदर' सुत 'सामत' मिघाळा, 'रिगायर' 'लखमरण' रवताळा । —रा रू

उ०—३ दळा ग्राभ छावै उडै बघूळा गिरदा वाळा, दाव घाव करदा कराळा जोम दीठ । ग्राहेमा छाकिया जडै प्रळै काळ वाळा ग्राव, रवताळा ऊभा भोक खावै ग्राकारीठ ।
—हुकमीचद खिडियौ ।

रवतेस—देखो 'रावतेस' (रू भे)

रवतौ—देखो 'रावत' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—१ पडै वेध कूरम जदे राग छळ 'पीथळौ,' खळा सर बीज जिम वहै खवतौ । जागरग भडा, भड छूट गोळा जठै, रूक भड डडहड रमै रवतौ । —बसराम रावळ

उ०—२ सलहपुर सज बजै मत्र पठी ग्रसटी सगत, खीज चत मामठी बीज खवतौ । यर गढा जठी खग तोल ग्रायौ 'ग्रजन', रुद्र ग्रेकादसी हठी रवतौ । —बद्रीदास खिडियौ

रवताळ—स. पु.—१ घोडा ।

२ घोडे की टाप ।

३ योद्धा, वीर ।

उ०—रवताळा भोक खावै ग्राकारीठ ।
—हुकमीचद खिडियौ

रवद—देखो 'रुद्र' (रू भे)

उ०—१ रगतासुर ग्रागै रवद, भेळा होय भुजाळ । मामद्र मांहै सापरत, नदिया मिळै निराळ । —मा. वचनिका

उ०- २ 'लखो' 'महेस' कहै विष लाखा । रवद ग्रवध बध जिम राखा । —रा रू.

उ०- ३ ग्रासकरन तणौ 'बीठळ' तणौ कहै ग्रम, पात रछपाळ ग्रहिया खडग पाण । राजरौ थापियौ राज न लहै रवद, धणी म्हे थापसा जकौ जोधाण । —बा. दा

उ०--४ रवद 'पिराग' देखि छिब रीधा । डेरा ग्राय गग तटि—दीधा । —सू प्र.

रवदांण—देखो 'रुद्र' (रू भे.)

रवदांराव—स पु —यवन बादशाह ।

रवदाळ—देखो 'रुद्र' (रू. भे)

उ०— उजबक परजळियौ ग्रग ग्रग । रवदाळ कीध चख चोळ रग ।
—सू प्र

रवद्द—देखो 'रुद्र' (रू भे)

उ०—१ रजै 'रतनागिर' देखि रवद्द, निसाग्गा रडै महि वाजित्र नद्द । - वचनिका

उ०—२ पाछै काळी छेडियौ, दिल्ली खूद रवद्द । दूवौ ग्रकब्बर ग्रप्पियौ, दूवौ नगारै सद्द । —रा रू.

उ०—३ चतुरग सेन ग्रसख्या चल्लै, हेमाचळ पव्वत किरि हल्लै । देस दसरगै सेत रवद्दं, किरि ऊळटिया सात समद्द ।
—गु. रू. ब.

उ०--४ सकज्जा ग्रासुर सभ निसभ, रवद्दां नाथ वरै त्रिय रंभ ।
—मा. वचनिका

रवद्दि—देखो 'रुद्र' (रू भे.)

उ०—बजवाडउ कोठी सहर बेव, हालिया हुइय ग्रागी हरेव ।

नामिया ममांगा मील नहि, रलानूर मदि पावर **रवाह** ।
—रा ज री.

रवद्र— देखो 'रौद्र' (रू. भे.)
उ०—बिन्है दळ आहरता बगाळ, **रवद्र** रूप हुए रणताळ ।
दळा पुहि धूज भुवै भ्रममाग, मदरमुत ऊकळियो आराग ।
-गु रू. ब

२ देखो 'रुद्र' (रू भे)

रवन— देखो 'रमण' (रू भे)
उ० रालमा मील भगी **रवन**, सुदर रिए जीनी मवै ।
हिगीयळ भांज आवै दुरम, इम भ्रिम मम आगळि भ्रवै ।
—मा वचनिका

रवनामौ—देखो 'रविनामौ' (रू भे.)
उ० भर कुजर छायै आचरियो, पिड माझी मछळीका पाड ।
मग्न हुवो हिगोळ गुरग हथ, वद लगी **रवनामौ** चाड ।
—माली मादू

रवनि, रवनी—देखो 'रमणी' (रू भे)
रवनौ—देखो 'रवानौ' (रू भे)
रवमंडळ—देखो 'रविमंडळ' (रू भे)
रवमुखी—देखो 'रविमुखी' (रू भे)
उ०—रहहहत कुमम पूरन परागा पारव दळ मिळ जेव जाग ।
रवमुखी दावरी पून पळास, नाफुम्मा परगस आस पास ।
—मयाराम दरजी री बात

रवरबौ—स पु —रोब दाब, दब-दबा, प्रभाव । ज्यू-अकबर गावा मे ताव रो **रवरबौ** है । लोगा ने ताव आवै ।
रवराया—वि स्त्री —पुकारने पर दया करने वाली । दयालु ।
उ०— **रवराया** किहरी परि रीझै, कनीआगी आदेश करीजै ।
देवौ देवी रिधि सिधि दीजौ, किहि कि अम्हा सिरि मया करीजौ ।
—पी ग्र

रवबसौ—देखो 'रविवसी (रू भे)
उ० - सबला राम मवाग गयो सव, भव दुख काढ़ै नीम भव ।
लव लागा सिर राम रमग लव, **रववसौ** इम वहै रव ।
—र रू

रवस—देखो 'रहस्य (रू भे)
उ०—मारकड रिख वागी **रवस**, कही नेम जैनर रहै ।
भगवती भजन मोटो भगति आवै मना ऊमहै ।
—मा वचनिका

रवसुत—देखो 'रविसुत' (रू भे) (अ मा)

रवा—स स्त्री [फा] १ प्राण ।
२ वायु, प्राण वायु ।
वि —१ प्रवाहित ।
२ प्रवाहित ।
३ तीक्ष्ण, धारदार ।
४ देखो 'रवा' (रू भे.)

रवानगी—स स्त्री [फा रवानगी] प्रस्थान करने की क्रिया या भाव, प्रस्थान ।
रवाना—वि [फा रवान] १ जो चल पडा हो, प्रस्थान कर चुका हो ।
२ विदा हुवा हुआ ।
३ भेजा हुआ प्रेषित ।
रवानौ—सं पु [फा रवाना] १ कूच, प्रयाण, प्रस्थान ।
२ वह पत्र जिसमे प्रस्थान करने की इजाजत दी गई हो ।
३ वह कागज जिसमे भेजे जाने वाले माल का ब्यौरा लिखा हो ।
४ किसी वस्तु के साथ भेजी जाने वाली चुंगी आदि की रसीद ।
रू० भे०—रवनौ ।

रवा—वि [फा] १ उचित, वाजिब ।
उ० -हिमत हक हमाव है, रहमाण **रवा** की ।
— केसोदास गाडण

२ इच्छित, वांछित ।
३ जाहिर, प्रगट ।
४ प्रसिद्ध, मशहूर ।
स स्त्री [फा रवाई] १ रौनक, शोभा ।
उ० —तखत **रवा** तइयार रह, नाळकिया हाजरि । बहमि गुरज बरदार, करै अनमाम भयकरि । —सू प्र.
२ परपरा, रूढि, प्रथा ।
३ इच्छा, कामना, मया ।
उ०- तरै अवल हुसैन अरज की रुपीया २,०००००) माहे मेडतो इणा नु दीयो छै, रुपीया ४,०००००) ऊपजता री ठौड छै । पछै पातसाहजी आप राजसिघजी नु फुरमायो कु तो साजा री **रवा** राखो । -नैणसी
४ दया, कृपा ।
उ० —वाह सिपाई उचत पाव बिध, न्याय कनक कर मिसर नखै । गेरव राह ममद पैंली रख, राम **रवा** कर राम रखै ।
—महाराणा हमीरसिंह री गीत
रू० भे०—रवा ।

रवाकातर—स स्त्री —स्वर्णकारो के काम मे आने वाला लोहे का एक उपकरण या औजार, जिससे सोने चादी के तार के एक ही नाप के छोटे छोटे टुकडे काटे जाते हैं ।

रवाकौ—वि —रहने वाला ।
रवाडी—देखो 'रैवाडी' (रू भे)
रवाज—देखो 'रिवाज' (रू भे)
रवाड़ी—देखो 'रैवाड़ी' (रू भे)

उ०—१ सुख भरि वरस बहु बउलीग्रा, करी न सक्यउ प्रासाद रवाडी गयि साभरिउ, मनसिउं धरइ विसाद। —कल्याण

उ०—२ बारे दरवाजे लोहमि पोलि, जिसी रमलि कीजइ रवाडी तिसी एक भली वाडी······। —व. स.

रवादार—वि—जिसमे कण, दाने या रवे पडे हो दानेदार।

रवायत—देखो 'रिग्रायत' (रू. भे.)

उ०—राजा कह्यौ—आ घास नै कोरड री निचिंताई कीधी तो म्हैं थांसू निपट धणी गोर करिस्या, हासल माहै रवायत करम्या। —कहवाट सरवहिया री वात

रवाळ—स. स्त्री—देखो 'रैवाळ' (रू. भे)

रवाळी, रवाळौ—स पु—ग्राभूपणो पर खुदाई या नक्काशी करने का एक लोहे का ग्रौजार, कीला।

रवि—स पु [स.] १ सूर्य, आदित्य। (ना. मा)

उ०—१ पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रभ। थभ चलेवौ सोम रवि, पेखै व्योम ग्रचभ। —रा रू

उ०—२ सफि ग्रग उत्तग ग्रहाम ममा। रवि वाहगा रेवत सोह रमा। —मा. वचनिका

उ०—३ चग्वाडै कूत चग्वना धणी चापडै, रौद घड पछाड ग्रचळ राखी। जीवता-मिभ महाराज वणियौ 'जसौ', समर चा करै रवि चद साखी। —गु. रू ब

२ ग्रग्नि।

रू० भे०—रबि, रवी, रव, रत्री।

३ नायक।

४ जयद्रथ राजा का छोटा भाई।

५ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

६ ठगण के द्वितीय भेद का नाम (ऽ।ऽ) (र. ज प्र)

७ बारह की सख्या। * (डि को)

८ ग्रशोक का वृक्ष।

९ ग्राक।

रविग्रस—स. पु [स. रवि+ग्रश] १ सूर्य का ग्रश।

२ देखो 'रविवस'

उ०—कमधा गुर ऊमम वैण कहे। रविग्रंस ग्रजे धर मीम रहै। —पा. प्र

रविग्रसिय, रविग्रंसी—देखो 'रविवसी'

उ०—कवळ पत लूटण बैण कह्या, रविग्रंसिय ग्रोटैम ग्राय रह्या। —पा प्र.

रविउदै, रविऊगै—स. पु. [सं रवि+उदय] सूर्योदय।

उ०—ग्राया रविऊगै 'गोइद' ऊपरि, ताता लोही रातिसिया। ग्रसि छांड रकेबा कूत ऊपाडै, धाराळा काढै घसिया। —गु रू ब.

रविकर—स. पु. [स] सूर्य की किरण।

रविकांतमणि—स. पु [स.] सूर्यकान्त नामक एक मणि विशेष।

रविकिरण—स. स्त्री. [स.] सूर्य की किरण, प्रकाश।

उ०—गई रविकिरण ग्रहै थई गहमह, रहरह कोइ वह रहै रह। सु जु दूज पुरा नीसरे सूती, निसा पडी वालियौ नह। —वेलि

रविकुळ—स. पु [स.] १ सूर्यकुल।

२ एक क्षत्रियवश।

रविचंचळ—स पु [स. रविचंचल] काशी मे लोलार्क नामक तीर्थ स्थल।

रविचक्र—स पु [स] १ सूर्य मण्डल।

२ सूर्य के रथ का पहिया, चक्र।

३ फलित ज्योतिष के ग्रनुसार मनुष्य-शरीर के ग्राकार का एक चक्र।

४ एक की सख्या। * (डि. को)

रविचक्रतळ रविचक्रतळि—स पु [स. रविचक्र तलम्] पृथ्वी मंडल, भूमडल।

उ०—१ साभियै तिपुर मकर जिसौ, वामण चपि पयाळ वळि। गजसिंघ भीम गोडव्वियौ, तिसौ दीठ रविचक्रतळि। —गु. रू. ब.

उ०—२ उचरड विप्र एरिस वयण, लोग त्रिण्ह जीता तिरी। इसी नही रविचक्रतळि, मह नव खड देख्या फिरी। —प. च. चौ

रविज—स पु [स] १ शनिश्चर।

२ यम।

३ कर्ण।

४ बालि।

५ सुग्रीव।

६ वैवस्वत मनु।

७ ग्रश्विनि कुमार।

रविजकेतु—स पु [स] पुच्छल तारा जिसकी उत्पत्ति सूर्य से मानी गई है।

रविजा—स स्त्री. [स] यमुना नदी। (ग्र. मा)

रू० भे०—रवजा।

रविजात—स स्त्री [स.] सूर्य की किरण।

रविजोग—स. पु [स रवियोग] सूर्य नक्षत्र से चद्र नक्षत्र तक ४/६/९/१०/१३/२० वा नक्षत्र तक बनने वाला योग।

उ०—सिद्ध जोग रविजोग, सुद्ध दिनमांन सहू सिसि। दिसा मूळ थयौ पूठि, वळै जोगणि बांमी दिसि। —गु रू. ब.

वि वि—यह योग सब दोषो का नाश करता है।

रवितनय–स पु [स] १ शनिश्चर।
२ यमराज।
३ कर्ण।
४ बालि।
५ सुग्रीव।
६ वैवस्वत मनु।
७ अश्विनिकुमार।
रू० भे०–रविनगौ।

रवितनया–स स्त्री [स] १ यमुना नदी।
२ सूर्य की कन्या।

रवितनुजा–स स्त्री [स] यमुना नदी।

रवितणौ–देखो 'रवितनय' (रू. भे.)

रविथाव–स पु [फा] पारसियों के अनुसार, मध्यान्ह का समय, जो १२ बजे से ३ बजे तक माना जाता है और इस समय वे दूसरी बार नमाज पढ़ा करते है। (मा म)

रविदिन, रविदिवस–स पु [स] सप्ताह का प्रथम दिन, रविवार, आदित्यवार।

रविनंद, रविनंदन–स पु [स रवि + नंदन] सूर्य का पुत्र।
वि वि–देखो 'रवितनय'
उ०–१ ब्रह्मपर्यंत भवन दसमैं वसागि। जिण तीज भवन **रविनंद** जाणि। —सू प्र.
उ०–२ वग्गेहिउ ज मुहि कहइ तिणि, नामिहि महिनाग। **रविनंदन** नाहि नाम ल्हइ, कहि सनोम सुजाग। —हीराणद सूरि

रविनंदिनी–स स्त्री [स] सूर्य की पुत्री यमुना नदी।
वि वि–देखो 'रवितनया'

रविनाम, रविनामौ–स पु–१ ऐश्वर्य, वैभव।
उ० सकिया मिळ जुध अनेक करै सम। **रविनाम** नरद सम्भ्रद नमो रम। —सू प्र
२ प्रताप, शौर्य, कीर्ति।
रू० भे० रवनामो।

रविपुत्र, रविपूत स पु [स रवि + पुत्र] सूर्य का पुत्र
वि वि–देखो 'रवितनय'
उ०–लगा लगा धरि नगा नदै आगगा महावन। गहक्कत **रविपूत**, धूत गाफळिया धूरत। —सू प्र
रू० भे० रवीपूत।

रविवंसमनि–स पु [स रविवंशमणि] सूर्यवंश का रत्न।
उ०–प्रबल प्रकासै तेज 'मान' **रविवंसमनि**, ताकी त्रास सिंध से जयन देस धरकै। —बा दा

रविमंडळ–स पु [स] १ सूर्य के चारो ओर दिखाई देने वाला मंडला-कार लाल गोला, रविबिंब।
२ सूर्य की परिधि।
उ०–१ एक गया भगवाट, मामि छळ मेल्है कुळ छळ। हेक मुगति माजोन, गया भेदे **रविमंडळ**। —गु. रू. बं.
उ०–२ नही गया, माचै मुवा, **रविमंडळ** रै राह। जूझ मुवा रण मै जिके गत-पचमी गयाह। —बां दा.
उ०–३ बहुधा चकचूरण खुरणोमे चढती, मसलत महिमंडळ नभ मडळ मढती। रेणू **रविमंडळ** रसमी रय रोकी। तन मन प्रज तापन तापत त्रयलोकी। —ऊ का.
रू० भे० – रवमडळ।

रविमणि–स स्त्री [स] सूर्यकांत मणि।

रविमुखी स पु–सूर्यमुखी नामक फूल।
रू० भे०–रवमुखी।

रवियोडौ–भू का कृ–बोला हुआ, आवाज किया हुआ।
(स्त्री. रवियोडी)

रवियौ–स पु [स रवि + रा प्र यौ] सत्ताईस नक्षत्रो मे से कोई एक या प्रत्येक, जिस पर, मास की कुछ अवधि (प्राय १ से १३ या १४ दिन तक) सूर्य स्थित रहता है। सूर्य के प्रभाव मे रहने वाला नक्षत्र।
वि वि - देखो 'नक्षत्र'

रविराई–स पु [स रविराज] सूर्य, रवि।

रविवंस–स पु [स रविवंश] सूर्य वश नामक एक क्षत्रिय वश।
उ०- जग मे वस उग्र गुण जोई। क्रन **रविवंस** समो नह कोई। —रा रू

रविवसी–वि [स रवि–वशी] सूर्यवशी।
रू० भे०–रववसी।

रविवार, रविवासर–स पु [स] प्रत्येक सप्ताह का प्रथम दिन, जो शनिवार के बाद व सोमवार स पहले आता है। (रा. रू.)

रविसक्रांति, रविसक्राति–स स्त्री. [स. रवि सक्राति] सूर्य का एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र पर जाने की अवस्था, सूर्य सक्रमण। (ज्योतिष)

रविस–स स्त्री [फा रविश] १ गति, चाल।
२ शैली, तर्ज।
३ व्यवहार, बर्ताव।
४ चालचलन, आचरण।

रविसारथी–स पु [स रविसारथि] सूर्य रथ का सारथी, अरुण।

रविसुअन, रविसुत–स पु [स रविसुनु, रविसुत] सूर्य का पुत्र।
वि वि–देखो 'रवितनय' (ह ना. मा)
रू० भे०–रवसुत, रवीसुत।

रविसुता–स. स्त्री [स रवि + सुता] सूर्य की पुत्री, यमुना।

उ०—पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ ब्रजनाथ आथ। कान कवार विहरि गळी ब्रज कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —बा दा.

रवींदू—स पु. [सं रवि+इंदु] सूर्य, चन्द्र।

रवी—स स्त्री [देश.] १ गेहू के आटे को थोडे से घी मे भूनकर उसमे गुड का रस डाल कर पकाया हुआ तरल हलुवा या पेय पदार्थ, गुलराब।

२ देखो 'रवि' (रू भे)

उ०—१ छिपै मेघ सोभा इसौ भाळ छाजै। रवी पत दै कुंडळै क्रांति राजै। —रा रू

उ०—२ हालिया गहडा घेर वकी घडा। रज्ज उडै रवी घोमतै धूंधळै। —सू प्र.

रवीपूत—देखो 'रविपुत्र' (रू भे)

रवीसुत—देखो 'रविसुत' (रू भे.)

रवेची—स स्त्री—चारणकुलोत्पन्न एक देवी।

उ०—दुरगरांणी मया तु दुराय, रवेची तु ही नागाणराय। धुमडै ज्यान रै तू ज धाम तैमडै तु ही ज डुगरेच नाम —रामदान लालस

रू० भे०—रवैची।

रवेज—देखो 'रिवाज' (रू भे)

रवेस—स पु [स रवि+ईस] १ सूर्य।

उ०—वामी दिस 'वखतेस', जुध मेडतिया जीमणौ। आभाडा साम्हौ 'अभौ', राजा सहरा रवेस। —रा रू

२ देखो 'रहवास' (रू भे)

उ०—वैसगी तणी इहडी रवेस, पहिरति रजत ग्रहणा प्रवेस। पीतलि सूद्रणि रै सदा पासि, पडिने एम कहिश्रो प्रकासि। —ल पि

रवै—स स्त्री—१ गाय, भैस आदि मादा पशु की ऋतुमति होने की अवस्था।

२ खेत या भूमि की, जोतने के बाद बोवाई योग्य होने की दशा।

रवो—स पु. [स रज, प्रा. रय] १ किसी पदार्थ का छोटा कण, दाना, शक्कर आदि का दाना।

२ घुघुरुओ मे डाला जाने वाला छर्रा।

रस—स पु [स] १ किसी वस्तु का सार, तत्त्व, शोरबा, जूस।

उ०—अमलाणौ अर कादा रो रस घर घर छणरण लागौ। कूंजडा रा भाग खुलिया पण खुलिया। —फुलवाडी

२ खाने की वस्तु का स्वाद, जायका।

३ चस्का, स्वाद, लगाव।

उ०—धूरत दे धोखा बोडा बोखा, चोखा रस चाखदा है। —ऊ का

४ आनन्द, हर्ष, खुशी।

उ०—१ घणौ रस रहियौ बडा बधावा हुआ। —गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ रीझै साभळ राग, भीजै रस नह भेचकै। नैडो आवै नाग, पकडीजै छाबड पडै। —बा. दा.

उ०—३ साथ सगळै नै सिरपाव दै, छोटा-मोटा सह नै याद करि विदा किया। बडो रस रह्यौ। —पलकदरियाव री बात

उ०—४ रितु किहि दिवस सरस राति किहि सरस, किहि रस मध्या सुकवि कहति। बे पख सूघति बिहु मास बे, वसत ताइ मारिखौ वहति। —वेलि।

६ प्रेम, अनुराग, प्रीति।

उ०—१ दुरवेस गयौ पतसाह दिसी, उड सूठिय झूठिय बात इसी। सुगना कसना दळ मान सही, रस बाथ थयौ सिम आथ रही। —रा. रू

उ०—२ नरै कह्यौ, भीवाजी, घरै सिधावै, पिरा इरा जखडा रो खेत दिखावणौ पडसी। नहीं तर थाहरै नै माहरै रस रहेली नही। —जखडा मुखडा भाटी री बात

उ०—३ सु रागा सुरजन रो वडो बेटो मोहिल, तिरा सू सुरजन मया न करै। माहोमाहि रस काइ नहीं। नै मोहिल वडो रजपूत, सु बाप सौ बरगै नही। —नैणसी

उ०—४ आप लूणो जान कर नै बेटै समधडै नू परणावरा नू हालियौ। भली भात सू परणायौ। सगा विहवा बडौ रस रह्यौ। —पीठवै चारण री बात

७ रति क्रीडा, काम-केलि, सभोग।

उ०—१ रमता जगदीसर तणौ रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु मह। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया सू मैं तेम कहै। —वेलि

उ०—२ कुण जाणै रहियौ कठै, रस रमतो उण रात। हारथौ थकियौ आइयौ, कीन्हि कछु न वात। —जलाल बूबना री बात

८ किसी विषय का आनन्द।

९ सुख का अनुभव, सुख।

उ०—१ वरियाम अहमद बाद, अमल जमावियौ। पिथ भूप जिम अगवाण, इळ रस आवियौ। —सू प्र

उ०—२ नको रस भागी नको रहत न्यारा, नकी आप हरता न करता व्योहारा। —अनुभववाणी

१० काम-वासना, कामेच्छा।

११ मौज, मस्ती।

उ०—अबै जलाल साहिब तितका बूबना रै महल जावै। चार

पहर रात रमै मेलै। थगो थगो राग रंग रस होवै।
—जलाल बूबना री बात

१२ उमंग, जोश, उत्साह, मनोवेग।

१३ यौवन काल में अनुराग का हाल वाला संचार।

१४ इन्द्रिय सुख।

१५ मेल–जोल, मेल–मिलाप, ताल–मेल।

उ०—१ सूमा न मजार, हित कर बैठा हेकठा। सब जाणै संसार, रस नह रहसी राजिया। —किरपाराम

उ०—२ सीधी बहु पहिरावणी, राजवीया नै रंग। रस राख्यौ जस संग्रह्यौ, बाध्यौ प्रेम अभंग। —सीपाल राम

उ०–३ नद पातसाहजी राजा वीठळदास रै डेरै उजीर बगसी उजरखा नू मेलिया। अरु खरच नू रुपिया लाख दोय दराया अरु लोदी खानजहा रै गोला रै रस रई नही। —द दा

१६ माधुर्य।

१७ अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियों के वश में रहने की अवस्था या भाव।

१८ इच्छा, भावना, भाव।

उ०—बाजोटा ऊपरि गादी बैठी, राजकुअरि सिंगार रस। इतरै एक आली ले आवी, आनन आगळि आदरस। —वेलि

१९ साहित्य में वह आनन्दात्मक चित्तवृत्ति या अनुभूति जो विभाव, अनुभाव और संचारी से युक्त किसी स्थाई भाव के व्यंजित होने से पैदा होती है।

२० साहित्य में माने जाने वाले दस रसों में से कोई एक या प्रत्येक।

उ०—१ पत्र अक्खर दळ द्राळा जस परिमळ, नव रस तंतु विधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि। - वेलि

उ०—२ अकळ सूमाग सर रजी अवछाइयो, वाजै रस अबागळ प्रबळ वाजा। फौज आगळ गजा बरग धजा फब, राज पथ सुरगा सीस राजा। —सु रू. ब.

उ०—३ हग पर तहवरखान अघायो, विचित्र हुवौ लडता रस वायौ। सिर हिदवाण सगो रीमायो, ओरंग पीठ लगैतीज आयौ। —रा रू.

२१ सुन्दरता, मनोज्ञता, मनोहरता।

२२ तौर, तरीका, ढग।

२३ गुण, विशेषता, महत्व।

२४ शरीरस्थ सप्त धातुओं में से प्रथम धातु।

२५ रक्त, रुधिर।

उ०—कमठ पर भार पर त्रिले रस कचरका सचरका सेस रा हलै माथा। —र रू.

२६ प्राणियों के शरीर से निकलने वाला कोई तरल पदार्थ, पसीना आदि।

२७ कोई तरल पदार्थ, जल, पानी।

उ०—धरती रा कण कण में हरख समायग्यौ। पान पान में रस साचरग्यौ। —फुलवाडी

२८ किसी वनस्पति को कूट–पीट या निचोड कर निकाला जाने वाला जलीय अंश।

२९ शराब, मदिरा, आसव।

३० विष, जहर। (अ मा, ह ना मा)

३१ अमृत।

उ०—१ राम नाम रस वेलडी, जन हरीया सीचत। ऊगै तौ हरि अम मैं, बिळै नही जावत। —अनुभववाणी

उ०—२ मत्र वसीकर मानजै, बाणी रस बरसत। सरसुति बीणा प्रगट सुर, कोयल लाज करत। —अग्यात

३२ वीर्य।

३३ पारा। (डि को)

३४ गोरस।

उ०—गोरस लीजे नदलाल, रस मागो रस लीजै। —मीरां

३५ षट रस।

३६ शिलारस।

३७ हिंगुल।

३८ मोती। (अ मा)

३९ कोई खनिज पदार्थ।

४० धातुओ में फूक कर तैयार किया हुआ भस्म। (वैद्यक)

४१ घी, घृत।

उ०—खापर ओ भैरव खापर भराव लापसी। जे ऊपर ओ भैरव ऊपर रस री जी धार। —लो गी

४२ वह औषधि जो पारे या किसी धातु के योग से बनी हो। (वैद्यक)

४३ उत्तम खाद्य पदार्थ।

उ० -धान पाणी रस चोरिया, ते भेटइ सिध क्षेत्री जी। सेत्रुज तलहटी माथ नड, पहिला भइ मुध चितो जी। —स कु.

४४ सूदा, मिगी।

४५ वनस्पती।

उ०—गो खीर स्रवति रस धरा उदगिरति, सर पोडशिए थई सुस्त्री। बळी मरद स्रगलोग वासित, पितरे ही अन लोक प्री। —वेलि

४६ वृक्षों के तने या शरीर से निकलने वाला तरल पदार्थ, गूद आदि।

४७ घोडे, ऊट या हाथियो का एक रोग विशेष, जिससे उनके पैरों

से जहरीला पानी निकलने लग जाता है। (शा हो)
क्रि. प्र—उतरणी।
४८ मिश्री, शक्कर, गुड आदि का मीठा पानी।
४९ स्वादिष्ट पदार्थ।
५० चटनी, ममाला।
५१ गुण, तत्व, रूप, विशेषता।
५२ उक्त दृष्टि से कोई वर्ग, विभाग, तरह, भांति।
ज्यूं—एकरस, समरस।
५३ जीत, विजय।
५४ हार, पराजय

उ०—१ गड गोळा री दूजे तीजे महीने हुई, फौजा दोनूं बडी जबरी सो रस ग्यावै नही।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ वडा अडणायत रजपूत घणा भाई। धरती मारी मे धाक। एकण पासै भाटिया री राज। एकण पासै जोह्या री राज। एकण पासै सीहवाण, खीचिया रा राज। एकण पासै पाहुवा री राज। भटनेर मे पातसाही थाणी। इतरा रै बीच खरळ रहै, राजस करै। सो मारा नू रस ख्वाय राखियो। तै सू पडोसी मारा मको राखे। —कु वरसी साखला री वारता

५५ आनन्द स्वरूप ब्रह्म। (उप निषद्)
५६ खेत या भूमि की जुताई के बाद बोवाई के योग्य होने वाली दशा।
५७ फसल की परिपक्वावस्था।

उ०—'पाहड' हरा अवर कुण पूगै, 'जगन' हरा हामल री जोड। रस आई जाणी रजवाडा, रजवट री खेती राठौड।
—लालसिंह राठौड री गीत

५८ पृथ्वी, धरती। (डिं को)
५९ वश, काबू, नियन्त्रण।

उ०—१ सु कुंवर 'जोगो' भोळौसो ठाकुर हुतौ। सु जोगा सू धरती रस नह आई, नै धरती माहै मोहिला री दखल हुवण लागौ
—नैणसी

उ०—२ 'जेसै' जीवनां धरती पातसाह रै रस पडी नही।
—नैणसी

६० कायस्थो की एक प्रथा के अनुसार, मृतक के पीछे बारह दिनों तक सगे सम्बन्धियों को खिलाया जाने वाला भोजन जिसमे लपसी, रोटी तथा चने या आवले का साग होता है। (मा. म)
६१ डिंगल का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक विषम पद मे १६ व सम पद मे १२ मात्राए होती हैं।
६२ छंद शास्त्र मे एक लघु व एक गुरु का नाम। (र. ज. प्र)
६३ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम। (डिं को)
६४ रगण या सगण की संज्ञा।
६५ छः की संख्या। * (डिं. को.)
६६ नौ की संख्या। * (डिं को.)
वि—१ कामयाब, उपयोगी।

उ०—'बाघ' कन्है सुरजजी री कही घोडा री बात थी तीसू चाहै जिसौ घोडी हुवौ पण 'बाघ' कनै रस हुइ जावतौ।
—ठाकुर जेतसी री वारता

२ अनुकूल, माफिक।

उ०—गधा रै तौ रस बैठोडी बाग ही। मज्झ नदी पांणी मे बैठो। —फुलवाडी

३ नौ।
४ छः।
क्रि वि—१ वश मे, कब्जे मे, अधीन।

उ० -१ सुण 'सूरसाह' दळबळ सझै, राजा पौरस रूप रा। रस करै धरा गुजरात री, आयौ दकखण ऊपरा। —सू. प्र.

उ०—२ महर रा लोग कहयो—पातसाह रौ बडो परताप, नबाब री बडो भाग, आज 'जगो' 'रतनौ' मारता पातसाहजी रै गुजरात खरी रस पडी। —नैणसी

२ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त। (ह ना मा.)
रू० भे०—रसा, रसि, रस्स।
अल्पा—रसडो।

रसउगाळ—स पु.—वह पशु जिसके मुंह मे जुगाली करते समय रस नीचे गिरता हो।
रू० भे०—रस अोगाळ, रसुगाळ, रसूगाळ।

रसउत्तम—स पु [स उत्तम+रस] दूध। (डिं को.)
रसउदभव स. पु [स रसउद्भव] मोती। (ह. ना. मा.)
रसउल्लाला—स. पु.—२८ मात्रा का छंद विशेष जिसमे १५ व १३ पर यति होती है।
रसओगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू भे)
रसक—स पु. [स] १ फिटकडी।
२ देखो 'रसिक' (रू भे.)

उ०—१ रत ज्यूं दत जाचक, रसक जाचै वे कर जोड। ननौ भणै नव नार ज्यूं, मूढ कृपण मुख मोड। —बा. दा.

उ०—२ कही आज हू पतरसै दिन हरियाळी तीज रौ हंगाम है, जिण मे राज जिसा रसक रिझवारा रौ ही काम है।
—र. हमीर

उ०—३ देव पितर इण मूं डरै रसक तरै किण रीत। हेम रजत पातर हरै, पातर करै पलीत। —बा. दा.

रसकपूर—स. पु [स रसकर्पूर] शुद्ध पारा, फिटकरी, सेंधानमक व कसीस के योग से बनने वाली एक रसौषधि, जो रक्त विकार,

कुष्ठ, उपदश आदि रोगों में काम आती है। (अ मा)

रसकरण, रसकरम्म—स पु [स रसकर्म] पारे की सहायता से रसौषधि तैयार करने की एक प्रक्रिया। (वैद्यक)

रसकळ—स पु.—नौ मात्रा का एक मात्रिक छन्द जिसके अन्त में गुरु होता है।

रसकस—स स्त्री—१ स्वाभाविक स्थिति।

उ०—उन्हाळा रै लागतै दिना बासी रा ठाव में खाटी छाछ कचवर्ण अर उणरै उपू आदळ री मन तिणी उणटियो के पाछो रसकस बैठी ई नीं। —फुलवाड़ी

२ सार तत्त्व।

उ०—१ रसकस नी रसिया ने लियो अब बयू भूरै गिवार। —अग्यात

उ० २ रसकस दिवसो बळै, मह होन्या रै हेट। —फुलवाड़ी

३ आनन्द, मौज।

उ० काची केरी घर पकी, बाग पकी है दाख। पिय रसकस दिन चार को आस सकै तो आख। —अग्यात

रसकार—स पु [स रस+कार] शराब बनाने वाला।

उ०—मारवकार, मैत्रकार मृदकार उद्दीमकार ध्वनिकार रूपकार कस्मीरकार रसकार श्रीरकार सग्यकार, सम्यकार विभूसणकार पुनार अस्वसिक्षाकार। —व स

रसकुंड—स पु [स] अमृत का कुण्ड।

उ० राजा तागरी नू जगाय रसकुंड बतायो। सिंघासण बतीसी

रसकुळणी—स स्त्री—घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के शरीर पर बड़ी ग्रंथी हो और उसमें से खून बहे। (सा हो)

रसकूपका, रसकूपिका—स स्त्री [स रस कूपिका] योनि, भग।

उ० जिसड़ी रसकूपका जिसड़ी ही नाभ। आ ओपमा सरीखी रंग से होनी न लाभ। —र हमीर

रसकेळि, रसकेळी स स्त्री [स रस+केलि] १ रति-क्रीड़ा, सभोग।

२ दिल्लगी, हंसी मजाक।

रसकेसर, रसकेसरी—स स्त्री [स रस+केसर] १ कपूर।

२ पारा, गन्धक, लौंग आदि के योग से तैयार की जाने वाली एक औषधि। (वैद्यक)

रसग, रसगना रसगिना—स स्त्री [स रसज्ञा] जिह्वा, जीभ। (अ मा, ह ना मा)

रसगाथ, रसगाथा—स स्त्री—रसयुक्त गाथा, रसीली गाथा।

उ०—सा मत प्रमाण कवि मझ कहै, सुकवि बाण प्रमाण सुण। रसगाथ गीत पिगळ रचै, सहर कहै रघुनाथ गुण। —र रू

रसगुलियौ, रसगुल्लौ—स. पु—गुलाब जामुन के समान गोल और चासनी में पगी एक मिठाई जो दूध की बनती है।

उ०—मिसरी मोतीपाक, भुरट री इतरी खोडी। रसगुलियां रै रूप, मधुर है, होड़ाहोड़ी। —दमदेव

रसग्य—वि. [स रसज्ञ] १ काव्य के रस का ज्ञाता, काव्य मर्मज्ञ।

२ जो रस का ज्ञाता हो, रस का जानने वाला।

३ किसी विषय का पडित।

४ पारद के योग से रसायनिक दवाइयां बनाने वाला।

स पु—१ समालोचक।

२ रसायनी।

३ कवि।

४ वैद्य।

रसग्यता—स. स्त्री [स रसज्ञता] १ रसज्ञ होने की अवस्था, भाव।

२ पडिताई।

रसग्या—स स्त्री [स रसज्ञा] १ जीभ, जिव्हा।

२ गगा।

रसग्रथ—स पु [स रस+ग्रन्थ] १ शृगार रस का ग्रन्थ या काव्य।

उ०—कुमम तणा सर पाच कर, जग जिण लीधौ जीत। निण री सुमिरण कर, रस ग्रथां री रीत। —र हमीर

२ वह ग्रथ जिसमें साहित्यिक रसों का विवेचन किया गया हो।

रसघण—स स्त्री [स घनरस] इन्द्र की माया। (अ मा)

रसघन स पु श्रीकृष्णचद्र।

वि०—१ स्वादिष्ट।

२ रसदार, रसवाला।

रसड़ौ—१ देखो रस' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ मारवण तणा ए ओलबा जाय ढोलाजी ने कहजे रे, थारी मारवण पाकी बोर जिऊ। ढोला रसड़ौ चाखण घर आव, करहला धीमा चालौ राज। —लो गी

उ० २ मारवण तणा ए ओलबा जाय ढोला जी ने कहीजे रे, थारी मारवण पाकी आबा जियू। ढोला रसड़ौ घांटण घर आव। —लो गी

२ देखो 'रसौ' (रू. भे)

रसचारी—वि—रसज, रसों का ज्ञाता।

उ० —मन सीखै मत्रवी, राग सीखै रसचारी। सीखै ध्रम कुळ सकळ, रीत सीखै छत्रधारी। —सू प्र

रसजांणण—स स्त्री [स. रसज्ञा] १ स्वाद या रस का अनुभव करने वाली इन्द्रिय।

२ जिव्हा। (डि को)

वि—रसज्ञ।

रसण—स पु—१ सूर्य, भानु। (ना डि. को.)

२ देखो 'रसना' (रू भे) (अ. मा)

उ० - १ रसण तिणाए करिस इम राघव। भरौ नभ, गुण तारण

दधि भव। —ह र

उ०—२ चवना रांम मुखांण गयौ चव, भव दुख काढे कीध भव। लव लागा फिर राम रसण लव, रववमी इम वहै रव।

—र. रू.

उ०—३ राखौ आगें रसण रें, राघव नाम रसाळ। मुख माफळ आगो मती, गिरण अवक ज्यूं गाळ। —बा. दा.

उ०—४ मग सागर तजि मुद्ध भंमर कुगा बेडी घल्लै। अहि कसणा ओटवे कमरण रसण कर फल्लै। —रा रू.

रसणांण, रसणा—स स्त्री [स रश्मि] १ किरण।

उ०—इसी भांति मामान करता दिन घडी एक पाछलो आय रह्यौ। सूरज रसणां माहे जाय पोनौ।

—जैनसी ऊदावत री बात

२ पृथ्वी।

३ क्षितिज।

४ देखो 'रसना' (रू भे) (डि को)

उ०—१ जालम तखत कचराग जाग, पधरा पावडी निज पाग। राजा राम री रसणांण, आलम अदल वरनी आग।

—र रू

उ०—२ रसणा राम रट राम रट राम रट। --र ज. प्र

उ०—३ बैरण रसणा वस ममगा तनताई। आभा आगरा री अन मागरा आई। --ऊ का.

उ०— ४ आतम ब्रह्म मडा एक अखटा, विरा रसणा गावदा है।

--अनुभववाणी

रसणि—देखो 'रसना' (रू भे)

उ०—उप्रकार अनाहत अक्खर, सिद्धि वृद्धि दे सारद सुगेसर। मडळीका मोटा कुळि मउडा, रसणि सवागि कीनि राठउडा।

—रा ज मी

रसणौ, रसबौ—क्रि अ. [स रसन] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ का धीरे धीरे बहना, रसना।

२ टपकना, चूना।

३ रसमय होना, रसीजना, रस या स्वाद जमना।

उ०—बगाळै ए बोर, रसै ना सुरवर जेडा। खाटा बडळ निकाम गिटै ना सूर गदेडा। —दमदेव

४ वश मे होना, काबू मे होना।

५ आशक्त होना, अनुरक्त होना।

६ प्रसन्न होना, खुश होना।

क्रि. स.—७ स्वाद लेना, रस लेना, रसास्वादन करना।

८ चीखना, चिल्लाना।

उ०—बधन देखी समि अग सूकर मोक रसंत। पूछइ प्रभु आधोरण तोरण बारि पहूत। —जयशेखर सूरि

९ दहाडना, गर्जना।

१० शोरगुल करना, बोलना।

११ ध्वनि करना।

रसणहार, हारौ (हारी), रसणियौ —वि।

रसिश्रोडौ, रसियोडौ, रस्योडौ —भू. का कृ।

रसीजणौ, रसीजबौ —भाव वा./कर्म वा.।

रसत—सं. पु [स रसित] १ शब्द, ध्वनि, आवाज।

२ निर्घोष, गर्जन।

उ०—बादळ मसत बयड, रसत मादळ घहरावै। इद्र धनुस आकार, फील झडा फहरावै। —मे. म.

[देशज] ३ एक प्रकार का सरकारी कर। (मा प वि)

४ देखो 'रसद' (रू भे.)

उ०—१ बधियौ अकबर बैर, रसत गैर रोकी रिपू। कद मूळ फळ कैर, पावै राण प्रतापसी'। —दुरसौ आढौ

उ०- २ मगरै 'ऊदा' हरा महाबळ, बीटे खळ लू बिया बहूबळ। जवना बीन चह दिस जावै, ऊठ घटारा रसत नह आवै।

—रा. रू.

रसतन्मात्रा—स स्त्री. [स] साख्य के अनुसार पाच तन्मात्राओ या महत्तत्वो मे से चौथे तत्व—जल की तन्मात्रा।

रसतरग—स. पु—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०— अतग रित अग करग नादग। रसतरंग बह तरग रगरग।

—सू प्र.

स स्त्री —२ रस की लहर, हिल्लोर।

रसतळ, रसतलि—देखो 'रसातळ' (रू भे) (डि ना मा.)

रसता—स पु -दुकानो पर लगने वाला टैक्स।

उ०— कमधा चाळो मत करो, करो उजारो आय। राजा खाण्यो भोगवौ, रसता चौथ सवाय। रा. रू

रसतारव—स पु —मेघ गर्जन के समान शब्द।

उ०—गढ जगम जग समागम का, जुलमी अनिकाय धका जमका, मुघटा घट घाट घटा सरसै, रसतारव डाग पटा वरसै। —मे स.

रसतौ, रसत्तौ—देखो 'रास्तौ' (रू भे)

उ०—१ जमलो दिल री लालची, मन मे फिरै दलाल। धणी बसत बेचै नही, रसतौ पकड जमाल। —जमाल

उ०—२ एक चित्त ऊजळा चळै सुभ नीत रसत्तै। एक बून छळवान वहै कोळाहल मत्तै। —रा. रू

रसत्याग—स पु [स.] स्वादिष्ट पदार्थो को त्याग करने का व्रत।

(जैन)

रसद—स स्त्री. [अ] १ कच्चा अनाज जो पकाकर खाने के लिये हो, खाने का अनाज।

२ खाद्य पदार्थ, खाद्य सामग्री।
३ सैनिकों के प्रवास काल में साथ रहने वाली खाद्य सामग्री।
४ अंश, हिस्सा, भाग।
५ वह अंश या भाग जो बंटवारे के अनुसार मिला हो।
स. पु.—६ चिकित्सक।
७ मध्ययुगीन एक गुप्तचर जो किसी को विषादि खिलाता था।
वि.—१ रसदायक, मजेदार, स्वादिष्ट।
२ ग्रानन्द दायक, हर्षप्रद।
रू० भे०—रसन, रस्न।

रसदायक, रसदायिनी, रसदायी—वि.—१ ग्रानन्ददायक, ग्रानन्ददायी, रमणीय।
उ०— भाषा संस्कृत प्राकृत भणता, मूक भारती न मरम। **रसदायिनी** सु वरी रमता, सेज ग्रनरिख भूमि सम। —वेलि
२ रसदार।
३ स्वादिष्ट।

रसदार—वि.—१ जिसमें रस हो, रस से परिपूर्ण।
२ स्वादिष्ट।
३ रमणीय।

रसधातु—स पु. [स.] १ पारद, पारा।
२ शरीरस्थ सप्त धातुग्रो में से प्रथम धातु।

रसधेनु—स. स्त्री [स] गुड़ ग्रादि से बनी वह गाय जो दान की जाय। (पौराणिक)

रसन, रसना—स स्त्री. [स रशना, रसना] १ जिव्हा. जीभ। (डि. को., ह ना. मा.)
उ० १ नित 'किसन' किव रट नाम निरभै, **रसन** स्री रघुराम। र ज प्र.
उ० २ ग्राप नाम टळ ऊपरा, **रसना** राधव नाम। रूडी विधसू राखियौ, पुरग्या जका प्रणाम। बा दा
उ०— ३ देख तमासा सुण्य मै, नेन सुरति का खोलि। जनहरीया **रसना** विना वचन ग्रवदी बोलि। —ग्रनुभववाणी
२ वाणी, ग्रावाज।
उ०—उपजावै ग्रनुराग, कायल मन हरखत करै। कड़वौ लागै काग, **रसना** रा गुण राजिया। किरपाराम खिड़ियौ
३ करधनी, मेखला, किंकिणी। (ग्र मा.)
उ०—भर स्रोणित पीठि विभाग नयौ, कटिकौ विन लूटि नितव लयौ। रुचि रूप जराव जरी **रसना**, मुकता हिम नीलम हीर पना। —ला. रा
४ चन्द्रहार, ग्राभूषण। (व स)
५ कमर बंद, कमर पेटी।
६ रस्सी, डोरी।
७ रास, लगाम।
८ हठयोग के ग्रनुसार पिंगला नाड़ी।
६ बलगम, कफ। (ग्रमृत)
१० प्रथम गुरु के गणगण का नाम। (र ज प्र)
वि—रक्ताभ, लाल। ● (डि. को)
रू० भे०—रसण, रसणाण, रसणा, रसणि, रस्सण।

रसनाग्रह—स. पु [स रसना+गृह] मुख, मुंह। (ग्र. मा, ह ना. मा.)

रसनालह, रसनालट, रसनालीह—स पु. [स रसनालिह] श्वान, कुत्ता। (ह. ना. मा.)

रसनेन्द्रिय—स स्त्री [स. रसना+इन्द्रिय] जिव्हा, जीभ।

रसनोपमा—स. स्त्री. [स] एक प्रकार का उपमा ग्रलकार जिसमे उपमाग्रो की शृंखला बधी होती है।

रसन्न—देखो 'रसना' (रू. भे)
उ०—ऊ करसी चित सोच ग्रमग्रह, सास उसास संभार **रसंग्रह**। कीरत ग्रौवर भाव 'किसग्रह', राख रिदे रघुराज। —र ज प्र.

रसपति—स पु [स.] १ चन्द्रमा, शशि।
२ शृंगार रस।

रसपरपटी—स स्त्री. [स रसपर्पटी] पारे को शोध कर बनायी जाने वाली एक रसौषधि। (वैद्यक)

रसपरिच्छाग, रसपरित्याग—स पु. [स रस परित्याग] एक व्रत जिसमे रस पदार्थों का परित्याग कर दिया जाता है। (जैन)

रसपूर—वि—१ वीर रस पूर्ण।
उ०—सर्भे 'सिवडापति' दाखण सूर। पिरोहित 'केहरियौ' **रसपूर**। —सू प्र
वि—२ रस से परिपूर्ण।

रसपोटळी—देखो 'रसपोटी' (ग्रल्पा, रू भे.)

रसपोटी—स स्त्री.—१ घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के पिछले पैरों में कठोर ग्रंथियां हो जाती है। (शा. हो.)
२ हाथी का एक रोग जिसमे हाथी के शरीर पर पोटली सी हो जाती है।
ग्रल्पा, रसपोटळी।

रसबत्ती—स पु—पुराने जमाने की तोप व बन्दूक चलाने का एक पलीता।

रसबाय—स पु—हाथियो का एक रोग, जिसमे हाथी के पेट मे वायु बढ जाती है ग्रौर हाथी बहुत कष्ट पाता है।

रसभरी—स स्त्री [ग्र रैस्पबेरी] १ लाल-पीला एक स्वादिष्ट फल।
२ उक्त फल का बना पेय पदार्थ।
३ रस से परिपूर्ण एक मिठाई। वह मिठाई जिसमे रस भरा हुग्रा हो।

रसमाव–स. पु.–हाथियों का एक रोग जिसमे हाथी के पैर मे सूजन आ जाती है, आखे पीली पड जाती है, रग पीला पड जाता है और वह आराम मे सो नही सकता ।

रसमदूर–स. पु [स] गधक मदूर व हड के योग मे बनाई जाने वाली एक रसौषधि ।

रसमंत्री–स. पु.–सलाहकार मत्री, सधि कराने वाले मत्री ।
उ०—राजरूप कानूगो लाग । **रसमंत्री** मिळिया राजा रा ।
—रा. रू.

रसम–स स्त्री [अ रस्म] १ परपरा, परिपाटी, नियम, प्रथा, रूढि ।
उ०—आदू तिवार मे सुगन, श्रो देख अमल बिन दोघडा । श्रा **रसम** फसाई अमलिया, तार न मोर्च टोघडा । —ऊ. का
२ प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाने वाला धन, नेग, दस्तूर ।
३ कर, लगान ।
४ वेतन, तनख्वाह ।
५ सस्कार ।
६ देखो 'रश्मि' (रू भे) (अ मा)
उ०—१ वन सघन लमन मनु घन वमाल, सवरै नाहि रवि **रसम** राम । —मयाराम दरजी री वात
उ०—२ दह वळा तोप लागी दराण, रूप काळ डाचा रवी । रवि प्रळै काज जागी **रसम**, ज्वाळ भाळ ज्वाळा मुखी ।
—सू प्र
रू० भे०–रस्सम्म, रस्म, रस्सम ।

रसमय–वि –१ रस मे परिपूर्ण, रस युक्त ।
उ०—मिळि अब गाव प्रमाण **रसमय** श्रमिनि मजुर अजुरे । रसहीन अनि तर सरब रेगा गीत छळ कुनि मचरे । —रा रू
२ मधुर, मीठा ।
उ०—कोई कुकवी जीभ सू, काढे **रसमय** वाग । कचरा काढे काढणी, सो लोहा री खाग । —बा दा
स पु–मकरद । (अ. मा.)

रसमांण–स. पु. [स रश्मि] १ सूर्य का प्रकाश, तेज ।
उ०—असौ तेज अप्रमाण 'जोदाण' पत आपरौ, लीक नह राग सुरताण लागै । मगज चममाण ग्रह पाग आदम कमण, भाग **रसमांण** लग आण भागै । —निलोरूमी बारहठ
२ सूर्य की किरण, रश्मि ।

रसमाता–स. स्त्री. [स.] जिव्हा, जीभ । (डि. को)

रसमि, रसमी–देखो 'रश्मि' (रू भे.) (ह ना. मा)
उ०—ऊपर सरद सुखद रिंत आई, सुख धर नै पत उदत सवाई । सरवर अचळ निरमळ जळ सोहै, सब पूरत विधु **रसमि** विमोहै । —रा. रू

रससंत्री–सं. स्त्री [स] स्वाद मे वृद्धि करने वाले दो विभिन्न रसो का मेल, मिलान ।

रसम्म–१ देखो 'रसम' (रू. भे.)
२ देखो 'रश्मि' (रू. भे)
उ०—१ दइकाळ करग तरेस सी गरीम दल । सूर प्रळै **रसम्मां** सरोस सुधासार । —र. रू.
उ० २ रोसाळ मिळै ग्रीखम **रसम्म** । चिता विडाळ नाहर चसम्म । —वि. स.

रसयौ–स पु–रस मे उत्पन्न होने वाला कीडा । कीटाणु ।

रसरंग–स पु–१ राग-रग आनन्द, उत्साह, खुशी ।
२ तीन यगण व अन्त मे लघु मात्रा का एक छद । (ल. पि)

रसरसाटि–स स्त्री –आवाज या ध्वनि विशेष ।
उ०–असल्य साहणि वाजते हूते समुद्र सलिल सलसल्या, धार धमधमी, धाधरयाल वाजी, रथीक राउत तणी **रसरसाटि** रोहणीरिंखिंग रमारण्या । —व. स.

रसराज–स पु [स] १ पारद, पारा ।
२ पारे, ताम्र भस्म और गधक के योग मे बनी एक रसौषध । (वैद्यक)
३ रसाजन, रसौत ।
४ साहित्य मे शृगार रस ।
५ रतिफल ।
उ०—धुरै सुहागी गाज सदरा नाळ धमकै, कळप तरा **रसराज** पियना दाम दमकै । —मेघ

रसरी–स स्त्री [स रसना, प्रा रस्सणा] डोरी, रस्सी ।

रसळ–स स्त्री [देशज] छत पर चूना जमाने से पूर्व सुरड जमाने की क्रिया ।

रसलीण, रसलीन–स पु–कवि । (अ मा)
वि –१ रस, प्रेम, आनन्द मे लीन रहने वाला, मग्न रहने वाला ।
२ कामी, विलासी ।

रसलोभी, रसलोलुप्र, रसलोलुप–वि [स रस–लोलुप] रसका लोभी, रसिक, कामी ।
उ०—लीयै नमु अग वाम **रसलोभी**, रेवा जळि कृत सौच रति । दखिणानिळ आवतौ उतर दिसि, सापराध पति जिम सरति ।
—वेलि
स पु–भ्रमर, भवरा ।

रसवंछक–वि –रस का इच्छुक ।
उ०– विधि पाठक सुक सारस **रसवंछक** । कोविद खजरीट गतिकार प्रगलभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार ।
—वेलि

रसवंत, रसवत–वि [स रसवत्] (स्त्री रसवती) १ जिसमे रस हो, रसपूर्ण ।

२ स्वादिष्ट, जायकेदार।
३ भीगा हुआ, नम, तर।
४ मनोहर, सुन्दर, मनोज्ञ।
५ भाव पूर्ण।
६ प्रीति पूर्ण, प्रेम मय।
७ प्रेमी, रसिक।
८ रसज्ञ।
९ दिलचस्प, आकर्षक।

रसवतमन–स पु सुन्दर। (अ मा.)

रसवति, रसवती–स स्त्री [स] १ रसोई घर, पाकशाला।

उ०—अहमारी **रसवती** वरणवू, परिण कमी एक छि जे **रसवती** माहरइ गमरइ, दवाम पुरीस्व, ऊगति मालि, प्रमस्त कालि, वाम्ह मस्य निपाया, एवंवरणा पहूता। व स

२ खाद्य सामग्री, भोजन।

उ० १ नउ वनि कार्मुक जाइ पन्हह पंडव कुगति सउ। मन्नह समाइ उगाइ अरजुनु आगाइ **रसवती** य। सालिभद्र सूरी

उ० –२ प्रगति रतन थी सिद्धि हुवै, ते मुरिग दीन दयालु सी। नवली नवली **रसवती,** श्रावक नै वलि दाल सी। -वि. कु

३ शाक, सब्जी।

उ० १ नह विना गी प्रीतडी, कठ बिना स्यउ गान। लूग विना गी **रसवती,** प्रतिमा विना स्यउ ध्यान। वि कु.

उ० - २ रातन भगति भोजन तरणी रे, सहस्र कराई सभ। रूडी व्यजन **रसवती** रे, आरोगरण आतिम काज रे।

प च. चौ

उ० ३ जिम लवरण हीरग **रसवती,** व्याकररग रहित सरस्वती, गन्धरहित चदन, घ्रत रहित भोजन, गाढ रहित पकवान, मान रहित दान, छन्द रहित कवित्त नेत्र रहित रवि, विवेक रहित मनुष्य। व स.

४ पृथ्वी, भूमि, धरा। (ग मा, ह ना. मा)

५ रामवेलि नामक लता। (अ मा)

६ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। (सगीत)

वि –१ रस भरी, रसपूर्ण।

२ रसीली रसीली।

३ रसगी, सुन्दरी, प्रिया।

उ० सतनै ढोलाजी मान सराणार। **रसवती** मैना गारी म मद ढूकिया थारी ओली प्यारी सा। ना गो

४ स्वादिष्ट, जायकेदार।

उ० —यथा आभरीरण सुवर्णरत्न हीरा मुक्ताफलादि सरव सयोगी राजयोग्य आभरण, **रसवती** भोजन शालि दालि घ्रत पकवान्नादि। -व स

५ दिलचस्प।

रसवतीकरम–स पु [स रसवतीकर्म] १ भोजन या रोटी बनाने की क्रिया।

२. ७२ कलाओं मे से एक।

रसवतीग्रह–स पु [स. रसवतीगृह] १ पाक शाला, रसोई, रसोडा।

उ०—मज्जनग्रह विलेपन ग्रह प्रसाधन ग्रह, अलकार ग्रह, आदर्स ग्रह अन्तपुर ग्रह, क्रीडाग्रह **रसवतीग्रह** भोजनग्रह आस्थान ग्रह काम चैत्य प्राय मदिर परिकरित विसाली प्रणाली चित्रमाली। —व स.

रसवता–स. स्त्री.–१ रसीलापन, स्वाद।

२ मीठास।

३ सुन्दरता।

४ प्रसन्नता।

रसवांन–स पु [स रसवान्] किसी विशेष गुण या शक्ति वाला पदार्थ, जिसके करण या अश का सयोग रसना मे होने पर, विशेष आनन्द या स्वाद की अनुभूति होती है।

वि –रसदार, रसयुक्त, जिसमे रस हो।

रसवाद–स पु [स] १ साहित्य मे वह मत या सिद्धान्त जिसके अनुसार काव्य मे 'रस' की प्रधानता को माना जाता है।

२ रस की बात, रसिकता की बात।

३ छेड छाड

४ ७२ कलाओं मे से एक।

रसवायौ–वि (स्त्री रसवायी) १ उमग, जोश मे युक्त।

उ०—विढवा पथम अगी **रसवाया,** ते मछरीक वगी वळ आया। 'चूडौ' 'मुकन' सुजाव मचेळौ, भूप तणौ छाळ केहर' भेळौ। —रा रू

२ प्रसन्न, हर्षित।

उ०–सिरध वीर रामायु विरद जसू **रसवाया।** काक कक की सिरौ ग्रास पळ सभळ साया। —रा रू

रसवाळौ–वि [स रस+आलय] (स्त्री. रसवाळी) १ रस से पूर्ण, रसदार। २ जायकेदार, स्वादिष्ट। ३ दिलचस्प। ४ मधुर।

रू० भे०–रसाउलू, रसाळ, रसाळौ।

रसवास–स पु –टगण के प्रथम भेद का नाम। (ऽऽ) (पिंगल)

रसविरोध–स पु [स रसविरोध] वे विभिन्न रस जिनका मेल उचित नही माना जाता है। (सुश्रुत)

रसविलास–स पु [स रसविलास] रतिक्रीडा, मैथुन।

उ०—रिझवारा रिझवार कमग सिरणगार तीरव चोख री रखवरणहार **रसविलास** री चाखणहार। —र. हमीर

रसवीर–देखो वीररस' (रू भे)

रसवेता रसवेत्ता–वि [स] रस मर्मज्ञ, रसज्ञ।

रसबेलि–स स्त्री.–रस की बेल, लता।

उ०–वाही थी गुणवेलडी, वाही थी **रसवेलि**। पीणइ पीवी मारवी, चाल्या सूती मेलि। —ढो. मा.

रससंस्कार–सं. पु–पारे के अट्ठारह प्रकार के संस्कार। (वैद्यक)

रससागर–स पु–१ सात समुद्रों मे से एक। (पौराणिक)

२ प्रेम का सागर।

रससात–स पु.–दूध, दुग्ध। (अ मा)

रससार–स पु–१ शहद, मधु।

२ विष, जहर।

रससिंगार–स पु.–शृंगार रस।

वि.–मधुर। * (डि. को)

रससिंदूर–स पु [स] पारे और गधक के योग से बनने वाला एक रस। (वैद्यक)

रससिंधु–देखो 'रससागर'

उ०–आखि आजि सिर गूथत मागी, झूमक गावन अचळ जोरी। मीरा प्रभु **रससिंधु** झकोरी, नवल हि गिरधर नवल किसोरी। —मीरा

रससिद्धि, रससिद्धी–स. स्त्री [स.] १ रसायन विद्या मे कुशलता, निपुणता।

उ०–१ राजा कही–अबे। **रससिद्धि** देय। देवी तत्काळ किंवाड खोल अतरध्यान हुई। —सिघासण बत्तीसी

उ०–२ विक्रम विन त्यागी कहा, जे **रससिद्धी** पाय। कठिण परिस्रम कर सकळ, तपसी दियौ बताय। —सिंघासण बत्तीसी

रससेव–स पु–बलराम का एक नामान्तर। (अ मा)

रसांण–क्रि वि.–१ उचित ढग पर, उपयुक्त स्थिति मे, सही रास्ते पर।

उ०–विण सावळ वाच बखाण भली विध, कठ लगाय प्रमाण करी। न भरै जद वात **रसांण** न आवै, साहपणै किम हाम भरी। —भगतमाळ

२ देखो 'रसायण' (रू. भे)

रसांणी–स स्त्री–रसायन विद्या।

रसांमणा–स. स्त्री [स रश्मि] सूर्य की किरण, रश्मि।

उ०–सधर कर अभीखण रवि जस **रसांमणा**। भुजा रघुवर अडर, लीजिये भामणा। —र ज प्र

रसा–स स्त्री. [स.] १ पृथ्वी, धरती, धरा। (डि को, ह. ना मा)

उ०–१ राघव रयणायर **रसा**, सेस महेस्वर वैंण। सुणै बधायौ गिरिसुता, सो व्हौ सो सुख दैण। —बा दा.

उ०–२ महा ओस 'दूदा' चले रीस मत्ता। **रसा** काजि 'ऊदा' वडी लाज रत्ता। —रा. रू.

उ०–३ थारी आळस पणा री नींद है सो खोय देसी ने **रसा**। प्रथी सदा कवारी है सो वीर हुवै जिकोई इण रौ वींद धणी है। —वी स. टी

२ दुनिया, जगत, ससार।

उ०–१ **रसा** रूठौ रूठौ अलख इक रूठौ मत रहै। हमारी देखै ना विरुद्ध निज लेखै वठ वहै। —ऊ. का.

उ०–२ दोख निज दीह न दीसै रे, **रसा** अवरा पर रीसै रे। बात निज हाथ बिगाडी रे, आई सोइ पात अगाडी रे। —ऊ. का.

३ जिव्हा, जीभ।

४ रसातल, पाताल।

उ०–अगहन मास ऋतू स्यौ आखौ, पो' त्रेताजुग वीतौ पाखौ। द्वापुर माघ महीनो दाखौ, **रसा** सिधायौ आ चित राखौ। —ऊ का.

५ नरक।

[फा. रसाई] ६ वेग, गति।

७ देखो 'रस' (रू भे)

रसाइण, रसाइन–देखो 'रसायण' (रू भे)

रसाई–स स्त्री [फा] १ पहुच, क्षमता। (मा. म)

२ सुलह, सधि।

रसाउलु–देखो 'रसवाळौ' (रू भे.)

उ०–रासि **रसाउलु** चरीउ थुणीजइ। किम रयणायरु हीयइ तरीजइ। —सालिभद्र सूरि

रसागर–स पु.–एक प्रकार का घोडा, जिसका एक नैत्र लाल होता है तथा नैत्र मे नीले रग के डोरे होते हैं, साथ ही दूसरा नैत्र काला होता है। (अशुभ) (शा. हो)

रसाणौ, रसाबौ–क्रि स ['रसणौ' क्रिया का प्रे. रू] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ को धीरे धीरे बहाना, रसाना।

२ टपकाना।

३ रसयुक्त करना, स्वादिष्ट बनाना।

४ आसक्त करना, अनुरक्त करना।

५ प्रसन्न करना, खुश करना।

६ वश मे करना, अधिकार मे करना।

उ०–कमधज पत भूपत 'करन', इम राज **रसाया**। सुभ जिण कवर अनोपसिह, छत्र अवळां छाया। —द दा.

७ रसास्वादन कराना, चखाना।

८ शोरगुल कराना, बोलाना।

९ ध्वनि कराना।

रसाणहार, हारौ (हारी), रसाणियौ —वि।

रसायोडौ —भू का. कृ.।

रसाईजणौ, रसाईजबौ —कर्म वा.

रसातळ, रसातळि–सं पु. [स रसातल] १ पृथ्वी के नीचे के सप्तलोकों मे से छठा लोक। (पौराणिक)

२ पाताल।

उ०–१ दादू भावै तहा छिपाइयौ, साच न छाना होइ। सेस

रसातळ गगन धू, परकट कहिये मोट । —दादूवाणी

उ०—२ आकास **रसातळ** दिस प्रगट, पारावार समद्र पथ । जमजाळ दुसह साधै सही, आली यह मेरे ग्रन्थ । —रा. रू.

३ अधोलोक ।

उ०—१ रानि **रसातळ** नास थई, दिवस पयु गुण व्यापि । ऊरेमिउ नह आयमइ, प्रादिन प्रामि ज वापि । —मा. का. प्र.

उ०—२ साधू निरमळ मळ नही, राम रमै सम भाइ । दादू अवगुण काढकर, जीव **रसातळ** जाइ । —दादूवाणी

उ०—३ आप आपकू मारि करि, आप आपकू खाय । आप आपणी नास करि न्याय **रसातळि** जाय । —ह. पु. वा

४ अधोगति, नाश, पतन ।

उ०—१ उरध रोम उलसै जोम धरि करणा **रसातळ** । भांज त्रिसळी निज भाळ, कळा मोखण मन कम्मळ । —रा. रू.

उ०—२ तू ऊंचा लेवै निके, जग ऊंचा हुय जाय । मन न्यावो तू माढवा, जिके **रसातळ** जाय । —ऊ. का

५ पृथ्वी, भूमि, धरती ।

उ०—१ हरीया पशी पख बिन, पड़ै **रसातळि** आय । ऊड़ण की सत्या नही, जीवन बिलग थाय । —अनुभववाणी

उ०—२ परबत सु पथर गिरघो, परघो **रसातळ** आय । हरीया हरि की भगति बिन, सोई नीचा जाय । —अनुभववाणी

रू. भे.—रसतळ, रसताळि,

रसावार—वि.—जिसमे रस या शोरबा हो, रसदार ।

रसाधार—स. पु. [स] १ सूर्य, रवि ।

२ शेषनाग ।

रसाधी—स. स्त्री.—भूमि, पृथ्वीमाता ?

उ० चिते होनी वेसी गहन नभ देती मन गमा । **रसाधी** सगो रोती ह. ह ह किम होती दुरदमा । —ऊ. का

रसापत, रसापति—स. पु. [स. रसा-पति] राजा, नृप । (डि. को.)

रसाभास—स. पु. [स. रस + आभास] १ साहित्य मे किसी रचना की वह स्थिति जिसमे किसी रस विशेष का आभास मात्र हो गया हो अर्थात् रस की परिपक्वता नही आ पाई हो ।

२ मन मुटाव, वैमनस्य ।

उ०—नागौर पातसाह अकबर जद मोटा राजा नै राव चद्रसेणजी एक हुवा, **रसाभाव** मेटियो । —बा. दा. ख्यात

रसायक—देखो 'रसायण'

उ०—वईदराज के विसाळ, औखधी उपाइर । सई रसायणी स्वधातु स्वच्छय रसायक । —सू. प्र

रसायण—स. पु. [स. रसायन] १ जरा व व्याधि को मिटाने वाली औषध, जो पारे या किसी धातु के योग से बनाई गई हो ।

उ०—कोई **रसायण** औषध नाग कुरूप सु सुरूप हुवौ । —पचदडी री वारता

२ तांबे से सोना बनाने की एक कल्पित विद्या ।

उ०—करणा **रसायण** कइछिया, हरि चिरता हंमियाह । चुगला नै गरिया चतुर, बनै गिरै ग्रमियाह । —बां. दा.

३ धातुओं की भस्म बनाने की एक विद्या । इससे एक धातु को दूसरी धातु मे भी बदला जा सकता है । (वैद्यक)

उ०—भगत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै । तरक्क नीति सासत्राति, एक मुक्त उच्चरै । सास्त्र एक सब्ब घात, केळवै **रसायणं** । अगाध वेद राज राज औखदी विचारणं ।

—गु. रू. ब.

४ वह विषय, क्षेत्र या तत्व जिसमे किसी प्रकार के रस या आनन्द की प्राप्ति होती है ।

उ०—सरव **रसायण** मे रसी, हर रस समी न काय । टुक तन अंतर मेल्हिया, सब तन कचन थाय । —ह. र.

५ इच्छित सिद्धि, मनोकामना की पूर्ति ।

उ०—वेयावच दस प्रकार नी, करजो चित्त लगाय । कारयक **रसायण** ऊपजै, दुख दालिद्र दूरे जाय । —जयवाणी

६ परिपक्वावस्था ।

उ०—गरढ़ पणै गुणकार, सार वह बुद्धि **रसायण** । त्रिण सै मल्ल वेसीया, गिणी निस चाकर रायन । —ध. व. ग्र.

७ रस काव्य ।

उ०—'नाल्ह' **रसायण** नर भणइ, राजा रह्यौ उडीमई जाय । याग-वाणी सी वर दीयौ, अरसी **रसायण** कह वरखाण ।

—बी. दे

८ मधुर पेय रस ।

उ०—१ गूंगे का गुड़ का कहू, मन जाणत है स्वाद । त्यो राम **रसायण** पीवना, सो सुख कह्या न जाय । —दादूवाणी

उ०—२ मन हरिदास दोख तजि दुरमत, राम **रसायण** पीवै । बैठै सेह पदम रवि पगसै, परसै नागा जीवै । —ह. पु. वा

९ उत्तम खाद्य पदार्थ ।

१० गरुड़, समर ।

११ गरुड़ पक्षी ।

१२ बहत्तर कलाओ मे से एक । (व. स.)

रू. भे.—रसाइण, रसाइण रसायन, रसायन ।

रसायणग्य—वि. [स. रसायनज्ञ] रसायन क्रिया व विद्या का जानकार ।

रू. भे.—रसायनग्य ।

रसायणविग्यान—स. पु. यौ. [स. रसायन+विज्ञान] पदार्थों मे होने वाले गुणो व तत्वो का विवेचन करने तथा पदार्थों के परस्पर योग से होने वाली प्रतिक्रिया एव रूपान्तर देखने की विधि या सिद्धान्त ।

रू. भे.—रसायनविग्यान ।

रसायणसास्त्र—स. पु. यौ. [स. रसायन + शास्त्र] १ वह शास्त्र जिसमे

पदार्थों के गुण, तत्व आदि के विवेचन तथा पदार्थों के परस्पर योग मे होने वाली प्रतिक्रियाओ एव रूपान्तरो को देखने की वैज्ञानिक विधियो का सग्रह हो।

२ वह पुस्तक जिसमे रसायन विज्ञान की विधियो या सिद्धान्तो का सग्रह हो।

रू० भे०–रसायनसास्त्र।

रसायणी–सं. स्त्री. [स. रसायनी] १ कोई रसायनिक औषधि।

उ०—वईदराज के विसाळ, औखधी उपाडक। तई **रसायणी** स्वधातु, स्वच्छय रसायक। —सू. प्र.

२ उक्त औषधि बनाने की विधि या विद्या।

३ उक्त विद्या के जानने वाला वैद्य या चिकित्सक।

रू० भे०–रसायनी।

रसायन–देखो 'रसायण' (रू भे.)

उ०—१ राम **रसायन** पेम रस, पेमा और न स्वाद। जन हरीया जै चाखीया, विखै न आवै याद। —अनुभववाणी

उ०—२ अग सकोमळ पेम सरभर, चूप मभै चतरग चिनारी। माध मनी जत राग **रसायन**, सूर खिम्या कवि दास दतारी। —अनुभववाणी

उ०—३ **रसायन** प्रयोग रसिक, प्रदरसित वलिपलित, वसीकरण प्रमुढ, लक्ष खडी चापडी प्रमुख विद्या कुतूहली अ साधक, आकास पाताल अधक। —व स.

रसायनग्य–देखो 'रसायणग्य' (रू भे)

रसायनचंवणा, रसायनचवना–स स्त्री.–बहत्तर कलाओ मेसे एक। (व स)

रसायनविग्यान–देखो 'रसायणविग्यान' (रू. भे.)

रसायनसास्त्र–देखो 'रसायणसास्त्र' (रू भे)

रसायनी–देखो 'रसायणी' (रू भे.)

रसाळ, रसाल–वि. [स. रस+आलय] १ रसयुक्त, रसमय।

२ मीठा, मधुर।

उ०—१ ग्वाळ बाळ रचि चारु मडळ, बाजत बसी **रसाळ**। —मीरा

उ०—२ दादू रग भर खेलू पीव सौं, तह बाजै वेणु **रसाळ**। अकल पाट पर बैठा स्वामी, प्रेम पिलावै लाल। —दादूबाणी

उ०—३ घट मांही घडियाळ, आठ पौहर लागी रहै। हरीया राग रसाळ, रग रग भीतर होत है। —अनुभववाणी

३ ठडा, शीतल।

उ०—मुख दीसै विकसौ कमळ, वदन वचन **रसाळ**। हियडै जाण कि करतरी, धूरत चिन्ह एमाळ। —पच दडी री वारता

४ सुन्दर, मनोहर। मोहक।

उ०—१ हसी परी माधुरी सी चाल, अति अद्भुत रूप **रसाल**। मारग मिथ्यात उदाल। —वि. कु.

उ०—२ चद्र-वदन अग-लोयणी जी, चपल लोचनी बाल। हरी लंकी अद्रु भाखणी जी, इद्राणी सी रूप **रसाल**। —जयवाणी

उ०—३ वाचती अगम्म वेद नाचती वजाई वीण। राचती सुरंग अग नाचती **रसाळ**। —मा. वचनिका

उ०—४ राधा राणी सग लिये, गोपी निकट गुवाळ। ऊपर कीजै ईश्वर, सु दर स्याम **रसाळ**। —गज उद्धार

५ प्रिय, प्यारा।

उ०—ससि-वदन अगलोचना रे, हरि लकी सुविसाल। राजा मानै अति घणी रे, जीव सू अधिक **रसाल**। —जयवाणी

६ फलदायक।

उ०—राखौ आगै रमण रे, राघव नाम **रसाळ**। मुख माभळ आणो मती, गिणो अबक ज्यू गाळ। —बां. दा.

७ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल।

८ जोश पूर्ण।

उ०—विसाळ भाल कंधग, **रसाळ** छत्ति युत्थरे। रहैं पदम्म रेखतें, सु देखतें अरी डरै। —ऊ. का.

९ रसिक, प्रेमी।

१० आनन्ददायक, दिल चस्प।

उ०—मुझ नाचंता भरह **रसाल** ए, स्युं जाणइ मूरख नाल। —हीराणद सूरि

स पु–१ रसमय या रसयुक्त पदार्थ।

२ आम, आम्र। (अ मा, डिं को.)

३ सेव आदि फल, फ्रूट।

उ०—अथवा मेह खच करे रे लाल, ऊपर पड जावै काल सुविचारी रे। तो देसी मोने मोकलौ रे लाल। अटवी माही **रसाल** सुविचारी रे। —जयवाणी

४ गन्ना।

५ ऋतु विशेष मे होने वाला फल।

६ कटहल।

७ कदुर तृण।

८ बोलमर नामक गन्ध द्रव्य।

९ अमलवेत।

१० हल्दी। (अ. मा)

११ गेहू।

१२ वनस्पती विशेष। (सभा)

१३ ज, स, त, य, र, ल और ७, ६. पर यति वाला एक छद विशेष।

१४ एक वर्णिक छद विशेष जिसमे चार मगण व अंत मे दो लघु होते है। (ल. पि.)

उ०—पाण प्रकति रस परि, चवदह सहस चमाळ। मगण प्रादि लघु दीह मुणि, रूपक नाम रसाळ। —र पि

[अ. इर्साल, इरसाल] १५ भेंट, सौगात।

उ०—१ राव मालदेवजी नै पाछा परवाना लिखने प्रोहित नै सीख दीवी। रावजी नै रसाळ मेली।

—वीरमदे सोनगरा री बात

उ०—२ उठै बखतसिंह जी मेलियौ भागु राइको आबा री रसाळदार रसाळ लेय आयौ। —मारवाड रा अमरावां री वारता

१६ कर, महसूल, खिराज।

उ०—१ साहरां मांडवगढ रै पातसाह मालुम चलाया। आदमीयां सारै एक कोड रुपीया खातिया। 'अकल-कैंवास', 'मन-कैंवास' माथे दीया—बीच कोई पूछै तौ कहणा, मांडव रै पातसाह बिलाइत रै पातसाह नूं रसाळ मेली छै।

—रिणमल राठौड़ लाखडियै री बात

रू० भे०—रसावळ।

रसाळदार, रसालदार—वि.—१ रसदार, रसयुक्त।

उ०—उठै बखतसिंहजी री मेलियौ भागु राइको आबा री रसाळदार रसाळ लेय आयौ। —मारवाड रा अमरावां री वारता

२ देखो 'रिसालदार' (रू. भे.)

रसाळू, रसाळू, रसाळी, रसालौ—देखो 'रसवाळौ' (रू भे.)

उ०—१ संवत चौद पच्यासीइ ए वरचीउ वरी रसालू ए।

—हीराणंद सूरी

रसाली—१ देखो 'रिसाली' (रू. भे.)

उ०—१ रायासैर वज्र सी बणायौ गाढै राबरूपै, आयौ कीलोवाळ बेस चाढै बस आब। हजारां रसाला चाढै अल्लाई दिखाया हाथ, नबी री कसमा काढै वल्लांणै नवाब। —बां दा

उ०—२ सक सं० १७३१ मा'राज पदमसिंघ जादम राय दलपती सूं झगड़ौ कर कांम आया तिणरी खबर मा'राज नूं हुई नद उणारी रसालौ सारी मबैरची। —द दा

२ देखो 'रसवाळौ' (रू भे.)

उ०—१ जब नटवो की साला रे, गावै गीत रसाला रे।

—जयवांणी

उ०—२ निकल गया डाला रे, नही फल रसाला रे।

—जयवाणी

रसावळ—स पु—१. २४ मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसमे १३ व ११ मात्रा पर यति होती है। (रूपदीप पिंगल)

२ देखो 'रसाळ' (रू भे.)

रसास्वादी—वि. [स रसास्वादिन्] १ किसी प्रकार के रस का स्वाद लेने वाला।

२ किसी विषय का आनन्द लेने वाला।

३ रसिक, रसिया।

रसि—१ देखो 'रस' (रू भे.)

उ०—१ अवगति अगम अगम गम कीया, नौग्रह पलटि गगन रस पीया। ता रसि मुनिजन रया समाय। ता रसि मनि उलटि न जाय। —ह. पु. वां.

उ०—२ लाघड मार सुधा रसिका रसि ते सिंचति। अग धरीये अगलोचना लोच ना रग चूकति। —जयसेखर सूरि

उ०—३ राति विहाणी एग रसि, प्रात हुवौ असवार। मेछ असग महाबळी, मारुहि मग अपार। —रा. रू.

२ देखो 'रसी' (रू. भे.)

३ देखो 'रस्मी' (रू भे.)

रसिक—वि [स. रसिक] (स्त्री रसिका) १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, मर्मज्ञ, काव्य मर्मज्ञ।

२ गुणग्राही।

३ रस पान करने वाला, रस लेने वाला।

उ०—नव द्वारा का रसिक नवेला, अलबत भग दधकाई। देख बिचार द्वार दसवे दिस बिल्कुल राख बगाई। —ऊ. का.

४ विलास प्रिय, मौजी, मस्त।

५ रस लोलुप, लम्पट।

उ०—बिलळा ग्रंथ बाचै रसिक न राचै, छब छानी छोलदा है। निकमा नर नारी बारबारी, बळिहारी बोलदा है। —ऊ. का

६. भावुक सहृदय।

उ०—प्रथम नह भीनौ महाक्रोध भीनौ पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। राग्रकवरी वरी जेण आगै रसिक, वरी घड कवारी तेण आगै। —बां दा

७ रसयुक्त, रसमय।

८ स्वादिष्ट, जायकेदार।

९ सुन्दर, मनोहर।

स पु १ प्रेमी व्यक्ति।

२ सारस।

३ घोड़ा, अश्व।

४ हाथी, गज।

५ एक छद विशेष।

रू० भे०—रसक।

रसिकता—स. स्त्री [स] १ रसिक होने की अवस्था या भाव।

२ मौज मस्ती।

३ परिहास, हसी आनन्द, हर्ष।

४ सुन्दरता, मनोहरता।

रसिकबिहारी—स पु यौ [स] श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।

रसिका—सं. स्त्री.—१ प्रत्येक चरण में ११ लघु मात्रा का एक मात्रिक छंद। (र. ज. प्र.)
२ वह स्त्री जो रास विलास व रमण करने योग्य हो।
उ०—लाधइ सार सुधा रसिका रसि ते सिंचति। अंग धरीये अंग लोचना लोच ना रंग चूकंति। —जयसेखर सूरि
३ देखो 'रसिक' (स्त्री.)

रसिकेस्वर—स. पु. [स. ऋषिकेश्वर] श्रीकृष्ण।

रसियापण, रसियापणौ स. पु. [सं. रसिक+त्व] १ रसिक होने की अवस्था या भाव।
२ रसिकता, शौक, मस्ती, मौज।
३ विलासिता।

रसियौ—वि. [म. रस+रा. प्र इयौ, स. रसिक] १ आनन्द या रस लेने वाला, रसिक। २ रसज्ञ, मर्मज्ञ।
उ०—माया के रस रसिक है, बात कहन हैं दोय। राम रसायण अजब है, पीवै रसिया होय। —ह. पु वा
३ जिसको किसी कार्य का विशेष शौक हो, शौकीन।
उ०—१ मुह पतलै पूठै मोटा, छछोहा ने कानै छोटा। सोने री साखत कसीया, राजा हुवै चढना रसिया। —घ व. ग्र.
उ०—२ प्रथी भुगते तरण फतै पणै, हूमनायक पणै मुनद हसियौ। 'मांन' हर धाड रे धाड जौबन ममत, राड रै बगत तणौ रसियौ। —महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत
४ रति क्रीडा लोलुप, कामुक, विषयी, वेश्यागामी।
उ०—१ हसियौ जग आसक हुवौ, वसियौ खोवण वीत। रसियौ नागी राड सू, फसियौ होण फजीत। —बा. दा.
उ०—२ सोवै अळगी सायधण, सुपनै ही नह सग। गणिका सू राखै गुसट, रसिया तोनें रग। —बा. दा.
५ हास परिहास करने वाला।
६ मस्त, मौजी। छैल, छबीला।
७ प्रिय, प्यारा
उ०— तुम हृघा ही रहौ राम रसिया, थारी सावरी सुरति (मे) मन बसिया। —मीरा
स. पु.—१ पति, प्रियतम।
उ०—१ प्यारा थासूं पलक ही, बांछू नही विजोग। उरबसिया मो आवजो, रसिया थारो रोग। —बा. दा.
उ०—२ दळबादळ बीच चमकै जी तारा, सांज समै पीव लागै जी प्यारा। काई रे जबाब करूं रसिया। —लो. गी.
२ एक राजस्थानी लोक गीत।
रू० भे०—रसीयौ,

रसी—सं. स्त्री. १ किसी घाव या फोडे मे पड़ने वाली पीब, मवाद।
२ देखो 'रस्सी' (रू. भे.)
रू० भे०—रसि।

रसीद—स. स्त्री. [फा.] १ रुपये आदि की वसूली या अदायगी के बदले मे दी जाने वाली पहुंच, प्राप्ति। प्राप्ति सूचना।
२ वह पत्र या प्रमाण-पत्र, जिसमें उक्त प्रकार की प्राप्ति लिखकर दी जाती है।
उ०—इण वास्तै फाटक में आयोड़ा रूळियार ढांढां री रसीद काटण में वानै पूरी दिक्कत रै'वती। —अमरचूनड़ी।

रसीनौ—स. पु.—प्रेमी।
उ०—अवसिरि आयौ यार असीनौ। आज सु दिन भयौ भाग पुरबलै, पायौ परम रसीनौ। —अनुभववाणी

रसीयौ—देखो 'रसियौ' (रू. भे.)
उ०—१ हरीया दिल साबित भया, चितवा निहचळ होय। रसीया सोई जाणीयै, निज मन वसीया सोय। —अनुभववाणी
उ०—२ आव्यौ मास वसत रे रसीयां री राजा। सुख बं साजा, तरु होइ ताजा। —वि. कु.
उ०—३ अवसर देखी पापी सेठै भूडी ग्रैठै, रांमा घन नौ रसीया रे लौ। —वि. कु.
उ०—४ रमता हे सखि रमतां रूडी रीत, रसीयौ हे सखी रसियौ पदमणि मन वस्यौ जी। —प. च. चौ.

रसील—वि [म रस+रा. प्र. ईल] रस युक्त, रसदार। मीठा, मधुर।
उ०—सिबरी कुळ भील कुचील सरीरी, चाखत बोर रसील संचै। गहावत कीन करी नह गोविंद, वीच अगीर मजार बंचै। —भगतमाळ

रसीलणौ—वि. (स्त्री. रसीलणी) प्रेम या आनन्द में निमग्न रहने वाला। मस्त।
उ०—झूटे फल लीन्हे रांम, प्रेम की प्रतीत जांण। ऊंच नीच जांने नहिं, रस की रसीलणी। —मीरां

रसीलापण, रसीलापणौ—सं. पु.—१ रसिक होने की अवस्था या भाव।
२ रसयुक्त या रसमय होने की अवस्था या भाव।
३ विलास प्रिय या कामुक होने की अवस्था या भाव।

रसीलौ—वि. [सं. रस+रा. प्र. ईलौ] (स्त्री. रसीली) १ रसयुक्त, रसमय। २ स्वादिष्ट, जायकेदार।
३ मधुर।
उ०—१ सोहागिण रग रगीली, तु प्रेम महारस भीली, सांभलि मुझ बात रसीली। —वि. कु.
उ०—२ नमौ रूप नट्टा सबट्टा रसीली, नमौ लच्छि रंभा नमौ वोम लीली। —मा. वचनिका
४ दिलचस्प, मजेदार।
५ आनन्द दायक।
६ विलास प्रिय, कामुक।
७ बाका, छबीला।

८ सुन्दर, मनोहर, कमनीय ।

उ०—१ नीन मजीली रूप रसीली, छैल छबीली छावै । मीन मछळ तन छटा निराळी, मन मन काम मजावै । —गी रा

उ०—२ करमुळ सुछम कपाळ रसीली वाम रा । किया नयारी देह, हरण्यां काम रा । —बा दा.

९ नाजुक, कोमल ।

उ०—हम इयारं अरमां री सराबोर रसीली ऊमर मे ई उण री मन अबोरी रै उनमान व्हैगो । —फुलवाडी

१० प्रियतम, प्रेमी, रसिया, रसिक ।

उ०—कथ हूं निज कामीनयां रा अबर दीना । भामण हुवी लाज म छोडे लार रसीला । —मेघ

११ रसज्ञ, मर्मज्ञ ।

१२ सार युक्त ।

उ०—लिखवा धारी जाभो र, वैराग छै नाजी रे । पायो परम रसीली र, रस परि नाय दीनो र —अगवाणी

रसुगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू भे)

रसूक—स पु—सबध, व्यवहार ।

उ०—आछ्या स्वभाव नै रसूक नरमी मन राखणी म छै । —नी प्र.

रसूगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू. भे.)

रसूल—स पु. [अ] १ ईश्वर का दूत ।

२ ईश्वर का पैगम्बर ।

३ पैगम्बर ।

४ ईश्वर ।

उ०—हो मोहि लागी प्रीत रसूलं, नाव निमख नही भूलै । —अनभववाणी

रसेंद्र—स पु [स] पारद, पारा ।

रसेस्वर—स पु. [स रसेश्वर] १ पारा, पारद ।

२ छ दर्शनों मे अलग एक दर्शन का नाम ।

रसोइ—देखो 'रसोई' (रू भे)

उ०—१ गणपति गादह थारद, कमल कोट रावर, भतीरवार रसोइ आसद, मगल सीसह धसट । —व. स.

उ०—२ आदित्य रसोइ तपइ, चद्रमा पखी वडी प्रभन करइ, यम पाणी वहइ, सात समुद्र माजगाउ करावइ । —व. स.

रसोइयौ—स पु—१ भोजन बनाने वाला व्यक्ति, बावर्ची ।

२ पाक शास्त्री । कारीगर ।

उ०—हमी आवण दो । हू काल रसोइयै नै बुलाय'र तै कर लेवू ला । रसोइयौ पैलै-सी नवर जोयीजै । थावै रसिया पाव-ई लेवौ । —वरसगाठ

रू० भे०—रसोईयौ ।

रसोई—स स्त्री [स रसवती] १ भोजन के रूप मे बनने वाली खाद्य सामग्री, भोजन, खाना ।

उ० १ ठाकर मगळी बाना री हूकारो भरयौ, गुलाब री सा धूप-दीप करयौ । रसोई बणाई, कुरसी कूरयौ अर भूत देवता री जगा लिजा'र बठायौ । —दमदोख

उ० २ अठी बाप-बेटा री मपाडो सपूरण व्हियौ अर उठी सेठाणी री रसोई । गुळ री भरभरती मगळीक सीरो बणायौ । सीर बणाई । मालपूवा काढ्या । पापड-खीच्या तळ्या । बाजोठ्या ढाळ थाळ पुरसिया । —फुलवाडी

उ०—३ मन री नह मोव माच नह मरधा सोई । ग्यान गई नह मोच, माच नह ग्यान रसोई । —ऊ का.

२ वह कक्ष जहा भोजन बनाया जाता है, रसोईघर, पाकशाला ।

उ०—१ बेटो पाणी पीवण सारू गियौ नी परिडो रीतो । रसोई मे गियौ नी चन्दा म वासदी री निसाण ई नी । —फुलवाडी

उ०—२ कोई मुगियौ नी साजना मे कित्ती धुड घालैला—महाजन री रसोई मे कोई रा छाना । थारी कीकर नीद आवै अर कीकर भूख लागै । —फुलवाडी

३ देव मन्दिर, मठ या किसी ब्राह्मण को दी जाने वाली, आटा दाल, घृत आदि भोजन सामग्री ।

उ०—बाहरा बाभण रसोई मागै । जी । बाहरा कहै साना रसोई द्यू । —प्रतापसिंघ म्हाकमसिंघ री बात

रू० भे० रसाट रसोय । अल्पा रसोडी रसाडी ।

रसोईखानौ, रसोईघर—स पु—वह कक्ष या स्थान जहा भोजन पकाया जाता है । पाकशाला ।

रसोईदार—स पु [राज रसोई फा दार] १ भोजन या खाना बनाने के लिय नियुक्त व्यक्ति बावर्ची ।

उ०—म कमाल दी नै कमाल दी री बैर उणान् खाना राखै । आपरा छोकरा सू उपरत किया राखै छै । इणा रे रसोईदार बाभण रे जुदा जुदा रसिया छै । —नैणसी

२ विशेष प्रकार का भोजन बनाने वाला कारीगर, पाक शास्त्री ।

रसोईदारी—स. स्त्री—१ व्यवसायिक रूप मे भोजन बनाने का कार्य ।

२ बावर्ची के रूप मे की जाने वाली नौकरी ।

रसोईबरदार—स पु [राज. रसोई + फा. बरदार] खाना लेजाने वाला व्यक्ति ।

रसोईयौ—देखो 'रसोइयौ' (रू भे)

उ०—बार बार रा कारीगर रसोईया थमालिया । —दमदोख

रसोइदार—देखो 'रसोईदार'

उ०—तिण समै रसोइदार अरज कराई रसोवौ तयार हुवो छै । —राव रिणमल री बात

रसोड़ी—देखो 'रसोई' (अल्पा., रू. भे.)

रसोड़ौ—स पु [राज.] १ पका हुआ खाना, भोजन।

उ०—१ तिण समै रसोइदार अरज कराई रसोड़ौ तयार हुवौ छै।
—राव रिणमल री वात

उ०—२ मिळता राग घरे महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा। जिमी वस्त नित अन्नत जोडा, राजै नव नव भात रसोड़ा।
—रा रू

२ भोजन सामग्री, खाद्य सामग्री।

उ०—अर मीम रसोडा आरभे, भल कजाक घोडा भडा। अरि खान अकब्बर ऊपरै, इसी भांत ऊरखडा। —रा रू

३ पाकशाला, रसोईघर।

उ०—१ सीकरि का घणी सो भूमि दौलतवांन मैठा। सो भी मेवसिंघ जी कै रसोड़ै आगि बैठा। —शि व

उ०—२ रसोड़ै बैठोडा बुजीसा बरजिया, मत जाम्रो जाया लडाई री लार ए, अन्नदाता झगडै जू जिया। —लो गी

रू० भे०—रसोडौ, रसडौ रसोवड, रसोवडौ, रसौडौ, रहोडौ, रहोडौ।

रसोत—देखो 'रसौत' (रू भे)

रसोन—स पु. [स] लहसुन।

उ०—रसोना दी गादी विलम नरमादी हित रख्यौ। लख्यौ स्वादौ स्वादी उपक्रत प्रमादी नहि लख्यौ। —ऊ का

रसोपल—स पु [स] मोती।

रसोय—देखो रसोई' (रू भे)

रसोयीईस—स पु. [राज. रसोई+स. ईश] पाकशाला का अधिकारी, जो पाकशाला के कार्य की देख रेख करता है। रसोई दारोगा।
(हि को)

रसोली—स स्त्री—१ घोडों का एक रोग विशेष, जिसके कारण घोडे के बगल मे या पिछली टाग के टखने पर सूजन आजाती है या ग्रथी हो जाती है।

२ कान मे होने वाली एक फु सी, फोडा।

३ आख के ऊपर भोंहो के पास गिलटी निकलने का एक रोग।

४ शरीर के किसी अ ग मे उठने वाली ग्र थी।

उ०—माई मभझइ ऊपनी, एक असभव व्याधि। रिदयइ रसोली विट थइ मन नही मोरि साधि। —मा का प्र

रू० भे०—रसौली।

रसोवड, रसोवड़ौ—देखो 'रसोडौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक दिन भरमल नू कह्यौ, "उठै तो दूध पावना अठै भूल गया।" तद अरज कीवी, "जो म्हैं जाणी, हमैं कु वरजी घरै पधारिया छै। रसोवड़ै सू आवतौ हुसी।
—कु वरसी सांखला री वारता

उ०—२ दूजै पण रसोवड़ै खवास कारखाने गगाजळ वाळा सारा ही सूं हूं मिळू छू सो सगळा कहै छै खुस वे खुस री ही कोई खबर नही। —नापै सांखले री वारता

उ०—३ तद केसरीसिंह रसोवड़ौ करायौ, जीमियौ। उतरै मे सहर रो लोग सोवणी करणो लाग्यौ।
—राठौड अमरसिंह री वात

उ०—४ बने जी री खातर भात हे रधावां, जीमण रे मिस आय रे राय रसोवडे राय रसोवड़े। —लो. गी.

उ०—५ रसोवडां थाट भोजन रचै, पण छतीस परकार रै। रात दिन थाट थडिया रहै, जिकण 'पेम' जोधार रै। —पे रू.

रसौत—देखो 'रसौत' (रू भे.)

रसौ—स पु [स. रस] १ गुड, शक्कर या मिश्री का मीठा पानी, रस।

२ जूस, शोरबा।

३ देखो 'रस्सौ' (रू. भे.)

रसौडौ—देखो 'रसोडौ' (रू भे.)

उ०- राजा रै रसौडे गया। मोडा गया।
—कल्याणसिंह वाढेल री वात

रसौत—स पु [स रसोद्‌भूत] दारु-हल्दी की जड और लकडी को औटाकर और उससे से निकले हुए रस को गाढा करके तैयार की जाने वाली एक प्रसिद्ध औषधि।

रू० भे०—रसोत।

रसौली—देखो 'रसोली' (रू. भे)

रस्त—देखो 'रसद' (रू भे)

उ०—मास २ तोपा री वा बदूका री राड हुयवौ करी। अर रस्त बध कर दीनी। तद जगरूपसिंह विहारीदास लखवेरा जोड्यां नू रस्त पौहचावण रौ कहायौ। —द. दा

रस्तागीर—देखो 'रास्तागीर' (रू भे)

उ०—नदी नाळा रे ऊपर पुळ बधावै जिण सू रस्तागीर सगळा आराम उठावै सो घणो भलो काम छै। —नी प्र

रस्तौ—देखो 'रास्तौ' (रू. भे)

उ०—१ अरु लाख दोय पोठिया रेत सू भराय नै हली कियौ सू अठै वडौ झगडौ हुवौ। ऊलो-पैलो हजारां लोक कांम आयौ। आखर पोठया खाई मै नाख रस्तौ कियौ। द. दा

उ०—२ रस्ते मे रस्ता रखवा रमता, हसता खूब हिलंदा है। ममकरिया माडै भडवा भाडै, गु डा बाघ गळदा है। —ऊ का

रस्म—१ देखो 'रसम' (रू. भे)

२ देखो 'रश्मि' (रू. भे.) (ना मा)

रश्मि—स. स्त्री [स. रश्मि] १ किरण, रश्मि।

२ आभा, कान्ति, दीप्ति।

३ प्रकाश।

४ बागडोर, लगाम।
५ रस्सी, डोरी।
६ अंकुस, चाबुक।
रू० भे०–रसम, रसमि, रसमी, रस्सम, रस्म।

रस्म–वि. [स] रसवाला, रसदार।
सं. पु.–१ खून, रक्त।
२ शरीर का मांस।
३ देखो 'रहस्य' (रू भे.)

रस्स–देखो 'रस' (रू भे)
उ० पिये पम रस्स ब्रह्मा पुत। मग्गन सोरभ छूटे अवधूत।
–ह र.

रस्सन–देखो 'रसना' (रू. भे)

रस्सम–देखो 'रसम' (रू भे)
उ०–आंगौ बौ न जायो जमदूत जाहे, पुराणे प्रकारे कियौ बूम पाहे। रस्समं समथ्यं करायो मग्रमस्सं, ममंपाद गाता ग्रहे पारमस्सं। –ना द

रस्सी–सं. स्त्री [स रसना, प्रा रसणा] १ सूत, मूंज, सण आदि के रेशों को बट कर बनाई हुई डोरी। रज्जु। गुण।
रू० भे०–रसि।
२ देखो 'रसी' (रू भे.)

रस्सौ–सं पु [स रसना, प्रा रसणा] १ सूत, मूंज, सण आदि के रेशों या तन्तुओं का बटा हुआ मोटा डोरा, रस्सा।
२ घोड़ा की एक बिमारी।
३ देखो 'रसौ' (रू. भे.)

रहचणौ, रहचबौ–देखो 'रहचणौ, रहचबौ' (रू भे.)
उ०– करता देव नगा कोइ काम, रहंचे माहि महाजळ राम। महानिर पैस महाजळ मउभ, किया ते जइ प्रथम्मी काज।
–ह र

रहंचियोड़ौ–देखो 'रहचियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री रहंचियोड़ी)

रहंतणौ, रहंतबौ–क्रि. स.–सहार करना, मारना।
उ०–बीरम सु देपाळ बढतौ, भणी चडै नह ऊ बहीयौ। राव गठोड़ा तणौ रहंतै, राव जोईया रण रहीयौ। –दुदौ बारहठ

रहंतियोड़ौ–भू. का. कृ.–मरा हुआ, सहार किया हुआ।
(स्त्री रहंतियोड़ी)

रहंम–देखो 'रहम' (रू. भे)
उ० - थांना ऊपर बीजियौ, खुदालम्म रहंम। गाजा तू जाळौर री, दीनौ साह हुकम। –गु. रू ब

रहंमान–देखो 'रहमान' (रू भे.)

रह–सं. पु [स. रथ, प्रा रह] १ रथ।
उ०–नाहरड नयरि गो हरि वाली, देखि भूमि कटकिइ रह वाली। धाउ उतर नराधिप भागइ, ताहरू भलू रूप सु लागइ।
—सालिभद्र सूरि

२ एकान्त।
३ प्रेम, मेल।
४ देखो 'राह' (रू भे)
उ०–गई रवि किरण ग्रहै थई गहमह, रह रह कोइ वह रहे रह। मृजु वृत पुग नीसरै सुती, निसा पडी चालियौ नह।
—वेलि

रहकळौ–देखो 'रेकळौ' (रू भे)
उ० १ नद गाजती ठहर साग धोडा खोलिया सिलहखानौ नियौ खरचौ लीवी। रहकळा री गाडी दस एक थी सो लीवी।
– नापै साखलै री वारता
उ० –२ एका बहला रहकळा ऊपर बैसाणजै छै।
- रा. सा. स
उ० –३ वळळ हूट रहकळां पूट नाळिया जबूरा। रथ वहला रेवत, भार पडतल भरपूरा। सू प्र
उ० ४ भिडज हुय विजई भागणै सहस अठार रहकळा साथै।
—सू प्र

रहकणौ, रहकबौ–क्रि. स.–गाया जाना, गाना।
उ०–केई ढाल कमाळ धरा रहमड धडक्कै। मुरणायै मालुळै, राग सीधूओ रहक्कै। —पा प्र

रहकियोड़ौ–भू का कृ–गाया हुआ।
(स्त्री रहकियोड़ी)

रहड़णौ, रहड़बौ–क्रि स –१ लूट–मार करना लूटना।
२ जीतना, अधिकार में करना।
उ० - आहाँच मीर आगरइ आइ रहड़िया देस बाजा रुडाइ। गहिलउ मडसिंग चाहिय पठाण, आगरइ बयानइ फेरि आण।
—रा ज सी

रहड़ियोड़ौ–भू का कृ–१ लूट मार किया हुआ लूटा हुआ २ अधि-कृत किय हुआ, जीता हुआ।
(स्त्री रहड़ियोड़ी)

रहड़ू–देखो 'रहट' (रू भे)
उ०– मेला रा धमोडा पड़े छै। मेला रा फळ सूरा रे मोरै भाजि भाजि रहिया छै। सूरा रै मोरै भूखा बाग ज्यौ असवार नै घोडौ आफळि रहिया छै। सूरा रौ सिकार मारीजै छै। एकल डाहिजै छै। रहडू मगाइजै छै। रहडू धानि धानि नै चलना कीजै छै। --रा सा स

रहण–देखो 'रहवण' (रू भे)
उ०– धाइ धारा उतरै खान मुरताण तिमट्टा। गाव राण हुइ

रहच, मीर उमराव महट्टा। —गु. रू. ब.

रहचक-सं पु -युद्ध, लड़ाई।

उ०—तडा भ्रन तडा मीसोद कीधा तडळ, **रहचकां** रांग सुरताण रीधा। सिंधुरां पडाउ लियण बध मेहुरा, देहुरा देहुरा चाढ दीधा।
—उम्मेदसिंह सिमोदिया री गीत

रू० भे०—रहच्चक, रहच्चक्क।

रहचट-सं. स्त्री-तेज दौड़।

रहचण-सं. स्त्री.-१ संहार, नाश।
२ कष्ट, दुख, विपत्ति।
वि -मारने वाला, संहार करने वाला।
रू० भे०—रहच्चण।

रहचणौ, रहचबौ-क्रि. स -१ संहार करना, मार काट करना, मारना।

उ०—१ अजड मेवाड रायजीप 'मालव' नणा, तुरक दळ **रहचिया** रायमल तीर। अमर घड तोड श्रोहाल मुह ऊतरे, नदी नदियां मिळै रातडो नीर। —महाराणा रायमल्ल री गीत

उ०—२ रावण कूंभ मेघ स्वर **रहचै**, कथ सौ वेद पुराण कही। बगसी भूपां भूप बभीखण, सरणागत हित लक सही।
— र ज. प्र

२ पराजित करना, हराना।

उ०—सबल बाज गजराज सकबध अकबर तणा, **रहचिया** मीर हालै रढाळै। —नैणसी।

३ वीरगति प्राप्त होना, मरना, जूझना।

उ०—रिण **रहचिया** म रोय, रोए रिण छाडै गया। उण घर नौ आगा लगै, मरणै मगळ होय।
—जखडा मुखडा भाटी री बात

रहचण हार, हारौ (हारी), रहचणियौ —वि.।
रहचिग्रोडो, रहचियोडौ, रहच्योडौ —भू का. क्र.।
रहचीजणौ, रहचीजबौ —कर्म वा.।
रहचणौ, रहचबौ, रहच्चणौ, रहच्चबौ, रहिचणौ, रहिचबौ
—रू. भे.।

रहचाणौ, रहचाबौ-क्रि. स. ['रहचणौ' क्रि. का प्रे. रू] १ संहार कराना, मार काट कराना, मरवाना।
२ पराजित कराना, हरवाना।
३ वीर गति प्राप्त कराना।
रहचाणहार, हारौ (हारी), रहचाणियौ —वि.।
रहचायोडौ —भू. का. क्र.।
रहचाईजणौ, रहचाईजबौ —कर्म वा.।
रहचावणौ, रहचावबौ —रू. भे.।

रहचायोड़ौ-भू. का. क्र.-१ संहार कराया हुआ, मार काट कराया हुआ, मरवाया हुआ. २ पराजित कराया हुआ, हराया हुआ ३ वीर गति प्राप्त कराया हुआ।
(स्त्री, रहचायोडी)

रहचावणौ, रहचावबौ-देखो 'रहचाणौ, रहचाबौ (रू भे)
रहचावणहार, हारौ (हारी), रहचावणियौ —वि.।
रहचाविग्रोडो, रहचावियोडौ, रहचाव्योडौ —भू का. क्र.।
रहचावीजणौ, रहचावीजबौ —कर्म वा.।

रहचावियोड़ौ-देखो 'रहचायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रहचावियोडी)

रहचियोड़ौ-भू का. क्र-१ संहार किया हुआ, मारा हुआ २ पराजित किया हुआ. ३ वीरगति प्राप्त हुवा हुआ।
(स्त्री. रहचियोडी)

रहच्चक, रहच्चक्क-देखो 'रहचक' (रू भे)

उ०—हजारां गुडै वीछुडै एक होदा। **रहच्चक्क** मातो छुटै तक्क रोदा। रा. रू

रहच्चण-देखो 'रहचण' (रू. भे)

रहच्चणौ, रहच्चबौ-देखो 'रहचणौ, रहचबौ (रू भे.)

उ०—१ मरोडै गजा कध श्रोडै मरट्ट, **रहच्चै** जिसा सिंघ मुक्की रवट्ट। कमीमैं गुणा श्रीमटकी कबाणा, बळी भीम बरथा कळी पत्थ बाण। — वचनिका

उ०—२ महा दिय मान करी गुह मीन, तारै सह कीर कुटुंब महीन। करै कपि मित्र सुग्रीव सुकाज। **रहच्चै** बालि दियौ नपि राज। —ह र.

रहच्चणहार, हारौ (हारी), रहच्चणियौ —वि.।
रहच्चिग्रोडो, रहच्चियोडौ, रहच्च्योडौ —भू का. क्र।
रहच्चीजणौ, रहच्चीजबौ —कर्म वा.।

रहच्चियोड़ौ-देखो 'रहचियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री रहचियोडी)

रहछह-स स्त्री महफिल, गोष्ठी।

उ०—१ गोठ री नयारी कीवी। अमला री **रह-छह** मडी छै। भूरी, मेवनी, काळी, किमनागर, आगराई, मरोडी, मुहरतोलौ लाभै तिण भात री केसरियौ, पोता घोळियौ, मनुहारा हुवै छै।
—डाकाळा सूर री बात

उ०—२ सिकार चढती वगत अमला री **रह-छह** मडी। मनुहारा माथै मनुहारा होवण लूकी। —फुलवाडी

रहट-देखो 'अरट' (रू भे.)

उ०—१ भव २ भमते पार न पायौ, मोह **रहट** की माला। पाबु ग्यानी तो अब पूछ्ू, कब यह मिटय कमाला। —ध. व. ग्रं.

रहडू, रहडूओ-सं पु -एक प्रकार की गाडी जिसमे भार लादा जाता है, शकट।

उ०—१ फौजां आगै आतस चालै छै। जबरजंग नालि, किलकिला

मालि, अंबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, मुतरनाळ, कुहकबाण, गोम चंगी कई भांति भांति रा आगाबा रहकूण चाली आवै छै।
—रा. सा स

उ०—२ बंदूकों को स्थिर करने हेतु बनाया गया गाड़ी नुमा छोटा वाहन।

रू० भे०—रहक, रेहू

रहकण—वि.—रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला।

उ०—राव राय रखपाळ, राव रहकण रिम राहां। राव कुरूप हराय, राव वैरी घनमाहां।
—नैणसी

रहकणौ, रहकबौ—क्रि स—१ रोकना, अवरुद्ध करना।

२ नाश करना, तहसनहस करना।

रहण—स. पु—घर, गृह, आवास। (अ. मा)

वि०—१ रहने वाला।

२ देखो 'रहणी' (रू भे.)

उ०—१ रवाई गढ़, पाणी गढ़, कटक नगाउ गढ़, वयरीप्रवेस नहीं, हाथिया नगा तोवा नहीं, पाथरिया रहण नहीं। —व स.

उ०—२ पाधारिसिउ म राति वारण वनि पूरि रहण करउ। ताय तणइ बहुमानि हू आराधिसु तुम्ह पय।
—मालिभद्र सूरि

रहणाक—स. पु.—गृह, सदन, घर। (ह ना मा)

रहणि—देखो 'रहणी' (रू भे)

उ०—दादू रहणि कबीर की, कठिन विषम यह चाल। अधर एक सौ मिळ रहया, जहा न भौ काल।
—दादूवाणी

रहणी—स स्त्री. [स. रह्] १ रहने की क्रिया या भाव।

२ रहने का ढंग, तौर-तरीका, चाल-ढाल, रहन-सहन।

उ०—रहणी मै जोगेस्वर कहणी मै जगदीस। रहणी मै मिवनेत्र कहणी मैं अहीस।
—रा रू

३ जीवन निर्वाह, व्यवहार, आचरण।

उ०—लूणीए फसले लाग देखी करी, गम्या आपणइ पासोजी। कही रहणी देखी रजिया, सहु को कहइ साबासो जी। —स कु

४ किसी विशेष सिद्धान्त या साधना को अपने जीवन मे व्यावहारिक रूप देते हुए किया जाने वाला जीवन निर्वाह। शुद्ध आचरण, मर्यादित जीवन।

उ०—१ कहणी प्रभु रीझे न कछु, रहणी रीझै राम। सुपने की सौ म्होर सू, कोडी सरे न काम।
—ऊ का

उ०—२ कथि कथि कहणी अगम की, रहणी रह्या न जाय। हरीया भेद विचार बिन, लूण लखण नही काय। —अनुभववाणी

उ०—३ उत्कृष्टी रहणी रहइ रिखि रूडउ रे, साधनउ मुगति नउ पथ रिखीसर रूडउ रे।
—स कु

५ आवास, निवास, ठहराव, विश्राम।

६ निष्ठा, श्रद्धा।

रू० भे०—रहण, रहणि, रहिणि, रहिणी रेणी।

रहणौ, रहबौ—क्रि अ [स रह प्रा. रहट] १ बिना किसी परिवर्तन के एक ही स्थिति मे अवस्थान करना, रहना, एक रस या समरस अवस्था मे होना।

उ०—१ भजन करै याकी बड भागी, भजै नहि सो महा अभागी। लेवन लगन परम पद लागी। रात दिवस रहिये अनुरागी।
—ऊ का.

उ०—२ जिम भविक रहइ मुनीरथ नइ दरसनि दातार रहइ सन्यासनइ सगमि ....सुमित्र रहइ सद्गुरुनइ सयोगि —व स

२ कही ठहरना, टिकना, विश्राम करना।

उ०—१ मइ घोडा बन्धा घणा, रहिसउ मास चियारि। राति दिवस रोलइ करइ, रहसउ राज दुवारि। —ढो मा.

उ०—२ बान मुगी पाछउ बलइ जा नवि देखइ मग। चउवीस [वास] रहइ जिमु रहीम [अगग]। - मालिभद्र सूरि

उ०—३ कुळ न्यात रोग पीरा कुटळ, जिकै विगाड़ जात रा। सम सेण बान मुगज्यो, मती रहण न दीज्यो रात रा। -ऊ का

३ चलने हुए का रुकना, जाते हुए का ठहरना।

उ०- १ वयणे माळवणी-तणइ, रहियउ माल्ह कुमार। प्रेमइ बध्यउ प्री रहइ, जउ प्री चालणहार। —ढो. मा

उ० २ मामू बहुय न वालइ पाउ, ऊभउ न रहइ जूठिलु राउ। माही बोलइ साभति भीम, केनी भुइ वयरी नी सीम।
—मालिभद्र सूरि

४ किसी क्रम का चलना बंद होना रुकना।

उ०—पिउ जुव्वा भय पाच सो, रहिया प्रीति अग्म। कमध मझूका काम छल, दूजा आया दम।
—रा रू

५ निवास करना, बसना।

उ०—१ आरा डूगर भुइ घणी मज्जण रहइ विदेस। मारी-नागी पलटी, केती वार लहेस।
—ढो. मा

उ०—२ राय बोलतइ नीगइ अवसरि दोषी नाम चपेट। भक्ति घरि म रहिसी रे नु लपट पुर हम पुरिउ पेट। —हीराणद सूरी

उ०—३ घर मे ममइया घर रहो, वन ममया वन माहि। हरिया घर वन समभिकै, बोलगा कु कुछ नाहि —अनुभववाणी

६ मौजूद होना, वर्त्तमान होना, विद्यमान रहना।

उ०—१ जिनै 'जसौ' पह जीवियौ, थिर रहिया मुरधाण। आगळ ही 'अवरग' सू, पडियो नह पाखाण।
—वा दा

उ०—२ पछइ एह लखमी रहइ जउ वलनउ उपकार न कीजइ तउ कतरुन हुईइ.... .
—व स.

उ०—३ हउ माट बाला कुमराय जाउ, वरइ जिको सूतलि वीरनासउ। रहू मु सू आगलि लेइ बाण, दाखउ जिमिट युद्ध तणू प्रमाण।
—मालि सूरि

उ०—४ करणी कीरतवत री, रैणा अत रहत। सब दाना रौ सेहरो, कीरत दान कहत। —ऊ का

७ स्थित होना, स्थापित होना, स्थिर होना। पाबद होना।

उ०—१ अवलबि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणि। लाज लोह लगरै लगाए, गय जिम आणी गयगमणि —वेलि

उ०—२ तुझ रणागणि कारणि कउण हउ, अपति तेडी आगलि हू रहिउं। कहिकि द्रोण कि भस्मि कि करण कइ, समरि हौ हिव नेडउ कइ सवइ। —सालि सूरि

८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रहना, आधारित रहना।

उ०—वार वार वाखांणवै, सर 'प्रताप' ससार। सको रहै घर आसरै, आ घर तो आधार। —जैतदान बारहठ

९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष मे होना।

उ०—१ सालूरा पाणी विना रहइ विलखा जेम। ढाढी साहिब सू कहइ, सो मन तो विण एम। —ढो. मा.

उ०—२ मन तन परमानद मे, सानद रह्यौ सदीव। सात सुखी ससार मे, 'जसवत' समो न जीव। —ऊ का

उ०—३ या भव जग मे यू रहौ, ज्यू कवळा जळ पास। हरिया जहा मन राखियै, जुरा न जम का पास। —अनुभववाणी

१० सम्पर्क मे आना, साथ रहना।

उ०—दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर। रीझै रीजै राखणा, दासी जादा दूर। —बा दा.

११ जीवन यापन करना, जीवित रहना, जीना।

उ०—१ धरीया अवतारू अत न पारू, रहना एक रहंदा है। —अनुभववाणी

उ०—२ जहा पहलवा जीभ सू, केकाउस कहियोह। अतक केहर अगर औ, रुस्तम नह रहियोह। —बा दा.

उ०—३ कोई कौसळ वसत्रे कोट कवळि। जग भाखियौ रहंति जगि। —वेलि

१२ बचना, शेष रहना।

उ०—मोताहळ रहसी नही, हैवर हीर चमीर। जेहलिया जाता जुगा, बाता रहसी बीर। —बा दा

१३ छूट जाना, रह जाना। पीछे रह जाना।

उ०—२ जन हरीया निरकार कु, भजि पु हते भौ पार। से आसै आकार कै, रहिगे ऊलै वार। —अनुभववाणी

१४ काम पर लगना, नौकर होना।

ज्यू—वौ कारखाना मे रह गयौ।

१५ चुपचाप समय बिताना, शान्त रहना।

उ०—१ सेछा राह निभाह कज, दिल्ली औरग साह। ज्यूं सामद्र अजाद सू, यूं रहियौ स्रम दाह। —रा. रू.

उ०—२ सहि सोरा सइव करइ, सनमथ अगि नमाइ। हू एकलडी किम रहउं, सेह पधारउ साइ। —ढो मा.

१६ किसी कार्य मे लगा रहना, सलग्न होना।

उ०—१ जुध दिल्ली रहिया जुडै, 'रैणायर' 'रुघपत्त'। सिर राणी दळ सज्झिया, 'औरगसा' असपत्त। —रा. रू.

उ०—२ ज्यू ए डूगर समुहा, त्यू जइ सज्जण हुति। चपावाडी भमर ज्यउ, नयण लगाइ रहति। —ढो मा.

उ०—३ सावळि काइ न सिरजियां, अबर लागि रहंत। बाट चलता साल्ह प्रिव, ऊपर छांह करत। —ढो मा

१७ होना।

उ०—१ सामू दादी सासुआं, राजी सयल रहंत। साजी नू मीरा कहै, मोटा सत महत। —बां. दा.

उ०—२ बैरे बेस न भर कियै, मन मे रहौ सधीर। हरिया साहिब सा धणी, पारि उतारै तीर। —अनुभववाणी

उ०—३ प्रधान मनोहर परिसत्, सुभट स्रेणि, विनोदीयाना विनोद, साहस सो [वो] लाना समूह, उचित बोलानी ओलि, कला वतनी क्रीडा भूमि, कूबडानी कोडि वामणाना विनोद, पुण्यवत रहइ प्रमोद, वयरीह विसाद, कवि ना कल्लोल, वादी नउ विवाद, वैदेसिक विलास। —व. स.

उ०—४ सोसइ सउरू महातपि आतपि रहइ गभीर। मोह तणा जग बधव बध वक्रोडइ धीर। —जयसेखर सूरि

रहणहार, हारो (हारी), रहणियौ —वि।

रहिओडो, रहियोडो, रह्योडो —भू का. कृ।

रहीजणौ, रहीजबौ —भाव वा।

रयणौ, रयबौ, रहवणौ, रहवबौ, 'रे'णौ रे'बौ' —रू भे.

रहत—देखो 'रहित' (रू भे)

उ०—१ विस्या हाथ आवै नही, सिस्या जीव रहत। जीव सहित ते योगसा, स्री जिन वांणी तहत। —जयवाणी

उ०—२ हरीया रमा को मिळै, चित चौथै विसराम। ताप त्रिगुण सु रहत है, निज भगता निहकाम।

—अनुभववाणी

रहतिका—स स्त्री —प्रथा, परम्परा, रीति रिवाज, रूढि।

उ०—काहू के रस रहतिका, काहू के रस काम। काहू के रस जोग का, हरिजन के रस राम। —ह. पु वा.

रहतौ—वि —रहने वाला, न मिटने वाला, अमिट, अमर, स्थाई।

उ०—१ रहता सोई जाणीयै, रहता सू मिळ जाय। हरीया रहता राम विन, काळ घरासै आय। —अनुभववाणी

उ०—२ ऊ नावज केवळ, वडै महाबळ, रोम रोम उचरदा है। रहता सु रहता, है निज तता, त्यागा हय निरखदा है।

—अनुभववाणी

रू० भे०—रहिती।

रहन, रहनी—देखो 'रहणी' (रू भे.)

उ०—१ **रहन** अनोखी रीति सहज स्वभाव सीधी, कहन सुनन कथा यथा तीर मन के। —ऊ का

उ०—२ किन आयी किन घर मैं आयौ, मोल लियौ पर जनी कहायौ। कहा भयौ जे जनी कहाई। **रहनी** एक रनी नही गाई।
—अनुभववाणी

रहम—स पु. [अ.] १ अनुग्रह, दया, कृपा।

उ०—बिहद हदी **रहम** देख अमहूल दहलै। —केसोदास गाडण

रहमत, रहमति—स. स्त्री [अ रहमत] दया, करुणा, कृपा, तरस।

उ०—१ पछै बादसाह नू चाहीजै आसा प्रभू री कृपा री करै और हिम्मत **रहमत** रहीम री छै। —नी. प्र.

उ०—२ धारेला गुर धरम कू, डारेला दुरमति। गारेला जम चोट कू, लारेला **रहमति**। —अनुभववाणी

रहमदिल—वि. [अ.] दयावान, कृपा करने वाला। तरस खाने वाला।

रहमदिली—स स्त्री. [अ] १ 'रहमदिल' होने की अवस्था या भाव।
२ दया, करुणा, तरस।

रहमाण, रहमान—वि [अ रहमान] दयालु, कृपालु, मेहरबान।

उ०—काबिल कलाम कहियत करीम, **रहमान** इल्म रयत रहीम।
—ऊ का

सं. पु—ईश्वर, परमात्मा, खुदा।

उ०—१ हरीया जुग बिह सीदीयै, जा कू भगति न भाय। से रता **रहमाण** सू, और न भावै दाय। —अनुभववाणी

उ० २ हरीया हौदै बीच मैं, सुभि मिल्या **रहमान**। पुरा लिख दिया परा, मरन न बूझै मान। —अनुभववाणी

उ०—३ दादू दिल अर वाह का सो अपना ईमान। सोई साबित राखिये, जहं देखं **रहमान**। —दादूवाणी

रू० भे०—रहमान, रहिमाण।

रहमाण-अंस—पु [अ रहमान+स अंश] ईश्वर का अंश, भगवान राम का अंश।

उ०—श्री सरसत गणपत नमसकार, दीजै मुझ वर बुध उदार। अवसाण सिध **रहमाण. अंस** वाल्हाण कहू न्रप भागवंस।
—वि सं

रहरह—अव्य [अनु.] रुक-रुक कर।

उ०—गई रवि किरण अहै थई गहमह, रह रह कोट वह रहे रह। —वेलि

रहरू—स पु—रक्त, खून।

उ०—**रहरू** मेहो राचियौ, रगि धरा बिरा सिर रीस। रवडी भळक न भू रवडी, खग भळक न खळ सीस।
—रेवतसिंह भाटी

रहळ, रहल—स स्त्री [अ] १ पढने समय पुस्तक रखने का एक आधार जो लकड़ी की दो पट्टियों को क्रोस नुमा (X) जोड़ कर बनाया जाता है।

वि. वि—इसमें दोनो पट्टिया बीच में से कैंची नुमा जुड़ी होती हैं, जिससे इसको खोला व समेटा जा सकता है।

२ कातिक मास में चलने वाली मद-मद व ठडी-ठडी पवन। ठण्डी हवा का एक हल्का सा झोका। (ना डि को.)

उ०—ठडी **रहळ** चलाई हे राम। —लो गी

रू० भे०—रहलि, रहळी, रहिळ, रैळ।

रहळि, रहळी—देखो 'रहळ' (रू भे)

उ० अवरंग धार भार आछटिया, धड लूटिया भेळा धरणा। वाळै हेम जिम वारहियौ रुक **रहळि** दे भीक रणा।
—नाथौ सादू

रहळ—वि —खाली, रिक्त।

उ०—घर बसियौ धण नेह नीर न बसियौ चू डरा। नेह गयौ नी नेह, रयणायर **रहळ** थयौ। - फेफाणाद री वात

रहवइ—स पु [स रथपति; प्रा रहवइ] रथ मे बैठने वाला, रथ पति।

उ०—चूरइ **रहवइ** नरग रोहि दनुमलि डारइ। अरजुन पाखइ पड करकु हणतु कृष्ण वारइ। —सालिभद्र सूरि

रहवणौ रहवबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू भे)

उ० आ उठै नायरा रहै अर हीडा करै। रजपूता नी सीधौ मिठाई ले जाय देवै। यूँ भात **रहवै**। —चौबोली

रहवर—स पु—१ भालिनी वश की रथ शाखा व उस शाखा का व्यक्ति।
२ उत्तम रथ, सुन्दर रथ।

उ०—हय गय **रहवर** हजुवाण। नव चोरासी मदिर हुवाण।
—व स्त

रहवाण—देखो 'रहावण' (रू भे)

रहवाळ—स स्त्री [फा रहवार] घोड़े की एक चाल विशेष।
रू० भे०—रैवाळ।

रहवास—स पु—१ रहने की क्रिया या भाव, निवास, विश्राम।
२ मकान, घर।
३ रहने का स्थान, निवास स्थान।

उ०—भरमल भहरो आप री **रहवास** री उठै कर राखियौ थौ।
—कु वरसी साखला री वारता

४ विश्राम करने का स्थान।

उ०—इसी **रहवास** री जायगा देख नै कु वरसी री मन प्रसन्न हुवौ। —कु वरसी साखला री वारता

५ निजी महल, कमरा, कक्ष।

उ०—१ ताहरां कुंवर तो अठा मौं ऊठ नै अर आपरै **रहवास** आयौ पण उदास बहोत हुग्रौ। —नैणसी

उ०—२ तद भग्गमल री **रहवास** रै एक खिडकी कराई।

—कुंवरसी सांखला री वारता

६ अन्तःपुर, रनिवास।

उ०—१ तठै रांणी देखनै सखी नूं कह्यौ—तु जाइनै कहि, राणी **रहवास** रै चहबचै माहै डूबी। अर रांणी तौ आप री कोटडी मांहै छिप रही छै अर सहेली जाय कही, राज, राणीजी तौ **रहवास** रै चहबचै माहै डूबा। —बूढी ठग राजा री बात

उ०—२ आदर अत खित ऊठियौ, प्रथम सुता परवार। असवारी रा ऊधरा, अस बाढिया अपार। धडच कनाता धार सूं, गौ **रहवास** मझार, नूरमली लख ल्हामनै, मौर झली तरवार।

—रा रू

रू० भे०—रइवास, रहवासि, रहवासी, रहास, रेवास, रैवास।

रहवासि, रहवासी—स. पु—१ रहने वाला, निवासी।

२ देखो 'रहवास' (रू भे.)

उ०—माह गयौ दरगाह सूं, निज **रहवासि** अनेह। हितकर बोलाया हिनू, गौसल अतर गेह। —रा रू

रहस—१ देखो 'रहसि' (रू. भे.)

२ देखो 'रहस्य' (रू भे.)

उ०—१ गुनी गुन गायौ जस छायौ या जहान बीच, चार को उधार चाह्यौ **रहस** रचायौ तें। —ऊ का

उ०—२ पढवौ वेद पुराण, सोरौ इण ससार मे। बाता तणा विनाण, **रहस** दुहेलौ राजिया। —किरपाराम

रू० भे०—रहसि, रहस्स, रहस्सि।

रहसणौ, रहसबौ—देखो 'रहचणौ, रहचबौ' (रू भे)

उ०—'पेम' 'मोहकम' 'अजन' 'लाल' मोटै परब, 'नवल' 'ऊदौ' 'जगौ' 'जैत' हरनाथ। 'भोमसी' 'बाहदर' 'कमौरी' खी······भड, साम छळ **रहसीया** नहसीया साथ। —सतीदान बारहठ

रहसि—पु. [स. रहस्] १ सभोग, मैथुन, केलिरस्।

उ०—१ रमता जगदीसर तणौ **रहसि** रस, मिथ्या वयण न तासु मह। मरमै रुखमणि तणी महचरी, कहिया मू मैं तेम कह।

— वेलि

उ०—२ श्रोण झील कम कमं, किये करिमरा चडाण। रचे सेज रिण- भोम, कुसम अरि कमळ बिछाण। नवस तिकव सरकूंत, सहै अन-मध अचगळ। पाण पयोहर कठण, मथै मैंगळ कुंभाथळ। विपरीत **रहसि**, वीरारम हि, रण दूभळ हुइ रठ्ठवड। सूतौ सग्राम करि श्रोण हर, भूप माण सग्राम घड।

—गु रू. ब.

२ रहस्य, भेद।

रू० भे०—रहस, रहस्सी।

रहसियोड़ौ—देखो 'रहचियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रहसियोडी)

रहस्य—स. पु. [स] १ गुप्त भेद, गुप्त सूचना।

उ०—प्राणात पहुमि परिणाम यस्य, रट्ठौर सकळ सबत रहस्य। हस्ताक्षर ह्वेरह हिय हुलास, दुरद्धर दुरुहरु 'दुरग्गदास'।

—ऊ. का

२ किसी विषय मे होने वाला वह सूक्ष्म अर्थ जो सर्व साधारण के समझ मे नही आता है। गूढार्थ।

उ०—जो आगै चौरासी बध रूपका के सब भेद नवरस अलंकार मजुगति गेतौ सब ही सुणवै मे आया। पै एक खट-भाखा की जुदी जुदी **रहस्य** तौ कहा कहा किसी किसी कवीसुर पास दरसाई। —सू प्र.

३ मर्म या भेद की बात, गूढ बात।

४ गोपनीय विषय, गोपनीय सिद्धान्त।

५ ईश्वर एव सृष्टि से सम्बन्धित गुप्त बाते जो ज्ञान चक्षु एवं साधना से जानी जा सकती है। (अध्यात्मवाद)

६ एक तान्त्रिक प्रयोग।

रू० भे०—रखस, रस्य, रहस, रहस्स, रहिस।

रहस्यमंदिर—स पु [स रहस्+मदिर] केलिगृह, रतिक्रीडा-गृह, रग-महल।

उ० सखीया आगै जाय केलिग्रह कहता **रहस्यमंदिर** सयन मदिर तिहिको अगणा मारजण कहता सवारयौ। —वेलि टी.

रहस्स—१ देखो 'रहस्य' (रू. भे)

२ देखो 'रहसि' (रू. भे)

रहस्सी—१ देखो 'रहस्य' (रू भे)

२ देखो 'रहसि' (रू भे)

रहा—देखो 'रहा' (रू भे)

रहांण—स पु—१ गाव या मोहल्ले का वह स्थान जहा पर लोग गपशप करने के लिए एकत्रित होते हैं। अथाई, बैठक।

उ०—हिमै रतना चीता रौ गाव। विखै **रहांण** मागीखौ।

—नैणसी

रू० भे०—रयाण।

२ देखो 'रहणी' (रू. भे.)

रहा—स स्त्री—कान, श्रवण।

रू० भे०—रहा।

रहाड़णौ, रहाड़बौ—देखो 'रहाणौ, रहाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ दूहा मैं आखिया, रस नीत रौ **रहाड़**। सभा भरी मझ साभळै, चिड़ै जिको हिज चाड। —बा. दा.

उ०—२ जे कलभ क्रीडिउ निरमल नरमदा जलि, नेह कूपिका

अगि किम पुजइ अगि, जउ अमभ करिउ हुइ इक्षवाड़ि, नमु अगि किम पुजइ रहाड़ि जइ पोधउ हुइ इक्षुरस, नीह किम भावइ नीवरस, नीह हुइ दूध पामि, नीह किम भावइ नीर रस, नीह हुइ दूध पामि, नीह किम भावइ छामि''',

व स

रहाड़णहार, हारो (हारी), रहाड़णियो —वि ।

रहाड़ियोड़ो, रहाड़ियोड़ो, रहाड़योड़ो —भू का कृ ।

रहाड़ीजणो, रहाड़ीजबो —कर्म वा ।

रहाड़ियोड़ो—देखो 'रहायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. रहाड़ियोड़ी)

रहाणो, रहाबोह—क्रि स ['रहणो' क्रिया का प्रे. रू] १ बिना किसी परिवर्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान कराना, एक रस या समरस अवस्था में कराना ।

२ अस्थाई रूप से कहीं ठहराना, टिकाना, विश्राम कराना ।

उ० —कमध घड़ा पूरे भिलवाणी, परियो नाह मुरद्दर पाणी । हम पर साह उदैपुर आयो, आजमसा चीतोड़ रहायो । —रा रू

३ चलते हुए को रोकना, जाते हुए को ठहराना ।

४ किसी क्रम का चलना बंद कराना । रोकाना, रोकना ।

५ निवास कराना, बसाना ।

उ०— गोरीसाह सा खूनी रसैन नागोर आया । मेरे दादे प्रथीराज प्राण ज्या रहाया । —रा रू

६ मौजूद करना, उपस्थित करना विद्यमान रखना ।

७ स्थित, स्थापित या स्थिर करना, पाबंद करना ।

८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रखना, आधारित रखना

९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष में रखना ।

१० सम्पर्क में लाना, साथ रखना ।

११ जीवन यापन कराना, जीवित रखना ।

१२ छोड़ देना, रख देना ।

१३ बचाना, शेष रखना ।

१४ काम पर लगाना नौकर रखाना ।

१५ शांत व चुप चाप रखना ।

१६ किसी कार्य में लगा रखना सलग्न या व्यस्त रखना ।

१७ अधिकार में या अधीन रखना ।

उ०—नागासैर तिन्ना छोड़ि घारे नाम आया । तिन्नो मेर रोड़ राव मेला कै रहाया । —शि व

१८ रखना ।

उ० जळवा ताम नरूको आदम भुर ऊठी पतिवरत तणे भ्रम । राखि सम पति ग्यान रहायो । मजरा कर सिरागार मगायो ।

—रा रू

रहाणहार हारो (हारी) रहाणियो —वि. ।

रहायोड़ो —भू का. कृ ।

रहाईजणो, रहाईजबो — कर्म वा ।

रहाड़णो रहाड़बो, रहावणो, रहावबो —रू भे ।

रहायोड़ो—भू का कृ —१ बिना किसी परिवर्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान कराया हुआ, एक–रस या सम–रस अवस्था में किया हुआ २ अस्थाई रूप से कहीं ठहराया हुआ, टिकाया हुआ, विश्राम कराया हुआ ३ चलते हुए को रोका हुआ, जाते हुए को ठहराया हुआ ४ किसी क्रम का चलना बंद किया हुआ, रोका हुआ ५ निवास कराया हुआ, बसाया हुआ ६ मौजूद किया हुआ, उपस्थित किया हुआ, विद्यमान रखा हुआ ७ स्थित, स्थापित या स्थिर किया हुआ, पाबंद किया हुआ ८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रखा हुआ, आधारित रखा हुआ ९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष में किया हुआ १० सम्पर्क में लाया हुआ, साथ रखा हुआ ११ जीवन यापन कराया हुआ जीवित रखा हुआ १२ छोड़ा हुआ, रख दिया गया हुआ १३ बचाया हुआ शेष रखा हुआ १४ काम पर लगाया हुआ, नौकर रखा हुआ १५ शांत या चुप चाप रखा हुआ १६ किसी कार्य में लगा कर रखा हुआ, सलग्न या व्यस्त किया हुआ १७ अधिकार में या अधीन रखा हुआ १८ रखा हुआ ।

(स्त्री रहायोड़ी)

रहावण—स स्त्री —१ रहने की क्रिया या भाव ।

२ रहने का ढंग तरीका ।

३ सभा, बैठक ।

वि -१ रहने वाला 'वाली रहने योग्य ।

उ०- कोल न किनो राज राण जाणे कमध, रहावण वात सिर हुवै राजा । जमा-अरियान रा माहि मु झूझना, मार बळि लूटना पातिसाहा । —जसवतसिंह राठौड़ री गीत

२ रखने वाला ।

उ०—गढ़ जाळ धर रखियो, भडारी मनरूप । अनमी त्या नामगा छळा, सोमि रहावण भूप । —रा रू

रू० भे०— रहवाण ।

रहावणी- वि —रखने वाला ।

उ०—रीति रहावणो जी, ऊनी यादगी कीरति कवि करे जी । पर भुइ परसरी प्रघट प्राक्रमी जी मतवर नपि स्वरी वासो रग वसै जी । —ल. पि.

रहावणो रहावबो—देखो 'रहाणो, रहाबो' (रू भे)

उ०—१ हैदो इद्र जिही पराग आदर । सुर सुर धरम रहावण सभर । मारो दळ भाजा पतसाही । नरा वखाण वाच निरवाही ।

—रा. रू

उ०—२ अस गल्ह रहावण जे सहल, मइयळ भजै मेहवर। 'गजमल्ल' 'मल्ल' 'संगे' कुळी, रिण दुफल्ल रट्टौड़-हर।
—गु. रू. ब.

उ०—३ कायथ करत रहावणा माम काम ममराथ। काया त्यागी केहरी, नह दी माया नाथ। —रा. रू.

रहावणहार, हारौ (हारी), रहावणियौ —वि।

रहाविओड़ौ, रहावियोड़ौ, रहाव्योड़ौ —भू. का. कृ।

रहावीजणौ, रहावीजबौ —कर्म वा।

रहावियोड़ौ—देखो 'रहायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री, रहावियोड़ी)

रहास—देखो 'रहवास' (रू भे)
उ०—बागौ पैरै, पाघ बांधै, मुद्रा लपेटी राखै, रजपूता नै घोड़ा ऊट बगसीस करै, नै माहै तो कोइ जायै नहीं, बारै हीज रहास करायनै रह्यौ। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

रहिचणौ, रहिचबौ—देखो 'रहचणौ, रहचबौ' (रू भे.)
उ०—रासि जमहि रहिचीया पलब बुमट मापड़ियौ। मधुवन मा माहवा, लाख दैता सू लड़ियौ। —पी ग्र

रहिचियोड़ौ—देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री रहिचियोड़ी)

रहिणि, रहिणी—देखो 'रहणी' (रू. भे)
उ०—एकणि रहिणि बडी मनि ग्रामति, सामा मोह चडावण साख। बिरिद उजाळ भाळ भुजाळ धजाबध, भूपति भेद नहै खट-भाख। —ल पि

रहित—वि [स] १ हीन, विहीन।
उ०—भीखणजी स्वामी बोल्या—तिम ए धोवण उन्हौ पाणी पीवै पिण समकित चरित्र रहित तिण सू बगी बगाड ब्राह्मणी रा साथी है। —भि द्र.
२ बगैर, बिना।
३ अभाव पूर्ण, अपूर्ण।
४ पृथक, अलग, मुक्त।
५ त्यागा हुआ, त्यक्त, छोड़ा हुआ।
६ निर्जन।
७ अकेला।
रू० भे०—रहत, रहिय।

रहितौ—देखो 'रहतौ' (रू भे.)

रहिमाण—देखो 'रहमाण' (रू भे)
उ०—दईवाण सुरताण दीवाण तू हीज देवा, माडिया मडाण केई समद मथाण। कुरवाण रहिमाण कुराण पुराण कहै, आपरौ कल्याण दाण उग्रसेन आण। —पी ग्र.

रहिय—देखो 'रहित' (रू. भे)
उ०—विरचइ बिपिन विच खण तखण दस बि दसार। नव नव निरमल भूखण दूखण रहिय सिंगार।
—जयसेखर सूरि

रहियोड़ौ—भू. का कृ.—१ बिना किसी परिवर्तन के, एक ही स्थिति में अवस्थान किया हुआ, रहा हुआ, एक रस या सम रस अवस्था में हुवा हुआ. २ अस्थाई रूप से कहीं ठहरा हुआ, टिका हुआ, विश्राम किया हुआ. ३ चलने से रुका हुआ, जाने से ठहरा हुआ ४ बद हुवा हुआ, रुका हुआ। (क्रम) ५ निवास किया हुआ, बसा हुआ ६ मौजूद हुवा हुआ, वर्तमान हुवा हुआ, विद्यमान रहा हुआ. ७ स्थित, स्थापित या स्थिर हुवा हुआ, पाबद हुवा हुआ. ८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रहा हुआ, आधारित रहा हुआ ९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष मे हुवा हुआ १० सम्पर्क मे आया हुआ, साथ रहा हुआ. ११ जीवन यापन किया हुआ, जीवित रहा हुआ, जीया हुआ. १२ बचा हुआ, शेष रहा हुआ. १३ छूटा हुआ, रहा हुआ, पीछे रहा हुआ. १४ काम पर लगा हुआ, नौकर हुवा हुआ. १५ चुपचाप समय बिताया हुआ, शान्त रहा हुआ. १६ किसी कार्य मे सलग्न हुवा हुआ १७ हुवा हुआ।
(स्त्री रहियोड़ी)

रहिळ—देखो 'रहळ' (रू. भे.)
उ०—हेमत रित लागी। सिसिर रित री रूक रहिळ वागी।
—रा. सा. स.

रहिस—देखो 'रहस्य' (रू भे.)
उ०—१ जद सुमलौ बोल्यौ—मेंहदी जागां छूटै नहीं। ज्यू साची श्रद्धा री रहिस बेठी पिण आगला सेंहदा कुगुरु त्यारौ संग छोड़ै नही। —भि द्र.
उ०—२ गढ़ कोट्ट पर अमल रग का चढाव तिस बखत रग–राज के हौक (बैं) रस रहिस की बात। अमलु का चढाव सोभा दरसात। —सू. प्र

रहीम—स पु. [अ.] १ ईश्वर का एक नामान्तर, परमात्मा, खुदा।
उ०—एकादसी वरत हिंदवांणी, रोजा ईद भया तुरकाणी। करि करि ईद इग्यारमि रोजा, रांम रहीम न पाया खोजा।
—अनुभववांणी
२ बादशाह अकबर के दरबार के एक मंसबदार, अब्दुल रहीम खानखाना का कविताई उपनाम।
वि. वि.—ये एक अच्छे कवि थे। साहित्य जगत मे आज भी इनका नाम प्रमुख कवियो मे गिना जाता है।
वि.—दयालु, कृपालु।
उ०—काबिल कलाम कहियत करीम, रहमान इल्म रव्यन रहीम।
—ऊ. का.

रहीस–देखो 'रईस' (रू. भे.)

उ०—महिमा महीस नै महीम मों मुनी है मुख। माक अरावीम की रहीस सुन गीमे ना। —ऊ. का.

रहीवौ, रहीबौ–देखो 'रमोडो' (रू. भे.)

रही–सही–वि. [अनु.] बचा-खुचा, रहा-सहा, अवशिष्ठ, शेष।

रां–देखो 'रा' (रू. भे.)

उ०—पतिमिमो आव तूं प्याव पांडव प्रभू, महमहण नाहरा . अमल मेळा। बांधिया कांड बलिराउ रां बेलियां, भूधरा करौ पहिलाद मेळा। —पी. ग्र.

रांइणि–देखो 'रायण' (रू. भे.)

उ०—नीमा नारिगा, रगड बीमना मुरगा, पाकी नीकोली रांइणि, प्रीसी भाइणि, दाडिमनी कळी, बातां पूजइ रळी। —व. स.

रांक–वि. [स. रंक] १ कायर, डरपोक, भीरू।

उ०—एक बीर तनु रोम उध्रसइ, एक रांक रिग माहि नीसरइ हैय देव कृपि दुरमति दीधी, तउ ग्रोळग म्हाूं काउ लीधी।

—मानिभद्र सूरि

२ देखो 'रंक' (रू. भे.)

उ०—१ राजीया केई दीवांग रांक, सुर कोरि तीस सुर करै सांक। प्रगमनि नाग अनेक पीर, माहिवी नमौ मांमळ सरीर।

—पी. ग्र.

उ०—२ अर्गानि फूल, ममी रौ नाळेर, कार्नी रौ बेहडो, रळीआरा रौ जोड, रांकां रौ माळवौ, कुआरी अवा रौ बींद।

— मा. म.

रांकड़ौ–देखो 'रंक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—काळप्या कोडि किनक, लीला ही लाभै नहीं। मो रांकड़ रतन, दियौ दया करी देवजी। —वील्हौजी

रांकमुहा–स. पु.–पवार राजपूत वंश की एक शाखा।

रांकावत–स. पु.–ऋग्वेदी ब्राह्मणों की एक जाति जो माधु, स्वामि नाम से सबोधित की जाती है।

रांग–सं. स्त्री.–१ मकान, महल किले आदि की नीव।

उ०—१ पछै धणी साथ रालियौ। धणा घोड़ा लिया। गढ धातण री रांग रोपाई। भीत हुण लागी। —नैणसी

उ०—२ तळाव किलाणसागर राणी हाडीजी नांम जमरादेजी हाडी माहाराज श्री जसवतसिंघजी री राणी बूंदी रा राव छतरसालजी री बेटी स० १७२० रा वैसाख सुद १५ रांग माडी नै स. १७३० रा जेठ सुद प्रतमटा हुई। —मारवाड री ख्यात

२ दरार।

३ बबूल व बेर के वृक्ष की छाल, जो शराब बनाने तथा चमड़ा कमाने के काम आती है।

४ एक वृक्ष विशेष, बेर का वृक्ष।

उ०—१ रावण रांग रतातली, रवणी नड रुद्राख। रुक रुदती रायमलि, रोहड रोहिणी लाख। —मा. का. प्र.

उ०—२ रामोडी नड रामना, रीसिणि रुद्र-जटाय। रांग रतांजणि रूमडी, रनि वनि रग धराय। —मा. का. प्र.

५ देखो 'रान' (रू. भे.)

उ०—कथ वृकड बक मुहा कवळा। उछळत कुळांछि जिके अवळा। अवलवल रागी यवा अजणी। रांग दावत नाचत मोर रणी। —मा. वचनिका

रांगड़–देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

रांगड़ापण, रांगड़ापणौ–स. पु.–वीरत्व, योद्धापन।

उ०—जागिया ठोर सिंधू गावे जागडा, लडरा रग खागडा वीर हलकै। भेर नग जठै पीधा अमल भागडा, जो मरद रांगड़ापणौ भळकै। —माधोसिंह मनकावत री गीत

रांगड़ौ–देखो 'रंघड़' (अल्पा., रू. भे.)

उ० माकुरा ऊपडी बाग हैकपै आलमा मारी, हरा मार लक नै दिखाया भारी हाथ। वेढीगारा रांगड़ा यू धगारा बाला, नगारा बागता गाम तूठिया निघाथ।

--विमनसिंघ राठौड़ री गीत

रांगजड़–स. स्त्री.–बेर वृक्ष की जड़। (शेखावाटी)

उ०—रळा रांगजड़ रग, वगावै दारू देसा। मुळकत मन मनवाळ, कोटड़या रवै हमेसा। —दसदेव

वि. वि.—यह औषध में भी काम आती है। (अमरत)

रांगटौ–देखो 'रूगटौ' (रू. भे.)

रांगणवाय–स. स्त्री. [स. रिंग] एक प्रकार का वात रोग जिसमें कमर, घुटनों और टांग में दर्द होता है, गृध्रसी।

रू० भे०–रींगणबाय, रींघणबाय।

रांगरगीलौ–देखो 'रगरगीलौ' (रू. भे.)

उ०—गुदी तेरी रांगरगीली तकनी चक्करदार। चोखौ बण्यौ दमड़कौ तेरौ, कूकड़िये रौ तार। —लो. गी.

(स्त्री. रागरगीली)

रांगलौ–वि.–रगदार, रगीन।

उ०—चरखौ तो ले ल्यू भवरजी रांगलौ जी, हा जी ढोला। पीढो लाल गुलाल। —लो. गी.

रांगे–क्रि. वि.–१ सही रास्ते पर।

उ०—म्हे माळै ऊभी आ सगळा नै घणा ई बरजिया। किणी भाव नी मान्या तौ म्हे गोफणा रा सटीड उडाया। दो असवारा रै दिगनी लिहया पछै ए रांगे आया। —फुलवाडी

२ वश में, काबू में, प्रभाव में।

उ०—नानी पोटाय पाटाय, बिलमाय-बिलमाय हार थाकी पण हम बरसा री बाळ-हठ रांगे नी आयो सो नी आयो।

—फुलवाड़ी

३ सामान्य दशा या अवस्था मे, साधारण स्थिति मे।

रांगौ—सं. पु. [स. रंग] श्वेत रंग की एक अत्यन्त मुलायम धातु जो बहुत चमकीली होती है और जिसकी बर्तनो पर कलई की जाती है।

रांघड़, रांघड़ौ—देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

उ०—१ चसळकै दंत चरखी चलाय, खिज रया दिवाना भग जाय। रांघड़ा थळी रा जूंग राज, गू गला जोड रा करय गाज। —पे. रू.

उ०—२ टाट्या सिरदारा रा माथा देख्यां पछै ई थें चलाय नै बीडो उठायौ। ऐ रांघड़ा रा काम तौ रांघडा नै ई छाजै। —फुलवाडी

रांचणौ, रांचबौ—क्रि. अ.—१ खडे खड़े तकना, लालायित होना। किसी को एक-टक देखते रहना।

उ०—पग तौ मसांणा लग पूगा अर हाल पातर रै घरै रांचतौ फिरै। —फुलवाडी

२ चोरी करने या हडपने की दृष्टि मे ताकना, घात लगाना।

उ०—१ जार तणौ गुण जाय, रात पडै जद रांचवा। ठग कोई साधु थाय, माळा ग्रहिया 'मोतिया'। —रायसिंह सादू

उ०—२ दूसरा जेम नह रांचियौ देख नै, अरस रौ म्याचियौ थकौ आयौ। लाघडौ कपी ज्यू राम लायौ लडै, लडै जिम 'जुहारौ' भ्रात लायौ। —बुधजी आसियौ

उ०—३ दातार है जिण सू धन नही धन विना मैहल वणै नही सूरवीर पणा सूं धन री कुमी नही जिण सू धाडायत रांचीया नै खाणार पीणार जिण सू धन जमै होवै नही तद ऐवास वणै नही। —वी. स. टी

३ किसी बात का ध्यान देना, ध्यान रखना।

उ०—सह रांचै जन मादिया, मत बहरौ कर मान। कीडी पग नेवर भणक, भणक सुणै भगवान। —र. ज. प्र

४ देखो 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे)

राचणहार, हारौ (हारी), राचणियौ —वि.।

राचिग्रोडौ, राचियोड, राच्योडौ —भू का कृ.।

राचीजणौ, राचीजबौ —भाव वा.।

रांचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ खडे खडे तका हुआ, लालायित हुवा हुआ, किसी को एक टक देखा हुआ. २ चोरी करने या हडपने की दृष्टि से ताका हुआ, घात लगाया हुआ. ३ किसी बात का ध्यान दिया हुआ, ध्यान रखा हुआ।

४ देखो 'राचियोडौ' (रू भे)

(स्त्री रांचियोडी)

रांझड़—सं. स्त्री.—तकरार, विवाद, झंझट।

उ०—'मां'राज! बाराना मे जचा'र आठांना किया देवौ हौ।' क्या कैवूं? म्हारी डोकरी गोरमिटी इयैं ऊपर म्हारौ जोर को चालै नी।' डोकरी बोली—नालै कनी रांड रा, क्यूं रांझड़ करै है? —बरसगांठ।

रांझौ—स. पु.—१ समस्या, उलझन।

उ०—पुटियौ तो लिया दिया बैठो हौ। कैवण लागौ—ऐडौ एक कावळ रांझौ पडग्यौ। सात समदरा पार लोग इण बात रौ लेखौ लेवण सारू भेळा व्हिया के दुनिया मे मिनख घणा है के लुगाया घणी। —फुलवाडी

२ व्यवधान, विघ्न, अडचन, बाधा।

उ०—१ थे निरात सूं सोवौ म्हैं इण सनमन मे को रांझौ नी पटकू ला। इण सगाई मे रांझौ पटकिया म्हारी सीख मैं पैं'ला रांझौ पडै। —फुलवाडी

उ०—२ थू डोकरी नै इत्ती डराय दी तौ पछै को रांझौ ई नी रह्यौ। —फुलवाडी

रांटलौ—देखो 'राटौ' (अल्पा., रू. भे)

रांटौ—वि. (स्त्री. रांटी) १ मुडा हुआ, टेढा।

२ टंटा फिसाद करने वाला। (अल्पा. राटलौ)

रांड—स. स्त्री. [स. रण्डा, रंडा] १ वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, विधवा स्त्री।

उ०—१ हाथ झटक झिझकार हस, नाथ न लेऊ नामजी। भव भाड इसे भरतार सू, रांड भली श्री रामजी। —ऊ. का.

उ०—२ चल रंगरेजा में नहिं चाहू, भल नहिं सोभा भग। अलमित देखिर जळै अग में, रांड कसूमल रंग। —ऊ. का.

२ वेश्या, रडी, पतुरिया।

उ०—हमियौ जग आसक हुए, वमियौ खोवण वीत। रमियौ नागी रांड सू, फसियौ होगा फजीत। —बा. दा

३ व्यभिचारिणी स्त्री, कुल्टा नारी।

उ०—जुरती नहिं आवन जावन की, फुरती नहिं रांड फसावन की। परवाह न पाट पटबर की, अध चाह सु कंबर अबर की। —ऊ. का.

४ स्त्री के लिए एक भद्दी गाली।

उ०—१ 'लाव तमाखू लाव' पाव पुळ चैन न पावै। 'रांड सूयगी राड' जुलम सब रन जगावै। —ऊ. का.

उ०—२ जद हिंसा धरमी बोल्या—दया २ ग्यूं पुकारौ छौ। दया रांड पडी उखरली मे लोटै। —भि द्र.

उ०—३ पेट रा जाया ई धावळा रा गुलाम बणग्या। पछै ते लिछमिया क्यू धारै। रांडां रा तन तन मे कीडा पडै। —फुलवाडी

५ स्त्री जाति के लिये एक भद्दा सम्बोधन।

६ वह गाथा छंद जिसमे 'जगण' का अभाव हो।

उ०—अगन बिना सो रांड गमीजै । किणी मांझ सो गाहा न कीजै । —र. ज. प्र

रू० भे०—रंडमी, रडा, रडी, रांडो ।

अल्पा. रांडोली—मह०—रंड, रडाळ ।

रांडणी, रांडबौ—क्रि स [स. रण्ड] किसी स्त्री के पति को मार कर विधवा बनाना ।

उ०—रांवण मन जांणियौ फळ सीता पटराणी । रांडी मदोदरी लक पुनि हुई बिरांणी । —ग्रोपो ग्राढी

रांडापौ—देखो 'रडापौ' (रू भे)

रांडावणौ, रांडावबौ—देखो 'रांडणौ, रांडबौ' ।

रांडियौ—वि—१ स्त्री—लोलुप ।

उ०—दाम री भाम भेली दुकर, सब मारै नै माडियौ । छिना पर इता गुण छाड दे, राड न छोडै रांडियौ । —ऊ. का

२ अयोग्य, नामर्द, कायर ।

उ०—गोरी री कमाई खासी रांडिया रे, हा रा गोरी, कै गांधी कै मणियार । म्हे ग्रा बेटा साहूकार रा जी । —लो गी

रांडी—देखो 'राड' (रू भे.)

उ० १ पाव पाटे भद्रिड भीम भिडी ऊपाडी गीस । नवि मारिउ छइ मारी वर्याणि जिम नवि दीसइ रांडी भयणि । —सालिभद्रसूरि

उ० —२ आभै ग्रागं हुवा जोगिणी, ग्रा' तो ग्राई बात बरणी । राम भरणि बिन व्हैगी भाडी, मुवै कु परणाया रांडी ।

—अनुभववाणी

रांडीरांड—स स्त्री —विधवा स्त्री ।

उ०—वा धणां रै मरणा री मुणावणी, वो मा रो रोवणो, वो रांडीरांड री भेख - —फुलवाडी

रांडीरोणौ, रांडीरोवणौ—स पु—व्यर्थ की हाय-हाय, अनर्गल प्रलाप । अपना रोना हर किसी के सम्मुख रोने की क्रिया या भाव ।

उ०—म्हैं थारो मरम सुणण नाह धाई हु, पण पै'ला थोडो सो म्हारो रांडी-रोवणो-रोवू ला । —फुलवाडी

रांडूल्यौ—देखो 'रांडोलौ' (रू भे.)

रांडेपौ—देखो 'रडापौ' (रू. भे.)

उ०—वडि बिग वाद न कीजै राणा, अपग न पैस पाणी । राज गयो रांडेपौ पागो, भणै मदोदर राणी । —मेहोजी गोदारो

रांडोलियौ—देखो 'रांडोलौ' (रू. भे.)

रांडोली—देखो 'राड' (अल्पा ; रू. भे)

उ०—नैणा रा सोगन करै, भै मानै सुण भूत । रामन कुलां री रमै, रांडोली रा पूत । —बा दा

रांडोलौ, रांडोल्यौ—वि —स्त्रियो कैसे स्वभाव वाला, कायर, नामर्द, अयोग्य

उ०—ना नारी ना नाह, ग्रद बिचला दीसै ग्रपन । कारज सरे न काय, रांडोलां सू राजिया । —किरपाराम

२ जिसकी स्त्री मर गई हो ।

रू० भे०—रांडूल्यौ, रांडोलियौ,

रांढु, रांढू—स पु —मोटा, रस्सा ।

उ०—१ माखत रांढु मू ज को, भीनौ करै मरोड । हरीया गुर बिन बहि गया कना लाख करोड । —अनुभववांणी

उ०—२ तुरत बधावी रांढु मे ए, जेह ना हाथ ने पाय । नगरी माहै बाहिरे ए, फेरी जे तसु काय । —जयवांणी

उ०—३ तद मू ज ऊठ दोयरी मगायी नै जाडा जाडा रांढू बटाया अर बीच मैं हाथ रै ग्रातरै लकडी रा गाता दिया रस्सा बीच ।

—द. दा.

उ० —४ पछे रावळ जैतसी जिण भुरजा दिसा धरती नीचे री थी, तिणा दिसा रांढू नखाय नै लुणकरण कल्याणमी नू नै इणां रै साथ नइ ऊपर चाढियो । —नैणसी

रू० भे०—रढू

रांण—स पु [स राट] १ राजा, नृप । (डि को., डि ना मा)

उ०—धिनो ग्रहराण मर्भ केवाण, खमै खग्गांण मरुधर रांण — राव जैतसी रो रासो

२ रावण, दशानन ।

उ० - १ सामद उलटो भाम सिर, कै रांण प्रगट्टो राम दळ ।

—रा रू

उ०—२ विलिवग्रा दिग्रा बिछाड, भाजै हरि भगवानिए । जाणि कि वाण विधू सिग्रा, रांण नरणा कपिराइ । —वचनिका

उ०—३ हई लक मे बूब ग्राया हलारै । मर्यो रांण रा सात हज्जार मारै । 'प्रवो' रांण रो पूत छूटो अछायो, घणी क्रोधि तेनू हणू मान पायो । —सू प्र.

३ स्वामी मालिक ।

उ०—१ पाड, नबाटा पाग, हमणो विन ने हैडियां । रे कछवर री रांण, ग्राज कठी गी 'ग्रावडा' । —पा. प्र.

उ०—२ सबावना रांण गळा भज सेन । पाछी सबदीप पलटूण ठेल । मवै नर ग्रायस झाक अमग । रिपु बहु 'ज्वार' हण्या बिच जग । —अग्यात

४ देखो 'राणा (मह, रू. भे.)

उ०— माभी मोह मराट, 'पातल' रांण प्रवाडमल । दुजडा किय दहवाट, दळ मैगळ दाणव नणा । —सूरायचजी टापरयौ

उ०—२ ग्रोग ने ग्रासाण, टाका हरवल हालणी । किम हालै कुळ-रांण, टरवल माहा हाथिया । —केसरीसिंह बारहठ

उ०—३ ग्रानावै रणि गारड ग्रवतरि, दीधै त्रीस खट कुळि दाउ । राण सेस अमुधा खत्र रावण गणि न पातरियो ग्रहिराउ ।

—गोरधन बोगसो

रांणकरा, रांणकिया, रांणक्या—स स्त्री.—सोलकी वश की एक शाखा ।

रांणखमांण, रांणखुमांण–स पु. यौ.–छोटे बडे जलाशय ।

उ०—डूंक्या-डूंक्या रांण-खमांण मिरगे बिना मिरगी एकलडी । मिरगौ छोड गयौ वनखड माय, मिरगी ने एकलडी । —लो गी.

रांणदे–स. स्त्री –सूर्यदेव की पत्नी ।

उ०—इनरा मे भळकते कमळ तेज रौ पुज निसचर निरदळण कालिंगदैन रौ कळण बीम रौ सिणगार ओटण अधार आभीजोत कामिव वस रौ उद्योत रांणदे रौ नाह भासकर देवाध बोलिया । —मा. वचनिका

रांणपर–स. पु –एक प्राचीन नगर विशेष का नाम ।

उ०—जूनुगढ चापानेर माडवगढ, अणहलपुर पाटण, रांणपर वीसलनगर वडुदरू······ —व स

रांणबांण–वि –१ निपुण, दक्ष ।

२ चतुर, बुद्धिमान ।

३ दृढ, पक्का ।

४ पूर्ण स्वस्थ ।

राणवत–देखो 'राणावत' (रू भे)

राणवाळौ–वि महाराणा का, महाराणा मे सम्बन्धित, महाराणा के योग्य ।

उ०—१ 'अभा' आदि उमराव रांणवाळा मन रक्खै । वरण इद्र धनवन, इसौ 'अगजीत' निरक्खै । —रा रू.

उ०—२ 'अमरसी' रीत 'अवरग' तणी आदरी, चित्रगढ तणी आदू तजी चाल । सामद्रोहा हुआ राणवाळा सुपह, राण पाराथियौ वियौ रिडमाल । —दुरगादास राठौड आसकरणोत रौ गीत

रांणा–सं. स्त्री [स राट]१ भिन्न २ राजवशो का उपटक जो उन राज वशो के शासक के नाम के साथ लिखा या बोला जाता है ।

२ देखो 'राना' (रू भे)

रांणाई–म. स्त्री –१ 'राणा' होने की अवस्था या भाव ।

२ राणा का पद या पदवी ।

उ०—सवत १६१६ रा भाद्रवा वद ३ सीमोदिया सगर उदैसिघोत रौ जनम । पातसाह जहागीर मया कर अजमेर, नागोर चित्तोड दे रांणाई दीवी । —बा दा. ख्यात

३ राणा पद का गौरव, स्वाभिमान ।

४ राजा होने वाली अवस्था या भाव, राजत्व ।

उ०—पछै मूळराज रावळ हुवौ । रतनमी नू रांणाई रौ विरद । —नैणसी

रांणादे–देखो 'राणदे' (रू भे)

रांणापति–स. पु.–राणादेवी का पति, सूर्य भगवान्, सूर्य ।

रांणापण, रांणापणौं–स पु –१ वीरता, बहादुरी ।

२ देखो 'राणाई'

रांणाराव–सं.पु.–१ महाराणा ।

२ श्रेष्ठ पुरुष ।

रांणावत, रांणावत–स. पु –१ महाराणा उदयसिंह के वश की एक शाखा, सीसोदिया वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—जगमाल उदैसिघोत रै वस रा रांणावत १ कानावत २ कछवाहा सुरताणोत राणावत ३ राठौड बादावत ४·········· —बा दा ख्यात

२ राठौडो की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रू० भे०–राणवत,

२ देखो 'रांणी' (रू भे.)

रांणी–स स्त्री [स राज्ञी, प्रा राणी] १ किसी राजा या राणा की स्त्री, रानी ।

उ०—१ वडै वस ऊपनी वडी रांणी भाटियाणी, बोली राजा हूत जिका पूरै व्रत जाणी । —रा. रू

उ०—२ गिरमी गिरमी मे गिरवै मुडियोडा, जान्है हैंस ज्यू गोडा जुडियोडा । कुलटा साची व्है ठुकराणी कूडी । पडदै पडदायत रांणी सू रूडी । —ऊ का.

२ ताश का वह पत्ता जिस पर स्त्री की तस्वीर हो ।

३ स्वामिनी, मालकिन ।

४ एक प्रकार का वर्षा ऋतु मे होने वाला कीट विशेष ।

रू० भे०–राणि ।

रांणीजणियौ, रांणीजायौ–स. पु –१ राणी की कुक्षि से पैदा होने वाला राजपुत्र, राजकुमार ।

२ राजपूत, क्षत्रिय ।

उ०—सुणियौ आगम सत्र रौ, अरर जडै निज नैण । रांणीजाया किम रहै, विरुद धरम कुळ वैण । —वी. स.

रांणीपद, रांणीपदौ–स पु –सभी रानियो मे प्रमुख होने का सम्मान या अधिकार । रानी का पद ।

उ०—१ लिखमी रै बेटा दोय हुआ–वाघौ, नरौ । वडा जोरावर हुआ । मातल रै छोरू न हुवौ । ताहरा टीकौ सूजेजी नू दियौ । रांणीपदौ लिखमी नू दियौ । —नैणसी

उ०—२ राणी श्री पतापदेजी रै रांणीपदा रौ दसतूर सू राणी श्री हाडी जी नु रांणीपदा रौ बटौ दियौ । —मारवाड रो ख्यात

रांणीमंगाभाट–स पु –केवल रानियो की ससुराल मे नामावली लिखने की वृत्ति करने वाला भाट ।

रांणेराव–म. पु –महाराणा ।

रांणेस–स पु –१ राजाओ मे श्रेष्ठ, महाराजाधिराज ।

२ महाराणा ।

रांणोरांण–स पु.–सभी प्रमुख व प्रतिष्ठित व्यक्तियो का समूह ।

वि.–समस्त, सब ।

रू० भे०–राणोराण ।

राणौ—स. पु [स राट्] (स्त्री राणी) १ राणा पदवी धारी राजवंश का राजा। २ उदयपुर के राजाओं का उपटंक, पदवी, उपाधि।
३ उदयपुर का राजवंश।
४ उदयपुर का राजा, महाराणा।
उ० —१ धाटपति मेवाड़ धारी रवे, निअरा दीध राणं। बापड़ बवगुणी बाजी, गुमर धरियौ बियैं 'गाजी'। —सू प्र
उ०— २ परबत पई पछाड़िया, मरी बावन देव। कुंभकरण राणौ कियौ, ग्रइयौ 'रयण' ग्रजेव। —बा दा
उ०— ३ जुध दिल्ली रहिया जुड़े, 'रैणायर' 'उथपस'। सिर राणं दळ सज्मिया, ग्रौरंगसाह ग्रसपत। रा रू
५ राजा, नृप।
उ०—१ पातसा श्री ग्रकबर बरणवू, परिण करया एक पातसा श्रीग्रकबर जंबूद्वीप माहइ प्रवरततु छइ, ग्रन्य पराय राणा, मोटा मीर मालिक माहाभड़ खान, खोजा, मरक्षिल माहणा, ते सघला करइ सेवा. . .। —व स.
उ०—२ रीझी मुण चन्द्रावत राणी। साय साथ कज ग्रवणा सुहांणी। —रा रू
उ०—३ नृ हीग्र राजा रांमचद पृ रावण राणा।
— केसोदास गाडण
६ रावण, दशानन।
उ०—राणं सनवती हरण मारीच पठाया। —केसौदास गाडण
७ नक्कारची, ढोली। (ढूंढाड़, जयपुर)
उ० राणौ एक जूटी दोय राज का दरोगा। पारासुर बभी दोय टूक टूक होगा। — शि व
रू० भे०—रांणौ।
मह०—राण।
राणौराण—देखो 'राणाराण' (रू भे)
उ०—सिसिपाळ सक्यो चित्त समक्यो, जरासंधि नइ जाण। शिवइ माहरा हाथ जोड्यो, मिळी राणौराण। —रुकमणी मगळ
रांती—वि —ग्रत्यन्त ही क्षीणकाय, मरियल, कृशतन।
उ० --बीस दिना मे थारी मास नो पाळ्या मे ग्रायग्यो। हाथी की जैड़ी डील हो, थाकने रांती व्है ज्यू व्हैगो। —फुलवाड़ी
रांदा—सं. स्त्री —राठौड़ वश की एक उपशाखा।
रांदौ—स पु —राठौड़ वश की रांदा शाखा का व्यक्ति।
रांधण—स. स्त्री —१ पकाने की क्रिया या भाव, पकाने की विधि।
उ०—मे महाजन जीमता बखाण करै, फलाणा गाम री रांधण देखी। धमकडियै सहर री रांधण देखी। पिण इसी चतुराइ कोइ देखी नहीं। —भि द्र
२ देखो 'रधीण' (रू. भे)
रांधणछठ—स स्त्री. यौ.—भादो शुक्ल पक्ष की छठ।
रांधणा-सीधणा—स पु यौ —भोजन—सामग्री, खाद्य पदार्थ। भोजन के रूप तैयार वस्तुए।
उ०—कुघरणि महा कुहाडि सदा धरइ ग्राटोप, बइठी भरतार दिइ निरोप, डोइला हेठै किकिउ घरइ, मुहि साम्ही चीबर बरइ। रांधणां-सीधणां नितु ग्रणाहर करइ, सकल दिवस सूग्रर जिम चरइ .....। —व. स
रांधणौ, रांधबौ—क्रि स [स. रधन] १ चावल, खिचड़ी, भोजन, खाना ग्रादि पकाना, पक्वान्न बनाना।
उ०—१ दळिया रांधं दळबळिया हळवाणं, बेचण बीदणिया ईधणिया ग्राणं। लादी भागी नै ग्रोळावौ लेती, दुरबळ बारी नै ग्रोळावौ देतां। —ऊ. का
उ०—२ जाहरा भगति हुई सु चावळा रै ग्रोसावण सु घोडा ऊठ पाया, इतरा चावल रांधा। — जागळ री बात
उ०—३ सो एकै दिन देपाळ धाडौ लेनै ग्रावतौ हुतौ। सो हरख री ग्राप रै नळाव ऊपर गोठ कीवी। ग्रठै मास रांधौ। चावळ राधा। ग्रर रोटा हुवै छै। —देपाळ ध ध री वात
२ कष्ट देना, तग करना, यातना देना।
उ०—१ ग्रौगुणगारा ग्रौर, दुखदायी सारी दुनी। चोदू चाकर चोर, रांधै खानी राजिया। --किरपाराम
उ०—२ म्हनै देखियौ तो डोकरी म्हारै माथै उलळगी। किडकिडिया चावती बोली—तडकै तडकै ग्रौ लैणायत रांधण नै बळग्यौ। —फुलवाडी
रांधणहार, हारौ (हारी), रांधणियौ - वि.।
रांधिग्रोडौ, रांधियोडौ, रांध्योडौ —भू का कृ.।
रांधीजणौ रांधीजबौ - कर्म वा।
रांधियोड़ौ—भू का कृ —१ पकाया हुग्रा, पका कर बनाया हुग्रा २ कष्ट दिया हुग्रा, तग किया हुग्रा यातना दिया हुग्रा।
(स्त्री रांधियोडी)
रांन—स स्त्री [फा रान] १ जघा, जांघ।
[स. ग्ररण्य] २ वन, जगल।
उ०—मोटा रे पिण कस्ट मे, जनन नेह मट्ठ जाय। राते रमणी रांन मैं, नाखि गयौ नळराय। —ध व ग्र.
३ देखो 'राण' (रू भे)
उ०—या विचार बैण बोलै, तेज सू समसेर तोलै। मूछ के रोम व्योम कू उट्ठै, रांन के माण जमरान से रुट्ठै। —रा रू.
रांनळ—स. स्त्री —सूर्य री पत्नी।
रू० भे०—रानिळ, रानिल्ल
रांनळपति, रांनळपती—स. पु.—सूर्य, भानु, रवि। (ग्र मा)
रांनळवर, रांनळसुवर—स पु [राज रानळ+स वर] सूर्य, भानु (ना मा., ह. ना. मा.)

रू० भे०—रांनिल्लवर

रांना—स. स्त्री.—१ सूर्य की पत्नी या स्त्री।

उ०—कूरमी कमधज्ज सु, भ्रोपै वामै भ्रग। रवि **रांना** ससि रोहिणी, सुरपति सचि किर सग। —रा. रू.

२ देखो 'राणा' (रू. भे)

रांनापत, रांनापति—स. पु.—सूर्य, रवि। (ना. डि. को.)

रांनिल रांनिल्ल—देखो 'रांनळ' (रू. भे)

उ०—ए तू भ्रागिइ ऊपनु, भ्रागि जि वरसइ भ्रगि। **रांनिल** किम रगि रमइ, सूरिज केरइ सगि। —मा का प्र

रांनिल्लवर—देखो 'रांनळवर' (रू. भे)

उ०—सहिस-किरण सिर सचरइ, मह सरयासर जेम। **रांनिल्लवर** रहुं नही, भ्रबला पीडइ एम। —मा. का प्र.

रांनी—देखो 'रांणी' (रू. भे)

रांपुड़ो—स पु—एक प्रकार का घोडा। (शा. हो)

राप—सं स्त्री—जलाशय का जल समाप्त होने पर निकलने वाली ऊपरी तह की चिकनी भ्रौर पतली मिट्टी।

उ०—रवडी जिसडी रांप, पचाम्रत पांणी पालर। मोल मळाई स्याळ, चीकनौ चूंटौ कालर। —दसदेव

रांपड़ो—स पु [देशज] १ पतले लोह का बना छोटा गडासा, एक कृषि उपकरण। (शेखावाटी)

२ देखो 'रापौ' (भ्रल्पा, रू. भे)

रांपलो—देखो रापौ' (भ्रल्पा, रू भे.)

रांपो—स. स्त्री मोचियो का चमडा तराशने, काटने भ्रौर साफ करने का एक भ्रौजार जो खुरपी के भ्राकार का होता है।

रांपो—स. पु—वह व्यक्ति जो पैर मे वात रोग के कारण कोई कार्य करने मे भ्रसमर्थ हो।

भ्रल्पा०—रापडौ, रापलौ,

रांफल—स० स्त्री.—१ बहुत से लोगो की भगदड।

२ लड़ाई, फिसाद।

रांफळणो, रांफळबो—देखो 'भ्राफळणौ, भ्राफळबौ'

उ०—भड खाटण प्रभत्त सकोहा साफळै। लै जरमन परलोक रहच्चै **रांफळै**। —किसोरदान बारहठ

रांफळियोड़ो—देखो 'भ्राफळियोडौ'

(स्त्री. राफळियोडी)

रांभणो, रांभबो—देखो 'रभाणौ, रभाबौ' (रू भे.)

उ०—१ मौ गाया मरसीह, सुण पावु भ्रासै सगत। त्रण दिन री तरसीह। **रांभै** धाधळराव उत। —पा. प्र.

उ०—२ दादी सासू, पोतिया जु बाई नै देखण नै तरमी भ्रर हाथ री कापती दो भ्रागळया एक भ्राख रै एडै-छेडै देय' र रसोई री बारी सू ऊलळी, जाणै सुवाड़ी गाय लुबारै टोघडियै पर **रांभी** है। —दसदोख

रांमस—स. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

रांम—स पु. [स. राम] १ ईश्वर, परमात्मा, (ना. मा.)

उ०—१ **रांम** नाम सदा बाणी, **रांम** नाम सदा कथा। **रांम** नाम सदा सब्द, ते सबद, सुक्यारथा। —ह र.

उ०—२ हर राम रु **रांम** गिणे हर से, जग मे गुरु जेमल मे दरसै। —ऊ. का

उ०—३ जेमलमेरी जोड़, भ्रवर भटियाणी भ्रावै। उर भ्रचेत इण काम, **रांम** त्या हेत न रावै। —रा. रू.

उ०—४ वडौ तू नान्हौ एकोजि ब्रह्म, पडां जस काखुं कांसु प्रम। गीभावा तुझ किसी विधि राम, पूजीजै कीजै केम प्रणाम। —पी. ग्र.

उ०—५ मिदर मे जाय हाथ जोडनै वौ ठाकुरजी नै माथौ निवावण लागो उण पैंला ई उगरी निजर कळाकद सू भरियोडी थाळी रै परसाद माथै पडी। मूडा में **रांम** नाव रै बदळै लाळां सळवळण लागी। —फुलवाडी

२ ब्रह्म

उ०—**रांम** सकळ मैं रमि रह्या, हाजरि खडा हजूर। हरीया भ्रध न देखई, चुह दिस ऊगा सूर। —भ्रनुभववाणी

मुहा०—१ रामकहणौ=मरना, मृत्यु को प्राप्त होना।

२ रामजाणै=जिसे राम ही जानता है, मनुष्य की जानकारी मे न हो।

३ रामनिकळणौ=भ्रशक्त या क्षीण होना, श्रीहत होना, मरणासन्न होना। मति भ्रष्ट होना, ईमान समाप्त होना।

४ रांम बोलणौ=कोई भ्रच्छी बात किसी के मुह से स्वतः प्रगट होना, मरना

५ राम राम करणौ=राम नाम से किसी का भ्रभिवादन करना, जैसे-तैसे समय गुजारना।

६ रामसरण होणौ=ईश्वर की शरण मे जाना भ्रर्थात मृत्यु को प्राप्त होना, मरना।

३ विष्णु का एक नामान्तर

४ सूर्य वंशी राजा दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जो विष्णु के भ्रवतार माने गये हैं। (भ्र मा, ना मा)

उ०—१ उगवार तहव्वर जोर इसौ, जुध **रांम** दळा सिर कुंभि जिसौ। —रा. रू.

उ०—२ निमौ रुघनदण **रांम** नरेस। सत्रघण साथ लखमण सेस। —पी. ग्र.

उ०—३ केसरीसिंघ रामसिंघ सबलसिंघ के जाए। **रांम** बाण से भ्रचूक रोद्र छोभ पाए। —रा. रू.

उ०—४ भ्रसुर मार तू भ्रातमा, निमौ तुहारा नाम। मारै ता समपै मुगति, राकस तारै राम। —पी. ग्र.

५ श्रीकृष्ण के बडे भाई बलराम, का नामान्तर।

६ परशुराम।
७ श्रीकृष्ण, श्याम।
८ घोड़ा।
९ एक मृग विशेष।
१० सारतत्व।
११ ईमान।
१२ शक्ति, सामर्थ्य।
१३ योग्यता।
१४ प्रभु के लिए प्रयुक्त होने वाला एक सम्बोधन। ज्यू—म्हारो राम तो अठै काळ आयो।
१५ वरुण।
१६ अशोक वृक्ष।
१७ हरितकी, हरड़। (अ मा)
१८ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएं होती हैं व अन्त में यगण होता है।
१९ देखो 'रामदव'।
वि०—१ सुन्दर, मनोहर, अभिराम।
२ प्रसन्न करने वाला, आनन्द दायक।
३ श्वेत, सफेद। ● (डि. को)
४ कृष्ण वर्ण, श्याम। ● (अ. मा., ह ना मा.)
अल्पा०—रमीईयो, रमैयो, रामइयो, रामड़यो, रामड़ो, रामयो, रामूड़ो, रांमो,।

रामसंजीर—स पु. यौ.—पाकर वृक्ष।

रामसवाच—स पु—एक पौधा विशेष जिसके फूल एव पत्तों मे अजावाइन की गध आती है।

रांमइयो, रांमड्यो—स. पु—१ रामदेव पीर जो रूणीचा के ठाकुर अजमाल जी के पुत्र थे।
उ०—रामइयो अजमाल री भानमजी रो यार। माभिळिमें थलि मां सही, पीरियां तणी पुकार। —पो. ग्र
रू० भे०—रमइयो, रमीईयो, रमैयो, रामयो।
२ देखो 'राम' (अल्पा., रू. भे.)

रामकचेड़ी—स. स्त्री. ईश्वर का न्यायालय।
उ०—सुख में प्रीत सवाय, दुख में मुख टाळा दिवै। जे के कहसी आय, रामकचेड़ी राजिया। -किरपाराम

रामकली—स. स्त्री.—भैरव राग की स्त्री, एक रागिनी। (संगीत)

रामकियो—देखो 'रामतियो' (रू. भे.)

रामकी—स. स्त्री—किसी संत की शिष्या।

रामकेळी—स पु—१ एक प्रकार का बढ़िया केला।
२ आम की एक जाति।

रामक्षेत्र—स पु—दक्षिण का एक प्राचीन तीर्थ। (पौराणिक)

रामखंड—सं पु—एक प्राचीन तीर्थ का नाम। (पौराणिक)

रामगंगा—सं स्त्री—कन्नौज के पास गंगा में मिलने वाली एक नदी।
उ०—देवीनाम भागीरथी नाम गंगा, देवी गंडकी गोगरा रामगंगा। —देवि

रामगिरि—स पु.—१ नागपुर के पास का एक पहाड़ जो आजकल रामटेक कहलाता है।
२ एक राग विशेष। (संगीत)

रामगीता—स. स्त्री—१ एक मात्रिक छंद विशेष। (र. ज. प्र.)
२ वेदान्त का एक छोटा ग्रन्थ

रामड़ो—देखो 'राम' (अल्पा, रू. भे)

रामचग, रामचगा, रामचंगी, रामचंगीय—स स्त्री—एक प्रकार की बदूक
उ०—१ धवं नाळा भड़ा भड़ी धड़ाधड़ी धूंजे धरा। छूटै बांणागोळी, रामचगियां छछोह। —रा रू.
उ०—२ सो जोइया नू रामचंगी बाणा री खबर न थी सो नेड़ा चालिया आया। —कु वरसी साखला री वारता।
उ०—३ सज रामचगिय मार, तेह करत भरत तयार। केई करत पाथर वाज, सब टोप बकतर साज। —पे. रू.
उ०—४ जबर जग नाल्या रा निहा उपड़ि नै रहीआ छै। गज नाल्या सुतर नाल्या, जबूरा नाल्या, रामचंगी हथनाल्या रा चरागाट वाजे छै। —रा सा. स.
२ एक प्रकार की तोप।
उ०—एकै दिन गुजराण माह ढाल दोय अमल गेडारी थी, तिकै निजर कीवी। तरै बड़ी रामचंगी री गोळी बाहि दीठी, तिको बापड़ी होय पड़ियो, गिण ढाल रै रग री चिरक उतरी नहीं। —कहवाट सरवहिये री बात

रामचंद, रामचंद्र, रामचद्रेस—स पु [स रामचन्द्र] १ सूर्यवंशीय राजा दशरथ के बड़े पुत्र 'राम' जो एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति व आदर्श राजा थे और जिन्होंने एक वचन, एक पत्नी व एक बाण, इन व्रतों का निष्ठापूर्वक आचरण किया।
उ०—प्रतापि लकेद्र, गुरुजन विनय रामचंद्र, साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला करण, वचन प्रतिष्टा युधिष्ठिर —व स.
२ ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा (ना. मा.)

रामचरण—स पु—शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रवर्तक एक साधु जो कृपाराम के शिष्य थे।

रामचरित-मानस—स पु. [स] गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित अति प्रसिद्ध एव अत्यन्त लोकप्रिय धार्मिक ग्रन्थ, जिसमे श्रीराम के जीवन चरित्र का वर्णन है।

रामचिड़ी—स. स्त्री.—मछलियां पकड़ कर खाने वाला एक जल पक्षी।

रामजणी—स स्त्री.—१ हिन्दू वेश्या, रंडी। (मा म)
उ०—रामजणी अर कचणी, पातर देवै पाम। है बाघण बन हेक री, रांखै अळगी गाम। —बां दा.
२ वह स्त्री जिसके पति का पता न हो।

रू० भे०–रांमजनी,

रांमजन–सं. पु–ईश्वर का भक्त, संत, साधु।

उ०—१ जन हरीया माया सबै, खाया जुग संसार। एक न खाया **रांमजन**, सतगुर कै आधार। —अनुभववांणी

उ०—२ राम कहूँ से **रांमजन**, हरीया दूजा भेख। दुनीया सेती दोसती, धरै संत सु धेख। —अनुभववाणी

रांमजननी–सं. स्त्री [सं रामजननी] १ राम की माता कौशल्या। (रामायण)

२ बलराम की माता रोहिणी।

रांमजनी–देखो 'रामजणी' (रू. भे.)

उ०—छोरि किते पतनी अपनी, मन रामजनी मुख के अभिलाखे। मत्त किते मदिरा मद ह्वै वस नीद कितेक लखै रति भाखै। —फतहकरण ऊजळ

रांमजयती–सं. स्त्री. [सं. रामजयंती] रामनवमी

रांमजांमुन–सं पु–मभोलै कद का एक प्रकार का जामुन का वृक्ष।

रांमजी–सं पु–ईश्वर का एक आदर युक्त सम्बोधन।

उ०—जन हरीया ऊभै घणी, खेन न खडै कोय। जाह रूखवाळा **रांमजी**, माळ न वको होय। —अनुभववाणी

रांमजी री गाय–सं. स्त्री. बीरबहुटी, इंद्रवधू।

रांमजोत, रांमजोती–सं. स्त्री. [सं. रामज्योति] १ ब्रह्म का प्रकाश। ब्रह्म ज्योति।

उ०—लीधा नाम नीठ नीठ अनेक जनमा लगा, अभै धाम पावै ठाम वैकुंट अदोत। दे रीठ संग्राम खागा घडी हेक भाज देही, जोधा मळै राम रा सनेही **रांमजोत**। —साधा री गीत

२ मोक्ष, मुक्ति।

रांमझारो–सं. पु–एक बडी झारी जिसके एक लंबी टूटी लगी होती है

रांमझोळ–देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

रांमटेक, रांमटेकरी–सं स्त्री.–एक पहाडी।

वि० वि०–देखो 'रामगिरि'

रांमण–देखो 'रावण' (रू. भे.)

उ०—काज अहोणी ही करै, एह प्रकत खळ अंग। **रांमण** पठियो राम दिस, कर सोवनो कुरंग। —बा. दा.

रांमणखंड, रांमणखंडो–देखो 'रावणखंडो' (रू. भे.)

रांमणगढ–देखो रावणगढ' (रू. भे.)

रांमणगांजो–सं पु–एक प्रकार का भाला या सैल।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति असवारी वाग ऊपाडि किलकिला ज्यो ऊपाडि ऊपाडि हेमरां नाखीजै छै। भूमणा ऊपरै बरछी चमकि नै रही छै। **रांमणगांजा** मेला रा धमोडा पडि नै रहीआ छै। —रा सा सं

रांमणरिप, रांमणरिपु–देखो 'रावणरिपु' (रू भे)

रांमणहत्थो, रांमणहथियो, रांमणहथो–सं. पु. [सं. रावण+हस्त] एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

रू० भे०–रावणहथो।

रांमणारि–देखो 'रावणारि' (रू. भे.) (नां. मा.)

रांमणि–देखो 'रावण' (रू. भे.)

रांमणो, रांमबो–देखो 'रमणो, रमबो' (रू. भे.)

उ०—रति रयण सुंदि नर नारि **रांमति** गाळि प्रमुदित गावही। मुख गांन, दिन निस स्वांम मगळ वैण चंग वजावही। —रा. रू.

रांमत–सं. स्त्री [सं. रम्यति, प्रा. रम्मति] १ क्रीडा, खेल।

उ०—१ पित सौ बाघी पाळणै, **रांमत** रिझवारै। इम रामण मुगि अंगदह, खळ वायक खारै। —सू. प्र.

उ०—२ कूंत आहावतौ डाहतौ केविया, त्रजड **रांमत** रमे कमध त्यारा। 'गजण' रै नाखिया बाज मचती गहण, 'सूर' हर आभरण पूर मारा। —गु रू. बं.

२ मनोविनोद।

३ हंसी, मजाक, ठिठोली।

उ०—१ मारवणी जाणियौ औ तो और पंथी छै। मीमा सो सु **रांमत** करै छै। —ढो. मा.

उ०—२ सु पहली तो आ बात अदावत री हुई थी, तरै तौ मारा ही जाणियौ थौ–ऐ साळा बैहनेई थका **रांमत** करै छै। नै आ वात रायसिंघ हालतां कही तरै तो सारै ही जाणियौ–जु आवात साची हुई। कोई उपाव उपद्रव हुईसी। —नैणसी

उ०—३ दळ करण नूं राजपूता निराठ मन्हा कियौ जे बडा सरदार असी कोई कहै नही छै। कूडी सूं तौ **रांमत** मसकरी साची सूं गाळ छै। —भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

४ अभिनय, नाटक।

उ०—१ लुगाई री जूंण बिना रखवाळण कंवराणी, महारांणी अर गूजरी री आ **रांमत** कुण रमतौ। —फुलवाडी

उ०—२ मा इण **रांमत** सूं तौ म्हारौ जीव साफ फाटग्यौ। थारै आगै म्हारौ बस नी चालै, नीतर म्हैं तो कदेई म्हाय छूटती। कांई लुगाई री जलम फगत इण रामत सारू ई ह्वियौ है। —फुलवाडी

उ०—३ आवै जाय अपार, धींघां पळ भरि भरि गळा। फिर नटवाळा गोटका, विचरै **रांमत** वार। —रा. रू.

५ तमाशा, खेल।

उ०—१ अर गांव माहैं रावळिया **रांमत** रमता हुता। सीधळा री साथ रमत देखण नूं गयौ हुतौ। —नैणसी

उ०—२ तुम बैठे **रांमत** लखौ, नह खेवत पर–पीर। सो बाहर कीजै सही, भले भले रघुवीर। —गजउद्धार

६ नौटंकी का खेल ।

७ चौपड़ आदि का खेल, द्यूत क्रीड़ा ।

उ०—रांमत चौपड़ राज री, है थिक बार हजार । धण मूं धी लूटा धकें, धरमराज सिरदार । —रामनाथ कवियो

रू० भे०—रमत, रम्मत, रामति, रामती ।

रांमतरुणी—सं स्त्री यौ [सं रामतरुणी] १ श्री रामचन्द्र की पत्नी सीता ।

२ सफेद गुलाब, सेवती ।

रांमतारक—सं. पु. यौ [सं रामतारक] रामोपासक लोगों द्वारा जपा जाने वाला मंत्र, 'रां रामाय नमः' ।

रांमति—देखो 'रामत' (रू भे)

उ०—१ लघु लघु सर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार । रांमति सरजू तटि रमै, कौसल राजकुमार । —सू प्र.

उ०—२ नगर ने रांमति नवि रमजइ, हारइ नळराय रे । पासा पड़इ अवला सब, कूबर मनिमेन थाइ । —नळदवदंती रास

उ०—३ रांमति रमती कूलीया, कन्या कुंवारी धाय । रुनवन पीसूं रमण की, हरीया स्याम सिराय । —अनुभववाणी

रांमतियौ—सं. पु —१ खेलने का उपकरण या साधन, खिलौना ।

२ योनि, भग (बाजारू)

रू० भे०—रमतियौ, रमतियो, रामतियौ ।

रांमती—देखो 'रामत' (रू. भे)

रांमतीरथ—सं पु [सं रामतीर्थ] रामगिरि नामक स्थान ।

रांमतोरू—सं स्त्री —भिंडी नामक फली जिसकी सब्जी बनाई जाती है ।

रांमदळ—सं पु [सं रामदल] १ श्री रामचन्द्र की वानर-सेना ।

२ कोई विशाल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो ।

रांमदवाई—देखो 'रांमदुहाई' (रू भे)

रांमदवारौ—सं पु. [सं. राम-द्वार] रामस्नेही सम्प्रदाय के साधुओं के रहने का स्थान, मकान ।

रू० भे०—रामदुवारौ, रामद्वारौ ।

रांमदास—सं पु [सं रामदास] १ श्री रामचन्द्र के दास, हनुमान ।

२ दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो शिवाजी के गुरु थे, समर्थ-गुरु रामदास ।

रांमदुआई, रांमदुवाई—सं स्त्री —१ श्रीराम की शपथ, ईश्वर की सौगन्ध ।

२ राम-नाम की दुहाई ।

रू० भे०—रामदवाई, रांमदुहाई ।

रांमदुवारौ—देखो 'रांमदवारौ' (रू भे)

उ०—लोग हाल ताई नांव धरग़ा है, वै रांमदुवारा अर मिंदर में सोगी साक हाथ नी घालै । —फुलवारी

रांमदुहाई—देखो 'रांमदुआई' (रू भे)

रांमदूत—सं. पु [सं रामदूत] हनुमानजी ।

उ०—दुवाह अग्वाशजीत धाड़ा रांमदूत । —र ज. प्र.

रांमदे—देखो 'रामदेव' (रू भे)

उ०—राउत रिणिमी रांमदे वडिम धिरोरी वाह । सगळाई माथा सिरै, ननळदे री नाह । —पी. ग्र

रांमदेरौ—देखो 'रामदेवरौ' (रू भे)

उ०—सोम १ माथै गया उठै जाय उतरीया, बात विगत करनै सीजी रा माथ नै सीख दी । राजा रौ डेरौ रांमदेरै हुवौ । —नैणसी

रांमदेव—सं पु —१ प्रसिद्ध तुंवर वंशीय अनंगपाल जी के वंशज अजमालजी के सुपुत्र रामदेव, जो सिद्ध पुरुष (पीर) माने गये हैं ।

वि वि —इनका जन्म संवत १४६१ में हुआ और संवत १५१६ में ये समाधिस्थ हुए । इनकी समाधि पोकरण (राजस्थान के जोधपुर जिले में) से नौ मील दूर है । इनके अनुयायी प्रायः अनुसूचित जाति के लोग हैं जो इन्हें ईश्वर का अवतार मानते हैं ।

२ उक्त पुरुष को सम्बोधित कर गाया जाने वाला लोक गीत ।

३ उक्त पुरुष के अनुयायी लोगों का सम्प्रदाय ।

४ श्रीरामचन्द्र ।

रू० भे०—रामदे, रामदै ।

रांमदेवरौ, रांमदे'वरौ—सं पु —१ रामदेवजी का समाधिस्थान, मन्दिर । देवालय ।

२ उक्त नाम का गांव ।

रू० भे०—रा देरौ ।

रांमदै—देखो 'रामदेव' (रू भे)

रांमद्वारौ—देखो 'रामदवारौ' (रू भे)

रांमधरम—सं पु —१ ईश्वर को साक्षी बनाने की क्रिया या भाव ।

२ अपनी मर्यादा में रहने की अवस्था या भाव ।

उ०—चालै कुळ री चाल, रांमधरम धार्‌‌‌या रहै । दुखिया पर दयाळ, भव वग बिगड़ै भैरिया । —रतलाम नरेश बळवंतसिंह

३ ईमान ।

रू० भे०—रामध्रम ।

रांमधाम—सं. पु [सं राम-धाम] १ वह लोक जहां ईश्वर राम रूप में नित्य विराजमान रहते हैं, साकेत धाम, अयोध्या ।

२ वैकुण्ठ ।

रांमध्रम—देखो 'रामधरम' (रू भे)

रांमनम, रांमनमी, रांमनवमी—सं स्त्री. [सं रामनवमी] चैत्र शुक्ला नवमी की तिथि, जिस दिन श्री रामचन्द्र का जन्म हुआ था । एक पर्व दिन ।

रू० भे०—रामनामी, रामनोमी, रामनौमी ।

रांमनांमी–स. स्त्री.–१ राम नाम छपा हुआ कोई दुपट्टा या चादर जिसको प्राय: विधवा स्त्रियां प्रोढा करती हैं।
२ गले में पहनने का एक स्वर्णहार विशेष जिसे प्रायः विधवाएं पहनती हैं।
३ सोने चादी के आभूषणो पर रेखाओ की खुदाई करने का कीला। (स्वर्णकार)
४ देखो 'रामनवमी' (रू भे)
रांमनोमी, रांमनौमी–देखो 'रामनवमी' (रू. भे.)
रांमपद–स. पु.–मोक्ष, मुक्ति।
क्रि. प्र.–पाणौ, मिळणौ।
रांमपयोध–स पु [स. राम+पयोधि] राम के यश रूपी समुद्र।
उ०—आछौ कीध इमोह, रस ले साहित-सिंधु रौ। जग सह पियण जिसोह, रूपक **रांमपयोध** रच। —उत्तमचद भडारी
रांमपुर–स. पु.–१ अयोध्या नगरी।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।
रांमपुरा–स. स्त्री.–एक प्रकार की बन्दूक।
रांमपुरी–स. स्त्री.–१ अयोध्या नगरी।
२ स्वर्गलोक, वैकुण्ठ।
३ एक प्रकार की तलवार।
रांमपुरीकत्ती–स. स्त्री.–तलवार के आकार की एक कत्ती विशेष।
रांमप्रिया–स स्त्री.–श्री सीताजी। (नां मा.)
रांमफळ–स पु.–सीताफल, सरीफा।
उ०—खरबूजा जग सह जाय रे, सौ अमोक अमर सदै। सैमळ सरीस तज आन सुण, दाख **रांमफळ** सेव दे। —र. ज प्र
रांमफळी–स. स्त्री.–ग्वार की सूखी हुई फळी, जिसे तेल मे तलकर मिर्च मसाले लगाकर खाया जाता है।
रांमवांम–स. स्त्री [स राम+वामा] श्रीराम की पत्नि श्री सीताजी।
रांमवांस–स पु–१ एक प्रकार का बास।
२ केवडे या केतकी की जाति का एक पौधा।
रांमभक्त–स पु–१ श्री राम का उपासक कोई व्यक्ति।
२ हनुमान।
रांमभीच–स पु.–हनुमान का एक नामान्तर। (ना मा)
रांमभोग–स पु.–१ एक प्रकार का चावल।
२ एक प्रकार का आम।
३ श्री राम को भोग (चढाया) लगाया जाने वाला पदार्थ।
रांममंत्र–स पु.–'रा रामाय नम' नामक मत्र।
रांममन–स. पु [स राममन] हनुमान। (अ मा)
रांमयौ–स. पु.–१ काव्य छद का एक भेद विशेष। (पि प्र)
२ देखो 'राम' (अल्पा., रू. भे)
३ देखो 'रामइयौ' (रू. भे.)
रांमरक्षा–स. स्त्री. [स. रामरक्षा] विश्वामित्र द्वारा रचित श्री राम का एक स्तोत्र।
रू० भे०–रक्षाराम।
रांमरज–स स्त्री.–वैष्णव लोगो के तिलक लगाने की एक प्रकार की पीली मिट्टी।
रांमरमी–स स्त्री.–दीपावली व होली के दूसरे दिन परस्पर मिलकर किया जाने वाला अभिवादन, प्रणाम आदि।
रांमरस–स पु–१ नमक।
उ०—मही मही मिरची पीसी, दियौ **रांमरस** न्हाख। तेलरी रहैं छूकण दीनौ, दीन्ही हाडी चढाय, यौ पचमेळ रौ साग, देवतडा नै भी नाय मिळै जी राज। —लो गी.
२ राम की भक्ति।
उ०—१ रह्यौ बीवरे **रांमरस**, अनरथ घणौ अलल। या हिज है ध्रम आतमा, गे तीरथ गे तन। —बा. दा.
उ०—२ सतगुर भागी भरमना, निहचै पायौ नाम। हरीया घट मैं **रांमरस**, क्या कूडै सु काम। —अनुभववाणी
३ राम की भक्ति रूपी अमृत।
उ०—हरीयै पीया **रांमरस**, आठु पोहर अभग। और किसी कु पावसी, करै हमारा सग। —अनुभववाणी
रांमरांम–स पु.–१ परस्पर मिलने पर इसी शब्द को बोलते हुए किया जाने वाला अभिवादन, दुआसलाम, प्रणाम, नमस्कार। (हिन्दू)
२ रामनाम की माला, जाप।
रांमराज, रांमराज्य–स. पु. [स. राम+राज्य] १ श्री रामचन्द्र का शासन, जिसमे प्रजा को बहुत आराम मिला और सस्कृति का विकास हुआ।
२ ऐसा शासन जिसकी उपमा श्री रामचन्द्र के शासन से की जाती है। सुखदायी शासन।
उ०—वारा हरचद रा बहै, **रांमराज** री रीत। कुसमा छाई कनक रा, पुहमी बटै प्रवीत। —बा दा
रांमलवण–स पु–साभर नमक।
रांमलाल–स. पु–एक मारवाडी लोक गीत।
रामलीला–स स्त्री–१ श्री रामचन्द्र के जीवन-चरित्र पर किया जाने वाला नाटक।
२ एक मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे २० मात्राएं तथा अन्त मे एक जगण होता है।
रांमवट–स. पु–पडिहार वश की एक शाखा।
रांमवाडी–स. पु–पश्चिमि भारत का एक तीर्थ स्थान।
उ०—वन रामचद्र वसै **रांमवाडै**। मर पास कोटेसर स्रग वाडै। —सू प्र.

रांमसंगी–१ देखो 'रांमचंगी'

उ०—चुव सोर कुजरवा ग्रन मधीर, मद चन्नै **रांमसंगी** स–तीर।
—वे. स.

२ देखो 'रांमसखा'

रांमसखा–स. पु. [सं.] सुग्रीव।

रांमसनेह–स. पु. [स. रामस्नेह] राम की भक्ति।

उ०—नही थिर देह न गेह न गेह। नही थिर चम्पहु **रांमसनेह**।
—ऊ का.

रांमसनेही–स. पु. [स रामस्नेही] १ राजस्थान का एक प्रसिद्ध साधु–सम्प्रदाय, जिसका ग्राविर्भाव श्री हरिरामदासजी महाराज (सींथल) से माना जाता है।

वि वि–संत साहित्य मे प्रमुख संतो की रचनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सम्प्रदाय रामानन्द की वैष्णव परम्परा के अन्तर्गत ग्राता है। (ग्रनुभववाणी भू. पृ. २८) रामानन्द सम्प्रदाय की शिष्य परम्परा मे श्री जैमलदासजी दिव्य पुरुष हुए, जिन्हो ने सगुणोपासना को निर्गुण की ओर प्रवृत्त किया और 'राम राम' को मूल मंत्र स्वीकार किया। इनका यह प्रयास ही इस सम्प्रदाय का बीज माना जाता है। श्री जैमलदास जी के मुख्य शिष्य श्री हरीरामदास जी ने इस सम्प्रदाय की औपचारिक प्रतीष्ठा की। अत श्रीहरीरामदास जी द्वारा इस सम्प्रदाय का ग्राविर्भाव सींथल मे हुआ। सींथल मे रामसनेही सम्प्रदाय का मुख्य पीठ आज भी वर्तमान है। श्रीहरीरामदास जी के मुख्य शिष्य श्री रामदास जी ने इस सम्प्रदाय का अत्यधिक प्रचार–प्रसार किया और खेड़ाप ग्राम मे एक पीठ की स्थापना की जो आज भी वर्तमान है। सींथल एव खेड़ापा के अतिरिक्त शाहपुरा व रेण में दो पीठ और हैं, जिनके मूल पुरुष क्रमश रामचरणजी तथा दरियाव जी महाराज माने जाते हैं। इस सम्प्रदाय के साधु या अनुयायी का प्रमुख उद्देश्य 'राम नाम' की माला जपना ही होता है।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी साधु।

उ०—सब जुग बिध्या जेवरी, निरबधन नही कोय। जन हरीया निरबध है, **रांमसनेही** होय। —ग्रनुभववाणी

३ वह व्यक्ति जो उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी हो।

वि०–राम से स्नेह रखने वाला।

रांमसरण–स. पु. [स. रामशरण.] स्वर्गवास, मोक्ष।

वि०–जो ईश्वर की शरण मे चला गया हो, स्वर्गवासी हो गया हो।

उ०—१ जाहरा कितरे हेके बरसे बूदी **रांमसरण** हुवो, ताहरा भोज बूंदी ग्रायो। भोज नू पातसाह धरती दीधी। —नैणसी

उ०—२ पच्चीस बरसां रौ परण्यो–पांत्यो मोट्यार काटी बेटो म्हनै ग्रर बीनणी नै विम्वा री लाय में दाभ्रण साल छोडनै **रांमसरण** व्हैगो। —फुलवाडी

रांमसरी–स स्त्री –एक चिड़िया का नाम।

उ० ग्रांगणि जळ निरप उरप ग्रलि पिग्रति, मरुतचक्र किरि नियत मरू। **रांमसरी** खुमरी लागी रट, घूघा माठा चद घरू।
—वेलि

रांमसाख–स पु –फल विशेप।

उ० – द्रुम दाडमी चमका केला दाख। सहतूत सीताफल **रांमसाख**।
—ग्रग्यात

रांमसागर–स पु.–१ पानी की वडी भारी जिसके लम्बी टूटी लगी होती है।

२ चोडे मुह व गहरा एक पात्र जिसके ऊपर पकडने का एक हत्था लगा होता है तथा जो दूध, खीर ग्रादि तरल पदार्थ परोसने के काम ग्राता है।

रांमसापीर-देखो 'रामदेव'

रांमसिला–स पु [स रामशिला] गया की एक पहाड़ी (तीर्थ)।

रांमसेतु–स पु [स राम सेतु] दक्षिण मे रामेश्वर तीर्थ के आगे, समुद्र मे पडी हुई चट्टान, जिसे रावण पर चढाई के समय श्रीराम द्वारा बनाया हुग्रा पुल (सेतु) माना जाता है।

रांमाण–देखो 'रामायण' (रू. भे)

रांमा–स स्त्री [स रामा] १ लक्ष्मी।

उ०—१ लोक माता सिधुसुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रमा। ग्रवर ग्रहे ग्रस्थिरा इदिरा **रांमा** हरिवल्लभा रमा।
—वेलि

उ०—२ **रांमा** कहिता लक्ष्मीजी तिहिको ग्रवतार। ताकउ नाम रुकमणी। —वेलि टी

२ रुकमणी।

३ सीता।

४ राधा।

५ सुन्दर स्त्री।

उ०—रत्ता सामी धरम सू **रामा** काम ही रत्त। मन मोटा दिन पद्धरा, भड वका रहमत्त। —गु. रू. ब.

६ प्रेमिका, प्रेयसी।

७ भार्या, पत्नी, स्त्री।

८ सती–साध्वी स्त्री।

९ गायन विद्या मे निपुण स्त्री।

१० कार्तिक कृष्णा एकादशी।

११ नदी।

१२ ग्रार्या या गाहा छन्द का १७ वा भेद। इसमें १७ गुरु और ३५ लघु वर्ण होते है और कुल ५७ मात्राए होती हैं। (ल. पि.)

रांमाइण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

उ०—**रांमाइण** ही रांम कीयउ जे हूंती कन्हइ। सकति विहूणउ स्यांम विढण न होयइ वीस–हथि। —अ. वचनिका

रांमातुळसी–स. स्त्री.–तुलसी का एक भेद, जिसके डठल का रग सफेदी लिये हुए हरा होता है।

रांमादेवी–स. स्त्री.–एक देवी विशेष।

उ०—च्यार कुळदेवी सहाय हुई। समणादेवी सरीर लांबौ कीयौ १ सामरादेवी सरीर हलवौ कियौ २, **रांमादेवी** सरीर अभग कीनौ —रा. वशावली

रांमानंद–स. पु.–१ एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो रामावत नामक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक थे।

२ इनके द्वारा चलाया हुआ सम्प्रदाय।

रांमानंदी–स पु –'रामानद' सम्प्रदाय का अनुयायी।

वि०–रामानन्द का, रामानन्द सम्बन्धी।

रांमानुज–स. पु. [स राम+अनुज] १ श्रीराम का छोटा भाई लक्ष्मण। (अ. मा., ना. मा.)

२ भरत, शत्रुघ्न।

३ वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने वेदा-न्तसार, वेदातदीप तथा वेदार्थसग्रह नामक ग्रन्थो की रचना की थी। इनका स्वर्गवास ११९४ (सवत) मे हुआ।

४ उक्त आचार्य द्वारा चलाया हुआ सम्प्रदाय।

रांमानुजी–स पु.–उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

वि०–रामनुज का, रामानुज सम्बन्धी।

रांमाप्रल–स पु –ईश्वर। (ना मा)

रांमायण–स स्त्री [स. रामायण] १ वाल्मिकी ऋषि द्वारा रचित एक अति प्रसिद्ध धार्मिक ग्रथ, जिसमे श्रीरामचन्द्र के जीवन–चरित्र का वर्णन है।

उ०—लक जिम वाद अहमद लियण, लख गोळा, झड लागियौ। वमरीर अभायण जुध विखम, जुध **रांमायण** जागियौ। —सू. प्र.

रू० भे०–रमाइण, रमाइण, रमायण, रामाण, रामाइण।

२ जीवन गाथा।

उ०–म्हारी **रांमायण** री छुट–पुट कडियां थनै बताई, इण सूं म्हारौ जीव हळकौ व्हियौ। —फुलवाडी

३ व्यर्थ का प्रवचन। (व्यग)

उ०—बिणियाणी बोली–थे तौ म्हनै पूरी बात ई नी कैवण दी, बीच मे ई थारी **रांमायण** बाचणी चलू कर दी। —फुलवाड़ी

रांमायणी–वि. [स. रामायणी] रामायण का, रामायण सम्बन्धी।

रांमावत–स पु.–१ आचार्य रामानन्द द्वारा चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

रांमासांमा–स. पु. १ अभिवादन, दुआ सलाम।

उ०—रणछोड़ै **रांमासांमा** करने चिलम माथी करतां पूछयौ–सेठां सिरावण करौ तौ थोड़ी माखण नै सोगरौ लाय दूं। —रातवासौ

२ दीपावली व होली त्यौहारों के दूसरे दिन परस्पर मिल कर किया जाने वाले वाला अभिवादन, भेंट, प्रणाम आदि (हिन्दू)

उ०—उण मौकै दिवाळी रौ तिंवार होवण सू मा उण नै घणा कोड सूं नवा नवा कपड़ा पैराया। काना में नगदार लूंग हाथा में सोना री माठिया अर पगा मे झाझरिया घालिया। **रांमासांमा** रै दिन बाळ धोस, काजळ घाल अर लीलाड माथै निजर रौ काळौ टीकौ लगाय नै वास व्वाड में तसळीम करण वास्तै भेजियौ ..... ।

—अमर चूनडी

रांमूड़ौ–१ देखो 'राम' (अल्पा., रू. भे.)

उ० —ओ जी ओ, मने **रांमूड़ा** रौ टेवटियौ घडा दे, मोरी माय, लूवर रमवा मैं जास्यू। —लो. गी.

रांमेस्वर–स. पु. [स रामेश्वर] दक्षिण भारत मे समुद्र तट पर स्थित शिव लिग (तीर्थ) जो हिन्दुओ के चार प्रमुख तीर्थो मे से एक माना जाता है।

रांमोड़ी–स. स्त्री –वनस्पती विशेष

उ०—**रांमोडी** नइ रासना रीगणि रुद्र-जटाय। रांग रतांजणि रू मडी, रनिवनि रग धराय। —मा. का. प्र.

रांमौ–१ देखो 'राम' (अल्पा., रू. भे)

२ देखो रामदेव

उ०—'गोगौ' मोगौ हुय गोरघा गिरियौ, 'तेजौ' मोळौ पडि तेजौ नै तिरियौ। पीरां पनधीरां पैली घर धायौ, उण दिन **रांमौ** डर सांमौ नहि आयौ। —ऊ का.

रांमौपीर–देखो 'रामदेव'

उ०—पौढी सू जोधापती, प्रात हुवौ असवार। दरसेवा सुभ देहरौ **रांमौपीर** उदार। —रा. रू.

रांयकंवर–१ देखो 'रायकुवर' (रू भे.)

२ देखो 'राजकुमार' (रू भे)

रांयकंवरी–१ देखो 'रायकवरी' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

रांयण, रांयन–स. स्त्री.–१ नीम से बडे आकार का वृक्ष जिसके पत्ते पीपल के पत्ते से मिलते जुलते होते हैं और फल मीठे तथा लकडी मजबूत होती है।

उ०—पाडर पुन **रांयण** तरु तमार, तहा सरु बकायन सरसतार। चदन अगर तोया कुद चारु, सीताफळ चपक अरु अनारु।

— मयाराम दरजी री बात

२ उक्त वृक्ष का फल।

उ०--१ अखरोट चारोली केला **रांयण**, नालेर द्राख आंबांनी साख। —व. स.

उ०—२ राजेसां केसा, कुकणीग्रां केसा, रांवण नीरोन्या, ग्रांबा नगी कानमी, श्रीमद नारि पानमी। —व म.

रू० भे०—रांइंगि, राइंगा, राइंगि, राइंगी, राइंग।

रांवटी—देखो 'रावटी' (रू भे.)

उ०—ग्रब रामसिंघजी नू गक रांवटी करि दी जिम मन्यासिया री मढी हुवै तिम। —द वि.

रांवण—सं. पु [स रावण] १ राक्षस राज लंकाधिपति दशानन, जो पुलस्त्य ऋषि का पौत्र व विश्रवा का पुत्र था। दशरथ नन्दन श्रीरामचन्द्र ने वानरी सेना के साथ लंका पर चढ़ाई करके इसका वध किया। ऐसा माना जाता है कि इसके बीस भुजाएं तथा दश मस्तक थे।

उ०—१ राज सीहरि उर्पात रघुराई, भिड़ जेण जिथ लखमण भाई। भिड़ि खळ थाट कळ जुध भूका, रांवण जेम 'विजद' दळ रुका। —सू प्र

उ०—२ प्रथग प्रबळ पिन 'जोध' ग्रसिनमा, मावज कुळ पैंतीस सिरै। हरि मेलियौ सर्थ हीलोहळ, गाजियौ रांवण मेर-गिरै।

— किसनौ ग्राढ़ौ

वि—१ दूसरों को रुलाने वाला।

२ रोने, चिल्लाने व रुदन करने वाला।

रू० भे०—रांमण, रामणि, रांमिण, रावण, रावणि।

रांवणखंड, रांवणखंडौ—स. पु. [स रवन्+खंडित] वह व्यक्ति जिसके मुख का ऊपरी ग्रोष्ठ खंडित हुग्रा हुवा हो।

उ०—१ धमस बिडगां ऊधरा, रज छायौ ब्रहमंड। मेल्ह चमका धुंध मैं, दीठा रांवणखंड। —रा रू.

उ०—२ रांवणखंडौ दोड़ियौ, वळियौ 'वूमी' मार। भाद्राजण फिर ग्रावियौ, घण थट लिया मवार। —रा रू

रू० भे०—रांमणखंड, रामणखंडौ।

रांवणगढ़—स पु —रावण के राज्य की राजधानी लंका।

रू० भे०—रांमणगढ़।

रांवणपण, रांवणपणौ—स पु —दुराग्रह, हठ, जिद्द।

उ०—रांवणपणौ छोड रहरांवण, रजनट नीर रहावण रीत। छोक हुवै सदा दार्वं छं, मुडं कवा दिय मावीत।

—कूपाजी राठौड़ री गीत

रांवणरड़—देखो 'रवराण' (रू भे)

उ०—व बावद रैणगड रग रचिया रांवणरड़। —व भा.

रांवणरिप, रांवणरिपु—स पु [स. रावण+रिपु] १ श्री रामचन्द्र।

२ ईश्वर, परमेश्वर (ह ना मा)

रू० भे०—रांमणरिप, रामणरिपु रावणरिप, रावणरिपु।

रांवणारि, रांवणारी—सं. पु. [स. रावण+ग्ररि] १ रावण को मारने वाले श्रीरामचन्द्र।

उ०—मिथळाविहारी सीमुरारी रमा नारी रज। पह छत्रधारी मिळ ग्रधारी माग हारी मडळी, घनु जेगवारी रांवणारी जटाधारी भज। —र ज प्र

२ ईश्वर, परमेश्वर।

रू० भे०—रामणारि, रवणारि।

रांसीलौ—वि (स्त्री, रासीली) १ रस पूर्ण, रासीला।

उ०—थे चावळ हू दाळ हरामी ढोला रे ऐके ने रांसीलै, दोय जीमिया हो राज। थे म्हाली हू दाल, हरामी ढोला रे, ऐके ने रांसीलै दोय भेलिया हो राज। —लो. गी

२ रसीक, रसिया।

उ०—हाठलड़ा मूमल रा रेसमिये रे तार ज्यू, हा जी रे, दातड़ला उजळ दन्ती रा दाड़म बीज ज्यू। म्हाजी हरियाळी मूमल, हालै नी रांसीलै रै देस। —

रा—विभ—१ षष्ठी विभक्ति चिन्ह, के।

उ०—१ रूप हथ पेखियौ, हाथ जमराज रा। ठिवता पाव धीरा दियौ ठाकुरा। —हा भा

उ०—२ वडा भगत भगवान रा, राम रीझा सिर रीझै।

—पी ग्र.

उ०—३ हाथ नमो तु बीस हथि, जुधि जुधि कीधी जैत। गिळिया लोही रा गटक, देवी दळिया दैत। पी ग.

रू० भे०—रा।

२ देखो 'रै' (रू भे) (ना. मा)

३ देखो 'राउ' (रू भे)

उ०—१ हिमलय निकलना गहगहइ, वेलाकूले रा गहगहट। मूंड लक्ष धान्य नीपजइ, सकल वाछित सुख सपजइ।

—नळ दवदती रास

उ०—२ फाडि पडुली फटकडे, वेगि विरामी हत्थि। रा ग्रनेउरि नेडिउ, दूहवइ रामी हत्थि। —मा का प्र

रा'—१ देखो 'राम' (रू भे)

२ देखो 'राभि' (रू भे) (ना मा.)

३ देखो 'राय' (रू भे)

४ देखो 'राह' (रू भे.)

राग्रठोड़—देखो 'राठौड़' (रू भे)

उ०—राग्रठोड़ तुमे घर बैठ रह्यौ। विन ग्राज ग्रमीणोय घाट वह्यौ। --पा प्र

राग्रा—देखो 'राजा' (रू भे)

राइं—देखो राइ' (रू. भे)

उ०—१ राइं वागल मोकलिउ, माधव वहिलु ग्रावि। जिम जाणइ तिम तू करइ, नेगि मदनि मिधावि। —मा. का. प्र.

उ०—२ प्रगट करेवा पुरखनइ, राइं तेडी गोग। कुण ते ?

कुण कारणि दुखी ? सरसिइ किम सयोग। —मा. का. प्र.

राइंदिव, राइंदिन—स. पु. [सं. रात्रिन्दिव] रात-दिन।

राइ—स. पु. [सं. राजा, प्रा. राआ, राया] १ राजा नृप।

उ०—१ मालय ऊमा देवडी, साभळि पिंगळ **राइ**। विरह बियापी मारुई, नहि राखण कउ दाइ। —ढो. मा.

उ०—२ पाल्हणसी पुहविहि रहयउ, अनि समहया सरगि। तिणि वेळा हीया भरी **राइ राइ** रोवण लगि। —श्र. वचनिका

उ०—३ वडं चिति कीरति खाटण श्राकग वार। सिरोमणि **राइ** महाइ ससार मधार। —ल पि

उ०—४ आपणी **राइ** फेराइ आग। मममेर माहि सुरिताण माण। —रा ज सी

उ०—५ नूडि-नाग 'भ्रमर' मुरिजना तणौ, माम काम बाहण मुजड। राखिया **राइ** राठोडवे, कुमरा पामि इना मुहड।

—गु रू ब.

२ छोटा राजा, सरदार मामन।

स स्त्री. [सं. राजि] ३ कतार, पंक्ति।

उ०—लागि दळि कळि मळयानिल लागै, त्रिगुण परमळै त्रखा त्रिम। रटनि पूत मिमि मधुप रूख **राइ**, मात स्रवति मधु दूध मिमि। —वेलि

४ रात्रि, रात।

उ०—पाछिली रातइ उठइ नर हो, स्रावक हुयइ मावधान। **राइ** पायछत काउसग करी हो, देव वादइ सूभ ध्यान। —स कु

वि.—श्रेष्ठ, उत्तम

रू० भे०—राइ, राई, रायि, रायी।

राइअंगण, राइआंगण—स पु. [स राज अगण] राज प्रसाद का आगन, प्रागण।

उ०—१ सुहडा सब अग चग दिसवर, **राइअंगण** मांभ रा। मधुकर गुंजार इवरी मामळ, परिमळ वास लोभ रा।

—गु. रू ब

उ०—२ कडि लक्षण केहरी, जघ जारणै जाळ घर। **राइआंगण** गति क्रमति, हस किरि माण-मरोवर। —गु. रू ब.

राइकुंअर, राइकुंवर—१ देखो 'रायकवर' (रू. भे)

२ देखो 'राजकुमार' (रू भे.)

राइकुंअरि, राइकुंवरि—१ देखो 'रायकवरी' (रू भे)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू भे)

उ०—कर सूं करि कुकुम तिलक, चाढै चावळ भाळ। कुंअर बधावै **राइकुंवरि**, ले मोत्रन मैं थाळ। —गु रू ब.

राइगण—स पु—रात्रिगण, रातदिन का समूह।

राइडियौ—देखो 'रेडियौ' (रू. भे.)

राइजादौ—देखो 'रायजादौ' (रू भे)

उ०—१ मछरीकां सिर मछरियौ, **राइजादौ** राठौड। वैर पुराणा वाळिया, करै नवल्ली दौड। —गु. रू. ब

उ०—२ **राइजादै** श्रोपम राठवड, बिहूवै पक्ख निरंमळा। बळवंत कुमर बिय चाद जिम, कुंवरा-गुर वधती कळा।

—गु. रू ब.

उ०—३ इण भात ऊजळै पतिव्रत री पाळणहार, ऊजळी सखि-श्रारी टोळी सू राजहंस **राइजादी**। —रा सा स.

(स्त्री. राइजादी)

राइजी—देखो 'रायजी' (रू भे.)

उ०—बाइसी रीया श्राय डेरा कीया तरे ममल ठहरी तरे कवरजी स्रीश्रभेसघजी नु ने **राइजी** स्री रुगनाथजी नु साथे दीना। तरै बाइमी पाछी गइ। —रा. व वि

राइठौड़—देखो 'राठौड' (रू. भे)

उ०—ठेलिश्रे प्रधाने **राइठौड़**। मालइ जिम बोलिय बमि मौड।

—रा. ज सी.

राइण, राइणि, राइणी—देखो 'रायण' (रू. भे.)

उ०—१ **राइणि** तल पगला नम्या मन मोह्यउ रे, प्रदबुद आदि जिणद लाल मन मोह्यउ रे। —स. कु

उ०—२ सदा फळारणि निबु श्रागि, **राइणी** महूश्रडा। कल्हार जबुई नारग, रग वाग रूश्रडा। —गु. रू ब

राइतौ—देखो 'रायतौ' (रू भे)

राइफल—स स्त्री.—एक घोडेदार विलायती बन्दूक।

रू० भे०—रायफल।

राइबेल राइबेलि—देखो 'रायवेल' (रू भे.)

उ०—१ नितब कटोरा सा। जघा कदळी रो थभ। पग श्रगुळि **राइबेलि** री कळि। —फुलवाडी

राइवर—देखो 'रायवर' (रू. भे.)

राइवेलि, राइवेली—देखो 'रायवेल' (रू. भे.)

उ०—पग श्रगुली **राइवेलि** री कळी हीरा सा नख. श्रारीसा ज्यो भाखि गहिश्रा छै। —रा सा स

राइहर—देखो 'रायहर' (रू भे)

उ०—१ व्यामोह वर वीर घर-घर मन देखे घराउ। श्रायउ **राइहर** श्राप-रह समहरि 'श्रचळ' स-धीर। —श्र. वचनिका

उ०—२ वसुदेव कुमार तणौ मुख वीखे, पुणै सुणै जग नाम पर श्री रुक्मणी तणौ वर श्रायौ, हर म करौ श्रनि **राइहर**। —वेलि

राई—स स्त्री [स राजिका, प्रा राइश्रा] १ बहुत छोटी सरसो जिसका दाना काला होता है। उसका स्वाद चरपरा होता है।

उ०—१ बना पसारी रे जाइजो जी बठा मे ल्याजो **राई** री पुडी। बना बागां में जाजोजी बठा मे लाजो मिरच हरी। —लो गी

उ०—२ बगी सकरा करवा मांहि बणी राई, जीमता ढील न काई, ऊपरि जीरा सू गुनु प्रतिवास, करणहारी पणि खास।
—ब. स

उ०—३ सार संभारे अमन निहारे। ऊपर राई लूण उतारे।
—रा रू.

उ०—४ सांमुहा रूप घर तरह देख घणी राजी हुई। राई लूण वारिया। पुष्पकारा नाखिया। —कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा०—१ राई री परबत करणी=बात का बतंगड़ बनाना, छोटी बात का हुल्लड़ ज्यादा करना।

२ राई री भाव राते गयौ=उपयुक्त समय निकलने पर ऐसा कहा जाता है। अवसर चूक गया।

३ राई रती होणी=अत्यन्त तुच्छ होना।

२ एक प्रकार का शाक।

उ०—ख हारां लीबूआं, गिरनारी गिरमर, मारवाड़ी मूंगीया कयर, परवती राई प्रमुख साक नीरोग्या।
—व स

३ अत्यन्त थोड़ी मात्रा।

उ०—करमां करमा मे राई न काई। करमां करमा मे भुगतो रे भाई।
—ऊ. का.

४ दामाद को गाया जाने वाला एक लोक गीत।

[सं. राधिका] ५ राधा।

उ०—कान्ह कंवर सो वीरो मांगां, राई सी भोजाई।
—मो सी

६ देखो 'राइ' (रू. भे)

उ०—१ राई प्रधान पगाह रह्यो आइ। बउगास्या मह मागइ पाई। —बी. दे.

उ०—२ भाव हमारे आगणं, अह त्रिभुवन राई। तुम बिन मैं बिलखी फिरू, अब रह्यो न जाई। —ह पु वा.

राईआ—देखो 'राजा' (रू भे)

उ०—वस अजुआळ प्रति पाळ थे बीठला, रामचंद राजि सुर भुवण राईआ।
—पी ग्र

राईक—वि०—१ राई के समान लघु, तुच्छ।

२ राई के बराबर, राई जितना।

राईका—स. स्त्री.—राजस्थान की एक जाति जो भेड़, बकरी व ऊंट, पशुओं का पालन व इन पशुओं का व्यापार करती है। (मा म.)

राईको—स पु.—उक्त जाति का व्यक्ति।

उ०—१ इसो साभळं ने राव लाखणसी कागद लिखनै बीरा राईका नै काढ्यौ। बोलाई सांढ ताती छै तिण चढने जाळोर आ।
—बीरमदे सोनगरा री बात

उ०—२ दळ नीके बळ ऊधरे, राईकं महराज। माह वसीठ मलाह कज, कमधां दोठ सकाज।
—रा. रू

राईजूंबी—स स्त्री.—एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल छोटे छोटे और पकने पर पीले रंग के होते है।

राईण—देखो 'रायण' (रू भे)

उ०—१ अनर बदक सेर सिखर गिरी, अनर दाडूण मूसा। गवड़ो अनर हारि मिमि पाळई, राईण रूख जवासा।
—रुकमणी मगळ

उ० -२ प्रीमि नारंगी पातली, खड़बूजा गोटा, नीकोल्या राईण, इमी फलहलि प्रीमाइ।
—व म.

राईतन—स. पु [स राजा+तनय] राजवंश।

उ०—१ पछै सोढी नू पूछण लागो—रावळ कानड दे री वडी ठोड रो नाळेर आयो छै, सु पाछो फेरस्या तो राईतना माहे बुरा दीसस्या।
—नैणसी

उ०—२ नरै रह्यो—'रणं म्हारी वडै वारै टाळन पाडी। मोनू रोक माहै कियौ।' रावै राईतनं सूंगियौ।
—नैणसी

राईतौ—देखो 'रायतौ' (रू भे)

उ० १ छम छमाती भाजी, चमचमाता चीभड़ा सुड़हड़ती फली, मिरी भरी खाडिमी, वाए ईडरी, गड़ा राईता, मड़री मागरी
—व. स.

राईबर—देखो 'रायवर' (रू भे)

उ०—म्हावत तू मत जाणे राईबर एकलौ ए, सागै छड़ीदार चोपदार हाकिम हवलदार, साम्या उव्यो किल्लेदार भाई भतीजा सब परिवार . .
—लो. गी.

राईबोर—स पु—झड़बेरी के वृक्ष के फल, छोटे बोर।

राइमोयण—स पु—रात्रि भोजन। (जैन)

राईया—देखो 'राजा'

उ०—रूप अगाहण वैकठ नगा राईया भामणा लीया भगना नगा भाईया।
—पी. ग्र

राईलूण—स पु—राई व लूण का मिश्रण जो मगल कामना करने के लिये किसी के ऊपर वारे जाते हैं। (एक प्रथा)।

राईवर—देखो 'रायवर' (रू भे)

उ०—काकड आया राईवर थरहर कम्या राज। वभा सिरदार बनी ने कामण कूण करया छै।
—लो. गी

राईवाई—स स्त्री—१ व्यवस्था, इंतजाम।

उ०—आप साथै जोगी ५७ ऊपडिया हुता, तिणा रो जोग उसराय आप आप रा गाव दे घरे मेल्हिया। भाला आय मोह मिळिया। रायसिंघ आपरी राईवाई की। बेटा भगवानदास नारायणदास कने राखिया।
—नैणसी

स पु.—२ वह बैल जो सब प्रकार के कृषि कार्य मे प्रशिक्षित कर दिया गया हो।

वि०—सीधा-सादा, सरल।

राईसर—स पु—राजेश्वर।

उ०—बली बन राईसर मांडव, जाव कौटुम्बी सत्थवाहो रे। ते वीर कने घर छोडने, साधु होय ले छे लाहो रे। —जयवांणी

राउ—सं. पु. [स राजा, प्रा. राग्रो] राजा, नृप।

उ०—१ नितु नितु राउ अहेडइ बल्लइ। रोसि चडी राणी इम बुल्लइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ राठउडे उदियउ चउड राउ, वेगडइ साड वीरम वियाउ। —र. ज सी

उ०—३ नरवर नळराजा तणउ, ढोलउ कुंवर अनूप। राणि राउ पिंगळ-तणी, रीझी देखे रूप। —ढो मा.

उ०—४ चूंडराव रिणमल्ल, राउ 'जोधौ' रढरामण। 'सूजौ' 'वाघौ' 'गगेव' 'माल' गढ कोट पलट्टण। —गु. रू. ब.

रू० भे०—राऊ, राए।

राउत—देखो 'रावत' (रू. भे)

उ०—१ राउता पति राउत, गातिसाहा रा नर हैवर कुंजर धडा पछाडा। चद जमनामौ चाडा। —वचनिका

उ०—२ पडइ बंध चलवलइ चिंध सीगिणी गुण साधइं। गडवरि गइवरु तुरगि तुरगु राउत रण रूधइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ तिहा नगर मध्ये किसा लोक वसइ। भणइ राय राणा। मडलीक। महाधर। मउडधर। मामत। सेलुत। वर वीर। राउत पायक। डिंडिमायन। —सभा

राउतजाई—स. स्त्री —वीरागना।

राउतवट—देखो 'रावतवट' (रू भे)

राउति—देखो 'रावत' (रू भे)

उ०—देव नणइ प्रामादि चिहु दिसि राउति दीधा हाथ। करी सनान धरी सिरि तुलसी, सरण करयउ सोमनाथ। —का दे प्र

२ देखो 'रावती' (रू. भे.)

राउल—देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—१ चउड राउ दिय ऊधूल चाउ। राउल्ल आपहे आप राउ। —रा ज सी

उ०—२ राउलां गात बबाळ रगत्त। करमर वाहि किया करवत्त। —गु. रू ब

राउर, राउरौ—देखो 'रावळौ' (रू भे.)

राउळ, राउल—१ देखो 'रावळ' (रू भे.)

उ०—१ सो जागि राउळ मल्लीनाथ पुत्र रै स्थानै जोया नू काढी दीधा। - व. भा

उ०—२ नळवर गढ मुझ वसिवा ठाउ मागउ राउळ हुंसु पमाउ। इह आव्यउ जस कीरति सुणी, पिंगळ राजा भेटण भणी। —ढो मा

उ०—३ खान भणइ-कुणि कारणि आव्या, कहउ तुम्हारउं काज। कहइ प्रधांन राउल आणमइ, कटक जोगम्यू आज। —कां. दे प्र.

उ०—४ द्रव्य उपारजिउं कुणहं तणौ स्वासातउ न हुई, कुणहिनौ द्रव्य उपारजिउं चोर हि उपगरइं, कु राउल उपगरहि, कु. द्रव्य अग्नि उपद्रवइ...... —व. स.

२ देखो 'रावळौ' (रू. भे.)

उ०—राउल माहिं रण भाणुं राय थयु पगि मद। ब्राह्मण-बहुउ सामरइ सभा-तणउ ते चद। —मा. कां. प्र.

राउळी, राउली—देखो 'रावळी' (रू. भे.)

उ०—स्वामि! जु सनमुख हुसि, तु ता राउलि रानि। बयरी वांकु म्यु करि, आहा ऊमटइ निषानि। —मा. का. प्र.

राऊ—देखो 'राउ' (रू भे)

उ०—१ पूगळि पिंगळ राऊ, नळ राजा नरवरे नयरे। अविठा दूरिठ्ठा ये, सगाई दईय सजोगे। —ढो. मा

उ०—२ एक राऊ थप्पइण, एक रावा ऊथप्पण। एक राव गढ लियण, एक रावा गढ अप्पण। —गु रू. ब.

राए—देखो 'राउ' (रू. भे.)

उ० —१ रट्ठौड रूप राए दीनौ, सुरतांण नाम दळ थभण। हिंदुवै मुसलमाणौ, विरदावियौ जोध विरदैना। —गु. रू ब.

उ० २ केस जरा धौवण करै, धोळा अत ही धोय। अतक राए एंचना, हात न मैला होय। —बा. दा.

राकस—देखो 'राक्षस' (रू भे) (ना. मा.)

उ०—१ निरबीज करू राकस निकर, मेटू फिकर त्रिलोक मिण। धारू अभीख लका धणी, तो हू दसरथ राव तण। —र. रू.

उ०—२ नमौ कुंभेण तणा-भुज-काळ। नमौ कुळ-राकस बस-खंगाळ। —ह. र.

(स्त्री. राकसण, राकसणी)

राकसराय—स पु [स. राक्षस+राजा] दशानन, रावण, लकेश। (डि. को)

राकसरोळण—स. पु —राक्षसों का सहार करने वाला, विष्णु, श्रीकृष्ण, श्री रामचन्द्र आदि।

राकसवांणी—स. स्त्री.—छः प्रकार की भाषा में से एक, पिशाची भाषा (ना मा)

राकसांभयंकर—स. पु.—१ ईश्वर, भगवान।

२ श्री रामचन्द्र। (ना. मा)

३ श्रीकृष्ण।

राकसि—देखो 'राक्षसी' (रू भे.)

राकसिया—स पु —चौहान राजपूत वश की एक शाखा।

राकसियौ—स पु.—उक्त शाखा का व्यक्ति।

राकसी, राकस्सी—देखो 'राक्षसी' (रू भे.)

उ०—१ तजै राकसी देह ह्वै दिव्य तासं बधै देवलोक किया जेण तास। —सू प्र.

उ०—२ हरीया मांस मसाण है, भूत राकसी भाण। मोई भवै बिनादमी, बेमुख बडा मजाण। —मनुभ स्वामी

उ०—३ दळ लका दसमाथि, रूप माया राकस्सी। बहुनरी मन्ति चढे, मांन ऊबरा हवस्सी। —गु रू. ब

राकी, राका—स. स्त्री [स. राका] १ पूर्णिमा की रात्रि, पूनम की रात।

उ०—१ उदियागर उगियौ, इन्दु राकी अविरयौ। रग कुरग विरहणी, पाव वासी अरयौ। —बीन्हजी बारहट

उ०—२ तो केसपास सूं मीह रात्रि भई। राका कहता पूर्णिमा ताकौ ईस चद्रमा सोई मुख हुवौ। —वेलि टी.

उ०—३ सजळ, सलहर, सपत्र, सरस, सुरम्भ्रम, ससीतळ। प्रात, पुनिम गतु जळ ग्रमा, त्रिग्रह राका मिळ। —र ज प्र.

२ पूर्णिमा की तिथि, एक पर्व-दिन।

उ०—१ उच्छ्रव वर्ष अजोधिया, प्रभु दरसण परमाणि। चद्र देखि सामद्र चढै, जळ राका निस जाणि। —सू प्र

उ०—२ करि ठाम ठाम वदरण कळस, मरस गाम निज गाम सुत्र। अहै नजर नरां सामद हरस, राका निस सामद रुख। —सू. प्र.

३ पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी।

४ रात्रि, रात।

५ वह युवति जो पहले-पहल रजस्वला हुई हो।

६ खुजली रोग।

७ खर तथा सूर्पनखा की माता।

राकापत, राकापति—स पु. [स राका+पति] चन्द्रमा। (डि को)

उ०—तजि स्यामता जाणि बपि लाजै। राकापति निकळक छबि राजै। —सू. प्र

राकेस, राकेसि—स. पु [स राकेश] १ पूर्णिमा का चद्रमा।

२ चन्द्रमा। (अ मा, ना. डि. को)

उ०—१ बैरी बैर न बीसरै, बिना हियै ही बंक। राह ग्रहै राकेस नू, नभ सिर मात्र निसक। —बा दा

उ०—२ ग्रन सीतळ पवयात, मकर मन भावै सदा। बाका साची बात, गुरसरी जळ राकेस सम। —बां. दा

२ श्री कृष्ण। (अ. मा)

राखस—स. पु. [स] (स्त्री. राखसी) १ एक मानव जाति विशेष जो वैदिक साहित्य मे, अत्यन्त क्रूर व मनुष्य देव पितर आदि की शत्रु मानी गई है।

२ उक्त जाति का व्यक्ति जो दानव, दैत्य, निशाचर, असुर आदि नामों से सम्बोधित होता है।

३ कोई अति भयकर, क्रूर या दुष्ट प्राणी।

४ आठ प्रकार के विवाहो मे से एक विवाह (राक्षस-विवाह) जिसमे कन्या के लिये उभय पक्ष मे युद्ध होता है।

५ साठ सवत्सरो मे से उनचासवा सवत्सर।

६ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी बनने वाले २८ योगो मे से पचीसवा योग। (ज्योतिष)

७ गधक व पारे के योग से बनने वाला एक रस। (वैद्यक)

८ एक देव जाति।

रू० भे०—रखरास, रखरस, रक्षस, रखस, रछस, राकस, राखस, राखसु।

राखसकेदी—स पु—राक्षसों को कैद करने वाला, इन्द्र। (ना डि. को.)

राखसी—वि—१ राक्षस का, राक्षस सम्बन्धी।

२ राक्षसो के अनुरूप, अमानुषिक।

स स्त्री—१ राक्षस जाति की स्त्री।

२ कोई क्रूर या दुष्ट प्रकृति की स्त्री।

रू० भे०—रखसी, राकसि, राकसी, राकस्सी, राक्षिसी, राखसि, राससी।

राखा—स स्त्री [स राक्षा] लाख, लाह, जतु। (डि को)

राखिसी—देखो 'राखसी' (रू भे)

उ०—खूटि सू सिय सहीनति गोली। काढिवा वसन बीध होयाली। अवतरति थई राक्षिसी राखी, तीणइ हुई हिव होअत चाखी। —गालि सूरि

राखव, राखंदो—वि—रक्षक।

उ०—गुरी वामै दाहिणै, आगळि अग्गै बारण। राजा 'गाजी साह' नू, राखवो रहमाण। —गु रू. ब

राख—स स्त्री—१ किसी वस्तु या पदार्थ के बिल्कुल जल जाने के बाद अवशिष्ट रहने वाला तत्व या अंश, भस्म, भस्मि, खाक।

उ०—घर हाळा पगो ही ममभावै, पण सिर मे गू ग चढायेडो, भु वाळी खातो फिरै! मानै कद! माथै मे राख घाल राखी है। —दसदोख

क्रि. प्र—करणी, होणी।

मुहा०—१ राखउडणी=सब कुछ नष्ट हो जाना। ठाट बाट व रौनक समाप्त हो जाना। प्रतिष्ठा या गौरव समाप्त हो जाना।

२ राख फैकणी, राख बगाणी=किसी व्यक्ति, कार्य या वस्तु के प्रति घृणा करना, अवहेलना करना।

३ माथे मे राख घालणी=वैराग्य लेना अपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीन होना, निर्धन होना।

२ धूल, खाक।

उ०—सब द्वारा रा रसिक नवेला, अलबत भग इधकाई। देख बिचार द्वार दरवे दिस, बिलकुल राख बगाई। —ऊ का

मह०—राखडो, राखूडो, राखेडो।

राखउडियौ—वि.—जिसकी इज्जत चली गई हो, निर्लज्ज, बेशर्म, नालायक ।

उ०—१ औटाळ, पेट रा जाया ई म्हारै मरण री बाट न्हाळै । पण म्हारी छाती माथै तौ वदी हाल बीस बरसा तांई मूंग दळैला । राखउडियां— नै म्हाई दुरासीस देवू के म्हनै सताई ज्यूं बुढापै थांनै ई थारा कुणकिया सतावै । —फुलवाडी

उ०—२ बिणियाणी कह्यौ—देखौ राखउडिया री सित्या निकळी । फेर औ हडमांनजी रौ पुजारी बाजै । बावरिया री गळाई चरता इण नै लाज को म्राइ नी । —फुलवाडी

स. पु—एक देशी गाली ।

उ०—अबै म्हनै सगळी बात बतावौ, कठैई राखउडियौ पाछौ वेगौ नी बळ जावै । —फुलवाडी

राखडौ—स. पु—१ शिर का म्राभूषण विशेष, चूडामणि ।

उ०—साजा सोल सिंगार, सोना री राखडी । मावळिया सूं प्रीत, म्रौरा सू म्राखडा । —मीरा

२ देखो 'राख' (मह. रू भे)

राखड़ी—स. स्त्री. [स. रक्षिका, प्रा. रक्खिम्रा] १ सुहागिनी स्त्रियो के सिर (मस्तिष्क) पर धारण करने का एक स्वर्णाभूषण । (व. स)

उ०—१ पहिरणि गजवड फालडी ए म्रोढवि नवरग घाटडी ए । करम्रलि चूडी खलकती ए सिरि सोवन राखड़ी झलकती ए । —हीराणद सूरि

उ०—२ पटली ब्रह्म-गन्यान, हरी बर राखड़ी । पहरि सुवागण नारि, झरोखै म्राखडी । —मीरा

उ०—३ जीरा म्हारी बाई ऐ रतना जडा दू थारी राखड़ी, हीरां जडाद्यू थारौ हार । —लो गी.

२ शीशफूल ।

३ रक्षा-सूत्र, गडा, ताबीज ।

उ०—१ भाठा जितरा देव पूज्या, राखड़ी मादळिया ई कराया, गाव रा गुरांसा खने इलाज ई करायौ म्रर जोधपुर जाय'र डाक्टरा री छानी मे रुपिया ई बाळिया पण गरज कांई सजी कोयनी । —रातवासौ

उ०—२ ताहरां कुंवरी कही सिद्ध म्रागा इसी राखड़ी कराई । जे बांधीजै तौ म्रादमी हुवै । —चौबोली

उ०—३ बार बार मांनुस जनम, पांमसी नही रे गिवार । डोरा डडा राखड़ी, जत्र तत्र निवार । —जयवाणी

४ खरीफ की फसल के प्रारभ मे ऊट के गर्दन मे म्रौर बैल के के सीगो के चारो म्रोर बाधा जाने वाला रेशम या सूत के गुच्छोदार धागा जो मागलिक माना जाता है ।

उ०—कैणा म्राखड़िया जूडा दै काधै । बैंणा बळघा रै राखड़ियां बाधै । —ऊ. का.

रू० भे०—रखडी ।

५ देखो 'राखी' (रू. भे.)

उ०—वडलो म्रायौ म्रायौ राखड़ियां (रौ) तेंहुवार । कुण नै बाधै म्रौ थारे राखड़ी । —लो. गी

राखड़ीडोरो—स पु—१ रक्षा-बधन के दिन बाधा जाने वाला सूत्र, राखी ।

२ गडा, ताबीज ।

राखड़ीपूनम—देखो 'राखीपूनम' (रू भे)

राखण—वि —रखने वाला, रक्षा करने वाला ।

उ०—'जगड' राण दीधा जिता, गेबर हैंवर गाम । म्रब पाता देसी इता, न्रप कुण राखण नाम । —बा. दा

स स्त्री—रखने की क्रिया या भाव ।

राखणभगत—स पु.—भक्तो की रक्षा करने वाला, ईश्वर । (ना मा.)

राखणीप्रांण—स पु.—प्राणो की रक्षा करने वाला कवच, जाली । (डि को)

राखणो—वि —रखने वाला ।

उ०—भली राखणौ रीति लाखौ भुजाळ । भडा रूप भूपाळ लीला-भुम्राळ । —ल. पिं.

राखणौ, राखबौ—क्रि. स. [सं. रक्षणं] १ किसी म्राधार या तल पर किसी वस्तु को ठहराना, टिकाना, रखना, धरना ।

२ नष्ट न होने देना, बिगडने न देना, रक्षा करना, बचाना, उबारना ।

उ०—१ म्रायौं दक्खण दळा, खेड दलकार तुरगम । राजसिंघ राखियौ कोट रखवाळ दुरगम । —गु. रू. ब

उ०—२ म्रसुर बोलियौ कुबोल, पतसाह मुह म्रागळी, राज विण खत्री धरम कमण राखै । —केसोदास गाडण

उ०—३ हरीया क्या पछताईयै, म्राप म्रौर कै काज । राखणहारा रामजी, लोक सकल की लाज । —म्रनुभववाणी

उ०—४ मडतै रूप 'भीमौ' 'किसन', 'जाप' नाहरखान चव । 'केहरी' पडै 'पानावता', राख नाम लग चद रव । —रा रू

उ०—५ किण ही कह्यौ सूत्र मे साधू ने जीव राखणा कह्या । —भि द्र

३ पालन करना, पोषण करना ।

४ म्रपने म्रधिकार में करना, कब्जे मे करना ।

उ०—१ राखण हारा राखि तूं, म्राप म्रापणे हाथि । मी फिरि मन चाले नही, ऊठी म्रौर के साथि । —ह. पु वा.

उ०—२ रामजी री माळा रै बासदी लगाय वणी सू छानै बचायोडी गूंजी हाथ मे राखती तौ म्हनै ऐ दिन नी देखणा पडता । —फुलवाडी

५ सुपुर्द करना, सौंपना ।

६ एकत्र करना, इकट्ठा करना, संग्रहीत करना, मिलाना।
७ नियुक्त करना, तैनात करना, काम पर लगाना।
उ०—हलदी मन दियौ, तेल सब लियौ। ऊठ मीनो, हाळी राख्यौ स्याम काकी अर तेल बुहायौ। —दसदोख
८ जाने न देना, रोक रखना, ठहराना, रोकना, गतिरोध करना।
उ०—१ पड़ी चोंखयौ 'नमो' सीस पतसाह, सुभट जोन भेजवा सत। रत कदळ तिण पोहर राखियौ सगरा सहळ नट कुळ नक। —जगन्नाथ सादू
उ०—२ भावन भावन है गयी, को दावगि को लाज। साहित्य व्याकरण आलियउ, जट करु राखइ आज। —डी मा
९ कुछ करने न देना, रोकना, वर्जन करना, मना करना।
उ०—१ रागी कळी 'ऊंदे' राखो। सुख नव कोट किया जग साखी। —रा रू
उ०—२ सिहियारा हूं सवसांनि मारन रोनी देखी न नारी। सू कीजै ना, बीग माहरा, तमो न राखो वारी। —नळाख्यान
१० आश्रय देना, प्रश्रय देना, सरक्षण देना।
उ०—१ दामोदर दीजै मती, कायर कोई काम। सरणै राखे सूर रे, तेथ न व्यापै त्राम। —बा दा
उ०—२ रुस्मा राखै सनरे, उददावंतगण दूद। हाजर खिजमत कारणे, मुख नाजर हसमद। —रा रू
उ०—३ तेरै तो सामान सब, मेरै बोहत जरूर। हरीयै कूं करि आपनी, राखो राम हजूर। —अनुभववाणी
११ आवास की दृष्टि से किसी को कहीं ठहराना, टिकाना, बसाना।
उ०—१ माधव तुम्हे म चालसिउ, गोरी जपइ गुज्झ। भलू करंबिसि भुज्झ, माहि राखिसि तुज्झ। —मा का प्र
उ०—२ काहि तु कालिज-माहा धम रांखू हृदय मझारि। सूझनि सुकी माधवा, पगलू रखे पधारि। —मा का प्र
उ०—३ विधि सहित वधावै वाजित्र वाजै, भिन भिन अभिन वागि मुख भाखि। करै भगति राजान किसन जी, राज रमणि रुखमिणि ग्रह राखि। —वेलि
१२ धारण करना, वहन करना, स्वीकार करना, मानना।
उ०—लोक लाज कुल की मरजादा, यामे एक न राखू री। —मीरा
१३ चोट करना।
१४ आरोपित करना, मढ़ना, थोपना, लादना।
१५ रेहन या गिरवी रखना।
१६ सामने लाना, आगे रखना, प्रस्तुत करना।
१७ पारिवारिक या सामाजिक सम्बन्ध बनाना, मेल-मुलाकात रखना सम्पर्क रखना।
उ०—इणी भांत मिनख रै हाथा लगायोड़ी लाय मे सुगाई जे दिन रात मिळती नी ई मिनख सूं नातो नी उगा नै राखणौ ई पड़ैना। —फुलवाड़ी
१८ रखवाली करना, ध्यान रखना, चौकसी करना।
उ०—म्हारै हाटे आप भलाइ उतरच्या। म्हारी थेली राखी। एड़ घन चोर ले जावता तो म्हारा च्यार बेटा कुवारा रहिता। —भि द्र.
१९ अवलंबित करना, आश्रित करना।
उ०—१ आशी गोरी ऊपरै जे कोई राखै मन। हरीया हरि का दास रै सुख त्रिसा नही तन। —अनुभववाणी
२० निभाना, पालन करना।
उ०—१ रिति गामी व्है सील राखियौ पुत्रोत्पत्ति फल पाई। पति पतनी दम्पति प्रिय प्यारी, नवला देह निभाई। —ऊ. का.
उ०—२ सील सील इक राखणौ मन करि निज अनुकूल। —वि कु
२१ कुछ तैयार कर रखना।
उ०—१ जाळी मगि चढि चढि पथी जोवै, भुवणि सुनन मन तसु भिळित। लिखि राखै कागळ नग लेखणि, ममि काजळ आसू मिळित। —वेलि
उ०—२ सीखावि सखी राखी मासै सुजि, राणी पूछै रुखमणी। आज कही तो आप जाद आवू, अब जाब अबिका तणी। —वेलि
२२ करना।
ज्यू—विस्वास राखणौ, भरोसौ राखणौ, गरव राखणौ।
उ०—१ जिण बखत सेठ पदमां जग कोनी रै नह कामरो। तण चाय लगी सेठ तिको राख भरोसो राम रो। —ऊ. का.
उ०—२ दादो सा रुमानसिंघजी थ्या री घणी लाड राखता हा। छोटी ऊमर म ही ब्याह कर दियौ हो। —दसदोख
२३ रखना।
उ०—१ हा पर ना, दोनूं मोसम मे राखर उकारे सूं हकारी भरयौ अर मर्दूं स उठ'र गवळ कानी सहो मोस्यौ। —दसदोख
उ०—२ बीछू वानर व्याळ विस, गदव गरदभ गोल। ते अळगाहिज राखणा औ उपदेस अमोल। —बा दा.
उ०—३ मनि मकारणो माखवो, खगमत राखइ कन। हमला ग्रीसम बीनवइ, माभळि प्री विरतन। —ढो. मा.
राखणहार हारो (हारी) राखणियौ —वि।
रखियोड़ो —भू का कृ.।
राखीजणौ, राखीजबौ —कर्म वा.।
रखवणौ, रखवबौ रखणौ, रखबौ रखवणौ रखवबौ —रू. भे।
राखबुपी—स. पु—चीता, तेंदुआ।
(डि. को.)

२ रखने का ढग ।

राखवरण, राखवरणौ–वि.–जिसका रग या वर्ण राख के समान हो, श्याम, काला ।

स. पु.–एक प्रकार का घोडा ।

राखस–देखो 'राक्षस' (रू भे.) (नां. मा.)

उ०—१ **राखसां** पथळ राम महल आकास रेण, मचीरण रा सल सांमी माडी युध मल । —पी. ग्र

उ०—२ चलै राजकुमार पिता चौ, सासण पाय सहल्लै । रांवण सहत घणा खळ **राखस** दारुण, दैंत दहल्लै । —र रू.

उ०—३ तद फूलमती बोली रे मानवी तूं अठै कासू आयौ । अठै **राखस** आयौ तौ तनें मारसी । —चौबोली

उ०—४ जावता जावता देखे तो कासू एक पहाड माहै **राखस**, **राखसणी** रै गोडै माथौ दे सूतो छै । —चौबोली

(स्त्री राखसरणी, राखमी)

राखसपुरि–स स्त्री [सं राक्षस+पुरी] १ राक्षसो का नगर ।

उ०—इद्रु अछइ रहतु पुरगउ, विज्जमालि ते लहुडउ भाउ । चपलु भणी नइ काढिउ राइ, रोसि चडिउ **राखसपुरि** जाइ । —सालिभद्र सूरि

२ लका ।

राखसि, राखसी–देखो 'राक्षसी' (रू भे.)

उ०—१ कन्या **राखसि** तणीय जि सही, भीलि बाली ऊभी रही । मणि माला नु पाया नीर, पाचइ हूया प्रकट सरीर । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सपेख अग नग साख सी, रत रोम मारग **राखसी** । तिह नाक पाण विछेद ताडे, बाण इक रघुबीर । —र. रू.

राखसु–देखो 'राक्षस' (रू. भे)

उ०—एतइ **राखसु** रोसि जलतु आवइ फुड फेकार करतु । बेटी बूमट मारइ जाम भीमु भिडेवा ऊठिउ ताम । —सालिभद्र सूरि

राखियोड़ौ–भू. का कृ.–१ किसी आधार या तल पर ठहराया हुआ, टिकाया हुआ, रक्खा हुआ, धरा हुआ. २ नष्ट न होने दिया हुआ, बिगडने न दिया हुआ, बचाया हुआ, उबारा हुआ, रक्षित. ३ पालन किया हुआ, पोषण किया हुआ. ४ अधिकार या कब्जे मे किया हुआ ५ सुपुर्द किया हुआ, सौंपा हुआ. ६ एकत्र, इकट्ठा या सग्रहीत किया हुआ, मिलाया हुआ. ७ नियुक्त या तैनात किया हुआ, काम पर लगाया हुआ ८ जाने न दिया हुआ, रोक रक्खा हुआ, ठहराया हुआ, गतिरोध किया हुआ. ९ कुछ करने से रोका या मना किया हुआ, वर्जित. १० आश्रय, प्रश्रय या सरक्षण दिया हुआ. ११ आवास की दृष्टि मे कही ठहराया या टिकाया हुआ, बसाया हुआ. १२ धारण या वहन किया हुआ, स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १३ चोट किया हुआ १४ आरोपित किया हुआ, मढा हुआ, थोपा हुआ, लादा हुआ. १५ रेहन या गिरवी रक्खा हुआ. १६ सामने या आगे लाया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ. १७ पारिवारिक या सामाजिक सम्बन्ध बनाया हुआ, मेल-मुलाकात रक्खा हुआ, सम्पर्क रक्खा हुआ. १८ रखवाली किया हुआ, ध्यान रक्खा हुआ, चौकसी किया हुआ. १९ अवलबित या आधारित किया हुआ. २० निभाया हुआ, पालन किया हुआ. २१ कुछ तैयार कर रक्खा हुआ २२ किया हुआ. २३ रक्खा हुआ.

(स्त्री. राखियोडी)

राखी–सं स्त्री. १ श्रावण शुक्ला पूर्णिमा की तिथि, जिस दिन हिन्दुओ मे, बहने अपने भाइयो के तथा प्रोहित-ब्राह्मण अपने यजमानो के हाथ की कलाई के मंगल-सूत्र (रक्षा-बधन) बाधते है ।

वि० वि०—हिन्दुओ मे यह पर्व दिन माना जाता है और इस दिन बडा त्यौहार मनाया जाता है । ब्राह्मण इस दिन तर्पण करके जनऊ बदलते हैं ।

२ उक्त दिन को बाधा जाने वाला मगल-सूत्र, रक्षा-बधन ।

३ गडा-ताबीज,

अल्पा०—रखडी, राखडी,

राखीपूनम–स. स्त्री. [स रक्षापूर्णिमा] श्रावण शुक्ला पूर्णिमा की तिथि जिस दिन रक्षा बधन का त्यौहार मनाया जाता है ।

रू० भे०—राखडीपूनम,

राखीबंध, राखीबधन–स पु [सं रक्षाबधनम्] रक्षा बधन, रक्षा-सूत्र, मगल सूत्र ।

राखीबध भाई, राखी भाई–स पु–जिमको राखी बाध कर भाई बना लिया गया हो ।

राखूंडौ, राखेड़ौ–देखो 'राख' (मह, रू. भे)

राखोडियौ, राखोड़ौ–देखो 'राख' (मह, रू भे)

उ०—जेहा केहा ज्याग, हैवर **राखोड़ा** हुवै । ताजी दीजै त्याग, जस लीजै मोई जगन । —बा. दा.

वि०—राख से ओत-प्रोत, राख मे लिप्त, लिपटा हुआ 'सन्यासी' फक्कड ।

राखौ–स पु.–किसी रोग के निवारणार्थ मनुष्य (या किसी जानवर के भी) के शरीर पर लोहे की गर्म सलाका से, लगाया जाने वाला डाम ।

उ०—अठै राणीजी आगै इयू कहियो जु कुंवरजी नू खुधा न लागै सु म्हे जाणा छा । एक गाठि छै, गिटक एक रै मान सू भूख लागण नही दैनी छै । जाहरा नीबू जवडी हुमी ताहरा दलपतजी रा हुममणा नू दोहरी होमी । पण क्याल तेजसी वडो वेद छै, आज धनतर छै, तिण कन्हा मूग हेक हेक जवडा **राखा** क्यारि दिराडीजै तौ समाधि हुवै । —द वि.

रागंणी—वि—गायक, गवैया।

राग—सं [म] १ अनुराग, प्रेम, स्नेह, प्यार। (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ बड़ी धन वेस, म न्याय सुदेस। धवा चित चेन, पुणी मन प्रेन। भणा धन भाग रबुब्बर राग। —र ज. प्र.

उ०—२ अग सकोमळ पग सर भर, धूप मर्म अनराग विनारो। साथ सती जन राग रसायन, सुर स्विया कवि दास दनारो। —अनुभववाणी

उ० ३ मुख करि किम कहनड बगो, जे तुम्ह सेती राग। न मन जाणी नेह नी, लागो जिण विधि लाग रे। —प च वो

उ०—४ पल गहुवा राग ढेम ना, आण्यो मन सुभ ध्यानो रे। —जयवाणी

२ ममत्व, ममता, मोह।

उ०—१ मोन माण्यो नहर न दियो, राग द्वेम फल जोयो रे। भाणेजा न राज म दियो, पुत्र ऊपर राग होयो र। —जयवाणी

उ०—२ काम न ऊठे कलपना, राग न चित सूं दोष। जन हरिया उन मन कूं, जीवन कहीजे मोख। —अनभववाणी

३ लगाव, सम्बन्ध।

उ०—प्रिय करै सेवा रसा, नहीं मन माहे नेह। राग करे दगा सूं रखै, गणिका अवगुण गेह। —ध व ग्र

४ आकर्षण।

उ०—ईसान कूण माहे हुतो रे, वारटक नामे बाग। पान फलै करि सोभतो रे, दीठा उपजे राग। —जयवाणी

५ श्रद्धा, भक्ति, आस्था, विश्वास।

उ०—१ करियइ पूजा अनइ प्रभावना रे, धरियइ सद्गुरु ऊपरि राग रे। —वि कु

उ०—२ हंस कर मीरा पीय गई है प्रभु प्रमाद पर राग। इक्यो तक राणाजी भेज्यो, उसमे कारा नाग। —मीरा

६ मैथुन की भावना।

उ०—१ अकबर रता राग सूं रंग त्रिया रस नह। सो उनपात पलट्टियो, सो सुणियो निस मद्ध। —रा रू

उ०—२ आज सखी सपनान्तर रीत, राग भरे राजा पनगे बीठ। —बी दे

७ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

उ०—माया राम त्याकू भलाही दरसे, किया बाछन दाई। राग त्याग अभिमान न कोई, आप सरूप सदाई। —श्री सुखरामजी महाराज

८ राग रंग।

उ०—१ हरीया राग न रीभवो, वेद न विद्या पाठ। काया जामी छगन्नी माथे लफता काठ। —अनुभववाणी

उ०—२ घट माही घडीयाल, आठ पोहर लागी रहे। हरीया राग रसाळ, रग रग भीतर होत है। —अनुभववाणी

९ मन में होने वाली कोई सुखद अनुभूति।

१० सुन्दरता, खूबसूरती।

११ आभा, छटा, कान्ति, शोभा।

उ०—दाभ-अणी-जल-बिंदवो ए, जैसो सभा नो राग। सुपन दरसन नी ओपमा ए, सहज पडन ए लाग। —जयवाणी

१२ हर्ष खुशी आनन्द।

१३ मनोरंजन।

१४ बातों में ली जाने वाली चुटकी, व्यंग।

१५ भाव, आशय।

ज्यू—रोवणा में राग है।

१६ खेद, शोक।

१७ ईर्ष्या, द्वेष, डाह।

१८ क्लेश, पीड़ा।

१९ क्रोध, गुस्सा।

२० ग्रह अंश एवं न्यास स्वरों का वह कलात्मक प्रयोग, जिससे सुनने वाले का मन अनुरंजित हो सके। या ध्वनि की वह विशिष्ट रचना जो स्वर एवं वर्ण विभूषित हो और जो प्राणी के चित्त को रंजित करता हो। (संगीत)

उ०—१ स्वतंत्र तन्यमाळ म निर्तबिनी नचे नहीं। सुहागिनी स्वराग राग गावती रचे नहीं। —ऊ. का.

उ०—२ रीझे साभळ राग, भीजे रस नह भेचके। नैडो आवै नाग, पकडीजे छाबड पडै। —बा दा.

उ०—३ नड नाग गयो सग भाग नर्ग, सुध होण अकब्बर राग सुणे। —रा रू.

२१ छत्तीस राग-रागनियों में से कोई एक। (संगीत)

उ०—१ ताल अस्ट द्वादस तवन, सोळह भेद संगीत। राग छत्तीसह रागणी पत उकति सुप्रवीन। —सु. प्र.

उ०—२ घट में राम रच्यो नर नारी आप ही नाचे को गति-हारी। पातरि नाचे पाच पचीस, गावे अगमै राग छतीसूं। —अनुभववाणी

२२ किसी वाद्य से निकलने वाली तान धुन, लय। (संगीत)

उ०—१ बिन पावा जाइ नाचिबो, बिण कर ताळ बजाय। बिना राग रीभावबो, बिना कठ सुर गाय। —अनुभववाणी

उ०—२ दिन आथमिया पछै ई पीजारा रै घरै तान घू-घट घू-घट री राग असमाणनी ही। —फुलवाडी

२३ आवाज, स्वर, शब्द, ध्वनि।

२४ आत्मा का मूर्छा रूपी परिणाम। (जैन)

२५ रंग।

२६ लाल रंग लाखी रंग।

२७ ललाई, लालिमा।

उ०—तुम्हसु लागउ नेहलउ, जाए मजीठउ राग। पट्टकूल फाटै थके, रहै त्रागा सु लागो रे। —प. च. चौ.

२८ हाथ का कवच।

उ०—पोरस्स नकुळ पडव प्रमाणि, तए बधै जूसए कसए तांणि। ओपंत राग हाथां अनोप, तुडताए सीस रोप्रत टोप। —गु रू. ब.

२९ छोटा हरिए।

उ०—तिके किए भात रा हिरए छै? काळा वडा बेगड छै, मुहडा रै डार मे मेघ हुय रह्या छै माहे राग छै जिके कूद-उछळ छै। —रा. सा स

वि. वि —कृष्ण हिरए के युवा बच्चे को 'राग' कहा जाता है। इसका रग जन्म से श्याम नहीं होता। इसकी श्यामता आयु के साथ साथ बढती रहती है।

३० घोडा। (ना. डिं को.)

३१ राजा।

३२ सूर्य।

३३ चन्द्रमा।

३४ पैर मे लगाने का अलता।

३५ एक वर्ण वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरए मे १३ वर्ण होते हैं।

स. स्त्री.—३६ छै की सख्या। * (डिं को)

वि.—छै।

रू० भे०—रग।

अल्पा.—रागळी।

रागकर—स. पु —एक प्रकार का रत्न। (व. स.)

रागड़—स. पु.—१ भैंसा।

उ०—खडो लांगडो बीर वीगधि खेतू। करै **रागड़ां** छागडा राह केतू। —मे. म.

२ बडी उम्र का काला हरिए।

अल्पा०—रागडो।

रागड़ो—देखो 'रागड' (अल्पा., रू. भे.)

रागजांगड़ो—स पु —वीर रस पूर्ण राग, सिधुराग।

उ०—जबर अभग जुध सुभट अग कडा जग्रा जडै। प्रगट हद **राग-जांगड़ो** हाका पडै। —विसनदास बारहठ

रागजोगिया—स. स्त्री.—एक राग विशेष।

रागण, रागणी—सं स्त्री. [सं. रागिणी] १ किसी राग की स्त्री, रागिनी। (सगीत)

वि. वि.—इनकी सख्या ३६ मानी गई है। अर्थात ३६ प्रकार की रागिनिया होती हैं।

२ कोई राग जिसकी एक निश्चित स्वरावली हो।

३ चतुर स्त्री।

४ मेना की बडी कन्या।

५ जय श्री नामक लक्ष्मी।

६ स्वेच्छाचारिणी, या छिनाल स्त्री।

७ छत्तीस की सख्या। *

वि १—स्नेह या प्रेम करने वाली, अनुरक्त।

उ०—चित चोखो चिहुं नारि नो रे, गुणवती कहवाय। प्रिउ ऊपरि अति **रागणी**, ते कथन न लोपै काय। —वि. कु.

२ छत्तीस।

रू० भे०—रागनि, रागिणी, रागिनी।

रागणो, रागबो—क्रि. स —१ किसी राग या रागिनी को अलापना, साधना, गाना।

२ अनुराग या प्रेम करना।

क्रि. अ —३ अनुरक्त या आशक्त होना।

४ लीन होना, लिप्त होना।

रागणहार, हारो (हारी), रागणियो —वि.।

रागिओडो, रागियोडो राग्योडो —भू. का. कृ.।

रागीजणो, रागीजबो। —कर्म वा /भाव वा.।

रागदोख, रागदोस, रागद्वेस—स. पु. यौ. [स. राग+द्वेष] १ प्रेम व ईर्ष्या आदि मन के विकार, रागद्वेष।

उ०—नको **रागदोखं**, नको बंध मोखं। नको घाटि वाधं, नको आध ओधं। —अनुभववांणी

२ छल-कपट, पक्ष-पात।

उ०—आतम ध्यानी आगरो, जारे बीकानेर। **रागदोख** गुजरात मे, निंदक जेसळमेर। —अग्यात

रागनि—स स्त्री —१ जाध, जघा, रान।

उ०—उडै नभ **रागनि** लग्ग छछोह, मलप्फत पच बरच्छनि बोह। —ला. रा

२ देखो 'रागणी' (रू भे)

उ०—पुनि पारन पाठ पठावन मे, गुणग्यान न **रागनि** गावन मे। —ऊ का.

रागबागेस्वरी—स. स्त्री यौ [स राग+बागेश्वरी] छत्तीस राग रागिनियो मे से एक राग विशेष।

रागमाळा—स स्त्री —१ समान रूप वाली विभिन्न रागों का मिश्रित रूप।

२ रागो के देवमय स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन एव चित्रात्मक अकन।

रागरंग—स पु —१ आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।

उ०—१ रागरंग उछरग रचांणा, बाग राई के बाकी। मोग

प्रथाग सिधु बिच मारग, त्याग पखारण नाकी। —ऊ. का

२ आनंद व खुशी का उत्सव।

उ०—तरै असवारी कर काळीयै द्रह सिधाया। रागरंग हुवै छै खवड़ा खिलवन रा साथ सू बैठा छै।
— राव रिणमल री बात

२ आमोद-प्रमोद, खेल, क्रीड़ा, मनोरंजन। हास-विलास, मौज मस्ती।

उ०—१ करै नृप दान पुन्नि, जिण हाम जगत ए। करत ग्रह रागरंग मोहित मग्ग ए। —सू. रू. ब

उ०—२ जकै दिन ही नीरो सोनो उडावै, रागरंग म आपरा'र गमावै है। दसदोख

उ०—३ हमेसा सुधा म गरकाब रहै। रजावन नवाबपणा, मान आमर रासिया। रागरंग म मस्त रहै।
—जलाल बूबना री बात

३ नृत्य-गायन।

उ०—१ अनेक पखागी प्रयाम, रूप सोभि रूवाग। अनेक रागरंग भोग, गुनगार नरूपाग। —सू प्र

उ०—२ वाजत्र बजन विमाल, रस रागरंग रसाळ। मिळ भूळ मुकिया वाम, तन रूप रति जिम काम। —सू प्र

४ रतिक्रीड़ा।

उ०—भरमल कहै रही मो दोनू ही रागरंग हसिया खेलिया मन प्रसन्न हवो। —कुंवरसी सांखला री वारता

रू० भे०—रंगराग।

रागरज्जु—स पु. कामदेव। (डि को)

रागरस—स पु—१ हंसी, खुशी, आनन्द।

२ आमोद-प्रमोद, हास विलास।

३ नाच-गान।

रागलता—स स्त्री—कामदेव की स्त्री, रति।

रागळी—देखो 'राग' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ मद गली नप नेज मम, खरी रागळियां। पूरा दिन न पोखिया, अरती आदळिया। —स

उ०—२ रूकार लेवै ही, मारीरो सू भावै ही प्र रागळी राग गणायती गेलै बगै ही। —दसदोख

रागलौ—वि (स्त्री रागली) जिसके मन म राग हो राग-द्वेष मोह करने वाला।

रागवडाळौ—स पु—बीर रस पूर्ण राग, सिंधु राग।

उ०—माल भर बहिया मल्लर भरिया आरभ कत्थ। रागवडाळा नजिया सरौ सवाळा गत्थ। —वचनिका

रागारळ, रागारळी—स स्त्री—हंसी-खुशी, आमोद-प्रमोद व क्रीडा से मिलने वाला रस, तृप्ति।

उ०—ऊधा चूंधा कर फेरा उळभावै, बनड़ौ बनड़ी वर मनड़ौ मुरभावै। रस म बेरस रस रागारळ रीसै। दुलहणि दुलहै नै दावानळ दीसै। —ऊ. का

रागाउर, रागातुर—वि [स राग+आतुर] प्रेम, मोह, हास-विलास आदि के लिये व्याकुल, आतुर।

उ०—माभलि गहवा बचन कुमार, रागातुर हुवौ तिणवार। गहवी छै गुणव नी जेह, मदालसा हुसइ नहीं नेह। —वि कु

रागि—देखो 'रागी' (रू भे)

रागिणी, रागिनी—देखो रागणी' (रू भे)

उ०—१ हू प्रीयुडा तुझ रागिणी, तू का हृदय कठोर। चंद चकोर तणी परि मान्यउ तू मन मोर। —स कु.

उ०—२ राति दिवस तोरी रागिणी, राख हृदय सभारि रे। मीन तावड ह सहू सहू, तू छइ प्राण आधार रे। —स. कु

उ०—३ प्रीतम सू अति रागिणी रे, रूपवन्त अभिराम।
—जयवाणी

रागी—वि [स रागिन्] (स्त्री रागणी, रागिणी) १ राग से युक्त।

उ०—जाग्यौ जैन चंद मागी, सोभागी रागी जैन धरम। वैरागी पुण्याई जागी अधिकै उछाह। —ध व ग्र.

२ मोह-माया मे फसा हुआ।

उ०—१ दुख सुख का कारण मन जीता, सो जन है वैरागी। कहै सुखराम सुणो भाई साधा, और सबी है रागी।
—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ सांतिनाथ सोभागी हो लाल सोलम जिन रागी हो। 'विनयचंद' रागी हो लाल जगी न वड भागी हो। —वि कु

३ ईर्ष्यालु द्वेष करने वाला।

उ०—हरजीमल मह रागी थगो जद रघनाथजी स उरजोजी साधु मोटौ श्रोतियौ लड़ वाचवा लागौ —भि द्र

४ अनुरक्त, आसक्त मोहित।

५ विषय वासना म लीन कामी।

६ प्रेमी अनुरागी।

७ प्रेम पगा प्रीति पूर्ण।

८ लाल रंग का, लाल सुर्ख।

९ रंगा हुआ, रंजित।

स पु.—१ अशोक वृक्ष।

२ मकरा या मकरा नामक कदन्न।

३ छै मात्रा का छंद।

४ आभूषणो मे गोल चक्रनुमा खुदाई करने का लोहे का एक औजार।

रू० भे०—रागि।

रागु—देखो 'राग (रू भे)

उ०—कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसत। तरुणी दळ दोलारस सारस भमइ हसत। —जयसेखर सूरि

राघव—स. पु. [सं.] १ परमेस्वर, ईस्वर। (ह. ना. मा.)

उ०—१ ते आलेही हर तणा, जे नर नांम लियत। से जमडंडा परहरे, **राघव** सरण रहत। —ह. र.

उ०—२ आप नाम इळ ऊपरा, रसना **राघव** नाम। कडी विघ सूं राखियौ, पुरखा जका प्रणाम। —बा दा

उ०—३ निमौ नरसिंघ तुहारौ नाम, कियौ पहिलाद तणौ सिध काम। कियौ तैं **राघव** रूप करूर, चत्रभुज दैत हुवौ चकचूर। —पी ग्र

२ विष्णु का एक नामान्तर।

उ०—**राघव** रयणायर रसा, सेम महेस्वर वंग। सुणे बघायौ गिरि सुता, सो व्है मो सुख देण। —बा दा.

३ दशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र।

उ०—१ **राघव** उमग हस हस रटै, खेलू खगा खतग रौ। रिम हणै आज पुरू रळी, जुड़ू अखाडौ जग रौ। —र. रू

उ०—२ रामचद्र नें सील राव के, कसर न राखी काई। रावन वस खोय के **राघव**, विजय निसान बजाई। —ऊ का.

उ०—३ बैर मही तोटौ वसै, वसै नफौ नह बक। सिया विरह **राघव** सह्यौ, रावण पलटी लक। —बा दा

४ रघु का वंशधर।

५ अज।

६ एक बडी जाति की मछली।

रू० भे०—राघवि, राघव्व, राघौ।

अल्पा.—राघवौ।

राघवराई—सं. पु [स राघव+राजा] १ श्री रामचन्द्र।

२ ईस्वर।

उ०-- मत मिहाई, **राघवराई** वो हरि गावौ पै उध पावौ। —र ज प्र

राघवानदी—स पु—वैष्णव सप्रदाय की एक शाखा व इस शाखा का अनुयायी।

राघवि—देखो 'राघव' (रू भे)

राघवेंद्र—स पु [स राघव+इन्द्र] रघुवंशियो मे इन्द्र, श्री रामचन्द्र।

राघवेस—स. पु. [स. राघव+ईश] श्रीरामचन्द्र।

उ०—सदा नमत ओघराय, पाय घू सुरेस रे। बदा नरेस आन कुण, जोड **राघवेस** रे। —र ज. प्र

राघवौ—देखो 'राघव' (अल्पा., रू भे)

राघव्व, राघौ—देखो 'राघव' (रू भे.) (डिं को.)

उ०—१ समांणौ तूझ मही घणस्याम, **राघव्व** अम्हीणौ आतम राम। —ह. र.

उ०—२ नगा आकर तणौ रूप हर मणी निज। रूप कुळ दिवाकर तणौ **राघौ**। —र ज प्र

उ०—३ कीजै वारणै छिव काम कौटिक, दीन दुख दाघौ। साभाव सरण-सधार स्रीवर, राज री **राघौ**। —र. ज. प्र.

उ०--४ सही सेस लाखमणां धारि सोधा। जगदीस **राघौ** सकी देव जोधा। --सू प्र

राड़—स स्त्री. [स राटि, प्रा राडि] १ युद्ध, झगड़ा, समर। (अ मा)

उ०—१ तोयधी गिरराज तारै, प्रगट कर कपि सेन पारै। रची लका **राड़**। —र. ज प्र

उ०—२ कौतक सो मडे भाल कपी, घाटा हुय मुण जै **राड़** थपी। थिर घाटा मैं जग **राड़** थपी, करस्यू निरबीजा भाळ कपी। —र. रू

उ०—३ घाडे पुकार पड लाखि घाड। रवि उदय अस्त लग पथ **राड़**। —रा. रू

उ०—४ चौधारा लाखीक चाडतौ, किलम पचाहर कीया कर। **राड़** विभाड सोहियौ राजा, भरक्क ज्यू ई दळ फाड धर। —गु. रू. ब.

२ कळह, गृह-कळह।

उ०— १ इणरै सागै तीजी लुगाई री गिरै। वा हजारा मे टाळकी ही। **राड़** री तौ उण नै फगत मिस चाहीजतौ। बागिया रै तौ नाका दम कर दियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ रोग अगन अरु **राड़** जांण अलप कीजै जतन। बधियां पछै बिगाड, रोक्यौ रहै न राजिया --किरपाराम

३ तकरार, हुज्जत।

उ०— १ मामी सैं समझती, पण जोर कांई करती। नित जणा जणा सू **राड़** करयां के खमिया कांई हाथ आवै। —फुलवाड़ी

उ०—२ भागुजी कह्यौ—मासी थनै ई **राड़** करिया बिना रजत नी व्है। थारा बटा पटिया तुड़ाता व्हैला, थू छेकी जावै जको बात करै नी, क्यू बिरथा आडी-डोडी खमनी फिरै। --फुलवाड़ी

४ दिक्कत, समस्या, रगडा।

उ०—चोरा रै तौ आज नामी सुगन व्हिया। यू माल चौडै मिळ जावै तौ काई चाहीजै। मठाणी **राड़** जेडी ई बात को राखी नी। —फुलवाडा

५ दरार।

उ०—घण घण साच बचाय, नह फूटै पाहड निवड। वड कोमळ भिद जाय, **राड़** पडै जद राजिया। —किरपाराम।

६ शाप, बददुआ।

रू० भे०—राडि, राडी, रार, रारि रारी

राड़क—स. पु.—योद्धा, वीर।

वि०—कळहप्रिय, झगडालु।

राड़गारो—देखो 'राड़ीगार' (रू भे)

उ०—१ सो जनन री वगत ही किरा विरा उरा री लोग **राड़गारो** रो मिल गयो —मारवाड़ रा प्रमरावां री वारता

उ०—२ पछै सिमार री फोजदार वर प्रायो सो भागियो इसा आसम **राड़गारा** वडा मरद राजपूत था।

—ठाकुर जयसमी री वारता

राड़चंद—स. पु.—योद्धा, वीर।

राड़द्रह—स स्त्री.—१ राठोड़ों की एक उप-शाखा।

उ०—सू बालीन देवळा (रा) सीधळ, दवि बोदा वाळीसा देवळ। **राड़द्रहा** सांदा मदूरीका, सेव प्रछी भिलि समळि सगीका।

—रा रू

२ देखो 'राड़धरा'

उ०—मिळ दळ प्रबळ **राड़द्रह** मारै। मार प्रसुर साचोर सधारै।

—रा रू

राड़धड़ा, राड़धरा—स स्त्री—बाड़मेर जिले के एक क्षेत्र विशेष का प्राचीन नाम जो राड़ ऋषि के नाम पर पड़ा था। (मा म)

वि० वि०—इस प्रदेश के घोड़े बढ़िया माने जाते थे।

राड़धरी—वि स्त्री—राड़द्रह की, राड़द्रह सम्बन्धी।

उ०—रामाजी री ठकुराणी **राड़धरी** जिण री रावजी नू कहयो रावजी नू बाहर कारो। —बा दा ख्यात

राड़ाजीत, राड़ाजीत, राड़ाजीतौ—वि (स्त्री राड़ाजीतणी) युद्ध मे विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, वीर।

उ०—सकधा समाय कथा सथा रा विरदा प्रादू. सीरा जोमरदा वाळा प्रखेरै सराह। 'भवानेस' हरा **राड़ाजीत** राणा बारा माळी, समदरा वारपारा तुहाळी सराह। —गोरादान प्रासियो

राड़ि—देखो 'राड़' (रू भे)

उ० १ जिति नसा माहि ववपूर हग, मरधा दूर मिधायगी। जित **राड़ि** समैं बिय खत्रिया, बाड़ खेत नैं खायगी। —ऊ का

उ०—२ छयल्ल देह छेदती, भ्रूहा कोवड़ भेदती। धानखरी सू धाड़ि धाड़ि हति माहै वीर **राड़ि**। —मा वचनिका

उ०—३ देवि दुगविस **राड़ि** साभळी, हाथि लेद हथीयार प्राविळी सीमू भोरू इम कीवड़ कूटइ नेह मागली न कोई छूटइ।

—मालिसूरि

२ देखो—'राड़ी' (रू भे)

राड़िगार, राड़िगारो—देखो 'राड़ीगारो' (रू भे)

उ०—मारै वैरिया प्रखूटी प्राव भूपाळा खाडियो मारग, तेग धारै सकौ पारण छाडियो समाम। वीर राव खळा जाग ताडियो दला रै बैर, **राड़िगारै** उभेलो माडियो 'जोगीराम'। —बनजी खिड़ियो

राड़ी—वि—१ लड़ाई या झगड़ा करने वाला, झगड़ालू।

२ जबरदस्त, जोरदार।

३ योद्धा, वीर।

उ०—१ खीचीकुल 'दूदो' ग्ररि खावरा। राड़ी दुलह हुवो बळ रावरा। —व. भा

उ०—२ दल पड़ै रीठ राळा प्रतर, देखि रुठा कमधज **राड़िया**। भूखाळ वधै जिम देखि भख, प्राया वाराा उपाडिया। —सू प्र

४ देखो 'राड़' (रू भे) (ह. ना मा)

उ०—राव खिन फिरग भरै कवरा **राड़िया**। (जिरा री) भमै नवनाड़िया वीच भमरो। —रावत जोधसिंह कोठारिया रो गीत

रू० भे०—राड़ि

राड़ीगार, राड़ीगारो—१ योद्धा, वीर

उ०—१ **राड़ीगार** चहुप्रारा जानी राड़ थोव राखी। साखी चद-सूर जेने बाना माह सूर। —रावत जोधसिंह कोठारिया रो गीत

उ० २ वळ लकवै कूरमा निवाबा, बोलै बाका तेग जवाबा। कोट धरै सामान प्रकारा, गरट किया भड **राड़ीगारा**। —रा रू

२ कलह प्रिय, झगड़ालु

रू भे—राड़गार, राड़िगार राड़िगारो

राड़ो देखो 'राड़' (मह, रू भे)

उ०—**राड़ो** मालूळो प्रत्थगा वध वधै सोबा रायजादा, सतारा उक्षाला ग्रह उमरै सजीन। घोर वळा प्रथम्मी प्रागनो सूत हेक धाटै प्रासमान फारै थभ लगायो 'प्रजीन'।

—प्रजीतसिंह चूडावत री गीत

राच—देखो 'राछ' (रू भे)

राचणी—वि स्त्री—१ जिस पर रग प्रच्छा व गहरा जमता हो, रजित होने वाली।

उ० महदी वाथी-वाथी वाळू रा रे रेत। पमरम महदी **राचणी**। महदी सीवी सीची जळ जमना र नीर, पमरम महदी **राचणी**।

—लो गी

२ शोभा देने वाली, सुन्दर लगने वाली खिलने वाली निखरने वाली।

उ०—पाना र सरीसी थारी धरा **राचणी** प्रा राज। राज ढाला रासो नी थारै मुलकै रे माय। —लो गी.

३ प्रनुरजित होने वाली।

स स्त्री—मेहदी।

उ०—हरमा मेरा बाला रै, कुरा तो रै गूथैलै बाई री सीस। प्रोदर का रै लोट्या, कुरा तो माडगो हाथा **राचणी**। —लो. गी

राचणो—वि (स्त्री राचणी) रजित होने वाला, रजित होकर खिलने वाला, जमने वाला।

उ०—प्रेम विहूणी प्रीति, जोए मन न ठरै 'जसा'। रग विरा पाना रीति, रग न प्रावै **राचणो**। —जसराज

राचणो, राचबो—क्रि. प्र. [स. रक्ति पा रच्चइ] १ किसी रंग

का किसी वस्त्र या वस्तु पर बैठना, जमना, जमकर कर चमकना। २ मेंहदी के रग मे रंजित होना, मेंहदी का रग खिलना।

उ०—मौराकीन रौ लंघो, गुलाबी चीर अर कसूमल चोळी री सोगणी पैरान। हाथा रै राच्योड़ी मैंदी हीगळू री टीकी, गज-गज लाबा, वासवाळी सू सरगळ बाळ। —दसदोख

३ रंजित होना, रगजाना।

उ०—रिधि सिधि सबही दासी, जोडे हाथ खडी। इनके रग राचै नहिं कबहू, आनम जाग जुडी। —श्री सुखरामजी महाराज

४ अनुरक्त होना, आशक्त होना, प्रेम के रग मे रगीजना।

उ०—१ राम राजे रमा रूप रे, नेतबधी वर्ण नूररे। मीन वाळी पनी साच रे, रे मना जेणह राच रे। —र ज. प्र.

उ०—२ नर राचौ रहै ना लखी, तू कन लख्यौ सुजाण। पढ कुराण रीतौ रह्यौ, राच्यौ नह रहमाण। —अग्यात

उ०—३ पति वरता मो जागीयै, हरीया पति सू हेक। राम बिना राचै नही, आवौ जाय अनेक। —अनुभववाणी

उ०—४ रयणाहर रयणे भरघउ, गभीर सुदर रीति। राजहसा राचइ नही, मान सरोवर प्रीति। —स कु.

उ०—५ धताची आगनि नाचसि, मनेका गुण गाई राचसि। रूड़ सुख पामिस सुदरी, सुरपति नि भरतार ज वरी। —नलाख्यान

५ लीन होना, मग्न होना, मस्त होना।

उ०—साखी रै भाग नमापन सारै, कीध महाजुध कीन सकाम। साच नको कज साधा सारन, राच सदीप सु रामण राम —र ज प्र

उ०—२ हृदि बैठा हदि की कहै, वेद पुराना वाचि। हरीया वहद वावरा, रह्या राम सु राचि। —अनुभववाणी

उ०—४ स्रीराम चरण बिन राचियौ, जन दूजौ है नहिं आवै दाय। —गी रा

६ लिप्त होना, उलझना, फसना।

उ०—१ साच झूठ झूठ साच राचतौ रह्यौ। रूप कू कुनाव नाव नावतौ रह्यौ। —ऊ का

उ०—२ मेहल पिलगादिक अथिर छै, सो तो आया आपणै हाथ। आपै भोग साह राचौ रह्या, आप समझौ प्रथ्वीनाथ। —जयवाणी

उ०—३ तै भद्रक परिणाम थी जी, सुविसेखै मन लाय। ऊपरलै आडबरैजी, राचि रह्यौ मुरझाय। —वि कु

७ प्रभावान्वित होना, प्रभाव मे आना।

उ०—तरुणी जिण धनवान तजि, नजियौ वेस विभाग। चारुदन द्विज री चहै, राचौ गुण अनुराग। —व भा

८ शोभित होना, शोभा देना, फबना।

उ०—१ म्हारा जामण जाया भावज रै राचै रे बिछिया बाजणा —लो गी

उ०—२ सुर मे फोग सहेस, रेत भसमी पर राचै। चाद आगिया साथ, जटा लासूड़ा जाचै। —दसदेव

९ प्रसन्न होना, खुश होना।

उ०—१ चारण भट्टा बाभणा, वयण सुणावै सूव। थे राजी मनमान सू, दीधै राचै हूंब। —बा दा

उ०—२ सुख मे कदै न राचियै, दुख ना रहियै रोय। अजै घणौरा दोहडा, की जाणू की होय। —अग्यात

१० फैलना, छा जाना।

उ०—१ साचै खाग झाटा राचै तवाई छ खवा साथै। रआ आटपाटा नदी बहाई रोसाण। —सूरजमल मीसण

राचणहार, हारौ (हारी), राचणियौ —वि.।

राचिग्रोडौ, राचियोडौ, राच्योडौ —भू का कृ.।

राचीजणौ, राचीजबौ —भाव वा.।

रातणौ, रातबौ —रू. भे.।

राचियोडौ—भू का कृ—१ वस्त्र या वस्तु पर बैठा हुआ, जमा हुआ, जमकर चमका हुआ (रग) २ मेहदी के रग मे रंजित हुवा हुआ, मेहदी का रग खिला हुआ. ३ रंजित हुवा हुआ, रगा गया हुआ ४ अनुरक्त या आशक्त हुवा हुआ, प्रेम के रग मे रगा हुआ ५ लीन, मग्न या मस्त हुवा हुआ. ६ लिप्त हुवा हुआ, उलझा हुआ, फसा हुआ ७ प्रभावान्वित हुवा हुआ, प्रभाव मे आया हुआ ८ शोभित हुवा हुआ, फबा हुआ ९ प्रसन्न या खुश हुवा हुआ १० व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ, छाया हुआ।
(स्त्री. राचियोडी)

राचोड़ी—स स्त्री—१ बढई के औजार रखने की पेटी।
२ देखो 'रछानी' (रू. भे.)
रू० भे०—राछोडी।

राचोड़ौ—देखो 'राचियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. राचोडी)

राछ—स पु. [स रक्ष] (रक्षा प्रयोजन अस्य तद् रक्षम्) १ किसी कारीगर के काम आने वाला औजार, उपकरण या साधन।

उ०—१ सूत्या माथै पैरण रा गाभा वाळ मे डोला, तेजाब मे घड्या-घाट खोळा हा। आळा मे राछ अर मोती-भरोखा मे भात-भात रा न्हाना मोटा मथा मेल्या पड्या है। —दसदोख

उ०—२ अर हरामखोर तेजसी वैद बेवै एकठा मिळ अर कारी न महरत पूछि, आप साहै मिरचद तेजसी मिळी ममलत करी अर डाभ रौ राछ गर्भ जिनस रो घडायौ। —द वि

२ हिन्न।

उ०—मत्र सू दिल साफ, सेणा सू दोखी सदा। बेटा साफ बाप, राछ घस्या क्यो राजिया। —किरपाराम

२ अस्त्र-शस्त्र।

रू० भे०—राच।

राछाणी—देखो 'रछाणी' (रू भे)

राछपीछ—स. पु.–देखो 'राछाण जी'

उ०—ढोर-डांगर, थोड़ी घणी गंणो गाटो **राछ-पीछ** अर थोड़ा झूंपड़ा, जिकानै रणछोड़ै रातदिन तक करनै बड़ी मुश्किल सूं बणाया हा, सगळा ई मेठा रा छैगा। झूंपड़ा रा बारणा माथै राज रा थंपा मागग्या। —रातवासो

राछापूंजी—स स्त्री यौ–१ किसी कार्य में उपयोग किये जाने वाले औजार या उपकरण।

२ गृहस्थ सम्बन्धी सम्पूर्ण सामान।

उ०—भूख सूं मिळग्या। **राछा-पूंजी** बेच-बेच'र खागी पळा'सी। सू घी ल्यावै अर सू घो बेचै है उपज अर खरच री लीक नीं खंचै। —दमदोम

(मि घाघाणूं जी)

राछोड़ी—१ देखो 'राघोड़ी' (रू भे)

२ देखो 'रछाणी' (रू भे)

राजंद, राजद्र—देखो 'राजेंद्र' (रू भे.)

उ०—१ तेस रमण सेजा प्रतर, रूड़ो धण री रूप। **राजंद** री हिव निरखवै, ऐनक छाप अनूप। —गना

उ०—२ नमो जप तप किता जागिद, राजा स्रीराम नमो **राजद**। —ह र

उ०—३ तुरगा पाखरा मिलहा माखना, **राजद** तहा बोल रहावै। मोहकमियो मेवामा माथै ऊगे बिहाणै चोकस आवै।

—म्होकमसिंघ राठौड़ रो गीत

उ०—४ प्रगाहार प्रखाड़ो इंद्र रो, जोधह-पुर इंद्रा-पुरी। 'गजसिंघ' इंद्र **राजद्र** गति, मरव इंद्र सामगरी। —गु रू ब.

राजंसी—वि [स राज्य–वंशी] राज वंशी, राजा के खानदान का।

उ०—सुरा पान आमूल सैहित, करी गोठ तिण ठौड। रात सरोवर पर रह्यौ, **राजंसी** राठौड़। —पा प्र

राज—स. पु [स. राज्य] १ किसी राजा के अधीन रहने वाला देश, जनपद, राज्य।

उ० १ सब कूं छाड भज्यौ साहिब कूं गुरु की सरण गई। राणाजी री **राज** त्यागो सत सब आड गई। —मीरा

२ शासन, सत्ता, हुकूमत राज्य।

उ०—१ रावळ रामचंद सिंघ रो। सिंघ भानीदास रो। भानीदास हरराज रो टीकै बैठो। मास १० दिन २० **राज** कियो। पछै **राज** फिरियो। —नैणसी

उ०—२ अकबर लेख प्रमाणै, तहवर सहत **राज** लोभाणे। आवी चित अचीती, विणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीती।

—रा रू.

उ०—३ बजाई केता फेरा बस, किना तै फेरा जीत्यो कस। राजा उग्रसेण समपे **राज**, करै जदुवस तणा सिध काज।

—ह. र.

उ०—४ मन बुद्धि चित्त अहकार मति, समरंति तना अेवड सकति। रहमाण तुहारो अटल **राज**, बीठला हिमै सिणगार बाज। —पी ग्र.

उ०—५ सवार-सिञ्या तीनूं भेळा बैठनै लूखी-सूखी खायनै माथै ठाडो पाणी पीला तो म्हानै जाणै सुरग रो **राज** लाधो।

—फुलवाड़ी

३ शासन करने वाली सस्था, प्रशासन, सरकार प्रशासन मण्डल।

उ० १ **राज** रै आ लखणा सूं तो सुभट दीसै के अबै अपारी माया अपानै ई रुखाळणी पड़ैला। भरोसै रह्या वारै साथै ई अपानै ई मरणी पड़ैला। —फुलवाड़ी

उ० -२ पोहरा देवणिया छोटा आदमी पोहरा देवै अर **राज** करण वाला **राज** करै। —फुलवाड़ी

४ शासन करने की सामर्थ्य या अधिकार।

५ प्रशासन या शासन करने की अवधि, शासन-काल, राज्य काल।

उ०—क्रत पूरण वधियो कळ, रीत दवापुर **राज**। वस हस अवतस विध, 'अभैसाह' महाराज। —रा. रू.

६ प्रभाव, प्रभुत्व, नियत्रण।

उ०—ओउ सोउ सबद की, सहजा सुणी अवाज। जनहरीया इन ऊपरै, ररकार का **राज**। —अनुभववाणी

[स राज्, राजन्] ७ राजा। (डि ना मा)

उ० --१ **राज** भगीरथ राम, जुजठळ जस जग जग जपै। कीधा मोटा काम, नाम रहै 'जैतळ' नरा। —बा दा

उ० -२ द्रूपदी रहइ ओलग कीजइ, तूं कन्हइ हिव दीह गमीजइ। जा न **राज** सह पाडव होइ, सू हरइ अवर ठाम न कोई। —सालिसूरि

८ पति, प्रियतम।

उ०—१ ऊंची चढ चढ गोखडे, ऊंची ऊंची होय। जोऊं मारग **राज** रो, आवण किण दिन होय। —अग्यात

उ०—२ सिकारा रम रह्यो म्हारो **राज**। चगा वाज राजे असवारा, सग अलबेलो साज। —रसीलेराज रो गीत

उ०—३ अब तजइ नहिं कोइला, सरवर मालूगह। **राज** हिवइ मा पानरउ, आ धण थउ अवराह। —ढो. मा.

९ स्वामी, मालिक।

उ०—था री धण री भेजी अठै आई जी, थारी धण रा कागद साथ। भंवर, थे बाच लेवो, म्हारा **राज**। —लो. गी.

१० राजा या किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिये सम्मान-सूचक सम्बोधन शब्द, श्रीमान ।

उ०—१ तरै दमनी छोकरी बोली, राज इसी बात मूंडा माहिं सू क्यू काढो छो । —पचदडी री वारता

उ०—२ ताहरा पाबूजी कह्यौ-राज आप विराजौ । हू ले आईस । —नैणसी

११ राजा या राज्य से सम्बन्धित व्यक्तियो, विषयो या तत्वो के नाम के पूर्व लगने वाला शब्द

ज्यू —राजवेद, राजकवि, राजमहल, राजहस ।

१२ धर्मराज ।

१३ कवि ।

१४ तामीर का कार्य करने वाला मिस्त्री, शिल्पी ।

१५ दीपक बुझने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

१६ अधेरा ।

१७ गीत की लय ।

उ०—सुणोत्रो भवर । म्हानै सपनो मो आयो जी राज । सपना रो अरथ वतावो जी राज । कहो ऐ गोरी थानै किण विध आयो जी राज सपना रो अरथ वतावो जी राज —लो. गी.

[फा राज] १८ गुप्त बात, भेद, रहस्य ।

सर्व०—आप, श्रीमान

उ०—१ राज तणी इच्छा रघुराया । अखिल चराचर जीव उपाया । —ह. र

उ०—२ तरै भाटिये सारा कह्यौ—हमैं राज कहो सु करा । —नैणसी

उ०—३ निरधन के धन राज हो, निरबळ के बळ राज । राज बिना हम दीन को, कौन सुधारे काज । —गजउद्धार

वि०—१ प्रिय, प्यारा ।

उ०—तू छै, ए कुरजा, भायेली, तू छै धरम री बैण । एक सदेसो, ए बाई म्हारी, ले उडो, ए म्हारी राज, कुरजा म्हारो पीव मिळा दे ए । —लो. गी.

२ प्रमुख, मुख्य ।

रू० भे०—राजि, राजु ।

राजअग—स. पु.—मत्री । (डि ना. मा)

राजइंद—देखो 'राजेद्र' (रू. भे) (डि को.)

राजकंवर, राजकंवार—१ देखो 'राजकुमारि' (रू. भे)

२ देखो 'राजकुमार'

उ०—१ महाराज तणी चिता मिटै, विध इण आज विचारिया । सुभ काज वार रहसी सिघर, राजकंवर पाधारिया । —रा. रू.

उ०—२ मरण जनम चौ सळ मिटण, सौ सलभ व्है सभार । जम मौ सळ भजै जिसौ, कौसळ राजकंवार । —र ज प्र.

(स्त्री. राजकवरी, राजकवारी)

राजकंवरी, राजकंवारी—देखो 'राजकुमारी' (रू भे.)

उ०—नेह निज रीझ री वात चित ना धरी, प्रेम गवरी तणो नाहिं पायो । राजकंवरी जिका चढी चवरी रही, आप भवरी तणी पीठ आयो । —गिरवरदान सादू

राजकथा—स. स्त्री [स.] १ राजाओ का इतिहास, तवारीख ।

२ राजनीतिक चर्चा ।

उ०—रोटी चरखो राम, अतरो मुतलब आपरो । की डोकरिया काम, राजकथा सू राजिया । —किरपाराम

राजकदब—स. पु [स.] १ कुछ बडे और स्वादिष्ट फलो वाला एक प्रकार कदब का वृक्ष ।

२ उक्त वृक्ष का फल

राजकन्या—स स्त्री [स] राजा की पुत्री, राजकुमारी ।

रू० भे०—रायकन्या ।

राजकमळा—स स्त्री [स. राज-कमला] राज्य लक्ष्मी ।

उ०—पाळ गजा पांच दोमजां प्रिथमी, जा लग मेर मेखळा । ता लग कमधज्ज राज चिंजी, व्है भुगतै राजकमळा । —गु. रू ब

राजकर—स. पु [स] राजा द्वारा प्रजा से लिया जाने वाला कर, महसूल ।

राजकरता—वि. [स राज्यकर्तृ] राज्य करने वाला, राज्य का शासक ।

स. पु.—वह व्यक्ति जो किसी राज्य के सिंहासन पर किसी को बैठाने या उतारने की क्षमता रखता हो ।

राजकवार—१ देखो 'राजकुमार' (रू. भे)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

राजकाज—सं. पु यौ —राज्य के काम काज, शासन सम्बन्धी कार्य ।

उ०—आसिरवाद द्विज रीझ उचारै, राजकाज सिध व्हो राजा रै । —सू प्र

राजकार—स पु —राज्य कर्मचारी ।

उ० — मत्रिमहामत्री ग्रहवाहक श्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार धर्माधिक सौवर्णिकक रणि —व म

राजकारिज—स पु.—राज्य व शासन सम्बन्धी कार्य ।

उ० — देवीसिंघ बाला ही पणा मे राज पायो । कार्क बुद्धसिंघजी राजकारिजै नै जमायो । —शि व

राजकिरिया—स. स्त्री. [सं राज्य-क्रिया] राजनीति ।

रू० भे०—राजक्रिया

राजकुंअर—१ देखो 'राजकुमारी' (रू भे)

२ देखो 'राजकुमार' (रू भे.)
(स्त्री. राजकुंअरी)

राजकुंअरि, राजकुंअरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—१ **राजकुंअरि** देखी नइ इसी पुत्री बात सबे तिण असी। इण परि जांणी सघलउ भेउ दोरउ बांधि पगि बरि लेउ।
—हीराणंद सूरि

उ०—२ सग सखी सीळ कुळ वेस समांणी, पेखि कळी पदमणी परि। राजति **राजकुंअरी** राय-अंगण, उडीयण बीरज अंब हरि।
—वेलि

राजकुंआर—१ देखो 'राजकुमारी' (रू भे)
उ०—नटा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति जिके रायजादी **राजकुंआर** छै त्यांरी त्यांरा देही री प्रांरांमि करै छै।
—रा सा. स

२ देखो 'राजकुमार' (रू भे)
(स्त्री. राजकुंआरी)

राजकुंआरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे)

उ०—इण भांत ऊजळै पतिव्रत री पाळणहार ऊजळी मतिधारी टोळी सु राजहंस राइजादी राजकुंआरी झरोखै चढी आवै छै।
—रा सा स

राजकुंवर, राजकुंवार—१ देखो 'राजकुमारी' (रू भे)
२ देखो 'राजकुमार' (रू भे.)

उ०—१ परभात हुवौ तद नागण कही **राजकुंवर** जी कठै। ताहरा उवै कही कुंवर तो रातै मूवौ। सु रातोरात रावत उठाय ले गया।
—चौबोली

उ०—२ सोज सहस मुरत सयण, लोयण लाज अपार। जेहल **राजकुंवार** जिम, कुण झल राजकुंवार।
—बां दा

(स्त्री राजकुंवरी, राजकुंवारी)

राजकुंवरी, राजकुंवारी, राजकुमारि, राजकुमारी—देखो 'राजकुमारी' (रू भे)

उ०—बालमीला माहे **राजकुमारि** ढलडिया रमै छइ।
—वेलि टी

राजकुमार—स पु [स] (स्त्री राजकुमारी) राजा का पुत्र, राजकुमार।
रू० भे०—रायकंवर, राइकुंअर, राइकुंवर, राजकंवर, राजकंवार, राजकंआर, राजकुंअर, राजकुंआर, राजकुंवर, राजकुंवार राय-कंवर रायकुंअर, रायकुंयर, रायांकवर।

राजकुमारी—स स्त्री. [स] राजा की पुत्री, राजकुमारी।

रू० भे०—रायकंवरी राइकुंअरि, राइकुंवरि, राजकंवरी, राज-कंवारी, राजकुंअरि, राजकुंअरी, राजकुंआर, राजकुंआरि, राजकुंवरी, राजकुंवारी, राजकमारि, राजकमारी रायकंवरी, रायकुंवरी।

राजकुळ, राजकुल—स. पु. [स राज्य-कुल] १ राजा का वंश, राजा का कुल, राजवंश।

उ०—मास दस माता के उदर रहे महिमा तें, राजपद पावै या कहावै **राजकुळ** मे।
—ऊ का.

२ राजा का दरबार न्यायालय।

उ०—जिन मंदिर सवल मंदिर **राजकुल** देवकुल अट्टाल प्रासादमाल नेस्वसाल श्रीमधमाल रथमाल।
—व स

रू० भे०—राजकळि, राजकुळी, राजकुली।

राजकुळि, राजकुळी, राजकुलि, राजकुली—वि—राजा के वंश का, राजा का वंशज राजवंश का।
स पु—१ राजवंश।
उ०—तिण नगरी रै विषै राजा भोज राज्य करै, छतीस **राजकुळी** राजा री सेवा करै।
—चौबोली
२ राजा के परिवार का सदस्य।
३ देखो राजकुळ (रू भे)

उ०—१ मन-तीस वंस **राजकुळी** सिरामणि सूरज वंसी राजान मारवाड़ रा नव कोट री ठकुराई जळाबोळ राज-पदवी भोगवै।
—रा सा स

उ०—२ क्षण एक जाइ आयुधसाला, क्षण एक जाइ वाहरिण, क्षण एक जाइ **राजकुलि**, क्षण एक जाई देवकुलि क्षण एक जाइ राजवाटिका क्षण एक जाइ वाटिका, इसी क्रीडा करइ।
—व स

राजकोलाहल—स पु—संगीत मे ताल का एक भेद विशेष।

राजक्रिया—देखो 'राजक्रिया' (रू भे)

राजखग—स पु [स खगराज] गरुड।

उ०—हुवै साज गजराज घजराज ठाहड हुवै, भिडै कर साज भड जिकै भागै। विकट अरिराज अहिराज री बरोबरि, उडै पग **राजखग** हकर आगै।
—रावदेवीसिंघ सेखावत री गीत

राजग—स. पु [देशज] राठौड वंश की एक उप शाखा व इस उप शाखा का व्यक्ति।
वि—राज्यगामी।

राजगत, राजगति, राजगत्ति—स स्त्री—१ राजनीति।

उ०—विराजमान राजथान कमधज्ज भूपती। जगत्ति **राजगत्ति** जागि, इंद्र अमरावती।
—गु. रू ब

२ राज्य या शासन की गति-विधि।
३ भाग्य की अदृश्य गति।

राजगद्दी—स स्त्री [स] १ राजसिंहासन।
२ राज्याभिषेक, राज्याधिकार।
रू० भे०—राजगादी, राजगांदी।

राजगहेली—वि.–प्रीत की बावली।

उ०—मिळी अ धेरी रैण सुहेली, मोरा गावै मल्हार। **राजगहेली** रै सग माणी, सरस तीज री रात। —रसीलैराज री गीत

राजगादी—देखो 'राजगद्दी' (रू. भे.)

राजगिरि—स. पु [स] मगध देश का एक पर्वत। (ऐतिहासिक)

राजगीदी—देखो 'राजगद्दी' (रू भे)

उ०—प्रीत री कूख सू जलमियौ **राजगीदी** रौ हकदार नी व्है अर ब्याव री कूख सू जलमियौ राज रौ हकदार व्है। —फुलवाडी

राजगीर, राजगीरी—स पु.–वह कारीगर जो मकान बनाने का कार्य करता हो। शिल्पी।

राजगुर, राजगुरु—स पु—१ राज्य पुरोहित।

उ०—जैतारण था कोस ४ ऊगवण माहै, दत्त राव जैतसी ऊदावत रौ बि. बरसघ पीथावत जात **राजगुर** नु। मोरवी वडी प्रोहत राजा उदीत दोया नु ऐ खेत दीया। —नैणसी

२ राजा का गुरु।

रू० भे०—रायगुर, रायागुर।

राजग्रह—स पु [स राज+गृह] राज–महल, राजा का महल।

उ०—कछवाहा उच्छव किया, देख वधाईदार। किया वधाया **राजग्रह**, राणी कियौ सिंगार। —रा रू.

रू० भे०—रायगिह, रायघर।

राजघनीका—स. स्त्री –रामबेलि नामक लता। (अ मा)

राजड़—सं पु—१ भाटी वश की एक शाखा जो आजकल मुसलमान हो गई है।

२ लगा जाति की एक शाखा विशेष। (मा म.)

राजडा—स. स्त्री.–राजबाई नामक एक देवी।

उ०—लकाळै चडै चाल जघाल लेनै। हली **राजडा** ज्यो प्रथीराज हेलै। —मे म.

राजचपक, राजचंपौ—स पु [स राजचपक] पुन्नाग का पुष्प, एक प्रकार का फूल, सुल्ताना चपा।

राजचील—स पु. [स. राज+राज चील=सर्प] शेषनाग।

उ०—वारधेस जोम गाज गाळिया त्रकूट वासी। **राजचील** जाळिया तारखी तेज रूम। कुमखी कुळेसा यंद्र ढालिया गरद काळा, वीर 'सिवा' वाळै रिमां मार लिया वधू स। —हुकमीचद खिडियौ

राजचूडामणि—स स्त्री. [स.] सगीत के ताल के साठ भेदो मे से एक।

राजजांमुन—स. पु –जामुन की एक जाति विशेष।

राजजोग—देखो 'राजयोग' (रू. भे)

राजठोड़—सं. स्त्री.–राजधानी।

राजणौ, राजबौ—क्रि. अ. [सं. राज्] १ आसीन होना, बैठना।

उ०—ब्रह्मा सिव इद्रादि दे, आन खरे कर जोर। सिघासण आसण किये, **राजत** जुगळ किसोर। —गज उद्धार

२ शोभित होना, शोभा देना।

उ० —१ मद मिनल तणा चाटा हियै नीलमणा, **राजिया** रुधर चाटा पदमराग। अडग पग माड। राखारूमण, नग समी विलंद मग विप गगन मग नाग। —बा दा

उ०—२ **राजति** अनि एण पदाति कुज रथ। हम माळ बधि लाम हय। ढालि खजूरि पूठि ढळकावै, गिरिवर सिणगारिया गय। —वेलि

उ०—३ जगळ बोर सुहावणि **राजै**, फिर सकति री भ्राग। मढ मैं आप आप बिराजौ, भळहळ ऊगौ भांण। —रामवदास भादौ

३ सुन्दर लगना।

उ०—१ मग सखी सील कुळ वेस समाणी, पेखि कळी पदमणी परि। **राजति** राजकुअरि राय अगण, उडीयण वीरज अब हरि। —वेलि

४ चमकना।

उ०—१ आसण मृ जु उदौ उहास हास अति, **राजति** रद निखपनि रूख। नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख। —वेलि

उ० —२ रूप खडग अदभुत दुति **राजै**। तडित मिळाव धोम नराजै। —मू प्र

५ राज्य करना, शासन करना।

उ०—दखिवण दिसि देस विदरभनि दीपति, पुर दीपति प्रति कुदणपुर। **राजति** एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर असुर सुर। —वेलि

राजणहार, हारौ (हारी), राजणियौ —वि।

राजिओडौ, राजियोडौ, राज्योडौ —भू का. कृ।

राजीजणौ, राजीजबौ —भाव वा।

रजणौ, रजबौ, रजजणौ, रज्जबौ —रू भे।

राजत—देखो 'राजित' (रू. भे.)

राजतरंगिणी—स स्त्री. [स.] सस्कृत का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रथ, जिसकी रचना काश्मीर निवासी कल्हण के द्वारा की गई, ऐसा माना जाता है।

राजतरुणी—स स्त्री [स] सफेद गुलाब की एक लता जिसके फूल बडे एव श्वेत होते हैं, बडी सेवती।

राजतिलक, राजतीलक—स पु [स. राजतिलक] १ किसी राज्य के राजसिंहासन पर नए व्यक्ति को राजा बनाने के लिये, ससम्मान बैठाने की प्रक्रिया, राज्याभिषेक।

२ उक्त अवसर पर, नए राजा के मस्तक पर, विधि पूर्वक किया जाने वाला तिलक।

उ० - बीबीछन कु **राजतीलक** दियौ, मुकति माळ पहराई ।
—रुक्मणि मगळ

१ उक्त समय में नए राजा के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव ।

रू० भे०—राज्यतिलक ।

राजतीमुद्रा—स स्त्री —चांदी का सिक्का, रौप्य मुद्रा ।

राजतेज—स पु —१ राज्य या सत्ता का जोर, प्रभाव, रौब, शान ।

उ० — नकौ **राजतेज** नकौ देसपती । नको गढ छाजा नकौ द्वारि हसती । —अनुभववाणी

२ राजसी पदार्थों या वस्तुओं का ठाट बाट, चमक-दमक ।

राजथंभ—स. पु. [स. राज्य + स्तम्भ] १ वह व्यक्ति (मत्री या सामत) जो किसी राज्य की समस्त व्यवस्था का उत्तरदायी हो, राज्य का स्तंभ माना जाने वाला व्यक्ति ।

उ० --**राजथभ** मत्रियां, राज रच्छक उमरावा । राजद्वार बहु कुरब, राज अवसर कविरावा । —सू. प्र

२ राजा, नृप ।

राजथांन, राजथान—देखो 'राजस्थान' (रू भे)

उ०—१ सू आप वडी रेल रा गाम दीठा व्हौ तो हु सारा जाणू छू, सू गाम चाहौ जिसा हू बतासू , पण आप **राजथांन** बांचणो किसी जागा विचारियौ है ? —द. दा

उ०—२ तरै जोगिये इतरो कर बतायौ—थारी साहबी **राजथांन** लाखडी करै नै जोगिया री आसण घीणोद करै । —नैणसी

उ० - ३ विणजारै रै सदाई हुवै छै इसी बहानो करि चालतौ चालतौ गिरनार री तळहटी पावासर माहि **राजथांन** छै, तठै आय पडियौ । —कहवाट सरवहियै री बात

राजथाट—स पु.—राजसी-टाट बाट, राज्य वैभव ।

राजदड—स. पु -१ राज्य या शासन का दण्ड विधान ।

२ राज्य की आज्ञानुसार भरा जाने वाला दण्ड ।

३ सजा ।

राजदरबार—स पु —१ किसी राज्य या राजा की वह सभा या बैठक जिसमे राज्य के राजा सहित सभी मत्री एव सामत उपस्थित होते है और जिसके द्वारा शासन का सचालन किया जाता है । राजा की सभा ।

उ०—१ लाधूराम **राजदरबार** री इतो बडो निधडक चोधरी होवतां थकां भी, भूत-पलीत, डोरा-डंडा देई-देवता अर डाकण-स्यारी नै कदै ही कूडा नी बतावै । —दसदोख

उ०—२ राजाजी फरमायौ के बीज रै चाद री खुसिया मनाया पछै वे राज-दरबरबार सू पाधरा पोहरै चढ-जावै । —फुलवाडी

२ वह स्थान या कक्ष, जहां उक्त सभा बैठती है या जुडती है ।

३ राजा की अदालत, कचहरी ।

राजदवार, राजदुआर—देखो 'राजद्वार (रू भे)

उ०—आली टाचर वाग मुखि कँवयउ **राजदुआरि** । करहइ किया टहूकडा, निद्रा जागि नारि । —ढो. मा.

राजदुलारी—स स्त्री —राजा की कन्या, राजकुमारी ।

उ०— दूल्ह सिर सिर **राजदुलारी** । करै चमर कन्या कोमारी । —रा. रू

राजदुवार—देखो राजद्वार' (रू भे)

उ०--१ वाजा वाजिया जिणवार, दीपै इरख **राजदुवार** । —रा. रू.

उ०—२ पिंगल राजा नू मिल्यउ, सउदागर तिणिवार । **राजदुवार** इ तेडियउ, आदर करै अपार । —ढो. मा.

राजदूत—स पु [स] १ किसी राजा या राज्य का वह व्यक्ति जो दूसरे देश मे अपने राज्य का प्रतिनिधित्व करता हो ।

२ वह व्यक्ति जो अपने राजा का कोई विशेष सदेश लेकर किसी अन्य राजा के पास जाता है । राजा का सदेश वाहक ।

३ राजाज्ञा प्रसारित करने वाला कर्मचारी ।

राजद्रोह—स पु [स] १ किसी राज्य की प्रजा या सेना द्वारा, राजा या प्रशासन के विरुद्ध किया जाने वाला विद्रोह, बगावत ।

२ ऐसे कार्य जो बगावत की सजा मे आते हो और जिनमे राज्य का अहित होना हो ।

राजद्रोही—वि [स राजद्रोहिन्] १ विद्रोह या बगावत करने वाला, राजद्रोह करने वाला ।

२ बागी ।

राजद्वार, राजद्वारौ—स पु [स राजद्वारम्] १ राजमहल का दरवाजा ।

उ०—१ सुकीर नासिका सरूप, वेस नीन राजियै । सुरू गुरु र भोम सुक्र, **राजद्वार** राजियै । —सू प्र

उ०—२ गज कोटि **राजद्वारौ**, सिदरउतग महल अटाला । सपेख धाम धाम, विसक्रमा विभ्रम भवेत । —गु रू ब

२ राजा का दरबार राज—दरबार ।

३ अदालत, कचहरी, न्यायालय ।

रू० भे०—राजदवार, राजदुआर, राजदुवार ।

राजद्वारिक, राजद्वारी—स. पु —राज्यपदाधिकारी विशेष ।

उ० – कोस्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक **राजद्वारिक** सधि विग्रहिक भाडपति स्रेस्टि । —व स

राजधणी—स. पु [स राज + धनिक] १ किसी राज्य का स्वामी, नृप, राजा ।

उ० —१ बल पर हरै बना बघ बोलै, सतम असा रालै धरसूत राण तुहाली पोळ रायमल, **राजधणी** सेवै रजपूत ।
—महाराणा रायमल रौ गीत

उ०—२ निज मवरण सुणत फळ उपजै, गुरु वंसावळी अरथ करि ।
वोह **राजधणी** गज वाज हुड, हरत लहै मचकुंद वर ।
—रा. वमावली

२ राज्य का अधिपति ।

राजधर—स. पु.—१ राजा, नृप । (डिं. को)

२ भाटी वश की एक शाखा ।

रू० भे०—रजधर, राजोधर, राजौधर रायधर ।

राजधरम, राजधरम्म—स पु [स. राज—धर्म्म] १ राजा का कर्त्तव्य, धर्म ।

२ वह धर्म, जिसे राजा द्वारा 'राजधर्म' घोषित किया गया हो ।

३ महाभारत का वह विभाग, जिसमे राजा के कर्त्तव्यो का उल्लेख है ।

राजधानी—स. स्त्री. [स. राज+धानी] किसी देश या राज्य के राजा या शासक के रहने का प्रधान—नगर, वह नगर या स्थान, जहा देश या राज्य के शासन का केन्द्र हो ।

रू० भे०—रजधाणी, रजधान, रजधानी, रायहाणी ।

राजन—स पु. [स राजन्] १ राजा, नृप ।

उ०—**राजन** मे सुर राज ममो, महा **राजन** मे महाराज समेळै ।
पाज अथाहिज सरब समाज सु, पुन्न जहाज मिळै भव पेलै ।
— ऊ. का

२ पति, प्रियतम ।

उ०—१ **राजन** चाल्या चाकरी, काधे धर बदूक । के तो मारग ले चलो, के कर डालो दो टूक । —लो. गी.

उ०— २ ऊनाळा रा बापरै, चौमासा रा मामा रे, सियाळा रा माने लेइ चाल्यो म्हारा जोडी रा । रतन सियाळो **राजन** यू ही गियो जी । —लो गी

राजनीत, राजनीति—स. स्त्री [स राजनीति] १ किसी राजा या शासक द्वारा, राज्य की रक्षा, आतरिक सुव्यवस्था एव शाति रखने के लिये बनाई गई शासन की पद्धति, विधि, नियम या कानून । इसमे साम, दाम, दण्ड और भेद इन चारो का समावेश किया जाता है ।

उ०—१ इळ **राजनीत** जाणै अनेक । वर मत्र—सकति कविता विवेक । —सू प्र

उ०—२ मूळी रो पापा रजवाडा मे रैवणियो स्याणो हाजरियो **राजनीत** सू रग्योडो—सुघरयोड़ो मिनख । —दसदोख

२ कूटनीति, भेद नीति, गुप्त नीति ।

३ वर्तमान के राजनैतिक दलो की दलगत नीति ।

उ०—डिपटी सा'बनै थे ही कै' देवता—के मा' ब ! लोग म्हारी कूडी ही सिकायत करै है । म्हैं की री ही पालटी मे भाग नी ल्यू अर ना कोई **राजनीत** फैलावूं । —दसदोख

४ बहत्तर कलाओ मे से एक । (व. स)

रू० भे०—रजनीति ।

राजनीतिक—वि [स] १ राजनीति सम्बन्धी ।

२ राजनीति जानने वाला ।

राजनील—स पु [स] मरकतमणि, पन्ना ।

राजन्य—स पु. [स] १ क्षत्रिय ।

२ सरदार, सामन्त ।

राजपख, राजपछ—स. पु [स. पक्षिराज] गरुड ।

उ०—जय बाखाण **राजपंछ** बाजै, अलख भुयग घण सूरो इम ।
राणा अवर घणा दिन रहसी, जुग जुग परो चग जिम ।
—महाराणा जगतसिंघ रो गीत

राजपंथ—स पु [स. राजपथ] किसी राज्य या नगर का प्रमुख मार्ग, राज मार्ग ।

रू० भे०—राजपथ ।

राजपट्ट—स पु—१ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—मेघाडबर नेत्रपट्ट घोतपट्ट **राजपट्ट** गजवडि हंसवडि बोरि—आवडी, ऊमावडी । —व. स.

२ देखो 'राजपाट' (रू भे.)

राजपति—स पु [स] १ राजा, सम्राट, नृपति ।

२ राज्य का अधिपति, शासक ।

राजपत्नी—स स्त्री [स] राजा की पत्नी, रानी, साम्राज्ञी ।

राजपत्री—स पु [स राजपत्रिन्] पक्षीराज गरुड ।

उ०— १ जोमरो भडीस ज्यारा आयो ज्यू चडीस जायो, **राजपत्री** आयो थडीस व्याळ रेस । ग्रोडडीस असीसनो लागडो कपीस आयो, रोडडीस कसीसनो आयो गुडाकेस ।
— हुकमीचद खिडियो

उ०—२ पूरा माप आकू गाढ वेग भाटा **राजपत्री** । दूजो 'गौड' क्रीन माटा तूराटा देवाळ । —क. कु बो.

राजपथ—देखो 'राजपथ' (रू भे.)

राजपद—स पु [स] १ राजा का पद, राजा का अधिकार, राजत्व ।

उ०—मास दस माता के उदर रहे महिमा तैं, **राजपद** पावै या कहावै राजकुळ मे । —ऊ का.

२ कम कीमत का हीरा ।

राजपद्धति—स. स्त्री. [स] १ शासन प्रणाली, शासन विधि ।

२ राजनीति ।

३ राजमार्ग, राजपथ ।

राजपाट—स. पु. [स राज्य+पट्ट] १ राज्य सिंहासन, राजगद्दी ।

उ०—मडोवरगढ राव चूडोजी राज करै । तिण रै १४ कवर । तिण मे **राजपाट** टीकायत राव रिणमलजी ।
—राव रिणमल री बात

२ राजा के अधिकार, राजत्व ।

उ०—क्या बाई मन ममम, जावो अपणे धाम । राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं काम । —मीरां

रू० भे०—रजपाट, राजपट्ट ।

राजपात्र—सं पु [सं] एक वर्ग विशेष ।

उ० कवाई देमाप्ती वमाली गोमी गवाल-पसूपाल राजपात्र विद्यापात्र विनोदपात्र । —व स

राजपाळ, राजपाल—सं पु—१ एक राजवंश ।

उ०—गोहिल गुहलिपुत्रक धान्यपाल राजपाल अनग निकुंभ दधिकर कालामुह दाधिक हूग हरियर डोममार । —व स

२ देखो 'राज्यपाळ' (रू भे)

राजपिंड—सं. पु—राजा का दिया हुआ पिंड, आहार ।

उ०—राजपिंड सुककार, गहवे न लेवे आहार । मरदन नहीं करे ग, दातण परिहरे ग । —जयवाणी

राजपुत्र—सं पु. [सं] (स्त्री राजपुत्री) १ राजा का पुत्र, राजकुमार ।

उ०—अथ कुमार, उद्धतमकधबनुर, बज्र, मय भुजादड, विस्तीरण्ण वक्ष स्थल, रण रसिक, समर भर धुरि धवल, अतुलबलपराक्रम, रथ मोक्षण, परदमण, सूर वीर, धीर मोडीर इसउ राजपुत्र कुमर । —व स

२ राजपूत, क्षत्रिय ।

३ बुध ग्रह ।

रू० भे०—रायपुत्त, रायपुत्र ।

राजपुत्री—स. पु [सं.] १ राजा की कन्या, राजकुमारी ।

२ क्षत्रिय कन्या ।

रू० भे०—रायपुत्रिय, रायपुत्री ।

राजपुरस—सं पु [स राज-पुरुष] १ राजा घराने या राजा के वंश का कोई व्यक्ति ।

२ राज्य कर्मचारी ।

३ अमात्य, मंत्री ।

राजपुस्पी—सं पु [स राजपुष्पी] वन-मल्लिका, जातिपुष्प ।

राजपूत—स पु. [सं. राज + पुत्र, प्रा. राजपुत्त] (स्त्री राजपूतणी, राजपूताणी) १ क्षत्रिय-जाति, क्षत्रिय-वंश ।

वि वि—आर्यों की वर्ण व्यवस्था के अनुसार देश की शासन व्यवस्था क्षत्रियों को सौंपी गई थी । राज्य के शासक को राजा कहा जाता था । राजा के पुत्र एव वंशजों को राजपुत्र कहा जाता था । राजपुत्र शब्द का प्रयोग, कौटिल्य अर्थ शास्त्र, कालीदास के नाटक, बाण भट्ट के ग्रंथों तथा प्राचीन शिलालेखों में राजवंशीयों के लिए कहा गया हैं । राजा के वंशज या राजवंशीय होने के कारण कालान्तर में सम्पूर्ण क्षत्रिय जाति का 'राजपुत्र' पर्यायवाची सम्बोधन बन गया । अत' संस्कृत 'पुत्र', प्राकृत पुत्त' से अपभ्रंश या राजस्थानी में 'पूत' शब्द बना और मुसलमानों के शासन काल में क्षत्रियों को 'राजपूत' कहा जाने लगा । यह जाति बड़ी बहादुर और पराक्रमी रही है । जन्म भूमि की रक्षा तथा कुल गौरव की रक्षा इस जाति का विशेष गुण रहा है ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

३ योद्धा, वीर ।

४ देखो 'रजपूत' (रू भे.)

रू० भे०—राजपुत्र ।

राजपूताणी—स स्त्री.—राजपूत जाति की स्त्री ।

रू० भे०—रजपूतणी, रजपूताणी, रपचूताणी ।

राजपूतानो—स. पु—भारत के उत्तर पश्चिम का एक प्रान्त जो आज राजस्थान कहलाता है । ब्रिटिश शासन काल में यहां विभिन्न राजाओं की रियासतें थी ।

राजपूताई, राजपूती—स स्त्री—१ राजपूत होने की अवस्था या भाव ।

२ राजपूत जाति का गौरव, क्षत्रित्व ।

उ०—तरै उमरावा भेळा होय नै मसलत कीधी । आगेज ऊगै राजपूताई माहे धूळ नाखी । —कहवाट सरवहिये री बात

३ शौर्य, पराक्रम, बहादुरी ।

रू० भे०—रजपूताई, रजपूती ।

राजबण, राजबणि—देखो 'राजवण' (रू भे)

उ०—रत्नी न जाणें राजबणि, दिल मिळिया जे दूर । रहमी डबा कपूर रा, कूकर नही कपूर । —र हमीर

राजबळ—स पु—राज्य, शासन या सत्ता का बल, शासन-शक्ति ।

उ०—'जमराज' मरण 'जोधा' हुए, इक सझोधा राजबळ । दिन लाज दिली महाराज छळ, ढळ पडिया रासे अचळ ।

—रा रू.

राजबाई—स. स्त्री—सम्राट अकबर की समकालीन एक देवी जो उदयराज चारण की पुत्री थी । इसे राजल देवी भी कहते हैं ।

राजबाड़ी—स स्त्री [स राज-वाटिका] किसी राजा का उद्यान ।

राजभंडार—स पु [स राज-भंडार] १ किसी राज्य का खजाना, राजकोश ।

२ वह कक्ष जिसमे खाद्य सामग्री सग्रहीत रहती है ।

राजभक्त—स पु—राजा का स्वामीभक्त अनुचर ।

रू० भे०—राजभगत ।

राजभक्ति—स स्त्री—किसी राजा के प्रति किया जाने वाला प्रेम, भक्ति, श्रद्धा ।

रू० भे०—राजभगती ।

राजभगत—देखो 'राजभक्त' (रू भे)

राजभगती—देखो 'राजभक्ति' (रू भे)

राजभवन—स. पु [स] १ राजमहल, राजप्रासाद।
२ जन्म पत्री मे दसवा स्थान।
उ०—निरख छठै रिपु ग्रह ससिनंदण, कुळ मातुळ सुख ग्ररी निकदण। **राजभवन** सुर गुर सुभ राजै, विसव एक छात्र ग्राग विराजै। —रा रू

राजभोग—स. पु. [स] १ देव मन्दिरो या देवालयो मे मध्यान्ह के समय भगवान की मूर्ति के ग्रागे चढाया जाने वाला नेवेद्य, जिसमे नाना प्रकार की मिठाइया एव भोजन सामग्री होती है। बडा भोग।
उ०—**राजभोग** ग्ररोगै गिरधर, सन्मुख राख्यौ थाळ जी। मीरा दासी चरण उपासी, कीजै वेग निहाल जी। —मीरा
२ देव मूर्ति के ग्रागे चढाया जाने वाला नेवेद्य, प्रसाद।
३ एक प्रकार की मिठाई।
४ राजा द्वारा लिया जाने वाला कृषि उपज का एक निर्धारित ग्रश
रू० भे०—रायभोग।

राजमंडळ, राजमंडल—स पु [स. राज-मंडल] किसी राज्य के चारो ग्रोर के राज्यो का समूह।

राजमग—देखो 'राजमारग' (रू भे)
उ०—सुख **राजमग** जळ सीच, वगि कुममगर तिण वीच। प्रति हाट दाम प्रकास, सोरभ फूल सुवास। —रा. रू

राजमद—स पु [स] शासन या सत्ता के प्रभाव से होने वाला गर्व, ग्रहकार, राज्य का नशा।
उ०—राजाजी नै ग्रापरी प्रीत बिचैई ग्रापरै **राजमद** रौ घणौ गुमान है। —फुलवाडी

राजमराळ—स. पु [स राज-मराल] राजहस।

राजमल—स. पु—राठौडो की एक उपशाखा।

राजमहल, राजमहलि—स पु—राजा का महल, राज-प्रासाद।
रू० भे०—राजमैं'ल।

राजमारग, राजमारगि—स पु [स राज-मार्ग] राज्य या नगर का मुख्य मार्ग, मुख्य सडक।
उ०—१ ग्रथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर **राजमारगि** गधिकापण......। —व. स
उ०—२ मठ विहार प्रपा मडप त्रिक चतुष्क चच्चर चतुष्पद **राजमारग** गधिकापण·· ·। —व स.
रू० भे०—राजमग।

राजमिंदर—सं. पु [स. राज+मन्दिर] १ राजमहल, राजप्रासाद।
उ०—रमै हसै नग्दिर, मभार **राजमिंदर** करै उछाह मुक्किया, पचास सात मै प्रिया। —सू. प्र.
२ राजमहलो मे बना देवमन्दिर या देवालय।

राजमैं'ल—देखो 'राजमहल'। (रू भे)
उ०—१ मिंदर ३ गुमावसागर ऊपर १ **राजमैं'लां** मे। १ लाल बाबे रै मिंदर कनै। —मारवाड री ख्यात
उ०—२ **राजमैं'ल** मे ग्राधिया रै कारण खल घणी उडै, इण कारण नगर रै बारू मेर दस दस कोस तांई राजाजी दोवडी लगावणी चावै। —फुलवाडी

राजम्रिगांक—स पु [स. राजमृगाक.] यक्ष्मा रोग मे दिया जाने वाला एक मिश्ररस। (वैद्यक)

राजयोग—स पु [स] १ ग्रष्टाग योग, जिसका प्रतिपादन पतजलि ने ग्रपने योगशास्त्र मे किया है। मूल योग।
उ० —नहि कोई करना नही ग्रकरना, नहि कोई म्हारा थारा। साखी एक सकळ मे व्यापक, **राजयोग** विस्तारा। —ग्रनुभववाणी
२ जन्म कुण्डली मे होने वाला ग्रहो का एक विशेष योग, जिससे व्यक्ति का राजा या राजा तुल्य होना लक्षित होता है। (फलित)
रू० भे०—राजजोग।

राजरथ—स पु [स] राजा का रथ।
उ०—वेग लीयै मूंठी वाव। **राजरथ** पगा राव। मैंगळा ऊरध मड। खेमै ग्राठ भीत खड। —गु रू. ब.

राजरमणी—स स्त्री [स] राजरानी।
उ०—१ बिळकुळै **राजरमणी** वदन, निरखे रूप नरन्द रौ। जाणै विकास प्रामै जळज, देखि प्रकास दुरिंद रौ। —रा. रू.
उ०—२ रग-वास **राज रमणी**, सूरज किरण तुल सोभा। फूलीक काम वल्ली, करि मउभे काम ग्राराम। —गु. रू ब

राजरसतौ—देखो 'राजपथ'

राजरसि—देखो 'राजरिसि' (रू भे)
उ०—विग्रह राज राज्यपदस्थापना वसरविक स्वरयस प्रकास, **राजरसि** परमारहत धरमात्मा······। —व. स.

राजरांणी—स स्त्री—१ राजा की रानी, महारानी। २ देवी, दुर्गा।
उ०—थिर थान थाभा ग्रनीय ग्रचभा रूप रभा सळकती। भजियै भवानी जगत जानी घी **राजरांणी** सरस्वती। —सा वचनिका

राजराज राजराजा—स पु. [स.] १ कुबेर का एक नामान्तर। (ग्र मा, ना मा, ह ना मा.)
२ राजाग्रो का राजा, राजेश्वर।
३ सम्राट।
४ चन्द्रमा।

राजराजा खावडी—स. पु—बच्चो का एक देशी खेल।

राजराजेसर—देखो 'राजराजेस्वर' (रू. भे.) (स्त्री राजराजेसरी)

राजराजेसरी—देखो 'राजराजेस्वरी' (रू. भे)

राजराजेस्वर—स. पु (स. राजराजेश्वर) (स्त्री राजराजेस्वरी) राजाग्रो मे श्रेष्ठ, सम्राट।

उ०—दाखे बार बार विश्वेसुर, श्रीमहाराज राजराजेस्वर। और उजीर सकौ ग्रप आवै, जोधां नाथ हुत मिळ जावै।—रा रू
रू० भे०—राजराजेसर।

राजराजेस्वरी—सं. स्त्री [सं. राजराजेश्वरी] महारानी, पटरानी, साम्राज्ञी।
रू० भे०—राजराजेसरी,

राजरिख, राजरिखि—देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)

उ०—राइ दसरथ आए राजरिख। —रांमरासौ

राजरिद्ध, राजरिध—स स्त्री [स राज-ऋद्धि] राज्य की समृद्धि, राज्य का वैभव, राज्य लक्ष्मी।

उ०—राजरिद्धि सह समुदाय जीह वसि एक वसइ जिणनाह। —वस्तिग

राजरिसि, राजरिसी—स पु [सं राजर्षि] १ वह ऋषि जिसका जन्म राजकुल या क्षत्रिय वश मे हुआ हो।
२ पुरूरवस, जनक, विश्वामित्र ऋतुपर्ण।
रू० भे०—राजरसि, राजरिख, राजरिखि, राजस्सी, रायरिख, रायरिसि, रायरिसी।

राजरीत, राजरीति—स स्त्री १ राज्य या शासन की पद्धति राजनीति
२ राज्य परिवार की परम्परा।
३ शासक वर्ग के व्यवहार का ढग।

राजरोग—स पु. [स] १ राज यक्ष्मा या क्षय रोग।
२ कोई असाध्य रोग।

राजरोगी—वि —राजरोग से पीड़ित रोगी।

राजल—स स्त्री राजबाई नामक एक देवी।
रू० भे०—राजल।

• **राजलक्षण**—स पु—बहत्तर कलाओ मे से एक। (व. स)

राजलक्ष्मी, राजलछमी—स स्त्री. [स. राजलक्ष्मी] राज्यश्री, राज्य का वैभव।
रू० भे०—राज्यलक्ष्मी, राज्यलिछमी।

राजलोक, राजलोग—स पु [स राज-लोक] १ महारानी, रानी, रानी समूह।

उ०—१ स्वभौ परणियौ। हथलेवौ छोडियौ, अर कूं भें कहयौ मोनूं विदा द्यौ। ताहरां कनौजी-दोय पोहर रहौ, राजलोक कहै छै। —नैणसी

उ०—२ बहुवा हम बहुमत्र उचारे। पट्ट साभळि निज महल पधारे। बूझे राजलोक सुर बीजं। करे अरज मन ह्वै सुजि कीजं। —सू प्र

उ०—३ राजलोक रिझ कूल बीस पडदायत प्यारी। सब सहेली च्यार अगम मिजान उचारी। —रा रू.

२ अन्त.पुर, रनिवास।

उ०—निसं भीवें गोठ जीम नै असवार होय पिउसधी नै राजलोक मे मेली, आपो पग्कास्यो। —जखड़ा मुखडा भाटी री बात

३ परिजन, परिग्रह।

उ०—१ हिवै राजा अजयपाळ कन्है राजा मांनधाता रहै। अजयपाळ मामो छै, माम्या रा मुजरा करै। एक दिन राजा अजय पाळ री राजलोक राणी रै डेरै एकठी हुयी छै। —चौबोली

उ०—२ रावळ मनोहरदास धणी वेढ जीती। समत १७०६ रा मिगसर मे काळ कियौ। बेटौ को न हुतौ, पछै भाटिया बीजै राजलोग, भाटी रामचदसिघोत नू टीको दियौ। —नैणसी

राजवंस—स पु [स राजवश] राजा का वश।

उ०—वदै महल छतीस राजवश कमध नगारा त्रहळ किये। दहळ पडै अवरा देसोना, धारै महल सिकार धियै। —रुघो मुहतो

राजवट—स. स्त्री—१ हुकूमत, सत्ता।

उ०—१ तठा पछै वरिहाहा सू दावौ मागण री मन मे राखै, सु धणौ साथ राखियौ। घणा घोडा पायगाह किया। वडी राजवट जमती गई। —नैणसी

उ०—२ तठा उपरान्त करिनै राजान मिलामति निरा राजान री राजवट च्यार ठिकाणै विराजमान दीसै छै। —रा सा स.

२ क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—पती म्हारौ एक नौ पुगसी मो मारीजसी पती नै जाण सू वरजू तो मरै नही राजवट रजपूती रा मारग उलटा छै। —वी स. टी

३ डिंगल के कुडलिया छद का एक भेद विशेष।

राजवण—स स्त्री—१ राजकुमारी।

उ०—जो मांगै दवर जसू, जोडै हाथाळै, 'राणल' मांगै राजवण भाभी वरमाळै। भवगुण भूलू नही, धमपाज विचाळै। कहियौ जद किसमीरद, वद कोध वडाळै। —वी. मा.

२ रानी।

३ पत्नी, स्त्री, प्रियतमा।

उ०—१ हा ए राजगोरी काची केसर पीग्रौ, हे राजवण प्यारी काची केसर पीग्रौ। हे म्हारी सदा हे सवागण घर नार, सुंदर गोरी। काची केसर पीग्रौ हो। —लो. गी.

उ०—२ मारूडो मिळण घर आयौ हे मारवणी, करो नै तयारी उठ म्हारी राजवण धारै। सिदरी दौ भाळ सवारो अलबेलडी, अणीयाळा नैणा अजन री अणी। —रसीलै राज रौ गीत

उ०—३ रहौ सघौरा राजवण, नैण न नाखौ नीर। रगौ मत इण रग मे, वगौ भोजै चीर। —अग्यात

उ०—४ रग री वाता राजवण टोळौ मति कर टेक। मन सुद कर म्हासु मया अडवी छोडो एक। —अग्यात

रू० भे०—रजवण, राजबण, राजवणि

राजवनी—स. पु. (स्त्री. राजवनी) १ राजकुमार।

२ प्रिय, प्यारा, प्रियतम

उ०—पना वरण घर पल्लही, कलि पना करतार। श्रो चित्रांम सो श्रापना, **राजवनी** रिझवार। —पना

राजवरग—स० पु० [स. राज्य वर्ग] १ शासक समुदाय, शासक वर्ग।

२ राजकुल, राजवश

३ राज्य या राज दरबार मे महत्वपूर्ण पदो पर कार्य करने वाला, दल, समूह या वर्ग विशेष।

वि० वि०—राजस्थान मे अधिकाश राज्यों मे श्रोसवाल जाति के कुछ वशो को राज्य के महत्वपूर्ण पद जैसे, दीवान, बक्षी, फौज-बक्षी, दीवाण, बक्षी, सेनापति श्रादि मिलते रहे हैं। जिनको उन्होने बडी योग्यता—दक्षता व उत्तरदायित्व से निभाया है श्रत इसी जाति या दल के व्यक्तियो को उच्च पद मिलते रहे। कालान्तर मे इस दल के व्यक्तियो ने राज्य की नौकरी करना एक गौरव की बात समझी थी श्रौर इस जाति के ही व्यक्ति प्राय राज्य मे छोटे श्रौर बडे पदो पर कार्य करते रहे हैं। वश परम्परागत राज्य की नौकरी करने तथा राज्य सत्ता श्रौर शासक के निकट रहने के कारण लोग इनको 'राजवरगी' कह कर सबोधन करने लग गये।

४ राज्य वैभव, राज्य सुख।

उ०—राजवरग मने कुछ नहिं चहियै, रामजी मिळणरी म्हारै मन मे लग रही। —मीरा

राजवरगी—वि० [स० राज्य+वर्गः+रा० प्र० ई] १ शासक समुदाय का, शासक वर्ग का।

२ राजकुल का, राजवंश का।

स० पु०—वह वर्ग या दल विशेष जिसका वंश परम्परागत राज्य की नौकरी करने का ही पेशा रहा है।

वि० वि०—देखो, 'राजवरग'

रू० भे० राजव्रगी।

राजवाटिका—स० स्त्री [स०] राजा का उद्यान।

उ०—क्षण एक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ **राजवाटिका** क्षण एक जाइ वाटिका, इसी क्रीडा करई। —व. स

राजवाह—स० पु० [स०] घोडा, श्रश्व।

राजविद्या—स० स्त्री० [स०] राजनीति।

राजविद्रोह—सं० पु० [स०] राज्य या शासन के विरुद्ध किया जाने वाला विद्रोह, बगावत।

राजविद्रोही—वि० [सं०] राज्य में विद्रोह करने वाला, बागी।

राजविहंग, राजविहगी—सं० पु०—राजहंस।

राजवी, राजवीय—स० पु० [स. राज्+रा प्र. वी] १ राजा, नृपति।

उ०—सांवणिया रै पेलड़े मास रिड़मल घुड़ला मोलवै रे। हां रे म्हारी जोड रौ रे गढां री **राजवी** रे रिड़मल राव। —लो. गी.

उ०—२ सु अमलो महीर लेरड़ी गाव छै तठै घोडी फूल नूं ले श्रायो, तरै बैर हेकण दीठो तरै अमला नूं खबर हुई, कोई **राजवी** छै। घणै ग्रहणै पैहरिया घोडा ऊपर बेसुध हुवो छै। —नैणसी

उ०—३ नळ राजा श्रादर दियउ, अउ **राजवियां** जोग।

देसवास सवि रावळा, श्रह घोडा श्रह लोग। —ढो. मा.

उ०—४ देस देसरा **राजवी**, करता काक-जमाल।

वाची कागद ऊठिया, जांन सजी तत्काल। —जयवांणी

२ राजा के वश का या राज घराने का व्यक्ति, राजपुरुष।

उ०—१ राणी जाया **राजव्यां**, सहजाहूं बळिहार।

तूकारी तारीफिया, बरसो सोना धार। —बां. दा.

उ०—२ सु जगमाल सिकार चिढियौ, तरै घडसी ऊभो थो सु जुहार न कियो। तरै रावळजी नू जगमाल श्राय कह्यो—जु गाव माहे श्राज इसडो रजपूत श्रायो छै, सु कैतो कोई गिंवार छै, कै कोईक **राजवी** रै घर रो छोरू छै। —नैणसी

३ राजेश्वर, सम्राट।

उ०—१ ताहरी पुत्री नौ ते वर जाणजे जी। महीना नै श्रंतर मिलस्यै तेह हो। समस्त राजा नौ थास्यै **राजवी** जी,तेहनो प्रताप श्रखड श्रछेह हो। —वि. कु

उ०—२ हमे कैसी हुसी, बडा बडा **राजवीयां** रै मांही प्रतिस्ठा घटसी। —पंचदडी री वारता

रू० भे०—राजिव।

राजवेद—स० पु० [स राज-वैद्य] राजा या राज घराने के लिये नियुक्त वैद्य, मुख्य वैद्य, वैद्यराज।

उ०—नी, नी, **राजवेद** नै बुलावै जैडी काईं वात।

थू **राजवेद** सू कम थोडोई है। यूं ई जचगी तौ थनै पूछ लियौ। —फुलवाड़ी

राजव्यास—स० पु० [स०] राज दरबार का ज्योतिषि।

उ०—पाडोसिया रै घर रा किणी मोट्यार नै भेज **राजव्यास** जी नै बुलाया। —फुलवाडी

राजव्रगी—देखो, 'राजवरगी' (रू. भे)

राजसंसद—स० स्त्री० [स]—वह सभा या सस्था जो राज्य के शासन की सम्पूर्ण व्यवस्था करती है। राज-सभा।

राजस—स० स्त्री० [सं.] १ राज्य, हुकूमत, शासन, सत्ता।

उ०—१ विविध धांम पुर ग्रांम बसां है, माली **राजस** पूरब माहै।

सेतराम सकबध नरेसर। इळ (ठा) लग **राजस** पूरब श्रंतर।

—रा. रू.

उ०—२ एक बरस रहि श्राप री **राजस** बांध फेर श्राप बादसाह री हुहूर गयो। —ठा. जैतसी री वारता

उ०—३ सो एक दिन जंगळ रा गांवा री एक रजपूत पल्लू गांव

परणियो थो सो सासरै गयो । उठै मीणिया रा गांव पर राजस करणो री ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ चित ममद धानिक 'चीहरं' । कमधज्ज राजस रम करे ।
—सू. प्र

२. राजधानी ।

उ०—प्रयज हू तो मेव अभ्यासी, पारकेत मिव तणी उपासी ।
इण कवि मूक नवी पुर आयो, मिव मथान भो राजस थायो ।
—सू प्र

३ शासन-काल, राज्य-काल ।

उ०—१ अथा कामा माही गनयो राजस री ओळयो तिण सू पादसाही भाई ।
—नी०प्र०

उ०—२ रही स्वद्वद रैत तव राजस, सुभ ममद सूमिधारी ।
भाणद कद एक दम उठग्यो, 'नम्मन' नद अवनारी —ऊ० का०

४ राजसी ठाट-बाट से किया जाने वाला जीवनयापन ।

उ०—१ सो इण भात जलाल गहरी मौज आणद सू रहै ।
फूला री तिवारा दारू पी'र लाल रहे । दिन रात सारो माथ मतवाळो छकियो रहै । सो इण भात जलाल राजस करै ।
—जलाल बूबना री बात

उ० २ मडधू लाग रैया, बस थाजे ही । घर रा लोग राजस करै हा । कमाई मे सर्प पर बरसत ही
—दसदोख

उ० ३, बाता कर दिन पोहर चढता भु आई राजजी करै जीमै ।
दरबार री काम कर दोपोहरे भरमल रै जाय पोढै ।
इण तरै राजस सुख करै । —कुंवरसी सांखला री वारता

५. सुख भाग, भोग-विलास ।

उ०—सावण आयो सायबा, बांधो पाग सुरग । महल बैठ राजस करो लीला चरै तुरग ।
—अग्यात

६ काम क्रीडा, मैथुन ।

उ०—मगळ वारै मद कर, परणी आगे कथ ।
सेजा चढ राजस किया, पूरै मन सू कथ । —अग्यात

७ राज्य (क्षेत्र की दृष्टि से)

उ०—नाव तिरै नह नीर में, निवळो नावडियाह ।
राजस नह सावत रहै, मिनखो मावडियाह । —बा० दा०

८. राजा, नृप ।

उ०—१ प्रण किया पछै पाछो नहीं फिरणो, राजस री मोटी गुण हठ नूं आगजै ।
—नी० प्र०

उ०—२ वर मोनूं प्रापत नहीं सुण साची दीवाण । राजस संगति हू करी तीसू मन पहचांण ।
—नापै सांखले री वारता

९ राजत्व ।

१०. राजसभा, राज दरबार ।

११ रजोगुण ।

उ० —१ महतत्त्व थकी अहकार नीपनो । अहकार त्रिहु प्रकारे कहियै । एक सात्विक । बीजो राजस । तीजो तामस । सात्विक अहकार थी मनु अरु देवता इद्रियां का अधिष्टाता नीपना ।
—द० वि०

उ०—२ पाणी न्यारे होरि करि, हाथे भात पचाय ।
राजस तामस रचि रह्यो, मानिंग नावै दाय । —अनुभववाणी

उ०—३ दादू राजस कर उत्पत्ति करै, सात्विक कर प्रतिपाल ।
तामस कर परळै करै, निरगुण कौतिक हार । —दादूवाणी

१२ रजोगुण से उत्पन्न, रजोगुण सम्बन्धी, रजोगुणी ।

१३ आवेश ।

१४ क्रोध ।

रू० भे०—राजस्स, राजिस्स ।

राजसगुण—स० पु०—रजोगुण ।

उ० इण वेळा रजपूत वे, राजसगुण रजाट ।
सुमिरण लाग्या वीर सब, वीरा री कुळ वाट । —वी स.

राजसठाट—स० पु०—राजसी वैभव ।

राजसत्ता—स० स्त्री० [स] किसी देश की सर्व प्रभुत्व शासन शक्ति, सरकार ।

राजसथान—देखो 'राजस्थान' (रू भे०)

उ०—१ थिर ते राजसथान मह इक छत्र भोम सामथ ।
एके आण अखड खडण माण प्राण नव खड । —रा० रू०

उ०—२ सम मिळै मन सहर स, महर उजाड समान ।
जो जेहो बन मे मिळै, बन ही राजसथान । —बा दा

राजसथानी देखो 'राजस्थानी' (रू भे)

राजसधारी—वि पौरुषवान, वीरत्ववाला ।

उ०—राव भाट लोगा नू घणा दान मान दीन्हा । बडो ही मधाळ राजसधारी सिद्धिवत हुयो ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

राजसनगर—स पु राजधानी, राजधानी का नगर ।

उ०—'मालो' राजसनगर मे 'मोबन' 'जेत' सिवाण ।
थान खेड 'वीरम' थपै, जग जाहर घण जाण । —वी. मा.

राजसभा—स. स्त्री —१ राजाओ की सभा, राजाओ की मजलिस ।

उ०—राजसभा के भूखण दिल के उदार । बिरदू के भारै समसेर बहादर के समसेरू के चिनारे ।
—सू. प्र.

२. देखो 'राजदरबार'

उ०—विद्या विलासि सुणी ए वाणि, ततखिणी पहुतउ कविउ सुजाणि । राजसभा प्रणमी भूपाळ, लिपि वांची इम भणीय रसाल ।
—हीराणंद सूरि

३ देखो 'राज्यसभा' (रू भे)

राजसमंद–सं पु --काकरोली के पास बना एक बडा तालाब (उदयपुर)।

राजसमाज–स. पु.—१ नृप मण्डली, राजा लोग।

२. शासक-वर्ग।

राजसर—देखो 'राजसमद'

उ० - रचता इसो **राजसर** राणा, लेखो जग रो कवण लहै।
ग्रस सूरज बहतो ग्राघतर, बेळा पग माडतो बहे।
—महाराणा राजसिंघ रो गीत

राजसरप–स० पु० [स. राज-सर्प] दो मुह वाला सर्प।

राजसवको–वि०—१ राजनीति मे निपुण व दक्ष। अच्छा राजनीतिज्ञ।

२ शासन करने मे निपुण, शक्तिशाली।

उ०—सुत ब्याहू मेळवेस रै, कुळ मे किरणाळा। **राजसवंका** राठवड, वर वीर वडाळा। —वी. मा.

राजसिंहासन–सं० पु० [स] राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी।

रू० भे०—राजसीघासण, राजासन।

राजसिरी–सं० स्त्री० [सं राज्य श्री] राज्य लक्ष्मी।

राजसींघासण—देखो, 'राजसिंहासण' (रू भे)

राजसी–वि०—१ राजाओ के योग्य, राजाओ के समान।

२ राजाओ जैसी शान-शौकत व वैभव वाला।

३ जिसमे रजोगुण की प्रधानता हो, रजोगुणी।

४ रजोगुणी वृत्ति वाला।

रू० भे०—राजस्सी।

राजसीव्रती–स० स्त्री०—ऐसी प्रवृत्ति जिसमे रजोगुण की प्रधानता हो, रजोगुणी वृत्ति।

राजसुजगन–स० पु० [सं. राजसूय राजसूय यज्ञ] राजसूय यज्ञ।

उ०—**राजसुजगनां** जीत प्रवाडा कायबा रजे, दाखे घाडा दसू दमा झीतरा ददम। एहड़ा हमीर हेळा-ग्रालमा जेहान ग्राखे, पख्खा नीर चाडा भोका विजाई 'पदम' —डूगजी गाडण।

राजसुर—देखो 'राजेस्वर' (रू भे)

राजसू, राजसूय–स० पु० [स० राज सूय] बडे बडे राजाओ द्वारा किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ विशेष। इसके करने से वह राजा चक्रवर्ती पद का अधिकारी होता था।

उ०—१रचियौ जिण जिग **राजसू**, मेछां कर बळ मद। पत कनौज दळ पागळी, जग जाहर जैचद। —बा दा

उ०—२ घरा सुधेनु छूय छूय दूय दूय घू वरै। क्रतू समान **राजसूय** भूय भूय भू करै। —ऊ का

राजस्थान–स० पु०—[स. राजस्थान] १ भारत वर्ष का एक प्रान्त, जो देश के पश्चिमोत्तर भाग मे है और जिसकी राजधानी जयपुर नगर मे है।

२ बहुत से राज्यो या रियासतो वाला प्रदेश, राजपूताना।

३ राजधानी।

उ०--१ इतरै गोहिला पिण ग्रालोच कियौ —जो राठोड जोरावर सिराणै ग्राय **राजस्थान** माडियो। जो कु'लणो-पतो कीजै तो टिग सगीजै। —नैणसी

उ०—२ तरै भीदैजी गुर सू ग्ररज करि कह्यौ, गरुजी, हुकम करो तो ग्रठासू कोस तीन ऊपरा म्हारो **राजस्थान** रो पाटण गांव छै नै माता भाई छै, थे कहो तो कुटबजात्रा करि ग्राऊ।
—जखडा मुखडा भाटी री बात

४ राज्य।

रू० भे०—रजथान, राजथाण, राजथान, राजसथान, रायथान।

राजस्थानी–वि०—राजस्थान का, राजस्थान सम्बन्धी।

स० पु०—१ राजस्थान प्रदेश का निवासी।

स० स्त्री०—२ राजस्थान प्रदेश की मरु या डिंगल भाषा।

३ इस प्रदेश की बोली।

राजस्स—देखो 'राजस' (रू भे)

उ०—माम तीन बावीस दिन, पैताळीस वरस्स।
ग्रमरापुर वसियो 'ग्रजो', राजा कर **राजस्स**। —रा रू

राजस्सी—१ देखो, 'राजसी' (रू भे)

२ देखो 'राजरिसि' (रू भे)

उ०—राजा सुणि तेडै **राजस्सी**, जोध मत्री समणी जोतस्सी।
थटपति बहु हूत मत्र थपियो, जनमती कनिया जुध जपियो।
—सू. प्र.

राजहंस–स पु० [स] १ प्राय. झीलो के किनारे रहने वाला व झुण्ड बना कर उडने वाला एक प्रकार का हस। इसकी चोच व पैर लाल होते हैं। इसे सोना पक्षी भी कहते हैं।

उ०—१ **राजहंस** पखी रहे रे लाल, मान सरोवर माहि रे सो०।
तिण पखी नी पांखडी रे लाल, ते देखी पतिसाहि रे सो०।
—प. च चौ

उ०—२ कमला रो घणी मावणी मेळ है, तठै **राजहंस**, कळहसा री इधकी केळ है। बनक सरदा चरट हंजा मुरगा पया भट्टिया तरै है, सारसा रो टोळ जळ झंगोर करै है। —रा० हमीर

२ एक प्रकार की लता जिसके फूल पीले होते हैं। यह जलाशयो या नदी किनारो पर होती है। यह ठण्डी होती है।

उ०—चुगला जीभ न चालही, पर उपगार प्रसग। नह नीपजही नील सू, **राजहंस** रो रग। —बा. दा.

३ मालव, मनोहर व श्रीराग के मेल मे बनने वाला एक सकर राग। (सगीत)

राजान—देखो 'राजा' (रू भे.) (ह. ना मा)

उ०—१ एणी परि बोला मुनि मांभलि न राजान ।
एक मन प्रमन्न करीनि आपणां ने । —नळाख्यान

उ०—२ सउदागर पिंगल मिल्यउ, बहुत दियु सनमान ।
रात-दिवस प्रेमइ मिल्यउ, इम पिंगळ राजान । —ढो मा.

राजान-सिलावलि—देखो 'हजूर-सलामत'

उ०—हमैं नठा उपरांति करि नैं राजान-सिलावलि एकांगि प्रस्ताव महाराजा श्री राजेसर रा परमाण आबूगढ़ रा मंडावरि आया छै । —रा. सा. स.

राजा—स पु [स राजन्] (स्त्री रांणी) १ किसी देश, जनपद या राज्य का अधिपति, स्वामी मालिक, राव, नृप । राज्य का प्रधान शासक । (ह ना मा)

उ० —१ राणा राजा रावळा, उर पड़ सोच अथाह ।
जग बाजी 'जगराज' री, सुणियो औरंगसाह । —रा रू

उ०—२ राजा युवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत मधुसामंत तलवर नगराज चतुरसीनिक नायकपति मंत्रि महामात्र पल्याहक · ·· ·· —व. स

उ०—३. राजा तुम मभी मन राजा, होइ किया नृप त्रिया हमैं ।
पाणी-हद पहरै दोहु पासा, नासा नार जिहद नकमै ।
—मादयी भूली

२ स्वामी, मालिक ।

३ क्षत्रिय ।

४ युधिष्ठिर का एक नाम ।

५ इन्द्र का एक नाम ।

६ चन्द्रमा । (ना. डि को)

७ उल्लू पक्षी ।

उ०—भैरव डावी भणै, दुगडियो मान दिरीजै ।
जै राजा जीमणो, पोहर हेकण ठैहरीजै । —पा. प्र.

८ यज्ञ ।

९ वीर्य, शुक्र ।

१० पति, प्रियतम या प्यारे के लिये किया जाने वाला एक सम्बोधन ।

११ ताश का वह पत्ता जिस पर राजा का चित्र हो ।

१२ अंग्रेजी सरकार द्वारा रईसों व जमींदारों को दी जाने वाली एक उपाधि ।

१३ धनवान व समृद्धिशाली व्यक्ति ।

१४ राजा की उपपत्नी की संतान (पुरुष) को दिया जाने उपटक या पदवी । (जयपुर)

वि०— १ उदार, दानी ।

२ जिसे राजा तुल्य माना जाता हो, राजा के समान ।

उ०—हरीया हौदै ऊपरै, रावत वाई रीठ । मारघो राजा मोह कूं, पड्यो तळफै पीठ । —अनुभववांणी

रू० भे०—रज्जी, राम्रा, राईग्रा, राजान, राया ।

अल्पा०—राजो, रायो ।

राजाई—स. स्त्री—१ राजा होने की अवस्था या भाव, राजत्व ।

उ०—राजाई कहीजै किना पातसाही थारी राम । —पी. ग्र.

२ राजा का पद, राजा के अधिकार ।

उ०— मायपूरै राजाई भारतसिंघजी पायी ।
—वा दा ख्यात

३ शासन, हुकूमत ।

उ० राजा रायसिंह संवत १६६१ राजाई पाई । नारायणदास पातावत री दोहीती । —नैणसी

रू० भे०—राजोई

राजाधिकारी—स० पु० [स] १ राज्य का अधिकारी, राजा ।

२ न्यायालय मे बैठ कर न्याय करने वाला, न्यायाधीश, विचारपति ।

राजाधिराज—स० पु० [स] १ राजाओ का राजा, सम्राट, राजेश्वर ।

उ०—राजाधिराज मा'राज राम । ते नाज सीस आलम तमाम ।
—र ज. प्र.

२ मुगल काल मे देशी राजाओ को दिया जाने वाला सम्मान-सूचक पद ।

राजापण, राजापणौ—स० पु० [स राजत्व] १ राजा होने की अवस्था या भाव, राजत्व ।

२ राजा का पद, राजा के अधिकार ।

रू० भे०—रजापण, रजापणो,

राजापति, राजापती—स० पु० [स राजन्+पति] राजाओ का राजा, सम्राट, राजेश्वर ।

उ० —मन-भावै वाले मत्रीवट मारग, वीरत दावै घड़ा वरै । राजापती 'जसो' महाराजा, क्रमध सुहावै जकू करै । —नाथो सादू

राजाराज—स० पु०—१ चन्द्रमा, शशि । (डि. को.)

२ कुबेर ।

३ राजेश्वर, सम्राट ।

राजालाबु—स० पु० [सं.] एक प्रकार का कद्दू ।

राजावटी—स० पु०—जयपुर जिलान्तर्गत एक भू-भाग ।

राजावत—स० पु०—कछवाहा वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—जगमाल उदैसिंघोत रै वस रा राणावत १, कांनावत २, कछवाहा सुरतांणोत राजावत ३, राठोड़ चादावत ४, ऐ च्यार

उमराव साहपुरै । —बा दा. ख्यात

राजावरत—स० पु० [स राजावर्त] एक प्रकार का रत्न जिसे लाजवर्द कहते हैं।

राजावळी—स० स्त्री० [स. राजन्+अवली] १. राजवंशावली, किसी राजा के वंश की विगत ।

२ किसी सभा या दरबार बैठे राजाओ की पंक्ति

राजासन—देखो 'राजसिंहासन'

राजिंद, राजिंदर, राजिंदौ, राजिंद्र, राजिंद्रौ—देखो 'राजेन्द्र' (रू भे)

उ०—१ म्हारी बाईजी री काई छै हवाल, राजिंद चालै चाकरी —लो.गी.

उ०—२ मिठडा राजिंद भिल रहौ, इक मानौ मोरी बात ।
महिर करौ मौ ऊपरै, जिम न हुवै उतपात । —वि कु

उ०—३ गाजि फरसि असपती, भाजि घांनम मुदफ्फर । मरववाळा मडळि करै सगळा राजिंदर । —रा. रू

उ०—४ मोला राणा मनै म्हारै पीहरियै पहुचाय, राजिंदा ढोला, ओळू डी तौ आवै म्हारा बाभोसा री । —लो गी

उ०—५ मेद-पाट राजिंद्र, देखि मरहट्टा दौडी । गुडवाणै मेल्हियौ, 'भीम' राणौ चीतोडी । —गु. रू. ब.

उ०—६ माहण समद सूरी ईस्वर, अवतार देव राजिंद्रौ । —गु. रू ब

राजि—१ देखो 'राज' (रू भे)

उ०—१ ताहरा महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघजी बीडौ झालियौ । राजि विदा हुआ । —द वि

उ०—२ अभग मछरीक इण भाति मू ऊवरै, मुदौ माहरौ खरौ कांम माथै । वैस हूता कह्यौ, राजि अपछर वरै, मरम, थे हुवौ इहलोक माथै । —किसनीदास व्यास

उ०—३ थे तो भूवा नी भावठ भजउ, राजि निज सेवक तणा मन रजउ राजि । म्हारा मननी आसा पूरौ । राजि म्हारा कठिन करम दल चूरउ । —वि कु

उ०—४ ताहरां सोढी कह्यौ-राजि पधारौ छौ, हु तो रावळै दरसण विणा अन नही खांवती, ताहरा ओढण री पीतांबर दीन्हौ, यौ देखिज्यौ । —लाखा फूलाणी री बात

देखो 'राजी' (रू भे.)

राजिउ—सं पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—सारीयी तिलवास गरभसूत्र राजिउ वयराजीउ महिदउरउं तीतआगिउ········· —व. स

राजिक—वि —[अ. राजिक] पालन-पोषण करने वाला ।

उ०—दादू राजिक रिजक लीये खडा, देवे हाथो हाथ । पूरक पूरा पास है, सदा हमारे साथ । —दादूवांणी

सं. पु.—ईश्वर, परमात्मा ।

राजिकापित्त—स. पु. एक प्रकार का रोग ।

उ०—आमवात सोफवात विगछावात कफवात साकिनीवात रक्तपित्त अम्लपित्त राजिकापित्त········ —व. स.

राजित—वि. [स] सुशोभित, शोभित ।

उ०—अधर सुधारस मुरली राजित, उर बैजती माळ । क्षुद्र घटिका कटितट सोभित. नूपुर सब्द रसाळ । —मीरां

रू. भे.—राजत

राजिम—देखो 'राजा' (रू. भे.)

उ०—आंणौ रिख लग कहै विप्र एह । मुगता ही दूध राजिम मेह । —रामरासौ

राजियउ—देखो 'राजियौ' (रू भे.)

उ०—एक दिवस सुदर रूप देखी, राजा चित्त विचारियउ । भोगव् जिम निम करी भउजाई, राज करइ निहा राजियउ —म. कु.

राजियोड़ौ—भू. का. कृ. १ बैठा हुआ आसीन. २. शोभित हुवा हुआ ३ सुदर लगा हुआ ४ चमका हुआ. ५ राज्य किया हुआ, शासन किया हुआ ।
(स्त्री. राजियोडी)

राजियौ—स. पु. [स. राज्] १ राज्य का स्वामी, राजा ।

उ०—१ जीहो मिथिला नगरी री राजियौ —जयवाणी

उ०—२ तिण समइ युग प्रधान जगि राजियौ । श्री जिन चद तेजे सवायौ । —स. कु.

२ राजा के वंश का, राजा का वंशज ।

रू भे.—राजियउ, राजीयौ, ।

३ कविवर कृपाराम खिडिया का अनुचर, जिसको सम्बोधन करते हुए सोरठे रचे गये जो "राजिया के सोरठे" कहे जाते हैं ।

राजिल—स पु. [सं राजिल] एक प्रकार का सर्प जो भयकर विषैला होता है । (अमरत)

२ विषरहित और सीधे सर्पों की एक जाति या इस जातिका सर्प ।

राजिव—१ देखो 'राजीव' (रू. भे.)

२. देखो 'राजवी' (रू. भे.)

राजींद, राजींद्र—देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.)

उ०—ऐकरियै ओ मारूजी, करला पाछा जी मोड,राजींदा ढोला, ओळू घणी आवै म्हारी माय री । —लो. गी.

राजी—वि० [अ.] १ प्रसन्न, खुश, आनन्दित ।

उ०—देखो आद अनाद सू, राजी व्है मीरांम । संतारा संसारमे,

किसड़ा सारै काम। —भगतमाळ

उ०—२ पितारो हुकम सुण चौगुणा पाळियो, बखाया वन ले वरा वाचा। हुतौ राजी तरै हेक राजा हुतो, रीमीयो साहतो विनै राचा। —द. दा.

उ०—३ एह प्रणाम छै आपरणी जी, सदा न चलग्यै रे एम। करि मुक मद राजी हियैजी, जिम वाधइ बहु प्रेम। —वि कु.

२ महरबान, कृपालु।

उ०—नाई पीडिया नै मुधराई सू दबावतो बोल्यो—नी बापजी, श्री तो बै'म इज म्हारे माथै मत करो। कानां सुणी सी पाछी होठां निकळै ई नी। इण वास्तै ई तो राजाजी म्हारै माथै इत्ता राजी है। —फुलवाड़ी

३ अनुकूल, पक्ष मे।

४ किसी कार्य को करने या बात को मानने के लिये तैयार, प्रस्तुत सहमत, सम्मत।

उ०—१ म्हैं तो उण नाकुछ काम वास्तै नटी जको इण मूंडै तो पाछी हुकारो नी भरियो। कार्बड़िया सू मार मारनै म्हारो डील लीलो चम कर दियो पण म्हैं राजी नी व्ही। —फुलवाड़ी

उ०—२ वो नांनी मां रै पाखती आय रिसाणो करतो व्है ज्यूं बोल्यो—म्हारै पै'ला ई उणनै टोगड़ो बताय दी। पण वा एकली देखण सारू कीकर राजी व्ही। —फुलवाड़ी

उ०—३ वा तड़कनै कह्यो—म्हनै समझावण नै आया है, पै'ला वांग हीया माथै हाथ धरनै सोचो के एकाएक बेटा नै दिसावर भेजण सारू थें राजी किया तो किया इज कीकर। -फुलवाड़ी

५ सतुष्ट।

उ०—१ सुदरदास भलो साचो मिरदार सारी बात माही साव। सयाणो समझणो। मासमा रो बैठणहार सौ लोग सारो जीव टेक खड़ो रहे। सगळा राजी।

—भाटी सुदरदास बीकूपुरी री वारता

उ०—२ 'सोनग' घोफी समरै,सुग जोवो निज साथ। दाह मिटी राजी थयो, औरगसाह समाथ। —रा रू

६ मस्त, मग्न।

उ०—१ बाजी पर साजी चढ बैठै, व्हे राजी विन होस। पड़ै सवार आप खुद पाजी, दें ताजी सिर दोस। —ऊ. का.

उ०—२ मैं तो राजी भई मेरे मन मे, मोहि पिया मिळे इक छिन में —मीरा

७. निरोग स्वस्थ।

स. स्त्री [स.] १ पंक्ति, कतार।

उ०—रचै लार गुजार रोलब राजी। भगाणा मंडां रोष ओलब भाजी। —ब. भा.

२ रेखा, लकीर।

रू० भे०-राजि।

राजीखुसी—वि० १ प्रसन्न, खुश, आनन्द मे।

२ चैन मे, आराम म।

स० स्त्री० १ प्रसन्नता, खुशी।

२ चैन, आराम, कुशलता।

उ०—माळा बारै आया, राजी-खुसी पूछी अर पागो पकड'र बैठ्या। —दसदोख

राजीड़ो—स० पु० [स राज+रा प्र. इड़ो] १ पति, प्रियतम।

उ०—१ उठ म्हारा राजीड़ा दान द्यो, थारे हुई छै धरम की रात, भाखर बाजै राजा राम की। —लो. गी.

उ०—२ पान सुपारी घण रे हाथ, जोसीड़ा ने बूजन राजीड़ा की धण गई। —लो गी.

२ राजा, नृप। (अल्पा, रू भे)

राजीनांमो—स० पु० [फा० राजी नाम] १ किसी विवाद या झगड़े को समाप्त करने के लिये, वादी व प्रतिवादी द्वारा सुलह करके लिखा जाने वाला सधि-पत्र, सुलह-नामा।

२ स्वीकृति-पत्र।

राजीपौ—स० पु०—१ हर्ष प्रसन्नता या खुशी होने की अवस्था या भाव।

उ०—तद कही लोग राजीपै सो कनै हूकै छे कना वैराजी हूकै छै। —ठाकुर जैतसी री वारता

राजीबाजी—वि० प्रसन्न, खुश

राजीमति, राजीमती—स० स्त्री०—एक राजकुमारी, जिसका सम्बध नमीनाथ के साथ हुआ था पर शादी न हो सकी।

उ०—कविता कालिदास नी, विघ्नापहारता पारस्वनाथ नी, अप्रकपता श्री वीरनी, निरमनता ढढण कुमारनी, वाचा धनानी, सील प्रभाव राजीमती तणउ। —व स.

राजीयौ—देखो'राजियौ' (रू. भे)

उ०—१ वेद बडाई राजीयां मूरो दळ सिणगार। मेल धमका सिर सहै, आवै जब इकतार। —अनुभववांणी

राजीव—स० पु० [स] १ नील कमल, कमल। (अ. मा, ह. ना मा)

उ०—छऊ भैन छोटी दह ओड छाजै। बिचै पाट राजीव माजी बिराजै। —मे म.

२ हाथी।

३ एक प्रकार का सारस।

४ एक प्रकार का मृग जिसके पीठ पर धारिया होती हैं।

५ रैया-मछली।

रू० भे०—राजिव।

राजु—देखो 'राज' (रू. भे)

उ०—**राजु** तुम्हारू पूत तुम्हारउ, अज्जीउ गये किसु विचारउ।
—सालिभद्र सूरि

राजीवलोचन—वि०—जिसके नेत्र कमल के समान सुन्दर हो।

उ०—उपत्ति-खपत्ति-प्रकत्ति-प्रसग, **राजीव-लोचन** जाणै ध्रुव रग।
—ह र

राजुल—१ देखो 'राजल' (रू भे)

२ देखो 'राजमति'

राजेंद्र—स० पु० [स. राजेन्द्र] १ राजाग्रो का राजा, सम्राट, राजेश्वर।

२ इन्द्र।

३ पति, प्रियतम।

४ किसी प्रिय व्यक्ति के लिये ग्रादर युक्त सम्बोधन।

रू० भे०—राजद, राजद्र, राजइद, राजिद, राजिदर, राजिदो, राजिद्र, राजिद्रो, राजीद, राजीद्र, राज्यद, राज्यद्र, राज्येद्रो।

राजेस, राजेसर, राजेस्वर, राजेस्वुर, राजेसुर—स० पु० [स राजेश्वर]

१ राजाग्रो का राजा, सम्राट, राजाधिराज, राजेश्वर। (डि को)

उ०—अवद्धेस **राजेस** जानेस ग्राया। विदेहेस मान्हैस ग्राणंं वधाया।
—सू प्र.

उ०—२ रुघपति हरा जोड **राजेसर**, गयद हरण हरवळ गाढा गुर।
—रा रू.

उ०—३ तिरण **राजेसर** राजारै महाराणी महामाया पटराणी तिरण रा पेट री नीपनौ कुंग्रर गुर पाट पति कुंग्रर स्री राजान कुंग्रर पदौ भोगवै।
—रा सा स

उ०—४ गुण धारी सुविचारी रे लो, म्हारा **राजेसर** जी रे लो।
—वि कु.

उ०—५ सुखदाता सरणाया, निज सता जानुकी नायक। दस सिर भंज दुबाह, राह जग कीन **राजेस्वर**।
—र ज प्र.

२ इन्द्र।

रू. भे – राजसुर,

राजोई—देखो 'राजाई' (रू भे)

उ०—'सोभाग' सुजाव चाढ पम्रार उदार सोभा, गोखा हेट लागा मद्दा करीजे ग्रग्राज। सारा छत्र धारया राजा राग दीधा सुरा, **राजोई** ग्राथाग भूरा क्रोड जुगा राज।
—राव सवाई केसवदास परमार री गीत

राजोधर—देखो 'राजधर' (रू. भे.)

राजो—देखो 'राजा' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—१ बेसण नाहि बुलावगो, नही वचन री साजौ रे। माहगी ग्राया की राखी नही, हू दीन दुखी को **राजौ** रे।
—जयवाणी

उ०—२ एक दिन एकाते ग्राव ए, प्रारथना करइ **राजौ** जी।
—स कु

राजौधर—देखो 'राजधर' (रू भे)

राज्यं—देखो 'राज्य' (रू भे)

उ०—समाचारेण विश्वास, अभ्यासेन विद्या, न्यायेन **राज्यं**, ग्रौचित्येन महत्व,ग्रौदार्येण प्रभुत्व
—व स

राज्यद, राज्यद्र—देखो 'राजेद्र' (रू भे)

उ०—१ हाठी जे **राज्यद** मिळइ, यू दाखविया जाइ। जोबण हस्ती मद चढथउ, ग्रकुस लइ धरि ग्राई।
—ढो. मा.

उ०—२ काळा दळबळ बळ चाढे सकोध। जोरवद्र रूप **राज्यद्र** जोध।
—सू प्र.

राज्य—स० पु० [स.] १ वह देश, राज्य या प्रदेश जो किसी एक राजा के शासन या स्वामित्व मे हो।

२ शासन, हुकूमत।

उ०—प्रथम ग्रचळदास खीची गढ गागुरन को धणी। गढ गागुरन **राज्य** करै छै।
—लाली मेवाडी री बात

३ शासन या हुकूमत के ग्रधिकार।

रू भे —राज्य।

राज्यकळा—स. स्त्री [स राज्य+कला] १ शासन करने की पद्धति, प्रणाली, विधि।

२ राजनीति।

राज्यकाळ—स. पु. [स राज्यकाल] किसी राजा या शासक के हुकूमत की ग्रवधि, शासन-काल।

राज्यतिलक—देखो 'राजतिलक' (रू भे)

उ०—गौतम गौत्री थापना करि, **राज्यतिलक** करि, राजेस्वर राजा नै विदा कियौ।
—रा. वशावळी

राज्यपाळ—स. पु [स. राज्यपाल] १ प्रजातन्त्रात्मक या ससदीय प्रणाली के अन्तर्गत, देश के प्रत्येक राज्य या प्रान्त के लिए बनाया हुग्रा प्रधान शासक का पद। (गवर्नर)

२ उक्त पद पर नियुक्त व्यक्ति, जो राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किया जाता है।

रू० भे०—राजपाळ।

राज्यलक्ष्मी, राज्यलिछमी—देखो 'राजलक्ष्मी' (रू. भे.)

राज्यलोभ—स पु. १ राज्य या सत्ता का लोभ।

२ कोई बडा लोभ। ३ उच्चाकाक्षा।

राज्य-व्यवस्था—स. स्त्री [स] शासन करने का ढग, शासन का विधान, राज्य का नियम।

राज्यसभा—स. स्त्री० स [स] भारतीय ससद का एक सदन, उच्चसदन, ग्रपर हाउस।—वि वि—यह लोक सभा से ग्रतिरिक्त एक सदन है जिसके ग्रधिकाश सदस्य राज्यो की विधान सभाग्रो

द्वारा चुनकर भेजे जाते हैं । कुछ सदस्यों का मनोनयन राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है । लोक सभा द्वारा पारित किया हुआ बिल इस सभा में भी पारित होना जरूरी है ।

रू० भे०—राजसभा,

राज्याभिसेक—देखो 'राजतिलक'

राज्येंदो, राज्येंद्री—देखो 'राजेंद्र' (भ्रल्पा., रू भे)

उ०- **राज्येंद्री** जोगेंद्री सगी सामरथ नेह एकगी । लेखे सेव सुहिन सामगो नटव लेखली । —रा रू

राट—स पु १ राजा, नृप । (ह ना. मा)

उ०—भजि जात प्रजा सब बात भणेंठा, पाटण नृपत करण पुरे । बडगूजर जात ग्रहीर तजे बळ, दात लगा पुर राट दरें । —रा रू.

२ प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति ।

३ देश, राष्ट्र, राज्य । (सभा)

उ०—सहर सब तन दुरजणा, सहर करै हहराट । आथा थाणा 'अजन' रा, नूर विहूणा राट । —रा रू

रू भे—राट्ट ।

राटक—स पु - १ शस्त्र-प्रहार ।

स स्त्री २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

३ युद्ध के नगाड़े की ध्वनि ।

उ०- त्रबाटन **राटक** सुण भ्रमि नाटक, रचना साद्र रस राद्र जम साद्र सा जचना । —किसोरसिंह

राटणी—स स्त्री बाद्य की आवाज, ध्वनि ।

उ० **राटणी** तबल्ला सोरा रचायो गवेरो राग । पाटणी हिंदवा सारा सजायो पीठाण । —दुरगादत्त बारहठ

राटपाट—वि नष्ट भ्रष्ट ।

उ० झाड़िया सनाह तन तुरग जीण, हुय गया सगळ दुख दहन हीण । पड़ भ्राट घाट खुल राटपाट । विस्वीस जळे दळ वळे दाट । —रा रू.

राटी—स स्त्री साधारण या सामान्य स्त्री ।

उ०—किहा भीति नए किहा भ्राती रे ? किहा रंभा नई किहा **राटी** । घतर दीगड एवड़, किहा दूध किहा खांमि खारी रे ।

—नळदवदनी रास

राटेस्वरी—स स्त्री राठोड़ा की कुल देवी ।

उ० —चक्रेस्वरी बळेस्थाने **राटेस्वरी** सथा रटे । पखणी सत मात्रेण, नागणेची नमस्तुने । —पा. प्र.

राट्ट—देखो 'राष्ट्र' (रू भे)

राठ—स. पु - १ भाटी वंश से निकली हुई एक मुसलमान जाति ।

उ०—१ केलण भाटी रा बेटा दोय चीरो १. खुमाण २. मुसलमान हुवा ज्यारा वंस रा राठ । —बा. दा. ख्यात

उ०—२ जग खोमिय कोलिय मीर जता । मिर बध सराहिय **राठ** छता । —पा. प्र.

२ एक प्राचीन राजवंश ।

३ एक प्रकार का मजबूत पौधा ।

राठउड—देखो 'राठौड़' (रू भे)

उ०—मडळीका मोटा कुळि मउडा, रमणि सुवारिण कीति **राठउडा** । —रा. ज. सी.

राठरीठ—स स्त्री – १ शस्त्र प्रहार ।

उ० खतरां कुराट भ्राट **राठरीठ** बगे खगे, जगे पाठ प्रेतकाळी ग्रनाठ जुग्राण । सतारा हजार ग्राठ लोहलाठ ग्राया सजै, ['रासा'] रा तीन सै साठ तीमजै ग्रागरण । —पहाड़खा ग्राढो

२ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

रू० भे० राठारीठ

राठवड़, राठवड—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—१ निजर परक्खे **राठवड़**, ग्रकबर तेज दिणद । जाणे व्योम विमाण, मम, भोम प्रगट्यौ इद । —रा. रू.

उ०- २ जैचंद हुवो दळ पागळो, ग्रसी लाख साहण सघर । छत्तीस वंस राजनकुळी, वडो वंस **राठवड** घर । —रा. वशावली

राठारीठ—देखो 'राठरीठ' (रू भे)

उ० —कैवाण पीठ्टे सुरस नाह तुबडे कडा, देख चाव खडा सुर खुलै सीदा दीठ । खडे भाड तोड चापो मारणी नही छो वीना खून । गेघड़ा वदारणी छो उडे **राठारीठ** ।

—ठा जैतसिह ग्राउवे रो गीत

राठासण, राठासेण—स स्त्री [स राष्ट्रश्येना] राठौड़ो की कुलदेवी ।

उ० बापा नु रिखीस्वर ग्राग्या दी, ते म्हारी घणी सेवा करी । म्हे तोन मेवाड रो राज महादेवजी देवीजी प्रसन्न कर दिरायो छै । इण ठोड एकलिंग प्रकट हुवा छै । ग्रौर देवी **राठासण** छै, तिण री तूं घणी सेवा करजे । —नैणसी

राठोड़—देखो 'राठौड़' (रू भे)

उ०—रिण **राठोडां** ग्राधिग्रा, भाटी ग्रग ग्रभग । दळ छळ भल्लै ऊठिया, घल्ले बाथ सिहग । —रा रू.

राठोड़ी—वि.—देखो 'राठौड़ी' (रू भे.)

उ०—जला जी मारू, राजा मायलो राज भलो **राठोड़ी** हो मिरगा-नैणी रा जलाल । —लो. गी.

राठौ—स. पु.—रीढ़ की हड्डी ।

उ०—तरे मास १० पुरणा हुवा । तरे राजा रो वामे सु **राठौ** फाडने बालक काढीयो ने पाटौ बाध्यौ । —रा ब बि.

राठोड़-सं. पु. [स राष्ट्रवर] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राज-वंश, जिनका मूल राज्य दक्षिण मे था और वहा से गुजरात, काठियावाड, राजपूताना, मालवा, मध्य प्रदेश, गया, बदायू आदि मे इनके कई स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुए। इस वंश की व्युत्पत्ति के विषय मे काफी बडा मतान्तर है। प्राचीन शिला लेखो एव वंशावलियो के आधार पर कुछ विद्वान इन्हे रामचन्द्र के द्वितीय पुत्र कुश के वंशज अर्थात् सूर्यवंशी मानते हैं, परन्तु कुछ विद्वान "रट्ट" यदुवंशी से इनकी व्युत्पत्ति मान कर इनको चद्रवंशी मानते है। चन्द्रकला नगरी के राजा यवनसुत की रीढ से बालक मानधाता की उत्पत्ति एव उसके वंशज राठौड कहलाने की एक प्रतीकात्मक कथा भी सर्व प्रचलित है।

उ०—राठोड़ां पग्ग झल्लियौ, न्रप 'अगजीत' निमन्न।
सुण तहवर उर छीजियौ, अन खीजियौ दरत्त। —रा लो

२ उक्त वंश का व्यक्ति।

रू० भे०—रट्ठवड, रट्ठवर, रट्ठोड, रट्ठोर, रट्ठौड, रट्ठौर, रठवड, रठौर, राअठोड, राइठौड, राठउड, राठवड, राठवड, राठोड, राठोर।

राठोडवै-स. पु [स राष्ट्रवरपति] राठोड वंश का राजा।

उ०—सुख जिके इद्र भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख अव भोगवै।
अवनाड वीर राजा इसौ, 'गजपति' राठोडवै। —गु. रू ब

राठौड़ी-वि.—राठोडो का, राठौडो सबधी।

उ०—बनी ए थारी राठौडी धरती म्हारा चलता घुडला हांस्या —रा. ले

स स्त्री.—१ साफा बाधने का ढग विशेष।

उ०—रग-रग री पोसाखा तनायन करै छै, नै माता घोडा उडणा ताजी ऊपर झीण करावै छै। राठौड़ी बंध बधावै छै ऊपर बाला बदी तुररा सिर पेच बधीजै छै। —पना

२ राठौडो की हुकूमत या सत्ता।

मुहा०—राठौडी चलाणी=अपनी इच्छानुसार कार्य करना या करवाना, रोब गालिब करना।

रू. भे. राठोडी

राठौर-देखो 'राठोड' (रू. भे)

राढ़, राढा-स. स्त्री. —१ जिद्द, हठ।

२ शोभा, छबि। (ना. मा., ह ना. मा)

राढ़ामणि, राढ़ामणी-स. स्त्री—काच की मणि।

राढ़ाळी-वि. हठीली, जिद्दिनी।

स स्त्री.—१ लडाई, झगडा, युद्ध।

उ०— बाढाळी बहताह, राढाली ग्रम्मक रुई। साढाळी सहताह, बाढाळी ऊपर करै।

—महाराज बखतावरसिंह (अलवर)

२ सकट।

रातक—देखो 'रातग' (रू भे.)

उ०—छोह छक रातंक थका छावता, गुमर बगडावता रूपगाढ।
घमोडा नडा अवरी घडा घावता, चमू सगतावता नूर चाढ।
—माधोसिंह सक्तावत रो गीत

रातखियौ—देखो 'रातांखियौ' (रू. भे)

रातखी-स. स्त्री —१ चील रूपधारी देवी।

उ०—अइयौ सरगांत अनत, प्रगट किया सारी प्रथी।
मुदराळी मैमत रातखी तू हीज रिधू। —मा. वचनिका

२ देखो 'रातग'

रातग-स पु.—१ गिद्ध।

उ०—थम जगा बोम बाट जोहतो रातगा थाट। तोडतो मातगा घाट रोड़तो त्राबाट। —हुकमीचद खिडियौ

२ चील।

३ लाल चोच वाला मासाहारी पक्षी।

रातंब, रातबर—देखो 'रकतबर' (रू. भे) (ना. डि. को, ना मा)

उ०—१ तेरह लोह अग रातबर, पह आगै अग्र सेन पटाभर।
पोहचि तठै सिक्का पौढाणै। इम पग पर भरथ अग्र आणै।
—सू प्र.

उ० -२ घण भेरी घरहर हुई सिंधु सुर हूका कजर कोट ढहै।
गीधणिया सह हुवर लागी अवर, रथ रातंबर नागि रहै।
—गु रू ब.

उ०—३ इद लोक ऐरापति सेघ करै खळ गोडबि आर्णं गेह।
सपतास रातबर मांजि असमर गोहटळ धारेह। —मा वचनिका

रातंबरी-वि [स. रक्त+अबर] रक्त वर्णकी, लाल।

उ०—रोळमी खळदळा चख्ख रातबरी।
कळाया मह त्या जमौ गज केहरी। —हा भा.

रातमर- देखो 'रकतबर' (रू भे)

उ०—यम देवाळय मध्य दीन जुहे दह सम्मर।
आलबाल भरि स्रोन भई प्रतिमा रातंबर। —ला रा.

रात—स. स्त्री [स. रात्रि] सायकाल से प्रात काल तक का समय रात्रि, निशा, रजनी। (डि को)

उ०—१ रात दिवस होवै मन राजी, निरख परार्ई नारी।
पढण पढावण सोमर रायौ, चूक गयौ विभचारी। —ऊ का.

उ०—२ रात ढलनै लागी, जद मा'राजा घम मे बड्या। फूमी बिया नै घणा उदास अर मूढो उतारयां जाया। —दसदोख

रू. भे —रति, रती रत, रत्ति, राति, राती, रातु, रातू।

अल्पा —रतिया, रतडी, रातड, रातडली, रातडी, रातडि, रातडी।

रातउ-स पु —१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—बहुमूल्य मृगरोमिय मीणीय काल फटडउ रातउ फटडउ सूपडनी मेघावली मेघडबर पर्यावलि पयोतर इत्यादि वस्त्राणि।
—व स

२ देखो 'रातौ' (रू. भे)

उ०—मगाइ कोम मालउ किमउ, नवलइ रावइ मोउ।
मु मिलिहि मज्जम सिरिहि, मउ रातउ, मूगिराउ।
—जिनपद्म सूरि

रातकडाहड-स पु एक प्रकार का वस्त्र।

उ० -कसाबीर सौवनखचित मनत्र नीलउ नव रातकडाहड वड-गतीन गद्दी गुकस्मप्राह ...
—व स

रातड—स स्त्री. १ लालिमा, ललाई।

उ० - प्रसभ मुकन घब र, दाह दिन दिन रातड़ दीसै।
- मा वचनिका

२ देखो 'रात' (अल्पा, रू भे)

रातड़ली - देखो 'रात' (अल्पा, रू भे)

उ० कहां बसियो कान्हा रातड़ली।
थार तेर मुख बिच आवे मोह बासड़ली।
- मीरां

रातड़ामुखा—वि - लाल मुह वाली/वाला, रक्त-मुखी।

उ० -आगरो रात काय अरि कमळ ऊपरा।
वापड़े रातड़ा मुखां आमिस वरा।
हा भा

रातांड्यो—स पु —१ एक असुर का नाम।

उ०—रमत डूगरराय, अग आवळी उवार।
रमतं डूंगरराय, मेक रातांड्यो मार। —ठा केसरीसिह मनाणा र सिद्ध।

२ देखो 'रातौ' (अल्पा, रू भे)

रातडी देखो 'रात' (अल्पा, रू भे)

उ०- १ रातडी सवाई हो रामजी अहि गई, पल पल छीजे गात।
करजो मुणि करणामद, मरजि पधारो हो नाथ। —द पु. वा

उ० - २ रही उजळी रातड़ी, निरा दमगरा दी बाळ।
पही जळ म भवन मे प्रीतम बिन बेहाल।
— अचलाल बूबना री बात

उ०—३ नारा री छाई रात्या रातडी रे ओई फुलडा री छाई वाला मज।
लो. गी

रातडो- देखो रातो (अल्पा, रू. भे)

उ० -१ पाका बिब मधु समा रे, पोपित विद्रम जाण रे।
मामोल्या जिम रातडा रे अधर सुधारस खाण रे।
—प व. चौ.

उ०—२ ऊजळी धार पतसाह पर आछटे। मनियो रातड़ो नीर 'मातें'।
—मानसिंह सक्तावत री गीत

रातजगरा—स पु —१ कुत्ता, श्वान। (अ मा)

२ रात्रि को जगने की क्रिया या भाव।

रातजागो—देखो 'रातीजोगो' (रू भे)

रातडि, रातडी— देखो 'रात' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ काजळ माहि कालिमा, रयनि रातडि जेम। सुणि प्रीऊडा तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम।
—मा. का प्र.

उ०— २ का रे कानी रातडी थिर रही थानक जोय। अम्हनइ नै आगाइ, समट गिउ मवरनी होय।
—मा का प्र.

रातवी, रातवो - देखो 'रातगो रातवो' (रू भे)

उ० पहले हम सब कछू किया भरम करम ससार। दादू अनुभव उपजी, राते सिरजन हार।
— दादूबाणी

रातदिन—स पु [स रात्रिदिव रात्रिदिवा] १ चौबीस घंटोका समय या समय की अवधि जिसमे, रात-दिन पूरे व्यतीत होते है।

२ प्रति-दिन, नित्य।

रातब देखो 'रातिब' (रू भे)

उ०—१ सगळा घोडा न रातब दिराय ताजा किया।
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ लाडा आया सेह भरिया, जद अलायदी जायगा देख नै असल पाणी करणा नै उतरीया। जद घाडा नै ती रातब की पीडिया खवाय नै ताजा कीया।
—पना

रातमिण—स पु [स रात्रि + मणि] चन्द्रमा।

रातमुख, रातमुखो—स पु [स रक्तमुख] मुसलमान, यवन।

उ० भर भुजवी धरा पुट भवनै, घरट घाय धरा घेरविया।
रातमुखा गोह भर रासौ आवध सारै ग्रोगविया।
—महाराणा खेतसिह री गीत

वि लाल मुख वाला, रक्तमुखी।

रातरतन—स पु [स रात्रि + रत्न] चन्द्रमा, शशि। (डि को)

रातरली देखो 'रात'

उ० कहा बसियो कान्हा रातरली। थारे तेरे मुख बिच आवै मौहै वासरली।
—मीरा

रातराणी—स स्त्री १ एक पौधा विशेष जिसके फूल रात्रि मे सुगध देते हैं।

उ०- वागो केवडो केतकी मोगरो, जुई, कवळ, गुलाब, रातराणी करणर गुलमोर ...
—फुलवाडी

२ उक्त पौधे के फूलों का बना इत्र।

रातराजा—स पु — रात्रि का राजा उल्लू-पक्षी।

उ०—विग्रह-बाजा पर बदर करता जरा काजाह। रा ताता राजा

न रह, रह्या रातराजाह। —बेतसिंह

रातरी—देखो 'रात्रि' (रू भे)

रातरोळी—स पु. रात्रि का आक्रमण, रात्रि का झगडा।

रातळ, रातल—स. स्त्री.—१ गिद्ध, गिद्धनी।

उ०—१ केशी भूप रायसिंघ कोपीवं। जुड लागा मुह कीध जुवा। **रातळ** सुरग हुई भखती रत। हाली भाखर सुरग हुवा। —द दा.

उ०—२ परि सोक झोक **रातळ** अपार। वजि सोक काळ चक्र विस्मवार। —सू. प्र.

२ मादा ऊट।

रू भे—रातल्ल,

रातळौ—वि १ लाल रग का।

२ क्रुद्ध, क्रोधित।

स. पु.—ऊट।

रातल्ल देखो 'रातळ' (रू भे.)

उ०—रु ड मुड **रातल्ल**, पिड सत खड परक्खै। गूड सार गळ भरै, छडि पळ लोयण भक्खै। —रा. रू.

रातवासी—वि —१ रात्रि विश्राम करने वाला।

२ केवल रात्रि मे ही रहने वाला, रात तक ही ठहरने वाला।

स. पु—रात्रि का विश्राम।

उ०—अर दोनू एकं पीजरं मे घातिया। पीछै **रातवासो** भेळा रया। अर प्रात रै बखत सैहर मे वेचण आयौ। —द दा.

रातवासौ, रातवाह, रातवाहौ—देखो 'रातीवासो (रू भे) (डि को)

उ०—१ म्हे कठै आगा छा, याद करिग्यो जद ही **रातवासै** आप कनै देखस्यौ। —मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ म्हें तौ आखी तरै सू ओळख लियो पण अठै कोई सराय है काई, जो **रातवासौ** लेवणो है। —रातवासौ

उ०—३ धरमसाळ रौ सवार-सिझ्या फूस वाइदौ काढै। मारग चालता वटावू निसक **रातवासौ** लेवता। —फुलवाडी

रातविरात—स. पु.—रात्रि का समय।

रातांखियौ—वि. स. पु. (स्त्री रातखी, रातांखी) आरक्त नेत्रवाला, लाल नेत्र वाला, सिंह, शेर।

उ०—तूटियो, प्रधाप वेग, होफरेल **रातांखियो,** साप पाखियो क धाप डाखियौ संठीर। ताप खाई मेंगळा भळा हू, अमाप तेज, कुमारां सिंगार आप बुलायौ कंठीर—प्रतापसिंह राठौड री गीत

रू भे.—रातंखियौ

रातांबेई—वि. सी.—माता के लिए प्रयुक्त होने वाला विशेषण शब्द।

उ०—१ जळ हर जामी बाबौ मागौ, **रातांबेई** माय। कांन्ह कंवर सौ वीरो मांगां, राईसी भोजाई। —लो. गी.

उ०—२ चुडलौ चितरा दे, ए हा ए म्हारी **रातांबेई** माय। आइ ए सावणिया री तीज, बाई पहरसी। —लो. गी.

रातापात—स. स्त्री [स. रक्तपत्र] रगबाल नाम पौधा विशेष।

रातिंवौ—देखो 'रातीघो' (रू. भे)

उ०—ज्यानै परखिया तीन सोनार रात रा **रातिंवौ** नै दिन रा दीसै ई नी। —फुलवाड़ी

राति—देखो 'रात' (रू भे) (ना. मा)

उ०—१ **राति** विढियौ इसी भाति नरवै रयण, सम-समी मार देतो सबाही। —किसनौ आढौ

उ०—२ राति दिवस जे जायइं छइ, पाछा नावइ तेही जी। खिण खिण त्रूटइं आउखं, खीण पडइ बलि देही जी। —स. कु.

देखो 'राती' (रू भे.)

रातिचर सं पु [सं. रात्रि+चर] निशाचर, राक्षस।

रातिजागर देखो 'रातीजागर' (रू. भे) (ह. नां. मा)

रातिब—स पु [अ]१ घोडे, कुत्ते आदि पालतू पशुओ को नियमित खिलाया जाने वाला पौष्टिक खाद्य पदार्थ जो चारे से अतिरिक्त होता है।

उ०—१ ताहरा नरबद जी वैहलिया २ मोल लिया। सो बैहल जोडने नित फेरै, भूय चाढै **रातिब** दै। —नैणसी

उ०—२ ऊदै रै चढरणनू काछिण घोडी हुती। तिरैनू **रातिब** अणायौ जवा रो आटो अर गुळ दीनौ।

—ऊदै उगमणावत री बात

२ पौष्टिक खाद्य पदार्थ की नियमित ली जाने वाली खुराक

३ मास।

रू भे—रातब,

रातिबबंध—स पु—पौष्टिक भोजन की प्रतिदिन की खुराक।

उ०—तार रहिन मघइ पत्र ताजा। **रातिबबंध** भखै नित राजा।

—सू. प्र.

रातिवास, रातिवासौ, रातिवाहि, रातिवाहौ—देखो 'रातीवासो' (रू. भे.)

उ०—१ यु वात चीत करना **रातिवास** लीयो हर दोड आय रही तदि दोनु पोढि रह्या। —ढो. मा.

उ०—२ गोधूळक समै परणीया। **रातिवासै** पाढीया। प्रभाते सुखपाळ मैं बैसाण नै गढ जालोर ले आया।

—वीरमदे सोनगरै री बात

उ०—३ नद स्त्री मांनाजी री आग्या हुई तू **रातिवाहौ** देय म्हे थारी मदद छां। —ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—४ हेरा करै डेरा हणौ, **रातिवाहै** राजो रे। मुगल घणां तिहां मारिया, सबल लूटाणा साजो रे। —प. च. चौ.

उ०—५ रातिबाहि बिढ़िया भांन गाउ, घण धाड मेछ मभावि थान । —रा ज सी

रातींधी, रातींधो—स. पु. [स रात्रि + अंध] एक प्रकार का नेत्र रोग जिसमें रोगी को सूर्यास्त के बाद दिखना बंद हो जाता है अथवा धुंधला दिखाई देता है (अमरत)

रू. भे.—'रातिंधो'

राती—वि. स्त्री —१ लाल ।

उ०—१ राती बांनी री गोलड़िया करी । ऊंनी लोवड़िया बगला में ऊभी । —ऊ. का

उ०—२ मारग बंमे बीट नह, उगमै लेखो ग्रस्थ । राती पाघड़िया तणा सुलभावण समरस्थ । —बां दा.

उ०—३ स्त्री स्वभाव लाडगाउ, मांड आडगाउ कुमित्र फाडगाउ, दुरजन दुस्ट स्वजन मिस्ट आंगि राती, धाहू राती । —व स

उ०—४ स्याम सनेसो कबहु न दीनो, जान बूझ गुझ बानी । ऊंची चढ़ चढ़ पथ निहारू, रोय रोय अंखिया राती हो । —मीरा

२ रंगी हुई, रंजित ।

उ०—१ भर योवन मा माती, पिण जैन धरम री राती । न सकै देखि मिथ्याती, जिणं दूर कीधा कुपात्री । —वि कु.

उ०—२ सखी री मै तो गिरधर के रंग राती । पचरंग मेरा चोळा रंगा दे, मैं झुरमट खेलन जाती । —मीरा

३ अनुरक्त, आसक्त ।

उ०—१ मन मोहन सुदरि माती रे, रहै पथ भरतारै राती रे । मखरी पोहरै ने साडी रे, ती पिण सहु अंग उघाडी रे । —ध व ग्र

उ०—२ पीव मिल्यां जीऊं सखी रे, नातर तजिहूं देह । दासी मीरा राम राती, हरि बिन किसो सनेह । —मीरा

४ मस्त, मग्न ।

उ०—१ मोलं बैठी एकली, करै सगलाई कामो रे । राती रस भीनी रहै, छोडै नहीं निज ठामो रे । —ध. व ग्र.

उ०—२ नारी मिरगा नयन, रंग रेखा रस राती । बदै सुकोमल बयण, महा भर योवन माती । —वि. कु

५ क्रुद्ध, क्रोधित ।

रू भे —राति,

६ देखो 'रात' (रू. भे) उ०—१ भई कस्ठी यामा, ब्यसन मन भामा ग्रह्त भरै । महा राती मारे पतन तन जारे नह मरै । —ऊ का.

उ०—२ राती महल पोढ़ण गयो । खोळ गुवा नै हुकम हुवो । चारि पहर रात झरोखै उलंगिया । परभात लाख एक रो इनाम हुवो । —पलक परियाव री बात

रातीचावी—स. स्त्री.—लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी विशेष ।

रातीचोळ—वि. - लाल सुर्ख ।

उ०—इदर भगवान परिया री नाच जोवण माक हीरा-मोती जड्या सिंघासण माथै विराज्या हा नसा में धताघत । आख्या राती-चोळ । —फुलवाडी

रातीजगइ, रातीजगो—देखो 'रातीजोगो' (रू. भे)

उ —१ माल पहिरग अवसरि आगी मन उछरंग, घर माफ खरचइ धन बहु भंगि । रातीजगइ आपइ ताजा तुरत तबोल, गीत गान गवावइ पावइ अति रंग रोल । —स. कु.

उ०—२ जोतकी टीपणं में गिरै-गोचर सभाळै, कोलकी धूप खेवता थका जोत करै । जागण-जम्मारा, अर रातीजगां रा सै नेगचार हुवै —दसदोख

रातीजवार—स स्त्री —लाल रंग की जवार । एक अन्न विशेष ।

रातीजागर—स पु [स रात्रि + जागर] कुत्ता, स्वान । (अ मा.)

रातीजागो रातीजुगो, रातीजोगो—स पु [स. रात्रि—जागरणम्]

१ ईश्वर, देवि-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए, देवालय या उनकी मूर्ति के सम्मुख बैठकर, किया जाने वाला रात्रि- जागरन, जिसमें उनकी स्तुति, प्रार्थनाएं तथा भजन-कीर्तन किया जाता है ।

उ०—इसी विधि कीधा रातीजुगा, साहमीवच्छल सारांजी । पटकूलं कीधो पहिरावणी सह सघने श्रीकारंजी । ध व. ग्र

२ विवाहादि उत्सवों पर औरतों द्वारा मांगलिक गीत गाते हुए किया जाने वाला रात्रि-जागरन

उ०—१ माम पहरण अवसर आणीमन उछरंग, घर माफ खरचे धन बहुभंग । अति उछव कीजै रातीजोगो दिलखोल, गीत गान गवावं पावै अति रंग रोल । —वृ रत

उ०—२ गोरगा निस गौरा री रात परणीजण रै वास्तै घरै जावै वा तो रातीजुगा री ने परणीजण रै दूसरा दिन री रातगौरा री सो गौरा री रात सूना म्हारै विगास रो सत्रआ लारै चढ़ण नै बाहर री ढोल वाजियो । —वी स टी.

रू. भे.—रतजगो, रातजग, रातजगो ।

रातीबासो, रातीबाहो—देखो 'रातीवासो' (रू. भे)

उ०—१ रातीबासे री माती रभाती, जाया गोपा सै जाती अभाती —ऊ का.

उ०—२ पछै राठौड़ कीलाणदास रायमलोत रातीबाहो माणस ५० तथा ६० सु दीयो —नैणसी

रातीभाजो—स स्त्री —मास ।

रातिबाहु, रातीबाय, रातीबास, रातीबासो, रातीबाह, रातीबाहि, रातीबाहो—सं पु.—[स. रात्रि + वस=आच्छादने + घञ=रात्रिवास, स रात्रि + वा=आघात, प्रहार] १ रात्रि को किया जाने वाला आक्रमण या हमला ।

उ०—१ दीधी मीव पातसाह इ घणी फौज करेज्यौ आपापणी। वचन दीउ जालउरइ राय, कटक न आवइ रातीवाय —का दे. प्र.

उ०—२ परबतसिंघ देवड़ौ मेहाजळोत राव कला रौ भाई कल्याण दासजी रातीवासौ दियौ जद मारांणौ। —बां दा ख्यात

उ०—३ एक स्वाति पूरवउ अम्हारी, कटक चिहु दिसि जोस्यूं। मनजाणिस्यु वरासु वीतु, रातीवाहु देस्यू। —का दे प्र

उ०—४ ताहरा रात पोहर १ गई ताहरा इया ठाकुरा रातीवाहो दियौ। ताहरा हेमै सीमाळोत जाइ पैंदली तोडि कनात, भाज थाभौ, ग्रर मुगल नै घाव कियौ। मारनै माथै री कुलह लीधी। नैणसी

उ०—५ तद जोधपुर रा विगाड करोजी कीया। घणा गाव मारिया। घणां थाणां भांजिया। कटका नु रातीवाह दीया। — राव मालदेवजी री बात

[स. रात्रि + वस=निवास] २ रात्रि को किया जाने वाला विश्राम, पड़ाव, निवास।

रू. भे—रतियाव, रतिवाउ, रतिवास, रतिवासौ, रतिवाह, रतिवाहौ, रातवासो, रातवाह, रातवाहौ, रातिवास, रातिवासौ, रातिवाहौ, रातीवासौ, रतीवाहा।

रातु, रातू—१ देखो 'रातौ' (रू भे)

उ०—जेह ना, गुण जेह नइ हई उ वसइ, ते देखी नेह ना नयणा हसइ। जे ऊपरि प्राणी रातु थराउ, नाम मेल्हइ कहु किम नेह तराउ। —नळदवदंती रास

२ देखो 'रात' (रू भे.)

उ०—१ रातूं दे रोडा लूला खोडा दुनियारा दीसदा है। झोळी भड़कावै पोळी पावै, टोळी सु टाळ दा। —ऊ का.

रातूलौ—वि. (स्त्री रातूली) रक्तवर्ण, लाल।

उ०—पीलौ तौ ओढ सूरज नी पूज्यौ। रातूलौ ओढ जळवा नी पूजी ए माता राणकदे। —लो गी

रातैरींस—वि.—क्रोधित।

उ०—मुळ-मुळ सरू हुई। लोगा काना फूसी करी बात वीन रै बाप कनै गई। 'फूं फा माणसियौ गिधावै'। सगौ रातैरींस आयग्यौ।

रातोंरात—देखो 'रातोरात' (रू. भे.)

उ०—तद सारा अमराव भेळा होय राजा नूं काढियौ सो सौ अमरावाण सूं रातोंरात देसणोक श्री माताजी रा पावा आइयौ। —मारवाड रा अमरावा री वारता

रातोकोट—स पु—जेसलमेर जिलान्तर्गत पोकरण, ग्राम का कोट, किला, गढ।

रातोड़—स. स्त्री.—१ ललाई, लालिमा।

उ०—उण री आख्या मे जोयौ। हाल रीस अर रातोड़ मिटी नी ही। आख्या थोडी सूज्योडी दीसी। —फुलवाडी

२ किसी दर्द या फोड़े के स्थान की ललाई।

रातोबदन—स पु [स रक्त+वदन] लाल वदन।

वि.—रक्तवर्ण लाल। * (डि को)

रातोबुरग— देखो 'रातोकोट'

रातोबब—वि—गहरा लाल, रक्ताभ।

रातोमातो—वि —हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, मोटा ताजा।

रातोरात—क्रि. वि — रात ही रात मे रात के रहते-रहते।

उ०—१ जठै हुणां कोट छै तठै आया। अठै खुड़ियै रौ उनाव हुतौ सु अठै आय रातो-रात मूता। —नैणसी

उ०—२ ताहरा उयै कही कुंवर नौ रातै मूवौ। मु रातोरात राकस उठाय ले गया। —चौबोली

रू भे—रातोंरात, रात्यूंरात,

रातौ—वि. [स रक्त, प्रा रत्त] (स्त्री रातौ) १ रक्तवर्ण, लाल, सुर्ख।

उ० —१ जळजाळ ग्रवनि जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल। आधौ-फरै मेघ ऊधमता, महाराज राजै महल। —वेलि

उ०—२ बीछुड़ना ई मज्जणा, राता किया रतन्न। वारा विहु विहु नाखिया, आसू मोती-अन्न। —ढो. मा.

उ०—३ बाळ-कन्हैया नै अजाण ई थोडी घणी रीस आयगी। मूंडो रातौ व्हैगौ। —फुलवाडी

२ रगा हुआ, रजित।

उ०—दादू विसय विकार सौ, जब लग मन राता। तब लग चित न आवही, त्रिभुवन पति दाता। —दादूवाणी

३ लाल रग से रगा हुआ।

उ०—अनि घणु राता हो चीर न पहिरिवा, न करू कद्दयै स्नान। वलि न विछाउ हो फूलनी सेजडी, न लहु केह मान। —वि. कु.

४ आसक्त, अनुरक्त।

उ० —१ अरा एक राग रग राता, प्राण गयौ सुण रीझिये। —श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ दादू राता राम का, पीवै प्रेम अघाइ। मतवाळा दीदार का, मांगै मुक्ति बलाइ। —दादूवाणी

५ तल्लीन, मग्न।

उ०—१ मद का माता मद पीयै, सो मदवा नही जांनि। हरीया राता राम रस, मन मतवाळा मांनि। —अनुभववाणी

उ०—२ राम भजन मूं राता, महत भाग जे मान। ज्यां सारीखो जग मे, उत्तम न जाणै आन। —र ज. प्र.

उ०—३ राता तत चितारन चिंतारन, गिरि कदरि घरि बिरहे गण। निद्रावस जग एहु महानिसि, जांमिण कामिण जागरण। —वेलि

६ उन्मत्त, मदमस्त ।

उ०—१ राती भूख निरमम बध गोरे, मवर ज्यों कुण जोमद । मो ऊभो मकर वी कोमद, नारा भीख किण तोर्ड । —र. रू.

७ प्रसन्न, खुश ।

उ०—तीरथ बरत मब मांर उली, तहां चार्व जांहि । भूंठ मू समार राता, माच देखै नांहि । —ह पु. वा.

८ उलझा हुआ, फसा हुआ, सलग्न ।

उ०- १ समभि नांहि काढ निज घथ राती रहें, गह अग्यान मिथ्यात पथम कहै । —ध व ग्र

उ०—२ परपच राती प्राणियो, हांर मू नांहि हेत । पर वणि पढ्यो विगूचसी, अब सू चेत अचेत । —ह पु वा

सं पु [स. रक्त] रक्त, खून

उ०—दुस्ट सहज समुदाय, गुण छोडै अवगुण गहै । जोख चढी कुच आय, राती पीवै राजिया । —अग्यात

रू भे.— रत्तो, रत्त, रत्तउ, रत्तौ, रातउ, रातु, रात ।

अल्पा —रतडउ, रतडौ रत्तडउ, रातडियो, रातडौ ।

रातीबीह—देखो 'रातदिन' (रू. भे)

उ०— जैनू जीहा रातीबीहा जी जपो । काती पे कीनासा हुता ही कंपी । —र. ज प्र

रात्य—देखो 'रात्रि' (रू भे)

रात्यूं—क्रि. वि.—१ रात मे ।

उ०—१ अलाजी मारू रात्यूं धण री पेटडली भल दूख्यौ हो मिरगानैणी रा जलाल । —लो. गी

उ०—२ ठाकर ठाला ठोठ, ठकराणी गिरधर जिसी । करै विभै रा काट, रात्यूं सूता राजिया —किरपाराम

२ देखो 'रात्रि' (रू भे)

रात्यूंरात—देखो 'रातोरात' (रू भे.)

उ०—बापडी बूढी डोकरी मोथा सू पकडयोडी धणी रोई अर बेहोस हुयगी । पण धन रा बायोडा गधेड कैवे-नेनर आवे अर फरेब करै है । सगळै धाम धाल देखो अर रात्यूंरात इयें रै घरा नाख आवो । —दसदोख

रात्रि—स. स्त्री. [स] १ सध्या मे प्रात काल तक का समय, निशा, रजनी (डि. को)

उ०—विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अने सखी सांभ अमुख सूंपा ते दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै । - भि द्र

२ रात की अधिष्ठात्री एक देवी ।

३ निराशापूर्ण अवस्था, या स्थिति (लाक्षणिक)

रू. भे.—रात्री ।

रात्रिकार—स. पु [स.] चन्द्रमा, शशि ।

रात्रिचर—स पु [स] राक्षस, निशाचर ।

उ०—छांडाव्या नर रात्रिचर स्यु करि नै सबल लडाई । सापन पाणी परगट कीधउ, मह जाणै सुघडाई । —वि कु.

रू भे.—रात्रैचर

रात्रिज—स पु [स] तारा, नक्षत्र ।

रात्रिबल—स. पु [स रात्रिबल] निशाचर, राक्षस । (डि को.)

रात्री—देखो 'रात्रि' (रू. भे) (ना. मा.)

उ०—स्वामीजी बोल्या-रात्री मे लघु परठता हुयो जद इण री दया किम रहै ? —भि. द्र.

रात्रैचर—देखो 'रात्रिचर' (रू भे)

उ०—तै रात्रैचर आन विटल विकल वदन विकराल । विसम वचन बोलतो, ऊठो जागि कराल । —वि. कु.

राध—स पु —किसी घाव या फोडे मे निकलने वाला गदा पानी, जो कुछ पीला व गाढा होता है, पीव मवाद ।

उ०—काली मासी अर भटियाणी रै दुख रो ई कोई पार नी हो । राध भरया तीना रा काळजा अन्टपोर कुळता चभीका मेलता । —फुलवाडी

रू भे.—राध, रांध, राध्य । मह०, रादरडौ, राधड, राधो,

राधनी—स स्त्री [स ह्लादनी] १ बिजली, विद्युत । (ना मा, ह. ना मा.)

२ वज्र ।

राधरडौ—स. पु —देखो 'राद' (मह, रू भे)

उ०—आज री बकवकी सारू थारी काली मासी नै माफ करज्यं । मिनर बरसा रो राधरडौ आज थोडो सो फूटने बारै आयो । —फुलवाडी

रा'दारी—देखो राहदारी (रू भे)

उ० सारा है मुरधर इळ मारी, भूपा अगरेजा बद भारी । आज 'वभून' अवतारी, रैणव नोज भरै रा'दारी ।

राधोडौ—देखो 'राद' (मह, रू. भे)

राध—स पु [स राध] १ वैशाख मास का एक नाम । (डि को.)

२ ज्येष्ठ मास का नाम । (डि को)

३ भात ।

४ देखो 'राद' (रू भे)

उ०—बैनरसी लोही राध नी, निस रो तीखो नीर । तिण मे डुबावै तेह ने, छिन छिन होय सरीर । —जयवाणी

राधड—देखो 'राद' (मह, रू भे)

राधमास—स पु —वैशाख मास । (डि को)

राधा—स. स्त्री. [स.] १ श्रीकृष्ण की एक सुविख्यात प्राण सखी जो वृषभानु गोप की कन्या थी।

उ०—वडा मड माधा राधा वद, नमै पगि लागौ इद नरिद।
—पी ग्र

वि, वि.—पुराणो मे इसे गोलोकवासी श्रीकृष्ण की पत्नी भी माना है।

२ विष्णु की सृष्टि उपकारक पाच शक्तियो मे से एक।

३ अधिरथ सूत की पत्नी, जिसने कर्ण का पालन-पोषण किया था।

उ०—अतिरथि सारथि नहि वमए राय तणइ घरि सूत्तु। राधा नामिहि तसु घरगि, करणु भणू तसु पूत्तु। —सालिभद्र सूरि

४ बिजली, विद्युत।

५ वैशाख मास की पूर्णिमा।

६ विशाखा नक्षत्र।

७ समृद्धि, सफलता।

८ विष्णुक्राता नामक एक लता।

९ आवला।

१० एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण नगण, मगण और यगण तथा एक गुरु होता है।

रू. भे —राधाई, राधि, राधिका, राधे।

राधा अस्टमी, राधा आठम—स स्त्री [स राधा+अष्ठमी] भाद्रपद शुक्ला अष्ठमी की तिथि जिस दिन राधा का जन्म होना माना जाता है।

रू. भे —राधास्टमी।

राधाई—देखो 'राधा' (रू भे)

उ०—राधाई रुकमण और सतभामा, कुब्जा काई (थारै) सग पटै। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, तुम सुमरा मृ म्हाको सकट कटै।
—मीरा

राधाकांत—स पु. [स.] श्री कृष्ण।

राधाकुड—स पु—व्रज मे गोवर्धन पर्वत के निकट का एक सरोवर।

राधातनय—स पु. [स] राजा कर्ण। (अ. मा, ह. ना. मा)

राधारमण—स पु. [स.] श्री कृष्ण।

उ०—मद सिलल तणा चाटा हियै नीलमणा, राजिया रुधर चाटा पदम राग। अडग पग माड राधा-रमण उडायो, नग ममो विलद मग विष गगन मग नाग। —बा दा.

राधावर—स. पु [स.] १ श्रीकृष्ण।

उ०—थारी छब प्यारी लागै राज, राधावर महाराज। रतन जटित सिर पेच कलगी, केसरिया सब साज। —मीरा

२ श्री विष्णु। (डिं को.)

राधावलभ, राधावल्लभ—स पु [सं राधा] १ श्रीकृष्ण। (अ मा.)

२ श्री विष्णु।

राधावल्लभी—स पु.—१ एक वैष्णवी सम्प्रदाय।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुगामी।

राधावेध, राधावेधु राधावेधौ, राधावेधो—स पु.—१ अर्जुन।
(अ. मा, ह ना मा.)

२ बहत्तर कलाओं मे से एक। (व. स)

३ लक्ष्य पर तीर आदि लगाने की किया या ढग।

उ०—१ राधा वेधु मु अरजुनि साधिउ, मनचीतिउ वरु लाडीय लाधउ। जा मेल्हि गलि अरजुन माल, दीसइ पाचहु गलि समकाल।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ त्रिभुवन जय पताका लेवी चलचक्रांतरालि राधावेध करेवउ, जइअत मुद्रा सवेरउ। —व स.

उ०—३ जिम वैस्वानर मध्य प्रवेस करी न सकइ, जिम राधावेध साधि न सकइ, जिम पाणी पोटल बाधी न सकइ, जिम वायनउ को घट भरी न सकीइ। व स

रू भे.—राहावेहु।

राधास्टमी—१ देखो 'राधाअस्टमी' (रू भे.)

राधि—१ देखो 'राधा' (रू रू)

२ देखो 'राद' (रू भे.)

राधिका—स स्त्री. [स] १ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १३ और ९ के विश्राम से २२ मात्राए होती हैं।

२ देखो 'राधा' (रू भे)

उ०—राधिका कृस्ण राम, वृदावन व्रज बिलास। गिनका गज अजामेल गीध, पद गाता। —उ का

राधेय—स पु [स.] १ राजा कर्ण का एक नामान्तर।

उ०—मांगणा निवाजै रीझां, राधेय तराजै माझी। क्रोधगी समाजै रूप धनजै क्रपाण। भूडडा आजान वाळौ बिराजै प्रायांण भूरौ, 'माधवेस' राजै बीजौ गनीमा मथाण। —किसनसिंह बारहट

२ अगद।

राधौ—देखो 'राद' (मह., रू भे)

उ०—पचेंद्रिय काय माय रे फसियौ, उत्क्रस्टौ मास आठ भव वसियौ। पिंड असुच उदारिक लोही राधौ। —जयवाणी

राध्य -देखो 'राद' (रू भे)

राप्ती, राप्तीनदी—स स्त्री.—एक नदी जो धवलगिरि पर्वत की पश्चिमि ढाल मे निकल कर करनाली की ओर होती हुई गोरखपुर जिले मे घाघरा नदी में जाकर मिल जाती है। (वीर विनोद)

राफ—स. स्त्री.—१ मुह का वह भाग, स्थान या कोना, जहां दोनों होठ

मिलते हैं। होठों का परस्पर मिलने का संधि स्थान।

उ०—ब्याहरी मांवी वांना पड़ियी, हाथ सू काच छूट र टुकडा हुयग्यी। दलाल सामी मूंडी ढीली करयो, राफां तिड़ाई जद न्याळ वाल पड़ी। —दसदोख

२ फन।

उ०—नाग मंडळ मेवाड़ निरखती, कमधज गुरड फिरै कोबल। कूंभकरण सिर सकै न काढै, जा डर राफ महाजद पंख।

—बादर सूरो

उ०—२ किंहि किंहि काली नाग ना, रांनि ऊमटद राफ। वनस्पति प्रज्वलि पडइ, नेह ना मुह नी वाफ। —मा का. प्र.

३ यवन, मुसलमान।

उ०—गढ गढ राफ राफ मेटै गह, रेण लभी भ्रम लाज प्ररेस। पंडर वेस नाद धण पीगग, सेस न भायो 'पतो' नरेम।

— महाराणा प्रतापसिंह री गीत

राफजी—देखो 'राफसी' (रू. भे)

उ०—चढै मेख चदवळा, मुगल वर गोळज गोळा। रचै गोळ राफजी, मयद, पाठांण हगोळा। —सू प्र

राफड़-रोळ, राफड़रोळियौ, राफड़रोळीयौ, राफड़रोळौ—स. पु—गड़-बड़ो, अव्यवस्था।

उ०—धरमराज रीस मे पग पटकता कैवण लागा—अबै म्हे कांई कैवूं अर कांई नी कैवूं। बिना म्हारै सुरग-नरक री न्याव कीकर कह। यें तो सगळी राफड़-रोळियौ कर दियौ फुलवाड़ी

राफसी—सं पु.—एक मुसलमान या यवन जाति व इस जाति का व्यक्ति

उ०—रवद स्याम के रूम के, सुनी राफसी सोय। साह हुकम चोडै लवण, सुण सोबिया रुकोय। —रा रू

रू. भे—राफजी।

राबी—स पु.—१ ऊंटो का एक रोग। इसमे ऊंट के किसी पैर के तलवे में सूजन आकर उसमे मवाद पड जाता है।

२ उक्त रोग से पीड़ित ऊंट।

राब—सं स्त्री.—१ बाजरी, जवार या मक्की आदि के आटे को छाछ में पका कर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ।

उ०—१ पहियां राब न पावही, पडो बीज उण पोळ। ऊ फळसी रहजो अडग, दूधां दहियां छोळ। —बां. दा

उ०—२ नीत रीत सूमां नही सवाब। सूमां घरै सुगाळ, मे रधै रसोडै राब। —बां दा.

२ आंच पर पका कर गाढा किया हुआ गन्ने का रस जो गुड से पतला व धीरे से गाढा होता है।

३ रबड़ी।

४ कोई गाढा पेय पदार्थ।

अल्पा., राबडी,

राबड़यौ, राबड़ियौ—स. पु—औटा कर गाढा किया हुआ दूध।

उ०—मो आछी खामी रोटी करै नै छाळी गाडर रा दूध है। राबड़यौ करै माहे लोग मिसरी घालै नै गुवाळ री मा हाथै जीमण मोकळै। —गाम रा धणी री बात

राबड़ियौ-खाटौ—स पु कढी नामक पेय शाक।

राबड़ी—देखो 'राब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ नौ थाळा पीवै राबड़ी, ऐ सोळा रोटी खाय। वौ वर टाळी माता गोरल, म्हे थाने पूजण आय —लो. गी.

उ०—२ बापडी महिनौ भर राबड़ी पीवी जद कठैई जाय नै ठीक हुई। पण उण री गोरी चामडी पर द्वारका री छापा रै ज्यूं राबळी छापा रैयगी। —रातबासौ

रायगण, रायगणि, रायगणी—देखो 'रायआंगण' (रू. भे)

उ०—१ सउदागर स्ववाम नू पूछइ लइ तिण मन्न। दीसइ रायगण मही, कुंवरी कचन अन्न। —ढो मा.

उ०—२ चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायंगणि गया। जय-बता यादव वीहल्ल, नर निकुभ गिरूया गोहिल्ल। —का. दे. प्र.

उ०—३ हियडइ ताहरइ हे सखी! थण हरनु थड थक। अलग घरइ आलिगता, रायंगणि जिम रक। —मा. का. प्र.

उ०—४ रायगणी राण कुभक्रन रुठे, हाथे लहै हिंदुयेराव। कीदी राघव भली कटारी, दाता मिरसी ऊपर डाव। —हरी सूर बारहड

राय—स पु. [स राजा, प्रा राआ] १ राजा, नृप। (डि. को)

उ०—१ यळ न अनड ऊवहै आन का, नेणा दीसै सहै नवाय। यौ करनार धातियौ करता, मोटे रौ मेवाडौ राय।

—महाराणा लाखा री गीत

उ०—२ रीझियौ अह दसरत्थ राय। अवतार घरू इण ग्रेह आय।

—सू. प्र.

उ०—३ आतमा अस्थान आतुर, विरह विव्हर थाय। मन भया व्याकुळ कब मिळोगै, सकळ व्यापी राय। —ह. पु. वा.

उ०—४ कमलापति कैवल्य प्रति, चौद भुवननु राय। पणि स्नेह-नइ पूजतु, मत्र तणा महिमाय। —मा. का. प्र.

उ०—५ नयणह आगलि गयउ कुरगू, राय चीति जा हूयउ विरगू।

—सालिभद्र सूरि

२ स्वामि, मालिक।

उ०—ओ३म नमस्ते चडका चद्रभाळ री नवीन आभा, छटा मणि-माळ री भुजाटा रही छाय। आगेहा लकाळ री क सत्रा घू काळ री आग, रमा रूप जयौ काछ पचाळ री राय।

—नवलजी लाळस

३ धन, द्रव्य।

उ०—सोदो अथिम सुहाय श्रो, दुकळ, आय किम दाय। रूका लेअ

घण राय दे, गढ ले कुछ न गमाय। —रैवतसिंह भाटी

४ राजा, महाराजा बड़े शासकों द्वारा रईसों, श्रीमानों को दी जाने वाली एक उपाधि।

५ भाटी वंश की एक शाखा। (बा. दा. ख्यात)

६ कायस्थों का एक सम्बोधन या उपाधि।

७ बंगाली कायस्थों का एक भेद।

८ दरार।

उ०—चित गयौ चहु चालि दिस, एक पडी भ्रण राय। हरीया वाडी फूल ज्यु, लेग्यौ पौ'ण लुडाय। —अनुभववाणी

[अ राए] ९ सलाह, सम्मति, अभिमत परामर्श।

१० विचार, ख्याल।

रू. भे —राय,

रायअगण, रायअगणि, रायअंगणी, रायआंगण—स. पु. [स. राज+अगन, अगण] १ राजमहल का चौक, राजमहल का प्रांगण।

उ०—१ तठा उपरांनि करि नै राजान सिलामति अनेक रंग रंग वधाई वांटिजै छै। रायअंगण घोलहरै गेहगी घणा मगळाचार गीत नाद ग्वभाइची गावै छै। —रा सा स.

उ०—२ लहि फतै भडां निजरा लियै, सझि नौवत नद तिण समै। ऊगतै भाण बाळक 'अभौ' रायआंगण इण विध रमै। —सू. प्र

उ०—३ रायआंगण चौपड रमौ, महिला सरब मुदाह। रवमी 'वाफळ' राज री, चूडौ अमर सदाह। —पा प्र

उ०—४ ताहरा जिसै वहु री वारी हुती. सु मारग रोकि ऊभी। ज्यु हरदास पाछली रात री वाहुडियौ, ताहरा कह्यौ-सामूजी! हरदास वाहुडौ छै। मासू पण ऊभी हुती। सु ऊपरा सू हरदाम उतरियौ। सु राय-आगण माहै मारग। ताहरा राय-आंगण मे हरदास आयौ, तरहरा मंरुरी मा भीतर तेडायौ —नैणसी

रू भे —रायगण, रायगणि, रायगणी, रायागण,

रायकवर—१ दुल्हा।

रू भे.—रायकवर, राइकुअर, राइकुवर।

२ देखो राजकुमार' (रू. भे.)

उ०—रायकुंवर चढियौ पाडिये, सुपने पनरमे देख्यौ रे। गज जिम जिन धरम छोडने, और धरम बिखेरवौ रे। —जयवाणी

(स्त्री. रायकवरी)

रायकवरी—स. स्त्री.—१ दुल्हिन।

रू. भे —रायकवरी, राइकुमरि, राइकुवरि

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे)

उ०—प्रथम नेह भीनौ महाक्रोध भीनौ पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। रायकवरी वरी जेण बागै रसिक, वरी घड कवारी तेण वागै। —बा दा.

रायकन्या—देखो 'राजकन्या' (रू भे.)

रायकुंवरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

रायकूंवर, रायकुंवर—१ देखो 'राजकुमार' (रू. भे)

उ०—गुरु परिक्खइ गुरु परिक्खइ अप्पदोहमि। दुरयोधन पमुह सवि रायकूंवर वण माहि लेविणु. —सालिभद्र सूरि

२ देखो राजकुमारी (रू. भे.)

रायकेळ—स. पु —एक प्रकार का केले का पौधा, केले की एक जाति।

उ०—मेहको ममोलौ, बावनौ चदण, सोळमौ सोनौ, रायकेळ को अभ, हस को बच्चौ। —लाली मेवाडी री बात

रायखाती—स पु —राजा का बढई।

उ० रायखाती के ने वेग बुलाय। जच्चा रांणी को पिलंग वणावौ, जी राज। —लो. गी.

रायगिह - देखो 'राजग्रह' (रू. भे.)

रायगुर—१ देखो 'रायागुर' (रू. भे.)

उ०—हाथा अ वमी हुए वमि हाथा, वाहै अणी खत्री ले वाढ। राघव काढी तणौ रायगुर, दात विमख किए जमदाढ। —हरीसूर बारहठ

२ देखो 'राजगुरु' (रू. भे)

रायघर—देखो 'राजग्रह' (रू भे)

उ०—हीदवा छात दोय वान लै हालियौ, वाळ ग्यो आक जग दुहू वानै। हमत हव हीडता देखसौ रायघर, कोढिया खजांना सुणौ कानै। —दुरसो आढो

रायचपेली—स. स्त्री [स राज+चम्पा+वल्ली] एक प्रसिद्ध लता जिसके पीलापन लिए सफेद रग के छोटे छोटे सुगधदार फूल लगते हैं।

उ०—सोढौ राणी रायचपेली रौ फूल, मूमल केळू कामठी। महकण लागी चपेली रौ फूल, लळकण लागी केळू कामठी। —लो गी.

रायचपो—स पु. एक वृक्ष विशेष।

उ०—१ सजन आया हे सखी, थानै कुण कहियाह। रायचंपा रा फूल ज्यू महलै महमहियाह। —ढो मा.

उ०—२ रसकस दिवळौ बळै, घड ढोल्या रै हेटै। सुगरा नै नुगरौ मारयौ, रायचंपा रै हेटै। —फुलवाडी

रायचोक, रायचौक—सं पु —राज महल का चौक, राज महल का प्रांगण।

रायजण—स. पु.—राजा।

उ० सरण रायजण चरण वाखाण मन करै सिध, दान वाखाण कव रमण देवी। कळाधर वदन बाखाण तरणी करै, करै रण करण बाखाण केवी। —हुकमीचद खिडियौ

रायजादी–सं. स्त्री. [स राज+फा आद, रा. प्र. ई.] १ शाहजादी ।

उ०—कुरं जग-नयणी कुरै रे, मेड़ तणी इल मोरां । आंगण पूठ बिया **रायजादी**, घूमर ऊपर धारां । —अमरसिंह राठौड़ री गीत

२ राजकुमारी ।

उ०—तठा उपरांत करिनै राजान मिलामनि उवै चनुरंग **रायजादी** किलीया री फूलिवौ मांनीया री लछी हुवै तिण भांति री ऊजळी गोरगीया —रा सा स

३ दुल्हिन ।

रायजादौ, **रायजादौ**–स पु [स. राज+फा आद] (स्त्री रायजादी)

१ राजा का पुत्र, राजकुमार ।

उ०—१ कोमळा अणकै मुगा उडे नीर केवराण, अराबा पड़कै किना फाटै आसमाण । नामळा ऊछळै खड़ा **रायजादौ** माहिजादा, 'औरंग' 'मुराद' 'मतौ' लवई आराण । —राव सत्रसाल रो गीत

उ०—२ गौख मागै थ्मी रमै, रामत ममत्र । जौख मागै अमी **रायजादौ** । —महाराजा बहादरसिंघ रो गीत

२ दुल्हा, वर ।

उ०—**रायजादौ** लुळ लुळ पाळौ जोवे, जाणु म्हारी जान मे आवागा पधारै । —ला गी

रू भे - 'राइजादौ'

रायजी–स पु —१ कायस्थों का एक सम्मान सूचक शब्द ।

२ देखो 'राय' (रू भे)

रू भे—राइजी,

रायजीप–स पु —राजाओं पर विजय प्राप्त करने वाला, राजाधिराज ।

रायडोडी–स. स्त्री - -राजमहल का द्वार । ड्योढ़ी ।

उ० –**रायडोडी** राजा दली रे माल, वली खुरसाणी मेव । दाडिम दाख मोहामणा रे माल, गरवूजा रस रव । –प च चौ.

रायण, **रायणि**–स पु [स राजादनी, प्रा. रायणी] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—१ आंबा रो पेड़, महवा रौ पेड़ **रायण** री पेड़, आमली रो पेड़, गुजरात में कारसणी घीन गिणी । —बा दा ख्यात

उ० २ वर विलसइ अनवेसर केसर रोडि गुवेम सस प्रगड उन-रायणि **रायणि** फलिय असेस । —जयसेखर सूरि

२ उक्त वृक्ष के फल ।

उ —नीना नारिंगां, रंगि रीसता सुरगा, नीकोली **रायण** ने पीसी मन भावणा, दाडिम नी कुली, खाता पुंजै रुली, नि मजा निमजोड दाख नइ बदाम, केइ कामदी केइ स्याम —व स

रायतेली–स पु —राजा का तेली ।

उ०—**रायतेली** के म वेग बुलाय, जड़ना राणी की मांग भरावी जी राज । —गो. गी

रायतौ–स पु. [स राजिकाक्त, राजीन] दही. छाछ या मठ्ठे मे, नमक-मिर्ची जीरा आदि ममाले डाल कर छोंक लगा कर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ ।

उ०—१ सीरो पूड़ी **रायतौ**, रोटा चावळ मास । सूला घी सू करै गरा, साम गुड़ रि रास । —कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ आगण चावळ-मगा री खीचडी आध-पाव 'घी सू मथ-मथ 'र गटकावै अर बडी-कढी र **रायता** सू रजै है । —दसदोख

रू भे.—राइतौ, राईतौ,

रायथांन - देखो 'राजस्थान' (रू भे)

उ० - मरुळ **रायथान** उथापण । निरजोर राय सहाय करि थापण । —रा रू

रायधर देखो राजधर (रू भे) (बा दा., ख्यात)

रायपसेणिय, **रायपसेणियौ**, **रायपसेणी**, **रायपसेणीइ**, **रायसेणीय**–स पु —

राजप्रश्नी नामक सूत्र । (जैन)

उ० –१ **रायपसेणिया** बीय उपांग म, दोइ हज्जार अठहोत्तर मन गमै । —घ व ग्र.

उ० - २ **रायपसेणी** सूत्र म, राय प्रदेसी नउ भाव । सूरयाव देव मरन हुवौ, धरम तणै परभाव । – जयवाणी

उ०– ३ प्रतिमा पूजी सुर सुरिया भणि, **रायपसेणीइ** अक्षर लाभ-इरे । —स कु

रू भे —रायप्पसेणइज्ज

रायपाळोत-स पु राठौड़ों की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति.

रायपुत रायपुत्र देखो 'राजपूत' (रू भे)

(स्त्री. रायपुती, रायपूती)

रायपुत्रय, रायपुत्री देखो राजपुत्री (रू भे)

उ० —माथ दीप आरती कर दवै **रायपुत्रिय** । जिसौ रामपुर नगर दरीस अभिराम अद्वितीय । —रा रू.

रायप्पसेणइज्ज – देखो 'रायपसेणी' (रू भे)

रायफळ देखो राजफळ (रू भे)

उ० –लोह रै फ टा आगे गिराड़ी रायफळां पिसनोला काठै कढाया तण्योड़ा गेडा काटै । —दसदोख

रायफूल–स पु —हाथ का आभूषण विशेष ।

रायब–स स्त्री –एक नदी जो बासवाड़ा की मुख्य नदी माही की सहायक नदी मानी जाती है । —(वी वि.)

रायबर – देखो 'रायवर' (रू भे)

उ०—लाडली री बीर बधज्यो **रायबर** रो वागो-मोळियो ।

—लोक गीत

रायबहादुर—स. पु.—ब्रिटिश शासन काल मे भारत के रईसों या सरकारी अधिकारियो को दी जाने वाली एक उपाधि।

रायबेल, रायबेली—देखो 'रायवेल' (रू. भे) (अ मा.)

रायबोर—स पु.—झडबोर के आकार के छोटे बोर।

रायभोग—देखो 'राजभोग' (रू. भे.)

उ०—**रायभोग** गरडा तणी रे लाल, साठी सब री सालि। देवजीर परुसै भला रे लाल, दिल मानै ते दालि। —प. च. चौ

रायमल, रायमलोत—स पु—राठौड वश की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

रायरांणा—देखो 'रावराणा' (रू भे)

उ०—तेडावि मोटा **रायरांणा**, रचौ मडप माळ। —रुखमणी मगळ

रायरसोई, रायरसोयी—स. स्त्री—पाकशाला, रसोई।

उ०—१ जद म्हैं **रायरसोई** आई चौकौ दियौ सजाय मरा भर रा रे माटा पोया घडी एक राधी छै दाळ मारुणी घणी कमावणी —लो. गी.

उ०—२ जद म्हैं जाऊ **रायरसोयी** राजन री सुध आवै। कुण जीमै म्हारी राय रसोई कुण म्हारो भोजन सरावै —लो गी

रायरातीझबौ—स पु—एक प्रकार का लोक-गीत।

उ०—थाळकिये मे बाजा, म्हारो बाप दिली रौ राजा। **रायरातीझबौ**, पटियार राती झबौ —लो. गी

रायरायान—स स्त्री. [स राज राज] रईसां, सरकारी कर्मचारियो व जमीदारों को मुगलों द्वारा दी जाने वाली एक उपाधि। (मुगलकाल)

रायरिख, रायरिसि, रायरिसी—देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)

उ०—राय सतोखै **रायरिख**, प्रोहित सील प्रमाण। —रामरासौ

रायरो—स पु.—गेहू के ढेर मे, एक घास विशेष का होने वाला दाना जो राई के आकार का होता है और गेहू की फसल के साथ ही उग जाता है।

रायलोम—देखो 'लोमजदगव'

उ०—मेल्है **रायलोम** प्रधान समथ। राजा मित्र कल्है दसरथ। —रामरासौ

रायवनौ—स पु—१ दुल्हा, वर।

उ०—दई रे देवता ने नारेळ बधाम्या, **रायवनौ** परणावस्या। —लो गी.

२ राजा।

रायवर—स. पु. [स. राज-वर] १ बडा राजा, महाराजा।

२ पति, खाविंद।

३ दुल्हा, वर।

रू भे—राइवर, राईबर, राईवर, रायवर।

रायविभाड, रायविभाड़—वि—राजाओ को पराजित करने वाला। (बाकीदास)

रायवेल—स स्त्री—सुगधित फूलो वाली एक लता विशेष। (अ मा.)

रू भे—राइबेल, राइबेलि, राइवेल, रायबेल, रायबेलि।

रायवैकुंठ—स पु [स. वैकुठ-राज] वैकुण्ठ का राजा या पति श्री विष्णु।

रायसालि—स पु—वृक्ष विशेष।

उ०—रावण राग रताजणी, रवणी नइ रूद्राख। रुकरुदती **रायसलि**, रोहड रोहिणि लाख। —मा. का. प्र.

रायसाहब—स पु.—ब्रिटिश शासन काल मे भारतीय रईसो, जमीदारो व सरकारी कर्मचारियो को दी जाने वाली उपाधि।

रायसेण—स पु—एक प्रकार का वृक्ष।

उ०—खिजूर गूंदी लेमूडी, केसूला खिरणी मोळसिरी फरवास **रायसेण** महवा ढाक कुभरा कीकर बूला झुकनै रह्या छै। —रा स. स.

रायहंस—देखो 'राजहस' (रू भे)

उ०—सावण ऊजल पुनिमदि, स्री जिनवर हरिवस। माता कुक्षि सरोवरइ, अवतरियउ **रायहंस**। —स. कु.

रायहर—स पु.—राजा का वशज, राजा (डि. ना. मा.)

उ०—१ इसा दल राजथाना दखन **रायहर**, जठै प्रीछत वमन वहै जाणै। —जवान जी आढौ

उ०—२ अनि **रायहर** घणं ओळडिया, खान जिहा सिर लोह सुख। पाडव घडा ऊपरा पडियौ, राव कूरम भिलकिला रुख। —ईसरदास सादू

रायहांणी—देखो 'राजधानी' (रू भे.)

रायहींदवौ—स पु—हिन्दुस्तान या हिन्दूओं का राजा।

रायांकवर—देखो 'राजकुमार' (रू भे)

रायांगण—देखो 'रायआगण' (रू भे)

उ०—राजद्वार **रायांगण** जइ नद, भांतरी भेद जगायौ। —रुखमणी मगळ

रायांगुर—स पु.—राजाओं मे श्रेष्ठ राजा, सम्राट।

उ०—रोहणियाळ सभै **रायांगुर**, आयै असुर उतारै घाण। अबळा बाळ न घारै आडी, खूदालम घारै खुमाण। —महाराणा सागा री गीत

रू. भे. रायगुर

२ देखो 'राजगुरु' (रू. भे.)

रायांतिलक-सं. पु.--१ राजाओं के तिलक, श्रेष्ठ-राजा।

उ०--परियां अधक कहा किम 'पातल' **रायांतिलक** हीदवा राण।
- महाराणा प्रतापसिंह री गीत

२ देखो 'राजतिलक'

रायांराव-स पु.-- मुगल काल मे भारतीय रईसो व सरकारी कर्मचारियों को दी जाने वाली एक पदवी।

उ०--**रायांराव** साथि 'रघराजि'। भरारी मनिमाग्र भनी।
--रा रू

राया-स. स्त्री.--१ मोलकी वश की एक शाखा।

२ देखो 'राजा' (रू भे.)

रायालम-स पु --राजा, नृप।

रायि, रायी--देखो 'राइ' (रू भे)

उ०--गृहिवी वारता **रायि** करि छि, पदनि प्राध्यु मुनि। बहदग्य ना नाम तेहि (नूं. हरव्यो) भूपति मनि। --नळाख्यान

रायौ--देखो 'राजा' (अल्पा, रू भे)

उ०- जीव-काया न्यारा कह्या, तय बोल्यो छे **रायौ** रे। निज नर योग्य छुं, हु जाऊ बलायो रे। --जयवाणी

रारण, रार, रारि, रारी-सं स्त्री [स राज्--दीप्ती=रात्रिका]

१ नैत्र, आख। (अ मा, ना डि को.)

उ०--१ बारणा उमगा रगा बिभागगा सोक बाज, **रारगा** अभगा भड़ा दमगां री सार। पनगा बिहगा डगा नारगा अभीच पडा, सारगा खतगा अगा मातगा धू सार। --बद्रीदास खिड़ियो

उ०--२ नवहत्थो मत्थो बडो, रोम भटक्कै **रार**। श्रो कूभाथळ ऊगरा, हाथळ वाहणहार। --बा दा

उ०--३ या मुख भूठी आव नं, पूगो मात दवार। अरज हुवा असपती, कीधी रत्ती **रार**। --रा रू

उ०--४ कहि कै नैंठो को करा, राम कमळ री **रारि**। करै पुकारा पीर कवि, श्रो वाराह उधारि। --पी ग्र.

उ०--५ गोड बजि हैवरा आगि नकि **रारियां**, बजर भाला खेवरा अभागो धारिया। -- जालमसिंघ मेडतिया री गीत

उ० --६ **रारियां** सुभट तुटै दमग रोस रा। त्रिलोवरा जिसा खूं न राग तीमरा। --र ज प्र

उ०--७ ऊगाई नर बाहरा आगो मो पावत। **रारी** अधा चाळ मख, गाह घर्ख जमदूत। - नैणसी

२ मद्र मादा ऊट।

३ देखो 'राड' (रू भे)

रा'रीत--देखो 'राहरीत' (रू भे)

रारौ-स पु --राजा, नृप। (जैन)

राळ, राल-स. स्त्री --१ दक्षिणी भारत मे पाया जाने वाला, सदाबहार एक बड़ा वृक्ष।

२ उक्त वृक्ष को चीरने मे निकलने वाला रसदार पदार्थ या निर्यास, जो औषधों, ममालों आदि मे काम आता है तथा सुगध के लिये जलाया जाता है।

३ बच्चा या वृद्धो के मुह मे टपकने वाली लसदार थूक की बूद।

४ एक रोग विशेष।

उ०--ताप सन्निपात जाणी अतीसार सग्रहणि, फोडो विष **राल** पाडु गोला मूल खंग है। हीया-रोग सास खास रुधिर प्रवाह रूप, सीस पीड रोग ग्रह जेते रोग तेन है। --ध व ग्र.

५ आवाज, ध्वनि।

६ पशुओं रा एक रोग विशेष।

रू भे - रालि।

राळक-स पु - वक्ष, पेड। (अ मा)

राळड देखो 'रालो' (मह, रू भे)

उ०--सर ऊपर ल, मालुग माला भिरिया, जु भरिया गोदड़ा, पान मिलि भरिया, **रालडा** फुरडा, पग भरिउ गाडलउ, घरसाला भरिउ घरगा .... --व स.

राळणो, राळबो, रालणो, रालबो-क्रि स --१ आढना, ढकना।

उ०--१ मा मोरी, सूत्यां अब भवर मुजाण। वाईजी रै बीरै मुग पर लपरी **राळियौ**। --लो गी

उ० - २ गोदगी बीरणी छकरा **राळिया**। स्थर तबोल मुख हुत राळै। --दुरसौ आढ़ौ

२ उछालना, नीतराना, छितराना।

उ०--ऊपर लैरणा टोगा माथै फूल **राळता** कंवरा लागा--आज नौ थारै आरा री वांचियौ पण वांचियौ। --फुलवाड़ी

३ पहनना धारण करना।

उ०--किणा री गुरुजी मे पाग बगाऊ। किणा रा जामा **राळ** रे लोय। मान मन री चेला पाग बगावौ। त्याग रा जामा रळायौ रे लोय। --श्री हरिरामजी महाराज

४ ऊपर से गिराना पटकना डालना, फेंकना।

उ०--१ राजा दजरी मुगा बे चारू रतन बाध, छान ऊची कर घर माहे **राळ** दीन्हा। --सिघासन बत्तीसी

उ० - २ मोति मंग्यो कवर जजात ग। फरमी दीवी हेठो **राल** ए। --जयवाणी

उ०--३ नेवै अबला लाज सबरा दूर बैठा सही। गरुड सभा पर माज, गुणला **राळौ** मारगा। --रामनाथ कवियो

५ ढहाना ।

उ० - भलो भाई सेव्या राळै बिखेर सारकी भीत । सारां सिरै छावणी मारकी सोज मोज । —गिरवरदान कवियो

६ चलाना, फेंकना ।

उ०—माल्धो चारण चोमर हदो ख्याल, राजा की राणी पासा **राळिया** जी । —लो. गी.

७ खिलाने या उपभोग कराने की दृष्टि से कोई चीज किसी के आगे डालना, रखना, देना ।

उ०—देखै तो एक मडो नदी मांही बहितो आवै । सो राजा नदी मांही उतर नै नू काढ धोनै जाघ चीर रतन हाथ लिया । मडो क्यावरी नू **राळियो** । —सिघासन बत्तीसी

८ ढुलकाना, टपकाना, बहाना ।

उ०—१ बींदणी आसू **राळती** बोली - तो अबै म्हारा जीवणा मे ई की सार नीं । मरघा की सार निगै आवै तो ध्यान राखजो । —फुलवाड़ी

उ०—२ टब टब भर आया नैण हजारी ढोला । आसू तो **राळै** हरियै मोर ज्यू जी म्हारा राज, भीनी पना मारू हिवडै लगाय, हजारी ढोला । आसू तो पूछ्या जी पेच सू जी म्हारा राज । —लो गी.

९ लगाना, देना ।

उ०—दीज्यो दीज्यो मामूजी म्हानै सीख, महेल्या हेलो **राळियो** जी म्हारा राज । —लो गी

१० रखना धरना ।

उ०—किण री गुरुजी मे सिंघासण ढाळू । किण री गादी **राळू** रे लोय । जरणा जुगत चेला सिंघासण ढाळो । ध्यान री गादी **राळो** रे लोय । —श्री हरिरामजी महाराज

राळणहार, हारो (हारी), राळणियो— वि० ।

राळिओड़ो, राळियोड़ो, राळयोड़ो—भू०का०कृ० ।

राळीजणो, राळीजबो—कर्म वा० ।

राळाबोलो–स पु —१ उपद्रव, उत्पात ।

उ०—**राळाबोळ** रात रा, पहलै बगत पधार । मिया धरमी मारिया, बेग्रा आगळ च्यार । —वी मा

२ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।

राळि १ देखो 'राळ' (रू भे)

राली–स. स्त्री.— बिछाने या ओढने की गुदडी ।

उ०—**राली** नही ओढै गूदडी नही ओढै । ओ तो ओढै वारा साळाजी रो निलक पछेवडो । —लो गी

वि०—कायर, डरपोक, अशक्त ।

मह.—रालड ।

राव–स. पु. [स. राजा प्रा. राया] १ राजा, नृप, अधिपति । (डिं. ना. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ एक राउ थप्पइण, एक रावा ऊथप्पण । एक **राव** गढ लियण एक रावा गढ अप्पण । एक **राव** परिभवण, एक रावा पडिगाहण, एक राव जडगमण, एक राऊ सरणै रक्खण । इक **राव** रक करि रोळवण, एको आलवण थियो, कमधज अजाणि 'गज' केसरी, आणि खाड इम ऊठियो । —गु. रू. ब.

उ०—२ ए सारस कहिजइ पसू पखी केरा **राव** । उवे बोल्या सर ऊपरइ था कीधी अगुराव । —ढो मा.

उ०—३ चाळका लीधि चाकै चहोडि, ज्या दीध सुता नर बिहूँ जोडि । 'तीडे' इह विध जुध खगा ताव, रजवट पाधोरे पच **राव** । —सू प्र.

२ स्वामी, मालिक ।

उ०—भली करजो रूणेचा रा **राव**, म्हे तो खड मारासिया हा, सिरधा सू हाथ जोडतो-जोडतो चौधरी बोल्यो । —रातवासो

३ सरदार, सामन्त ।

उ०—नाणो गुर नाणो इसट, नाणो राणो-**राव** । नाणा बिन प्यारो न को, साहा जात सुभाव । —बा दा.

४ राजपूताने के कुछ राजाओ का उपटक या पद ।

उ० 'फरमायो'—हू थारी बहन छू । तू म्हारो भाई छै तूं खातर जमै राखै । हू तोनूं म्होटो करीस ।' सिवा नूं **राव** रो खिताब देरायो । —नैणसी

५ रईस, अमीर ।

उ०—१ राजी **राव** रक भूप, नारिही पुरख राजी । झूठ सो बिनाई बाजी, खुली आप ख्याळ मैं । —अनुभववाणी

उ०—२ **राव** रक हिंदू खद, गोला सगळा गेह । मार्गै जान मुणासिया, छुद्र दिखावै छेह । —बां दा.

उ०—३ हरीया पाटनपुर नगर, **राव** रक नही भूप । अलख अभगी आप है, नारि न पुरखा रूप । —अनुभववाणी

६ बदीजन, भाट ।

[स राव] ७ शब्द, आवाज, ध्वनि । (अ. मा , ह ना. मा)

८ चीख, चीत्कार ।

उ०—एहू कारणि न मइ पणि मारिउ, मारनउ अनइ राखिसी वारिउ । तू कन्हइ रही **राव** करेवा, आज दीह सुभ नाह मरेवा । —सालिभूरी

९ नाद, गर्जना ।

१० गूंजार ।

११ घोडे की एक गति विशेष ।

१२ छोटे आकार का एक पेड विशेष जिसकी लकडी की छड़िया

बनाई जाती है।

अल्पा.—रावौ,

रावउत—सं. पु [सं. राज | पुत्र] राजकुमार, राजा का पुत्र।

उ०—पूरण परवारीह भरहा रो मू मसद जयौ। सब दिन सवा-
रीह रहवै पाखळ रावउत। —पा. प्र

रावड़, रावड़ियौ—स पु.—धूल के महीन कण जो अनाज में मिल
जाते हैं।

उ० · वाळी लुम्पा हिये रमाई, नैणा रेत रो रावड़ियौ।
—बेनमानस्यौ

रावजादौ—स. पु —राजकुमार।

उ०—साहजादा समरूप, भोपम मन बरनी भरण। रावजादा रो
रूप, सारदे कयरा सिरै। —पा प्र.

रावट—देखो 'रावत' (रू भे)

उ०—मारा राज रहो जेम मारो गोरा मधे आवड़ी रावट।
- हूदा नगराजोत रो गीत

रावटी—स स्त्री [स राज कुटी] १ राजा महाराजाओं का एक खुला
व हवादार महल। बारहदरी।

उ० —रावटी पुराणी हो गई जे, हाणी कोई रमकाण लाग्या जुग।
पण घर आवी गोरी का सायबा ज। - लो गी

उ० - २ ऊंची सी मेड़ी रावटी, बैं मे माळी को मायं ए नवीन।
म्हारे रण बनड़े रा सेवरा। -ला गी

२ एक प्रकार का छोटा तम्बू।

उ० —१ असपका खड़ी हुई छै। तबू, सामीआणा, सिराइचा, रावटी,
वारि समेत करणाती, सुन्दर तारीफा छै। —रा सा. स

उ०—२ कपड़ कोर उज्जळ बह रीजै। वर अगळा रावटी वणीजै।
—सू प्र

रू भे रावटी।

रावड़ी—स स्त्री [स. राव + ड़ी प्र] १ फरियाद, पुकार।

उ०—तुझ ऊपरि मोरी आमड़ी किम जाइस मझ रानड़ी। कहि
आगलि कर रावड़ी, चरण कमल की दासड़ी। —नळदवदती रास

२ देखो 'राबड़ी' (रू. भे.)

रावण—देखो 'रावण' (रू. भे)

उ०—१ असुर मारि इदजीत मेघ महि रावण मारै। निमचर
लीचा मारि, सब इदतणा सधारै। —पी प्र.

उ०—२ करयौ स काम, भज्यौ स राम। कोई ही काम करा-करा
नही करणौ, झट कर ही लेणौ चाहिजै। मारै राख्योड़ा कामा
खातर मरती बिरिया रावण ही मोकळौ पिछतावौ करतौ मरयौ।
—दसदोख

रावणखड, रावणखंडौ देखो 'रावणखड' (रू. भे)

उ०—१ खान इनायत जोधपुर, बैंटो रावणखंड। प्रयुत पमगे
पाखरा जगे मन प्रचड। —रा. रू.

उ०—२ मानौ इदौ सेतौ रावणखडा, थापू खेतसी आसायच···।
—रावचद्रसेण री बात

रावणरिप, रावणरिपु—देखो 'रावणरिपु' (रू भे.) (ह ना. मा.)

उ०—नाम नाव चढियो हू जगनाथ। रखै हवै डोलू रावण-रिप।
—ह. र.

रावणसिर—स पु —दश की सख्या। ● (डि को.)

रावणा—स. स्त्री —एक जाति विशेष जिसके सदस्य राजा-महाराजाओ
के यहा सेवा चाकरी किया करते थे।

रावणारि—देखो 'रावणारि' (रू भे)

रावणि—स पु —१ रावण रा पुत्र, मेघनाद।

२ देखो 'रावण' (रू भे)

रावणौ—स पु रावणा जाति का व्यक्ति।

रावत—स पु [स. राज-पुत्र, प्रा राज-पुत्त] १ राजा, नृप।

२ छोटा राजा।

उ०—मासता मुहडा सामरा, बिरदैता जाचा वळवता। 'गाजीसाह'
सिरै संमता रामो-राम मिळे रावता। —गु रू. बं.

३ सामत।

उ०—रहै किम पासि भी राखिया रावता। स्यामि रै कामि
हरावत जिसा सावता। —हा झा

४ योद्धा वीर, सूरवीर।

उ०—१ दोना भा' भला हवा। राव जोधजी कही काघळ तू बडो
रावत छै। — नाप साखले री बारता

उ० २ नित नित नुध हुवो खगा सुख लुटै, चुग न सके बेहु
करा सचैर। रावत रमल काज सिव रचियौ, सहसा अजजुग
नगो सरूप। —महाराम महडू

उ० — ३ धिन वे रावत धीरप, भागा रावनियाह। धारा अणिया
मै धर्म सखमुख चोळ कियाह। —बा दा.

उ०—४ भट वग जवन कवट धड भाडे। पाच हजार रावता
पाडे। —सू. प्र.

५ राजा महाराजाओ द्वारा सामतो को दी जाने वाली एक पदवी।

६ एक व्यवसायिक जाति जिसका मुख्य कार्य दोने-पत्तल बनाना है,
बारीदार। (मा म)

७ पति, प्रियतम।

उ० —दासी कुण बिलमायो ए, रावत नही आयो अब तक बारणै।
—लो गी.

रू भे —रवत, राउत, राउति, राउत्त, रावट, रावत्त।

अल्पा —रवतो, रावतियो।

रावतवट—देखो 'रावतवट' (रू. भे.)

उ०—१ निगम निवाण तणाह, नागद्रहा नर हर ज्यूंही । **रावतवट** राणाह, पिड अग कूट प्रतापसी । —सूरायच टापरियौ

उ०—२ मेवावत **रावतवट** माजे, सुतन 'बहादर' समर सगाह । फौजा तणी मुदी नह फिरियौ, गिरियौ बीच करै गजगाह । —केसरीसिंघ मेवावत री गीत

रावतरियां—देखो 'रावत्रिया' (रू. भे.) (मा. म)

रावतरी—स. स्त्री.—सोने व चादी के आभूषणों मे लगाया जाने वाला जोड ।

रावतवस—स पु.—क्षत्रिय वश ।

उ०—वदै पग **रावतवंस** विसुद्ध । सवै पग चारण किन्नर सिद्ध । —ह र.

रावतवट—स पु —१ क्षत्रित्व, वीरत्व ।

उ०—चहुं रिण जिके पुजे रिण चाचरि, सुजडे पिसणा पाडि सिर । वीटाणा जिके रहै **रावतवट**, माभी परबत मेर गिर । गु रू ब.

२ शासन, सत्ता, हुकूमत ।

रू भे —राउतवट, रावतबट ।

रावताणी—सं. स्त्री.—राजपूत जाति की स्त्री, राजपूतानी ।

रू. भे —रवताणी,

रावताई—स स्त्री —'रावत' नामक पदवी ।

उ०—तरै मेवाड पाछो राणा अमरसिंघ नु दीयौ । सगर नुं **रावताई** दीवी । पूरब मे जागीरी दीवी । —नैणसी

रू. भे —रउताई, रवताई ।

रावताळौ—स. पु. [स. राजपुत्र, प्रा. राअपुत्त, अप —रावत+आळौ] योद्धा, वीर ।

उ०—दीपै भुजाई देव मे कळा, राणी रागि **रावताळा** । भडा हुवै भाटकळा आठो पुहर । — गु. रू ब

रू. भे —रवताळ, रवताळौ, रिवताळ, रिवताळौ ।

रावतियां—देखो 'रावत्रिया' (रू भे.)

रावतियौ—देखो 'रावत' (अल्पा.) (रू. भे.)

उ०—१ काको वारो कूपदे भाई भारतमल्ल । घोडौ वारै नवलखौ **रावतियौ** रिडमल्ल । —रिडमल्ल खाबडिया री वात

उ०—२ **रावतिया** पग रोपसी, बतलासी यह बाघ । बौहळा पाटा बाधणा, आछौ होसी आघ । —बा. दा

रावती— स. स्त्री —१ रावत होने की अवस्था या भाव ।

२ रावत को उपाधि, पदवी ।

रू. भे.—राउती,

रावतेस— सं० पु०—१ राजा, नृप, राजाओ में श्रेष्ठ ।

२ वीर योद्धा । वीर सरोमणि ।

रू० भे०—रवतेस, रावत्तेस,

रावत्त— देखो 'रावत' (रू० भे०)

उ०—१ 'बालौ' भालौ झल्लियां, रिण कालौ **रावत्त** । जुध वालौ बेली जिहा, 'तेजा' सुजावत्त । —रा. रू.

उ०— के हबसी कन्नडा, केइ पाईक फरीधर । के राजा के राव, केइ **रावत्त** बहादर । —गु रू ब

रावत्तेस— देखो 'रावतेस' (रू. भे)

रावत्रियां— सं. स्त्री, ब व -- लोक देवियो का एक समूह ।

वि वि.— इनके सम्बन्ध मे एक ऐतिहासिक कथा पाई जाती है, जो इस प्रकार है – प्रतिहारो के वश मे मडोवर का अतिम राजा राणा रूपडा हुआ इससे तुर्कों ने मडोवर छीन लिया तब वह अपने दल-बल सहित जैसलमेर के गाव बारू और चायण मे गया । वहा 'बुध' शाखा के भाटियो का शासन था । राणा ने इन भाटियो से अपने लिये रहने की जगह मागी और इसके बदले भाटियो को अपनी बेटिया ब्याहने का प्रस्ताव किया । भाटी इस पर सहमत हो गये तब राणा ने १४ लडकियो की सगाई भाटियो से कर दी । जिनमे १ राणा की बेटी ६ उसके भाईयो की तथा ७ लडकिया भील व मेघवालो की थी । अब राणा ने भाटियो से दगा करने के लिये उन्हे बरात लेकर बुलाया और पूरी बरात को एक बाडे मे ठहराया । उस बाडे मे राणा ने पहले से ही बारूद की सुरंगे बिछा दी थी । राणा ने विवाह आदि की रस्म पूरी करने के लिये उन लडकियो को भी उस बाडे मे भेज दिया और रात को मौका पाकर सुरगो मे आग लगा कर उन कुंवारी लडकियो सहित भाटियो को जला कर भस्म कर डाला । इन लडकियो ने मरते समय राणा को शाप दिया कि "तुमने हमको दाग लगाकर धोखे से मारा है । अत तुम भी ऐसे ही नष्ट हो जाओगे ।"

ऐसा माना जाता है कि ये लडकिया देवगति को प्राप्त हुई और कालान्तर मे रुणेचे गाव के रावतसर तालाब मे प्रगट होकर उन्होने लोगो को परचे दिये तथा "रावत्रिया" नाम से प्रसिद्ध हुई । राजपूत व नीच जाति के लोग इनको मानते हैं ।

इनके पुजारी भील होते हैं गुड का मीठा दलिया जिसे "लडकछ" कहते हैं" तथा बकरा इनका भोग माना जाता है ।

रावत्रिया जी के थान मे सात सात खडी मूर्तिया ऊजली और "मेली" रावत्रिया की, अलग अलग खुदी हुई होती हैं । इसका आशय यह है कि जो सात लडकिया उज्जवल जाति की थी वे "ऊजलिया" के नाम से तथा सात जो नीच जाति की थी वे "मेलडिया" के नाम से प्रसिद्ध हुई ।

ऊजळी रावत्रिया जो उज्वल और मैली रावत्रिया नीच-जाति के लोग-लुगाईयां के सिर पर चढ़कर, खेलती, बोलती और 'बकरती' हैं।

उपर्युक्त कथा का इतिहास में कोई पुष्ट प्रमाण नहीं पाया जाता। ऐसी दशा में यह कथा जनश्रुति के आधार पर चल पड़ी है। ऐसा प्रतीत होता है। वास्तव में 'रावत्रिया पौराणिक लोक देवियां ही हैं, जिनके विषय में विस्तृत विवरण 'सातलिया' में दिया जा चुका है। देखो 'सातलिया'

रू. भे.--रावतरिया, रावतिया

रावनागो—सं. पु. [सं नाग राज] शेष नाग।

उ०—खुलै पोळा भित्त लागा, नमै मस्तक रावनागो। महर थभे गयण मागां, तुरी वागा लाग। —र. रू.

रावभाक—सं. पु.—१ मरु प्रदेश का राजा, अधिपति। राठौड़ राजा।

उ०—मांटी पह सहज रावभाक, रुद्र बूहत्थी करै फिर रीक। अम लोगा ऊपरा न रावै, खुदाळमा छिळाई खीज। —बारठ मोतीसर

२ पति, प्रियतम।

रावराजा—सं पु—१ राजपूताने के कुछ राजाओं की एक उपाधि।

उ० —रावराजा 'र अमीर, करै सेवा जोड़े कर। अमल कीध सुर इन्दी, सरा लोग सर सभर। —सू प्र.

२ जोधपुर के राज्यकुल के उस व्यक्ति की उपाधि जो राजा की उपपत्नि की सन्तान हो।

३ उक्त उपाधि धारी व्यक्ति।

रावरो—देखो 'रावळो (रू भे.)

उ० बाद सो विवाद को सवाद ले भट्यो। रावरो निनाद कर पार उर्यु गयो। --ऊ का

रावळ, रावल,—सं पु [सं राजकुल] १ राजपूताना के कुछ राजाओं की एक उपाधि।

वि वि - रावळ, 'नाथ-सम्प्रदाय' की एक बड़ी शाखा है। यह शाखा वस्तुत 'लाकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय' की उत्तराधिकारी है। प्राचीन काल में इस प्रदेश (राजस्थान) पर उक्त लाकुलीश सम्प्रदाय का अत्यधिक प्रभाव रहा। कई प्रसिद्ध राजवंश इनके अनुयायी हो गये। जिसमे (१)मेवाड़ के राजकुल—इसके अन्तर्गत बप्पा-रावळ प्रसिद्ध राजा हुआ, जिसने यह उपाधि धारण की, जो इस सम्प्रदाय का अनुयायी होने की द्योतक है। (२) आबू के परमार। (३) जालौर के चौहान। (४) लुद्रवा (जैसलमेर) के भाटी—इनमे राजा देवराज को योगी रतननाथ ने राजतिलक करके 'रावळ' उपाधि दी थी। (५) इसी प्रकार मालाणी के मल्लीनाथ ने भी रतननाथ से 'रावळ' उपाधि प्राप्त की थी। इत्यादि। बाद मे यह उपाधि परम्परागत हो गई और राजवंश के वंशजों तथा कतिपय राजवंशो द्वारा भी यह उपाधि धारण की जाने लगी। अतः मूल रूप में यह एक साम्प्रदायिक उपाधि है, जो राजवंशों के साथ लगाते रहने से कालान्तर में शासक (राजा) के लिये भी एक उपाधि बन गई। (६) कच्छ व जामनगर के जाडेचा भाटियो की उपाधि भी रावळ है।

२ उक्त उपाधिधारी राजा या शासक।

उ०—१ जा श्री जगतसिंघ रो बेटो नै बुधसिंघ रो छोटो भाई, तिणसूं जेसळमेर अखैसिंघ पायो। बडौ परतापीक रावळ हुवौ। बरस ४० राज कियो। —नैणसी

उ०—२ त सो लाख ससापिया, रावळ लालच छद्द। सामण गोचारणा जिसा, जेथ दूळै जळहद्द। —बा. दा.

उ० —३ जैत हथो 'जैतो' जाळाहळ, उदियागास तणो दळ आगळ। सिणयड छात करो दळ साहै, रावळ असणी थयो कुळ राहै।

— रा. रू.

उ०—४ कीस घणा सी रास ना, कीसा सी हणमत रावत। तिसड़ सी रावळ तणा, वरस्य तास अनत रावत। —प च चौ

३ नाथ सम्प्रदाय की रावळ शाखा व इस शाखा का योगी या साधु।

उ०—१ बाई म्हारै नैना रावळ भेस। व स्वामी वहो जटाधारी, सब ही अजन रेख। —मीरा

उ० —२ देव कहै रावळ पुछावो। मोय आवै नहीं अवर को दावो। मिळिस्यै जोगी नै सन्यासी, मिळिस्यै तापस तीरथवासी।

—जांभो

४ भिक्षा वृत्ति करने वाले जोगी जो नाद बजा कर, तथा विभिन्न बोलियां बोल कर भिक्षा-वृत्ति करते हैं। (मा. म)

[सं राजकुल, प्रा राअउल] ५ चारणों के याचकों का एक वर्ग या जाति।

उ० - १ वेस्या सुत भाखै पति वरना व्याखी, इगा स ईस्वर री ईस्वरता साखी। सावळ सुर साथक सुख सूं नह सोया, सकुनी सकुनावळ रावळ बळ रोया। —ऊ. का.

वि. वि --इस जाति या वर्ग की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इतिहास मिलता है। इस जाति के व्यक्ति जूनागढ की चूडासमा यादव शाखा के क्षत्रिय हैं और महाराज नोघण की सतान हैं। एक बार जूनागढ के नरेश राव माण्डलिक ने चारण जाति की नागबाई, जो देवि का अवतार मानी जाती थी, की पुत्रवधु को कुदृष्टि से देखा। इस पर नागबाई ने क्रुद्ध होकर राव माण्डलिक को पुसत्वहीन होने का शाप दिया और समूची चूडासमा शाखा को राज्यच्युत कर दिया। इस शाप से ग्रसित होने पर माडलिक ने नागबाई से बहुत क्षमा-याचना व अनुनय-विनय की। तब देवी ने उसको नपुंसकत्व से मुक्त कर दिया और कहा कि तेरी सतान चारणों की याचना करेगी और उनको रिझाने के लिये, उनके

सम्मुख गाना-बजाना व खेल तमाशा करेगी। अत: तब से वे चारणों के याचक हुए।

रावळ प्रायः चारणों के अतिरिक्त किसी अन्य के सामने तमाशा नहीं करते और यदि कारणवश करना पडे तो वहां किसी चारण की उपस्थिति अनिवार्य है।

६ उक्त जाति का व्यक्ति।

७ प्रधान-सरदार।

८ बद्रीनारायण के प्रधान पडे की उपाधि।

९ मथुरा के निकट एक गाव का नाम जहां राधिका का जन्म हुआ था।

१० एक ब्राह्मण वंश।

रू. भे —राउळ, राउल।

रावळइ—देखो 'रावलौ' (रू. भे)

उ०—दासी मखिया भिणा हुसीउ। सूनउ **रावळइ** तु मती जाई। —बी. दे

रावळगन—स पु [स राजकुल+गण] १ राज परिवार के लोग,

उ०—ताहरा राठी कहयौ—श्रो लडको छत्रधारी राजा हुसी। ताहरा **रावळगन** भेळौ हुवौ। —नैणसी

२ वह मोहल्ला या स्थान जहां राजा या जागीरदार के भाई-बन्धुओं के निवास स्थान हो।

रावळांसा—स. पु किसी सगे सम्बन्धियों, की स्त्री माता या बेटी के लिये एक आदर युक्त सम्बोधन। (चारण)

रावळा— सर्व.— आपके।

उ०— बले हूं लुळं **रावळा** पाव बदू। अडी नाव ऊबारवा आव ईंदू'। —मे म.

रावळाई— सं० स्त्री०—१ रावल होने की अवस्था या भाव। २ रावल की पदवी।

उ०— पातसाह चढ लुद्रवा ऊपर आयौ। रावळ भोजदे बाज काम आयौ। पातसाह सारो सहर लूटियौ। रावळ रौ घर भारजेसल नू दियौ। जेसलमेर माथे टीकौ काढ **रावळाई** दी। —नैणसी

रावळि—देखो 'रावळी' (रू. भे)

उ०— **रावळि** होइकै किनरै जाऊ, तुम हो हिवडा गै साज। मीरा के प्रभु और न कोई, राखौ अब तो लाज। —मीरां

रावळियौ, रावलियौ—१ देखो 'रावळ' (५) (अल्पा., रू. भे.)

उ० -१ अर गाव माहे रावळिया रामत रमता हता। सीधला रो साथ रमत देखण गयौ हतो अर तै वेळा सुपियारदे नीसरी। —नैणसी

उ०—२ रावळिया रामत ममै, मावड़ियौ ले माग। तो रतना पातर तणौ, मम्वरौ लावै माग। —बा. दा

३ एक साहुकार री हवेली मूंहडै रावलिया तमासौ मांडयौ जद साहूकार वरज्यौ। इण ठांम तमासौ मत करौ। —भि. द्र.

२ देखो 'रावळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सुसरो जी म्हारा घर रा राजा, सासु जी ठुकराणी जी। सुसरौ जी रौ हुकम कोटडया चालै, सासड रौ रावळिया जी। —लो गी

वि —१ ठाकुर (सामन्त) की, ठाकुर सम्बन्धी।

रू भे —रावळि,

रावळं—स पु —१ मध्यम पुरुष के लिए प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक सर्वनाम शब्द।

२ राजा, ठाकुर या जागीरदार।

उ०—डाग नीची नाख नै माफी **रावळं** पगा मे धर नै ऊभो रहैगो। —रातवासो

३ अन्त:पुर, जनानी ड्योढी

सर्व.—आप, श्रीमान्।

वि.—आपके।

उ०—१ रागी कहै—रावळं ससारि जाति काइ करणी छै नही, रावळं विमाह करणौ छै। —चौबोली

उ०—२ ताहरा राम्वायत एक दिन लाखेजी नूं पूछियौ—मामाजी आज ठाकुर री क्रपा कर अर **रावळं** सोह थोक छै अर धरती वरकरार छै। —नैणसी

राज दरबार मे, अन्त पुर।

रावळोत—स पु. —१ भाटी राजपूतों की एक उप शाखा।

२ इस उप शाखा का व्यक्ति।

उ०—**रावळोत** परतापसी, उरजनौत 'अजमेस' जादव जगा जीपवा सगा थया नरेस। —रा रू.

रावळौ, रावलौ—स. पु [सं राजकुल] १ किसी राजा, ठाकुर या जागीरदार का महल, राजमहल। राज गृह।

उ०—सिरदारा रो पाणी उतरग्यौ। थर थर धूजता, सिसकारिया भरता नागा-तडग **रावळा** कानी वहीर व्हिया। —फुलवाडी

२ राज-दरबार।

उ०—धन कारण बाधव वढे, धन तोडावै नेह रे। धन रोकावै **रावलै**, धन छिदावै देह रे। —जयवांणी

३ अन्त पुर, रनिवास।

उ०—१ नूई ठुकराणीसा **रावळं** पग धरया, आणद रा भरणा भरया। —दसदोख

उ०—२ टेपरिया मू ई रभा पर मार ज्यादा पडी। उण री चीखा रेट **रावळा** मे सुणीजी जद दयाळ ठकुराणी हुकम देय नै उणाने छुडाय दी। —रातवासो

उ०—३ इण बात री सुरबुर बागियौ सुणी तौ वौ साथ **रावळा** मे सीधौ ठकरांणीसा रै पाखती गियौ। —फुलवाडी

वि०— प्रापका ।

उ०—१ कथम किया मो कबरजी सिर माथे धरग्या । म्हे तो हुक्मी रावळा कहग्यो सो करग्या । —पना

उ०—२ मळराजा प्रादर दियउ, जर रात्रविया भोग । देस बास सवि रावळा, अरु घोड़ा प्रइ लोग । —हां मा.

उ०—३ महाराज, पहलो लीजो, म्हा मे नकमीर पड़ी, मोटो ग्रायो गुन्हो माफ कीजै । हू रावळो चाकर यु चूक पड़ी, नकसीर माफ करसो । — पलक दरियाव री बात

उ०—४ ताहरा सोढी कहै, रात्रि पधारो छो, हू तो रावळे दरसण विना अन नही खावती । ताहरा ग्रोढण रो पीताबर दीन्हो । —बाघा फूलाणी री बात

२. ठाकुर साहब, सरकारी ।

उ०—१ रावळी साथ फळोधी ग्रायो, भा यदि १२ फलोधी था कूच कीयो । —नैणसी

उ०—२ भाबी उण वगत कोट मे गियोड़ी हो । रावळा घोड़ा-घोड़िया री काठिया रै टेका-टबका देवण साम्ह । — फुलवाड़ी

रू भे —राउर, राउरो, रावळउ ।

रावसाहब—स. पु —ब्रिटिश शासन काल मे रईसो व अमीरों को दी जाने वाली एक उपाधि ।

रावांराव—सं पु राजाग्रो का राजा, सम्राट ।

रावा—स स्त्री —गायो के रभाने का शब्द, पुकार ।

उ०—करै साद सापू गई आज करती कठै, चोर गाय, लियां जाय चौहे । केरड़ा बाछड़ा घरे रावा करै, देव रावा तणी मदत दौड़ै । —गोपीनाथ गाडण

रावाई—स स्त्री —१ 'राव' या राजा होने की अवस्था या भाव ।

उ० – २ भीम था बात सुणी तरै ग्रापरो साथ ले जाय साहबी ली । माल विन रो धणी हुवौ । रावाइ रो टीको काढियो । —नैणसी

२ राव का पद या उपाधि ।

उ०—पछै ग्राप बडने पूगळ गयो, तरै राणगदे री बैर कहयो-म्हेवारो सामतर करो । तरै राव केल्हण कह्यो—ग्राज तो रावाई रा सामतर रो मोहरत छै, सवारै बीजो सामतर करस्या । —नैणसी

३ शासन, हकूमत । राज्य ।

उ०- -राठोड़ सूरजमल प्रिथोराजोत धणां ही खलबट किया, पिण सोजत रावाई पातसाह 'कला' नु दीधी । —रावचंद्रसेण री बात

रावी—स स्त्री. [स ऐरावती] पश्चिमी पजाब या पाकिस्तान मे बहने वाली एक नदी ।

रावेटउं—स. पु —एक प्रकार का वस्त्र ।

उ० —पट्टकूल, हीरवडि गजवडि नीलवडि सेवत्रीवडि मोचनवडि जादर पोती पट माउली भ्रमहल नेत्र रावेटउं साफ्रारावउ मटवी फूल पगर वगावीरउ पोलिउ······ —व. स.

देखो 'राव' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ०— राजा येह राग सुणो ग्रन रावौ, 'रतन' कहै भड ग्रमर रहावौ । गाढधरा मन माल गमावौ, खत्री धरम वाट धन खावौ । —कूपावत रतनसिंह

रास— स. पु — [सं०] १ वह नृत्य, लीला या क्रीड़ा जो श्री कृष्ण ने ब्रज की गोपिकाग्रो के साथ मिल कर किया था ।

उ०— राधिका क्रस्ण रास व्रदावन व्रज विलास । गिनका गज ग्रजामेल, सीध पद पाता । —ऊ का.

२ गोप लोगो की एक क्रीड़ा, जिसमे वे वृत्ताकार हो कर नाच-गान करते हैं । (प्राचीन)

३ उक्त ग्राशय से ही वृत्ताकार होकर किया जाने वाला नाच-गान ।

उ०- १ विन करताल डफ विन तूरा, पग विन पातरि नाचे । ग्रलख मडल मे रास रच्यो है, जाह मेरा मन राचै—ग्रनुभववाणी

उ० —२ पदिमनी हस्तिनी चित्रणी नारी लीलावती रमई मुरारि माल सरूप वनह मिली ग्रानन्द, रास भासि गाई गोव्यद । —प्राचीन फागु-सग्रह

उ०—३ माना दीप रास रमैं मानूं घूघरिया धमकारणी । बीण म्रदग बजावै बैन , गावै ग्रमृत बाणी । —राघवदास भादो

४ नृत्य ।

५ खेल, क्रीड़ा, ग्रभिनय ।

उ०- कदळी चील सीप पिक केरी, नृपति प्रजादि ग्राम बहुतेरी । वर्णं धरा नव उच्छव वारा, प्रतिनिस रास विलास ग्रपारा । —रा. रू

६ हास-विलास ।

७ काव्य ।

८ कोलाहल शोर गुल ।

१० जोर की ध्वनि या शब्द ।

११ वाणी ।

१२ तरह मात्राग्रो का एक ताल । (सगीत)

[स रसना, रश्मि, प्रा० रस्सी, ग्रप रस्सि,]—१३ बागडोर, लगाम, बाग ।

उ० —१ घोड़ा री रास फणकारी के घोड़ो तो पाधरो झूलरा रै मांय बड़ग्यो । —फुलवाड़ी

उ०—२ रासां फणकारता ई रथ रा घोड़ा ग्रागे बधिया । —फुलवाड़ी

१४ बैलो को बाधने की रस्सी ।

उ०—सूतळ साथा सर नामा मसाकारी । फुरणी दूं'बाता रासां फणकारी । —ऊ० का०

१५ घोड़े की चाल विशेष ।
१६ रस्सी, डोरी ।
१७ जंजीर, शृंखला ।
१८ प्रत्यंचा, डोर ।
उ०— दमत चाप ग्रह रास दसत्तां, महाप्रबळ नदि सुजळ ग्रसत्ता। धरपति गोळ हरोळ तोप धुरि, पूठि पहाड़ दुरग तारापुरि । —सू प्र
१६ तिनों को फटकार कर निकाला जाने वाला भूसा ।
[स. राशि] २० खलिहान मे अनाज का ढेर। २१ बारह की संख्या । *
२२ देखो 'रासि' (रू. भे.)
उ० –१ अब पूहचावै भूधरो, अजगर रै अनव्याम । किम भूलो मंता 'किसन' सभरता सुख रास । —र ज प्र.
उ०—२ रसा सुर सुगति मे सुख रास, दसा मिळगी गुरु जेमलदास। सदा चित्त चैन हरी पद सेव, दया कर मेन करी गुरुदेव । —ऊ का
उ०—३ नाच गाय कर निरतना रच वर भूखण रास । मार निजरां मोहियो, हर्जे मुधरे हास । —बा दा
रू भे - -रा'
अल्पा., 'रासडली'

रासचक देखो 'रासिचक्र' (रू भे)

रासडली—देखो 'रास' (अल्पा, रू भे)

रासट—स पु [स राष्ट्र] देश, मुल्क, राष्ट्र । (ह ना मा)

रासत—स स्त्री रियासत, राज्य ।

रासती-स स्त्री.—मित्रता, दोस्ती ।

रासतीक-वि०—मित्रता करने वाला ।

रासतौ - देखो 'रास्तौ' (रू भे)

रासथळ—स पु [स रास स्थल] १ रंगशाला, नृत्य शाला ।
२ क्रीड़ा स्थल ।
उ०– पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कान कवार विहरि गळी व्रज कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ । --बा दा

रासधारी—स पु —[स रास धारिन्] १ श्रीकृष्ण ।
२ श्रीकृष्ण की रासलीला का अभिनय करने वाला व्यक्ति ।

रासन—स. पु.—१ देश मे खाद्य पदार्थों की मात्रा सीमित होने की दशा में प्रजा को उचित दामो पर उचित मात्रा में वे पदार्थ उपलब्ध कराने के लिये, सरकार द्वारा की जाने वाली व्यवस्था । वितरण प्रणाली । (इसी प्रकार अन्य पदार्थ भी जो दैनिक उपयोग के हो ।)
२ उक्त व्यवस्था के अन्तर्गत, सरकार द्वारा प्रत्येक परिवार को दिया जाने वाला एक प्रपत्र (कार्ड), जिसमे परिवार के सदस्यो की संख्या व नाम लिखे होते हैं और सामान के वितरण के समय उसमे इन्द्राज किया जाता है ।
३ उक्त प्रपत्र के आधार पर समय-समय पर मिलने वाला सामान या सामान की निश्चित मात्रा ।
४ खाने-पीने का सामान, रसद ।

रासना - देखो 'रास्ना' (रू. भे)
उ०—रासोडी नइ रासना, रीगिणी रुद्र-जटाय । राग रताजणि रूमडी, रतिवनि रग धराय । —मा. का. प्र.

रासनित्य—स. पु. [स रास-नृत्य] एक प्रकार का नृत्य विशेष ।
वि० वि०—देखो 'रास'

रासपूनम, रासपूरणिमा—स स्त्री. [स. रासपूर्णिमा] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा । ऐसा माना जाता है कि श्रीकृष्ण ने इसी दिन रास क्रीड़ा प्रारम्भ की थी ।

रासब, रासभ—स पु [स. रासभ] (स्त्री. रासभणी) गधा, गर्दभ ।
रू भे - रासव, रासिब ।

रासभणी—स स्त्री —गधी, गदही ।

रासभूमि—स स्त्री. [स.] रासक्रीडा करने का स्थान ।

रासमंडळ—स. पु. [स रास-मण्डल] १ वह स्थान जहा पर श्रीकृष्ण रासक्रीड़ा किया करते थे ।
२ रासक्रीडा करने वालो का समूह ।
३ रासक्रीडा करने वालो का अभिनय ।
उ०—साथै सहेलिया री टोळी सो रासमंडळ रमण रै ओछाह चादणी री राति री चली जाइ छै । —रा सा स

रासमडळी—स स्त्री —रास क्रीडा करने वालो का समाज, टोली या संघ ।

रासरमण—स. पु. [स.] १ ईश्वर, परमेश्वर । (ह ना मा)
२ श्रीकृष्ण ।

रासलीला—स. स्त्री. [स] १ वह नृत्य, अभिनय या क्रीड़ा जो श्रीकृष्ण ने व्रज की गोपियो के संग में की थी ।
२ उक्त के आधार पर किया जाने वाला अभिनय या नाटक ।

रासव—देखो 'रासभ' (रू. भे.)
उ०--रासव पुरण पलाण कर कोई हसत बधावै ।
—केसोदास गाडण

रासविलास—स पु [स] रासक्रीडा ।

रासबिहारी—स. पु. [सं] १ श्रीकृष्ण ।
२ ईश्वर, परमेश्वर ।

रासायण, रासायन—वि [स रासायन] रसायन का या रसायन सम्बन्धी ।

रासायनिक—वि. [स] १ रसायन शास्त्र का, रसायन शास्त्र सम्बन्धी ।
२ रसायन शास्त्र का ज्ञाता ।

राशि—सं. स्त्री. [सं. राशि] १ किसी वस्तु का ढेर, समूह, पुंज, राशि। संग्रह।

उ०—भोवन ए राशि करेवि बथव ग्रागमिउ तिरा ए।

—सालिभद्र सूरी

२ कोई ऐसी संख्या जिसके लिये जोड़, बाकी, गुणा, भाग किया गया हो। (गणित)

३ किसी का उत्तराधिकारी।

४ क्रान्ति वृत्त के बारह तारा-समूह जो, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन कहे जाते हैं। (ज्योतिष)

उ०—दिन रात सम तन राशि, दिन कर मरकि अनुक्रमि मरवरी। मिथ जीत पति गुण वर्णन नवि, मुख मकम परि जिम मुंदरी। —रा. रू.

५ बारह की संख्या। ५

रू. भे.—रा', रासी।

६ देखो 'राम' (रू. भे.)

उ० १ भरथ बनाव्या मंत्र भणी न गरुड़ नागी गति चालि। आहुक मजज थईनि विठु, राशि भेद मं भालि। —नलाख्यान

उ०—२ जु सहरी छह नगण प्रग ह्रुता, विसहर राशि कि प्रलक वक्र। बाली किरि वालिका विराजे, वद स्यी नाटक चक्र। —वेलि

राशिचक्र—सं. पु. [सं. राशि चक्र] १ मेष, वृष आदि राशियों का चक्र या मंडल। (ज्योतिष)

२ ग्रहों के चलने का मार्ग या चक्र।

रू. भे.—रासचक्र।

राशिनाम—सं. पु. [सं. राशि-नामन्] किसी शिशु के जन्म के समय की राशि के अनुसार होने वाला नाम। (फलित ज्योतिष)

राशिप—सं. पु. [सं. राशिप] किसी राशि का अधिपति देवता।

राशिभ—देखो 'रासभ' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

राशिभाग—सं. पु. [सं. राशिभाग] ज्योतिष में किसी राशि का भाग या अंश।

राशिभोग—सं. पु. [सं. राशि-भोग] किसी ग्रह का किसी राशि में कुछ काल तक रहने की अवस्था। (ज्योतिष)

राशी—देखो 'राशि' (रू. भे.)

उ०—दूध में राधमी घी में खाणी, करसी ज्यूं हुसी जाणो उघड़सी राशी। —दमदोल

राशीक—वि.—साधारण, मामूली।

राशु—देखो 'रासौ' (रू. भे.)

उ०—पुणिस परगभोणाद मानिभद्र ए सूरिहि नीपीउ ए। देवनद उपरोधि पढव ए राशु रसाउलु ए। —सालिभद्र सूरि

रासेश्वरी—सं. स्त्री. [सं. रासेश्वरी] राधा।

रासौ—सं. पु.—१ वह पद्यमय रचना या काव्य जिसमें युद्धों तथा वीरत्वपूर्ण कृत्यों का विस्तृत वर्णन हो।

२ उक्त काव्य की पुस्तक या ग्रंथ।

३ युद्ध, लड़ाई।

उ०—हड़काग डाकणि करै, राक्षस देवइ रासौ रे। रुंड तणी माला रचै, ऊमयापति उल्लासौ रे। —प. च. चौ.

४ तकरार विवाद, झंझट, बखेड़ा।

५ अव्यवस्था।

उ०—नी दाद-फरियाद अर नी की सुणवाई। दिन बीतै मौ वत्तौ। आंधा पीसै नै कुत्ता खावै। जबर कळियार रासौ मचियौ। —फुलवाड़ी

६ उलझन, चक्कर, समस्या।

उ०—१ बाप नै रोवतो देख नै नैण्यो ई मा री छाती में मूंडो घाल नै रोवण लाग्यौ। उण नै ठा नी पड़ी के औ काई रासौ है। —रातवासौ

उ०—२ लुगाया री बकबक रो राग बदळग्यौ। हे मावडी—एक ई उणियार रा दो छोरा! कुण साचौ, कुण कूड़ो! औ काई रासौ औ काई तौफान? कोई कठीनै न्हाटी, नै कोई कठीनै न्हाटी। —फुलवाड़ो

७ खेल तमाशा, लीला।

उ०—१ मरागणी रा पग आ बारणा माथै ई चिपग्या। वा बोली बोली आंग्या फाड़ती औ रासो देखती री। —फुलवाड़ी

उ०—२ ठाकरसा री तैंरण तालाब री मेठ ठीमर बणाने कहचौ—आ बात किणी रै सामी तीई नी हरणी चावू। पांचवै कान ई भणक पड़ती तो रासौ बिगड़ जावैला। —फुलवाड़ी

८ ढंग।

उ०—१ जे राजा रौ मूंडौ मोती री गिणती में आजावै तो दुनिया रो रासौ ई बिगड़ जावैला। —फुलवाड़ी

उ०—२ औ रुत दहीवा नी सरळ बरसैला। नी बीजळियां पळकैला। नी सूरज ऊगैला अर नी चांद। कुदरत रौ सगळौ रासौ ई पलट जावैला। —फुलवाड़ी

रू. भे.—रास।

रास्ट, रास्ट्र—सं. पु. [सं. राष्ट्र] १ राज्य, साम्राज्य।

उ०—स्वास पासवान ऋपापात्र अत्य रास्ट्र भर। सुघर सुचाळ सभ्य सबको सुहायौ न। —ऊ. का.

२ वह क्षेत्र या भू भाग जिसमें एक सी भौगोलिक स्थिति तथा जिसमें बसने वाले लोगों की भाषा, संस्कृति, धर्म, तथा रीति-रिवाज एक से हों। देश, मुल्क, नेशन।

३ देश, मुल्क। (प्र मा.) (सभा)

४ किसी एक ही शासन या शासन विधान के अधीन रहने वाले लोगों का समूह।

५ देशव्यापी बाधा, उपद्रव, ईति।

६ पुरुरवा के वंशज काशीराजा का पुत्र एक राजा।

रू. भे.—रट्ठ।

रास्ट्रकूट—स पु. [स राष्ट्रकूट] एक क्षत्रिय राजवंश, राठौड़।

उ०—प्रतिहार लव्वक **रास्टकूट** सक करवट कारट पाल चादिल गोहिल·········· —व. स

रास्ट्रपति—स. पु. [स. राष्ट्रपति] प्रजातन्त्रात्मक या सवैधानिक प्रणाली के अन्तर्गत किसी देश का सर्वोच्च शासक।

रास्ट्रपाळ—स पु [स. राष्ट्रपालक] १ राजा।

२ कस का एक भाई।

रास्ट्रभगी—सं. पु [स. राष्ट्र भगी] वह घोड़ा जिसकी पीठ पर भवरी (चक्र) हो।

रास्ट्रभेद—स पु. [स राष्ट्र भेद] प्राचीन भारत की एक राजनीति, जिसके द्वारा शत्रु राजा के राज्य मे विद्रोह करवाया जाता है।

रास्ट्रवासी—स. पु [स राष्ट्र वासिन्] १ देश का निवासी, देशवासी।

२ परदेशी।

रास्ट्र विप्लव—स पु [स राष्ट्र विप्लव] किसी देश मे होने वाला विद्रोह, गदर, बलवा।

रास्ट्रीय—वि [सं. राष्ट्रीय] राष्ट्र का, राष्ट्र सम्बन्धी।

रास्तागीर—स पु —रास्ते पर चलने वाला राहगीर, पथिक।

रू भे —रस्तागीर।

रास्तौ—स पु. [फा रास्त] १ मार्ग पथ, राह।

मुहा०—१ रास्तौ करणौ=मार्ग या पथ या मंजिल पूरी होना, मंजिल तय होना, यात्रा का समय आसानी से पूरा होना।

२ रास्तौ काटणौ=रास्ता पार करना, मंजिल तय करना। यात्रा पूरी करना।

३ रास्तौ देखणौ=इंतजार करना, रास्ते चल पड़ना।

४ रास्तौ पकड़णौ=रास्ते चलना, कहीं चले जाना।

५ रास्तौ बताणौ=जाने के लिये कहना, सही मार्ग बताना, मार्ग दर्शन करना।

६ रास्तै लाणौ=उचित मार्ग पर चलने का कहना, सुधारना।

२ परम्परा, रीति, प्रथा।

३ तरकीब, उपाय, तरीका।

रू. भे.—रसतौ, रसतौ, रस्तौ, रासतौ।

रास्ना—स स्त्री [स] १ गधनाकुली नामक काष्ठ औषधि विशेष।

२ रुद्र की प्रधान पत्नी।

रू भे.—रासना।

राह—स. स्त्री [फा] १ मार्ग, रास्ता, पथ।

उ०—१ पछै सोरभ पातसाहजी रा डेरा हुवा। तद **राह** माहे सी कवरजी जाय पातसाहजी रै पांवे लागा। —नैणसी

उ०—२ नही गया मार्वे मुवा, रविमडळ रै **राह**। जूझ मुवा रण मैं जिके, गतपचमी गयाह। —बा. दा.

२ परपरा, प्रथा, रीति-रिवाज, कायदा।

उ०—१ माह व्है असमाह, चाह दाह ते सहधौ। **राह** छोड़ भ्रहा तू कुराह क्यू गयौ। —ऊ. का.

उ०—२ जदी बै ग्रोर था सु तौ आपके घरा ऊठि गया ग्रह कुभार—कुभारी लड़का तीनू रोते हैं। जदी राहिब कह्या, रै ये काहा हुवा? इतनी बार तौ सादी होती थी ग्रह ग्रबै येह रोगै लगा। सो इनके येह ई **राह** होयगा। मेळ कूं रोते होयगे। —राहब साहब री वात

३ धार्मिक सम्प्रदाय, पथ।

उ०—१ मेछा **राह** निभाह कज, दिल्ली औरगसाह। ज्यु सामद्र अजाद सू, यू रहियौ खम दाह। —रा रू

उ०—२ फिरग प्रळै जळ फैलियौ, तज दूह **राहां** टेक। पान अखै-वड 'पदम' रौ, ऊचौ रहियौ एक। —राघोदास सादू

उ०—३ करबा एक **राह** मन कीधौ। लेख प्रमाण भेख व्रत लीधौ। —रा रू.

४ धर्म, कर्त्तव्य।

उ०—१ 'जगतसी' 'अमरसी' 'उदैसी' जेहवौ, छात्रपत कुळ **राह** छाडै। राण सीसोदियौ टेक झालै रहै, एक पतसाह सू कथ आडै। —गोविंद बारहठ

उ०—२ 'केहरि' कहियै सामळौ, ऐ खत्रीपण **राह**। बोल न जाए सूरिमा, काया जाए न जाह। —गु. रू व.

५ कार्य, कर्म।

उ०—आकास मे खेती करणौ असभव, आकास मे खेती करै ने बीज धरती मैं बावणौ उलटौ **राह** छे। —वी. स. टी.

६ प्रतीक्षा, इंतजार।

उ० —१ तन का त्यागू कापड़ा जी, ऊगते परभात। खड़ी जोवती **राह** मे जी, सतगुरू पोहचे आय। —मीरा

उ०—२ हू तौ जोऊ जोऊ रामजी री **राह**। कद तौ आवेला स्वामी सावरो। —मी रा.

७ आशा, उम्मीद।

८ प्रयत्न, यत्न, कोशिश।

९ युक्ति, तरकीब, उपाय।

१० तरह, भांति, प्रकार।

उ०—१ 'राजौ' भिड़न सूरिमा **राह**। 'बिमनायत' मीहक सिधु-राह। —गु रू व

उ०—२ घोर घमकी पखरा छोनी तक छाया। रण बिरुगे राह के मज गाह मगाया। —ब भा

११ तौर, तरीका, ढंग।

१२ मस्तक, सिर।

१३ घोड़े की एक चाल विशेष।

रू. भे —रह, रा', अल्पा,—राहड़ो, मह., राहड़ो,

१४ देखो 'राहु' (रू भे) (म भा.)

उ० —१ पुगं निडुम अरज मत प्राजो। मनि रवि राहु केत मन साजो। —सू. प्र

उ०—२ लड़ी मागडी बीर बीराधि मेनू। करे रागड़ा झागड़ा राहु केतू। —मे म.

उ०—३ अतर दीसइ एवडू, किहा चद्रमा किहा राह रे, अतर दीसइ एवडू आक छाया अस छाह र —नळदवदती रास

राहखरच—स. पु.—किसी यात्रा में जाते समय मार्ग में होने वाला व्यय।

राहगीर—स पु. [फा] रास्ते चलने वाला पथिक, राही, बटाऊ, मुसाफिर।

राहड़—स स्त्री.--१ सध्या, शाम।

उ०—पछै प्रोळ रागी ढकाई। पछै राहड़ वेळा ताई माहै तेजसी बासै हुवो आयो। —नैणसी

सं. पु —२ भाटी वश की एक शाखा।

राहड़ी—स स्त्री १ रस्सी, डोरी, रज्जु।

उ०—१ दोनू धणियां नै राहड़ियां सू बाध काठा जकड़ करया। —फुलवाडी

• उ०—२ म्है कोई ढोर-डागर तो कोनी जको म्हनै राहड़ी थमाय दूजा रै लारै करो। —फुलवाडी

मह —राहड़ो।

२ देखो 'राह' (अल्पा, रू भे)

राहड़ोत—स पु- 'राहड़' शाखा का भाटी राजपूत।

राहड़ो—१ 'राह' (मह, रू भे)

उ०—अळगा अळगा मावना, करड़ा करड़ा बोम। सूधा रलक्या राहड़ा, पथी कुण नै दोस। —सू

२ देखो 'राहड़ी' (मह., रू. भे)

राहचक, राहचको, राहचक्क—स पु —युद्ध, लड़ाई।

उ०—१ मुहणोत सुदरदास जैमळोत गाव कवळै सीधळ सीधळा रा आदमी कर पाच मैं जणा मारिया, पचीस सती हुई। बडो राहचक हुवो। —बा दा ख्यात

उ०—२ बाज फोजा गजा बीच लोका बकी, हूबकं ऊबका कूंत हाको हकी। 'जसो' नै 'रतन' जगमाल पीयो' जिके। चोळ होळी हुवा रूक राहचके। -कानसिह सक्तावत री गीत

रू. भे. – राहाचरक, राहाचरक्क।

राहजनी—स स्त्री [फा] राह चलने पथिकों को लूटने की क्रिया या भाव, लूट-खसोट, बटमारी।

राहणो—सं पु —परिग्रह, दरबारी।

उ०—१ रांगी वाला सुण कहण लागो, जो आसी चोकस के नही तद उण रै मान दान रै अहसाण सु इनरो ओलो प्रोहित राख गयो, 'जो कुवरसी जी री वस लगा तो हर भात आसी।' बाकी सारो सहर देस राहणो वरजण मे छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ कंवर रा मोहला सिखाव दियो। बीजो पर कामदारा साहूकारा राज रै राहणं अमरावा ठाकुरा सारा वधाई दी। —कुंवरसी सांखला री वारता

राहणो, राहबो—क्रि स —१ युद्ध करना लड़ाई करना।

२ मारना, सहार करना।

३ उद्दड पशु को ठीक करना।

राहत—स स्त्री [अ] चैन, आराम, सुख।

राहवार—वि —राह नामक चाल मे चलने वाला। (घोडा)

उ०- १ रागी वडै राहवार घोड़े चढी थकी नरसघ री पग मदार करै। —राजा नरसिघ री वात

उ०—२ ग्रीवा सभै लागत उदार। दुति नीर वेग के राहदार। —सू प्र

स. पु —[फा.] १ चौकीदार, प्रहरी।

२ रास्ते पर आने जाने वालों से कर वसूल करने वाला व्यक्ति।

राहदारी-स स्त्री --१ चौकीदारी।

२ राह पर आने-जाने वालों से कर वसूल करने की क्रिया।

रू भे रादारी।

राहबधी-स स्त्री विचार विमर्श सलाह-मशविरा।

उ०- -पछै जिण जोध पोकार सगनै पडी, घरै नही अरज पनि-माह धीठो राहबधी हुइ रवै कोई राकमी दवै जमवत री माथ दीठो। —ध व ग्र

राहवारी--देखो रेवारी (रू. भे)

राहवेधी —देखो 'राहवेधी' (रू भे)

उ०—१ बीजो मागम राहवेधी छै। जेग सू थानै रात-दिन अचो होगी। —नापै सागळै री वारता

उ०—२ महाराजा बखतसिह बडो बुद्धिमान राजा थो। राहवेधी थो। साम, दाम, दड, भेद चारू बात मे निपुण थो। —मारवाड रा अमरावा री वारता

राहरीत, राहरीति—स स्त्री —१ परपरा, प्रथा, रूढी, रिवाज।

२ व्यवहार, आचार।

३ लेन-देन ।

राहरूक–वि —१ रास्ता रोकने वाला ।

२ मार्ग मे बाधाए उत्पन्न करने वाला ।

राहरूप–वि.—राहु ग्रह के समान ।

उ०—छगा छगा धरि नगा, चढै ग्रासगा महावत । **राहरूप** रवि पूत, धूत थापलिया धूरत । —सू प्र.

राहलणो, राहलबो–क्रि स —राह पर लाना, सीधा करना ।

राहलियोड़ो–भू. का कृ —राह पर लाया हुआ, सीधा किया हुआ । (स्त्री राहलियोड़ी)

राहवणो, राहवबो–क्रि स —राह पर चलना ।

२ रीति, प्रथा या परम्परा के अनुसार चलना, रीति निभाना ।

उ०—महनक तगा सुजाग. पारीसा 'पातल' तणा । नै राहविया राग, गकग हूँना ऊडवत । —सूरायच टापरघा

[स रक्षापयति, प्रा. रक्खावइ] ३ रक्षा करना ।

उ०—१ पत राखै पटवा, अब कर माभि उपाये । गजपत पत राहवे, अनन खगपत चढ आए । —जगो खिड़ियो

उ०—२ पभगाउ जूठिलु गाउ माऽ म अरगाइ नहि करउ । निय घरि पाछा जायउ तोकु गहयउ राहवउ । मानिभद्र सूरि

राहवियोड़ो–भू का कृ —१ राह पर चला हुआ २ रीति, प्रथा या परम्परा के अनुसार चला हुआ, रीति निभाया हुआ ३ रक्षा किया हुआ । (स्त्री राहवियोड़ी)

राहवेधी–वि —१ लुटेरा डाकू ।

२ कूटनीतिज्ञ । दाव पेच जानने वाला ।

उ०—१ राव मालदे **राहवेधी** ठाकुर छै । मु नागोर दौलतीया न कहाडीयो—राव, वीरमदे म्हा मार्य छै । बडा-बडा रजपूत सारा वीरमदे कनै छै । बीरमदे थाहारो हाथी लाया रहै छै । थे ही थामे आयै मेडतो मारो नै बीरमदे रा माणस चबो-चबो मारो बद कर ले जावो । —नैगसी

उ०—२ पीछै सागैजी रो भाई भारमलजी वडो **राहवेधी** हवो । तिकै रतनसी रा भाई भागकरण नू फोरियो नै कयो, "राज थाहरो है अर रतनसी तो रात दिन दारू मे मतवाळो थको गैर महला इज रहै छै । —द दा

३ दूरदर्शी

उ०—मु गूदा रा लोग मारी वात सांभला रायसी नू जाय कहै छै । मु रायसी **राहवेधी** छै । रायमी धरती लेण ऊपर निजर राखै छै । —नैगसी

४ नीति निपुण, नीतिज्ञ ।

उ०—मूळराज रो हाल हुकम हुवो मु मूळराज वडो **राहवेधी**, छै, बीज काको आधो बलाय रा वसगा छै । —नैगसी

५ चतुर, प्रवीण, निपुण ।

उ०—१ बुरहान पिण **राहवेधी** रजपूत थो । इणा री मूल भटकछियो । —राव मालदे री बात

उ०—२ मेघो टीकै बैठो । रांणो मेघो हुवो । वडो रजपूत, वडो तरवारियो, वडो **राहवेधी**, वडो जोरावर । —नैगसी

६ बडा वीर, बडा योद्धा ।

उ०—मागो वडवज नीबज वसतो, वडो **राहवेधी** रजपूत थो । —नैगसी

७ राह रोकने वाला ।

रू भे.—राहवेधी, राहावेधी ।

राहाड–स पु —झगडा, लडाई ।

उ०—गाम तो ते भूना आया, दुसमणा रै गावँ आया, **राहाड़** हुवो । —प्रतापमल देवडा री वारता

राहाचरक, राहाचरक्क—देखो राहचक' (रू भे)

उ०—१ वीर हर तिलक वाकाडिया, साडवाण बज्जै कटक । 'गजसिंह' कियो भिड गज दळा, रिण संग्राम **राहाचरक** । —गु. रू ब

उ०—२ चउदराउ चढिय मोहिल्ल चीति । **राहाचरक्क** देखाळि रीति । —रा. ज सी

राहाली–वि. स्त्री.—१ युद्ध कराने वाली ।

२ राह या मार्ग धारण करने वाली ।

राहालो–वि.—१ राह पर चलने वाला ।

२ रीति या परपरा के अनुसार चलने वाला ।

३ न्याय प्रिय ।

४ चरित्रवान ।

५ "राह" चाल म चलने वाला । (घोडा)

राहावेधी—देखो 'राहवधी' (रू भे.)

उ०—१ पिण रा वीरमदे **राहावेधी** हजार बात पानसाह नुं मुगाई आगलो मायलो सहल कर दीखायो । —नैगसी

उ०—२ राणो **राहावेधी** देवीदास हुतो, तद ही समझ गयो—बीजो मारियो राव रै गाथ मीवाणो लियो, हिमे राव गोनू मारसी । —नैगसी

राहावेहु—देखो राधावेध' रू. भे)

उ०—नीरा परीक्षा गुर तणी पुगउ एक जु पन्थु । **राहावेहु** तउ सिखवइ मच्छइ देविणु हत्थु । —मानिभद्र सूरि

राहि, राही–स पु [फा] राहगीर, पथिक, मुसाफिर, यात्री ।

राहीया—देखो 'राधा'

राहु–सं पु [स] १ नव ग्रहो मे से एक ग्रह जो पुराणानुसार विप्र-

विप्रचित्ति के वीर्य और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
उ०—राहु केत रवि मरुण, नवै ग्रह माति करै निन। —ह र.
२ उक्त नाम का दानव जो प्रच्छन्न रूप में अमृत पान करने के बाद राहु व केतु दो ग्रहों के रूप मे परिवर्तित हो गया।
३ ग्रहण।
रू. भे.—राह, राहू।
४ रोहू नामक मछली।

राहुग्रसण, राहुग्रसन—स पु [स राहु- ग्रसन] १ सूर्य या चन्द्र का राहु के द्वारा ग्रसा जाने की अवस्था या भाव।
२ ग्रहण।

राहुपात—स. पु [स] ग्रहण।

राहुदरसण—स पु. [स. राहु+दर्शन] ग्रहण।

राहुभेदी—स पु. [स राहु+भेदिन] विष्णु।

राहुरत्न—स पु [स] राहु के दोष का शमन करने वाली गोमेद मणि।

राहुल—स पु [स] गौतम बुद्ध का पुत्र।

राहुसूतक—स पु [स] ग्रहण।

राहू—वि —१ काला। *
२ श्वेत। *
३ देखो 'राहु' (रू भे)
उ० ग्रहण-वेलाइ गल-समा, पइमी पाणी मांहि। रूडी मत्र जपउ रहइ, राहू तणी जिहा छांहि। —मा का प्र

ह्री—स पु —एक प्रकार का घोडा जिसके होठ छोटे होते है। (अशुभ)

रिंग—स स्त्री [अ] १ अंगूठी, मुद्रिका।
२ अंगूठी या चूडी के अनुसार कोई गोलाकार वस्तु।

रिंछी—स स्त्री.—देखो 'रीछी' (रू भे)

रिंछ्या—देखो 'रक्षा' (रू भे)
उ०— म्हारो बेटो राजा रै सागै मिनख ई व्हैला। वो अकरमी अर अन्यायड्या सू रया री रिंछ्या करैला। खुद परजा रो धणी नीं होय उण री चाकर व्हैला। —फुलवाडी

रिंजक—देखो 'रिजालो' (रू भे)
उ०—रिजक प्याला मोरही भारा जगमगै। यारो परलै काळरी, ज्वाळानळ जगै। —रा रा

रिंजाळो—वि —देखो 'रिजालो' (रू. भे)
उ० – हिमार रा लोग मरा रिंजाळा सो कुणी बाता रा फन्द लगाय पग छुडाय दिया। मारवाड रा परगना री वारता

रिंझणो, रिंझबो देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू भे)

रिंझवार, रिंझवारो—देखो 'रिझवार (रू. भे.)

रिंझाणो, रिंझाबो—देखो 'रीझाणो, रीझाबो' (रू.भे.)

रिंझायोड़ो—देखो 'रीझायोडो' (रू भे)
(स्त्री रिंझायोडी)

रिंझावन—स स्त्री.—मोहित मुग्ध या आकर्षित करने की क्रिया या भाव।
उ०—नरतन मोर पपईया बोलै, मदन नरेस रिंझावन वार।
—रसीलै राज रो गीत

रिंडी—स स्त्री वह गाय, जिसके सीग ऊपर न उठकर पीठ की ओर हुए होते है व ललाट चौडा होता है तथा जिसका रग लाल व चितकबरा होता है। रेडी।

रि—स स्त्री [स] १ चलने या जाने की क्रिया या भाव।
२ देखो 'रै' (रू भे)
उ०—धिग् रि धिग् रि धिग दैव विलासम्, पचह पडउ हुइ वग-वासम्। -मालिभद्र सूरि

रिआयत—स स्त्री. [अ] १ नियमादि मे किसी कारण-वश की जाने वाली शिथिलता, ढील, छूट।
२ किसी कार्य मे दी जाने वाली सहूलियत जिससे कार्य की गुरुता कम हो सके, राहत।
३ अनुग्रह, नरमाई या कोमलता का व्यवहार।
उ० —एक दिन बादसाह नसरवा सूं कही—मै आज तलक रैयत री रिआयत मे थो आज पछै रिआयत बरतरफ करू छू जो मसलो होय तो थारो रैयत नू लूट तथा रैयत रै कुछ न रहण देवा।
—नी. प्र.
४ पक्षपात।
५ विशेष रूप से किया जाने वाला ख्याल ध्यान।
६ वस्तु के मूल्य मे की जाने वाली कमी या छूट।
रू भे रयायत रियायत।

रिआया—स स्त्री [अ रआया] प्रजा जनता।

रिउ—देखो रौ' (रू भे)
उ०—दउढ वरस री मारूवी, त्रिहु वरसा रिउ कत। उण रउ जोवन वहि गयउ, तू किउ जोवन वत। —ढो मा

रिक—देखो 'रिख' (रू. भे)

रिकत, रिकतक—देखो 'रिक्त' (रू भे)

रिकता—१ देखो रिक्तता' (रू भे.)
उ०—चमकता डागळ गोडा चिक चिकता। जतू जळ रिकता सिकता मे सिकता।
—ऊ का.
२ देखो रिक्ता' (रू भे)

रिकता तिथ—देखो 'रिक्ता'

रिकथ—देखो 'रिक्थ' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

रिकसा—१ देखो 'रिक्षा' (रू. भे.)

२ देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

रिकसौ—स. पु.—तीन पहियों की साईकिल नुमा गाडी जिसमे पीछे दो आदमियो को बैठाकर एक आदमी चला सकता है।

रिकाब—स. पु [अ.] १ सवारी का ऊट।

उ०—बरकंदाज १००० अलाहधा। १२६८३ **रिकाब**, आसामी १७६। ६५६४ जागीरी सुधा आसामी। —नैणसी

२ देखो 'रकाब' (रू. भे.)

रिकाबी—देखो 'रकाबी' (रू. भे)

रिकारौ—'रैकारौ' (रू भे)

उ०—तुकारे **रिकारे** जिकोरे तमासू, आया आज सो माफ कीजै अमासू। —ना द.

रिक्ख—१ देखो 'रिसि' (रू भे)

उ०—१ रहै रन ध्यान अठघासी **रिक्ख**। लहै नंह पार ब्रहम्मा लक्ख। —ह र

उ०—२ गडग्गड जोगणि रन गिळत। हुडहुड नारद **रिक्ख** हसत। —गु रू. ब

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिक्खभ—देखो 'रिसभ' (रू भे)

उ०—राव बैकुंठ धनंतर **रिक्खभ**, गरुडारूढ विमन प्रमगीग्रभ। —ह र

रिक्खि—देखो 'रिसि' (रू. भे)

उ०—हडाहड **रिक्खि** हुए हर हार। जयज्जय जोगणि किद्ध जिग्रार। —वचनिका

रिक्त—वि. [स.] १ खाली किया हुआ, रीता।

२ रहित, विहीन।

उ०—कुळहीन अग चम्मा वितुड, बबीळ उरढ सिर महिस मुड। रडाळ बाळ बिधुरे असुभ्र, लज्या विहीन सिर **रिक्त** कुंभ। —ला. रा.

३ शून्य।

४ खोखला, थोथा।

५ विभक्त, वियुक्त।

६ मोहताज, गरीब, निर्धन।

स. पु. [स. रिक्त] १ खाली या रिक्त स्थान।

२ वन, जंगल।

३ आकाश।

रू. भे.—रिकत, रिकतक।

रिक्तता—स स्त्री. [सं. रिक्त+ता प्र.] १ रिक्त या खाली होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ गुंजाईश, अवकाश।

३ खोखलापन।

४ शून्यता।

५ गरीबी, निर्धनता।

६ विहीनता की दशा।

रू. भे.—रिकता।

रिक्ता—स. स्त्री. [स.] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी की तिथियां, जो शुभ कार्य के लिये वर्जित मानी गई है। (फलित ज्योतिष)

वि. स्त्री.—विहीन।

रू. भे —रिकता, रिगता।

रिक्तारक—स. पु. [स. रिक्तार्क] चतुर्थी, नवमी, या चतुर्दशी की वह तिथि जो रविवार को पडती है।

रिक्थ—स. स्त्री [स. ऋक्थम्] १ धन सम्पत्ति।

२ वह सम्पत्ति जो उत्तराधिकार मे मिली हो।

३ स्वर्ण, सोना।

४ व्यापार या लेन देन मे लगी हुई पूंजी।

रू. भे.—रिकथ, रिखथ।

रिक्ष—१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—रिक्ष तेडौ अक्ष आणौ, सयल भार अढार। प्रथम पीपल बाग सीममड, आमली अधिकार। —रुकमणी[illegible]

२ देखो 'रिख' (रू भे)

रिक्षा—स. स्त्री [सं लिक्षा] १ जूं का अडा, लीख, लिक्षा।

२ चार या आठ तृसुरेणु के बराबर की एक तौल।

रू भे.—रिकसा।

३ देखो 'रक्षा' (रू. भे)

उ०—ग्रहणा सेवन दुइ सिक्षा, सीखी सजम नी **रिक्षा**। —कवि सार

रिक्षास्त्र—स. पु.—एक प्रकार का अस्त्र।

उ०—नागास्त्र गुरुडास्त्र सवरत्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिक्षास्त्र आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दानवास्त्र········· —व. स.

रिखंभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—नमो रुसि तापस-रूप **रिखंभ**। नमो अवतार उदार असंभ। —ह. र.

रिख—स. पु [स. ऋक्ष] १ तारे, नक्षत्र। (अ. मा.)

उ०—१ राहु केत **रिख** अरुण, नवै ग्रह साति करै नित। —ह. र.

—ह र

उ०—२ महि प्रगटि राम विलास मगळ, प्रमळ रेग प्रकास ए। मोमति रिख गग चद्र मोभा, किरण अममग काम ए। —रा रू

२ सूर्य। (नां मा.)

[स ऋषि] ३ सात की सख्या।

उ०—आसाढ़ऊ सुद नवमि, गुण आगे रिख (१७३७) लेख। जिके समस्मर जोधपुर, समहर थयौ विसेख। —रा रू.

रू. भे.—रख, रिक, रिकख, रिख, रिख, रिख्ख।

अल्पा.—रिखड़उ, रिखड़ौ।

४ वन, जगल। (प्र मा)

उ०—रिख बड़ी अनै अरबद तणा, तप कर कर तन तजियौ। मौकमा कमध मोटा मिनख, तै जीव 'र कासुं कियौ।

—अरजुन जी वारहठ

५ वट वृक्ष। (ना मा.)

६ रामदेव के उपासक वर्ग का नाम। (मा म.)

७ रीस, गुस्सा।

उ०—ना रिख करणी है भली, धीर धारिये चित्त। भोळी टाबर बेसमझ, ग्यान न बीरे चित्त। —सूरे खीवे कांधळोत री बात

८ देखो 'रिसि' (रू. भे) (प्र. मा., ना. मा.)

उ०—१ जोई पाण महिपत जपै, को रिख आग्या कीजै। आग्या एक सुणौ न्रप आगम, सग उभै सुत दीजै। —रा. रू.

उ०—२ पदमण रिख असमान पहूती। पवा विना जिहान पड़ीजै। —र ज. प्र

उ०—३ नै हारीत रिख विमान बैस चालतो थी सु बापा नूं तेड़िया थी सु मोड़ैरौ आयौ, सु पछै बापा नूं रथ बैसता बाह भाली, बापा री देह हाथ दस बधी। —नैणसी

उ०—४ हृद ओपमा तेण रिख हासा। पवन झुलै किर फुलै पळासा। —सू प्र

रिखअंस—स. पु.—तीन अथवा सात नेत्र।

उ० लघु मध्य रगण फळ अतक पत पवन लख, तात ऋतु जरा तन रगत आतम। रसेसुर अगारख भेद पुण रौद्र रस, उजेणी न्रपत कुळ सूद्र रिखअंस। —र रू

रिखग—स. पु [स. ऋक्ष.] तारा, उडगन।

उ०—झड़ा करि-माळ रिखग्ग झड़ंत। पड़ै भूद धाउ निहाउ पडत। —गु रू ब

रिखड़उ, रिखड़ौ—देखो 'रिसि' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ रिखड़उ रमतउ थकउ, चाल्यउ चचल चित्त रे। उतावलउ आव्यउ अयोध्या, राज लेवा निमित्त रे। —स कु

उ०—२ म भरद म जोक लल्या नहीं जावत, मस्तक मुड़ित कस कड़ा। अचरिज्ज भया मोहि देख नहीं एहू, कुण दुकाळ देखउ रिखड़ा। —स. कु.

२ देखो 'रिख' (अल्पा, रू. भे.)

रिखय—देखो 'रिखि' (रू भे) (ह. ना. मा)

रिखदेव—स पु.—शिव, महादेव।

उ०—पतित न्हाय व्है पीलपाट, दियै निकट रिखदेव। नवै मुगत नटनार ज्यु, स्रीगगा तट सेव। —बा. दा.

रू भे.—रिसिदेव।

रिखधुनि—स. स्त्री [सं ऋषि + ध्वनि] गगा नदी। (ह. नां. मा.)

रिखपंति—स स्त्री [स ऋक्ष+पंक्ति] नक्षत्रो की पंक्ति, कतार।

उ० - आणद मु जु उदौ उहास हास अति, राजति रद रिखपंति रूव। नयण कमोदणी दीप नासिका, सेत केस राकेस मुख। —वेलि

रिखपत, रिखपति—स पु [स ऋषि-पति] ऋषि-श्रेष्ठ, ऋषिराज, मुनिराज।

उ०—पचवटी पहुता मुगी रिखपत, उमग मगळा आविया। प्रफुलत पकज जाण खटपद, हियै यूं हरखाविया। —रा. रू.

रिखपांचम—देखो 'रिसिपाचम' (रू भे.)

रिखपूनम—देखो 'रिसिपूर्णिमा' (रू भे)

उ० - सीकर रै धणी सेखावत देवीसिंघ भाया नूं साथ ले खाटू कजियौ कियौ रिखपूनम रै दिन। —बा दा ख्यात

रिखब—स पु [स ऋषभ] १ इन्द्र। (ना. डि. को.)

२ सूर्य। ३ अग्नि।

रू भे. रिखव।

४ देखो 'रिसभ' (रू भे)

उ०—कूरम मह्र रिखब कपिल, गोपी अम्रत खाड। भगतवछल तै भाजिया, हरणाकुस रा हाड। —पी ग्रं.

रिखबदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू भे.)

उ०—प्रीतम आमी पावणी, उण्यासी आथाण। सुपनौ आयौ हे सखी, रिखबदेव री आण। --पना

रिखभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.) (प्र मा., ह ना. मा)

उ०—१ नाभि सुत नमो रिखभ नरेस, वरीयाम वाध नरसिंघ बेस। वाह हो वाह बामण बडाळ, दुज राम नमो दीना दयाळ। —पी. ग्र.

उ०—२ धवला नै माता घणा, बले छोटी सिगडियां जाण रै लाल। दोनूं बराबर दीसता, तूं एहवा रिखभ आण रे। —जयवाणी

उ०—३ पावमो रिखब नाम, पूरे सब इच्छा काम। काम धेनु काम कुंभ कीने सब मादि मादि। —वि. कु.

उ० -४ खडग रिखम गधार, मद्दि पचहम निखादह । सरिस कठ सुर-मपन, गीत सगीत प्रलापह । —गु. रू. ब.

रिखभजिन – देखो 'रिमभजिन' (रू. भे (स. कु.)

रिखभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे) (ना. मा.)

उ०—१ पुत्र प्रगनिध्वज, पुत्र नाभिराजा, मोरादे भारया पुत्र **रिखभदेव** । रिखभदेव भारया–२, सुनदा १, सुमगळा २ । —रा वशावली

उ०—२ सुरासुर सरव करै जमु सेव, दियै सुख वछित **रिखभदेव** । —ध. व. ग्र.

रिखभधुज–स पु. [स ऋषभध्वज] शिव, महादेव ।

रिखभानन–स. पु [स. ऋषभान्न] सातवें विरहमान का नाम ।

रिखमंडळ–स. पु [स. ऋक्ष=मण्डल] १ नक्षत्र मण्डल, तारा मण्डल, प्राकाश, नभ ।

२ तारे, नक्षत्र ।

रू. भे —रखमडळ ।

३ देखो 'रिखमडळी' (रू भे.)

रिखमंडळी–स पु. [सं +ऋपि-मण्डली] १ ऋषि-समूह, मुनि महात्माओ की मण्डली ।

२ हम । (अ मा)

रू भे —रिखमडळ ।

रिखमातग–स पु —मातग ऋषि ।

रिखमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू भे)

उ०—रघुराजा ! रे रघुराजा ! **रिखमूक** गिडद दराजा । —र रू.

रिखयद–स पु [स. ऋषि-इन्द्र] ऋषिश्वर, मुनिश्वर ।

रिखय—देखो 'रिसि' (रू भे)

उ०—रिखय भख कर रखवाळ, तारी रिख घरणी चरण रज हुता । —र ज प्र.

रिखया–स. पु. [स. ऋषि] बाभी जाति के वे लोग जो रामदेवजी की अधिक भक्ति रखते हैं । (मा. म.)

रिखरांण, रिखराज—देखो 'रिसिराज' (रू भे)

उ०—१ तहक नीमाण गिरवाण हरखांन तन, चिता सरसाण रभसाण चाळै । निडर **रिखरांण** गणपाण वीणा नचै, भाण रथताण घमसाण भाळै । —र. रू.

उ०—२ नमो नमो सिध साध, नमो **रिखराज** मुनिवर । नमो नमो पित मात, नमो सब देव पुरदर । —ऊदोजी नैण

रिखराजि–स. स्त्री [म ऋक्ष-राजि] तारो की पक्ति ।

रिखराय – देखो 'रिसिराज' (रू. भे)

उ०—यो वरखा रितु ऊतरी, आवी सरद सुभाय । पित्रेसुर कीजै प्रसन, पोखीजै **रिखराय** । —रा. रू.

रिखव—१ देखो 'रिखब' (रू. भे.)

२ देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

रिखवर—देखो 'रिसिवर' (रू. भे)

उ०—दधि पियण **रिखवर** जांणि प्रण डर, समर जाळण तिकर मकर । चूर त्रिण तर पसर वनचर कना मेटण तिमर रवि कर । —रा. रू

रिखवरणी—देखो 'रिसिवरणी' (रू. भे.)

उ०—पं रज **रिखवरणी** गतिपाई, पळ तरणी भीवर तिरवाई । भण सीता रघुवर रघुवर सीता, सीता रघुवर भण भाई । —र. ज. प्र.

रिखव्रत—देखो 'रिसिव्रत' (रू. भे.)

उ०—इम करता रभ कोड इलाजा । **रिखव्रत** चित डिगयो नहराजा । —सू प्र

रिखसपत—देखो 'सप्तरिसि' (रू. भे)

उ०—सपन चिरजी **रिखसपत**, सो भी सचीयारा । —केसौदास गाडण

रिखसर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे)

उ०—प्रास्रम चौथे प्राय, राज तजता राजेसर, बेटा नै जुवराज देर, हो जाता **रिखसर** । —अरजुन जी बारहठ

रिखसात—देखो 'सप्तरिसि' (रू. भे)

उ०—सपत दीप **रिखसात**, सातह समद । नवर नीय ही हाथ जोडै नरिंदु । —पी. ग्र.

रिखस्त–स पु. [स. ऋषि-प्रस्थि] वज्र । (ना मा)

रिखहेसर—देखो 'रिसिस्वर' (रू भे)

उ० – सेत्रुंजे नायक वीनति साभलो, श्री **रिखहेसर** स्वाम । दीन दयाल तुम्हाने दाखिवुं, अतर बीतग प्राम । —ध व ग्र.

रिखि—देखो 'रिसि' (रू भे.) (अ मा.)

उ०—१ तरै हारीत **रिखि** महादेवजी रो ध्यान कीयो, उग्र स्तुत करी, तिण री पहाड प्रथ्वी फाड नै ज्योतिर्लिंग श्री एक लिगजी प्रगट हुवा । —नैणसी

उ०—२ त्रिजड आवाह 'किसनेस' हर 'बिसन' तण, **रिखि** हुडहुड हसै समर रीघी । —दलपत सादू

उ०—३ वग **रिखी** राजांन सु पावसि बैठा । सुर सूता थिउ मोर सर । चातक रटै बलाहिक चचळ, हरि सिणगारै अंबहर । —वेलि

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

उ०—उथ सगन साथ रिखि उरधि, अब कृण प्राचिय मुरधि। रवि सनक वेद सुगण, ओरनि नव नगण धग। —ग. रू.

रिखियौ—स. पु.—रामदेव जी का भक्त "रिखिया" चमार जाति का व्यक्ति।

रिखिराज, रिखिराय— देखो 'रिखिराज' (रू. भे.)

उ०—१ बोधि सभा काशी पार्षी में नेडाव्यो रिखिराज जी। —श्रीपाल रास

उ० २ साभल विस्म अति हरखित हुवो रे, रथ पर बैसी आय। मुनि वादि ने वाणी साभले रे, उपदेस दे रिखिराय। -जयवाणी

रिखी— देखो 'रिखि' (रू. भे.)

उ०—१ कोटन रिखी मौन के कारन, परम मुक्ति जिन पाई। ऊमरदान अब मौन अराधन, पर हर नार पराई। —ऊ का.

उ०— २ रज पाय परस जिम नार रिखी, तज देह सिला छिन माह तरी। —र ज प्र

रिखीग्रस्त—देखो 'रिखिग्रस्त' (रू भे)

रिखीकेस, रिखीकेसू— देखो 'रिखीकेस' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ समवाद रिखीकेस पाधरो सभारियो क, सिवा देग गाथ रो उचारियो सरस। बीठदेवो माथ रो प्रमाद भू विचारियो, दूजा गोपीनाथ रो जुहारियो दरस। —साहिबो सुरतािणयो

उ०—२ वेद मे विधाता हरी मन रो संदेस वाच, माधवान छोल घोप रिखीकेस नाम। - भगतराम हाडा रो गीत

[illegible], रिखीपांचम— देखो 'रिसिपाचम' (रू. भे)

रिखीमुक— देखो 'रिख्यमूक' (रू. भे.)

उ० रिखीमुक कर नवरना पूज सगत जगपाळ। सदळ कूच करवा सभै, वाजै तरफ नमाळ। —र. रू

रिखीराज, रिखीराय— देखो 'रिखिराज' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—१ सूरा पुर भाटा गानी भतूटा उठावै संभू साची तान लावै रभा रचावै सगीन। रिखीराज बावै वीण प्रवीण हररा रतो गावै सुवा नोगरी प्रगूठा रूपा गीन। —बद्रीदास खिड़ियो

उ०— २ साम स्रमरा नद पारणइ, पडिलाभ्यउ रिखीराय। सालि-भद्र सुख भोगवइ, दान तणइ सुपसाय। --स कु

रिखीस रिखीसर, रिखीसुर, रिखीस्वर— देखो 'रिसीस्वर' (रू भे)

उ०—१ देवीधीस रिखीस इस अजय से सेव पारायण। पाप कज 'सिमस' रचिम मरण प्रागद कारायण। —र ज प्र.

उ०—२ एगइ पग ऊभउ रहउ रिखी कहउ रे, सूरजि सामी द्रस्टि रिखीसर कडउ रे। - स कु.

उ०—३ वापा री रिखीस्वर वाह भाली हाथ दस वापा री डील बधियौ। —नैणसी

उ०—४ मारग विखै भेळा होय न सक्या नगर माहि पैठा तब दून्यो भाई एकठा होय पैठा। सजन दुरजन नर नारी नाग रिखी-स्वर राजा समस्त देखै लागा। —वेलि टी.

रिखू—देखो 'रिखि (रू. भे)

उ०—चार निगमूं की उक्त सपनादि रिखूं के गण रिख पतनिया। —र. रू.

रिखेंद्र—देखो 'रिखींद्र (रू. भे)

उ०—रिखे नई सुमरो दसरथ। —रा. रा.

रिखेस, रिखेसर रिखेसुर, रिखेस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे,) (अ मा.)

उ०—१ रटै नरेस हो रिखेस, आप गह उच्चरी। पयस राम नीर पेखि पेखि, मीन ज्यां परी। —सू. प्र

उ० २ महम अन्त्यामी रिखेसर अगवर ब्रह्मा ईस। मिळिया मेळ साभिरै सुर कोड़ तेतीस। —पी ग्रा

उ०—३ आए सु गलम रिखेसुर अखि। —रा रा.

उ० —४ भगकर रूप भुजा जुग भार। हणो खळ भूप भर्णौ बलि-हार। खणारखण खेटक भेटन गाग 'रिखेस्वर' बीण भणाइभण राग। —मे. म.

रिख्य—१ देखो 'रिखि' (रू भे)

उ०—बडा सिध रिख्य भणी जगवास। वांछै नौ ओवरण सेवा स्वास। —मा वचनिका

२ देखो 'रिख' (रू भे)

रिख्या - देखो 'रखा' (रू भे)

उ०— १ आगता गृह तरू पग आसुर, ज्याग विधुंस जावै। रिख्या वाट तरै जो राघव, वाट सपूरण वाव। —र. रू.

उ०- २ पछै देवी ऊपर लाघण पाच दस किया। देवी प्रसन हुई, कह्यौ—तूठी, माग। तरै कह्यौ—गढ करण दीजै गढ री राज रिख्या करा। ---नैणसी

रिख्यावत—वि. [स. रक्षा + वत्] रक्षा करन वाला।

उ०—महादेवजी नो रिख्यावत त्यु खपति पिण सूपी। पाछला जीव वधना देखै तरै आगला जीव स्पाय दवै। — रा. वसावळी

रिग—देखो 'रिगवेद' (रू. भे.)

रिगटोळ—स स्त्री —हसी, मजाक।

उ०—रमता कर रिगटोळ, खूंदना मारग हालै। खळा रू मिया खोद, धाम खाई दे घालै। —दमदेव

रिगणौ, रिगबौ—क्रि. अ —ललचाना, भीकना।

उ०—धेर सबळ गजराज, केहर पल गजका करै। सो सठ कर कम-

काज, रिगता ही रह राजिया। —किरपाराम

रिगतणो, रिगतबो—रू. भे

रिगतणो, रिगतबो—देखो 'रिगणो, रिगबो' (रू. भे.)

रिगतभिक्षा—स स्त्री.—मामूली वस्तुओं के लिए-बार बार भीख मांगने की क्रिया या भाव।

रिगता—देखो 'रिक्ता' (रू. भे)

रिगतियोड़ो—भू का. कृ—लालायित हुवा हुआ, भीका हुआ।

(स्त्री रिगतियोडी)

रिगतियौ, रिगतौ—स पु—देखो 'रगत्यौ' (रू भे.)

रिगदोळणो, रिगदोळबौ—देखो 'रगदोळणो, रगदोळबौ' (रू. भे.)

रिगदोळियोड़ो—देखो 'रगदोळियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री-रिगदोळियोडी)

रिगरिगाड़—स. स्त्री—हिचकिचाहट, झिझक।

रिगल—स. स्त्री—हसी, दिल्लगी, मजाक, ठठा।

उ०—तुरत विगाडै ताह, परगुन स्वाद स्वरूप ने। मित्राई पय माह, रिगल खटाई राजिया। —किरपाराम

रिगवेद—स. पु. [स ऋग्वेद] चार वेदों मे से एक, ऋग्वेद।

रू भे—रग, रगवेद, रगवेद, रिग, रुग, रुघवेद, रुघव्व।

रिगवेदी—वि. [स. ऋग्वेदिन्] ऋग्वेद का जानने वाला, ऋग्वेद का ज्ञाता।

रू. भे—रघुवेदी।

रिगसणो, रिगसबौ—क्रि. स. [स. रिख] १ शरीर या शरीर के अग को घसीटते हुए धीरे धीरे चलना, खिसकना, सरकना, रेंगना।

उ०—१ कितराहेका का तिग तूट गया छै। निकै रिगसता थका लफ लफ कोट रै जाय जाय कटारी लगावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दिन ४ ५ ६ गुदरीया ताहरा एक दिन दोपहर री वरिया खीमो रिगसतो रिगसतो आयो। —चौबोली

२ चलायमान होना, गतिमान होना।

उ०—घट मे गगा गोमती, ता विच किया सिनान। जन हरीया मन रिगसीया, ऊचा घर असमान। —अनुभववाणी

३ खिचना, तनना, तनाव आना।

उ०—और गाठ खुल जात है, जद लग पूगै हाथ। प्रीत गाठ नैणा खुली, रिगस रिगस अड जाय। —अग्यात

४ घूमना, टहलना।

रिगसणहार, हारो (हारी), रिगसणियो—वि०

रिगसिओड़ो रिगसियोड़ो, रिगस्योड़ो—भू० का० कृ०।

रिगसीजणो, रिगसीजबो—कर्म वा०।

रिगसियोड़ो—भू. का कृ.—१ शरीर को घसीटते हुए चला हुआ, सरका हुआ, खिसका, हुआ, रेंगा हुआ. २ चलायमान हुवा हुआ, गतिमान हुवा हुआ. ३ खिचा हुआ, तना हुआ. ४ घूमा हुआ, टहला हुआ।

(स्त्री रिगसियोडी)

रिड़—स पु.—१ भैंस के बोलने का शब्द।

उ०—भैंस्या रिडकै रिड़ गाया रभावै। प्राणी तिरखातुर पाणी कुण पावै। —ऊ. का.

२ ककरीली भूमि।

३ समूह, भीड।

४ युद्ध, टटा।

रिड़क—स. स्त्री.—भैस के बोलने की आवाज।

रू. भे.—रडक।

रिड़कणो, रिड़कबो—क्रि स—१ भैंस का बोलना।

उ०—भैंस्या रिडकै रिड गाया रभावै। प्राणी तिरखातुर पाणी कुण पावै। —ऊ. का.

२ लुढकना, धुडकना।

रडकणो, रडकबो—रू. भे

रिड़कली—स. स्त्री.—छोटी पहाडी।

मह,—रिडकलौ।

रिड़कलौ—देखो 'रिडकली' (मह, रू भे)

रिड़णौ, रिड़बौ—क्रि स.—१ नगाडे या ढोल का बजाना।

२ युद्ध करना।

रिड़मल—स पु. [स. रण-मल्ल] १ योद्धा, वीर।

२ जोधपुर के सस्थापक राव जोधाजी के पिता का नाम।

उ०—रिड़मल ने मरुधर थळवट री, राज दियौ बगसाय।

—राघवदास भाटी

३ राव रिड़मल राठौड के वशजो की एक शाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

रू. भे—रडमल, रडमाल, रिडमल्ल, रिडमाल।

रिड़मलवट—स. स्त्री—शूरता, बहादुरी।

रिड़मलोत—स. पु—राठौड राजपूतो की एक उपशाखा व इस उपशाखा का व्यक्ति।

रिड़मल्ल, रिड़माल—देखो 'रिडमल' (रू भे.)

उ०—१ है गै रथ पायक हैसल्ला, मिळिया दळ जोधा रिड़मल्ला। महि मेडतै सभाळै मारू, सफि खडिया दिल्ली पुर सारू।—रा. रू.

उ०—२ 'बखत' गुन आऊवै झाट खग बजाई, काट घण दळा रजवाट केवै। मुरधरा ढाल मम बिरंग रंग मिटायो, सुरग रंग कियो रिड़माल 'सेवै'। —ठाकुर सिवनाथसिंघ कूपावत री गीत

रिड़ारिड़–स. स्त्री [अनु.] रा. ध्वनि विशेष।

क्रि. वि.—लगातार, क्रमश.।

रू. भे.—रिड़ोरिड़।

रिड़ी—देखो 'रड़ी' (रू. भे.)

रिड़ोरिड़—देखो रिड़ारिड़ (रू. भे.)

रिड़्यो–क्रि. वि.—अपने आप गिरा हुआ।

उ०—वेरी तो पाड़ो, मो देवरिया, न री-मरद थो। नारी होय तो पड़या रिड़्या फळ खाय। मरद हवै तो तोड़ै फूल गवाय रे।

लो. गी

रिचा–सं. स्त्री. [सं. ऋचा] १ वेद मंत्र जो पद्य मय हो, वेद स्तोत्र।

२ ऋग्वेद की ऋचा।

३ ऋग्वेद।

४ चमक, कान्ति।

५ प्रशंसा।

रिच्छक—देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—प्रभ रजण रिच्छक, सरणागत, सताभव भजण समार। सद उपमा जिणरी तो साजै, तिणरी ही छाजै करतार। —र रू.

रिच्छया, रिच्छा, रिच्छ्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—ज्यांरी रिच्छ्या देवता, सेवा पीर प्रधान। त्यां अगणीती साजै, सुगळ मे आसान। —रा रू

रिछक—देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

रिछपाळ—देखो 'रक्षपाळ' (रू भे.)

उ०—१ देवियां जोत ऊदोत कोर दोवड़ी, लोयडीपाळ हूं सीस लीधी। ताकवा रिजक रिछपाळ सागर तणा, कवार भुरजाळ हूं सिद्ध कीधी। —म म

उ०—२ भोजन कारण भेद, जळावै माझ मवारै। रोज धरै रिछपाळ, राड़री वार रै लारै। दसदेव

रिछपाळो—देखो रक्षपाळ' (मत्वा., रू भे.)

उ०—वन में तो निरखा चूसाई, नरया बोलया वारै। मीरा के प्रभु गिरधर नागर सब संतन रिछपाळै। मीरा

रिछया—देखो 'रक्षा' (रू भे.)

उ०—१ साम ही नरै प्रतिक्रम सार, वामळा तर मे रिछया कवार। चित एक रखं सुभ सोक थाय जाणी वरण जोवण सूमट जाय। —पा प्र

उ०—२ प्रभु को ध्यान धरै रही, पति की रिछ्या काज। तातै भई निराज कै, दिव्य देह महराज। —गजउद्धार

रिजक–स पु [अ रिज्क] १ आजिविका, रोजी, जीवन वृत्ति।

उ०—१ दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार। दादू उस परसाद सो, पोख्या सब परिवार। —दादूबाणी

उ०—२ म्हारै रिजक री सोगन कालै री सपनो देख्या पछै तो म्हामै अर तिरगाजी मे की लाबो चोड़ो फरक निगै नी आयो।

—फुलवाड़ी

२ आमदनी, आय।

उ०—१ धारा धर रची जळधारा सोवा रिजक विना हुय सारा। असुरा मुलक मेच अंधारा, थया सचीत सहर पुर थारा।

—रा रू

उ०—२ सीसो दारुो सागर सह श्रावस सान प्रकट। सार रै हाथै रही, सीच रिजक नै मेह। सीच रिजक नै मेह, रह रै वाता ऊटी, कास भूठे कत्था, हाथ परमेसर हूंती। —ध व ग्र.

३ रोटी, भोजन।

उ०—रजपूतां रे रिजक बिन, घरण पनीतन राखी रे। बिदरागी परदा में बैठी, बिसवं कमाई साथी रे। ऊ रा

४ अन्न, अनाज।

५ सेवा चाकरी या नौकरी में मिलने वाली जागीर।

उ०—१ तद राकर आवै आया रजपूता सु मला करी। अर कयो, 'जण खग री देह री सवार है पण अर्कै परव पर मरिया नाम रहे'। तद भाया भरम रता जो मोटो परव है तथा घणा राठोड़ा रमा न ईमान वदळ नै परनाया है। सू आपा उण वदळै मरा। इतो परव फिर नही। त्या आपणी बीकानेर री रिजक खाधी है पण जाव राजा ह। जोई बीकानेर रा धणी है। —द दा

उ०—२ नमसकार सुरा नरा फिर तरेस वरगस। रिजक उजाळै साम रो, पड़ै गाम रणग —बा. दा

६ धीगड़।

उ०—रजपूत री पतक मुजरे थारने उमर सारी सोवे। मु ईये म्हारै मारने इ भला भला नाम दीया है। अबै काई कीजै? इण माहे (फिर) रुसी रिजक धरभी। जैतमाल पुमार री वात

७ रस, रक्त।

उ०—नरपत नरसमजी केइक दिन गढै रहिनै राजा सु विदा कीवी है। राजा राव भनदायजी घणी रिजक दे अर विदा दीवी।

नैणसी

८ बंदिया किसम रा बारूद जो तोप या तोड़ादार बन्दूक के कान मे भरा जाता है।

रू भे.—रजक, रजग, रजिक, रिजक, रिजकि, रिजकक, रिजग, रिजिक, रुजक।

रिजकणो, रिजकबो–क्रि. अ —प्राप्त होना, बदा होना, लिखा होना ।

उ०—रैयत के जाणसी ? हु ब्याह जोग थोडो ही हू ? हमे ब्याह कर परो 'र क्यू कीरो ही भव बिगाडू ? कवर तो करमडै मे **रिजक्योड़ो** ही कोनी । —दसदोख

रिजकवांणी, रिजकदांनी–स. स्त्री.—बदूक या तोप छोडने का बारूद रखने की डिबिया ।

रिजकि—देखो 'रिजक' (रू. भे)

उ०—जीव नव खंड रा **रिजकि** मागै जुग्रो । मेह करि गावडं घास मागै । —पी ग्र.

रिजक्क, रिजग—देखो 'रिजक' (रू भे)

उ०—दिपावत हाथ न लेत उदक्क । रुका बळ लेत पवित्र **रिजक्क** । —सू प्र.

रिजगो–स. पु —सिचाई से उत्पन्न किया जाने वाला एक पत्तीदार घास जिसे ज्यादातर घोडो को खिलाया जाता है ।

रिजमट—देखो 'रेजिमेंट' (रू भे)

उ —मैन **रिजमट** असख पलटणा तणे सग । भड तिलग बग किलग तणा भिळिया । --कविराजा बांकीदास

रिजरव–वि [अ रिजर्व] किसी के लिये आरक्षित, रक्षित, सुरक्षित ।

रिजरवेसन–स पु [अ. रिजर्वेशन] रक्षित या सुरक्षित करने की क्रिया या भाव, आरक्षण ।

उ०—इसी कुरेम मे भीमजी रा ऊठ भाई करवा रो मतळब सुरक्षा रो **रिजरवेसन** करवाणो है । —रातवासो

रिजल्ट–स पु [अ रिजल्ट] १ परिणाम, नतीजा ।

२ परीक्षा-फल ।

रिजवार—देखो 'रिझवार' (रू भे)

उ०—१ नेह नीभावण सैण लख, वैण बण्याह जिणवार । तन ल्याया मन भेट नरि, रीझो तो **रिजवार** । —पना

उ०—२ साथ लीना अै लागणा नोयणा देखि **रिजवार** अडवडै छै । —पना

रिजाळी–स. स्त्री.—बदमाश औरत, बदचलन औरत ।

उ०—इव ही जे बाहिर होयस्या तो सै लोक कुचरडो करस्यै जे **रिजाळी** थी सो किही रै साथै परी गई ।

—कुवरसी साखला री वारता

रिजालो–वि. (स्त्री. रिजाळी) १ बदमाश, नीच ।

उ०—सो आगे सू दस्तूर इसो ही जे छै के जसो माणस हुवै जसी ही सोभत राखै, तिसा सू ही इकळास प्यार राखै । कजिये रो सरदार होसी सो कजिये रो माणस कन्है राखसै । **रिजाळा** लक्षण होसी सो रिजाळा भडवा नू कन्है राखसी, बधारसी ।

—महाराजा पदमसिंह री बात

२ धूर्त, चालाक ।

रू. भे —रिजालो ।

रिजिक देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—परमेसर थारी पहुच, निमो निमो निरवाण । सिहि जीवा ना साहिबा, **रिजिक** दीयै रहमाण । —पी ग्र

रिजु, रिजू—१ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

२ देखो 'रज्जू' (रू भे.)

उ०— अजस्र अस्र घस्र घस्र बिस्र पीवतो बहयो । **रिजू** दलील पोलकै की जलील जीवतो रहयो । —ऊ का

रिज्जणो, रिज्जबो – देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू भे)

उ०—घरणि घसक्कड़ पडइ देवि राजल विहलघल । रोमइ **रिजइ** वेसु रुवु बहु मन्नइ निप्फलु । —राजसेखर सूरि

रिज्जियोड़ो --देखो 'रीझियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री रिज्जियोड़ी)

रिझकवार, रिझवार–वि —१ रीझने वाला, मुग्ध होने वाला ।

उ०—१ रिझवारा **रिझवार**, कवरा रो सिणगार । तीख चोख रो राखणहार, रस बिलास रो चाखण हार । —र हमीर

उ० —२ या तन की मैं बीणा बजाऊ, रग रग बाधू तार । समझ बूझ मिळ जाय दुलारो, जद रीझै **रिझवार** । —मीरां

२ प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला ।

उ० —सूरज हिंदवाण रो, गाड ताल रो गिरदह । रूपक रो **रिझ-वार** अनै रूप रो मनगह । —सू प्र.

३ मस्त, मनवाला ।

उ०—१ मारुडो छै **रिझवार** म्हारी आली हे । जाय सलाम कहै आलीजा ने कुरनस वार हजार । —लो. गी.

उ०—२ रगरातो रळियावणो, हितरस चाखणहार । उड पदमन हित आवियो, रसिक भवर **रिझवार** । —र. हमीर

४ रसिक ।

५ उदार चित्त, दातार ।

उ०—१ भूपाळ सिव घन भूपती, **रिझवार** कीरत बड रती । अग लिया पोरस आमनी, अवधेस जुध अणसक । —र. ज. प्र

६ कृपा या अनुग्रह करने वाला ।

उ०—तो रिझवार जो रिझवार भगवत गावता रिझवार ।

—भगतमाळ

रू भे —रिझवार, रिजवार, रीझवार रीजवार, रीझवार ।

अल्पा —रिझवारो ।

रिझवाणौ, रिझवावौ देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू भे)

उ०—जीम दीधी जिकै कीत जीवर जपी। होठ मुमुकाय रिझवाय पातक हरा। हाथ दीधा जिकौ मोड़ आगळ हुवी, उदर परमाद परगा-अमल आचरा। पाय दीधा जिकै 'किसन' पर-दछ्, फिर नाच राघव आगै सफळ कर नत नरा। —र ज प्र

रिझवारी—सं स्त्री —१ रिझवार होने की अवस्था या भाव।

रिझाणौ, रिझावौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू भे)

उ०—१ ताहरा बीदू कही मन्य ठकुराणी नै जिण कुंवरजी नै इसा रिझाइया। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तात को रिझायौ ज्योंही आनद आघायो न। - ऊ का

रिझाणहार, हारौ (हारी), रिझाणियौ वि०

रिझायोड़ौ—भू० का० कृ०

रिझाईजणौ, रिझाइजवौ—कर्म वा

रिझायोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू भे) (स्त्री रिझायोड़ी)

रिझावणौ, रिझाववौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू भे)

उ०—१ मात्रा दडक वरणिया, इण विध छद उदार। 'किसन' रिझावण जस कियो, रामचद रिझवार। —र ज प्र

उ०—२ कानी महीनै दीवाळी आवै बेटा, अर उण रै दो दिन पे'ला आवै धन तेरस। सठ साहूकार उण दिन सगळाई रोमो गाठौ'र पैसा-टक्का बारै काढै अर दरवाजा बद कर नै रात रा लिछमी नै रिझावै। - रातवासो

उ० —३ राज रमणि महाराज रिझावै। प्रति दिन नित्य हरख उपजावै। - रा रू

रिझावणहार, हारौ (हारी), रिझावणियौ - वि।

रिझावियोड़ौ, रिझावियोड़ौ, रिझाव्योड़ौ भू का कृ।

रिझावीजणौ, रिझावीजवौ कर्म वा.

रिझावियोड़ौ— देखो 'रीझायोड़ौ' (रू भे।

(स्त्री रिझावियोड़ी)

रिट्ट- देखो 'रीठ' (रू भे)

उ० —पन प्रबळ पिसन पिखबै न पिट्ट रजवट बग्ग्दै रहार रिट्ट। —ऊ का

रिट्ठनेमि—स. पु —जैनियो के बावीसवें अरिहन्त रिष्ट नेमिनाथ।

रिठ, रिठि—१ देखो 'रीठ' (रू भे)

उ० —धनि घण ऊनिमि मातियउ, झाभी रिठि झडवाइ। बग ही भला न बप्पडा, धरणि न मुक्कइ पाइ। —ढो मा

रिट्ठा—स. स्त्री धूमप्रभा नामक नर्क। (जैन)

रिट्ठ—स पु कष्ट, दुख।

उ० मारू, थाकउ देसडइ एक न भाजइ रिट्ठ। ऊचाळउ क अवरसणउ, कइ फाकउ, कइ तिड्ड। —ढो. मा.

रिड—स स्त्री —भेड।

रिणगण रिणगणि - देखो 'रणागण' (रू भे.)

उ० —१ कुरु पन्डव कळहिया, उभै कुरु-खेत रिणंगण। हुम्रो जाम भारत्थ, गयै अड्डारह खोहण। —गु रू. ब.

उ० —२ रह मउ रडवडइ रिणगणि, लोही तणा प्रवाह। ऊभै हाथि असुर पाकारइ, पायलि पाडइ धाह। का दे प्र.

रिण—स पु [स ऋण] १ कर्जा, उधार।

उ० १ रिण राखियां घणी रगजाने, मिळसा न करै मूझ मन। [illegible] 'बूझण' कह्यार, राण अढारह रायहर। —दुरसौ आढौ

उ० - २ [illegible] पाप रिण, [illegible] प्रवेस। रहो अनीत अनी। [illegible], दाता हर्दै देस। - बा. दा

२ रग, विला। ३ जल। ४ भूमि। ५ देव ऋषि और पितरो क उद्देश्य स किया जाने वाला यज्ञ।

६ वेदाध्ययन और सन्तानोत्पत्ति नामक कर्त्तव्य।

रू भे —रिण रणा रिणउ, रिन।

मह रणो।

२ देखो रण' (रू भे) (अ मा)

उ० - १ [illegible] रिण [illegible], अवड नियागी वोल इमो। [illegible] —द. दा

उ० [illegible] रिण [illegible] मभार। मद्धा [illegible] —बा. दा

उ० [illegible] अ गो। रिण मुगा पछै सभाळू रागो। - रा रू

रिण अठेल—वि - युद्ध मे पीठ न दने वाला वीर, योद्धा।

रिणउ १ देखो रिण (रू भ)

उ० अवसर देखी अधिकउ आळउ व्याज लीजइ दीजइ, देस [illegible] पुळीड औरण्ण रिणउ लाधे पाजरै करी दीजइ, - व स

२ देखो रण (रू भे)

रिणका—स स्त्री एक ध्वनि विशेष।

रिणकालौ— देखो रणकालौ (रू भे)

उ० 'दानो' भालौ झल्लिया, रिणकालौ रावत्त। जुध वाळी वेनी जिसा 'तेजा' मूजावत्त। —रा रू.

रिणकाहल—स पु.—युद्ध का वाद्य विशेष।

उ०—कीधउ कूच पीयाणउ मवइ, आव्या कटक धाए मे मवइ। बिहु पहुरे **रिणकाहल** देई, कटक तोरकइ विलगा जई। —का. दे. प्र.

रिणखंभ - देखो 'रणथंभ' (रू भे)

उ०—तू राजा **रिणखंभ** धीर दळ थभ धराधर। नवकोटी मैंघणी, तेरै साखा उज्जागर। —गु रू ब

रिणखेत रिणखेति, रिणखेत्रि—देखो 'रणक्षेत्र' (रू भे)

उ०—१ अठै नौ **रिणखेत** मे सूवणौ पडसी, अरै भोळा धाडवी थनै किरण भरमायौ है सो उण घर मे लूटण री उमग कर नै आयौ अठै सूरवीर रो घर छै मार नाखैला। —बी स टी

उ०—२ ते राजा नरसिंघदास मारीवा। वतीम महस माहरण **रिणखेति** मेल्हि चाल्यउ। —अ वचनिका

उ०—३ सादळ सीह मलिक जे हता, प्रागट बदि करचा जीवना। वीठउ दस्यू अम्हारइ नेत्रि, मादी मलिक पडिउ **रिणखेत्रि**। —का. दे प्र

रिणखळौ—स पु.—युद्धस्थळ, युद्धभूमि।

उ० उपडी वाग 'अरजरण' हगै, सूर धीर सत आगळै। तिरण दीह रहै 'डूगर' तणौ, 'राघव' भाटी **रिणखळै**। —गु रू ब.

रिणगजण—स पु—घोड़ा, अश्व। (ना डि को)

रिणगहिलौ—देखो 'रणगहिलउ' (रू. भे)

उ०—पडि ऊपडियर पहिलउ पहिला। गइ गजरण ऊठिय **रिणगहिला**। —रा ज सी

रिणघोर—स पु—रण नाद, समर-नाद,।

उ०—भाउ भोंभउ वाहइ **रिणघोर**, झूझऊ रागी जाया जोर। लाखचद कहै समझे सूर, दोन्यू दल वीररस पूर। —प च चौ

रिणछोड़ देखो 'रणछोड' (रू भे)

उ०—पह चढै जाणि दध छिलै पाज **रिणछोड़** दरस कजि महाराज। —सू. प्र.

रिणछोड़राय—स पु.—१ श्रीकृष्ण। २ ईश्वर।

उ०—पीरदास एम दाखै प्रभु, कूडै काल्है काकना। **रिणछोडराय** हो राघवा, रीझ समापै राकना। —पी ग्र

रिणजग—स पु - युद्ध।

उ०—प्रिथग मेक सग्राम, कियो महिकर आयाणह। बियौ कीध **रिणजग**, दिवरण कटकै मेल्हाणह। —गु. रू. ब.

रिणडोहण—वि.—युद्ध का आनद लूटने वाला, योद्धा।

उ०—सीसोदौ 'कल्याण', रहै रावत निर्भमरण। हरीदास रहुववड, रहै 'कचरौ' **रिणडोहण**। —गु. रू. बं.

रिणठांण—स पु [स रणस्थान] युद्ध स्थल, रण क्षेत्र।

उ०—१ आवटियौ एकोहटा, दे दूरहटा मेल्हाण। साभर आयौ आपरा, गा सोधे **रिणठांण**। —गु. रू. ब.

उ०—२ तीन भडारी नीवडै, मुहतौ पडै सुजाण। फोजदार वरियाम भड, 'रामौ' पड **रिणठांण**। —गु रू. ब.

रिणततली—देखो 'रळतळ' (रू भे.)

रिणताळ—देखो 'रणताळ' (रू भे) (अ. मा.)

उ०—१ विकराळ जोम छकिया वहै, देव मनिख अहि नह डरै। **रिणताळ** आळ माटै रवद, काळ चाळ पकडै करै। —सू. प्र.

उ०—२ **रिणताळ** रूक वाजन रीठ, दाणव बरगळ पडत दीठ। वड धडक्कि निलव धारा घिरोळ, हुई जैत जैत पहिलू हिंगोळ। —मा. वचनिका

रिणताळौ- देखो 'रणताळ' (अल्पा., रू भे.)

उ०—किम खावौ टाळा 'किसन', ते वडि **रिणताळा**। हुवै हुकम तो साह रा, रहचा रवदाळा। —सू. प्र.

रिणतूटौ—वि—युद्ध स्थल मे मरने वाला।

उ०—**रिणतूटा** सूरा भला, फाटा भला कपास। भागा भला अबोलणा, लागा वदणवास। —अग्यात

रिणतूर—देखो 'रणतूर' (रू भे)

उ० -कोट बिनै मळ बटे 'कलावत', चौपट कर वीझा चकचूर। अग्राजिया प्रणखळै ऊपर, तीडाहरै तणा **रिणतूर**। —[illegible]

रिणथभ, रिणथमर, रिणथभोर—देखो 'रणथंब' (रू. भे.)

उ०—१ औरग मुह्ळ बधव मुह आगळ, धाटा बिच **रिणथंब** थयौ। दरियाव कहै अचभौ देखौ, कमधज आकारीठ कियौ। सुजाणसिंघ राठौड़ रो गीत

उ०—२ हुवौ **रिणथंभ** निम साथ विमुहै हुवै, त्रिदिव मनव हुवा निगि तमासै। मामध्रम दाखि केसव तणौ सीघळी, वरै गो रभ मुरलोक वासै। —गिरधरदास केसोदासोत मेडतिया रौ गीत

उ०—३ आया माह अलावदी, विढ कटका सू वीर। मांझी **रिणथमर** मुग्रो, हठ निरवाह हमीर। —बा. दा.

उ०—४ **रिणथभोर** हमीर राणा चहुवाण सेभर का। —दुरगादत्त बारहठ

रिणथल—देखो 'रणस्थल' (रू. भे.)

उ०—कटि कमळ खळ, उछळ पडि, तडिछ तड लल थहै **रिणथल** —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रिणधीर—देखो 'रणधीर' (रू. भे)

उ०—पुर अवध सु हुय निज पग, भुनि वहै आलम मारगां। सग

राम लक्ष्मण कुमर दसरथ, धरम धुज रिणधीर । —र. रू.

रिणबंध–सं. पु.—योद्धा, भट ।

उ०—पड़े सामा मे पांच, समध सोलखी सौ सन । चावडा गुण-माळीस, रहे रिणबंध रिणवट । —रा. व. वि

रिणभिखण–सं. पु. [स. रण+भक्षण] योद्धा । (अ मा)

रिणभुइ, रिणभूमि, रिणभोम—देखो 'रणभूमि' (रू. भे)

उ०—१ खग हुए खंडा खड फिरि इडीहड, रिणभुइ रीहड रत रिई । बीहारी बांइ वडि तूटै घडि घडि, प्रगिया चडि घडि धडभ घड़ै । —गु. रू ब.

उ०—२ हबसी दळ हाथियौ, मार कमधै कळि-मूळै । गया छाड रिणभूम, जाणि पखी हुइ डूलै । —गु. रू. ब

उ०—३ खांगा भील कमकमै, किये करिमरा चडाए । रचै सेज रिणभोम, कुमम अरि कमळ विछाए । —गु. रू ब.

रिणमंडप—देखो 'रणमडप' (रू भे) (ना डि को)

रिणमल–स. स्त्री —१ देवी. शक्ति ।

उ०—जैत कमध कर जोडिया, जीहा एह जपन्त । करनळ रिणमल बाचरी पाळ करो त्रिगकस्त —राव जेतसी

२ राव रणमल्ल के वशजों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—मारू जोधा रिणमला भलै सझोधा भार । जाण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार । —रा. रू

३ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे)

रू भे —रिणमल्ल, रिणम्मल ।

रिणमलोत–स पु —राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रिणमल्ल—१ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे)

उ०—सुणि जोध बैण भाखत सभ, रिणमल्ल मारण आखियै रभ । —मा वचनिका

२ देखो 'रिणमल' (रू. भे.)

रिणमाल–स पु —राठौड रिणमल के वशजों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—ऐ भाटी दळ आगळा, खळ गजण दळ काल । मिगल मबोभा मेळ सू, या हूता रिणमाल । —रा रू

रिणम्मल—१ देखो 'रणमल्ल' (रू भे.)

२ देखो रिणमल (रू भे.)

उ०—बणि जोध रिणम्मल आठवळा, करगै बळबत कनक कळा । जुधवार सिरै उमराव जिता, तनुज ए धणी कज पाण तिता । —रा. रू

रिणयोद्धा–स पु. [स] योद्धा, वीर ।

उ०—रागो दाणो पूरबै गावळ राग रढाल । भारथ मे योद्धा भिडै, रिणयोद्धा जिम काल । —प च चौ.

रिणराव–स. पु.—महावीर ।

उ०—'रामो' 'कलियाण' तणो रिणराव । घणा जुध बीच करै खग घाव । —सू प्र

रिणरिण–स स्त्री —दुख भरी आवाज, कराहने का शब्द ।

उ०—हाथा हथलिया लटकता लोटा, रिणरिण रीकंता सुपनै में रोटा । —ऊ. का

रिणरिढ़ळ, रिणरींधळ, रिणरीधळ–वि —युद्ध मे रीझने वाला, युद्धोन्मत, योद्धा ।

उ०—१ आमडै जिकै सम आवम्मियळ, रिणरिढ़ळ जीपति रिण । सूरातन जिकै महम बळ सूरा, पह सादूळा पचाइण । —गु रू ब.

उ०—२ रागी मम राउ 'सिवौ' रिणरींधळ, रिण रा छोडि तिकै भड रोड । घण कूर्भ निसाण तणी धार, हवै मरण जिम मगळ होड । - प्रिथीराज राठौड़ रो गीत

उ०—३ 'बीसाहरो' साभळै विसनो हाथी दियै न बैठो हारि । रिणरीधळ रहियो रिण मारै साभी सुरो सहभिया सारि । —आसो सिढायच

रिणवट, रिणवाट, रिणवट्ट—देखो 'रणवट' (रू भे)

उ०—१ पड़े सामा मे पांच, समध सोलखी सौ सन । चावडा गुण माळीस, रहे रिणबंध रिणवट । —रा व वि

उ०—२ मा ! सोभत ते ममरसिंग लखण सभटड बीजउ । रिणवाट राउ अजेसी मा रण माहि मूलिगउ बीजउ । —का दे प्र

उ०—३ आगरन दड गह रतन तणी रिणवट्टा । परगट्टा दाखवै, बारट्टा कूरट्टा । —रा रू.

रिणवत रिणवत्त, रिणवत्ता–स स्त्री [स रण+वार्ता] युद्ध सम्बन्धी वार्ता ।

उ० रिणवत्ता रचा रहै, सकता बीर सुतन्न । जोडै साम्हा ईस तण, रिण अगजीत प्रसन्न । —रा रू

रिणवाउलो—देखो 'रणवाउलो'

उ०—एक तणा बांधव भरतार, एक तणा फूटरा कुमार । जे जे रता रिणवाउला एक तणा मारथा माउला । —का. दे प्र.

रिणवाट—देखो रणवट्ट' (रू भे)

उ०—पोगे निरमूळ पछाटै प्राण, घुमाडै रौदा दोमझ घाण । दुवाहा जोध जुटै रिणवाट, घडच्छै धाड मचे घर घाट । —मा. वचनिका

रिणवास—देखो 'रणावस' (रू. भे.)

उ०—तुम कारण दून रमिरा, सूना साभर का **रिणवास**। सूना चउरा चउखडी, सूना मदिर मढक विलास। —बी. दे.

रिणसाल—सं. पु. [स. रणशल्य] १ योद्धा वीर। २ युद्ध झगडा (अ. मा.)

रिणसींग—देखो 'रणसींगो' (रू. भे.)

उ०—न क्यों कान छेदियें, न क्यो गळि-ताग लगाये। न क्यो नाद नीमाण, न क्यो **रिणसींग** वजाये। —सूरजनदास पूनियो

रिणसेभ—स. स्त्री. —युद्धभूमि।

उ०—तरै आपरी कुळदेवता साभरादेवी आराधी। तरै देवी आई तरै अरज कीवी—महाराज तौ **रिणसेभ** पोढ्या छै, राज मोटा छो, वस री सरम राजनै छै, पाछै पुत्र नही, बसनै राज मिल्या ही गयो। —रा. वसावली

रिणसोर—स. पु. —युद्ध का कोलाहल, युद्ध का शोरगुल।

उ०—आतम घोर मिळियाँ अधार। **रिणसोर** जोर हुय रौद्रकार। —गु. रू. ब.

रिणसोहो—वि.—युद्ध का उत्सुक।

उ० रिणसोहा रिणसूरमा वीवो मोम वखाणि। नायक पायक भड निवड अरि भजण आराणि। —हा. झा.

रिणाई—वि. [स. ऋण+रा. प्र. आई] १ ऋणदाता, कर्ज देने वाला।

उ०—दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा सकुडिणी। नीठि हुई आकास पोम निरि, प्रौढा करसणि पंगुरिणि। —वेलि

२ देखो 'रणाई' (रू. भे.)

रिणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि सागर। करउ मत्र चेतन्न, कटक लपीट **रिणायर**। —प. च. चौ.

रिणि १ देखो 'रिणी' (रू. भे.)

२ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ वडै कामि दळ थभ "गजमाह" दळ तोड वर्द, छत्रपति कमध ऐ बोल छाजै। रूकि पतिसाह दळ राजते राखियो, सिंह पतसाह **रिणि** तिहिज भाजै। —खेतसी लाळस

उ०—२ समभ्रण जोग घणा **रिणि** साभरण दछि जिणि जिम रिमा घट देस। वरद दियण लियण जस वाचा, भड 'सेवो' राजै भूनेस। —नाथो बारहठ

रिणिखेत, रिणिखेत्रि—देखो 'रणक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—१ बाथ वाथा पडै बाण वाणा वराण, मिलिक मिलिका मिळै असरां मरण। वाजिया भला **रिणखेत** मां वीरवर, गाजिया रामचद किलग करता गमर। —पी. ग्र.

उ०—२ अलूखान एकलउ नाठउ, जे हूतउ सपराणउ। सादी मलिक ऊंवरउ मोटउ, ते **रिणखेत्रि** मराणउ। —कां. दे. प्र.

रिणिताळ, रिणिताळी—देखो 'रणताल' (रू. भे.)

उ०—त्रिगुण रिणग **रिणिताळ** बिन्है दे भिडिसे अतळी बळ। तरु-आरै विगट विनै त्रिहिमै नर विमळ। —पी. ग्रं.

रिणिरिण—देखो 'रिणीरितु' (रू. भे.)

रिणिवट—देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—खग झपट वे थपट छुट खळ खट, विकट अविघट विढे **रिणि-वट**। —ल. पिं.

रिणी—वि. [सं. ऋणी] १ जिसने कर्ज लिया हो, कर्जदार।

उ०—दिन जेही **रिणी** रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा सकुडिणि। नीठि छुटै आकास पोम निमि, प्रौढा करसणि पगुरिणि। —वेलि

२ जिस पर कोई अहसान हो, अहसान मद।

३ उपकार मानने वाला, कृतज्ञ।

रू. भे.—रिण, रिणियु, रणी, रिणि।

४ देखो 'रण' (रू. भे.)

रिणीरित, रिणीरितु—स. स्त्री.—ग्रीष्म ऋतु, जब गर्मी अधिक होती है और जगल मे घास का पूरा अभाव होता है।

रू. भे.—रिणरित।

रिणोइ, रिणोई, रिणोहो—१ देखो 'रणोई' (रू. भे.)

उ०—१ निरा समीयै कंदक जोगेसर अकल पथ हीगुळा जकर आवै था। तिकै **रिणोइ** देखि बाता करै छै, भाई भाई, रजपूताणिया धवडी रै खरणै रा लोहा धाय पोढिया छै, औ सुर भीवा रै कानै आयां। —जखडा मुखडा भाटी री बात

उ० वीभरै तरै कंई मीर वजरै विकर. तणछ खग फरहरै वीर नाळी। कहर घर **रिणोहो** वीर हाका करै, अजेही भीमडा तीर वाळी। —कुंभकरण सांदू

२ देखो 'रिणाई' (रू. भे.)

रिणौ—१ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—परगना माहे इतरा **रिणै** लूण खारी हुवै। —नैणसी

२ देखो 'रिण' (रू. भे.)

उ०—रोगियो आप माथै **रिणौ**, रोज दुख सुख नही रती। मोहनी देखि घरमसी महा, जाणै तोइ न हुजै जती। —ध. व. ग्रं.

रित—१ देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—१ मांवण आयो साहिबा, मोर हुआ महमंत। इण **रित** पीयर मोकळै, कठण हियारो कत। —अज्ञात

उ०—२ हम मास ममापिन गरभ दीध रित । मन ब्याकुळ मधुकर मुगराणि । कठिण वेयणि कोकिल मिमि कूजति, वनमगनी प्रमथती वसति । —वेलि

उ० –३ रित वसत ग्रीखम तू ही, बरखा रित माई । मरद हेम ससि तू सकळ, खट रित महमाई । - राज उढार

२ देखो 'रति' (रू. भे.)

उ०—ढोली रूप प्रसंग मे, माक रित अवसार । मिळीया बेहु रग-महल, कमरी राजकुमार । —ढो मा

३ रति ?

उ०—बजि प्रदग चग रग उपग वारग । प्रनग छबि वग उमग प्रग प्रग । मृतग रित प्रग प्रग करग नादग । रम तरग बह तरग रग रग । —सू प्र

रितवरण—देखो 'रितुवरण' (रू भे.)

रितपति, रितपती—देखो 'रितुपति' (रू भे.) (ह ना. मा)

रितपरस—देखो 'रितुपरस' (रू. भे) (ह. ना. मा.)

रितबांन–स. पु.—कामदेव । (प्र. मा)

रितरमण—देखो 'रितुरमण' (रू. भे.)

उ०—प्रावस घोर प्रधार मैं, मोर सोर माचै सघण । घोम-रिख आरिण धूहर रचै, जोजरण-गधा रितरमण । —गु. रू ब

रितराज, रितराव—देखो 'रितुराज' (रू. भे.) (प्र. मा.)

उ०—सिध मुनिराव सेव इम साधै । इम रितराज गमै आराधै । —सू. प्र.

रितवज—देखो 'रित्विज' (रू भे)

रितवसंत–स. स्त्री.—वसत ऋतु ।

उ०—रित बसंत सोभंत प्रब तर गजर भोर्प । —रा रू

रितवियौ–वि.—निर्बल, प्रशक्त, कमजोर ।

रितवीर–स पु [स रिक्त-वीर] तरकस । (प्र मा)

रितसाई–स. पु [स ऋतु-स्वामी] श्वान, कूकर । (ह. ना मा.)

रितहेमंत–स स्त्री.—हेमत ऋतु ।

रितावणौ, रितावबौ–क्रि. स —खाली करना, रिक्त करना ।

उ०—उवस वासै बस्या उजाडै, सहर करै दोय भरियौ । गीता ढालै छल्या रितावं, समद करै छीलरियौ । —जाभो

रिति—१ देखो 'रितु' (रू भे)

उ०—१ माह मास वतमान, ग्रग्क बैठो उतरार्डाण । सुकळ पख्य रिति सिसिरि, महा सुभ जोग सिरोमणि । —स पि

उ०—२ संसव जु बाळकपणो सोई तौ ससिर रिति हुई । सीत रिति सु तौ वतीत हो गयौ । —वेलि टी

२ देखो 'रीति' (रू. भे)

उ०—आवउ हो इस रिति हित सइ यदु कुल चद । दयउ मोहि परम आनद । वि कु.

३ देखो 'रति' (रू. भे.)

उ०—निम वसियौ सुख ग्रेह निज, वाधै रमणि विलास । अरज करै सुख भोग्ना, हित रिति गरम हुलास । —रा. रू.

रितिपालटि–स. पु.—ऋतु परिवर्तन ।

उ०—सूरज कळसि बैठो सु कुभि आयो । रितिपालटि होण लागी । —वेलि. टी.

रितिफळ, रितिफल–स पु. [स ऋतु+फलम्] ऋतु के अनुसार होने वाला फल ।

उ० रितिफल जे जे रूयडा, ते नेवेद्या सार । मरकलीइ माधव करइ, मधुकर-परि आहार । —मा. का. प्र.

रितिराइ, रितिराउ, रितिराज—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

उ० —१ रितिराइ कहता बसंत तें कै पमाइ करि जन मनुष्य आगि सो सपरस करता था सु तें दुखते रहता हुआ । —वेलि टी.

उ० —२ हिवइ रितिराउ कहता वसत रिति सरूपियौ जोवन सु आपणा नाना प्रकार गुण गति मति सहित यौं परिगह ले आयौ । —वेलि टी.

उ० —३ तठा उपराति राजान सिलामति रितिराज वसत वैसाख मास रा सगळाचार विमाहरा सुख विलास करता सरद रित आई छै । —रा मा स

रिती—देखो 'रीति' (रू भे)

रितु–सं स्त्री [स ऋतु] १ ऋतु, मौसम ।

उ० — १ माते गयद घने गरजै घन की रितु मानो घटा घहरानी । 'बक' निसान लसै फहरान पिसाच रुप्रेत उमग सी आनी । —बा. दा.

उ० - २ गग यमुना चमर ढालइ छह रितु पुस्प पुरइ सरस्वती वीणा वाइ तुबर गीत गाइ, रभा तिलोत्तमा नाचइ, नारद ताल भरइ - व. स

उ०— ३ छ रितु माहि धिन धिन, ए रितु रूडी वसत । दवदती नू जेणी रतिइ ठरीउ तेहनू चीत । - नळदवदती रास

उ० - ४ छह रितु बारै मास गिण आयो फेर बसत । सो रितु सूभ बनाइ दै तिय न सुहावै कत । —अग्यात

वि वि.—प्राकृतिक दशाओ मे होने वाले परिवर्तनो के अनुसार मौसम की स्थिति भी बदली रहती है । प्रत्येक वर्ष अर्थात् बारह मास मे मुख्यतया तीन प्रकार की स्थितिया आती हैं—(१) सर्दी (२) गर्मी तथा (३) वर्षा । भारत-वर्ष मे वर्ष भर की मौसम का वर्गीकरण करके इसे छै भागो मे विभक्त किया गया है । प्रत्येक भाग की अवधि दो मास की मानी है और प्रत्येक भाग को एक "ऋतु" माना है । इस प्रकार वर्ष में कुल छै ऋतुए होती है, जिनके नाम इस प्रकार हैं—वसत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ।

२ जलवायु, आबोहवा ।

३ प्रदर-प्रवर्तन-काल ।

४ उपयुक्त या ठीक समय। निर्धारित समय।

उ०—ऊनमि आई बद्दळी, ढोलउ आयउ चित्त। यो बरसइ रितु आपणी, नइरण हमारे नित्त। —ढो. मा.

५ रजोदर्शन।

६ रजोदर्शन के उपरान्त का समय जो गर्भाधान के लिये उपयुक्त काल होता है।

७ प्रकाश, चमक।

८ सत्य या उच्च वृत्ति से किया जाने वाला निर्वाह।

९ छै की संख्या। * (डिं को)

रू भे—रति रित, रिति, रितु, रुत, रुति, रुत्ति रुत्ती।

रितुकाळ—स पु. [स ऋतु काळ] १ रजस्वला होने का समय। (स्त्री.) २ रजो दर्शन के बाद १६ दिनो का समय जब स्त्री गर्भ धारण करने की स्थिति मे होती है।

रितुगमन—स पु [स. ऋतु-गमन] ऋतु काल मे किया जाने वाला सभोग या मैथुन।

रितुगांमी—वि [स ऋतु-गामिन्] समय या काल के अनुसार स्त्री ससर्ग करने वाला।

उ०—रितुगांमी व्है सील राखियो, पुत्रोत्पत्ति फळ पाई। पति पतनी दपति पियै प्यारी, नवला नह निभाई। —ऊ. का.

रितुचरय्या—स स्त्री [स ऋतु-चर्य्या] किसी मौसम के अनुकूल किया जाने वाला आहार-विहार।

रितुदांन—स पु. [स ऋतु दान] १ ऋतुमती स्त्री के साथ सतान की इच्छा से किया जाने वाला सभोग।

२ गर्भाधान की क्रिया।

रितुपति—स पु [स ऋतु-पति] वसत।

उ० नउ अवतरिउ रितुपति तपति सु मन्मथ पूरि। जिम नारीय निरीक्षिण दक्षिण मेल्हइ सूरि। —जयशेखर सूरि

रू. भे—रितपति, रितपती।

रितुपरण—स पु [स ऋतु-पर्ण] इक्ष्वाकु वशीय राजा अयुतायु का पुत्र जो द्यूत क्रीडा मे अत्यन्त निपुण था। इसने आपात्त स्थिति मे नल राजा की सहायता की थी।

रू भे.—रितपरण।

रितुपरस—स. पु. [स ऋतु-स्पर्श] श्वान, कुत्ता। (अ मा.)

रू भे—रतपरस।

रितुमती—स. स्त्री. [स ऋतु-मती] रजस्वला स्त्री, (मादा पशु भी)

उ०—वी समै भूडण रितुमती हुई थी सो भूडण नै आसा रही। महीना पूरा हुआ जद चील्हर पाच जाया।—डाढाळा सूर री वात

रितुराइ, रितुराउ, रितुराज—स पु [स ऋतुराज] वसत।

उ०—१ भरिया तरु पुहप वहे छूटा भर। कांम बाण प्रहिया करगि। वळि रितुराइ पसाइ वेसघर, जरण भुरडीतो रहै जगि। —वेलि

उ०—२ मीठि मनउ अवधि, रितुराउ वसतनउ प्रणधि, उद्यान वन माहि आणिउ, विलासीए वखाणिउ··· —व. स

उ०—३ सखी अमीणो साहिबो, वाकम सू भरियोह। रण विकसै रितुराज मैं, ज्यू तरवर हरियोह। —बां. दा

रू भे.—रतराज, रितराज, रितराव, रितिराइ, रितिराउ, रितिराज, रुतिराई।

रितुवंती, रितुवती—स. स्त्री. [स ऋतुमती] रजस्वला।

रितुसनान, रितुस्नांन—स. पु. [स- ऋतु-स्नान] रजस्वला होने के चौथे दिन किया जाने वाला स्नान।

रितू— देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—हरनाथ 'कान्ह' सोजत जग कर काम आया अडतीस (१७३८) वरखा रितू। —रा रू.

रितेज—स पु [स रिक्-तेज] तारा। —अ मा.

रित्रुपरण देखो 'रितुपरण' (रू भे)

उ०—पुत्र तासु रित्रुपरण बुधि प्रकास। सुत जासु रित्रुपरण रै सुदास। —सू प्र.

रित्विज—स. पु. [स. ऋत्विज] यज्ञ मे पुरोहित के रूप मे कार्य करने वाला व्यक्ति। यज्ञ करने वाला। ये साधारणतया चार होते हैं और बडे यज्ञ मे ऋत्विजो की सख्या १६ होती है।

रू भे—रितविज।

रिद—स पु [स ह्रद] १ जलाशय, सरोवर, तालाब।

उ०—रामानुज रिद गुपत रखावै, सिडियो नीर वास सरसावै; माहि सिवाल जाल नहि मावै, पैसे विन छाटी नहि पावै। —ऊ का.

२ झील।

३ ध्वनि, आवाज।

४ किरण।

५ देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

रिदय—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—१ ब्रह्मा विसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वथ किय। रिदय निलाट अरि नाभिहू, वह्मा विसन महेस थिय। —रा. वसावसी

उ०—२ कोहलि कालि माधवउ, मुभलइ मिलइ वाणि। राखी रीस रिदय-महि, मूढ! मराविसि वाणि। —मा. कां प्र.

उ०—३ माई! मभनइ ऊपनी एक असभव व्याधि। रिदयइं रसोली विट थइ, मन नही मोरि साधि। —मा. का. प्र.

उ०—४ भाद्रवडइ सरोवर भरिया, नीर निरतर होय। रिदया-भीतरि हु रहु, नीर निवारि न कोइ। —मा का प्र

उ०—५ तनु तरणा मरवु हवु, बूटइ रंग हिबालि । वनिता बुमलइ बागल्यइ, रहि रिबवा नी ओलि । —मा का. प्र

रिबी—देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

उ०—१ नेज कुमेर रिबी बरण नारी । भुम्रग नेज उदर बरण भारी । —मा. बचनिका

उ०—२ ऐसें चित रही चौपरि मैं, हामें दाव सुबारी । यु राखत हरि नाव रिबौं मैं, तो जुग पारि उतारी । —अनुभववाणी

उ०—३ स्याम भजै ताम सुखी, दाम भजे और दुखी । सीतपती गाव सदा, राख जिको ध्यान रिबा । —र. ज. प्र

रिद्ध—स. पु. [स ऋद्ध] १ विष्णु का एक नामान्तर ।

२ देखो 'रिद्धि' (रू भे)

उ०—१ जुवारी घर रिद्ध कस, आकड कठे हार । गहला माथै बेवडी, कुसळ वे केती बार । —पचदडी री वारता

उ०—२ हुरम कबीला रिद्ध तर, साथै मीर प्रचड । दश वामै कर चल्लियौ, आसा खड विखड । —रा रू

उ०—३ नळ राजा नरवर रहै, आछै रिद्ध अपार । भली अनोपम भामिणी, मुख माणै संसार । —ढो मा

उ०—४ दरसांण भद्रराय रिद्ध तणौं, अभिमांन कीधौ आप । इद्र ने पर्ग लगावियौ, परम तणौ परताप । —जयवाणी

उ०—५ ताहरा राजा स्याम सुंदर दीठौ, "ते भल्यां नहीं । विरक्त हुई नै ऊठि चालीयौ, राज-रिद्ध सब छेडि नै चलीयौ ।

- स्यामसदर री वात

रिद्धि—स स्त्री. [स. ऋद्धि, प्रा रिद्धि] १ लक्ष्मी देवी ।

२ पार्वती देवी ।

३ कुबेर की पत्नी जो नल कूबर की माता थी ।

४ गणेश की अनुचरी एक देवी ।

५ वरुण की पत्नी ।

६ एक अलौकिक शक्ति ।

७ धन, द्रव्य, सम्पत्ति, निधि, पूजी ।

उ०—१ रिद्धि न मांगू सिद्धि न मागू, मुक्ति न मागू बडाई । साधु सगत मागत हूं देवा, क्रपा कर बगसाई ।

— स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ एतलौ धन तौ दीसै नही, क्याई थी काढइ छै सही, तेह नै पासे छै कांइ सिद्धि, खरचतां खूटै नइ रिद्धि । --वि कु

उ०—३ पुत्र कलत्र बरग यौवन रिद्धि, देव लोक नी अनती सिद्धि । संसार मांहि छइ सहू सलभ, जिण सासण एक छइ दुरल्लभ ।

— वरिनग

८ ऐश्वर्य, वैभव । ९ सफलता । १० वृद्धि, बढोतरी ।

११ पूर्णता ।

१२ एक लता विशेष, जिसका कद औषध के काम आता है ।

१४ वैद्यक में अष्ट वग के अन्तर्गत एक औषधि ।

१५ आर्या या गाथा छन्द का भेद विशेष जिसमे प्रथम चरण मे ६ दीर्घ वर्ण सहित १२ मात्राए द्वितीय चरण मे आठ दीर्घ और दो ह्रस्व सहित १६ मात्राए तृतीय चरण मे ६ दीर्घ वर्ण सहित १२ मात्राए और चतुर्थ चरण मे ७ सात दीर्घ वर्ण एक ह्रस्व सहित १५ मात्राए कुल ५७ मात्रा का छद विशेष ।

रू. भे.—रिद्ध, रिद्धी, रिध, रिधि, रिधी, रिधु, रिधू, रीध, रिध्धि, रद्धि ।

रिद्धिवत, रिद्धिवती—धन एव वैभव का स्वामी ।

उ०—वीर कहै सुण गोयमा, भय नही हो पर चक्र नो कोय । तिहा 'सुमुख' गाथापति, ए हुंतो रिद्धिवतो सोय । --जयवाणी

रू. भे —रिधवत ।

रिद्धिसिद्धि—स स्त्री [स ऋद्धि-सिद्धि] १ गणेश की दो पत्निया, ऋद्धि एव सिद्धि । ये धन, समृद्धि और सफलता प्राप्त कराने वाली दो देविया मानी जाती है ।

२ सभी प्रकार की समृद्धि, वैभव और धन-दौलत की परिपूर्णता की अवस्था ।

३ द्रव्य, समद्धि ।

रू. भे —रिधसिध, रिधिसिधि ।

रिद्धी—देखो 'रिद्धि' (रू भे)

उ०--१ मेघ कवर जिम महिमा कीधी, स्याना मे प्रसिद्धी जी । माता पिता ए आग्या दीधी महोच्छव कियो अति रिद्धी जी ।

—जयवाणी

उ०--२ ध्यान साथ सिद्धी जैसे ग्यान साथ रिद्धी गेह, नीनी साथ सिद्ध नव सग रघुराई के । -उ का

रिद्धौ—देखो 'रिद्धी' (मह , रू भे)

उ० —ए ससार असार छद, छोडउ राज नइ रिद्धौ जी । तप सजय तुम्हे आदरउ, सीघ्र लहउ जिम सिद्धौ जी । —स. कु.

रिध—स पु —१ तरह, भाति, प्रकार ।

उ० सुजड-हथा "चाडराउ" समोभ्रम विधि वीरातन वैर विधि । रोस जई पर्वाग आसण रिध, रिप तई भजै राज रिधि ।

—गु रू. ब.

२ घर, मकान ।

३ वह भोज मे सर्वप्रथम निकाल कर सुरक्षित रक्खा जाने वाला भोजन का अश ।

४ देखो 'रिद्धि' (रू भे) (ना मा., ह. ना. मा)

उ०—१ दियण बुद्धि रिध सिद्ध, विघन छेदन लबोदर । नारसिंघ

हणमन, प्रबळ नह खडी ग्रम्मर । —गु. रू. ब.

उ०—२ राखै सप जिका धन राखै, बाको दाखै साच विध । न्याय नीमडै जितै नीमडै, राज चढै ज्यां तणी रिध । —बां. दा.

उ०—३ भ्रिगु पुरोहित रिध तज नीसरयौ । भूपत रे धन लाबण री काम । —जयवांणी

रिधदाता—वि.—दानी ।

उ०—नाकारी जाणै नही, उभौ जा लग माथ । रिधदाता रेसामेयौ, उणत ग्रनै ग्रनाथ — रेसमीयै री बात

रिधवत—देखो 'रिद्धिवत (रू भे)

उ०—भद्दलपुर माहे वसे जी, 'नग' सेठ रिधवंत । 'सुलसा' तेहने भारिया जी, रूप मे घणी सोहन । —जयवाणी

रिधसार—वि —धनवान, ग्रमीर ।

रिधसिध—देखो 'रिद्धि सिद्धि' (रू. भे)

उ०—१ समापगा बाभण ना रिधसिध, दमोदर दान बडो तै दीध । —पी. ग्र.

उ०—२ सहजा जोग जुगती भी महजा, महजा रिधसिध दासी । महजा गिगन ध्यांन धुनि लागी, सहज मिल्या ग्रभिनासी । —ग्रनुभव वांणी

रिधि—देखो 'रिद्धि' (रू भे)

उ०—१ जेणि जई नल राजा ज्याच्यु ते बीजी वार नवि मागि । ग्रनेक यग्य करी धन खरचू तोहि रिधि न भागि । — नळाख्यान

उ०—२ राजा रिधि छइ ग्रापणइ ईण परि पूरजई मन की ग्रास —बी. दे.

उ०—३ दीधी बाळकिसन तणा, पण ऊपरै विस्राम । साथ लिया रिधि साम री, नव ही रिद्ध निवास । —रा. रू.

रिधिसिधि—देखो 'रिद्धिसिद्धि' (रू. भे)

उ०—रिधिसिधि सब ही दासी, जोडै हाथ खडी । इनके रग राचे नही कबहू, ग्रातम जाण जुडी । —स्री सुखरामजी महाराज

रिधी—देखो 'रिद्धि' (रू. भे)

रिधीसिधी—देखो 'रिद्धि सिद्धि' (रू. भे)

रिधीसिधीदाता—सं पु.—१ गणेश, गजानन ।

स. स्त्री.—२ लक्ष्मी ।

रिधु, रिधू—स पु.—१ निश्चय ।

उ०—सहकोय साजत करौ सुमडा विरद ग्रल वरियांम । कुळ जनक कुमरी ब्याह करसी, रिधु बरसी राम । —र रू

वि.—ग्रटल, स्थिर ।

उ०—१ सार ग्राचार कुळ भार धरिया सुरिंद, सुतण 'सादूल' जवि दीह साजै । रहोजी एतला थोक काइम रिधू रिधू 'नौळा' तणौ वचन राजै । —नाथौ सांदू

उ०—२ पूठ दुरगै बडा घातिया प्रवाड़ा, कवेसुर बात जुग च्यार कहसी । राण चीतोड री राज पायौ रिध बडा राठोड री धाक बहसी । —दुरगादास राठोड री गीत

२ रिद्धि वाला, धनवान, समृद्धिशाली ।

उ०—१रिधू गोत कनवज्ज रहायौ । ग्राप चमू सग दरसण ग्रायौ । प्रसन करै जिण सारग पाणी, एकण छत्र धरा धर ग्रांणी । —रा रू

उ०—२ रिधू लाख पाता भदा काजि रूपा, इको एक वाधू ग्रनूपे ग्रनूपा । —रा रू

३ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—'गोयद' 'भगवानौ' 'फतौ', ए धाधल्ल उदार । रैणायर प्रोहित रिधू, द्याळदास सिकदार । —रा रू.

क्रि वि —१ हमेशा, प्रतिदिन, नित्य ।

उ०—जोय दिन बीज बंदै जगत जेण ने, रिधू बदै तनै सुग्रस रोडै । तितर गुण इधक बाखाणजे ताहरा, जाण जै किसी विध बद जोडै । —र. रू

२ देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—ग्रद्दयौ सगति ग्रनत, प्रगट किया सारी प्रथी । मुदराळी मैंमत रातखी तू हीज रिधू । —मा वचनिका

रिध्धि—देखो रिद्धि' (रू भे.)

रिन—देखो 'रण' (रू भे)

उ०—भारी तुज्ज भरोस । रिन मे थित बाघे रहघा । खीची लीनी खोस सारी मो वाली सुरै । —पा. प्र.

२ देखो 'रिण' (रू भे)

रिप—देखो 'रिपु' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह ना. मा.)

उ०—१ मरथ न को बळ हत्थ के, ना जीपै छळ मरा । जै पामै रिप संग्रहै, तप हूंता छत्रपत्त । —रा. रू

उ०—२ सुजड हथा 'चाडराउ' समोभ्रम, विधि बीगनन बैर विधि । रोपै जई पवगि ग्रासण रिध, रिप तई भजै राज रिधि । —गु. रू ब

रिपइयौ—देखो 'रुपयौ (रू. भे)

उ०—गूजर माग्या पांच रिपइया, बी पकडाया मान । गूजर कै नै राजी करकै, मींडो ल्याया टाळ । —डूंगजी जवारजी री ग्रावळी

रिपनाट—वि.—शत्रु के ग्रागे नही झुकने वाला ।

उ०—रिपनाट परमळ हाट राबळ, धरण परधर धाट । पित-पाट-रालण पाटपत, नृप काट हुत निराट । —नैणसी

रिपपतंग—स. पु. [पतग+रिपु] दीपक । (ना. मा.)

रिपबळी—स पु.—इन्द्र । (ना. डि को.)

रिपयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

रिपव—देखो 'रिपु' (रू. भे.)

रिपियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—१ रिपिया हाथ वसू कर परा'र पछै व्याह री बात कैया।
—दमदोल

उ०—२ इणरी कहि रिपिया पांच छड़ीदार नै इनाम रा देय विदा कियौ। —पलक दरियाव री बात

रिपु, रिपुग्ग—स. पु [स. रिपु] १ शत्रु, बैरी, दुश्मन।

उ०—१ करि सारत भ्रम दब्बि ईस नरपत्ति भ्राडबर। सिर मंकर दौडियौ, जांण कोप रिपु सबर। —रा. रू.

उ०—२ सादूळ प्रमगळ सिह सावज, प्रीठ केहर मयद रिपु गज। बांण बाघ लंकाळ वनरज, दोख गम दाढाळ। —गु. रू. ब

उ०—३ जरा रिपु भेमज के ढिग जाय। महाजन जामरा मरण मिटाय। —ऊ. का.

उ०—४ भूप भ्रनम्मी भाळबा, घरा रिपु करण सहार। ते कूरम इळ पर उभै, जनम्या डूंग जुहार। —डूगजी जवारजी रौ गीत

उ०—५ रिपुग्ग देत्य कस सी, प्रजेत मुल्लती रहै। विजेन बीर बंस की विनेत घल्लती बहै। —ऊ. का.

२ गुणो की दृष्टि मे वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के प्रभाव या गुणो को नष्ट करने की क्षमता रखती हो।

३ जन्म कुण्डली मे लग्न से छठा स्थान।

रू. भे.—रिप, रिपव।

रिपुता—स. स्त्री. [स. रिपु+प्र. ता] १ शत्रु होने की अवस्था या भाव।

२ दुश्मनी, शत्रुता, वैरभाव।

रिपुप्रताप—स. पु.—शत्रु का प्रताप, प्रभाव, रौब।

वि —गर्म। * (डि. को)

रिपू—देखो 'रिपु' (रू. भे.)

उ०—काम रिपू कूं सील सूं मारघा, लोभ कूं मारघा त्याग। क्रोध कूं माय सतोख झपेट्या, मोह कूं ले बैराग।
—स्री सुखरामजी महाराज

रिप्पियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

रिबकणौ, रिबकबौ—क्रि. स.—इधर उधर आवारा फिरना, घूमना।

रिबको—सं पु.—कष्ट, तकलीफ।

रिबणौ, रिबबौ—क्रि. अ.—१ कष्ट पाना, तकलीफ पाना।

२ व्याकुल होना, त्रस्त होना।

३ तड़फना, छटपटाना।

रिबियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कष्ट पाया हुआ, तकलीफ पाया हुआ. २ व्याकुल हुआ हुआ, त्रस्त हुवा हुआ. ३ तड़फा हुआ, छटपटाया हुआ।

(स्त्री. रिबियोड़ी)

रिभु, रिभू—स. पु. [स. ऋभु] देवता। (अ मा, ह. ना मा.)

रिभूखी, रिभूक्षी—स. पु. [स. ऋभुक्षिन] इन्द्र। (अ. मा., ह. नां मा.)

रिमंद, रिम—स. पु. [स अग्मि] शत्रु, दुश्मन, वैरी। (अ. मा.)

उ०—१ बाथे ऊबाणा मुमेर पाथै तेरसा अचूक बाण। राणवाळा गाढि बेळा बेरसा रमाज। रिमंदा उखेड जाडा मेरसा गजां रा गौड, मामना समान रावै येरसा समाज।
—सनमानसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ तीर कबाणा तोकि, रिमां ऊपर रीमाणा। त्राणां पोस नत्रीठ, पीठ खटक खग पाणा। —मे. म.

रू भे —रिमि।

रिमक झिमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे)

उ०—म्हारै रिमकझिमक भाती आज्यौ। वीरा, म्हारे काना ने पत्ता लाज्यौ। —लो गी

रिमजोळ—देखो 'रिमझोळ' (रू. भे)

उ०—औ कोई गैणौ थोडौ ई है जको थारा पग म पजावू। मोती जडी रिमजोळां रै रगडको लाग जावैला। —फुलवाडी

रिमझिम—स स्त्री [अनु] १ छोटी-छोटी बूदो मे धीरे धीरे होने वाली बरसात, वर्षा की हल्की फुहार।

उ०—मन री भेद लुकाती, नैणा आसूडा ढळकाती। रिमझिम आवै बिरखा बीनणी। —चेतमानखी

२ पैरो की पायल या नूपुर आदि की ध्वनि।

उ०—रिमझिम रिमझिम बिछिया बाजै। ठनक ठनन बाजै पायलडी। होळी आई ए। —लो गी.

३ ध्वनि, शब्द, झनकार।

उ०—१ आसी ओ बाईजी। पाल भवर री जान कोई, रिमझिम करता आसी करला-घोडला, ए मोरी सइया। —लो गी.

उ०—२ भळहळ छकडाळ पाखरा रिमझिम, प्रळवळता असवार उभा। दहु दळि वीचि बाजिया दमामा, सांमै तौ ऊपरै 'सुभा'।
—सुभराज गौड रौ गीत

क्रि वि.—१ छोटी-छोटी बूदो मे, धीरे-धीरे।

उ०—रेवड वाळै री प्रलगोजो गूंज उठ्यौ। रिमझिम-रिमझिम मेवलो बरसै। अतै मे ही अचाण चूको पून रौ एक लहरौ आयो अर बादळी उडगी। —कन्हैयालाल सेठियौ

रू. भे —रमाझमा, रमझम।

रिमझोळ—स. स्त्री.—१ स्त्रियो के पावो मे पहनने की घुंघुरूदार चूडी, पायल, नूपुर।

उ०—१ रग रंग री पोसाका करि आवै छै। जिके अपछरा का सा

भूल दरसावै छै। चमकता रिमझोळां गोर कनै आइ। —पना
उ०—२ मा रिमझोळां री रिम्मा-झिम्मा रणक सुणीजी। इण रणक सूं ऊंचौ की नाद नी। —फुलवाड़ी
२ मस्ती में घूमने की क्रिया या भाव।
उ०—किरडा कर रिमझोळ, डोल डाळचां रंग चोळै। ऊदरियां री झोळ कोळ बिल जडा टटोलै। —दसदेव
रू. भे.—रमजोळ, रमझोळ, रमझोळी, रमिझोळ, रामझोळ, रिमजोळ।

रिमझिमक–स स्त्री.—पायल, नूपुर या घुंघरू आदि की ध्वनि, झनकार, ध्वनि।
रू. भे—रमझमक, रिमकझिमक, रमकझुमक।

रिमणी—देखो 'रमणी' (रू भे)

रिमथाटचूर–वि.—शत्रुदल का संहारक।
उ०—'राजौ' निराट रिमथाटचूर 'सावळ' सुतन्न ऊजळौ सूर। अभनमौ भोज अणखूट चाड। घण कोपि आबू चड वरण धाड। —गु. रू. बं

रिमपथल्ल–वि.—शत्रुदल को गिराने वाला, पराजित करने वाला।
उ०—"देदौ' भिडत दाठक्क मल्ल। "राणावत' रूकै रिमपथल्ल। —गु. रू. ब.

रिमराह–स पु.—शत्रुओ के लिये राहु रूप। शत्रुओ के लिए काल रूप।
उ०—१ पळ खूटा पतिसाह, कर आवध वाहे किलब। मारहथै मरि मारिऐ, रिण गौदौ रिमराह। —वचनिका
उ०—२ हाथळ खळ पटकै केहरी हठमल, रायसाल दूजौ रिमराह। चौडै खेत अखाडै अणचळ, बाकडमल ओखळ खगबाह। —ठाकुर नवलसिंघ सेखावत रो गीत
उ०—३ रिण दूल्हो रिमराह, इद थप्पूं उथप्पूं। अकह कहणी करै, अवस पदमिण तू अप्पू। —मा. वचनिका
उ०—४ वह कोट ऊथाप धरा थरसलै, रिम रेसा रेसे रिमराह। रायापाळ वसै रढ-रामण, बाघा दहू विचै बाराह। —राव रायपाळ रौ गीत
रू भे.—रिमाराह, रिमिराह, रिम्मराह।

रिमरेसौ–वि.—शत्रुओ को पराजित करने वाला।
उ०—वह कोट ऊथाप धरा थरसलै, रिमरेसा रेसे रिम-राह। राया-पाळ वसै रढ-रामण, बाघां दहू विचै बाराह। —राव. रायपाळ रौ गीत

रिमहर, रिमहरि, रिमहरी–वि.—शत्रु वंशज, शत्रु।
उ०—ऊभटतौ तुरी ऊनागो अममरि, समहरि भगत मिवा मिव माज रिमहरि कहिरि मूंड 'रतना' हर, कुळवट करै इसट वट काज। —महाराजा राजसिंघ राठौड़

रिमाराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे)
उ०—देवडौ "अचळ" दोमज दुबाह, 'रावत' समोभ्रम रिमाराह। "डूगरे" मेर" "परबत" "माळ", अरबद् अडारै-गिरि उजाळ। —गु रू. ब

रिमासाल–वि.—शत्रुओ के लिये शल्य रूप।
उ०—महाजोर 'वाला' अनै 'जैतमाला', धणी अग्र वागा खगै जग ढाला। रिमासाल 'पाना' 'भदा' ढाल 'रूपा' जुडै 'ऊहडै' बकडा भार जूपा। —रा. रू.

रिमि—देखो 'रिम' (रू. भे.)
उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया गेम गमाया गुण गाया। धिणीयाणी धाया विलब न लाया आराधा ना सुणि आया। —पी. ग्र.

रिमिझिमि—देखो 'रिमझिम' (रू. भे)
उ०—रिमिझिमि रिमिझिमि भिझिम कसाल कररि कररि करि घट पट ताल। भर्र भरर सिरि भेरिम्र नाद पायडीउ आलवीउ नाद। —हीराणंद सूरि

रिमणी, रिमवौ—देखो 'रमणी, रमवौ' (रू. भे.)
उ०—दईव दईता मरिसि धरिणि हेठी दियै, लाखिवर दईत री मास भझपै लिऐ समदरै ऊपरा पानि बडरै सूधं, जोरावर दईत साभळी रिमियौ जुऐ। —पी. ग्र.

रिमिराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे)
उ०—साध गरीब सुधारिसै, रिमा तणौ रिमिराह। पिडता पाट पधारिसै, पछिम तणौ पतिसाह। —पी. ग्र.

रिमुक्त, रिमुक्क–स. पु [स. ऋमुक्त] ४९ क्षेत्रपालो मे मे ८ वा क्षेत्रपाल।

रिमेस–स पु—शत्रुओ का अधिपति।
उ०—दळा सूर लडतै थापडै धूजै दसू देस, पूरै भे रिमेस करै, दरवेस वेस। नूर विकतेस बधै खीण कै लकेस नूर, धिवेसूर हिंदरा दिनेस कमंधेस। —दवारकादास दधवाडियौ

रिम्म—देखो 'रिम' (रू भे)
उ०—(महा) मौड मुरधर तणा खला दल मोडता, दौड पतिसाह सु करै दावा। रौड रमतां थकां 'चौंड' रिम्म चूरतां, ठौड ही ठौड राठौड ठावा। —ध. व. ग्र.

रिम्मराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे)
उ०—रतनसी चईनउ रिम्मराह। माकडट सत्रा सामी मनाह। —रा. ज. सी.

रियांण—स. पु.—१ सगाई ठहरने पर वधू के पिता द्वारा अफीम गलाकर अपने भाई बंधो व समधियो को पिलाने की रस्म। (बाभी)
२ अथाई, बैठक।

रियाई—देखो 'रिहाई' (रू. भे)

रियाबेल—सं स्त्री.—एक लता विशेष।

उ०—सोनजुह रियाबेल चंबेल चबेली के फुलवाद मोगरे की महक गुलाब फूल की सुगंध जवाद। —सू प्र

रियायत—देखो 'रिग्रायत' (रू भे.)

रियासत—स. स्त्री [अ] १ भारत में ब्रिटिश-शासन के अन्तर्गत देशी राजाओ के राज्य।
२ वह क्षेत्र जो किसी एक राजा के शासन मे हो। राज्य।
रू. भे.—रयासत।

रियासती—वि.—रियासत का, रियासत सम्बन्धी।

रिरायोड़ी—देखो 'रीरायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. रिरायोड़ी)

रिरावणी, रिराबबो—देखो 'रीराणी, रीराबो' (रू भे.)

उ०—भुवाळी खावती फिरै। घर घर गेडा काटै। मिनखा मे रिरावै, लीलडी काढै। गव्हायांरी गरज करै, बकीला सूं बैंम राखै। —दसदोख

रिराबियोड़ी—देखो 'रीरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. रिराबियोडी)

रिळ—स. पु.—मिलने या एक होने की अवस्था या भाव।

• **रिलकियो**—सं. पु.—फटे पुराने वस्त्रों (चिथडो) की बनी हुई छोटी गद्दी।

रिळणी, रिळबो—देखो 'रळणी, रळबो' (रू. भे)

उ०—१ रांम नामे रग रिळ कामनि कुसग किळ, मोहन के सग माजनो गमातो। —ऊ. का.
उ०—२ पहै बळ नीर रिळै प्रथमीज, भूवा उर भीडव लीन भतीज। —पा प्र
रिळणहार, हारो (हारौ), रिळणियो—वि.।
रिळियोड़ो, रिळियोड़ो, रिळयोड़ो—भू. का कृ.।
रिळीजणो, रिळीजबो—भाव वा.।

रिळमिळ—क्रि. वि.—हिलमिल कर, सम्मिलित रूप में, एक साथ।

उ०—इसडी बधावो सायबा, मोल मगायदो जी। देवर-जेठाण्यां रिळ मिळ गावस्यां जी। —लो गी.
रू. भे.—रळमिळ, रळिमळि।

रिळमिळणो, रिळमिळबो—देखो 'रळमिळणी, रळमिळबो (रू. भे.)

उ०—लूटै घर साधो लगै, सूनै महल चिराग। रूठा राजद रिळमिळै, आइयो मिन ऐराक। —फुलबाड़ी

रिळमिळियोड़ो—देखो 'रळमिळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. रिळमिळियोडी)

रिळाणो, रिळाबो—देखो 'रळाणी, रळाबो' (रू. भे.)

उ०—१ बैठक करो तो सूवा चादणी रिळाऊं रे। प्रेम ही प्रताप सूवा झाभरी बजाऊ रे। —मीरां

रिळायोड़ो—देखो 'रळायोडो' (रू, भे.)
(स्त्री रिळायोडी)

रिळियोड़ो—देखो 'रळियोडो' (रू भे.)
(स्त्री रिळियोडी (रू भे)

रिव—१ देखो 'रवि' (रू भे.)

उ०—१ कमठ भार कसमस्स, दाढ वाराह खडक्कं। मडळ मेर मेग्वळा धमस धूजी रिव ढक्कै। —गु. रू. ब.
उ०—२ मवळा साड निबळ साधारण अवजै नू साग बर जोर। किव राणा कीधा कैलपुरा, हिदवाणा रिव विया हमीर।
—हरिदास चारण
उ०—३ तिवर गया रिव तेज ते, तेज गया निस पात। हरीया ग्यान विचारते, होय करम का नास। —अनुभववाणी
२ देखो 'रव' (रू भे.)
उ०—राक सा कर रिव पगी केरी, भूमत्रातइ मेल्ही फेरी। तीणि बात मनि हुउ लाजउ, सैन्य कौरव तणो नवि भाजउ।
—सालि सूरि

रिवताळ, रिवताळो—देखो रावताळो' (रू भे)

उ०—सुणता इम तारिणया धासाहर, कोटा लग छविया कटक। ऊभा पगा न देगी इजत, रिवताळो लेसी रटक।
—बळवतसिंह हाडा रौ गीत

रिवमंडळ—देखो 'रविमडळ' (रू भे)

उ०—है-खुर रज ऊछळी रजी लग्गी रिवमंडळ। चडी सेस सिर-हत्थ, पुहवि गाहट पग्गा तळ। —गु. रू. ब

रिववास—देखो 'रैदास' (रू. भे)

उ०—या सूं दास कबिरा नानग, काळ 'र जाळ कढीजै। या सु जन रिववास उधरिये, मीरा वात वलीजै। —अनुभववाणी

रिवबंसी—देखो 'रविवंसी' (रू. भे.)

उ०—रिडमल पाट जोध रिवबंसी। दळ रखवाळ थयो प्रम असी।
—रा. रू.

रिवाज—स. पु [अ.] प्रथा, रीति, रस्म।
रू. भे.—रवाज, रवेज।

रिवी—देखो 'रवि' (रू. भे.)

रिवीसुत—देखो 'रवितनय'

रिसंख—देखो 'रिसि' (रू. भे.) (जैन)

रिसगारौ-वि.—क्रोधी स्वभाव का।

उ०—लीवौ रिसगारौ घणौ, हू समझाऊ जाय। फिकर करौ ना ठाकुरा, मन महं धीरज लाय। —सूरै खींवै कांधळोत री बात

रिसणौ, रिसबौ-क्रि. प्र. [स. रसन] १ द्रव पदार्थ का धीरे धीरे बहना, रसना।

२ टपकना, चूना, झरना।

उ०—१ बेटा नै बतळायौ, की जबाब नी मिल्यौ। ठौड ठौड़ लोई रिसतौ हौ। गाभा फीर फीर व्हैगा हा। —फुलवाडी

उ०—२ भर यूं दीवांणजी रा होठ सूज्योडा, लोई रिसै, बोलता तकलीफ इज व्हैला, आपरौ हुकम व्है तौ म्हैं अरज कर दू।

—फुलवाडी

३ समाना, आत्मसात होना।

उ०—वेकळू रेत रा लाठा धोरा मे विरखा रौ पांणी रिसै ज्यू उण राज री रया रै अतस मे सगळा अकरम अन्याव झरै, बुडकौ ई नी ऊठै। —फुलवाडी

रिसणहार, हारौ (हारी), रिसणियौ—वि।

रिसिओड़ौ, रिसियोड़ौ, रिस्योड़ौ—भू. का कृ.।

रिसीजणौ, रिसीजबौ—भाव वा.।

रिसतेदार—देखो 'रिश्तेदार' (रू. भे.)

रिसतौ—देखो 'रिस्तौ (रू. भे.)

रिसपत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

उ०—नाम रिसपत को मिटायौ है रियासत सौं। साफ इनसाफ होत संत औ असत कौ। —कविराजा मुरारीदान

रिसपतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू भे.)

रिसपतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसपतियौ, रिसपती—देखो 'रिस्वती' (रू. भे.)

उ०—भावी वस पडिया दुख भुगतौ, जुजमांना जिण री की जोर। सिर साटै लीधौ घर सूरा, खाटै रिसपतिया नै चोर। —अग्यात

रिसफत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

उ०—भूप असवता व्है न चिंता सुख सता लेत। जमा खूब जता रिसफत का न पता मैं। —जुगतीदान देथौ

रिसबत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

रिसबतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

रिसबतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसभ-सं. पु [स ऋषभः] १ नाभि तथा मरुदेवी का पुत्र एक राजा जिसको यज नामक इन्द्र ने अपनी कन्या जयन्ती ब्याहि थी।

वि. वि.—जयन्ती से इसके सौ पुत्र हुवे जिनमे भरत सबसे श्रेष्ठ था। इसने अपने राज्य को नौ खण्डो मे विभक्त करके अपने नौ पुत्रो को दे दिया और स्वयं ससार से विरक्त हो गया। इसने प्रजा को धर्मानुकूल बनाया और पुत्रो को ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया। इसने पश्चिमी भारत मे जैन धर्म का प्रचार किया।

२ विष्णु के २४ अवतारों मे एक, जो दक्ष सार्वर्णि मन्वन्तर मे आयुष्मान व अबुधारा के पुत्र के रूप में हुवा।

३ व्यास के निवृत्ति मार्ग का प्रसार करने के लिये होने वाला शिव का एक अवतार, जो वाराह कल्प के वैवस्वत मनवन्तर के अन्तर्गत हुआ। पराशर, गर्ग, भार्गव, गिरीश इनके शिष्य हुवे।

४ इन्द्र आदित्य का पुत्र।

५ स्वरोचिष मन्वतर के सप्त ऋषियों मे से एक।

६ इन्द्र और पोलोमी के तीन पुत्रो मे से एक।

७ चन्द्र वश का एक राजा, जो कौरवों के पक्ष में लड़ा था।

८ कुशवश के राजा कुशाग्र का पुत्र जो सत्यहित का पिता था।

९ मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

१० तारा, नक्षत्र।

११ सप्त स्वरो मे से दूसरा स्वर जो बडा शुभ माना जाता है। इसके उच्चारण मे नाभि से पवन उठकर तालव्य एवं जिह्वा के अग्रभाग से अवरुद्ध होता है। इसका स्वर स्थान मस्तक है।

१२ पद्रहवां कल्प, जहां से ऋषभ स्वर की उत्पत्ति हुई।

१३ सांड।

१४ बैल।

१५ राम की सेना का वानर।

[स. ऋभ्व] १६ इन्द्र।

१७ अग्नि।

[वि.] उत्तम, श्रेष्ठ।

रू. भे.—रखभ, रखब, रिखभ, रिखंभ, रिखब, रिखभ, रिसब, रिसह।

रिसभक-स. पु. [स. ऋषभक] अष्टवर्गीय औषधियों के अन्तर्गत एक औषधि विशेष। (अमरत)

रिसभजिन-स. पु.—जैनियो के एक तीर्थंकर।

रू. भे—रिखभजिन।

रिसभदेव-स. पु. [स. ऋषभदेव] विष्णु के चौबीस अवतारों मे से एक।

वि. वि.—देखो 'रिसभ'

रू. भे.—रिखभदेव, रिखबदेव, रखभदेव।

रिसभधुज—स. पु. [स. ऋषभ-ध्वज] शिव, महादेव ।

रिसवत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

रिसवतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

उ०—ऊजड़ खेड़ा व्हा भेड़ा व्हा ग्रोरा । राजी साधू व्हा खळ **रिसवतखोरा** । —ऊ. का.

रिसवतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसह—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—कइय ग्राव्रय दुर्गार आइमिउ, रिसह नेमि नगा गुग गाइ-सिउ । —जयसेखर सूरि

रिसहेसर रिसहेसक—देखो 'रिसीश्वर' (रू. भे.)

उ०—१ करमें वरस लगे रिसहेसर, उदक नया में ग्रन्न । करमे जिनमें मोऊ मिमारे, खीना गेण्या कन्न । —वृ. स्त.

उ०—२ मेरूजी नायक वीनति साभलौ, श्री रिसहेसर स्वाम । दीन दयाल तुम्हारे दाखिबू, ग्रतर बीतग ग्राम । —घ. व. ग्र.

रिसांण, रिसांणौ—वि. [स. रिष् या रुष्] (स्त्री रिसाणी)

नाराज, नाखुश ।

उ०—तौ राणी हंसकर कही जे पहला ही या बात क्यों न कही । इण बात बदळै भला रिसाण रहिया । —नापै सांखलै री वारता

२ जिसको क्रोध करने की ग्रादत है, क्रोधी स्वभाव का, रूठने की ग्रादत वाला ।

उ०—बानर ग्रनइ बीधी खाधउ, काणी ग्रनइ रिसांणौ, नाग ग्रनइ पखालउ, कादम ग्रनइ कटालउ ... —व. स.

स. पु.—१ गुस्सा करने या रूठने की क्रिया या भाव । मान करने का भाव ।

उ०—तद वा टाबर री गळाई मूडौ मरकोर रिसांणौ करती कहै ज्यूं बोली—थे तौ केता नी के पग पाछौ निकळै ई कोनी ।

— फुलवाड़ी

२ क्रोध, गुस्सा, मान ।

उ०—नित री मार सूं ग्राती ग्राय वा हवेली सूं रिसांणौ करनै बारै निकळगी पण ग्रबै लुगाई री जात जावै तौ कठै जावै ।

- फुलवाड़ी

रू. भे.—रीणौ, रींयाणौ, रीसणौ, रीसाणौ, रीसणौ, रूसणौ रूसांणौ ।

रिसाघाती—स. पु.—शत्रु, बैरी । (ह. ना. मा.)

रिसाणौ, रिसाबौ—देखो 'रीसाणौ, रीसाबौ' (रू. भे.)

रिसाण हार, हारौ (हारी), रिसाणियौ—वि

रिसायोड़ौ —भू. का कृ

रिसाईजणौ, रिसाईजबौ—भाव वा.

रिसायल—वि.—क्रोधी स्वभाव का, गुस्सैल ।

रिसायोड़ौ—देखो 'रीसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रिसायोडी)

रिसालदार—स. पु. [ग्र.] १ ग्रश्वारोही सेना के एक दल का नायक

२ उक्त नायक का पद ।

रू. भे.—रसालदार ।

रिसालौ—स. पु. [ग्र. रिसाल] १ ग्रश्वारोही सेना ।

२ सैनिकों की टुकडी ।

३ सेना, फौज ।

उ०—जगी रिसाला हलंता प्रळै, सामद हिलोळा जेम । खान-स्वी हमम्मा, भळ ता काळ चोट । —राघोदास मादू

४ रावणा राजपूतों के लिये प्रयोग में ग्राने वाला शब्द ।

वि —गुस्सैल, क्रोधी ।

उ०—पयिगिया मुख ग्रोस पूळसी रवि कोडाळी । हाथ न थामो मेघ मानसी रीस रिसाळौ । —मेघ

रू भे —रसाळू, रसालू, रसालौ ।

रिसि—स पु [स ऋषि, प्रा रिसि] १ तपस्वी, मुनि, सन्यासी, ऋषि ।

उ०—१ सिसमार चक्र ध्रुव विग सु तौ, भजै न कुग रिसि गग भ्रमग । ग्रगमै सात प्रवरग सू, कमधा विग चाळौ कवग ।

—रा रू

उ० —२ सउ परिवारिहि सु दर्लिहि हस्तिनाग पुरि नयरि ग्रावइ । ग्रन्न दिवसि रिसि नारदह नारि कजिज ग्रादेसु पामइ ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ सरब सिरोमणि होवगा सारू, लागा करण लडाई । मोक्ष गियोडा रिसि मुनिया स, ग्रब विच टाग ग्रडाई । —ऊ का

वि वि —इनकी राजर्षि, महर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि ग्रादि श्रेणिया भी हैं ।

२ श्रुति, सत्य ग्रौर तप मे पूर्ण निरत रहने वाला मत्र द्रष्टा, वेद मत्रो का ग्राचार्य ।

३ ग्रनुष्ठानादि कर्म बतलाने वाले सूत्रो का रचयिता ।

४ नारद, मुनि ।

५ बृहस्पति ।

६ एक देव जाति ।

७ हरिद्वार के ग्रागे का एक तीर्थ, ऋषिकेश ।

८ प्रकाश की किरन ।

९ मत्स्य विशेष ।

रू भे —रखी, रख, रखि, रखी, रिकख, रिक्खि, रिक्ष, रिख, रिखि, रिखी, रिखू, रिख्ख, रिसग्र, रिसी, रीख ।

ग्रल्पा.—रिखड़उ रिखडौ ।

रिसिग्रस्त—स पु [स ऋषि-ग्रस्त] उत्तर ग्रौर वायव्य के मध्य की

दिशा, जिधर सप्तर्षि अस्त होते हैं।
रू. भे —रिखीग्रस्त, रिसीग्रस्त।

रिसिक—स स्त्री. [सं. रिषीक] तलवार।

रिसिकेस—देखो 'रिसीकेस' (रू भे.)

रिसिदत्ता—स स्त्री.—एक सती विशेष। (जैन)
उ०—रिसिदत्ता परणी घरि आव्यउ, सुख भोगवइ सुविवेक रे।
—स कु.

रिसिदेव—देखो 'रिखदेव' (रू. भे)

रिसिपूनम, रिसिपूरणिमा—स स्त्री.—श्रावण, शुक्ला. पूर्णिमा।
रू भे.—रिखपूनम।

रिसिप्रतत्थ—स पु —ऋषियो द्वारा बनाये हुए शास्त्र।
उ०—थिरा उथत्थ थत्थ तें वियत्थ थत्थते बहे।
रिसिप्रतत्थ तत्थ के प्रतत्थ तत्थ ते रहे। —ऊ. का.

रिसियोड़ो—भू का. कृ.—१ धीरे धीरे बहा हुआ, रसा हुआ २ टपका हुआ, चूवा हुआ. ३ आत्मसात हुवा हुआ, समाया हुआ।
(स्त्री. रिसियोडी)

रिसिराई, रिसिराज, रिसिराय—स पु. [स ऋषि-राज] नारदादि बडे-बडे ऋषि।
उ०— दुर बुद्धि की सग से आगे ही बिगड्या, बडा बडा रिसिराई।
मैं जिग्यासु जन हु तेरा, दुर बुद्धि दूर रखाई।
—श्री सुखरामजी महाराज
रू. भे —रखाराय, रखीराज, रिखराण, रिखराज, रिखिराज, रिखिराय, रिखीराज, रिखीराय, रीखाराज।

रिसिवर—स. पु —ऋषिश्रेष्ठ, श्रेष्ठ ऋषि। रू. भे.—रिखवर।

रिसिवरणी—सं. स्त्री. [स. ऋषि-वर्णिनी] गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या।
रू. भे.—रिखवरणी।

रिसिव्रत—स पु.—ऋषियो की तपस्या, साधना।
रू. भे.—रिखव्रत।

रिसिसूवन—स. पु —४९ क्षेत्रपालो मे से सातवा क्षेत्रपाल।

रिसींद, रिसींद्र—स. पु. [स. ऋषि+इन्द्र] ऋषियो मे श्रेष्ठ।
रू. भे.—रिखेंद्र।

रिसी—देखो 'रिसि' (रू. भे)
उ०—१ थामे ई थोडी वणी तो अकल व्हैला के जे पुराणा रिसी मुनि माया री ताडणा नी करता तो गिरस्ती मरिया ईं साधू-सन्यासिया नै धन रा दरसण नी करावता। —फुलवाडी
उ०—२ अइमत्तउ रिसी जे रम्यउ, जल माहि हो बांधी माटी नी पाल। तिरती मूकी काछली, तइं तारया हो तेहनइ तत्काल।
—स. कु.

रिसीग्रस्त—देखो 'रिसिग्रस्त' (रू. भे.)

रिसीकुल्या—स. स्त्री. [सं. ऋषिकुल्या] एक पौराणिक नदी का नाम।

रिसीकेस—स पु [स. हृषीकेश] १ विष्णु का एक नाम, ईश्वर।
(नां. मा.)
२ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।
३ एक तीर्थ का नाम।
रू. भे.—रिखीकेस, रखीकेस, रखीकेसर, रिखीकेसू, रीखीकेस।

रिसीपंचमी, रिसीपांचम—स स्त्री [सं ऋषि+पञ्चमी] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पचमी। इस दिन स्त्रियां जलाशयो पर जाकर ऋषि और पितृ तर्पण करती हैं और मणी या अन्न का भोजन करती हैं।
रू भे —रिखपाचम, रिखीपचमी, रिखीपांचम।

रिसीमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू. भे)

रिसीस, रिसीसर, रिसीस्वर—स. पु. [स. ऋषीश, ऋषीश्वर] ऋषियो मे श्रेष्ठ, ऋषीश्वर।
उ०—उण कही मैं एक जगळ मे धरमसाळा बणवाइ थी उठै गरमी रै मौसम मे एक रिसीस्वर आय छाया मे बैठ सुख पायो ठडा होय जळ पी घणा चैन सूं प्रभु नु विनती करी। —नी. प्र.
रू. भे —रखीस, रखीसर, रखीसुर रखीस्वर, राखेस, राखेसर, रखेसुर, रखेस्वर, रिखसर, रिखहेसरू, रिखीस, रिखीसर, रिखीसुर, रिखीस्वर, रिखेस, रिखेसर, रिखेसुर, रिखेस्वर, रिसहेसर, रिसहेसरू, रिहेसर, रिहेसरू, रीखीय, रुखेसर।

रिस्क—स स्त्री.—१ जोखम, खतरा।
२ जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व, भार।

रिसीसंग—देखो 'सिंगी रिसि' (रू. भे.)

रिस्ट—सं. पु. [स. रिष्ट] १ सौभाग्य, समृद्धि, ऐश्वर्य।
२ अनिष्ट, हानि, नाश।
३ दुर्भाग्य, अभाग।
४ पाप।
५ उपद्रव।

रिस्टा, रिस्टि—स स्त्री. [स. रिष्टिः] तलवार।

रिस्तेदार—स. पु. [फा. रिश्तःदार] १ नातेदार, सम्बन्धी।
२ वशज, बधु-बांधव।
रू. भे.—रिसतेदार

रिस्तेदारी—सं. पु [फा. रिश्त' दारी] नाता, रिश्ता, सम्बन्ध।

रिस्तेमद—स. पु. [फा. रिश्तेमद] सम्बन्धी, नातेदार।

रिस्तौ—सं. पु. [फा. रिश्त:] १ नाता, सम्बन्ध, लगाव।
२ किसी प्रकार का सम्पर्क।
रू. भे.—रिसतौ।

रिस्यमूक—सं. पु. [सं. ऋष्यमूक] दक्षिण का एक पर्वत जिस पर श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता हुई थी।
रू. भे.—रिख्यमूकर, रिखीमूक, रिसीमूक।

रिस्वत—सं. स्त्री [फा. रिश्वत] किसी को कर्त्तव्यच्युत करके नियम विरुद्ध कार्य करवा कर, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये, कार्य-कर्त्ता को अनुचित रूप से दिया जाने वाला धन या सामान, घूस, उत्कोच।
रू. भे. निसपत, निसबत, निस्पत, निस्बत, रिसपत, रिसपत्त, रिसबत, रिसवत।

रिस्वतखोर—वि [फा रिश्वतखोर] रिश्वत, घूस या उत्कोच लेने वाला।
रू भे —रिसपत खोर, रिसबतखोर, रिसवतखोर।

रिस्वतखोरी—स. स्त्री [फा. रिश्वत खोरी] रिश्वत लेने की क्रिया या भाव। घूसखोरी।
रू भे.—रिसपत खोरी, रिसबत खोरी।

रिस्वतियौ, रिस्वती—वि —रिश्वत लेने वाला घूस खाने वाला।
रू. भे —निसपतियौ, रिसपतियौ, रिसपती।

रिहणौ, रिहबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू भे)

रिहा—वि. [फा. रहा] १ बंधन मुक्त, कैद से छूटा हुआ।
२ मुक्त।

रिहाई—सं. स्त्री.—मुक्ति, छुटकारा।
रू. भे.—रियाई।

रिहेसर, रिहेसरु, रिहेसक—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)
उ०—मुझ मन ऊलट अति घणौ रे, सो दिन सफल गिणेस। रुख सी सी रिहेसक, जब नयणे निरखेस। —वृ स्त

रींकणौ, रींकबौ—क्रि. स —१ रोना, विलाप करना।
उ०—१ हांडा ताभाडै केरडिया डीकै, रोटीपाणी नै टींगरिया रींकै। चित पर घोरारव आकर बरपावै, घर घर नर नायक लायक घबरावै। —ऊ का.
उ०—२ बडिंदै रै बडिंदै सिरदार रींकण लागौ अणां कह्यौ—हाल कांई व्हियौ, अबारू ई डाढै। दो वेळा बळं आवूला, सावचेती करणी व्है उत्ती कर लेजै। —फुलवाडी
२ दुखी होना, करुणा करना, रंज करना।
उ०—रया माय री माय सीझै। जे थोड़ा बरस पौ इण डाळी रह्यौ तो उण राज रा लोग-बाग मरणा री हरख मनावैला अर-जलम माथै रोवैला-रींकैला। —फुलवाडी
३ बड़बड़ाना।
उ०—हाथा हूकलिया लटकता लोटा, रिण रिण रीकता सुपनें मे रोटा। —ऊ. का.
रींकणहार, हारौ (हारी), रींकणियौ—वि.।
रींकियोडौ, रींकियोड़ौ, रींक्योडौ—भू का कृ।
रींकीजणौ, रींकीजबौ—कर्म वा.।
रींगणौ, रींगबौ रू भे।

रींकाणौ, रींकाबौ—क्रि. स. ['रीकणौ' क्रि का प्रे. रू] १ रुलाना, विलाप कराना।
२ दुखी करना, करुणा या रंज कराना।
रींकाणहार, हारौ (हारी), रींकाणियौ—वि।
रींकायोड़ौ—भू. का कृ.।
रींकाईजणौ, रींकाईजबौ - कर्म वा.।
रींगाणौ, रींगाबौ—रू भे।

रींकायोड़ौ—भू का कृ —१ रुलाया हुआ, विलाप कराया हुआ।
२ दुखी किया हुआ, करुणा या रंज कराया हुआ।
(स्त्री रींकायोडी)

रींकियोडौ—भू का. कृ. १ रोया हुआ, विलाप किया हुआ २ दुखी हुवा हुआ, करुणा किया हुआ, रंज किया हुआ।
(स्त्री रींकियोडी)

रींखण—स पु टिड्डी का छोटा बच्चा।
रू भे —रींखण।

रींगटियौ, रींगटौ—वि.- कृशकाय, पतला-दूबला।

रींगणबाव, रींगणवाव देखो 'रागणवाय' (रू भे)

रींगणि, रींगणी—स. स्त्री —एक प्रकार की औषधि, भुई रींगणी।
रू भे —रीगिणि, रींगिणी।

रींगणौ—स पु बैंगन, वृंताक।
रू. भे - रींगणौ।

रींगणौ, रींगबौ—देखो 'रीकणौ, रीकबौ' (रू. भे)
रींगाणौ, रींगाबौ—देखो 'रीकाणौ, रीकाणौ' (रू. भे)
रींगायोडौ - देखो 'रींकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. रींगायोडी)

रींगिणि, रींगिणी—देखो 'रींगणी' (रू भे.)
उ०—रामोडी नहं रासना, रींगिणि रुद्र-जटाय। रांग रताजणि रुमडी, रति वनि रग धराय। —मा. का. प्र.

रींगियोड़ौ—देखो 'रींकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. गीभियोडी)

रींगो—स. स्त्री —शिकार किए हुए खरगोश का शिर ।

रींगो—स पु.—द्रव पदार्थ की धारा ।

रींगणवाय, रींघणवाव—देखो 'गगणवाय' (रू. भे.)

रींछ—स. पु. [स. ऋक्ष, प्रा. रिच्छो, रिंछो] (स्त्री. रीछड़ी, रीछी)

१ एक चौपाया जंगली जानवर, जिसके समस्त शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं । भालू, ऋक्ष ।

उ०—१ सिंघ व्याघ्र अग रींछ वानरा सुहरा सांमरा चोर रे । आहेड़ी को प्रत्यज आवि म्लेच्छ भयकर चोर रे । —नलाख्यान

उ०—२ घेरै सिकार माहि ससा, लुंकड़ी, सीह, रोझ, स्याळ रींछ, अनेक हिरण आदि देखर भेळा हुया थै । —द. वि.

२ जाम्बुवान का एक नाम । जामवत ।

उ०—महाराज तणी कहिजै कम मामो, नरकासुर बेटी निज नेह । मुमरो रींछ रुवमयो साळो, अविगत तणी गनाइति एह ।

—पी. ग्र.

वि.—कृष्ण वर्ण, काला । * (डि को)

रू. भे.—रीछ । अल्पा.—रीछोमो ।

रींछड़ी—स स्त्री —१ श्री कृष्ण की एक पत्नी जो जाम्बुवान की पुत्री थी । जाम्बवती ।

उ०—कालिंद्री विदा भद्रा कुमरी, कहि लखमणा क्रिपाळ रे । रींछड़ी नाग जीती निमो, पटराणी प्रतिपाळ रे । —पी. ग्र.

२ मादा भालू, मादा रीछ ।

रू. भे.—रीछड़ी ।

रींछपत, रींछपति—स पु. [स. ऋक्ष-पति] जाम्बवन ।

रू. भे.—रीछपत, रीछपति ।

रींछराज—स पु [स ऋक्ष-राज] जाम्बवत ।

रू. भे —रीछराज ।

रींछी, रींछोट—स स्त्री —१ धूऐ का बादल जो वर्षा के दिनो मे कोहरे की तरह ऊंचे स्थानों मे छा जाता है । कोहरा, धुध ।

उ०—१ रजी धोम सू वीटिया गज्ज राजै वडै अम्रडे जांणि रींछी विराजै । भयाणक भैभीत सोभत भारं, क्रमै जांणि आधी निसा अंधकार । — वचनिका

उ०—२ पिक करै कोहक रींछी वडी पहाड़ा बाजती, रहधी पछम तणी वाव । पथ मीतळ हुवा हुई लीली पुहव, 'रजा' दीजै 'अजा' मारवागव । —सबळजी लाळस

२ पशुओ की मस्ती जिसके कारण वे दौड कूद कर प्रसन्न होते हैं ।

३ मस्ती ।

रू भे.—रिंछी, रीछी ।

रींछी पाखर—सं. पु.—घोडे के गर्दन के बचा रहने वाला चमड़े या कपड़े का उपकरण जो रीछ के मुख के आकार का होता है ।

रींज—देखो 'रीझ' (रू भे)

उ०—राजावा री रींज, सुखदाई सारा सुणी । स्यावद थारी खीज, जग निहाल करती 'जसा' । - ऊ. का.

रींजणो, रींजबो - देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू. भे)

उ०—१ रग राग वाग अगराम सू न रींजै पातिसाह महमदसाह चिंता मैं छीजै । —रा. रू.

उ० -२ साधा ऊपरि साहिबा, रींजो रामवडा । रेंवत चढ नै रामडा आवै आलमडा । —पी. ग्र.

रींजणहार, हारो (हारी), रींजणियो—वि ।

रींजिओड़ो, रींजियोड़ो, रींज्योड़ो – भू. का. कृ. ।

रींजीजणो, रींजीजबो —कर्म वा. ।

रींजियोड़ो—भू का कृ —देखो 'रीझियोडो' (रू भे)

(स्त्री रींजियोडी)

रींझ—देखो 'रीझ' (रू भे)

उ०—पीरदास एम दाखै प्रभु, कूडे काल्है काकना । रिणछोड़ राय हो राघवा, रींझ समापै राकना । —पी ग्र.

रींझणो, रींझबो – देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू. भे.)

उ०—१ आलीजे री मेजा मे रींझ रहूंली । कहि रे मिजाज कर रसिया । —लो. गी.

उ०—२ जिनजी कू देखि मेरउ मन रींझइ री । तीन छत्र ऊपर सोहइ, आप इद्र चामर वीझइ री । —स. कु.

उ०—३ आखी रात म्होड़ी लाडी री चाकरी मे गुजारै, आंख्या मा'खर काढे है । पण आ बनडी कद रींझै ? टिरड़ाका करै ठीडा देवे है । —दसदोख

उ०—४ समझ हीण सरदार, राजी चित क्यों सू रहै, भूमि तणा भरतार, रींझै गुण सू राजिया । —किरपाराम

रींझणहार, हारो (हारी), रींझणियो—वि. ।

रींझिओड़ो रींझियोड़ो, रींझ्योड़ो—भू. का कृ. ।

रींझीजणो, रींझीजबो—कर्म वा. ।

रींझवणो, रींझवबो—देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू. भे)

उ०—दीयै किसु दलदरी, सबल रींझवीयो सता । सगली ही ससार घरै आस घनवता । —ध. व. ग्र.

रींझवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

रू०—अजो मेरा सांवरा नवेला सिरदार, बेपरवाही और चाह भरया महीड़ा । समझवार रींझवार । —रसीलै राज री गीत

रींझवियोड़ो—देखो 'रीझिओड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. रीझवियोड़ी)

रींझाणौ, रींझाबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू. भे.)

उ०—घट में सिवरन एक अटला, मुजरा आनम कीया अपला। रोम रोम रणकार लगाया, एक अगोचर कुं रींझाया।
—अनुभववाणी

रींझाणहार, हारौ (हारी), रींझाणियौ—वि.।

रींझायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रींझाईजणौ, रींझाईजबौ—कर्म वा.।

रींझायोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीझायोड़ी)

रींटौ—स. पु.—कच्ची ककड़ी।

रू. भे.—रीटौ।

रींसौ, रींसाणौ, रींसबौ रींसाणौ—देखो 'रिसाणौ' (रू. भे.)

री—स स्त्री. [सं.] १ गति, चाल। २ बहाव, प्रवाह। ३ ध्वनि, शब्द। ४ वध, हत्या। (एका)

विभ.—की।

उ०—१ फेरै बग तुरग री, तोले खग करग। रिण पग ऊमगे लगै, 'रैणायर' गयणग।
—रा. रू.

उ०—२ अभवास टाळै परा जमवाळा त्राम त्यान। आपरा पगा री राखै पीरदास आस।
—पी. ग्र.

रीख—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—ऊपडै बजर गगन दुरसि आभडे, भरै घट पाण अरोग रै भाय। थाट साहाण समद लक बाळा थया, रीख जेही पिया बूंदी तणौ राय।
—राव सत्रसाळ रौ गीत

रीखण—देखो 'रीखण' (रू. भे.)

रीखराज—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—सूरां पूर भाटा माची भ्रकूटा उठावै संभू, साची तान लावै रभा मचावै संगीत। रीखराज बावै बीण प्रवीण हरखा रतौ, गावै सूला चोसटी अगोठी रूला गीत।
—बदरीदान खिड़ियौ

रीखीकेस—देखो 'रिसीकेस' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

रीखीस—देखो 'रिसीस' (रू. भे.)

रीख्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—वाह सुग्रीव रीख्या उठी बकरी, उठी चोकी निरपाक्ष आनक री। समसजै चोट बे तरफ निरमकरी, रात दिन वजै घड़ियाल जिम लंक री।
—र. रू.

रीगटौ—स. पु.—युवा हरिण।

उ०—माहे राग छै जिके मृग-उछळै, छै रीगटा हिरण छै मुग्ध आइ हिरणी नै घेचता फिरै छै। सबळौ हिरण निबळै न घेचै छै।
—रा. सा. सं.

रीगणौ—देखो 'रीगणौ' (रू. भे.)

रीछ—१ देखो 'रीछ' (रू. भे.)

उ०—१ जरख रीछ वड़ाल, सिवा मत लख्ख मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।
—गु. रू. ब.

उ०—२ एक हस्ति आरुही अचभ असं उप्ट्र विगत्ति। सरभ चील सादूळ रीछ बदर नर रत्ती।
—रा. रू.

रीछड़ी—देखो 'रीछड़ी' (रू. भे.)

उ०—अगे कारह रीछड़ी आणी, भगत वछळ वान भाणी। जादिवै री अकलि जाणी, मेघडी माणी।
—पी. ग्र.

रीछपत, रीछपति—देखो 'रीछपति' (रू. भे.)

रीछराज—देखो 'रीछराज' (रू. भे.)

रीछा—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

रीछी—देखो 'रीछी' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरान्ति करि नै राजान सिलामति उआ राज राजा आगै गता चरखी दारू आगाबा छूटि नै रहिया छै। जाणै धूंधळै पहाड़ पावती रीछी लाग रही छै।
—रा. सा. सं.

रीछीग्रौ—स. पु.—१ एक प्रकार का सिंह।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति बडा सिकारी सिघळी, सादूळ, पटाळा, केहरी नवहथा, कठीरीआ, रीछीआ, तेलिआ, तीडूला, लकीरिआ, वघेरिया, चीतरा, भांति भांति, जाति जातिरा, नाहर माकळै जडिआ रहड़ गाडे बैठा, कसना कण-गना, बुराट करता वहै छै।
—रा. सा. सं.

२ देखो 'रीछ' (अल्पा., रू. भे.)

रीजेंट—स. पु. [अं.] १ किसी राजा की अवयस्क अवस्था या अयोग्यता की दशा मे राज्य का प्रबन्ध करने वाला प्रबन्धक।

रीजेंसी—स. स्त्री.—१ रीजेंट का कार्य, शासन।

२ रीजेंट का पद।

रीज—देखो 'रीझ' (रू. भे.)

उ०—१ दात दमकै अहर दुत, जाण चमकै बीज। ज्यारी धुन लागी रहै, रहै तपोधन रीज।
—बा. दा.

उ०—२ सुर दरसै जै जै सबद, रस अदभुत लख रीज। ईढ करै जग स 'अभा', वजर न चकर न वीज।
—रा. रू.

रीजड़ी—देखो 'रीझ' (अल्पा., रू. भे.)

रीजक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—रावना वदरा उठाइ, जीकौ बदुका कौसीक भात री छै। मात मात खिलद री, अकल बाण दमरी, सो सो तामा सज री करी।

लुकमान रा हाथ री करी। नेखमा वाज नारजा। पर लोक ही वरसै, रीजक जागी की ना लागी हीमैं। सामी करी कीनां काळ रो सूत। —पना

रीजणी, रीजबौ—देखो 'रीझणी, रीझबौ' (रू. भे)

उ०—१ किसन तूझ ना हिमैं कामू कहीजें। रहै कोप नह कोप रीजें न रीजें। —पी. ग्र

उ०—२ रीज्या देवै न मौज, चूक्या चट चेतो करै। जा ठाकर री चोज, रती न आवै राजिया। —किरपाराम

रीजणहार, हारो (हारी), रीजणियौ—वि.

रीजिओड़ौ, रीजियोड़ौ, रीज्योड़ौ—भू का कृ

रीजीजणी, रीजीजबौ—भाव वा.

रीजवणी, रीजवबौ—देखो 'रीझणी, रीझबौ' (रू. भे)

उ०—श्री महिपति मान रीजवै गुणग्रज, कवि समराथ इसौ नहि कोय। 'मान' ममापै लाख भागणा, 'जमा' 'गजन' रा, विरदा जोय। —बा दा

रीजवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे)

उ०—जिण भात आप नै तो दडर पोहोचावस्या। म्हे अठै काम आस्या। रजपूती रा रीजवारां नै जीलै चढावस्या। —पना

रीजवियोड़ौ—देखो 'रीझियोडौ' (रू भे)

(स्त्री रीजवियोडी)

रीजाणी, रीजाबौ—देखो 'रीझाणी, रीझाबौ'।

रीजाणहार, हारो (हारी), रीजाणियौ—वि।

रीजायोड़ौ—भू का कृ।

रीजाईजणी, रीजाईजबौ—कर्म वा.।

रीजायोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू भे)

(स्त्री रीजायोडी)

रीजावणी, रीजावबौ—देखो 'रीझाणी, रीझाबौ' (रू. भे.)

उ०—रीजावै कमधा राजा नै, बीदग केहो उकति विसाल। 'विजा' हरो सौसहस बरीसै, भूप विरद परिया रा भाळ। —बा. दा.

रीजावियोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजावियोडी)

रीजियोड़ौ—देखो 'रीझियोडौ' (रू भे)

(स्त्री रीजियोडी)

रीझ-स. स्त्री. [सं. ऋद्धि, प्रा. रिज्झि] १ प्रसन्न, खुश या मुग्ध होने की क्रिया या भाव।

२ प्रसन्नता, खुशी, हर्ष।

उ०—१ बाटे नहिं धन वाणियौ, खाटे धन कर खान। रीझ करै ताळी दिए, हसै दिखाळै दांत। —बा. दा.

उ०—२ सोग सताप सुख दुख दुनिया भरी, करत अकाज कहि कौण काजा। और की रीझ अणखीज तैं क्या पडी, आपणी रीझ का खूब छाजा। —अनुभववांणी

उ०—३ ऐसी विध पडत राज चातुरच कळा प्रवीण त्रिलोकू का प्रबंध अनेक विध विमळ वाणी सै उच्चरै जिनूं से रीझ श्री माहाराज कनक जग्योपवीत चढाया। —सू. प्र

३ पुरस्कार, इनाम।

उ०—१ साह अवरग के पास या समै आवै। सो तौ मनसब रीझ इनाम मन वछ्या पावै। —रा. रू.

उ०—२ ते अहूवे मैं वात उचारी। तहि हवि तूझ रीझ इकतारी —सू. प्र.

उ०—३ ईण भात सु एवाळियौ देव नै पाछौ आय नै राजाजी नु सारा समाचार कह्या—महाराज सिलामत, श्री गोरखनाथ जी तपसांय बीराजीया छै जी। सुण नै राजाजी सवा लाख री रीझ दीवी। —रीसाळू री वारता

४ दान, बख्शीश।

उ०—१ राय सरिस दे रीझ, अखिल काइ खीज करै अति। वडौ विहळ हू बुरो, पीर सा रीस किसी पति। —पी. ग्र.

उ०—२ करै फतै कमधज्ज, करै बहु रीझ कवेसा। करि गुण परख सकाज, देग देसा परदसा। —सू प्र.

उ०—३ दातारा इक दाय, आथ नही जो आप रै। काढै ब्याज कराय, रीझ पगी दे राजिया। —किरपाराम

५ उदारता।

उ०—सुकवि निवाजै सोमसी, भूप रीझ जस भाग्य। पाल दिया परमारवै, साठ गाव सो लाख। —बा. दा.

६ अनुग्रह, कृपा।

उ०—देस माहि आवता ही ओठी नू सीख देर विपत्ति रा महारणव मे मग्न मागळियाणी पुत्र सहित बेस रौ विपरयास करि कैराऊ ग्राम रा ठाकुर रोहडिया बारहठ आल्हा रै बास जाइ रही अर थोडा दिना मे बडा विस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी मे चित लगाइ चातुराई री रीझ चही। —व. भा.

रू भे.—रीज, रींझ, रीज, रीझु।

रीझण-वि —मोहित या मुग्ध होने वाला।

उ०—पर घर रीझण करहला, नीधरिया घर आव। बीजा एक भखूकडा, बला एको साव। —अग्यात

रीझणौ-वि.—१ खुश होने वाला, प्रसन्न होने वाला।

उ०—१ भट चारण गुण भणै, तिका रीझणौ सतीखौ। माया ऊधासणौ, सघण बरसणौ सरीखौ। सू प्र.

उ०—२ गुरजा कव्वदां झांवराड़ भड़ां गम ताजा । निसंगा रीझणा थाइ जानकी नरेस । —र. ज. प्र

२ मोहित होने वाला, मुग्ध होने वाला ।

रीझणौ, रीझबौ—क्रि. अ. [सं. ऋध्, प्रा. रिज्झइ] १ प्रसन्न होना, खुश होना ।

उ०—१ कहणी प्रभु रीझे न कछु, रहणी रीझे राम । सुपने की सी म्होर सूं, कोडी सरे न काम । —ऊ. का

उ०—२ कहियौ सकति जेम दुज कहियौ । अति रीझे छत्रपति ऊमहियौ । —सू प्र

उ०—३ तब पातसाह री हजूर गया । इसां कनै विद्या हुती सु दिखाई । पातसाह रीझीयौ । —नैणसी

२ मोहित होना, मुग्ध होना ।

उ०—१ नरवर नळराजा-तणउ ढोलउ कुंवर अनूप । राणि राउ पिंगळ तणी, रीझी देखे रूप । —ढो मा

उ०—२ पौहू मूल गांन चत्रका पेखे । दिल रीझियौ वाग छिबि देखे । —सू प्र

३ मस्त होना, मग्न होना ।

उ०—१ सबी अमीणी साहिबी, निरखै काळो नाग । सिर रासै सिण सांमध्रम, रीझे सिंधू राग । —बा. दा

उ०—२ हरीया राग न रीझबौ, वेद न विद्या पाठ । काया जासी एकली, साथै खपण काठ । —अनुभववाणी

४ तुष्टमान होना ।

उ०—१ रीझ दिया रिड़माल ने, नव कोट नूंभै नर । राव मुखा इम रट्टियौ, कमधज जोड़े कर ।
—ठाकुर जूंझारसिंह मेड़तियौ

उ०—२ सुणि सुरा अरज बोलै लछीस । आदू मो सेवग अवधि ईस । रीझियौ अह दसरत्थ राय, अवतार धरूं तण ग्रेह जाय । —सू प्र

५ उमंगित होना, उत्साहित होना ।

उ०—जइ कुळदलि झूझउ सस्त्र नइ रसांन सूझउ । तउ मनि अति रीझउं पाप रेखा न बीझउ । —सालि सूरि

६ प्रेम हर्ष आदि से पुलकित होना ।

उ०—निगरभर तरुवर सघण छाह निसि, पुहपित अति दीप गर पळास । मोरित अंब रीझ रोमांचित, हरखि विकास कमळ कृत हास । —वेलि.

रीझणहार, हारौ (हारी), रीझणियौ—वि.

रीझिओड़ो, रीझियोड़ो, रीझ्योड़ो—भू. का कृ.

रीझीजणो, रीझीजबौ—भाव वा.

रिझणी, रिझबौ, रीजणो, रीजबौ, रीझणो, रीझबौ, रीझवणो, रीझवबौ, रीजणो, रीजबौ, रीजवणो रीजवबौ, रीझवणो, रीझवबौ, रीवणो, रीवबौ । —रू. भे.

रीझाळ—वि.—१ प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला ।

२ मोहित या मुग्ध होने वाला ।

३ जानने वाला ।

उ०—मूढ जिके गुरु मंत्र ज्यूं, जुगली लवण सुनत । राग तांन रीझाळ नहीं, ढोलौ सीस धुणत । —बां. दा.

४ दातार, दानी ।

रीझवणो, रीझवबो—देखो 'रीझणो, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऊंडै रोहा ऊर झल, सूर न जाय सरक्क । चढै गजा दातू-मळां, रंग रीझवै अरक्क । —बा. दा.

उ०—२ दूहा गूढा गीत स्यु, कवित कथा बहु भांति । रीझवियौ रागौ चतुर, क्रीडा केलि करति । —प च. चौ.

उ०—३ काची कळी न हेळियौ, गुणे न रिझवियोह । ढ़ेली थारी करहलौ मह्मानी गमियोह । —अज्ञात

रीझवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे)

उ०—अमै समासै अनेक भांति भांति पातिसाह की दसतूरी की सिकार । हौसनायका की जीवन श्रीमहाराजा जी की रीझवार आतुस के धमके वागू की चोट । —सू प्र

रीझवारणी—स स्त्री.—१ रिझवार होने की अवस्था या भाव ।

२ दान करने की प्रवृत्ति, दान करने का स्वभाव ।

रीझवियोड़ो—देखो 'रीझियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. रीझवियोड़ी)

रीझविहापत—वि [राज-रीझ + स विहापत=दान] दातार, दानी ।
(अ मा)

रीझाणो, रीझाबौ—क्रि. स ['रीझणो' क्रि. का प्रे. रू.] १ प्रसन्न करना, खुश करना ।

२ मोहित करना, मस्त करना ।

३ मस्त करना, मग्न करना ।

उ०—बिन पावा जाह नाचिबौ, बिण कर ताळ बजाय । बिना राग रीझायबौ, बिना कठ सुर गाय । —अनुभववाणी

४ तुष्टमान होने के लिए प्रेरित करना ।

५ उमंगित करना, उत्साहित करना ।

३ पुलकित करना

रीझाणहार, हारौ, (हारी), रीझाणियौ—वि.

रीझायोड़ो—भू का. कृ.

रीझाईजणो, रीझाईजबौ—कर्म वा. ।

रिझाणो, रिझाबौ, रिझवाणो, रिझवाबौ, रिझवारणो, रिझवारबौ रिझाणो, रिझाबो, रिझावणो, रिझावबौ, रीजाणो, रीजाबौ, रीजावणो, रीजावबौ, रीझावणो, रीझावबौ ।—रू भे.

रीझायोड़ो—भू का कृ.—१ प्रसन्न किया हुआ, खुश किया हुआ. २ मोहित

किया हुआ, मुग्ध किया हुआ. ३ मस्त किया हुआ, मग्न किया हुआ, ४ तुष्टमान होने के लिए प्रेरित किया हुआ. ५ उमगित किया हुआ, उत्साहित किया हुआ ६ पुलकायमान किया हुआ।
(स्त्री. रीझायोडी)

रीझाळ, रीझाळू, रीझाळौ—वि —१ खुश व प्रसन्न होने वाला।
२ मोहित व मुग्ध होने वाला।
३ उदार, दानी।
४ रसिक।

रीझावणौ, रीझावबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू भे)
उ०—१ देवण ने रतिदान जाच जाचू फिर जाचूं। रीझावण दिन रात नाच नाचू फिर नाचू। —ऊ. का.
उ०—२ वाय पखावज ताळ बजावै, सुर गुण गाय जगत रीझावै। —अनुभववांणी
उ०—३ गूगा राग इलाप कर कोई राव रीझावै। —केसोदास गाडण
उ०—४ भला परमेस्वर बिना आ गूजरी किण सू प्रीत कर सकै। फगत आपनै रीझावण सारू ई इण री जलम व्हियौ। —फुलवाडी

रीझावणहार, हारौ (हारी), **रीझावणियौ**—वि.।
रीझाविग्रोड़ौ, रीझावियोड़ौ, रीझाव्योड़ौ—भू. का कृ।
रीझावीजणौ, रीझावीजबौ—कर्म वा।

रीझावियोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री रीझावियोडी)

रीझियोड़ौ, रीझीयोडौ—भू का कृ —१ प्रसन्न हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ. २ मोहित या मुग्ध हुवा हुआ ३ मस्त या मग्न हुवा हुआ ४ तुष्टमान हुवा हुआ ५ उमगित या उत्साहित हुवा हुआ. ६ पुलकित हुवा हुआ
(स्त्री. रीझियोडी)

रीझु—देखो 'रीझ' (रू भे)
उ०—बेउ हूफइ बेउ बाकर वाइ राय नणा मनि रीझु ऊपाइ। भररिण धसककइ गाजइ गयणु, हारिइ जीतइ जय जय बयणु। —सालिभद्र सूरि

रीझौ—वि.—रीझने वाला।

रीटौ—देखो 'रीटौ' (रू. भे.)

रीठ—स. पु. [स. रिष्ट=प्रा. रिठ] युद्ध, समर। (डिं को)
उ०—१ दगै अराब ताम दड्वाणा, प्रगनि चढे घर गिर असमाणा। दुगम रीठ गोळा दरसाई, वीरभद्र जिम घटा वणाई। —सू. प्र.
उ०—२ एक घडी धारां झडी, रीठ पडी रिण बार। दोनूं दुयण 'प्रजीत' रा, समहर थया सथार। —रा रू.
उ०—३ मूंडण ई विकराळ घडी री रूप धारयां रीठ बजायी पण बजायी। —फुलवाडी
[स. रिष्टि] २ तलवार।
उ०—१ जात सुभाव न जाय, रांगड के बोदो हुवै। मारण बाज्यां माय, रीठ बजाडै राजिया। —किरपाराम
उ०—२ पिसण पीठ लग जो जडू, पिसण जडै मो पीठ। किसूं नफी कह कामणी, राड बजायां रीठ। —बां दा
उ० —३ हरीया हौदै ऊपरै, गावत वाई रीठ। मारयौ राजा मोह कै, पडयौ तळफै पीठ। —अनुभववांणी
३ शस्त्र।
४ शस्त्र प्रहार, आघात।
उ०—१ गडवकै जगाळा नाळां कुंडाळां भणंके गोण। तोडवै तेजाळा रगताळा में नत्रीठ। दळा पेलां बाळा सजै दंताळां डाहने दिये। रावतो बंगाळा माथै करम्माळां रीठ। —रावत सारंगदेव री गीत
उ०—२ पडै उत्तबग चढै तन पीठ। गैवाळां झीक किरमल्ल रीठ। —मा. वचनिका
उ०—३ गाव नजीक वेढ हुई, सु वडौ लोह रौ रीठ पडियौ। अठै उलो पै'ली घणौ साथ काम आयौ। —नैणसी
५ शस्त्र प्रहार से उत्पन्न ध्वनि। शब्द, आवाज।
उ०—१ हरवळ 'गजबध' हुवौ, 'अमर' लडियौ उण वारा। वेढेचा दिखणिया, रीठ वागौ खग धारा। —सू. प्र
उ०—२ ताहरा पाबूजी खेत बुहारनै लडाई कीवी। वडो रीठ वाजियौ। ताहरा पाबूजी काम आया। —नैणसी
उ०—३ भो पोहर एक तक रीठ बाजियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ निहमति जोध नत्रीठि। रिग रूक वायरि रीठ। बे निहम मेन निसंक, किरि राम रामण लंक। —गु. रू. बं.
६ असह्य शीत, सर्दी।
उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडिसी रीठ। दोहागिण-घट सामुहउ, सोहागिण री पीठ। —ढो. मा.
रू भे.—रिट्ठ, रिठ, रिठि, रीठण।
मह.,—रीठौ।

रीठण—देखो 'रीठ' (रू. भे)
उ०—फिर दोळा अळगा फिरग, रण मोळा पड राम। प्रोला नह[!] ने आउवौ, गोळा रीठण गाम। —अग्यात

रीठौ—स. पु —१ एक बड़ा जगली वृक्ष।
२ इस वृक्ष का फल जो बेर के बराबर होता है।
३ देखो 'रीठ' (मह., रू भे.)

उ० —मिर्धा सावनां सहेतो आकाई सोहियो, राम सिधु बढै म्याग रीठौ। अमर भूपाळ आदेस करतां सहूं, दळां माहेम माहेस दीठो।
—महेसदास राठोड़ री गीत

रीढ, रीढक—स. पु. [स. रीढक] १ मनुष्य आदि कुछ विशिष्ट प्राणियो के शरीर के पृष्ठ भाग मे गर्दन से कमर तक की सीधी मोटी हड्डी जो पसलियो से जुडी रहती है। मेरुदंड।

उ०—इसडी बचन सुणि बिरोध री क्रोध बिमारि बिजय सूर री जोडायत कर में कटार झालि साहस हबाग रै काज रीढक रै समीप आप री पीठ फाडि नैत्र-मूढ मूरच्छित बालक नूं······
—वं. भा

२ किसी बात या विषय का मूल आधार।

३ नाश, सहार।

४ फूंक और वायु से बजने वाले वाद्यों मे स्वर बनाने वाली वस्तु।

रीढणौ, रीढबौ—क्रि. स.—मर्यादा का उल्लंघन करना, अवज्ञा करना।

रीढा—सं. स्त्री.—हठ, जिद्द, दुराग्रह।

उ०—साह्यौ हठ बप्पवस बिरुद बढायन कों। रावन को रीढा दै सिटावन को साह्यौ नां।
—महाकवि सूरजमल्ल

रीढियोड़ौ—भू का. कृ.—हठ या जिद्द किया हुआ, दुराग्रह किया हुआ। (स्त्री. रीढियोड़ी)

रीणथंबर—देखो 'रणथबोर' (रू. भे)

उ०—पछै दिन २ अजमेर रह नै साहजहा रीणथंबर री पाखती होय आगरै आयौ।
—नैणसी

रीणवास—देखो 'रणवास' (रू. भे.)

उ०—थाप्या साहण बर तुरी। थाप्या मदिर घरि कविलास। थाप्या चौरा चउखडि। थाप्या साभरि का रीणवास।
—बी. दे

रीणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू भे)

उ०—थळ माथै निवांण करि नर काय लोहै नीर। नाळै खोळै न मिळै, रीणायर वीणि हीर।
—वील्होजी

रीणौ—१ देखो 'रण' (अल्पा., रू. भे)

उ०—झीणौ करह कहूकीयौ, रीणौ मझि कराह। अरणं फूलाणी कांबाटीयौ, ऊमाहीयौ पराह।
—लाखा फूलाणी री बात

२ देखो 'रिसांणौ' (रू. भे.)

रीत—स. स्त्री. [सं. रीति] १ प्रथा, रस्म, रिवाज, परम्परा, रीति।

उ०—१ एक कहै आप रै, कियौ मत स्वारथ कज्जै। एक कहै अण-गंम, रीत अण प्रीत सु रज्जै।
—रा रू

उ०—२ पैं'ली बैः बिहाल की बात नै डाढी चोखी बतावै, जिका ही पछै बी बात री माडी चुगली करण लाग ज्यावै। दुनियां री इसौ धारौ है, इसी रीत है। जगती रा भूठा जाळ है, पापा रा लपचेड़ पपाळ है।
—दसदोख

उ०—३ ससतर सु नहीं छेदीयै, पावक लगै न सीत। हरीया ऐसी ब्रह्म की, उद बुद कहीयै रीत।
—अनुभववाणी

२ तौर, तरीका, ढग, विधि।

उ०—१ माथ 'सवाई' नंडियो 'जोध' हरै 'जैसाह'। रीत विविध मनुहार री, अति उद्धरी अथाह।
—रा. रू.

उ०—२ राज काज रीत नीत बूझतौ रह्यौ। बाट आघरे कियार सूझतौ रह्यौ।
—ऊ का.

३ नियम, कायदा।

उ०—१ आरा माहि थी लापसी ल्याया सो तौ उणा रा टोळा री रीत है पिण नेम मे द्रढ रह्यौ। काल कर गयौ पिण काचौ पाणी पीधौ नहीं।
—भि द्र

उ०—२ सिस संती सतगुर कहै, परापरी की रीत। और भरम कु छाडि दे, राम नाम सु प्रीत।
—अनुभववाणी

४ स्वभाव, आदत, प्रकृति।

उ०—१ राव रक धन और, सूरवीर गुणवान सठ। जात तणौ नह जोर, रीत तणौ गुण राजिया।
—किरपाराम

उ०—२ सूर सती अर साध की, हरीया हेकौ रीत। ऊ त्यागै तन साम काज, हरिजन हरि की प्रीत।
—अनुभववाणी

५ मर्यादा।

उ० कठण रीत रजपूत कुळ, आग कमाई खाय। और कमाई आदरै गोलौ भगडै गाय।
—बा. दा

६ स्थिति।

उ०—कृत पूरण वधियौ कळू, रीत दवापुर राज। वंस हस अव-तम विध, अभैसाह' महाराज।
—रा. रू.

७ धार्मिक विधान।

उ०—किण सूं जे पैगबर रीत रा, बाधण हार छै अर बादसाह उण रा चलावण हार छै सो हिमायत करण हार उण री रीत रो कहियौ छै।
—नी. प्र.

८ वर पक्ष की ओर से कन्या के पिता को, कन्या का सम्बन्ध करने के उपलक्ष मे दिया जाने वाला, धन, रुपया आदि।

उ०—वर कन्या सनमन समै, तुलनै मानु तराज। वर हळकौ (जद) टीकौ धरत, वर गुरु रीत रिवाज।
—उभयराज

रू. भे —रिति, रिती, रीति, रीती।

रीतभांत—सं. स्त्री —तौर, तरीका, ढंग, रीति।

रीत रिवाज—स. पु.—रस्मो रिवाज, प्रथा, परम्परा।

उ०—जुग री जाणकारी राखतौ थकौ आपरै गांवडै में मांडी रीत रिवाजां मिटावण नै नौ जुवाना रो सगठण करै है —दसदोख

रीतवणौ, रीतवबौ–क्रि. अ.— खाली होना, रिक्त होना ।

उ० —भरया सरवर **रीतवै** रीता जळ भारै । —कँसोदास गाडण

रीतवियोड़ौ–भू का. कृ —खाली हुवा हुआ ।

(स्त्री. रीतवियोडी)

रीतहड़, रीतहर, रीतहरी–स. स्त्री —शकुन शास्त्र के अनुसार ऊध दिशा का नाम । वि. वि.—देखो 'दिसा चक्र' ।

उ० —१ दीखण–दहीया कोहर कुसलवै वरणाऊ चामु । १ उत्तर नु-घटीयाळी भेळ, बीकानेर था । १ **रीतहड़**-बाप कीरखैड री वा मीव पुडीयाळ सीरड सीव । —नैणसी

उ०—२ हासलपुर खुरद सोभत था कोम ६ **रीतहड़** कूंण मा है । जाट खारोळ वसै । —नैणसी

उ० —३ खुटली कोम ६ **रीतहर** कूण मा है । जाट पलीवाळ वसै । — नैणसी

उ०—४ हरसीयाहडौ सोभत था कोस ७ **रीतहर** कुण मा है । जाट वाणिया खारोळ वसै । —नैणसी

उ० —५ गोधेळाव कोस ४ **रीतहरी** कूण माहे । जाट बसै । —नैणसी

रीति, रीती–स स्त्री [स रीति] १ गीत या गायन की लय, तर्ज ।

उ० सदा प्रिया सु प्रीति रीति, गीन सारणी नही । निसास रोज आननी, उरोज धारणी नही । —ऊ का

२ सस्कृत साहित्य मे किसी विषय का वर्णन करने मे वर्णों की वह योजना जिसमे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता हो । यह चार प्रकार की मानी गई है ।

३ राजस्थानी या हिन्दी साहित्य की मध्य युगीन काव्य रचना की प्रणाली या शैली विशेष जो आचार्यों द्वारा निरुपित शास्त्रीय नियमो, लक्षणो आदि पर निर्भर थी । और जिसमे वर्ण मैत्री, अलकार जथा उक्ति, पिगल (छन्द शास्त्र), रस आदि का पूरा ध्यान रखा जाता था । इस प्रकार के ग्रथो के नाम, रीति ग्रन्थ कहलाते थे । जैसे राजस्थानी में रघुनाथ रूपक, रघुवर-जस-प्रकास आदि ।

४—देखो' रीत' (रू भे)

उ० —१ रोकी तै कुरीति **रीति** सुरीति को भोकी साथ, ताकत त्रिलोकी ऐसौ मत अवगाह्यौ तै । —ऊ का.

उ०—२ दान देन सिख्यौ आन राखन कौ सीख्यौ दिव्य, सीख्यौ थान ग्यान मान मुद्ध सीख्यौ तू । साहस सरीर सीख्यौ नीर छीर प्रीति सीख्यौ, सीख्यौ धीर **रीति** वड वीर बुद्धि सीख्यो तू । —ऊ का.

उ०—३ **रीती** को लिहाज विपरीत ना लिहाज राख्यौ, राख्यौ मान मान कै न हान वीच राख्यौ तै । —ऊ. का.

रीतोड़–स. पु [सं. रिक्त] 'झेलवे कुए में चरस खाली होने के बाद बैलो के लौटने का रास्ता ।

वि. वि —देखो 'झेलवौ' ।

रीतौ–वि [स. रिक्त] (स्त्री. रीती) १ रिक्त, खाली ।

उ०—१ वरसि के वन माहि वीता, ग्यान गोविंद रूप गीता । गकमा रा नेस **रीता**, आतम अजीता । —पी. ग्र

उ०—२ खाटी दाटी रहि गई, कुछी न चाली साथि । जन हरिया नर दीन विन, हाल्यौ **रीतै** हाथि । - अनुभववाणी

उ०—३ आदि अनादि जीवडो, भमियौ चऊं गति माय । अरहट घटि का नी परै, भरि आवै **रीतौ** जाय । —जयवाणी

२ अज्ञ, अज्ञानी ।

उ० —नर राची म्है न लखी, तू कत लख्यौ सुजान । पढ कुराण **रीतौ** रह्यौ, राच्यौ नही रहमान । —अज्ञात

३ परवश, पराधीन, मोहताज ।

उ० —राम नाम न चेतियो, आळस करि करि अग । हरीया मै **रीता** रह्या, मूरा कूकर सग । —अनुभववाणी

४ गरीब, निर्धन, कगाल ।

५ हताश, निराश ।

उ०—खळ चीघान विखम सी खोसै, वायक तोपां रखौ वणाय । दुरग न दीधौ दस महसै, पान गयौ **रीतौ** पतसाय । —महाराणा कूंभा री गीत

६ रहित, विहीन ।

रीध—देखो 'रिद्धि' (रू भे)

उ०—भीवै मन माहे जाण्यौ बावडी माहे किसूं करै छै । या जाण वरडी रा छेकडा माहे जोवै । तठै देखै नो अस्त्री छै । देख नै माथौ धूंणै छै । नै जाण्यौ परमेस्वर रा घर माहे घणी **रीध** छै, नै आ जो म्हारै बैर होय नै इण रै पेट री कोई नग नीपजै तौ हू पृथ्वी माहे अमर होवूं । —जखडा मुखडा भाटी री बात

रीधणौ, रीधबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे)

उ० —१ सम थोड़ै बोह नफौ सापजै, बीसर मती अनोखी बान । रहै प्रसन्न ऐ आयस **रीधै**, छात सिधां नरपतिया छात । —बा. दा

उ०—२ मिळिया बका राठवड, चित हित दाख वधाव । सुख जाडौ कीधौ सगै, **रीधौ** हाडौ राव । --रा. रू.

उ०—३ कवि आखर ज्यूं 'करन' तण, मरहट्टी महिळाव । कुच आधा ढकिया निरखि, **रीधौ** बाळक राव । —बा. दा.

उ० —४ रायधण रात दिन सजनळ सूं नजरा सू जोवतौ रहै, पण औ जाणै नही आ बैर छै कै माटी छै । इयै रै रूप पर **रीधौ** रहै । —रायधण भाटी री वारता

उ०—५ रवद पिराग देखि छिब **रीधा**, डेरा आय गग तटि दीधा ।

पहरै जवन सबज पौसाका, प्रसि चढ़वै चढ़िया एराका। —सू. प्र.

उ०—६ नरपति रहियौ जैंनगर, परम रिदै धर प्रीत। रीझौ भूप बिस्राम रस, कीधौ बैंन विनीन। —रा. रू

उ०—७ निजर नमी नरमष, कोप दांणव सिर कीधौ। लाधा थारा लखण, रांम भगता सिरि रीझौ —पी. ग्र

उ०—८ नवै भू अहल्या गणका तराई, रटा बोर भीलणी तणा खाय रीझौ। करां ताडका मार ऊधार मामी, करा ग्रीध वाळी बळै स्राध कीधौ। —र. ज. प्र.

उ०—९ राजा देखि कतूहळ रीझौ, दुगम जाणि चित सोच न कीधौ। श्रारण वीर ताम इम धरियौ, देखै मूभ भूप न डरियौ। —सू प्र

रीझणहार, हारौ (हारी), रीझणियौ—वि.।

रीझिग्रोड़ौ, रीझियोड़ौ, रीझ्योड़ौ—भू. का. कृ।

रीझीजणौ, रीझीजबौ—भाव वा.।

रीफल—देखो 'रीफल' (रू. भे)

उ०—१ लागला फलां ग्रोलमा ग्रोब, घायलां मलां घूमलां घोब। रीफलां रिला ऊजळा रत्त, गउथला भडां मत्र खळा गत्त। —गु. रू बं.

रीम—सं. स्त्री—१ बीस दस्ते कागजों की गड्डी।

२ तलवार। (ना डिं. को)

रीसांणौ—देखो 'रिसांणौ' (रू. भे)

रीर—सं. स्त्री.—१ प्रलाप।

उ०—१ रीर करइ हसइ, धसइ ऊधसइ म्रग। क्षणु खीजइ क्षणु मांहि क्षमा क्षणि गहिलु क्षणु चग —मा. का. प्र.

उ०—२ तिहार-पछी तै विहलइ, सिद्धि न सान सरीर। कामकदला कही कही, रोतु पाडइ रीर। —मा का प्र

रीराड़ौ—सं. पु.—दर्द भरी आवाज, कराहट।

उ०—१ पछै स्वामी जी पधारया। धसक सूं ताव चढ आयौ। सांझै दरसण करवा आई। जदे स्वामी जी पूछयौ। कांई थयौ? यूं वधू बोले है। जद रीराड़ा करती कहै स्वामी जी आप रौ पधारणौ हुवौ नै मोनै ताव चढ गयौ। —भि. द्र

रीराड़णौ, रीराड़बौ—देखो 'रीराणौ, रीराबौ' (रू. भे)

रीराणौ, रीराबौ—क्रि. प्र.—१ गिड़गिड़ाना।

उ०—१ जिण तिण रौ मुख जोय, निसचै दुख कहणौ नहीं। काढ न दे वित्त कोय, रीरायां सू राजिया। —किरपाराम

२ रुदन करना, रोना।

३ दुःख प्रगट करना।

रीराणहार, हारौ (हारी), रीराणियौ—वि।

रीरायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रीराईजणौ, रीराईजबौ—भाव वा.।

रीराड़णौ, रीराड़बौ, रीराणौ, रीराबौ, रीरावणौ, रीरावबौ रू. भे.।

रीरायोड़ौ—भू. का कृ.—१ गिड़गिड़ाया हुआ. २ रुदन किया हुआ. ३ दुःख वर्णन किया हुआ.

(स्त्री रीरायोड़ी)

रीरावणौ, रीरावबौ—देखो 'रीराणौ रीराबौ' (रू. भे)

उ०—१ भावे नहीज भात, लागै विगज विडावणौ। रीरावै दिनरात रोय्या बदळै राजिया। —किरपारांम

उ०—२ घरै न सका धीर, रीरावां रात्यूं दिवस। सबळी मांहि सरीर, वेदन म्हारी बीझरा। —बीझरै अहीर ही वात

रीरावणहार, हारौ (हारी), रीरावणियौ—वि.।

रीराविग्रोड़ौ, रीरावियोड़ौ, रीराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रीरावीजणौ, रीरावीजबौ—भाव वा।

रीरावियोड़ौ—देखो 'रीरायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री रीरावियोड़ी)

रीरी—स. पु. [स रिरी] १ पीतल।

उ०—१ जउ लाधउ जिनधरम निरव्याज तउ अनेरइ धरमि किसिउ काज, जउ लाधी सुवरण्ण तणी कोडि तु रीरी पहिरवा हुइ खोडि। —व. स

उ०—२ किहा रीरी किहा वरकणय, किहां दीवउ किहा भांण। मामिणि मभ तुभ अंतरउ, ए एवडउ प्रमाण। —हीराणंद सूरि

रीरीया—स स्त्री.—१ गिडगिडाना, बिलबिलाना।

उ०—१ वाजवा लागी सुभट तणी कोटकडि, नाचेवा लागा घडकबध, पडिवा लागा ध्वजचिध, प्रहार जरजर कुजर पडइ, सूना सणा तुरगम तडफडइ भाग्डीता गजेन्द्र आरडइ, रीरीया करता राउत हथिम्रार हारइ। —व. स.

रीळ—स स्त्री.—सहसा या रह रह कर उठने वाली वह पीड़ा या दर्द जिसके कारण शरीर का भीतरी भाग चीरता हुआ प्रतीत होता है, हूल।

उ०—१ माथौ साथौ दबायौ। हाल जच्चा रै पेट मे रीळां हालती ही। डील चभक चभक करतो हौ। —फुलवाडी

उ०—२ कै तौ आध घडी पै'ली वारा दात किटकिट बाजता हा, हाडका मे रीळां ऊठती ही। —फुलवाडी

क्रि. प्र —ऊठणी, चलणी, चालणी, हालणी।

२ शीतल वायु की लहर।

रू भे.—रीळी।

रील—स. स्त्री.—१ प्लास्टिक का फीता जिस पर किसी नाटक या खेल के प्रतिछायात्मक चित्र होते हैं और जिसे मशीन पर चढा

कर, पर्दे पर उन चित्रों के प्रतिबिंब देखे जाते हैं।

उ०—१ सपनै री घटना सिनेमे री घुघळी रील री दायी एक आखिया रै आगै फुरती सू घूमगी। —वरसगांठ

२ बारीक और पक्के डोरे का गट्ठा।

रीळी—देखो 'रीळ' (रू. भे.)

रीव—सं. स्त्री. [स. रवः] हाहाकार, करुण क्रंदन।

उ०—१ जोयउ चक्रवर्त्ती आठमउ, सभूम नउ जीव। सातमियइ नरकइ गयउ, करतउ मुख रीव। —स. कु.

उ०—२ किरिया करता दोहिली जी आलम आणइ जीव। धरम पखइ धधइ पड़ीओ जी नर कइक करस्यइ रीव। —स कु.

२ पीड़ा, कष्ट।

उ०—मोह मद्य सरिखू कहिउरे धारिउ हीडइ जीव। परवसि थयु ते नवि जाणइ अण नरक रै दोहिली रीव। —स. कु.

३ चिल्लाहट।

उ०—रीव करइं वलि तरफली रे जिय थोडे जळ मीन। —वि. कु.

मह.,—रीवौ।

रीवणौ, रीवबौ—क्रि. अ.—रोना, रुदन करना।

उ०—१ सबद भलका तन सहै, मना न आणै सक। रावत सोहि मरि रहै, हरिया रीवै रक। —अनुभववाणी

२ कराहना।

उ०—सबद मारकौ मारियौ, रीवै सास उसास। हरिया बाहिर बोलिकै, काढि न सवै वास। —अनुभववाणी

रीवौ—देखो 'रीव' (मह, रू. भे.)

उ०—तउ तु मूकइ नामूकूं गही, तिण परि नाटकी जीवो जी। परमाहम्मी विण मूकइ नही, तिहा पक्ष्यउते करइ रीवो जी। —स. कु.

रीस—स. स्त्री. [स. रिष् या रोष्] १ क्रोध, गुस्सा, कोप।

उ०—१ उगा मुख बारह दीत उदार, भिडे तिणवार मुकार मुहार। जोए जुध रीस चढी वरजागि, उठी अत सीचिय जागिक आगि। —सू प्र.

उ०—२ काचडगारा ऊपरा, रांमतणी हे रीस। काचडगारा कूडचा, बिगडै विसावीस। —बा. दा.

क्रि. प्र.—आंणी, ऊठणी, करणी, चढणी।

२ डाह, ईर्ष्या।

रू. भे. —रीसौ।

रीसड़ली—देखो 'रीस' (अल्पा, रू. भे.)

रीसट, रीसटाळ, रीसटियौ, रीसटी, रीसट्टू—वि.—कोप या क्रोध करने वाला, क्रोधी, गुस्सेल।

उ०—१ सूरे जी रै बेटी वेरसी वरस आठ री हीवै रै बेटी आगर वरस दस रौ सो सयाणौ अर वेरसी रौ सुभाव बादी रीसट सो सन्रा जाणै। —सूरै खीवै कांधलोत री बात

उ०—२ वळि रीसट वाणियौ दूत बोलै इम डोलै। —ध. व. ग्र.

रीसणौ, रीसबौ—क्रि. अ. [स. रिष् या रुष] १ क्रुध होना, खफा होना।

उ०—लखी तोपा सानुळी, पुळी पलटण्या पटैता। सझीना साबळा, आभ छायौ अखड़ैता। तीर कमाणा तोकि रिमा ऊपर रीसाणां। आणा पोस नत्रीठ, पीठ खेटक खग पाणां॥ —मे. म.

क्रि. स—२ क्रोध करना, कोप करना।

उ०—दोख निज दीह न दीसै रे, रसा अवरा पर रीसै रे। बात निज हाथ बिगाडी रे आई सोई पात अगाडी रे॥ —ऊ. का.

रीसवती—वि. [स्त्री. रीसवती] १ क्रुद्ध स्वभाववाला, क्रोधी।

रीसवाड़णौ, रीसवाड़बौ—देखो 'रीसाणौ रीसाबौ' (रू. भे)

उ०—तद रावत रिणधीर नै 'सती' एक था। पछै सतै रिणधीर ही नु रीसवाड़ियौ। तरै रिणधीर ही मेवाड आयौ। —राव रिणमल री वात

रीसांणउ, रीसांणौ—देखो 'रिसांणौ'।

उ० - सु किणीक वास्तै रीसांणौ हुवौ तरै छाडनै अहमदाबाद रा धणी रै चाकर मूसाखान तिण कनै गियौ। —नैणसी

रीसाणौ, रीसाबौ—क्रि स—१ क्रोध करना, कोप करना।

क्रि अ.—कुपित होना, क्रुद्ध होना।

रीसायोड़ौ—भू. का. कृ.—क्रोध किया हुआ. २ कुपित हुवा हुआ।

(स्त्री. रीसायोडी)

रीसाळ, रीसाळू—वि.—क्रोध करने वाला, गुस्सा करने वाला।

२ डाह करने वाला, ईर्ष्या करने वाला।

रीसावणौ, रीसावबौ—देखो 'रीसाणौ, रीसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साच कहियां थका स्याम रीसावस्यौ, कहे या बात साची कहायौ। पडदळी माय जे न हुतौ जोधपुर, आप रै कहौ किण रीत आयौ। —सवाईसिंह चांपावत रौ गीत

रीसावियोड़ौ—देखो 'रीसायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री रीसावियोडी)

रीसियोड़ौ—भू. का. कृ.—क्रोध किया हुआ, क्रुध।

(स्त्री. रीसियोडी)

रीसोव—वि.—१ क्रोध करने वाला, कोप करने वाला।

उ०—नाराजां आराण झली बीजळी सिलाब नेजां, दुहुं फौजां उलळी दारणा मळी दीठ। लडाका रीसोव आडी चौड़े धाड़ै धाख लागी, राडी चौडे सीसोदां गनीमां वागी रीठ। —बद्रीदास खिडियौ

रीसो—देखो 'रीस' (रू. भे.)

उ०—खमा घरम पहिलो करो, इम भाख्यो जगदीस रे। खमा करसो तो जीतसो, मत राखो कोई रीसो रे। —जयवांणी

रुं—देखो 'रोम' (रू. भे.)

रुंआळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे.)

रुंओ—देखो 'रोम' (रू. भे.)

रुंड-सं. पु. [सं. रुण्ड, रुण्डम्] १ सिर शून्य शरीर, बिना सिर का धड़ कबंध।

उ०—१ मोड राजा अरजुणसिंघ बैरिया रा थाट बिरोळि बेंडा गजां रै आवर बद्दहाम चलाइ सैकड़ां सूरां नूं माथी करि महारुद्र री माळा में आपरा मूंड री मेरु चढ़ाइ रुंड थकी भी धारा में तिल तिल पळचरां री पांती पुदगल रांखि इस्टलोक पूगो। —वं. भा.

उ०—२ सबार मार लैकार मेन, मिळ सार धार अधार मेन। धड़ मुंड लड बै रुंड धक्क, कल्माळ बहे किरि काळ चक्क। —गु. रू. ब.

२ ऐसा शरीर जिसके हाथ पांव कट गये हों।

३ सिर, मस्तक। (अ. मा.)

उ०—धड़ झाट झड़ झड़, काट कोरड़, छूटै लबछड़, ताड तड़तड़। बांण छूट बड़, सोक सड़सड़, फूट फिफरड़, कलिज झड फड़। भतड़ उधरड़, लोक लड़थड़, उळझ आवड़, रुंड रड़बड़। पल झड़ पड़. बीर बड़ बड़, अम्मर अड़बड़, धरा धड़हड़, इसो मचि धारांण। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

यौ.—रुंडमाळ, रुंडमाळा।

४ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक प्रकार का वाद्य विशेष।

रू. भे.—रूंड, अल्पा.,—रुंडलो, रूंडलो, मह.—रूंडल।

रुंडमाळ, रुंडमाळका, रुंडमाळा-सं. स्त्री.—युद्ध में वीरगति प्राप्त वीरों के सिरों की माला जिसे महादेव अपने गले में धारण करते हैं।

उ०—१ पेखां भक्ति लोण वहै अणपार, जटा गंग जाणिक धार हजार। बघंबर जेम सिर्व विकराळ. मडे गळि माळ जिका रुंडमाळ। —सू. प्र.

उ०—२ ताळ कर दिये मिळ भूत बैताळ का, करै किलकार रत ग्रपत व्है काळका। भरै जटधार धू किया रुंडमाळका, अांन भड़ जीविया जिकै लै आळका। —ओरजी आपावत रो गीत

उ०—३ बरंगन कंठ घरै बरमाळ, रुकां उडि सीस चढै रुंडमाळ। अपच्छर सूर जोडै हिज आय, चढै रथ बैठि बसै सुगि जाय। —सू. प्र.

उ०—४ कपाळी चढ्यो बैल पै सैर लग्यो। चढी सिंघ काळी लखै खेल भग्यो। गिरिमादिक मेखळी रुंडमाला, गिरै प्रत तताबळी अग्ग झाळा। —ला. रा.

रू. भे.—रुंडमाळ, रुंडमाळा, रुंडमाळी, रुंडावळ, रुंडावळी, रूंडमाळ।

रुंडमाळी-सं. पु.—१ रुंडों या सिरों की माला धारण करने वाला, शिव, महादेव।

सं. स्त्री.—२ महाचंडी, रणचंडी, दुर्गा।

३ देखो 'रुंडमाळा' (रू. भे.)

उ०—चौतरफा मतारेस जमू वरतेस चाली, पत्र पूर काळी हर्क पाळी रत्र पीध। तपै कांन ताळी वजा सिंधां जळ खुले ताळी, किलकै कपाळी रुंडमाळी मेर कीध। —करणीदांन कवियो

रुंडमुंड-वि.—मुंडे हुए शिरका, मुंडित।

रुंडळ—देखो 'रुंड' (मह. रू. भे.)

उ०—भटकै झाट ग्रीभड़ौ भौर, फेरी फुरत फारक्क फौर। ताडला दळा डूंगळा ट्रूक, रुंडळा रुळा सीकळा रूक। —गु. रू. ब.

रुंडहार—देखो 'मुंडमाळा'।

उ०—मैमता विभाड रथ्थी प्राहा रंगां भाराथ मैं, महाबकी बार पाव अचल्ला माडीम। बाहबार भूतळैस ले रुंडहार भार वर्णे, प्रथीनाथ जह बार झाटकै पाडीस। —भगतराम हाडा रो गीत

रुंडावळ, रुंडावळी—देखो 'रुंडमाळा' (रू. भे.)

उ०—क्रुध भयंकर जंत सदा जुध, सग वसू सिंध मोन समप्पै। ज्यूं भम्मी तन व्याळ रुंडावळ, हैत हळाहळ कंठ करप्पै। —क. कु. बो.

रुंडिका-सं. स्त्री. [सं.] युद्ध भूमि, युद्ध स्थल।

रुंदणो, रुंदबो-क्रि. अ.—१ पैरों तले कुचला जाना।

२ देखो 'रूंदणो, रूंदबो' (रू. भे.)

३ देखो 'रुंधणो, रुंधबो' (रू. भे.)

रुंदवाणो, रुंदवाबो-क्रि. स.—पैरों तले कुचलवाना, रौंदवाना।

रुंदियोड़ो—१ देखो 'रुंदियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'रूंधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रुंदियोड़ी)

रुंध—देखो 'रूंध' (रू. भे.)

रुंधणो, रुंधबो—देखो 'रूंधणो, रूंधबो' (रू. भे.)

उ०—१ चदन तापइ समि जळइ, पवन करइ प्रकास। मेह तणा मग रुंधिया, मह्यो रे आसौ मास। —मा. कां. प्र.

उ०—२ हरि हथिआर हलावता, मुक त्यह रुंधि वट्टि। तै मुक सीधड़ आविजे. नाकि घणा खिवि घट्टि। —मा. का. प्र.

रुंधियोड़ो—देखो 'रुंधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रुंधियोड़ी)

रुंमड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी विशेष।

उ०—रामोढी नइ रासना, रीगणि रुइ जटाय । राग रतांजणी रुंआळी, रनि बनि रग घराय । —मा. का. प्र.

रुंवाळी—देखो 'रोमावली' (रू. भे.)

उ०—१ आज म्हारै मन मांयली बात पूरी, रुंवाळी रसीली वणी है । —दसदोख

रुग्रड़ी, रुग्रडौ—देखो 'रूडौ' (रू भे)

उ०—१ जिन वाणी छै रुग्रड़ी । —धरम पत्र

उ०—२ राजकुमार ग्रमं रुग्रडा । —धरम पत्र

(स्त्री रुग्रडी, रुग्रडी)

रुग्राब—देखो 'रौब' (रू भे.)

रुग्रामाळ—स. पु.—१ रूमाल (रू भे.)

उ०—उर ग्रोर के सास ग्रभ्यास ग्राणें, वडा जूह पूतारिया पीलवाणें । गडां मार बैंसारिग्रा नीठ गज, रुग्रामाळ फैरै करै झाडि रज । —वचनिका

२ देखो 'रोमावळी' (रू. भे.)

रुग्रामाळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे)

रुइ—१ देखो 'रुचि' (रू भे.)

२ देखो 'रूई' (रू. भे)

रुइर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रुई—स स्त्री.—१ देखो 'रुचि' (रू. भे)

२ देखो 'रूई' (रू भे)

रुईदार—देखो 'रूईदार' (रू. भे)

रुग्रोई—देखो 'रसोई' (रू. भे)

रुक—देखो 'रूक' (रू. भे.)

उ०—बरगन कठ घरै वरमाळ, रुकां उडी सीम चढै रुमाळ । —सू प्र.

रुकड़—देखो 'रूक' (मह , रू. भे)

रुकणी—स. स्त्री.—रोक, बघन, रुकावट ।

उ०—ग्ररु ग्रेक दिन दिली मैं मा'राज पदमसिंघजी वा जैसीघजी रा कवर रांमसीघजी ग्रै दोय सिरदार सैल करण नै गया हा तठै रुकणी मे ग्राय गया । —द. दा

रुकणौ, रुकबौ—क्रि. ग्र.—१ रास्ता ग्रादि ठीक न मिलने के कारण ठहर जाना, ग्रागे न बढ सकना, ग्रवरुद्ध होना, ग्रटकना ।

२ ग्रपनी इच्छा से ही ठहर जाना, ग्रगाडी न बढना ।

३ किसी कार्य का ग्रागे न चलना, चलते हुए कार्य का बद हो जाना ।

४ किसी चलते हुए क्रम या सिलसिले का ग्रवरुद्ध होना, बद होना ।

५ किसी कार्य का बीच मे ही बन्द हो जाना, काम ग्रागे न होना ।

६ मैथुन या सहवास के समय पुरुष का ऐसी ग्रवस्था मे होना कि उसका वीर्यपात न हो ।

रुकणहार, हारौ (हारी), रुकणियौ—वि.

रुकिग्रोड़ौ, रुकियोड़ौ, रुक्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रुकीजणौ, रुकीजबौ—भाव वा. ।

रुकनाबाद—स. पु [फा. रुक्नाबाद] १ मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान । (बा. दा. ख्यात)

२ ईरान मे शीराज के पास बहने वाली नदी ।

रुकमगद—देखो 'रुक्मागद' (रू भे)

रुकम—स पु. [स रुक्मन्] १ स्वर्ण, सोना । (ग्र मा , ह नां मा.)

उ०—१ विध विध ग्राभूखण जवाहर, लख बगसै जस सुग्रद लियौ । सिलासार पलटै ग्रग सुकवि, कमध रुकमकर रुकम कियौ । —मानजी लाळस

उ०—२ जग पुड़ 'जगा' पाखरां जगम, रिमहर माथै घात रह । रुकमां जोख जोखिया राणा, पडियौ जोखै दिली पह । —महाराणा जगतसिंह रौ गीत

[स रुक्मी] २ विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के सब से बडे पुत्र का नाम ।

उ०—पच पुत्र ताइ छठी सुपुत्री, कुग्रर रुकम कहि विमळ कथ । रुकमबाहु ग्रनै रुकमाळी, रुकमकेस ग्रनै रुकमरथ । —वेलि

रू भे.—रुकमी, रुकुम, रुकुमी, रुखम ।

ग्रल्पा.—रुकमइयौ, रुकमणियौ, रुकमयौ, रुकमैयौ, रुखमइयौ ।

३ लखपत पिगळ के ग्रनुसार एक मात्रिक छद विशेष ।

रुकमइयौ—देखो 'रुकम' (रू. भे.)

उ०—१ रुकमइयौ पेखि तपत ग्रारणि रगि, पेखि रुकमणी जळ प्रसन । तणु लोहार वाम कर निय तणु, माहव किउ साहसी मन । —वेलि ।

उ०—२ रुकमइयौ सिसपाळ बुलायौ, नहिं मुख देखू वाकौ । थाका बिडद कू लोग हसेगो, जिव जावैगो म्हाकौ । —मीरा

रुकमकर—स. पु यौ. [स. रुक्म+कर] पारस ।

उ०—विध विध ग्राभूखण जवाहर, लख बगसै जस सुग्रद लियौ । सिलासार पलटै ग्रग सुकवि, कमध रुकमकर रुकम कियौ ।

—मांनजी लाळस

रुकमकारक—स. पु. [स. रुक्मकारक] सोना, स्वर्ण ।

रुकमकेस—स. पु. [स. रुक्मकेश] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पांच पुत्रो में से चतुर्थ पुत्र का नाम ।

उ०—तिहि राजा के पांच पुत्र छठी पुत्री । एक कउ नाम रुकम ।

दूजौ रुकमबाह । तीजौ रुकमाळी । चौथौ रुकमकेस ।
—वेलि टी

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमण—देखो 'रुकमणी' (रू भे)

उ०—१ वहियी गज बारीह, तू रुकमण प्यारी तणै । मदनी हरि म्हारीह, धजबधी धारी नही । —रामनाथ कवियो

उ०—२ राधाई रुकमण और सतभामा, कुब्जा काई (थारै) मन पटे । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, तुम सुमरा सूं म्हाको संकट कटै । —मीरा

रुकमणकंत, रुकमणकंथ—स. पु यौ. [सं. रुक्मिणीकान्त] १ ईश्वर, परमेश्वर । (ह. ना मा)

२ श्री कृष्ण ।

रुकमणवरण—स पु यौ. [स रुक्मिणी+वरण] श्री कृष्ण ।
(अ. मा.)

रुकमणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ परि असरीखीय माइइ ए माइइ पाडि सुपामि । जपइ ए रमणि सिरोमणी, रुकमणि रागिय रोनि ।
—जयसेखर सूरि

उ०—२ यौ सिसपाल चंदेरी कौ राजा, कूडी साखि भरैगो । मीरा कहै यू रुकमणि कहत है, थाको ही बिडद लजैगो । —मीरा

रुकमणियौ—देखो 'रुकम' (अल्पा. रू भे)

उ०— हा ए साजन भीकमजी री धीय रुकमणिया ए कहिजै बनडी केसरिया स्रीकमण री नार । —लो. गी

रुकमणिरमण—स. पु. यौ. [स. रुक्मिणी रमण] श्री कृष्ण ।

रुकमणिबींद—स. पु. यौ [स रुक्मिणी-विंद] श्री कृष्ण ।

रुकमणिहार—स. पु. यौ [स रुक्मिणी+हार] १ विष्णु ।
(डि ना मा.)

२ श्रीकृष्ण ।

रुकमणी—स स्त्री [स रुक्मिणी] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा की लक्ष्मी के अश से उत्पन्न कन्या जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी ।

उ०—एक अपकार हिंदू तुरक ईसता, जको तो बात संसार जाणी । किसन घरि रुकमणी ले गयौ कवारी, 'अमर' रै कळोधर परणि आणी । —कमौ नाई

रू भे.—रुकमण, रुकमणि, रुकमिणी, रुकम्मणि, रुकम्मणी, रुखमणी, रुक्मिणी, रुखमणि, रुखमणी, रुखमनी, रुखम्मणी, रुक्विमिणी, रुकमणी, रुक्मणी ।

रुकमबाहु—स. पु. [स. रुक्मबाहु] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पाच पुत्रो मे से तृतीय पुत्र का नाम ।

वि वि —देखो 'रुकम' (२)

रुकमपुर—स पु [स रुक्मपुर] पुराणानुसार गरुड के निवास करने के नगर का नाम ।

रुकममाळी—स पु [सं रुक्ममालिन्] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पाचवे पुत्र का नाम ।

वि वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमयौ—देखो 'रुकम' (अल्पा., रू भे)

रुकमरथ—स. पु [स रुक्मरथ] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के दूसरे पुत्र का नाम ।

वि. वि —देखो 'रुकम' (२)

रुकमांगद—देखो 'रुक्मांगद' (रू भे.)

रुकमिणी—देखो 'रुकमणी' (रू भे.)

रुकमियौ—देखो 'रुकम' (अल्पा , रू. भे)

उ०—रुकमिया री व्हीजं म्हारी जच्चा राणी बहनडी हे केसरिया स्रीकस्णजी री नार । —लो. गी.

रुकमैयौ—देखो 'रुकम' (अल्पा. रू भे)

उ०—सकल भवन करता करुणामय, विथा न व्यापै काई । राजा कहै सुणो रुकमैया, तहा दीजै बाई । —ह पु. वा.

रुकमौ—देखो 'रुकम' (रू भे)

उ०—थानै थानै ओ म्हारी रुकमण बहन थानै कुण लावेगौ । लावै लावै ओ म्हारौ रुकमौ वीर, माय मिळावेगौ । —लो. गी

रुकम्मणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे)

उ०—नमौ कसक्रीम विभूसण कन्ह । रुकम्मणि प्राण पुरुक्ख रतन्न —ह र.

रुकरुदती—स पु—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—रावण राग रताजणी, रवणी नड रुद्राख । रुकरुदती रायसलि, गोहड गोहिणि लाख । —मा. का प्र

रुकवाणौ, रुकवाबौ—देखो 'रुकाणौ, रुकाबौ' (रू. भे.)

रुकवायोडौ—भू का कृ —देखो 'रुकायोडौ, रोकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री रुकवायोडी)

रुकसत, रुकस्त—देखो 'रुखसत' (रू भे)

उ०—१ ती म् कही तो काहै कू राखो । रुकसत देवौ यू ही क्यू बुलाया । —मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ मो खरची वा करमा रै पहलै पडी तद इणा रुकस्त लीवी । —ठा जैनसी री वारता

रुकाणौ, रुकाबौ—क्रि स [रुकणौ क्रि. का प्रे] १ रोकने का काम दूसरे द्वारा करवाना ।

२ चलता हुआ काम या सिलसिला बंद करवाना, रुकवाना।

रुकवाणौ, रुकवाबौ—रू. भे.।

रुकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ दूसरे द्वारा रुकवाया हुआ, रोकने का काम दूसरे द्वारा करवाया हुआ. २ चलता हुआ काम या सिलसिला बंद करवाया हुआ, रुकवाया हुआ।

(स्त्री. रुकायोडी)

रुकाव, रुकावट-स. स्त्री.—१ रुकने का कार्य, अवस्था या भाव, अटकाव, अवरोध, रोक।

उ०—अळगी अळगी भाय रा वासी आप आप री बोली मे घाछट बोलै और सुणणिया घाछट समझै। किणी भात री **रुकावट** आडी नी आवै। —फुलवाडी

२ वह पदार्थ या बात जो रोक के रूप में हो, बाधा या विघ्न के रूप मे होने वाली बात या काम।

३ मलावरोध, कब्ज।

४ स्तम्भन।

रुकियोड़ौ-भू. का. कृ, —१ रास्ता आदि ठीक न मिलने के कारण ठहरा हुआ, आगे न बढा हुआ, अटका हुआ २ अगाड़ी न बढा हुआ, ठहरा हुआ (अपनी इच्छा से). ३ चलता हुआ कार्य बन्द हुवा हुआ. ४ चलता हुआ क्रम या सिलसिला अवरुद्ध हुवा हुआ. ५ बीच मे ही बन्द हुवा हुआ, आगे नही बढा हुआ. ६ सभोग या मैथुन के समय स्खलन न हुवा हुआ, रुका हुआ।

(स्त्री रुकियोडी)

रुकुम, रुकुमी देखो 'रुकम' (रू. भे.)

रुकौ, रुक्कौ-सं पु [अ. रुक्कअ] १ छोटा पत्र या चिट्ठी, पुरजा, परचा।

२ चिट्ठी, पत्र।

उ०—पछै राव गागैजी कयौ 'जैतसी कूंपै नूं बुलावौ।" तद जैतसी कयौ, "आप **रुकौ** लिखा दीजै' हूं ई कागद मेल सूं। पछै गागैजी रुकौ लिखियौ। —द. दा.

३ प्रमाण-पत्र, सनद।

उ०—१ अरु व्रंदावन वा गिरराज ऊपर मिंदर था सौ ढहाय दीना। तद गोरधन नाथजी नू गुसाई जी लेय नै आबेर पधारिया। अठै ई पातसाह जी रा भय सूं रया नही। पीछै अठ्या सू ठाकुरजी नूं उदैपुर रै गांव सीहाड पधारिया। तठै राणा राजसिंघजी सांमा आय दरसण कियौ। अरु सिहाड किताई गावा सू निजर कीवी वा **रुकौ** लिख दीनौ कै लाख सीसोदियां रा माथा भेट छै। —द. दा.

उ०—२ रुकौ द्यू तुम हाथ, प्रीत वचन माहि लिखूजी। जाइ पड़ै पर हाथ, आलम इम वचनै नही जी। —प. च. चौ.

४ प्रेम पत्र।

उ०—मालण छाबडी देय नै पाछी आई। तद सुखै फिकरवान होय इण नू वतळाई। काम **रुक्कौ** थौ सो गुमायौ। कतौवई फूलां मे गिर पडियौ होइ। जिण हूं कहां ही जाय नै छाबडी जोइ। उठै फूलां मे **रुक्कौ** रतना पायौ। आप बाच चतरु नै बचायौ उनमांन कियौ मुद्दौ जाण लियौ। हमैं जबाब रौ **रुक्कौ** बणायौ जिण मैं दिल रौ सनेह जणायौ।

साचा पण रहियौ सरस, लेखौ समझ लियौह। आप दियौ जद आप नूं, दिल म्हैं पहल दियौह। —र. हमीर

५ ऋण या कर्ज लेते समय लिखा जाने वाला ऋणपत्र।

रुक्ख—१ देखो 'रूख' (रू. भे.)

उ०—यो सज्जण सुख पुरिया, दूर गया सह दुक्ख। बळ नवपल्लव डहडहै, ज्यों जळ पाया **रुक्ख**। —रा. रू.

२ देखो 'रुख' (रू भे.)

उ०—१ चोळम्मै **रुक्खं** मुक्ख चख, वयम् रूप पग्खड। भारत्थ बत्थ पत्थ भीम, माझी मेरे ब्रहमड। —गु. रू. ब.

उ०—२ राठोड राउ असमान **रुक्ख**, सीचियौ घ्रित किरि मुग-मुक्ख। —गु. रू. ब.

रुक्मणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—नमौ निरगुण सगुण नारियण निभै नर। वीर सुहिद्रा तणा **रुक्मणी** तणा वर। —पी. ग्र.

रुक्मांगद-स पु. [स.] एक इक्ष्वाकु वंशीय राजा जो ऋतुध्वज राजा का पुत्र था। इसकी पत्नी का नाम विंध्यावली एव पुत्र का नाम धर्मांगद था।

उ०—**रुक्मांगद** राजा हुवउ, गुरुमति ग्यान प्रकास। अबला कहिणै आदरिउ, पुत्र करेवा नास। —मा कां. प्र.

वि. वि.—मोहनी नामक अप्सरा के कहने से यह अपने पुत्र धर्मांगद का शिर काटने के लिए तैयार हो गया। इतने मे श्रीविष्णु ने साक्षात् प्रकट होकर इस कृत्य से इसे परावृत कर दिया।

रू भे.—रुकमंगद, रुकमागद, रुखमांगद।

रुक्मिणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—पंचवटी पपापुर **रुक्मिणी**, देव कपिल गुवरासी। नैमखारन गीरखि मिसरिख, कामी पाप-बिनासी। —ऐ..

रुखसत—देखो 'रुखसत' (रू. भे)

उ०—१ महीनै छ री **रुखसत** दीवी। विदा रौ हाथी सिरोपाव फेर दियौ। —गोपाळदास गौड री वारता

उ०—२ सगळा सलाम कर **रुखसत** हुवा। इण तरह महाराज मुजरौ कर विदा हुआ।

—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

रुख—सं. स्त्री [फा. रुख] १ कपोल, गाल ।
२ कोप, कोप । (ग्र. मा)
३ चहरे का भाव, चेष्टा या आशय ।
उ०—१ सब भारत समझा सब कोई, जबलग यह गई मग जिनोई । मुहकम रुख रुख जांण कमाळी, मिर चलनै केवांण सम्हाळी ।
—रा रू.
उ०—२ दीवांणजी तो ई रुख नीं मेळपी । होळै सीक जाता मुर में कहथी—म्हैं जाव्सी के राजाजी कोई काम भेज्यी दीसै ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ काका बाबा भ्रात कवि, हुवै दूर रुख हेर । संत महत न मचरै, पामर रै पग फेर । —बां दा.
४ मनोभाव ।
उ०—उण री रुख देखण साऊ दीवांणजी जांण करनै अंडी बात करी ही । पण बा तौ भाव इज भोळी निकळी । बोली-धरटी फेरण री कोई मेहणो थोडी ई लागै, नवी बींदणी नै ई फेरणी पड़ै । —फुलवाड़ी
५ इच्छा ।
उ०—१ पेट मूं आया थका जयसिंहजी री रुख ग्रौरंगजेब मू ही रही । —महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता
उ०—२ बिगता उमेल पवारै चरित, रखवै मेळ अमेळ रुख । वप वेध बळं खळ वांस ज्यं, दाह जळं उर साह दुख । —रा. रू.
६ कृपा दृष्टि, महरबानी ।
उ०—१ बडौ कुंवर अमरसिंह । बडौ मोटौ सिरदार माटीपणै री आंक सो ती पर महाराज री रुख नहीं ।
—ठा. राजसिंह री वारता
उ०—२ तिका सिर दया रुख होव हरि तौ तणी, किणी दिन न लागै जिका आतंक । —र. ज प्र
७ सामने या आगे का भाग ।
८ शतरंज की किश्ती या हाथी नामक मोहरा ।
९ प्रकार, तरह, भांति ।
उ०—१ रीझवाळा नयण महोवधतणी रुख, खीजवाळा नयण बीज रो खेल । —बखतो खिड़ियो
उ०—२ पड़ उसताज आहणै असपत, दुजडै देतो खळा दुख । केस केस लगियो केळपुरा, रावळ अंबर तणी रुख ।
—महाराणा अमरसिंह रो गीत
उ०—३ उण ठांम तपै हाडो अनड़, पुर गढ ले आवद प्रमुख । संताप चितोड़ सिर, रहियो एकल वाघ रुख । —व. भा
वि —समान, सदृश्य, तुल्य ।
उ०—१ आणद सु सु खी उहास हास अति, राजति रद रिर रुख । नयण कमोदणि दीप नासिका, मैन केस राकेस मुख ।
—वेलि
उ०—२ महिलां रयण अमोल, रोप अणियां मोती रुख ।
—बं भा.
क्रि वि —ओर, तरफ, सामने ।
उ०—म्है थानै आली वरजिया हे, रघुवर रुख मत जोय । सुख री मीम सुणी नह जद, बैठी तन मन खोय । —गी. रा.
देखो 'रूखो' (रू भे)
उ०—अन कोप मुखा चख रोस अडै । भळ आग लगी किर डूंग झडै । जपतै रसणा रुख वाण जुई, हित वादळ बीज सरोस हुई ।
—रा रू.
रू. भे.—रुक्ख ।
रुखभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.)
उ०—देवतत्व वरण्णवीइ तउ स्री सरवग्य तणउ, सुख तउ सिद्धि तणउ, करम्मक्षपणा तउ मुक्ल ध्यान तणी, आयुस्थिति स्री रुखभदेव तणी ''। —व. स.
रुखम—देखो 'रुकम' (रू भे.)
उ०—सामि रै रुखम साला काळा काळा जिकै कान्ह । सधारै मिघाळा भाई कस वाळा भेख । —पी. ग्र.
रुखमइयौ रुखमईयौ—देखो 'रुकम' (अल्पा., रू. भे)
उ०—चूडामडण चूडामणिजी, भीमक घरि अवतार । बधव रुखमईयौ भलो जी, मत्रीसर मत्रीसार । —रुकमणीमगळ
रुखमणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)
रुखमणिवर—स. पु यौ. [स रुक्मिणी+वर] श्री कृष्ण ।
उ०—धारीधर गिरधर वहि रुखमणिवर, चत्रभुज नरहर समर चित ।—पि. प्र.
रुखमणी, रुखमनी - देखो 'रुकमणी' (रू भे)
उ०—१ ज्यू हेमाचळ कै घरै पारवती, ज्यूं जनक राजा के सीता भीखम कै घरै रुखमणी जनम लीधो ज्यूं आपके घरै असा जनमी छै । —मयाराम दरजी री वात
उ०—२ आलिम साह पारवती ओपै, रुखमणी राणी पासि रहै । यौ गगसाम विराजै आछो, देखै जिहा रा दळिद्र दहै । —पी. ग्र.
रुखमांगद—देखो 'रुकमागद' (रू भे)
उ० - १ सुप्रसन होय सामण सारदा, बिमळ सर आखर दै वयण । कळिजुग रुखमांगद रख कमधज, राजा बाखाणीसि रयण' । —दूदौ बिसराळ
उ०—२ भलो कमाळी भगत, किसन सरिखो ले कीधो . रुखमांगद ना राम, दान वैकठ रो दीधो । —पी. ग्र.
रुखमी—देखो 'रुकम' (रू. भे.)
उ०—रुखमी ई रुडा भावीयइ, छोडावियै जौ आजि । कर बध

कापी ग्रास आपी, भीम नी बहु लाज । —रुकमणी मगळ

रुखमीणी, रुखमीनी, रुखम्मणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ रांनांदे मिळियौ सूरिज भरतार । रुखमीणी मिळियौ क्रस्ण आधार । —वी. दे.

उ०—२ अगियारह गुर पायं एकणि, तबं मालती नाम छद तिणि । भणियौ पिंगळ तेम तू ही भणि, राखि रिदं भरतारि रुखम्मणी । —पि. प्र.

रुखळणौ, रुखळबौ—क्रि. अ.—१ रक्षा होना ।

उ०—खेत मे ऊभौ अडवौ कांई आपरं आपं खेत रुखाळं है ? खेत तौ उण रै कारण मतं ई रुखळं है । —फुलवाड़ी

२ निगरानी या चौकसी होना ।

रुखळणहार, हारौ (हारी), रुखळणियौ—वि. ।

रुखळिओड़ो, रुखळियोड़ौ, रुखळयोड़ौ – भू. का. कृ. ।

रुखळीजणौ, रुखळीजबौ—भाव वा. ।

रुखळियोड़ौ—भू. का कृ. १ रक्षा हुवा हुआ. २ निगरानी या चौकसी हुवा हुआ ।

(स्त्री. रुखळियोडी)

रुखवाळ—१ देखो 'रखवाळी' (रू. भे)

२ देखो 'रुखाळौ' (रू. भे:)

उ०—तिण वेळा तारण तरण, गिरधारी गोपाळ । मिळियौ उर भ्रम मेटवा, हिंदू धम रुखवाळ । —रा. रू

रुखवाळणौ, रुखवाळबौ– देखो 'रुखाळणौ, रुखाळबौ' (रू भे)

उ०—वाड करी रुखवाळनं वाड खेत नै खाय । राजा डडं रैत नैं, कूक किसं घर जाय । —अज्ञात

रुखवाळणहार, हारौ (हारी), रुखवाळणियौ—वि. ।

रुखवाळिओड़ो, रुखवाळियोड़ौ, रुखवाळयोड़ौ—भू. का कृ. ।

रुखवाळीजणौ, रुखवाळीजबौ— कर्म वा. ।

रुखवाळियोडौ—देखो 'रुखाळियौडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुखवाळियोडी)

रुखवाळी—देखो 'रखवाळी' (रू.भे.)

उ०—सारा भेळा हुइ लेय देख्यौ तौ कोट री कुंवरजी री सोभा छै, आंपणी रुखवाळी होयसी । —सुंदरदास बीकूंपुरी भाटी री वारता

रुखवाळौ—देखो 'रुखाळौ' (रू. भे)

रुखसत—स. स्त्री. [अ. रुख्सत] १ विदा होने की क्रिया या भाव ।

२ नौकरी, सेवा आदि से मिलने वाली अल्पकालीन छुट्टी या अवकाश ।

३ अनुमति, परवांनगी ।

—क्रि. प्र.—दैणी, पाणी, मिळणी, लेणी, होणी ।

रू. भे.—रुकसत, रुक्सत ।

रुखसति, रुखसती—वि. [अ. रुख्सत+रा. प्र. ई] १ जिसे रुखसत या अवकाश मिला हो ।

उ०—अब गणगोरयां आवसां, कीवौ एम करार । दिन उगाविया देस नै, रुखसति राजकंवार । —पनां

२ रुखसत सम्बन्धी, रुखसत का ।

स. स्त्री.—१ विदाई, रुखसत ।

२ पितृघर से कन्या का ससुराल में जाने की क्रिया या भाव । (मुसलमान)

३ उक्त विदाई के समय कन्या या दामाद को दिया जाने वाला धन । (मुसलमान)

रुखांनी—सं. स्त्री.—१ बढई का एक औजार विशेष ।

२ सगतराशों की टांकी ।

रुखाई—स. स्त्री.—१ रुखा होने की क्रिया या भाव, रुखावट, रुखापन ।

उ०—गायन क्षीन सुरावलि में गहि, ज्यूं बधिरादर बीन बजाई । फूल दियौ नकटै कर में फिर, रीस करी रुख राख रुखाई । —ऊ. का.

२ व्यवहार आदि की कठोरता या नीरसता ।

रुखानळ—सं स्त्री. [स. रोषानल] क्रोधाग्नि, क्रोधानल ।

रुखापण, रुखापणौ—देखो 'रुखाई'

रुखारुखी—स. स्त्री.—१ लिहाज ।

उ०—डोकरी कह्यौ—तोई बापडौ थांरा सू डरै—संका मरतौ कैवै कोनी । रुखारुखी राखै । साची पूछौ तौ औ मुगट अर हार पाडुवा नै ओपै जैडो मिनख्या नै ओप ई नी सकै । —फुलवाडी

रुखाळणौ, रुखाळबौ—क्रि. स. [सं. रक्ष] १ रक्षा करना ।

उ०—१ दो बार तौ घर मैं सांतो लागतो बचियौ । लोग जीवण वास्तै सौ भात रा कळाप करैला, पण अपा नैं अपा रौ घर तौ रुखाळणौ ई पडैला । —फुलवाडी

उ०—२ नाज उग्यौ जद डांगर घेरथा, टीबा बैठ रुखाळ्यौ । टीडी उडज्या ओ खेत परायौ । —लो. गी.

२ निगरानी या चौकसी करना या रखना ।

उ०—खेत से ऊभौ अडवौ कांई आपरं आपं खेत रुखाळं है खेत तौ उणरं कारण मतं ई रुखळं है । पण तो ई पछिया नैं डरावण वास्तै अडवा री ठागौ जरूरी है । —फुलवाडी

उ०—२ गोरी म्हारी अं ! हरियाळी रुखाळीजे क्यू ? यू म्हारा सायब ! यू जी यू । —लो. गी.

रुखाळणहार, हारौ, (हारी), रुखाळणियौ—वि. ।

रुखाळिओड़ो, रुखाळियोड़ौ, रुखाळयोड़ौ—भू. का. कृ. ।

रुखाळीजणौ, रुखाळीजबौ,—कर्म. वा. ।

रखवाळणौ, रखवाळबौ, रुखवाळणौ, रुखवाळबौ, रूखवाळणौ, रूखवाळबौ—रू. भे. ।

रुखाळियोड़ी—भू. का. कृ. १ रक्षा किया हुआ रक्षित. २ निगरानी या चौकसी रखी हुई या की हुई।
(स्त्री. रुखाळियोड़ी)

रुखाळी—वि. [स. रक्षा] १ रक्षा करने वाला, रक्षक।
उ०—भोजन करणी भूल ज्योलै, बूढा लागी भडभडै। हेठै हाली चाली मरौ, ऊळा रुखाळी रडभडै। —दमदेव
२ देखो 'रखवाळी' (रू भे)
उ०—१ भूयरी की रुखाळी काज थांणा मैं रखायो। माथो काट कोला को अमरमरनाथ आयो। —शि. व
उ०—२ काई करा गीगला री मा कमाई करणी तो मोरी है पण धन री रुखाळी करणी दोरी है। —फुलवाडी

रुखाळी—स पु. [सं. रक्ष] १ रक्षा करने का कार्य या भाव।
२ निगरानी, चौकसी, चौकीदारी।
३ निगरानी का कार्य।
४ रखवाली करने का पारिश्रमिक।
वि (स्त्री रुखाळी) १ रक्षा करने वाला, रक्षक।
उ०- सुध हीणा सिरदार, मत हीणा राखै मिनख। अस आंधो असवार, राम रुखाळो राजिया। —किरपाराम
२ निगरानी करने वाला, चौकसी करने वाला।
उ०—आडंग आवै मावटै री, पडण लागज्या पाळो। हेमाळा सू होड करण नै, ऊभो खेत रुखाळो। —चेतमानखो
रू. भे.—रखवाळ, रखवाळक, रखवाळण, रखवाळू, रखवाळो, रखाळू, रखाळू, रखाळो, रुखवाळ, रुखवाळो, रुखाळो।

रुखावट, रुखाहट—स. स्त्री —रुखाई, रूखापन।

रुखिता—स. स्त्री. [स रुषिता] रोष या क्रोध करने वाली नायिका।

रुखमिणी—देखो 'रुकमणी' (रू भे)

रुखी—देखो 'रुख' (रू. भे)

रुखीस्वर, रुखेस्वर—देखो 'रिखीस्वर' (रू भे)
उ०—अहि अमर रुखेस्वर नर असुर, गहचि तुझ दाखै प्रथळ। हु महिरिवांण माया हिमै, वड्डण मुझ दीजै त्रिगळ। —पी. ग्र

रुखौ—वि. [स्त्री रुखी] १ बिना रहित।
उ०—जिण री पोळ आगै थाळ लीधा ककाळी आई तरै जगतसिंघजी खीची कह्यो–देखा मामैजी काम दियो। तरै थाळ खोल नै दिखाळ्यो। तरै जगतसिंह एक आख दिसी रुखौ छै। तरै देखती आख री तिका आगुळी घालि नै काढि थाल मा है मेली नै कह्यो मामाजी होड नही पिण इतरो दुगाणी म्हारी ही ले पधारौ।
—जगदेव पवार री बात

२ देखो 'रुखौ' (रू. भे)

रुग—स पु [स रुग्ण] १ बीमार, रोगी।
२ रोग, बीमारी। (डि. को, ह ना मा)
३ पीड़ा, दर्द। (अ मा)
४ तीरो के चलने मे या पक्षियो के उडने से होने वाली ध्वनि विशेष।
उ०— ग्रीगद्दा भालोड़ा रा बूम पडिआ छै। सवायै मेह रो जोरि मोक वाजै तिण भाति पखा री रुग वाजिनै रही छै। —रा. सा. स
५ देखो 'रिगवेद' (रू. भे)

रुगड़- देखो 'रुगड' (रू भे)
उ०— आज काल रा साधडा, ब्याज बुहारण वेम। राज माय झगड़ै रुगड़, लाज न आवै लेम। —ऊ का

रुगट—स स्त्री. खेल मे किया जाने वाला कपट या बेईमानी, रुगटी।
रू भे —रुगटी, रोगट, रागटी।

रुगटाळ—वि १ खेल मे कपट या बेईमानी करने वाला।
२ धूर्त, चालाक।
३ कपटी।
४ देखो 'रगटाळ' (रू. भे.)

रुगटी १ देखो 'रुगट' (रू भे)
२ देखो 'रुगटाळ (रू. भे)
३ देखो 'रगटाळ' (रू भे)

रुगड—वि —१ मूर्ख, नासमझ।
उ०—गह भरियो गजगाज, मह मालहै आपण मतै। कुकरिया बेकाज, रुगड भुगै क्यू राजिया। —किरपाराम
२ दुष्ट, पतित, नीच।
उ०—न्याय न जाण्यो नितुर, निलज जाणी नहि नीती। निज नारी व्रतनेम, रुगड आणी नही रीती। —ऊ. का.
रू भे.— रुगड़।

रुगण—वि [स रुग्ण] १ जो रोगग्रस्त हो, रोगी, बीमार।
२ जिसके शरीर मे किसी प्रकार का दूषित विकार हो।

रुगणता—स्त्री. [स. रुग्णता] बीमारी, रोग।

रुगदबसो—स पु.—एक प्रकार का भयकर विषैला सर्प जिसका फन और पूछ दोनो काले रग के होते हैं।

रुगनाथ—देखो 'रघुनाथ' (रू भे.)
उ०—श्री रामाअवतार मे श्री रुगनाथ जी श्री सीताजी लिछमणजी सुग्रीव, वभीसण, हनुमान तथा दूजी सेना साथै लै नै लका सु रावण मार नै पुसप-वीमाण वीराजनै अठै श्रीमडलेस्वरजी री पूजा पाछा पधारता कीवी नै सेना साथै घणी थी तिणसु भीड में रुकसण

हुवै नही तरै स्री रुगनाथ जी री स्री महादेव जी री अग्या सु कंकर सब संकर हुवा मु प्रीत रौ इक भाखर मे सारा लिंगाकार रा दरसण हुवा, तरै सेन्या सारी नै दरसण हुवा। —नैणसी

रुगं दुगो-स पु.—काम चलाऊ पदार्थ।

वि.—खिन्नचित्त, उदासीन।

रुग्घौ-चुग्घौ-वि.—अवशिष्ट, बचा हुआ।

उ०—मा रै मनै कंई रुग्घौ चुग्घौ हो जिको दादी रै औसर, बाप रै किरिया-करम अर चदू री जिन्दीई मे लेखै लाग चुको हो। —वरसगाठ

रुघ-स. पु. [स ऋग्वेद] देखो रिगवेद'

उ०—रुघ सांमवेद वाचत विप्र नखतैत राय जद नृप्प। दीसत दुर्यंग पददेव गत्ति, दीवाण बडौ वड देसपत्ति। —गु. रू. ब.

२ देखो 'रघु' (रू. भे.)

रुघईस—देखो 'रघुईस' (रू. भे)

रुघकुळतिलक—देखो 'रघुकुळतिलक' (रू भे)

रुघुचंद—देखो 'रघुचद' (रू भे)

रुघदेव—देखो 'रघुदेव' (रू. भे.)

रुघनद, रुघनंदण, रुघनंदन—देखो 'रघुनदन' (रू भे.)

उ०—रुघनंदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसभर। —पी ग्र.

रुघनाथ, रुघनाथु—देखो 'रघुनाथ' (रू भे) (अ. मा, ना मा.)

उ०—१ लाबी बाहा गवळी, मो सिर दीजै हाथ। तातू जळ ताणी जता, राख्य लियौ रुघनाथ। —गज उद्धार

उ०—१ रुघनदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर रुघराजा रुघराउ, भूत भव भेख विसंभर। —पी. ग्र.

रुघनायक—देखो रघुनायक' (रू भे)

उ०—इम जवाब सुणि असुर, खिजै कमधज खेधायक। अंग दवात उथपिया, र्नारद जाणै रुघनायक। —सू प्र.

रुघपत, रुघपति रुघपत्ति—देखो 'रघुपति' (रू. भे.)

उ०—रुघनदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसभर। —पी. ग्र.

रुघबर—देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघभूप—देखो 'रघुभूप' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघयंद, रुघयंदि—देखो 'रघुइंद्र (रू. भे.)

रुघरज—देखो 'रघुरज' (रू. भे)

रुघरांण—देखो 'रघुराण' (रू. भे.)

रुघरांणी—देखो 'रघुराणी' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

रुघरांम—देखो 'रघुराम' (रू. भे.)

उ०—नारसिंघ थारो नांम फरसराम निवाजै, देखतां दुवारिका धाम सदामै रै दांम। सत्य रांम रुघरांम लिखमी वांमै सहेत, गोविंद तुहारो भलै बैकुठ रौ ग्रांम। —पी. ग्र.

रुघराइ, रुघराई, रुघराउ, रुघराज, रुघराजा—देखो 'रघुराज' (रू. भे.)

उ०—रुघनदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसभर। —पी. ग्र.

रुघबंस—देखो 'रघुवस' (रू. भे) (ना. मा)

रुघबंसमणि, रुघबंसमणी—देखो 'रघुवसमणि' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघबंसरव, रुघबंसरवि—देखो 'रघुबसरवि' (रू भे.) (अ. मा)

रुघबंसी—देखो 'रघुवसी' (रू. भे.)

उ०—रुघबंसी राठौड हर, तेरह साख कमध। विमर सकती वरणवा, बधै रूपक बध। —गु. रू ब.

रुघवर—देखो 'रघुवर' (रू. भे) (ना मा.)

उ०—राजा राम मनोहर रुघवरं, सीता वरं सुदर। कोसल्या दसरत्थ रावऊ अरं, पत्ती अजोध्या पुर। —पिं प्र.

रुघवीर—देखो 'रघुवीर' (रू भे) (अ. मा., ना. मा.)

उ० वडौ ठग घूत अहो रुघवीर, सही तू एकलमल सधीर। अइयौ गुरड़ेस तणा असवार, महा मधु कीटक रामण मार। —पी ग्र.

रुघवेद—देखो 'रिगवेद' (रू भे.) (अ. मा.)

रुघुनंदन—देखो 'रघुनदन' (रू. भे.) (ना. मा.)

रुघुनाथ—देखो 'रघुनाथ' (रू भे) (ना मा)

रुड़, रुड़क-स. स्त्री.—१ नगाडे की आवाज या ध्वनि।

२ तेज गति से भागने की क्रिया।

३ वीर रस के राग की लय या आलाप।

रुड़कणौ, रुड़कबौ-क्रि. अ.—१ लुढकना।

१ देखो 'रुडणौ, रुडबौ' (रू. भे)

रुड़काणौ, रुड़काबौ-क्रि. स.—१ लुढकाना।

२ देखो 'रुडाणौ, रुडाबौ' (रू. भे.)

रुड़कायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लुढकाया हुआ।

२ देखो 'रुडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुड़कायोडी)

रुड़कियोड़ौ-भू. का. कृ.—लुढका हुआ।

२ देखो 'रुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुड़कियोड़ी)

रड़णौ, रड़बौ–क्रि. अ.—नगाड़े का बजना।

ऊ०—१ गज पलटै गाहटै गिरवर घूपटिया धक घूम घर। 'गामै' तणा मुकन रा रड़िया, ममियाणौ ऊपर सघर। —द दा

उ०—२ अड़ककै लाग रा बजै ठेलिया कपनी जगा, मारू धरा रा ले लिया मारा मान। काहूळा रड़ंता जाणी हाकै निगताळा काळी, अळै काळ बाळी ज्वाळ सवाई 'गोपाळ।' —बिसनसिंघ राठौड़ रो गीत

उ०—३ गुमुड़ै गरिमादिक ध्यान गुनाढ्य, रड़ रड़ ग्रबक ध्यान घनाढ्य। ग्रबै बसुधा बिन ब्याज बिचित्र, महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र। —ऊ का

२ गुड़कना, चक्कर काटना, घूमना।

३ वीररस के राग का आलाप होना, गायन होना।

उ०—रड़ै सिधवौ राग, गुड़ै हल्ला गज ढल्ला। खळा उथल्ला लाग, वरणै बगतर बरघल्ला। —ऊ का

४ रुदन करना, रोना।

रड़णहार, हारौ (हारी), रड़णियौ—वि.।

रड़ियोड़ौ, रड़ियोड़ौ, रड़्योड़ौ–भू. का कृ.।

रड़ीजणौ, रड़ीजबौ–भाव वा.।

रुड़णौ, रुड़बौ, रूड़णौ, रूड़बौ, रुड़णौ, रुड़बौ—रू. भे.।

रड़पाणौ, रड़पाबौ—देखो 'रड़ाणौ, रड़ाबौ' (रू भे.)

उ०—नाहा भरियोड़ा नैहा निजराता, गाडा गुड़काता पैंडा रड़पाता। लाग्यै फूलाणी भीणा सुर लेना, डीगा गाडीणा डव डव धुनि देता। – ऊ. का

रड़पायोड़ौ—देखो 'रड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रड़पायोड़ी)

रड़वाणौ, रड़वाबौ–क्रि स. [रड़णौ क्रिया का प्रे रू] १ 'रड़ाणौ' कार्य किसी अन्य से करवाना।

२ नगारादि किसी अन्य द्वारा बजवाना।

रड़ाणौ, रड़ाबौ–क्रि. स —१ नगारादि बजाना।

२ वीर रसपूर्ण राग का आलाप करना।

३ गुडाना, चक्कर कटाना, घुमाना।

४ रुलाना, रुदन कराना।

रड़ाणहार, हारौ (हारी), रड़ाणियौ—वि.।

रड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रड़ाईजणौ, रड़ाईजबौ—कर्म वा.।

रुड़काणौ, रुड़काबौ, रुड़पाणौ, रुड़पाबौ रुड़ावणौ, रुड़ावबौ, रुड़ाणौ, रुड़ाबौ, रूड़ावणौ, रूड़ावबौ—रू. भे।

रड़ायोड़ौ–भू का कृ—१ नगारादि बजाया हुआ २ वीररसपूर्ण राग अलापा या गाया हुआ ३ गुडाया हुआ, चक्कर कटाया हुआ, घुमाया हुआ।

(स्त्री रड़ायोड़ी)

रड़ावणौ, रड़ावबौ—देखो 'रड़ाणौ, रड़ाबौ' (रू. भे.)

उ —घुवा घोर आतसा भळा रौ रड़ावणौ धूंसा, सेना मुडावणौ खळा डळा रौ साइन। छत्रधारी कना हूं इळा रौ कोट छोडावणौ, तुडावणौ भूखा वाघ गळा रौ ताइन। —महादान महडू

रड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नगाड़ा बजा हुआ. २ गुडका हुआ, चक्कर काटा हुआ, घूमा हुआ. ४ वीररस के राग का आलाप हुवा हुआ. ४ रुदन किया हुआ, रोया हुआ।

(स्त्री. रड़ियोड़ी)

रड़ौ–देखो 'रूड़ौ' (रू भे.)

उ०—जीव अम्हारु जोखिता! ते थापणि तुम्ह-पासि। राखे तु रड़ी परि, पजर भमइ प्रवासि। —मा. का. प्र.

(स्त्री. रड़ी)

रुच–स पु [स] १ वायु के अनुसार सुनीथ राजा के पुत्र का नाम।

२ अभिलाषा, रुचि।

उ०—जो रस अगी भूलै जावै, रुच वरणन अनग रस। प्रकत विपरजिय उठै पायजै, प्रक्रत रसाळ वन परम। —बा. दा

वि.—सुन्दर, मनोहर। (अ मा.)

उ०—मतिया म्हामनिया कहता तन मोहै, मधुरी बाणी मुख प्राणी मनमोहै। रजपूताणी रुच सीचाणी मिरखी, नैणा जळ भरती मैणा थळ निरखी। —ऊ का.

देखो 'रुचि' (रू. भे)

उ०—मेलो अन अदतार मन, रुच जस तणी रहै न। तन काळो कचुक तणो, कचुक सत सहै न। —बा दा.

रुचक–स पु [स रुचक] १ पुराणानुसार सुमेरुपर्वत के निकट का पर्वत।

२ भागवत के अनुसार एक यादव राजा जो उसनस राजा का पुत्र था।

३ इक्ष्वाकु वंशीय मरुक राजा का नाम।

४ मणिभद्र एव पुण्यजनी के पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

५ वास्तु विद्या के अनुसार ऐसा भवन जिसके चारो ओर के आलिंद मे से पूर्व और पश्चिम का सर्वथा नष्ट हो गया हो तथा उत्तर और दक्षिण के पूर्ण रूप मे ज्यो का त्यो हो।

६ घर, मकान। (अ मा)

७ जैनियो के अनुसार हरिवर्ष के एक पर्वत का नाम।

८ घोडे को पहिनाए जाने वाले आभूषण।

९ दक्षिण दिशा।

१० कबूतर।

[सं. रुक्मम्] ११ कंठ में धारण करने का आभूषण, हार, पुष्प-हार।

वि. [सं. रुचक] १ पसन्द आने वाला, प्रसन्नकारक, रोचक।

२ स्वादिष्ट, जायकेदार।

रुचणी, रुचबौ-क्रि. अ.—१ प्रिय तथा प्यारा लगना, भला लगना।

उ०—कृपणा जस भावै कठै, विधि विमुखा नू बेद। 'बांका' भोजन नह रुचै, ज्यां रै वप ज्वर खेद। —बा. दा.

२ रुचि के अनुकूल होना।

३ आनन्दमय होना, रुचि युक्त होना।

रुचर—१ देखो 'रुचिर' (रू. भे.) (अ मा)

२ देखो 'रुचिकर' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुचवप, रुचावप-स पु [स. रुचवपु] रक्त, खून, रुधिर। (अ. मा)

रुचि-स. पु [स] १ एक प्रजापति जो ब्रह्मा के मन से उत्पन्न हुआ था। इसकी पत्नी का नाम आकूति था।

सं. स्त्री [स. रुचिः] २ किरण। (अ. मा., ना मा., ह. ना. मा.)

३ शोभा, सुन्दरता।

४ आभा, प्रकाश, दीप्ति, चमक।

उ०—बपु स्याम सुदर मेघ रुचि, फबि तडित पीत बटबरं। भुज। बाम चाप निखग कटि, तट दच्छ कर भ्रामत सर। —र ज प्र.

५ अभिलाषा, इच्छा, कामना।

उ०—चख चचळ, मन अचळ कमळ चख भुहा अळीअळ। तन ऊजळ पति रत्त, रूप भरता रुचि मभळ। —गु रू ब.

७ अलकापुरी की एक अप्सरा का नाम।

८ अप्सरा।

९ पसदगी, अभिरुचि।

उ०—नही मोती माळा नहि न छक हाला सुचि नहीं। नही नारी प्यारी वचन, छिदगारी रुचि नही। —ऊ का.

वि.—मनोहर, सुन्दर।

उ०—मोर मुकुट वन माळ, माळ तुळसी तव मजर। रुचि कुडळ कल रतन, तिलक मजुल पितांबर। —रा रू

रू. भे.—रुद, रुई, रुच।

रुचिकर, रुचिकारक, रुचिकारी-वि. [स.] १ अभिरुचि उत्पन्न करने वाला।

२ स्वादिष्ट, जायकेदार।

३ भूख बढाने वाला।

रुचिधांम-सं पु. [सं. रुचि+धामन्] सूर्य, भानु। (डिं. को.)

रुचिभरता-स. पु. [सं. रुचिभर्तृ] सूर्य, भानु।

रुचियोड़ौ-भू. का. कृ—१ प्रिय तथा प्यारा लगा हुआ. २ रुचि के अनुकूल हुवा हुआ. ३ आनन्दमय हुवा हुआ, रुचियुक्त हुवा हुआ। (स्त्री. रुचियोडी)

रुचिसती-स. स्त्री [स] श्री कृष्ण भगवान की नानी तथा महाराज उग्रसेन की रानी का नाम जो वसुदेव की सास थी।

रुचिर-स. पु. [स.] १ श्री कृष्ण के पुत्र सेत्रजित के पुत्र का नाम।

२ कुरुवशीय राधिक राजा का नाम।

३ केसर।

वि.—१ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ एक रुचिर गणिका उठै, सुभ गुण सील समान —ब. भा.

उ०—२ सोभि जान सिरदार, रूप अणपार विराजै। रतन निकरि किरि, रुचिर भोमि वैरागर भ्राजै। —रा. रू.

२ अच्छा, भला।

३ मीठा, मधुर।

रुचिरा-स. स्त्री.—१ एक प्रकार का वृत जिसके प्रत्येक चरण मैं जगण, भगण, सगण, जगण और अंत मे गुरु होता है।

२ सुप्रिया छंद का दूसरा नाम।

३ केसर। (डिं. को.)

रुचिरोमा-स. स्त्री. [स.] स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

रुज-स. पु [स रुज्, रुजा] १ रोग, बीमारी। (डिं. को.)

२ पीड, वेदना। (अ मा., ह. ना. मा.)

रुजक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—१ तरै आप कहीजै-आप सवरी कही, म्हैं पण उदम करसा। तरै हेक दीहाडै रजपूताणी सू कहियोज म्हैं हमै परभोम रुजक रै आटै हाला तौ बैठा कांहुं करा। तरै हालण लागो। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ पछै कलियाणसिंघ सुकन मनवछत लै, काकड जाए उभा रहै घर सुमाचार दीन्हा। पछै रजपूताणी घणौ हरस सोक दासी ले, कलेवो रुजक लै हजूर आई। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

रुजगार - देखो 'रोजगार' (रू. भे.)

उ०१ 'रुजगार खोल लै वाला फरीद।' रुजगार अबै किसा रया है माजी! बखत बळगी, सै देवै जिको थेई दियौ। —वरसगांठ

उ०—२ घणा मूघा मोती मत ढळका, रोयां रुजगार मिळै कोनी। व्है लखपतिया री राज जठै, भूखां री पेट पळै कोनी। —चेतमानखा

उ०—३ राज माहे च्यार मास री रुजगार अगाऊ दौ तौ रहूं। —पचमार री वात

उ०—४ उण देस री बलिहारी जाऊ जठै माथा मोल विकाय अरथात जिण सिरदार कनै कळगार ले, सिर देण माटै, मुरवीर रहै है, वौ देस धिन्न है। —वी. स टी.

रुजा—सं. स्त्री. [सं.] रोग बीमारी। (डि को)

रुजु—देखो 'रज्जू' (रू. भे)

रुझणी—सं. स्त्री.—लंबी चोंच वाली एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसकी छाती सफेद और पीठ काली होती है।

रुझणो, रुझबो—क्रि. अ.—अवरुद्ध होना, रुकना।

उ०—रजी अरक्क विद्द ए, पूरणा लग कै चद ए। कुरम सिंघ रुक्झ ए, मरति मज्झि मुज्झ ए। —गु. रू ब.

रुझियोड़ो—भू का कृ. [स्त्री. रुझियोड़ी] अवरुद्ध हुवा हुआ, रुका हुआ।

रुट—स. पु [स रुष्ट] रूठने की क्रिया या भाव, क्रोध, कोप, गुस्सा।

(अ. मा.)

रू भे.—रुठ।

रुट्टणो, रुट्टबो—देखो 'रूठणो, रूठबो' (रू. भे)

उ०—या विचार वैण बोलै, तेज सूं समसार तोलै। गूझ कै रोम व्योम कूं उट्टै, रान के अाए जमरान से रुट्टै। —रा रू.

रुट्टियोड़ो—देखो 'रूठियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. रुट्टियोड़ी)

रुठ—देखो 'रुट' (रू. भे.)

रुठाणो, रुठाबो—क्रि. स [रुठणो क्रि. का प्रे. रू] रूठने म प्रवृत्त • करना/कराना, नाराज करना/कराना।

रुठायोड़ो—भू. का. कृ—कुपित किया हुआ।

(स्त्री. रुठायोड़ी)

रुडणो, रुडबो - देखो 'रुडणो, रुडबो' (रू. भे)

उ०—१ पचसद दमाम पूर रुडै डुड रिणतूर। अमाणै मेघ पट्टर (पडर), हैरान हुवै। —गु रू. ब

उ०—२ कामधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, राखं रज रिणतूर रुडै। दरूमामा गरज वहै व्रज दोमज, गज्र पानाडक भुरज गुडै।

—गु रू ब

उ०—३ अन्नदिणतरि गिरि सिहरं, राजा रमलि करेइ। कुती करमल अडवडिउ, रडयड भीमु रुडेइ। —सालिभद्र सूरि

रुडाणो, रुडाबो, रुडावणो, रुडावबो—देखो 'रुडाणो, रुडाबो' (रू भे)

रुडावियोड़ो—देखो 'रुडायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. रुडावियोड़ी)

रुडियोड़ो—देखो 'रुडियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. रुडियोड़ी)

रुणजण—देखो 'रणभण' (रू. भे.)

रुणउणणो, रुणउणबो—क्रि अ—भौरों का मण्डराना।

उ०—मंवर जसुपय माध अहै, पकय महूअर रुणउणइ ए। धनु धन जै नरनारि अछै, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइए।

—ए. जै. का. स.

रुणक—स स्त्री—१ याद, स्मृति।

२ इच्छा।

३ एक प्रकार की ध्वनि विशेष, झनकार।

रुणकझुणक—स स्त्री.—नुपुर आदि मे उत्पन्न रुनझुन शब्द या ध्वनि।

रुणझुण—१ देखो 'रुणझुण' (रू. भे)

उ०—रामजी आप घोडै असवार, रुकमण नै रुणझुण बैल जुपाय —लो गी.

२ देखो 'रणभण' (रू भे)

रुणभणणो, रुणभणबो—देखो 'रुणझुणणो, रुणझुणबो' (रू भे)

उ०—कान बजावै वासुरी, गोपी नाचै ताली छद कै। पाए नेवर रुणभणै, हम हम रामत रमै आणद कै। —जयवाणी

रुणभणियोड़ो—देखो 'रुणझुणियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री रुणभणियोड़ी)

रुणझुण—१ देखो 'रणभण' (रू. भे)

२ देखो 'रुणझुण' (रू भे)

उ०—१ बाईजी कै आयो रै गाडलो, काई म्हारै रुणझुण बैल रै नीमोळीडा। —लो. गी.

उ—२ रुणझुण बैल भवरजी ! मै वण जी, हा जी ढोला ! वण ज्याऊ मुरही-रा बैल। —लो गी

रुणझुणकणो, रुणझुणकबो—देखो 'रुणझुणणो, रुणझुणबो' (रू भे)

उ०—रणका रुणभणकेह, राय आगण रमियो नही। तो पहिरस केम पगेह, वड नेवरी वसीरउत।

—वीरमदे सोनगरा री वात

रुणझुणकियोड़ो—देखो 'रुणझुणियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री रुणझुणकियोड़ी)

रुणझुणणो, रुणझुणबो—क्रि. अ.—नुपूर आदि आभूषणो से ध्वनि उत्पन्न होना, ध्वनि होना, रुनझुन की ध्वनि होना।

उ०—१ करयलै ककण मणि झमकारे, जादर फालीय हपिरण ए। अहर तबोलीय द्रूपदी बाल, पाए नेउर रुणझुणइ ए।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ वाजइ पड़ह पखावज पूर, ढोल निसांण वाजइ रिणतूर। वीर घटा तिहां रुणझुणइ, मेघाडंबर छत्र सिर दीयौ राय।
—बी. दे

रुणझुणहार, हारौ (हारी), रुणझुणियौ—वि०।

रुणझुणियोड़ौ, रुणझुणियोड़ौ, रुणझुण्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रुणझुणीजणौ, रुणझुणीजबौ—भाव वा.।

रुणझणणौ, रुणझणबौ, रुणझुणकणौ, रुणझुणकबौ—रू. भे.।

रुणझुणियोड़ौ—भू. का. कृ.—नुपुर आदि आभूषणो मे शब्द उत्पन्न हुवा हुआ, रुनझुन का शब्द हुवा हुआ।
(स्त्री. रुणझुणियोडी)

रुणझुणियौ—वि.—रुनझुन की ध्वनि उत्पन्न करने वाला।

स. पु.—१ एक राजस्थानी लोक गीत।

२ बच्चो के खेलने का एक खिलौना विशेष।

उ०—ऐ ढोल ढोलता यू केयी रुणझुणियौ लै। सायब लाल चूडो पेराय, जाजो मरवौ लै।
—लो. गी

रुणा—स स्त्री [स.] सरस्वती नदी की एक सहायक नदी।

रुणावळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे)

रुणी—स. स्त्री.—घोडो की जाति विशेष।

रुणौ—देखो 'रूणौ' (रू. भे.)

रुत—सं. स्त्री—१ रुई (कपास)।

उ०—रुत घ्रति चदण कपूर, सभै समसाण सभाई। विविध अमित सुचि वसत, चेहगिन निमति चलाई।
—रा रू.

२ देखो 'रितु' (रू. भे)

उ०—१ म्हैं मगरा मोरिया, काकर चूण करंत। रुत आया बोला नही, हीया फूट मरत।
—अग्यात

उ० २ परण चाल्या छा भवरजी, गोरडी जी हा जी ढोला, हो गई जोध जवान। बिलसण की रुत चाल्या चाकरी जी, ओ जी म्हारा लाल नणद रा ओ वीर, मत ना सिधावौ पूरब री चाकरी जी।
—लो. गी

उ०—३ फागुण मासि वसत रुत, आयउ जइ न सुणेसि। चाच-रिकइ मिस खेलति, होळी झपावेसि।
—ढो मा

उ०—४ मांहै राग छै, जिकै कूद-उछळ छै-रीगटा हिरण छै, सु रुत आइ हिरणी नै घेचता फिरै छै। सबळौ हिरण निबळ नै घेचै छै।
—रा. सा. स.

रुतबौ—स. पु. [अ रुत्वः] १ वह ऊंची और अच्छी स्थिति जिसमे समाज की ओर से यथेष्ट आदर, प्रतिष्ठा या सत्कार हो।

२ राज्य या शासन की सेवा मे मिलने वाला ऊचा पद।

३ रोब।

उ०—१ थाट अर रुतबा सूं पूरी करडावण रै साथै राजदरबार सूं पोहरौ देवण सारु बहीर व्हिया।
—फुलवाडी

उ०—२ औ तौ म्हैं राजा रौ दीवाण हूं। जबाब मे की गुमेज अर रुतबा रौ पुट हो।
—फुलवाडी

४ बडाई, महत्ता, श्रेष्ठता।

रुति—देखो 'रितु (रू भे)

उ०—१ घर करि अमल पदम छत्र धारै, सुदरि नवलापुरी सिगारै। रगमहलि दपति दुति राजै, छक मुसताकि काम रुति छाजै।
—सू. प्र.

उ०—२ जिण रुति बग पावस लियइ, धरणि न मेल्हइ पाइ। तिण रुति साहिब वल्लहा, कोइ दिसावर जाइ।
—ढो. मा.

उ०—३ जिण रुति बहु पावस झरइ, बाबहियउ बोलत। तिण रुति साहिब वल्लहा, कौ मदिर मेल्हत।
—ढो. मा.

उ०—४ दुवा मासा मरजाद लग रुत एक रहाइ, रुतियां दोय हुवदिया, इक काळ वोळाई।
—केसीदास गाडण

रुतिराई—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

रुत्ति, रुत्ती—देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—सीयाळइ तउ सी पडइ, ऊन्हाळइ लू वाइ। वरसाळइ भुइं चीकणी, चालण रुत्ति न काइ।
—ढो. मा.

रुदंती—देखो 'रुद्रवती' (रू. भे)

रुदन—स. पु. [स] १ रोने की क्रिया या भाव।

उ०—बीता पहर कंवर विग्रहियौ, करि यह रुदन हेक अत कहियौ। धरपति सुणि तिल सोच न धारै, विध करि पाण समस्या वारै।
—सू. प्र.

२ रोने से उत्पन्न शब्द या आवाज।

उ०—जनमें नखत करूरा जिणसू, तिण नूं वन नाखै दुख तिण सू। जिण सुणि रुदन दया मनि जांणी, आस्रम रिख माया जित आंणी।
—सू. प्र.

रुदर—१ देखो 'रुद्र' (रू भे)

२ देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रुदरांणी—देखो 'रुद्राणी' (रू भे)

रुदराख, रुधराछ—देखो 'रुद्राक्ष' (रू भे)

रुदित—वि [स] १ रोना हुआ।

२ व्याकुल।

३ दुखी।

रुद्र—देखो 'रुद्र' (रू. भे)

रुद्रवीणा—देखो 'रुद्रवीणा' (रू. भे.)

उ०—सीमडळ रबाब सार, रुद्रवीणा झणंकार, तत मझि जोर तार, आमा त्रिहणं।
—गु. रू. ब.

रुद्राणी—देखो 'रुद्राणी' (रू. भे.)

उ०—सूरज पुत्र करन, पेट कुंता उपजौ, पवन पुत हणमत, उदर अंजनी उपजो। ईस पुत्र लट-मुक्त, पुत्र जनमें रुद्राणी, राघव दसरथ पुत, जणी कउसल्या राणी। —गु रू ब

रुद्ध—वि. [सं.] १ जिसकी चाल या गति बंद हो गई हो, बद। २ रुका या रुका हुआ. ३ घिराया या घेरा हुआ. ४ पकड़ा हुआ.

रुद्धणी, रुद्धबो—देखो 'रूंधणी, रूंधबी' (रू. भे.)

उ०—केवलि वयण गु कूकड थाइ, जउ नवि आव्या पडवराय। पृथ्वीउ भीमि कथा प्रबधुवणि आई वन राख्यु रुद्ध। —सालिभद्र सूरि

रुद्धियोड़ौ—देखो 'रूंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुद्धियोड़ी)

रुद्धा—वि. स्त्री.—१ रोकने वाली। २ मिटाने वाली।

उ०—देवी नाम भागीरथी नाम गंगा, देवी गंडकी गोमरा राम गंगा। देवी सरसती जम्मना सरी सिद्धा, देवी त्रिवेली त्रिस्थळी ताप रुद्धा। —देवि

रुद्धि—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—सवत अढार इग्यार मे, प्रतिष्ठा 'लीबडी' मध्य। 'वढवाणी' श्रावक हुडकी, बुकव्या खरची रुद्धि। —कवियण

रुद्र—स. पु. [स. रुद्र] १ सृष्टि के प्रारम्भ मे ब्रह्मा की भृकुटी मे उत्पन्न एक प्रकार के देवता जो क्रोध रूप माने गये है तथा जिन मे भूत, प्रेत, पिशाचादि उत्पन्न कहे जाते हैं। इनकी सख्या भी ग्यारह मानी गई है परन्तु सर्व प्रथम अथर्ववेद मे इनके निम्नलिखित सात नाम ही पाये जाते हैं। यथा—१ ईशान, २ भव, ३ शर्व, ४ पशुपति ५ उग्र ६ रुद्र और ७ महादेव।

पुराणो मे अष्ट रुद्रो की नामावली दी गई है जो शतपथ ब्राह्मण की नामावली से मिलती जुलती है। इन ग्रन्थो के अनुसार ब्रह्मा से जन्म प्राप्त होने पर ये रोदन करते हुए इधर उधर भटकने लगे। तत्पश्चात् इनके द्वारा प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने इन्हे आठ विभिन्न नाम पत्नियां एव निवास स्थान आदि प्रदान किये।

प्रमुख पुराणो में से विष्णु, मार्कंडेय, वायु एव स्कद पुराण अष्टमूर्ति महादेव की नामावली प्राप्त है।

इन पुराणो से प्राप्त रुद्र की पत्नियो, सन्तानो, निवास स्थानो आदि की तालिका निम्न प्रकार है—

रुद्र का नाम	पत्नी	सतान	निवास स्थान
१ रुद्र	सुवर्चला या मती	शनैश्चर	सूर्य
२ भव	उमा (उषा)	शुक्र	जल
३ शर्व (शिव)	विकेशी	मगल	मही
४ पशुपति	शिवा	मनोजय	वायु
५ भीम	स्वाहा (स्वधा)	स्कद	अग्नि
६ ईशा	दिशा	स्वर्ग	आकाश
७ उग्र	दीक्षा	सतान	यज्ञीय ब्राह्मण
८ महादेव	रोहिणी	बुध	चन्द्र

एकादश रुद्र—महाभारत एव पुराणो मे प्राय सर्वत्र रुद्रो की सख्या ग्यारह बताई गई है एव उनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की भृकुटी, कही शरीर मे होने की कथा बताई गई है। परन्तु इन ग्रथो मे प्राप्त एकादश रुद्रो की नामावली एक दूसरे से मेल नही खाती है। इनमे मे मुख्य ३ ग्रथो से प्राप्त नामावलिया इस प्रकार है—

स्कन्द पुराण मे—१ भूतेश, २ नीलरुद्र, ३ कपालिन ४ वृषवाहन, ५ त्र्यबक, ६ महाकाल' ७ भैरव, ८ मृत्युजय, ९ कामेश एव १० योगेश।

महाभारत—१ मृगव्याध, २ शर्व, ३ निर्ऋति, ४ अजेकपात, ५ अहिर्बुध्न्य, ६ पिनाकिन, ७ दहन, ८ ईश्वर, ९ कपालिन १० स्थाणु, ११ भव।

भागवत के अनुसार—१ मन्यु, २ मनु, ३ महिनस् (सोम), ४ महत्, ५ शिव, ६ ऋतध्वज, ७ उग्ररेतस्, ८ भव, ९ काल, १० वामदेव, ११ धृतध्वज।

उपर्युक्त ग्रन्थो के अतिरिक्त अन्य पुराणो मे प्राप्त एकादश रुद्रो के नाम एव पाठ भेद इस प्रकार मिलते है—१ अजैकपात (अज, एकपात, अपात्), २ अहिर्बुधन्य, ३ ईश्वर (सुरेश्वर, विश्वेसर' अपराजित, शास्तृ, त्वष्ट्) ४ कपालिन्, ५ कर्पादिन, ६ त्र्यम्बक (दहन, दमन, उग्र, चड, महातेजस्, विलोहित, हवन), ७ बहुरूप (निवित, निर्ऋति, महेश्वर), ८ पिनाकिन (भीम), ९ मृगव्याध (रैवत, परतप), १० वृषाकपि (विरुपाक्ष, भग), ११ स्थाणु, (शंभु, रुद्र, जयत, महत, अयोनिज, हर, भव, शर्व, ऋत, सर्वसज्ञ, सध्य एव सर्प)।

२ भगवान शंकर का एक रूप जो कामदेव को भस्म करते समय एव दक्ष यज्ञ विध्वंस करते समय उन्होंने धारण किया था।

३ महादेव या शिव का एक नाम। (डि. को.)

४ शनिश्चर। (अ. मा.)

५ घोड़े के कर्ण मूल पर होने वाली भौरी (चक्र) जो विजय चिह्न माना जाता है। (शा. हो.)

६ ग्यारह की सख्या या ग्यारह। *

७ वटवृक्ष। (अ. मा.)

वि.—८ भयकर, भयावह।

९ देखो 'रुधिर' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—मक भड चढै सिकार, सर्फे छुला माभर सुग्रर। ध्रवै ग्रमेख रुद्र धार, कमधज पीरा की कबर। —गो. रू.

१० देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

रू. भे.—रउद्द, रउद्र, रउद्र, रउद्रि, रुद्द, रवद, रवद्द रवद्दि, रवद्र, रुद्द।

मह.—रवदांण, रुद्रो।

रुद्रग्रातमज—देखो 'रुद्रातमज' (रू. भे.)

रुद्रक – देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

रुद्रकड़ो—सं. पु. यौ. [स रुद्र+कटकः] महादेव द्वारा भस्मासुर को दिया जाने वाला कडा।

उ०—१ जग सारो जाणै जोधपुरा, चौरग तणी बार अणचूक। जुडतां लाख दोयणा जाळै रुद्रकड़ा सारीखो रूक। —रुघो मुहतो

उ०—२ रुद्रकड़ा ज्यूं रूक दै, दुजणा धरम द्वार। तो हत्था तखतेस तरण, त्रिटिन जाय बळिहार। —किशोरदांन बारहठ

रुद्रकरण—स. पु. [स. रुद्रकर्ण] तीर्थ विशेष का नाम।

उ०—अग्रमतकेस्वर अति भलुं, रुद्रकरण करवीर। मधुकेस्वर जिमलिंग तिम, वडवामुख धरि धीर। —मा. कां. प्र.

रुद्रकळस—स. पु. यौ. [स. रुद्रकलशः] ग्रहो आदि की शान्ति के लिए स्थापित किया जाने वाला कलश।

रुद्रकाळी—स स्त्री. [स. रुद्रकाली] दुर्गा या शक्ति की एक मूर्ति।

रुद्रकोट, रुद्रकोटि—स. पु—एक प्राचीन तीर्थ जिसमे रुद्रो का निवास माना जाता है।

उ०—सिद्धकरण गोकरण पण. रुद्रकोट महाकोट। गुरजेस्वर जिहां गरज्जना, महिमा केरी मोट। —मा. का प्र.

रुद्रकुंड—सं. पु.—बृज स्थित एक तीर्थ का नाम।

रुद्रगण—सं. पु. [सं.] शिव के पार्षद या गण जिनकी संख्या तीस करोड मानी गई है।

रुद्रगरभ—सं. पु [सं. रुद्रगर्भ] अग्नि, आग।

रुद्रघरणी—स. पु. [स. रुद्र गृहिनी] पार्वती, ऊमा।

उ०—रुद्रघरणी जपै सोभळी रुद्र। आज लगै तै लिया अनेक। जैसिंघ धूप तणो बू जोतां, ऊमर भर मो जुडियो एक। —गोरधन बोगसो

रुद्रघांण—स. पु.—संहार, ध्वंस।

उ०—तोर जंगा तुरंगा 'असूत' जोम काढै तूं ही, घावां क्रोध गाढै तू ही रचै रुद्रघांण। —हुकमीचद खिडियो

रुद्रज—स. पु. [स] पारा।

वि.—रुद्र से उत्पन्न।

रुद्रजटा, रुद्रजटाय—स. स्त्री.—१ रुद्र के शिर के बाल, महादेव के शिर के बाल।

२ एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसके पत्ते मयूर शिखा के समान होते हैं।

उ०—रांमोडी नइ रासना, रीगणि रुद्रजटाय। रांग रतांजणी, रुमडी, रनिवनि रग भराय। —मा. का. प्र.

३ सौंफ।

४ इसरोल।

रुद्रतनय—स. पु. [स.] १ जैन हरिवंश के अनुसार तीसरे श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ स्वामी कार्तिकेय।

रुद्रताळ—स. पु. [स. रुद्रताल] सोलह मात्राओ का मृदग का एक ताल विशेष।

रुद्रतेज—सं पु. [स.] स्वामी कार्तिकेय का एक नाम।

रुद्रथांनक—स. पु. यौ. [स. रुद्रस्थान] कैलाश पर्वत।

रुद्रपत, रुद्रपति—स. [स. रुद्रपति] १ शिव, महादेव।

२ बादशाह।

रुद्रपत्नी—स. स्त्री. [स.] १ दुर्गा का एक नाम।

रुद्रप्रयाग—स. पु.—गढवाल जिले के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम।

रुद्रप्रिया—स. स्त्री. [स.] १ पार्वती।

२ हरीत की, हुडे।

रुद्रबीसी—देखो 'रुद्रबीसी' (रू. भे.)

रुद्रभू, रुद्रभूमि—सं. स्त्री. यौ. [स.] श्मशान, मरघट।

रुद्रभैरवी—स. स्त्री. [सं.] दुर्गा की एक मूर्ति।

रुद्रमाळ – १ देखो 'रुद्रमाळय' (रू. भे.)

२ देखो 'रुद्रमाळा' (रू. भे.)

३ देखो 'रुंडमाळा'

रुद्रमाळका—देखो 'रुद्रमाळा' (रू. भे.)

उ०—तूटी बोम बाट निगताळ मों बिछूटो तारो, केता छूटो पीरांण मानवां ताकै कूप । कोप रुद्रमाळका बिहंगनाथ तूटो किना, कठो गोगं माथै प्रळै काळ को सो रूप ।

—गिरवरदान कवियो

रुद्रमाळय—स. पु.—एक तीर्थ का नाम ।

उ०—अट्टहास ऊंजगीड मन जलज मांहेड । रुद्रमाळय मिदत्रय, गंभीमर मिरिखद । —मा. का. प्र

रू. भे.—रुद्रमाळ ।

रुद्रमाळा—स स्त्री. [स. रुद्रमालिका, रुद्रमाला] १ शिव के गले मे लिपटे रहने वाला, सर्प, साप ।

२ मुण्डमाळा ।

रू. भे.—रुद्रमाळ, रुद्रमाळका ।

रुद्ररस—देखो 'रौद्ररस' (रू. भे.) (डि. को)

रुद्ररांणी—देखो 'रुद्रांणी' (रू भे)

रुद्रराय, रुद्रराव—स पु. [स. रुद्रराज] १ महादेव, शिव ।

२ बादशाह ।

रुद्ररोवन—स पु [सं] स्वर्ण, सोना ।

रुद्ररोमा—स. स्त्री —कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

रुद्रलता—स. स्त्री. [सं] रुद्रजटा ।

रुद्रलोक—स. पु. [स.] रुद्र व रुद्रगण के निवास का स्थान ।

रुद्रवंती—स. स्त्री [स] एक प्रसिद्ध वनोषधि जिसकी गणना दिव्यौषधि वर्ग मे की जाती है ।

रू. भे.—रुदती ।

रुद्रवदन—स. पु. [स.] १ रुद्र के मुख जिनकी सख्या पाच मानी जाती है ।

२ पांच की सख्या या अक । *

रुद्रवाचा—स. स्त्री. [स.] वह वचन जो सदैव सत्य रहता हो, सत्य-वचन ।

उ०—तर इण देवराज कह्यौ—ब्रह्मवाचा, रुद्रवाचा हू दिन दोय माय विचारलै मागीस । —नैणसी

रुद्रवीणा—स. स्त्री.—एक प्रकार की पुराने ढग की वीणा, नारदवीणा ।

रू. भे.—रुद्रवीणा

रुद्रवीसी—स. स्त्री.—साठ सवत्सरो मे से अन्तिम बीस सवत्सरो का समूह जो अमांगळिक और कष्टप्रद कहा गया है, रुद्रविंशति ।

रू. भे.—रुद्रवीसी

रुद्रसावरणी—सं. पु. [सं. रुद्रसावर्णि] बारहवे मन्वतर का अधिपति मनु जो भव राजा का पुत्र था ।

रुद्रसुंदरी—स. स्त्री. [स.] दुर्गा की एक मूर्ति ।

रुद्रांणी, रुद्रांणी—स. स्त्री. [सं. रुद्राणी] १ रुद्र अर्थात शिव की पत्नी, पार्वती, शिवा । (डि. को)

उ०—१ सीता सी राणी वेद वखाणी, सारग पाणी साम । मीढ न मघवाणी वळ ब्रह्माणी, नही रुद्रांणी नाम —र. ज. प्र.

उ० —२ लछमी रुद्रांणी ब्रह्माणी सुमिरू, मादर सुयस बखांणी ।

—राघवदास भादौ

२ रुद्रजटा नामक लता ।

३ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी ।

४ ग्यारह वर्षो की कन्या का नाम ।

रू भे —रुदराणी, रुद्राणी, रुद्रराणी ।

रुद्राक्ष, रुद्राख, रुद्राछ—स पु [स रुद्राक्ष] एक प्रकार का वृक्ष विशेष जिसके फलो के बीजो की जपने तथा कठ मे धारण करने की माला बनाई जाती है ।

उ०—१ मध्यान मे विराजमान ध्यान मे धुनी । रुद्राक्ष माळ पान म मुद्रा उनमुनी । —मे. म.

उ०—२ रावण राग रताजणी, रवणी नइ रुद्राख । रुक रुदनी रायसली, रोहड रोहिणी राख । —मा. का. प्र.

उ०—३ सोम धूप खेव सतवारै, एक मुखी रुद्राछ अधारै । बीजौ धूप खेवि निज बेलै, सभ दाहिणा-वरत सख मेलै । —सू प्र.

रू. भे.—रुदराख, रुदराछ ।

रुद्राक्षमाळ, रुद्राक्षमाळा [स. स्त्री. यौ.] रुद्राक्ष के बीजो की बनी माला विशेष ।

रुद्रायण—स. पु [स. रुद्र+रा. प्र आयण] यवन, मुसलमान ।

उ०—अणी सर मावळ फूटत ऊक, रुद्रायण वाह करै घण रूक । भयाणक भेख मरा छड भार, दुहूवळ धार रगत्त दुसार ।

—सू. प्र.

रुद्रात्मज—स. पु [स. रुद्रात्मज] स्वामी कार्तिकेय ।

(ना. मा., ह. ना मा.)

रू. भे.— रुद्रआतमज ।

रुद्रारि—स पु. [स.] कामदेव मदन ।

रुद्राळ—वि पु. [स. रुद्र+आलुच] रुद्र का, रुद्र सम्बन्धी ।

स पु.—१ महादेव, शिव ।

२ यवन, मुसलमान ।

३ देखो 'रुधिर' (रू. भे)

रुद्राळ, रुद्राळू—वि [स. रुद्र=भयकर+रा. प्र. लु] भयकर, भयावह ।

उ०—अग आळस मोडतौ, नैण घोळतौ निद्राळ । कर मैंहदी रगिया, रोस भरियौ रुद्राळ । —पा. प्र.

रुद्रावास—स. पु [स. रुद्र+आवास] शिव के निवास स्थान, काशी, कैलाश, श्मशानादि ।

रुद्री—स. स्त्री. [स.] १ रुद्र सम्बन्धी वेद मंत्रो का लघु सग्रह जिसमे रुद्र देवता के मत्र अधिक और विशिष्ट रूप से सग्रहित हैं, (वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षणसूक्त की ग्यारह आवृत्तिया) जिनका पाठ शुभ माना जाता है ।

२ एक प्रकार की वीणा ।

रुद्रौ—देखो 'रुद्र' (मह, रू. भे.)

उ०—सिघाण छभा रुद्रौ, बळि पयाळ अग इद्राण । रठोड वीर वसुधा, त्रिभवण छभा चतुरह । —गु. रू. ब.

रुधक्क—देखो 'रुधिर' (रू भे.)

उ०—हव पड लडक्क हलै, खग झल्ल कड़क्क तड़क्क खुलै । भक भक्क रुधक्क खळक भल, दक दक्क बकै जब थक्क दल । —पा. प्र.

रुधर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—ठहिया भूखण सरब ठिकाणै, अहि काकळि पुहपा अहि-नाणं । चोळ रुधर मद पियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी । —सू प्र.

रुधराळ—देखो 'रुधिर' (मह, रू. भे.)

रुधिर—स. पु. [स.] १ प्राणियो, जीवधारियों के शरीर का रक्त, शोणित, खून । (अ. मा, डिं. को)

उ०—१ इम इक निसा अमावस आघी, लाल रुधिर सरिता अप लाघी । उभै तटा झठ रीठ अरावै, फाटा सीस कमळ बहु फावै । —सू प्र.

उ०—२ रुधिर खेत माहै एकठौ हुओ छै । अर ऊपर जु रुधिर की बूद पडै छै । त्याह की जु ऊँची बूद उछळै छै । मु चोटीयाळी कहावै । इहै चोमठि योगणि हुई । —वेलि टी.

२ रक्तवर्ण ।

वि.—लाल ।

रू. भे.—रुद्दर, रुद्राळ, रुधक्क, रुहिर, रूहिर, रूहि, रुही ।

मह —रुधराळ, रुधिराळ, रुहिराळ, रूहराळ ।

रुधिरगुल्म—स पु. [स. रुधिरगुल्म] स्त्रियो का एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे उनके पेट मे एक प्रकार का गोला घमता रहता है । (इसे राजस्थानी मे छोड भी कहते है)

रुधिरांध—स. पु —एक नरक का नाम ।

रुधिरानन—स पु. [स. रुधिरानन] मगलग्रह की वक्रगति विशेष । (ज्योतिष)

रू. भे.—रुहिराणण ।

रुधिराळ—देखो 'रुधिर' (मह., रू. भे)

उ०—गजसीस पडै घड पडै गात, पडिया किर पाहड वज्र पात । गिळ धापै पळचर मस गाळ, खळकिया घणा रुधराळ खाळ । —सू. प्र.

रुधिरासन—स पु' [स. रुधिराशन]१. श्री रामचन्द्र भगवान द्वारा मारा जाने वाला खर राक्षस का एक सेनापति ।

२ राक्षस, असुर ।

३ खटमल, जौक, मच्छरादि ।

रुपइयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—घणौ उच्छव करि मगत जणा री घणी आसीस ले करि, करह, केकाण, सोना, सावट्ट, रुपइया, महुरा घणी दे, चीत्रोडि रौ मेघ कहाइ । —द वि.

रुपट्टी—देखो 'रुपयौ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—इसी म्हारी लाबी सीरख कोनी । थें जांणौ-ई-हौ आगै जाय, र मनै मिळै तौ खाली पदरै रुपट्टी ही है । —बरसगांठ

रुपणौ, रुपबौ—क्रि अ.—१ किसी कडी या नुकीली चीज का किसी पदार्थ मे घसना, गडना ।

उ०—१ नगर मे बडता ई चारू कानी डीगौ परकोटौ देख्यौ, तौ वा रै इणरज रौ पार नी रह्यौ । चारू दिसा सामी भरपूर डीगा दरवाजा । दरवाजा रै भाला रुप्योड़ा किवाड । —फुलवाडी

उ०—२ सो इकौ मिलै ठोय करनै आयौ छै । सो रामदासजी आवता रै बरछी वाही । सो इकौ घोडौ फूटनै बरछी जाती थकी धरती मे रुपी । —ग. सा स.

२ जमीन के अन्दर खोदे हुए गड्ढे मे गाडा जाना ।

ज्यू, मेळा मे झडो रुपणौ ।

३ किसी पदार्थ का कुछ अश जमीन के अदर इस प्रकार जमना या स्थापित होना कि वह पदार्थ वहा स्थिति हो जाय ।

४ खडा होना, टिकना, रुकना, ठहरना ।

उ०—१ माय पधारो, उठै ई काई रुपग्या । —फुलवाडी

उ०—२ खूटा री गळाई रुप्योड़ा ऊभा रह्या । पछै बाग झाल फुरती सू घोडा माथै बैठा । —फुलवाडी

५ सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति मे होना, निश्चल होना ।

उ०—म्हैं तौ थानै निरंघ आधा जाणिया । सामी भात-भात री मीठाइया सजियोडी पडी अर थें पूतळी री गळाई रुप्योड़ा बैठा । आस्या सामी हाथ वसू मिठाइया पछै थे वाने खावौ क्यूं नी । —फुलवाडी

६ दृढ़ता पूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकना, डटना ।

उ०—१ बरसी बवदह बरस, पड़ै इळ बेघ अपारा, बिकट लोग बदळियौ, सोच लागौ उर सारां। कांनी कांनी कळह, दाय रुपनी उर दीधौ, लोभ बजालौ लाल, मुट ओग्रणपुर लीधौ। बजराग झाट लागा बहु, घके दिली दिस धाउवै। महाराज मोज लेवा मदन, मायर रुपिया प्राउवै॥ —गिरवरदांन कवियौ

उ०—२ लार 'मांन' बाहर लिया, भड़ जग जाहर भूप। प्रांखा बाहर ऊपरा, रुपियौ नाहर रूप। —महादान मेहड़

रुपाहार, हारी (हारी), रुपजियौ—वि।

रुपियोड़ौ, रुपियोड़ौ, रुप्योड़ौ—भू का. कृ।

रुपीजणौ, रुपीजबौ—भाव वा.।

रुपयौ—स पु. [सं रूप्यक] १ चांदी का सिक्का विशेष।

उ०—घर में रामजी राजी होवतां थकां ई सेट सेठांणी नै इण बात रौ बडौ दुख हो के उणां रै कोई सतान ही नी। कोसिस करण में सेठा पाछ को राखी नी। भाटा जितरा देव पूज्या, राखड़ी मादळिया ई कराया, गांव रा गुरांसा कनै इलाज ई करायौ घर जोधपुर जायर डाक्टरा री छाती में रुपया बाळिया पण गरज कांइ सजी कोयनी। —रातवासौ

२ पुराने ६४ पैसे तथा नए सौ पैसे का नोट।

३ धन-दौलत।

रू. भे —रिपइयौ, रिपयौ, रिपियौ, रिप्पियौ, रुपियौ, रूपीयौ, रूपयौ।

अल्पा.—रुपटौ, रूपटियौ।

रुपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी नुकीली चीज का किसी पदार्थ में धसा या गड़ा हुआ। २ जमीन के अंदर गड्ढे में गाडा हुआ। ३ किसी पदार्थ का कुछ अश जमीन में गड़ा हुआ, स्थितहुवा हुआ। ४ खड़ा हुवा हुआ, टिका हुआ ५ दृढतापूर्वक एक स्थान पर डटा हुआ।

६ सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति में हुवा हुआ, निश्चल हुवा हुआ।

(स्त्री. रुपयोड़ी)

रुपियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे)

उ०—दाळद घर दोळौ हुवौ, परगिर न आवै पाम। रुपिया होवै रोकड़ा, सोरा प्रावै सास। —ऊ का.

रुपेरण—देखो 'रूपेरण' (रू. भे.)

रुपेलौ—वि. [स्त्री. रुपेली] १ श्वेत प्रकाश युक्त।

उ०—चादै तणौ उजास, रुपेली रातां सीळा। —रुमदेव

२ रुपहला।

रुबाई—स. स्त्री [अ] १ उर्दू फारसी में एक प्रकार की मुक्तक कविता जिसमे चार मिसरा होते हैं।

२ एक प्रकार का तराना गाना।

रुमहुरी—स. पु —एक प्रकार का घोडा।

उ०—रुमहुरी हुसैनाबाद गति, जिण अरब माय वळि नौख जाति। —सू प्र.

रुमझुमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे)

रुमांचित—देखो 'रोमांचित' (रू. भे.)

रुमा—स स्त्री —सुग्रीव की पत्नी का नाम।

रुमापुर, रुमापुरी—स स्त्री. सांभर नगर का प्राचीन नाम। (व भा)

रुमाल देखो 'रूमाल' (रू. भे.)

रुरुयौ—स. पु —एक प्रकार का बडा उल्लू।

रुरक—१ देखो 'रुरुक' (रू. भे)

२ देखो 'रुरु'

३ देखो 'रुरुक'

रुरु—स. पु. [स. रुरु] मृग विशेष।

२ कस्तूरी मृग।

३ दुर्गा द्वारा मारा जाने वाला राक्षस विशेष।

४ रामराम शब्द की ध्वनि विशेष।

उ०—१ रुरु बोलन के बिसवास रए, गुरु गोलन के हम पास गए। —ऊ का.

रुरुक—स पु —१ विजयसूर का पुत्र, सूर्यवंशी एक राजा का नाम।

उ०—१ सभ्रभ सुदेव नृप विजयसूर, पुत्र जास रुरुक नप तेज पूर। —सू प्र.

रू. भे —रुरक।

रुरुभैरव—स. पु —दुर्गा की पूजा के समय पूजा जाने वाला भैरव विशेष।

रुररियौ—स पु.—मारवाड राज्यान्तर्गत चलने वाला सिक्का विशेष। (प्राचीन)

रुळकणौ, रुळकबौ—देखो 'रळकणौ, रळकबौ' (रू भे)

रुळणौ, रुळबौ, रुलणौ, रुलबौ—क्रि. अ. [स लुलनम्] १ अवस्था स्थिति या हालत का शोचनीय होना, बरबाद होना।

उ०—१ रहपोखा रा राज में, रुळगी भूखा रेत। सका नित सीरा करै, दड न चूका देत। —ऊ का

उ०—२ कदोई बारी भोळी बातां सुण नैं पैलातौ हसियौ पछै कह्यौ काला मिनखा, म्हैं यू मिठाई खावू तौ म्हारौ घर बरबाद नी व्है जावै। म्है काठौ रुळ नी जावू। —फुलवाड़ी

२ अच्छी या ठीक अवस्था से दुरावस्था या बुरी स्थिति को प्राप्त होना, बिगड़ना।

उ०—१ कनकळ दिली सकाज वे सांवत पखरैतवे। रुळग्यौ देखो

राज, रव-ताडव ज्यूं गजिया । —किरपाराम

उ०—२ जिसौ दधि खेवट हीरण जिहाज, रुळै तिम पुत्र विहूणौ राज । —रामरासौ

३ मन या विचार का शान्त न रहना, इधर उधर जाना, भटकना।

४ छितरना, फैलना, बिखरना ।

उ०—१ इना मे जोइया हुय भेळा, कर किचकिची पाछा घिरिया, सो आय भिळीया । सो इसौ रीठ वागौ, 'सो न भूतो न भवसते' दीठा ही बण आवै । घणी तरवारघा रा बांड उछळै छै । घणा सेल आधोसले नीसरै छै । घणा रा फीफर बोल रह्या छै । अत्रा-वळा रुळ रही छै । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—रिणगण हेका आत रुळत हमस्त दाता हिक हिडुळत । लडै हिक लार्घं लोह मे लोध, जमद्दढ टेक उठे हिक जोध ।
—रा रू. ब

५ इधर उधर होना, तितर बितर होना, बिखरना ।

उ०—१ वाह पदम खळ पदम विहारै, वाह पदम हथ पदम उचारै रिणघण थाळ मूंग जिम रुळिया, पडिया किता किना खळ पुळिया । —सू प्र.

६ धोखे या भ्रम मे पडकर निश्चित तत्त्व पर न पहुचना ।

उ०—१ आलोयण लीधा पखड जी, रुळै ससार । रुपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यउ अधिकार । —स कु

उ०—२ राच रहया मिथ्या मत माही, ए रुळै जीव चारू गति माही । भूला नै आणै ठामी, सुमरौ श्रीसीमधर स्वामी ॥
—जयवाणी

७ घुसना, प्रविष्ट होना ।

उ०—हाथा जोडी करनै चौगिरद दोळा फिर गया । गोळी तीर बाहणै लागिया । जद भूडण पाचू चीलहर छाती आगै लेय इसा ताव सूं नोमरी सौ का तौ थह माह दीठी थी का फौज माहौ रुळती ही दीठी सौ पाळा नूं पाल पाधरी । —डाढाळा सूर री वात

८ अनिश्चित आचरणहीन अवाछनीय जीवन होना ।

उ०—वौ घोडा री राम फुणकारी । मुळकतौ मुळकतौ भूलरा रै माय घोडौ छोड दियौ । मार कूकारोळौ मच्यौ । एक जणी री पीडी घोडा रा खुर सू चीथीजगी । पीडी अर काळजौ दोनू चर-बण लागा । मुभाव री आकरी ही । रीस मे दात पीसती बोली—रुळती लायोडी रा डीकरा अैडा नाजोगा नी व्हैला तौ किण रा व्हैला । —फुलवाडी

९ निरुद्देश्य इधर-उधर मारा मारा फिरना ।

१० स्थायी आवास या स्थान के अभाव मे कभी कही-कभी कही भटकते फिरना ।

११ इधर उधर पडा होना अथवा उठाई पटका छोडा फेंकी होना ।

१२ युद्ध के बाजे का बजना ।

उ०—१ रुळि काहुल त्रवाळ, तूरहि भेरि नफेरि त्रहि, आरोहै अराकियां, झिलिया पख भूलाळ । —वचनिका

१३ दुर्दशाग्रस्त होकर इधर उधर भटकना, मारा मारा फिरना ।

उ०—१ माणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा कोडी कोडी रा करिया सम मूगा । डाढी मूंछाळा डळिया मे डुळिया, रळिया जायोडा गळिया मे रुळिया । —ऊ का

उ०—२ पदमण पाणी जावत प्रात, रुळंती आवत आधी रात । विल्लखा टाबर जोवै वाट, धिनोधर घाट धिनोधर घाट ।
—रुगेरेली बीदू

१४ लटक कर बार बार इधर उधर हिलना ।

उ०—१ घणा मोह जामा अतर मैं तिलवाय कीधा तिका रा बध छाती उपरा सू खोल दीधा छै । जिके खुल रया छै । घणा मोति-या री माळा नै जवाहरा रा जाळ उर ऊपर रुळ रह्या छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

१५ देखो 'रळकणौ, रळकबौ' (रू. भे.)

उ०—माग जडचा गजमोतिया, कडचा रुळता केस । ताळी हस दे तीजणी, बाळी कामण बेस । —पना

रूळणौ, रूळबौ रू भे·

रुळपट—स. पु.—१ अव्यवस्थित ।

उ०—अेडौ खेभौ तो राज थपिया पछै ई नी व्हियौ । सगळा पाना मे अेक इज परवानौ लिख्योडौ हौ । —इण रुळपट राज मे सोना रो सूरज ऊगण वाळो इज है । —फुलवाडी

२ देखो 'रळपट (रू. भे)

रुळयौ—१ देखो 'रूळौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—हुवै न बूझणहार, जाणै कुण किमत जठै । बिन ग्राहक व्योपार, रुळयौ गिणीजै राजिया । —किरपाराम

रुळाई—स. स्त्री.—१ रीने की क्रिया या भाव ।

२ अव्यवस्था ।

रुळाणौ, रुळाबौ—क्रि. स.—१ अच्छी अवस्था या स्थिति से बुरी स्थिति को प्राप्त कराना, बिगडाना ।

उ०—महाराजा अरजी सुणह, सत्रु सकळ मिळ साथ । दीन्हौ राज रुळाय मन, कीन्हौ मोहि अनाथ । —सिघासण बत्तीसी

२ स्थिति, हालत, अवस्था, आदि को शोचनीय या बरबाद कराना ।

३ छितराना, फैलाना ।

४ तितर बितर कराना, बिखराना ।

५ घुसाना, प्रविष्ट कराना ।

६ युद्ध का बाजा बजाना।

७ रुदन कराना, रुलाना।

रुळायोड़ी—भू. का. कृ.—१ अच्छी या ठीक स्थिति से बुरी या खराब स्थिति में पहुंचाया हुआ। २ छितराया या फैलाया हुआ। ३ तितर-बीतर कराया हुआ, बिखराया हुआ। ४ प्रविष्ट कराया हुआ, घुसाया हुआ। ५ युद्ध का वाद्य बजाया हुआ। ६ रुदन कराया हुआ, रुळाया हुआ।

(स्त्री. रुळायोड़ी)

रुळियाउत, रुळियाउति—देखो 'रळियाइत' (रू. भे.)

उ०—पाप करी जीव नरके जाइ, परमाधरमी रुळियाउति घ्याई वाट जोयता हुआ घणा दीह, भलइ नाम्हि आव्या माहरा मीह।
—वस्तिग

रुळियामणौ—देखो 'रळियामणौ' (रू. भे.)

उ०—कुल कीरती आगइ घणी, वस विसुद्ध वखाण। राजहंस रुळियामणा, सोनिगिरा चहुआंण।
—का दे प्र

(स्त्री. रुळियामणी)

रुळियाइत—देखो 'रळियाइत' (रू. भे.)

उ०—१ झगडउ भागउ गोरिया, ढोलइ पूरी मस्स। मारू रुळि-याइत हुई, पामी प्रीय परस्स।
—ढो मा

रुळियार—वि.—१ बदमाश, लुच्चा, लफंगा।

उ०—यबै करै तौ हाजरियौ काई करै। उणरा रुळियार साथीडा उणनै मोसा मारता—फिट रै नादार ! धणियां री मूछ रौ बाळ बण्योडौ फिरै अर एक आवणकी ई थारै काबू में नी आई। ढाकणी में नाक डुबोय मर क्यू नी जावै।
—रातवासौ

२ जिसके रहने या निवास करने का ठौर ठिकाना न हो।

३ दुष्ट, नीच, पाजी।

४ जो इधर-उधर बिना मतलब घूमता फिरता हो।

५ चरित्रहीन, व्यभिचारी।

६ वह (पशु) जो फसलों को हानि पहुंचाता व उत्पात मचाता फिरता हो।

उ०—वसी रा लोकांरा खेत ऊभा खाईजै। सु लोक वसी रौ भाखरसी आगै नित-प्रत पुकार चालै। ताहरा भाखरसी नूं छाजु ओळभा तौ घणा ही दिरावै, पण रुळियार घण हुवौ सु रहै नही।
—नैणसी

७ जिसका कोई सहारा न हो, आश्रयहीन।

रुळियारणी—स. स्त्री.—१ बदचलनी, लपटता।

उ०—मन री छळ-प्रपंच ई उणरौ धरम, निबळापणौ उणरी जात, ओछाई उणरी न्यात, रुळियारणी उणरौ कुळ अर फिटोळ-पणौ उणरी खाप है।
—फुलवाड़ी

२ गडबडी, अव्यवस्था।

३ बदमाशी, लुच्चाई।

४ आवारा होने की अवस्था या भाव, आवारगी।

रुळियाररासौ—१ अराजकता।

उ०—दीवाण धोळै दोपार धाड़ा करै। राजरा अैलकार चौडै धाडै लूटै। नी दाद-फरियाद अर नीं की सुणवाई। दिन बीतै सो बत्तौ। आधा पीसै नै कुत्ता खावै। जबर रुळियाररासौ मचियौ।
—फुलवाडी

२ अव्यवस्था।

उ०—कोई कंवै के बापनै भवारा मे घात राजगीदी दाबली काई कंवै के बापनै विस देय मरवाय न्हाकियौ। दोनूं छोटा भाइया नै देस निकाळौ दे दियौ। सगळै राजमे रुळियाररासौ मचाय राख्यौ है।
—फुलवाडी

रुळियारी—स. स्त्री.—लपटता, बदचलनी, व्यभिचार।

२ आवारापन।

रुळियारौ—स. पु.—गडबडी, अव्यवस्था।

उ०—देखौ आजादी रौ रुळियारौ मचियौ। नितोताई बेटौ जायौ, नाडा पैली नाक कटायौ।
—फुलवाडी

रुळीआमणौ—देखो 'रळियामणौ' (रू. भे.)

उ०—जीणइ वसइ जालउरउ कान्ह, राजरिद्धि छई इंद्र समान। गामपोलि प्रति रुळीआमणी, चिराइ पोलि तलहटी तणी।
—का. दे. प्र

(स्त्री रुळीआमणी)

रुळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बरबाद हुवा हुआ। २ अच्छी या ठीक अवस्था से बुरी स्थिति मे पहुचा हुआ। ३ इधर उधर भटका हुआ। ४ इधर उधर, तितर बितर हुवा हुआ। ५ छितरा या बिखरा हुआ। ६ घुसा हुआ, प्रविष्ट हुवा हुआ। ७ भ्रम मे पडकर इधर उधर भटका हुआ, निश्चित तत्व पर न पहुचा हुआ। ८ आचरणहीन हुवा हुआ। ९ निरुद्देश्य इधर उधर भटका हुआ। १० स्थायी आवास या स्थान के अभाव मे भटका हुआ। ११ दुर्दशाग्रस्त होकर फिरा हुआ। १२ लटकने हुए हिला हुआ। १३ युद्ध का वाद्य बजा हुआ।

१४ देखो 'रुळी' (अल्पा रू. भे.)

रुळी, रुलो—देखो 'रळी' (रू. भे.)

उ०—नीकोली रायण, प्रीसीमन भाइण दाडिमनी कुली खाता पूजै रुलो।
—व. स.

रळीयायत—देखो 'रळियाइत' (रू. भे.)

उ०—खंजण नैंण मुणाळ गति, नासा दीपका लोय। ढोलौ रळीया-यत हुवौ, जब धण दीठी जोय। —ढो. मा.

रळेट—१ ग्रावारा।

२ व्यभिचारी, चरित्रहीन।

३ वह जिसका विश्वास न किया जा सके।

रळौ–वि. [स्त्री. रळी] १ वह जिसका मालिक या स्वामी न हो, बिना मालिक का।

२ वह जिसकी कोई निगरानी न रखता हो, बिना निगरानी का।

३ ग्राबादीहीन, निर्जन।

४ ग्रावारा।

५ चरित्रहीन।

६ व्यर्थ, फिजुल।

ग्रल्पा;—रुळयौ, रुळियौ, रुळधौ।

रुळधौ—देखो 'रुळौ' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—१ रुळधा खुळया रजपूत, बिरामण मिळगा बिटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कूळ रुळगा सिटळा। —ऊ. का.

रुवौ—देखो 'रूणौ'

उ०—वं न सहनाणी दिखाळं एक एक दिखाळं तौ राजा चौपड जीपं, तहा रुवा चुकं ग्रो उपाव छं। —पच दडी री वारता

रुवाब—देखो 'रौब' (रू भे)

रुसतम—देखो 'रुस्तम' (रू भे)

रुसतमी—देखो 'रुस्तमी' (रू. भे.)

रुसनाई–स. स्त्री. [फा रोशनाई] १ चमक दमक।

उ०—दहुं दळा वळि हुवं दिखाई, रजक झळा गोळा रुसनाई। —सू. प्र.

२ प्रकाश, रोशनी।

उ०—१ जिस बखत स्रीमहाराज सब लोक की रुसनाई का मुजरा लेकरि राजमिंदरू पधारै। —सू. प्र.

उ०—२ पीळचोसा ग्रढारदानीग्रा री रुसनाई लागि रहि छै। तेजपुज ग्रासप ग्रारोगीजे छै। —रा सा स.

३ ग्रानंद, हर्ष, खुशी।

उ०—तठै कुंवर ग्रा वात सुण घणौ खुस्याळ हुवौ। रुपीया पाच ऊपर सू इनाम नांखिया ग्रर साथ सारै नु कह्यौ, ठाकुरा तयारी करौ। घोड़ा जीण करावौ ज्यू चढा। सुग्रर मार ले ग्रावा। परभात गोठ मे नवी रुसनाई ग्राण वपरावा सतावी करौ। भुय ग्रळगी है। —कुवरसी सांखला री वारता

४ स्याही।

उ०—रूका कलम रुधर रुसनायां, ग्राहव खेत खतां कर ग्रेद। व्याज माय केता सर वाढै, काटा मांय किता दे कैद। —बुधजी ग्रासियौ

रू. भे.—रोसनाई।

रुसभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे)

रुसा–देखो 'रसा' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

रुसाणौ, रुसाबौ–क्रि. ग्र.—क्रुद्ध होना कुपित होना, नाराज होना।

उ०—ताहरा हरदास कह्यौ, कुरजपूत। म्है म्हारी पिंड ही वडायौ। ताहरा हरदास बिना घाव सारा हुवा रुसायनं हालियौ। वास छोडियौ। —नैणसी

रुस्ट–वि [सं. रुष्ट] नाराज, ग्रप्रसन्न, कुपित।

रुस्टता–स. स्त्री [स. रुष्टता] ग्रप्रसन्नता, नाराजगी।

रुस्टपुस्ट–वि. [स हृष्पुटष्ता] मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट।

रुस्टि–स. स्त्री. [स रुष्टि] कोप, गुस्सा, क्रोध।

रुस्तक–स. पु.—एक प्रकार की मिठाइ विशेष।

उ०—गुंद वडा पाया तणा रे लाल, ग्रावा रायण ग्राण। रुस्तक रा दाणा भला रे लाल, गुंदपाक सूख लाण। —प. च. चौ.

रुस्तम–स पु.—१ फारस का एक प्राचीन पहलवान।

२ कोई बहुत बडा वीर व्यक्ति।

उ०—देवीदास रुस्तम ज्यू जग कर काम ग्रायो। —बा दा. ख्या.

रुस्तमी–स स्त्री.—वीरता, बहादुरी।

रुहपत–स. स्त्री. [स पत्ररुह] पृथ्वी, धरती। (ग्र मा.)

रुहराळ—देखो 'रुधिर' मह., (रू. भे.)

उ०—हिय भाड पछाड सराड हुडी, भड पाड उडाड वंहाड भडी। ग्रसवार बिना ग्रस जूझ डमी, रुहराळ हुड रणरंग रसी। —पा. प्र.

रुहराळी–स स्त्री. [सं रुधिर+ग्रालुच्] रक्त सम्बन्धी, रक्त की।

उ०—वडी मसीत ईदगावाळी। रत सूवरा तणं रुहराळी। —रा. रू.

रुहाड़, रुहाडि–स. स्त्री.—१ मनोरथ, मनोकामना।

उ०—१ रे साजन तुझ मन तणी, पहुचमिइ मघळी रुहाडि। पणि नवि मोरा मन तणा, जाणौ म्हो रे पेलाडि। —जयवत सूरि

उ०—२ पूगळ ढोलौ पाहुणौ, रहियौ सासरवाडि। पनरा दिहाडा पदमणी, माणि मना रुहाडि। —ढो. मा.

रू. भे.—रुहाड।

रुहितास–स —देखो 'रोहिताम' (रू. भे.)

रुहिनाळ–सं. पु —रक्त का नाला।

उ०—पडै रुहिनाळ तणा परनाळ, खळकत जाणिक गैरव खाळ। —सू. प्र.

रुहिर—देखो 'रुधिर' (रू. भे)

उ०—१ तड़िख्ख तडख्ख थहे रिण थळ, रुहिर रळतळ प्रखळ पड

अचळ जुवळ भगियण जुटै करिवा जेत ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ जोगण पहली भाय पळ, करै उतावळ काय । भर खप्पर वाल्है रुहिर, देसी कत धपाय । —वी स

रुहिरांणण—देखो 'रुधिरानन' (रू. भे.)

रुहिराख्य—स पु. [स रुधिराख्य] एक प्रकार का रत्न या मणि ।

रुहिराळ—देखो 'रुधिर' (मह , रू. भे)

उ०—१ धग पुड बेधि रग अहि धोळ, छिलै रुहिराळ तणौ अति छोळ । —सू प्र

उ०—२ मिलक्किय वीन दहू दुघपूर, हलक्किय बैठि विमानानि हूर । किलक्किय जुग्गनि मक्ख कराळ, खळक्किय भूमि बितै रुहि-राळ । —ला रा.

रुहुला—देखो 'रुहेला' (रू भे)

उ०—वाक वीरै बगमिड रुहुला राज म खांहि । प्रबळा प्राण ऊतावळी, महिपति पड़िमिय मोहि । —मा. का प्र

रुहेलखंड—स पु —रुहेला पठानों के बसने का अवध के उत्तर-पश्चिम का एक प्रदेश ।

रुहेला—स. स्त्री —पठानो की एक शाखा ।

रू—स. पु —देखो 'रूई' (रू भे)

उ०—कहै श्रीमुखा राग जोधा करारा, हगू पुड रू घ्रन बाधौ हजारां । —सू प्र

२ देखो 'रोम' (रू भे)

उ०—२ पेट भार हिरण्या वहै, रह्यौ न भ्रोटौ कोय । रूंआं रूआं नीसरै, लूआं लूआं लोय ॥ —लू

उ०—३ मिनख री मरजादा सू लुगाई री मरजादा मेळ नी खावै । मानूं के मिनख रै कारण लुगाई नै आपरी मरजादा निभा-वण री किणी दिस सू कोई छूट नी है । लुगाई रो रूं रूं मिनख रै खूंटै गंठजोड़ीजियोड़ो है —फुलवाड़ी

मुहा—रू रू फाटणी=अत्यधिक दर्द होना ।

रू रू कापणौ=भयभीत होना ।

रू रू ऊभो व्हैणौ=रोमाच होना ।

रू फाटणौ=सहम जाना ।

रूआळो—स स्त्री —काति, दीप्ति, ओज ।

वि.—१ सुदर, मनोहर ।

उ०—बाहड़िया रूंआळियां धरण वकै नयणेह । जग जग माथ न बोल ही, माक बहुत गुणेह । —ढो मा.

रू. भे —रूवाळी ।

२ देखो 'रोमावळी' (रू भे)

रूआळो—वि. [स. रोम+आलुच] (स्त्री. रूआळी) रोमयुक्त रोम पूर्ण ।

उ०—१ नस ओछी अर जाडी । भरपूर रूआळो डील ।
—विजयदान देथो

उ०—२ ऊंची नीची सरवरिया री पाळ, जठै ने ऊजळौ रूपौ नीपजै । रूपौ सोहै पाबू धणी रै पाव, रूआळा पीडीं से रूपौ हद सोहै । —लो. गी.

२ सुदर, मनोहर, कातिवान ।

रू भे.—रूवाळो

रूंआवळ—देखो 'रोमावली' (रू भे)

रूंख—स पु [स वृक्ष] १ पेड, वृक्ष ।

उ०—१ बोल्यो नानी-मा म्हनै ई मात गुलगुला तळनै दे । म्हैं ई गुलगुला रो रूंख उगावूंला । डाला माथै बैठ नित गुलगुला खावूंला । —फुलवाड़ी

उ०—२ हिवडा भीतर पेम करी, ऊगौ मज्जरण रूंख । नित सूखे नित पल्लवै, नित नित नवला दुख । —अग्यात

उ०—३ नाहरा एकै रूंख हेठैही जाजम बिछायनै दोनू सिरदार सूता —नैणसी

रू भे.—रुक्ख, रूख, रूंखौ रोख ।

अल्पा —रूंखलड़ो, रूंखड़ियो, रूंखडौ, रूंखड़ो, रोखड़ा ।

मह —रूंखड ।

रूंखड—स पु १ दरियाई नारियल का खप्पर लेकर 'अलख' कह कर भीख मागने वाले एक प्रकार के भिक्षुको का दल ।

२ देखो 'रूंख' (मह, रू भे)

रूंखड़ियो—वि — १ वृक्षो पर वास करने वाला ।

स पु —१ बदर ।

२ मूर्ख ।

३ देखो 'रूंख' (अल्पा, रू. भे)

रूंखड़लो—स पु —१ देखो 'रूंख' (अल्पा. रू भे.)

उ० १ सुगनचिडी सूरज नै पूछ्यौ गिरजा नै ककाळ । धोरा नै पूछै रूंखड़ला, नामा नै अगिनरी भाळ । —चेतनमानखा

रूंखड़ी—स. स्त्री —१ जडी-बूटी ।

रूंखड़ौ देखो 'रूंख' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ तळ पथी गळ फूल फळ, सिर पछी न ममाय । श्रो हिज हरियौ रूंखड़ौ, सूको ठूंठ कहाय । —अग्यात

उ०—२ जे भावित भवतव्यता रे हा, न चलै तात उपाय । जेहवौ वावै रूंखड़ौ रे हा, तेहवा हीज फल थाय । —वि कु

उ०—३ सरवौ व्हु तो कान लगा सुण, माटी थनै बुलावै है । नैण हुवै तो देख रूंखड़ा, धरती हात हिलावै है । —चेतमानखा

रूंखडो—देखो 'रूंख' (अल्पा रू. भे)

उ०—ने धन्य ते वनसपती, वृक्ष तणी धन्य छाया रे । धन्य ए

सबला रूंखड़ा, जिहा बइठा नलजी राया रे।

—नळ-दवदंती रास

रूंखराइ, रूंखराई—स. स्त्री. [स. वृक्ष+राजि] १ वृक्षों की कतार। २ वनस्पति।

उ०—१ रटति पूत मिसि मधुप रूंखराइ, मात स्रवति मधु दूध मिसि। —वेलि

रूंखां-सिणगार—स. पु. [सं. वृक्ष+श्रृंगार] १ चंदन। (ह. नां. मा.)

रूंखावळी—सं. स्त्री. [स. वृक्ष+अवलि] १ वनस्पति।

उ०—१ रूंखावळिया पल्लव फूटा। तिणा अंकुर हुआ धरती नीली दीसै लागी। सु मानौ प्रथमी नीला वस्त्र ऊढ्या छै।

—वेलि

रूंखाचाळौ, रूंखाळौ—स. पु १ [स. वृक्ष+आलुच] बंदर।

रूंखी—स. स्त्री.—देखो 'रूंख' (रू. भे)

उ०—मारगि मोटा डूंगरा, नव बाहुला विसेखी। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा रूंधी रूंखी। —मा. का क.

रूंग—देखो 'रूंगटौ' (रू. भे.)

उ०—१ रामत्या रा बळगा रूंग, मोटा मोटा दिस्या डूंग।

—अज्ञात

रूंगटौ—देखो 'रूंगटौ' (रू. भे)

रूंगटाळी—स. स्त्री.—भेड।

रूंगटौ—१ रोम, रोआ केश।

उ०—१ नाई मिसखरी करता बोल्यौ—वा टाटचा सिरदारा रै माथै अेक ई रूंगटौ नी है तौई धोखो-खायगा। —फुलवाडी

उ०—२ इतरा मे तौ न मालम कीकर ई साकळ निकळगी अर हडडड...ड धम्मीड करती पट्टी आगणा पर। जे म्हूं फुरती से आगो नी सरक जावतौ तौ चटणी-चटणी......। श्रो ए मा! रूंगटा ऊभा व्हैग्या अर उण चौधरी रौ गोडौ काठौ पकड लियौ।

—रातवासौ

रू. भे.—रूंग, रूंगटौ।

रूंगी—स. स्त्री.—सनक।

उ०—१ सूंगी ढिग राग समाज सुरावट, मन रूंगी गो काज मरे मूंगी हेक गिणै नह मारू, पूंगी राग अवाज परे।

—ठा. गभीरसिंह रो गीत

रूंगीलौ—स. वि. [स्त्री रूंगीली] १ सनक की आदत या स्वभाव वाला, सनकी।

रूंगूं—स. पु.—अश्रु,बंद, आंसू।

उ०—१ वनफळ आपूं वक्ष थी, जु तुंहि भावि। द्रामणी देखी तुझ नि मूंहि रूंगू आवि। —नलाख्यान

रूंचौ—वि. [मी रूंची] वह जिसके पाव तिरछे पडते हो।

रूंझ—स. पु.—१ एक प्रकार का कटीला वृक्ष जिसका पका फल खाने से बकरी मर जाती है। (अलवर)

अल्पा.,—रूंझट, रूंझडौ।

रूंझडौ—देखो 'रूंझ' (अल्पा., रू. भे.)

रूंझट—१ झंझट, झमेला।

देखो 'रूंझ' (अल्पा, रू. भे.)

रूंठ—स. पु.—लकड।

उ०—१ ले भडा रटाको पूर अरिंदा ताड़ण्वा लागा, महावीर खीज मे पाडण्वा लागा मूंठ। वीर वे सतावां जहां दूधारा झाडण्वा लागा, रोजगारा खाती ज्यूं फाडण्वा लागा रूंठ।

—सुखदांन कवियौ

रूंड—१ देखो 'रुंड' (रू. भे.)

उ०—१ उर रूंडन की माळ विराजै, कर खप्पर विषधारी। सुमरू देवी को धणी जो, विद्यया बुध अपारी।

—रुकमणी मगळ

२ पिंगल के अनुसार एक मात्रिक छंद विशेष।

रूंडमाळ—देखो 'रुंडमाळ' (रू भे)

उ०—१ दीठा नयण त्रिणि मुख पांचइ, कपिल जटा सुविसाल। रूंडमाळ दीठी करि तूंबा दीठउ ब्रह्म कपाळ —का दे प्र.

रूंडळौ—देखो 'रूंड (अल्पा, रू. भे)

उ०— १ नाडळा दळा डूगळा टूंक, रूंडळां रूळ सीकळां रूंक।

—गु. रू. ब.

रूंण—देखो 'रूण' (रू. भे) (ह. ना. मा.)

रूंणझूण—१ देखो 'रणझुण' (रू. भे.)

उ०—ओढण लालर ऊमदा, रति सचि रै रूप। रूंणझुण करती राजवण, आइ पिलग अनूप। —अग्यात

रूंणझूणणौ, रूंणझूणबौ—देखो 'रुणझुणणौ, रुणझुणबौ (रू. भे.)

उ०—नेपुरा नादइ रूंणझूणइं, बहुविविध प्रतिरव भेल।

—रुकमणी-मगळ

रूंतणौ, रूंतबौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदबौ' (रू. भे.)

रूंताणौ, रूंताबौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंतायोड़ौ—भू. का. कृ.—देखो 'रूंदायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रूंतावियोडी)

रूंतावणौ, रूंतावबौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंतावियोड़ौ—देखो 'रूंदायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री रूंताडियोडी)

रूंतियोड़ौ—देखो 'रूंदियोडौ' (रू. भे.)

रूंतोड़—स. पु.—१ बाल के जड से टूट जाने पर होने वाला फोड़ा।

रूंदणौ, रूंदबौ—क्रि. स.—पैरों तलै कुचलना।

२ मसलना।

३ अधिकार मे करना, कब्जे करना।

४ रोकना।

रूंदणहार, हारौ (हारी), रूंदणियौ—वि.।

रूंदिओड़ौ, रूंदियोड़ौ, रूंदयोड़ौ—भू. का. कृ.।

रूंदीजणौ, रूंदीजबौ—कर्म वा.।

रूंदळणौ, रूंदळबौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदबौ' (रू. भे.)

उ०—इतरै सूमर वळै फौज सू भिळियो मो मारी फौज फरोळतौ रूंदळतौ फिरै छै। इसी तरह घणो कजियो कर पार हुवौ।
—दाढाळा सूर री वात

रूंदाड़णौ, रूंदाड़बौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंदाड़णहार, हारौ (हारी), रूंदाड़णियौ—वि.।

रूंदाड़िओड़ौ, रूंदाड़ियोड़ौ, रूंदाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंदाड़ीजणौ, रूंदाड़ीजबौ—कर्म० वा०।

रूंदाणौ, रूंदाबौ—[रूंदणौ क्रि. प्रे. रू.] १ पैरो तले कुचलाना।

२ मसलाना।

३ अधिकार या कब्जे कराना।

४ रोकाना।

रूंदाणहार, हारौ (हारी) रूंदाणियौ—वि.।

रूंदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंदाईजणौ, रूंदाईजबौ—कर्म वा०।

रूंताणौ, रूंताबौ, रूंदाड़णौ, रूंदाड़बौ, रूंदावणौ,
रूंदावबौ। —रू. भे.

रूंदायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पैरो तले कुचलाया हुआ. २ मसलाया हुआ ३ अधिकार या कब्जा कराया हुआ ४ रोकाया हुआ (स्त्री. रूंदायोड़ी)

रूंदावणौ, रूंदावबौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंदावणहार, हारौ (हारी) रूंदावणियौ—वि०।

रूंदाविओड़ौ, रूंदावियोड़ौ, रूंदाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंदावीजणौ, रूंदावीजबौ—कर्म वा०।

रूंधणौ, रूंधबौ—क्रि. स. [सं. अवरुन्धनम्] १ रोकना।

उ०—१ खळ पळ खेचर बीर नारद खिले, ऊपरा ऊपरी गैंदला ऊथलै। साय गुरु 'अचळ' दादो तको मचचले, पतसाही कटक रूंधियो 'पातले'। —मनतावत प्रतापसिंह री गीत

उ०—२ लाख नेस लुटिजै, देस कीजै फुड ऊधै। जिनौ भूक हुय जाय रूक माहे पथ रूंधै। एक मार चूरिया भार परवार न भाळै। करै हक पोकार दिली बाजार विचाळै। —रा. रू.

२ आच्छादित करना।

उ०—१ मारगि मोटा डूगरा, नद वाह्ळा विसेसी। जलचर सेजर भूमिचर, वसुधा रूंधी रूसी। —मा. का. प्र.

३ विचारो मे उलझना, फसना।

उ०—१ माईत तो पाछा आपरै मसोवा मे रूंधग्या अर टाबर आपरी अबूझा-प्रीत मे तारा रै सागै विचरता विचारता वांनै ऊग आयगी। —फुलवाड़ी

४ घेरना, आवेष्टित करना।

उ०—सूअर सूती नीद भर, भूडण पोहरा देह। ऊठौ नाथ निदाळवा, घर रूंधौ धोडेह। —दाढाळा सूर री वात

उ०—१ जन्म लगइ जेहना धन लीजइ, तेह चाडि सग्रांमि। कइ आपणा प्राण ऊगारया, रूंध्यउ मेल्हयउ स्वामि। —का. दे. प्र.

५ रौंदना, मसलना।

उ०—१ दाढाळो तूड सूं घणा नै ई उलाळ उलाळ हेटे धरकाया हाथी गुड्या असवारा नै रूंधता न्हाय छूटा। —फुलवाड़ी

रूंधणहार, हारौ (हारी) रूंधणियौ—वि०।

रूंधिओड़ौ, रूंधियोड़ौ, रूंध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंधीजणौ, रूंधीजबौ—कर्म वा०।

रूंधाड़णौ, रूंधाड़बौ—देखो 'रूंधाणौ, रूंधाबौ' (रू. भे.)

रूंधाड़णहार, हारौ (हारी) रूंधाड़णियौ—वि०।

रूंधाड़िओड़ौ, रूंधाड़ियोड़ौ, रूंधाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंधाड़ीजणौ, रूंधाड़ीजबौ—कर्म वा०।

रूंधाणौ, रूंधाबौ—क्रि. स. [रूंधणौ क्रि. प्रे. रू.] १ रोकाना।

२ आच्छादित कराना।

३ विचारो मे उलझाना।

४ मसलाना।

रूंधाणहार, हारौ (हारी), रूंधाणियौ—वि.।

रूंधायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रूंधाईजणौ, रूंधाईजबौ—कर्म वा.।

रूंधाड़णौ, रूंधाड़बौ, रूंधावणौ,
रूंधावबौ—रू. भे.।

रूंधायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ रोकाया हुआ २ आच्छादित कराया हुआ. ३ विचारो मे उलझाया हुआ. ४ रौंदाया या मसलाया हुआ. (स्त्री. रूंधायोड़ी)

रूंधावणौ, रूंधावबौ—देखो 'रूंधाणौ, रूंधाबौ' (रू. भे.)

रूंधावणहार, हारौ (हारी), रूंधावणियौ—वि०।

रूंधाविओड़ौ, रूंधावियोड़ौ, रूंधाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंधावीजणौ, रूंधावीजबौ—कर्म वा०।

रूंधावियोड़ौ—देखो 'रूंधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रूंधावियोड़ी)

रूंधियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ रोका हुआ २ आच्छादित किया हुआ. ३ विचारो मे उलझा हुआ ४ आवेष्टित किया हुआ. ५ मसला हुआ (स्त्री. रूंधियोड़ी)

रूंन—१ रोने की अवस्था या भाव।

रूंबड़ी—सं. स्त्री—१ शरीर मे विकृत खून को बाहर निकालने का

उपकरण।

२ फोड़ा, फुन्सी।

रूंबरौ-स. पु.—एक विशेष जाति का घोड़ा।

उ०—१ कनूजदेस ना कुलथा। मध्यदेस ना महुयडा। देवगिरा। देवगिरा देखाऊ। रूंबरा। केकाण। सभांणी। पांणीपंथा।

—कां. दे. प्र.

रूंम—देखो 'रोम' (रू. भे.)

उ०—गुरु गूग गोला गुरु, गुरु गिडकां री मैल। रूंम रूम मे यूं रमे ज्यूं जरबां मे तेल। —ऊ. का.

रूंस-वि.—सदृश्य, समान।

उ०—रावळ बापा जसौ रायगुर, रीस खीज सुरपतरी रूंस। दस सहसा जेहौ नह दूजौ, सकती करै गळा रा सूंस। —बारूजी सोदौ

सं स्त्री.—१ तरह, प्रकार, भांति।

उ०—टणकारां गैं घट्टा झालरी झणकार टोपा, धारा फूल चौसरा गळा रा जागी धूंस। रुण्ड नच्चै मोती थाळ आरती उतारै रभा, रूद्र गोती गनीमा चरच्चै इसी रूंस। —ऊमेदराम मांदू

२ शोभा, छबि, सुंदरता।

उ०—१ कल कदमू के लगर भारी कनक की हूम। जवाहर के जेहर दीपमाला की रूंस। —र. रू.

उ०—२ रूंस सहर री गामडै, आजै बणियौ भोट। हाथाळै हण हाथिया, कीधा पजर कोट। —वी स.

३ इच्छा, चाह।

उ०—२ झपट चमर छत्र छांह न झेलै, खेल बसत गुलाल न खेलै। हित करि वाग रूंस नह हालै, चादर हौज फुहार न चालै।

—सू प्र.

४ क्रोध, गुस्सा।

उ०—राजा कियौ न रूंस, धन लै ढळिया घाडवी। मांवत मद मे सूस, मूमल सुणवे माळिया। —अज्ञात

५ खाद्य पदार्थ।

उ०—सदरि पस्त्या सालणा रे लाल, हिव पकवाने हूस। खारिक निमजा खोपरा रे लाल, प्रीसता रूंडो रूंस।

—प च.चौ.

रूंसणौ-सं.—देखो 'रिसाणौ' (रू भे.)

रूंसणौ, रूंसबौ—देखो 'रीसणौ, रीसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ धसै दळ मुगळ कीध विध्रुम, रूद्रगण दक्ष तणै जिम रूंस।

—सू प्र.

रूंसणहार, हारौ (हारी), रूंसणियौ—वि०।

रूंसिओड़ौ, रूंसियोड़ौ, रूंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूसीजणौ, रूसीजबौ—भाव० वा०।

रूंसबार-वि.—१ शानदार, सुन्दर ठसकदार।

उ०—१ तद दासी मोजड़ी लेनै माहे गई। कह्यौ—"बेगम साहिब आप दोनु पातिसाहां के फरजन हौ, तिको निपट सू खूंप सूं रूंसबार मोजडी पगां पेहरौ हो।" —वीरमदे सोनगरा री बात

रूंसाड़णौ, रूंसाड़बौ—देखो 'रूंसाणौ, रूंसाबौ' (रू. भे.)

रूंसाड़णहार, हारौ (हारी), रूंसाड़णियौ—वि.।

रूंसाड़िओड़ौ, रूंसाड़ियोड़ौ, रूंसाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसाड़ीजणौ, रूंसाड़ीजबौ—भाव० वा०।

रूंसाणौ, रूंसाबौ-क्रि. स.—१ कुपित करना, क्रुध करना।

२ नाराज करना।

रूंसाणहार, हारौ (हारी) रूंसाणियौ—वि०।

रूंसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसाईजणौ, रूंसाईजबौ—कर्म वा०।

रूंसाडणौ, रूंसाडबौ, रूंसावणौ, रूंसावबौ —रू० भे०

रूंसायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्रुध किया हुआ. २ नाराज किया हुआ. (स्त्री. रूंसायोडी)

रूंसावणौ, रूंसावबौ—देखो 'रूंसाणौ, रूंसाबौ' (रू. भे.)

रूंसावणहार, हारौ (हारी) रूंसावणियौ—वि०।

रूंसाविओड़ौ, रूंसावियोड़ौ, रूंसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसावीजणौ, रूंसावीजबौ—कर्म वा०।

रूंसावियोड़ौ—देखो 'रूंसायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रूंसावियोडी)

रूंसियौ-स. पु.—१ अनाज के ढेर के चारो तरफ लगाई जाने वाली। खाई।

उ०—१ रमता कर रिगटोळ खूदना मारग हालै। खळा रूंसिया, खोद, घाव खाई दे घालै। —दमदोख

२ एक प्रकार का घास।

रूंसौ-स पु.—१ प्रेत।

उ०—१ हम कहनै दोनूं हाथ मोहड़ै ऊपर वळै फेर ने कहीयौ, 'मेह वूठा तद पांणी पीयौ हतौ। इय सुणनै वरछी रूंसौ ऊभी कीवी। —मांडणमी कूंपावत री वात

रूंह—१ देखो 'रूह' (रू. भे.)

उ०—१ सूरत के भयाणम्य जमराणूं के जोस, जगू के जालम तीरमदाजू के सिरपोस। रूंह के सुरख चमरू के मंजार, गोसके झाळाहळ आतस के अगार। —सू. प्र.

रू—१ देखो 'रोम' (रू. भे.)

उ०—१ कागरै बूबरा, मोटै पूठै रा, छोटे पीडारा, झांमरै पूछरा, भुवरियै रू रा, चोळमै रगरा, लांघियै सिंघ ज्यूं लकां वढिया थका, भागा गाडा ज्यूं बठठाट करता थका, वेस्या स्यूं झाला करता थका, मातै हाथी ज्यूं हूकारा करता थका)

(खीची गंगेव नीबावतरौ दो-पहरौ

२ देखो 'रूई' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरो दीवें ऊपरा आगीयो बेताल बोलियो—पहिलें लोहरो घडीयो दीवो। माहि बातियो तेल। रू री बाट जगाई।
—चौबोली

रूखड़, रूखड़उ, रूखड़ु, रूखड़ो, रूखड़ौ—देखो 'रूखौ' (रू. भे.)

उ०—१ करहा तू मनि रूखड़उ, बंध्या करइ विछोह। अजइ कुमारइ वप्पड़ा, नही ज कामिण मोह। —ढो. मा

उ०—२ रवि! ताहरू रथ रूखड़उ, आवउ पाछउ वालि। अेकइ पदइ ऊथल्यू तउ हिजि रहिउ तरीयालि। —मा का प्र

उ०—३ मुख पखालेवा गयु प्रीउड़उ, आवतु हूसीइ कत रूखड़उ। बार जोइ नारी तिहां, मझ मूंकीनइ नल गयुं किहां।
—नल-दवदती रास

उ० ४ नाभि विवर अनि रूखड़ुं, घणा तलीआरइ देटि। उन्नत उर विसाल घणा, भल तइ सकइ न भेटि। —मा का प्र

उ०—५ चरइ मेलड़ी माकर हास्य, अनि रूखड़ा तुरगम लाख। पांणीहारि पोलीआ मूआर, दासदी कोला मख न पार।
—का. दे प्र

उ०—६ सदा फलांणि निबु आगणी राइणी महुअड़ा कल्हार जबुई नारग रग वाग रूखड़ा। —गु. रू ब.

उ०—७ एकवीस छत्र चामर ढलइ, भुवन कोडि लक्ष्मी वसइ। पातसाह मदाफर रोडरमल्ल, रगि रुपि रूखड़इ हसइ। —व. स.

८ पणि कमिउ एक छि जे सासू तणु समाचार ? करि ककण सोवरणमि चूडी रूपइ रभा अनि रूखड़ी। - व स

((स्त्री रूखड़ी, रूखड़ी)

रूई-स स्त्री—१ कपास के डोडे या कोश मे से निकलने वाले बारीक रेशों का घुआ।

उ०—१ रागी पिरि ते रजनी वीती, थयू प्रात काल जी नाठा भागा सोधी काढि, राख्या रूई छि बाल जी। —नलाख्यान

रू. भे.—रू रू; रुइ।

रूईदार-वि.—१ रूई के समान।

२ जिसमे रूई भरी गई हो।

रूउ-स पु.—१ एक सिक्का विशेष।

उ०—१ अतर दीसइ एवडू जवडउ सोनईउ रू उ रे। अतर दीसइ एवडू जेवडउ बाप नइ फूउ रे। —नल-दवदती

२ गायों का समूह, गोभुण्ड।

उ०—रूउ रूधउ रणागणि मूकर नेह नामु नियुणी जएा धुकर गायत्री य छलि जे नर नासइ वीर मांहि सु पडइ पुणि हासई।
—सालि सूरि

रूक-स. स्त्री—१ तलवार, कृपाण। (डि को ह. ना. मा.)

उ०—१ महा जुधउ मस्त, इमो आवरत्त रूके उड्डि रीठ गुड़े जोध प्रीठ। —गु. रू. व.

उ०—२ नोड्डिवदी तोडियो निहग चढियो अडि नाळो। गढ विकराळो 'गजरा' रूक बळि लियो रनाळो। —सू. प्र.

रू भे.—रुक।

यौ—रूकचालक, रूकचाळो, रूकझड़ी, रूकझल, रूकहथ

मह—रूकड़।

रूकड़—देखो 'रूक' (मह., रू. भे)

उ०—१ रूक रूक तीरा-रूकड़ां, मुख मुख बीरा मोळ। पूचाळा हरकरा पखें, दळ में प्रबळ दरोळ। —बी. स.

उ०—२ घणी लाज बीटियो वाज मेलिया नत्रीठै। दहूं ओर रूकड़ां, रीठ उडियो गरीठै। —बगतो खिड़ियो

रूकचलाक, रूकचालक—वि यौ—१ योद्धा, वीर।

उ०—१ कोधार महता कथा रावबा समदा कड़े, श्रीहथा राम ज्यू मागीच सुबाह। मारगी कदीम रूकचलाक भारथा मुड़े, दयाळ मारगी तथा ग्राहड़े दूबाह। —दादूपथी साधा रो गीत

रूकचाळो—यौ म पु यौ —१ युद्ध।

उ०—१ रिणमला के जोडे जगी महाबाह भाटी जाके बम पडे रूकचाळ ही की पाटी। —रा. रू.

रूकझड़ी—स. स्त्री. यौ—तलवारों का प्रहार।

उ०—१ तळवाडी थाणो तटै, सूवें वखत माथ। वीरा था पर वाजसी रूकझड़ी अघ-रात। —वी मा

रूकझल—वि यौ—खड्गधारी, तलवारधारी, योद्धा, वीर।

उ०—आया भड भाटी दौढो आडा गावत दौढा रूकझल।
—गु रू. व.

रूकमणी—देखो रु.मणी' (रू भे)

उ०—१ देवर रूकमण हमें हरि निभावे अनेको रे। भाइ त निभावी न सकें, तिराम् डरता न परणे एको रे। - जयवाणी

रूकरस—स पु. यौ.—युद्ध, सग्राम।

उ०—१ रूकरस राठोड गुरड प्रगटो गैणाग। —गु. रू. व.

रूकसओधा—वि. यौ.—१ तलवार धारण करने वालों के वशज, योद्धा।

उ० जसराज मरण 'जोधा' हरा रूकसओधा राजबळ। छित लाज दिली महाराज छळ, इळ पडिया राखे अचळ। —रा रू.

रूकहत्थ, रूकहत्थो, रूकहथ, रूकहथौ—वि यौ. [स रूक+हस्त]

२ जिसके हाथ मे तलवार हो, खड्ग धारी।

उ०—१ रूकहथ नेमिमो हाथ जमराज रा, ठिवना पाव धीरा दियो ठाकुरा
—हा. झा.

उ०—२ ऊदो 'केहर' तणो पड़ै धारा 'मानावत'। रूकहथो धनराज वाज पडियो वीकावत।
—रा रू.

रुकमणी—देखो 'रुकमणी' (रू भे)

उ०—देवी रुकमणी रूप तूं कान मोहै। देवी कान रै रूप तू गोपि मोहै।
—देवि

रूख–स पु —देखो 'रुख' (रू. भे)

उ०—१ तो नापो कही-थांहरी **रूख** किण बात ऊपर। प्यार हुवे तो म्राछो नै ना हुवै तो म्राछो। —नापे सांखले री वारता

उ०—२ कट पीतपट्ट, सुबधे सुघट्ट गत पचमुखं चले चाप **रूख**। —र. ज. प्र.

उ०—३ थेट सू भाया थका जयसिह जी री **रूख** म्रौरंगजेब सूं रही। —महाराजा जयसिह म्रामेर रा धणी री वारता

२ देखो 'रूख' (रू. भे.)

उ०—१ म्रपणी म्रारत कारणे वाके पाइ परिजे हो। चदन केरा **रूख** ज्यूं चरणा लिपटीजे। —मीरा

रूखड़ो –देखो 'रूख' (म्रल्पा., रू भे)

उ०—१ तन दुख नीर तडाग, रोज विहगम **रूखड़ो**। विसन मलीमुख बाग, जरा बरक ऊपर जबल। —बा दा.

रूखापण, रूखापणो – देखो 'रुखाई'

रूखाळी—देखो 'रुखाळी' (रू. भे.)

रूखि, रूखी—देखो 'रिसि' (रू भे)

रूखौ–वि.—१ जिसमे चिकनाहट या स्निग्धता की कमी हो।

२ खुरदरा।

३ जिसमे चिकने पदार्थ न पडे हो।

४ जो म्रप्रिय व नीरस हो।

५ जिसमे म्रात्मीयता उदारता म्रादि गुणो का म्रभाव हो।

६ उदासीन, विरक्त।

रूड़उ, रूड़ौ–वि. [स्त्री रूडी] १ सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट।

उ०—१ तू स्वामी प्रिथुराज ताहरौ, बळि बीजा को करै विलाग। **रूड़ौ** जिको प्रताप रावळो, भूडो जिको म्रमीणो भाग। —प्रिथीराज राठौड

उ०—२ रामचद्र करसी **रूड़ौ** सगळौ विध म्रीरग। भगता-पत भूधरधणी, चाढण रूप सुचग। —ह. र.

उ०—३ करणीगर **रूड़ा** करै, करतै बिलब न काय। मार उपावै मेदनी, मूहरत हेकण माय। —ह र

२ बढिया, श्रेष्ठ।

उ०—१ ताहरा म्रौ लगन ठेलि म्रर कहाडियौ राजाजी नं म्रर राणीजी मूं-कुवर जी कारी म्रजे **रूड़ा** मामा री नही हुई। —द वि

उ०—२ म्हठर कहै म्रतर नह **रूड़ौ**, तूठ न देऊं नार। पूठ फिराय पीनमी जपै, गाधी ऊठ गिवार। —ऊ का

३ समर्थ, सक्षम।

उ०—१ राघौ **रूड़ौ** स्रीसीतावर स्वामी राजै। भागाथा मात्रा देता थोका भाजै। —र. ज प्र.

४ म्राकर्षक, मोहक

उ०—१ रव्या राम रा दोय चित्राम **रूड़ा**, चक्खा-सरव एको बियो सरव चूडा। —मे. म.

५ श्रेष्ठ कुल का, कुलीन।

उ०—१ तरै राव दूदै विचार दीठौ—जु म्रा डावडी पण कवारी छै नै म्रौ पण **रूड़ौ** रजपूत छै। तरै म्रापरी दीकरी धाऊ भेखळै नूं परणाई। —नैणसी

६ योग्य, चतुर, दक्ष।

उ०—१ ताहरा मोहिल दीठौ वाडक म्रौर नवी धरती म्राटू। तिण ऊपर माणस दोय **रूड़ा** म्रापरा मेल्हिया। —नैणसी

उ०—२ सुदेवराज लुद्रवो लेण रा दाव-घाव घडै छै। तरै पैहली तो पवारा सू मास ४ कागळवाई कीवी, काई म्रबीरी भली वस्तु व्है मु मेलै। तिण साथै म्रापरै घर माहै **रूड़ै** रा म्रादमी मेलै। —नैणसी

७ पावन, पवित्र।

उ०—१ गढ चित्तोड ना रहा, नही रहणका जोग। बसस्या **रूड़ी** द्वारका, जहा हरि भगता का भोग। —मीरा

८ स्वादिष्ट, रुचिकर।

उ०—१ स्वारिक निमजा खोपरारे लाल प्रीसता **रूड़ौ** रस। —र. ज. प्र.

उ०—२ विधवापणि पहरइ चूडी, राव रसोई राधइ **रूड़ी**। कवि गुण विजय

९ सिद्धिदायक।

उ०—१ ग्रहण वेळा गळ समा, पइसी पाणी माही। **रूड़ौ** मत्र जपइ रहइ, राहू तणी जिहा छाहि। —मा. का प्र.

१० श्रेयस्कर, उत्कृष्टतर, बहत्तर।

उ०—१ कुलटा मावी व्है ठुकराणी कूडी, पडदै पडदायत राणी मू **रूड़ौ**। —ऊ का.

११ स्वस्थ, तदुरुस्त।

उ०—१ उठै कवर गजसिघ जी नू सीतळा नीसरी। कवर जी री डील **रूड़ौ** नही नरै भाटी गोयददास मोहणदास नूं कवर जी रै ऊपर वारियो। —नैणसी

१२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ रूप **रूड़ौ** गुण वायरो रोहिडा रौ फूल।

उ०—२ लाकीलो चूडौ घणौ **रूड़ौ** चमके है, देह जाण दामण ही दमके है —र. हमीर

उ०—३ वैणाहार विराजिया, मोत्रन मे चूडी। कठसरी चपह कळी, राजै ग्रति **रूड़ी**। —गजउद्धार

उ०—पूरव देस नरेसर भणीई, ईस्वर तउ वरदान। सरिस चढ्ई निन्याण, राजा जो **रूड़ौ** दीसइ जान।

१३ जबरदस्त।

तिका वारला नू तो कठा तक दीजै दाद। पण माहिलारी री रज-

मूती हुव मूं ज्याव । जिके इण गजब नूं चाहनै पाहुणा करै । जिके पिण इसड़ा ईज होय जिको पांणी री लोट्यो रूड़ो हीज भरै ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

१४ प्यारा, प्रिय ।

उ०—१ वला विना री प्रीतड़ी, किम मुक छूडी जाय । रूड़ा राजिंद परणज्यो, जीवु ज्या लग काय । —वात रीसालू री

१५ उपयुक्त, उचित ।

उ०—१ ताहरां हीगोळै कहियो—प्रथीराजजी । आप तरवार वगसी म्हनै, सो थी । ताहरा प्रथीराजजी कहयो—रे हिंगोळा रूड़ी वेळा मांहे मांगी । —नैणसी

१६ अनोखा, अद्‌भुत, विचित्र ।

उ०—१ एक तो बडी लड़ाई जीपजै । तब रूड़ो आणंद होय छै । अर एक रूड़ो विवाह होय छै । तब रूड़ी आणद हुये छै । सु दुन्यी ही आणद एक ही दिन भेळा हुआ । —वेलि

क्रि. वि —१ बहादुरी से, वीरता से ।

उ०—१ राजि काटा लिये पधारि उतरिया । उठा हेक दोड़ करा-ड़िया सोर मारियो । ते सोलंकी 'वीरो' । रूड़ो मूयो । —द. वि

२ अच्छी तरह से, उचित प्रकार से ।

उ०—१ आप नांम इळ उपरां, रसना राघव नाम । रूड़ी विध सूं राखियो, पुरसां जिका प्रणाम । —ओ दा.

रू० भे०—रूअडउ, रूग्रडउ, रूग्रडू, रूग्रडो, रूग्रडी, रूयडो, रूयडो, रूवडो, रुवडो ।

रूठणी, रूठबी–क्रि. अ.—१ कुपित होना ।

उ० —१ भीम भार झल्लियौ, खडग झल्लै खुमाणी । किया सेन सधार आणि रूठै जमराणी । —गु रू. बं

उ०—२ सुरम कहै मन बध वळ, आतुर न हुइ अधीर । काइर हुवा न छुटि है, जब रूठो जहगीर । —गु. रू ब

२ अप्रसन्न होना ।

रूठणहार, हारो (हारी) रूठणियो—वि ।

रूठियोड़ो, रूठियोड़ी, रूठयोड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठीजणो, रूठीजबो—भाव वा० ।

रूठाड़णो, रूठाड़बो—देखो 'रूठाणो, रूठाबो'

रूठाड़णहार, हारो (हारी) रूठाड़णियो—वि० ।

रूठाड़ियोड़ो, रूठाड़ियोड़ो, रूठाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठाड़ीजणो, रूठाड़ीजबो—कर्म वा० ।

रूठाड़ियोड़ो—देखो 'रूठायोडो' (रू भे.)

रूठाणो, रूठाबो–क्रि स.—१ कुपित या नाराज करना ।

२ अप्रसन्न करना ।

रूठाणहार, हारो (हारी) रूठाणियो—वि० ।

रूठायोड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठाईजणो, रूठाईजबो—कर्म वा० ।

रूठाडणो, रूठाडबो, रूठावणो, रूठावबो—रू० भे० ।

रूठायोड़ो–भू. का कृ.—१ कुपित किया हुआ. २ अप्रसन्न किया हुआ

(स्त्री रूठायोडी)

रूठावणो, रूठावबो—देखो 'रूठाणो, रूठाबो' (रू. भे.)

रूठावणहार, हारो (हारी) रूठावणियो—वि० ।

रूठाविओड़ो, रूठावियोड़ो, रूठाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठावीजणो, रूठावीजबो—कर्म वा० ।

रूठावियोडो—देखो रूठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. रूठावियोडी)

रूठियोड़ो–भू० का० कृ०—१ कुपित हुवा हुआ. २ अप्रसन्न हुवा हुआ ।

रूठोडो–वि. [स्त्री. रूठोडी] १ नाराज अप्रसन्न हुवा हुआ. २ क्रोध किया हुआ ।

रूडीयाळ–वि.—१ बजने वाला ।

उ०—१ वाधा सुर रूडीयाळ, त्रिमंक रूडीयाल तबला, चाका अरि चडियाल, हाक भिडीयाल हमला ॥ —पना

रूडो—देखो 'रूड़ो' (रू भे)

उ०—एक परदेसी जाण छै रे काई जेह नो रूडो रूडो घाट रे ।

—वि कु.

(स्त्री रूडी)

रूढ-यौवना–स स्त्री [स आरूढयौवना] १ पूर्ण यौवन प्राप्त नायिका ।

रूढा–स स्त्री [स रूढ + टाप्] १ लक्षणा शब्द शक्ति के दो प्रमुख भेदों में से एक ।

रूढि, रूढी–स स्त्री [स रूढि] १ प्रथा, चाल, परम्परा ।

२ विचार, ३ निश्चय ।

४ साहित्य मे प्रयुक्त वह शब्द जो अपने शब्द के रूढ अर्थ का बोध कराता है ।

रूणंझण—देखो 'रणझण' (रू. भे)

उ०—रूणंझण नेवर हुवर रंभ, उठे हसि नारद होय अचंभ ।

—सू. प्र.

२ देखो 'रुणझण' (रू. भे)

रूण–स. स्त्री —१ मूल्य, भाव, कीमत ।

उ०—धन थांरो है तूं ई बोल दे, थेंई रूण मुजब कै दो। भरे राभट छोड जट्टू ! बोलै–नी भाघडौ–ई। चार रुपिया।
—बरसगाठ

२ मनोभाव सूचक चहरा, या मुह की रुख।

रुणझुण–स. पु.—१ वह रथ जिसके पहियो (चक्को) मे घुघरू लगे होते हैं। तथा चलते समय रुणझुण की ध्वनि करता है।

रू भे.—रुणजुण, रुणझुण।

२ देखो 'रणझुण' (रू. भे)

रुणझुणि—देखो 'रणझण'

उ०—१ मन करि मधुकरि रुणझुणि नीझणि रहण सुहाइ। मलयानिल क्षण माहरी थाहरी क्षण डकु वाइ। - जयसेखर सूरि

रुणावळी—देखो 'रोमावली' (रू भे.)

उ०—१ मारु कुच युग कठिन, भ्रति कचरण कळस तगार। रुणावळी विचमे वणी, खिम न दंत भ्राधार। —ढो मा.

रुणेचौ–सं. पु.—१ प्रसिद्ध मिद्ध पुरुष रामदेव तवर का निवास स्थान।

रुणौ–स. पु.—१ ऊचे स्थानो पर चढने के लिए सीढियो के सबसे ऊपर का चौथा पत्थर।

२ शतरज का एक मोहरा।

रूपंतर–वि. [स. रूप+अतर] १ रूप का बदलना, दूसरे रूप की प्राप्ति, रूपान्तरण।

उ०—जम देसतर जावही, रूपंतर बळ हत। काळतर न कळीजरणी, जेहा तू जारणत। - बा दा.

२ प्राप्त होने वाला दूसरा रूप।

रूप–स. पु. [स रूप] १ सौंदर्य, सुंदरता। (भ्र. मा.)

उ०—१ भ्रोपै रूप घणौ रायभ्रगण, चौकी मुकत करण केमर चनरण तर मजर फळमाला तोरण, सोहै द्वार मेळ भ्रत सज्जरण।
—रा रू

उ०—२ रामचद्र करसी रूडा, सगळी विध सौरग। भगतापत भूधर घणी, चाढण रूप सुचग। —ह र.

उ०—३ रूप काम भ्रारभ राम विद्या भ्ररजरण। —गु. रू. ब.

२ पदार्थ विशेष का वह बाह्य गुण या विशेषता (रग भ्रादि से भिन्न) जिससे उसकी बनावट का पता चल जाता है, पिड शरीर भ्रादि की रचना या बनावट।

३ शक्ल, सूरत।

उ०—१ सूंडाळो लाइक सूरा, रांम सरीखौ रूप। ब्रह्म सत गुरु हूत वडौ, ईसरदास भ्रनूप। —पी ग्र.

उ०—२ देखीनै तन नउ हो कीधौ पारिखौ, रूपइ परगि दिसै है, उत्तम सारिखौ। —वि. कु

४ प्रकार, भेद, भाति।

५ दृश्य पदार्थ या वस्तु।

६ प्रकृति, स्वभाव, भ्रादत।

७ शोभा। (ना मा.)

८ विशेष प्रकार की भ्राकृति से युक्त शरीर।

ज्यूं: बैं'रूपियौ।

९ शरीर, देह। (भ्र. मा.)

१० कार्य विशेष की निश्चित भ्रौर व्यवस्थित पद्धति या प्रणाली, ढग प्रकार।

११ भ्राकृति।

उ०—१ हरिणाखी कठ भ्रतरिख हूती, बिब रूप प्रगटी बहिरि। कळ मोतिया सुसरि हरि कीरति कठसरी सरसती किरि। —वेलि

१२ रचना।

उ०—१ दीह धरणा माझल दुनी रुळियौ देखे रूप। माधव हुमै प्रकास मो, सिव ताहरो स्वरूप। —ह. र

१३ शब्द या वर्ण का स्वरूप या भ्राकार।

१४ वृक्ष। (भ्र मा.)

१५ रूपा, रौप्य, चादी।

उ०—१ निवाण श्री भरत नीर, रूप कूभ हेम रा। संमत जोवन मनोज, नेह कत नेम रा। —सू. प्र

१६ तुल्यता, बराबरी।

१७ दो लघु का नाम। (पिंगल)

१८ सादृश्यता, समानता, प्रतिकृति।

उ०—१ प्रथी करण थिर वेद पुराण, करम जिका बळ हीरा कुराण। यौं जग मे रवि वस उजागर, प्रगटे रूप भूप परमेसर।
—रा. रू

१५ भ्राकार।

उ०—गोचर रूप न रग न रेख भ्रगोचर भ्रम्रत कूप भ्रलेख।
—ऊ का

२१ लक्षण, पहिचान।

उ०—वडे ठोड राठोड भ्राखिभ्रात राखी वडी, जोरवर जोध जम दाढ जमरा। सलावत दिली-पत देखतौ मझियो, भ्रयी तिण वार रा रूप 'भ्रमरा'। —गु. रू. ब

वि.—१ सुन्दर, मनोहर।

२ समान, बराबर, तुल्य।

उ०—समूदिन माप समाक्रत सूंड, दतूमळ मूसल रूप दुरड।
—मे. म.

रू. भे —रूपु, रूय, रूव।

मह.,—रूपाग।

रूपकंठीर–स. पु.—१ नृसिहावतार।

उ०—१ नमो करुणाकर रूपकंठीर, नमो वर लच्छि तणा रघुबीर। —ह र

रूपक—स. पु. [सं. रूपकम्] १ वह काव्य या ग्रन्थ जिसमे किसी महान योद्धा का चरित्र चित्रण हो।

उ०—१ अथ राजराजेस्वर महाराजाधिराज श्रीछत्रपति प्रिथिपति रघुबंससिरताज महाराज स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री अभैसिंघ जी री रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान बिजैरामोत री कहियो। —सू प्र.

उ०—२ रूपवसी राठौड़ हर, नेरह साम कमध। विमर मकत्ती बरणवां, बधे रूपक बंध। —गु रू बं

२ काव्य, कविता।

उ०—कहै 'द्वारो' धधवाड, असुर असि धकै धड़ाऊ। निमी भाट रूपकां, जिमी खग भाट बजाऊ। —सू प्र.

उ०—२ तिको पावड़ं पावडै अस्वमेध री फळ पावा। चोल तीखरी वाता काम आया पछै रूपका माहै गवावा अरु मुकत जावा ही जावा। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ डिंगळ गीत (छंद) विशेष जिसकी सख्या ८४ मानी जाती है।

उ०—१ 'रूप' कवित नरहरि छप्पै, सूरजमल के छंद। गहरी भमक 'गणेसरी', रूपक हुकमीचंद। —अज्ञात

उ०—२ मन महराण गभीर मत, गरभ्रात सुरागुर। चौरासी रूपक समझ, खट भाख बहोत्तर। —पाबूदान आसियो

४ वर्णिक वृत या मात्रिक छंद।

उ०—१ पाए एकणि रूप पणि, चवदह सहस चमाळ। मगण ज्यारि लघु दोह सुजि, रूपक नाम रसाळ —ल पि.

उ०—२ पनरह मात्रा जगण पर, एक चरण दहिनाए। चावा रूपक चौपड, भाण, लखचलि कुळ भाण। ल पि

५ कीर्ति, यश।

उ०—अविता पारब्बती, कना कमळा सावत्री। जमना गगा जिसी बह-भागा सरसत्ती। 'चद्रभाण' सधू चद्रा वदनि, चद्रावत सीसोदणी, रूपक चडावण रामपुरी, इधक रूप इद्रायणी। —गु. रू. बं

६ प्रशसात्मक कविता।

उ०—१ अट्ठारे तैयासिये, चेत मास नभ स्याम। रूपक 'बक' बणावियो, धवळ पचीसी नाम। —बा. दा

१० दृश्य काव्य, नाटक।

उ०—१ आप सबसे आगू बीजूंजळ वाहै। दईवकै धणी और तीसरा न जांणै। असे गुण अनेक कवि कहा लग बखाणै। च्यार प्रकार की जुगति सात रूपकूं के विधान। पच प्रकार को उगति प्रस्टाविधान। —सू. प्र

वि. वि —साहित्यदर्पण ने रूपक (दृश्य काव्य या नाटक) के दस भेद माने है।

८ किसी रूप की बनाई हुई मूर्ति या प्रतिकृति।

६ चादी का बना कठ में धारण करने का आभूषण विशेष।

[स. रूप्यक] १० रुपया नामक सिक्का।

१० चांदी।

११ साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालंकार जहां उपमावाचक एव निषेधसूचक शब्दो के बिना ही उपमेय का का वर्णन किया जाता हैं।

वि० वि० इसके सागरूपक, अभेद रूपक तद्रूपक आदि कई भेद हैं।

मुहा-रूपक बाधणो बढा बढा कर आलंकारिक भाषा मे वर्णन करना

१२—एक पौराणिक शिव भक्त राक्षस का नाम, जिसके पुत्र का नाम सपति था। ये दोनो अन्यायय द्वारा सपति उपार्जन कर, वह शिव उपासना मे व्यय करते थे। इस कारण मरण के बाद शिव के मानस पुत्र वीरभद्र ने इन्हे कहा अगले जन्म में तुम चोर बनोगे, किन्तु शिव भक्ति के कारण तुम्हारा उद्धार होगा।

रू भे—रूपकउ, रूपक्क, रूपग।

रूपकउ—देखो 'रूपक' (रू भे)

उ०—मारुवणी महवन्न, आदित्ताह उज्जळी। सोड भारखउ मोवन्न, जो गळि पहिरउ रूपकउ। —ढो मा.

रूपकरण—स पु—१ एक प्रकार का घोडा।

रूपकातिस्योक्ति [स रूपकातिशयोक्ति] १ वह अलकार जिसमे उपमेय के बिना ही केवल उपमान का उपमेय मे अभेद बतलाया जाय अर्थात उपमान के कथन द्वारा ही उपमेय का बोध कराया जाता है

रूपकार—स पु [स. रूपकार] शिल्पी।

उ०—गीतकार वानकर नृत्यकार पाडकार तुडिकार ध्वनिकार ''रूपकार। —व स

रूपकीस—स पु [स कीसरूप] १ हनुमान।

उ०—१ करा जोड रूपकीस, साम पाय नाम सीस। बध चाळ महावीर, कूदियौ किसीस॥ —र. रू.

रूपक्क—देखो 'रूपक' (रू भे)

उ०—२ वीस मात्र पाये विमळ, नवा अनि गुरु टेव। रंगमाळ रूपक्क रा, इग तक्क रा उवेव॥ —ल. पि.

रूपकांता—स स्त्री—१ सत्रह अक्षरो का एक वर्णवृत्त।

रूपग—देखो 'रूपक' (रू. भे) (अ मा)

उ०—१ सुकवि 'मान' 'गोकुळ' सुकवि, रूपग सुणि बहु रीध। 'गर्ज' होय सुरतर गहर, दोय भाटा लख दीध। —सू. प्र.

उ०—२ भाखा व्रज माह सुरभाखा, प्राकृत जान भर पायो रचण रूपगां पैडो, मेहाही थारी महर। —बा. दा.

उ०—३ आखरा समद थागण अथाह। रूपगां चत्र छतीस राग। —वि. स.

उ०—४ रूपग जस रघुनाथ, रट समझौ गजगत सोय। —र. ज. प्र.

रूपगजोड़ौ—सं. पु.—१ कवि

उ०—१ प्रभता समद कडां लग पूगी, ओपम भडां प्ररोडा। जगदाता पोसाक न जोजै, जोजे **रूपगजोड़ां**।
— सिवसिंह मेडतिया री गीत

रूपगरविता—स. स्त्री [स रूपगर्विता] अपने रूप का गर्व या अभिमान रखने वाली नायिका (साहित्य)

रूपग्रह—स. पु [स.] नेत्र, नयन, आंख (डि. को)

रूपघर—म. पु यौ [स. रूपगृह] १ रूपनिधान, सुंदर।

[स. रोप्यगृह] २ खजाना, कोष।

रूपचतुरदसी, रूपचवदस—स. स्त्री [स रूपचतुर्दशी] कार्तिक बदी चौदस, नरक-चतुर्दशी।

रूपजीवनी—स. स्त्री. [स. रूपजीवनी] जिसकी जीविका का आश्रय केवल रूप (सौंदर्य) ही हो, रंडी, वेश्या।

रूपटियौ—देखो 'रुपयौ' (अल्पा रू भे)

उ०—वै रै गूंझै मे भेवगियौ लाडू, वै री पगडी मे रोकडी **रूपटियौ**। —लो गी.

रूपण—म पु. [स रूपणम्] १ आलंकारिक वर्णन।

२ अन्वेषण, अनुमधान।

रूपणी—वि स्त्री.—रूप धारण करने वाली।

२ रूप की।

उ०—१ दया रूपी दिवलौ करो, मवेग **रूपणी** वाट। समगत ज्योत उजवाल ले, मिथ्या अधोरौ जाय फाट। —जयवाणी

रू. भे — रूपनी, रूपिणी।

रूपदे—स स्त्री —देखो 'रूपारेल' (रू भे.)

उ०—सुरबी दिसा घूघळी, रयण घूधळी भयकर। चिडी **रूपदे** सबद, तरल भुरजाळ सहातर। —पा प्र.

रूपधर—वि. रूप धारण करने वाला।

रू. भे —रूवधर।

रूपनाथ—स पु —पाबू राठौड के गुरु का नाम।

उ०—रूपनाथ गुरु 'पाल' रौ, सुणी यमी म्है ख्यात। —पा प्र

रूपनिधान—वि. [स. रूपनिधान] १ रूप का भण्डार।

उ०—नमौ करुणाकर **रूपनिधान**, नमौ सत्र संतत तो सुभियाण। —ह. र.

रूपफौज—स पु १ योद्धा, वीर। (डि ना. मा)

रूपमांन—वि. [स. रूपवान] १ सुंदर, खूबसूरत।

रूपमाळा—स. स्त्री.—१ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ और १० के विराम से २४ मात्रायें होती हैं।

रूपमाळा-नीसांणी—स. स्त्री —१ प्रत्येक चरण मे ३२ मात्रायें तथा १६ पर यति वाला मात्रिक छद विशेष।

वि. वि.—इसका दूसरा नाम हसगत भी है।

रूपमाळी—स. स्त्री.—६ गुरु अथवा तीन मगण का वर्णिक छंद।

रूपमिण—सं. पु [स रूपमणि] १ तारा (अ. मा)

रूपराय—स पु —१ चांदी के समान रंग का घोडा।

रूपरासिक—स. पु.—१ वह घोड़ा जिसका पिछला बाया पैर सफेद हो (शुभ) (शा हो.)

रूपरासी—वि.—सुंदर, मनोहर।

उ०—१ पिया समीप **रूपरासि**, दामि आसि पामिय। भरे प्रकास श्रीउदोत, दीपि जोति भामिय। —रा. रू.

रूपरेखा, रूपरेह—स. स्त्री [स रूपरेखा] १ किसी कार्य के सबध मे वह प्रमुख बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक होती है तथा उसके सक्षिप्त विवरण का साराश के रूप मे होता।

२ वह अकन या रेखाओ द्वारा अकित चित्र जिससे किसी पदार्थ के आकार प्रकार का स्थूल ज्ञान रेखाओ आदि के रूप मे होता है।

रूपल—म स्त्री—१ देखो 'रुपौ' (रू. भे)

उ०—१ माळ फिरै ज्यू पनडी बाजै, फिरै काळियौ डोरौ। श्रोढू पांगी भरै घडलिया, आगै हालै धोरो। **रूपल** रेत रै। —चेत मानखा

रूपवत—वि. [स रूपवत्] (स्त्री. रूपवती) १ सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत, रूपवान।

उ०—१ दोनूं ही ऐसा **रूपवंत** सो सारी पृथ्वी मे जोया न लाधै। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ नेडइ मढळि काई नारी **रूपवत** हुय राज कुमारी। —ढो. मा.

२ शरीरधारी।

रू. भे —रूवव।

रूपवती, रूपवंती—वि. स्त्री [सं. रुपवती] १ सुंदरी, सुंदर।

उ०—१ द्रूपदी बहिन नइ तदि बइठी, सिघासण बतीसी **रूपवंती** तिण कीचक दीठी। —सालि सूरि

उ०—२ उज्जैण नगर महाराज वीर विक्रमदित्य राज करै। उण रै हुजूर एक कळावत आइयौ। ती के साथ एक परम **रूपवती** स्त्री अर एक पुरुस थौ। —सिंघासण बत्तीसी

रू भे —रूववइ।

रूपव—म पु —१ मगीत मे सात मात्राओं का ताल विशेष।

रूपवन—म. पु —१ वदन (ना मा.)

रूपवांन—वि. [स. रूपवन] १ सुंदर मनोहर

रूपसिंहोत—स पु.—१ राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रूपस्री —स, स्त्री. [स रूपश्री] १ सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी

रूपहरी—वि.—१ रूपे की बनी या जिस पर रूपा चढा हुआ हो।

उ०—१ घोडा सातसौ अबलख समदा भवर, गगाजळ सजब कुम्मेद

और गुलवारी फुलवारी तयार करायी, त्यारै सुनहरी, रूपहरी मार्ग साजत साज सजाया । —अमाल बूबना री बात

रूपांग—देखो 'रूप' (मह. रू. भे.)

उ०—१ भूल न जाऊ रावळी एहो रूपांग । —गज उद्धार

रूपा देखो 'रूपावत' (रू. भे)

रूपाजीवा—सं. स्त्री. [स.] १ वेश्या, रंडी । (अ. मा)

उ०—१ निरा री एक सकार तदि, जामिप वय वन जोर । रूपाजीवा रूपरी, जिण सुणियौ आंत सोर । —व. भा.

रूपामाखी—स स्त्री. [स. रूप्यमाक्षिका] १ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो प्रायः औषधियो मे भस्म बना कर प्रयोग लिया जाता है । (अमरत)

रूपारास—स. स्त्री —१ दक्षिण दिशा और आग्नेय दिशा के मध्य की दिशा ।

उ०—१ दहवारी जाती सहर था कोस ५ छै । केवडा री नाळ सहर सूं कोण रूपारास माहे छै । —नैणसी

उ०—२ बूंदी कोस ६५ तथा ७० उगवण था कयूं ई हाती रूपारास मे । —नैणसी

रूपारेल—स. स्त्री.—१ एक प्रकार की चिडिया विशेष जिसके यात्रा के समय शकुन लिए जाते है । रू. भे —रूपडे ।

२ ग्रीष्म ऋतु मे चलने वाली तेज हवा या आधी के कारण उडने वाली गर्द । ३ वातचक्र ।

रूपालहरी—स स्त्री —१ स्त्रियों के धारण करने का आभूषण विशेष । (व म.)

रूपाळ—१ देखो 'रूपाळो' (मह. रू. भे.)

उ०—१ अच्छर घण रूपाळ किल्लोला, कोल करता । माल्है आगळ बन्न, सुभागी बोळ भरता । —मेघ

•**रूपाळो**—वि [स रूप + आलुच्] (स्त्री. रूपाळी) १ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ रूपाळो रळियामणो, धोळागिर रो भान । तर नीझरण झरकर नठै, मिम्बर मेर समान । —दुरगादत्त बारहठ

उ०— २ खिळके सोने रा चीलिग्या, बणगी बा रूपाळी पाल रूपलो किरणो कुतियौ आज, गुदळतो घण असमानी ताल —सांझ

मह. रूपाळ

रूपावत—स. पु.—राठोड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रूपिका—स. स्त्री. [स] श्वेत पुष्प का मदार का पौधा । (अमरत)

रूपिणी—स. स्त्री. [स रुक्मिणी प्रा. रुप्पिणी] १ श्री कृष्ण की पत्नी रुक्मिणी ।

उ०—१ अरे मधुसूदनु जउ हम भणइ, रूपिणि वयणु सुणेहु, अरे नेमिकुमरु, मुहु बधवु पाणिग्गहणु मनावेहु । —समधुर

उ०—२ पेखवि पहुतउ महि वमतु, अतउर लेई । बहु परि केसवु नेमि सहितु जल केलि करइ । राणिय रूपिणि पमुह, कुसुम आभरण करति, नियवर देवर देह नेह गहिलि मडति ।
—जयसिंह सूरि

२ देखो 'रूपणी' (रू. भे.)

रूपी—वि. [स.] (स्त्री. रूपणी रूपिणी) १ रूप या आकार प्रकार वाला । २ रूपधारी, सुंदर, मनोहर । ३ तुल्य, समान, सदृश ।

रूपीयौ - देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ० -अठै आय वधाईदार ओठी जागळू मेलीयौ सो जाय पोहुतौ । सारा समाचार खीवसी जी नू कह्या, सो सुण सादियाणा वजाया बामणा नू रूपीया दीया, भोजन करायौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रूपु १ देखो 'रूप' (रू. भे)

उ० -कुनादिवि नउ निविडं रूपु देखीउ चित्रामि । मोहिउ पडु नरिंदु चीति अति लीधउ कामि । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'रूपी' (रू भे.)

रूपेंद्रिय—स पु. [स] नेत्र, नयन, आख ।

रूपेटौ—स. पु [स रूप्य + रा. प्र. एटौ] चादी का बना प्याला विशेष ।

उ०—१ बीजू हम बोलतौ, जदै, घणा दिनसूं मिळतौ । कुसळायत पूछतौ, अमल रूपेटां गळतौ । —अरजुण जी बारहट

रू. भे —रूपोटौ

रूपेरण—स स्त्री.—१ वह तलवार जिसकी मूठ पर चादी की पतली तह चढी हो ।

रूपेस्वर—स पु [स रूपेश्वर] १ एक शिव लिंग ।

रूपेस्वरी—स. स्त्री —१ एक देवी का नाम ।

रूपैयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे)

उ० - करतब नह राजी क्रपण, गजी रूपैयाह । कडवौ दास कुटबिया, प्रामणडा पइयाह । —बा दा.

रूपोटौ—देखो 'रूपेटौ' (रू. भे)

उ०—१ कुंवरजी सूरज दरस देख धकन हुवै छै । वडारण कन्है खडी पुवन करै छै । उण मे कुंवरसी वडारण नू फुरमायौ जो रूपोटौ मे पाणी घाल ल्याव । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ इण भात री भाग काढ तयार कीजै छै । कसूबा नू होसनायक पवन करै छै सू रूपोटां मे लिया खवास पासेवाण हाजर करै छै । —रा. सा. सं.

रूपौ—स पु [स रूप्य] १ चादी, रजत, रूपा । (अ. मा. ना., मा. ह. ना. मा)

उ०—१ ऊची नीची सरवरिया री पाळ जठै नै ऊजळो रूपौ नीपजै । रूपौ सोहे पाबूजी धणी रै पाव, रूंआळा पीडा में रूपौ

हद सोहे। —पाबू रायवळ

उ०—२ बीजो द्रस्टांत। कि तार कहता रूपौ हुइ। किना इह तारा छै। —वेलि टी.

२ हंस।

३ श्वेत वर्ण का अश्व।

रू भे.—रूपल।

४ देखो 'रूप' (रू. भे.)

उ०—उग्रसेन-राय कन्याका, रे राजमती बहु रूपौ। सील गुणे करो सोभती रे, चतुराई बहु चूंपौ। —जयवांणी

रूबकार-स. पु. [फा] १ अदालत मे उपस्थित होने का आज्ञा पत्र। आदेश-पत्र।

२ सामने उपस्थित होने की क्रिया या भाव।

रूबकारी-सं स्त्री. [फा.] १ मुकद्दमे की पेशी या कार्यवाही।

२ किसी के सामने उपस्थित होने की क्रिया या भाव।

रूबरू-क्रि. वि. [फा.] १ प्रत्यक्ष, सामने, सम्मुख।

उ०—१ अरु मालम करवाया पातसाहजी रै रूबरू द्वारासाह नू हाजर कियौ। जाणियौ राजी हुमी। —द. दा.

रूम-स. पु. [फा] १ एक देश का नाम।

[अ.] २ कमरा, कक्ष। ३ देखो 'रोम' (रू. भे)

उ०—अवर ही इगरी गुणारी एक एक बात रूम रूम जीभ हुवै नै जपै दिन रात। —र. रू.

रूमा-स स्त्री.—नमक की खान।

रूमाल-स पु [फा] हाथ मुह आदि पोछने के काम आने वाला कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसकी किनारें मिली होती हैं। हाथ मे या जेब मे रखा जाता है।

उ०—१ ढाल खवै ढळकती, मूठ तरवार ग्रहौ कर। कर दूजै रूमाल धके काळमी डोर धर। —पा. प्र

उ०—२ झेली सुंदर गोरी घोडे री लगाम, आसू तौ पुछिया हरिये रूमाल सू। —लो. गी.

२ पायजामे की मियानी।

रूमाली-स. स्त्री —१ एक प्रकार का छोटा रूमाल। २ लंगोट।

रूमी-स. स्त्री.—१ एक प्रकार की छुरी। (जो रोम की बनी होती है।)

उ०—छुरघा सू छूणीजै छै सू छुरी किण भातरी छै। पेमकवज चकचकी रूमी विलायती म्याना माहा काढजै छै। —खीची गगेव नींबावत रौ दो-पहरौ

स. पु.—२ घोड़ा (डिं. को)

३ रोम देश का घोड़ा।

उ०—हुरम्मजि केची मुकराणी मधार हरेवी खुरमाणी। आरब्बी रूमी उजबक्का, समहदी सभर कदक्का। —गु. रू. ब.

४ रोम देश का निवासी, व्यक्ति।

उ०—बडे उजबकी रीद्र रूमी फिरगी। बडे मुगळ पट्ठांण सैईद संगी। —गु. रू. ब.

रूमीखुरी-स. पु —एक प्रकार की तलवार।

रूय—देखो 'रूप' (रू. भे)

उ०—जन्ह नरिदह केरी धूय, गगा नामि रइ मम रूय ऊठइ नरवइ सामुहीय। —सालिभद्र सूरि

रूयड़ो—देखो 'रूडौ' (रू. भे)

उ०—१ रहणी रूयड़ो घ्यांन रे। (धरम पत्र)

उ०—२ नेमी परणेवा चालिया, म्हारी सहियर रूयड़ी जादव जान हे छप्पन कोडी यादव मिल्या म्हा प्रति घणा आदर मांन हे। —स. कु.

उ०—३ इन्द्राणी गायइ गीत हे, बाजा वाजइ प्रति घणा म्हा. रूयड़ी सगळी रीत हे। —स. कु.

(स्त्री रूयडी)

रूयडु, रूयडौ—देखो 'रूडौ' (रू भे.)

उ०—१ नाभि-विवर प्रति रूयडु, उपरि त्रिणि प्रवाह। मुनिवर माघ प्रयाग माहा, जे नाहिइ ते नाहि। —मा. का प्र.

उ०—२ धनवतरि तुझ थि रूयडौ, विरूइ टली विकधी। सग था तइ सरजिउ सनि, सुरत करति समाधि। —मा. का. प्र.

रूळ-स. पु [अ] १ लकीर खीचने का डडा। २ उक्त डडे के सहारे से कागज पर खीची गई सीधी लकीर या रेखा। ३ कायदा, नियम

४ देखो 'रीळ' (रू भे.)

रूळणौ, रूळबौ—देखो 'रुळणौ, रुळबौ' (रू. भे)

उ०—लक्ष्मी तणउ भाग्य, अग्नि देवता नौ वान, रुपिणि उणउ सम्यान, कठ नवसरहार रूळतइ, जिम दीठी चित्त मांहि पइठी, इसि बाला। —व. स.

रूळवार-वि.—१ जिस पर लकीरे खीची हुई हो।

रूळियोड़ौ—देखो 'रुळियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. रूळियोडी)

रूळीयारौ जोड-वि —१ भटकने वाले को आश्रय देने वाला, बिछुड़े हुए को मिलाने वाला।

उ०—लाखां री जोडाउ रूळीयारौ-जोड राका री माळवौ अघणिया री धणी। —वीरमदे सोनगरा री बात

रूळौ-स पु—१ छोटा वातचक्र, बगूला।

२ कमर व पैरो के विकृत हो जाने से ठीक न चलने वाला व्यक्ति।

रूव—देखो 'रूप' (रू. भे)

उ०—जइ पडिहमि 'पाम' जिणिद वसि, नाणवत निम्मल रयण। न मुवणुहरू वाण न रूव नहि न रूय पियु हुइ हइमयण। —कविपल्ह

रूवड़उ, रूवड़ौ, रूवडउ, रूवडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ सवनी रूप में रूवड़ी कोट कोमीसा धन न पार । देवर छइ रूवड़ प्रोहित जोवइ पौली पगार । —बी. दे
उ०—२ कुमरी रूपै रूवडीये घर अमरा बैठी । दीठी राजा बेलतिय तिण बिना पैठी । —बृ स्त्र
(स्त्री. रूवड़ी, रूवडी)

रूवव—१ देखो 'रूपवन' (रू भे) (जैन)

रूववर—१ देखो 'रूपवर' (रू भे) (जैन)

रूववइ—१ देखो 'रूपवती' (रू भे) (जैन)

रूस-स पु.—१ एशिया के उत्तर में फैला हुआ देश ।
उ०—मिनखा घणा न मान, मान रहे हेकण मना । जीतौ जुध जापान, रूस तणौ बळ रांजिया । —फतैकरण उज्वळ
२ देखो 'रूस' (रू. भे.)

रूसणौ देखो 'रिसाणौ' (रू भे)
उ०—१ 'सूर' इन री ज मांसकर, जिनौ ज आट लूण । घड़ी घड़ी रै रूसणौ, तूझ मनामी कूण । —अज्ञात
उ०—२ जोबन गयो स भलो हुइ, मिर री टळी बलाय । जर्गा जर्गा री रूसणौ, श्री दुख सह्यो न जाय । —अज्ञात
उ०—३ माया री बात सुणा मेटजी नै निराम मिळपो । बानै नौ काम मे दोनै ज्यू दीमतौ हो के निक्कमीजी नै दूजी ठोड प्रावहेला नी । तद श्रेक दिन माम श्री रूसणो सरू करयौ । —फुलवाड़ी

रूसणौ रूसबौ—देखो 'रीसणौ रीसबौ, (रू भे)
उ०—चेली चोला म मन मोळा मे, रोळा मे रुउदा है । पकवान एकमै रळपट रूमै फरगट सूम फेकदा है । —ऊ. का.
रूसणहार, हारौ (हारी) रूसणियौ वि० ।
रूसिग्रोड़ौ रूसियोड़ौ रूस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रूसीजणौ रूसीजबौ—भाव वा० ।

रूसी-वि—रूस देश का ।
स. पु—१ रूस देश का निवासी । (व्यक्ति)
२ रूस देश की भाषा ।

रूह-स. स्त्री. [अ] १ आत्मा ।
उ० १ जीये तेल तिलन्न मै, जीये गंध फुलन्न । जीये माखन क्षीर मे, इंये रब्ब रूहन्न । —दादूवाणी
उ०—२ इये रब्ब रूहन्न, मे जीये रूह रगन्न । जीये जेरी सूर मे, ठढौ चद बसन्न । —दादूवाणी
२ प्राणवायु ।
३ कई बार का खीचा हुआ अरक ।
४ कई बार का बहुत अधिक फूलो से बनाया हुआ इत्र ।
५ एक प्रकार की मछली विशेष ।

रूहराळ देखो 'रुधिर' (रू. भे.)
उ०—करमाळ फुणाळ मणाळ कळी । रूहराळ हुई कर पाल ळी । —पा. प्र.

रूहाड़—देखो 'रुहाड' (रू भे)
उ०—१ जे खाविंद निगठ आबरू सू राखिया, पेट काठा बधाया मारवाड़ री रूहाड़ मिट गई, तिणमै इण माहेलौ कोई रहे नही । —अमरसिंह गजसिंहोत री वात

रूहि—१ देखो 'रुधिर' (रू. भे)

रूहिचाळ—स. पु—१ एक प्रकार का घोडा ।
रू भे—रूहीचाळ ।

रूहिर—देखो 'रुधिर' (रू भे.)

रूही—देखो 'रुधिर' (रू भे)

रूहीचाळ देखो 'रूहिचाळ' (रू भे) (ना डि को)

रेंगणौ, रेंगबौ—देखो 'रेंगणौ, रेंगबौ' (रू भे.)
रेंगणहार, हारौ (हारी), रेंगणियौ—वि० ।
रेंगिग्रोड़ौ, रेंगियोड़ौ, रेंग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रेंगीजणौ, रेंगीजबौ—भाव वा० ।

रेंण—देखो 'रमण' (रू भे)

रेंणकी—देखो 'रेणकी' (रू भे)

रेंणु देखो 'रेणु' (रू भे)

रें-रें-स स्त्री.—१ बिना मन के लडके (छोटे बच्चे) का धीरे धीरे रुदन ।
२ बकझक ।

रेंवत—देखो 'रेवत' (रू भे)
उ०—रेंवत चढनै रामड़ा आवै आलमड़ा । —पी ग्र

रेंवतिया—देखो 'रावत्रिया' (रू भे.)

रेंवती—देखो 'रेवती' (रू भे)

रेंहबर-वि—अधीन मातहत ।
उ०—मन मल मिव पुरी, फौज घेर धासोहर । जैत हत्थ कळि मत्थ, साथि भाटी रिण घोघर । कटि इम पडिगी रै (रा), धणी श्रद्वार मिन्दर । लाया पाड रकेब, कीध मछरीक रेंहबर । राठौड कूअर पकमर रवद, कवरा (भ) समवड करै । जमदाढ छोड विजजै लई, कना राड अरबद्द रै । —गु. रू ब.

रे-स पु—१ निकृष्ट या नीच कार्य ।
२ मुख ।
३ खेट कार्ट ।
४ नभ ।
५ काग, कौआ । (एका)
अव्य—सम्बोधनात्मक अव्यय, अरे !
उ०—१ रे ! मठ पछी जा परौ, पिणघट घाटै ऊठ । कोई नार चलावसी, भर जोबन की मूठ । —अज्ञात
उ०—२ बीजळिया चहना वहाल, आभइ आभइ कोडि । कद रे

मिळउळी सज्जनां, कम कंचूकी छोडि । —डो. मा.

उ०—३ बळि बध समरथि रथ ले बैसारी, म्यांमा कर साहै सुकरि । बाहर रे बाहर कोई छै वर । हरि हरिणाक्षी जाइ हरि ।

—वेलि

रू. भे.—रइ, रि ।

रेकारौ—देखो 'रैंकारौ' (रू. भे.)

उ०—१ तगा, तगाई मत करै, बोले मूंह सभाळ । नाहर अर रजपूतनै, रेकारै री गाळ । —अज्ञात

उ०—२ कोई स्वभावै रेकारौ वहै, चटकी तुरत चढत । क्रोध विरोध बधारू केतला, श्रावै किम भव अंत । —ध. व. ग्र.

रेख—स स्त्री. [स. रेखा] १ लकीर, रेखा ।

उ०— १ छकी हीरा मदन छकि, वरण बुध सदन वीसेख । चद बदन मुळकण दमक, रदन तडत की रेख ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ मावण श्रावण कह गया, करग्या कौल अनेक । गिणता गिणता घिस गई, आगळिया री रेख । —अज्ञात

२ मनुष्य की हथेली या पैरो के तलवे मे बने हुए टेढे मेढे अथवा सीधे प्राकृतिक चिन्ह जो मनुष्य के भावी जीवन के शुभ और अशुभ फल बताने मे सहायक होते हैं ।

उ०—अमोल तोल मोल कै अचोल चोळ अग्व के, अडोळ डोल कध रा रमाल छत्ति मुत्थरै, रहै पदग्ग रेख तै मु देख नै अरी डरै ।

—ऊ का.

३ मूल्य, कीमत ।

उ०—तद सत्रुसाळ कही—महाराज माफ करो, मोनू हुकम दीजै । इतरी सुणत सुवा आप बाग उठाई सो वेराणी समसेर नाम घोडो सवारी मे थौ, बडी रेख रो बडौ घोडो थौ ।

—महाराजा पदमसिंहजी री बात

४ आय, आमदनी ।

उ०—१ सीघल वाघौ वीदा रौ वीदौ सूजा रौ. सूजो सीहा रौ, सीहौ भांडा रौ गाव कवलां । १,५००) रेख । —ब. दा. ख्यात

उ०—२ सीधल सावलदास मानसीहावत रो । १०,०००) रेख ।

—बा. दा. ख्यात

उ०—३ संवत १७१४ उजेणी री वेढ पूरै लोहै पडियौ पै'ले उपाडियौ । पछै स्रीजी घणो श्रादर कर पटौ रू० ८०००) रेख लवेरो घणा गावासू । भोपाळ वधारै दी । —नैणसी

५ राजस्थान के जागीरदारो से जागीर की निश्चित आय पर लिया जाने वाला कर विशेष ।

वि० वि०—इस कर का रिवाज सर्व प्रथम अकबर बादशाह के समय चला था । इसलिए मारवाड राज्यान्तर्गत यह कर सर्व प्रथम सवाई राजा शूरसिंहजी के समय चला । उन दिनो जागीरदारो को मारवाड़ नरेशो के साथ. बादशाही कार्यों हेतु मारवाड से बाहर युद्धो मे भाग लेना पडता था । इसी लिए उनसे 'चाकरी'' (सेवा) के अलावा किसी प्रकार का अन्य कर नही लिया जाता था । राजपूत सरदारो को जागीरें देने का मुख्य प्रयोजन यही था कि वे महाराज की तरफ से युद्ध मे भाग लेकर शत्रु को दण्ड देने में सहायक हों । किन्तु विजयसिंहजी के समय मारवाड का सम्बन्ध मुगल बादशाहत से टूट गया और ठीक इसी समय मरहटो का उपद्रव उठ खड़ा हुआ, उस समय इस नवीन उपद्रव को दबाने हेतु जोधपुर दरबार को रुपयो की आवश्यकता प्रतीत हुई । इस लिए महाराजा श्री विजयसिंहजी ने वि. स. १८१२ मे जागीरदारो पर बाहर युद्धो में भाग लेने के बदले प्राप्त आमदनी पर प्रति हजार तीन सौ रुपयो के हिसाब से 'मतालबा' नामक कर लगाया गया । यह कर कई बार लगाया गया मगर इसकी दर डेढ सौ से कम आवश्यकतानुसार घटती बढती रहती थी । और डेढ सौ से कम और पांच सौ से अधिक कभी नही लिया गया था ।

महाराजा भीमसिंहजी के समय कर प्रतिहजार तीन सौ रुपयों के हिसाब से दो बार वसूल किया गया था ।

महाराजा मानसिंहजी के समय जयपुर की चढाई के पश्चात अमीरखा को रुपये देने हेतु प्रतिहजार तीन सौ रुपये के हिसाब से लगाए गये । यही कर 'रेख' के रूप मे वि. स. १८६४ से राज्य के विशेष खर्च हेतु हर पाचवे वर्ष प्रति हजार दो सौ से तीन सौ रुपये तक जागीरदारी से लेना एक नियम सा बना दिया गया था ।

वि. स १८६६ मे पोलिटिकल एजेंट की सलाह से प्रति वर्ष प्रतिहजार की जागीर पर अस्सी रुपये रेख स्वरूप लेना निश्चित किया गया । किन्तु एक दो वर्ष बाद जागीरदारो ने देना बन्द कर दिया ।

वि स. १६०१ मे महाराजा तखतसिंहजी के समय मूहता लक्ष्मीचन्द ने 'रेख' कर वसूल करने का प्रबन्ध किया । किन्तु इसमे सफलता नही हुई । अन्त मे वि. स १६०६ में पचोली धनरूप ने जो उस समय 'फौजदारी अदालत' का हाकिम था, महाराजा की आज्ञानुसार जागीरदारों से प्रति हजार अस्सी रुपये प्रति वर्ष रेख स्वरूप देने का दस्तावेज लिखवा लिया । जिस पर पोकरण, आउवा, आसोप, नीबाज, रीया और कुचामन के सरदारो ने दस्तखत किये ।

यद्यपि रेख- कर मुत्सद्दियो व खवास पासवानों आदि से भी लिया जाता था मगर उसकी शरह (दर) भिन्न थी ।

६ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान ।

उ०—स्रीजीया यवन ल्यै जीजीया खूटिवै, खेचला बीजीया रैत राखी । प्राग जोधाण रै पाजीया पीजीया, रेख 'दुरगदास राठौड़' राखी । —ध. व. ग्र.

७ सौन्दर्य अथवा नेत्र हितार्थ नेत्र में बनाई गई काजल की रेखा या लकीर।

उ०—काजळ गिरि धार रेख काजळ करि, कटि मेखला पयोधि कटि। भामोली बिंदुली कु कूं में, प्रथिमी दीध निल्याट पटी।

—वेलि

उ०—२ बीजळियां चहळावहळि, आभइ आभइ अेक। कदी मिळ् सण साहिबा, कर काजळ री रेख। —अज्ञात

८ आकार, आकृति, सूरत।

उ०—१ निरालब निरलेप, जगत गुरु अंतरजामी। रूप रेख बिण रांम, नाम जिण रो धणनामी। —मे म.

उ०—२ गोचर रूप न रग न रेख, अगोचर अमृत कूप अलेख। थिरा नभ थावर जगम थान, महा पद आपद मान अमान।

—ऊ. का.

९ सीमा, हद।

उ०—इतरै जाटां रो राज तोड़ कवरजी वीकैजी, वा काधळजी वडो राज बीकानेर रो बाधियो। सरब रेख हजार तीन गावा मे फेरी। —द दा

१० भाग्य, प्रारब्ध।

यौ—करमरेख।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतै भाळ भ्रमै भयलोक सोड़ मत्य भद्ररेखा सार भ्रंक रजपत्ती। —रा. रू

११ देखो—'रेखा' (रू. भे.)

रू. भे.—रेह, रेहा

रेखग—स. पु.—सिर, मस्तक।

उ०—"सूर" तणी सुरसरी तणौ सर, मानव विहडिया वजावै मार। रण रेखग मेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार

—किसनो आढो

रेखड़ी—देखो—'रेख' (अल्पा रू. भे.)

उ०—काळी रे काळी काजळियै री रेखड़ी हा जी रे काळोडी कांठळ मे चमके बीजळी। —लो. गी.

रेखतो—स. पु. [फा. रेख्त.] एक प्रकार की कविता या छन्द रचना जो खुसरो द्वारा प्रचलित की गई है।

वि. वि—इसमे फारसी और भारतीय छन्द शास्त्रो की अनेक बातो (ताल, लय आदि) का समिश्रण होता था।

रेखळो—देखो 'रेकळो' (रू. भे.)

उ०—१ कमांण रो आडो हाथ मूं पकड उठाय ऊंची आम्ही साम्ही फेर देख उहीज वखत रेखळै में मेल्ह दीन्ही।

—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ लामै मूडा की रे हकाई तोप दिल्ली रै बादस्या, ओछै पला री रे जुजुरबा रेखळा। —लो गी

रेखांकन—स पु. [स. रेखा+अंकन] चित्र बनाते समय चित्र की रूप-रेखा बनाने हेतु रेखाएं अंकित करना।

रेखांकित—वि [स. रेखा+अंकित] १ जो रेखाओ से बना हुआ हो।

२ रेखांकन किया हुआ हो।

रेखांस—स पु. [स रेखा+अंश] १ देशान्तर (भूगोल का)।

२ याम्योत्तर वृत्त का कोई अंश, द्राधिमांश।

रेखा—स. स्त्री [सं] १ लबा और पतला बनाया हुआ या आप ही आप बना हुआ चिन्ह, लकीर।

२ किसी ठोस पदार्थ के तल पर बनाया हुआ लकीरनुमा चिन्ह।

३ वह कल्पित लकीर जो प्रारम्भ मे भारतीय ज्योतिषी अक्षास सूचित करने के लिए सुमेरु पर्वत से उज्जयिनी होती हुई लका तक खीची हुई मानते थे।

वि वि—देखो 'रेखाभूमि'।

४ गिनती, शुमार।

५ देखो रेख' (रू. भे)

रू भे.—रेहा।

रेखागणित—स स्त्री. [स] ज्यामिति।

रेखाभूमि—सं. स्त्री—प्राचीन समय मे अक्षास स्थिर करने के लिए सुमेरु पर्वत से उज्जयिनी होती हुई लका तक गई हुई रेखा के आस पास पड़ने वाला प्रदेश या भूमि।

रेखी—स स्त्री.—रामदेवजी के अनन्य भक्त भाभी (रिखिया) जाति की स्त्री।

उ०—बारठ भरोसै बैसिसे काडम हदै कोटि। रेखी बैठी राज सा, रागी करिसै रोट। —पी. ग्र.

रेग—स स्त्री [फा] बालुका, रेत,।

रेगर—सं पु—१ चमड़ा रगने का कार्य करने वाली एक अनुसूचित जाति या इस जाति का व्यक्ति विशेष। (मा म.)

उ०—१ गधि गयो गढ़ रेगर के गल, बध गयौ गढ़बंध बिगारयौ। पीनसकाय के पास कपूर, धरयौ कवि ऊमर तौ हिय हारयौ।

—ऊ का.

उ०—२ रंगीलो चग बाजणू म्हारै वीरैजी मढायो चग बाजणू। म्हारो रेगर मडकै लायो अे, रगीलो चंग बाजणू। —लो. गी.

वि वि—१ देखो—'जटियो' (२) ये कही चंग आदि मढने का कार्य भी करते है। रू. भे रैगर

रेगिसतान—देखो—'रेगिस्तान' (रू. भे.)

रेगिसतानी—देखो—'रेगिस्तानी' (रू भे.)

रेगिसथान—देखो—'रेगिस्तान' (रू भे)

रेगिसथानी—देखो 'रेगिस्तानी' (रू. भे)

रेगिस्तान—स पु [स रेगिस्तान] १ मरुस्थल, मरुभूमि, रेगिस्तानी इलाका।

रू भे रेगिसतान, रेगिसथान, रेगिस्थान।

रेगिस्तानी - वि. [फा. रेगिस्तानी] १ रेगिस्तान का, रेगिस्तान से सम्बन्धित । रू भे. रेगिस्यांनी

रेगिस्यांन—देखो—'रेगिस्तांन' (रू. भे)

रेगिस्यांनी—देखो—'रेगिस्तानी' (रू. भे)

रेड़णौ, रेड़बौ–क्रि स.—१ बहाना, टपकाना ।

उ०—इम सिखामण देई करी, रांणी कुटुंब कबीला केड़ै रै । वीर वादी पाछा वळया, मोहै आल्या आसू रेड़ै रै । —जयवाणी

२ गिराना, डालना, उडेलना ।

उ०—ताहरा मालदै दीठौ । सू प्यालौ सयणी मालदै नूं दियौ । ताहरा मालदै प्यालौ लियौ सयणी रै वास्तै । ताहरा मूछं लायौ बीजौ वागै माहै रेडियौ । —सयणी री बात

३ भगाना ।

उ०—१ छके जोम सू जाय जमराण सा छेडिया, लडै अरि रेडिया मेघ लागा । भिडे भाराथ अणपार दळ भाजिया, वीर भागौ नहीं सारवागा । —र रू

उ०—२ डाक काळ रूपी डाच उवेडै कटार डढ्ढा, भीमनाद भेडै रेडै गयदा गभीर । आहेडै तेडै पेडै वीर देवीसिंघ वाळा, केडै लाग तुंडी छेडै डाखियौ कठीर । —गीत कवर दौलतसिंघ हाडा रौ

४ नगाडा आदि बाजा बजाना ।

उ०—वागै नकीवा अताळी हाक हरोळा जलेब वधै, उरोळा उछाह मडै करोळा अथाह । कौह हाका खेडै लोग रेडै बब जोस काथै, सा-रदूळा रोस माथै छेडै रामसाह । —सूरजमल मीसण

५ मवेशी के दल को अगाडी हाकना, चलाना ।

रेड़णहार, हारौ (हारी), रेड़णियौ—वि० ।

रेड़िग्रोड़ौ, रेड़ियोड़ौ, रेड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेड़ीजणौ, रेड़ीजबौ—कर्म० वा० ।

रेडणौ रेडबौ—रू० भे० ।

रेड़ाणौ रेड़ाबौ–प्रे रू.—१ बहवाना, टपकवाना ।

२ भगवाना ।

३ गिरवाना, डलवाना, उड़ेलवाना ।

४ नगाड़ा आदि बजवाना ।

५ मेवेशियो के समूह को अगाडी हकवाना, चलवाना ।

रेड़ाणहार, हारौ (हारी), रेड़ाणियौ—वि० ।

रेड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेड़ावीजणौ, रेड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

रेडाणौ, रेडाबौ, रेडावणौ, रेडावबौ, रेडावणौ, रेडावबौ—रू० भे० ।

रेड़ायोड़ौ–भू. का. कृ.—बहाया हुआ, टपकाया हुआ. २ भगाया हुआ. ३ गिरवाया हुआ, डलवाया हुआ. ४ नगाडा आदि वाद्य बजावा हुआ. ५ मवेशियों के झुण्ड को हकाया हुआ. (स्त्री. रेड़ायोड़ी)

रेडाणौ, रेडाबौ, रेडावणौ, रेडावबौ—रू. भे. ।

रेड़ावणौ, रेड़ावबौ—देखो 'रेड़ाणौ, रेडाबौ' (रू. भे)

रेड़ावणहार, हारौ (हारी), रेड़ावणियौ—वि० ।

रेड़ाविग्रोड़ौ, रेड़ावियोड़ौ, रेड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेड़ावीजणौ, रेड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

रेड़ावियोड़ौ—देखो 'रेडायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री रेडावियोड़ी)

रेड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बहाया हुआ. टपकाया हुआ. २ गिराया हुआ, डाला हुआ. ३ भगाया हुआ ४ नगाडादि वाद्य बजाया हुआ. हाका हुआ, आगे चलाया हुआ. (मवेशी दल) (स्त्री रेडियोडी)

रेडियौ—देखो 'रेडियो' (रू भे.)

रेडूंबौ, रेडूबौ–स. पु.—१ खराब आकृति वाला. विकृत हिंदवानी, मतीरा ।

रेचक–वि [स.] १ दस्तावर, दस्त लाने वाला ।

२ फेफडो को साफ या स्वच्छ करने वाला ।

सं पु [स रेचक] १ सास को विधिपूर्वक बाहर निकालने की प्राणायाम की तीसरी क्रिया ।

उ०—१ निज आठ जोग अभ्याल अहनिस, सधै सुरधर जुगम रवि सस । करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम । —र. ज. प्र.

उ०—२ रेचक करै तारणं कुंभक ठाणै, पूरक आणै फिर पाया । काया नै कस्टै काम न द्रस्टै, सजक चस्टै सील सती । —पा. प्र.

२ जमाल गोटा ।

३ विरेचन औषधि विशेष ।

४ चचल चित्त को एकाग्र या वश में करने वाला ध्यान ।

उ०—नाभि कमल थी पवन निसारया, रेचक ध्यान चपळ मन मारया । घट भीतर किया घट आकारा,नाभि पवन कुंभक आकारा । —स. कु

रेचन–स. पु [स. रेचनम्] १ मलस्थली साफ करने की क्रिया या भाव

२ मल, विष्टा ।

३ दस्त लाने की औषधि ।

४ श्वास बाहर निकालने की क्रिया ।

रेच्य–स. पु. [स.] १ प्राणायाम मे बाहर निकालने की वायु ।

२ जुलाब ।

रेजकी, रेजगारी, रेजगी–स. स्त्री. [फा. रेजगारी, रेजगी] १ रुपये के मूल्य मे मिलने वाले छोटे २ सिक्कों का समूह ।

२ छोटे सिक्के ।

३ चांदी, सोना के तार के छोटे २ टुकड़े ।

रेगमाल—सं. पु. [फा. रेगमाल] एक प्रकार का कांच के बुरादे से लपेटा खुरदरा कागज जो लकड़ी आदि का खुरदरापन मिटाने में काम आता है।

रेजलो—सं. पु.—थकान, थकावट ।

उ०—तद जलाल बादशाह नूं आरोगण सारू माजूम लायौ श्रौर अरज करी, मामूजी, थोडा सूं खेद हुवौ छै माजुम आरोगो जो खेद रो रेजलो दूर होवै । —जलाल बूबना री बात

रेजीडेंट—सं. पु. [अ.] वह राजकीय अधिकारी जो ब्रिटिश शासनकाल में देसी राज्यों में वहां के शासन आदि पर दृष्टि रखने के लिए अमात्य के रूप में रखा जाता था । वामामात्य ।

रू भे—रजीडट ।

रेजीमेंट—सं. स्त्री. [अ.] सेना का एक भाग, रिजमिट ।

रेजो—सं. पु [फा. रेज'] १ बहुमूल्य कपड़े का थान या खंड ।

२ हाथ के कते देशी सूत का बना मोटा कपडा

उ०—गुठा जीमता गटक, अब नहिं भावै वानैं । राब रोगता रटक जरै नह सीरो ज्या नै । पुळता नगै पाय, मोल वड बूंट मंगावैं । पट रेजा पहरता, अतलसा दाय न आवैं । धनाथी भाग आया अठै, आतम जाणी आपसी । कमध केई लोह कंचन किया, पारस भूप 'प्रतापसी' । —जुगतीदानजी देथी

३ सुनारों का लोहे का आयताकार बना सांचा विशेष जिसमें गले हुए सोने व चांदी को डाल कर छड़ के आकार का बनाते हैं ।

४ वेश्या वृति कराने के उद्देश्य से कुटनी द्वारा पाली पोषी लड़की।

रेट—सं. स्त्री [अ.] १ भाव, दर ।

२ गति, चाल ।

३ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ..... पटणी पटपाटू पचवरण छीट नीलवटा कथटा धोत वटा मुहिवटा, नाटी दोटी धगी कठपीठ पाघडी, बीडी रेट चूनडी पातलसाडी । —व. स

रेटणो, रेटबो—क्रि स—१ धारण करना, पहनना।

उ०—फाली भली ओढणि अंग रेटइ आवी रही जू तुरणी त्रिभटइ । हू हेलो देता पडी जि भेटइ, जाणउ विदेसी मुझ कत भेटइ । —प्राचीन फागु-संग्रह

२ मिटाना, रद्द करना।

उ०—लाग बाग रेट कीन्ही, लूट काहु की न लीन्ही । भागी बुद्धी भीनी, भूती धन्य जस धारी तू । —ऊ. का.

३ आज्ञा, नियम प्रथा रीति आदि का पालन न करते हुए विरोध करना ।

रेटणहार, हारो (हारी), रेटणियौ—वि० ।

रेटिग्रोड़ो, रेटियोड़ो, रेट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रेटीजणो, रेटीजबो—कर्म वा० ।

रेटाड़णो, रेटाड़बो—देखो 'रेटाणो, रेटाबो' (रू. भे.)

रेटाणो, रेटाबो—प्रे रू—१ धारण कराना, पहनाना ।

२ मिटाना, रद्द कराना ।

३ आज्ञा, नियम, प्रथा, रीति आदि का अतिक्रमण कराना ।

रेटाणहार, हारो, (हारी), रेटाणियौ—वि० ।

रेटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

रेटीजणो, रेटीजबो—कर्म वा० ।

रेटाड़णो, रेटाड़बो, रेटावणो रेटावबो—रू० भे० ।

रेटावणो, रेटावबो—१ देखो 'रेटाणो, रेटाबो' (रू. भे)

रेटावणहार, हारो (हारी), रेटावणियौ—वि० ।

रेटाविग्रोड़ो, रेटावियोड़ो, रेटाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रेटावीजणो, रेटावीजबो—कर्म वा० ।

रेटियोडो—भू का कृ—१ धारण किया हुआ २ मिटाया हुआ, रद्द किया हुआ ३ उल्लघन या अतिक्रमण किया हुआ. (स्त्री रेटियोडी)

रेटो—सं पु-१ पराजित करने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ भूल लिया थट जानिया, हथलेवे खेटो । सावो अधरत साझियो भारत मे भेटो । झाफा भरे कवलियो, रूका बळ रेटो । —वी मा.

रेडणो, रेडबो देखो रेड़णो, रेड़बो' (रू भे.)

उ०—१ तद डोकरी बोली—बेटा धणी परो उजडतो देखि चाकर न कहै, सु चाकर काहि रो ? सु तो हरामखोर । धणी रो पाणी ईटजै तठै आपरो लोही रेडबो। अर आ बात जिम छै तिम मालम करो। —वरसे तिलोकसी री वात

रेडाणो, रेडाबो—देखो रेड़ाणो, रेड़ाबो' (रू भे)

उ०—१ तद राजा कही, 'मोनू तो तिस लागी हुती, सो ऊपर सु पाणी रा टिबका पडता हुता, सो मैं नीचे कटोरो माडियो हुतो, सो तुने ही वगीया रेडायो तद मैं मारीयो ।

—वात बूढी ठग राजा री

रेडो—वि—१ ठिगना, छोटे कद का ।

२ देखो—रेढो (रू भे.)

रेढ—सं. स्त्री.—१ जिद, हठ ।

उ०—सिरदे दार मदार मिर हक खेड हुवदे । मक न माने जीदरी नह रेढ खमदे । —पा. प्र.

रेढो—सं. पु—१ सूअर का बच्चा ।

उ०—भूडण पूरा लोहा छिक रही छै। बडो रेढो पाछो फिरियो । अेक घडी ताई मारी फौज थाभ राखी । —डाढाळी सूर

रू. भे—रेडो

रेण—देखो—रयण' (रू. भे) (ह. ना मा)

उ०—१ नरव्वीर रेण भई भात केण । सुणि सेख तत्थ कहे ताम

कथ्य। —र. ज. प्र.

उ०—२ चित वडपरण सुभ चितवरण, बजर लीक मम वैण। गाढ स्यामध्रम धरण गह, रहण 'पतो' दिन रेण। —जैतदान बारहठ

उ०—३ ग्रहल्या पद रेण उधरी, कियो निरभै कीर। विभीखणकूं लंक बगसी, साथ राखण सीर। —भगतमाळ

उ०—४ दुनियां वरदायक सेव सिहायक, रैण किसो नृप राम सौ जी। —र. ज प्र.

रेणका—देखो 'रेणुका' (डि. को)

उ०—१ लगरी राव रूका रटक लेणका, भलो 'भगजीत' ऊमराव भीमेण का, बजाई नारद तणी बैणका रजाइ पलंग रस लूंद रग रेणका। —महादान मेंहडू

उ०—२ विभाडी रेणका बडौ कीधौ बिधन, जमदगिनि तणौ परमेस माडै जिगिन। —पी प्र

रेणकी—देखो 'रेणकी' (रू. भे)

रेणदार—सं. पु. [फा. रेहनदार] १ वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रक्खी हो।

रेणनामौ—स. पु. [फा.] रेहन की शर्तें लिखा हुआ कागज।

रेणबिल—स. पु. [फा.] गिरवी, बधक, रेहन।

रेणब—स. पु. [स. रेणवह] चारणो का एक पर्यायवाची शब्द।

उ०—पडगना रेणवां तणां इम पाळजै, सीर सभाळजै बडा सेवी। साद सापू तणां घणा सभाळिया, दाखजै नाथ भी मदत देवी। —गीत करणीजी रो

२ कवि, काव्यकार। (अ. मा)

उ०—मत्त सतावन स्रव गाथा मह, कळा तीस पूरबा अरध कह। बीस सात कळ उतर अरध विच, रेणव प्रेम छद गाथौ रच। —र. ज. प्र

रू. भे.—रेणू।

रेणवा—स. पु.—झाला वश की एक शाखा।

रेणां, रेणा—देखो 'रेणुका' (रू. भे.)

उ०—श्री ग्रलाह ग्रणथाह, नियौ जम रेणां जायौ। देजा सरिसि घर दियण, ग्रसख जिगि करवा ग्रायौ। —पी. प्र

२ देखो 'रैणा' (रू. भे.)

उ०—१ खत्री बस बार किता ते खेस, रेणा ले दीधी विप्रा रेस। —ह. र.

उ०—२ मिळि ग्रब माख प्रसाख रसमय, ग्रमिति मजुर ग्रजुरै। रसहीन ग्रनि तर सरब रेणा, सीत छळ क्रनि सचरै। —रा. रू.

रेणावे—देखो 'राणदे'

उ०—१ घोळो जी घोळौ कांड करो महेल्या गे घोळा गागी रेणावे रा दात। —लो गी

रेणायर—स. पु. [सं. रत्नघर] १ समुद्र। (ह ना मा.)

रेणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ बांम तणै वासतै, रांम मथियौ रेणायर। इईतां रा तिण दिवस, बहुत मन मोहै बायर। —पी. ग्रं.

रेणाविळमी—स स्त्री.—१ सेना, फौज। (ग्र. मा., नां. मा.)

रेणि, रेणी—देखो 'रेणु' (रू. भे.)

उ०—वाजीय ग्रवक गुहिर निसांण दिणय री रेणि हि छाइउ ए। पहुतउ जांणीउ पडु नरिंदु द्रुपदु पहूचए सामहो ए। —सालिभद्र सूरी

उ०—२ सफ तेरह धुर फेर दस, जांणौ निम्रेणी। रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रेणी। —र. ज. प्र.

रेणु—स. पु. [स. रेणुः] १ एक इक्ष्वाकु वशीय राजा, जिसके दूसरे नाम प्रसेनजित, प्रसेन एवं सुवेणु भी थे इसकी पुत्री का नाम रेणुका भी था जो परशुराम की माता तथा जमदग्नि ऋषि की पत्नी थी।

स. स्त्री.—२ बालुरेत, धूल, रज।

३ पृथ्वी, भूमि। (डि. को.)

रू भे.—रेणू, रैण।

रेणुका—स. स्त्री. [स.] इक्ष्वाकुवशीय रेणु (प्रसेनजित्) राजा की पुत्री, जमदग्नि महर्षि की पत्नी तथा परशुराम की माता थी।

उ०—देवी रेणुका रूप मे राम जाया। देवी रांम रै रूप खत्री खपाया। —देवि.

वि० वि०—कालिका पुराण मे इसे विदर्भ राजा प्रसेनजित की कन्या कहा गया है। महाभारत के अनुसार इसका जन्म कमल से हुआ एव इसके पिता तथा भाई का नाम क्रमश सोमप एवं रेणु था। सोमप राजा के द्वारा इसका पालन-पोषण होने के कारण सभवतः उसे इसका पिता कहा गया होगा। रेणुका पुराण के अनुसार रेणु राजा ने कन्या-कामेष्ठि यज्ञ किया। यज्ञ कुण्ड से इसकी उत्पत्ति हुई थी।

इसका स्वयवर भागीरथी क्षेत्र में हुआ, जहा पर जमदग्नि ऋषि ने इसका वरण किया। इसके पाणिग्रहण के समय इन्द्र ने कामधेनु, कल्पतरु, चिंतामणि एव पारस ग्रादि विभिन्न अमूल्य पदार्थ भेंट किये। एक बार जमदग्नि बाणक्षेपण का कार्य कर रहे थे। उस समय बाण वापिस लाने का कार्य इसे सौंपा गया था। एक दिन बाण लाने मे इसे कुछ विलम्ब हो गया जिस कारण क्रुध होकर जमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम को इसका शिर छेदन के लिए कहा। परशुराम ने पिता की ग्राज्ञा अनुसार इसका वध किया एव तत्पश्चात जमदग्नि से ग्राग्रह कर इसे पुनर्जीवित कराया।

मतातर से यही कथा इस प्रकार भी मिलती है। एक बार राजा चित्ररथ को स्त्री के संग क्रीडा करते देख इसके मनमें कुछ विकार उत्पन्न हुआ जिससे क्रुध हो जमदग्नि ने परशुराम द्वारा

इसका वध करवा दिया। तत्पश्चात परशुराम ने जमदग्नि से ही इसे पुनर्जीवित करा दिया।

कहते हैं कि यह कमल से उत्पन्न अयोनिजा थी। प्रसेनजित इसके पोषक पिता थे। कहीं कहीं इसके पिता का नाम रेणु महर्षि भी लिखा मिलता है।

२ पृथ्वी। (डिं को.)

३ बालू, रेत।

४ रज, धूलि।

स. पु.—५ सह्याद्रि पर्वत का एक तीर्थ स्थान।

रू. भे.—रेणका, रेणां, रेणा, रैणका।

रेणूं, रेणू—१ देखो 'रेणु' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—रेणू रवि मडळ रसमी रथ रोकी। तन मन प्रज कापन ढापत त्रयलोकी। —ऊ. का.

२ देखो 'रेणव' (रू. भे.)

उ०—प्रसपतिया उतबग सू, ऊबा अंतर उतार। राणी दीधा रेणुग्रां 'मानौ' जग-साधार। —बा. दा.

रेत—स स्त्री --१ धूल, रज। (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ० - जाग्या सोई जांगियै, हरिया हरि के हेत। हरि बेमुख म जागिया, ता मुख पड़सी रेत। —अनुभववाणी

२ पथी, भूमि।

उ०—हरिया मामी मतमुखी, माया माही हेत। बयुईक गाड रेत मे, और बीयाजू देत। —अनुभववाणी

रू भे.—रेती, रैत, रैति, रैती।

अल्पा.—रेतड़ली।

मह.—रेतरडौ, रेतूड, रेतूडौ, रेतोडौ, रेतौ।

३ देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ रड पोखा रा राजमें, रूळगी भूखा रेत। सूका नित सीरा करै, दंड न चूका देत॥ —ऊ का.

४ देखो 'रेतस' (रू भे.)

५ देखो 'रेती' (रू. भे)

रेतकुंड—स. पु. [स रेत. कुड] १ एक नरक का नाम, रेत कुल्या।

२ कुमायू के पास का एक तीर्थ स्थान।

रेतड़ली—देखो 'रेत' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—म्हारी आंखडल्या री तारी दुलारी प्यारौ है मुरधर देस सोनै रै डूगर ज्यूं चमके रेतडली रा ढेर। —लो गी

रेतणौ, रेतबौ—क्रि. स.—१ रेती नामक औजार से किसी पदार्थ के खुरदरे तल को रगड कर काटना।

२ किसी पैनी धार वाली चीज से रगड कर किसी चीज को काटना।

क्रि. अ.—३ घोडे का वीर्य पात होना या स्खलन होना।

४ ऊंट का कोमल भूमि पर बैठकर रेत मे सहलाने से वीर्यपात होना जिसमें वह अशक्त हो जाता है।

५ रेत या भूमि पर बैठे बैठे पेशाब करने से ऊंट की मूत्रेन्द्रिय पर शोथ आना, ऊंट का मूत्रेन्द्रिय से पीड़ित होना।

रेतणहार, हारौ (हारी), रेतणियौ - वि०।

रेतिप्रोड़ौ, रेतियोड़ौ, रेत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेतीजणौ, रेतीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

रेतरडौ देखो - 'रेत' (मह. रू. भे)

रेतस—स. पु [स रेतस्] वीर्य, शुक्र (डिं. को)

रू भे —रेत।

रेतियोड़ौ—भू.का कृ --१ पदार्थ विशेष का रेती नामक औजार से खुरदरापन मिटाया हुआ. २ पैनी धार वाले औजार से रगड कर कोई पदार्थ काटा हुआ ३ स्खलन हुवा हुआ (घोड़ा)। ४ कोमल भूमि पर बैठ कर सहलाने से स्खलन हुवा हुआ (ऊट) ५ रेत या भूमि पर बैठे बैठे पेशाब करने से मूत्रेन्द्रिय रोग से पीडित हुवा हुआ। (ऊट)

रेती—स स्त्री —१ एक प्रकार का दानेदार औजार विशेष जिस से रगड कर पदार्थो का तल चिकना किया जाता है।

२ नदी के बीचोबीच टापू की वह जमीन जो जल के प्रवाह के घटने पर या मद पडने पर ऊपर निकल आती है। नदी का टापू।

उ०—१ नदी माहे पग पैसि अर पोल्या किया। नदी माहे पगं पैसि अर रेती पधारिया। अोथि रमण लागा। —द वि.

रेतीलौ—वि. (स्त्री रेतीली) १ ऐसा स्थान जहा पर रेत अधिक हो।

२ वह जिसमे बालू या रेत अधिक हो।

रेतूड, रेतूडौ देखो रेत' (मह रू भे.)

उ० ढोला जी करहलौ थाक्यौ रे भेक्यौ रे रेतुडं रे माय। काढचौ डावा पग रौ ताकळौ, काढ़ पुगो छिन रे माय। —लो.गी.

रेतोड़ौ, रेतौ - देखो —'रेत' (मह. रू. भे)

उ०—म्हानी सी एक टोपसी, माहे घाल्यौ सर्पतौ। जतन पणा कर राखजो, नही तो पडेला रेतौ। —भि द्र.

रेपळ—स स्त्री १ आवड देवी की एक बहिन का नाम।

उ०—महा अदभूत जचै उपमाए जसोमति पूत नचै फण जाए। गजै दळ रेपळ लाग महल्ल, मारै बोहो मीर अमीर मुगल्ल। —मे म.

रू भे. रेफली

रेफ—स पु [स रेफ] १ र अक्षर का वह रूप जो अन्य अक्षर के र पूर्व आने पर उसके ऊपर रहता है।

२ 'र' अक्षर।

३ ध्वनि विशेष।

रेफळी - देखो—'रेपळ' (रू भे.)

रेवाब—देखो 'रबाब' (रू भे)

उ०—साह तौ डेरै थौ अर ए भरोखे नीचे मोलगण लागो तठे राजा अर रांणी पोढीया छै। तद इहा गावते रेबाब री तार तोड नाखी। —ठाकुरे साह री बात

रेबारी—देखो 'रैंबारी' (रू भे.)

उ०—१ **रेबारी** काबर ने बारी रे, गूजर दरजिया ने बाजारी। कीरतन्या गांम करासी रे, हुभ्रौ कीर कुजरो वासी। —जयवाणी

(स्त्री. रेबारण)

रेयण—१ देखो 'रयण' (रू. भे)

उ०—ग्रमे दळाय पांणी मक्षि दळा, कादम गहणं। दळ पुडि उडि **रेयण** कौतुहळ कोडि त्रियासा। —गु रू. ब.

२ देखो 'रजनी' (रू भे)

रेयांण—स पु—१ मुसलमान।

उ०—१ संभर समत डडे डिडवाणौ, भटनर पडे भगाणा। राणा तुझ भये **रेयांणा**, थर हरिया सह थाणा

—महाराणा कूभा री गीत

२ देखो 'रैयाण' (रू. भे.)

रेर—स. स्त्री—१ राम शब्द की ध्वनि।

उ०—राम राम रसणा रटे, बामर वेर अवेर। अटक्या पछै न आवसी, राम तणी मुख रेर। —ह र.

रेरुग्रौ, रेरवौ—स. पु—बडा उल्लू पक्षी।

रेळ—स पु—प्रात. काल का गायन, गायन।

उ०—कूर उनाळं हुरिया पता, चिडकोल्या चग चग करै। कुरदमिया कुत्ता विल्ला, चढ रेळ रग रळ भग करै। —दमदेव

रेल—स स्त्री. [ग्र] भाप व डीजल तेल से लोह की पटरी पर चलने वाली गाडी, रेलगाडी।

उ०—नही तार नहिं टेम है, नही बत्ती मे तेल। ग्रा चालै मनरे मतै, मारवाड री रेल। —ग्रग्यात

२ बहाव, धारा।

३ ऐसा खेत जिसमे वर्षा के पानी का भराव होता हो ग्रौर बिना सिंचाई के गेहूँ, चनों की फसल भी होती हो।

उ०—सीवांणा था कोस ६ उत्तर दिसी। कुंभार बसै रैबारी रजपूत, बसै। पाही खडै छै। ऊनाळी करै तितरी हुवै रेल माहे सेवज घणा हुवै। —नैणसी

४ वर्षा के पानी का बहाव विशेष जिसमे भूमि मे पानी समान रूप से फैल जाता है तथा भर जाता है जिससे उस भूमि में बिना सिंचाई के गेहूँ व चनो की फसल होती है।

उ०—१ जैतारण था कोस १। ग्राथण मांहे। जाट नै बामण बसै। धरती हलवा ३० खेत काठा मटियाळा। ऊनाली ग्ररट १० ढीबडा २ हुवै। पहली ग्रागेवा बाळी रेल ग्रावती। चिणा हुवै। —नैणसी

उ०—२ तळाव मास ४ पाणी। कोहर १ सामरी मीठौ। रेल ग्रागेवा वाळी ग्रावै। —नैणसी

उ०—३ रेल जैतारण वाळी ग्राथण माहे बहै। ग्रसल खालसा री गांव पातु गुजर रौ बसायौ। —नैणसी

५ ग्राधिक्य, भरमार।

उ०—कर कठ- खग कठ, कदणरौ, खेलै बाळक खेल। भाभी भाळी भजसी, रण ग्रो विषण रेल। —रेंवतसिंह भाटी

रेलगाडी—देखो 'रेल' (१)

रेलचोळा—स. स्त्री.—१ रतिक्रीडा का ग्रानद।

२ सभोग के कारण नवोढा की योनि से रक्त निकलने की क्रिया का भाव।

रेल ठेल—देखो 'रेलपेल'

रेलणो रेलबो—क्रि. ग्र.—१ जल प्रवाह का पृथ्वी पर फैल जाना।

२ भूमि का वर्षा जल के प्रवाह से युक्त होना।

उ०—१ जल वूठा थल **रेलिया**, वसधा नीलै वेस। मांगो सीख्या म्यारजी. देख्या मुरधर देस। —दरजी मयाराम री बात

उ०—२ डूंगर पाणी ग्रावै तिरा ता खेत ३० **रेलीजै**। सेवज गेहूँ हुवै। —नैणसी

उ० ३ खेत निपट सखरा भुगीयाणा वाळौ वाहळौ दातल री सीम मे रेलीजै। तठै सेवज गेहू १५० मण तथा २०० री ठौड। —नैणसी

३ जल प्रवाह का गतिमान होना या बहना

उ०—जिन प्रतिमा निश्चय परगह, मरस सुधारस रेलि। चिंतामणि सुर तरु सभी, ग्रथवा मोहन वेलि। —वि. कु.

४ भीगोना।

उ०—१ ढब न देय पग ढसकणी, खित बेकळ खिसकाय। रेल रेल निज रगत हूंत, जोधा पग्ग जमाय। —रेवतसिंह भाटी

५ वर्षा का भूमि को जल मे भीगोना, तरबतर करना।

उ०—ग्ररहट कूप तमाम, ऊमर लग न हुवे इति। जळहर एकी जाम, रेलै सब जग राजिया। —किरपाराम

६ देना, ग्रर्पण करना।

उ०—'गहाणी' 'जला' 'क्रन' भोज माधव गणा, सुपाता रेल द्रब हलाई सलता। भामणा हू लेऊ कहे सह जग भना, चहीला दान रा कीया चलता। —माधोसिंह उदावत री गीत

७ तीव्र जलप्रवाह का ग्रपने साथ बहा ले जाना।

८ चलना, बहना।

उ०—ग्रावीया ग्रलजड घणइ, ग्रालस मांहइ गंग। रेलि ग्राविउ रक घरि, मद-मातउ मातग। —मा. का. प्र

९ नष्ट होना, मिट जाना।

उ०—कु० खूट खरड भगडइ, कु० बाट पडइ, कु० भूमि सडइ

कु० रेलिजाइ कु० वागउन्न आइ। —व. स

रेलणहार, हारौ (हारी), रेलणियौ—वि०।

रेलियोड़ौ, रेलियोड़ो, रेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेलीजणौ, रेलीजबौ—कर्म वा०। भाव वा०।

रेलत—स स्त्री. [ग्र. रिहलत] मृत्यु।

उ०—१ हमीदा री **रेलत** नागोर मे हुई। सब हमीदद्दीन नागोरी री **रेलत** दिल्ली मे हुई। अवन कहे सातूं हमीदा री रेलत नागोर मे हुती तो नागोर सुरद मक्को हाय जातो।

—बा दा. ख्यात

रेलपेल, रेलपेल—१ भीडभाड, धक्कमधक्का।

२ भरमार, अधिकता।

रू भे.—रेळापेळ।

रेलवे—स स्त्री - १ रेल का विभाग, या महकमा।

२ रेल की बिछी हुई पटरिया जिन पर रेल गाडी चलती है।

रेळापेळी—देखो 'रेळपेळ' (रू. भे.)

उ०—पतर पुराऊ थारो पग सू, रग री **रेळापेळि** —पदम भगत

रेलियोड़ौ—भू. का कृ.—१ पृथ्वी पर फैला हुआ जल प्रवाह. २ वर्षा जल के प्रवाह से युक्त हुवा हुआ। ३ जल प्रवाह गतिमान हुवा हुआ. ४ भीगोया हुआ. ५ वर्षा द्वारा तरबतर किया हुआ. ६ दिया हुआ, अर्पण किया हुआ ७ तीव जल प्रवाह का अपने साथ बहाया हुआ ८ चला हुवा, बहा हुआ. ९ नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री रेलियोडी)

रेळी—स स्त्री.—१ शीतल वायु प्रवाह।

२ बारीक धूलि की तह, कण।

उ०—पैसठ हाथ री पर्छ **रेळी** रै कारण बेरो खुदणो दूभर व्हैंगो।

- फुलवाडी

३ गेहूँ के पौधों की जडो मे होने वाला एक प्रकार का रोग।

रेलि—धारा, प्रवाह।

उ०—पसरी अग इग्यार नी महेली हे मुभ मन मग्न वेलि मीठू नह रमइ करी सहेली हे अनुभव रमती रेलि। - त्रि उ.

रेलो—स. पु —१ जल या किसी तरल पदार्थ का बहाव या प्रवाह।

उ०—१ गुरु वाणी सगगउ मोहोगउ, सामा मोहण वेलो जी। साभलता मद्दनद सुख सपजड, जाणि अभी रस रेलो जी।

- [illegible]

उ०—२ और सकल उपाय, कर थाकी भूडी न कर। जग सह नाख्या जाय, रेला की ज्य राजिया। —[illegible]

२ तबला बजाने का एक ढग विशेष जिसमे तुरत विशेष प्रकार के मधुर और हलके बोल बजाये जाते है।

३ भीड, जमघट।

रेवत—स. पु —अश्व के रूप उत्पन्न हुवे हुए एक सूर्य के पुत्र का नाम।

वि० वि०—यह सज्ञा (छाया) नामक सूर्य की पत्नी के उदर मे उत्पन्न हुआ। इसके अश्व के रूप मे उत्पन्न होने का कारण था कि सूर्य-पत्नी सज्ञा वडवा (घोडी) का रूप धारण किये हुए थी। यह शनिश्चर का भाई था। इसे गुह्यको का आधिपत्य मिला। मतान्तर मे इसे अश्वो का आधिपत्य मिला था। राजा लोग तोरण प्रान्त मे प्रतिमा या घट मे सूर्य पूजा की विधि के अनुसार इसकी पूजा भी करे, ऐसा कालिका पुराण मे लिखा मिलता है।

२ घोडा, अश्व। (डि को)

रू भे —रइवत, रेवत, रैवत, रैवत।

रेव—स स्त्री [स रव] १ दर्दभरी आवाज, चीख।

२ गिडगिडाने का शब्द।

उ०—रग भाजै कर रेव, जीवण कज केना जिके। दीवौ सिर जगदेव, महि जस रावण मानिया। —रायसिंह सादू

३ शर्याति वशीय एक राजा का नाम।

रेवड़—स. पु. भेडो व बकरियो का दल या झुण्ड।

उ०—१ जमनाजी के बायै डावै, रेवड चरतो जाय। नजर पडी करणो मीणे की, जद ये बोल्यी आय। —डूगजी री ख्यावली

उ०—२ ग्वाळा रे ग्वाळा भाई, रेवड़ थारो हळवै हाक। लाड-लिया जवाई री पिचरग पचो मेह भरै। —लो गी

अल्पा —रेवडियौ।

रेवड़ा—स स्त्री — बडी और मोटी रेवडी।

रेवड़ियौ—देखो 'रेवड' (अल्पा, रू भे)

उ०—हाथ मसरण गेडिया जबूरा मिल रेवडियो नराबाने जाय बार्ड री नीरो बाग मे। —लो. गी.

रेवड़ी—स स्त्री — पगी हुई चीनी या गुड की एक प्रकार की टिकिया जिस पर सफेद तिल चिपकाए जाते है।

रेवट—स पु [प रेवट] १ दक्षिणावर्त शख।

२ शूकर, सूग्रर।

रेवत—स पु [स] १ शर्याति वशीय रेव राजा का नाम जो रोहिणी पुत्र बलराम के श्वसुर तथा रेवती के पिता थे।

वि वि —ये कुशस्थली (द्वारका) के राजा थे।

२ एक राजा का नाम जो वायु पुराण के अनुसार कपोत रोमन राजा का पुत्र था।

३ एकादश रुद्रो मे से एक।

४ देखो 'रैवत' (रू भे.)

रेवतचीणी—स स्त्री —एक प्रकार का छोटा क्षुप जिसका कद या जड औषध प्रयोग मे लिया जाता है। (अमरत)

रेवति, रेवती—स स्त्री [स रेवती] १ रैवत मनु की माता का नाम।

२ राजा रेवत की पुत्री तथा बलरामजी की पत्नी जिसमे बलराम के निशठ और उल्मुक नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

वि. वि.—राजा रेवत अपनी पुत्री के लिए सर्व गुण सम्पन्न योग्य वर की खोज मे अपनी पुत्री को साथ लेकर ब्रह्म लोक गये। उस समय वहा पर गीत और नृत्य होने के कारण राजा रेवत को दो एक क्षण वहा रुकना पडा । राजा रेवत का निवेदन सुन कर ब्रह्मा ने कहा कि आपको यहा रहते हुए सत्ताईस चतुर्युग व्यतीत हो गये हैं । अब द्वापुर युग मे भगवान का अशावतार बलराम द्वारका मे रहते हैं । इस नारीरत्न को उन पुरुष श्रेष्ठ बलरामजी को दीजिये । ब्रह्मा को वदना कर अपनी सुकुमारी पुत्री का पाणिग्रहण बलराम के साथ कर दिया । बलराम की मृत्यु होने पर रेवती भी उनके साथ चिता मे अग्नि प्रवेश कर सती हुई थी।

३ महर्षि भरद्वाज की बहन जो अत्यन्त कुरूप थी और भरद्वाज ने अपने कठ नामक शिष्य को विवाह मे दी थी । यह गोदावरी मे स्नान कर के रूपवती हो गई । जहा पर स्नान करके इसने सौन्दर्य प्राप्त किया था वह स्थान रेवती नामक तीर्थ हो गया

४ अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रो के अन्तर्गत अन्तिम नक्षत्र । इसका अधिष्ठाता पूषा नामक सूर्य है ।

५ एक मातृका का नाम ।

६ एक बालग्रह विशेष जो बच्चो को दुख देता है ।

रू. भे.—रेवत्ति

रेवतीभव—स. पु. [स.] शनिश्चर । (डि. को.)

रेवतीरमण, रेवतीरवण—सं. पु. [स रेवतीरमण] रेवती से रमण करने वाले, श्री बलराम का एक नाम ।

रू. भे.—रैवतीरमण, रैवतीरवण

रेवर—स पु—पवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रेवल—स. पु.—दीवार की सतह की समानता बताने वाला एक लकडी का औजार जिसके बीच मे पारा भरा रहता है ।

रेवाण—देखो—'रेयाण' (रू भे)

रेवा—स. स्त्री [स] नर्मदा नदी का एक नाम ।

उ०—लीयै तसु अग वास रस लोभी, रेवा जळि क्रन सीच रति । दखिणानिळ आवतौ उत्तर दिसि, सापराध पति जिम सरति ।
—वेलि

वि. वि.—इस नदी मे शिव लिगो की उत्पत्ति होती है जिन्हे नर्मदेश्वर कहते है ।

रू. भे.—रैवा

रेवाउत्तन—स पु—हाथी, गज । (डि को)

रेवाकंकर—स. पु—नर्मदा या रेवा नदी मे से निकलने वाले शिव की मूर्ति की तरह के पत्थर ।

उ०—नर्मदा रौ अनेक देस धारा-क्षेत्र है जठै वाणनाथ सिव नीसरै है, रेवाकंकर । —बां दा. ख्यात

रेवाडी—देखो—'रैवाडी' (रू. भे.)

उ०—प्रति ऊचा आवास,पुजइ सइ ग्राम, वसइ जहा पड़ित इइ स्रेणि मडित,जहा भोगी करइ रेवाडी, इसी विसाल वाडी ।
—सभा.

रेवाडीएकादसी—देखो—'रैवाडी एकादसी (रू. भे)

रेवाड़ौ—स पु.—भेडो व बकरियों के रखने का स्थान ।

रेवानद, रेवानदी—सं स्त्री.—नर्मदा नदी ।

रू. भे—रैवाणनद, रैवानद, रैवानदी ।

रेवाळ—१ देखो—'रहवाळ' (रू. भे.)

२ देखो—'रैवाळ' (रू. भे.)

रेवास, रेवासौ—देखो—'रहवास' (रू भे.)

रेस—स स्त्री. [सं. ऋश या रिप] १ पराजय, हार ।

उ०—मेळ थयौ सेवै मुहै. 'रैणा' देता रेस । अर सिळियौ दिन ऊजळै, क्यो निकळै 'महेस' । —रा रू.

उ०—२ मढियौ जुध मेडतै, रिण अरियां दे रेस । तन भळहळी नरवारिया, मुडियौ नही 'महेस' । —महेसदास कूपावत री दूहौ

उ०—३ ज्वार 'रंग' दीधी जग, रिपुवा इण विध रेस । रैणव अौ उनरज रयौ, सुण जुध वात 'महेस' ।
—दूगजी जवारजी री दूहौ

२ नाश, सहार ।

उ० १ नर रुघनाथ तणौ 'मुरतस' रिमा सग भाज करै घण रेस । —सू. प्र.

उ०—२ अगसमल्या मेटै असुराणी, रावण कुभ आद खळ रेस । निडर किया सुर नर नाणा नै, आचा तौ भासी अवधेस । —र. रू

३ सजा, दण्ड ।

उ०—रूठ असी दे रेस, ऊठ महाभड ऊठ अव । कूट गहै छै केस, दूठ विक्रोदर देख रे । —रामनाथ कवियो

४ दबाकर, दबाव ।

उ०—देस उगाहै रेस दै, आवै पेस दरब्ब । मार लियौ खग माल-पुर, आसुर पकड कुतुब्ब । —रा रू.

५ शल्य, कसक ।

उ०—जग विलग्गौ जग्गना,दगळ हुंत अचाग । अगरेजा आराधि-या, धूहड दूहू जौधाण । 'धूहड' दूहू जोधाण, 'सुमेर' सुरेस सौ । सूपह महापित साथ, रिमा उर रेस सौ । समहर हरख सवाय, बुलाय बहादरा । ऊभळिया आराण, तररै चढ तरा ।
—किसोरदान बारहठ

६ क्षति, हानि ।

उ०—'वाघ' सुजाव कमध वरदायक रैणव वरण न देवै रेस ।

आमी कमध कलपतर जेही, नामी नवा समापण नेम ।
—बाघसिंह चादावत रो गीत

७ भय आतंक ।

८ जिसके बिना कार्य की उत्पत्ति न हो सके, हेतु, कारण ।

उ०—मेहां बूठां धन बहळ, थळ ताढा जळ रेस । करसण पाका कण खिरा, तद कउ वळण करेस । —ढो मा.

९ निर्धनता, कगाली, दारिद्रय ।

उ०—'बीरम' हरी वसू वड दाता, रेणव वरण मिटावण रेस । नवसहसौ अघपत नेठबियो, बस महसै बर मेवा देस ।
—राव लूणकरण रो गीत

१० चाह, इच्छा ।

उ०—१ परिसदा सुण पाछी गई, वलिया फरसणलि नरेस । गज कुमार बैरागियौ, लागी धरम नी रेस —जयवाणी

उ० - २ धरम करौ भविण प्राणिया, दे सतगुरु उपदेस । साधु श्रावक व्रत आदरौ, राखौ दया नी रेस । —जयवाणी

११ रहस्य, तात्विक ज्ञान ।

उ० —जीवा चेतौ रे कल्यो अनतौ काल, आद अनाद रो प्राणियौ, जीवा चेतो रे । जीवा चेतो रे रह्यो अग्यानी बाल, ममकित रेस न जाणियो, जीवा चेतो रे । —जयवाणी

[सं.] १२ जाति ।

१३ घुडदौड ।

वि.- किंचित, जरा ।

क्रि. वि लिए ।

रू. भे.—रेसि,

मह,—रेसौ

रेसकोरस, रेसकोस–स पु [अं रेसकोर्स] १ धावन पथ ।

२ अश्वधावन भूमि, घुडदौड का मैदान ।

उ० - रात दिवस के रेसकोस मे, बाजी लाव बणावै । जाकी पार कोई हुय जावै, बेनिग पोस्ट बतावै । --ऊ. का

रेसण–वि —१ मारने वाला, सहार करने वाला ।

उ० —१ तारण जग दसरथ तणा, रेसण दैत सरीखा रांमण । बहनामी खाटण विरद, थिर करि लक बभीखण थापण ।
—पि. प्र

२ पराजित करने वाला, पराजय देने वाला ।

रेसणौ, रेसबौ–क्रि स.—१ पराजित करना, हराना ।

उ०—१ अलीमन सूर रौ बस कीधौ अमल, रेस टीपू विजै नवट रुडिया । लाट जनरल जरनैळ करनेळ लख, जाट रै किसै जम-जाळ जुडिया ।
—कविराजा बाकीदास

उ०—२ विधासद रेसइ राकस बंस, कीयौ दह कथ कीयौ तै कस । — पी. प्र.

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ फरसिराम आउध ग्रहियौ फरसु अधिक रेसिया खत्री लागौ अरसु । —पि. प्र.

उ०—२ कडा जेम मुजडा सजै धडा त्रिवधी किया, लिया सुर थाण जोधाण लाजा । रेसवा त्रिपुर जैसिंघ ऊपर रचै, रूप महेस बखतेस राजा । —कीरतदान बारहठ

३ मिटाना, नाश करना ।

उ०—किसन किसन कहि किसन, हुस वड पाप हरै सै । किसन किसन कहि किसन, किसन कल्याण करै सै । किसन कहता किसन, देवळ दरसण देसै । किसन किसन क्रिपाळ, राम पातिग नै रेसै ।
—पी. प्र.

रेसणहार, हारौ (हारी), रेसणियौ—वि० ।

रेसिग्रोड़ो, रेसियोड़ौ, रेस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेसीजणौ, रेसीजबौ कर्म वा० ।

रेसम–स. पु [फा रेशम] १ एक प्रकार का बारीक, चमकीला, चिकना और मुलायम दृढ ततु या रेशा विशेष जिससे कपडे बुने जाते है ।

उ०—१ रेसम री जाल कवळा केस । गुलाबी नख । —फुलवाडी

वि वि.—यह ततु या रेशा विशेष प्रकार के कीडो के कोश पर के रोग्रो मे तैयार होता है । रेशम के कीडे पल्लू कहे जाते हैं और कई प्रकार के होते हैं जैसे—विलायती, मदरासी या कनाडी, चीनी, अराकानी आसामी इत्यादि । चीनी, बूलू और बडे पिल्लू का रेशम अत्युत्तम होता है । ये कीडे तितली की जाति के होते है । इनके कई काया कल्प होते है । अडा फूट जाने पर ये बडे पिल्लू के आकार के होते और रेगते है । इस अवस्था मे ये पत्तिया बहुत खाते है । शहतूत की पत्ती इन को बहुत प्रिय और रुचिकर होती है । इसे वे बडे चाव मे खाते हैं । ये पिल्लू बढ कर कोश बनाकर उसके भीतर हो जाते है । इस समय ये कोया कहलाते है । कोश के भीतर ही यह कीडा व ततु निकलता है जिसे रेशम कहते है । कोश के भीतर रहने का समय जब पूरा हो जाता है तब कीडा रेसम को काटता हुआ निकल कर उड जाता है परन्तु कीडो को पालने वाले इतने दक्ष होते हैं कि कोयो को गर्म पानी मे डाल कर मार डालते हैं और तत्पश्चात ऊपर का रेशम उतार कर ले लेते हैं ।

२ उपर्युक्त रेशम के बने वस्त्र डोरा, रस्सी आदि ।

उ०—१ गाजै घण सुण गावणी, प्याला भर मद पाव । झूले रेसम रग झड, झोटा देर झुलाव । —बां. दा.

उ०—२ क्रत सोभत रेसम लूब करै, घुरवा किर फूलिय सभ्र धरै । —रा. रू.

उ०—३ आमे पामे लाला जडाई बिच मे रेसम रा फूदा म्हारौ गोर बद लूबाळो । —लो. गी.

पर्याय—कोसय, कोसा, पाट ।

३ तलवार, खड्ग (ना. डिं. को.)

रेसमियौ—सं. पु.—१ रोगियों की रुग्णावस्था मे बाजरी के आटे का आंच पर पका कर दिया जाने वाला पेय पदार्थ ।

२ एक प्रकार का घोडा विशेष ।

३ शीत कालीन तीक्ष्ण वायु ।

वि.—१ रेशम का, रेशम सबंधी ।

२ देखो 'रेसम' (अल्पा, रू भे.)

उ०—होटडला मूमल रा रेसमिया रै तार ज्यूं। हो जी रे दांतडला उजळ दती रा दाडम बीज ज्यूं । —लो गी.

रेसमी—वि. [फा. रेशम+रा. प्र. ई.] १ रेशम का बना हुआ.

उ०—धोळा कडप सू काळा कराया अर ओपता रेसमी कपडा सिलाया । —दसदोख

२ रेसम के समान चिकना या मुलायम (सूत, डोरा आदि)

उ०—खूबसूरत पसम पीठ सूरत खतम, रेसमी गलफ साखत रचीतौ । अग पसम सुलफ आघौ किया ऊठियौ, चल कुलफ खूठिया मलफ चीतौ । —महादान महडू

३ कोमल, मुलायम ।

उ०—छोटी पण तीखौ नाक । छोटी छोटी फुरणिया । अबूझ अर निरमळ नैण । छोटी रेसमी मुफाड । छोटा २ हाथ अर छोटा छोटा पगल्या । —फुलवाडी

रेसमीघाट—स. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ० -आगणउ ते तु नील रतन तणउ, ऊपरलइ मालि, मध्यान्ह कालि, केलि पत्रह छाया, इस्या मंडप नीपाया तलइ माळ्या पाट, ऊपरि पाथरधा रेसमी घाट । —व स.

रेसमी भइरव—स पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—अतलस, खासु कमसु भइरव, मिरचु भइरव, रेसमी भइरव । —व स

रेसवाड़ौ—स पु [स रिक्त+हिंसायाम्=रेसवाट] मोसमी बुखार ।

रेसि—देखो 'रेस' (रू भे)

उ०--१ सुणि आगम नगर सऊजम, रुखमिणि कसन वधावण रेसि । लहरिउ लियै जाणि लहरीरव, राका दिन दरसण राकेस । —वेलि

उ०--२ इळ राइ करन वारउ कि इंद, गुणियणा ग्रिहै बाधा गईद । ताकुआ रेसि सोभाग तत्ति । हिंदवइ राइ दीन्हा हसत्ति । —र ज सी.

उ०—३ चांदलां करि चाद्रियउ, मोरु वयस सुणै जि । एक देसु माहरु, वालभ रेसि कहै जि । —प्राचीन फागु-सग्रह

रेसौ—स. पु. [फा. रेशः] १ पौधो की छाल आदि से निकलने वाला महीन तंतु या धागा ।

२ वह तंतु जिससे शरीर का मांस तथा कुछ और अग बनते हैं ।

३ बुनावट के रूप में कोई ऐसा तत्व जिसके ततु या सूत पृथक किये जाते हो ।

४ शरीरस्थ मश ।

५ अंश ।

उ०—बापजी काई अरज करूं, म्हारौ बाप साव इज भोळौ अर अबूझ लोग उणनै अधवावळौ इज समझै उणरौ थोडौ घणौ रेसो म्हा मे आग्यौ । —फुलवाडी

६ हिस्सा, भाग ।

उ०—बातां सुण सुण नै लोगा री अकल चकरीजगी । अैडी अकल रौ हजारवौ रेसौ ई हाथ आय जावै तौ निहाल व्है जावै । —फुलवाडी

७ सूक्ष्मातिसूक्ष्म अश ।

उ०—बापडा नाकुछ आखरा रौ घसकौ ई कांई केवै मासी भांग-जिया रै उण आणद रौ रेसौ ई परगट कर सकै । वांणी अर आखरा सूं परै रौ आणद हौ वौ । —फुलवाडी

८ लहर, प्रवाह ।

९ देखो 'रेस' (११) (मह. रू. भे.)

उ०—नेम भणी परणायवारै, मागै क्रस्ण नरेसौ । 'उग्रसेण' राय इम कहैरै, एक सुणौ हमारौ रेसौ । —जयवांणी

रेसियोड़ौ—भू का कृ.—१ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. २ मारा हुआ, सहार किया हुआ. ३ मिटाया हुआ. ४ कोप किया हुआ. क्रोध किया हुआ ।

(स्त्री रेसियोडी)

रेह—स. स्त्री [स. रेखा] १ कपट, धोखा ।

उ०—हाल वखाणी तेरमी, विनयचद्र तजि रेह है ।
ते तिम हिज करि जाणज्यौ, मत आंणौ सदेह है । —वि. कु.

२ सन्देह, शक ।

उ०—ते छह भगवई आगमा, किम मन आणइ रेह अग्यांनी । एक सदय गुण तू करइ, सूत्र बहुल नउ लोप अग्यानी । —वि. कु.

३ कलक, दाग ।

उ०—कमळ विण नामिया दडवत विन किया, वजाडै अथी सिर सुजस वाजा । विरद विण छोडिया कुजस विण बुलाया, रेह विण लगाया गयौ राजा । —महाराजा करणसिंह री गीत

४ धूलि, कण ।

उ०—खुरिसाण लहग ऊडी खुरेह, रवि छायउ अंबर रजी रेह । चमराळा पाग्रै ऊडि चीघ, गूदळइ त्रिकव मूझइ गईध । —रा. ज सी.

५ परिखा, खाई ।

उ०—पूभै चित नासां मुडै बक्र बाडा, गया सकडै पंथ छेकै छ

गाडा । कवी मेह के राचिया रेह कूदै, सडे डांग लंबा अगां माल सूवै । —ब भा.

वि.—६ किंचित, लेशमात्र, थोडा ।

उ०—थाट सुरंगी गोरियां, प्रादू कहवत एह । पदमणियां हमरोट कै, राख म संसी रेह । —बां. दा.

७ देखो—'रेख' (रू. भे.)

उ०—१ कुसल बांमण इह कहइ बड, निसत्व निरदय निलप, धूरंल मांहि रेह । प्रबला नारी नेहनइ, नलइ दीधु छेह । —नळदवदनी राम

उ०—२ ले भणी पुत्र छै ताहराजी, मूलसा रा नहीं एह । मुनि भासित प्रखा नहीं जी, न टलै करमनी रेह । —जयवाणी

उ०—३ बाबहिया निल पखिया, मगरि ज काळी रेह । मति पावस मुणि बिरहणी, तळफि तळफि जिउ देह । —ढो. मा.

उ०—४ घन घटा गरजित छटा तरजित भयं अरजित गेह । टब टबकि टबकत भबकि भबकत, बिषि बिषि बीज की रेह । —वि. कु

उ०—५ भूंडण भूंडी नह जणै, ना पिह लोपै रेह । तिण सूं ठहर तू, दव मचादै मेह । —डाडाळा सूर री वात

रू. भे.—रेहा ।

रेहुली—स. स्त्री—धूल ।

उ०—फदा मे मोडा रै फसगो रुळगो रेहुली । भेक धरता कीदी भूडी,' कुबधां केहडली । —ऊ. का

रेहण—सं. पु—कीट, मेल ।

उ०—प्रगट कहै जैमल पती, प्रचळ प्रचळ कर प्रग । कायर रेहण कढ गया, दीपै कनक दुरग । —बा. दा

रेहणौ, रेहबौ—क्रि. प्र.—शोभित होना ।

उ०—लवणि भरसभर कूवडिय, जसु नाहि य रेहइ । मयणराय किर विजयलभ जसु ऊरु सोहइ । —जिनपदम सूरि

रेहणहार, हारौ (हारी), रेहणियौ—वि० ।

रेहियोड़ौ, रेहियोड़ौ, रेह्योड़ौ - भू० का० कृ० ।

रेहीजणौ, रेहीजबौ—भाव वा० ।

रेहळणौ, रेहळबौ—क्रि स.—पराजित करना, हराना ।

उ०—१ मेवाडा ओघड मळिय माण, रेहळिय खेति कूंभेण राण सळबहर बलिय सुरिताणसल्म, मेवाड गाहि ऊग्राहि मल्ल । —रा. ज. सी.

उ०—२ सीधळ सचारै बोल उतारे, मेलै वळ कळि मूळ । खागै खूमाणां रेहळि राणा, निज थाणा नाडूळ । —गु. रू. ब.

उ०—३ धजबड पाण लियां खग घोडै, रेहळिया मोहिल राठोडै । मेवासी राव जोधै मिळिया, दोमज भाज मिरी सिर दळिया । —नैणसी

रेहळणहार, हारौ (हारी), रेहळणियौ—वि० ।

रेहळियोड़ौ, रेहळियोड़ौ, रेहळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेहळीजणौ, रेहळीजबौ—कर्म वा० ।

रेहळियोड़ौ—भू. का. कृ—पराजित किया हुआ, हराया हुआ ।

(स्त्री. रेहळियोडी)

रेहा—१ देखो 'रेखा' (रू. भे.)

२ देखो 'रेह' (रू. भे.)

उ०—१ कहिया रेहा कूड नह, बेहा बायक ग्रह । जे जेहा जेहा नही त्यागी केहा नेह । —बां. दा.

उ०—२ जीहा हरि रेहा लागी ज्याह, त्रिलोक नही भय लोका त्याह । भणै गुण तूझ तणा भगवान, जावै खळि त्याह तणा खैमान । —ह र.

३ देखो—'रेख' (रू भे.)

उ०—बेहा लिख खोटा बरण, रेहा हीन रहत । पान प्रछेहा घन लहै, जेहा घन जहवत । —बा. दा.

रेंहिणी—देखो—'रोहिणी' (रू. भे.)

उ० —तस्य मगाहारि ववहारि चूडामणि, निवसाए साह वरु 'फदपाळौ' । 'धारणा' गेहिणी तासु गुण रेंहिणी, रमणि गुणि दिप्पए जासु भालौ । —मेरुनदन

रें—देखो—'रै' (रू भे.)

उ०—प्रला पहुवी रे ऊपरा चौक पूरौ, प्रला चौगमण चौण ग महल चूरौ । प्रला महा संतान तोफान मोडै, प्रला त्रिधारै खडग सा दईन तोडै । —पी प्र.

रेंकणौ, रेंकबौ—क्रि प्र.—गधे का बोलना ।

रेंकणहार, हारौ (हारी), रेंकणियौ—वि. ।

रेंकियोड़ौ रेंकियोड़ौ, रेंक्योड़ौ—भू का. कृ. ।

रेंकीजणौ, रेंकीजबौ—भाव वा ।

रेंकणौ रेकबौ—रू. भे ।

रेंकियोड़ौ—भू का. कृ.—गधे का बोला हुआ, आवाज किया हुआ ।

(स्त्री रेंकियोडी)

रेंग—स. स्त्री.—रेंगने की क्रिया या भाव ।

रेंगणौ, रेंगबौ—क्रि प्र. १ भूमि के साथ पेट स्पर्श करते हुए खिसकते हुए या सरकते हुए सरीसृप जानवरों का चलना, गमन करना या आगे बढना ।

२ भूमि के साथ पेट सटा कर हाथो पैरो के बल मनुष्यों या बच्चो का चलना या आगे बढना ।

रेंगणहार, हारौ (हारी), रेंगणियौ—वि ।

रेंगियोड़ौ, रेंगियोड़ौ, रेंग्योड़ौ—भू का. कृ ।

रेंगीजणौ, रेंगीजबौ—भाव वा. ।

रेंगणौ, रेंगबौ—रू. भे. ।

रेंगियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ भूमि के साथ पेट स्पर्श करते हुए खिसकते या सरकते हुए सरीसृप जानवर का चला हुआ, गमन किया हुआ या आगे बढा हुआ. २ भूमि के साथ पेट सटा कर हाथो पैरो के बल मनुष्य या बच्चा चला हुआ या आगे बढा हुआ । (स्त्री. रेंगियोडी)

रेंट—देखो—'अरट' (रू. भे.)

रेंडियौ—देखो—'रेंडौ' (अल्पा; रू. भे.)

रेंडी-स. स्त्री.—अजमेर की तरफ पायी जाने वाली एक प्रकार की नस्ल विशेष की गाय जिसके सींग नीचे की ओर झुके होते हैं।

रेंडौ-स. पु. [स्त्री. रेंडी] वह बैल जिसके सींग नीचे की तरफ झुके हुए होते हैं।

रेंण—देखो—'रयण' (रू. भे.)

उ०—१ विरह खदूकौ रेंण दिन, हरीया साले मोहि । का तुझि मिळीया भाजिसी, का मुझि मिळीया तोहि । —अनुभववाणी

उ०—२ माया बादळ बिजळी मारै चमक चमक । हरीया हरिजन ऊबरै, राता रेंण ममक । —अनुभववाणी

रेंणकी-स पु.—राजस्थानी साहित्य मे एक छद विशेष जिसमे प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राए होती है तथा क्रमश ९,९, ६ और ८ मात्राओं पर यति होती हैं। छद के चार चरणो मे कुल १२८ मात्राए होती हैं।

रेंणायर—देखो—'रत्नाकर' (रू भे)

उ०—सांमद्र हु वुह सुजळ सायर, रेंणसुत जळ नघ रेंणायर। मुडलै गोडीग्व सायर, महण घरा महराण।

—महाराजा श्री गजसीघजी री गीत

रेंणु—देखो—'रेणु' (रू. भे)

उ०—वासप नैणासू निकळै मूख बाफा, रेंणु एड़ी पर फाटोडी राफा, धुर धुर धूजता धुडता थाकोडा, पीळा पडियोडा पिळिया पाकोडा। —ऊ का.

रेंणौ, रेंबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सायबा म्हांनू थांरी लारै लै जावोला वो, रमराज मग रेंण दी आरजू । ऐंम सुहागण री दिखावौ लावौ सायबा ।

—रसीले राज री गीत

उ०—२ घर हाळा भाई बेटा मन्नै सदा कैवता रेंता-बदरीजी जावौ, अडमठ तीरथ न्हावौ। धरम पुन्न करौ, माळा मिणियौ फेरौ —दसदोख

उ०—३ बेटा पोता न्यारा हुया, भाई भतीजा ऊजळा राम रांम करचा। नौकरी छूटी अर गाव गरज टूटी । लोगा री मीट ठंडी नही रेंयी। —दसदोख

रेंबी-सं. स्त्री.—१ खरबूजे की काटी हुई पतली सी फांक।

रेंन—देखो—'रयण' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरीया सत सबद मैं, सुरिल रेंन दिय पोय। माया कौ डर को नही, रहौ निसंसै होय। —अनुभव वांणी

उ०—२ जिन औ तोकु धन दीया, तिन कै लेखै लाय । माया सपनौ रेंन कौ, हरीया जाय विलाय। —अनुभववांणी

उ०—३ सेफरीया सुन्य सुंदरी, रमै रांम दिन रेंन। उर परमानद उपजै, अब औरन कौ दुख देन । —अनुभववांणी

रेंवणौ, रेंवबौ—देखो—'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—ठाकर भोपाळ सिंघजी, गाव रा भोगता अर जमीदार है । इया रौ धरांणौ बडौ मालदार रेंवतौ आयौ है। —दसदोख

रेंवत—देखो—'रेवत' (रू. भे.)

उ०—१ इक धारण तौ जिम चित आवै, पूजै भेख जिकौ वर पावै। सुणि न्रप करै प्रणाम सकाजा, रेंवत चढि आए जुधि राजा।

—सू. प्र.

उ०—२ सुणि खबर सभै दळबळ सकाज, रेंवत सिणगारै गजा राज। जगमग करि दरगह नग जहूर, पुर करै चित्र औछाड़ पूर ।

—सू. प्र.

रेंहट—देखो—'अरट' (रू. भे.)

रें-स. पु [स.] १ धन, द्रव्य । (ना. मा, ह. ना. मा.)

रू भे.—रा।

२ राजा, न्रप ।

३ सुखधर ।

४ स्याम रग । (एका.)

५ सतोष, धैर्य ।

अव्य०—के।

उ०—१ फतियौ फिरिसै फौज मा, भुडा रैं उरि माहि । डोहा करिसै दीनियौ, मुसै रैं घर माहि । —पी. ग्रं.

उ०—२ कोई दूधणी रौ जायौ औ न्याव सळटावणियौ लाधौ ई नी। हुचा हुचा पाधरा राजाजी रैं गोडै वहीर व्हैगा। —फुलवाडी

रू भे. —रइ, रे

रैक-स. पु [अ] पुस्तके आदि रखने के लिए, खाचे का बना हुआ ढांचा।

रैकळियौ—देखो—'रैकळौ' (अल्पा, रू. भे.)

रैकळौ—स पु. [स रेखा गतौ] १ वह छकडा जिस पर बहुत सी बदूकें लगी होती हैं।

२ एक प्रकार की छोटी गाडी जो सवारी के काम आती है। यह प्रायः बैलो द्वारा खीची जाती है और किसी किसी पर मडप भी बना होता है।

३ एक प्रकार की तोप जो बैलों, या घोडो द्वारा खीची जाती है।

रू भे.—रहकळौ, रेकळौ, रैखळौ। अल्पा—रैकळियौ, रैखळियौ

रैंकारौ-स. पु.—(ओछे या नीच वचन) 'अरे' या 'तूं' कहकर अशिष्टता

पूर्वक सबोधन करने की किया या भाव ।

उ०—१ वाका बिलफळ नीपजै, ज्यौं बिख तर री डाळ यूं दुरजण री जीभड़ी, रैंकारौ कै गाळ । —बां. दा

उ०—२ रीकारो अम्रत ज्यूं ही, भावै जग नू भाळ । है रैंकारौ आक पय, गरळ बराबर गाळ । —बां दा.

रू. भे.—रिकारौ, रेकारौ

रैंकेट—सं. पु. [अ] १ एक प्रकार का डडा जिसका आगे का भाग या हिस्सा प्राय: वर्त्तुलाकार होता है । यह टेनिस के खेल में गेंद मारने के काम आता है ।

२ वैज्ञानिक परिक्षणों हेतु आकाश में बहुत ऊंचाई तक जा सकने वाला आकाश बाण के आकार का एक बहुत बडा यन्त्र ।

रू भे.—राकेट

रैंखळियौ—देखो—'रैंकळो' (अल्पा., रू भे)

रैंखळौ—देखो—'रैंकळो' (रू. भे.)

रैंगर—देखो—'रेगर' (रू. भे.) (मा. म.)

रैंज—स. पु.—वह खेत जिसमे वर्षा के दिनो मे बर्षाती पानी भर जाता हो और उसमे रबी की फसल अच्छी होती हो ।

उ०—बांणीया रजपूत बामण बसै । रैंज रा खेत २० सेवज, कोहर ८ मीठा । —नैणसी

रैंडू—देखो—'रहडू' (रू. भे.)

रैंडौ—स पु.—बड़ा पत्थर । (शेखावाटी)

रैंण—सं पु. —१ राज्य ।

उ०—१ सूर जगै सुभ समय, भूम अन जुमै सुभावा । रैंण सभाळै राव, मिटै अटकाव बधावा । —रा रू.

उ०—२ गाहिया पिसण घणा वैर अऊग्राहिया, माल गमियौ छिलै करन हर मोड । वडो राव ओपियो वाळियो बीकपुर, रैंण रख-वाळ कलियांण राठोड । —नगराज हमीर सूजावत रो गीत

२ देखो 'रयण' (रू भे.)

उ०—१ 'सेख' तजौ दळ समर, रैंण बट कहिक रखावौ । तजै विढ कुळ तणौ, मिळी चित खत मिटावौ । सू प्र.

उ०—२ बकवा वाकर चोर, रैंण बिळोवा राखिया । अब मिळ जावै और, (तो) जतनां राखूं जेठवा । —जेठवा

उ०—३ पहिलइ पोहरै रैंण कै, दिवला अबर हूत । धण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चपा री फूल । —ढो. मा.

३ देखो 'रेणु' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ विस्वामित्र रै ज्याग सोभा बधारी, त्रिया रैंण पै हूंत गोतम्म नारी । पति स्राप हू देह पाई पखांणी, जिका दिव्य देहा हुई स्नब्ब जांणी । —सू. प्र.

उ०—२ रबं लार गुजार रोलब राजी, भगाणा भड़ा रोष श्रौ लब भाजी । अरांना हसै डूगरा रैंण आटै, छदी जै करां सीकरां गैंण छाटै । —बं. भा.

उ०—३ आलम मौरा ओगुणां साहिब तुझ गुणाह । बूंद बिरक्खा रैंण कण, थाघ न लब्भौ त्याह । —ह. र.

४ देखो 'रहणी' (रू भे.)

रैंणका—देखो रेणुका' (रू. भे)

उ० -हरी मेल धानख बानख हाथै, सको पाण खेंचै लियौ हेक साथै । मदोमत्त हाथी हुवै हीण मद्दं, जिसौ रैंणका पुत्र दीसत जद्दं । - सू प्र.

रैंणपत, रैंणपति, रैंणपती—देखो 'रयणपति' (रू भे)

रैंणय—स. पु —देखो 'रयण' (रू भे)

उ०—हरि गयण रत्थ ताण हत्थ बाधि कत्थ वेणिय । वाजै सचाळौ कुभवाळौ, रक्खवाळौ रैंणय । —रा रू.

२ देखो 'रण' (रू. भे)

रैंणयर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे) (अ. मा)

रैंणा—स. स्त्री —१ पृथ्वी, भूमि ।

उ०—१ वसुधा ओण सुरगी, तुग्यिा धमळ वित्थुरी रैंणा । अादू चपळ सहावौ, हुइ रत्ती हुइ अणरतह । —गु रू. ब.

उ० —२ मनौ गुभ कीधौ जठै राण माता, भगै वात बब्भीखणा तेम भ्राता । रैंणा लक थारै किमू नोटि राजा, करौ मीन छाडौ करौ एह काजा । —सू प्र.

२ रत्न ।

उ०--मिळै छत्र छत्रा धमै भीड माथै, रैंणा हीर मोती भडै रूप राथै । ओपै जोति नौ लाख हूता अपारा तिकै जाण साजोत रै भोमि तारा । —सू प्र.

[स रज] ३ धूलि, कण, बालू, रेत ।

उ०—१ कुटंबा सहेता हती नांव कीरं, बळै पाय रैंणा तरी रघु-वीर । मिथल्लेसरै ज्याग आए समीप, दुवा भूप आए मिळै सात दीप । --सू. प्र.

उ०—२ वहता तुग पाय पायाळ वाया, छिळै रज्ज रैंणा उडै वोम आया । चलता इसा मीर तीरं चलावै, पखी जीवता अ्रिग जाण न पावै । —र. वचनिका

[स. रजनी] रात, रात्रि ।

रैंणाइर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे)

उ०—१ इंद्र छमा किर अमर, निडर राठौड निभै नर । पह रैंणा-इर पसर, धणी नवकोट छिहतर । —गु. रू ब.

उ०—२ भूमडळ भेकपै, जाण रैंणाइर फट्टौ । प्रळै काळ कळि-पत, प्रघी उतपात प्रगट्टौ । —गु रू. ब.

रैंणादे—देखो 'राणादे' (रू. भे)

उ०—पीळी पीळी काई करो प्रै, पीळी आ चिरा की री दाळ ।

पीळी सूरजजी री घोडली ग्रे, पीळी बहू रैणादे री चीर ।
—लो. गी.

रैणापत, रैणापति, रैणापती—सं. पु.—देखो 'रयणपत' (रू. भे.)

उ०—रैणापती लखमसी राणौ, जगमालम जेसी घण जाण ।
भगवतसीह भाणगसी भ्रणभंग, प्रथीसिंघ गरमेर प्रमांण ।
—महादांन महडू

रैणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ गाहटूं गज दळा, कीध कादम्म सरोवर । नह छूटा जळ नया, जहा सगम रैणायर ।
—गु रू. ब.

उ०—२ नमौ जदुराज हळद्धर-जोड़, रैणायर-रूप नमौ रणछोड़ । नमौ सिसुपाळ मनावण सक, जरासध जीपण सेन उजक ।
—ह र.

उ०—३ सबदी लग कोड अजाद रायसिंघ, गहवत रैणायर बड गाज । ऊपर लहर सवाई ग्रपतै, छिलतै छातरिया ग्रन छात ।
—द दा.

रैणावर—देखो 'रत्नाकर' (रू भे)

उ०—कण मुकता घन कोस, भरियौ पण प्रापत बिना । दीजै कास् दोस, रैणावर नै राजिया ।
—किरपाराम

रैणावळि, रैणावळी—स स्त्री. [स रजनी] रात, रात्रि ।

रैणि, रैणिका, रैणी—स. स्त्री [स. रजनी] रात, रात्रि ।

उ०—१ ग्रनत घाट घट माहि रैणि दिन घडन है, कंचन हिरदा माहि काच लै जडत है ।
—ह पु वा.

उ०—२ बिडगा खड सात्रव भ्राय वगौ, निद्राळु म्र नाहर नीद लगौ । दसमी दन जींदय दाव दियौ, ग्रघ रैणि रौ चादोई ग्राथमियौ ।
—पा प्र.

उ०—३ बिलम न कीजै वीर रैणिका जांम है । हरि हां जन हरिदास निरमळ ग्रग ग्रमग ग्रजब बिसराम है ।
—ह. पु. वा.

उ०—४ पहर चारू सहज वीता, भयौ मूळ गमाय । गयौ वासर रैणी ग्राई, नर चल्यौ खोटा खाय ।
—ह. पु. वा.

रैं'णौ—देखो 'रहणौ' (रू. भे.)

उ०—जितरै म्रै नेडा जाय कहण लागिया जौ ठाकुर कटै छं की रैं'णौ राखता था । जै पाछा क्यों बैठ रहिया सीधा मोहडा बात करा हा न ।
—सुदरदास भाटी विकूपुरी री बात

रैणीचर—स. पु. [सं रजनीचर] निशाचर, राक्षस ।

वि.—१ रात को भक्षण करने वाला ।

२ रात को विचरण करने वाला ।

रैणीपत, रैणीपति, रैणीपती—देखो 'रयणपति' (रू. भे)

उ० —मिळै मुनी महारुद्र, मिळै चद्राणण ग्रच्छर । मिळै पख प्रामल, मिळै रैणीपाल ग्रम्मर ।
—मा. वचनिका

रैं'णौ, रैं'बौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सोचे हैं—जुवांन रैं लारै सोक वण'र रैं'णौ चोखो, कदै ही तो सोनै रौ सूरज ऊगै । पण बूढै रौ धणी वण'र रैं'णौ खोटी जमारौ धुखतौ ही जावै, वळै ही नही ।
—दसदोख

उ०—२ गूद सूंठ ग्रर पीपळामोळ जिसा ग्रोखदा मे तो बोती मारचां पडचो ही रैं'णो चाहीजै ।
—दसदोख

रैत, रैति, रैती—१ देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ पह साभर लगि सामद पाजा, रहसी दास दोय ग्रनि राजा । कुळ पैंतीस सेव सब करसी, भूपति रैत जेम दड भरसी ।
—सू. प्र.

उ०—२ ग्रौर क्रिया सब रैत है, तीरथ वरत समेत । इस नगरी मे रैत वसत है, गुरु दिलासा देत ।
—स्री हरिरामजी महाराज

उ०—३ राजा भयौ रैति रैति भई राजा, ऊपरि ग्रासण किया । रीतु पलट्या रस फीका लागै, एकै रसि बसि जीया ।
—ह. पु वा.

उ०—४ किस पर पररेजह नाम कोय, है ग्रसपति इम हा रैति होय । ग्रयसै कोई है उह ग्रनेक, को गजनी माहव ग्रादि केक ।
—सू. प्र.

२ देखो 'रेत' (रू. भे)

उ०—ग्रौर क्रिया सब रैत है, तीरथ वरत समेत । इस नगरी मे रैत वसत है, गुरु दिलासा देत ।
—स्री हरिरामजी महाराज

रैदारी—देखो 'राहदारी' (रू. भे)

रैदास—स. पु—रामानन्दजी का चमार जाति का एक शिष्य जो प्रसिद्ध हरि भक्त था ।

उ०—कहा लीन सुकदेव, कहा पीपा रैदास । दादू साचा क्यों छिपै, सकळ लोक परकास ।
—दादूबांणी

रू भे.—रविदास ।

रैदासी—स पु.—रामानन्दजी के शिष्य रैदास द्वारा चलाये गये सम्प्रदाय के ग्रनुयायी ।

रैन, रैनि—देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—दादू विरहनि कुरलै कूज ज्यों, निस दिन तळफत जाइ । राम सनेही कारणै, रोवत रैंनि बिहाइ ।
—दादूबाणी

रैबारण—स. स्त्री.—रैबारी जाति की स्त्री ।

उ०—ग्रबै हळवै चालतौ दीठौ । पछै रैबारण ढोलाजी कनै ग्राय नीसरी तद ढोलाजी नै पूछियौ राज कठा सूं पधारिया ग्रागै कठै । पधारस्यौ ।
—ढो. मा.

रैबारी—स. पु [स्त्री. रैबारण] भेड, बकरिया, व ऊंट चराने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष या उक्त जाति का व्यक्ति ।
(मा. म.)

उ०—१ किणी ई रैबारियां रै वाड़ा री सरण लीवी, किणी

ई भीला रा भूंपा नमाल्या तौ कोई रा पग ठेठ लेता री बाजरियां में आवता टिकिया। —रातवासौ

उ०—२ अबै ढोली बेदल थका हळवै हळवै चलीया जाय छै ईसै समै रा एक रंबारी रैबारण नै लीयां आवै छै। —ढो मा.

उ०—३ मुलतान रै मारग री बाड़ी आवै मो रात-दिन असवार ओठी दोड़बो करै। रंबारियां रा दो सौ ऊठ इण हीज काम ऊपर लागिया रहै छै। —सूरै खींवै कांधळोत री बात

रू. भे.—रइबारी, रबारी, रयबारी, राहबारी।

अल्पा; —रबारो।

रंबूब, रंबूबचौ—वि.—१ भोला भाला, भोला। (ढूंढाड)

२ वह जिसे सूर्योदय और सूर्यास्त का कुछ भी इलम न हो।

रहबून।

रं'म—देखो 'रहम' (रू. भे.)

उ० करणी री बाता फाजल वडै रं'म सू सुणी। अजीज दिन सू आपरी कोठडी मे जगां दीनी अर धीरज बंधायो। —दमदोल

रं'मत—देखो 'रहमत' (रू. भे)

रं'म दिल—देखो 'रहमदिल' (रू. भे)

रंयत—देखो 'रय्यत' (रू. भे)

उ०—१ ठाकरा लखारो करता थका कैयो—हू मेवरी बाघ'र बाम सू जद लोग हसाई हुसी। रंयत कै जांणसी। —दमदोल

उ०—२ इण वास्तै रंयत पण अदब न लोप सकसी। —नी प्र.

उ०—३ दूजी मीयासत खलक छोटा नै रंयत रीत री सौ पहली भांति तौ वाचै। —नी. प्र.

रंयांण—सं. स्त्री.—वह स्थान जहा पर गांव के लोग बैठ कर एकत्रित होकर गप्प शप्प करते हैं और अफीम व गोष्ठी भी वही करते हैं, बैठक, अथाई।

रू भे —रेयांण।

रंय्यत देखो 'रय्यत' (रू भे.)

रंळ, रंळौ—म. स्त्री — ठडी हवा या शीतल हवा का झौंका।

उ०—१ नणद-भोजाई भीजा, अम्मा, चोडै चोघटै जी, इदर राजा अम्मा मोरी, कोपियौ अै, ठडी वी चालै रंळ। —लो गी.

उ०—२ थारा मिणतोडो सजनी चितचावै, तारा गिणतोडी रजनी बितावै। ओझक अैळी मे आवेस अळूझै, मीळी रंळी से चीस-ळिया सूझै। —ऊ. का

रू. भे. – रैळौ।

रंळौ—स. पु.—कलक, दोष।

२ देखो 'रैळ' (रू. भे.)

रंवंत—देखो 'रेवत' (रू भे.)

उ०—१ 'सूराउत' डाबि छतीस सार, मलपियौ मयंद गति गयद मार। रंवत वदि राठौड राव, चढ़ियौ परठि पागडै पाव। —गु. रू. बं.

उ०—२ झेलू लोह अनेक झिलाऊ, मरण होय मुजरा कजि आऊं। रंवंत सहित होय रातबर, करु सलाम रंगियै किरमर। —सू. प्र.

रंवणौ, रंवबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक जतन सत एह, कूकर कुगध कुमाणसा। छेड न लीजै छेह, रंवण दीजै राजिया। —किरपारांम

उ०—२ वौ चोर हमेसाकी न की अेडी वेळ बाता करतौ ई रंवतौ। —फुलवाडी

उ० -३ पीळिया रै रोगी इण चाद री नी तौ पूरौ उजास। फगत अपा रा हुनर रै आडी देवै जैडी चांदणी। नी व्हैतौ तौ काई कमी रंवती। — फुलवाडी

रंवत—१ देखो 'रेवत' (रू भे)

२ देखो 'रैवतक' (रू भे')

उ०—सम मुलिह जिणि पूरिय भूरिय हरि मनि जपु. टोल टल-क्कइ रंवत देवत मनि आकपु। —जयसेखर सूरि

रंवतक—स पु. [स] गिरनार नामक पर्वत जो गुजरात प्रान्त मे आधुनिक जूनागढ के पास है। इसी पर्वत पर अर्जुन ने बलराम की बहन सुभद्रा का हरण श्रीकृष्ण की अनुमति से, साधु वेष मे, चित्रोत्सव मे किया था।

२ प्रियव्रत के पुत्र तथा पाचवे मन्वन्तर के मनु का नाम।

रू. भे —रैवत।

रंवतीरमण, रंवतीरवण—देखो 'रेवतीरमण' (रू. भे)

उ०—रंवतीरमण मुत रोहणी, निराळ ब निगरव नर। काळ घण पून बधव किसन, मयण रूप मदमाणगर। —पी ग्र

रंवाणनद, रवांणमवी—देखो 'रेवानदी' (रू भे)

उ०—माछा महराण मोग मेह मिणधरा मळै तर, गयदां रंवांणनद पाळै वड गात्र। पाळै रित-राव रू खा पावासर हसा पाळै, पाळणा कल्याण राव पाळै कवि पात्र। —आसौ बारहठ

रंवा—देखो 'रेवा' (रू. भे.)

उ०—रंवा तटि बीझरा, रान रूपरा गिरदा। केक मुळावार रा, केक पार रा समुद्रा। —सू. प्र.

रंवाड़ी—स. स्त्री —चादी सोने के पत्तरो या झोल के लकडी का बना एक पालकीनुमा वाहन जिसमे प्रायः भगवान की सवारी निकला करती है।

रू भे.—रइवाडी, रयवाडी, रवाडी, रेवाडी।

रंवाड़ीएकादसी म. स्त्री [राज. रंवाडी + सं. एकादशी] भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी जिस दिन भगवान को सिंहासनारूढ करके वाद्य नगाडो के साथ जलाशय पर ले जाया जाता है।

रू भे.—रेवाडी-एकादसी।

रंवाळ—स. पु.—१ जागीरदार द्वारा खलिहान में अपना हिस्सा लेने के बाद किसान के लिए छोड़े हुए अनाज की राशि ।
२ देखो 'रहवाळ' (रू. भे.)

रंवास, रंवासौ—देखो 'रहवास' (रू. भे.)
उ०—फाको टागा टिरै, कातरौ तारै काचळ । चर चरिया रौ चाद, फिडकला फबतौ हांचळ । टीडी रौ मुदाम, जतन चिडकोल्या चोळी । लटा सूंट रंवास, घास फूसा रौ झोळी । —दसदेव
उ०—२ मोकळौ माण पावती, घणौ आदर दिरांवती, जद ही तौ बीकाणै जिसौ वास छोड'र, काळै कोसा कुळ गाव रौ रंवास मंजूर करयौ हौ । —दसदोख
उ०—३ विण घाघळ खारी बिलम, कोळू रै रंवास । गिर री धरती नै गयौ, आणंद हुए उदास । —पा. प्र.
उ०—४ सीस्यौं कोट रंवासौ, खडेलौ तौ छुडाया । बारा गाव स्यामा नै, बताया सो रहाया । —शि. व.

रंहड़, रंहड़ू, रंहड़ू—देखो 'रहड़ू' (रू. भे.)

रंहणौ, रहबौ—रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)
उ०—१ भाणजा हुजदारा कह्यौ—जी, थे ठकुराई करौ । पण म्हामू कहौ नाही । साबास, जु उनरियै पटै थानै गाम माहै रंहण देवा छा । —नैणसी

रंहळ—स. स्त्री —१ शीतल वायु प्रवाह ।
२ देखो 'रहळ' (रू. भे)

रौं—स पु —एक प्रकार का घास विशेष ।

रौंख—देखो 'रूख' (रू भे.)
उ०—म्हारै देम मे बाग घणा छै अर बागा मे रौंख घणा छै ।
—नी प्र.

रौंखड़ौ—देखो 'रूख' (अल्पा, रू भे)
उ०—मोटा पुरुसा कही छै मरम धरम रै रौंखड़ा री डाळी छै ।
—नी. प्र.

रो—स पु.—१ उदर, पेट. २ बाल, रोमावली ३ ऋषि, मुनि ४ बिमारी, रुग्णता. ५ रसना । (एका)
६ देखो 'रौ' (रू. भे.)
उ०—१ काळिका तु हिज कुंवारी काया, मनछा पारबती महमाई । सावतरी सीता सुर सामणि, साधूडा रो हुवै सिहाई । —पी. प्र
उ०—२ सूपनखा रो समण, नाक वाढियौ निभै नरि । निमौ प्रकळि रुघनाथ, अनत पंचवटी ऊपरि । —पी. प्र.

रोअणौ, रोअबौ—देखो 'रोवणौ, रोवबौ' (रू. भे.)
उ०—रोअती रमणि भीमि निवारी, मू दिखाडि पुणि जीणइ तू मारी । काढि लोचन करी अगणीयाळा, आंणीजं पिसुन अरजनि साळा । —सालिसूरि

रोआवणौ, रोआवबौ—देखो 'रोवाणौ, रोवाबौ' (रू. भे.)

उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक आळोटइ आडी पडी । ध्यु विलवाद पांन नइ फूलि, एक रोआवि मुद्गि मूलि ।
—कां दे. प्र.

रोआवियोड़ौ—देखो 'रोवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रोआवियोड़ी)

रोइणी—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

रोई—देखो 'रोही' (रू. भे.)
उ०—करडै मवकूर चलै कब चौमी, जात मुरार हुजूर जठै । रथवासण क्रूर रयी बिच रोई, लूट थयी महमूर तठै ।
—भगतमाळ

रोईड़ौ—देखो 'रोहिड़ौ' (रू. भे.)

रोईतास—देखो 'रोहितास' (रू भे.)

रोक—स. स्त्री.—१ रुकावट डालने की क्रिया या भाव ।
२ रुकावट डालने वाली बात, वस्तु या तत्व ।
३ निषेध, मनाही ।
४ प्रतिबन्ध ।
५ कैद ।
उ०—तरै कह्यौ "रणै म्हारी वडै वारै इजत पाड़ी मोनू रोक माहै कियौ । —नैणसी
६ देखो 'रोकड' (रू भे)
उ०—१ कीधा अजन कमध री, हाथी निजर तुरग । हीर जवाहर रोक रिध, भूखण वसण सुरग । —रा. रू.
उ०—२ लाटो करण कामदार आवौ तरै आटो, घी, दाणो लागै सु लेसी । रोक लेण कु न पावै । —नैणसी
उ०—३ तनै रोक रुपया देम्यूं, पीळो ध्यू तेरी मांय । तेरी रै बहुवड नेै देम्यू जाळी की कढवाय । —लो. गी.
रू. भे.—रोकण ।

रोकड़—स. स्त्री. [अ. व. रोकडा] १ वह रकम जिसमे से आय-व्यय होता है, नकद रुपया ।
उ०—१ दिन दिन लेखण हाथ, म्हारी सुदर गोरी रे । सांजडली पडी रै, रोकड़ सारता हौ राज । —लो. गी.
उ०—२ तीन लक्ष द्रब रोकड़ा, चचळ उच्च पच्चीस । निपट विनै आगै निजर, नृपति निवारी रीस । —रा. रू.
उ०—३ रीछ लै नमाळू, दांम दै रोकड़ा । हैकड भूडा लगै, हाथ मे होकडा । —ऊ. का.
२ मूल-धन, पूजी ।
३ नकद रुपये देकर किया जाने वाला सौदा, व्यवहार, क्रय-विक्रय ।
४ नकदी सौदो का लेखा जोखा रखने की बही, रोकड़ बही ।
५ धन, सम्पत्ति ।
—रू. भे.—रोक, रोकडी, रोकडौ ।

रोकड़बही–सं. स्त्री.—नकद रुपये के लेन देन का हिसाब लिखने की बही।

रोकड़बाकी–सं स्त्री.—किसी निश्चित समय पर आय को जोड़ कर और उसमें से व्यय घटाने के उपरान्त हाथ में बची रहने वाली रोकड़ या नकद रुपया।

रोकड़बिक्री–सं. स्त्री —नकद रुपया लेकर की गई बिक्री।

रोकड़भंडार–सं. पु.—राज्य का साधारण खजाना।

रोकड़भंडारी–सं. पु.—खजानची।

रोकड़ियौ–सं. पु.—नकद रुपये रखने वाला, खजाची।

उ०—कमठांणै मांथै मुनीम-**रोकड़िया** छोडै अर फूलचंदजी आप हिसाबर कानी झांकै है। नामून रा रूंख भ्रोप रैया है

—दमदोख

रोकड़ी—देखो 'रोकड़, (रू. भे.)

उ०—१ पांच सौ रुपया **रोकड़ी**, बीस मण मिठाई मुसमटिया हाथ केरै मेल्ही। —गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ बैरै गूंभै मे भेवरियौ लाडू, बैरी पागड़ी मे **रोकड़ी** रुपटियो, होळी आई ए। —लो गी

रोकड़ौ (बहु व –रोकड़ा) देखो 'रोकड़' (रू. भे.)

उ०—१ जां बैठैला राजकवार करै ना भुवा बाई आरती। आरतिया मे रुपयौ **रोकड़ौ**, और मगाओ बाला चूनड़ी। —लो. गी.

उ०—२ राज, आ सपना मे ई नी जाणैं कै म्है मूंजी हूं। बधाई रा पूरा समचार सुणियां पै'ली ई म्हैंनै उण नै सिरो पाव अर इक्कीस रिपिया **रोकड़ा** दिया। —फुलवाड़ी

उ०—३ दाळद घर दोळौ हुवै, परणि न आवै पास। रुपिया होवै **रोकड़ा**, सोरा आवै सास। —ऊ का

रोकण—देखो 'रोक' (रू भे.)

रोकणौ, रोकबौ–क्रि. स —१ अधिकारतः बलात् या भय से किसी को आगे जाने से रोकना, रुकावट डालना।

उ०—१ तेज मे नाहरखा नाहर मे हाथू, और 'अमरेस' गहै आसमान बाथू। प्राग के जै न्याती **रोकै** नाग की सी नाई, मेल माहेटबाळे त बीटा देत बाई। —रा रू

उ०—२ समझायौ समझै नहीं, अघौ भयौ अगोर। जम **रोकैगौ** द्वार नव, निकसन कु नही ठोर। —अनुभववाणी

२ किसी को कोई कार्य या क्रिया न करने देना या किसी के कार्य या क्रिया मे बाधा डालना।

उ०—१ मयद धरावै मोतिया, हमा लाधणियाह। रहै नहीं जुध **रोकियौ**, औ धारा अणियाह। —बा. दा.

उ०—२ नर नाहर कमधज निडर, है छळ बळ हुसियार। काम कोई 'पानल' करै, है कुण **रोकणहार**। —ऊ का

३ आदेश, प्रार्थना, बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी बाधा या रुकावट खडी करना कि वह आगे न जा सके।

उ०—वाना बधां **रोकतौ** सोकतौ गोळा सरावळी, काळी सवा ओकतौ ससाळी स्रोण काज। ऊठै घू तोकतौ गैण 'माधांणी' झोकतौ ऊडा। आयौ मूघौ कोकतौ कठी नै झालौ आज।

—असौ आढौ

४ किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने देना, बन्द करवा देना।

उ०—**रोकी** तै कुरीति रीति, सुरीति को झोकी साथ। ताकत त्रिलोकी एसो, मन अवगाह्यौ तै। —ऊ. का.

५ किसी आघात या प्रहार को बीच मे ही रोकने हेतु किसी बचाव के शस्त्र या उपकरण का प्रयोग करना।

६ किसी प्रकार के नियन्त्रण या अधिकार मे रखना।

उ०—कैई बिना स् पड्या भाव है। रईस किराणौ है, घणा दिना तक **रोकणौ** वाजिब कोनी। बेचा तौ बत्ती वात है। —फुलवाड़ी

७ किसी प्रकार से वश मे रखना

८ कैद मे रखना या बन्द करना।

उ०—वाहूबार अनम्मी कध नेत-बाधा, सामध्रमी भीच जम्मी रुखाळो सधीर। झागणो छौ गेघडा छखडा सीस जाडै झडे, केसरी न **रोकणौ** छौ बाघळौ। कंठीर। —किरपाराम कवियो

९ मना करना।

उ० नेरा कोई नहिं **रोकणहार**, मगन होय मीरा चली। लाज सरम कुळ की मरजादा, सिर से दूर करी। मान अपमान दोऊ धर पटकै, निकळी ह्र ग्यान गळी। —मीरा

१० अवरुद्ध करना।

उ०—१ बीछडता ही सज्जणा क्या ही कहण न लध्ध। तिण वेळा कठ **रोकियउ**, जाणक सिंघी खध्ध। —ढो मा.

उ० –२ नाद बिंद कू उलटि कै, **रोकै** दसवे द्वार। जनहरीया सुख सहज की, इन क संधि न सार। —अनुभववाणी

रोकणहार, हारौ (हारी), रोकणियौ - वि०।

रोकिओडो, रोकियोडो, रोक्योडो भू० का० कृ०।

रोकीजणौ, रोकीजबौ —कर्म वा०।

रोकाई–स स्त्री —रोकने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'बार रोकाई'।

रोकाणौ रोकाबौ–क्रि स० [रुकणौ व रोकणौ, क्रिया का. प्रे. रू]

१ किसी दूसरे के अधिकार, बलात् या भय स किसी को आगे जाने से रुकाना, रुकावट डलाना।

२ किसी अन्य को किसी के कार्य मे बाधा डालने हेतु प्रेरित करना।

३ किसी तीसरे पक्ष के आदेश प्रार्थना, बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी बाधा खडी करने को प्रेरित करना

कि वह आगे न जा सके ।

४ किसी के द्वारा किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने देना, बन्द करवा देना ।

५ किसी को किसी प्रकार से नियन्त्रण या अधिकार मे रखने को प्रेरित करना ।

६ किसी प्रकार से वश मे रखने को प्रेरित करना ।

७ कैद में बन्द कराना ।

८ मना कराना ।

९ अवरुद्ध कराना ।

रोकाणहार, हारौ (हारी), **रोकाणियौ** - वि० ।

रोकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोकाईजणौ, रोकाईजबौ—कर्म वा० ।

रोकावणौ, रोकावबौ—रू० भे० ।

रोकायत–वि०—१ रोकने वाला, रुकावट डालने वाला ।

उ०—सीसवद्द भुजा तोकायता साबळा, रवा **रोकायतां** अरक रीझ । राळिया भडज धक नयण रोखायता, बीच झोकायता 'रयण' बीज । —रामकरण महड़

२ कैद मे बन्द करने वाला ।

रोकायोड़ौ–भू० का० कृ० १ किसी दूसरे के अधिकार, बलात् या भय मे किसी को आगे जाने से रुकाया हुआ, रुकावट डलाया हुआ. २ किसी अन्य को किसी के कार्य मे बाधा डालने हेतु प्रेरित किया हुआ ३ किसी तीसरे पक्ष के आदेश, प्रार्थना बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी बाधा खडी करने को प्रेरित किया हुआ होना कि वह आगे न जा सके ४ किसी के द्वारा किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा का आगे न बढने दिया हुआ, बन्द कराया हुआ ५ किसी को किसी प्रकार से नियन्त्रण या अधिकार मे रखने को प्रेरित किया हुआ ६ किसी प्रकार से वश मे रखने को प्रेरित किया हुआ. ७ कैद मे बन्द कराया हुआ ८ मना कराया हुआ ९ अवरुद्ध कराया हुआ।

(स्त्री. रोकायोडी)

रोकावणौ, रोकावबौ—देखो 'रोकाणौ, रोकाबौ' (रू भे)

रोकावणहार, हारौ (हारी), **रोकावणियौ**—वि० ।

रोकावियोडौ, रोकावियोड़ौ, रोकाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

रोकावीजणौ, रोकावीजबौ—कर्म वा० ।

रोकावियोड़ौ—देखो 'रोकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. रोकावियोडी)

रोकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ अधिकारत: बलात या भय मे किसी को आगे जाने से रोका हुआ, रुकावट डाला हुआ. २ किसी को कोई कार्य या क्रिया न करने दिया हुआ या किसी के कार्य या क्रिया मे बाधा डाला हुआ. ३ आदेश, प्रार्थना, बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग में कोई ऐसी बाधा या रुकावट खड़ी कराया हुआ होना कि वह आगे न आ सके. ४ किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने दिया हुआ, बन्द किया हुआ. ५ किसी आघात या प्रहार को बीच में ही रोकने हेतु किसी बचाव के शस्त्र या उपकरण का प्रयोग किया हुआ. ६ किसी प्रकार के नियन्त्रण या अधिकार मे रखा हुआ. ७ किसी प्रकार से वश मे रखा हुआ. ८ कैद मे रखा या बन्द किया हुआ. ९ मना किया हुआ. १० अवरुद्ध किया हुआ ।

(स्त्री रोकियोडी)

रोखंगी–वि. [स. रोष+अग+ई] १ जोश वाला, जोशीला, उत्साही ।

उ०—धानमाळी पछाडा हुकमां चाडा सीस धणी, **रोखंगी** ऊपाडा द्रोण भुजा राह दन । बैरिया ऊखेड जाडा धम्मी माह बाबराडा, दुबाह अखाडाजीत धाडा रामदूत । —र. ज. प्र.

२ क्रोध करने वाला, रोश वाला, क्रोधीला ।

उ०—अधियामणा थाट री गुलालो रहै खोण आळी, उरां सालो केका फतै खाट री अधूत । **रोखंगी** जलालो सत्रां थाट री बमेर राळै, प्रथीनाथ वाळो भालो जझाट री पूत ।

- राजा बख्तसिंघ री गीत

रू. भे.—रोसगी ।

रोख—देखो 'रोस' (रू. भे)   (अ. मा.)

उ०—१ उरवसि सची बाह गळि आणं, जियां **रोख** पाथर सम जाणै । इम करता रभ कोड इलाजा, रिख व्रत चित डिगियौ नह राजा । —सू. प्र.

उ०—२ बहु घड मीन रुधिर उछटे बुडि, अगनि रूप किलकिला पडे उडि । मास पहाड वहै जिण माहै, अगनि **रोख** तिण पर अणथाहै । —सू. प्र.

रोखानळ—देखो 'रोसानळ' (रू. भे)

रोखाणौ, रोखाबौ–क्रि. अ.—कुपित होना, क्रोधित होना ।

उ० जके उणहीज वेळा नवी नवी रीझा मोजा पावै । जको म्होकमसिघ सारो सराजाम आणनै दीठो । सो अौ तो सदाई **रोखातौ** नै निरकुरतो दीठो । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रोखाणहार, हारौ (हारी), **रोखाणियौ**—वि० ।

रोखायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोखाईजणौ, रोखाईजबौ—भाव वा० ।

रोखायत–वि. [स. रोष+रा. प्र. आयत] क्रोध करने वाला, कुपित होने वाला ।

उ०—सीस वद्द भुजा तोकायता साबळा, रवा रोकायता अरक रीझ । राळिया भडज धक नयण **रोखायतां**, बीच झोकायता 'रयण' बीजा । —रामकरण महड़

रोषि, रोषी–वि. [सं. रोषिन्] १ क्रोधालु, क्रोधी ।

२ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु ।

रोग–सं. पु. [सं. रोग] १ बीमारी ।

उ०—१ रोग सोक दुख पाप रिण, अै मत करौ प्रवेस । रहौ अनीत अनीत बिण, दाता हंदै देस । —बां. दा.

उ०—२ समापत भोग न रोग न सोग, जपन निकेवळ केवळ जोग । प्रत्यागम भौ लिब भक्ति प्रदीप, समागम सो सिव सक्ति समीप । —ऊ. का.

२ पीड़ा, कष्ट । (ह नां. मा.)

३ कलंक, दाग ।

उ०—परगा घी पतसाह री, रजवट लागै रोग । वर अपछर वीरम कहै, जांणो सुरपुर जोग । —बां दा.

४ व्यसन, आदत, स्वभाव ।

उ०—सरूपोत म्है थांनै सावळ ओळखिया कोनी । म्हनै खुद नैं ई बाता रो रोग की घणो इज है । स्वामी अबेळी कर दियौ ।

—फुलवाडी

५ भेद-भाव ।

उ०—'जसवंत' केतौ जावनै, ले जावौ सब लोग । उत्तम मद्धम अधम रौ, राख्यो एक न रोग । —ऊ. का.

६ सात प्रकार के चौघड़ियो में तीसरा । (अशुभ)

वि. वि.—देखो 'चौघड़ियौ'

रू. भे.—रोगरा

रोगकारक–वि. [सं.] बीमारी उत्पन्न करने वाला ।

रोगग्रस्त–वि. [सं.] बीमारी या रोग से पीड़ित, बीमार ।

रोगचाळौ–सं पु.—रोग का उपद्रव, बीमारी, महामारी ।

• उ०—गडा पड बीगड़ै नहीं हरगिज गढ़, धडापड न आवै रोग-चाळौ न फैलै धडाधड लाय महमदनगर, भडाभड भवानी बोल भाळौ ।
— खेतसी बारहठ

रोगण–सं स्त्री.—१ रोग-ग्रस्त स्त्री ।

२ देखो 'रोग' (रू. भे.)

उ०—अग रोगण मेटि दर्क पर ओगण, क्रीति अमोघण रीति कियौ । प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक, जोगणि चाळकनेच जयौ ।
—किरपाराम

३ देखो 'रोगन' (रू. भे.)

रोगन–सं. पु. [अ. रोगन] १ चिकनाई, स्निग्ध पदार्थ, तेल, घी ।

२ घी ।

उ०—१ कपणा री मतवाळ की, करसण खारच खेत । नीर विलोणो है नहीं, दत अन रोगन हेत । —बां दा

उ०—२ मिसटाण मसाला मोकळा, आटा रोगन ऊघड़ा उदार चित कुमेर रा, कर भडार खुला खुला रूडा । —बगसौ खिड़ियौ

उ०—३ पछमवारै को ऊरड ठाम ठाम सै लगी । वडी भोग अनार्जू के गर्जू पर रोगनू की छोळ वगी । —सू. प्र

३ लकड़ी या लोहे की वस्तुओं पर चमक लाने हेतु लगाया जाने वाला स्पिरिट, चमड़े, रूमीमस्तगी आदि के योग से बनने वाला एक प्रकार का घोल, वारनिश, पॉलिश ।

४ मिट्टी के बरतनो आदि पर चढाने का लाख आदि से बना हुआ मसाला ।

५ तेल ।

६ बादाम का तेल ।

रू. भे.—रोगण, रोगान ।

रोगनदार–वि —[फा.] जिस पर रोगन किया हुआ हो ।

रोगनासक–वि [सं. रोगनाशक] रोग का नाश करने वाला, व्याधि को दूर करने वाला ।

रोगनिदान–सं. पु [सं. रोगनिदान] किसी बीमारी के लक्षण और उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान ।

रोगनिवारक–वि.—बीमारी को उत्पन्न नही होने देने वाला ।

उ०—नमो हरि आप धनतर होय, नमो सब रोगनिवारक कोय । नमो भ्रम-देह बिसभर धार, नमो वर व्यापिय सोय मुरार ।
—ह र.

रोगनी–वि. - जिस पर रोगन चढा हुआ हो ।

उ०—घड पडै सक्रि घमगाण, प्रजळत मुगळ पठाण । रोगनी नभ नितराम, विकराळ झाळ विराम । सू प्र

रोगलो—देखो 'रोगी' (अल्पा. रू भे)

(स्त्री रोगली)

रोगवाळ–वि – रोगीला, रोगी, बीमार । (डिं को)

रोगहर, रोगहारी–वि रोग को मिटाने वाला । (डिं को)

सं पु.—१ वैद्य चिकित्सक ।

उ०—लायो जाय रोगहर लागो, पिलग सहतो सुग प्रबळ । देखे जाग गेळ कांप दोळा, दसत मसोला गामदळ । —र रू

२ एक प्रकार का रत्न विशेष ।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुष्पराग वज्र वैडूर्य सुरग रतन नील महानील इंद्रनील सत्रकर विभकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी ⋯⋯ । —व स.

रोगांन—देखो 'रोगन' (रू. भे)

उ०—भांति भांति के पकवान भांति भांति के अनाज । रोगांन मसालै से सूल की सीक बणावै । अनेक भांति के साग तिस का पार न पावै ।
—सू. प्र

रोगांनी–वि. [अ] स्नेहयुक्त, घी या तेल मे बना हुआ पदार्थ ।

उ०—भांति भांति का मसाला रोगांनी रोसनी केसरिया चवळी भांति भांति की मिठाई ।
—सू. प्र.

रोगातुर–वि.—रोग से आतुर, बीमारी से पीड़ित ।

रोगित–वि.—रोगी, बीमार । (डि को.)

रोगिय—देखो 'रोगी' (रू. भे.)

रोगियौ—देखो 'रोगी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—रोगियौ आप मार्थ रिणौ, रोज दुख सुख नही रती । मोहनी देखि धरमसी महा, जाणै तोडन हुअै जती । —ध. व. ग्र.

रोगिल—देखो 'रोगी' (रू. भे)

उ०—कुमरि मगावी मीनति करी, दीन्ही ऊमादे कुमरी । झाली अजी न मानी वात, रोगिल देस गड गुजरात । —ढो. मा.

रोगी–वि [स. रोगिन्] रोग से पीडित, व्याधिग्रस्त, बीमार । (डि. को.)

उ०—१ जुगति विना जोगी मूंवा, रोगी ओखद खाय । नाव ओखदी बाहिरी, जीवन कैसे थाय । —अनुभववाणी

उ०—वैद मूवा रोगी मूवा मूंवा जुग जेहान । हरीया हरिजन ना मूंवा, हिरदै हरि का ध्यान । —अनुभववाणी

उ०—३ पीळिया रै रोगी इण चाद रौ नी तौ पूरौ उजास । फगत अपारा हुनर रै आडी देवै ऊंडी चादणी । नी व्हैतौ तौ काई कमी रैवती । —फुलवाडी

रू भे.—रोगिय ।

अल्पा,—रोगलौ, रोगियौ, रोगिल, रोगीयौ, रोगीलौ ।

रोगीयौ—देखो 'रोगी' (रू. भे)

उ०—१ एक ओखदी बाहिरौ, विरह विथा नही जाय । जन हरीया जुग रोगीया, अनत ओखदी खाय । —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया सब जुग रोगीया, ओखद खाय न एक । एकै ओखद बाहिरौ, मरि मरि जाहि अनेक । —अनुभववाणी

रोगीलौ—देखो 'रोगी' (रू. भे)

उ०—रहिया रोगीलाह, बोहळी विथा वियापिया । वेदनि वीच-रियांह, तू दारू मिळियौ देवजी । —वील्हौजी

(स्त्री. रोगीली)

रोड़–स. पु.—१ नगारा, नक्कारा ।

स. स्त्री.—२ कैद, बन्दीखाना ।

[अं.] ३ सडक, रास्ता, राजपथ ।

वि.—रोकने वाला, बाधा उपस्थित करने वाला ।

देखो 'रोड़ौ' (मह, रू. भे)

रू. भे.—रोड ।

रोड़क–स. पु.—धावा, हमला ।

उ०—तद जाणीजै धाव जबरौ, नहीं तौ मोहनसिंह इसा लोहा नूं छोड कईक तखत री पूठ कान्ही खड़ा था त्यां साम्ही रोड़क कीन्ही । —महाराजा पदमसिंहजी री वात

रोड़णौ–वि. [स्त्री. रोडणी] १ रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला ।

२ बजाने वाला ।

उ०—हणू जिसा किंकरा पधारै, कै बकरा हूंसां । जूंधा जीत अनंक रा, रोड़णा जोधार । —र. ज. प्र.

रोड़णौ, रोड़बौ–क्रि. स.—१ नगाड़ा, ढोल, आदि बजाना ।

उ०—१ नमो तूझ आतम सकति दुरंग अनड़ा नड़ख, रिमां दे झाट त्रबाट रोड़ै । होड करता जिके लडण हामू कियौ, जिकै हाजर खडा हाथ जोडै । —दुरगादास आसकरणौत राठोड री गीत

उ०—२ रोड़ै बंबीलां अरावा सोर धमावै जागियौ रोस, सेस धू नमावै केडै लागियौ संजाट । भूप ऊछाहरां साजै महुंडां तरिदां भेडै, रांमेड गरिदां खेडै नाहरां रंजाट । —महाराव राजा रामसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—३ एक सहंस मुखि त्रिणा अधारै, बचिया जवन भूप भड़ बारै । रण करि फतै त्रबक डड रोड़ै जोए कुंवर सीस धड़ जोड़ै । —सू. प्र.

२ रोकना, अवरुद्ध करना ।

उ०—मन तौ उणारौ हवा रै सागै उडतौ, उजास रै भेळौ पळकतौ, चांदणी साथै झोला खावतौ अर बादळां रै माथै हींडतौ, पण काया उणारी गवाडी री कार रै माय रोड़योड़ी ही । —फुलवाड़ी

३ घेरना, आवेष्टित करना ।

उ०—१ एकौ लाखा आगमैं, सीह कहीजै सोय । सूरां जेथी रोड़ियं, कळ हळ तेथी होय । —हा. झा.

उ०—२ कुरुदळ प्रति मोडउ बांणनी कोडि छोडउं, रणि गरवइ रोड़उं एह नू मान मोडउ । —सालिसूरि

४ बोलना, कहना ।

उ०—रातो भूझ विखम बच रोडै, जबर इसो कुण जोमंड, मौ ऊभा सकर चौ कोमड, ताण भीच किण तोडै । —र. रू.

रोड़णहार, हारौ (हारी), रोड़णियौ—वि० ।

रोड़ियोड़ौ, रोड़ियोड़ौ, रोड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोड़ीजणौ, रोडीजबौ—कर्म वा० ।

रोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ध्वनि उत्पन्न किया हुआ, बजाया हुआ. २ रोका हुआ अवरुद्ध किया हुआ. ३ घेरा हुआ, आवेष्टित किया हुआ ४ बोला हुआ, कहा हुआ ।

(स्त्री. रोडियोडी)

रोड़ी–सं. स्त्री.—१ जहां, गोबर, फूस, पत्ताना आदि डालते हैं ।

उ०—मुख ओडी रै माहिली, पर कावड़ा पुरीख । पटकै रोड़ी स्रवण पर, से बडाळ सरीख । —बां. दा.

२ नगाडे या दुंदुभि की ध्वनि ।

उ०—गवड़ै गयंद करता गोढ़ि, रड़ता दमामां हुय रोढ़ि। द्रम्मी बाज घोड़ा दौढ़ि, पत्थर पथां भाड़ै पौढ़ि। —गु. रू. बं.

३ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—१ ओड़ी हूंदा घोर जम, रोड़ी हूंदा गाव। हू पचहारी हूलसी, बारी बालम आव। —बी. स.

उ०—२ बड़े बैल वरियांम, मुजळ तै आगळ चचळ। गरजि नाद गंभीर, रोढ़ि रिणतूर जंबागळ। —गु. रू. बं.

उ०—३ बबंक नीसांण रीढ़ि तूरारव, भेरी गुहीर सद्द ए। वरधू नफेर ढोल सहनाई, जांणक मेघ नद्द ए। —गु. रू. बं.

रोड़ौ—सं. पु.—१ पत्थर या ईंट का बड़ा ढेला।

उ०—काळी घणी कुरूप, कसतूरी कांटा तुलै। सक्कर घणी सुरूप, रोड़ां तुलै राजिया। —किरपाराम

२ विघन, बाधा, सकट।

३ देखो 'रूड़ौ' (रू भे)

उ०—सती धारि पूरब्ब अग्नीन मेलै, पचीसेक रीड़ं कणी साथ पेलै। रमा वेस मातै बली उत्तराध, बिनै कोडी यक्कीस जै थाट बाध। —सू. प्र.

रू. भे.—रोडौ, रौडौ।

मह.—रू. भे.—रोड।

रौड़ौ-भोड़ौ—स. पु.—युद्ध, लड़ाई, झगड़ा, कलह।

उ०—ताहरां सिखरी तमकि अर घोड़ै असवार हुवौ। ताहरा झौटिग हाथी हुय आडौ आय फिरियौ। सबळा रोड़ा-झोड़ा हुआ। —नैणसी

रोचक—वि. [स.] १ रुचिकारक, रुचने वाला, अच्छा लगने वाला, प्रिय।

२ मनोरंजन करने वाला, मनोरजक।

रोचकता—सं. स्त्री.—रुचिकर या मनोरम होने की अवस्था या भाव, मनोहरता।

रोचणौ, रोचबौ—क्रि अ.—शोभायमान होना, फबना।

उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई, डूगर बळती नै देखै दुखदाई। रचना ईस्वर री ईस्वरता रोचै, समदम स्रद्धा बिण संभव नहि सोचै। —ऊ. का.

रोचणहार, हारौ (हारी), रोचणियौ—वि०।

रोचिश्रोड़ौ, रोचियोड़ौ, रोच्योड़ौ भू० का० कृ०।

रोचीजणौ, रोचीजबौ—भाव वा०।

रोचन—वि —[स.] १ शोभाप्रद, दीप्तिमान, मनोहर, प्रिय।

२ पाकस्थली सम्बन्धी।

स. पु. [सं. रोचन, रोचनः] ३ कामदेव के पाच बाणो मे से एक।

४ गोरोचन।

५ घोडे की गर्दन के बालो का भूड़ा।

स्त्री स —६ सुन्दरी, स्त्री।

रोचना—स. स्त्री.—१ गोरोचन।

२ वसुदेव की एक पत्नी का नाम, जो राजा देवक की कन्या थी, इसके हेम एव हेमागद नामक दो पुत्र हुए थे।

३ विदर्भराज रुक्मिन् की पौत्री, जो कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध की पत्नी थी। इसका विवाह भोजकटपुर मे सम्पन्न हुआ था।

४ एक लाल कमल।

५ सुदरी, स्त्री।

रोचमान—वि [स. रोचमान] १ चमकता हुआ, चमकीला।

२ मनोहर, सुन्दर, प्रिय।

स. स्त्री—१ घोडे की गरदन पर की एक भवरी। (शा हो)

स पु.—२ एक राजा, जो अश्वग्रीव नामक असुर के अश मे उत्पन्न हुआ था।

३ राजद्वय, जो भारतीय युद्ध मे द्रोण के द्वारा मारा गया था।

रोचि, रोची—स स्त्री. [स रोचिस्] १ दीप्ती, कान्ति, आभा।

२ चारो ओर फैली हुई शोभा।

३ किरण, रश्मि।

उ०—पखै जारज न को अनेरा पतगरै, करै मोभाग आतम सकत कोड। हुरै विकटोरिया रवी रोची हुवौ, रजै तण खूद बळ रूप राठौड। —किसोरदान बारहठ

रोज—स. पु. [स रुदन] १ रुदन, रोना-पीटना।

उ० - अबूभ बना रो उणियारो देखूं तौ म्हारै सळीका ऊठै। घोडी माथै टैल नै पाछौ आय दाता री पूछै तौ म्हनै-मतै ई रोज आय जावै। —फुलवाड़ी

२ शोक, कष्ट।

उ०—१ तन दुख नीर तडाग, रोज विहगम रूखडौ। विमन सलीनुख बाग, जग बरक ऊनर जबल। - बा दा

उ०—२ महिमत देता मोज, घर बैठा घोडा घणा। रोव्या केरो रोज, निजग देख्यो नोपना। —अग्यात

[फा. रोज] ३ दिन, दिवस।

उ०—१ तद कोटवाळ कह्यौ, "औ हिरण तुमारा नही है, औ तो हमारै यहा बौहत रोज सै है, जो तुम कहते हो तीन रोज हुवा है सो भूठै हो।" —द दा.

उ०—२ कमरूंम कही, "मैं ऐसा यतम देवुगा, सो इनका तीर हाथी माय न अटकैगा।" सो अबै रोजी तीर बावै है सो दोय च्यार रोज हुआ। अर या कबाण ममाई। —राहब साहब री बात

अव्य०—४ प्रतिदिन, हमेशा।

उ०—१ आलिमी निज हरदयसरोज, घणू घणू प्रेमं रोज। समा-दिसति भूपति कल्याण, कुसल अत्र वरत्तइ सुविहाण। —वि कु.

उ०—२ जनहरीया जहा जाईयै, पखापखी नही काय। मूवा मोग न सादरो, रोज न रोवै आय। —अनुभववाणी

५ देखो 'रोझ' (रू. भे.)

रू भे.—रोजि, रोजी।

रोजगार–स पु —१ कार्य, धन्धा, पेशा।

उ०—वरसो, तिलोकसी, दूदो, रायपाल रावळ जेसल कन्है रहै। इण नू सवर्णीपणै रो रोजगार जिसडो सवण हुवै, तिमडो आय मालम करै।। —तिलोकसी भाटी री वात

२ जीवोकोपार्जन करने के लिये किया गया कार्य, व्यापार।

३ वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय।

४ वेतन, तनख्वाह।

उ०—१ हमै गाव सैसराम रो पठाण सलेमसा नै बेटो सेरखा अै दिल्ली मै पातसाहजीरी चाकरी घोडा हजार एक सूं करता हा पण वगसी मू वणै नही। सू रोजगार मिळै नही वरस दस हुवा अस्बाब बेच खाघो। —द. दा.

उ०—२ ताहरा रिणधीर पण कटक कियो। रोजगार सारा नू चुकायो। रजपूता सारा ही कह्यौ—'थाहरै साथ छा। —नैणसी

उ०—३ ताहरां राजा पडवो फेरियो—जो चोर म्हारै मुजरै आवै तो चोरी री तकसीर माफ करू, सिरकार रो रोजगार कर देवू। —राजा भोज अर खापरै चोर री बात

५ दिन भर किये गये परिश्रम का पारिश्रमिक, मजदूरी।

६ देखो 'रोजी' (रू. भे)

उ०—तिण मू पुण्य रै ठिकाणै कर उण रा मिनख पूजा प्रभू री नू राखै, तिण रा रोजगार री भली भाति खबर लेय। —नी. प्र.

रोजगारी–स पु [फा. रोजगारी] १ व्यापारी, सौदागर।

२ देखो 'रोजगार' (रू. भे.)

उ०—दूजी पाठमाळा स्थापित कर पडित तालवेडलम रोजगारी बैठाणै लिकै धरम सास्त्र जे बालक नू भणावै तिण रो पुण्य उण नू होय। —नी. प्र.

रोजगारो–स पु —रोजगार पर कार्य करने वाला व्यक्ति।

उ०—लै भडा रटाका पूर अरिंदा ताडब्बा लागा, महाबीर खीज मे पाडब्बा लागा मूठ। वीर बेसताबा जहा दूधारा झाडब्बा लागा, रोजगारा खानी ज्यू फाडब्बा लागा रूठ। —मुखदान कवियो

रोजनांमचौ, रोजनांमौ–स. पु. [फा. रोजनामच.] १ प्रतिदिन के कार्य का विवरण लिखने की पुस्तक।

उ०—बता, म्हारै इण दूख रो रोजनांमचौ दुनिया री सगळी बहिया मे किणी जुग पूरो व्है सकै काई। बेटी! म्हारी ऊमर पाया बिना इण दुख रो मरम थारै हीयै परस नी करैला। —फुलवाडी

२ प्रतिदिन के आय-व्यय का विवरण लिखने की पुस्तक।

रोजमेळ–स पु —१ हमेशा के नकद लेन देन का विवरण रखने की बही।

२ दैनिक हिसाब का मिलान।

रोजांना–क्रि. वि [फा. रोजान] नित्य, प्रतिदिन, हमेशा।

रोजाईद–स स्त्री. [फा. रोज + अ ईद] मुसलमानो की रोजो के रेन बाद आने वाली ईद, ईदुल फितर।

रोजायत–स पु – मुसलमान। (डि को)

उ०—रोजायतां तणां नव रोजां, जेथ मुसाणा जणी जण। हीदू नाथ दिली चै हाटै, 'पतौ' न खरचै खत्रीपण। —प्रथवीराज राठौड

वि.—रोजा रखने वाला।

रोजि—१ देखो 'रोज' (रू. भे.)

उ०—आसथान सदघटा आसता, ससत परखद समिति समाजि। समिजा गोठि सभा सुजि सोहै, रोजि हुवै चरचा ब्रजराज। —ह. नां. मा.

२ देखो 'रोजी' (रू भे)

रोजिना—देखो 'रोजीना' (रू. भे)

रोजी–स. स्त्री [फा] १ नित्य का भोजन, जीवन निर्वाह का अवलम्ब।

उ०—सिपाही अरज कीवी जै म्है सिपाही छां रोजी रै पगां चाकरी रो इरादो राखा छा। —दूळची जोइयै री वारता

२ जीविका।

३ तनख्वाह।

उ०—तद दीवान नौ मुहरो कराय दियौ व रुपया बीस हजार दिवाय रोजी चढी थी सो चूकती दिराई। —दूळची जोइयै री वारता

४ प्रारब्ध, भाग्य।

उ०—दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार। दादू उस परसाद सौं, पोस्या सब परिवार। —दादूबाणी

५ देखो 'रोज' (रू. भे)

उ०—कमरोत कही, "मैं ऐसा यलम देवैंगा, सो इनका तीर हाथी माय न अटकैगा।" सो अबै रोजो तीर बावै है। सो दोय-च्यार रोज हुवा। अरु या कबाण समाई। —राहब-साहब री वात

रू. भे —रोजि

रोजीवार–स. पु. [फा.] १ वह व्यक्ति जिसे रोजाना खर्च हेतु कुछ रुपया मिलता हो।

२ वह व्यक्ति जो किसी रोजी (नौकरी) मे लगा हो, नौकरीदार।

रोजीमदार–सं. पु.—दैनिक मजदूरी लेकर कार्य करने वाला, मजदूर।

उ०—पछै रिपिया देवसी रोज खरच रौ रुक्को मेलियौ, सो नाकारौ मेलियौ, कही—म्हैं तो रोजीमदार नहीं, म्हैं तौ बजियै रा धणी छा, बाबेजी रा दरसण करणौं नु ही आया छा।
—सूरे खींवं काधळोत री वात

रोजीना–वि.—नित्य का, रोज का।

उ०—तद राजा बो'त मेहरबान हुय, गाव ग्रेक पटै दियौ, रुपिया पांच ५) रोजीना कर दिया।
—राजा भोज ग्रर खापरै चोर री वात

क्रि वि.—नित्य, प्रतिदिन, सदैव।

उ०—१ ग्राप रोजीना कहता हा म्हारा कत नै ग्रै तौ बधै है सो ग्राज इण जुद्ध मैं देख मेरावो ग्राप रौ देवर इसरा बधिया जिण रौ प्रताप हाथीया रा दान उखेलै है। - वी स. टी.

उ०—२ यौ लिखिया रोजीना ग्रावै, सरब दिली री विगत सुणावै। बाधी हर मुहकम री बाधै, मैदा डार फिरै हित साधै।
—रा. रू.

उ०—३ करणसिंघजी ग्रोरंगाबाद विराजै है। उठै करणपुर मैं श्री करनीजी रौ मिंदर करायौ। सु ग्रजेस ग्रारोगण रौ रोजीना छै।
—ब. दा.

उ०—४ रोजीना ग्रापस मे वेढा हुवै, सु सारा डीला कट निवडि-या। मोहिला री ठकुराई निबळी पड़ी। —नैणसी

रू. भे.—रोजिना, रोजीनो

रोजीनौ—देखो 'रोजीना' (रू भे)

• उ०—ग्रौर महा पुरुवा रै रहणै न ठोर बणावै उवै उठै ग्राराम सू रहै उणारै खाणै पीणै ग्रर पहरणै री रोजीना करै तौ पुण्य पहोवै।
—नी प्र

रोजीबिगाड़–सं. पु जीविका निर्वाह के लगे हुए साधन को छोडने वाला, निकम्मा, निखट्टू।

रोजु—देखौ—'रोजौ' (रू. भे.)

उ०—जे नित रोजु करइ, नितह निम्माज गुजारइ। पच वखत समधरइ, धणी जै एक सभारइ। —व. स.

रोजेदार–स पु [फा. रोजे+दार] रोजा रखने वाला, मुसलमान। (मा म.)

रोजौ–स पु.—१ व्रत, उपवास।

उ०—मध्योपासन तजि बांग माज, निस दिवस वृ रोजा निवाज। सामरत्थ सिंह हम नहिं सगाळ, गौ मांस नाम पै देत गाळि।
—ऊ का.

२ मुसलमानो द्वारा रमजान के महीने मे रखा जाने वाला ३० दिन का व्रत, उपवास जिसके अतिम दिन चन्द्रदर्शन होने पर ईद होती है।

उ०—१ रोजा तीस दिन का राखै, सारै पच निवाजा। मन ग्रपना कु मारै नाही, मारै मुरगी ताजा। —ग्रनुभववांणी

उ०—२ पाच बखत करि बंदगी, रोजा राखौ तीस जी। देव दमध छूटै नहीं सही विसोवा वीस।
—दीन सुदरदी

३ देखो 'रौजौ' (रू भे)

उ०—पीर बहावुलहक रौ रोजौ मुलतान रा किला मे। पीर साह कुल ग्रालम रौ ही रोजौ मुल्तान रा किला मे है।
- बा दा ख्यात

रू भे.—रोजु।

रोझ–स स्त्री. [स्त्री रोझडी] १ नर नील गाय।

उ०—१ सूग्रर सबर समा सीग्राळ फिरइ ग्राहेडी तीह ना काल। हरिण रोझ जइ दीठउ किमइ, ग्रागलि मरण ति पामइं तिमइ।
—बस्तिग

उ०—२ दस दस्स कोस मुकाम डेरा, खुरम खेल सिकार ए। सघरै नाहर रोझ साबर, ग्ररम पख उतार ए। —गु. रू. ब.

उ०—३ गरदा धर ग्रबर गूंधाळियौ, धमळागिर डूगर घूघुळियौ। कटका बिच मीर सिकार करै, ग्रिध नाहर सबर रोझ मरै।
—गु. रू ब.

२ नील गाय के मिलते जुलते रग का एक घोडा विशेष।

रू. भे.—रोज, रोभौ।

ग्रल्पा.,—रोझडौ।

रोझडौ—देखो 'रोझ' (ग्रल्पा,—रू. भे)

उ०—१ काळवा कुही करडी कियाह, हासला हरेवी नइ हलाह। रोझडा महडा पीत रग, तोरकी केवि ताजी तुरग। —रा ज सी

उ०—२ बड वेग उडत मध गरुड बेन, कागडा केक भोहा कमेत। रोझडा केक भसमय रग, नामडा केयक नुकरा तुरग —पे रू (स्त्री रोझडी)

रोझौ—देखो 'रोझ' (रू भे.)

उ० रोझौ निला गगाजळ, हसला नैग काजळ। ग्रंम सैराहा ग्रऊब, खंग रोहला हाबूब। —गु. रू. ब.

रोट–स पु —१ मोटी रोटी, बडी रोटी।

उ०—१ मोगवै कू जून, खून गून तं भरघौ। काम चून को रोट, न लून कौ करघौ। —ऊ. का.

उ०—२ बारट करोडं बैसिसै, काइम हदै कौटि। 'रेवी' बैठी राज मा, राणी करिसै रोट। —पी. ग्र.

उ० - ३ खाय रोट जद टास होयग्या, दीना पलग ढळाय। कुरब

कुरड हूक्यो ठळळावै, गूदड़ा दियां पकड़ाय । मारूणी घणा कमावणी । —लो. गी

२ प्रत्येक मंगलवार व शनिश्चरवार के दिन हनुमानजी को चढ़ाई जाने वाली बड़ी व मोटी रोटी ।

रू. भे.—रोटौ, रोठ ।

रोटकौ—देखो 'रोटौ' (ग्रल्पा. रू भे.)

रोटड़ी—देखो 'रोटी' (ग्रल्पा. रू. भे.)

रोटाक—वि'—१ ज्यादा भोजन करने वाला ।

२ दूसरो के घर जाकर भोजन करने वाला ।

रोटी—स. स्त्री.—१ चकले पर गेहू, जौ ग्रादि के ग्राटे को वेल कर बनाई हुई चपाती जो ग्राच पर सेक कर भोजन के रूप मे खाई जाती है।

उ०—जद हाळीडा घर नै ग्राया, दीना थाळ लगाय । मेर-मेर दूघडलो घाल्यौ, दो-दो रोट्या माय । मारुणी, घणी कमावणी । —लो. गी

२ उक्त खाद्य पदार्थ के सिवा, चावल, दाल, तरकारी ग्रादि के साथ एक समय प्रायः एक साथ बनाई जाने वाली कुछ विशिष्ट चीजे, रसोई ।

उ०—दोय रुपिया रा गेहु मेल्या ग्रधेली ना मूंग ग्रनं एक रुपया रौ घी मेल्यौ । कह्यौ महाजन ग्रावै जिणा नै पइसा लेइ रोटियां कर घालवौ कर । —भि. द्र.

३ भोजन, खाना ।

उ०—१ हरीया हक पिछाणीयै, ग्रनहक मु क्या काम । जो कुछि महजा देत है, रिजक रोटीयां राम । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ जेठ सुदी ४ मनीवार मु'नैणसी दिन घडी ४ चढता पोकरण चालीयो कोस ४ गाव लोहवे पोकरण रै गाव रोटी खाधी । —नैणसी

क्रि. प्र.—करणी, मागणी, जीमणी, पकाणी, सेकणी ।

४ उक्त प्रकार की चीजे खाने हेतु किसी के यहा मे मिलने वाला निमत्रण ।

क्रि. प्र.—देणी, कैणी ।

५ सपत्ति, धन दौलत ।

उ०—जग मे दीठी जोय, हेक प्रगट विवहार मे । ग्रौर न मोटी कोय, रोटी मोटी राजिया । —किरपारांम

ग्रल्पा;—रोटडी ।

रोटीराव, रोटेराव—वि.—१ मेहमानो की ग्रच्छी खातिर करने वाला, ग्रातिथ्य सत्कार करने वाला ।

उ०—१ पण भीमजी रै बडेरां री कमांण दूजी तरै री ही । वै रोटीराव ग्रर तरवार रा घणी हा । पीढिया लग उणां रै घरै ग्रायोडो मेहमाण भूख्यो को गयो नी । —रातवासो

उ०—२ सोनगरो ग्रक्वैराज रिणधीरोत बडो रजपूत । पाली पटै बालीसां सीघला सु बडा-बडा काम जीतिया बडो दातार, बडो जुझार, रोटेराव बडो चडा रो खाटणहार । संवत् १६०० री वेढ काम ग्रायो । —राव मालदेव री बात

२ वैभव सम्पन्न, धनाढ्य ।

रोटौ—स पु.—१ मावे के पेडे के ग्राकार का ग्रगारों पर सेका हुग्रा गेहू का गोळ रोटा, बाटा ।

उ०—१ रूका भात गोळिया रोटां, सुजडा धीरत सोहितां मार । सारा सरां साबळा सूळां, ग्रण-रुचता पुरसिया ग्रणपार । —सादै मेवावत री गीत

उ०—२ सो एकै दिन देपाळ धाडो लेनै ग्रावतो । सो हरख री ग्राप रै तळाव ऊपर गोठ कीवी । ग्रठ मास राधो । चावळ राधा । ग्रर रोटा हुवै छै । — देपाळ धध री बात

वि. वि—यह प्राय दाल के माथ खाया जाता है । इसका चूरमा भी बनता है।

२ तुरन्त की ब्याही हुइ गाय, भैंस या बकरी का दूध जो गरम करने पर जम जाता है ।

३ रहट के चक्र के बीच वाले लकडी के स्तम्भ के नीचे रक्खा जाने वाले लोहे का उपकरण ।

वि.—टेढा ।

देखो—'रोट' (रू. भे.)

मह —रोठ ।

ग्रल्पा.,—रोटकौ ।

रोठ—१ देखो —'रोट' (रू भे.)

२ देखो —'रोटौ' (मह., रू. भे.)

रोड—स. पु.—१ बोये हुए ग्रनाज के ग्रकुरित होने पर तेज वर्षा के होने से ग्रनाज के पौधे का विकृत होना ।

२ छोटा घोडा ।

वि.—१ दोगला, वर्णसकर ।

२ मूर्ख ।

उ०—तन ग्रखत रोड डोलै तिकै, उर ग्रनर सूं ग्राफळै । दम पिमण घूंट पेखू उमग, होका दीठा हाफळै । —ऊ. का.

३ देखो 'रोड' (रू. भे.)

रू. भे —रोढ ।

ग्रल्पा.—रोडियौ ।

रोडणो, रोडबो—देखो 'रोडणो. रोडबो' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरा राजा नरसघ रै साथ सींधळ, मोळखी, हाडा,

भाभरसी, राव मरव नगारी रोडता कोट मांहै ग्राया ।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ सकनिकर मोडलउ, वल्लिगहन ग्रोडलउ, पाखांग रोडलउ, सुवादंडि ग्राच्छोडलउ, गिरिनदी विलोडलउ, महाभड़ डोहलउ,… …………

—व स.

रोडणहार, हारौ (हारी), रोडणियौ—वि० ।

रोड़ियोड़ो, रोडियोड़ो, रोड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रोडीजणौ, रोडीजबौ—कर्म वा० ।

रोडियोड़ो—देखो—'रोडियोडो' (रू भे)

(स्त्री रोडियोडी)

रोडियो—देखो—'रोड' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—पिगळे तावड़ा कवा हुता प्रगट, फीक पुटापरै पड़ै जाफी । मठा नर वस रहुता डरै मोडिया, रोडिया मार मू रहै राजी ।

—पीरदान ग्राढौ

रोडी—वि.—१ छोटे कद का, ठिगना ।

रू. भे.—रोडौ

२ देखो—'रोडौ' (रू भे.)

उ०—कड़ीउ जाणइ रोडा, मोनी जाणइ सोनाकडा, कदोई जाणई बाकवडा हंस जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर, मूख जाणइ मीठा द्रस्टि जाणइ दीठा ।

—व. स.

रोढ—देखो—'रोड' (रू भे.)

उ०—१ ग्रसली री ग्रौलाद, खून करघा न करै खता । बाहै वादोवाद, रोढ दुलाता राजिया ।

—किरपाराम

उ०—२ बाकरखा रोढ घोडै चढियो बहै छै ।

—ठाकुर जैतसी री वारता

रोढणौ, रोढबौ—कि स.—१ काटना ।

२ नष्ट करना, नाश करना ।

उ०—हरि तणी साथि कै रीछ वानर हुग्रा, भगत महिति रिखि इदजीत वाली भूग्रा । बाधियौ समद पर ग्रमुर रो बाढियो, राम-चद ग्राखि राकस घणौ रोढियौ ।

—पी प्र.

रोढणहार, हारौ (हारी), रोढणियौ—वि ।

रोढियोड़ो, रोढियोड़ो, रोढयोडौ—भू का. कृ. ।

रोढीजणौ, रोढीजबौ—कर्म. वा ।

रोढियोड़ो—भू का कृ—१ काटा हुग्रा. २ नाश या नष्ट किया हुग्रा । (स्त्री रोढियोडी)

रोढौ—१ देखो—'रोडौ' (रू. भे)

उ० —हिव राजा ग्राप ग्राड-नै तळाव ऊपर बेठौ चेजो करै । इतरै ज जसमादे रोढा ग्रांणि नाखै ।

—जसमा ग्रोडणी री वात

२ देखो—'रोढ' (ग्रल्पा, रू. भे.)

रोण—स स्त्री. [स. रवण] ध्वनि, ग्रावाज ।

उ०—गरज्जै दमामा गज थाट गुडिया, रिण तुर मैं भेर नीसाण रुडिया । ग्रसमान मू सीस लागा ग्रभगा, हुए पक्खरा रोण हाहूलि तुरगा ।

—गु. रू. बं.

रोणकियौ, रोणकौ—देखो—'रोवणकौ' (रू. भे)

(स्त्री रोणकी)

रोणौ—देखो—'रोवणौ' (रू. भे)

रोणौ, रोबौ—देखो—'रोवणौ, रोवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रिण रचिया मा रोइ, रोऐ रिण छाडै गया । इण घर तौ ग्राणा लगै, मरणौ मंगळ होइ ।

—मा. वचनिका

उ०—२ पछै बेटी नी तौ मा नै हुकम फरमावण री की बात करी ग्रर नी उणरी छाती मे मूडो घालनै रोई ।

—फुलवाडी

उ० ३ भूख न लागइ भाव सिउ, तरस न दीठा तोय । वारी न रहइ विधि किसी, ग्राखि रही रहि रोय ।

—मा. का प्र.

रोतासळौ—स पु.—मोतियो से जडा हुग्रा 'छत्र' ।

उ०—लखीजै ग्रसी भाति ग्राकाश लागौ, भवानी खडा पाण लीधा ग्रभागौ । हमेसा रहै मत्र रो सीस हाथै, मुखै रत्र रोतासळौ छत्र माथै ।

—मे म

रोदंगी—वि —१ जबरदस्त, भयकर ।

२ क्रोधपूर्ण, क्रोधयुक्त ।

रोद—देखो 'रौद्र' (रू. भे.) (डि को)

उ०—१ समोभ्रम 'गोकळ' 'पातल' साह, बिभाडत रोद खडा हल-वाह । महाभड सूर 'फतावत' 'मान', तेगा भट रोद । हणै मस-तान ।

—सू. प्र.

उ०—२ पूळिया घणा घणा गळि पाळै, खळतळिया पैला खळ रोद । ग्रसपति दळा पटना ग्राम्ही, साम्ही धार चढौ सीसोद ।

रावत केमरीसिघ सीसोदिया रो गीत

उ०—३ कणो 'उगर' तठै ग्रत कोडै, उदियासिघ जेही पिसण ग्रोडै । रोदां कटक ग्रटकिया राहै, 'सावळ' सूत त्रूटौ पतसाहै ।

—रा रू.

उ०—४ रग भीम उतग सुढाळै, रोदां मारुत मूके माण । मदमुक महाबळ प्रम परम्पळ, वारामास वसाण ।

—मा वचनिका

रोदकार- देखो—'रौद्रकार' (रू भे)

उ०—रोदकार ग्ररडाव, पडै गोळा ग्रणपारा । व्है ग्रसि गज भड होम, धोम मिलि घटा ग्रधारा ।

—सू. प्र.

रोदन—स पु [स रोदनम्] १ रोने की क्रिया या भाव, रुदन क्रन्दन, विलाप ।

उ०—विकथा चार कीधी वलि, मेल्या पच प्रमाद । इस्ट वियोग

पड्यां किया, रोवन विलवाद। —स. कु.

२ आंसू।

रोवपत, रोवपति—देखो—'रौद्रपत' (रू. भे)

उ०—सुरज कलंग न तौ पत समहर, पहव ऊजास करे खडपाड। रणां **रोवपत** पत-रांनौ रुकै, राजा सरस न मडै राड। —चावडदान बारहठ

२ देखो—'रुद्रपत' (रू. भे)

रोवराव—देखो—'रौद्रराव' (रू भे)

उ०—रैवत वळिया **रोवराव**, वज जत्रक भेरी। माग न लाधै भाग रथ, रज डंबर घेरी। —लूणकरण कवियौ

रोवसी—वि. [स.] स्वर्ग और पृथ्वी का।

रोवाळ—देखो 'रौद्र' (रू भे)

उ०—१ थाळां बाधिया बडाळा भडा ग्रमाळा घुरता चौडै, गंध-टाळा काळी घडा मेळिया गरीठ। ग्रभगा ग्रौरंगवाळा दिली वाळा वेध ग्राटै, **रोवाळा** लकाळा बागौ किरम्माळा रीठ। —माहिजादा री वेढ री गीत

उ०—२ मछराळ रढाळ रोमाळ मनै, विकराळ वडाळ जौ काळ-वनै। ढेचाळ भुजाळ **रोवाळ** ढहै, सत वीसाए सूर सधीर सहै। —पा प्र

रोव्र—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ 'ग्रखाहर' वाहत खाग उनग, जुडै जिम भारय दारुण जग। वळीवळ लूवत **रोव्र** व्रजाग, भिडै सुजि सूर हुवै दुय भाग। —सू प्र

उ० –२ जगराम विजावत काज जुद्ध, **रोव्र** सू खडौ ग्रादर विरुद्ध। 'मामळ' खळ भजण महा सूर, ग्रारभ कुभ सुत खित ग्रद्दूर। —रा. रू

उ०—३ केसरीसिंघ रामसिघ सवळसिंघ के जाण, राम बाण से ग्रचूक **रोव्र** छोभ पाए। भार्वसिंघ सवळ का साडण सवाई, ग्रौरंगसाह सी लागै जाकू साह की लडाई। —रा. रू.

रोव्रणी, रोव्रांणी—स. स्त्री —१ यवन सेना मुसलमानों की सेना।

उ०—मडै नव तेरही नवै ग्रह मांडिया, ब्राह्मण फिरै नारद बिचाळै। **रोव्रणी** बीदणी छोहड़ा राळिया, रुधर तबोळ मुख हुत राळै। —दुरसौ ग्राढौ

२ मुसलमान की स्त्री, यवन स्त्री।

३ ग्रसुर सेना।

४ देखो—'रुद्रांणी' (रू. भे.)

रोव्रांयणि, रोव्रांयणी, रोव्रायणि, रोव्रायणी—सं. स्त्री.—१ मुसलमानों की सेना, यवन सेना।

२ मुसलमान की स्त्री, यवन स्त्री।

३ ग्रसुर सेना।

उ०—धरि कोप करणां ग्रेह धजवड रूप रचि **रोव्रायणी**। जळ निमळ करै मजण, चरणा धीर धीर चव्रायणी। —मा. वचनिका

४ देखो 'रुद्राणी' (रू. भे.)

रोध—स. स्त्री. [स. रोधः] १ रोक, रुकावट।

उ०—१—टळै ढील लागां घणा फील टल्लां, हुठै नीठि पाइक्क हल्ला हमल्ला। तिकां ग्रग्ग हेरब कै छैल तूटै, छकायां सुरा **रोध** रै खेल छूटै। —वं. भा.

उ०—२ दूसरै बुरै न रहौ, **रोध** तं दियौ। ग्रापनै बुरै पै ग्रहौ, क्रोध ना कियौ। —ऊ. का.

२ ग्रडचन ग्रटकाव।

उ०—सोध सोध गुण मारसौं, **रोध** बोध बुध रास। सुगधा करण प्रबोधमति, कवि कुळ बोध प्रकास। —क. कु. बो.

[स. पु] ३ ग्रावेश, जोश।

४ क्रोध, गुस्सा।

[स. रोधस्] ५ किनारा, तट। (ग्र. मा)

उ०—निज सिर दे नागारजण, कियौ समर कर क्रोध। पाटण पत भाजै पडै, रेवा सागर **रोध**। —बां. दा.

६ जलाशयो या नदियो का बाध।

रोधक—वि. - रुकावट पैदा करने वाला, रोकने वाला।

रोधणौ, रोधबौ—क्रि. स.—१ रुकावट पैदा करना, रोकना।

२ कैद करना, बन्दी बनाना।

उ०—पति ग्रलवर करि कोप, रामनाथ कवि **रोधियौ**। पग ग्रगद ज्यू रोप, छत्रधर पता छुडावियौ। —ग्रबादांन रतनू

रोधणहार, हारौ (हारी), रोधणियौ—वि०।

रोधिग्रोडौ, रोधियोडौ, रोध्योडौ—भू० का० कृ०।

रोधीजणौ, रोधीजबौ—कर्म वा०।

रोधांण—स पु —सहार, नाश।

उ०—ज्वाला वाळै नेत मीन केत ज्यू पचातां जयौ, रुकां हर रचातां दळा विरुम्मी **रोधांण**। गाहां दहूं बीच एक ग्रनम्मी 'बीजैम' राजा, जांगियौ जिहान जम्मी ठांमतां जोधाण। —हुकमीचंद खिडियौ

रोधियोडौ—भू. का. कृ.—१ रुकावट पैदा किया हुग्रा, ग्रवरुद्ध किया हुग्रा। २ कैद किया हुग्रा, बन्दी बनाया हुग्रा।

(स्त्री. रोधियोडी)

रोप—स. पु [म] बाण, तीर। (डि ना. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मणियां रयण अमोल, रोप मणियां मोती रुख। मीहल मणियां सीप, मिळै अमिबर फणियां मुख। —बं. भा.

उ०—२ तिकां हित हेत वणी नह तोप, रही बजि रीठ बिहूं बळ रोप। जिका सतराहि भगतिय जेह, सुवा अंड भुम्मि हुवा धड़ सेह। —मे म.

२ छिद्र, विवर।

सं. स्त्री.—३ प्याज, मिरच आदि के पौधे विशेष को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाने की क्रिया या भाव।

४ उक्त उद्देश्य से उखाड़े गये पौधे।

५ स्थिर रहने की क्रिया या भाव।

रोपण-सं. पु. [स. रोप] १ तीर, बाण। (अ. मा., ह नां. मा.)

[सं. रोपणं] २ रोपने की क्रिया या भाव।

उ०—जगत ठांम जग मांमि,रोपण जग रजण। जग वदण जग जेठ, जगत सेवण जग भजण। —पी ग्र.

३ घाव पुरने की या घाव भरने की क्रिया। (अमरत)

४ घाव पुरने हेतु लगाई जाने वाली दवा।

वि.—रोपने वाला।

रोपणी- स. स्त्री.—१ फाल्गुन मास की स्मृति या होलिका संकेत के निमित्त माघ मास की पूर्णिमा को जंगल से काट कर लाया हुआ वह शमी वृक्ष जो गाव के मुख्य द्वार पर खडा किया जाता है।

उ०—अरध ऊरध बिच रूपी रोपणी पाचुई गेहर रमो री। तीन गुणारी फागुण कीजै, बसत पचीस करो री। —श्री हरिरामजी महाराज

वि. वि.—कई गांवो में यह गाव के चौहटे पर कही मुख्य द्वार पर, कही होली जलाने के स्थान पर खडी की जाती है।

२ रोपने का कार्य।

रोपणी, रोपबौ—क्रि. स.—१ स्थिर करना, पाव जमाना।

उ०—१ रावतिया पग रोपणी वतळामी बह वाघ। बोहळा पाटा बांधणा, आछौ होसी आघ। —बां. दा.

उ०—२ पर गढ लेणा रोप पग, अरि सिर देणा तोड। धरा हुत नहि धापणौ, जूंबालमां न जोड़। —बां. दा.

उ०—३ जिसै करै हट पाहुणो, इसै करै हट एह। पग थिर रोपे पाहुणी, एह हुए असनेह। —बा. दा.

उ०—४ पातसाह रौ जूनी आगै भी म्होबतखा देवगढ हीज सरणै रहियौ। दूजा राजा रांणा राव सो तौ पातसाहा सु कोई न रोपे पाव। प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ ठानना, निश्चय करना।

उ०—१ रोपी अकबर राड, कोट झडे नह कांगरै। पटकै हाथळ सीह पण, आपळ व्है नह बिगाड। —बा. दा.

उ०—२ इतरी कह मोहकमसिंह नु बचोपियौ। पण औ तौ कोपियौ सो कोपियौ। मुंहडै अण-माप रौ रोस व्यापियौ। मन मांहि मीलडै नु मारण रौ दाव रोपियौ। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—३ एक तो नगारो घणिया रातैनाडै बाजै औ, दूजोड़ो नगारो घणिया ठेट बाजै औ क झगडो रोपियौ। बा बा झगड़ो रोपियौ, गौरा रा माथा कंवरा लीधौ औ क झगड़ो रोपियौ। —लो. गी.

३ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ मे घसाना या गडाना।

उ०—१ बार अध्रियावणी वीर किलकै बकै, घीठ कठठै घड दीठ घोळै। सार साचा तणौ निजड हरनाथ सुत, रोपियौ पटाझर सीस रौळै। —विजैदांन सांदू

उ०—२ ओपम नयण खिवतां आरण, दाखै सूर 'विहारी' दारण। हाथिया तणा जगी हवदा मे, रोपूं सेल घडां रवदां मे। —सू. प्र.

४ किसी पदार्थ का कुछ अश या भाग जमीन के अन्दर इस प्रकार जमाना या स्थापित करना कि वह पदार्थ वहा स्थित हो जाय।

उ०—हरीया चौरी चहुं दिसा, सत व्रत रोप्या थभ। हरि हथळेवौ हरख सू, किरत कमाई कभ। —अनुभववाणी

५ खडा करना, टिकाना, रोकना, ठहराना।

६ दृढता पूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकाना, डटाना।

७ बीज रखना, बोना।

८ पौधा जमीन मे गाडना, किसी पौधे को एक स्थान मे उखाडकर दूसरे स्थान मे जमाना, स्थापित करना।

उ०—उपसम तरुवर रोपइ, लोपइ मनसदेह। मुक्ति तणउ पथ दाखिय, राखिय त्रिभुवन रेह। —जयसेखर सूरि

९ सम्बन्ध स्थापित करना।

उ०—लोपै हीदू लाज, सगपण रोपै तुरक सू। आरज कुळ री आज, पूजी राण प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

१० धारण करना, पहनना।

उ०—पोरस्स नकुळ पडव प्रमांणि, तब बधै जूसण कसण ताणि। ओपत राग हाथां अनोप, तुडताण सीस रोपंत टोप। —गु. रू. ब

११ मकान, भवन आदि की नीव लगाना।

रोपणहार, हारौ (हारी), रोपणियौ—वि०।

रोपिओड़ौ, रोपियोड़ौ, रोप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोपीजणौ, रोपीजबौ—कर्म वा०।

रोपाणौ, रोपाबौ—क्रि. स. [रुपणौ व रोपणौ क्रिया का प्रे. रू.] १ स्थिर करवाना, पाव जमवाना।

२ निश्चय करवाना ।

३ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ मे धसवाना, गडवाना ।

४ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन मे इस प्रकार जमवाना या स्थापित करवाना कि वह पदार्थ वहा पर स्थित हो जाय ।

५ खड़ा करवाना, टिकवाना, रुकवाना, ठहराना ।

६ दृढतापूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकवाना, डटवाना ।

७ बीज रखवाना, बुवाना ।

८ किसी पौधे को एक स्थान से उखडवा कर दूसरे स्थान पर जमवाना, स्थापित करवाना, पौधा जमीन मे गडवाना ।

९ रखवाना ।

१० धारण करवाना, पहनवाना ।

११ मकान, भवन आदि की नीव दिलवाना ।

उ०—पछै धणी माथ राखियौ । घणा घोडा लिया । गढ घातण री राग रोपाई । भीत हुण लागी, मु उठै खेड़ा देवत,सु भीत दीहा री करै तिसडी रात री पाड नाखै वाज आयौ । —नैणसी

१२ सम्बध स्थापित करवाना ।

रोपाणहार, हारौ (हारी), रोपाणियौ—वि ।

रोपायोड़ौ—भू का कृ. ।

रोपाईजणौ, रोपाईजबौ—कर्म वा ।

रोपाड़णौ, रोपाड़बौ, रोपावणौ, रोपावबौ । (रू भे)

रोपाड़णौ, रोपाड़बौ—देखो—'रोपाणौ, रोपाबौ' (रू. भे)

रोपाड़णहार, हारौ (हारी), रोपाड़णियौ—वि ।

रोपाडिओड़ौ, रोपाडियोड़ौ, रोपाड्योड़ौ—भू का कृ. ।

रोपाड़ीजणौ, रोपाड़ीजबौ—कर्म वा ।

रोपाड़ियोड़ौ—देखो 'रोपायोडौ' (रू भे)

(स्त्री रोपाडियोडी)

रोपायोड़ौ—भू का. कृ —१ स्थिर करवाया हुआ, पाव जमवाया हुआ. २ निश्चय करवाया हुआ. ३ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन मे इस प्रकार जमवाया या स्थापित करवाया हुआ होना कि वह पदार्थ वहा पर स्थित हो गया हो ४ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ मे धसवाया हुआ, गडवाया हुआ. ५ खडा करवाया हुआ, टिकवाया हुआ, रुकवाया हुआ, ठहराया हुआ. ६ दृढतापूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकवाया हुआ, डटवाया हुआ. ७ बीज रखवाया हुआ, बुवाया हुआ. ८ किसी पौधे को एक स्थान से उखडवा कर दूसरे स्थान पर जमवाया हुआ, स्थापित करवाया हुआ, पौधा जमीन में गडवाया हुआ. ९ रखवाया हुआ. १० धारण करवाया हुआ पहनाया हुआ. ११ मकान भवन आदि की नीव दिलवाया हुआ. १२ सम्बध स्थापित करवाया हुआ.

(स्त्री. रोपायोड़ी)

रोपावणौ, रोपावबौ—देखो—'रोपाणौ, रोपाबौ' (रू. भे.)

रोपावणहार, हारौ (हारी), रोपावणियौ—वि. ।

रोपाविओड़ौ, रोपावियोड़ौ, रोपाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रोपावीजणौ, रोपावीजबौ—कर्म वा ।

रोपावियोड़ौ—देखो—'रोपायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रोपावियोडी)

रोपियोड़ौ—भू का. कृ —१ स्थिर किया हुआ, पांव जमाया हुआ. २ ठाना या निश्चय किया हुआ. ३ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ मे धसाया हुआ, गडाया हुआ. ४ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन के अन्दर इस प्रकार जमाया या स्थापित किया हुआ होना कि वह पदार्थ वहा स्थित रहे । ५ खडा किया हुआ, टिकाया हुआ, रोका हुआ, ठहराया हुआ. ६ दृढता पूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकाया हुआ,डटाया हुआ. ७ बीज रखा हुआ, बोया हुआ. ८ किसी पौधे को एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान मे जमाया हुआ, स्थापित किया हुआ. ९ रखा हुआ १० धारण किया हुआ. पहना हुआ, ११ मकान, भवन आदि की नीव लगाया हुआ. १२ सम्बन्ध स्थापित किया हुआ ।

(स्त्री. रोपियोडी)

रोब—म. पु. [फा.] १ आतंक दाब ।

२ प्रताप, तेज ।

३ धाक, डर ।

रू भे —रौब ।

रोबणौ, रोबबौ—देखो 'रोवणौ, रोवबौ' (रू. भे.)

उ०—स्वान को सुभाति, माति रोवणू करयौ । धोवनूं न कीन नाहि, रोबबूं परयौ । —ऊ. का.

रोबणहार, हारौ (हारी), रोबणियौ—वि० ।

रोबिओड़ौ, रोबियोड़ौ, रोब्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोबीजणौ, रोबीजबौ—कर्म वा० ।

रोबदार—वि [अ+फा.] जिसकी धाक है । जिसका चहरा तेज है ।

रू. भे —रौबदार ।

रोबियोड़ौ—देखो —'रोवियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री रोबियोडी)

रोबीलो-वि.—१ जिसका रोब हो।

२ जिसकी धाक हो।

३ जिसका चेहरा रोबदार हो।

रू. भे.—'रोबीलो'

(स्त्री. रोबीली)

रोबो, रोभो-सं. पु.—१ आपत्ति, कष्ट, तकलीफ।

उ०—१ पहली कियां उपाय, दव दुसमण आंमय दटै। प्रचड हुवां बस थाय, रोभा घातै राजिया। —किरपाराम

उ०—२ घण लोभा लै गाळवां, पिसणा रोभा पाड। जै सोभा जोधो लियै, घर थोभा बण धाड। —रेवतसिंह भाटी

उ०—३ बेरा बैरागर सागर सम सोभा, रोती सागर नै सागर निय रोभा। धावै इगधारा दारा मुख धोवै, जीवन सजीवन जीवन घन जोवै। —ऊ का.

रोमंच-देखो—'रोमांच' (रू. भे)

उ०—रोमंच अग थोम रूप, ब्रह्म तेज मे वर्णे। जटा म झमटा जवागि, आग नेत्र ऊफणे। —सू. प्र.

रोमंचणो, रोमंचबो-कि अ.—१ रोमांचित होना।

उ०—१ एतला देख अचिरज हुवै, रोमचै सुर नर सबै। सुप्रसाद कीध जै सिंध तै, टणमण चाहै चक्खवै। —लक्ष भाट

उ०—२ जिनवर भत्ति समुल्लसिय, रोमचिय निय अंग। नाना विधि करि वरणवु, आंणी मनि उछरग। —स. कु

रोमंचणहार, हारौ (हारी), रोमचणियो— वि.।

रोमंचिवोड़ो, रोमचियोड़ो, रोमच्योड़ो—भू का कृ.।

रोमंचीजणो, रोमचीजबो—भाव वा।

रोमंचियोड़ो-भू. का कृ.— रोमाचित हुवा हुआ।

(स्त्री. रोमचियोड़ी)

रोम- स. पु. [स. रोमन्] १ शरीर पर के महीन बाल, रोआ।

(अ. मा.)

उ०—१ छत्रपति हूंत सहस गुण छाजै, वीरभद्र गण तठै विराजै। रोम जटा ऊभा विकराळा काळा रोम रोम प्रहि काळा। - सू प्र.

उ०—२ सो मूरख ससार, कपट जिणां आगळ करै। हरि सह जाणणहार, रोम रोम री राजिया। — किरपाराम

उ०—३ काय निपाप करिस इम केसव, दडवत करै तूझ दयता-दव। रोम रोम तो नाम रहाविस, इम करतौ हरि-चरणा आविस। —ह. र

उ०—४ रोम रोम आंमय रहै, पग पग सकट पूर। दुनिया सू नजदीक दुख, दुनिया सू सुख दूर। —बा दा

रू. भे.—रु', रुम, रुग्रौ, रुम, रु, रू' रू., रूम।

२ छेद, छिद्र।

३ शरीर के बालो के छिद्र जिनमें से बाल निकलते रहते हैं।

उ०—बध्यौ बळ घी गल कज विकास, प्रभा परिपूरण प्रेम प्रकास। हरदै हुय नाम हली हमगीर, सवी रग रोम खुली सुख सीर। —ऊ का.

उ०—२ अलख एक ररकार की, रोम रोम धुनि होय। जनहरी-या जा तन लगी, ता तन जागै सोय। —अनुभववाणी

४ जल, पाणी।

५ रूम देश।

उ०—''' पक्कण बुखारा कुडक्क तोसल मिहल दमिल अज्जल बिल्लल पारस खम लउस हारो ममोम-हिम रोम मरुग......। —व. स.

६ रूम देश मे उत्पन्न घोडा

७ घोड़ा।

उ०—चढै उमेद मु ओपम चद, दिपै दळ ओरन तारन व्रंद। अभंगिय रोम हुवो असवार, दिपै चहूवाण सुकान उदार। —सि मु. रू.

रू. भे.—रूमी

८ हरड, हरै, हरीतकी। (ह. ना मा.)

६ एक द्वीप का नाम। (सभा)

रोमकंद, रोमकंदी-स पु.—प्रत्येक चरण मे ८ सगण का डिंगल (राजस्थानी) का एक छद विशेष जिसमे क्रमश ६, ६, ८ और ६ वर्णों पर यति होती हैं और अन्तिम चरण के दूसरे छद के चतुर्थ चरण मे पुनरावृत्ति होती है। एक पूरे छन्द मे ३२ सगण होते हे।

रोमक-स. पु.—१ नमक जो साभर झील के पानी मे उत्पन्न हुआ हो।

२ रोम देश या उक्त देश का निवासी।

३ ज्योतिष सिद्धान्त का एक भेद।

रोमकूप-स पु. [स. रोमन् + कूप.] शरीर की चमडी पर के वे छिद्र जिन मे से बाल निकले हुए होते हैं।

रोमकेसर-स. पु. [स रोमन् + केशर या केसर] चवर, चामर।

रोमगुच्छ-सं पु. - चवर, चामर।

रोमचरमा-स पु.- वह बर्तन जो ऊट के चमडे का बना हुआ होता है।

उ०—सर्वंगि सीस मूँडित बिहाल, मग लोपि जात बामाग व्याल धन पात्र रोमचरमा निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार। —ला. रा.

रोमछर-स पु —१ मूर्ति।

२ शारीरिक कान्ति, शाभा।

उ०—पिलाण री साजत ऊभी दीठी । तरै छानै छै बिडो माहै दीठी डाइजी रै बर री सबी दीसै छै । नाक री डाडी, आख्या, निलाड ढील रोमछुर देखि मही कवरजी ही छै ।

—जगदेव पवार री बात

रोमणकाच—स पु.—एक प्रकार का आईना विशेष ।

उ०—राजा सु प्रतीहारि निवेदित मारग हूतउ आस्थान मडपि प्रवेस करइ, ता आगइ किसिउ अरथ देखइ, **रोमणकाच** हालिउ, बहुल बहुल कुकुम तणउ छडउ दीघउ,······ । —व स

रोमत—स. पु —लालायित होने की क्रिया या भाव

रोमनकैथलिक—स पु —ईसाईयो का एक सम्प्रदाय तथा उस सम्प्रदाय का व्यक्ति ।

रोमपट—स पु यौ —ऊन से बना हुआ कपडा, ऊनी कपडा ।

रोमबद्ध—वि यौ —रोओ से बुना या बंधा हुआ ।

स पु —१ ऊन की बनी हुई कोई चीज ।

२ ऊनी कपडा ।

रोमभूमि—स स्त्री. यौ [स. रोमन् +भूमिः] चमडा, चर्म ।

रोमराइ. **रोमराजी**—स. स्त्री यौ [स. रोमन् +राजि या राजी] १ रोमो की पक्ति, रोमावलि ।

उ०—१ कचन मे सोपान सुपेखित, **रोमराइ** उलमाई । आगै एक भुवन अति सुंदर, वसुधा जागि हमाई । —वि कु.

उ० २ कवीसर कहै जिका मुग लैगी, पिण कठै त्रिवळी नै कठै त्रिवैणी जोडजै है । —र हमीर

रोमलता—स स्त्री [स रोमन् +लता] रोमो की पक्ति रोमावली ।

रोमांच—स पु [रोमन् +अञ्च] आनन्द, आश्चर्य या भय आदि के कारण शरीर के रोओ का उभर जाना या खडे हो जाना ।

उ०—लेग थमो बिसराम नीचगिर पग्बत माथै । धण पुहुपा **रोमांच** मिलना कदमा माथै । गधै खोह, सुगध विलासण कामणिया रै, मद छक जोबन पूर जतावै गरण पुरवा रै । —मेघ

क्रि. प्र.—होगो

रू. भे —रोमच

रोमांचित—वि. [स रोमन् +अञ्चित] जिसके आनन्द आश्चर्य या भय आदि के कारण शरीर के रोगटे खडे हो गये हो, हर्षित, पुलकित ।

उ०—आणद लखण **रोमांचित** आसू. वाचक गदगद कठ न वरणै । कागळ करि दीधौ करुणाकरि, तिणि तिणि हीज ब्राहमण तणै । —वेलि

रू. भे —रुमाचित

रोमांत—स. पु. [स रोमन् +अन्त] हथेली की पीठ के बाल ।

रोमांतिका—स. स्त्री [स.] प्रायः बच्चो को होने वाला एक प्रकार का रोग विशेष जो कि चेचक रोग की तरह का होता है ।

(अमरत)

रोमाळी, **रोमावळ**, **रोमावळि**, **रोमावळी**—स. स्त्री [स. रोमन्+आली, आवलि, आवली] १ रोमो की पक्ति या कतार । (अ. मा, डि. को, ह ना मा.)

२ पेट के बीचों बीच नाभि से ऊपर की ओर गई हुई रोओं की पक्ति, रोमराजी ।

उ०—सुच्छम **रोमावळि** सुखद, बरणी उकति बिचार । सांप्रति रस सिणगार री, बेल कियौ बिसतार । —बां. दा.

३ शरीर के बाल ।

उ०—१ बसै तू **रोमाळी** कवन, थळ खाली तुज बिना । लखां से चाचाळी कन कि, बळ माळी अज किना । —ऊ. का.

उ०—२ **रोमावळी** डील री उभरी निजर आवण लागी ।

—कुवरसी सांखला री वारता

वि.—२ सुदर, रूपमयी ।

उ०—पीडळिया **रोमाळियां** हो जी, बै री आध देवळ केरो थाम । हे गवरल, रुडो है नजारो तीखो है नैणा रो । —लो. गी.

रू भे —रुमाळी, रूवाळी, रुआमाळ, रुआमाळी, रूआळी, रुआवळ, रुआवळी, रुवाळी, रूणावळी

रोमि—देखो—'रोम' (रू भे)

रोयड़ौ—देखो—'रोहिडौ' (रू. भे)

रोयण—देखो—'रोहिणी' (रू भे.)

उ०—मिगसर वाव न वजियो, **रोयण** तपी न जेठ । कंथा म बांधै झूपडो, रहसा बडला हेठ । —अज्ञात

रोयणी—देखो—'रोहिणी' (रू. भे.)

रोयणीपत, **रोयणीपति**, **रोयणीपती**—देखो 'रोहिणीपति' (रू भे.)

रोयतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे)

रोर—स. पु.—१ कगाली, निर्धनता ।

उ०—१ सिर जोर खग दत सजणा, पह **रोर** आमय पंजणा । भड जुध असता भंजणा, रघुराज सता रंजणा । —र. ज. प्र.

उ०—२ कवी कीत दार्ने जिता रोर कापै, अनेकां कुमेरा जिता माल आपै । अपै डायजै भूप अन्नेक अत्थ, राजा ओपि पथ चढै दासरत्थ । —सू. प्र.

उ०—३ रज रीति रहै वस वाट वहै, अरि थाट दहै अविआट इसो । अथ लाख अपै कवि **रोर** कपै, जगि नाम थपै क्रन भोज जिसो । —ल. पि.

२ दुख, कष्ट ।

उ०—खळक तारण तरण खळा खडण खतम, **रोर** जण विहंडण

सुलव सरसें। सियावर तूझ सो तुही दासें सको, दूसरी समोवड न को दरसें। —र. रू.

३ काला, श्यामवर्ण। * (डिं. को)

४ तरल हलुवा।

उ०—श्रोगरा मेटणहार, श्रमोलक श्रोखद इण में। गूंद घणो गुणकार, मध्यम सक्ति है जिरा में। जिरा में पीड छुंटाय, हाड टूटोडा सांघे। बूढो बाळक घणी, रोर जच्चा नै रांधै। —दसदेव

[सं. रवण] ५ कोलाहल, शोरगुल।

६ कौतुहल।

७ देखो—'रोड' (रू. भे.)

रू. भे.—रोरि।

रोरप्रवार-सं. पु.—दुःख, कष्ट। * (डिं. को.)

रोरव-सं. पु.—१ कंगाली, निर्धनता, दारिद्रय, निध।

उ०—कवियणां सनातन जांण नव करै, दोर रोरव तणो हरै रहणो। गयो किण दिन ग्रहळ श्रयो धन गाजणो, किसन रा पोतरा तणो कहणो। —कविराजा बांकीदासजी

२ देखो 'रौरव' रू. भे.।

रोरहर-सं. पु.—राजा, नृप। (डिं को)

रोरहरणाळ-वि.—१ दुःखों को मेटने वाला।

२ दातार, उदारमना।

उ०—'वीर' तणो नर वीर वड, तरण रूप तेजाळ। 'बद' प्रवाडा जग चवो, हुवो रोरहरणाळ। —किसनजी दधवाडियो

रोरांकुर-सं. पु.—कष्ट, दुख।

उ०—बळदा गाडा सळ पाडा पर बोरा। छोटा डोगतर रोरांकुर छोरा। करसा दरसावै केटा वरकडिया। जूती फाटोडी बांधी जेवडियां। —ऊ. का.

रोरि—१ देखो 'रोर' (रू. भे.)

उ०—भगवती श्रावो भाई, मूझ मदत लीमहमाई। नित पढै प्रहस मे नाम, त्यां रोरि भजि विराम —मा. बचनिका

२ देखो 'रोळी' (रू. भे.)

रोरी—देखो 'रोळी' (रू. भे.)

उ०—बीणा डफ महुयरि बस बजाय ए, रोरी करी मुख पंचम राग। तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग। —वेलि

उ०—२ अबीर गुलाल उडावत रोरी, डफ दुदभी बाजत धोडी धोडी —मीरा

रोलंब-सं. पु. [सं. रोलम्ब] १ भौंरा, भ्रमर। (अ. मा; ना. मा. ह नां. मा.)

उ०—१ रवै लार गुजार रोलंब राजी, भगाणां भड़ां रोघ श्रो लब भाजी। —व. भा.

उ०—२ हर ममरी होसी हरी, जीने जम री जंग। कर उदिम रोलंब करै, ममरी कोटी भ्रग। —र. ज. प्र.

रोळ, रोल-सं. स्त्री.—१ ध्वनि, आवाज।

उ०—१ घुरजाळ खडत मैंभर घणीह, तिम बजत रोळ घूघर नगीह। —पा. प्र.

उ०—२ त्या पांतरै वडी छत्र पडियो, बोटण गढां श्रथग जळबोळ। नेवर रोळ किया श्रगनैणी, राणु कियो न पाखर रोळ। —राणा माडण री गीत

२ स्त्रियो के पैरां मे धारण करने का छोटे घुंघरुदार एक आभूषण विशेष।

३ दल, समूह।

उ०—१ पार विहुणा पखिया, राजहंस ना रोळ। उचा नीचा उडता, भाभा करइ भकोळ। —मा का. प्र.

४ उबटन, लेप।

उ०—श्रागळि भेटिइ उरवसी, घसी सु चंदन घोळ। को मज्जन कोडे करई, कंकुम केरा रोळ। —मा का प्र

५ युद्ध।

उ०—कका रोळ दरोळ दळ, भमण नगो भूगोळ। चौळ नजर 'पातल, बडै हाहल मिघ हिलोळ। —किसोरदास दाग्हठ

६ चारों ओर उपद्रव व फसल को हानि पहुंचाने वाला पशु, हरहाया।

७ चिल्लाहट, शोरगुल।

८ भय, आतंक, डर।

९ उपद्रव, उत्पात।

वि—१ आवारा फिरने वाला।

उ०—रोळ कहै इकोळ डावाडोल मे रह्यो। मानरो श्रमोल गोळ मोळ मे रह्यो। —ऊ का.

२ बदचलन, चरित्रहीन।

४ उत्पाती, उपद्रवी

उ०—१ रोळ बिगाडे राज नै, मोळ बिगाडै माल। सनै सनै सरदार री, चुगल बिगाडै चाल। —बा. दा.

५ देखो—'रौळ' (रू भे)

उ०—बोखो आय अभागै बैठे, रस पागै प्रिय रोळ। मुख रै लागै तन मिरचा त्यागै तुरत तमोळ। —ऊ. का.

रोळगिदोळ-सं. स्त्री.—१ बने बनाए कार्य या पदार्थ को नष्ट करने या मिटाने की क्रिया या भाव।

उ०—चांद किरण मिळ पवन सू, टीबा करी किलोळ। पीळं बादळ छोजळं, लूंआ रोळगिबोळ। —सू

रोळड़-सं. पु —१ उर्वरा शक्ति बढाने हेतु कुछ समय बिना जुताई बुवाई के खेत को छोड़ने की क्रिया।

२ उक्त प्रकार से परती छोडी हुई जमीन या खेत। इजराम

रोळण, रोळणौ-वि [स्त्री. रोळणी] १ विध्वस करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला।

उ०—१ नमौ पहु सायर बांधण पाज नमौ रिपु-रावण-रोळण राज। - ह. र.

उ०—२ रहच खळां दळ रोळणा वीर उभै वरियाम। 'किवनर' 'पातल' रै करा, लदन तणी लगाम। —किसोरदान बारहठ

रोळणौ, रोळबौ, रोलणौ, रोलबौ-क्रि. स.—१ बजाना, ध्वनि युक्त करना।

उ०—रमझम पाखर रोळतौ, घम घम पौडा घम्म। घम घम पावू धीरपै, खम खम घोडी खम्म। —पा प्र.

२ प्रहार करना।

उ०—१ तिलगां तणां घण सिरतोड, रूक घणा सिर रोळं। केता पाड पौढियौ कमधज, बाका थाट विरोळं। —बुधजी आसियौ

३ गमा देना, मिटाना, नाश करना।

उ०—जीत दळ सझि हले राजा, बाजता रिणजीत वाजा। राव 'ईदौ' माण रोळे भीम गर्बदा हूंत भेळे —सू. प्र.

४ मारना, सहार करना।

उ०—१ खरां हेमरां भडा 'पीथल' चढे खेडिया, दुरस गत घेरिया फिरै दोळं। रूकडां पांण ऊफडाखिया रोळिया, घोळिया धकाया दीह घोळं। —दलौ मोतीसर

उ०—२ रौळंत रिमा घड रामचद। 'सग्राम' सुत्त सूरत कद। —गु रू ब.

उ०—३ 'जैतमाल' घण पाल बीद मेवाड तणी घड। सिवियाणै सोभति 'भाण' रोळियां भडा घड। —गु रू. बं.

५ फेकना।

उ०—आरण के अग पार होय जावै है। फूटे घड आफळते है ज्वाळानळ ज्यां जळते है। रूई के पहल ज्यो अ गू पर चढाइ रोळं। छूटे हस पडे जाणं मजीठ बोळं। —सू. प्र.

६ गिराना, डालना।

उ०—झूटि झूबिय महितलि रोली, काढिव वसन कीध हीयाली। अतरालि थई राक्षिसि राखी, तीणइ हुई हिव होअत चाखी। —सालिसूरि

७ बिखेरना।

उ०—हार मोडती, वलय मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गाजती, किंकणी कलापु छोडती, माथउ फोडती वक्षस्थल ताडती, कुंतल कलाप रोलती सकज्जल बाष्प जलि कंचुक सींचती। —ब. स.

८ आच्छादित करना, ढकना।

उ०—धूलि नइं तिमिर अंबर रोलिउ, सूरय बिंब ससि महि कि बोलउ। असवार फिरता न सूझइ, ए रणगणि किसी परि झूझइ। —सालि सूरि

क्रि. अ—९ भयभीत होना, कंपायमान होना।

उ०—तेज प्रभूता नमो गुमानसिंह तण, रोस घण छ खड खूरसांण रोळं, जावता चढं दादा जिया रचण जुध, आविया बखण बे तूझ ओळं। —महाराजा मानसिंह रौ गीत

१० लुढकना, ढुलकना।

उ०—धूलि मिलीय झलमलीय सयल दिसि दिणयरु छाईउ नयणी दुरहि द्रम द्रमीय सुरवरि जसु गाईउ पाडइ चिंघ कबध बध घर मडलि रोलइ वाणि विनाणि किवांणि केवि अरीमण धधोलइ। —सालिभद्र सूरि

११ पतन होना, गिरना।

उ०—दैवु न गिणई दैवु पुण्य नइ पापु सतापु सुयणह करई पुण्य-हीन जिम राय रोलइ —सालिभद्र सूरि

१२ तलवार, भाला आदि शस्त्र को हाथ मे पकड़ कर घुमाना।

उ०—ठेल्हतौ गजा है-थाट लागा अटळ, रीठ वागां खगा दुबै राहा। जोध 'जसराज' पुणौ भलौ जूजबौ, सेल रोळं दुहूं पातिमाहां। —गु. रू. बं.

रोळणहार, हारौ (हारी), **रोळणियौ**—वि।

रोळिओड़ो, रोळियोड़ौ, रोळ्योड़ौ—भू का. कृ.।

रोळीजणौ, रोळीजबौ—कर्म, भाव वा.।

रोळवणौ, रोळवबौ, रोळणौ, रोळबो, रोळावणौ, रोळवबौ—रू. भे.

रोळदट, रोळबट्ट-स. स्त्री.—१ अव्यवस्था।

उ०—करै न सका कोय, गाव-धणी सभड गिणै। रेत बराबर होय, रोळबट्ट मे राजिया। —किरपाराम

२ गफलत, व्यर्थ।

उ०—जगा मे अठगो छौ छटा मे पाराथ जेहो, मार्थ राव लीधौ रोळबट्टां में मथोग। छत्री बळू तेस खळा थटा मे हकालणौ छौ, जिको सेज सट्टा मे न भाजणौ छौ जोग। —रामकरण मेहडू

३ असावधानी।

४ खेल, तमाशा, हसी मजाक।

रोलर—अ पु.—१ सड़क पर ककर व मिट्टी दबाकर सड़क को समतल करने वाला बेलन जो खीचा या इजन लगाकर चलाया जाता है।

३ छापे की मशीन में वह बेलन जिससे अक्षरों पर स्याही लगती है।

रोळरिगटोळ, रोळ-रिगटोळी—१ मखौल, हंसी मजाक।

उ०—सारी दिन घई, गप्पा नाखै अर सागै-सागै आया-गया री **रोळ-रिगटोळी** तथा खि-खि ही करतां नी सकै। —दसदोख

रोळबणौ, रोळबबौ—देखो—'रोळणौ रोळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घड घडण नावड़, वदन वाचड़, पड़ड़ खडोखड। हरि कोप कीधू जइत लीधू **रोळव्यां** रणखड। —रुकमणी मगळ

उ०—२ जमहड लाग करै जमराण, पळभख सावळ **रोळबि** पांण। छटै असि ताम चडै छक छोह, लिधी तह ढाल बचावण लोह। —सू. प्र.

रोळा, रोला—स. पु.—१ स्त्रियों के धारण करने का आभूषण विशेष। (ब. स.)

रोळागार, रोळागारौ—वि.—१ कलह प्रिय, झगड़ालू।

रोळाटौ—स पु.—१ हुल्लड, शोरगुल।

उ०—सहर में **रोळाटौ**। हिंदू मुसलमाना री दगो कानी कानी। अल्लाहो अकबर कै र मुसलमाना एक हिन्दू री दुकांन में लाय लगादी। —वरसगाठ

रोळारोळ, रोळारोळि—स स्त्री—१ भय, आतंक या किसी प्रकार की घबराहट, आदि के कारण भीड या जनसमूह में होने वाली हलचल, खलबली।

उ०—पहर हेक लग पोळ जडी रही जोधाण री। गढ में **रोळारोळ** भली मचाई भीमडा। —भीमजी रौ दूहौ

रोळि, रोळी, रोलि, रोली—स स्त्री.—१ गेहूं की फसल को लगने वाला एक रोग विशेष जिसमें गेहूं की 'नाल' में लाल बुकनी जैसा चूर्ण निकलता है।

उ०—कदै तो ठाकर लाटौ लाटघौ, कदै लाटग्यौ बो'रौ। कदै तो बैरी दाबौ पडग्यौ, कदे आयगी **रोळी**। —चेतमानखा

२ विघ्न, बाधा।

उ०—राज करम में पडगी **रोळी**, मनूं मरम मरजादा मोळी। झडी सरम फुला री झोळी, हुयगी परम धरम की होळी। —ऊ का

उ०—२ पालटी बैसि रहियौ बैसि, घण घणा मीत छुटा घरा। घातती **रोळि** आई घरै, जीव लैण गोली जुरा। —सुरजनजी

३ भ्रम, सभ्रम।

उ०—जपइ ए रमणि सिरोमणि रुकमणि राणीय **रोलि**। रहि रहि बहिनि ऊतावली पाचलि माहि म डोलि। —जयशेखर सूरि

४ हल्दी और चूने के योग से बना एक प्रकार का चूर्ण जो पवित्र माना जाता है।

रू. भे—रोरि, रोरी।

रोळौ, रोलौ—स. पु.—१ एक छंद विशेष जिसके चारो चरणों में ११+१३ यति से २४-२४ मात्राएं होती हैं।

२ हरियंद पिंगल' के अनुसार एक गीत विशेष।

३ देखो—'रोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ कूआ सामा आवता, डरै न अब **रोळा**। बेलघा में टूटया पडै, काळा दिन धोळा। —लू

उ०—२ पमग अफाळि सुज्ज पसाव, **रोळो** मझि मेलियौ मारबै राव। —सू. प्र.

उ०—३ जीवणी मिसल **रोळौ** कर मचार ढाई हजार मेडतिया रा मारवाड रै लोगा पर आया।—मारवाड रा अमरावा री वारता

रोवण—वि.—१ रोने वाला, रुआंसा।

स पु—१ रुदन, रोना।

रोवणमन—वि.—१ कायर, डरपोक।

रोवणकाळौ, रोवणकियौ, रोवणकौ—वि.—१ रुआसा रोने जैसा।

उ०—राजाजी तौ बांवाडी करनै डोकरी रा पग झाल लिया। **रोवणकाळा** होय केवण लागा—थारी मीडकी गाय हू, आ पाडवा नै पिड छुडावौ। —फुलवाडी

उ०—२ जीवरौ उकराळियौडो वौ उण लुगा मे छोटी-मोटी लघेडी खोद न्हाकियौ। मेवट **रोवणकाळौ** होय बापजी नै कह्यौ-अठै तौ रिपिया है ई कोनी। —फुलवाडी

२ रोने वाला, रुदन करने वाला।

३ जो शीघ्र रो देता हो।

रू भे रोणकौ

रोवणौ—वि—१ रोनेवाला, रुआसा।

स पु—१ रोने की क्रिया या भाव, रुदन, रोना।

उ०—भोला की हठ ठाकुरा, **रोळा** हेकन राह। गेह रहीजै **रोवणौ**, देह सहीजै दाह। —वी स.

२ दुःख, कष्ट, तकलीफ।

उ०—'बाबौ' म्हारै सामी देखने थोडी मुळकियौ। पछै दो अेक खंखारा करनै कैवण लागौ आ छळगारी माया डणी भात छळिया करै। उणरै झीणा छळ रौ पतौ पड जावै तौ पछै **रोवणौ** ई किण बात रौ। —फुलवाडी

रोवणौ, रोवबौ—क्रि अ. [स. रोदनम्-प्रा. रोअन] १ कष्ट से पीडित व्यक्ति का ऐसी स्थिति में होना कि उसके नेत्रों से आसू बहने लग जाय। रुदन करना।

उ०—१ वा विधवा सोनारी मूडा सू कैयनै तौ की नी दरसायौ ठळाक-ठळाक **रोवती रोवतौ** मगळी सोनी अेकट करनै भतीजां रै

सांमी कोपरियां री डिगली रै उनमांन खिडक दियो। —फुलवाड़ी

उ०—२ भूवा री श्रेक खोटी प्रादत ही के वा मरियोडा धणी री याद प्रावतां ई रोवती घणी। उणरा नांम नै झूरती। —फुलवाड़ी

२ वक्षस्थल पर मुष्ठिका प्रहार करते हुए रोना, विलाप करना।

३ किसी प्रकार के कष्ट, क्षति, हानि के लिए दुःखी होना।

उ०—माजी रोवै माय, बापजी रोवै बारै। भाई रोवै भला, सुणै नही किणरै सारै। बद बद कडवा बेंण, सेंण रोवै सिर म्हावै। दुसमण नाली देत, हसै जीवै हरखावै। जिण प्रमल कियौ देखौ जुलम, कामण रोवै कामनै। गाव गिणै नही गेले नै, ज्यू गेलो गिणै न गाम नै। —ऊ. का.

४ किसी बात पर कुढ, चिढ कर इस प्रकार की शक्ल बनाना कि मानो बच्चे की तरह बैठ कर रोता हो।

रोवणहार, हारौ (हारी), रोवाणियौ—वि.।

रोविप्रोड़ो, रोवियोड़ौ, रोव्योड़ौ—भू का कृ।

रोवीजणौ, रोवीजबौ—भाव वा.।

रोप्रणौ, रोप्रबौ, रोणौ, रोबौ—रू भे.।

रोवाकूको—जोर २ से रोना, फूट २ कर रोना।

उ०—गोपाळ जोर-सूं हेलो मारियो-'काकाजी' डेंण प्राखिया खोली प्रर पाछी सदा री वास्तै मीच ली। घर मे **रोवाकूको** मचग्यौ। —बरसगाठ

रोवाड़णौ, रोवाड़बौ—देखो 'रोवाणौ रोवाबौ' (रू. भे)

उ०—तरै राठौड़ प्रिथीराज कूपावत जैतमाल जैसावत नू कह्यौ-तू मत रोवै। परमेस्वर कियौ तो हूँ कूपा रै पेट रो जो चद्रसेन नू **रोवाड़ू**। —राव चद्रसेण री वात

रोवाड़णहार, हारौ, (हारी), रोवाड़णियौ—वि.।

रोवाड़िप्रोड़ौ, रोवाड़ियोड़ौ, रोवाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोवाड़ीजणौ, रोवाड़ीजबौ—कर्म वा.।

रोवाड़ियोड़ौ—देखो—'रोवायोडौ, (रू. भे)

(स्त्री. रोवाडियोडी)

रोवाणौ, रोवाबौ—१ ऐसा काम या कार्य करना जिससे कोई रोने लग जाय।

२ दूसरे को रोने मे प्रवृत करना, रुलाना।

रोवाणहार, हारौ (हारी), रोवाणियौ—वि०।

रोवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रोवाईजणौ, रोवाईजबौ—कर्म वा०।

रोप्राणौ, रोप्राबौ, रोवाड़णौ, रोवाड़बौ—रू० भे०।

रौंस—स पु.—१ वैभव, ऐश्वर्य।

उ०—भांमणि रा सुकुमार भुज, साहब गळै सुहाय। जांण नाळ जळजात रा, कांम पताका काय। कांम पताका काय, उदै जै प्रकड़ा। राजस तजि चित **रौंस** क सोक्यां संकडा। —बां. दा.

२ सुख, प्राराम।

३ देखो 'रौस' (रू. भे.)

रोसग—देखो 'रोस' (रू. भे.)

उ०—१ सकि थाट बढिया सूर, **रोसंग** प्रंग गरूर। प्रकबर बहादर प्राय, जुध कोध धोम जगाय। —सू. प्र.

उ०—२ 'सांवत' रौ सुरताण, तांम बहसै खग तोलै। रग लाल **रोसंग**, बोळ लोयण करि बोलै। —सू. प्र.

रोसंगी—देखो 'रोखंगी' (रू. भे)

रोस—सं पु. [स. रोष] १ कोप, क्रोध, गुस्सा। (प्र. मा.)

उ०—१ कर प्रगट दोम खंडण करू, धीठ **रोस** मत धारज्यौ। प्राज री बखत भूँडौ प्रमल, बडपण राज विचारज्यौ। —ऊ. का.

उ०—२ कर सिलाम त्रय वार, तांम प्रालम्म महातप। प्रोप जोस प्रसमाण, वधे किर **रोस** महावप। —रा. रू.

२ क्रोध जोश प्रादि से होने वाली नेत्र की ललाई, उबाल, उफान।

उ०—१ नवहत्थौ मत्थौ बडौ, **रोस** भटक्कै रार। प्रौ कुंभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार। —बा. दा.

उ०—२ प्रत कोप मुखा,चख **रोस** चढै। झळ प्राग लगी, किर दूंग झडै। —रा. रू.

उ०—३ प्रपनी कबांन प्रालमसा हाथ दीनी, डाढी नोस हाथ दीनी रार **रोस** भीनी। —रा. रू.

३ कुढन, डाह, इर्ष्या।

४ वैर, शत्रुता, दुश्मनी।

५ जोश, प्रावेग।

उ०—रावता **रोस** वाहत इक, इक इक्क घाव दोय दोय टूक। —गु. रू. ब.

६ फोडा फुन्सी प्रादि का जोश मे प्राना, पीडा का बढना।

७ खुशी, हर्ष।

उ०—१ बसता हरिया बाग बिच, होती **रोस** हजार। वसिया ऊ हीज वांकला, माळू प्राय मजार। —बा दा.

८ मकान के भीतर की प्रोर दीवार मे चारो प्रोर प्रथवा द्वार पर लगने वाला वह लबा चौडा मोटा पत्थर जिसके नीचे तोडी भी लगी रहती है।

वि. वि.—बालकोनी प्राय इसी को कहते हैं।

९ प्रकाश, रोशनी।

उ०—रात पडयो जद प्रातरो, भूल्यो सारा दोम। पीळोपण मुख गो, गयौ सूरज मागी रोस। —लू

रू. भे.—रोस—प्रत्य., रोसो
मह. रू. भे.—'रोसाण'

रोसणो—देखो 'रिसाणो (रू. भे.)

उ०—१ हमैं मारण मारा रोसणो भजावण नूं मेळा हुवा । नै पातिया नांम गोठ जोमिया पीछै मलकी सबै आदमी मेलियो ।
—द. दा.

उ०—२ तद ऊमादे कह्यो रावजी अरमल रै वास पधारौ मैं सू कोई कांम नहीं । इहां आप, मांहि रावजी ऊमादे रोसणो हुवो ।
—ऊमादे भटियाणी री वात

उ०—३ मेंगा मेती रोसणी, प्रसंसा सू सूफ । माम मनेही ना कीया, श्रोरा रह्या अळूफ । —हरिरामदास महाराज

रोसणो, रोसबो—१ तंग करना, कष्ट देना ।

उ०— गरथ लेत गोसैह, रात दिवस रोसै रयत । माय माय मोसैह, मुलमी खोसै मुरधरा । —ऊ. का.

उ०—२ रेगा लई निग कुटब रोसियां, हुवौ मीहागत नेग हर । सत नह 'रहुचिया' समहर, 'कळै' हरै भारथ कर ।
—सिढायच किसनो

२ बाधना, कसना ।
३ कोप करना, क्रोध करना ।
४ मारना, काटना ।

रोसधर—वि. [स. रुष + धर] १ कोप करने वाला, रोस करने वाला ।
सं. पु.—२ इन्द्र (डिं. को.)
२ वह मकान जिसमें 'रोस' लगे हुए हो ।

रोसन—वि. [फा. रोशन] १ जलता हुआ, प्रदीप्त ।
३ वह (भवनादि) जिसमे खूब चहल-पहल आनंद मंगल हो ।
४ यशवान, कीर्तिवान ।
५ प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर ।
६ प्रकट, जाहिर, विदित ।
रू. भे.—रौसन ।

रोसनचौकी—स. स्त्री [फा. रोशनचौकी] १ सहनाई नामक वाद्य समूह ।
२ नफीरी नामक वाद्य ।

रोसनदान—स. पु. [फा. रोशनदान] १ कक्ष (कमरा) की ऊपर की दीवार मे बना हुआ छोटा खुला स्थान जिसमे से प्रकाश और पवन आता हो ।

रोसनाई—देखो 'रुसनाई' (रू. भे.)

उ०—१ इतरा मे रोसनाई री बखत महाराज जयसिंघ जी पधारया । —महाराज जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

उ०—२ इतरा मे रोसनाइ हुई, बडारण उठ मुजरो कियो ।
—कुवरसी सांखला री वारता

रोसनी—स स्त्री. [फा. रोशनी] १ उजाला, प्रकाश ।
२ मांगलिक अवसरो पर बहुत से दीपक जला कर किया जाने वाला प्रकाश ।
३ चिराग, दीपक ।
४ एक प्रकार के शहतूत ।
उ०—कमला रेसमी नारगी पैवदू का हुनर अदभूत । रोसनी हम-रानी सुरखानी सहतूत । —सू प्र.
५ देखो—'रौसनी' (रू. भे.)

रोसांण देखो—'रोस' (मह रू. भे.)

उ०—बे वे कवाण सूथाण बध, असमान छिबन रोसांण अध । चव मछी रघ्र छेदे चकास, उडता विहग बेधे अकास । —वि. स.

रोसाग—वि [स. रोष + अग्नि] १ जोशीला, ओजस्वी ।

उ०—मानै खाग झाटा गाजै तवाई छ खडा माथै, रत्ना झाट-पाटा नदी वहाई रोसाग । पाथ थाटा जंग रूपी कुवाणा नवाई पाणा, सत्राटा बेढियो थाटा सवाई 'सोभाग' । —सूरजमल्ल मिश्रण

रोसाजळ—वि – पूर्ण आवेग युक्त, जोशपूर्ण ।

उ०—सुणी वैण खग तोल, मेम उठ्यो रोसाजळ । करमाणद पर-धान, आय दाढी हाथोगळ । ऊमस कर आछटै, वीर पायको बकारै । माथ लिया मावला, पाल गुजवं पधारै । —पा. प्र.

रोसानळ—स पु [स. रोष + अनल] १ ऐसा विकट या भयकर क्रोध जो अग्नि की तरह नष्ट कर देता हो । क्रोधाग्नि ।

रोसारी—वि. [स रोष + अरि] १ शत्रु दल पर कोप करने वाला । क्रोध वाला ।

उ०—सो दळ सिंघ समान, रवद भाजण रोसारी । अहुर 'अमर' आवियो, जाग तन पक्खरधारी । —रा रू
२ जोशीला, वीर ।

उ०—देस मुगळ अबदल्ल, फौज अणचल्ल अफारी । हाक काम पुरबा, 'राम' वळियो रोसारी । —रा. रू.

रोसाळ, रोसाळो—१ क्रोध वाला, क्रोधी ।

उ०—तुडताण पाण कामा तजत, जै राम राम जीहा जपंत । रोसाळ हुआ विकराळ रीस, पडिया लग वाहै दात पीस ।
—गु. रू. ब.

२ तेजस्वी, पराक्रमी ।

उ०—२ चलचोळ भाल विकराळ चंच, कळ चाल प्रगट दाढाळ कंच । रोसाळ मिळै ग्रीखम रसम्म, चिता विडाळ नाहर बसम्म ।
—वि सं.

उ०—२ कुरबंसी कर चाळो, रच रोसांळां, भीठ वडाळां भोपाळा। रिळिया रिणताळा, कट किरमाळां, सीस भुजाळां सूंडाळा।
—भगतमाळ

रोसावणो, रोसावबो—क्रि. स. [रोसाणो क्रि. का. प्रे. रू.] १ मरवाना, कटवाना।

उ०—बकरिया रोसावै कूकडा कटावै अर दारूडी–मारूडी तौ उडती ही रेवै है।
—दसदोख

२ बधवाना, कसवाना।

३ क्रोध करवाना।

रोसावणहार, हारौ (हारी), रोसावणियौ—वि०।

रोसाविग्रोड़ौ, रोसावियोड़ौ, रोसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोसावीजणो, रोसावीजबो—कर्म वा०।

रोसिया—स. स्त्री—चौहान वश की एक उपशाखा।

रोसियौ—स. पु—चौहान वश की रोसिया शाखा का व्यक्ति।

रोसीलौ, रोसेल, रोसंल—वि. (स्त्री. रोसीली, रोसेली) १ जोशवाला, जोशीला।

२ निर्भय निर्भीक, निडर।

उ०—१ जानकी नायक जग मे, रोसेल वीरत रग मे। बिरदैत जम रथ धमळ बंका, निमौ दमरथनद।
—र ज. प्र.

२ क्रोधीला, क्रोधी।

उ०—सुख हिन स्याळ समाज, हिंदू अकबर बस हुवा। रोसीलौ मृगराज, पजै न राण प्रतापसी।
—दुरसौ ग्राढौ

३ तेजस्वी, पराक्रमी।

रोसौ—१ देखो 'रोस' (रू. भे)

उ०—१ मे मारै हाथे कियो, केहो कीजे सोसो रे। दोस जिको मुझ वचन नो, कीजं किणसु रोसो रे।
—प च चौ.

उ०—२ सखी री आयौ महीनो अब पोसो रग रमै सहु तजि रोसो। दीनौ मुझ जादव दोसो, मबलौ तिण कारण सोसो हो लाल।
—घ व ग्र.

रोह—स. पु.—१ रास्ता, मार्ग।

[स रोध] २ रोक, रुकावट।

उ०—१ जाणीय दुरयोधनि बाहु ब्राह्या, रहइं किमइ ते तुरिया न साह्या। किरी रह्या राउत रोह माडी, जाइ जिसिइ अरजन द्रेठि छाडि।
—सालिसूरि

उ०—२ खुरसाण लक पती खहण, खेध खेध वूहा खडग। पतिसाह दळा पाधर हुग्रौ, राड रोह मुर मास लग।
—गु. रू. ब.

रोहज—स. स्त्री.—१ नेत्र, नयन। (डि. को.)

रोहड़—देखो 'रोहिड़ौ' (मह., रू भे.)

उ०—रावण राग रताजणी, खणी नह रुद्राख। रूक रुदती रायसली, रोहड़ रोहिणि लाख।
- मा. का. प्र.

रोहण—स. पु. [सं रोहण] १ वीर्य, शुक्र।

२ देखो 'रोहणगिरी'

उ०—१ खिसता निज खांण थी, रयण कहै सामलि रोहण। अठै ग्रम्है उपना, महिर थारी मन मोहण।
—ध. व. ग्र.

उ०—२ धारा धरस्य धारा सख्या, भूतले रेणुका कण ना समुद्रे नीर बिंदु सख्या, रोहणे रत्न सख्या न।
– व. स.

३ देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—१ रोहण तपै न मिरगला वाजै, ग्रादरा ग्रणचिंत्या गाजै।
—ग्रग्यात

उ०—२ रोहण वाजै मिरगला तप्पै, राजा भूझै परजा खप्पै।
—ग्रग्यात

उ०—३ अदीतवार घटी ३३/१० रोहण नक्षत्र २६/१६ रात्र गत घटी ५/० समयौ माराज श्री ग्रनुपसिधजी चद्रावत रुखमागदे जी रा दोहिता माजी रौ नाम कमळादे।
—द. दा.

रोहणगिर, रोहणगिरि—स. पु. [स रोहण+गिरि] एक पर्वत का नाम जहा पर रत्न माणिक्य ग्रादि प्राप्त होते हो।

उ०—ग्रसख्य साहणि चालते हुते समुद्रसलिल सलसल्या, घाट घमघमी घाघरयाल वाजी, रथीक राउत तणे रसरसाटि रोहणगिरि रणरण्या।
—व. स.

उ०—२ भूप जडावै मुकट मझ, रोहणगिर उतपत्त। निस दीपक प्रतिनिधि रतन, प्रभा अपूरब भत्त।
—बा. दा.

रोहणचल—१ देखो 'रोहणीगिरि' (रू. भे.)

रोहणदे—स. स्त्री [स. रोहणदेवी] १ चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी।

उ०—१ वाडी वाडी भवरौ भिणकै रे सुरंगलौ, चद्रमाजी री पाग बिराजै रे सुरंगलौ सुरंगलौ। रोहणदे घिर घिर निरखै रे सुरंगलौ सुरंगलौ।
—लो. गी.

उ०—२ राणी रोहणदे हीडण बैठ्या धरती न झेलै भार। चंद्रमाजी ग्रै ललकारौ दियौ, ग्रो हिंडौ गयौ गिगनार।
—लो. गी.

रोहणद्रुम—स. पु. [स. रोहणः+द्रुम] १ चदन (डि. को,)

रू. भे.—रोहिणीद्रम

रोहणधव—स. पु [स रोहिणीधव] १ चद्रमा, चाद। (ग्र. मा, ह. ना मा)

रोहणप—सं पु [सं. रोहणप] १ चदन।

रोहणाचळ—देखो 'रोहणगिरि'

उ०—१ हा सौभाग्यभवन सस्नेहमन, हा प्रियसबंजन, हा परोप-

कार वत्सल गुणरत्न **रोहणाचल**, हा जगदभूमण मनभूमण ।
—ब. स.

उ०—२ जिसउ नवा कल्पवृक्षनउ पोउ हुइ, **रोहणाचल** नी भूमि जिसउ रत्ननउ अकुरउ हुइ । —व. स.

रोहणि—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—निसिपति नारी मोहनगारी, **रोहणि** नइ रग राती । प्रभू करणी परणि तजि तरणि, अदभुत गुण करि माती । —वि. कु.

रोहणियाल–वि.—शत्रुदल को रोकने वाला ।

उ०—**रोहणियाल** सर्फ रायागुर, धायं असुर उतारं घाग । अबळा बाल न धारं आडी, बूंदाळम धार्न बूमाण ।
—राणा मागा री गीत

रोहणी—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.) (अ मा, ह. ना मा)

रोहणीजोग—देखो 'रोहणीयोग' (रू. भे.)

रोहणीवर—देखो 'रोहिणीवर' (रू. भे.) (ना. डि को)

रोहणीसिद्धयोग—देखो 'रोहिणीयोग' ।

उ०—आलमगीर रौ जन्म स १६७५ मिगसर बद १ इस्ट १८/३० **रोहणीसिद्धयोग** । —द. दा

रोहणीय—देखो 'रोहिणीय' (रू. भे) (अ. मा, ह ना मा.)

रोहणौ, रोहबौ–क्रि. स.—१ रोकना अवरुद्ध करना ।

उ०—२ **रोहे** 'पातल' राण, जा तसलीम न आदरै । हिंदू मुस्सल-मांण, एक नही ता दोय है । —सूरायचजी टापरियौ

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ कळू माझ हेम पथ डोहिता सुभद्रा काळी, निहाळी सोहिता नेत्र जाळी खळां नाम । असुराण **रोहिता** दोहिता देवी 'वेद' वाळी, नोहिता अभेद वाळी डाढाळी नमाम ।
— नवलजी लाळस

उ० –२ महाराज आजांनभुज राम रघुवसमल, राड ग्रिम जूथ अवनाड **रोहै**, गर्दा गह गजण । वार निरधार आधार आधार आलम वर्ण, भिडै दळ भजण । र ज प्र

३ घेरना, आवेष्टित करना ।

उ०—'सोमा' हर तिलक सीचनौ साबळ, करतौ खग दीना कर । रिण **रोहियौ** घणौ राठौडै' चीबौ एकलवाड घर । —दरसो आढो

रोहणहार, हारौ (हारी), रोहणियौ—वि० ।

रोहिओड़ौ, रोहियोड़ौ भू० का० कृ० ।

रोहीजणौ, रोहीजबौ—कर्म वा० ।

रोहतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे) (अ मा, ह ना. मा)

रोहर—देखो रुधिर' (रू भे)

उ०—१ अम सीस न आमै पळ नह पावण, **रोहर** न घर पर रडियौ । ईसरदास तणौ वप आहब, आमख खग धारां अडियौ ।
— ईसरदास राठौड री गीत

रोहराळ—देखो 'रुधिर' (मह. रू. भे.)

उ०—झाळ बबाळ 'ईसर' तणौ झळहळै, अळवळै वळै दीजै उथाळा । खाळ **रोहराळ** गाळा बिचै खळहळै, भळहळै गराळा बीच भाला । — उम्मेदसिंह राठौड़ री गीत

रोहलौ–स पु.—रग विशेष का घोडा ।

उ०—रोझौ नीलौ गगाजळ हसला नैण काजळ । अस मेराहा अऊब लेग **रोहला** हाबूब । —गु. रू. ब.

रोहवाल–स. पु.—एक प्रकार का घोडा ।

उ०—तेज सुरग गव्हरा कारातोरा खुरसाणा भयणा हयाणा **रोहवाल** रूदमाल तोरका मदकोरा पीलूआ भाडिजा उराहा सेराहा केकाण । —व. स.

रोहि–स पु [स रोहि] १ मृग विशेष ।

२ वृक्ष ।

३ बीज ।

४ देखो 'रोही' (रू. भे.)

रोहिड़ौ–स. पु—१ एक वृक्ष विशेष ।

उ० –अरक आउल निगामिरा, सिम **रोहिड़ो** रोहिण । इद्रोख अबरस आमिद्रो, अरण्यज वकाईण । —रुकमणी मंगळ

रू भे.– रोईडौ, रोयडौ, रोहीडौ

मह —रोहड ।

रोहिण–स पु —१ एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

२ देखो राहिणी' (रू भे.)

रोहिणगिर – देखो 'रोहणगिरि' (रू भे)

रोहिणी–स. स्त्री. [स] १ गौ, गाय (अ. मा, ह. ना. मा)

२ बिजली, विद्युत ।

३ त्वचा की छठी परत । (अमरत)

४ वसुदेव की धर्मपत्नी जो बलदेव की माता थी ।

५ चन्द्रमा की पत्नी, जो दक्ष प्रजापति की कन्या थी ।

उ०—कूरमी कमधज सू ओपै वामै अग । रवि राना ससि **रोहिणी**, सुरपति सचि किर सग । —रा रू.

६ कृष्ण की पत्नियो मे से एक ।

७ हिरण्यकशिपु की पत्नी ।

८ जैनो की एक देवी ।

९ ऐसी कन्या जो हाल ही मे रजस्वला होने वाली हो (स्मृति)

१० धैवत स्वर की तीन श्रुतियो मे से तीसरी श्रुति ।

११ पाच तारो मे मिलकर बना रथ की आकृति का सत्ताईस

नक्षत्रों में चौथा नक्षत्र (अ. मा.)

१२ एक प्रकार का भयंकर संक्रामक रोग जिसमें ज्वर के साथ गले में पीडा होती है। (अमरत)

रू. भे.—रोहणी, रोयण, रोयणी, रोहण, रोहणि, रोहणी, रोहिण, रोहिणि।

रोहिणी-आठम—स. स्त्री. [स. रोहिणी अष्ठमी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्ठमी जिस दिन चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र मे होता है।

रोहिणीजोग—देखो 'रोहिणीयोग' (रू. भे.)

रोहिणीतप—स. पु —एक प्रकार का व्रत विशेष। (जैन) व. स.

रोहिणीद्रुम—देखो 'रोहणद्रुम' (रू. भे.) (ना. मा; ह. ना. मा.)

रोहिणीपत, रोहिणीपति, रोहिणीपती—स. पु. [सं. रोहिणीपति]

१ चद्रमा।

२ बलराम के पिता वसुदेव.

रू भे.—रोयणीपत, रोयणीपति, रोयणीपती।

रोहिणीबर—देखो 'रोहिणीवर' (रू. भे)

रोहिणीयोग—स पु. [स.] आषाढ के कृष्ण पक्ष मे रोहिणी का चन्द्रमा के साथ होने वाला योग।

रू. भे.—रोहिणीजोग

रोहिणीरमण—स पु. यौ, [स. रोहिणीरमण] १ चद्रमा, २ साड, ३ वसुदेव।

रोहिणीवर—स. पु.—१ चद्रमा।

२ साड।

३ वसुदेव।

रू. भे.—रोहिणीबर।

रोहिणीवलभ, रोहिणीवल्लभ—सं. पु. [स. रोहिणी वल्लभ] चद्रमा

रोहिणेय—स. पु. [स रौहिणेय] १ रोहिनी का पुत्र बलराम।

रू भे.—रोहणेय।

रोहित—वि. [स. रोहितम्] लाल रग का।

स पु. [स. रोहितः] १ एक प्रकार का मृग।

२ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

३ मछली विशेष।

४ लाल रग।

५ लोमडी।

६ देखो 'रोहितास'

रोहितबाह, रोहितवाह—सं पु. [स. रोहित+वाह=अश्व] १ अग्नि, आग। (डिं. को)

रोहितास—स. पु [सं. रोहिताश्व] १ अग्नि, आग।

(ना मा, ह. नां. मा.)

२ वसुदेव का रोहिणी से उत्पन्न पुत्र।

३ सत्यवादी हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम।

उ॰—सतव्रत सुत हरिचद सत जिहाज, रोहितास चंद सुत महाराज। रोहितास तणं क्षित चचुराय, तप सुत सुदेव तप भाण ताय। —सू. प्र.

रू. भे.—रोईतास, रोयतास, रुहितास, रोहितास, रोहीतास।

रोहिनी—देखो रोहिणी' (रू. भे.)

रोहिलौ—सं. पु.—एक प्रकार का वाद्य।

उ॰—डफ खजरी दुतार, विस्मम रोहिला बजावै। पसतो अरबी पाड, गजल कड़खा बहु गावै। किवळा सिजदा करै, किलम उच्चरै कुराणी। जाणि प्रेत जागिया, महारिण काळ मसाणी।

—सू. प्र.

रोहिस—स. पु. [स. रोहिष] १ एक प्रकार मृग विशेष।

२ एक प्रकार की मछली।

३ एक प्रकार का घास जिसकी जड सुगधित होती है।

रोही—वि [स. रोहिन्] (स्त्री. रोहिणी) १ ऊपर चढने वाला, ऊपर की ओर जाने वाला।

स पु—१ एक प्रकार का हिरन, मृग।

२ रोहिडा नामक वृक्ष।

३ रोहू नामक मछली।

४ रीढ की हड्डी।

उ॰—'सगतीसिंह' तरवार वाही सो प्रेमसिंह घोडे फेरते रै लागी घोडे रै खोगीर बढकर रोही री हाडी बैठ गयी जिण सूं घोड़ो भुस हुय गयौ। —मारवाड रा अमरावा री वारता

५ वन, जगळ।

उ॰—गुण औगुण जिण गांव, सुणै न कोइ साभळै। उण नगरी बिच नाव, रोही आच्छी राजिया। —किरपाराम

उ॰—२ इतरा मे रोही माही एक थोरी सिकार रै पगा हिरणी मुहडा आगै लिया आवै। —रामदत्त साह री वारता

रोहीड़ो—देखो 'रोहिडौ' (रू भे)

रोहीतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रोहीस—देखो 'रोहिस' (अमरत)

रोहौ—स. पु.—१ घेरा, आक्रमण।

२ क्रोध, गुस्सा।

३ वैमनस्य।

४ युद्ध।

वि.—रोकने वाला, थामने वाला।

उ॰—साह दळा सामहा, राह तोरिया भिडज्जा। दळ रोहा साळुळै, करै ढोहा कमधज्जा। बिना खग्ग झेरिया, वहै कुण मग्ग

त्रिघाळै । आगी हक्का आग, माय लागी ऊनाळै । —रा. रू

रौंक—देखो 'रूंक' (रू. भे.)

रौंकट-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई ।

उ०—१ गाम थट भट भपट रौंकट, पळट व अघट कुघट, ऊपट । रंगट भट फुट भकुट मरकट, कुळट नटवट उछट कटकट ।
—मू. प्र.

उ०—२ रोस उपट्टा रौंकटां, बहो घटा बधारै । कोडि असुर . भपटां करै, अगद एकारै । —मू प्र

रू भे —राकट ।

रौंद—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ 'आसउत' तणो आकाय देखै अकळ, साहजहा मुतन पटकै घणो मीस । रीस सुज हुती मन 'नींब' हर ऊपरा, रौंदां सीम काढवी रीस । —सबळो सांदू

उ०—२ जठै 'गजसाह' 'करन्न' मुजाव,विभाडत मेछ खगा वनराव । जुडै खग भाट 'अनावत' 'जैत' बहादर रौंद हगै विरदैत ।
—सू प्र

रौंदग—देखो 'रौद्र' (रू भे.)

रौंदणो, रौंदबो—देखो 'रूदणो, रूदबो' (रू भे)

रौंदाळ—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे)

उ०—आराबा उछळ आतस भाळ मडै किर भाद्रव मेह मंभाळ । पडै उतबग चढै तन पीठ, रौंदाळां भीक किरमल्ल रीठ ।
—मा वचनिका

रौंदियोड़ो—देखो 'रूंदियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. रौंदियोडी' (रू. भे.)

रौंधणो, रौंधबो—देखो 'रूदणो, रूदबो' (रू. भे)

उ०—खिलखिलै खेचरा बीर नारद खिलै, ऊमरा ऊपरी गैढला ऊघळै । बाय उर अचळ दादो तिको किम चळै, पातिसाही कटक रौंधिया पातळै । —परतापसिंघ सगतावत रो गीत

रौंधियोडो—देखो—'रूदियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. रौंधियोड़ी)

रौंस—स. पु -१ रहस्य, गुप्त तत्व ।

उ०—१ घनातम क्या जाणसी, रांम भजन की रौंस । अलू कूं रिव आखिया, हरीया देखण सोस । —अनुभववाणी

उ०—२ रांम महाराज की रौंस जाणै नही, हौंस करि पथर पूजत पाजी । अगम अगाध कु साध सूरा लहै, पच पूरा गहै मढे मरद गाजी । —अनुभववाणी

२ केलि, क्रीडा ।

उ०—१ सब ही काजळ सारिया, करि करि मन की हौंस । मिळी पियारी पीव सु, हरीया न्यारी रौंस । —अनुभववाणी

उ०—२ सुनि बाता सखियन खिनै, करत कुंवारी हौंस । हरीया पीव बिन परसियां, होय नियारी रौंस । —अनुभववाणी

३ समानता, बराबरी ।

उ०—दुस्मन दूर है, सब दुनिया मे हुकम मंजूर है । मगरुरां की मगरुरी दफै करते हैं, छत्रधारी की सी रौस धरते हैं । बडे बडे छत्रपति गढपति देसोत डडौत करते है । —उपाध्याय रामविजय

४ देखो—'रोस' (रू. भे.)

रौ—म पु.—षष्टी विभक्ति का चिन्ह ।

उ०—१ जवनाण दळै बीजूभळै, देख भलै कुळ देस रौ । इद्र-भाण खगै वह ऊजळै, मिळै जोत मुकनेस रौ । —रा. रू.

उ०—२ सखी अमीणा कथ रौ, अग ढीलो आचंत । कडी ठहक्कै बगतरा, नडी नडी नाचत । —हा. भा.

रू भे —रउ, रिउ ।

रौगन—देखो 'रोगन' (रू भे)

रौगनी देखो 'रोगनी' (रू भे)

रौड—म पु -- १ युद्ध, लडाई ।

उ०—(महा) मोड मुरधर तणा खळा दळ मोडता, दौंड पतिसाह स करै दावा । रौड रमता थका चोड रिम्म चूरता, ठौड ही ठौड राठोड ठावा । घ. व. ग्र.

२ देखो 'राड' (रू भे.)

रू भे --रोर ।

रौड़ो—म पु —१ भेंस ।

२ मादा, ऊट ।

३ देखो 'रोडो' (रू भे)

रौजो—स पु [अ रौज] १ उद्यान, बाग ।

२ हरा भरा मैदान ।

३ वह इमारत जो किसी पीर, सरदार या बादशाह की कब्र के ऊपर बनी हुई हो ।

रू भे —रोजो

रौभट—१ देखो 'रोभट' (रू भे)

२ देखो 'राभट' (रू भे)

रौणो—म पु [म ऽरण्य] वन, रन, जगल ।

उ०—मिनै चोर मारग जोर प्रगटै व्यापारा, बधि वसती रन बनै वेळ बरग्ना ऊदारा । वडै क्रोध विमतार रौद्र साबर घर रौणा, जठै सिघ सद्दता तठै गरजन बिलौणा । —रा. रू.

रौब—देखो 'रौद्र' (रू भे.)

उ०—१ हजारा गुडै बीकुडै एक होवां, रहचक्क मातौ छुटै तक्क रौवां। सिपायां सिरे सार वाजै सबाळी, वधै दांमणी सौ अणी भूप वाळी। —रा. रू.

उ०—२ सूर रौ कुरब्ब साह,भाति भांति कीध भाव। देखतां स राह दोड, रौद खांन भूप राव। —सू. प्र.

उ०—३ ग्रौनाड रगत असुराण ग्रोट, कोकद रौद चालत कोट। धूमरा नैण ऊठत धाड, प्राभंत दंत सेना पहाड। — मा. वचनिका

उ०—४ पोए तिरसूळ पछाटै प्राण, घुमाडै रौदां दौमक घाण। दुबाह जोध जुटै रिणवाट, धडछै धाड मचै घर घाट। —मा वचनिका

रौबघड़, रौबघड़ा—स. स्त्री.—मुमलमानो की सेना, यवन सेना।

उ०—१ चखाडै कूंत चखता धणी चापडै, रौबघड़ पछाड अचळ राखी। जीवता सिंभ महाराज वणियो 'जसौ', समर चा करै रवि चद साखी। —महाराजा जसवतसिह जी रौ गीत

उ०—२ गाजा वाजा अर गेद गडा, जुडै न 'चादो' रौबघड़ां। जै जुडसी 'चादौ' रौदघडा, गाज न वाज न गेद गडा। चादा वीरमदेवौत राठौड रौ गीत

रौदाळ—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे)

उ०—१ ढाहूंतौ काळा ढेचाळा, रौदाळां पोचाळौ राजा। वडा अद वीका वाळा वहै दूजौ वीक। —वीठू दूदौ

उ०—२ रवताळ रौदाळ रोसाळ महारिण, क्राळ खडाळ आताळ करै। झिलमाळ कघाळ कराळ पडै झडि, धू मझि माळ जटाळ धरै। —सू. प्र

रौद्र—वि [स.] १ रुद्र से सबधित, रुद्र सबधी, रुद्र का, रुद्र की तरह।

२ अत्यन्त उग्र, प्रचण्ड भीषण या विकट।

उ० -हुय रौद्र हक्क ग्रेह लक्क जै किलक्क जोगणी. बका गरज्जै खडग वज्जै सक्ति रज्जै सक्कणी। —रा रू.

स. पु- [स. रौद्रम्] १ क्रोध, गुस्सा, रोष।

२ भयकरता, भीषणता।

३ यमराज।

[स रौद्र:] ४ किसी प्रकार का अत्याचार अन्याय अपमान आदि का व्यवहार देखकर उसका प्रतिकार करने या रोकने के लिए मन मे क्रोध से उत्पन्न होने वाला भाव विशेष, रौद्ररस (साहित्य)

उ०—जुडै भूप जग, रसै रौद्र रग सयद्दांण सूर, किलम्म करूर। —सू. प्र.

५ गर्मी, तेजी।

६ असुर, राक्षस।

७ जगली जाति का मनुष्य, म्लेच्छ।

८ यवन, मुसलमान।

उ०—लेखा पाखै लूटिया, घोडा ऊठ दरब्ब। रौद्र प्रचार सधारिया, सारै मार सरब्ब। —रा. रू.

रू. भे—रउद, रउद्द, रउद्ध, रउद्र, रबद, रवद, रवद्द, रवद्दि, रवद्र, रुद्र, रोद, रोद्र, रौद।

मह—रवदाण, रवदाळ, रोदाळ, रौदाळ, रौदाळ, रौद्रव, रौद्रांण, रौद्राइण, रौद्रायण।

रौद्रकार—स. स्त्री. [स. रौद्रकार] १ भयकर आवाज या ध्वनि।

रू. भे—रोदकार।

रौद्रकेतु—स पु. [स] आकाश के पूर्व दक्षिण मे शूल के अग्र भाग के समान कपासी, रुक्ष (रूखा) और ताम्रवर्ण किरणो से युक्त एक केतु। (ज्योतिष)

रौद्रपत, रौद्रपति—स. पु.—बादशाह।

रू. भे.—रोदपत, रोदपति।

रौद्रराव—स. पु.—बादशाह।

रू भे.—रोदराव।

रौद्रव—देखो 'रौद्र' (मह., रू भे.)

उ०—१ खगा भट वाहत रौद्रव सूर। सभै जुध 'भारथ' संभ्रम 'सूर'। —सू. प्र.

उ०—२ रौद्रव दुख सुख विघन सुणै रिख। खडित मेव कीध हेकणि पख। —सू. प्र.

उ०—३ अरडाव घोर अघार रौद्रव रूपरा। रवि ताम ग्रीखम रूप, भड सह ऊपरा। —सू. प्र.

रौद्र-सम्प्रदाय—स. पु.—रुद्र को मानने वाला सम्प्रदाय विशेष।

रौद्रांण—देखो 'रौद्र' (मह, रू. भे.)

उ०—रौद्रांण भचक भाला गरीठ, धारक्क बहै गज बाज धीठ। —सू. प्र.

रौद्राइण, रौद्रायण, रौद्राळ—स पु.—१ बादशाह।

उ०—१ धुवा रव दव घोम सेहारव डबर खरा। क्रमतै रौद्राइण कियौ, व्योम विचाळै व्योम। —वचनिका

उ०—२ रचि फोजा रौद्राळ, हैवर नर वहति हमति माडण इद्र झड माडियौ, वादळ फिर वरसाळ। —वचनिका

२ देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे)

रौद्री—स स्त्री [स.] १ शिव की पत्नी पार्वती।

२ सगीत मे गाधार स्वर की दो श्रुतियो मे से पहली श्रुति।

रौनक—स. स्त्री. [अ. रौनक] १ सुंदर वर्ण, आकृति या रूप।

२ चमक दमक के कारण होने वाली शोभा या सुंदरता।

१ प्रसन्न-मुख लोगों की चहल पहल।

रीब—देखो 'रोब' (रू. भे.)

रीबदार—देखो 'रोबदार' (रू. भे.)

रीबीलौ—देखो 'रोबीलौ' (रू. भे.)

रीर-सं. स्त्री.—१ मादा ऊंट, ऊंटनी।

२ देखो 'रोर' (रू. भे.)

उ०—अजा दहण गज दहण किया अत, उरंग तुरग नर दहण 'उधोर'। आतम वहण किया अथपतियै, रांणा जही न वहिया रीर। —राणा जगतसिंह री गीत

रीरव-स. पु. [सं. रौरव.] इक्कीस प्रकार के नरकों में से एक नरक का नाम।

वि. [सं. रौरव] भयकर, भयावह।

रू. भे.—रोरव।

रीळ-स स्त्री.—१ हसी, मजाक, दिल्लगी।

उ०—लपमी लपकावै तपसी तावै, आपा मीच उठदा है। बेली चोळां में मन मोळां मे, रौळां में रुठदा है। —ऊ रा

२. देखो 'रौळो' (मह., रू. भे.)

उ०—१ पिड चूर दिली घर साहजहापुर चीत लगै हर प्रात चडै। दळ मूळ जडां नारनौळ उखेडे, पौळि दिली दुख रौळ पड़ै। —रा. रू.

उ०—२ छणहणिया छौळा गोमे गोळा दुरगावीर हुआ दौळा चौपट मुख चौळा भांजे भोळां रवदा सवळा मावै रौळा। —मा. वचनिका

३ देखो 'रोळ' (रू. भे.)

उ०—धमस पाखरा रौळ गैणाग धुजे धरा, नडै गजथाट पहाड नमिया। गुरड़ 'अनरध' तणी झड़प लागी गळा,गडपती नाग दहवाट गमिया। —राजा अनिरुद्धसिंघ री गीत

रौळि, रोळी-स. स्त्री.—देखो 'रौळो' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—जाणि रैं जांणि जुग माहि जन सूरिवा। दोय दळ बीचमे रौळि चाले। —अनुभववांणी

रोळणौ, रोळबौ-क्रि स.—१ हजम करना, पचाना।

उ०—इक भाटी आबखी, पियै दुब्बार सरावां। भैसां आधा भखै, बोट नुकल मै कबाबां। डड सहत करि दुरत, रवद काचा पळ रौळै। मण बारह मुदगरां, ग्रणा जेही ऊ तोलै। भोळै परत्र जम भूपरै, पिड जांणे अहि पांखिया। विण सुरसबध भक्खो बिलम, अघ कघ उपडाखिया। —सू. प्र

२ घोडे की पीठ को खुरहरे से साफ करना।

उ०—१ डाव लगांणा डहै, इसा पडवा अपारां। रौळ पसम खुरहरां, मळै हाथळां अपारां। अंग काढे आरसी, पोत भरळकै पसम्मा। दरियाई कस दीव, राळ लूबै रेसम्मां। भाकत्ति किला-वृत्ती सभे, तग रेसम जुग ताणिया। ऊकडा मीड़ उडण इसा, उमै कडा कसि आणिया। —सू. प्र.

३ मिश्रण करना।

४ अनाज के ढेर पर हाथ फेरते हुए बढ़िया अनाज को पृथक करना।

५ आलोडित करना, सानना।

६ देखो 'रोळणौ, रोळबौ' (रू. भे)

उ०—सेनां प्रसण रौळती सेलां, नीर रुधर जू छुटि नळ। बटका समर हुवौ चद बीजो, गहली वाळा कळम कळ। —भीवसिंघ हाडा री गीत

रौळणहार, हारौ (हारी), रौळणियौ—वि०।

रौळिप्रोड़ौ रौळियोड़ौ, रौळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

रौळीजणौ, रौळीजबौ—कर्म वा०।

रोळणौ, रोळबौ, रोळवणौ, रोळवबौ—रू० भे०।

रौळवणौ, रोळवबौ—देखो 'रौळणौ, रौळबौ' (रू. भे)

उ०—१ तोलै कर त्रिसूळ, रगतासुर रिग रौळवै। असगा जड उनमूळ, आघग माई बीसहथ। —मा. वचनिका

उ०—२ भिडै मुख मुख्ख आगी भुवहार, घरै हथ रौळवियो चव-घार। वणै मुख चौळ छिवै ब्रहमड, 'पतै' अस हाकळियो परचड। —सू. प्र.

रौळो-स. पु.—१ युद्ध, झगडा, समर।

उ०—१ तारा तेजसी कयो 'ओ तौ खाटरो है, नै करमचद डोघो है। तद सांगजी कयो,' जी इणनू खाटरो मत देखो। म्हां भेळा घणा रौळा किया है, सू आदमी वडो मरदानो है। —द. दा.

उ०—२ पछै गढ री पाज लड़ाई हुई, जठै जबदळखा जी सोलार-खान जी ताजुजी केसरखान जी नदा ताज काम आया। और ही साथ काम आया तथा घायल हुवा। नै राजसी मुतो जाळोर रा रौळा मे काम आयो। —नैणसी

ऊ०—३ ऊपर वीस सहस आखाडै, पाच सहसहूं वाग उपाडै। जुटै वागि रावत नृप जौळा, रौळा हेक माहि दो रौळा। —सू. प्र

२ विद्रोह।

उ०—घोडा रोवै घास नै टाबरिया रोवे दाणा नै। बुरजा में ठुकराण्या रोवै, जामण जाया नै क रौळो वापरियो, वा' वा' रौळो वापरियो, देस मे अग्रेज आयो रै, क रौळो वापरियो। —लो गी

३ उपद्रव, उत्पात, बखेडा।

उ०—अेक डावडी बोली—अदाता, आपरै राज रौ अेक

आदमी म्हारी बग्घी लूटली । चार हाजरिया अर दो डावडिया नै राहडियां सूं बांध आपरै साथै लेयग्यो । आथूणा दरवाजा सूं पाच कोस आतरै ओ रौळो व्हियो । सगळी गैणो गाठो, रोकडा रिपिया अर मोहरा री जको सवाय मे । —फुलवाडी

४ पिंगल प्रकाश के अनुसार प्रथम यगण, तगण फिर रगण और अंत में मगण सहित एक गुरु वर्ण छद विशेष ।

५ शोर गुल, हल्ला ।

उ०—१ राता जागण रो जगळ मे रौळो, ढाणी ढाणी मे फिरतो ढिढोळो । पाबू हरबू रा सुणता परवाडा, धुणता नर माथा सुणता घर धाडा । —ऊ का.

उ०—२ कूभा सामा आवता,डरै न अब रौळां । बेळघा मे हूल्या पडै, काळा दिन घोळा । —लू

६ देखो 'रोळौ' (रू भे.)

रौस-सं स्त्री.—भाति, प्रकार, तरह ।

उ०—जोख एम जोधाण, रीझ मडै महाराजा । वाग गोठ बणाव, सझै उच्छाह सकाजा । रचै रौस रौसरी, कळा बहतरि अधिकारा । रमै कमध राजिंद्र, रौस रौसरी सिकारां । जेठी कुरग मदझर जुटै, होय इनामा हुन्नरां । क्रीड़ा विलास विधविध करै, 'अभो' इद आडंबरा । —सू प्र.

२ देखो 'रोस' (रू. भे.)

उ०—बराळां भीम बच रौस चाळां बिढण, तखत ढीली तणी सामळै तेम । 'असाबत' तणा खग तेज माहे खळै, अबन खळ कीट आतस भबक्कै जेम ।

—महाराजा अजीतसिंघ राठोड री गीत

रौसन—देखो 'रोसन' (रू. भे.)

रौसनदान—देखो 'रोसनदान' (रू. भे)

रौसनाई—देखो 'रुसनाई' (रू. भे.)

उ०—कायमखा सैद सेख बोलै अलीहार । तीन पौहरू का आफताफ राठौड़, पर रौसनाई ठहरावै । चौथे पहर की रौसनाई सब आलम पर आवै । —सू. प्र.

रौसनी-स. स्त्री.—१ सफेद रग की मिठाई विशेष ।

उ०—भाति भाति का मसाला रोगानी रौसनीं केसरिया बक्खी भाति भाति की मिठाई । मेवै की पुलाव अनेक आई । —सू. प्र.

२ देखो 'रोसनी' (रू. भे.)

रौसाळ—देखो 'रोसाळ' (रू. भे.)

उ०—चखा चोळ रौसाळ भाळा भपट चापडे क्रोधता आगरा दिली क जळै । —महाराजा अजीतसिंह रो गीत

ल

ल—नागरी वर्ण माला का अट्ठाईसवा वर्ण जिसका उच्चारण दत स्थान है । इसके उच्चारण मे सवार, नाद और घोष प्रयत्न लगते है । यह पार्श्विक, घोष, वर्त्स्य, अल्पप्राण है ।

ल-स. पु.—१ लोक २ वचन ३ सुख । (एका.)

लक-सं. स्त्री.—१ कटि, कमर । (अ. मा)

उ०— दाढी रग उजळ भाळ सिंदूर, प्याला मतवाळ नसो भरपूर । लोई सिर फाबत धावळ लक, चमू पर सावळ सूळ चमक । —मे. म.

उ०—२ डीमू लक मराळि गय, पिक-सर एही वाणि । ढोला ऐही मारुई, जेहा हुझ निवाणि । —ढो० मा०

उ०—३ दाढ गरद्दा भारिया, अग जरद्दा दूण । रूप मरद्दां मीर सब, लंक करद्दा तूण । —रा. रू.

स. पु.—२ ढेर, राशि, समूह ।

३ कलह, झगडा, लडाई ।

क्रि प्र.—लगणी, लगाणी, लागणी ।

वि.—१ पतली, कृश (कटि)

उ०—गति गयद, जघ केळिग्रभ, केहरि जिम कटि लंक हरि डसण विद्रुम अधर, मारू-भ्रकुटि मयक । —ढो मा

उ०—२ कडि लक चित्रा अत्र जाण्यौ, जंघ कदळी थंभ । पीडी तिसु मोहई, जांणे कनक महाबळि रग । —रुकमणी मगळ

३ बहुत, अधिक, अत्यधिक ।

४ देखो 'लका' (रू. भे.) (डिं. को)

उ०—१ दाखे ईसरदासियो, कटक केण न कोय । राम हि रांम रटतडा, लक विभीसण जोय । —ह० र०

उ०—२ एक वार मेल्हो अगद, महि लंक मझारै । दई हुकम अगद दियो, वप ताम वधारै । —सू० प्र०

उ०—३ ऊधमता कोठार अखूटत, नीर समद जू न कू नमै ।'करण' हरा लक हुतो प्रभाकर हेमाळै आवियो हमै ।

—जोगीदास कवारियौ

रू. भे —लकी, लक्क, लक्कि, लांक ।

लंकक-वि —लका का या लका सम्बन्धी ।

लंक-टंकटा-स. स्त्री —१ सुकेस नामक राक्षस की माता जो कि विद्युत-केस की पुत्री थी ।

२ मध्या की कन्या का नाम ।

लकणी-स स्त्री. [सं. लंकिनी] एक राक्षसी जिसे हनुमान जी ने लका प्रवेश के समय मुष्टिका प्रहार से गिरा दिया था ।

रू. भे.—लकिणी

लंकदाह-स. पु. [स. लंका दाहिन्] लका को जलाने वाला हनुमान । (अ. मा)

लंकदीप—देखो 'लका' ।

लंकनाथ—देखो—'लकानाथ' (रू. भे.)

लंकनायक—देखो—'लंकानायक' (रू. भे)

लंकप—स. पु. [सं. लंकप] १ रावण ।

उ०—परै बहु ठोर बमीलनि बब, नचै मनु लंकप काळ कुटब । निवालनि अप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार ।
—ला० रा०

२ विभीषण ।

लंकपत, लकपति, लंकपती—देखो—'लकापति' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ जस जीवण अपजस मरण, कर देखो सब कोय । कहा लंकपत ले गयो, कहा करण गयो खोय । —अज्ञात

उ०—२ जोधाजोध लकपत जेहा, ए नवकोट तणा छळ एहा ।
—रा० रू०

उ०—३ मेले सेन्या दैता मारण, पांणी ऊपर बांधे पाज । कीधो भेक सीता कारण, राणी लंकपती चो राजं । —पि० प्र०

लंकपुरी— देखो लका' ।

उ०—लंकपुरी यें सोधे सियारे, एतो सुक्षम रूप सुजाण, हनुमत हाले रे । —गी० रा०

लंकलियरा—देखो 'लकालियरा' (रू भे.)

लंकवरीस—देखो 'लकावरीस' (रू भे.)

उ०—सेस हिमालय स्रंग सुरगय हय नय पय दरम । रुद्र सिलोचय रग, जय जय लंकवरीस जस । —बा० दा०

लंका—स स्त्री. १ भारत के दक्षिण का एक द्वीप जहा रामायण के अनुसार रावण राज्य करता था ।

उ०—अधिप इडे अजमेर नूं, चढियो सैभर सीम । सिर लंका किर सामवण, राम बिचारी रीस । —रा रू

पर्याय—कुनणापुर, पुरटपुरी ।

मुहा.—१ लका नै मूदडी दिखाणी=समृद्ध व्यक्ति के समक्ष तुच्छ वस्तु पर गर्व करना ।

२ लंका मे 'दाळिद्री होणौ=अच्छी जगह पर, उच्चकुल मे या भाग्यशालियो मे बुरा अथवा हतभाग्य होना ।

२ लका के ओर की दिशा, दक्षिण दिशा ।

३ भारत का दक्षिणावृत देश ।

४ वेश्या ।

रू. भे.—लक, लक्क, लक्कि ।

लंकाऊ—वि. [स. लका+रा. प्र. ऊ] लंका की ओर की दिशा का ।

क्रि. वि.—दक्षिण दिशा की ओर ।

लंकाद—देखो 'लकाध' (रू. भे.)

लंकादती—स. पु. यौ. [स. लका+दत्त+रा. प्र ई.] लंका का दान करने वाला, श्री रामचन्द्र । (अ मा., नां. मा.)

लकादहण—स. पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर । (न. मा.)

२ भगवान श्रीरामचन्द्र ।

३ देखो 'लकादाही' (रू. भे.)

लंकादाह, लकादाही—स पु.—श्रीहनुमान । (अ. मा.)

रू. भे.—लकादहण

लंकादीप—देखो 'लका'

लंकाधु, लंकाधू—देखो 'लकाधू' (रू. भे.)

लंकाध—स. पु. [स. लका+ध्रुव] लका के ओर की दिशा, दक्षिण दिशा ।

रू. भे.—लकाद

लकाधु, लकाधू—स. पु. [स लका+ध्रुव] १ दक्षिणि ध्रुव ।

वि—१ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा सम्बन्धी ।

क्रि वि —१ दक्षिण दिशा की ओर ।

रू भे —लकादु लकादू ।

लकानाथ—स पु. यौ. [स.] १ रावण ।

२ विभीषण ।

रू भे.—लकनाथ, लकानाह ।

लंकानायक—सं पु. [स] १ रावण ।

२ विभीषण ।

रू. भे —लकनायक ।

लंकानगरी—देखो 'लका' ।

उ०—अथ रावण, लंकानगरी राजधानि, चित्रकूटगढ, अनेक अक्षौहिणी दळ…… । —व. स.

लकानाह—देखो लकानाथ' (रू भे)

लकापत. लकापति, लकापती—स. पु. [स लकापति] १ लका का स्वामी लका का राजा, रावण (अ मा, डि को)

उ० - १ लंकापति रावण धणी, सात समद बिच बस्ती फेर ।
—बी. दे.

उ०—२ गरब कियौ लंकापति रावण, टूक टूक कर डारा ।
—मीरा

रू भे लकपत, लकपति, लकपती ।

लंकापुरी देखो 'लका'

उ०—अमरावती समान, अलकापुरी प्रतिस्पर्द्धमान, लंकापुरी सरवांगीण कुबेर ग्राम निवास नै कहै वाक, जिहा समुद्र जगतीय यान प्राकार सागर प्रमाण खादिकावलयावतार, अमरनगरी प्रकार सहोदर निवकर इसिउ नगर । —व. स.

लंकापुरीलुंटाक-वि. [स. लकापुरी+लुटाक] लकापुरी को लूटने वाला।

लंकाबरीस—देखो लंकावरीस' [रू. भे]

लंकारि, लकारी-सं. पु. [स. लंका+अरि] श्री रामचन्द्र।

लंका-रो-तोरणियो - देखो 'तोरण' (७)

लकाळ-स. पु. [स. लका+आलुच्] १ श्री रामचन्द्र।

उ०—लकाळ सेवग तूझ लागो, भ्रात लिछमण खळा भागो। पती कुळ स्वारथी पागो, करण असह निकंद। —र. ज. प्र.

२ रावण।

उ०—१ तरवार खण खण तूट तण, पण मत्र भण भण रसण पण, गहवगा जण जण अगणागण, मुर भवण कपण लगण मण लकाळ धूजिय लंक। —र. रू.

उ०—२ पण पाळ ब्रह्मा आप चो पण, असुरां गाळ। इम उलट कमळा कदम आयो, पुरी लक प्रजाळ। तो लंकाळ जी लंकाळ कप डर धहलियो लंकाळ। —र. रू.

३ विभीषण।

४ सिंह, शेर।

उ०—१ ओ३म नमस्ते चडका चद्रभाळ री नवीन आभा, छटा मणि भाळरी भुजाटा रही छाय। आरोहा लकाळ री क मत्रा धू भाळ री आग, रमा रूप जयो काळ-पचाळ री गाय। —नवळजी लाळस

उ०—२ पळासण अग भखै भर पेट, भेळा उतमग सदा सिव भेट। 'लाला' कर थापलि कध लंकाळ, 'फुला' सिध मग भरावत फाळ। —रा. रू.

उ०—३ सबळं भूखं सीह ज्यूं, चढिया मुहि चुगलाळ। गिलमा ऊमर गिळ गयो, ज्या अग आळ लकाळ। —र रू

५ राजा।

६ अगस्त्य तारा।

[स. लक] ७ ललाट, भाल।

उ०—भुज विसाळ लंकाळ, वरण झळाहळ सुदर। भरि मातै भाद्रवै, जाणि ऊगो भासकर। —गु. रू. ब.

८ राक्षस।

उ०—मेना ऊतरे मसंद पार पदम्मे अठारह सहस, बहस्से निसाण किना गाजियो बाराण। वेद वाण दूण लाख डडाळा लंकाळ बजे, असुरा सुराह माह माचियो आराण। —जोरावरसिंघ

वि—१ वीर, योद्धा।

उ०—१ रणखेती रजपूत री बीर न भूलै बाळ। बारह बरसा बापरो, लहै बैर लंकाळ। —बी. स

उ०—२ झगाळं रा जेठसुद, तीज हुवो रिणताळ। जूटा भार्ट जग मे, कमधां छळ लंकाळ। —रा. रू

२ भयकर, भयानक, भीषण।

उ०—जिके इदु फ (पु) ण, इद कंद तां गळै निकासे। जुध प्रवीण रढरांण, पांण त्यां दूरि पियासे। जिके छत्र गज गत्त, जत्र त्या हुये अलग्गा। जिके काळ लकाळ लुळे लुळ पाये लग्गा। पूरब पछिम उत्तर दखिण, कीती रेणां खळभले। अखैराज अरक ओहोसियो, हुय नरद हालोहले। —मैणसी

३ जबरदस्त, जोरावर।

४ लका का, लंका सम्बन्धी।

५ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा सम्बन्धी।

मह.—लकाळी, लकाळो।

लंकालियण-स. पु - १ परमेश्वर। (ह. ना. मा)

२ रामचन्द्र।

रू भे —'लकलियण'

लंकावरीस-वि. [स. लंका+रा. वरीस] लका का दान करने वाला, लका प्रदान करने वाला।

स पु—श्री रामचन्द्र भगवान। (ह. ना. मा.)

रू भे — लकवरीस, लकाबरीस

लंकाळी, लंकाळो-सं. पु.—देखो 'लंकाळ' (मह. रू. भे.)

उ०—'बीक' हर सीह मार करतो वसूं, अभग अर-ग्रद तो सीस आया। लाग गयणाग भुज तोल खग लकाळा, आग हो जाग कलियाण जाया। —पदमा सांदू

उ०—२ बाळकिसन पति छळ बाहाळो, 'लाल' जोड दळ दाळ लकाळो। मामि मनाह जिसा विच माथा, हरकिमनोत महाबळ हाथा। — रा. रू

लंकिणी—देखो 'लकणी' (रू. भे.)

लंकियो-स. पु—एक तारा विशेष।

लंकी-वि.—१ सिह के समान कृश कमर वाली, पतली कमर वाली।

उ०—१ कुच पाकी नारगिया, सुपारी सा कठोर। पान सरीखो पेट। केसर लको। नाभी मडळ गुलाब री फूल। —फुलवाड़ी

उ०—२ नख सूं ले चोटी लगै, तन छबि मांह तरंग। लुळ मिळ केहर लकियां, लाबं नीर भग्गत। —बा. दा

स पु—१ कबूतर।

उ०—बरचि दीप वेवडा, कळो केवडा कनोती। लको बजर अलोल बजरमणि मोल बिचोती। —मे. म.

२ एक विशेष प्रकार का कबूतर।

उ०—१ प्रौछ पइछ रवि ग्रग, चमर भमर सुर चंम्मर। केकी ग्रीव कसस्सि, तिकर लंकी कब्बूतर। —सू. प्र.

उ०—२ तिके किणहेक भांतरी कबाण छै। ग्रसल सीगण, मेरजबान खांचतां बड़बडाट करै, कायर देख भागै, ग्रडार टाकरै बिनै लागै, लंकी कबूतर री गरदन ज्यू बाकी। तिके बाहू मे घालीजै छै। —जैतसी ऊदावत री बात

३ सिंह।

४ वीर, योद्धा।

५ एक प्रकार का ताम्बूल।

६ देखो 'लंक' (रू. भे.)

उ०—१ भीण लंकी महा दीसइ ए नारि, सरस कठ सोहायगउ। —बी दे

उ०—२ ग्राभा भळपट ग्रग क बदे चीरिया। दरियाई धुज देह, हुंमग हीरियां। लटकण झोला लेह, क वेसर बंकिया। भरिया भूपण भार, लचक्कत लंकियां। —र हमीर

लंकीली—वि. स्त्री.—१ सुन्दर कमर वाली।

उ०—ग्रथ कंवरी रै पत्री मिघश्री लग्न री लडी, जीव री जडी, मजीली फबीली लजीली, छबीली, रगकीली, लंकीली, चमकीली बकीली लटकीली चकीली चटकीली बतीस लछगी। —र. हमीर

लंकेंद्र—स. पु. [स लका+इन्द्र] १ रावण।

उ०—राजा प्रताप लंकेंद्र सत्य वाचा हरिस्चंद्र, माहसिक विक्रमादित्य। —व. स.

२ विभीषण।

लंकेस, लंकेसर, लंकेसरि, लकेसरी लंकेसुर, लकेसुरि, लकेसुरी, लंकेस्वर, लकेस्वरी—सं. पु. [स. लका+ईश, लंका+ईश्वर] १ रावण। —ना मा.

उ०—१ सुर तजौ चित वरतो ग्रमोक, लकेस हरण मुख करा लोक। —सू प्र.

उ०—२ बर्क वयण लकेस बिभीसण, म्है तो भुजबळ मिता। बांणी बिया हुवै रे बीरा, चित ग्रवकांणी चिता —र. रू.

उ०—३ लकेसर लंक गयौ वा लेय। —रामरासो

उ०—४ लकेसुरि ओता भेवैलोक —रामरासो

२ विभीषण।

उ०—उबै बार बभीखणौ चालि ग्रायौ, लखै ते हणूमान पावा लगायौ। प्रणामेस बैभाखण भूप येनूं, जपै ग्राव लकेस स्रीराम जेनूं। —म् प्र

३ ग्रगस्त्य नामक तारा।

लंक्क, लंक्कि—१ देखो 'लंक' (रू. भे)

उ०—ऊमर दीठी मारूई डीभू जेहि लंक्कि। जांणे हर सिरि फूलडा, डाकै चढी डहक्कि। —ढो. मा.

२ देखो 'लंका' (रू. भे.)

लंख—वडे बास पर खेल करने वाली नट जाति।

उ०—भइ (ट्र) भोजिग बहु भट्ट नट्ट बोलइ बिरुदाळी। लंख मंख खेलंति मग्र, कर देता ताळी। —विजयसिंह सूरि

लंग—स. पु.—१ देखो 'लिंग' (रू. भे.)

उ०—न रूप रेख लेख भेख नेख तौ निरंजणं। न रंग ग्रंग लग भग मग ढंग संजणं। —र ज. प्र.

२ देखो 'लाग' (रू भे)

लगड़ - देखो 'लंगडौ' (मह, रू भे)

लंगड़ाणौ, लंगडाबौ—क्रि. वि.—दोनो ग्रथवा चारो पैरो का बराबर न जमना। कुछ लचका कर या लगडा कर चलना।

लगडावणहार, हारौ (हारी), लगडावणियौ—वि.।

लगड़ायोड़ौ—भू का कृ।

लगड़ाईजणौ, लंगडाईजबौ—भाव वा.।

लगडी—वि—१ शक्तिशाली, बली।

म पु.—२ एक प्रकार का छद।

३ हनुमान।

म. स्त्री—४ घोडे की एक चाल विशेष।

उ०—दुडकी, कदम, खोळ ग्रर नाच री लंगडी चाला धुराघुर मे जाणी जित्तो पारगत व्हैगो। घोडो तो बादळ री मंमा परवाणे हुकम बजावतो। —फुलवाड़ी

५ देखो 'लंगरी' (रू. भे)

लंगड़ो, लगडो—स. पु.—१ एक प्रकार का ग्राम।

वि [फा लग] (स्त्री लगडी) २ जिसका एक पाव क्षत हो गया हो, काम न करता हो।

३ पैर मे विकार या कष्ट के कारण जो ठीक से न चल पाता हो।

४ कोई एक ग्राधार विकार युक्त या नष्ट होने से जो भली प्रकार ग्रथवा सीधा खडा न रह पाता हो।

५ क्षतिग्रस्त होने या टूटने के कारण जो पैर टेढा हो गया हो, मुड गया हो।

रू भे—लागडौ, लागौ, लाघडौ, लाघौ।

मह.—लंगड।

लंगर—वि—१ बहुत ग्रधिक।

उ०—थेट्ट छोड बवा थोक, मह ग्रघ दीघ हामळ मोक। सार्नू ईनरो नह सोक, लगर सुखी सगळा लोक। —र. रू.

२ भारी, वजनदार।

३ दुष्ट, निर्लज्ज, ढीठ।

उ०—लंगर लोग लोभ सौं लागै, बोले सदा उन्हीं की भीर। जोर जुल्म बीच बटपारे, आदि अंत उनही सौं सीर। —दादूवाणी

४ नटखट, शरारती।

सं. पु.—१ सांकल, शृंखला।

उ०—१ आसत सगत ऊधरा आचा, जस जालम अखमाल जिसौ। लोह दोयण ताछै लोह लंगर, श्रो 'लालौ' लोहार यसौ।

—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

२ हाथी के चारो पैरो मे बांधी जाने वाली साकल।

उ०—१ डग बेडियां दुलट्ठ, लगा चहुवां पग लगर। आकासी सारसी, करै आग्राज भयकर। —सू प्र.

उ०—२ सुजस घटा बीर पुड सादा, लंगर रठीठा क्रपण लग। सत्र भञ्ज थटा निवाजण सकव्या, जोस ऊपटां गयंद जग

—उदौतसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—३ अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणी। लाज लोह लंगरे लगाए, गय जिम आणी गय गमणी। —वेलि.

३ बंधन।

उ०—१ कवसळ सुता राजकवार, त्रत जन काज रा। दरमै चख्या दत खग दोय लंगर लाज रा। —र. ज प्र

उ०—२ लगर लज्जा रा तरभंगर लाडा, गोरख माया रा गाहिड रा गाडा। —ऊ का

४ पैरो मे धारण किया जाने वाला सोना या चाँदी का आभूषण विशेष।

५ जहाज और नाव आदि को ठहराने के लिए लोहे का बना हुआ बहुत बडा काटा जिसे समुद्र या बडी नदी मे जहाज पर से गिराकर जहाज को पानी पर स्थिर रखा जाता है।

उ०—नेहा समद बीच नाव लगी है, बाल न लगत बही जात अकेली। लाज को लगर छूट गयौ है, वही जात बिना दाम की चेरी। —मीरा

६ लोहे की बनी वह वजनदार शृंखला जिसे अपराधी के पैरो मे इसलिए बाधते हैं कि वह भाग न जाए।

७ वह मोटा रस्सा जो जहाजो पर काम मे लाया जाता है।

८ पक्की सिलाई से पूर्व दूर दूर पर डाले जाने वाले कच्चे टाके, कच्ची सिलाई।

९ कतार, पंक्ति।

उ०—परस लसकर धरर थरर कायर पिंजर, लहर आतस लगर डमर लागौ। जोरवर दोयणा भणू जबर दोहू, वेध जण वजर खग भजर गत गजर बागौ। —पहाडखां आढौ

१० समूह, झुड।

उ०—नह भूलौ बात सुमत्रा नंदण, छोह अनाहक छेले। बे सिय सोध हिमैं भड आवै, लंगर फौजा ले ले। —र. रू.

११ फौज, सेना।

उ०—१ माथा हालै सेस मह, पडै भार अणपार। कूच करै आया कठठ, लंगर लीधा लार। लार लगर लियौ पदम दस आठ कप। तोय धर कूल बप जोस ताजा। —र. रू.

उ०—२ 'रागौ' 'बागौ' राड रा, भुज भालै भर भार। काळी निस आया कठठ, लंगर लीधा लार। —वी मा.

१२ वीर, योद्धा।

उ०—अरि अळियौ जड हूंत उपाडै, साकुर धोरी हांक सरै। ल्हास करै फौजा बड लंगर, कीध नीनांणा ममर करै।

—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

१३ भोजन।

१४ गरीबो, या याचको आदि को बाटा जाने वाला भोजन।

उ०—दरबार मूं गरीब गुरबों नू खैरायत लंगर बटणै लागियौ।

—कुवरसी साखला री वारता

१५ भोजनालय, भोजनशाला।

१६ मंदिर मे लटकाया या किसी पशु के गळे मे बाधे जाने वाले घंटे के अन्दर बीच मे लटकने वाला धातु का गुटका, लोलक।

वि. वि—इस गुटके का निचला शिरा मोटा होता है और ऊपरी शिरे मे छेद होता है। यह घटे के अन्दर बीचो बीच लटकता रहता है और घटे के हिलने के साथ ही हिलकर घटे के अन्दर वाले भाग से टकराता है जिससे ध्वनि उत्पन्न होती है।

लगरखानौ—स. पु [फा लगरखाना] १ दीनो व दरिद्रो को भोजन बांटने का स्थान।

उ०—लंगरखाना भेग है, दळ पार न पाई। 'माल' बियौ बळराव है, जैचद सवाई। —वी॰ मा.

लंगरगाह—स पु.—१ समुद्र या बडी नदी के किनारे का वह स्थान जहा पर लगर गिराकर जहाज ठहराये जाते हैं।

लगरलार— वि॰—पंक्तिबद्ध, पंक्तियुक्त।

क्रि. वि.—क्रमश, लगातार।

लंगराई—स. स्त्री.—१ शैतान, ढीठ या दुष्ट होने की अवस्था, क्रिया या भाव, शैतानी, शरारत, ढिठाई, दुष्टता।

उ०—१ औगुण बहुत सीम नहि साची, बहौत करी लगराई। सौकणि सकळ घेरती थाकी, (पीव) परकट मेज बुलाई।

—ह. पु. वा.

लंगरी—वि.—१ योद्धा, वीर।

उ०—१ लंगरी रिम सेन लाडौ, गुमर धारक लाज गाडौ। दळ

कहै कूकेण ग्राडी, कूक जाडी कूक जाडी। —र. रू.

उ०—२ लंगरी लगाटा पाण 'डूंग' ने छुड़ाय ग्रायौ, सोभा तिहू थांना साक पायौ सूर बन्द। पायौ फते 'ज्वार' नाम रहायौ छवतो प्रभा, बापौ ग्रासमान लागी ग्रायौ नेतबंध। —डूगजी री गीत

२ सेनापति।

यौ.—लंगरीराव।

३ देखो 'लंगड़ी'।

लंगरीराव - योद्धा, वीर।

उ०—लंगरीराव रूका रटक नेराका, भलौ 'ग्रगजीत' 'ऊमराव' भीमेण का। — महादान मेहडू

लंगळ—देखो 'लांगळ' (रू भे.)

लंगस—देखो 'लगस' (रू. भे.)

उ०— लंगस ऊपटा फौज गज घटा भुजळग लहर, सूरतन ठहर जळ लहर साजा। ग्रधीपत 'ग्रभौ' ग्रायौ उलट छत्रपती, रौद 'सरबिलद' पर समद राजा। — महाराजा ग्रभर्यासह री गीत

उ०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसै लंगस, वार बकधार तिण वार दीधा। बिलंबी बार समराथ जळ दळ बिगरि, 'कूभ' सुत जेमि सुत 'नाथ' कीधा। — राव सत्रसाल री गीत

उ०—३ तुरत ग्रेक खरचै रतन, लंगस तोड लहग। ग्रभग भूप उवांबरा, वड गज बाज विहग।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेळ री बात

लंगा—स. पु—एक मुसलमान गायक जाति।

लंगार—स. स्त्री.—पंक्ति, कतार।

लंगी—स. स्त्री. [फा. लग] कुश्ती का एक दांव जिससे टांग लगडी करके प्रतिद्वन्द्वी को टांग ग्रडाकर गिराया जाता है।

लंगूर—स. पु. [स. लांगूलिन्] (स्त्री. लगूरी) १ साधारण बदर से कुछ बड़ा काले मुंह व लबी दुम वाला बदर।

उ०—बड़ला माथै ग्रेक ग्रचपळा लंगूर री वासौ। ग्रठी नै घाचण नै फेर ग्रायौ नै उठीनै वौ उणारी कोथळियौ उचकाय लीनौ।

— फुलवाडी

२ चपल चचल बालको के लिए प्रयोग मे लाया जाने वाला शब्द।

उ०—मां, घणी लडाय, थू इण लंगूर नै इतार देवैला। बिना मापा री नेह ग्रर लाड पछै फोटा घालैला। छोरौ दिन-दिन परवारै। —फुलवाडी

३ देखो 'लांगूळी' (रू. भे.) (डि. को.)

रू. भे—लगुल, लगूल

ग्रल्पा. — लगूरियौ

लंगूरियौ—देखो 'लगूर' (ग्रल्पा, रू. भे)

लंगूरी—सं. स्त्री. [सं. लघन] १ उछल उछल कर चलने वाली घोडे की एक चाल।

२ चुराए हुए पशुग्रो को ढूढ लाने पर उनको दिया जाने वाला ईनाम।

वि.— ३ लगूर का, लगूर सम्बन्धी।

लंगूल—१ देखो 'लांगुळ' (रू. भे) (डि को)

२ देखो 'लांगूळी' (रू. भे.) (ग्र. मा., ना. मा)

लंगोचा—स पु—१ कीमे मे भर कर तली हुई जानवर की ग्रात, कुलमा, गुलाम।

लंगोट—सं. स्त्री [स. लिग+पट या रा. ग्रोट] १ प्राय लम्बी पट्टी के ग्राकार का ग्रथवा तिकोना सिला एक वस्त्र विशेष जो केवल उपस्थ ढकने के लिए कमर मे बाधा जाता है।

उ०—तन लाल गुलाल प्रवाल तरै, भल भोग नितब नितब भरे। कसिया तन चोट लगोट कसी, बिमियारस ग्रनर बीच बसी।

—ऊ का

मुहा० लगोटी री ढीलौ=वह व्यक्ति जो ग्रवसर ग्राने पर स्त्री गमन करने मे न सकुचाता हो।

लगोट री साचौ=कभी भी पर-स्त्री गमन न करने वाला व्यक्ति।

ग्रल्पा,—लगोटी।

मह —लगोटौ।

लंगोटबद, लंगोटबध—वि —सदैव के लिए जिसने स्त्री गमन, या परस्त्री के साथ संभोग न करने के लिए प्रण कर रखा हो।

उ०—लंगोटबध बाला सह, लाल चिह्वौ मुदराळ वणि। ग्रोभिके वीर महूँ जागिया, भगवती नीपाड भणि। —मा. वचनिका

लंगोटियौयार—स. पु. यौ.—बचपन का मित्र।

लंगोटी—स स्त्री —१ वह छोटा लगोट जो प्राय: बच्चो के उपस्थ एव गुदा ढकने हेतु कमर मे बाधा जाता है।

मुहा लगोटी मे मस्त=जिस के पास कुछ भी न हो फिर भी सदैव प्रसन्न रहने वाला।

२ काछनी, कोपीन।

लंगोटौ,—देखो 'लगोट' (मह, रू. भे)

उ०—१ सिन्यासी नागा ग्रवधूता, भगवा बसतर ग्रग बभूता। जटा लंगोटा ससतर धारी, ग्राप न मारै ग्रौरा मारी। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ लाल लंगोटौ तिलक सिंदूर को, बैठा बजरग ग्रासण ढाळ।

—लो. गी

लंगोर—स. पु —योद्धा, बहादुर।

उ०—घोडा बाधै घूमरा, तोडा दए टकोर। नाळा लिए कळाइया, लडवा कज लंगोर।

—पा. प्र.

लंगोलार—वि.—१ क्रमशः।

२ पक्तिबद्ध।

लंगी—१ लगा जाति का व्यक्ति।

२ देखो 'लागो'

उ०—बदै 'ग्रंगदेस' हुवा जोध वंका। लंगा झोकरै झोक प्राजाळ लका। —सू. प्र.

लंघक—वि. [स. लघ] १ लांघने वाला, उल्लंघन करने वाला।

२ नियम तोडने वाला।

लंघण—देखो 'लांघण' (रू. भे)

उ०—१ सुण ढोला करहउ कहइ, मो मनि मोटी ग्रास। कइगा कूपळ नवि चरू, लंघण पडइ पचास। —ढो. मा

उ०—२ हसा बिडद बिचार लै, चुगै तो मोती चुग्ग। नित रा करणा लंघणा, जीणी कितैक जुग्ग। —ग्रज्ञात

लंघणियो—देखो 'लाघणियो' (रू. भे.)

लंघणीक—देखो 'लाघणीक' (रू. भे)

उ०—मण, सरद, चकिन, निस, रतिपतिह, लंघणीक मदह चलत। मिथळेस कुवरि, सीता सुतन, कवि एती ग्रोपम कहत। —र. ज. प्र.

लंघणो, लंघबो—देखो 'लाघणो, लाघबो' (रू भे.)

उ०—१ भिल्लै नरिंद खटतीस जात, जोगिंद्र जाग ठिल्लै जमात। लंघी ग्रजाद दघ लहर लेत, खागीबंध चढिया बीर खेत। —वि. सं.

उ०—२ कुर्भा दुउ नइ पखडी, थाकउ विनउ वहेसि। सायर लंघी प्री मिळउ, प्री मिळि पाछी देसि। —ढो. मा.

उ०—३ वेधो दुद न वीसरै, 'चंद' तणो हरनाथ। पथ ग्रलग्गो लंघतां, लारा लग्गो साथ। —रा. रू

उ०—४ हणमत पखै वानर ग्रवर, कवण कुदि लंघै महण। —गु. रू. ब

उ०—५ छोडा छोड करता छोळा, नामै सीस नरेस नू। लंघै रान ग्रणंद ग्रलेखै, सो मुख नही सूरेस नू। —र रू.

लंघणहार, हारो (हारी) लंघणियो—वि.।

लंघिग्रोड़ो, लंघियोड़ो, लंघ्योड़ो—भू. का कृ.।

लंघीजणो, लंघीजबो—कर्म वा।

लंघन—देखो 'लाघण' (रू. भे.)

लंघाड़णो, लंघाड़बो—देखो 'लंघाणो, लघाबो' (रू. भे)

लंघाड़ियोड़ो—देखो 'लघायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. लघाडियोडी.

लंघाणियो—देखो 'लाघणियो' (रू. भे)

उ०—केहरी मरण जोहणी चौ कटेडै, बिछुटिया लगग लंघाणियो बाघ। खाग धारी गयो साहिजादा खडै, खान-जादा गयो वाहतो खाग। —लालसिंह सोळकी रो गीत

लंघाणो, लंघाबो—क्रि. स [लघणो या लांघणो क्रिया का प्रे. रू.] लांघने का काम किसी से करवाना।

लघाणहार, हारो (हारी), लघाणियो—वि०।

लघायोड़ो—भू० का० कृ०।

लंघाईजणो, लंघाईजबो—कर्म वा०

वि वि—देखो लाघणो, लाघबो'

लंघाडणो, लंघाडबो, लघावणो, लघावबो (रू. भे.)

लघावणो, लघावबो—देखो 'लघाणो, लघाबो' (रू. भे.)

उ०—गाडर पूछ विलब कर कोई पार लघावै। —केसौदास गाडण

लंघावणहार, हारो (हारी), लंघावणियो—वि.।

लघाविग्रोड़ो, लंघावियोड़ो, लंघाव्योड़ो—भू. का. कृ.।

लघावीजणो, लघावीजबो—कर्म वा.।

लंघावियोड़ो—देखो 'लंघायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लंघावियोडी)

लंघो—वि. [सं लघन] भूखा।

उ०—कडीया लंघा केहरी, गज राज चलारां। नितंबां दीजै ग्रोपमा, वीणार वैहारा। —मयाराम दरजी री बात

लंचणो, लंचबो—देखो 'ललचणो, ललचबो' (रू भे.)

उ०—रसै माधुरै पी जभीरी बिजोरा, झुकै साख फूलां फलां भारी भोरा। मनी सी मधू दाख ग्रनार मेवा, दियो ग्रांगि लंचै सुधा जाणि देवा। —रा. रू.

लंचणहार, हारो (हारी), लंचणियो—वि.।

लंचिग्रोडो, लंचियोड़ो, लंच्योड़ो—भू का. कृ.।

लंचीजणो, लंचीजबो—भाव वा.।

लंछण, लाछन, लंछन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे)

उ०—ग्यान मिली जीमण, कीधो, भिन्न नाम कुमर नामज दीधो। नागनणो लंछण जाणी, स्रीपास भजो पुरुसा दानी। —जयवांणी

२ देखो लक्ष्मण' (रू. भे.)

३ देखो 'लाछन' (रू भे)

उ०—१ साल्ह कुग्रर मूडउ कहइ, माळवणी मुख जोइ। प्रांण तजेसी पदमणी, लछण देस्यइ लोइ। —ढो. मा.

उ०—२ रिमह लंछणि घोग्गिउ उल्लसइ सु भवपकि पडघा जन तारिसिइ। —जयसेखर सूरि

लंछन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे)

उ०—१ खडग लंछन तप तेज ग्रखडित, ग्ररिहन तीन भुवन ग्रव-

संम । समय मदर कहै मेरो मन लिनो, जिन चरणों जिम मानस हंस । —स कु

उ०—२ सीस मानता देवाधिपती, ससिहर पहब जाणी । विनय चंद्र प्रभू चरणा लागी, लांछन तउ मिस श्रांणी । —वि कु

२ देखो 'लाछन' (रू. भे.)

३ देखो 'लछमण' (रू भे)

लांछी —स्वभाव ।

उ० पण पूलम हाळा आपरै लांछा माफ नुहै भायलै नवलजी रा पग पकड़ लेसी तथा भूल सिकार जासी । —दमदास

लांजा-स स्त्री —१ लक्ष्मी ।

उ०—आजी बेटा थारै काहै वां गुमराई जी स्यामसुंदर थारै लांजा री लुगाईजी । —लो गी

२ धन, दौलत ।

उ० पदमणि पूगळ री कगळ गळ आगे, लांजा हजारै गजा ग्रह लागै । गहिलळ मगजाई मेले घर मेली, लेली महिमा मन महिला दळ लेली । —रू ना

३ सीता ।

४ वेस्या ।

५ व्यभिचारिणी कुटिनी, कुलटा ।

लांजो, लांझो-वि [स्त्री लाजा लाजी, लांझा, लांझी] १ सुन्दर ।

उ०—उदियापुर लांजा सहर, मारग पग मोनार । दे भाला पाणी भरै, आईयो पिछोलाह । —महादान मेहडू

२ सुकुमार ।

३ सौकीन, अलबेला ।

उ०—बेवले ओठी नै हेलो मारियो ए, लांजा ओठी ए लो, घड़इयो उलगावतो जाव, बाला जी थी । —लो. गी

४ रसिक, रसिया ।

उ०—तठा उपरांत कवि नै भोगिया भमर लांजा छयल । हमनाक जवान निजर आज बाजार माहे ऊभा जोहा राय छै ।

—राजान राउत रो बात बगाव

रू. भे लाजो

५ लाट

स पु—६ हंस ।

लांठ-वि—१ दुष्ट, कृतघ्न ।

उ०—निनाद बध अध के दुकग घोटतै । नदे महान लांठ सठ के कुकंठ घोटतै मदे । —ऊ का.

२ मूर्ख, उजड्ड ।

लांठई-स स्त्री. —लठ होने की अवस्था या भाव, लठापन

लांड-स पु. [स लांड उत्क्षेपणे - उछालना ऊपर फेंकना] पुरुषेंद्रिय, शिश्न ।

रू भे.— लवड़ लाड़ ।

लांडण—देखो 'लदन' (रू भे)

लांडी-स. स्त्री —कुलटा, दुश्चरित्रा स्त्री ।

लंडूरो-वि [स्त्री लंडूरी] १ बिना पूंछ का, जिसकी पूंछ कटी हुई हो ।

२ अग भग ।

लत देखो 'लता' (रू भे)

लतग-स पु—देवलोक (जैन)

लंदन, लंधन-स स्त्री—१ इग्लैंड की राजधानी का शहर ।

उ०—त्या हदी तरवार पग पतसाहरै । लंदन घराई लाय निराळ नर नाहरै । —किसोरदान बारहठ

उ० - २ प्रतापीक जग चावो 'पातल', दुनिया मे ज्यूं सूर दिपै । लंधन पगी जाग वै त्यागत, जन जस सेवग राटो तपै ।

— कृष्णीदान देथा ।

रू भे लंदण

लंप-स पु--१ खनिज तैल, मिट्टी का तेल ।

२ देखो 'लैंप' (रू भे)

३ देखो 'लाप' (रू भे.)

लंपक-सं पु —१ लामघम देश जो काबुल नदी के उत्तरी तट पर है ।

रू भे — 'लवक'

लंपट-वि. [स] १ व्यभिचारी, विषयी, कामुक ।

उ०—लंपट लळ लुच्चा बी लुच्चा दूच्चा पग डोलदा है । चाकर रा चाकर ठाकर ठाकर चाकर बण बोलदा है । — रा

२ ऐयाशी ।

३ लालची ।

४ अनुरक्त लीन ।

उ०—जिमै मृग जिण मारू दारू दीधी, पण इसो गुरुचोर सो उण समै वैर लीज याद किया पण निसय मे लंपट न हुयो ।

—वी स टी.

५ उपपति, यार ।

रू भे —लंपटी ।

लंपटता-स स्त्री. —१ लंपट होने का भाव या अवस्था ।

२ कुकर्म, व्यभिचार ।

लंपटी—देखो 'लंपट' (रू. भे)

उ०—१ राठा करतव लंपटी, अति घणा । ते नो लखण कहीजै नीचो रे । —जयवाणी

लंपाक–पु. सं. [सं.] लपट, दुराचारी ।

२ पुराणों में वर्णित उत्तर पश्चिमी भारतवर्ष का मुरड नामक देश ।

लांपो–स. स्त्री.—१ गोटा किनारी की एक किस्म जो ओढने के लगाई जाती है ।

लांपौ—देखो 'लांपो' (रू भे.)

लं'फणौ, लं'फबौ–क्रि. अ. [स लफ] कूदना, छलांग लगाना ।

उ०—वेग सुरगम् अनि विहद, प्राक्रम तन भरपूर । गढ सफील झप्यौ गिगन, लंफ्यौ जाण लंगूर । —बगसीराम पुरोहित री बात

लं'फणहार, हारौ (हारी), लं'फणियो—वि. ।

लं'फिग्रोड़ो, लं'फियोड़ो, लं'फ्योड़ो—भू. का. कृ. ।

लं'फोजणौ, लं'फोजबौ—भाव वा. ।

लं'फियोड़ो—कूदा हुआ, छलांग लगाया हुआ ।

(स्त्री लफियोडी)

लं'ब–सं. पु [सं] १ कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस, प्रलंबासुर ।

२ खर नामक दैत्य का भाई एक असुर ।

३ एक प्राचीन मुनि ।

४ शुद्ध राग का एक भेद ।

५ ग्रहों की एक प्रकार की गति (ज्योतिष) ।

६ वह रेखा जो किसी रेखा पर खडी और सीधी गिरती हो ।

७ दूरी, फासला ।

उ०—किला मे लंब घणी पड़ती तिणसू गोपाळ पोळ रै उरली तरफ नै चोकैळाव रै परली तरफ भैरू पोळ नै बुरज और फेर नवी कराई । —मारवाड री ख्यात

रू भे.— लबक ।

लांबउ—देखो 'लांबो' (रू भे)

उ०—छोटी बीख न ग्रापडा, लांबी लाज मरेह । सयण वटाउ वाळ रे, लबऊ साद करेह । —ढो मा.

लांब-कंचुक–स. स्त्री. [सं] प्राय' विधवा स्त्रियो के पहनने की अंगिया ।

लांबक–स. पु.—फलित ज्योतिष के योग जिनकी सख्या १५ है ।

देखो 'लब' १, २, (रू. भे.)

उ०—ताड वृक्ष अमूल्या कान्हउ, सिकटा सुर सधारया । नड कूबड नई भमण कराव्या, खड खड लांबक मारया ।

—रुक्मणी मगळ

देखो 'लपक' (रू भे)

रू भे —लबुक ।

लंबकन्न, लांबकरण–वि. [स लंब+कर्ण] १ लम्बे कानों वाला, जिसके कान लम्बे हों ।

२ मूर्ख ।

उ०—विवक्रि वक्र ह्वं अवक्र चक्ष बैठते बहैं । विवन्न लांबकन्न के दुकन्न ऐंठते बहैं । —ऊ. का.

स. पु —१ गधा (डि. को)

२ बिलाव, ३ हाथी, ४ बकरा, ५ खरगोश, ६ राक्षस ।

लबकराड़ियौ–वि. [स लब+रा. कराड़ी=गरदन] लबी गर्दन वाला ।

उ०—करहा लांबकराड़िया, बे बे अगुळ कन्न । रातिज चीन्हो वेलड़ी, तिण लाखीणा पन्न । —ढो. मा.

सं. पु.—ऊंट ।

लंबग्रीव–सं. पु [सं.] ऊंट ।

उ०—बाणां भरिया लंबग्रीवा वणे, सीसांण सोरांण अपार सुणे ।

—विनय-रासौ

वि.—लंबी गर्दन वाला ।

लंबड़ाणौ, लांबड़ाबौ–क्रि. स.—उद्दण्ड गाय, भैस आदि पशुओं को खेत मे चरने हेतु लम्बे रस्से मे बांधना या बांध कर छोड देना ।

लंबडाणहार, हारौ (हारी), लांबडाणियौ—वि० ।

लंबडायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लंबडाईजणो, लांबडाईजबौ—कर्म वा० ।

लंबराणौ, लांबराबौ, लंबेड़णौ, लंबेड़बौ, लांबेड़णौ, लांबेड़बौ

—रू. भे.

लबड़ायोड़ौ–भू का कृ —उद्दण्ड गाय, भैस आदि पशुओ को खेत मे चरने हेतु लंबे रस्से मे बाधा या बाधकर छोडा हुआ ।

(स्त्री. लबडायोडी)

लंबछड़—देखो 'लामछड़' (रू भे)

उ०—छुटै लांबछड़ ताड तड तड़ । बाण छुटै वड सोक सड सड़ ।

—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री बात

लंबजीभी–वि. [स लब+जिह्वा] १ जिसकी जीभ लबी हो ।

२ वाचाल, बातुनी ।

लंबत—देखो 'लबित' (रू. भे.)

उ०—चमर धार परवार, करी आमर परिक्रमा । भुज लांबत डडोत, वयण अन पेख ब्रहम्मा । —रा. रू.

लंबतड़ग, लांबधड़ंग–वि ताड के समान लम्बा, बहुत लम्बा ।

उ०—१ बलिराजा पूग जिग किया, तब इद्र हेत हरि आया । पाव पताळि सीस असमाना, लांबतड़ग कहाया । —ह. पु. वां.

उ०—२ इत्तै ई मे तौ अेक लंबधड़ग काळी काबळ ओढियोड़ी रति-वाळी जीवती जागती मूरती आय धमकी । —बरसगांठ

रू. भे.—लबो-तडंग, लाबी-तड़ंग ।

लंबपयोधरा-स. स्त्री.—कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

लबमान-वि. [स. लंबमान] दूर तक फैलाया गया हुआ।

लंबर—देखो 'नबर' (रू. भे.)

लंबरदार—देखो 'नबरदार' (रू भे.)

लंबराणो, लंबराबो—देखो 'लबडाणौ, लंबडाबौ' (रू. भे)

लबराणहार, हारो (हारी), लंबराणियो—वि०।

लबरायोड़ो— भू० का० कृ०।

लबराईजणो, लबराईजबो—कर्म वा०।

लंबहत, लबहथ, लबहात, लबहाथ—देखो 'लाबाहाथ' (रू. भे.)

लबहोठी-वि. - जिसके होठ लबे हो।

लबाई-स. स्त्री.—१ लबा होने की अवस्था या भाव, लम्बापन। २ किसी वस्तु का सबसे लबा आयाम या पक्ष।

लंबाणो, लबाबो-क्रि. स.—१ लम्बा करना। २ मृत करना।

लबाणहार, हारो (हारी), लबाणियो—वि०।

लबायोड़ो—भू० का० कृ०।

लबाईजणो, लंबाईजबो—कर्म वा०।

लंबायत-वि. [स.] १ लबायमान।

उ०—भर आगै देवराज री रचियौ आठ हाथ उच्छ्रित, आठ हाथ लंबायत, बतीस पूतळी सहित चन्द्रकांत मणिमय एक सिंघासण कोई प्रासाद री पीठ-भू खोदता कढियौ तिकौ ही आप रै सिंघासण बणायौ। —व. भा.

२ लम्बा।

लंबाहात, लंबाहाथ—देखो 'लाबाहाथ' (रू. भे.)

लंबिका-सं. स्त्री. [स.] गले के अदर की घंटी, कोआ।

लंबित-भू. का. कृ. [सं.] १ लबा किया हुआ. २ निश्चय किया हुआ. ३ विचार स्थगित किया हुआ. ४ लटकता हुआ ५ झूलता हुआ. ६ लब के रूप मे आया हुआ. ७ आधारित, आश्रित, टिका हुआ।

स. पु.—मास, गोश्त।

रू. भे.—'लबत'

लबी—देखो 'लाबी' (रू भे.)

लंबीकांवळी—देखो 'लाबीकावळी' (रू. भे.)

लबी बांयारी—देखो 'लाबी बायारी' (रू भे)

लंबुक-वि. - देखो 'लबक' (रू. भे)

लंबू, लंबो—देखो लाबो' (रू. भे.)

उ० यो मन भवरा बसं तन बबौ' गवन करै कब छोटिय लबौ। —अनुभववाणी

(स्त्री लबी)

लबेड़णो, लबेड़बो देखो 'लबडाणौ, लंबडाबौ' (रू भे.)

लबेड़णहार, हारो (हारी), लंबेडणियो—वि०।

लंबेड़ियोड़ो, लबेडियोड़ो, लबेड्योड़ो— भू० का० कृ०।

लबेडाजणो, लंबेडीजबो—कर्म वा०।

लबेडियोड़ो—देखो 'लबडायोडो' (रू. भे)

(स्त्री लबेडियोडी)

लबोडो -देखो 'लाबो' (अल्पा., रू भे)

लंबोतड़ंग, लंबोतड्ग देखो 'लबतडग' (रू. भे)

लंबोदर-स. पु [स लब + उदर] १ जिसका पेट बडा हो। २ भोजन भट्ट। ३ गजानन, गणेश। (अ मा., डि को, ह. ना मा.)

उ०—गढ जोधाण 'अभौ' गजपत्ती, गुण गाऊ दूजौ मदपत्ती। लबोदर सारद हित लीजै, दास जाण मोहि वाणी दीजै। —रा. रू.

रू. भे.—'लबोदर'

अल्पा,—लबोदरौ।

लंबोदरो—देखो 'लबोदर' (अल्पा., रू भे)

लंबोवर— देखो 'लबोदर' (रू. भे)

उ०—भिभू गवरि सुतन वारण डमण मेक लंबोदर। —रामरासौ

लंबौ—देखो 'लाबौ' (रू. भे)

उ०—गोरी पीडी पर ऊघडता गोडा। लंबी बीखा दै लेतोडी लोडा। —ऊ. का.

(स्त्री. लबी)

लंबोस्ट-स. पु. [स. लबोष्ठ] १ ऊट। २.४९ क्षेत्रपालो मे से ४४ वा क्षेत्रपाल।

लंभ-स पु. [स. लभस] १ धन, दौलत।

उ०—१ पारभकरण आरभ मे, लियण लभ सोरंभ जस। रखपाळ मडोवर राखिया, भू डंड रक्खै अडस। —गु. रू. ब.

उ०—२ लभ अगासिजै क्रोडी लाख, भेदगर खट भाख। —गु. रू. ब

लहणो—देखो 'लहणौ' (रू. भे.)

ल-स. पु. [स.] १ इन्द्र, २ चिन्ह, ३ पैर। (एका) ४ छद शास्त्र मे लघु मात्रा का सकेत। स. स्त्री—५ पृथ्वी। (एका)

लइयौ–सं. पु.—देखो 'नेयक' (अल्पा., रू भे.) (जैन)

लई–स. स्त्री.—१ लक्ष्मी।

२ एक पौधा विशेष।

उ०—जिकौ थे किसा नही जाणौ हौ, फोग है जिती धरती थारी है, अर साजी वा लई है, जिती धरती म्हारी है। —द. दा.

३ देखो 'लेई' (रू भे)

लउडौ –देखो 'लकडौ' (रू भे)

उ०—एक तउ माल हूतउ पडण पडिवउ। अनेरउं वली ऊपरि माथइ लउडा नउ घाउ। - षष्टी शतक

लउवौ—देखो 'लावौ' (रू भे)

उ०—तीतर लउवा वाटवड, वैदाणी बुगलाह। लखं पखीवण उड रहया, वा-वा जी वा-वाह। —गजउद्धार

लउस–स. पु.– देश विशेष। (व. स.)

लक–सं पु —१ पसलियो और कटि के मध्य का भाग।

उ०—झामरै पूंछ रा, भुवरियैरूं रा, चोळमे रग रा, लाघियै मीह ज्यू लकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाठ करता थका,…। -खीची गगेव नीबावत रो दोपारो

लकड—देखो 'लकडौ' (मह, रू. भे.)

उ०—पीछै स १५६४ चैत वद २ नै खीकरनी जी आपरै हाथसू गुभारो कियौ, बिना तगारी। नै जाळारा लकड दिया ऊपर। —द दा.

२ देखो 'लकडी'

उ०—जाय जगत मे धम जगावै, आप धम की गम न पावै। भेदी बिना भरम का भंडा, हाथ लोह लकड़ का डडा।

—अनुभववाणी

लकड़की—देखो 'लकडी' (अल्पा., रू भे)

लकड़ी–स स्त्री. [स. लगुट या लगुड.] १ पेड झाडी आदि की छाल के नीचे का वह ठोस भाग जो जलाने, ईमारत या इमारती सामान बनानेमे प्रयुक्त होता है, काष्ठ।

उ०—१ तठा उपरायंत हिरण खुलै छै सू जाणै धोबी रै घर कपडा मोकळा किया छै। मास उतार-उतार टुकडिया मे घातजै छै मिरच धाणा सूंठ हळदी बेसवार दीजै छै। दहीरो रजवो दीजै छै। लकड़ी री कठौती मे सुदबक रावजै छै।

—खीची गंगेव नीबावत रो दोपहरो

उ०—२ जड खिण काटी लकड़ी तौ ईत कूपळ काढि। हरिया फेर न पागरै, इसी बाढणी बाढि। —अनुभववाणी

२ पेड झाडी आदि के तनो एव शाखाओं का वह ठोस भाग जो चुल्हे आदि मे जलाने हेतु काम मे आता है, इंधन।

उ० वडाई भरीजग्यौ। बाप मरग्यौ लकड़यां रा भारिया ढोवतौ ढोवतौ, तीरथ करघौ न वरत। —दसदोख

मुहा.–१ लकडी देणी—शव को चिता पर रख कर जलाना। या जलती चिता पर लकडी डालना।

२ लकडी होणी—सूख कर लकडी जैसा कठोर होना। शरीर कृश या क्षीण होना।

३ कुछ विशिष्ट पेडो की वह लम्बी एव पतली शाखा जो आत्म-रक्षार्थ या वृद्धावस्था में सहायतार्थ रखी जाती है।

मुहा.—लकडी चलाणी—आत्मरक्षार्थ लकडी को कलात्मक ढग से चारो ओर घुमाना।

२ लकडी चलणी या चालणी=किन्ही दो पक्षो मे लकडी द्वारा लडाई प्रारभ हो जाना।

रू. भे —लक्कडी लाकडी।

मह. लकड, लकडौ, लक्कड।

अल्पा., लकडकी

लकड़ीकार–स पु.—सुथार, बढई।

लकड़ौ–स. पु —१ लकडी का मोटा लट्ठा, लक्कड।

उ० –जद स्वामीजी बोल्या—लकड़ा नै पाणी मे न्हाख्या ऊचौ आवै तौ कुण ही ल्यावै नही पिण हलकापणां रा योग सू तिरै।

—भि द्र.

२ देखो 'लकडी' (मह., रू भे)

उ०—तिण रुपिया री जायगा लेय नै लकड़ा री खटकड कीधी।

भि. द्र.

मुहा.—१ लकडौ करणौ=किसी कार्य के सम्पादनार्थ किसी को बार बार तंग करना।

२ लकडौ फसणौ=विघ्न या बाधा पडना।

३ लकडौ फसाणौ=विघ्न या बाधा डालना।

रू. भे.—लउडौ, लाकडौ, लाकडौ।

मह.,—लकड, लक्कड, ल.कड, लाकड।

अल्पा,—लाकडियौ, लाकडियौ।

लकमान—देखो 'लुकमान' (रू. भे.)

लकलक–स पु –१ सांपो, कुत्तो मनुष्यो की बार-बार व शीघ्रता मे जीभ हिलाने की क्रिया।

२ बक-झक करने की क्रिया या भाव।

रू. भे —लिकलिक।

लकलकणौ, लकलकबौ–क्रि अ.—तलवार आदि तेज धार वाले हथियारो का अति तीव्र गति मे ऊपर-नीचे, दाये-बाये चमकते हुवे चलना।

लकलकणहार, हारौ (हारी), लकलकणियौ—वि०।

लकलकिओड़ौ, लकलकियोड़ौ, लकलक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लकलकीजणौ, लकलकीजबौ—भाव वा० ।
लकलक्कणौ, लकलक्कबौ—रू० भे० ।

लकलकियोड़ौ–भू. का कृ. —तलवार आदि तेज धार वाले हथियारों का अति तीव्र गति में ऊपर-नीचे, दायें-बायें चमकते हुवे चला हुआ ।
(स्त्री. लकलकियोड़ी)

लकलक्कणौ, लकलक्कबौ – देखो 'लकलकणौ, लकलकबौ' (रू भे)
उ०—लकलक्कै बरछी लगत छळिछाय छळक्कै । —व. भा
लकलक्कणहार, हारौ (हारी), लकलक्कणियौ—वि० ।
लकलक्कियोड़ौ, लकलाक्कयोड़ौ, लकलक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लकलक्कीजणौ, लकलक्कीजबौ—भाव वा० ।

लकलक्कियोड़ौ- देखो 'लकलकियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. लकलक्कियोड़ी)

लकवौ–स पु. [अ लकवा] एक प्रकार का वात रोग जिसमें रोगी का मुह टेढ़ा हो जाता है, अर्दित ।
उ०—मूळी देवै महज, देयदै फासी देखौ । मिरची लकवै माहि, उभय अंतर अवरेखौ । —ऊ का.

लकार–म पु [स] १ सस्कृत व्याकरण के काल, जो दस माने गये हैं ।
२ ल वर्ण या अक्षर के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

लकारी–म. पु.—मुसलमानो में सैय्यद वंश की एक शाखा ।
उ०—सिध में लकारी मडयदारी मानता विसेस है ।
—बा दा ख्यात

लकीर–म. स्त्री [म रेखा] १ लम्बाई के आकार मे बनाया हुआ कोई चिन्ह या आकृति ।
ज्यू—कागद माथै लकीर खीचणी ।
२ पंक्ति, कतार ।
ज्यूं गिलासा री एक लकीर ।
३ लम्बे समय से चली आ रही परम्परा, प्रणाली, प्रथा या रीति ।
मुहा —१ लकीर कूटणी या पीटणी- एक ही बात को बार-बार दोहराना, बकझक करना, रूढ़िवादी होना ।
२ लकीर री फकीर होणौ—रूढ़ियो का अंधानुकरण करना ।

लकीरियौ, लकीरियौ–स पु.—एक प्रकार का सिंह की जाति का हिंसक जानवर जिसके शरीर पर रेखाएं होती हैं ।
उ० तठा उपरात करि नै राजान सिलामति बडा सिकारी सियाळी, माढूळ, पटाना, केहरी नवहथा, कठीरीआ, रीछीआ, तेलिआ, तीदूला, लकीरिआ बघेरिआ, चीतरा, भाति भाति रा जाति जाति रा, नाहर सावळे जडिआ रहडुआ गाडे, बैठा, कसता कणणाता, बूबाड करता वहै छै । —रा सा. सं.

लकुट–म पु. [स लकुट] लकड़ी ।
उ०—कमळ मुगट गाळी करै पीतपट बाधकट, आन बळ हाथ दे लकुट भाळो । कुमळियापीत सिर विकट आगाज कर, कडछियो कान नटराज काळौ । —बा. दा.

लकूंदर–म पु १ बन्दर ।
२ बन्दूक की कल (औजार) विशेष जिसकी चोट से बन्दुक छूटती है ।
३ लुच्चा, लफगा, बदमाश ।
उ०—खांगानै पीगा माथा तिमक, लागा लपक लकूंदरा । इम अमल तमाखू है उभे, एकण विल रा ऊंदरा । —ऊ. का.

लकोणौ, लकोबौ- देखो 'लुकाणौ, लुकाबौ' (रू. भे)
उ० १ सपन में रैया अर चोर नी आया । आपरा धन नै लको'र राखौ अर मवेरा रूख वाल्या । —दसदोख
लकोणहार, हारौ (हारी), लकोणियौ—वि० ।
लकोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
लकोईजणौ, लकोईजबौ –कर्म वा० ।

लकोयोड़ौ—देखो लुकायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. लकोयोड़ी)

लकोवणौ, लकोवबौ –देखो 'लुकाणौ, लुकाबौ' (रू भे)
उ०—घोळा खोसै काच कलूटी हरदम हाथा ही में राखै । देखणियां सूं सकनो लकोवै है, पण ठोठी रै विगदा घालती ही जावै है ।
—दसदोख
लकोवणहार, हारौ (हारी), लकोवणियौ—वि० ।
लकोवियोड़ौ, लकोवियोड़ौ, लकोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लकोवीजणौ, लकोवीजबौ—कर्म वा० ।

लकोवियोड़ौ--देखो 'लुकायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री लकोवियोड़ी)

लक्क–म स्त्री —१ ललकार, हाक ।
उ०—रुय रौद्र हक्क ग्रेह लक्क जं किलक्क जोगणी । वंका गरज्जे खडग वज्जे सक्ति रज्जै सक्कणी । —रा. रू.

लक्कड़–वि.—मूर्ख ।
उ०—पाघरो कैवै है—बेटै नै लक्कड़ री मक्कड़ कर लियौ है, कैरा फूटा है, जिको इयै नै बटो देवै । —बरसगाठ
२ देखो 'लकड़ी' (मह, रू भे.)
३ देखो 'लकड़ौ' (मह , रू. भे)
उ०—लक्कड मे दीवौ, हवौ घरगो धोरी रै । धाम धूम छागा देईनै, फूंक दियौ जिम होळो रै । —जयवांणी

लक्कड़ी—देखो लकड़ी' (रू. भे)
उ०—म्हेनै दो री भूंबिया, लूगै-लक्काडयेह । म्हानै पिउजी मारिया

बगारै कळियेह । —डो. मा.

उ०—ल्यें हाथ **लक्कड़ी** लाळ मुख पडे भ्रमेवै । लिचपचती कडि लाक, लाज मन माहि न लेवै । —ध. व ग्र.

लक्ख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ रहै रतध्यान अठयासी रिक्ख, लहै नह पार ब्रहम्मा **लक्ख** । सदा जस नव्व कहे मुख मेम, आदेम आदेस आदेस आदेस । —ह. र.

उ०—२ बिसन्न निपाय किती एक बार, ब्रहम्मा हाथ दियौ बोपार । आपाणी इच्छा आप अलक्ख, लिया अवतार चौरासी **लक्ख** । —ह. र

लक्खण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—सुलतांन पठाई, दूग आई, मलफती ज्यूं पाव धरै । तेरा पाचूं **लक्खण** सरब सुलक्खण, सैनाणी ज्यूं याद करै । —लो. गी.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—बिहू रघु **लक्खण** पुत्र बुलाय, मर्भे जग विस्वामित्र सहाय । जनक तणी वळि जोयौ ज्याग भागै धनु कट्टण सीय विभाग । —ह र.

लक्खणिण—स पु —लक्षणो का ज्ञाता ।

उ०—विसम छंद **लक्खणिण** सत्थ अत्थत्थ विसालह । जिणवल्लह गुरुभत्तिवतु, पयडउ कालिकालह । —रा. जै. का स

लक्खणौ, लक्खबौ —देखो 'लखणौ, लखबौ' (रू भे)

उ०—रटत जेम सुर रोर, मीर घण घोर परक्खै । सरवर जळ पूरियं, भेख हरखै सुख **लक्खै** । —रा रू

लक्खणहार, हारौ (हारी), लक्खणियौ—वि० ।

लक्खिओड़ो, लक्खियोड़ौ, लक्ख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लक्खीजणौ, लक्खीजबौ —कर्म वा० ।

लक्खारौ—देखो 'लखारौ' (रू. भे) (डिं. को.)

लक्खि—१ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—अेकइ वन्नि वसंतडा, अे वड अतर काइ । सीह कवड्डी नह लहइ, गडवर **लक्खि** विकाइ । —अ. वचनिका

२ देखो 'लखी' (रू. भे.)

लक्खियोड़ौ—देखो 'लख्योडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लक्खियोडी)

लक्खी—देखो 'लखी' (रू. भे.)

उ०—१ चढयौ मीर काळ हय वे बिरच्चै, मनो मेक मूगा थत थाळ नच्चै । चढयौ पीरखान यतं वाज **लक्खी**, जिनोके रहे पीर चोवीस पक्खी । —ला. रा.

उ०—२ आगै मिळ गयौ **लक्खी** विणजारौ लै कितरै निरधन भाज्यौ रे जाय । —लो. गी.

लक्खीबाळदियौ – देखो 'लक्खीविणजारौ'

लक्खीबिणजारौ [स. लक्ष+वाणिज्यकर] 'विणजारा' जाति का वह व्यक्ति जिसके पास व्यवसाय करने के लिए एक लाख बैल हो ।

वि वि.—बिणजारा जिसको बाळदिया भी कहते हैं प्राचीन काल मे यातायात के साधनो के अभाव के कारण ये लोग बैलो की पीठ पर सामान, माल, असबाब लाद कर प्रायः सुदूर प्रातो मे बिक्री के लिए जाते थे । इस प्रकार जिस बिणजारे के पास कम से कम एक लाख बैल होते थे उस लक्खी बिणजारा कहते थे ।

रू. भे.—लखीबिणजारौ

लक्ष—वि. [स. लक्ष] सौ हजार, लाख ।

उ०—तीन **लक्ष** द्रव रोकडा, चवळ उच्च पचीस । निपट विनै धारी निजर, न्रपति निवारी रीस । —रा. रू.

स. पु —लाख की सख्या ।

रू. भे.—लक्ख, लक्खि, लख, लख्ख, लच्छ, लछ, लाख ।

३ देखो 'देखो लक्ष्य' (रू भे.)

लक्षक—सं. पु [स] सबध या प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करने वाला शब्द ।

उ०—१ छंद अलंकृत छाह छुवै नही, वाह गहे नहि पुस्तक वाचै । **लक्षक** लक्ष्य कहां अविधाकथ. वाच्यरु वाचक नाच न नाचै । —ऊ. का.

उ०—२ केई जिकै रसक जाण ज्यौं नायिका भेद जगाय दीजै है, तिण मैं रस री साणै सूरत ही बणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामान्यादि भेद प्रभेद **लक्षक** बखाणिजै है, तिण मे धुनि, व्यंजना, लक्षणा, अलंकार, भाव, अनुभाव, सचारी, सथायी पिण बचन भाम जाणीजै है । —र. हमीर

वि.—१ देखने या दिखाने वाला दर्शक ।

२ जता देने वाला, चेताने वाला ।

लक्षण—स पु [सं] १ किसी पदार्थ या वस्तु का वह गुण या विशेषता जिससे वह पहचाना जाय ।

२ किसी व्यक्ति या प्राणी का वह गुण या विशेषता जो अन्य मे न हो ।

३ किसी रोग के सूचक शरीर मे दिखाई देने वाले चिह्न ।

ज्यू—निकाळा रा एहीज लक्षण व्है ।

४ सामुद्रिक विद्या के अनुसार शरीर के किसी अग पर दृष्टिगत शुभ या अशुभ चिह्न ।

५ चाल-चलन, कर्म ।

६ स्वभाव, आदत ।

उ०—साहरां थारा साथी कहिसी, हाली लयार। पिण तू हू कहूं नेनूं माथै ल्याए। जिको ईयै लक्षणे हुवै, नीयै नू ल्याए।

—कावळ ओईयी नै तीडो मरळ री बात

७ पुरुष के शरीर के अंगों के शुभ चिन्ह या संकेत जो ३२ माने गए हैं—

पांच अंग दीर्घ—दोनो नेत्र, दाढी, जानु और नासिका।

पांच अंग सूक्ष्म—त्वचा, केश, दांत, अंगुलियां और अंगुलियों की पुर्वे।

तीन अंग ह्रस्व—ग्रीवा, जंघा, मूत्रेन्द्रिय।

तीन अंग गंभीर—स्वर, अन्त:करण और नाभ।

छ स्थान ऊंचे—वक्षस्थल, उदर, मुख, ललाट, कंधा और हाथ।

सात स्थान लाल—दोनों हाथ, दोनों आंखों के कोने, तालु, जिव्हा अधर और नख।

तीन स्थान विस्तीर्ण—ललाट, कटि और वक्षस्थल।

८ बुद्धी, अक्ल।

९ चमत्कार, करामात।

१० साहित्य में शब्दों, पदों, वाक्यों आदि की ऐसी परिभाषा या व्याख्या जिससे उसकी वास्तविक स्थिति का स्वरूप प्रकट होता है।

उ०—केई जिकै रसक जाण ज्यो नायिका भेद जणाय दीजै है, तिण मे रस री सागै सूरत ही बणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामान्यादि भेद प्रभेद लक्षण लक्षक बखाणीजै है, तिणा में धुनि, व्यजना, लक्षणा अलकार भाव, अनुभाव सचारी, सथायी पिण वचनाभास जाणीजै है। —र हमीर

११ बत्तीस की संख्या।

१२ देखो 'लक्ष्मण' (रू भे.)

रू. भे —लच्छण, लंच्छन. लछण, लछन, लक्खण, लखण, लखन, लखयण, लखिण, लख्खण, लच्छ, लच्छण, लच्छन, लछ, लछण, लछन।

लक्षणवंत, लक्षणवतो–वि [स लक्षणवत] १ शुभ गुणों से युक्त।

२ बुद्धिमान, चतुर।

रू. भे —लखणवत, लखणवतो

लक्षणहीन–स पु [स] १ वह जिसमे लक्षण न हो।

रू. भे.—लछणहीन

लक्षणा–स. स्त्री —काव्य मे शब्द की तीन शक्तियो मे वह दूसरी शक्ति जिसमे मुख्य अर्थ के बाधित होने पर रुढि अथवा प्रयोजन के कारण उसका साधारण से भिन्न और वास्तविक अर्थ प्रकट होता है। यह दो प्रकार की होती है– निरुढ और प्रयोजनवती।

उ०—कई जिकै रसक जाण ज्यों नायिका भेद जणाय दीजै हैं, तिण मे रस री सागै सूरतही बणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामान्यादि भेद प्रभेद लक्षण लक्षक बखाणीजै है, तिणा मे धुनि, व्यजना, लक्षणा, अलकार, भाव, अनुभाव, सचारी, सथायी पिण वचनाभास जाणीजै हे। —र. हमीर

लक्षणो–वि. [स.लक्षणी] १ लक्षणों से युक्त, लक्षणों वाला।

उ० १ राजान कुअर वत्तीस लक्षणों छै। तिकै कहे छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ भूपत क्यू चिंता करो, बरसा होवै नाहि। बत्तीस लक्षणो पुरुस बळि, हो तो बरसा होय। —सिंघासण बत्तीसी

२ समझदार।

रू. भे.—लखणो, लख्खणो, लच्छणो।

लक्षवरीस– लाख रुपयों का पुरस्कार देने वाला।

रू. भे.—लखबरीस, लखवरीस, लाखबरीस' लाखवरीस।

लक्षिता–स स्त्री.—वह परकीया नायिका जिसका गुप्त पर-पुरुस प्रेम अभिव्यक्ति द्वारा प्रकट हो जाय।

लक्षेसरी, लक्षेस्वरी–स. पु. [स लक्ष + ईश्वर + रा. प्र. ई] लाख रुपयों का मालिक, लखपति।

उ०—१ काम कदला न कीजीइ, कूडी माया कोडि। लक्षेसरी नहि कोटिउ, तु आपण मइ खोडि। —मा. का. प्र.

उ० –२ जे लिइ कैलास पर्वत सिउ वाद, इसा सरवण देव तणा प्रासाद। करइ उलास, लक्षेस्वरी कोटिध्वज तणा आवास।

—रा सा स.

रू भे. —लखेसरी, लखेस्वरी, लाखेसरी।

लक्ष्मण–स. पु [सं लक्ष्मण] १ रघुवशी राजा दशरथ की रानी सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो राम व भरत से छोटा था।

(अ मा.)

पर्या —अनत वाळजती रघुवसमणि, रामानुज रुघवीर, सुतदसरथ, सुमंत्रसुत, सोमित्री, सेस।

२ दुर्योधन का एक पुत्र जिसकी श्रेणी कौरव सेना मे 'रथसत्तम' थी।

३ अगिरसकुलोत्पन्न एक मत्रकार।

४ श्री करणीदेवी के एक पुत्र का नाम।

५ सारस।

६ नाग।

वि —भाग्यवान।

रू भे —लछण, लक्खण, लक्षण, लखण, लखण्ण, लखन, लखमण, लखम्मण, लखिण, लखिणउ, लखिन, लख्खण, लच्छ, लच्छण, लच्छन, लच्छमण, लछ लछण, लछन, लछमण, लछमन,

लछम्मन, लछिमन, लाखण, लाखमण, लिखमण, जिछमण, लिछमन।

लक्ष्मणा–स. स्त्री. [स] १ एक प्रकार का पौधा विशेष जो पर्वतो पर कही २ उत्पन्न होता है।

वि. वि.—इसके पत्ते चौड़े होते हैं। उन पर लाल लाल चदन के समान बूंदे सी होती है। इसका कद औषधियो के काम मे लिया जाता है।

२ भद्र देश के राजा की कन्या जो कृष्ण की पत्नी थी।

३ एक अप्सरा जो कश्यप मुनी की कन्या थी।

४ दुष्यन्त राजा की प्रथम पत्नी जिसे लाखी सामान्तर भी प्राप्त था।

लक्ष्मी-सं. स्त्री. [स.] १ भगवान विष्णु की पत्नी जो धन-सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। (डिं. को)

पर्याय.—मा, इदरा, ई, कमळा, चपळा, छीरोदधजा, नारायणी, पदमा, प्रभा, भा, भुजायत, मा, रमा, रामा, लोकमाता, विमन-प्रिया, वेळावळधी, सुखदा, स्यामा, स्त्री हरि-वाम।

वि वि.—लक्ष्मी चार प्रकार की मानी गई है।

(१) राज्य लक्ष्मी (२) गृह लक्ष्मी (३) विजय लक्ष्मी (४) भोग्य लक्ष्मी।

२ धन-सम्पत्ति, दौलत।

३ सीता का नाम।

४ दुर्गा देवी का एक नाम।

५ रुक्मणी का एक नाम।

६ शोभा, सौन्दर्य।

७ भाग्यशाली स्त्री जो धन-धान्य बढाती है।

८ ग्रहस्वामिनी के लिए प्रयुक्त आदर सूचक शब्द या सम्बोधन।

९ हल्दी।

१० वीर पत्नी।

११ समी वृक्ष।

१२ भस्मी, राख।

१३ मिट्टी, धूल।

१४ सफेद तुलसी।

१५ ऋद्धि नामक औषधि।

१६ वृद्धि नामक औषधि।

१७ आर्या (गाथा) छन्द का एक भेद विशेष जिसमे २७ दीर्घ और तीन ह्रस्व वर्ण सहित कुल तीस वर्ण होते हैं।

१८ एक प्रकार का वर्णव्रत जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण एक गुरु और एक लघु वर्ण होता है।

रू. भे.—लखमी, लखम्मी, लखिमी, लक्खमी, लच्छ लच्छमी, लच्छि, लच्छी, लछ, लछमी, लछवि, लछवी, लछि, लछी, लाच्छ, लाच्छी, लाछ, लाछि, लाछी लिखमी, लिच्छमी लिछमी, लिछम्मी, लीछम्मि लीछम्मी।।

लक्ष्मीकत, लक्ष्मीकांत–स. पु. यौ [स. लक्ष्मी+कांत] १ विष्णु भगवान्।

रू. भे.—लखमीकत, लखमीकात, लछमीकत, लछमीकांत, लिछमी-कंत, लिछमीकात, लिछम्मीकत लिछम्मीकात।

लक्ष्मीकारी–स. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+कारिन्] धन-सम्पत्ति प्रदान करने वाला।

लक्ष्मीटोडी–स. स्त्री.—सगीत में कोमल स्वरो वाली एक प्रकार की सकर रागिनी।

लक्ष्मीतात–स. स्त्री [लक्ष्मी+तात] समुद्र।

रू. भे.—लखमीतात

लक्ष्मीताळ–स. स्त्री [स. लक्ष्मीताल] १ सगीत मे १८ मात्राओ का एक ताल।

२ श्री ताल नामक एक वृक्ष।

लक्ष्मीधर–स पु. यौ. [स. लक्ष्मी+धर] १ विष्णु, नारायण।

२ स्रग्विणी छद का दूसरा नाम।

वि —धनाढ्य, धनवान।

रू भे —लछमीधर।

लक्ष्मीनाथ–स. पु [सं लक्ष्मी+नाथ] विष्णु।

रू. भे.—लखमीनाथ, लच्छिनाथ, लछीनाथ, लिखमीनाथ, लिख-मीनाह, लिच्छमीनाथ लिच्छमीनाह, लिछमीनाथ, लिछमीनाहि

लक्ष्मीनारायण–स पु. यौ. [स. लक्ष्मी+नारायण] १ लक्ष्मी और नारायण की युगल मूर्ति।

२ बहुत काले रग के एक प्रकार के शालिग्राम जिनके एक ओर चार चक्र बने होते हैं, लक्ष्मीजनार्दन।

रू भे - लिखमीनारायण, लिछमीनारायण

लक्ष्मीनिधि–स. पु — राजा जनक का एक पुत्र। (रामायण)

लक्ष्मीनिवास–स. पु.—१ वह घोडा जिसका शरीर लाल हो, किन्तु दाहिना कान सफेद हो (शुभ)

२ विष्णु, नारायण।

रू भे.– लच्छिनिवास

लक्ष्मीनृसिंह–स. पु [स. लक्ष्मीनृसिंह] एक प्रकार के विष्णु जिन पर दो चक्र और एक वनमाला बनी होती है।

लक्ष्मीपति–स. पु. यौ [स लक्ष्मी+पति] १ विष्णु, नारायण।

२ श्रीकृष्ण।

३ राजा।

४ सुपारी का पेड़।

५ लवंग का वृक्ष।

वि.—धनवान, अमीर।

रू. भे.—लखमीपत, लखमीपति, लखमीपती, लछमीपत, लछमीपति, लछमीपती, लिच्छमीपति, लिछमीपती।

लक्ष्मीपुत्र—सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+पुत्र] १ कामदेव, अनंग।

२ घोड़ा, अश्व।

वि. धनवान, अमीर।

लक्ष्मीभरतार—सं पु यौ [सं लक्ष्मी+भर्तृ] विष्णु।

रू भे.—लच्छिभरतार, लच्छिभतार, लछिभरतार, लछीभरतार, लिखमीभरतार।

लक्ष्मीरमण—सं. पु यौ [सं लक्ष्मी+रमण] विष्णु नारायण।

रू. भे.—लखमीरमण।

लक्ष्मीवंत, लक्ष्मीवत्—सं.पु यौ. [सं लक्ष्मी+वत्] १ विष्णु, नारायण।

२ धनी व्यक्ति, अमीर।

३ अश्वत्थ या पीपल का पेड़।

४ कटहल का पेड़।

रू. भे—लिखमीवंत, लिखमीवत।

लक्ष्मीवर—सं. पु. यौ [सं. लक्ष्मी+वर] १ विष्णु का नामान्तर।

२ कृष्ण का एक नाम।

३ परमेश्वर, ईश्वर।

रू भे.—लखमीवर, लखमीवर, लच्छिवर, लछवर, लछवर, लछमीवर, लछिवर, लछीवर, लाछवर, लाछिवर, लाछिवर, लाछीवर, लाछीवर, लिखमीवर, लिखमीवर, लिखिमीवर, लिखिमीवर, लिच्छमीवर, लिछमीवर, लिछमीवर।

लक्ष्मीवान—सं. पु. [सं' लक्ष्मीवत] १ विष्णु २ श्रीकृष्ण।

वि—१ धनवान, धनाढ्य २ सुंदर, मनोहर

रू. भे.—लछीवान।

लक्ष्मीवल्लभ—सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+वल्लभ] विष्णु नारायण।

लक्ष्मीस—सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+ईश] १ विष्णु, नारायण।

२ सीतापति रामचन्द्र।

३ धनाढ्य व्यक्ति, अमीर।

रू. भे.—लखमीस, लछमीस, लछीस, लिछमीस।

लक्ष्मीसहज—वि [सं. लक्ष्मी+सहज] १ समुद्र मथन के समय लक्ष्मी के साथ उत्पन्न होने वाला रत्न।

सं. पु.—१ चन्द्रमा।

२ कपूर।

३ इन्द्र का घोड़ा।

४ शंख।

लक्ष्य—सं. पु [सं. लक्ष्य] १ निशान।

उ॰—चिड़ी नै लक्ष्य साधनै तीर चलायौ।

२ उद्देश्य।

३ प्राचीन काल मे अस्त्रो आदि का एक प्रकार का संहार।

४ शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलने वाला अर्थ।

रू. भे—लख, लखु, लख्य, लच्य, लछ

लक्ष्यता—सं स्त्री—लक्ष्य होने का भाव या धर्म, लक्ष्यत्व।

लक्ष्यभेद, लक्ष्यवेध—सं पु यौ [सं लक्ष्य+भेदन, लक्ष्य+वेधन] तेजी से उड़ते या चलते हुए पक्षी या जीव पर निशाना लगाने की क्रिया।

लक्ष्यारथ—सं. पु. [सं लक्ष्यार्थ] शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलने वाला अर्थ।

लख—देखो 'लक्ष' (रू भे)

उ॰—मिळ अग बगत्तर पक्खर मैं, सज सार खड़ा **लख** टक्क समैं।
—रा रू.

२ देखो लाखपसाव'

उ॰—१ प्रथम लाख समपियौ, रवी सकर बारठ कर। लखपति बारठ लाख, दीय दूजौ करि डबर। तीजौ **लख** निरावार, 'अजा' भादा कर अप्पै। भण नाराचद भाट, भोज **लख** चवथ समप्पै।
—सू प्र.

लखचौरासी—सं. पु [सं, लक्ष+चौरासी] १ पुराणो के अनुसार माने जाने वाली ८४ लाख योनियां।

उ॰—१ हरीया दाना राम है, **लखचौरासी** माहि। खावण कू जन मुख दिया, सो क्यु देसी नाहि। —अनुभववाणी

वि वि.—देखो योनि'

लखण—सं पु.—१ देखो 'लक्षण' (रू भे) (ह ना. मा)

उ॰—१ **लखण** बतीसै मारुवी, निधि चन्द्रमा निलाट। काया कूकू जेहवी, कटि केहर सैं घाट। —ढो. मा.

उ॰—पछै तौ रमनै इण बैराग अर सारा श्री ठाकुरजी मे की **लखण** दीखिया नी। —फुलवाडी

उ॰—३ पखवाड़ौ बित्या चौधरण माथै तीन दिना री भातौ बाधण लागी तौ चौधरी मळकनै कियौ-बावळी आ काई गैलाई करै। हाल ताई थणी रा **लखण** मावळ ओळखिया कोनी दीसै। —फुलवाड़ी

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

२ देखो 'लक्ष्मण'

उ०—तायक **लखण** पयर्पे तेथी। वायक रोम विरुता, है नर वीर जनक मुखहृता। जप न राघव जेथी।। —र ज प्र.

लखणवत, लखणवतौ—१ देखो 'लक्षणवत' (रू. भे.)

उ०—१ काया सोहइ कचरा वरणी, सोहइ हाथे सम्वर समरणी। **लखणवती** मोहरण वेली, हम हरावई गजगेति गेली। —श्री जिनराज सूरि

लखणौ—१ देखो 'लक्षणौ' (रू भे)

उ० बावळा राजाजी इत्तो मूडं लगाय लियो के किरण नैं ई नी धारें। छोटा-मोटा रौ कायदौ ई नी राखै। खास गिंडक **लखणौ** —फुलवाडी

लखणौ, लखबौ—क्रि. अ. [स. लक्ष्] १ दिखना।

उ०—गिरि जारिण चरण लहि **लखत** गोम, बद्दळ इळ दरसै छाडि व्योम। —रा रू.

२ मालुम होना प्रतीत होना।

क्रि. स —३ देखना।

उ०—१ सता ताड वेधे प्रभू टेक साथै, हिचोळै सता जोजना दुद्द हाथै। **लखै** राम रा पारण रो चाप लीधौ, कळह बालि' हृता न सुग्रीव कीधौ। —सू प्र

उ० २ मिरजी आयौ मेडतै, मारे गाव महेव। 'सबळौ' भूर्ये सिह ज्यूं, असुरा **लखै** अवेव। —रा. रू

४ समझना, जानना, ताडना।

उ०—१ सतगुरु सब्द बडा कुरमारणी, जिरा तिरा **लख्या** न जावै। जो **लखसो** कोइ सत सूरमा, नूर मे नूर समावै। —स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ पढै अपढै सारखा, जो न आतम **लख**। मिल कोरी मादी 'अखा', दोनू ही डूबरण पख। —अखो

उ०—३ घर स्यामा सरिस स्यामतर जळधर देधूवे गळि वाहा घाति। भमि तिरिग सध्या वदन भूला, रिखिय न **लखै** सकै दिन राति। —वेळी

५ आभास होना, अनुमान होना।

६ देखो 'लिखरगौ, लिखबौ' (रू भे.)

उ०—१ इरण भात स्त्री-पुरुस रौ हाल आपही **लखस्यौ**। —पना

लखणहार, हारौ (**हारी**), **लखणियौ**—वि०।

लखिओडौ, लखियोड़ौ, लख्योडौ—भू० का० कृ०।

लखीजणौ, लखीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

लक्खणौ, लक्खबौ—रू० भे०

लखण देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

उ०—नमो अवग्रत भगत अछेह, नमो सतरुघ्न-भरत सनेह। नमो धक-पख-सहोवर-वज्ज, गुणादि-अतीत **लखण**-अग्रज्ज। —ह. र.

२ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

लखन—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—राम **लखन** अरु भरत सत्रुहन, अगवाणी हनुमान। मीरां के प्रभू राम सियावर, तुम हो कृपा निधान। —मीरा

२ देखो 'लक्षण' (रू भे.)

लखपत, लखपति, लखपती, लखपत्ती, लखप्पति, लक्खपति—स. पु. [स लक्ष+पति] (स्त्री. लखपतरग, लखपतरणी) १ कुबेर।

२ वह व्यक्ति जिसके पास लाख रुपये हो।

उ०—१ अगरवाला रै घर सूं तौ एक दो आदमी इक्यातरै आवै-जावै है। बडौ कडूंबौ, **लखपती** आदमी कटरोल, कचेडी सफाखाना अर सभा-सोसाइटी रा काम पडता ही रेवै। —दसदोख

उ०—२ उड गया रेखमी गदरा वे, राली रै रज नही लागी। आ फिरै कामेंतरा लडाभूम, **लखपतणी** मरगी लडथडती। —चेत मानखो

३ लाखा 'फूलाणी' के नाम मे गाया जाने वाला एक लोक गीत।

रू भे.—लाखपत, लाखपति, लाखपती, लाखपत्ति, लाखपत्ती

लखबरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे)

लखमण--देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

उ०—राज मोहरि उपति रघुराई, भिड़ जेरण विध **लखमण** भाई। भिडि खळ थाट करू जुध भूका, रावण जेम 'विलद' दळ रूका। —सू. प्र.

लखमणा--देखो 'लक्ष्मणा' (रू भे.)

लखमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे) (डि. को)

उ०—प्रभू विराजै परमपद, नहा आपणौ धाम। लखमीवर **लखमी** सहित, सारे सता काम। —गजउद्धार

लखमीकंत, लखमीकात—देखो 'लक्ष्मीकात' (रू. भे)

उ०—समरथ सगलइ ही कामइ रे, तास भ्रात डूंगरसी नामइ रे। भागचद बडउ भागवत रे, मन मोटइ **लखमीकात**। —प. च. चौ.

लखमीतात—देखो 'लक्ष्मीतात' (रू. भे) (डि को.)

लखमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू भे)

उ०—तहा विराजत है सदा, लखमी **लखमीनाथ**। पलक अेक बिछुरै नही, रहै निरतर साथ। —गजउद्धार

लखमीनारायण--देखो 'लक्ष्मीनारायण' (रू भे)

लखमीपत, लखमीपति, लखमीपती—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

लखमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू भे)

उ०—**बोहो लोह भूप मुभड़ा बकसि, श्रीहाथै ग्रत माहियौ । करि कोष मधु मार्यं किना, लखमीवर नदक लियौ ।** —मे. म.

लखमीरमण—देखो 'लक्ष्मीरमण' (रू. भे)

लखमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे)

उ०—प्रभू विराजै परमपद, तहां आपणी धाम । **लखमीवर** लखमी सहित, सारे सता काम । —गजउद्धार

लखमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू भे)

लखमोली—वि. [स. लक्ष+मूल्य] (स्त्री. लखमोली) १ लाख रुपये के मोल का ।

उ०—तिण मांय डोर रेसम तणी, कव चाका सजुन कियौ । अठपौर आप रटवा अलर, **लखमोली** माळा लियौ ।

—रमण प्रकास

लखम्मण—देखो 'लक्ष्मण' (रू भे)

उ०—बाळण सीत लिया दळ वानर, पाज समद परठिण पाथर । रेमण लेमण दांणव रामण, लेख घणी मन वीर **लखम्मण** ।

—पि. प्र

लखम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

उ०—दामोदर तूझ दसै दृगपाळ किनाइक पार न जाणै काळ । उमा तो पार अगम्म, अलेख, **लखम्मी** तूझ न जाणै लेख ।

—ह. र.

लखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू भे)

उ०—पोरस सपूर कीधा परम, **लखवरीस** दुनिया लभौ । अवखास • बिच 'अजमाल' रौ, इसै रूप आयौ 'अभौ' । —बखतौ खिड़ियौ

लखवान—स पु—सूर्य, भानु । (डि. को.)

लखाई—सं स्त्री—दिखने या जताने की क्रिया या भाव ।

लखाउ—स पु [स लक्ष] लक्षण, पहचान ।

लखाड़णौ, लखाड़बौ—देखो 'लखाणौ, लखाबौ' (रू. भे.)

लखाड़णहार, हारौ (हारी), लखाड़णियौ—वि० ।

लखाड़ियोड़ो, लखाड़ियोड़ो, लखाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

लखाड़ीजणौ, लखाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लखाड़ियोड़ौ—देखो 'लखायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री लखाड़ियोड़ी)

लखाणौ, लखाबौ—क्रि. स.—१ दिखाना ।

उ०—गुरुजी गोबिंद **लखाया** ए, लखिया ताय भवया निज अनुभव । परकट गाया ए । —श्री सुखरामजी महाराज

२ समझाना, बतलाना ।

उ०—अलख **लखाया** दिव दिस्ट, सतगुरु समझाई ।

—केसवदास गाडण

३ पता लगाना, मालूम कराना, प्रतीत कराना ।

४ आभास कराना अनुमान कराना ।

५ नर ऊँट का मादा ऊँट से सगम करवाना ।

क्रि अ—१ आभास होना, प्रतीत होना ।

उ०—१ दीवाण जी नै **लखायौ** के रगां मायलौ लोई अबै ठस्यौ, अबै ठर्यौ —फुलवाड़ी

उ०—२ घड़ी १ हुई ज्यू पेट माहे भार **लखायौ** । —चौवोली

लखाणहार, हारौ (हारी), लखाणियौ—वि० ।

लखायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लखाईजणौ, लखाईजबौ—कर्म वा० ।

लखाड़णौ, लखाड़बौ, लखावणौ, लखावनौ—रू. भे. ।

लखायोड़ौ—भू का कृ १ दिखाया हुआ समझाया या बतलाया हुआ. ३ पता लगाया हुआ मालूम कराया हुआ, प्रतीत कराया हुआ ४ आभास या अनुमान कराया हुआ. ५ नर ऊँट का मादा ऊंट स सभोग कराया हुआ ६ आभास हुवा हुआ ।

(स्त्री, लखायोड़ी)

लखारस—स पु.—वस्त्र विशेष ।

उ० **लखारस** मे लखगुणी भाति बोत दिसत । सुणि किना कामण कहे, सो साणो रित वसत । —व. स.

रू. भे. 'लाखारस'

लखारा—स स्त्री [स लाक्षा+कारिन] लाख की चूड़िया बनाने व बेचने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष ।

उ०—ए तो सोदागर सचारा रे खारोल **लखारा** कचारा ।

—जयवाणी

लखारौ—स. पु लखारा जाति का व्यक्ति ।

उ० लेसो पीपळ लाख लाख **लखारा** लावसी । ताबौ देण तलाक, नटियौ सुदर नैणसी । —सुंदर, नैणसी

रू भे—'लक्खारौ'

लखाव—स. स्त्री—जानकारी ।

उ०—१ ऊजळा वणाव किया ऊजळी चादणी सिळि गई छै । सू आगली सखिया नूं जावती लखै नही छै । **लखाव** नही पडतो छै । रा. सा. स.

उ०—२ आज हू जाय, देखि ठीक करि आऊ जितरै **लखाव** मता करो । —पनक दरियाव री बात

उ०—३ तद पड़दो छाड़ दियो । भरमळ आगिया हुय भीतर गई । सो चकमे रंग छुवा माहे दोनू बराबर हालै, सो **लखाव** कही नु न

पड़ियो। भीतर जाय मुहरं री मुहड़ो खोल भीतर वाडियो।
—कंवरसी सांखला री वारता

लखावट—देखो 'लिखावट' (रू भे)

उ०—चला सदै 'अगजीत' अहीयो जको, **लखावट** आगळा जका लारै। सरासन खेवजै टला हमला सको, थटै भुज सबाई 'गुला' थारै। —जसजी आढो

लखावणो, लखावबो—देखो 'लखाणो लखाबो' (रू. भे)

उ०—ठकराणी साख ऊजळा दिन तौ काळी अंधारी राता ज्यू बण्या अर काळी राता उणनै सूरज सू सवाई उजळी **लखावण** लागी। —फुलवाड़ी

उ०—२ बाळ-कन्हैया थोडो घणोई ओपरो **लखावतो** के मासी नै वेळा-विसेक री वैंम व्हैतो तो सात वेळा अवारनै लूण मिरच करती। —फुलवाडी

लखावणहार, हारो (हारी), लखावणियो—वि०।

लखाविप्रोड़ो, लखावियोड़ो, लखाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लखावीजणो, लखावीजबो—कर्म वा०।

लखावियोड़ो—१ देखो 'लखायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. लखावियोडी)

लखिण, लखिणउ—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू भे)

उ०—राघव पाम पिनाक ने, आए लखिणउ निज। —रामरासौ

२ देखो 'लक्षण' (रू भे)

लखित-स. पु—पुरुष की ७२ कलाओं में से प्रथम। (व. स.)

लखिन—देखो 'लक्ष्मण' (रू भे)

उ०—सत्रुघन **लखिन** भ्रात स दोय। —रामरासौ

लखिमी देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

उ०—सुर 'नर नाग तीन्यो लोक जाकी सेवा करै सोई इह वासदेव क्रस्णजी। जा रुखमणी छै सु **लिखमी**। तूं अह सगाई वरजियो। वेली. टी.

लखियोड़ो-भू का. कृ.—१ दिखा हुआ. २ देखा हुआ. ३ समझा हुआ, जाना हुआ, ताडा हुआ भापा हुआ. ४ पता लगा हुआ, मालुम हुवा हुआ, प्रतीत हुवा हुआ. ५ आभास हुवा हुआ, अनुमान हुवा हुआ ६ सावधान, हुवा हुआ, सचेत हुवा हुआ.

७ देखो 'लिखियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. 'लखियोडी')

लखी-स. पु—१ एक खास प्रकार के रग का घोडा।

उ०—मोती सुरग कमेत, **लखी** अबलख फुलवारी। रग जहाब हमरग, हरी सुनहरी हजारी। —सू प्र.

२ दीवार चुनने का पेशा करने वाली एक मुसलमान जाति विशेष। (डीडवाना)

३ उक्त जाति का व्यक्ति।

४ देखो 'लक्खीविणजारो'

वि.—१ लाख के समान रग वाला।

रू भे.—लक्खि, लक्खी, लाखी।

लखीणी—देखो 'लाखीणी' (रू. भे.)

उ०—ऊरि थोडो कडि पातलौ, माहीलं कोयं जीमणी अक्खी। काळी तिल भमर जिसो, सीस तिलक उगतई-विहाग। पाय **लखीणी** मोचणी, मूछ करिवाण छै डावइ हाथी। —वी. दे,

उ०—२ उलिगाणा दिन लेखे ई मत लाई, दिन दिन एक **लखीणो** जाई। जाई जोवन धन मसलं ई हाथ, जोवन नवि गिणइ दिन न राति। —वी दे.

(स्त्री. लखीणी)

लखीबाळदियो, लखीविणजारो—देखो 'लक्खीविणजारो' (रू. भे.)

उ०—तो भीखणजी नें किम काढा, हाकम इस्टात दियौ विजयसींघजी री राज है मोती बाळदियो। तिणरै लाख बळद तिणसूं **लखीबाळदियो** बाजतो। तै लूण लेवा मारवाड़ मे आवतो। —भि द्र

लखु—देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

उ०—सारीगु मिल्हि करि तालरूख सिरि **लखु** देविणु तीणं परीक्षा गुर तणी पूगउ एकू जु पस्थु राहावेहु तउ सिखवइ मच्छइ देविणु हत्थु। —सालिभद्र सूरि

लखेर-स पु.—१ चोरासी प्रकार के चौहटों में से एक प्रकार का चोहटा विशेष। (सभा)

२ देखो 'लाखेर' (रू. भे.)

लखेसरी, लखेस्वरी—देखो 'लक्षेसरी' (रू भे.)

उ०—१ आऊवा मैं उत्तमोजी डराणी बोल्यो भीखणजी थें देवरा निमेधो छो। पिण आगे तो बडा-बडा **लखेसरी** कोडेसरी त्या देवल कराया। —भि. द्र.

उ०—२ मु भलो राज जांणि ने। द्रव्य उखेळियौ छै। बारै काठि माडयो छै। ए जु चपा फुल्या छै। मु ए **लखेस्वरी** छै। त्यारै लाख उपरि दीवा बळै छै। —वेलि टी.

लख्ख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—खजर नेत विसाल गय, चाही लागइ चख्ख। एकण साटइ मारुवी, देह एराकी **लख्ख**। —ढो. मा.

लखण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—जिण तेज अरक जिम छक जहूर, सुंदर प्रवीण दातार सूर। छत्रपती 'अभी' छत्र कुळ छतीस, बहत्तर कला लखण बतीस।
—वि. स.

२ देखो 'लछमण' (रू. भे.)

लखमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—देवी सप्तमी अस्टमी नोम नूजा, देवी चोथ चौदस्स पूनम्म पूजा। देवी सरसती लखमी महाकाळी, देवी कन्न विस्णु ब्रहम्मा कमाळी।
—देवि.

लख्य—१ कपट, छल (ह. नां. मा.)

वि.—२ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लख्यण—देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ कागळ हाथि लेता ही महा आणंद उपज्यौ। गेमांचित होण लागौ। आख्यां आंसू आवण लागा। कंठ कै विखै गदगद वांणि हुई ए भ्रति ही हरख का लख्यण छै।
—वेलि टी.

उ०—२ सट भाख लख्यण देख दख्यण राज रख्यण रीति दखि। नाम अमर गाढ समर जोध समर जीत गढ। कोट गंजण माण मजण धूरि भजण थाट, पर दूण पल्लण भूल भल्लण वस चल्लण वाट।
—ल. पि.

लखयणौ—देखो 'लखणौ' (रू. भे.)

उ०—नखधीर बडा गुण लख्यणौ, पह पात्र कुपात्र परिखणौ। कुळ ओपम कोट करम रौ, धरिओ अवतार धरम रौ।
—ल. पि.

लग-स. स्त्री.—१ लगे हुए होने की अवस्था या भाव।

२ लगन, लाग।

३ प्रेम, अनुराग।

४ किसी मकान के ऊपरी भाग का ऐसा स्थान जहां से कूद कर दूसरे मकान में जा सके।

५ मकान की दीवार की ऊंचाई।

६ एक लोहे का औजार विशेष, जो जमीन में जुडे हुए दो पत्थरों को अलग करने में काम आता है।

७ फर्श व छत के बीच की ऊंचाई।

अव्य.—१ तक, पर्यंत।

उ०—गोढवाड घर गाहटै, पहला पाली मार। लूटी मही अजमेर लग, फूटी देस पूकार।
—रा. रू.

उ० २ अर आप जिसा राजकुमार रौ इण तरह अठा लग आवणौ अरथ विहूणौ व्हाबै नहीं।
—व. भा.

२ वास्ते, लिए।

३ निकट, पास।

४ साथ, सह।

रू. भे.—लगइ, लगत, लगा, लगि, लगी, लगै, लग्ग, लग्गा, लागि।

लगइ-अव्य.—१ के कारण, से।

उ०—१ अनइ जे धरमवंत नई घरि लक्ष्मी हुइ तेह लगइ अनेक तीरथयात्रा प्रासाद सधभक्ति दानादिक अनेक पुण्य करी मरी परलोकि सुगतिइ जाइ।
—षष्टी शतक

उ०—२ त्रिजच माहि विरहउ विचारि, हस्ति तुरगम राय बारि। अग्यान कस्ट लगइ जीव जाइ, चिहु लागै देवलोकह माहि।
—वस्तिक

२ से, द्वारा।

उ०—१ तिणि अवसरि बोलाविउ पंडित, "कहउन काई काज"। विनय लगइ बोलइ घन सागर, "निसुणउ पडितराज"।
—हीराणंद सूरि

उ०—२ द्रव्य लगइ कहि किसिउं न कोई, द्रव्यिइं वसि थाइ सहू कोइ। द्रव्य तणउ ए महिमा जाणि, जांणपाणु एह नु म वखाणि।
—हीराणंद सूरि

३ लगातार।

४ देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—१ खटमास लगइ तप कियउ अखंडित, त्री अगली सेलना निपात। सिव सिव सिव हिज कहत भक्त, वदइ न काई बीजी वात।
—महादेव पारवती री वेलि

लगड-स. पु.—१ गधों पर पानी लादने का लकडी का बना ढांचा।

देखो 'लगड' (रू. भे.)

उ०—१ नगारै डंक डको बागो छै. मीर सिकारां नै हुकम हुवौ छै। बाज, जुररा, कुही, बहरी, सिकरा, लगड, चिपक तुरमती साथ लीजै छै।
—रा. सा. स.

रू. भे. लगड्ड।

लगडकोड़ी रौ-वि.—१ मां से कुकर्म करने वाला।

लगटौ—देखो 'लगतौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लगटी)

लगड - एक प्रकार का पक्षी विशेष जो पक्षियों का शिकार करने में सहायता करता है।

उ०—१ बोवडा ऊपर चिपक छुटै छै। बुरजा ऊपर लगड छुटै छै। कुलंगा ऊपर कुही छुटै छै। इण भांत देमौत राजेसर सिकार खेलै छै।
—रा. सा. स.

उ०—२ सीचाणु समली वली, फूकारी फणि जाणि। लगड लेई मेलि करि, माधव मूझ नइ आणि।
—मा. का. प्र.

२ देखो 'लगडौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—लगड, लगड़, लगनू, लगन्

लगडू-स पु.—१ देखो 'लगड' (रू. भे.)

२ देखो 'लगड' (रू. भे.)

३ देखो 'लगडौ' (रू. भे.)

लगडौ-स पु. [स. लकुट] १ पुरुषेन्द्रिय, शिश्न।

रू. भे.—लगड़

मह., लगड

मुहा.—लगडा री फोडी री=पुरुषकी माता का पुत्र, रंडी का बेटा।

लगण-स. पु.—छत्तीस प्रकार के ग्रस्त्र-शस्त्रों मे से एक।

उ०—सेलह त्रिसूल साठो धकोवली वसहडि कडि **लगण**। भूकल चहूलि सूलो चटक, दद्दायुध छत्रीस रण। —रा. सा. स.

लगणौ, लगबौ-क्रि ग्र.—देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भरियौ भादरवौ लाली पड भागौ। **लगतां** ग्रासू मे ग्रासू झड लागौ। छपनै घोराण ग्रारव रव छायौ। सूरज ससिमंडळ गरदिल गणणायौ। —रू. ना.

उ०—२ ग्रम्ह विमटाळ ग्राविया, **लगि** ज्या दिज नारै। कटाक्ष मृग ग्रगद कहे, पिन तूझ प्रकारै। —रू. प्र.

उ०—३ लोग महाजिन बूभिया जी ग्रो, कृष्णाजी रा कुळबहू जाय, लडली तो दक चद्रावळी, थारै। नजर **लगैगी** गोरी बाह राजीडा। —लो. गी.

उ०—४ उण वेळा बळ ग्रगळा, दळ राठोड दुबाह। सेष थया सीसोदिया, **लगी** लाय ग्रणथाह। —रा. रू.

उ०—५ पेरै वग तुरग री नोले खग करग। रिणपण उमगे **लगै**, रैणायर' गयणग। —रा. रू.

उ०—६ चरण कमळ को लगन **लगी** नित, बिन दरसण दुख पावै। मीरा कू प्रभू दरसण दीज्यौ, ग्रानद बरण्यूं न जावै। —मीरा

उ०—७ वन बैठो भला चढी गिरबदरी, घर भेस के धागे। चित नह **लग्यौ** रामरै चरणा, नेह जब लग निसतारौ —र. रू.

लगणहार, हारौ (हारी), लगणियौ—वि०।

लगिग्रोडो, लगियोड़ौ, लग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लगीजणौ, लगीजबौ—भाव वा०।

लगत—देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—पछै सावतसिंघ रा बेटा राव वलूजी रै साचोर रही, सु हेटै ख्यात मे विगत ग्रावसी। नै समत १६२५ **लगत** राज रैया तिण री विगत हेटै उतारी छै। —नैणसी

लगतर—देखो 'लिगतर' (रू. भे.)

लगतूं, लगतू—देखो 'लगड' (रू. भे.)

उ०—मीर सिकारू का हुन्नर नजर होता है। **लगतूं** रमतू के ग्रातुरी। चरज सीचाण सो लाग ग्रातुरी। —सू. प्र.

लगतौ-वि (स्त्री लगती) १ लगा हुग्रा, सलग्न।

उ०—१ कोट माहे पाणी कोई नही। कोट साकडौ सो छै। तिण मे लाय तळाव कोई **लगतौ** हौज छै। —सोजत रै मडळ री बात

उ०—२ जीरे सू घणी मनुहार कीवी पण उवौ गादी ऊपर नही बैठियो। गादी सू ही **लगतौ** म्हौडा ग्रागे बैठियौ।

—सूरे खीवै काधळोत री बात

२ निकट, पास।

उ०—सोभत था कोस ८ मगरे **लगतौ**, नाबरा था कोस १ ग्रागे। हुल जिण री वडी ठकुराई हुई। —नैणसी

३ पीछे लगा हुग्रा।

उ०—बीजै दिन **लगती** ही फौज ग्राई। पछै बेउ फौजा री ग्रणी मिळी।

४ निरन्तर, लगातार।

उ०—१ पण सौदो नी पट्यो सो यो तीन दिन **लगतौ** ई उठै हबग्यो। —फुलवाडी

उ०—२ म्है ता हजार बरसा ताई **लगती** ई रोवूं तौ ई किणी नै म्हारै दुख रो मरम नी समझा सकू। —फुलवाडी

५ साथ ही साथ।

उ०—१ सू गजसिंघजी तौ ग्रागैई दुणा सू विराजी हुता। ग्रर **लगती** ग्रमरसिंघजी सू काम वण ग्रायौ।

—राजा श्रीकरणसिंघजी

उ०—२ विवाह वडा हरख सूं हुवौ। माधवसिंघजी दायजौ सखरौ दियौ। **लगता** ही पछै भिणाय रै ठाकुर कुमळसिंघ री पोती नूं व्याही। —मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

लगथग-स स्त्री—१ लचक, लचकनि।

उ०—१ पदमणि **लगथग** पातळी, रळी तणै छक रूप। सायधण कळी गुलाब सम ऊघड मिळी ग्रनूप। —पना

उ०—२ केहर लंक **लगथग** कदळ, भळकि पदम नग डग भरै। ग्रै बान पळकि नख मैदिया, रळकि हार उर ऊपरै। —पनां

लगथगणौ, लगथगबौ-क्रि. ग्र.—१ किसी लम्बी कोमल चीज पर वजन या दबाव के परिणामस्वरूप मध्य भाग से झुकना या मुड़ जाना, लचकना।

२ चलते समय कमर का थोड़ा झुकना, लचकना या मुडना जो सौंदर्यसूचक माना जाता है।

उ०—१ हरखै रतना हालवी, **लगथगती** कटि लाज। कीधा साज उछाहरा, कम तोडण रै काज। —र. हमीर

उ०—२ मुहडै श्रागै मालकी, कहती श्रमकारा । घण वरण श्रावं ढोलियै **लगथगती** सारां । मद-छकीया म्यांरांमजी, तुम होय तैयारां । —मयारांम दरजी री वात

उ०—३ श्राळस श्रांख्यां ऊपरै, करती बळ कटियाह । **लगथगती** करती लजां, श्रलकां ऊछटियांह । —र हमीर

लगथगणहार, हारौ (हारी), लगथगणियौ—वि. ।

लगथगिश्रोड़ौ, लगथगियोड़ौ, लगथग्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लगथगीजणौ, लगथगीजबौ—भाव वा. ।

लगथगियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ दबाव या वजन के कारण झुका या मुड़ा हुआ (कोमल पदार्थ) २ चलने समय नाजुकता वश कमर झुकाया हुआ (स्त्री. लगथगियोड़ी)

लगन—स. पु.—१ लगने की क्रिया या भाव ।

२ मन को एकाग्र चित्त करके ध्यान लगाने की श्रवस्था या भाव । एकाग्रचित मे ध्यान लगाने की श्रवस्था या भाव, धुन, लौ ।

उ०—१ सुख सागर की सेन बताई, मेरा श्रंतर जाग रया । **लगन** मगन सतगुरु कर दीना, बेगम देस गया ।
—हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ बिकया जी हरि प्यारीजी रै हाथ बिकया । क्रपा करो जी म्हैं सोही सिरधारा, सोभा देख छकया । जा दिन तै मेरी **लगन** लगी है, श्रौर न द्वार तकया । —मीरा

३ प्रेम प्यार, प्रीति ।

उ०—१ ऐसी **लगन** लगाय कहा तू जासी । तुम देख्या बिन कळ न पड़त है, तलफ तलफ जिय जासी । —मीरा

उ०—२ छोड दे कनैया चीर हमारो, कोर जरी की काना मेरी छूटै । मीरा के प्रभू गिरधर नागर, लागी **लगन** कांना नहि छूटै ।
—मीरा

उ०—३ श्रगरी **लगन** लागणी जांणी । या री लगन लाग्रा पछै तो न छूटसी तिकै तार बाध्या सू कदे न तूटसी । —र. हमीर

४ चाह, इच्छा ।

उ०—१ चरण कमळ की **लगन** लगी नित, बिन दरसण दुख पावै । मीरां कूं प्रभू दरसण दीज्यो, श्रानंद बरण्यू न जावै ।
—मीरा

उ०—२ रात दिवस हाजर रहे, रस मे श्रा रुडीह । लख जावै दिल री **लगन**, चातुर चतरूडीह । —र. हमीर

४ देखो 'लग्न' (रू भे)

उ०—सुभ दिन सुभ मुहरत सुभ वार सुभ **लगन** सुभ वेळा माहि श्रांणि पाट सिघासण विराजमान किया छै । —रा. सा स.

उ०—२ त्रिणि दीह **लगन** वेळा श्राड़ा तै, घण किसू कहिजै श्राघात । पूजा मिसि श्राविसि पुरखोतम, श्रबिकाळय नयर श्रारात । —वेलि.

उ० —३ इनरै कवर रै विवाह सारू चित्रगढ रा राव 'लखपत' री कंवरी 'चित्रलेखा' तणौ टीकौ लगन श्रायौ । —र. हमीर

रू भे.—लगनि, लगन्य, लग्गन, लिगन, लिगन्न

लगन पत्रिका, लगन पत्री—देखो 'लग्नपत्र' (रू. भे.)

लगनयार—स. पु.—१ श्रीमाली ब्राह्मणो मे विवाह का रिवाज जिसमें विवाह मे ८-१० दिन पहले वर-पक्ष के यहां एक भोज होता है । इस के श्रनुसार वधु के भाई-बहनो को प्रथम (पहले) भोजन खिला कर तत्पश्चात श्रन्य सम्बन्धियो को खिलाया जाता है । इस रस्म की विशेषता यह है कि इस दिन चावल व सब्जी श्रधिक-मे बनवाई जाती है । (मा. म)
नोट—यह रस्म केवल शहरो तक ही सीमित है ।

लगनि, लगन्य—देखो 'लगन' (रू. भे.)

उ०—**लगनि** लगी हरी नाव सु, हरिया श्रंतर माहि । मन बाहरली मिट गई, तन की सुधि बुधि नाहि । —श्रनुभववाणी

लगभग—श्रव्य.—समय, सख्या मान श्रादि की श्रनुमानित श्रवधि या मात्रा का बहुत कुछ निश्चित भाव प्रकट करने वाला श्रव्यय शब्द ।

लगर—वि.—स्फूर्ति वाला, फुरतीला, चचल ।

लगरौ—वि.—फटा हुश्रा वस्त्र ।

लगरघौ—सं. पु.—एक झाडी विशेष, जो ईंधन के रूप मे काम श्राती है ।

रू भे —लिगरघौ

२ देखो 'लिगरू' (श्रल्पा, रू. भे)

लगलगाट—स. स्त्री. लपलपाहट ।

उ०—जिकै वासुकि नाग री नरह **लगलगाट** करती सिळह बध री कडिया नू कतरती पिड मे वैठना रगत्कार पडी । —वं. भा.

लगलगी—स स्त्री.—किसी के विरुद्ध उत्तेजित करने या भडकाने की क्रिया ।

क्रि. प्र —करणी

रू. भे —लगेलगे, लिगेलिगे ।

लगवाड—स स्त्री [स. लग्न+वाढ (वृद्धि)] पुरुष या स्त्री का किसी श्रन्य स्त्री या पुरुष से श्रनुचित सबध ।

२ पति के श्रतिरिक्त स्त्री का दूसरे व्यक्ति से श्रनुचित सबंध ।

३ सौध ।

लगवाड़णौ, लगवाड़बौ—देखो 'लगवाणौ, लगवाबौ' (रू भे.)

लगवाड़णहार, हारौ (हारी), लगवाड़णियौ—वि. ।

लगवाड़िश्रोड़ौ, लगवाड़ियोड़ौ, लगवाड़्योड़ौ—भू. का. कृ ।

लगवाड़ीजणौ, लगवाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लगवाड़ियोड़ौ—देखो 'लगवायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री लगवाडियोडी)

लगवाणौ, लगवाबौ–.कि. स [लगणौ या लगाणौ क्रि.का. प्रे. रू.]

१ स्पर्श कराना, छुवाना।

२ मिलवाना, जुडवाना, सटवाना।

ज्यू.—किंवाड़ रै कूटौ लगवाणौ, घर मे बिजळी लगवाणी।

३ खर्च करवाना, व्यतीत करवाना।

४ नियोजित करवाना।

५ अनुभव करवाना, अनुभूति कराना।

६ आरम्भ करवाना, शुरू कराना।

७ फैलवाना, पसरवाना, बिखरवाना।

८ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु में इस प्रकार लाकर मिलवाना कि वह उपभोग योग्य बन जाय।

९ किसी तरल पदार्थ का लेप करवाना।

१० इकट्ठे करवाना, सम्मिलित करवाना।

११ आघात करवाना, चोट पहुचवाना।

१२ पेड़- पौधे आदि का आरोपण करवाना।

१३ जन समूह को इकट्ठा होने मे प्रवृत्त करवाना।

१४ प्रभाव या असर करवाना।

१५ किसी बात या विषय मे किसी व्यक्ति पर आरोप करवाना।

१६ प्रज्वलित करवाना।

१७ किसी कार्य मे प्रवृत करवाना।

१८ किसी अनिष्ठ या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध करवाना।

१९ किसी आवरण या निरोध के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपवाना या बंद कराना।

२० किसी पदार्थ या वस्तु का सुनियोजित एव नियमित रूप से प्रस्तुत करवाना।

२१ धारदार या तीक्ष्ण चीज की नोक या धार शरीर मे चुभवाना या गड़वाना।

२२ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत करवाना।

२३ घटित करवाना।

२४ गणित के क्षेत्र में कोई क्रिया ठीक और पूरी तरह करवाना।

२५ आर्थिक क्षेत्र मे किसी दातव्य राशि का निश्चित करवाना।

२६ अनुगमन करवाना।

२७ पीछै लगवाना।

२८ अन्तर्गत करवाना।

२९ प्रभावित कराना।

३० अन्तिम अवस्था में पहुँचवाना।

३१ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर जड़वाना, टंकवाना, सटवाना, बैठवाना।

३२ आश्रित करवाना।

३३ आदी करवाना।

३४ अभ्यस्त करवाना।

३५ किसी रूप मे सम्मिलित करवाना।

३६ किसी बात या काम को घटित करवाना।

३७ लाक्षणिक रूप मे किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र मे कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से करवाना, पटकाना।

३८ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना करवाना।

३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक करवाना।

४० किसी को बदनाम करवाना।

४१ अंकित करवाना।

४२ अनुसरण करवाना।

४३ क्रमानुसार लगवाना।

४४ मैथुन या सभोग करवाना।

४५ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध करवाना।

लगवाणहार, हारौ (हारी), **लगवाणियौ**—वि.।

लगवायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लगवाईजणौ, लगवाईजबौ—कर्म वा.।

लगवाड़णौ, लगवाड़बौ, लगवावणौ, लगवावबौ—रू. भे.।

लगवायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्पर्श कराया हुआ, छुवाया हुआ, सम्पर्क कराया हुआ. २ मिलवाया हुआ, जुडवाया हुआ, सटवाया हुआ. ३ खर्च करवाया हुआ, व्यतीत करवाया हुआ, ४ नियोजित करवाया हुआ. ५ अनुभव करवाया हुआ, अनुभूति करवाया हुआ ६ फैलवाया हुआ, बिखरवाया हुआ. ७ किसी वस्तु का दूसरी मे इस प्रकार मिलवाया हुआ कि वह उपयोग लायक बन गई हो। ८ किसी तरल पदार्थ का लेप करवाया हुआ. ९ शामिल या सम्मिलित करवाया हुआ. १० आघात करवाया हुआ, चोट पहुचाया हुआ. ११ आरम्भ या शुरू करवाया हुआ. १२ वृक्षारोपण करवाया हुआ. १३ जनसमुह को इकट्ठा होने में प्रवृत करवाया हुआ. १४ प्रभाव या असर करवाया हुआ. १५ किसी बात या विषय मे किसी व्यक्ति पर आरोप या प्रयोग करवाया हुआ. १६ प्रज्वलित करवाया हुआ. १७ किसी कार्य मे प्रवृत करवाया हुआ. १८ किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध करवाया हुआ. १९ किसी आवरण या निरोध

के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपवाया हुआ, बंद करवाया हुआ. २० किसी वस्तु या पदार्थ को समुचित या नियमित रूप से प्रस्तुत करवाया हुआ. २१ धारदार या तीक्ष्ण चीज की नोक या धार को शरीर में गड़वाया हुआ, चुभवाया हुआ २२ मानसिक स्थिति को किसी ओर प्रवृत्त करवाया हुआ. २३ घटित करवाया हुआ. २४ गणित के क्षेत्र में किसी क्रिया का ठीक और पूरी तरह करवाया हुआ. २५ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि का निश्चित करवाया हुआ. २६ अनुगमन करवाया हुआ. २७ पीछे लगवाया हुआ. २८ अन्तर्गत करवाया हुआ. २९ प्रभावित करवाया हुआ. ३० अंतिम अवस्था में पहुंचाया हुआ ३१ किसी वस्तु का दूसरी पर जड़वाया हुआ, टंकवाया हुआ, सटवाया हुआ, बिठाया हुआ. ३२ आश्रित करवाया हुआ. ३३ आदी करवाया हुआ. ३४ अभ्यस्त करवाया हुआ. ३५ किसी रूप में सम्मिलित करवाया हुआ ३६ किसी बात या काम को घटित करवाया हुआ. ३७ लाक्षणिक रूप से किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से करवाया हुआ ३८ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना करवाई हुई। ३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित करवाया हुआ ४० किसी को बदनाम करवाया हुआ. ४१ अंकित करवाया हुआ. ४२ अनुसरण करवाया हुआ. ४३ क्रमानुसार लगवाया हुआ. ४४ मैथुन या संभोग करवाया हुआ. ४५ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध करवाया हुआ।

(स्त्री. लगवायोड़ी)

लगवाळ—सं. पु.—१ द्वार के अतिरिक्त अन्दर जाने का मार्ग, ऊपरी मार्ग।

२ किसी स्त्री का पर पुरुष या किसी पुरुष का किसी पर स्त्री अनुचित संबंध होने की क्रिया या भाव।

वि. -१ लगा हुआ।

२ विलासी, कामुक।

३ पीछा करने वाला।

४ सहारा देने वाला, सहायक।

लगवावणौ, लगवावबौ—देखो 'लगवाणौ, लगवाबौ' (रू. भे)

लगवावणहार, हारौ (हारी), लगवावणियौ—वि.।

लगवावियोड़ो, लगवावियोड़ो, लगवाव्योड़ो—भू. का. कृ।

लगवावीजणो, लगवावीजबौ—कर्म वा.।

लगवावियोड़ौ—देखो 'लगवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लगवावियोड़ी)

लगस—सं. पु.—१ बादल-समूह।

उ०—१ वरन वरन रा बादळा, लगस चढी ले लाव। चित करती जळमय थळा, मत वह वेगी आव। —पा. प्र.

उ०—२ नाग जौ छछोहा जाणे बादलां रा लगस पवन जोर सूं चालीआ जाय छै। इण भात सूं गजराज मुहड़ा आगै ही डुलै छै। डोहा करता हमला खाता वहै छै। —रा. सा. सं.

२ समूह, दल।

उ०—१ लूटवा वधै फौजा लगस, धमस तुरां भाजै धरा। मिळ चली प्रजा भगेळ मग, लग दिली लग आगरा। —रा. रू.

उ० -२ हुतो मयद हुसेन, अब गढ मझि अजरायल। लोक विदा करि लगस, तिको काढै खळ तायल। —सू. प्र.

उ०—३ ऐसै विमरीर दळूं सें विकट गिर भिग्गर घेरै। फौजू के लगस चौतरफ कू फेरै। —सू. प्र.

३ फौज, सेना, दल।

उ०—लखा दखणाद रा लगस आया लडण, पयोनिध अगस मुनि जेम पीजै। सा'म थापळ कहै राव उगती समी, दुआ 'काघळ' जमी खवो दीजै। —अरजुनसिंह चूंडावत री गीत

४ अधिकता, प्रचुरता।

५ एक साथ, साथ-साथ।

६ कतार पंक्तिबद्ध।

वि —लम्बायमान।

रू. भे. —लगस, लगस्स

लगस्स—देखो 'लगस' (रू. भे)

उ०—लोहा झट वाहत रीद लगस्स, 'बहादर' पीथलऊत बगस्स। 'राघावत' आणदसिंघ दुबाह, विभाडत मुग्गळ बीजळ बाह।

—सू. प्र.

लगां—अव्य.—देखो 'लग' (१) (रू भे.)

उ०—१ अगजितमल्ल हुतउ, वदिय द तणइ जयजयाकारि चालइ, जाणाइ किरि ब्राह्माड फूटइ लगउ, नक्षत्र त्रूटी भुइं पडइं लगा गिरि सिखर खडहडइ लगा। —व. स.

लगांण—देखो 'लगांम' (रू. भे.)

उ०—१ दै उवर टकर ढाहै तुरंग, तदि दूहूं दळा इसडा तुरंग। अति लीण लोह पतिध्रमी आंण, लहि ठाम ठाम चाढै लगांण।

—सू. प्र.

उ०—२ लगी न रहै तिल हेक लगांण, जरद्द भरद्द कटै जगमाण। सदा सिव ताम लिये खळ सीस, स्रुणी अपी चढ देत असीस।

—सू. प्र.

२ देखो 'लगान' (रू. भे.)

लगांन-स. पु.—१ किसानो द्वारा जमीदार या सरकार को दिया जाने वाला कर, भू-राजस्व ।

रू. भे.—लगाण, लग्गाण ।

लगाम-स. स्त्री.[फा.] १ तांगा बग्घी आदि में जोते जाने वाले अथवा सवारी किये जाने वाले घोडे के मुह मे लगाया जाने वाला वह लोह का बना उपकरण विशेष जो घोडे को रोकने व इधर उधर मोडने मे सहायक होता है राम, वाग ।

उ०—१ नी जगा म्हारै गिरै सू के जावै । ठाकर घोडी री **लगाम** थामी । गुलाब री मा आई सामी । —दसदोख

उ०—२ काहू पयपौ केविया, धव बिन सुनौ धाम । आऊं पीळी ऊपरा, लेउं हाथ **लगांम** । —मुंकनदान खिडियौ

२ रोकना, थामना ।

वि. वि.—एक प्रकार की रस्म जिसके अनुसार बरात चढते समय दुल्हे की बहन दुल्हे के घोडे की लगाम पकड कर रोकती है ।

३ कोई ऐसी बात या चीज जो किसी को नियंत्रण में रखती हो ।

उ०—रहच खळा दळ रोळणा, वीर उभै वरियाम । किव्रनर पातल रै करा, लदन तणी **लगांम** । —किसोरदान बारहठ

मुहा०—लगाम लगाणी=बोलना बंद करना ।

रू भे.—लगाण, लगांमी, लग्गाण ।

लगांमी—देखो 'लगाम' (रू. भे.)

उ०—चौकडै चित धारि चोकस, **लगांमी** लिव लाय । प्रेम की सिर पहरि पाखर, अगम दिस कू ध्याय । —अनुभववांणी

लगांवण-स पु.—१ लगाने की क्रिया या भाव ।

२ वह खाद्य-पदार्थ, जिससे रोटी लगा कर खाई जाय ।

उ०—तरै किलाणदासजी फेर अरज कीवी के म्हारै घर मे तो **लगांवण** री तेह है नही नै भाभाजी काकाजी दाम देवै नही । —नैणसी

रू. भे.—लगावण

लगा-क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—असा राण 'राजेस' कमठाण कीधा अकळ, कोड जुग **लगा** नह जाय कळिया । पाळ जोय हेमरा गरब गळीया पहल, टाळ जोय सयंद रा गरब टळिया । —जोगीदास कवाड़ियौ

लगाड़णौ, लगाड़बौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे)

उ०—१ साल्ह चलतइ परठिया, आगण वीखडियाह । सो मइ हियइ **लगाड़ियां**, भरि भरि मूठडियाह । —ढो मा.

उ०—२ जिकै वेद सूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि **लगाड़** होम करै छै । घणौ गोघ्रत नै कपूर री आहुति दीजै छै । —रा. सा. सं

लगाड़णहार, हारौ (हारी), लगाड़णियौ—वि. ।

लगाड़ियोड़ौ, लगाड़ियोड़ौ, लगाड़्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लगाड़ीजणौ, लगाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लगाड़ियोड़ौ-भू का. कृ.—देखो 'लगायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लगाडियोडी)

लगाणौ, लगाबौ-क्रि स.—१ स्पर्श करना, छूना, सम्पर्क मे करना ।

उ०—१ अहरै अहर लगाइ, तनै तन मेळिया । (परिहा) जाणि क गाधी हाट, जुवानै भेळिया । —ढो. मा.

उ०—देम्या म्हारै बीरै नै बुलाय, लैसी थानै हिवड़ै **लगाय** । इम विध भुगतौ ए भोजाइ म्हारी जाडैनै । —लो. गी.

२ मिलाना, जोडना, सटाना ।

उ०—१ अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणि । लाज लोह लंगरै लगाए, गय जिम आणी गयगमणि । —वेलि

उ०—२ अर पचास ही घोडा नू सूना छोडि तिकारै हानै भाला **लगाइ** जनक रै आगै प्रणाम पूरवक माथौ नमायौ । —व. भा.

३ शामिल करना, सम्मिलित करना ।

४ किसी तरल पदार्थ का लेप करना, मलना ।

उ०—१ इण भातरी अगरजी रूपैरा रूपोटा माहै धात आण हाजर कीजै छै । अगरजौ **लगाइजै** छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ मोतीचूडै री मोररा प्याला मे धात हाजर कीजै छै । सूधौ वगला **लगाइजै** छै । —रा. सा. स

५ चिपकाना, लिपटाना ।

उ०—फोफलिया रूपैरा लागा छै । फळा ऊपर बनात रा मुखमल रा चकारा **लगायजै** छै —रा. सा. स.

६ पहुचाना ।

७ खर्च कराना, व्यय कराना ।

८ किसी वस्तु को दूसरी मे इस प्रकार मिलाना कि वह उपयोग में लाने योग्य बन जाय ।

९ मालूम या प्रतीत कराना, अनुभव कराना ।

१० आघात करना या चोट, पहुचाना ।

उ०—मारू मन चिंता धरइ, करहइ कब **लगाइ** । करहउ उळ्यउ उतामळउ, साल्ह अचभै थाइ । —ढो मा.

११ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श कराकर जलन या खाज उत्पन्न करना ।

ज्यू —मिरचा लगाणी, पाव लगाणी ।

१२ नियोजित करना ।

१३ (१) प्रस्फुटित करना, अकुरित करना ।

१३ (२) उगाना ।

उ०—१ आसतखान मन धोखौ आयौ, लोभ बिना दुख बाग

लगायौ । असुरा तरां उकन उपआई, वाता लालच तणी वताई ।
— रा रू.

उ०—२ सोनजी दो पीपळ भळं **लगा** दिया अर बिमारा गट्टा ही पक्का चिणा दिया । —दसदोख

१४ प्रतीत करना ।

१५ बहुत से जनसमुदाय को एकत्रित करना ।

१६ प्रभाव या असर करना ।

१७ किसी बात या विषय में किसी व्यक्ति को आरोपित करना ।

१८ प्रज्वलित करना ।

उ०—आगि **लगाई** जळ बुझै, सो फिर सीतळ थाय । हरीया यानै अधिक है, अहू न मेल्या जाय । —अनुभववाणी

१९ किसी अनिष्ठ या कष्ट दायक बात का किसी से सम्बन्ध करना या सम्पर्क में लाना ।

२० किसी वस्तु या पदार्थ को नियमित एवं यथोचित रूप में प्रस्तुत करना ।

उ०—भडोछी बाफतं री घणं कलाबूत रेसम रै कारचोभी रै काम री, गुजरात रै कारीगररी कीवी छै। तकिया **लगाइजै** छै ।
—रा. सा स.

२१ किसी कार्य में प्रवृत करना ।

२२ आरम्भ या शुरू करना ।

२३ किसी आवरण या निरोध के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपाना या बंद करना ।

२४ फैलाना या पसारना, बिखेरना ।

२५ धारदार या नुकीली चीज की नोक या धार को शरीर में गडाना या चुभाना ।

२६ किसी के साथ ऐसा व्यवहार करना जिससे वह कुढे या चिढे ।

२७ किसी वस्तु को अन्य के संसर्ग में लाकर उसका उचित प्रभाव या फल दिखाना ।

२८ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत करना ।

उ०—ज्यू ए डूगर समुहा, ज्यू जइ सज्जण हूति । चंपावाडी भमर ज्यऊ, नयण **लगाई** रहती । —ढो मा

२९ करना, (पहुचाना) ।

उ०—मेरा बेडा लगाय दीज्यौ पार, प्रभूजी अरज करू छूं । या भव में मैं वहु दुख, ससा सोग गिमार । —मीरा

३० जुडाना, जोडना ।

उ०—२ जैमल के घर जनम लियौ है, राणा नै परणाई । साचा सनेही म्हारै राम सतजन, जासू प्रीति लगाई । —मीरा

३१ अनुगमन करना ।

३२ अन्तर्गत करना ।

३३ आश्रित करना ।

३४ आदी करना, अभ्यस्त करना ।

३५ किसी बात या काम को घटित करना ।

३६ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ट बात या कर्म, कार्य, किसी के अनिवार्य रूप में जिम्मे पडना ।

३७ किसी प्रकार की सिद्धी या स्थापना करना ।

३८ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक करना ।

३९ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि को निश्चित करना या जिम्मे में करना ।

४० गणित के क्षेत्र में किसी क्रिया को ठीक और पूर्ण करना ।

४१ क्रमानुसार पारी लगाना, नम्बर से रखना ।

४२ मूल्यांकन करना ।

४३ अंकित या चिन्हित करना ।

४४ स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग करना ।

४५ पीछा करना ।

उ०—इसा सुवरा रा मोरा ऊपरा राजाना घोड़ा **लगाया** छै ।
—रा. सा. स.

४६ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कराना ।

लगाणहार, हारौ (हारी), लगाणियौ—वि.

लगायोड़ौ—भू. का कृ ।

लगाईजणौ, लगाईजबौ—कर्म वा ।

लगाड़णौ, लगाड़बौ, **लगावणौ**, **लगावबौ**, **लग्गाड़णौ**, **लग्गाड़बौ**, **लग्गाणौ**, **लग्गाबौ**, **लग्गावणौ**, **लग्गावबौ**,—रू. भे. ।

लगाय, लगायत—अव्य —१ लगाकर, से ।

उ०—१ गोपाळ-पोळ सू **लगाय** फतै-पोळ सुदो कोट नै फतैपोळ रास माराज जाळोर सू पधारिया तदै स १७७४ में करायौ ।
—नैणसी

उ०—२ दीवाण फतैखाजी रै समत १७३८ रा आसोज सु **लगायत** समत १७४० रा माहा सुद १५ सुदी रयौ । —नैणसी

लगायोड़ौ—भू. का. कृ —१ स्पर्श किया हुआ, सम्पर्क में लाया हुआ. २ मिलाया हुआ, जोडा हुआ, सटाया हुआ ३ शामिल किया हुआ, सम्मिलित किया हुआ. ४ चिपकाया हुआ, लिपटाया हुआ. ५ खर्च किया हुआ, व्यय किया हुआ. ६ नियोजित किया हुआ. ७ (१) अंकुरित किया हुआ, प्रस्फुटित किया हुआ ७ (२) उगाया हुआ । ८ अनुभव किया हुआ, अनुभूति किया हुआ. ९ प्रतीत किया हुआ. १० प्रवृत किया हुआ. ११ आरम्भ व शुरू किया हुआ. १२ फैलाया हुआ, पसारा हुआ, बिखेरा हुआ. १३ किसी वस्तु को दूसरी में इस प्रकार मिलाया हुआ कि जिससे वह उपयोग लायक बन गई हो । १४ किसी तरल पदार्थ का लेप

किया हुआ १५ आघात किया हुआ, चोट पहुंचाया हुआ. १६ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श करके जलन या खाज उत्पन्न किया हुआ. १७ अधिक ताप से खाद्य पदार्थ को तली मे जमाया या चिपकाया हुआ १८ वृक्षारोपण किया हुआ. १९ जनसमुदाय को इकट्ठा किया हुआ २० प्रभाव या असर किया हुआ. २१ अनुगमन किया हुआ २२ प्रज्वलित किया हुआ. २३ किसी कार्य मे प्रवृत किया हुआ. २४ किसी बात या विषय में किसी व्यक्ति पर आरोप या प्रयोग किया हुआ. २५ किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध कराया हुआ या सम्पर्क मे लाया हुआ. २६ किसी आवरण या निरोध द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ट को छिपाया हुआ या बन्द किया हुआ. २७ पीछे किया हुआ. २८ अन्तर्गत किया हुआ. २९ आश्रित किया हुआ ३० आदी किया हुआ, अभ्यस्त किया हुआ. ३१ किसी वस्तु या पदार्थ को नियमित एव यथोचित रूप मे प्रस्तुत किया हुआ ३२ धारदार या नुकीली चीज की नौंक या धार शरीर मे चुभाया हुआ, गडाया हुआ. ३३ किसी से इस प्रकार व्यवहार कराया हुआ कि जिससे वह कुढे या चिढे. ३४ मानसिक स्थिति को किसी ओर प्रवृत किया हुआ. ३५ किया हुआ. (पहुँचाया हुआ) ३६ मूल्याकन किया हुआ. ३७ गणित के क्षेत्र मे किसी क्रिया का ठीक और पूरी तरह उतरा हुआ. ३८ आर्थिक क्षेत्र मे किसी दातव्य राशि को निश्चित किया हुआ, हिस्से मे दिया हुआ. ३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए आवश्यक किया हुआ. ४० अकित या चिन्हित किया हुआ. ४१ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध मे तेज आच (आग) के फलस्वरूप पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पेंदें तले जमाया या चिपकाया हुआ ४२ अनुसरण किया हुआ ४३ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध किया हुआ ४४ स्त्री के साथ मैथुन या सभोग किया हुआ ।

(स्त्री लगायोडी)

लगार–वि —किंचित, थोडा, लेशमात्र ।

उ०—१ आदि ग्रन्थ रै अोअक्षर, सुकवि कहै बुधि सार । तठै अगण दूखण तिता, लगै न हेक **लगार** । —सू प्र.

उ०—२ रता तौ नाम जिकै रहमांण, जिका नह व्यापै आवा-जाण । भणै गुण तोरा लच्छि-भ्रतार, लगै नह त्या तन पाप **लगार** । —ह. र.

रू. भे.—लिगार, लिगारइ, लिगारि, लिगारी, लिगारै लिगीक, लिगीयर

लगालगी–स. स्त्री·—क्रमबद्धता ।

लगाव, लगावट–स पु.—१ लगे हुए होने की अवस्था या भाव ।

२ किले, गढ आदि की दीवार का वह स्थान जहां से विपक्षी आसानी से प्रवेश कर सकें ।

उ०—पहर एक गोली वही पण बाहरला जाणेंइ था सो उबे **लगाव** री जायगां जांणै था सो वीं ठांव सूं बड गया ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

३ संबंध ।

उ०—लुगायां री खांप तौ अेक पण प्रीत री खापा न्यारी । वौ तौ नेह अर **लगाव** ई दुजी भात रौ है । बादळ रा मन में दपटियोडौ बिरखा रौ नेह फुफकार नै फण ऊंचौ करयौ । —फुलवाडी

४ दिलचस्पी, शौक ।

५ पक्षपात ।

रू. भे.—लग्गाव ।

लगावण—देखो 'लगावण' (रू भे)

लगावणी–सं स्त्री.—लडाने भिड़ाने की क्रिया या भाव ।

उ०—ज्यू आचार तो सुद्ध पालणी आवै नही तिण सूं आचार नी न्याय स्रद्धा री चरचा छोडने लोका सू **लगावणी** वातां करैं ।

—भिक्खु

लगावणौ, लगावबौ—देखो 'लगाणौ लगावौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारी बाईजी ने बेग बुलावौ, म्हारै साळ साथीड़ा **लगावै** । मैं धाय चतुरभुज थारी, थारी खेलण की बळिहारी ।

—लो. गी.

उ०—२ दाणवा तणा फाटिगा डाचा, वाचा नह ऊपडे विचार । अणभग 'मित्रो' खाग ऊपाडै, हालियौ ल`क **लगावणहार** ।

—जोगीदासचारण

उ०—३ ऊधी चाकी फिरावता, लारली गळी ल्यावता अर व्याह -सावा मे अळगी राखता । कोड-कुसळ रै कामा मे हाथ **लगावणौ** ही माडो मानता । —दसदोख

उ०—४ हमैं 'ब्याह कर परौ' र क्यू कीरो ही भव बिगाडूं । **कवर** तौ करमडै मे रिजकयोडा ही कोनी । नी तौ हू बूढो हू क ? ठुकरा-ण्यारी कमी है ? कोरैं कांम रौ क्यू छिम्भौ **लगावां** ।

—दसदोख

उ०—५ ठंडा होणैं रौ थोडो-घणो ही भौ नी है बेटी ने घडी-घडी संभाळैं, मूढो ढकै है । कान **लगावै**, मोडै कानी तकै है ।

—दसदोख

उ०—६ चौधरी रा सिखायोडा लोग छेलकी चेलकी **लगावणैं** जुट ग्या । —दसदोख

उ०—७ आपण खरच ले जावौ । चारण नै खरच मतां **लगावौ** । चारण रा हीडा करता जाज्यो । —जैंसे सरवहिये री वात

लगावणहार, हारौ (हारी), लगावणियौ—वि० ।

लगाविओड़ो, लगावियोड़ो, लगाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लगावीजणौ, लगावीजबौ—कर्म वा ।

लगावियोड़ी—देखो 'लगायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लगावियोडी)

लगाबू–वि. लगाने वाला।

उ०—पण सोनजी भ्रौरा सुनारां दाई नही। नफा सूधो मानस विल री वरियाव भर खरच गो पूरो लगाबू। —दसदोख

लगि—देखो 'लग' (रू.भे.)

उ०—ढाढी एक सदेसडउ, ढोलइ लगि लइ जाय। जोबण फट्टि तळावडी, पाळि न बधउ काइ। —ढो. मा.

उ०—२ हाकलि भमि हरवळी, भणी दळ 'विलद' उडाऊ। खग झाट बेलतो, जगि हवदा लगि जाऊ। —सू. प्र.

लगियोड़ो—देखो 'लागियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लगियोड़ी)

लगी–सं. स्त्री.—१ कलह, लडाई।

२ लड़ाई के लिए उकसाने की क्रिया।

क्रि. प्र.—लगाणी

रू. भे.—लग्गी

३ देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—साठ लाख वरसा लगी पाली सगली भ्रायोजी। सप्तमी वदि भ्रासाढ़ नी, सिद्ध थया जिनरायोजी। —स कु

लगुता—देखो 'लघुता' (रू भे)

लगुड–स. पु. [सं. लगुड.] १ छड़ी, लकडी, लाठी (व. स)

लगुळ—देखो 'लागुळ' (रू. भे.) (डि. को.)

लगुवेस—देखो 'लघुवेस, (रू. भे.)

लगू—देखो 'लग्गू' (रू. भे)

लगेलगे–क्रि. वि.—१ किसी को पीछे लगाने के लिए कहे जाने वाले उत्तेजनात्मक शब्द।

उ०—सिकारी ऊभो थकियो लगे लगे कर कर गडकडो पहुच गादडै नूं फाड नाखै ज्यू महाराज खड़ा थका लगेलगे कीज्यो, भ्रापे लड़से। —मारवाड रा भ्रमरावा री वारता

२ कुत्ते को उकसाने की क्रिया।

उ०—सिकारी ऊभो थकियो लगेलगे कह कर गडकडो पहुँच गादडै नूं फाड नाखै। —मारवाड रा भ्रमरावा री वारता

क्रि. प्र—करणी।

देखो 'लगलगी' (रू भे)

लगै—देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—१ पर भोम लई समदां लगै, राठोडा साका रहै। गळहत्थ वंस गोहिला तणो, वैड खड्ग गहि संग्रहै। —गु. रू ब.

उ०—२ भड तुरंग वीणार, चडै माझी गज केसर। फौज लगै फुलियं, दीध परराठा पस्सर। —गु. रू. ब.

उ०—३ दस जोयण लगै जियं री देही, व्रनवता जोवता विस्तार। इउ हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा व्रख वाधिया उवार॥ —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ जिण गजसिघ पाट सिव जामळ, बैठो जसवतसिघ महाबळ। वारो न्रपत जिवै वरतायो, सुरा घरम तहा लगै सवायो। —रा. रू.

लगैटगै—देखो 'लगभग'

उ०—१ तीस घाट सौ वरसा रै लगैटगै पूगी हू, म्हनै तो सुख नाव इण भ्रमूझणी रो ई भ्रायो। —फुलवाडी

२ निकट, पास।

लगोबग–क्रि. वि —१ बराबर।

उ०—गाव रै काज दीवाण राखी गुसट, लगोबग भ्राय निज कान लागा। चाटगा हुआरा माल चोतीसरी, नीरखलै धान री वळै नागा। —उमरदान लाळस

२ देखो 'लगभग'

लगोलग, लगोलगि–क्रि वि.—१ लगातार, निरन्तर।

उ०—१ दीवाणजी मिसखरी करता बोल्या म्हनै की इनाम देवो तो लगोलग तीन दिना नाई रात नी ढळण दूं। —फुलवाडी

उ०—२ बग्ग बी च्यारि न मेह बरखि, पडै धर काळ लगोलगि पखि। —रामरासो

लगौ–वि (स्त्री लगी) संलग्न, लगा हुआ।

उ०—पथ लगौ मूरधर पाय, तज दिली छळ तै ताय। सुण बात कमध सुग्यान, बळ मूछ्र घर बळवान। —रा रू

लग्ग—देखो 'लग' (रू भे)

उ०—१ प्रवाहै खड्ग्ग झडै हत्थ पग्ग, लहै जाण भ्रारा घर काठ लग्ग। मुडै साळळै माळळै पै मुडक्कै, झडा भ्रोझडा माड ज्यौ माड झुक्कै। —रा. रू.

उ०—२ चोथो गाल देनै पाछो लडैए, उलटी धका घूमा करै ए। बलै इमडी चलावै रग ए, खाचै दरबारां लग्ग ए। —जयवांणी

लग्गणो, लग्गबो– देखो 'लागणो, लागबो' (रू. भे.)

उ०—१ दहु वळा तोप लग्गी दगण, रूप काळ डाचा रुखी। रवि प्रळै काज जागै रसम, ज्वाळ झाळ ज्वाळामुखी। —सू. प्र.

उ०—२ उमराव चाव लग्गौ दरस, रूप निहारै निजर भर। भ्रनमेख द्रस्टि पेखत छवि, मीन चद्र प्रतिबिब पर। —रा रू.

उ०—३ जोधौं 'मान' 'कल्याण' तण, गो तन धारा लग्ग। भड सो पडिया भाण रा, भ्रन ऊपडिया वग्ग। —रा. रू.

उ०—४ भाटी 'राम' मुकन्द' तणा, इण दिस लग्गौ ग्राय। पाळ पुळी पैंठी पूरै, दी डोहळी जळाय। —रा. रू.

उ०—५ रिणमलोत रिण वज्जियौ, 'सुंदर' 'हरि' सुजाव। सहसा ले पडियौ समर, घट सो लग्गा घाव। —रा. रू.

उ०—६ सौ तुरग सारखा, भडा ग्रणभग समेळा। मीट पडी मेळिया, घडी नह लग्गी वेळा। —रा. रू.

उ०—७ मुहकम लग्गी मंडतै, ज्या दणियर पर पेख। ग्रापडियौ घर लूटता, बाहर गोहर सेख। —रा. रू.

उ०—८ देवौ दुद न वीसरै 'चद' तणौ हुग्नाथ। पंथ ग्रळगौ लांगता, लारा लग्गौ साथ। —रा. रू.

उ०—९ जाए भळक्की जांमगी, पैले दग्गी नाळ। हाडै दुरजण-सल्ल रै, तन लग्गी तिण काळ। —रा. रू.

उ०—१० ग्रम्हा मन ग्रचरिज भयउ, सखिया ग्राखइ एम। नइ ग्रणदिट्ठा सज्जणां, किउ कर लग्गा पेम। —ढो मा.

उ०—११ जिम जिम सज्जण संभरइ, तिम तिम लग्गइ तीर। पंख हुवइ तौ जाइ मिळि, मना बधाडा धीर। —ढो मा

उ०—१२ जिणि देसै सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ। उग्रा लगो मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ। - ढो मा.

उ०—१३ संदेसै ही घर भरयउ, कइ ग्रगणि कइ वार। ग्रवमि ज लग्गा दोहडा, सेई गिणइ गँवार। —ढो. मा.

उ०—१४ रह रह सुदरि माठ करि, हळफळ लग्गी काइ। डाभ दिरावइ करहलउ, सेकंता मरि जाइ। —ढो. मा.

उ०—१५ ग्रगि ग्रभोखण ग्रच्छियउ, तन मोवन सगळाइ। मारू-ग्रवा-मउर जिम, कर लग्गइ कुमळाइ। —ढो मा

उ०—१६ ग्रहर ग्रभोखण ढकियउ, सो नयणं रग लाय। मारू पक्का ग्रब ज्यू, झरइ ज लग्गे वाय। —ढो. मा.

उ०—१७ सुहिणा हू तइ दाहवी, तोनइ दहियउ ग्रगि। मव जोयण साजण वसइ, सूतो थी गळि लग्गि। —ढो. मा.

उ०—१८ दुज्जोहण घर घग्गणि सांमि, सिक्ख रडतीय मग्गइ। धम्मुपुत्त वयणेण पुण, इद पुत्त तिणि मग्गि लग्गइ।

—पं. प. च

उ०—१९ किलमाण हलै सुरतांण कोप, उलटै समंद सम दुद ग्रोप कमधजा ग्रग ऊतग कस्स, रिण लग्गा जग्गा वीर रस्स।

—रा रू.

उ०—२० उर निस्वास प्रमुक्कै, भग्गी ज्यास चीत साभ्रंमं। यौ चिंता उद्वेगी, लग्गी ग्रग वंस घासाण। —रा. रू.

लग्गणहार, हारौ (हारी), लग्गणियौ—वि.।

लग्गिग्रोड़ौ, लग्गियोडौ, लग्गयोड़ौ—भू. का. कृ०।

लग्गीजणौ, लग्गीजबौ—भाव वा.।

लग्गन—१ देखो 'लगन' (रू भे.)

उ०—मुहडा करि जुहार सब्बांही, राज महेल राज धू-मांही। राजा पधारै रळियाही, मुख हसतै राव लग्गन मांही।

—गु. रू. ब.

२ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

लग्गांण—१ देखो 'लगाम' (रू. भे.)

२ देखो 'लगान' (रू. भे)

लग्गाड़णौ, लग्गाड़बौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे.)

लग्गाड़णहार, हारौ (हारी), लग्गाड़णियौ—वि.।

लग्गाड़िग्रोड़ौ, लग्गाड़ियोड़ौ, लग्गाड़्योड़ौ—भू. का कृ.

लग्गाड़ीजणौ, लग्गाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लग्गाड़ियोडौ—देखो 'लगायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लग्गाडियोडी)

लग्गाणौ, लग्गाबौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे.)

उ०—जम लोक वाण सीखै जवन, पढै ब्रहम मुख पारसी। हित देव सेव ग्राधा हुग्रा, काई लग्गा ग्रारसी। —रा. रू.

लग्गाणहार, हारौ (हारी), लग्गाणियौ—वि०।

लग्गायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लग्गाईजणौ, लग्गाईजबौ—कर्म वा०।

लग्गायोड़ौ - देखो 'लगायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लग्गायोडी)

लग्गाव—देखो 'लगाव' (रू. भे.)

लग्गावणौ, लग्गावबौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे.)

लग्गावणहार, हारौ (हारी), लग्गावणियौ—वि०।

लग्गाविग्रोड़ौ, लग्गावियोड़, लग्गाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लग्गावीजणौ, लग्गावीजबौ—कर्म वा०।

लग्गावियोड़ौ—देखो 'लगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. लग्गावियोडी)

लग्गी—देखो 'लगी' (रू. भे.)

लग्गू—वि—१ लगने वाला।

२ लगा हुग्रा, सलग्न।

३ लीन, ग्रनुरक्त।

क्रि. वि.—४ लगातार, निरतर।

रू. भे.—लगू

लग्न—स. पु. [स. लग्नम्] १ दिन का उतना ग्रंश जितने मे किसी एक राशि का उदय रहता है। (ज्योतिष)

२ मांगलिक कार्य करने का शुभ मुहूर्त।

उ०—१ सोही स्वीकार करि गोळवाळ री वो ही दुहिता न साथ लेर राजकुमार देवीसिंह ऊमरचूंगी आइ पिताह-प्रच्छन्न आपरी प्राणप्रिया छोटी कुमराणी गोरी मदनावती नू बुलाइ अनेक उचित बाडा बणाइ आपरा अमात्य न बबावदै बगसादून देर उपयमरै उचित उपहार एकठौ कराइ लग्न पूछियौ। जठै नाम करि देन्है द्विज गगकराज दाधीच व्यास इण रीति कहियौ। —व भा

उ०—२ पछूनै निबै घणौ आदर सनमान देनै बीजै दिन चढीया सो लग्न रै दिन जालोर आया। —वीरमदे सोनगरा री बात

३ वह समय जब सूर्य किसी राशि मे प्रवेश करता है।

रू भे—लगन, लिगन, लिगन्न।

लग्नकुंडळी—स स्त्री. [स लग्न+कुडली] किसी के जन्म के समय ग्रहो की राशियों की स्थिति जानने का चक्र या कुडली, जन्म-कुडली।

लग्नबंध—स. पु.[सं.] संगीत मे वादन के समय स्वर के मुख्य अंश को अलग न होने देकर उनका सुदरता से सयोग करने की क्रिया।

लग्नदिन—स. पु. [सं. लग्न+दिन] विवाह के लिए निश्चित दिन।

लग्न-पत्र—स. पु. यौ. [स.] वह पत्र जिसमे वैवाहिक कृत्यो का ब्योरेवार विवरण हो।

रू भे—लगनपत्रिका, लगनपत्री, लग्नपत्रिका।

लग्नपत्रिका—स स्त्री—देखो 'लग्नपत्र' (रू भे)

लग्नायु—स. स्त्री यौ. [स- लग्न+आयु] फलित ज्योतिष मे लग्न-कुडली के अनुसार स्थिर होने वाली आयु।

लग्नेस—स. पु. यौ [स लग्न+ईश] वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो।

लग्नोदय—स. पु यौ [स लग्न+उदय] किसी लग्न के उदय होने का समय।

लघमा—देखो 'लघिमा' (रू.भे.)

लघिमा—स. स्त्री. [सं. लघिमन्] १ आठ सिद्धियो मे से चौथी सिद्धि, जिसके प्राप्त होने पर मनुष्य बहुत छोटा एव हल्का रूप धारण कर सकता है। (डि. को, ह ना मा.)

२ हल्कापन लघुता।

उ०—लक-तणी लघिमा घणी, तउ नीपायु सीह। नब नितंब समा घरी, इद्र कहि निसि-दीह। —मा का प्र.

रू. भे.—लघमा, लघुमा।

लघु—वि.—किसी की तुलना मे छोटा।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसत सब लघु देह। अब बरण बीण सरीर, इम कहत तुरत अधीर। —रा रू

२ तुच्छ, भिन्न।

उ०—सिव सभव सिव रूप सुरेसुर, सिव गुण दियण प्रणाम कथ सुर। अति लघु निको सरण तक आवे'' '''। —सू प्र.

३ हल्का।

४ तनिक, थोडा।

५ दुबला, पतला, कमजोर।

क्रि. वि.—शीघ्र, सत्वर।

स पु. [स लघु] १ समय का एक परिमाण, जिसमे १५ क्षण होते हैं।

२ ज्योतिष मे हस्त, अश्विनी और पुष्य, इन तीन नक्षत्रो के समूह का नाम।

३ तीन प्रकार के प्राणायाम मे से बारह मात्राओ का प्राणायाम।

४ व्याकरण मे एक ही मात्रा वाला स्वर, ह्रस्व स्वर।

५ छोटा भाई। (ह ना मा)

रू भे.—लहु, लहू, लाडो, लुघ, लुघवि, लुघु, लोग्रडो, लोडो, लोहडो, लोहडो, लोडो, लौडो, लोहडो, लोहडो, लवडो, लहरो, लहडो, लहुअडउ, लहुओ, लहडियो, लहुडो, लहुडउ, लहुड लहुडो, लहोडो, लोडियो, ल्होड्यो।

लघुअंक—स पु. [स लघु+अंक] वह वर्ण जिसमे एक ही मात्रा हो, एक मात्रिक।

उ०—किवली गिरछू कहै, लहू लघुअंक लहावै। गिणै छद बस गुरु कवी, लघु चार लहावै। —र. रू.

लघुअसन—स पु गरुड। (ना डि को)

लघुककोळ—स पु [स लघु+ककोल] साधारण ककोल से छोटा एक प्रकार का ककोल।

लघुगण—स. पु—अश्विनी, पुष्य एव हस्त, तीनो नक्षत्रो का समूह।

लघुचंदन—स पु.- अगर नामक सुगंधित लकडी।

लघुचितविलास—स. पु—डिगल (मरुभाषा) का एक गीत छद विशेष।

लघुचित्त—वि [सं लघु+चित्त] दुर्बल या चचल मन वाला।

लघुचूडक—स. पु—वस्त्र विशेष।

उ०—लघुचूडक मुक्तचूडक सुवरणचूडक मोतीसरी करणी ककणी पादवेष्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नवसरक अग्नादसरक इति आभरणानि। —व. स

लघुतममसमापवरत—देखो 'लघुतमसमापवरत्य' (रू. भे)

लघुता, लघुताई—स. स्त्री.—१ छोटापन।

उ०—१ सुत 'धाधळ' केसर वाग सही, जग जेठ मणाधर नाग जेही। लघुता दुख टोवण्यिाळ लसै, धिक रोस मुराडियै आंख घिसै। —पा प्र.

२ तुच्छता, निम्नता।

उ०—१ नहिं जागत नहिं सुता, नहिं वे जीवत नहिं वे मरता। नहिं दीरघ नहिं लघुता, चेतन ब्रह्म आप लक्षिता। —श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ जैसें काठ की पुतळी को कारीगर करै। फिर कारीगर को पुतळी चित्रणों चाहै। तैसें परमेस्वर करत्तामकरत्ता मुनै उपायौ। अर हौं परमेस्वर को गुण कह्यौ चाहूं। ग्रंथकरत्ता इह आपणी लघुता करै छै। —वेलि

३ हल्कापन, नीचता।

४ दुर्बलता, कमजोरी।

रू. भे.—लगुता।

लघुतुपक-स. स्त्री [सं लघु+तुपुक] एक प्रकार की छोटी बंदूक, तमचा।

लघुत्तमसमापवरत्य-स. पु. [सं. लघुतमसमापवर्त्य] वह छोटी से छोटी सख्या जो दो या अधिक सख्या से पूरी २ विभाजित हो जाय।

रू. भे.— लघुतमसमापवरत।

लघुत्व-स. पु [स.] १ छोटापन, लघुता।

२ हल्कापन।

३ तुच्छता।

लघुवती-स. पु.—प्रथम लघु से पाच मात्रा का नाम।

वि.—छोटे दात वाला।

लघुनजर-स. पु. यौ [स लघु+फा. नजर] हाथी। (ना डिं. को.)

रू. भे. लघुनिजर।

लघुनाळीक-स. पु.—छप्पय छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम चार चरण १८, १८ वर्णो के और अतिम दो चरण २२, २२ वर्णो के होते हैं।

उ० अखर अठारह चरण चव, बे चरणा बावीस। कवित लघुनाळीक कही, बरणत सरब कवीस। —र. ज. प्र.

लघुनिजर—देखो 'लघुनजर' (रू भे.)

लघुनीत-स पु.—पेशाब, मूत्र। (जैन)

लघुपंचक, लघुपचमूळ-स. पु.—शालीपर्णी पिठवन कटाई (छोटी) कटेहरी (बडी) और गोखरू इन पाचो की जडो का समूह या समिश्रण। (वैद्यक)

लघुपण-सं. पु —छोटापन, लघुता।

उ०—पढै कवियण बयण बडपण, ओप जिण सम करण। अरि जण त्रवण कुवयण तजै समभण दियण लघुपण दाव। —रा. रू

लघुपाक-स पु. यौ [स. लघु+पाक] १ सहज ही पक जाने वाला, खाद्य पदार्थ।

लघुबंधव-स पु. यौ. [स. लघु+बंधव] उम्र मे छोटे रिश्तेदार या भाई।

लघुभोजराज-सं पु —श्रीवस्तुपाल के २४ विरुदो मे पांचवां विरुद। (व. स.)

लघुमति-स. पु. यौ. [स लघु+मति] छोटी बुद्धिवाला, मूर्ख।

लघुमांण-स. पु —लघु।

उ०—मिळै चवथी पचमी, जिकां अत गुरू जाण। अनुप्रास की आठ तुक, मिळै अत लघुमांण। —र. ज प्र.

लघुमान-स पु.—नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत आदि करते देखकर नायिका के मन मे होने वाला रोष।

लघुमा—देखो 'लघिमा' (रू. भे) (अ. मा, डिं. को., ह. ना. मा)

लघुवय-स स्त्री यौ [सं. लघु+वय] छोटी उम्र।

रू. भे.— लहुवय

लघुवयत, लघुवेस-सं. पु. [सं. लघु+वयस्] १ छोटी उम्र वाला।

उ०—लघुवेसां देवौ' दलौ', सुत जसकरण सकज्ज। आप भळा-वण 'खेम' लै, नेम लियौ घर कज्ज। —रा. रू.

२ बालक। (ह ना. मा.)

रू. भे —लगुवेस

लघुसका-स. स्त्री. [स. लघु+शंका] मूत्रोत्सर्ग, पेशाब करना।

उ०—पतिसाहजी हुकम कियौ पेसखांन नू तू जाइ अर उस रेती माहै आबखान रौ तबू खाचि। आोथि पातिसाहजी लघुसंका की। —द वि.

क्रि. प्र —करणी. लागणी।

लघुसामत-सं. पु. [स. लघु+सामत] छोटा राजा।

उ०—राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामत लघु-सामंत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहवाहक। —व. स.

लघुहस्त-स पु [स.] शिघ्रातिशिघ्र बाण चलाने वाला व्यक्ति।

२ छोटे हाथ वाला।

लड़ग-वि.—१ लम्बा।

२ लम्बायमान।

स पु.—१ घोडा, अश्व।

उ०—घरि बइठा ही आविस्यइ, लाखे लिया लड़ग। तिणिमइ लेस्या टाळिमा, वाकड मुहा विडग। —ढो. मा.

२ कतार, पक्ति।

उ०—१ पडै जागिया अखमी रौळ विखमी नीहाव पडै, रैण घोम लागी वौम छके पख राह। तेडे रथ गिरंभा रा रभा रा लड़ंग तूटै, साहा बेहू सीस जूटै बळाबध साह। —राव सत्रसाळ रौ गीत

उ०—२ लड़ंग लाल तुंग तग, सग जुग हल्लयं। चढ़ै कि वेळ आकुळं, समुद्र मेळ चल्लयं। —रा. रू.

३ फौजों की टुकड़िया, दल।

उ०—हम फरतै तोप का गोळा ज्यूं आए। जिन्हूं पर ठामठाम सेती फौजूं के लड़ंग धाए। —सू प्र.

४ फैलाव, विस्तार।

उ०—लखि फौज तुग लड़ंग ऊंबध किर दधि अग। वाहि सुरच पायक वृंद जग जाग दळ जयचंद —रा. रू.

५. फुंड, समूह।

उ०—छछत्रा मदरा छाकिया, म्हो आछा सिरदार। विड़गा चढ़िया वीरवळ, लड़ंगां आया लार। —पना

रू. भे.—लड़ग।

लड़त—स स्त्री—लड़ाई, भिड़ंत, मुकाबला।

लड़—स. स्त्री—१ एक दूसरी से लगकर लम्बाकार मे व्यवस्थित रूप से गुंथी हुई वस्तुओं का समूह, माला।

उ०—१ उमड घटा घन देखिकै, चढी अटा पर बाळ। मोतिन लड़ मुख मे लई, कारण कोण जमाल। —जमाल

उ०—२ हीडा बादळी हिंडाय, बिजळी चवर ढुळाय। लागै बिरखा री भड़, जाणं मोतीडा री लड़। —चेतमानखो

२ पंक्ति मे लगे हुए फूलो का छडी के आकार का गुच्छा।

३ रेखा, पंक्ति, कतार।

उ०—धुरवा धरणी लग लोढा लै धावै, जीमण जीमण नै मोडा जिम धावै। मोग अनुमोदित लोरा लड लागी, नीभर नव नीरद भमना भव भाजी। —ऊ का.

४ रस्सी।

उ०—पीठ पर वेणी उचटती निजर आवै है, केल रै पान जाणै नागण लफलफा जावै है। उचकती अलकावली मे मुख इण भात सोभा देवै है, मानू नाग लड़ां रै हीडै चढ़ झोटा लेवै है। —र हमीर

५ युद्ध, लड़ाई। (डिं. को.)

६ सगीत वाद्यो पर गत के एक ही टुकडे को बार-बार बजाने की क्रिया।

रू. भे.—लड़ी

लड़कपन, लड़कपणो—स. पु—१ बाल्यावस्था।

२ लडको का सा आचरण, चचलता।

क्रि. प्र—करणो, दिखाणो

लड़कबुद्धि—स स्त्री—बालको जैसी बुद्धि।

लड़काई—स. स्त्री—लड़कपन, नादानी।

लड़को—स. पु. [स्त्री. लड़की] १ छोटी अवस्था का बालक।

२ पुत्र, बेटा (डिं. को.)

लड़क्कणो, लड़क्कबो—क्रि. अ.—परस्पर टकराना, भिड़ना।

उ०—मही चौ धडक्कै तठै लड़क्कै सेस रा माथा, खडक्कै हुडक्कै काळी कडक्कै खाणास। झडक्कै कटारा पेस रुडक्कै मूंडडा अठै, बडक्के झगळा कडा जडक्कै बाणास। — गीत बादरसिंघ मेडतिया रौ

लड़खड़णो, लड़खड़बो—देखो 'लडखडाणो, लडखडाबो' (रू. भे)

उ०—१ म्हैं तौ ईणनु अठै बरियौ पण ईणरी कटारी तौ कोट नु जाय जाय बहे छै। ईण भात पडता लडता लड़खड़ता नीसरणिया लगाय नै चढै छै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०--२ सरप की जीभ ज्यूं परै अणी भलका करै। कै लडै कै लड़खड़ै, थक्या उलटा पड़ै। —ह. पु. वा.

उ०— ३ उड गया रेसमी गदरा वे राली नै रज नही लागी। आ फिरे कामेतण लडाभूम, लखपतणी मरगी लड़खड़ती। —चेतमानखा

लड़खड़ाड़णो, लड़खड़ाड़बो— देखो लडखडाणो, लडखडाबो' (रू. भे.)

लड़खड़ाड़ियोड़ो – देखो 'लडखडायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. लडखडाडियोडी)

लड़खड़ाणो, लड़खड़ाबो—क्रि. अ १ डगमगाना, डिगना।

उ०—नाटक गीत तमासौ देखण, तुरत हरक सू जाई रे। धरम कथा साधा रै दरसन, जाता पग लड़खड़ाई रे। —जयवाणी

२ कापना, धूजना, थर्राना।

क्रि. स.—३ भय दिखाना।

उ०—इतरा मे वेरसी आय लोगा नू लड़खड़ाया सो माणस काप रहिया छै। —सूरै खीवै काधलोत री बात

लड़खड़ाणहार, हारौ (हारी), लड़खड़ाणियौ—वि०।

लड़खड़ायोड़ो - भू० का० कृ०।

लड़खड़ाईजणो, लड़खड़ाईजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

लड़खड़णो, लड़खड़बो, लड़खड़ाड़णो, लड़खड़ाड़बो, लड़खड़ावणो, लड़खड़ावबो, लुड़खुड़ाणो, लुड़खुड़ाबो—रू० भे०।

लड़खड़ायोड़ो—भू० का० कृ०—१ डगमगाया हुआ, डिगा हुआ. २ कापा हुआ, धूजा हुआ, थर्राया हुआ. ३ भय दिखलाया हुआ, रोब गालिब किया हुआ.

(स्त्री. लडखडायोडी)

लड़खड़ावणो, लड़खड़ावबो—देखो 'लडखडाणो, लडखडाबो' (रू. भे.)

लड़खड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़खड़ावणियौ—वि०।

लड़खड़ाविओड़ो, लड़खड़ावियोड़ो, लड़खड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ०

लड़खड़ावीजणो, लड़खड़ावीजबो – भाव वा०, कर्म वा०।

लड़खड़ावियोड़ौ—देखो 'लडखडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडखडावियोडी)

लड़ड़-क्रि. वि. (अनु.) लगातार, निरन्तर।

उ०—घोडा री असवारी अर दूध रै पाण वौ तौ **लड़ड़-लड़ड** बघतौ ई गियौ। —फुलवाडी

रू. भे.—लरड

लड़भड़णौ, लड़भड़बौ-क्रि अ —बकझक करना, बडबडाना।

उ०—इम **लड़भड़तौ** बाहुडी, पूठी उर पिछताय। छळ करतौ छूंनौं गयद, जाणै बिन नूं जाय। —र हमीर

लड़भड़ियोड़ौ-भू. का कृ —बकझक किया हुआ, बडबड़ाया हुआ।

(स्त्री लडभडियोडी)

लड़णौ, लड़बौ-क्रि. स. [स. रणम्] १ शस्त्रास्त्रो द्वारा युद्ध करना, लडना।

उ०—१ पिंड सार धार सिलहा अपार, वाजंत अत विण वार वार जुध **लड़ै** भिडै नह खड़ै जग, सिर पडै भडै कर पाव सग। —रा. रू.

उ०—२ करण प्रताप सुणै दळ कीधा, **लड़वा** कटक सामुहा लीधा। असि सहस विकटा असबारा, वाग उपाडि **लड़ै** जिण वारा। —सू प्र.

उ०—३ उडै पग हात किरका हुवै अग रा, वहै रत जेम सावण वहाळा। आप आपौ वरी जोय नै आडिया, **लड़ै** रिण भला भला निराताळा। —र. रू.

२ शारीरिक, आर्थिक, बौद्धिक बल प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने की क्रिया करना।

३ बहस करना, हुज्जत करना।

४ ईर्ष्या-भाव से कलह करना, झगडना।

उ०—पिंडत-पिंडत अर साधु-साधु, सागै हुवै जद सागीड़ा **लड़ै**-झगड़ै। —दसदोख

५ टकराना, भिडना।

उ०—कैर **लड़ै** बिन पानडा, रोकै लूआ रोस। सुण सुसाता जोर-सू, भूले हिरणां होस। —लू

६ विषैले जन्तुओ का डक मारना।

उ०—१ पनग **लड़ौ** कीडा पडौ, सडौ झडौ दुख सग। जग चुगला री जीभडी, वायस भखौ विहग। —बा. दा.

उ०—२ नाथूरामजी रै खटमल **लड़ियौ**, बांकी लूठी के दाफड पडियौ। रे खटमल सोबा दै बादस्याई दरोगा सोयबा दै। —लो. गी.

७ कुपित या नाराज होना।

उ०—होय बिरंगी नार, डगरां बिच है वयू **खडी**। कांई थारौ पीहर दूर, कांई घरा सासू **लडी**। —लो. गी.

८ ऐसी स्थिति मे होना जिसमे किसी कार्य के सम्पादन मैं पूर्ण परिश्रम लग गया हो।

ज्यू—काम रै माय दिमाग लड़णौ।

९ ऐसी स्थिति मे पहुचना, जिसमे किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन सिद्ध होता हो।

लड़णहार, हारौ (हारी), लड़णियौ—वि.।

लड़िग्रोड़ौ, लड़ियोड़ौ, लड़योड़ौ—भू. का. कृ.।

लड़ीजणौ, लड़ीजबौ—भाव वा.।

लडणौ, लडबौ—रू भे.।

लड़त्थड़णौ, लड़त्थड़बौ—देखो 'लडथडणौ, लडथड़बौ' (रू. भे.)

लड़त्थड़णहार, हारौ (हारी), लड़त्थड़णियौ—वि०।

लड़त्थड़िग्रोड़ौ, लड़त्थड़ियोड़ौ, लड़त्थड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

लड़त्थड़ीजणौ, लड़त्थड़ीजबौ,—भाव वा०।

लड़त्थड़ियोड़ौ—देखो 'लड़थडयोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लडत्थडियोड़ी)

लड़थड़णौ, लड़थड़बौ - देखो 'लडथडाणौ, लडथडाबौ' (रू. भे)

उ०—१ झाख विन अराबा आगि माथै झडै, **लड़थड़ै** अडै गैणानि लागो। झपेटा भाग किलमा करै भोबरै, नाग जिम राम रौ **खाग** नागो। —भीमसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ हाथ डाडौ झालियौ जी, चालतौ **लड़थड़ै** देह। दात त्रंणी खोटी पडीजी, आपद पडियौ नेह। —जयवाणी

उ०—३ कीधा तिमको कहइ नही, जीभ **लड़थड़** भूठ। काटौ भागौ आगुळी, खोभीजइ अंगूठ। —स. कु.

उ०—४ झड अनड उड रव बाणि बहिझड, उरड अपहड दुझड ग्रोझड। कर डमर गड बरड कर घड, लुडत तडफड जुटत **लडथड़**। —सू प्र.

लड़थड़णहार, हारौ (हारी), लड़थड़णियौ—वि.।

लड़थड़िग्रोड़ौ, लड़थड़ियोड़ौ, लड़थड़योड़ौ—भू का कृ.।

लड़थड़ीजणौ, लड़थड़ीजबौ—भाव वा.।

लड़थड़ाड़णौ, लड़थड़ाड़बौ—देखो 'लडथडाणौ लडथडाबौ' (रू. भे.)

लड़थड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'लडथडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडथडाडियोडी)

लड़थड़ाणौ, लड़थड़ाबौ-क्रि. अ.—१ डिगमिगाना।

२ भय आदि के कारण जीभ का कांपना।

लड़थड़ाणहार, हारौ (हारी), लड़थड़ाणियौ—वि.।

लड़थड़ायोड़ौ – भू. का. कृ.।

लड़थड़ाईजणौ, लड़थड़ाईजबौ—भाव वा. ।

लड़ुथड़णौ, लड़थड़बौ, लड़थड़णौ, लड़थड़बौ, लड़थड़ाड़णौ, लड़थड़ाड़बौ, लड़थड़णौ, लड़थड़बौ, लड़थड़ावणौ, लड़थड़ावबौ —रू. भे. ।

लड़थड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ डिगमिगाया हुआ. २ भय आदि के कारण जीभ का कांपा हुआ ।
(स्त्री. लड़थडायोड़ी)

लड़थड़ावणौ, लडथड़ावबौ—देखो 'लडथडाणौ, लडथडाबौ' (रू. भे.)

लड़थड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़थड़ावणियौ—वि० ।

लड़थड़ाविग्रोड़ौ, लड़थड़ावियोड़ौ, लडथड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०

लड़थड़ावीजणौ, लड़थड़ावीजबौ—भाव वा० ।

लड़थड़ावियोड़ौ—देखो 'लडथडायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री लडथडावियोडी)

लड़थट—'देखो 'लडथट' (रू भे.)

लड़दादौ—स. पु.—प्रपितामह का पिता ।

लड़दौ, लड़धौ—वि. (स्त्री. लड़दी, लडधी) १ हृष्ट पुष्ट, युवा ।
२ मस्ताना, मुफ्तखोर ।
उ०—बापड़ी ग्रम् नें तो टुकडा-रा ई सांसा अर ग्रठीनै अे लडधा भाग-बूटी छाणै अर माल उडावै । —बरसगाठ

लड़पोतौ—स. पु. (स्त्री लडपोती) पौत्र का लडका ।

लड़मूरत—गले का आभूषण विशेष ।

लड़लूंब, लडलूंम, लडलूमौ—देखो 'लडालूब' (रू. भे.)
उ०—फब कानन मोती मुगाट फबै, लड़लूंब बनौ चित चाव लुबै । कमधेस अछा अस त्यार किया, लखमोल अमोलक साथ लिया । —बख्तावर मोतीसर

लड़ालूंब, लड़ाझूंब—देखो 'लडालूब' (रू. भे)

लड़ाई—स. स्त्री.—१ लडने की क्रिया या भाव ।
२ शस्त्रों से (शत्रु को पराजित करने हेतु) रण-क्षेत्र मे किया जाने वाला संघर्ष, संग्राम, युद्ध।
उ०—१ कर धूकळ घर कज्ज, सकत दाखवै सवाई । मध मणियड राडद्रहि, करै छेहली लड़ाई । —रा. रू.
उ०—२ घणा असुर भाजै गांगाणी, माडेचौ चढियौ 'मुकनाणी' लाखा सूं बधई लड़ाई. सार प्रथम साझिया सिपाई । —रा. रू.
३ जन-साधारण मे एक दूसरे के साथ मारपीट करने का प्रयत्न ।
क्रि. प्र —करणी, लड़णी ।
४ शारीरिक, आर्थिक व बौद्धिक बल से एक दूसरे को दबाने या नीचा दिखाने का प्रयत्न ।
५ एक-दूसरे के बीच वाद-विवाद या गाली-गलोच होने की अवस्था ।
६ वैमनस्य, शत्रुता, अनबन ।
७ प्रतिस्पर्धा, ।
८ टक्कर, भिडत ।
यौ. लडाई-खोर
रू. भे.—लडाई

लड़ाईखोर, लड़ाईखोरौ—वि.—१ लडाई करने वाला ।
२ कलह-प्रिय ।

लड़ाक, लड़ाकौ, लड़ाकू, लडाकौ—वि.—१ लडाई करने वाला, योद्धा वीर ।
उ०—१ गाज नगारा चिमक खग, बरसन बाजत डाक । घटा नही आ काम री, आवै फौज लडाक । —अज्ञात
उ०—२ चठ्ठा करत खप्पराक चडी, राग बज अयराक । रिणछाक चढ रवि ताक राघव, लखण सहित लडाक । —र. ज प्र.
उ०—३ खागीवध खळ गयद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ । सीह लडाकौ लडण मलूभो, डाकी ठह उभो डाढाळ , —महादान मेहड
२ कुश्ती लडने वाला, मल्ल-योद्धा ।

लड़ाड़णौ, लडाडबौ देखो 'लडाणौ लडाबौ' (रू. भे)

लडाडणहार, हारौ (हारी), लड़ाड़णियौ—वि ।

लडाडियोड़ौ, लडाडियोड़ौ—भू. का कृ ।

लडाडीजणौ, लडाडीजबौ—कर्म वा ।

लडाडियोड़ौ—देखो 'लडायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. लडाडियोडी)

लड़ाझूंब, लडाझूंम, लडझूम—देखो 'लडालूंब' (रू भे)
उ०—१ आबूवाळा ई समारोह मे पूरा-सूरा कपडा अर वै भी घाघरा, ओढणी, कुडती, कांचळी, इत्याद पैर कर ग्रौर पूरा गैणा गाठा सू लडाझूम लुगाया री सुदरता री परख व्है । —हरावळ
उ०—२ उड गया रेसमी गदरा वे, राली रै रंज नहीं लागी । आ फिरै कामेतण लडाझूम, लखपतणी मरगी लडथडती । —चेतमानखो
उ०—३ बीदणी अपूठी होय मूडौ उघाड बैठगी । ऊंचौ जोधौ । पतळी पतळी लीली-चेर लडाझूम सागरिया ई सागरिया । देखता ई कोया गे ठाडोळाई वापरगी । —फुलवाडी

लड़ाणौ, लड़ाबौ—क्रि.स. (लडणौ क्रिया का प्रे. रू.)—१ शस्त्रो द्वारा युद्ध मे प्रवृत करना, लडाना ।

२ शारीरिक, बौद्धिक एवं आर्थिक बल प्रयोग से शत्रु को परास्त करने या नीचा दिखाने हेतु प्रवृत्त करना।
३ बहस या हुज्जत करना।
४ ईर्ष्या-भाव से कलह कराना, झगड़ाना।
५ विषैले जन्तुओं से डंक मराना।
६ टकराना, भिडाना।
७ कुपित या नाराज कराना।
८ किसी कार्य के सम्पादन हेतु विकटतम परिस्थितियो का सामना करना, पूर्ण परिश्रम कराना।
उ०—धरम अर पुन्न रा कामा वास्तै केइ कळाप करणा पडै। अणूंती अकल लड़ाणी पडै। —फुलवाडी
९ किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन प्राप्त करने हेतु किसी प्रकार का इशारा या सकेत करना।
ज्यू.—आंख लडाणी।
१० अपना कोई अंग दूसरे के सामने लाकर बराबरी कराना।
११ मुकाबला कराना, प्रतिस्पर्धा कराना।
लड़ाणहार, हारौ (हारी), लड़ाणियौ—वि।
लड़ायोड़ौ—भू का. कृ।
लड़ाईजणौ, लड़ाईजबौ—कर्म. वा।
लड़ाड़णौ, लड़ाड़बौ, लड़ावणौ, लडावबौ, लड़ाणौ, लडाबौ—रू. भे।

लड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—शस्त्रास्त्रो द्वारा युद्ध मे प्रवृत्त कराया हुआ, लडाया हुआ. २ शारीरिक बौद्धिक एव आर्थिक बल-प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने हेतु प्रवृत्त कराया हुआ. ३ बहस या हुज्जत कराया हुआ. ४ ईर्ष्या भाव मे कलह कराया हुआ, झगडाया हुआ. ५ टकराया हुआ, भिडाया हुआ। ६ कुपित या नाराज कराया हुआ. ७ विषैले जन्तुओ से डक मरवाया हुआ ८ किसी कार्य के सम्पादन हेतु विकटतम परिस्थितियो का सामना कराया हुआ, पूर्ण परिश्रम कराया हुआ ९ किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन प्राप्त करने हेतु कोई संकेत किया हुआ १० अपना कोई अग दूसरे के सामने लाकर बराबरी कराया हुआ ११ मुकाबला कराया हुआ, प्रतिस्पर्धा कराया हुआ।
(स्त्री लडायोडी)

लड़ालंब—देखो 'लडालूंब' (रू भे.)
उ०—तठा उपरात करि ने राजान् कुमारी जान घणै आडंबर सू हाथी घोडा वहील सुखासण रथ पायकरा वणाव किया बघेल जानियारै साथ लिया घणै मोती जडाव जरकसी सू लड़ालंब हुआ छै। —रा. सा सं

लड़ालूंब, लड़ालूंम, लड़ालूंव—वि.—१ आभूषणो से सुमज्जित।
उ०—१ सबै अंग उत्तग सालोत साखी, लड़ालूंब कीधौ थको आंण लाखी,। "हरी" होइ आरूढ ते वार हल्लै, चढै पीठ ऊंचास के इद चल्लै। —हरी पिंगळ प्रबंध
उ०—२ लाख वरीसै भोज तू, कवित्त नवा कहणाह। लड़ालूंब वणियौ विहद, गढपत जस गहणाह। —बां. दा.
२ फल-फूलो से आच्छादित, युक्त।
उ०—लड़ालूंम डाल्या लमूंटं जाणै झबरख झूटणा। ओयण मे लसकर लुगाया, खाणा चुगणा चूंटणा। —दसदेव
रू भे.—लडलूब, लडलूम, लड़लूंमौ, लडालूब. लडाझूम' लडाझूंब, लडाझूम, लडाझूम, लडालूम, लडालूंब।

लड़ावणौ, लड़ावबौ—देखो 'लडाणौ, लडाबौ' (रू. भे)
उ०—१ वा उणनै बिलमावण सारू, राजी करण सारू आखी रात अर आखै दिन अकल लड़ावती पण की तोजी बैठी नी। —फुलवाडी
उ०—उण रा घर मे तौ नितरी दाताकसी अर पाडोसिया रै अेडौ बाणिया रै ऊभी आडी नी माई। वौ दोना नै लड़ावण री अटकळ विचारण लागौ। —फुलवाडी
उ०—३ सुखासण पालखी चोडाळ रथ पाइक बणि नै रहीया छै। कटकारा खूर पडि नै रहीआ छै। हाथी लड़ावीजै छै। —रा सा स.
लड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़ावणियौ—वि०।
लडाविओड़ौ, लडावियोड़ौ, लडाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लड़ावीजणौ, लडावीजबौ—कर्म वा०।

लड़ावियोड़ौ—देखो 'लडायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री लडावियोडी)

लड़ियंग—सं, स्त्री—पंक्ति, समूह।
उ०—३ पुण प्राजळं अगनि पूरे पवन, लड़ियग घाइ घूवर लोचन। देवी हूकार किये भसम दैत, जालिम संघार जुध जैत जैत। —मा वचनिका

लड़ियाल—देखो' लडीयाल' (रू. भे)

लड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शस्त्रास्त्रो द्वारा युद्ध किया हुआ, लडा हुआ. २ शारीरिक, आर्थिक एवं बौद्धिक बल प्रयोग मे विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने का प्रयत्न किया हुआ. ३ बहस या हुज्जत किया हुआ. ४ ईर्ष्या भाव से झगडा या कलह किया हुआ. ५ टकराया हुआ, भिड़ा हुआ. ६ विषैले जन्तुओ द्वारा डक मारा हुआ. ७ कुपित हुवा हुआ, नाराज हुवा हुआ. ८ ऐसी परिस्थिति मे हुवा हुआ जिसमे किसी कार्य के सम्पादन मे पूर्ण परिश्रम लग गया हो।
(स्त्री. लडियोड़ी)

लड़ियौ-सं. पु.—१ 'सींप' या 'सिणिया' नामक पौधे की बनी हुई रस्सी।

२ भेड़ का बच्चा।

लड़ी-स. स्त्री.—बेल, लता।

उ०—झूठी झूठ न बोलिये, सांची बात कहंत। लड़ी पड़ी जै खेत मे, ढांडा ढोर चरंत। —जलाल बूबना री बात

२ भेड़।

३ देखो 'लड' (रू भे.)

लड़ीयाल-वि —वीर, योद्धा, लड़ाकू।

उ०—घनमी कद फौजां आफळती, कावळती दळ तौ कूरम। यळ लड़ीयाळ 'मांन' 'अपणाई', जै लल दा भीड़ीयाळ जम। —चावहदानजी धधवाड़ियौ

रू. भे.—लड़िय'ळ, लडीयाळ।

लड़ेत-वि.- योद्धा, वीर, लड़ाकू।

उ०-- सिलहेत वहै इम वहै सार, ऊधडै कडी बगतर अपार। सामत लड़ेत खड़ै सग्राम, रिण गहण गयौ भ्रस तौर राम। —रा रू.

लड़ोकड़-वि. स्त्री —कलह-प्रिय, लड़ाई करने या कराने वाला।

लड़ोकड़ौ-पु. (स्त्री. लडोकडी) कलह-प्रिय, झगडालू, लड़ाई करने वाला।

उ०—बडोडै बीरेजी री गवरां दै लड़ोकड़ी नार राय साझतडी री लेवेली म्हारै भाभी जी सू मोरचौ। —लो. गी

रू. भे —लडोकडौ।

लच—देखो 'लचक' (रू भे)

लचक-सं. स्त्री.—१ लचकने की क्रिया या भाव।

उ०—इळ धुकि लचक सीम अहि वाळा, चद कटक खड़िया कळ-वाळा। जगत छत्रदिस दिलै जबाबा, सभौ विमाह कि समर सताबा —सू प्र.

२ किसी वस्तु के दबती या झुकती रहने का गुण।

३ अग मे झटका पड़ने से होने वाला दर्द या रोग।

क्रि. प्र —आणी, खाणी।

रू. भे.—लच, लचक्क

लचकणि-स. स्त्री.—लचक या लचीलापन।

लचकणौ-वि. (स्त्री लचकणी) लचकने या झुकने वाला।

लचकणौ, लचकबौ-क्रि. अ.—१ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ के मध्य भाग का अधिक बोझ के कारण झुकना या मुड़ना।

उ०—आभा झल पट अगक चढै चीरिया, दरियाई धुज देह धरै डग धीरिया। लटकण झोला लेहक बेसर बकिया, भरिया भूखण भार क लचकै लकियां। —र. हमीर

२ दबना, नीचे झुकना।

उ०—इद्र ने चद्र नागेंद्र चिन चमकीया, धडहडयौ सेस नें धरा धूजै। लचकि किचकिच करै पीठ कूरम तणी हलहलै मेरु दिगदत कूजै। —प च चौ.

३ स्त्रियो का चलते समय कोमलतावश कमर का थोडा झुकना जो सौन्दर्य सूचक होता है।

उ०—वाळि वाळि नै गाठ दीजै। इण भातरी तूंजी हलका ज्यौ लचकती रतनाळा लोचना अणिआळा काजळ सारीजै छै। —रा सा. स.

४ गति सील या स्थित पदार्थ या व्यक्ति का किसी दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना, मुडना।

उ०—मचकै हिंड मचोळता, लचकै झीणी लंक। तन दमकै दामणिहि तिहि, मुखडो जाण मयक। —र. हमीर

५ किसी लचीले पदार्थ का वायु के ससर्ग से हिलना, लहलहाना।

उ० —गोरै कचन गात पर, अगिया रग अनार। लंगौं सोहै लचकती लहरयौ लफादार। —अग्यात

लचकणहार, हारौ (हारी), लचकणियौ—वि.।

लचकिओड़ो, लचकियोड़ो, लचक्योडो—भू. का कृ.।

लचकीजणौ, लचकीजबौ—भाव वा.।

लचक्कणौ, लचक्कबौ, लचणौ, लचबौ—रू भे।

लचकांणौ-वि.—(स्त्री लचकाणी) लज्जित, शर्मिन्दा।

उ०—१ तूं भीखणजी री निंदा करै है। जद और बाण बोली: भीखण जी छै ए हीज। तीवा रै लचकांणी पडणं घर मे न्हास गई। —भि द्र.

उ० —२ वारै ढबताई डोकरी राजाजी रै साम्ही देखनै कैवण लागी मन रा साच नं लुकावणो, खुद झूठ बोलणौ अर झूठा चाकर राखणा म्हारी जाण मे राजाजी री आ खास इदकाई है। राजाजी लचकांणा होय आख्या नीची करली। —फुलवाडी

क्रि प्र —पड़णौ।

रू भे.—लछकाणौ, लजकाणौ, लजखाणौ।

लचकाड़णौ, लचकाड़बौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचकाड़णहार, हारौ (हारी), लचकाड़णियौ—वि०।

लचकाड़िओड़ो, लचकाड़योडो, लचकाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

लचकाड़ीजणौ, लचकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लचकाड़ियोड़ो—देखो 'लचकायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. लचकाडियोडी)

लचकाणौ, लचकाबौ-क्रि. स.—१ चलते समय स्त्रियो का नखरे से कमर को झुकाना।

उ०—कर मुख दे लचकाय कट, झमक चलै सुर झीण। मावडियो महिला तणौ, मारै रोज मलीण। —बा. दा.

२ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ के मध्य भाग का अधिक वजन के कारण झुकाना।

३ दबाना या नीचे झुकाना।

लचकावणहार, हारौ (हारी), लचकावियौ—वि.।

लचकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लचकाईजणौ, लचकाईजबौ—कर्म वा.।

लचकाड़णौ, लचकाड़बौ, लचकावणौ, लचकावबौ, लचलांणौ लचलाबौ, लचाड़णौ, लचाड़बौ, लचाणौ, लचाबौ, लचावणौ लचावबौ—रू. भे.।

लचकार-स. स्त्री.—लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव, लचन।

उ०—बलोवणी ज्यूं लचकार करती थकी, इण भांतरी कमाण उणहीज दरखतारी साखा सूं नांगळजै छै। —रा. सा सं

लचकावणौ, लचकावबौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचकावणहार, हारौ (हारी), लचकावणियौ—वि.।

लचकावियोड़ौ, लचकावियोड़ौ, लचकाव्योड़ौ—भू का कृ.।

लचकावीजणौ, लचकावीजबौ कर्म वा.।

लचकावियोडौ—देखो 'लचकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री लचकावियोडी)

लचकियोड़ौ-भू का. कृ. (स्त्री लचकियोड़ी) १ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ का मध्य भाग अधिक बोझ के कारण झुका या मुडा हुआ. २ दबा हुआ या नीचे झुका हुआ. ३ स्त्रियो का चलते समय कोमलता वश कमर का थोडा झुका हुआ होना जो सौंदर्य-सूचक होता है. ४ गतिशील या स्थित पदार्थ या व्यक्ति का किसी दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त हुवा हुआ, मुडा हुआ. ५ किसी लचीले पदार्थ का वायु के संसर्ग से हिला हुआ, लहलहाया हुआ।

लचकीलौ-वि. [स्त्री. लचकीली] जो सहज ही में लचक या दब जाता हो, लचकदार।

लचकौ-सं. पु.—१ लचकने की क्रिया या भाव।

उ०—डाढाळौ अेक हाथी रै मुरचै री साथ में लग री खळकाई जको मुरचै री लालड़ी अर मांस चीरनै हाड जाय रडकियौ। हाथी लचकौ खाय धमीड़ करतौ धरत्या आय पड़्यौ। —फुलवाडी

२ लचकने के कारण होने वाली चोट या मोच।

३ लौंदा।

उ०—१ उठो म्हारा मारू बना करोनी कलैवौ, फीणा तौ बाटयां बनडा लूजी री लचको इसडौ कलैवौ थांरा माताजी करावै। —लो. गी.

उ०—२ बेटा-बेटी तौ लारै होणा ही हा, पण भंवरी तौ सगळां सूं लाडरी लचकौ, गुणां री गाडौ सी पळती रैयौ। —दसदोख

लचक्क—देखो 'लचक' (रू भे)

उ०—घणा रग मैं घुमडी अठी उमडी मेहरी घटा, घरै रीत उलट्टी नेह री करै बंक। सो तचक्के हार कुच्चां उपट्टे देहरी सोभा, लचक्का मचक्की भीरणीं केहरी सौ लंक। —र. हमीर

लचक्कणौ, लचक्कबौ—देखो 'लचकणौ, लचकबौ, (रू. भे)

उ०—हय हिंदुनि हक्किय बीर किलक्किय सोर भभक्किय ओर दहू। सिर सेस लचक्किय भूमि भचक्किय, कोल मचक्किय दंत कहूं। —ला. रा.

लचक्कणहार, हारौ (हारी), लचक्कणियौ - वि.।

लचक्कियोडौ लचक्कियोड़ौ, लचक्क्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लचक्कीजणौ, लचक्कीजबौ - भाव वा.।

लचक्कियोड़ौ—देखो 'लचकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लचक्कियोडी)

लचलांणौ—देखो 'लचकाणौ (रू. भे.)

उ०—जद ओर साध स्वामीजी कानी देखनै हंसवा लागा। पछै साधा कह्यौ पूजनै पग सरकायौ। जद लचलांणो पड़्या अनै पगां आय लागा। —भि. द्र.

(स्त्री. लचलाणी)

लचणौ, लचबौ—देखो 'लचकणौ, लचकबौ, (रू. भे)

उ० - १ लचै नाग रा सीस गज टलां तोपा लगै, हुचै नह अरी छक देख हुवता। सचै मन पाथ रुगनाथ रा सीगळी, रचै कण सर असा जुध रवता। —मेघराज आढौ

उ०—२ घंमाळौ गाघरो पहरीजै है, लहरियौ ओढियां जिण मैं तन मन लहरीजै है। लक जिका लचै है, तिण हूं कटि मेखला रचै है। —र. हमीर

लचपच—वि.—१ तरबतर।

२ पिलपिला।

रू. भे.—लिचपिच।

लचपचौ—वि.—अधिक द्रव्य पदार्थ वाला खाद्य पदार्थ।

लचपच्च—क्रि. वि.—लपकती हुई, लपलपाती हुई।

उ०—वाही रांण प्रतापसी बरछी लचपच्चांह। जांणक नागण नीसरी, मुह भरियौ बच्चांह। —अग्यात

रू. भे.—लचलचौ, लसपस, लिचपिचौ

लचरकौ—सं. पु.—हिलने, डोलने या झुलने की क्रिया या भाव।

उ०—जिणारी किलगियां जिके लचरका लेतीसी, तिके जांणै पाछला नूं फाला देतीसी। —र. हमीर

लचलचौ—वि.—१ लचकने वाला, लचीला।

२ देखो 'लचपचौ' (रू. भे.)

लचाकेवार—वि.—बढ़िया, उम्दा।

लचाड़णौ, लचाड़बौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचाड़ियोड़ौ—देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचाड़ियोड़ी)

लचाणौ, लचाबौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचाणहार, हारौ (हारी), लचाणियौ—वि०।

लचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लचाईजणौ, लचाईजबौ—कर्म वा०।

लचायोड़ौ—देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचायोड़ी)

लचावणौ, लचावबौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

उ०—तीजणिया हींडा मचावै है, लक लचावै है। बीज रो मिळाव, नै मेह रो मिळाव। म्हो फुहारां बरस रही है, तीजण्या ही इण भात दरस रही है। —र. हमीर

लचावणहार, हारौ (हारी), लचावणियौ—वि०।

लचावियोड़ौ, लचावियोड़ौ, लचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लचावीजणौ, लचावीजबौ—कर्म वा०।

लचावियोड़ौ—देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचावियोड़ी)

लचोळौ—स. पु.—लचकने की क्रिया या भाव, लचक।

उ०—लोभाणी नवोढ नेह नसा रा कचोळा लेती, भासै अग अचोळ लचोळा लेती भाव। करा मक्रकेत रै लचोळा लेती तूजी कना, नक्र रै मचौळा सू हचोळा लेती नाव। —र. हमीर

लच्चर—क्रि. वि.—दीपक के बुझने की क्रिया या अवस्था।

उ०—तेल जळै तौ जळती है बाती, दिवरा झलमल सीय राम। जल गया तेल र बुझ गई बाती, रुच्चर लच्चर होय राम। —मीरा

लच्छ—१ देखो 'लक्षरा' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

३ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

४ देखो 'लक्ष्मरा' (रू. भे.)

५ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लच्छरा—१ देखो 'लक्षरा' (रू. भे.)

उ०—१ बरणी उपमा सार, बिचारि विचच्छणा। लिया सही अवतार, बतीसा लच्छणां। —बां. दा.

उ०—२ अै भाबियांरा लच्छरा है, ईसर री गवर ज्यूं बण-ठण 'र मटका करती फिरै है। —रातवासी

२ देखो 'लक्ष्मरा' (रू. भे.)

लच्छणी—देखो 'लक्षरगी' (रू. भे.)

उ०—स्वस्ति स्री 'वद्रगढ' सुभ स्थान अनेक ओपमा लाइक बाज-मान प्यारी सजीली फबीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली अगीली रगीली बकीली रंकीली रमकीली समकीली चट-कीली जीव री जडी लगन री लड़ी बत्तीस लच्छणी चौसठ कला विचच्छिरणी केलरस क्यारी प्रीतम प्राणप्यारी जोगि सरदै री ताजीम। —र. हमीर

(स्त्री. लच्छरणी)

लच्छन—१ देखो 'लक्षरा' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष्मरा' (रू. भे.)

लच्छमरा—वि.—१ धनवान, अमीर (डिं. को.)

२ देखो 'लक्ष्मरा' (रू. भे.)

लच्छमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लच्छि—देखो 'लच्छी' (रू. भे.)

उ०—१ असरणसरण अभग, ब्रहम मुरारी सवगह। सकर पवन सकत्ति, अवनि भ्रम लच्छि अनंगह। —ह. र.

उ०—२ वड रूप वाही जकै लच्छि बीजी, त्रियह लोक माही न को नार तीजी। सुणी वात मारीच थान मिधाए, उभै दैत मामो सु भागेज आए। —सू. प्र.

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लच्छिनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लच्छिनिवास—देखो 'लक्ष्मीनिवास' (रू. भे.)

लच्छिभरतार, लच्छिभ्रतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

उ०—रता तौ नाम जिकै रहमान, जिकै नंह थायै आवाजाण। भरौ गुरण तोरा लच्छिभ्रतार, लगै नह त्या तन पाप लगार। —ह. र.

लच्छिवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—मुख मंद हास प्राणदमय, आराधित अहि नर अमर। दढव्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर। —सू. प्र.

लच्छी—१ सूत, रेशम, ऊन आदि की लिपटी हुई गुच्छी।

उ०—१ पेट ज लच्छी पाट की, नितब नारियल जांण। मदनां-कुस की जायगा, त्रिवली सीप समाण। —कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ अधरा रा खरूट परसै है, दिल रौ मोह चौड़ै दरसै है। प्रीतम रा लपेटा री पाट लच्छी वार बार माथै धरै है, नै चूंमन

करै है। छाती हौं चिपावै है, खिण खिण मैं देखै है न खिण मैं छिपावै है। —र. हमीर

रू. भे.—लच्छि, लछी

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ ले लच्छी मरहट्टरी, गूजर खड प्रबीस। प्राय महालच्छी चरण, सींग नमायौ सीस। —बा दा.

उ०—२ लच्छी रिद्धी बुद्धी, सजा विद्या खम्या। लहदेवी गौरी धात्री कवि स बूरणा छाया। —र ज. प्र.

लच्छीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू भे)

लच्छीवाळापूत-सं. पु.—घोडा, अश्व (डिं. को)

लच्छेवार-वि,—१ गुच्छोवाला।

२ रुचिकर, मजेदार।

लच्छौ—देखो 'लछौ' (रू. भे)

उ०—प्रबे जलाल बूबनां सूं सीख कीवी। तरै झरोखा सू रैमस रा लच्छां सू उतरियौ। —जलाल बूबना री बात

लछ—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू भे)

उ०—१ हुवै प्राव दुरबार घर बार घुमै हसत, च्यार परकार लछ म्ळै चाहे। जग दीयौ भला करतार चारण जनम, मान माहाराज री वार माहे। —मगराम सादू

उ०—२ सिघ बुघ तिय लछ लाभ सुत, गवरी पुत्र गणेस। महारूप मगळ करण, समरै सुर नर सेस। —गजउद्धार

३ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.) (प्र मा.)

४ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

५ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लछकाणौ—देखो 'लचकाणौ' (रू. भे)

—उ०—सेंठौ कीधौ सायघण, म्यारी मेहला माय। लछकांणो पडियौ 'लखौ' कारी लगी न काय। —मयारांम दरजी री बात

(स्त्री. लछकाणी)

लछण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ वाक्य दोस प्रतिकूल वरण वद, प्रगट वरण जिण रस प्रतकूळ। सुध लछण मति प्ररुच हुएँ सुण, मति विरुध रस प्रतहत मूळ। —बां दा.

उ०—२ पतिव्रता नेह प्रपार, सझि सोळ सरस सिंगार। बहु कळा लछण बत्तीस, सझि प्राभरण खट तीस। —सू. प्र.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लछणहीन—देखो 'लक्षणहीन' (रू. भे.)

उ०—जियां ही संग जात्यां मे सुनार लछणहीण प्रर बेविसवासी गिण्यौ जावै है। — दसदोख

लछन—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्षण' (रू भे.)

लछबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—१ बड़ा भाग ज्यारी बिसू, लछबर रटण लाग। पाव रांम गुण प्रीतसू, प्राठ पहर प्रनुराग। —र. ज. प्र.

लछमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.) (प्र. मा., ना. मा.)

उ०—१ तदि नृप पग बदि मुनि तणा, क्रोधज छिमा कराय। साथ दिया लछमण सहित, रछ्या कज रघुराय। —सू प्र.

उ०—२ प्रघपत वाळौ प्रस, पडियौ प्रपछर पेट में। तद लछमण प्रवतस, रतन कवर पाबू रह्यौ। —पा. प्र.

लछमणझूलौ-स. पु.—हृषिकेश के प्रागे बद्रीनारायण के मार्ग मे प्राने वाला एक पुल, जो तीर्थ स्थान माना जाता है।

लछमणसाही-स. पु.—बांसवाडा राज्य का सिक्का विशेष।

लछमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

लछमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे)

उ०—गढ सें तो मीराबाई ऊतरयाजी, हाथ मगद को थाळ। प्रौरा के तो प्रनगन लछमी प्राप फिरो कगाल। —मीरा

लछमीकत, लछमीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू. भे)

उ०—सेस प्रारबळ कोय न जाणै, जाको प्रादि न प्रत। महा प्रळै व्है जात हि सज्या, पौढै लछमीकंता। —रुकमणि मगळ

लछमीधर—देखो 'लक्ष्मीधर' (रू भे)

लछमीपत, लछमीपति, लछमीपती—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ० लछमीपत रे कर बसे पाच प्रक परवांण। पहलौ प्राखर छोडकर, दीजै चतर सुजाण। —प्रज्ञात

लछमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—लछमीवर बाहर करो, ढील न कीजै जाण। प्रायौ एक उसास मे, तुम्है भगत की प्राण। —गजउद्धार

लछमीवाळ-स. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+स. प्रालुच] धनवान, प्रमीर। (डिं. को.)

लछमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे)

लछम्मण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—लछवर धनंख साथ तेज निज हर लिया। रद कर मद दुजराम प्रवधपुर प्राविया। —र. ज. प्र.

लछवि, लछवी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लछि—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

देखो 'लछी' (रू. भे.)

लखिपति—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ०—'जगरूप' सवू जगनाथ-कुळ, पदमणि किरि सूरज प्रभा। बनीतो कुलीण करम बडी, परम लखिपती वल्लभा। —गु रू. बं.

लखिवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे)

लखिभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

उ०—करतार लखिभरतार कान्हउ केसवं, जगदिस जैत जुरार श्रोपम जादवं। महाराण वामण रांण मारण रांमणं, निरकारि ध्याइ अनाथ नाथ निरंजणं। —पि. प्र.

लखिमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू भे.)

उ०—घट ही मे गगा घट ही मे जमना, घट घट है अविनासी। घट ही में पुसकर श्रौ लोधेस्वर, लखिमन कुँवर बिलासी। —मीरा

लखी—१ देखो 'लक्ष्मी' (रू भे)

उ०—१ लखी रा वहन घण बीज वाळी लपट। क्रोध ममता नता मूढ तज रे कपट। —र. ज. प्र.

उ०—२ लखी रूप सीता प्रभु राम लीला, कवीपुत्र दाखै नही जेण कीला। अगै वालमीकां जिसा गाय आया, गुणा तास सपेखि ग्रदोख गाया। —सू प्र.

२ देखो 'लच्छी' (रू. भे)

लखीधर—स. पु.—१ बारह अक्षर का वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ४ रगण होते हैं।

२ देखो 'लक्ष्मीधर' (रू. भे.)

लखीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—महाराज श्रोधेस श्राधार सतां, बार खारी रखै लाज बेखो। हरी काज पै आसरा दीह हेकै, लखीनाथ दी सेवगा लक लेखो। —र. ज प्र.

लखीबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे)

उ०—बेल तू जिका बेली लखीबर, हुश्रो अधिराज घर जिका हाणी। निरखतां 'मान' नद तूझ कामत नखत, नृप जगतपत नृपत गत हेक जांणी —आढूराम जी आढो

लखीभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

लखीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू भे)

उ०—नमो रघुनाथ, सधीर सनाथ। गरां गजगाह, दसांनन दाह। भभीखण आय, सु आस्रय पाय। अवी जिण रक, लखीवर लक। —र ज प्र.

लखीवांन—देखो 'लक्ष्मीवांन' (रू. भे.)

उ०—तरै आप पागडो छाडियो। ईयांनू बोहत लखीवांन देख नै भ्रमियो। तरै सारा ही आय मिळिया। —कल्याणसिंघ वाढेल री बात

लखीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे.)

उ०—सुणि सुरा अरज वोलै लखीस, आदू यौ सेवग अवधि ईस। रीझियो अह दसरत्थ राय, अवतार धरू इण ग्रेह आय। —सू. प्र.

२ श्रीरामचन्द्र।

उ०—वेढक फरसधर त्रिकराळ बक अबंक सा, सुज जिण कीधा राम नरेस सूधसणकसा। लहरे हेक दीघी लखीस थांनक लकसा। सुज पय नमै अविरळ सीम सुरप असक सा। —र. ज. प्र.

३ धनवान व्यक्ति।

लखो—स. पु.—१ रगीन रेसम की डोरियों का गुथा हुआ मोटा रस्सा विशेष।

उ०—सठ सनेह जीरण वमन, जतन करता जाय। सजन प्रीत रेसम लछा, धुळत धुळत धुळ जाय। —अग्यात

२ किसी उबाले हुए या पकाए खाद्य पदार्थ के बारीक रेशे।

३ चादी के तार का बना स्त्री के पैर का आभूषण।

४ हाथ मे एक साथ एक जैसी पहने जाने वाली चूडियों का समूह।

५ हाथी की गर्दन के चारों ओर शोभा के लिए बाधा जाने वाला रगीन रस्सा विशेष।

लज—देखो 'लज्जा' (रू. भे.)

उ० १ बतीस लखण चौसठ कळा, आबेरी उत्तम सहज। कूरम सपेखै मुख कमळ, सरद इन्द्र पार्वत लज। —गु. रू. ब.

उ०—२ मचे जेठ विकराल जरमन इगल मारका, पडै लग धारका पीठ प्राभी। पजावण फारका पीठ नदण पनौं, सारका गढा लज पीठ साभी। —किशोरदान बारहठ

लजकांणो, लजखांणो देखो लजकाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ सू हमै जाण अजाण होवै है, सहेलिया हों चालै लागी तिरछी निजर कवर हमीर नू जोवै है। सू हमै चमक चबदंत हुय लजकांणो पडगई, जाणं अगमाहीज वडगई। —र. हमीर

उ०—२ मोवन लजखांणो हो र बोलियो-काका ! मनै कूड ऊपर चडाळी घणी चढै 'कूडै-री काळी मूंडो' र लीला पग। —वरसगाठ

(स्त्री लजकाणी, लजखाणी)

लजणी—स स्त्री.—लाजाळू का पौधा।

लजणो, लजबो—देखो 'लाजणो' लाजबो' (रू. भे.)

उ०—१ धरा मार धजै, लोह होळी लजै। ताप वीर तजै, ईस रस ऊपजै। —रा. रू.

उ०—२ यौ सिसपाल् चंदेरी कौ राजा, कूडी साख भरैगो। मीरां कहै यू रुकमणि कहत हैं, थांको ही बिड़द लजैगो। —मीरा

लजणहार, हारौ (हारी), लजणियौ—वि० ।
लजियोड़ौ, लजियोड़ौ, लज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लजीजणौ, लजीजबौ—भाव वा० ।

लजवार–स, पु.—१ जिसमे कुछ लज्जा हो, शर्मिला ।

उ०—घड़ण घाडायतां भोग मगण घनौ, कळह सवळां खळां हूंत राखण कनौ । बनी लजवार घर सबर प्रतपौ बनौ, पतव्रता नार भरतार रसीयौ पनौ । —महादान महडू

लजरख–वि. [सं. लज+रख] इज्जत या लज्जा रखने वाला ।
(म. मा.)

स. पु.—वस्त्र ।

लजराह–सं. पु. यौ. [स, लज् + राह] लज्जा का मार्ग ।

उ०—सू मजेज लगि सम्कि जेज जुधि काज न रक्खी । सूर सगाह सिपाह ताहि लजराह सु दक्खी । रा. रू

लजवाळौ–वि०—(स्त्री लजवाळी) लज्जा वाला, लज्जाशील ।

लजाड़णौ, लजाड़बौ—देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे)

लजाड़णहार, हारौ (हारी), लजाड़णियौ—वि० ।
लजाड़िग्रोड़ौ, लजाड़ियोड़ौ, लजाड़्योड़ौ—भू का कृ. ।
लजाड़ीजणौ, लजाड़ीजबौ—कर्म वा ।

लजाड़ियोड़ौ - देखो 'लजायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. लजाडियोडी)

लजाणौ–वि० (स्त्री लजाणी) लज्जित करने वाला ।

उ०—१ सहणी सबरी हू सखी, दो उर उल्टी दाह । दूध लजाणौ पूत सम, बलय लजाणौ नाह —वी. स.

रू भे —लजावणौ ।

लजाणौ, लजाबौ–क्रि. स.—१ लज्जित करना, शर्मिदा करना ।

उ०—१ आं हाथा लेय बापडा खीलां नै ई लजाया । —फुलवाड़ी

उ०—२ पछै मोतीरामजी चौधरी कह्यो—उठो परहीं म्हानै लजावौ । —भिक्खु

लजाणहार, हारौ (हारी), लजाणियौ—वि. ।
लजायोड़ौ—भू. का. कृ ।
लजाईजणौ, लजाईजबौ - कर्म वा. ।
लजाड़णौ, लजाड़बौ, लजावणौ, लजावबौ लज्जाड़णौ, लज्जाड़बौ, लज्जाणौ, लज्जाबौ लज्जावणौ, लज्जावबौ—रू. भे.

लजाथंभ– वि. यौ. [स. लज्जा+स्तम्भ] इज्जत, लज्जा का रखवाला, रक्षक ।

उ०—'जसौ' हालियो आगरा हूंत ज्यारा, लिया साहरा उबरा सब्ब लारां । कमंधा वडा कूरमा साथ कीधा, लजाथंभ सीसोदिया लाथि लीधां । —र. वचनिका

लजाधुर वि. [सं. लज्जा+धुर] लज्जावान, शर्मिला ।

लजायोड़ो–भू. का. कृ.—लज्जित किया हुआ, शर्मिदा किया हुआ ।
(स्त्री लजायोड़ी)

लजाळु, लजाळू–वि. [सं. लज्जाळु:] लज्जा वाला, लज्जाशील, शर्मिला ।

उ०—इतरी फिकर क्यूं करै छै । थारी किसी क अबार तो मोकळी फिरै छै । तूं तो छै जनम की ही लजाळू । —पनां

स पु —एक प्रकार का पौधा विशेष जिसके पत्ते छौंकर या खैर के समान होते है, फूल गुलाबी मिश्रित नीले रंग के होते हैं और जड़ लाल होती है । इसे छूने से यह सिकुड़ जाती है और फिर फैल जाती है । यह कांटेदार और बिना कांटेदार दो तरह की होती है । इसे छुईमुई भी कहते हैं ।

उ०—सारी हेक सरीसियां, तोलै हेक तुलेह । पात लजाळू री परौ, लागां हाथ लुळेह । —र. हमीर

रू. भे. लज्जाळु, लज्जाळू, लाजलज्जाळू लाजाळू ।

लजालूपण, लजालूपणौ–स. पु.—लज्जा रखने का भाव, लज्जा धर्म ।

उ०—हमै इतरै लिखमीदास आयौ । सू रतनां घणी उणमणी रहै । पिण लजालूपणां मैं पडदौ वहै । —र. हमीर

लजावंत—देखो 'लज्जावत' (रू. भे.)
(स्त्री. लजावती)

लजावंती–वि स्त्री—१ लज्जाशील, शर्मीली ।

२ देखो 'लजाळू'

रू भे.—लाजवती, लाजवती
रू भे.—लाजवत

लजावण, लजावणौ – देखो 'लजाणौ' (रू. भे.)

लजावणौ, लजावबौ –१ देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू भे.)

उ०—१ हाता री सुकमारता जाणै कमळ नाळ । जिका हालती लजावै हंस री गत नूं । र. हमीर

उ० –२ हइ रे जीव निलज्ज तूं निकस्यू जात न तोहि । प्रिय विछुडत निकस्यऊ नहीं, रह्यउ लजावण मोहि । —ढो. मा.

२ देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू. भे.)

लजावणहार, हारौ (हारी), लजावणियौ—वि ।
लजावियोड़ौ, लजावियोड़ौ, लजाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
लजावीजणौ, लजावीजबौ—कर्म वा. ।

लजावियोड़ौ—देखो 'लजायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लजावियोडी)

लजियोड़ौ—देखो 'लाजियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लजियोडी)

लजीज–वि. [अ.] बढ़िया स्वाद वाला, स्वादिष्ट।

लजीलौ–वि.— (स्त्री. लजीली) १ लज्जावाला, शर्मिला।

उ०—१ रंग **लजीलां** लोयणां, वाह छिबि गुंघट ओट। रूकै न झीणां चीर मैं, बंकू तिरछी चोट। —पना

उ०—२ स्वास्ति स्त्री 'चद्रगढ' सुभ स्थान अनेक ओपमा लाइक बिराजमान प्यारी सजीली **लजीली** फबीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली अमीली रंगीली बंकीली······।— र. हमीर

लज्ज—देखो 'लाज' (रू भे)

ऊ०—१ किणि थळि घालूं घूघरा, किणि मुख वाहूं **लज्ज**। कवण मलेरउ करहलउ, मूंध मिळावइ अज्ज। —ढो. मा.

उ०—२ सकती बार्धं वीटुळी, ढीली मेल्हे **लज्ज**। सरढो पेट न मेटियउ, मुध न मेळउ अज्ज। —ढो. मा.

उ०—३ चंदहरा बिय चद मम, दुंद वधारण कज्ज। वाधे दिन दिन साम छळ, आराधै कुळ **लज्ज**। —रा. रू.

उ०—४ चुतरौ फतमल बोलिया, सकतीपुरा सकज्ज। **लज्ज** न धारै साम छळ, त्या रजवट्ट न लज्ज। —रा रू

लज्जणौ, लज्जबौ—देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू भे.)

उ०—भीम कहै भूल नहीं, बेलैंबो खत्र-धोड। मो भग्गै सीसोद हर, गढ **लज्जै** चीतोड। —गु. रू बं.

लज्जत–स. स्त्री [अ] १ खाने-पीने की वस्तुओं का स्वाद, जायका।
२ आनन्द।

लज्जतदार–वि. [अ. लज्जत+फा. दार] १ जिसमें लज्जत हो, लज्जत वाला, जायकेदार।
२ आनन्ददायक।

लज्जा—१ चौबीस गुरु ६ लघु का एक मात्रिक छन्द (गाथा)
२ देखो 'लाज' (रू. भे.)

उ०—१ बाह वदन सुगम सेव्यइ, भाव सचारिक वधइ। तेत्रीस धति मति स्मरण **लज्जा**, सोक निद्रादिक सधइ। —वि. कु.

उ०—२ पर अल्पधन भुजग नायक रै समान **लज्जा** पाय प्रामार रौ समुह नाक रूप विदेश मैं थियौ जुवौ। —व भा.

पर्याय—व्रीड़ा, त्रपा, सकुचण, सकोच।

लज्जाड़णौ, लज्जाड़बौ—देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे)

लज्जाड़ियोड़ौ—देखो 'लजायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. लज्जाडियोडी)

लज्जाणौ, लज्जाबौ—१ देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू. भे.)

लज्जाणहार, हारौ (हारी), लज्जाणियौ—वि०।

लज्जायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लज्जाईजणौ, लज्जाईजबौ—कर्म वा०।

लज्जायोड़ौ—देखो 'लजायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री लज्जायोडी)

लज्जाप्रद–वि [स] जिससे लज्जा उत्पन्न हो, लज्जाजनक।

लज्जाळु, लज्जाळू—देखो 'लजाळू' (रू. भे)

लज्जावंत–वि. [स. लज्जा+वत्] (स्त्री. लज्जावती) १ लज्जा वाला, शर्मिला।

उ०—**लज्जावंत** नरिंद कहै बाई ! सुणौ म्हारा लाल। —श्रीपाल रास

रू. भे.—लजावत

लज्जावणौ, लज्जावबौ—१ देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे.)

उ०—निज सीस नमैं जळ निगमे, पुणौ सीस वीमापरौ। लघु तूळ हुए **लज्जावियौ**, नाम सिंघ सादूळ रौ। —गु. रू. बं.

२ देखो 'लाजणौ लाजबौ' (रू. भे)

लज्जावणहार, हारौ (हारी), लज्जावणियौ—वि०।

लज्जाविग्रोड़ौ, लज्जावियोड़ौ, लज्जाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लज्जावीजणौ, लज्जावीजबौ—कर्म वा०।

लज्जावती–वि —लज्जाशील, शर्मीली।

लज्जावान–वि —लज्जा वाला, शर्मदार।

लज्जावियोड़ौ—देखो 'लजायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री लज्जावियोडी)

लज्जासील–वि.—लज्जा वाला शर्मीला।

लज्जू–वि.—लज्जा वाला, इज्जतवाला।

लज्ज्या लज्या—देखो 'लाज' (रू भे.)

उ०—१ मिधि गुलिक वेग पर सक्ति पाव। धजराज मुकट खगराज घाव। वसि लोह वदन रसि सरस वेख। **लज्ज्या** अजाद किरि महग लेख। —रा. रू.

उ०—२ उण विध 'रतना' लाज मे लवलीन होय नै वचन साथणिया हू कहै है, बाभी मनै भंभोडौ मत महारौ सैज **लज्ज्या** छाडण रौ दुख सहै है। —र. हमीर

लझिका–स. स्त्री—१ वेश्या, गनिका। (अ. भा.)
२ विपरीत लक्षणा से निर्लज्ज।

लट–स स्त्री. [स लट्वा] १ नीचे लटकता हुआ सिर के कुछ बालों का समूह, अलक, जुल्फ।

उ०—साकडै मारगियै सरमाय, घूंघटै ओळूंडी अटकाय। गई धण सरवरिये री तीर, भुकी भट काळी लट छिटकाय। —सांझ

२ सिर के उलझे हुए बालो का गुच्छा।

३ रेंगने वाला एक लम्बा कीडा।

उ०—टीडी रौ मुदाम जतन चिडकोल्या चोळौ। लटां-सूट रैवास, वास- फूंसा रौ भोळौ। —दस देव

वि.—१ दुर्बल काय, कृशकाय।

२ देखो 'लठ' (रू भे.)

३ देखो 'लट्टौ' (मह. रू. भे) (ग्र. मा)

रू. भे.—लटी, लट्ट।

लटक, लटकउ—स. पु. —१ लटकने की क्रिया या भाव, झुकाव।

२ शरीर के अगो की लुभावनी गति या चेष्टा।

३ बात करते या गाते समय दीखने वाले अगो की कोमल भाव-भगिमा।

अल्पा ,—लटकौ

लटकजुहार—स. स्त्री.—अभिवादन, प्रणाम।

उ०—वाडै तौ पडियौ जाया गाडूलो, खूट्या धोळा रा जोत। बीरौ तौ आयौ सैया काकडं, गोरीड़ा सू लटकजुहार।

—लो. गी.

लटकण—स. पु —१ लटकने की क्रिया या भाव।

२ लटकती हुई वस्तु।

३ मदिर मे लटकाया या किसी पशु के गले मे बाधे जाने वाले घटे के अन्दर बीच मे लटकने वाला धातु का गुटका, लगर या लोलक।

वि वि —मि. लाळ।

४ लुभावनी चाल।

५ नाक मे पहना जाने वाला आभूषण विशेष।

उ०—१ लोयण जिणरा लागणा, पलका बिच पळकेह। लटकण रा मोती लिया, ढीली नथ ढळकेह। —र. हमीर

उ०—२ तिण लटकण रा मोती नूं झाका दीजै है, अधरा री झाई सू मूगिया रौ रग कीजै है। जो कदंच मोती री झाई अधर धरै है, तो पिण बीडी रो चूनो लागो जाण पूछबा री करै है।

—र हमीर

उ०—३ आभा झल पट अग क चर्द चीरिया, दरियाई धुज देह धरै डग धीरिया। लटकण झोला लेह क बेसर बकिया, भरिया भुखण भार क लचकै लकिया। —र हमीर

६ कान मे पहना जाने वाला आभूषण जो लटकता रहता है।

७ सिंदूर पुष्पी नामक क्षुप विशेष।

रू. भे.—लटकन।

लटकणौ, लटकबौ—क्रि. अ. [स. लडन] १ किसी पदार्थ या व्यक्ति का ऐसी अवस्था मे होना कि उसका एक सिरा ऊपर लगा या अटका हुआ हो तथा दूसरा अधर मे झूलता हो।

उ०—ज्यारा लटकदार लपेटा पर छोगा लटक रह्या है, अलबलिया आटा मे अगनैणिया रा चीत अटक रह्या है। तुररा रा तार पळकै है, पाघा रा लटपटिया पेच खवा पर लटकै है।

—र. हमीर

२ झुकना।

उ०—१ परम गुरू के सरणै जाऊं, करू प्रणाम सिर लटकी। जेठ बहू की काण न मानूं, पडी घूघट पर पटकी। —मीरा

उ०—२ नीची घूण करिया दोनूं जणा रथ सूं हेटै उतरिया तौ वारै काना डोकरी री आवाज सुणीजी—आज दोना रा माथा लटकियोड़ा कीकर है। —फुलवाडी

३ किसी बात या विषय मे निर्णय या अभीष्ट सिद्धि के अभाव मे दुविधा मे पडना।

४ वचित होना।

लटकणहार, हारौ (हारी), लटकणियौ—वि०।

लटकिश्रोडो, लटकियोड़ौ, लटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लटकीजणौ, लटकीजबौ—भाव वा०।

लटक्कणौ, लटक्कबौ—रू० भे०।

लटकवार—वि —१ लटक युक्त, लटकपूर्ण।

उ०—ज्य रा लटकदार लपेटा पर छोगा लटक रह्या है, अलबलिया आटा मे अगनैणिया रा चीत अटक रह्या है। —र. हमीर

त्रि वि – देखो लटक'

लटकन देखो लटकण' (रू भे.)

लटकाड़णौ, लटकाडबौ—देखो 'लटकाणौ, लटकाबौ (रू भे)

लटकाडणहार, हारौ (हारी), लटकाड़णियौ—वि०।

लटकाडिग्रोडो, लटकाडियोडौ, लटकाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लटकाड़ीजणौ, लटकाडीजबौ—कर्म वा०।

लटकाड़ियोड़ौ—देखो 'लटकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लटकाडियोडी)

लटकाणौ, लटकाबौ—क्रि स.—१ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी स्थिति मे करना कि उसका एक ओर ऊपर किसी मे लगा (टगा) हो और अधर झूलता हो, झुलाना, टागना।

उ०—किरचा फाक्यारी कोथली, बीडी-सिगरेटा री डबी अर वेटरी, वाजांरी पेटी राममियां रै पेटा माथै लटकायां खोड मे विसायल खानौ सौ विसायां फिरै है। —दसदोख

२ झुकाना।

३ किसी कार्य के पूर्ण करने मे विलम्ब कराना, इतजार कराना।

४ वचित रखना।

लटकाणहार, हारौ (हारी), लटकाणियौ—वि०।

लटकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लटकाईजणौ, लटकाईजबौ—कर्म वा०।

लटकाड़णौ, लटकाड़बौ, लटकावणौ, लटकावबौ—रू० भे०।

लटकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी स्थिति में किया हुआ कि उसका एक छोर तो कहीं लगा (टंगा) हो और दूसरा नीचे की ओर अधर झूलता हो, झुलाया हुआ, टांगा हुआ. २ झुकाया हुआ ३ किसी कार्य के पूर्ण करने में देर किया हुआ. ४ वंचित रखा हुआ

(स्त्री. लटकायोड़ी)

लटकाळ, लटकाळू, लटकाळौ, लटकालौ–वि. (स्त्री लटकाळी, लटकाली) १ लटकता हुआ, लटकने वाला।

उ०—वेगम बीजळियां बधाण विगताळ, लटके घोता रा खजा लटकाळू। रानी कानी री पोतड़िया रूड़ी, ऊनी लोवड़िया वगला में ऊडी।
—ऊ का

२ सुन्दर

उ०—१ बांह बिहु लटकाळी श्रति ओपै लूब झबाली हो। रूड़ी नै रळियाळी हीरां कर चगक हाली हो।
—वि कु.

उ०—२ भली बण्यौ मुखड़ा मउ मटकौ, श्राम्बड़ली श्रणियाली। लटकालो साहिब देख्यौ नई, तौ सु लागी ताली रे
—वि. कु

लटकावणौ, लटकावबौ—देखो 'लटकाणौ, लटकाबौ' (रू. भे.)

लटकावणहार, हारौ (हारी), लटकावणियौ—वि०।

लटकावियोड़ौ, लटकावियोड़ौ, लटकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लटकावीजणौ, लटकावीजबौ—कर्म वा०।

लटकावियोड़ौ—देखो 'लटकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लटकावियोड़ी)

लटकियोड़ौ–भू. का कृ—१ कोई पदार्थ या व्यक्ति ऐसी अवस्था मे हुवा हुआ कि उसका एक सिरा ऊपर लगा (टंगा) हो तथा दूसरा अधर मे झूलता हो २ झुका हुआ ३ किसी बात या विषय मे, निर्णय या अभीष्ट सिद्धि के अभाव मे दुविधा मे पडा हुआ ४ परीक्षा मे असफल हुवा हुआ ५ वंचित हुवा हुआ।

(स्त्री. लटकियोड़ी)

लटकीलौ–वि. (स्त्री. लटकीली) १ वह जिसकी चाल मे लटक हो, नखरे वाला।

२ सुन्दर, मनोहर।

लटकौ–सं. पु—१ गति या चाल मे पाई जाने वाली स्वाभाविक लचक।

२ झुकने की क्रिया या भाव, सलाम, अभिवादन।

उ० १ खिजमतदार दोइ च्यार पासै छै। जाहरा ईयौ दीठौ राजा ऊभौ, ताहरा श्राइनै लटकौ कियौ।
—स्यामसुंदर री वात

उ०—२ गललै हाट री घणी श्रायौ। पेडी नें नमस्कार करी थोडौ लटकौ माथा नेंई कियौ।
—मि. द्र.

उ०—३ श्रकबर गरव न श्राण, हीदू सह चाकर हुवा। दीठौ कोई दीवाण, करतौ लटका कटहडै।
—दुरसौ श्राढौ

क्रि प्र.—करणौ

३ अंगो के संचालन द्वारा किया गया संकेत या अभिव्यक्ति।

उ०—१ टोकरी घाटी रा लटका करनै नाई री कूंटिया काढती बोली—मानो, था लोगा री मरजी श्रावै ज्यूं श्रेक दूजा री वात मानो।
—फुलवाड़ी

उ०—२ जठै कर नीकळै बठै कर ही लोग हाथ जोड-जोड श्रर र म-राम करै। कई राम-राम रै सागै, काका, बाबा रौ सबोधन ही लगावै। मालाराम ही पाछौ उथलौ सबोधन लगा'र देवै। केवै राम-राम भाई। नस रै लटकै री ठाट-बाट घणी सुवावणी लागै।
—दसदोख

४ नखरा, चोचला।

उ० १ पटको दे दोठौ पलौ, श्रटकी चित उळझाय। करि लटकौ श्रावै करी, झटकौ सो बहि जाय।
—र. हमीर

उ०—२ करि लटकौ ऊभी रनै, श्रा छंदगारी श्राय। केमर नीरै खरक नै, कहौ चर जागै काय।
—र हमीर

५ बात चीत मे पाया जाने वाला स्वरो का विशेष उतार-चढाव।

ज्यू- बात रौ लटकौ ई न्यारौ है।

६ हल्की नीद झपकी।

उ०—१ चाकी उठाय पडी पिलग पर पडती नै लटकौ श्रायौ मेरा स्याम, लटकौ श्रायौ जी लटकौ श्रायौ जी स्याम जगायी क्यू नी जी लटकौ श्रायौ
—लो गी.

उ०—२ दासी न झेलै जवाई म्हारो बादी न झेलै। वे तौ झेलै जी बाई राजकवार रौ लटकौ श्रावतौ जी।
—लो. गी.

८ केलि, क्रीडा।

उ० ए यौवन ना दिन च्यार, लटकौ छै इरा संसार, कालातर नि भलीवार।
—वि. कु

९ संगीत की ध्वनि मे शरीरांगो पर होने वाली प्रतिक्रिया।

१० मत्र-तंत्र या चिकित्सा आदि के क्षेत्र मे कोई ऐसी युक्ति जिससे शीघ्र अभीष्ट सिद्धि होती हो।

११ ऐसा अस्फुट गायन जिसको सुनकर चित्त प्रसन्न होता हो।

१२ देखो 'लटक' (अल्पा., रू. भे.)

लटक्रणौ, लटक्कबौ—देखो 'लटकणौ, लटकबौ' (रू भे.)

उ०—१ मसक्कै नगार बध लटक्कै नाग रा सीस, श्राग रा श्रंगार तोपा भटक्कै श्रवाज। गाजियौ खगार दूजा खाग रा पाण सूं रघु,

राण वाळौ वाघरा संगार जेम राज ।

—भीमसिंह चूडावत री गीत

उ०—२ रज झाखो किरणाळ, कमळ जहराळ **लटक्कं**। चोळ भाळ बापडे, कमध रवदाळ कटक्कं ।

—सू. प्र.

उ०—३ **लटक्कय** सीस झटक्कय लाग, अटक्कय सास भटक्कय आग । भटक्कय म्याग खटक्कय जाब, गटक्कय ग्रीभण गूद गुलाब ।

—पे. रू.

लटक्कणहार, हारौ (हारी), लटक्कणियौ—वि० ।

लटक्कियोड़ौ, लटक्कियोडौ, लटक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटक्कीजणौ, लटक्कीजबौ—भाव वा० ।

लटक्कियोड़ौ—देखो 'लटकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. लटक्कियोडी)

लटणौ, लटबौ—क्रि अ.—१ दबना, झुकना ।

उ०—इता हालिया थाट ते भार आगा, लटै सेसरा सीस कामठि लागा । छछोहा कपी घूमरा एम छूटा, फबै जाण कोटेक सामद्र फूटा ।

सू प्र

२ शीथिल या क्षीण होना ।

उ०—मादूळी किण ही मर्म, लटियौ लाघणियौह । तौ पिण तह खावण तकै, हूतळ पर हरणियौह ।

—बा दा.

लटपट, लटपटाट—स स्त्री —१ खुशामदखोरी, लल्लो-चप्पो की बातें ।

उ०—दाव घरोहड माड मत, लटपट करके लाय । वडी बडाई वाणिया, धन लेणौ धीजाय ।

—बा. दा.

३ हिलने डुलने की क्रिया

उ०—श्रेकर विसूदरा री पछ वाढी तौ या निगी ताळ आगणा मे **लटपट-लटपट** करती री' ।

—फुलवाडी

४ आकर्षक या मनोहर (चाल) ।

उ० — ठाकर री **लटपट** चाल सू लोग उणा नै आधा सूं ईज ओळख लेवता अर मिळता ईज कैवता—जै माताजी री ठाकरा ।

—रातवासौ

५ चलने से उत्पन्न ध्वनि या आवाज ।

उ० — इतरौ सुणता इज दो एक बीफ्रण छोरा तौ हिरण्या रे ज्यू कान ऊंचा करनै पड भागा । अर लारली नागी-तडग पलटण पण **लटपट**-लटपट करती 'वाई बूटो थारा कान' । जाणै चिडिया मे ढळ पडयौ ।

—अमरचूंनड़ी

क्रि वि —शीघ्र, जल्दी ।

उ० —झटपट छोड जगत का कामा, **लटपट** चरणां लागौ । सिर पर तीर लाधिया चावो, तौ कर सतगुरु जीरौ मागौ ।

—अनुभववाणी

लटपटाणौ, लटपटाबौ—क्रि. अ.—१ तडफना, छटपटाना ।

२ खुशामद करना ।

३ अनुरक्त होना, लुभाना ।

लटपटाणहार, हारौ (हारी), लटपटाणियौ—वि० ।

लटपटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटपटाईजणौ, लटपटाईजबौ—भाव वा० ।

लटपटायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ छटपटाया हुआ, तडफड़ाया हुआ. २ खुशामद किया हुआ. ३ अनुरक्त हुवा हुआ, लुभाया हुआ । (स्त्री. लटपटायोडी)

लटपटियौ—देखो 'लटपटौ' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—१ **लटपटिया** पेचां मे उळझिया थका । मोळिया री लडां रा पेच उघडि रह्या है ।

—पना

उ० — २ तुर्रा रा तार पळकै है. पाघा रा **लटपटिया** पेच खवा पर लटकै है ।

—र. हमीर

उ०—३ सईया कुण छै, अै लागै छै अमीर । किण उळगाणी रा भवर जी । **लटपटिया** सिर पेच पाग रा, भूंह कबाण-सी ताणी रा निर्माणी रा ।

—रसीलै राज रा गीत

लटपटौ—वि.—बेढंगा, अटपटा, अस्तव्यस्त ।

उ०—**लटपटा** पेच सिर कठ मोती लडा, खटपटा मिजाजी पांन खावै । पगा कंचन पहर दिखावै पटपटा, जुध बगत झटपटा भाग जावै ।

—उदैभांण बारहठ

२ खुशामदी ।

३ जो लेई की तरह गाढा हो ।

अल्पा.,—लटपटियौ

लटबा—सं. स्त्री.—खुशामद, चाटुकारिता ।

उ०—एक करै नूई वींनणी रा कोड, दूजी करै आख अदीठ बूढी भोड । पैलडी **लटबा** करै-हाथ जोडे । बीजी यू सुजावै, माथौ फोडै ।

—दसदोख

लटांचट्टां—वि.—गुत्थमगुत्था ।

उ०—काळ हुकमि जिम काळ रा, किंकर कहरारै । होय **लटांचट्टां** हिचै, विकटा वाकारै ।

—सू. प्र.

रू भे —लट्टाचट्टा ।

लटांण—सं. स्त्री —१ सामान रखने के लिए कमरे मे छत से कुछ नीचे दीवार मे लगाया जाने वाला लम्बा पत्थर या काठ ।

लटा—स. पु (ब. व.)—बाल ।

उ०—ऊमटी घटा, बादला होइ एकठा, पड़ई छटा, भाजइ भटा भीजइ लटा ।

—रा. सा. स.

लटापट—स. स्त्री.—१ बंधन की क्रिया या भाव, बंधन के ऊपर आने वाला बधन ।

वि —दृढ़, मजबूत (बंधन)

उ०—म्हारै आंगणा ऊंटी केर को, जै कै रेसम डोर बटाय-रसिया मैं तौ ढीली बांधूं सायबौ, कम कर नणदोई जी रा हाथ-रसिया मैं तौ बिच-बिच आई जी रा हाथ-रसिया मैं तौ ज्यूं ज्यूं हलाव डोर नै, वै तो तीनूं लटापट होय-रसिया. । —लो. गी

लटापटी—स. स्त्री.—खुशामद ।

लटापुरी —२ देखो 'लटापोरी' (रू भे)

उ०—ग्राव जका तरवार देऊं ग्रब, सगा सती मन माहै मारू । लटापुरी घणी कर लीधी, नीर जळ धर हुवा पाक । —गोगादेजी रो गीत

लटापोट—देखो 'लोटपोट' (रू भे.)

लटापोरी—स. स्त्री.—खुशामद, मनुहार, आग्रह ।

उ०—१ नाई लटापोरियां करनै घणी ई माफी मागी । पछै डोकरी रै सांम्ही देखनै कह्यौ—ग्रबै देखो काई हो । ग्रदाता स्रीमुख सू फरमाय दियौ, मांगणौ व्है जकौ माग लीजौ । —फुलवाडी

उ० -२ नांनी थोरा ग्रर लटापोरियां कर करनै कांई व्हैगी, पण बादळ नी तौ कलैवो करयौ, नी रोटी खाई ग्रर नी रात रा ब्याळू करयौ । —फुलवाडी

रू भे. लटापुरी ।

लटारां—स पु (ब व.) बालो या केशो की लटी ।

उ० परदेस मे वोपार करै खुल्ली लाग री धोनी पैरै । केसरिया पाघ बाधे । चौडा वारको सो मूडो, छीदी लटारां सी दाढी, मोती सा दात ग्रर ऊजळो गभार । —दसदोख

लटारो—सं पु किसान की कृषि उपज मे से निश्चित भाग या हिस्सा लेने वाला व्यक्ति

उ०—हाकम लठारा रे, बिणजारा सोदारा रे । पटवारी कूंतारा रे, सेंणा भोमिया रे । —जयवाणी

लटाळी—स. स्त्री —बालो युक्त ।

उ०—कसता विरंमंड कोदड कधा, बणावै ग्रथा वैर जं जेरबणा । सटा वाळ जाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नागवाळी लखै दाग पावै । —व. भा

लटिग्राळ - देखो 'लटियाळ' (रू भे)

लटिया—सं. पु (ब. व.) सिर के उलझे हुए बालो का गुच्छा ।

उ०—रीस तौ इसी आवै है कै राड रा लटिया तोडने नाख द । —ग्रमर चूनडी

लटिग्राळी, लटियाळ, लटियाळिय—स पु —१ भैरव का एक नाम ।

उ० —लिया पत्र पेज भर्ण लटियाळ, घणे तप तेज खमा घटि-याळ । दुवै बळ चचल पाग दराज, हुवै कुरबाण कवी हिंगळाज । —मे. म.

२ पुष्प, फूल ।

३ बडी ग्रयाल वाला (घोडा)

उ० —बडा खळ वेधन साबळ वाह, लिये लटियाळ तुरी कपी लाह । जुडे घज सेल पडे जवनेस, दखै रवि ताम, झोका 'मुकंदेस' । —सू प्र.

स स्त्री —४ एक देवी का नाम ।

उ० - १ महमाया तुही चामडमाय, डीळवत ग्रारभै सु मीहाय । लटियाळ तुही लख वीरद लेग, वाचाड घंघी साच वेग । —रामदान लाळस

उ०—२ कगनार गताम वरात करी, फिर ग्राडिय देवळ ग्रान फरी लटियाळिय जोगण साथ लिया, ककग्राळग रूप विरूप किया । —पा. प्र.

५ एक प्रकार की भाग ।

उ०—१ निका किण भात री भाग सुध काका पुरणि वासिग नाग माथै री नीपनी सिंघ री गुफा माहै नीपनी, थोहर रै वीडै री, भाखर रै खुडै री, सूम्रै री पाख, परडरी ग्राख, रोज मारि, म्रिघ मारि, लटिग्राळी वापरी लाधी बैठे ना ग्रावै । —र सा. म

वि —१ जटाधारी, जटावाला ।

रू. भे - लटिग्राळ, लटयाळिय, लरियाळ

लटियाळो—वि —जटाधारी, जटा वाला ।

स पु.—भैरव

लटी—स. स्त्री —१ झूठी बात, गप्प ।

२ वेश्या ।

३ साधु स्त्री ।

४ केश या डोरे ग्रादि का उलझा हुग्रा लम्बाकार गुच्छा ।

उ०—काळी ग्रगवाणी करौ, गोरी जै री गेल । घमकै कटिया घूघरा लटियां तेल फुलेल । जी मेहाई थारा बाईसा री करीजे उबेल । —मे म.

५ घोडे के गर्दन के बाल घोडे की ग्रयाल ।

उ०- ताहरा सिखरै बिछेरी पकडी, घोडै कन्ह ग्रायी ताहरा सिखरै लटी पकडनै चढि गयौ ग्रौर बिछेरी दोडी । —उदै उगमणावत री बात

वि —१ बलवान, जबरदस्त ।

२ देखो 'लट' (रू. भे.)

लटूमणो, लटूंबबो—क्रि. ग्र.—१ किसी वस्तु का मामूली ग्राश्रय लेकर टिकाव करना या लटकना ।

ज्यूं—गाडी लारै लटूमणो ।

२ किसी वस्तु का एक सिरा दूसरे से लगाकर ग्रधर लटकना ।

३ स्नेह से गले मे बाहु डालकर लटकना या झूमना।

उ०—मासी सूं कम काली भाणजी ई नी ही। वा तौ ऊभी ऊभी ही अबूझ टाबर री गळाई मासी रै गळै लटूंम उणरा हाचळ चूंगण लागगी। —फुलवाड़ी

लटूंमणहार, हारौ (हारी), लटूंमणियौ—वि०।

लटूंमिग्रोड़ौ, लटूंमियोड़ौ, लटूंम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लटूंमीजणौ, लटूंमीजबौ—भाव वा०।

लटूंमियोड़ौ—भू. का कृ.—१ किसी वस्तु का मामूली आश्रय लेकर टिकाव किया हुआ या लटकाया हुआ २ किसी वस्तु का एक सिरा दूसरे से लगाकर अधर लटका हुआ. ३ स्नेह से गले मे बाह डालकर लटका हुआ या झूमा हुआ।

(स्त्री. लटूमियोड़ी)

लट्ठ—देखो 'लट्टू' (रू. भे.)

लट्टा १ देखो 'लट' (रू. भे)

उ०—१ पट्ठा उतारै पेट री लट्टां मारै अर चालतौ कातीसरौ धाप-धाप'र करै है। - दसदोख

उ०—२ रोटी फलका दही मिडका, रोट बाटिया घृतियौ। फोगलाम् सूकी लकड्या, लट्टां कातै सूनियौ। — दसदेव

२ देखो 'लट्टौ' (मह, रू. भे)

लट्टांचट्टां—देखो 'लटाचट्टा' (रू भे)

उ०—कुरपंडव जीहा अमर, कल रक्खरा कथ्था। लट्टांचट्टां लूबिया वेदल भर बथ्था। —लूणकरण कवियौ

लट्टू—सं. पु.—१ लकड़ी का गोलाकार एक खिलौना, जिसमे लगी कील पर डोरी लपेट कर उसे घुमाया जाता है।

२ मोहित, फिदा।

उ०—१ टेढा न हुजै जगी टट्टू, ललचायै मत थाए लट्टू। पडित मूरख कीजै परिखा, सगला नै मत कहिजै सरखा। - ध व ग्र.

उ०—२ निजर नाखी भोमी ताकी पण किसनजी कमरै रै रंग-ढंग मू ढीलो, लट्टू हुयग्यौ। —दसदोख

क्रि प्र.—व्हैणौ, करणौ

रू. भे —लट्ठ

लट्टौ—स. पु.—१ कुत्ता, स्वान। (डिं को.)

रू भे.—लट्टौ

मह —लट्, लट्ट

लट्ठ—देखो 'लठ' (रू भे.)

उ०—१ वसून बुद्धि वैत नीज मांन पांन है जमां। घुमाय लट्ठ अट्ठ जाम हौं फिरौं घमा घमा। —ऊ. का.

उ०—२ वाधिया नै नीचै आगणा मे सुवाय नै एक मजबूत लट्ठ उणनै सूप दियौ अर म्हूं ई एक मोटी छूरी अर एक डंडौ सिराणै ले'र ऊपर सोयग्यौ। —रातवासौ

लट्ठबाज—वि —लाठी से लडने वाला, लठैत।

रू. भे.—लठबाज, लाठीबाज।

लट्ठबाजी—स. स्त्री.—लकडी से होने वाली लडाई।

रू. भे.— लठबाजी।

लट्ठभारती—वि —१ लकडी चलाने मे दक्ष।

२ उद्दंड, उत्पाती।

रू भे —लठभारती।

लट्ठमार—वि.—१ उद्दंड व्यक्ति।

२ (कथन या बात) जिसमे विनय, नम्रता एव सौजन्य का पूर्ण अभाव हो।

रू. भे - लठमार।

लट्ठी—देखो 'लाठी' (रू भे)

उ०—पटाळा हठाळा महागात पूरा, सूरगा सगाहा सकोपा सनूरा। सलीना कन्है भैंकवै प्राण साहै लिया हाथ लट्ठी समा सेन ठाहै। —रा. रू.

लट्ठौ—स पु —१ लकडी का बहुत बडा, मोटा खड, शहतीर।

रू भे.—लाठौ

२ मोटा कपडा विशेष।

उ०—मटिया आटाळी पोतियौ, काटा छाप लट्ठा री धोतियौ अर जाळौर रै टुकडी री अंगरखी ठाकर री बारोमास री पोसाक ही। —रातवासौ

३ भेडिया। (शेखावाटी)

४ देखो 'लट्टौ' (रू. भे)

रू. भे.—लट्ठौ।

लटयाळिय—देखो 'लटियाळ' (रू. भे)

लठ—वि —१ हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ।

२ मजबूत, जबरदस्त।

३ मूर्ख, बेवकूफ।

स. पु —१ छकडा।

उ०—कमाळा लदै अव्व त्या द्रब्ब कोडी, सकट्टा लठां भार ज्यो टास जोडी। विभारंभ आचभ राठोडवाळा, महि छेलिदा ऊमडै मेघमाळा। —रा. रू.

२ भेडिया (शेखावाटी)

३ लाठी।

रू. भे.—लट, लट्ठ

लठबाज—देखो 'लट्ठबाज' (रू भे)

लठभारती—देखो 'लट्ठभारती'

लठमार—देखो 'लट्ठमार' (रू भे.)

उ०—मरदा कोय वाग भलै मुरडो, ग्रस चालव 'पाल' कियो उरडो।
ठग वात ग्रमा फिर ग्राय ठगै, लठमार प्रथांनाय सीम लगै।
—पा. प्र.

लठाबन–वि —लट्ठ बाज, लकड़ी चलाने वाला।

उ०—ग्राग भडहडै हुई रमै रग ग्रागर्गो, नाग फग नमै करै समग्र नागा। कठा लग कवादी व्यूह रचना करै, लठाबन तरणा भड लडन लागा। —कविराजा बांकीदास

लठीभल—देखो लाठीभल' (रू भे)

लठैत–स पु—लकड़ी चलाने वाला व्यक्ति, लट्ठधारी।

लट्ठी–स पु १ मकान की छत मे लगाया जाने वाला भारी लम्बा पत्थर-पाट, भारोट या काठ का शहतीर।
२ देखो 'लट्ठी' (रू भे)
उ०—ग्रांगणै मे सीयोडी बोरघा रो तिरपाळ बिछयोडो हो, छात मार्थ लाबी लट्ठ री घोती ताण्योडी ही। -दसदोख

लडंग—देखो 'लडग' (रू भे.)

लडणो, लडबो–क्रि. ग्र.—१ प्यार किया जाना, दुलार किया जाना।
उ०—१ वच्छ सासुग तणी इसी स्थिति जाणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुरग लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुसइ, देग्ररागी हसइ, नणंद नखरावइ, सासू काम करावइ।
—व स

२ देखो 'लडणो, लडबो' (रू. भे.)
लडणहार, हारौ (हारी), लडणियौ—वि०।
लडियोडो, लाडयोड़ो, **लडयोडो** भू० का० कृ०।
लडीजणी, लडीजबौ—भाव वा०।

लडत्थड–वि.—झूमता हुग्रा।
उ० —वडव्वड वीजळ धार वहत, लडत्थड सकर सीस लहत। झडरझड ग्रोझड ग्रावध झट्ट, लडल्लड लागै लोह सुभट्ट। खडक्खड खडा खाट खडत, धडध्धड हूता धूंह पडत। —गु रू ब.

लडथट—लडने वालो का समूह।
उ० धू नाचै भड घड फीफड, लोडै लडथट लोहि लडै। जोयै दळ वड चढ हुई हड-वड, जोवै घड तड ग्रनड ग्रडै। —गु. रू ब.

लडथडणो, लडथडबो—देखो 'लडथडणो, लडथडबो' (रू. भे)
उ०—सिधुरां गरा साथरा सूर, पै करा वरा सधरा पूर। लोहडां लडा लडथडा लोट बेहडा घडा मरगडा बोट। —गु रू. ब.

लडथडियोड़ो—देखो 'लडथडियोडो' (रू. भे)
(स्त्री. लडथडियोडी)

लडल्लड–सं. स्त्री — शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

उ०—वडव्वड वीजळ धार वहत, लडत्थड सकर सीस लहत। झडज्झड ग्रोझड ग्रावध झट्ट, लडल्लड लागै लोह सुभट्ट।
—गु. रू. ब.

रू भे.—लडालड।

लडवडणौ, लडवडबौ–क्रि. ग्र.—लटकना।

उ०—कोट गळै वाकी नळी, पिंजर नयन विसात। लाळ पडै होठ लडवडै इसौ वणायो गात। श्रीपाल राम

लडवडियोडो-भू का कृ लटका हुग्रा।
(स्त्री लडवडियोडी)

लडसडणो लडसडबो–क्रि. ग्र.- झूमते हुए या मस्ती मे चलना।

उ०—१ लडहियतणी लडसडतीय, घडतीय नाव रसाल। नेहगहिल्लय हियडुला, प्रियडुला जपइ बाल। —मेरुनदन
उ० -२ तदनतर लाडता लडसडता इसा पुण्यवत, लीला कामदेव जिसा, ग्रारोगिवा बइठा। तदनतर ग्राट वाटा वाटी कचोला कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। तदनतर लडहीग्रं, लडमडतीयं, लीलावतीग्र सुवरणमय करवइ बरवतीग्र, खलकतइ, चूडइ, झलकतै ककणि, ढलकतइ मीथ, सीति गंधोदकि हस्तोदकु दीधा।
—व स.

लडहि–वि. [स लटभ] सुन्दर।

उ०—१ पेखवि वरु ग्रावतु सहिय, राजल इम जपइ, लोयण धुव नु करि न देवि, वरु ग्रावइ मंपइ। लाडिय लडहिय गउखि चडवि, पच्चक्खु ग्रणगो जोवइ प्रिय सव्वगु चग्रु, मनि पावइ रगो।
—जयसिंह सूरि

रू. भे,—लडही।

लडहियत्तण, लडहियतणि, लडहियतणी–स स्त्री [स. लटभिकत्वन] सुन्दरता।

उ०- लडहियतणि लडमडतीय, घडतीय भाव रसाल। नेहगहिल्लिय हियडुला, पियडुला जपइ बाल। —मेरुनदन

लडही—देखो 'लडहि' (रू भे)

उ०—तदनतर ग्राट वाटा वाटी कचोला कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। तदनतर लडहीग्रं, लडमडतीयं, लीलावतीग्र सुवरणमय करवइं बरवतीग्र, खलकतइ चूडइ, झलकतै कंकणि, ढलकतइ हाथि, सीति गंधोदकि हस्तोदकु दीधा। —व स.

लडांलूब—देखो 'लड़ालूब' (रू. भे.)

लडाई—देखो 'लड़ाई' (रू. भे.)

उ०—जोधा रिणमाल दूहू दळ जूटा, पूरि लडाइय जोर पडी। पाळ हाड छूटा सिरखा, पडयालग हूग्रो भारथ हेक घडी।
—गु. रू. बं.

लडाड़णौ, लडाड़बौ—देखो 'लडाणौ, लडावौ' (रू. भे.)

लडाड़णहार, हारौ (हारी), **लडाड़णियौ**—वि०।

लडाड़ियोडौ, लडाड़ियोडौ, लडाड़योड़ौ भू० का० कृ०।

लडाड़ीजणौ, लडाड़ीजबौ कर्म वा०।

लडाडियोड़ौ—देखो 'लडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लडाडियोडी)

लडाणौ, लडाबौ—क्रि स १ लाड-प्यार करना, दुलार करना।

उ०—हित बिण प्यारा सज्जणा, छळ करि छेतरियाह। पहिली लाड **लडाई** कइ, पाछई परिहरियाह। —ढो मा.

उ० २ फरर जस हाथिया हातलेबो फबै, जडलगा बंटे रग पतंग जाडा। बनी साहा तणी घडा नवजोवनी **लडाई** भली जग पलंग लाडा। —महाराजा राजसिंह रो गीत

२ फुसलाना।

३ देखो 'लडाणौ, लडाबौ' (रू. भे.)

लडाणहार, हारौ (हारी), **लडाणियौ**—वि०।

लडायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लडाईजणौ, लडाईजबौ—कर्म वा०।

लडाडणौ, लडाड़बौ, लडावणौ, लडावबौ—रू भे।

लडायत, लडायतौ—वि (स्त्री लडायती) प्यारा, दुलारा।

लडायोड़ौ—भू का कृ. १ प्यार किया हुआ, दुलार किया हुआ।

२ फुसलाया हुआ।

३ देखो 'लडायाडो' (रू. भे)

(स्त्री. लडायाडी)

लडालड—देखो 'लडल्लड' (रू भे.)

लडालौ—वि. (स्त्री. लडाली) प्यारा, दुलारा।

लडावणौ, लडावबौ—देखो 'लडाणौ, लडावौ' (रू. भे)

उ०—१ लाडौ लाडी जाय **लडावण**, गत्यु श्रीनग सारे जन हरिराम फिरै मन फीटी, ध्यान हरि का धारै।

—अनुभववाणी

उ०—२ म्हारा केस श्रवस थारै काळ केसा सूं उजळा है, पण म्है थारा उजास नै नी पूगू। पछै थू म्हनै कित्ती ई **लडावै** तौ काई व्है। —फुलवाडी

लडाविया—सं स्त्री—घोडो की एक जाति विशेष।

उ०—घोटक जाति, केहाडा, नीलडा, हरियाडा, सेसहा, हडाराहा कोहाणा, भरयणा, ताइ, तुरगी, ऊधसीया, नीघसीया, डाटकीया डोटकिया, खेलविया, मल्हाविया, **लडाविया** पुलाविया, सरला, तरला, छोटकरणा, एकरणा। —व स.

लडावियोड़ौ—देखो 'लडायोडौ' (रू भे.)

देखो 'लडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लडायोडी)

लडियोड़ौ—भू का. कृ.—१ लाड या प्यार हुवा हुआ. २ लड़ा हुआ।

(स्त्री. लडियोड़ी)

लडीड़—सं. पु. [अनु.] १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

२ प्रहार, चोट।

उ०—१ पछै अेक फेर **लडीड़** उणरी कडियां माथै आवेस जरकायौ जको कुत्ता मू तौ बोबाडौ ई नी व्हियौ।

—फुलवाडी

उ०—२ भाबी तौ ढूको जको लडीड-**लडीड़** उणनै कूटनौ ई गियौ, मरिया पछै ई को ढबियौ नी। —फुलवाड़ी

लडीड़ौ देखो 'लडीड' (मह. रू. भे)

क्रि प्र.—चेपणौ, धरणौ, मेलणौ, लगाणौ।

लडीयाळ—१ देखो 'लड'

उ०—जडियाल खजर जमडंड जडै, बाधिवे बे वडियालसी। रडियाल रूप देखे रभा, व्हवै हीर लडीयाळसी। —पना

२ देखो 'लडीयाल' (रू. भे.)

लडूककार—स. पु [स.] लड्डू बनाने वाला।

उ०—कास्यकार मणिकार पूगीलतांबूलिक मालिक सौत्रिक **लडूककार** काडुकिकार कणाकार वैस्याकार चरमकार मल्लक खलक धान्य खलक वाटक वाटिका वापी पुष्करणी क्रीडातडाग सरोवर। —व. स.

रू. भे.—लडूयार

लडूयार—स पु—देखो 'लडूककार' (रू. भे)

उ०—अथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर राजमारगि गाधिकापण दोसिकापण कणहट्ट सूपकारहट्ट फोफलहट्ट तांबूलिकहट्ट माली **लडूयार** सोवरण्णिक माणिकहट्ट कसारा। —व. स.

लडेत—वि.—लाड-प्यार से इतराया हुआ।

लडोकड़ौ—प्रिय, प्यारा।

२ देखो 'लडोकडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लडोकडी)

लडु—स पु—देखो 'लाड' (रू. भे.)

उ०—कहाँ जाया कहा जनमिया, कहा लडाया **लडु**। काहु जाणै कही खाड मे, जाय पडेग हड्डु। —अज्ञात

लडू—देखो 'लाडू' (रू. भे.)

लड—क्रि वि.—१ लोटपोट

उ०—खवा-खच चुड़ाळै हळका हाथांसूं परूसती अर गीता-भागवंत

रा पाठ करती थकी म्राले वाम री लुगाया नैं ग्यान देती-रैती। घणा र दड कर देती, लोकाचार सूं लड कर देती —दसदोख

लडकणो, लडकबो–क्रि. ग्र.—देखो 'लुडकणो, लुडकबो' (रू भे)

लडकणहार, हारो (हारी), **लडकणियो** – वि०।

लडकियोड़ो, लडकियोड़ो, लडक्योड़ो—भू० का० कृ०।

लडकीजणो, लडकीजबो—भाव वा०।

लडकाड़णो, लडकाड़बो—देखो 'लडकाणो, लडकाबो' (रू. भे.)

देखो 'लुडकाणो, लुडकाबो' (रू. भे.)

लडकाड़ियोड़ो - १ देखो 'लडकायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'लुडकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लडकाडियोड़ी)

लडकाणो, लडकाबो–क्रि. स.—१ लिपेटना।

उ० एक हाथ री ग्रागळी मे गगा-जमना हाली बीटी ग्रर दोनूं पगां रै ग्रंगूठा मे घरण दाटण वेगी काळा काठा डोरा लडकायोड़ा है। —दसदोख

देखो 'लुडकाणो, लुडकाबो' (रू. भे.)

लडकाणहार, हारो (हारी), **लडकाणियो** – वि०।

लडकायोड़ो – भू० का० कृ०।

लडकाईजणो, लडकाईजबो—कर्म वा०।

लडकाड़णो, लडकाड़बो, लडकावणो, लडकावबो —रू. भे।

लडकायोड़ो–भू का. कृ.—१ देखो 'लुडकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लडकायोडी)

लडकावणो, लडकावबो—देखो 'लडकाणो, लडकाबो' (रू. भे.)

२ लुडकाणो, लुडकाबो' (रू भे)

लडकावियोड़ो—देखो 'लडकायोडो' (रू. भे)

देखो 'लुडकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लडकावियोडी)

लडाक–स. पु.—वह व्यक्ति जो छद्म वेष बनाकर किसी सामुहिक भोज मे भोजन कर ग्रावे।

(जयपुर)

लडार–सं. पु —कायस्थ जाति मे विवाह के छटे दिन वधू पक्ष की ग्रोर से वर-पक्ष को दिया जाने वाला बडा भोज। (मा. म.)

वि. वि.—यह भोज ग्रनिवार्य नही है ग्रतः समर्थ व्यक्ति ही दे पाता है।

लडो–स. पु.—१ बैलगाडी। (मेवात)

२ बैलगाड़ी मे से धान ग्रादि वस्तुग्रो को गिरने से बचाने के हेतु लगाया जाने वाला वस्त्र।

लणियार, लणिहार–वि.—देखो 'लैंणियार' (रू. भे.)

उ०— कुण थारो कुण थारो ए, भाली राणी ग्रायो लणिहार। कुण कहै बहू जाव, कुण्यारै खिनाई जावो बापकै। —लो. गी.

लणणो, लणबो—देखो 'लुगणो, लुगबो' (रू भे.)

उ०—जिसउ गुरु तिसउ ग्रभ्यास, जिसी दीख तिसी सीख, जिसउ ग्राहार तिसउ निहार, जिसउ वावियइ तिसउ लवइ तिसउं कमा इयई, तिसउं प्रामीयइ। —व स.

लणीहार—देखो 'लैंणिहार' (रू. भे)

उ० —ढोलाई ढोला भरयो रै लाल करवाई करवा गुवाड इसडो कलम को नही जी म्हारी लाडो को लणीहार सनेही ढोला।

—लो. गी.

लत–स. स्त्री. [ग्र. इल्लत] १ बुरी ग्रादत, ग्रादत।

उ०—१ लोगा पूछियो —थोरी के बावै ? वो ग्रापरी लत परवाण बेडाई सू उत्तर दियो—को बताऊंनी। — फुलवाडी

उ०—२ दिल ऊजळ नर ऊजळ नवि न ऊजळ सिर लेखीय। दौलत दौलत मिळि नि, लगी दौ'लत द्रिढ लेखीय। —र. ज. प्र.

२ देखो 'लात' (रू. भे)

रू. भे — लत्त'

लतखोर, लतखोरो–वि.—१ बुरी ग्रादत वाला।

२ लात खाने वाला, नीच।

लता–स. स्त्री. [स.] १ कोमल व पतली शाखाग्रो वाला पौधा विशेष जो किसी ग्राश्रय के द्वारा ऊपर की ग्रोर चढ जाता है। या धरातल पर ही फैल जाता है, बेल।

उ०—१ लोक विदेसा मे घरै ग्रावै, लता बिरछा रो मिळण ग्राळी। रसराज ग्रै छाई छै ग्रापानै, किसा हिया रा कथ म्हारी ग्राली। —रसीले राज रा गीत

उ० - २ स्रीहर परहर ग्रवरन, मत भभारै ग्रयाण। तरु छडै लागी लता, पत्थर चै गळ जाण। —ह. र

रू. भे. - लत, लत्ता, लया।

लताग्रंत–स पु यौ. [स. लता+ग्रत] पुष्प, फूल।

(ग्र. मा., ह. ना. मा)

लताकर–स. स्त्री. -नृत्य मे हाथ हिलाने की एक क्रिया।

लताकस्तूरिका, लताकस्तूरि–स. स्त्री.—दक्षिण भारत मे होने वाला एक पौधा जिसका उपयोग वैद्यक मे होता है।

लताग्रह, लताघर–स. पु. यौ. [स. लता+गृह] लताग्रो से मडप की तरह छाया हुग्रा स्थान।

लताड़–स. स्त्री.—१ लताड़नै की क्रिया या भाव।

२ गहरी डाट, फटकार।

क्रि. प्र.—देणी, पडणी, खाणी।

रू. भे.—लतेड़'

लताड़णो, लताड़बो–क्रि. स.—१ लातो से कुचलना, रौंदना।
२ लातो से मारना।
३ फटकारना, डाटना।
उ०—१ बदनामी कर' र दूजै कठै ही नहीं परणीजण देवणरो डराव दिखाळघो। चढतै लोहो नै घणी लाणत सू लताड़घो
—दसदोख
उ०—२ जद नवलजी आपरै जवाई री कूड़ी मदा तथा वार चढसी। आगै जाकर पुलस हाळा नै लताड़सी, श्रोळभो देसी।
—दसदोख
४ भला बुरा कहना, शर्मिन्दा करना।
५ हैरान करना।
लताड़णहार, हारो (हारी), लताड़णियो—वि.।
लताड़िश्रोडो, लताड़ियोड़ो, लताड़्योड़ो—भू. का कृ।
लताड़ीजणो, लताड़ीजबो—कर्म वा.।

लताड़ियोड़ो–भू. का. कृ.—१ लातो से कुचला हुआ, रौंदा हुआ. २ लातो से मारा हुआ ३ फटकारा हुआ, डाटा हुआ. ४ भला-बुरा कहा हुआ, शर्मिदा किया हुआ ५ हैरान किया हुआ।
(स्त्री लताडियोडी)

लताभवन–[स. लता+भवन]–लताओ के छाजन मे बना गृह, लताकुज

लतामंडप–स. पु. यौ [स. लता+मडप]—लताओ मे आच्छादित मडप या स्थान।

लतामंडळ–सं. पु. यौ. [स. लता+मंडल] लताओ का झुड।

लतामणि–स. पु. यौ. [स लता+मणि] मूगा, प्रवाल।

लतावेस्ट–स पु यौ. [सं. लता+वेष्ट] १ कामशास्त्र मे वर्णित सोलह प्रकार के रतिबन्धो मे से तीसरा।
२ पुराणो के अनुसार द्वारकापुरी के पास का एक पर्वत।
वि.—लताओ से घिरा हुआ।

लतावेस्टन–स पु यौ. [सं लता+वेष्टण] एक प्रकार का आलिगन। (कामशास्त्र)

लतासाधन–स पु यौ. [सं लता+साधन] एक तन्त्रोक्त साधना जिसका प्रधान अधिकरण लता अर्थात स्त्री है।

लतिका–सं. स्त्री.—छोटी लता।
उ०—पल्लव लतिका रूप डाळिया डाळा माथै। ओपै वेल अगूर, अळ झूमै नाळा साथै। —दसदेव

लतियापण, लतियापणो–स. पु.—गुदा मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन करने का व्यसन।

लतियो–स. पु.—वह जिसे गुदा मैथुन कराने की लत्त हो। (मा. म.)

लती—देखो 'लत्ती' (रू. भे.)

लतीफो–स. पु. [अ. लतीफ़ा] हास्य रस की कोई बात, चुटकला।

लतेड़—देखो 'लताड' (रू. भे.)
उ०—दीवांणजी रौ की दाव नीं चाल्यो। लक्खू री लतेड़ सुण लचकांणां पडग्या। —फुलवाड़ी

लतेड़णो, लतेड़बो—देखो 'लताडणो, लताडबो' (रू. भे.)
लतेड़णहार, हारो (हारी), लतेड़णियो—वि.।
लतेड़िश्रोडो, लतेड़ियोडो, लतेड़्योड़ो—भू का. कृ.।
लतेड़ीजणो, लतेड़ीजबो—कर्म वा.।

लतेड़ियोड़ो—देखो 'लताडियोडो' (रू. भे)
(स्त्री लतेडियोड़ी)

लत्त—१ देखो 'लत' (रू भे.)
उ०—गज मद चाचर घूंदतां, लग पडि नीला लत्त। समर तडफ्फै सिहली, मद भरियौ मेमत्त। —रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'लत्ती' (रू भे)
उ०—जिकै जपै हरि नाम, जिया मन सासौ भग्गै। जिकै जपै हरि नांम, जिया जम लत्त न लग्गै। —ज. खि.

लत्ता–स. स्त्री.—विवाहादि मुहूर्त्त मे होने वाले दश दोषो मे से एक दोष।
उ० –१ लत्ता दि दोम दस लखो, अल्प निबळ सोपण अठै। बदियौ द्विजेण मत्र सुभ बिफळ, कळ दुलह समता कठै। —वं भा.
वि. वि.– ये दश दोष निम्न हैं–
१ लत्ता, २ पात ३ युति ४ वेध ५ यामित्र ६ बुध पचक ७ एकार्गल ८ उपग्रह ९ दग्धातिथि १० क्रांति साम्य।
२ देखो 'लता' (रू. भे)

लत्ती–स. स्त्री —१ पशुओ द्वारा पैर से किया जाने वाला प्रहार. आघात।
२ चलने या दौडने व्यक्ति के पैर मे इस प्रकार पांव अडाने की क्रिया कि वह लड़खडा कर गिर जाय।
क्रि. प्र मारणी, लगाणी।
रू. भे —लत्त

लत्तो–स. पु. [स. लत्तक] (ब. व. लत्ता) १ फटा पुराना कपड़ा, चिथडा।
२ पहनने के वस्त्र।
यौ. कपडा-लत्ता।

लत्थबत्थ, लत्थबथ्थ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)
उ०—धडै लगि सार उठै रत धार, उगी फळ बिब कि कब अपार। हुए इक सत्थ बिना खग हत्थ, मिळै लत्थबत्थ बिना कै मत्थ।
—रा. रू.

लत्थापत्थि—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—पठपासीयउ अन्न प्राणि, करइ वलि सुहंगा कांई । लागी लत्थापत्थि किस्यु थास्यइ ही सांई । —स. कु.

लत्थोबत्थ, लत्थोबथ, लत्थोबथ्थ, लत्थोबत्थांण—देखो 'लथबथ' (रू भे)

उ०—१ मत्ता जूझ लत्थोबत्थां धारा घौम गौम मच्चै, धीरबाज लच्चै बोम नच्चै रुद्र धाड़ । धाय सल्लां होदा व्है छड़ाळां हूंत वीर घूमै, रायसल्ला रौदा व्है हमल्लां हल्ला राड़ ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ आम्हो-साम्हा आहुड़ै, लत्थोबत्थाणं, धाका मूका वाजिया, गाजै गयणाण । विढतां पाच हजार लग, वीता वरसाण, मांग-माग वर बोलिया मधु-कीटव दाण । —गज-उद्धार

उ०—३ वहै हाथ रावतां रा आवधां छतीस वहै, कळ, रहै सारा खा वाखाण साथ कत्थ । आंबेरा वळा रवताळा मैं दताळा अमा, बाहरू धरा रा लडै पड़ै लत्थोबत्थ । —हाडा कछवाहा रौ गीत

उ०—४ नीर सरा मेहा घरा, सारण हुंसा सथ्थ । वेलि तरा नारी नरा, वणिया लत्थोबथ्थ । —पना

लथपथ–वि.—१ किसी तरल पदार्थ से भीगा हुआ या भरा हुआ ।

२ मिट्टी, कीचड़ आदि से सना हुआ ।

उ०—लारा सूं एक सरडाट करती आई अर चोधरी रा कपड़ा लथपथ करती चालती बणी । —रातवासौ

लथबत्थ, लथबथ–स.पु.—१ दो जीवो पशुओ या व्यक्तियो मे लड़ाई होने समय की वह स्थिति जिससे वे एक दूसरे को कसकर दबाए या पकडे रहते हैं ।

२ पति पत्नी या, प्रिय प्रेयसी के प्रेमालिंगन की क्रिया या भाव, सुरत-प्रसग

उ०—रे पिय सोगन राजरी, खोटो सेजा खेल । बिलकुल लथबथां बूरी, मोने ढीली मेल ।

—सुगुना सत्रुसाल री बात

रू. भे.—लत्थबत्थ, लत्थबथ, लत्थबथ्थ, लत्थोपत्थि, लत्थोबत्थ लत्थोबथ, लत्थोबत्थांण, लथुबत्थ, लथुबथ, लथुबथ्थ, लथोबत्थ, लथोबथ, लथोबत्थ, लुत्थबत्थ, लुथबत्थ, लुथबथ, लुथबथ्थ, लूथबथ्थ, लूथबाथ, लूथबूथ लोथबत्थ ।

लथाड़णौ, लथाड़बौ—देखो 'लताड़णौ, लताड़बौ' (रू. भे)

लथाड़ियोड़ौ—देखो 'लताड़ियोड़ौ' (स्त्री लथाड़ियोड़ी) (रू. भे.)

लथुबत्थ, लथुबथ—१ देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

लथेड़णौ, लथेड़बौ—देखो 'लताड़णौ, लताड़बौ' (रू. भे)

लथोबत्थ, लथोबथ, लथोबथ्थ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—१ नजर का निहार पंजू का दाव । कदमूं का फुरत डोरयू का घाव । जड़ तेहै डोरी लथोबथ होय जावै । —सू. प्र.

उ०—२ कू भाथळा लागै नरा हेमरां ढोहतां कोप, हाथळां हाथियां घड़ा डोहता हटंत । हाथ बागा फौज नूं रोहतां लथोबथ्थां होय, पाडै असा दूजो 'सतो' नोहथ्थां पटंत ।

—महाराव राजा रायसिंह हाडा रौ गीत

लदणौ, लदबौ–क्रि. अ [स. लब्ध्] भार या वजन युक्त होना ।

उ०—मिनख जमारै आय, रामजी रा गुण भूला । कहै दास सग-राम, इणी सम कांई सूळा । सूळा कोई है इसा, घणी सहोला मार टाकी मोरा रै बिचे, ऊपर लदसी भार । ऊपर लदसी भार गधा होवोळा लूला । —सगरांमदास

२ भारी वस्तुओ का वाहनो आदि पर रखा जाना ।

उ०—रैवारी का सोज्या म्हारा बीर, रैण धणै री घुडला नां लदै । गैली घण असल गवार, लदिया तो घुडला पाछा ना ढळै ।

—लो. गी.

३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण होना, आच्छादित होना ।

ज्यू—गेणा सू लदणौ, फूला सू लदणौ ।

४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु का रखा जाना या बोझ, वजन के रूप मे पड़ना ।

५ व्यतीत होना, कालातीत होना ।

उ०—पीढ्या नीतसी, सदी लद जासी पण लोग थारो नावौ सदा लैंना रैसी । —दसदोख

६ गमन कर जाना, चले जाना ।

उ०—१ विणजारौ माया को लोभी, साझ पड्या वो लद जासी कोरी-कोरी टीबड्या ढळ जासी । —लो गी.

उ०—२ विणजारी ए हस हस बोल ताडौ लद जासी ।

—लो. गी.

७ अधिक भार या दायित्व से दबना ।

लदणहार, हारौ (हारी), लदणियौ—वि. ।

लदियोड़ौ, लदियोडौ, लद्योड़ौ - भू का कृ. ।

लद्दणौ, लद्दबौ, लद्धणौ, लद्धबौ, —रू. भे. ।

लदपड़ौ–स. पु.—लम्बे कानो वाला ।

लदाऊ–वि.—लादने वाला ।

सं पु—लदाव, भराव ।

लदाड़णौ, लदाड़बौ—देखो 'लदाणौ, लदाबौ' (रू. भे.)

लदाड़णहार, हारौ (हारी), लदाड़णियौ—वि० ।

लदाड़िओड़ौ, लदाड़ियोड़ौ, लदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लदाड़ीजणौ, लदाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लदाड़ियोड़ौ—देखो 'लदायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लदाड़ियोड़ी)

लदाणौ, लदाबौ-क्रि स. [लदणौ या लादणौ क्रि. का. प्रे. रू.] १ भार या वजन से युक्त कराना।

२ भारी वस्तुओं को वाहन आदि पर रखाना।

३ किसी वस्तु से परिपूरित, पूर्ण या युक्त कराना, आच्छादित कराना।

४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु को रखाना या बोझ के रूप मे पटकवाना।

५ व्यतीन करवा देना।

लदाणहार, हारौ (हारी), लदाणियौ—वि.।

लदायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लदाईजणौ, लदाईजबौ—कर्म वा.।

लदाड़णौ, लदाड़बौ, लदावणौ, लदावबौ – रू भे.।

लदायोड़ौ–भू का कृ. —१ भार या वजन से युक्त कराया हुआ. २ भारी वस्तुओ को वाहन आदि पर रखाया हुआ. ३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण कराया हुआ, आच्छादित कराया हुआ. ४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु को रखाया या बोझ के रूप मे पटकवाया हुआ ५ व्यतीन किया हुआ, कालातीत किया हुआ। (स्त्री. लदायोडी)

लदारौ–स. पु —गुदा-द्वार।

उ०—इतरौ नाहरी सबद सुणितममी पूछ पटकि घरती मू मूडौ लगाय उछळनै पडं, तिसै ल्हैस छोडी। तिका मामी टीकै लागी नै **लदारा** कानी पार उतरी। —जगदेव पवार री बात

वि —लदने वाला।

लदाव–स. पु.—१ लादने की क्रिया या भाव।

२ बोझ, भार।

उ० –१ लसै प्रताव तावदै **लदाव** को लदावणी सदैव बेरि मीच बीच मीच को सदावनी। – ऊ. का.

३ छत पाटने की एक क्रिया जिसमे बिना धरन या कडी के ईट या पत्थर की जाडाई की जाती है।

लदावणौ–वि. (स्त्री. लदावणी)—लदाने वाला।

उ०—लसे प्रताव तावदे लदाव को **लदावणी**, सदैव बैरि मीच बीच मीच को सदावणी। भिरै अभित्ति भित्ति को सबुज्ज को भवावणी, बिना प्रस्वेद वित्त को कुरोर हा कमावणी। —ऊ. का.

लदावणौ, लदावबौ—देखो 'लदाणौ, लदाबौ' (रू. भे)

उ०—१ सूता सग्रिया सुख भर नीद, बाहर हेलौ, भवर कुण मारियौ। ओ छै गोरी रैबारी रौ पूत, करहा **लदावण** हेलो मारियौ। —लो. गी.

उ०—२ काती भळै दांती फेरी, लासू वन रा वाढता। झाड़ जुगत लादां **लदावै**, ढिगला टौकी काढता। —दसदेव

उ०—३ बिणजारा रै, लोभी जै मैं होती थारै साथ, गोडो दे'र **लदावती**, बिणजारा रै। बिणजारी ए लोभण तोड़यौ वनणियै रौ रूख तोड सती वा होय रही। —लो. गी.

लदावणहार, हारौ (हारी), लदावणियौ—वि.।

लदाविओड़ौ, लदावियोड़ौ, लदाव्योड़ौ—भू का' कृ.।

लदावीजणौ, लदावीजबौ—कर्म वा.।

लदावियोड़ौ—देखो 'लदायोडौ' (रू. भे.) (स्त्री. लदावियोडी)

लदियोड़ौ-भू. का. कृ—१ भार या वजन से युक्त हुवा हुआ. २ भारी वस्तुओ का वाहनो आदि पर रखा हुआ. ३ किसी वस्तु से परिपूरित, पूर्ण या युक्त हुवा हुआ ४ किसी व्यक्ति पर भारी वस्तु से दबा हुआ. ५ व्यतीत या कालातीत हुवा हुआ. ७ अधिक कार्य-भार या दायित्व से दबा हुआ.

(स्त्री. लदियोडी)

लद्दणौ, लद्दबौ—देखो 'लदणौ, लदबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हुओ नगारौ दूसरौ, भेर भणंकै सद्द। सब आतुर जण दळ सकळ, करण मयदा लद्द। —रा. रू.

उ०—२ सिलह सदूक सलीनै वद्दं, लद्दं ऊट चलाए गिद्दं। लारोलार कतारा हल्ली, काती जाण कुरजभा चल्ली। —गु. रू ब.

लद्दणहार, हारौ (हारी), लद्दणियौ—वि०।

लद्दिओड़ौ, लद्दियोड़ौ, लद्द्योड़ौ भू० का० कृ०।

लद्दीजणौ, लद्दीजबौ—कर्म वा०।

लद्दियोड़ौ—देखो 'लदियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लद्दियोडी)

लद्दू–वि.—वह पशु जिस पर माल लादा जाता है।

उ०—ठाकर सदा दो दो ऊट राखतौ आयौ। एक मोटो **लद्दू** ऊट अर दूजोडो कवळो पागळ। —रातवासौ

लद्ध–वि.—१ मुग्ध, मोहित।

उ०—१ अकबर रत्ता राग सू रग त्रिया रस **लद्ध**। जौं उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निम अद्ध। —रा. रू.

[स. लब्ध] २ मिला हुआ।

रू भे.—लिद्ध

लद्धणौ लद्धबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू भे)

उ०—१ या अक्खै 'जगपत्ती', छत्री उद्धार धार तीरत्थे। सो **लद्धौ** अवसाणी, सद्धौ धीर वीर 'चतुरेस'। रा. रू.

उ०—२ **लद्धा** भोग बारगना धूरजटी माळ **लद्धा**, धापै चडी स्रोण **लद्धा** माखै धिन्नो धिन्न। घडा भार गोम **लद्धा** बावनै आहार **लद्धा** रामतेज भाम **लद्धा** दूमरै 'रतन्न'।

—राव सत्रसाळ री गीत

२ देखो 'लदणी, लदबौ' (रू. भे.)

लड्डणहार, हारौ (हारी), लड्डणियौ—वि.।

लड्डियोड़ो, लड्डियोड़ौ, लड्ड्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लड्डीजणौ लड्डीजबौ—भाव वा.।

लद्धियोड़ौ—देखो 'लाधियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लदियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लद्धियोडी)

लधणौ, लधबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

लब्भणौ लब्भबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीछड़तां ही सज्जणां, क्यांही कहण न लब्भ। तिण वेळा कठ रोकियउ, जांणक सिंधी सब्भ। —ढो. मा

उ०—२ ढोला मारवणी मुई, तइ सारडी न लब्भ। दीवा-केरी बाटि जिम, खोडी-खोडी दब्भ। ढो. मा

लप—स. स्त्री—१ अगुलियो व अंगूठे को मिलाकर गहरी की हुई हथेली, करतलपुट, आधी अंजली, पसर।

२ उतनी वस्तु जितनी उक्त एक सपुट मे आती हो।

उ०—१ बसु पूंगलपति रोकियौ बावळा, दियै लप चावळा त्रास देखै। आप जद पावडा दिया ऊतावळा, मावळा करी जद राव सेखै। —सेतसी बारठ

३ किसी लचीली छड़ी या बेंत को हिलाने से उत्पन्न शब्द।

४ बरछी तरवार आदि की चमक व गति।

५ ध्वनि विशेष।

मुहा.—लप-लप करणौ—बीच-बीच मे बोलना।

क्रि. वि.—१ शीघ्रता से।

ज्यूं—म्हो तो लप देतीरौ उठग्यौ।

उ०—१ मिरचा जांण मलपिया, लप चीलो लाई। 'राधा' 'वाधा रिण रिहा, रिण तेग रचाई। —वी भा.

उ०—२ भटियांणी तो जांणै इणरी ई बाट न्हाळती व्है, बोली बोली लप बहीर व्हैगी। —फुलवाडी

रू. भे—लपक, लफ, लिप, लुप

लपक—सं. स्त्री—१ चमक, कांति।

२ देखो 'लप' (रू भे.)

लपकणौ, लपकबौ—क्रि.अ.—किसी वस्तु की प्राप्ति हेतु सहसा उठकर जाना, झपटना, लपकना।

उ०—१ वो जाट पगरखियां रै तैल चुपड़ण सारू थोबली रै गळै बैठौ ई हो के कुत्तौ लपक नै चार सोगरा उचकाय लिया। —फुलवाड़ी

उ०—२ वो उण नै सैंच र भूंपा में लिजावणौ चावै हो, पण रभा एक जोर री झटको दियौ अर खट्ट करता हाथ छुडाय दियौ हाजरियौ काती महीना रा कुत्ता ज्यूं लपक्यौ पण नजीक आवतां ईज रभा उणरा मूडा पर थच्च कर नै थूक दियौ। —रातवासौ

२ शीघ्रता से जाना, आगे बढना।

३ तेजी से आना

उ०—त्रिलोक लागी आवडी, चाली ठडी वाय। अरक उगण दिस ऊगियौ, लपकी पाछी लाय। —लू

लपकणहार, हारौ (हारी), लपकणियौ—वि.।

लपकियोड़ो, लपकियोड़ौ, लपक्योड़ौ—भू का कृ.।

लपकीजणौ, लपकीजबौ—भाव वा.।

लपकाणौ, लपकाबौ—रू. भे.

लपकाड़णौ. लपकाड़बौ—देखो लपकाणौ, लपकाबौ' (रू. भे.)

लपकाड़णहार, हारौ (हारी), लपकाड़णियौ—वि.।

लपकाडीओड़ो, लपकाड़ियोड़ौ, लपकाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लपकाडीजणौ, लपकाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लपकाडियोड़ौ—देखो 'लपकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लपकाडियोडी)

लपकाणौ, लपकाबौ—क्रि. स.—१ खाना

रू भे लपकाडणौ, लपकाडबौ, लपकावणौ, लपकावबौ

२ देखो 'लपकणौ, लपकवौ' (रू. भे)

उ०—१ झपटी नह आम्र झबकाई, लेगी नह लपकाई नै। लख लागत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह आई नै। —ऊ का.

लपकाणहार, हारौ (हारी), लपकाणियौ—वि।

लपकायोड़ौ—भू का कृ.।

लपकाईजणौ, लपकाईजबौ—कर्म वा./भाव वा.।

लपकावणौ, लपकावबौ—देखो 'लपकाणौ, लपकाबौ' (रू. भे.)

उ०—लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा सीच उठदा है। चेली चोळा मन मोळा मे, रोळा मे रुठदा है। —ऊ. का.

लपकावणहार, हारौ (हारी), लपकावणियौ—वि.।

लपकाविओड़ो, लपकावियोड़ौ, लपकाव्योड़ौ—भू का. कृ।

लपकाईजणौ, लपकाइजबौ—कर्म, भाव वा.।

लपकौ—सं. पु—बीच बीच मे अधिक बोलने की क्रिया, वाचालता।

उ०—राजाजी चिडता थका कह्यौ, थू लपका मत कर। दीवांण वणिया पै'ली घणी आ ल लडाई तो माथा री नसां तिड जावैला। —फुलवाडी

क्रि. प्र.—करणौ

रू. भे.—लपूको

२ बडा ग्रास।

लपड़—देखो 'लप्पड' (रू. भे.)

लपड़कनौ, लपड़कन्नौ—वि. (स्त्री. लपड़कनी)—लम्बे कानो वाला।

लपड़ौ —देखो 'लफड़ौ' (रू. भे.)

लपचप-सं. स्त्री.—१ बीच-बीच मे व्यर्थ बोलने की क्रिया या भाव।

२ चंचलता।

क्रि. प्र.—करणी

रू. भे.—लपझप

लपचड़ौ, लपचेड़ू, लपचेड़ौ—देखो 'लफड़ौ' (रू. भे)

उ०—१ पैली बै: बिहाल की बात नै डाढी चौखी बतावै, जिका ही पछै बी बात री माड़ी चुगली करण लाग ज्यावै। दुनिया रौ इसो धारौ है, इसी रीत है। जगती रा झूठा जाळ है, पापा रा लपचेड़ू पपाळ है। —दसदोख

उ०—२ ब्या 'रा वेगरणी, बिचावळा, रुळपट, लपचेड़ू भर जार भायेला मोदू पटावै तथा खूब खावै पीवै है। —दसदोख

लपचोळी, लपचोली-वि.—लालची, लोभी।

लपझप-क्रि. वि.—१ लालटेन या विद्युत पिंड के अपने आप बुझते समय होने वाली क्रिया।

२ देखो 'लपचप' (रू. भे)

लपट-स. स्त्री.—आग दहकने पर जलती हुई वायु का उठने वाला स्तूप। आग की लौ, अग्नि-शिखा।

उ०—लपटां भरता वासदी नै ठारै जेडौ सी पड़न लागौ। —फुलवाडी

२ दीप्ति, कान्ति, शोभा।

उ०—अंग २ मे छिब री लपटां ऊपटै अछेह, पातली निराट तौ पिण लागै समर सी देह। —र. हमीर

३ प्रभाव, असर।

उ०—बात मुदौ सधियां बिगर, लागै लपट न लेस। डहकै न वित्त डुळावज्यौ, श्रौ इणमे उपदेस। —र. हमीर

४ तलवार (अ मा.)

५ वायु का झोका।

६ गधयुक्त वायु का झोका।

उ०—आगै देखै तौ नीबौ सिवालोत सात-बीसी सांइना री साथ सू झूलै छै। तिकै केवड़ा, चपेल, अरगजा री पाणी माहै लपटां आवै छै। केसर रा रग सू पांणी बदळ गयौ, रग फिर गयौ छै। —वीरमदे सोनगरा री बात

७ चमक।

उ०—लछीरा चहुन घण बीज वाळी लपट। क्रोध ममता नता मूढ तज रै कपट। —र. ज. प्र.

लपटणौ, लपटबौ-क्रि अ.—१ किसी एक चीज का दूसरी चीज के चारो तरफ इस प्रकार चिपकना, सलग्न होना कि आसानी से अलग न हो सके।

उ०—सळीयल वाग सिरूज, वीच सरसाविया। सबै वसंत नीसांण, दळा दरसाविया। पोहपा सुगध अपार, लपटि तर वांम है, परिहां कै सुरपुर कैलास, मदन रति धांम है। —पना

२ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ कटै सिर सूर जूटै धड़ केक, उभै हुय टूक पड़त अनेक। पड़ै पग हाथ धरा लपटंत, किळा किर राखस बाळ करत। —सू. प्र.

उ०—२ वाइ पंखरा जोरसू नीला घास धरती सूं लपट नै रहिग्रा छै। आसमान रै फेर। जितरा जिनावर चिड़ी कमेडी झाट मांहि आवै छै। तितरा झपटा सूं मारिश्रा जावै छै। —रा. सा. स.

३ आलिंगन करना।

४ लिप्त होना।

उ०—१ अधर कळी मे बैस करि, भवरौ रह्यौ लपटि। जनहरीया जब जीवको, सासो गयो समटि। —अनुभववांणी

५ सलग्न होना।

उ०—ग्रैसै छाया विरख सू, हरीया रही लपटि। जैसै माया ब्रह्म सु, कैसै जाय विछटि। —अनुभववांणी

लपटणहार, हारौ (हारी), लपटणियौ—वि०।

लपटिओड़ौ, लपटियोड़ौ, लपट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लपटीजणौ, लपटीजबौ—भाव वा०।

लिपटणौ, लिपटबौ—रू० भे०।

लपटाड़णौ, लपटाड़बौ देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लपटाड़ियोड़ौ—देखो लपटायोडौ' (रू भे,)

(स्त्री लपटाडियोडी)

लपटाणौ लपटाबौ-क्रि स.—१ चिपकाना, लेप कराना।

२ किसी एक चीज का दूसरी चीज पर चारो तरफ इस प्रकार चिपकाना, लिपटाना या संलग्न करवाना कि आसानी से अलग न कर सके।

३ स्पर्श कराना, छूआना।

४ आलिंगन कराना।

लपटाणहार, हारौ (हारी), लपटाणियौ—वि०।

लपटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लपटाईजणौ, लपटाईजबौ - कर्म वा०।

लपटाड़णौ, लपटाड़बौ, लपटावणौ, लपटावबौ, लिपटाड़णौ, लिपटाड़बौ, लिपटावणौ, लिपटावबौ—रू० भे०।

लपटायोड़ौ—देखो 'लिपटायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लपटायोडी)

लपटावणौ, लपटावबौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लपटावणहार, हारौ (हारी), लपटावणियौ—वि.।

लपटाविओड़ौ, लपटावियोड़ौ, लपटाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लपटाबीजणो, लपटाबीजबो—कर्म वा. ।

लपटाबियोड़ो—देखो 'लपटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री लपटाबियोडी)

लपटो—स. पु.—१ आटे को घृत से सेंक कर गुड या शक्कर और पानी के संयोग से बनाया हुआ पेय पदार्थ ।

२ बाजरी के आटे को सेंक कर बनाया गया तरल पेय पदार्थ ।

लपणो, लपबो—देखो 'लपकणो, लपकबो' (रू. भे.)

लपणहार, हारो (हारी), लपणियो—वि० ।

लपिओड़ो, लपियोड़ो, लप्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लपीजणो, लपीजबो—भाव वा० ।

लपतरो—स पु.— मास सहित त्वचा का टुकडा ।

उ०—पण था पूगी-पूगी जितरै तौ एक तरवार ठाकर री भेंजो फोड'र कनपडा री **लपतरो** उखेलती खाधा तक आय पूगी ।

—रातवासो

२ देखो 'निगतर' (रू. भे.)

लपताछिपता—लुकना, छिपना ।

उ०—घर मडण आत रनै गमियो, काळजै भड ऊकळतो कमियो। लपता छिपता सेह जाण लिया, अतरै समरू खळ ओळखिया ।

—पा. प्र.

लपतोळणो, लपतोळबो–क्रि. अ.—लथपथ होना ।

उ०—वो दोडण री मन करियो पण पग तौ ऊठै ई नी । धग धग लोई सूं उणरी मूडो **लपतोळीजगो** । —फुलवाडी

क्रि. स —२ लथपथ करना ।

लपतोळणहार, हारो (हारी), लपतोळणियो—वि ।

लपतोळिओड़ो, लपतोळियोड़ो, लपतोळयोड़ो—भू. का. कृ ।

लपतोळीजणो, लपतोळीजबो—कर्म वा./भाव वा. ।

लपतोळियोड़ो–भू का कृ.—१ लथपथ या तरबतर किया हुआ २ लथपथ या तरबतर हुवा हुआ ।

(स्त्री. लपतोळियोडी)

लपसड़–वि —फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण ।

लपन–स. पु [स.] १ मुह, मुख । (ह. नां. मा.)

२ भाषण, कथन ।

लपना–स पु [स. लपन] जीभ, जिह्वा ।

उ०—जीभडली घण बरजी न जाय, इब घण बारी ए गोरी, थे बस राखो ए **लपना** आपकी जी राज । —लो गी.

लपर–वि.—वाचाल, बातूनी ।

उ०—खीच मुफत री खाय, करडावण डूंकर घणी । लपर घणो लपराय, राड ऊचकसी राजिया । —किरपाराम

अल्पा.—लपरो

लपरक–स. पु.—१ सर्प आदि का मुह से जीभ बार-बार निकालने की क्रिया ।

२ बार-बार बीच मे बोलने की क्रिया ।

३ निरर्थक बात कहने का कार्य ।

४ जीभ से चाटने से उत्पन्न ध्वनि ।

लपरको–स. पु. (ब.व. लपरका) १ बार-बार बीच मे बोलने की आदत ।

२ जीभ से चाटने की क्रिया ।

उ०—१ थू इण बात री तूमार देखणी चावै तौ रात रा सूतोड़ा रा काळजा माथै जीभ रा दो-तीन **लपरका** लेजै । —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—लेणो ।

रू. भे —लपळको ।

लपरणो, लपरबो–क्रि अ.— १ जिह्वा का बार-बार बाहर निकलना व मुंह मे जाना ।

२ जीभ से चाटना ।

लपरणहार, हारो (हारी), लपरणियो—वि० ।

लपरिओड़ो, लपरियोड़ो, लपरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

लपरीजणो, लपरीजबो—भाव वा० ।

लपराई–स स्त्री —१ वाचालता, लबारपना ।

उ०—अदतार दता दीठा अवर, बोह करता बकवाद रै । मोकमा कमध मोटा मिनख, **लपराई** नै दाद रै —अरजुणजी बारठ

२ चापलूसी ।

उ०—तरै जगदेव कहै, काई ज्यादा दीठी हुवै तौ कहूं नै भूठा **लपराई** करणी आवै नही । —जगदेव पंवार री बात

लपराणो, लपराबो–क्रि स —१ बार-बार बीच मे बोलना ।

२ सर्प आदि का बार-बार जीभ निकालना व वापिस मुह मे डालना ।

३ निरर्थक बात कहना ।

उ० —खीच मुफत रो खाय, करडावण डूकर घणी । लपर घणो **लपराय**, राड ऊचकसी राजिया । —किरपाराम

लपराणहार, हारो (हारी), लपराणियो—वि. ।

लपरायोड़ो—भू. का. कृ. ।

लपराईजणो, लपराईजबो—कर्म वा ।

लपरो— देखो 'लपर'

उ०—ओछी बोली हाळै पंजाब मे बडणी पडियो । बठै एक जमी जगा अर पाती-पोळी हाळै **लपरै** सै लाले री छोरो दाय आयो ।

—दसदोख

(स्त्री. लपरी)

लपळको—देखो 'लपरको' (रू. भे)

उ०—पछै कोतवाळ घणी वाद करयौ तौ लक्खू नै वारां मूंडा सांम्ही पग करणी ई पड़ियौ। कोतवाळ निसक लपळका लेय लेय उणरी पगथळी जीभ सूं चाटण लागौ। —फुलवाड़ी

लपलप-सं. स्त्री.—१ बार बार बोलने की क्रिया।

२ जीभ से पेय पदार्थ पीने वाले जानवरो के मुख से उत्पन्न ध्वनि।

लपलपाट—१ लपलपाने की क्रिया या भाव।

२ किसी चमकीली वस्तु को हिलाने से उत्पन्न चमक।

३ व्यर्थ की बकवाद, बकझक।

लपसी—देखो 'लापसी' (रू. भे.)

उ०—१ लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा सीच उठदा है। चेली चेलां में मन मोळां में गोळा मे रूठदा है। —ऊ. का.

लपाक-क्रि. वि.—शीघ्रता से, तुरत।

उ०—लुळि लुळि लपाक झौटा लिवै, ऊचा नीचा आवता। नमी नमी नाक अमली निलज, जमी लगावै जावता। —ऊ का

लपावार—१ वह वस्त्र जिसमे सुंदर चमकीला लप्पा लगा हो।

उ०—१ गोरै कचन गात पर, अगिया रग अनार। लहगौ सोहै लचकतौ, लहरयौ लपावार। —र हमीर

रू. भे.—लपैदार, 'लप्पेदार', लफादार।

लपालप, लपालपी-क्रि वि.—शीघ्रता मे, झटपट, तेज गति से।

उ०—थोड़ी ताळ ताई सगळा मुखिया आल्या मीचनै बैठा रह्या तौ वौ लपालप सगळा झूंपा रै लाय लगाय दी। —फुलवाडी

२ देखो 'लपलप'

उ०—सगळै पूछण आवता पण टुणटुणी बजाय र टरकत। ग्यान रा आंधीटाण हुयोडा हा। परायै दुःख मे पडनै री चेतना होती, औ की हीनी। खाली मूडै री लपालपी ही। —वरसगाठ

लपी—देखो 'लप्पी' (अल्पा. रू. भे)

लपूकौ—देखो 'लपकौ' (रू. भे.)

लपेक-वि. [लप+एक] करीब एक पसर में समा जावै इतना।

लपेट, लपेटण-सं. स्त्री—१ लपेटने की क्रिया या भाव।

२ लपेटने योग्य पदार्थ का एक चक्कर, फेरा या बधन।

३ वह निशान जो किसी वस्तु को लपेटते या तह करते समय उसके मोड़ पर बन जाता है।

४ ऐंठन, बल, मोड।

५ घेरा, परिधि।

६ उलझन, फंसाव, पकड, बंधन, चक्कर।

७ कुश्ती का एक पेंच।

लपेटणी-सं. स्त्री.—लपेटन नामक जुलाहों की लकड़ी।

लपेटणौ, लपेटबौ-क्रि. स.—१ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारों ओर घुमाकर इस प्रकार बांधना कि उसका कुछ या पूर्ण भाग ढक जाय, परिवेष्टित करना।

उ०—म्हारो माखड़ो रमै छै सिकार, सघन वन झगरा अलबेलियौ हाथ बंदूक लपेटै जामगी, कमर कसी तरवार। —रसीलै राज रा गीत

२ कपडा-कागज आदि मे बन्द करना, ढकना, आवेष्टित करना।

उ०—ताहरा सिगळा सुणायो। कह्यौ जी कपडै लपेटि नाखि द्यौ। ताहरा लपेटि नै जगल मे नाखि आया। —देवजी बगड़ावत री बात

३ घेर कर रखना, चारों ओर से घेराव करना।

उ०—गज मोत्यां री दामणी, मुखडै सोभा देत। जांणै तारा पंत मिळ, राख्यौ चद लपेट। —अज्ञात

४ बणाव, श्रृंगार कराना।

उ०—थाका हस री टोळी, निवायै री होळी, घणी हाट नै चीरमां लपेटी थकी विराजमान होइ नै रही छै। —रा. सा. स.

५ काबू मे करना, वश मे करना।

६ उलझन या झझट मे फसाना।

७ आच्छादित करना, ढकना।

उ० वरियाम सिलह पोमा विचै, भुज्ञ 'अभै' नभ भेटियौ। तदि जाण भाण ग्रीखम तणौ, काळी घटा लपेटियौ। —सू. प्र.

८ किसी वस्तु का लेप करना, पोतना।

उ०—मैंडी महल चिणावतै, ऊपरि कळी लपेट। चिणत चिणावत ऊठिगै, लगी काळ की फेट। —अनुभववाणी

लपेटणहार, हारौ (हारी), लपेटणियौ—वि.।

लपेटिओड़ौ लपेटियोड़ौ, लपेटयोड़ौ—भू. का. कृ.।

लपेटीजणौ, लपेटीजबौ—कर्म वा.।

लपेटमौं-वि.—१ जो लपेट कर बनाया गया हो।

२ जिसके ऊपर कुछ लपेटा हो।

३ लपेटने योग्य।

४ घुमावदार या चक्करदार, गूढ़ व्यंग्य।

लपेटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारो ओर घुमाकर इस प्रकार बांधा हुआ कि उसका कुछ अंश या पूर्ण भाग ढक जाय. २ कपड़ा कागज आदि में बन्द किया हुआ, ढका हुआ, आवेष्टित किया हुआ ३ काबू मे किया हुआ, वश मे किया हुआ. ४ चारो ओर से घेराव किया हुआ. ५ उलझन या झंझट मे फसाया हुआ. ६ किसी वस्तु का लेप किया हुआ. ७ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ. ८ श्रृंगार कराया हुआ.

(स्त्री लपेटियोडी)

लपेटियौ—देखो 'लपेटौ' (रू. भे)

उ०—आगै धरती साम्ही जोवै नै वीरमदे ने हाथी लपेटीया में छै। तिसै झरोखै बैठ हाथ पसार नै वीरमदे ने ऊचो लीधौ।
—वीरमदे सोनगरा री बात

लपेटौ-स पु.—१ दाम्पत्य-सूत्र बंधन।

२ सिर पर लपेटा जाने वाला कपडा, साफा, पगडी।

उ०—१ इसी भात बरस पाच सोळना लागा। माथै केसा री झूलो रहै नै ऊपरा लपेटौ बाधै। वागो, चिलकता बगतर पैरै।
—जखडा मुखडा भाटी री वात

उ०—२ मत करै सोच सोढी महळ, सीस लपेटौ सूंपियौ। स्रुग लोक साथ रेसा सदा, कमधज चढता यूं कियौ।
—बख्तावरजी मोतीसर

३ टोप के नीचे बाधने का कपडा।

उ०—जुध चढियौ जगमालदे, कर टोप लपेटौ। बगतर कूटा बीड़ीया, धक पोरस घेटौ।
--वी मा

४ षडयन्त्र, जाल।

५ चक्कर, दाव।

उ०—पण सेठाणी पाछौ कोई जबाब दियौ नही, सायद उघीज गई ही। सेठ ई उठ्या, बत्ती बुझाई, गाळा मे नाळाछोड कियौ अर रणछोडा नै लपेटा मे लेवण री तरकीबा सोचता-सोचता सोयग्या।
—रातवासौ

मुहा. लपेटा मे आवणौ=चक्कर या धोखे मे आना।

लपेटा में लैणौ=चक्कर मे फसाना।

वि.—लपेटा हुआ, बाधा हुआ।

रू. भे —लपेटियौ

लपैदार—देखो 'लपादार' (रू भे.)

उ०—सखि लाल चुनरिया चमकै हरी हरी कचुकिया तन पै, लहैंगा गुल अनार तापर लपैदार नथनी कटसिरी चुरिया चमकै तैसै ही नूपर चरनन झमकै।
—रसीलैराज री गीत

लपोड़, लपोड़ौ, लपोडौ, लपोळ-वि.—मूर्ख, नासमझ।

उ०—१ धन री मोद आयग्यौ, मनडौ उधाड व्यायग्यौ। जाट पूजतौ आदमी, लपोडौ'र जिद चेतै आयग्यौ।
— दसदोख

लपौ—देखो 'लप्पौ' (रू भे)

उ०—साळूडौ मंगाद्यौ सागानेर रौ, अजी रग भीना राजाजी आगण कटारी भात अनोखो, लाग्यौ छै लपा चहु फेर रौ।
—रसीलै राज री गीत

लपौलप-क्रि. वि.—१ शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी।

उ०—सूरज री खीझ सू डरता सगळा तारा लपौलप वडा होवण लागा जकौ व्हैताई गिया।
—फुलवाडी

लप्पड़-सं. स्त्री.—हथेली से किया हुआ आघात, थप्पड, तमाचा।

रू भे.—लपड।

लप्पादार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

लप्पी-स स्त्री —१ महीनतम, रजकण या धूलि।

२ देखो 'लप्पौ' (अल्पा., रू भे.)

लप्पेदार—देखो 'लपादार' (रू. भे)

लप्पौ-स पु —चाँदी या सोना के तार (गोटा) की पट्टी जो कपडे के किनारे पर लगाई जाती है।

रू. भे —लपौ।

अल्पा.,—लपी, लप्पी।

लफंगौ-वि [फा लफग] १ दुश्चरित्र, हीन।

२ लपट, व्यभिचारी।

३ लुच्चा, बदमाश।

उ०—बीन रै बाप री एक साथी बराती लफंगौ बोल्यौ—दायजौ कठै मेल्यौ है?
—दसदोख

४ चोर, लुटेरा।

उ०—म्है तौ धोळौ-धोळौ दूध जाण नै भरोसौ कर लियौ। औ तौ साचाणी दूध ई निकळियौ जे कोई लफगौ व्हैतौ तौ कैडोक माहेरो सजतौ।
—फुलवाड़ी

लफ—देखो 'लप' (रू. भे.)

लफड़ौ-स पु —१ बधन।

उ०—मिनख रै हीयै ओळू री लफडौ नी रैवै तौ कित्तौ सावळ। आ ओळू तौ जाणै अस ई काढ न्हाकैला।
—फुलवाड़ी

२ सासारिक झंझट, प्रपंच।

उ०—बेटा धन री जड इणी भात हरी व्हिया करै। धन रै सिवाय मिनख रा सै लफड़ा त्रिथा है।
—फुलवाडी

३ भूत प्रेत, शैतान।

४ आफत, झल्लत, बला।

रू. भे लपडौ, लपचडौ, लपचेडू, लपचेडौ, लफरौ

लफलफणौ, लफलफबौ—देखो 'लपकणौ, लपकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साड टोरड्या टोड, कोड कर काट किंटाळी। लफ लफ लेत बुगाळ, सूत खेजडला डाळी।
—दसदेव

उ०—२ तिकौ पण बाळक री तरह गोडा रै ही बळ ध्यावै छै। किनरा हैका का तिग टूट गया छै। तिकै रिगसता थका लफ लफ कोट रै जाय जाय कटारी लगावै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

लफज—देखो 'लफ्ज' (रू. भे.)

लफटंट—देखो 'लेफ्टीनेंट' (रू. भे)

लफटंटगवरनर—देखो 'लेफ्टीनेंटगवरनर' (रू. भे.)

लफटंट जनरल—देखो 'लेफ्टीनेंट जनरल' (रू. भे.)

लफरौ—देखो 'लफड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रै तौ ग्रपा मिनखा रै सौ **लफरा** है, दूजा जीवां नै ग्रैडी ऊंधी वाता सू की लेणौ देणौ नी। —फुलवाडी

उ०—२ दौडे छानी दूतियां, **लफरा** जिण रै लाख। ग्राप तणी कर ग्रंजसियौ, रसियौ पडदे राख। —बां. दा.

लफादार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

लफ्ज—सं. पु. [ग्र लफ्ज] १ शब्द, बोल।

२ बात।

३ वचन।

रू. भे.—लफज, लबज, लब्ज।

लबकणौ, लबकबौ—क्रि. ग्र.—भक्षण करना, खाना।

उ०—१ ऊंचै मुख सू ऊट, चूट चट लूंगा **लबकै**। गलर गलर गटकाय, डोलती डागा डबकै। —दसदेव

उ०—२ बीज भबकै, मेह टबकै, हीया दबकै, पाणी भभकै, नदी उबकै बनचर **लबकै**, ग्राभौ ग्रबकै। —रा. सा. सं

लबकणहार, हारौ (हारी), लबकणियौ—वि.।

लबकिग्रोड़ौ, लबकियोड़ौ, लबक्योड़ौ—भू का. कृ।

लबकीजणौ, लबकीजबौ—कर्म वा.।

लबकियोड़ौ—भू का. कृ.—भक्षण किया हुग्रा खाया हुग्रा।

(स्त्री. लबकियोडी)

लबकौ—सं. पु.—मोटा ग्रास, लौंदा।

उ०—दही रायतै छोक, मोकळी निमभर देवै। ललचावै सुरराज, भाज लप **लबकौ** लेवै। —दसदेव

२ ग्रानन्द, रस।

लबड़काणौ, लबड़काबौ—क्रि स.—१ परेशान या तंग करना।

२ परिश्रम कराना।

३ फटकारना, दुतकारना।

लबड़काणहार, हारौ (हारी), लबड़काणियौ—वि.।

लबड़कायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लबड़काईजणौ, लबड़काईजबौ—कर्म वा.।

लबड़कावणौ, लबड़कावबौ—रू. भे.।

लबड़कायोड़ौ—भू. का. कृ.—परेशान या तग किया हुग्रा. २ परिश्रम करवाया हुग्रा. ३ फटकारा हुग्रा, दुत्कारा हुग्रा।

(स्त्री. लबड़कायोड़ी)

लबड़कावणौ, लबड़कावबौ—देखो 'लबडकाणौ, लबडकाबौ' (रू. भे.)

लबड़कावणहार, हारौ (हारी), लबड़कावणियौ—वि.।

लबड़काविग्रोड़ौ, लबड़कावियोड़ौ, लबड़काव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लबड़कावीजणौ, लबड़कावीजबौ—कर्म वा.।

लबड़णौ, लबड़बौ—क्रि. स.—फटकारना, डांटना।

लबड़णहार, हारौ (हारी), लबड़णियौ—वि.।

लबड़िग्रोड़ौ, लबड़ियोड़ौ, लबड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लबड़ीजणौ, लबड़ीजबौ—कर्म वा.।

लबड़ाक—वि.—वाचाल, बकवादी।

उ०—समर ढिलौ कर साम नूं, लख ग्रावै **लबड़ाक**। मूंछ थकां मूडत जिकै, नाक थका बिण नाक। —बां. दा.

लबड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—फटकारा हुग्रा, डाटा हुग्रा।

(स्त्री. लबडियोडी)

लबज—देखो 'लफ्ज' (रू. भे.)

लबथब—देखो 'लबालब' (रू. भे.)

लबथबणौ, लबथबबौ—क्रि. ग्र.—१ पूर्ण भरा जाना, लबालब होना।

२ डगमगाना, लडखडाना।

उ०—ग्राज ज सूती निसह भरी, प्रिय जगाइ ग्राइ। विरह भुयंगम की डसी, **लबथबती** गळ लाइ। —ढो. मा.

लबथबणहार, हारौ (हारी), लबथबणियौ—वि.।

लबथबिग्रोड़ौ, लबथबियोड़ौ, लबथब्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लबथबीजणौ, लबथबीजबौ—भाव वा.।

लबथबियोड़ौ—भू का. कृ—१ पूर्ण भरा हुग्रा, लबालब। २ डगमगाया हुग्रा।

स्त्री. लबथबियोडी)

लबब—वि.—मुलायम कोमल, नम्र।

उ०—घरती रौ जित्ती बार काळजौ चीरीज वाणियां लागे उत्ती वरी नैपै व्है, साख फळै। उणी भात बादळ रै **लबब-लबब** व्हियां काळजा मे नानी रा बोल ऊगता गिया ग्रर सागै रा सागै फळता गिया। —फुलवाड़ी

लबधणौ, लबधबौ—क्रि. स. [स. लब्ध]—प्राप्त करना, पाना।

उ०—१ रुचक नदी सर परवतै, मुभ, **लब्धइ** मुनि जाय। चैत्य जुहारइ सासता, ग्राणद ग्रग न माय। —स. कु.

उ०—२ पण ग्रपणौ नही पालटै, घरिमी धीरज धार। लाहू हरि **लब्धइ** लह्या, तजिया ढंढण त्यार। —ध. व ग्रं.

लबरौ—देखो 'लपर'

(स्त्री. लबरी)

लबलबी—स. स्त्री.—बदूक, पिस्तौल, तमचा ग्रादि मे लगा वह खटका जिसको खीचने से बदूक का घोडा गिरता है।

रू. भे.—लवलवी।

लबलबो-वि,—किसी तरल पदार्थ से तरबतर ।

लबांजा-सं. पु.—मुसलमान भाटो की एक जात । (मा. म.)

लबाड़ी— देखो लबाळी' (रू. भे)

लबाड—देखो 'लबाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—निरधन उघड तौ मसांण लंभ, खाटरो तौ ही नाग, घणउ बोलइ तौ लबाड बाडली न बोलइ तौ मूंगड । —व. स.

लबादौ-सं. पु. [फा. लबाद] जाड़ो मे पहनने का रूईदार चोगा, • वगला ।

लबायचौ-सं. पु. [फा. लबाच] कुर्ते आदि पर पहनने का वस्त्र विशेष ।

उ०—१ तो ही तद रिणमलां रै घरै इसड़ी वडावड हुती । लबायचौ सिम्राळै जैताजी री मेलियो पहरता ।

—राव मालदे री बात

उ०—२ बहादुरसिघजी रै नागौरी धमाको लवा मे रहतो । लोहरी मूठ रातै नाळ री तलवार गळडबै रहती । अघोडी री गळडबो रहतो । नव पला री मीघी रहतो । दस पला रो लबायचो रहतो । —बा. दा. ख्यात

लबार—देखो 'लबाळी' (मह., रू. भे.)

लबारी, लबाळ, लबाल—देखो 'लबाळी' (रू. भे.)

उ०—१ हम नहिं चले तुमारै घरन को, तुम हो बहुत लबारी । मीरा कै प्रभु गिरधर नागर, चरन कमळ बळिहारी । - मीरा

उ०—२ न करै बहु हास्य लबाल, कलहौ घण् काल । उत्रेली मती करौ ग, दभ नै कदागरौ ए । —जयवाणी

उ० —३ राड निपूतादिक एहवी, दीधी दुरासी रे गाल । भूंडी गाल कुलक्षणी, निस दिन करै लबाल । — जयवांणी

(स्त्री. लबारण)

लबालब-वि. [फा. लब] १ मुह या किनारे तक भरा हुआ, छलकता हुआ ।

रू. भे.—लबचब ।

लबाळी-वि.—१ अधिक बातें करने वाला, वाचाल ।

२ मिथ्यावादी, झूठा, गप्पी ।

रू. भे. —लबाड़ी, लबारी, लबाळ, लबोळ, लबोल, लवाल, लाबाळी, लिबाळी ।

मह.— लबाड, लबार ।

लबूकणौ, लबूकबौ-क्रि. अ.—हरा-भरा होना, लहलहाना ।

उ०—थळ मध्यइ जळ-बाहिरी, कांई लबूकी बूरि । मीठा-बोला घण-सहा, सज्जण मूक्या दूरि । —ढो मा.

लबूकणहार, हारौ (हारी), लबूकणियौ—वि० ।

लबूकिओड़ो, लबूकियोड़ो, लबूक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लबूकीजणौ, लबूकीजबौ— भाव वा० ।

लबूकियोड़ो-भू. का. कृ.— लहलहाया हुआ ।

(स्त्री. लबूकियोडी)

लबूर-स. पु.—नाखूनों से नोचने की क्रिया या भाव ।

क्रि प्र.—भरणौ।

लबूरणौ, लबूरबौ-क्रि. स.—नाखूनो से नौंचना ।

उ०—ग्रेडा अन्याई राजा सूं बदळी नी लिरीजै जित्तै ग्रौ इकळापी सुख म्हनै ठौड ठौड सूं लबूरै । —फुलवाड़ी

२ छीनना, झपटना ।

उ०—थारै की भूडी-भली व्हैगी तौ इण लिछमी नै लोग लबूर लबूर खाय जावैला । —फुलवाड़ी

लबूरणहार, हारौ (हारी), लबूरणियौ—वि. ।

लबूरिओड़ो, लबूररियोड़ो, लबूरयोड़ो—भू का. कृ. ।

लबूरीजणौ, लबूरीजबौ—कर्म वा. ।

लबूरियोड़ो-भू. का. कृ —१ नाखूनो से नौंचा हुआ । २ छीना हुआ ।

(स्त्री लबूरियोडी)

लबोळ, लबोल—देखो 'लबाळी' (रू. भे.)

उ०—ऊंचौ तौ एरंड, खाटरो तोहि नाग, घणौ भोळो लांफु, बहु बोलै तौ लबोळा । घणौ जीमै तौ भूखो थोडौ जीमै तौ अभोगियौ ।

—रा. सा. सं.

लब्ज—देखो 'लफज' (रू. भे)

उ०—पण कसाई री नीच जात, फेर ओरगजेबी बादसाही सो आवा हुवा बहै । सो मुह मू गैर लब्ज बोलिया अर गाय नूं पछाडी ।

—महाराजा पदमसिंह री बात

लब्ध-वि.—१ मिला हुआ, प्राप्त ।

यौ —लब्ध काम, लब्ध-प्रतिठित, लब्धवरण ।

२ कमाया हुआ, उपार्जित ।

३ गणित मे भाग करने पर प्राप्त भागफल ।

४ स्मृति के अनुसार दस प्रकार के दासो मे से एक दास ।

लब्धक-स पु.—१ राजपूतो के ३६ कुलो मे से एक ।

उ०—राजकुली ३६, सूरयवस, सोमवंस, यादववंस, कदब, परमार इख्वाक, चाहुमान, चालुक्य, मोरी, सेलार, सैंधव, बिंदक, चापोत्कट प्रतिहार, लब्धक, राष्ट्रकूट, सक, करवट, कारट, पाल, चांदिल, गोहिल, गुहिल पुत्रक, पान्यपाल, राजपाल, अनग, निकुंभ दघिकर, कालामुह, दापिक, हूण, हरियर, डोसमार । —व. स.

लब्धवरण-स. पु. यौ [स. लब्ध+वर्ण] पंडित, ज्ञानी ।

रू. भे.—लबधवरण, लवधवरण।

लब्धि-सं. स्त्री.—१ प्राप्त होने की अवस्था या भाव, प्राप्ति।

२ लाभ, फायदा।

३ (गणित) में भागफल।

४ शुभ अध्यवसाय तथा उत्कृष्ट तप, सयम के आचरण से तत्त्कर्म का क्षय और क्षयोपशम होकर आत्मा मे उत्पन्न एक विशेष शक्ति जो २८ प्रकार की मानी गई है

उ०—गौतम गणधर गुण निलो, लब्धि तणो भडार। चवदै सौ बावन सहु, नमता जय जयकार। —जयवाणी

रू. भे —लबधि

लब्धिवत-वि. [स.] जिसने लब्धि प्राप्त करली हो।

उ०—कुसल करण श्री कुसल मुणिंद, श्री जिनपदम सूरि सुखकद। लब्धिवंत श्री लब्धि सूरीस श्री जिनचद नमू निस-दीस। —स कु

वि वि.—देखो 'लब्धि'

लब्भणौ, लब्भबौ - देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे)

उ०— १ आलम मोरा ओगुणा, साहिब तूझ गुणाह। बूद-बिरक्खा रेण-कण, थाघ न लब्भो त्याह। —ह र

उ०— २ 'अबर' आपाणी छभा, नीचो बैसि विचार। पारस पार न लब्भ ही, उत्तर पथ अपार। —गु रू ब.

लब्भणहार, हारौ (हारी), लब्भणियौ—वि०।

लब्भिग्रोड़ौ, लब्भियोड़ौ, लब्भ्योड़ौ - भू० का० कृ०।

लब्भीजणौ, लब्भीजबौ—कर्म वा०

लब्भियोड़ौ -देखो 'लाभियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. लब्भियोड़ी)

लभणौ, लभबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे)

उ०—सुणि कहै सुभड मत्री सकल, लडो वडो मो मम लभो। सुण एम वयण 'अगजीत' सुन, अजरायल बोलै 'अभौ'। - सू. प्र.

लभणहार, हारौ (हारी), लभणियौ—वि०।

लभिग्रोड़ौ, लभियोड़ौ, लभ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लभीजणौ, लभीजबौ—कर्म वा०।

लभस-स. स्त्री —१ घोडा बाधने की रस्सी।

२ धन-दौलत।

३ याचक।

लभियोड़ौ-भू का. कृ.—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लभियोड़ी)

लभौ-वि.—१ लाभ, फायदा।

२ मिला हुआ, प्राप्त।

लम्भणौ, लम्भबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे)

उ०—१ मूरख मौलि न जाणियौ, आ ओडा री मत्ति। पदम न लब्भै पदमणी, जसमल नेहि गत्ति। —जसमा ओडणी री बात

उ०—२ पतिसाह नमो पारभयं, सैन असंख्या लम्भयं। इम किया राम प्रारभयं, धूंधलिया धर अम्भय। —गु. रू. बं.

लम्भणहार, हारौ (हारी), लम्भणियौ—वि०।

लम्भिग्रोड़ौ, लम्भियोड़ौ, लम्भ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लम्भीजणौ, लम्भीजबौ—कर्म वा०।

लम्भियोड़ौ—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लम्भियोड़ी)

लमछड-स. पु —१ भाला या बरछा।

२ साग।

३ देखो 'लामछड (रू. भे.)

वि —अधिक लम्बा व पतला।

लमझम —देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)

उ०—और ही झूला रा झूला लमझम करता फूल बाग नूं आवै है लहरिया गावै है। महरो महकै है, डेडरा डहकै है। —र हमीर

लमटंगौ-वि.—लम्बी टागो वाला।

लमतडंग – देखो 'लम्बतडग' (रू भे)

लमेक-क्रि वि [प्र. लम्ह.+रा. एक] कुछ समय तक, क्षण भर।

लय-सं पु.—१ विनाश, समाप्ति।

उ०—करता अकरता त्रिगुण माई, जाग्रत स्वप्न सुसुप्ती ताई। इन तीनो का मन अभिमानी उत्पत्ति थिति लय मनमानी। —सुखरामजी महाराज

२ एक पदार्थ का दूसरे म पूर्ण विलीन होना, समा जाना।

३ अनुराग या लग्न के कारण एकाग्रचित् या मग्न होना।

उ०—सभव को अनुभौ धरि जातै, मिटै ममता समता रस जागै। पाप संताप मिटै तब ही जब, आपसु आपही की लय लागै। —ध. व. ग्रं.

४ किसी कार्य का अपने कारण मे समाविष्ट होना या फिर कारण के रूप मे परिणित हो जाना।

५ सृष्टि का नाश, प्रलय।

६ लोप, विनाश।

७ यमसभा मे उपस्थित एक प्राचीन नरेश।

स. स्त्री —८ सगीत एव कविता मे गति सामञ्जस्य रखने वाला तत्त्व, जो कृत्तियों (कविता-पाठ, गायन नृत्यादि) मे आपेक्षिक उतार-चढाव को नियमित रखते हुए उसे कोमलता, माधुर्य एवं सौन्दर्य प्रदान करता है।

वि. वि.—कविता गीतों (गायन) आदि के स्वर-उच्चारण में जो समय लगता है वही लय है तथा जिसे नियन्त्रित एवं संयम रखने के लिए ताल का सहारा लिया जाता है।

९ गीत की धुन, गाने का स्वर।

१० संगीत में गति के विचार से गाने का ढंग या प्रकार जिसके तीन भेद कहे गये हैं—विलंबित, मध्य, द्रुत।

११ वार्तालाप के समय शब्दों के उतार-चढ़ाव की दृष्टि से बोलने का ढंग या क्रिया, लहजा।

उ०—इतरी सुणता ईज आयतन ठाकर री एक हाथ चट मूछां माथै जाय पूगतो अर जैं माथै जोर देय नै ठाकर लबी लय सूं बोलता जैं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ माताजी री —रातवासो

१२ अवसर, मौका।

रू. भे.—लौ।

लयण—सं. स्त्री. [स. लयन] १ लय होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

२ आराम, विश्राम।

३ विश्राम गृह।

४ गुफा, कन्दरा।

लयता—सं. स्त्री.—१ लय होने की क्रिया या भाव, समाप्ति, नाश।

उ०—सिव सक्ति का सब विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे। इनमे ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे।

—सुखरामजी महाराज

लयनपुन—स. पु. यौ. [स. लयन+पुण्य] जगह या स्थानादि दान मे देने से होने वाला पुण्य। (जैन)

लयलीन—वि. यौ. [स. लय+लीन] १ किसी के प्रेम मे मग्न, लीन, आसक्त।

उ०—माया-जळ-मांहि मच्छरिउ, लागि रहिउ लयलीन। गगा-तटि मूकी गली, हूं मारिसि मन-मीन। —मा का प्र.

२ लगा हुआ, फसा हुआ।

उ०—महारी महारी करि धन मेलवु, लोभ वसे लय-लीन। नरक तणा घर थू छ॒, नवनवा, इणमे मेख न मीन। —ध व ग्र

३ देखो 'लवलीन' (रू. भे)

लया—देखो 'लता' (रू. भे) (जैन)

लयाकत देखो 'लियाकत' (रू भे.)

लरड—१ देखो 'लडड' (रू. भे.)

उ०—अंनदाता, आप किसी विस्वास करोला—इसी ऊंची भ्रेलम के फगत दोय घडी में बेंत-बेंत लाबा बाळ आय जावै। सेवा ज्यू लरड़-लरड बधै। —फुलवाडी

लरड़ती—देखो 'लरडी'

लरड़ियौ—स. पु.—१ भेड का बच्चा।

२ देखो 'लरड़ौ' (अल्पा., रू. भे)

लरड़ी—स. स्त्री.—१ मादा भेड़।

२ लाक्षणिक अर्थ मे अघेड स्त्री के लिए प्रयुक्त शब्द।

मुहा.—१ लरडी बणणौ=कायर बनना, डरपोक बनना।

२ लरडी माथै ऊन कुण छोडै=गरीब का सब शोषण करते हैं।

लरड़ौ—स. पु (स्त्री. लरडी) १ नर भेड।

उ०—क्हा व्हेगी इगरै हाथा न्याव ? भ्रेडी न्याव निवेडण जोग अकल व्हैती तौ तडौ लिया लरड़ियां रै लारै ढरर-ढरर करतौ क्यूं रवडतौ। —फुलवाडी

२ लाक्षणिक अर्थ मे अघेड व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द।

ज्यू —मोटौ सारौ लरडौ व्हियौ है।

अल्पा.,—लरडियौ, लरडियौ।

लरज—स. पु. सितार के छ तारो मे से पाचवा तार।

लरडियौ—देखो 'लरडौ' (अल्पा., रू. भे.)

लरडौ—देखो 'लरडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लरडी)

लराहा—स. पु.—सोलंकी वश के क्षत्रियो की एक शाखा।

(बा दा. ख्यात)

लरियाळ—देखो 'लटियाळ' (रू भे.)

उ०—इसै मे भागेसुर मगायजै छै। सू किण भात छै। केसर री क्यारी दोलळी, वासग-माथा री। थोहर रा बीडा री, भाखर रा खुडा री, भूरै मोर री, काळै पान री आवू रा विहडा री, भमरमार, मिरघमाळ लरियाळ चिडियाळ, चोटडियाळ। —रा. सा स.

लळ—स स्त्री—१ उत्कठा, आशा।

लल—स. स्त्री.—१ अत्यधिक ठडी वायु।

२ बुद्धि विचार।

३ शक्ति का अश।

४ शुभ लक्षण या गुण।

लळक—स स्त्री.—१ लचक, मोच।

२ झुकाव।

उ०—मकोडौ कंवै मा गुड री भेली ल्याऊ, तेरी टागा री लळक तो कंवै ही है। —दसदोख

ललक—स स्त्री—१ गहरी अभिलाषा।

२ लोच, लचक, झुकाव।

३ प्रोत्साहित करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ ललक वीरा ललक भडा महकारीया, धारीया खत्रीवट धड़ै धूरं। कळाधर फाबियौ ईस वाळै कमळ, भुजा यम डाबियौ दुरंग भूरै। —पीरदान आढौ

उ०—२ तौ आरबखा हाथी रै होदै बैठो ललकां करै है वा कवांण कनै है। —द. दा.

४ गायन की तीखी व ऊंची ध्वनि।

उ०—१ लाग सिंधवां ललक, ललक हक बक धूबै खित। करण टूक केविया, रूक रण रहत रूक रत। —गिरवरदान कवियौ

उ०—२ सहनाइन लागी ललक सिंधु सुणवाया। —व. भा.

५ पक्षियों का मधुर कलरव, मीठी ध्वनि।

उ०—घुमड़ै काठळ आय, चढी घनघोर की। ललको कोयल लार, किलको मोर की। —महादान मेहडू

रू. भे.—ललक्क।

लळकणौ, लळकबौ–क्रि. अ. १ झुकना, लचकना, मोड खाना।

उ०—सोळो रांणी राय चंपेली रौ फूल, मूमल केळू कांमठी। महकण लाग्यौ चंपेली रौ फूल, लळकण लागी केळू कांमठी। —लो. गी.

२ देखो 'ललकणौ, ललकबौ' (रू. भे.)

लळकणहार, हारौ (हारी), लळकणियौ—वि०।

लळकिओड़ौ, लळकियोड़ौ, लळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लळकीजणौ, लळकीजबौ—भाव वा०।

ललकणौ, ललकबौ–क्रि. अ.—१ तीक्ष्ण स्वर से गायन करना।

२ तेज व प्रखर हवा की ध्वनि होना।

उ०—ललकत जाभलिया बाजरनै लागी भूखां मरतोडी खलकत पड भा‍ी। बोरा थळ बिहूंणा तिल खळवत तरजै। बूढी चैली नै साधू ज्यौं बरजै। —ऊ. का.

३ गर्जना, दहाडना।

उ०—माच धमचक मचक अखक दुहूं माभिया, तोड साकळ ललक सीह तूटा। मावळा हुला बीजूजळा साफळै, जोध रिणमा 'जैमाल' जूटा। —सेरसिंह कुसलसिंह रौ गीत

४ ढीला पडना।

उ०—हियै गाडियौ हार, तुररा तूटा तार। नखा री रेख, दूज चद रै वेख। पेच ललकिया, सिरपेच ढळकिया। कवर ज्यूं ज्यूं रस री बात जपै 'रतना' री त्य त्यूं अग कपै। —र हमीर

५ शीघ्रता से किसी की रक्षा के लिए दौडना।

उ०—हुतो हिंदवां तणो धरम 'सूरा' हरी, सबळ चिंता पड़ी देस सारै। दुख मरुधर तणा रखं हिव देखस्या, ललकिया देव जसवत लारै। —ध. व. ग्रं.

६ देखो 'लळकणौ, लळकबौ' (रू. भे.)

उ०—पद्मिनि हस्तिनी सखिनी चित्रिणी एहवी स्त्री सोल स्रगार मारी, सुवरणमइ करवइ ढलकतइ चुडइ खलकतइ, कंकण झलकतइ, हाथ ललकतइ, सीतल गगोदकि हस्तोदक दीधां। —व. स.

ललकणहार, हारौ, (हारी), ललकणियौ—वि.।

ललकिओड़ौ, ललकियोड़ौ, ललक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

ललकीजणौ, ललकीजबौ—भाव वा.।

ललक्कणौ, ललक्कबौ, लळक्कणौ, लळक्कबौ—रू. भे.।

ललकार–स. पु.—१ युद्ध मे दी जाने वाली प्रोत्साहन युक्त आवाज।

उ०—बित लीजत, साभळ अठवळां, दुरवेस घडै अस जोस दळा। हलकार भडा ललकार हुवै, चगथा मुख तेज सरेज चुवै। —रा. रू.

२ रणागण मे ऊचे स्वर से किया जाने वाला युद्ध, आव्हान, हाका।

उ०—वड रावत ऊमसिया तिण वेळा, एम सुणै भुज आंमळता। ललकार हुवौ भड आवै लासां, छोडै तेज तुरी छिळता। —गु. रू. बं.

३ कोलाहल, शब्दघोष।

उ०—सरकै के गज धकै सकत्ती, रज धूधळी कोळाहळ रत्ती। प्रति बळ अखभे जूट अपारा लगर प्रबळ कळळ ललकारा। —रा. रू.

४ गायन मे ऊची व तीक्ष्ण ध्वनि।

उ०—गहणा मे लडाभूंब हुयोडी लुगाया री लैण लुहर री ललकार मे जिण टेम सामनै वाळी लैण नै जबाब देवणनै आगै बढती तौ उणा रै पगा रै धम्मीडा सू धरती धूजण लागती। —रातवासौ

५ उत्साहित करने की ध्वनि, हौसला बढाने की आवाज।

उ०—आज वा ललकार सुणीजी। पीढियां सू दब्योडा अभ्यागत अेक जस्थै खमखरी खाय माथौ ताण्यौ। —फुलवाड़ी

६ वायु का प्रवाह।

उ०—भातै पहल भगाविया, लूआ ललकारां। जोड़ा कूआं आविया, धोळा दोपारा। —धू.

७ तेज आवाज, ऊंची आवाज।

उ०—कळकार वीरवाणी कजाक, हलकार हुहु बळ बाज हाक। धानक टकार भळकार धोह, ललकार मार अणपार लोह। —वि. स.

मह.,—ललकारौ

ललकारणौ, ललकारबौ—क्रि. स.—१ युद्ध झगडे या प्रतियोगिता के लिए उच्च स्वर मे आव्हान करना।

उ०—१ मत्रां दळ मूगळ सैयद सेख, बणै अह बाज कबूतर वेख।

सरां अप्रमांण पठाण सहारि, लिया कर मैंन नरा ललकारि ।
—मे. म.

उ०—२ तद कुंवरसी पूठै लागियो मारै साथ नूं ललकारै छै ।
—कुंवरसी सांखला री बात

३ जोश दिलाना, उत्तेजित करना ।

उ०—बडी खपरिया रा तीर च्यार तो मूठ में छै ग्रौर तरकस दोय होदां में छै । गढ राजपूतां नूं विरदावै छै ललकारै छै, सो घोड़ा रा सवार हाथी रै पाखरां बीस-तीस ग्रगल-बगल ऊभा छै ।
—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ ग्रबर सबर बिण मवर ग्रकुळावै, जळहर बळिया विन जळिया जिय जावै । लोग नै लूग मोरा ललकारै, पासू पडियोड़ा ग्रासू पळकारै ।
—ऊ. का

४ चुनौती देना ।

उ०—नानी मा ग्रर गूंगी जेडी ग्रगणित, ग्रलेखू लुगाया रै मार्ग करयोड़ा ग्रन्याव उणनै ललकारण लागा । —फुलवाड़ी

५ तेजी से हाकना, चलाना ।

उ०—देवर म्हारा, थे छो निपट नादान जी म्हारा थे छो निपट नादान जी, थारो लीलडिया ललकारो, म्है बाला जी नै धोखस्या । —लो. गी.

६ सतर्क करना, सावधान करना ।

उ०—म्हानै गिणजो मूढ, ग्रमलिया ग्रागणगारा, करण पर उपकार, लार थानै ललकारां । निज कीन्हो थे नास, कहो किण रक्षा करस्यो, बात खरी है पण, मौत विन नाहक मरस्यो ।
—ऊ का.

ललकारणहार, हारो (हारी), ललकारणियो—वि० ।
ललकारिग्रोड़ो, ललकारियोड़ो, ललकारयोड़ो—भू० का० कृ० ।
ललकारीजणो, ललकारीजबो—कर्म वा० ।

ललकारियोड़ो—भू का कृ.—१ युद्ध या प्रतियोगिता के लिए उच्च स्वर से ग्राह्वान किया हुग्रा २ जोश दिलाया हुग्रा, उत्तेजित किया हुग्रा ३ चुनौती दिया हुग्रा ४ तेजी से हाका या चलाया हुग्रा ५ सतर्क किया हुग्रा सावधान किया हुग्रा ।
(स्त्री. ललकारियोड़ी)

ललकारो—स पु. (ब व. ललकारा) १ भूले को हिलाने झुलाने हेतु दिया जाने वाला धक्का ।

उ०—राणी रैणादे हीडण बैठया, धरती न झेलै भार, ग्रोजी सूरजजी ललकारो दियो, ग्रो हिंडो गयो गिगनार, ग्रोजी वन खड मे हिंडोळो माडयो, रेसम री पट डोर, ग्रोजी । —लो गी

२ देखो 'ललकार' (मह , रू. भे.)

उ०—१ दोन ही साहिब म्हारी पीठ पाछै खड़ा रहो, ललकारा करो चाकरा री रग देखो । —मारवाड़ रै उमरावां री वारता

उ०—२ सो भैंस रडकती सुणी छै । नजीक गयां भरमल री बोल सुणियो जो ऊभी ललकारा करै छै—'फलाणी भैंस दोहौ । फलाणी री कटी छोड दो । —कुंवरसी सांखला री वारता

लळकियोड़ो—भू. का कृ.—१ लचका हुग्रा, झुका हुग्रा, मोड खाया हुग्रा ।
२ देखो 'ललकायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. लळकियोड़ी)

ललकियोड़ो—भू का कृ —१ ऊंचा व तेज स्वर मे गायन किया हुग्रा. २ उत्साहित किया हुग्रा, जोश दिलाया हुग्रा ३ ग्राक्रमण किया हुग्रा. ४ ललकारा हुग्रा. ५ शीघ्रता मे किसी की रक्षा के लिए दोड़ा हुग्रा ।
६ देखो 'लळकियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री. ललकियोड़ी)

लळको—स. पु.—मस्ती मे झूमने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ जै राजा उण भांत लळका देता फिरै तो वे राजा ई काई । फुलवाडी

२ नमन या झुकने की क्रिया या भाव ।

उ०—जमरी तल पगदै लळका ले जावै, हीरा माणक सब हळका व्है जावै । धिनधिन दाता जस गाना मग चारण जननी जसधारी झारी जिण जाया । —ऊ का.

ललको—स पु —गायन की तेज ध्वनि या लहर ।
रू. भे.—ललक्को ।

ललक्क—देखो 'ललक' (रू भे)

उ० हव मुग्ध ललक्क वलग्ग, हवी, नव लक्ख थई चख लक्ख लगी । भड खल्ल पगल्ल वगल्ल भड, धड लल्ल पगल्ल नहल्ल धड ।
—पा. प्र.

लळक्कणो, लळक्कबो—देखो 'लळकणो, लळकबो' (रू भे)

उ०—लळक्कै गजा गोगरा नाळ गोभा, ललक्कै मुखा सूरमा भाण गोभा । गुडै बैदळा ग्रागळा तोप गाडा, जडै वाण गोळा सराजाम जाडा । — सू प्र

ललक्कणो, ललक्कबो—देखो 'ललकणो, ललकबो' (रू भे)

उ० — तुरकाण तलक्किय हिन्दु ललक्किय हर हलक्किय हेरि वरं । कर सेल भळक्किय ढाल ढळक्किय खाळ खळक्किय स्रोन भर ।
—ला. रा

ललक्कणहार, हारो (हारी), ललक्कणियो—वि० ।
ललक्किग्रोड़ो, ललक्कियोड़ो, ललक्कयोड़ो—भू० का० कृ० ।
ललक्कीजणो, ललक्कीजबो—भाव वा० ।

लळक्कणहार, हारौ (हारी), लळक्कणियौ—वि० ।
लळक्कियोड़ौ, लळक्कियोड़ौ, लळक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लळक्कीजणौ, लळक्कीजबौ—भाव वा० ।

लळक्कियोड़ौ—देखो 'ललकियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लळक्कियोड़ी)

ललक्कियोड़ौ—देखो 'ललकियोड़ौ (रू. भे)
(स्त्री. ललक्कियोड़ी)

ललक्कौ—देखो 'ललकौ' (रू. भे.)
उ०—लेरण कत अच्छरा गैरणांग माग आबा लागी, पूरां सूरां बीरां सूं जमाबा लागी प्रीत । **ललक्का** उच्छट्टै भैरू बंडका रमाबा लागी, गाबा लागी जोगणी बीरांरण मंत्र गीत । —सुखदांन कवियौ

ललचणौ, ललचबौ—क्रि. अ.—१ लालच में पडना, लोभ उत्पन्न होना ।
उ०—हियै बसाई हरखसूं, मधुसूदन महाराज । नर जिरणसूं **ललचै** नही, सो त्रिभुवरण सिरताज । —बां. दा.
२ किसी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने हेतु अधीर होना, लालायित होना ।
३ आशक्त या मोहित होना ।
उ०—नैंना लोभी रै बहुरि सकै नहिं आय । रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहै ललचाय । —मीरा
ललचणहार, हारौ (हारी), ललचणियौ—वि. ।
ललचिश्रोड़ौ, ललचियोड़ौ, ललच्योड़ौ—भू का. कृ. ।
ललचीजणौ, ललचीजबौ—भाव वा ।
लचणौ, लचबौ, ललच्चणौ, ललच्चबौ—रू. भे. ।

ललचाड़णौ, ललचाड़बौ—देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू. भे.)
ललचाड़णहार, हारौ (हारी), ललचाड़णियौ—वि. ।
ललचाड़िश्रोड़ौ, ललचाड़ियोड़ौ, ललचाड़्योड़ौ—भू. का कृ ।
ललचाड़ीजणौ, ललचाड़ीजबौ—भाव वा. ।

ललचाड़ियोड़ौ—देखो 'ललचायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. ललचाड़ियोड़ी)

ललचाणौ, ललचाबौ—क्रि. अ.—१ लालच या लोभ मे पड़ना ।
उ०—लोभै **ललचांणा** थकौ, मत लागि लपट्टां, काळ तकै सिर ऊपरै करसी चटपट्टां । ले जासी इक छिन मे ज्यूं बाउ छलट्टा, राहगीर सध्या समै सौवे इकहट्टा । —ध. व. ग्रं.
२ कोई प्रिय वस्तु की प्राप्ति हेतु अधीर होना, लालायित होना ।
उ०—१ नैंनां लोभी रै बहुरि सकै नहिं आय । रोम रोम नख-सिख सब निरखत, ललच रहै **ललचाय** । —मीरां
उ०—२ तौ भुज पर दिली तखत, अरि क्यूं तक्कत आय । फीटा पड़ घर म्या फकत, चित अरमन **ललचाय** । —ऊंतदान बारहठ
३ आशक्त होना, मोहित होना ।
उ०—हुय नार सुहग्गा, मिळियौ मग्गा, दांणव पग्गा रच दग्गा । **ललचायौ** ठग्गा, नाचरण लग्गा, सीस करग्गा विरणसतू । —भगतमाळ
४ ऐसा कार्य करना कि जिससे किसी के मनमें कोई वस्तु प्राप्त करने हेतु लोभ या लालच उत्पन्न हो ।
उ०—बेग सिकदर वचन सिवाई, जबन इनायत तरणौ जमाई । इरणरै कौल मिळरण कै आया, लेखे रीत किता **ललचाया** । —रा. रू.
५ उमगित होना, उमंगयुक्त होना ।
क्रि. स.—६ अपने रंग-रूप या हाव-भाव से किसी को मोहित करना या आसक्त करना ।
ललचाणहार, हारौ (हारी), ललचाणियौ—वि. ।
ललचायोड़ौ—भू. का. कृ. ।
ललचाईजणौ, ललचाईजबौ—कर्म वा ।
ललचाड़णौ, ललचाड़बौ, ललचावणौ, ललचावबौ, ललच्चणौ, ललच्चबौ - रू. भे. ।

ललचायोड़ौ—भू का. कृ.—१ लालच या लोभ मे पडा हुआ. २ कोई प्रिय वस्तु प्राप्त करने हेतु अधीर हुवा हुआ, लालायित हुवा हुआ. ३ आशक्त हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ. ४ ऐसा कार्य करा हुआ कि जिससे किसी के मन में कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए लोभ या लालच उत्पन्न हो । ५ किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति के लिए अधीर या लालायित किया हुआ. ६ उमगित हुवा हुआ. ७ अपने रंग-रूप या हाव-भाव से किसी को मोहित किया हुआ या आशक्त किया हुआ ।
(स्त्री. ललचायोडी)

ललचावण, ललचावणी—स. स्त्री.—ललचाने की क्रिया या भाव, लालायित होने की क्रिया या भाव ।
उ०—खवास आय कवर नै हकीकत कही । बावना चनरण के बिढै श्रेहे रूप मिळजै तो सही । जठै कवर मनमे तौ आ बात घरणी चाही, चौडे नटवा की सूरत दरसाइ । पाछौ जबाब दियौ आमार तो म्हैं नई रैस्या, कहस्यौ तौ बावडता आवस्यां । म्हांकै तौ तीज को वचन छै, जीसूं पावरणा जास्यां, मन मे तौ आ बात छै । आ मेळ तो लाखा ही, बाता मिळाइजै । कवाही तौ सरूपरण यां कि **ललचावणी** देखी ही चाहीजै । खवास पनां नै या हकीकत कही । सुरणताइ जाण्यौ मन की हूंस मन मे ही रही । —पनां

ललचावणौ, ललचावबौ—देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सकळ चढावै सीस, दान धरम जिरण रौ दियौ । सौ

खिताब बगसीस, लेवण किम ललचावसी ।
—केसरीसिंह बारहठ

उ०—२ मोहं मुख मोई हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतळ सत वाळी । लुक्जा ललचावे लामच घिन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ. का.

उ०—३ सुणे वयण अंगद कळह, सुभड़ सरसाविया, थरक जळ थाळ जिम त्रिकुट जग थाविया । चाळ बाधै धुरा दनुज ललचा- विया, अतबप अकंपन समर सज आविया । —र. रू.

ललचावणहार, हारौ (हारी), ललचावणियौ—वि. ।

ललचाविग्रोड़ौ, ललचावियोड़ौ, ललचाय्योड़ौ—भू. का कृ ।

ललचावीजणौ, ललचावीजबौ—भाव/कर्म वा. ।

ललचावियोड़ौ देखो 'ललचायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. ललचावियोडी)

ललचियोड़ौ—भू. का कृ.—१ लालच या लोभ मे पड़ा हुआ. २ कोई प्रिय वस्तु प्राप्त करने हेतु लालायित हुवा हुआ. ३ आसक्त हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ ।

(स्त्री. ललचियोडी)

ललच्चणौ, ललच्चबौ—१ देखो 'ललचणौ, ललचबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू भे)

उ०—सीहां थाहर सीहरू, हुवा न इचरज होण । कांम 'पता' कमधज्ज रा, सुणण ललच्चै त्रोण । —किसोरदान बारहठ

ललच्चियोड़ौ देखो 'ललचियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'ललचायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री ललच्चियोडी)

ललणा—देखो 'ललना' (रू. भे)

उ०—खाइ बिचाळै पीपळी ललणा, ललाजी जै का छै अडबड पान, प्यारी लागी कुळबहु ललणा —लो. गी.

ललणौ, ललबौ—देखो 'लुळणौ, लुळबौ' (रू भे.)

उ०—बका अड मुरधर बिचै, वळै ललै तज वक । 'पातल' ताय तपायनै, सीधा किया सणक । —चिमनदान रतनू

उ०—२ अहप सिर लळ अचळ चळ यळ, वाज हूकळ कळळ वळ- वळ । खळळ चळवळ सरित खळ हळ, समळ पळगळ लीध सामिळ । —र. ज. प्र.

ललणहार, हारौ (हारी), ललणियौ—वि. ।

ललियोड़ौ, लळियोड़ौ, ललयोड़ौ—भू. का. कृ. ।

ललीजणौ, ललीजबौ—भाव वा. ।

लळियोडौ—देखो 'लुळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लळियोडी)

ललत—देखो 'ललित' (रू. भे) (अ. मा.)

उ०—१ लुध चवदह पायं ललत, बलि गुर प्रति बताइ । गुण साभळि रीजं गुणी, सरहा एण सुभाइ । —पि. प्र.

उ०—२ नव नव भाति पटुली नवी, पेखि भावि तै भ्रति भोलवी । ललत गरभेमर लक्षणवत, मघ माधव रमि वसत । —प्राचीन फागु-संग्रह

ललतमुकुट—स. पु.—डिंगल का एक गीत जो कुडली या छद के समान ही दोहे के बाद त्रिभगी जोड़कर रचा जाता है । हिंदी में इसका दूसरा नाम त्रिभगी भी है ।

उ०—अग दोहे पर छद त्रिभगी, सिघविलोकण सार । ललत- मुकुट मो गीत सुलक्षण, वरणं 'मछ' विचार । —र. रू.

रू. भे. – ललितमुकुट ।

ललता – देखो 'ललिता' (रू. भे.)

उ०—पीछोळं आई प्रगट, हीरा उच्छव हेत । बाकी द्रगनि बिलो- कतां, ललता मन हर लेत । —बगसीरांम प्रोहित री वात

ललना—सं. स्त्री. [स.] १ स्त्री, रमणी (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—चग अनै मुख चग बजावै, उडावै गुलाल । लालन जै तजी ललना, तिण कौ कवण हवाल । —ध. व. ग्र.

२ जिव्हा ।

३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, मगण और दो सगण होते है ।

रू. भे.—ललणा, ललूना

ललपत—स. स्त्री —खुशामद, चाटुकारी ।

लळभख—स पु.—मास ?

उ०—लळभख सावज लेवता, होय लत्यो बत्तं । साजै हाथ कटा- रिया, मत वाहे खत्तं । —वी. मा.

ललयांगी—वि.—ललितागी ।

उ०—रूप निरोपमी मेदनी, आछा कापड भीणइ लक । ललयांगी घन कूवली, अहिरघ बाळा निग्मळ दत । —बी. दे.

ललरणौ, ललरबौ—क्रि. स.—१ लड़खड़ाते हुए बोलना ।

उ०—वहे इम सेल कढे खग वीज, खळा खग झाट करै घर खीज । उभा धड केयक सीस उडंत, लुटं ललरं अरि जेम लुडत । —सू. प्र.

२ तुतलाना ।

रू. भे.—ललराणौ, ललराबौ, ललरावणौ, ललरावबौ

ललराणौ, ललराबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

ललराणहार, हारौ (हारी), ललराणियौ—वि. ।

ललरायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

ललराईजणौ, ललराईजबौ— भाव वा.।

ललरायोड़ौ–भ. का. कृ.— १ लड़खड़ाते हुए बोला हुआ. २ तुतलाया हुआ।

(स्त्री. ललरायोड़ी)

ललरावणौ, ललरावबौ—देखो 'ललरणौ ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—कर कपै लोयण झरै, मुख ललरावै जीह। मावडिया जुध मे मिळै, पुगतापण रा दीह। —बा दा.

ललरावणहार, हारौ (हारी), ललरावणियौ—वि.।

ललरावियोड़ौ, ललराबियोड़ौ, ललराव्योड़ौ—भू. का. कृ।

ललरावीजणौ, ललरावीजबौ—कर्म वा.।

ललरावियोड़ौ—देखो 'ललरयोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललरावियोडी)

ळळवळ–सं. स्त्री.—मुड़ने की क्रिया।

उ०—चख ग्रारण चिखता रूप चोळ, क्रीडा करंत मधुकर कपोळ। पोगरप लाग ळळवळ अनूप, राग रा रीझिया नाग रूप। —सू. प्र.

ळळवळणौ, ळळवळबौ—१ कोमल व लचिली वस्तु का मुडते हुए हिलना।

उ०—१ ळळवळता पोगरां पाय खळहळता लगर, झळहळता चख झाळ, चोळ झळहळता चाचर। घरा धूळ धकरूळ, करै फूंकार कराळा, ग्रहि उखलै गेंतूळ, तूळ जिम मूळ तराळा। - सू. प्र.

२ मस्ती से झूमना।

उ०—बरबरतां उमरा तुरा आपता अताई, ळळवळतां सिंधुरा अत्रट वाजता अघाई। जांमगियां जागणी, बहुत लागणी बदूका, भरळकता साबळां, चहू कानियां अचूका। —बखतौ खिड़ियौ

३ लचकना।

उ०—भीगार भांति भल्ली भडिज्ज, ळळवळइ अंग लेजम्म लिज्ज। वीदडउ चडिय हुइ खत्रीवट्ट, दोखिया सीसि देवा दबट्ट। —रा. ज. सी

ळळवळौ, ललवलउ, ललवलौ–वि.—कोमल, सुन्दर।

उ०—१ ळळवळ भेवै ळळवता, सुघरै डील सुरग। भारतवाळी भोम पर, नसल नागोरी रग। —नारायणसिंह सादू

उ०—२ अह नव जुव्वण नेमिकुमरू जादव कुल धवलो। काजल सांमल ललवलउ, सुललिय मुह कमलो। —प्राचीन फागुन-सग्रह

रू भे.—लल्लवळ।

ळळवळियौ–वि.—अलबेला, शौकीन।

उ०—आप झरोखै बैठिया, ळळवळिया सिरदार। हाजर रहती गोरडी, सज सोळा सिणगार। जी उमराव थांरी सूरत प्यारी लागै म्हारा राज। लो. गी.

ललांम–सं. पु [स. ललाम] १ घोड़ा।

[स. ललामम्] २ घोडे को पहनाए जाने वाला गहना या आभूषण। ३ घोडे या सिंह की गर्दन के बाल।

वि. [सं. ललाम] १ सुन्दर, रमणीय।

उ०—१ साथ करे 'सिवदत्त' रौ, घन चद्रा सुरधाम। गुण सीता सत्वर गई, लै गळबांह ललांम। —व. भा.

उ०—२ हरियौ भरियौ धान, ऊतरै सदा सतोळौ। डिगला लगै ललांम घोर धन देवण पोलौ। —दसदेव

२ श्रेष्ठ उत्तम।

३ प्रधान, मुख्य।

४ लाल रग का।

देखो लीलाम' (रू. भे.)

उ० गायां-भैंस्या, साढया 'र-ऊट बोरा लेग्या अर तरवार-बन्दूका ललांम हुयगी। —दसदोख

लला–स पु.—१ एक प्रकार के फूल का पौधा।

उ०—सिव सिसदा अख मदार सार लला जाफरा रायबेली गुलाब छत्रू केवडा केतकी जाय धाव —भ्रग्यात

२ देखो 'लालौ' (रू. भे)

उ०—१ जानै वाला हौ लला, फरियाद हमारी सुणजा। छतियां फटै विरहागन झडदा, मुखडै सैं मुखड़ा मिलाजा। —रसीलै राज

ललाई–स. स्त्री.—लालिमा।

उ०—पिछली दो पहर रात मे चोरो के डर से नीद भी न आई ग्रैते मे पूरव की तरफ आसमान मे ललाई दिखाई। —दुरगादत्त बारहठ

ळळाक–क्रि. वि—१ लचक के साथ, लचकता से।

उ०—थोथौ करडावण राखणवाळा जगी रूख चरड चरड उथळी-जण लागा। लुळताई राखणवाळा कवळा बाटका अठी-उठी ळळाक-ळळाक लुळै पण वारौ की नी बिगडै। —फुलवाड़ी

ललाड़—देखो 'ललाट' (रू. भे)

मुहा.—तिलक री वेळा ललाड पाछौ करणौ=अवसर खो देना।

ललाट–स पु. [स ललाट] १ माथा, मस्तक, भाल।

उ०—तठै आगवौ खाग हूं छाग तोड़ै, चडी कालिका मातरै स्रोण चौडे। लगावै सवे सेस बिंदी ललाटां, करै फेर विस्राम पाल्है कपाटा। —मे. म.

२ भाग्य, तकदीर। (डि. को)

३ भाग्य मे लिखी हुई बात।

पर्याय—भाळ, मोबरी, अलिक, ताळो, गोधि, नसीब, करम, भाग, तकदीर, बाचर, अळीक,

रू. भे.—नलाड, नलाळ, निलाड, निळाडी, निलाट, निलाटी, निलाड, निळाडी, निल्लाट, ललाड, लळाटी, लिलाड, लिलाड़ी, लिलाट, लिलार

अल्पा.—लिलाडी, लीलाड़ी।

यौ.—ललाट-पटळ, ललाट-पट्ट, ललाट-पट्टिका, ललाट-रेखा, ललाट-लेख।

ललाट-पटळ—सं. पु. यौ. [स. ललाट+पटल]—माथे का तल, भाल।

ललाट-रेखा—सं. स्त्री. यौ. [स. ललाट+रेखा]—भाग्य की रेखा, प्रारब्ध।

ललाटाक्षि—सं. स्त्री [सं.] एक राक्षसी जो अशोक वन में सीता के संरक्षण हेतु नियुक्त की गई थी।

ललाटि देखो 'ललाट' (रू. भे.)

उ०—राजान जांन सगि हुंता जु राजा, कहै सु दीध ललटि कर। दूरा नयर कि कोरणा दीसै, धवळागिरि किना धवळहर। —वेळी

ललाणौ, ललाबौ—देखो 'ललावणौ, ललावबौ' (रू. भे)

ललाणहार, हारौ (हारी), लालाणियौ – वि।

ललायोड़ो—भू का कृ.।

ललाईजणौ, ललाईजबौ—भाव वा.।

ललयोड़ो—देखो ललावियडो' (रू भे)

(स्त्री. ललायोडी)

लळावट—स. स्त्री झुकना क्रिया का भाव।

उ०—गळोवळ हेक घटा बख गूंथ, लाळावट हेक लुळं हुइ लूथ वळव्वळ हेक हुआ वन चोळ, धारा मुहि हेक दियं घमरोळ —गु. रू. ब.

ललावणौ, ललावबौ—क्रि. स—टिलाना, फुसलाना।

उ०—रळै रै माथे वोहरा नदवाणा रो करज, लेबै सु वोहरौ रोज मांगण आवै। ताहरा रळो कहै, 'आज देवां काल देवा।' इण भात वोहरां नूं रोज ललावै वोहरौ १ कहै, 'रळीया नूं काहू दबावा'। —बात रळं गढवी री

ललावणहार, हारौ (हारी), ललावणियौ – वि।

ललावियोड़ो, ललावियोड़ो, ललाव्योड़ो—भू. का. कृ.।

ललावीजणौ, ललावीजबौ—कर्म वा.।

ललाणौ, ललाबौ—रू. भे.।

ललावियोड़ो—भू. का कृ.—टिलाया हुआ, फुसलाया हुआ।

(स्त्री. ललावियोडी)

ललित—स. पु. [सं. ललित] १ शृंगार-रस मे कामिक हाव या अंग-चेष्टा जिसमे सुकुमारता के साथ भौं आंख, हाथ, पैर आदि अंग हिलाये जाते हैं।

२ एक विषम वर्ण वृत्त जिसके पहले चरण में सगण, जगण, सगण व लघु, दूसरे मे नगण, सगण, जगण व गुरू तीसरे मे नगण, नगण, सगण और चौथे में सगण, जगण, सगण जगण होता है।

३ सगीत मे षाडव जाति का एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है और जिसमे निषाद स्वर नही लगता तथा धैवत और गांधार के अतिरिक्त और सब स्वर कोमल लगते हैं।

४ एक गौण अर्थालंकार, जिसमे कोई बात छाया के रूप मे कही जाती है।

५ एक वार्णिक छंद जिसके प्रथम आठ वर्ण पर यति और फिर १४ (मनु)+१=१५ वर्ण पर यति होती है।

६ बालक।

७ एक गधर्व जो शाप के कारण राक्षस हुआ तथा 'कामदा' एकादशी का व्रत करने से शाप मुक्त हो गया।

वि—१ सुन्दर, कमनीय, मनोहर। (अ. मा., ह ना मा.)

उ०—१ मधुर वचन छबि चद मुख, ऊमगं उरज ऊतंग। लीलवर ठाकै ललित, सुभ कवन-गिर स्रग। —बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ ललित लजीलो छै, सुभग मजीलो छै मनोहर इगरी मूरत, कामणगारी सियाबर म्हानै निरखण दे सखि! प्यारी! —गी. रा.

२ शुभ, कल्याणप्रद।

उ०—भवसतति ना भय दुख भजण, पचम गति दातार रे। त्रिभुवननाथ ललित, गुण तोरा, गावइ देव गंधार रे। —स. कु.

रू भे.—ललत, ललिय।

यौ—ललित-कळा, ललित-कांता, ललित-गरभेसर, ललित-त्रिभगी, ललित-पद, ललित-लता।

ललितकांता—स. स्त्री यौ [स. ललित+कांता] दुर्गा, देवी।

ललितकीसबर—स. पु—हनुमान, पवनसुत। (डि. को.)

ललितगरभेसर—स. पु. [सं. ललित गर्भेश्वर] मनोहर गर्भेश्वर।

उ०—नवनवे लीला विलास रमइ, मुह पूछि जिमि, कजि पूछि पहरइ, खडोखलि तणा पाणी लहरइ, ललितगरभेसर द्रव्य अवनिस्वर, सालिभद्रावतार' मद (न) मुद्रावतार, अस्रांत तबोल ममरइ, पच प्रकारि विसयसुख अभाणइ, उगिउ आथमिउ काइ न जांणइ जाइ। —व. स.

ललितमुकुट—देखो 'ललतमुकुट' (रू भे)

ललितलता—स. स्त्री.—माधवी। (अ. मा.)

ललिता—स. स्त्री. [स.] १ राधिका की मुख्य आठ सखियो मे से एक।

उ०—कहत ललिता बैद बुलाऊँ, श्रावै नंद को प्यारो। वो श्राया दुख नाहिं रहेगो, है मोंहि पतियारो। —मीरां

२ दक्ष कन्या सती का नामातर।

३ कृष्ण की पत्नियो में से एक।

४ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण जगण श्रौर रगण होते हैं।

५ संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

६ रमणी।

७ स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

८ कस्तूरी, मुश्क।

९ दुर्गा देवी का रूप।

रू. भे'—ललता, ललित्ता।

ललिताई—स. स्त्री —सौंदर्य, सुन्दर।

ललितापचमी—स. स्त्री. यौ. [स. ललिता+पचमी] श्राश्विन के शुक्ल पक्ष की पचमी, जिस दिन पार्वती की पूजा होती है।

ललितासस्ठी—स. स्त्री. यौ. [स. ललिता+षष्ठी] भाद्रपद कृष्ण पक्ष की षष्ठी, जिस दिन पार्वती की पूजा होती है।

ललितासप्तमी, **ललितासातम**—[स. ललितासप्तमी]—भाद्रपद शुक्ल पक्ष की सप्तमी।

ललितोपमा—स. स्त्री. यौ [स. ललित+उपमा] एक प्रकार का श्रर्थालकार जिसमे उपमेय श्रौर उपमान के समतावाचक पदो का प्रयोग न करके ऐसे पदो का प्रयोग किया जाता है जिनमें समता, मुकाबला श्रादि के भाव प्रकट होते हैं।

ललित्ता—देखो 'ललिता' (रू भे)

उ०—वप सोळह सिणगार वनित्ता, लखण बत्तीस सजुगत ललित्ता। सोभा सारिख किरण सवित्ता, दीपै मदर गज दुहित्ता। —गु. रू. ब.

ललित्थ—स. पु [स.] १ एक राजा जो वायु के श्रनुसार इद्रसख श्रथवा विद्योपरिचरवसु राजा का पुत्र था।

२ कौरवो के पक्ष का एक राजा जिसने श्रभिमन्यू पर बाणो की वर्षा की थी!

३ एक लोक समूह जो भारतीय युद्ध में त्रिगर्तराज सुशर्मन के साथ उपस्थित था एव कौरवों के पक्ष में शामिल था। उन्होंने श्रर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा की थी पर श्रन्त में श्रर्जुन ने इनका वध किया।

ललिय—देखो 'ललित' (रू. भे-)

ललूड़ौ—देखो 'लालौ' (श्रल्पा. (रू. भे)

उ०—पांन फूल नू जीव तू, कोमल केलि समांन। ललूड़ौ प्रति लाडलौ, लालन लीला थान। —जयवांणी

ललूना—देखो 'ललना' (रू. भे)

उ०—१ बके दीनताके किते बैन टेरे, कबीलै परे काफरा हत्थ मेरे। परे बिल्लुरे भूमि जाके खिलूना, कहा कैद जांने हमारे ललूना। —शा. रा.

ललोचपी—सं. स्त्री.—किसी को प्रसन्न या श्रनुकूल रखने हेतु कही जाने वाली चिकनी-चुपड़ी बात, खुशामद।

उ०—रियासत रा पागी नू पूंछै रोवै, श्ररजन मोजी रा खोज कुण जोवै। पग पाछा पडै पूरी ललोचपी राखै। —दसदोख

क्रि. प्र.—करणी, राखणी।

रू भे —लल्लूचप्पू।

मह.—लल्लोचपो, लल्लौचप्पो।

१ खुशामद।

उ०—१ भलै भलो बुरै बुरो, ललोपती लजो नही। प्रभू उवार प्रेम पेख, नेम को तजो नही। —ऊ. का.

उ० —२ जो कही री छोकरी-सहेली क्यूं टुरटुराटो करै तो श्राप डेरे जाय ललोपती मुनहारा कर श्रावै। मन-खात कही सू पड़ण न देवै। ऐसी स्याणी ममामी सो सारी राहणी राजी। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ० —३ श्रमोजी रावजी कन्है जातो थो। तितरै श्रभा नू कह्यौ— म्हारी लाख दुगाणी इण विध री लेहणी छै सु देता जावौ। सु श्रभै तौ ललोपती घणी करी। —राव मालदे री बात

ललोचंपौ, **ललोचप्पौ**—देखो 'ललोचंपी' (मह., रू. भे.)

ललोपतौ—क्रि. वि —१ बिना पता, बेखबर।

२ देखो 'ललोचपी'

उ०—इतरै गोहिला पिण श्रालोच कियो—जो राठौड़ जोरावर मिगरी श्राय राजस्थान माडियो। जो कूं ललोपतौ कीजै तो टिग सकीजे। —नैणसी

लल्लौ—स. पु.—१ ल वर्ण या श्रक्षर।

२ देखो 'लालौ' (रू. भे)

रू. भे.—लल्लउं।

लल्ल—देखो लल' (रू. भे.)

लल्लउ—देखो 'लल्लौ' (रू भे.)

उ० —वायस वीजउ नांम, ते श्रागळि लल्लउ ठवइ। जइ तू हुवई सुजाण, तउ तू वहिलउ मोकळै। —ढो मा.

लल्लवळ—देखो 'ळळवळ' (रू. भे.)

उ० —१ सेन मे सब्बळा, हुई हीलोहळा, जाण निध्धेजळां, पुळै पाइह्ळा मल्हपै मैंगळा, सूंड लल्लवळां, श्रागळी ऊजळा, सेत-धातू-सळा। —गु. रू. बं.

लल्लू—देखो 'लालौ' (रू. भे.)

लल्लू चप्पू—देखो 'ललोचपी' (रू. भे.)

लवंग-सं. पु. [सं.] लवंग नामक वृक्ष और उसकी कलियां या फूल । (अमरत) (अ. मा.)

उ०—१ भाग त्रगुण पकज पर मेळं, मघई पान छगुण रस मेळं । पाव भाग धरि लवंग प्रमांणं, आधं भाग अगाअक आणं ।
—सू. प्र.

उ०—२ कुण ही पल्लाण्या आसण होड़ा, केइ करहि चडी श्रइ दह दिसि दोड़ा । केइ मुखि मांगइ तबोळ लवंग-डोडा ।
—रा. सा. स.

उ०—३ बायक लवग मसाला बांटे, जीभ सकर मीठम जेम । सोहड़ां कज कोडां 'परसा' सुत, आखर तणौ रामरस प्रेम ।
—बसराम रावळ

२ पुरुष व स्त्रियो के कानो मे पहनने के आभूषण विशेष ।

उ०—मरद पबसाल भूमरण कडा मूदडी, कंठ डोरी मुरति लवंग काना । तेमडा समोभ्रम खुडद गेडा तणौ, थांन जाहर थयौ राज-थांनां ।
—मे म.

३ औरतो के नाक में पहनने का आभूषण ।

रू. भे.—लवगि, लबिंग, लवींग, लांग, लिबग, निविंग, लूग, लौंग ।

लवंगादिचूरण-सं. पु. [स लवंगादिचूर्ण] वैद्यक में एक चूर्ण विशेष ।

वि वि —लौंग कपूर, इलायची. दालचीनी, नागकेसर, जायफल खस सौंठ, काला जीरा, पीपल, अगर, वंशलोचन, जटा-मांसी, नीला कमल, सफेद चदन, तगर, नेत्रवाला और शीतल मिर्च सब सम भाग मिलाकर यह चूर्ण बनाया जाता है ।

लवंगादिवटी-सं. स्त्री [स.] १ वैद्यक मे एक गोली विशेष जो खांसी रोग में सेवन की जाती है ।

वि. वि --लौंग बहेड़े की छाल और काली मिर्च १-१ तोला तथा कत्था ३ तोला मिला बबूल की छाल के क्वाथ मे ६ घंटे खरल कर मटर के समान गोलियां बनाई जाती है ।

लवंगि—देखो 'लवग' (रू. भे.)

उ०—लाज-लज्जाळ् लक्ष्मणा, लूणी लसन लवगि । लीलावंती लुकडी, लाहि लवीरी सगि ।
—मा कां. प्र.

लवंड-सं. पु —१ दीवाल से उतरी चूने की पपडी, लेवडा ।

उ०—जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहाला खावइ । कइ ठिकरि न खाइ लड, कइ खायइ भीतं लवंड । —ऐ. जै. का सं.

२ देखो 'लड' (रू. भे.)

लव-स. स्त्री [सं. लव:] १ भेड की ऊन ।

२ भेड की ऊन उतारने का कार्य ।

३ बहुत थोड़ी सी मात्रा, लेश मात्र ।

उ०—अर कतराक मूढ भाट बिद्या रो लव पाय नव रत्न में आयौ जिको बेताळभट्ट तिणनूं भी भाट कहै ।
—व. भा.

४ कवि । (अ. मा.)

५ पंडित । (अ. मा.)

६ काल का एक मान जो ३६ निमेष का माना जाता है ।
(डिं. को.)

उ०—जिण झालै बळ जोर, जग आहिणि आडेवां । पुहवि कच्छ पचाळ, गजि लीधी पटु पेचा । अधिप भीमरै अग्ग, विजय कीधा कई वारा । भड सात्रव धण भेटि, किया धड़ पार कटारां । उण मिहदेव रण अग्रणी, लं बळ साथ चउत्थ लव । गरदाय सिबिर दीधौ गरट, जामिक पण लीधौ सजव ।
—व. भा.

७ रामचन्द्र के दो पुत्रो मे से कनिष्ट पुत्र का नाम ।

८ लवा नामक चिड़िया ।

स. लव - ९ लवंग, लौग ।

१० सुरा गाय की पूछ के बाल जिसकी चवर बनाई जाती है ।

११ जायफल ।

१२ मौका, अवसर ।

[अ] १३ प्यार, मोहब्बत ।

१४ देखो लिव' (रू. भे.)

उ०—१ राजा कोड निनाणवै, ठेलै ठकुराई । तिण कारण जोगी हुआ, लिव सू लव लाई ।
—केसोदास गाडण

उ० –२ नर हर समरता नह बीतं नाणौ, लवसूं लिको न लेवै । परनारी निरखै कर प्रीता, दाम हजारा देवै ।
—र. रू.

वि.—१ किंचित, सूक्ष्म । (अ. मा.)

२ समान, सदृश्य ।

३ अत्यन्त अल्प परिमाण ।

लवकव—वि.—भयभीत ।

उ०—दळ सुरिताण जाण डूगरि दव, कपी धरा प्रज हुइ लवकव । अह सुरितांण आवियउ अवधरि, करन तणा ऊठिय गज केसरि ।
—रा. ज. सी.

लवड़ो—स पु.—देखो 'लड' (रू. भे.)

२ देखो 'लघु' (अल्पा., रू. भे)

लवण—सं. पु [स लवण] १ नमक । (डिं. को.)

उ० -- जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कठ रहित गायन ।
—रा. सा स.

[सं. लवण] २ मधुवन (आधुनिक मथुरा) निवासी एक राक्षस जो मधु नामक राक्षस का पुत्र था तथा जिसका शत्रुघ्न ने वध किया था ।

वि. वि.—देखो लवणासुर ।

३ समुद्र, सागर । (डिं. ना. मा.)

४ एक नरक का नाम ।

वि. [सं. लवण] १ नमकीन, खारा।

२ लावण्ययुक्त, सुन्दर।

रू. भे.—लवन, लूंण, लूण, लौंण

लवणयंत्र—सं. पु. यौ. [स. लवण+यंत्र] औषध बनाने हेतु दो बर्तनों के मुंह जोड़कर बनाया हुआ एक यंत्र विशेष जिसमें एक बर्तन मे नमक भरा होता है। (वैद्यक)

लवणत्रय—सं. पु. यौ. [स. लवण+त्रय] सेंधव, विट, और सचल इन तीन प्रकार के नमक का समूह। (वैद्यक)

लवणधेनु—सं. स्त्री. [सं. लवण+धेनु] नमक के ढेर के रूप मे निर्मित एक कल्पित गाय जिसके दान का बड़ा माहात्म्य है।

(पौराणिक)

लवणभास्कर—सं. पु.—एक प्रकार का पाचक चूर्ण जो, मदाग्नि मे सेवन किया जाता है।

वि. वि.—इसके बनाने में समुन्द्र नमक ८ तोला, काला नमक ५ तोला, कांच लवण, सेंधा नमक, धनिया, पीपल, पीपलामूल, काला जीरा, तेज-पात, नागकेसर, तालीसपत्र, अम्लबेत, सब २-२ तोला, कालीमिर्च, जीरा, सोंठ, तीनो १-१ तोला अनारदाना ४ तोला, इलायची और दालचीनी आधा-आधा तोला लेकर सबको मिलाकर कूट कर बारीक चूर्ण किया जाता है।

लवणवरस—स. पु. [सं. लवणवर्ष] कुश द्वीप के अन्तर्गत एक खंड।

(पौराणिक)

लवणसमंद, लवणसमुद्र—सं. पु. यौ. [स. लवण+समुद्र] पुराणानुसार सात समुन्द्रो मे से खारे पानी का समुद्र।

उ०—एहवौ जंबू द्वीप महागढ जेम गिरिंद। रवाई रूपै दोइ लख जोयण लवणसमंद। —ध. व ग्रं

लवणांतक—सं. पु. यौ. [सं. लवण+अंतक] १ लवणासुर नामक दैत्य को मारने वाला, शत्रुघ्न।

२ नींबू।

लवणा—सं. स्त्री.—१ दीप्ति, आभा, कान्ति।

२ देखो 'लवल्या' (रू. भे.)

लवणाई—सं. स्त्री—१ लूणी नदी का एक नाम।

२ सुन्दरता, लावण्यता।

लवणाचळ—सं. पु. [स. लवण+अचल]—१ पहाड़ के रूप में लगाया नमक ढेर जिसका दान देने का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

लवणाकार—स. पु. यौ. [स. लवण+आकार]—समुद्र, सागर।

लवणालय—सं. पु. यौ. [सं. लवण+आलय] लवणासुर नामक दैत्य की बसाई गई मधुपुरी जिसे अब मथुरा कहते हैं।

लवणासुर—सं. पु. [सं.] मधुराक्षस का पुत्र जो लंकापति रावण की मौसी कुंभीनसी का पुत्र था।

वि. वि.—मधु राक्षस ने कठोर तपस्या करके भगवान शिव शंकर से एक शूल नामक शस्त्र प्राप्त किया था जो भगवान शिव के वरदान से लवणासुर को प्राप्त हो गया था। इस शूल के बल से इसने देव, दानव और मनुष्यों को जीत लिया था और अजेय बन गया था। प्रसिद्ध राजा मानधाता का भी वध इसने किया था। महर्षिगण इसके अत्याचार से पीड़ित होकर मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र भगवान की शरण गये। तब भगवान राम-महाराज ने शत्रुघ्न को लवणासुर का वध करने के लिए भेजा। जिस समय लवणासुर के हाथ मे शकर द्वारा प्रदत्त शूल न था तब शत्रुघ्न ने इसका वध कर दिया। यह मथुरा का राजा था जिसका दूसरा नाम मधुपुरी भी है। लवणासुर का सहार कर शत्रुघ्न मथुरा का राजा बना।

लवणिम, लवणिमा—सं. स्त्री. [सं. लवणिमन्] १ सुन्दरता, सौन्दर्य।

उ०—१ मनमथी ठवीय पयोहर, मोहरसावलि तुंग। लवणिम भरीय अकुरीय, पूरीय रागि नितंब। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ रूपवत गुण लवणिमा रे, विद्या प्रभुता सार। मदना कारण छै सहू रै, पिण मदन करै सिणगार। —श्रीपाल रास

लवणेस्वर—स. पु. [स. लवणेश्वर] महादेव का एक नाम।

उ०—लवणेस्वर री क्रपा सूं पाच सै गांवा में अमल कियो। पावागढ रा, सुलतानपुर रा राधणपुर रा गांव बीरपुरा दबाया। —बां. दा. ख्यात

लवणोद, लवणोदक, लवणोदधि—स पु. यौ. [स. लवण+उदक, लवण+उदधि]—१ समुद्र, सागर। (डिं. को.)

उ०—मध्य भाग लवणोदधि नै रह्या, जिहां लक कहवाय, सालूणी द्रव्य उपावण सार्थ मानवी, त्या सु पूरी रे प्रीत। —वि. कु.

लवणौ—स. पु.—१ कनपटी।

उ०—अगी धनुस वात जब जाणियै, दीजै लट डंभ क्रिया पिहिचाणियै। दो लवणै दोइ पाय एक पुनि ताळवै, परिहा गुदड़ी उपरि, एक इण विध चालवै। —ध. व. ग्रं.

२ एक प्रकार का घास।

लवणो, लवबौ—क्रि. अ. [स. लवन प्रा. लव] १ पक्षियो का ध्वनि करना, बोलना।

उ०—१ बीज खवइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेख। विरहणीआं तनि वेदना, स्रावण सरइ विसेख। —मा. का. प्र.

उ०—२ आखि निर्मांणी क्या करइ, कड़वा लवइ निलज्ज। सउ जोइन साहिब वसइ, सो किम आवइ अज्ज। —ढो. मा.

२ गाय का रंभाना।

३ कुत्ते का भौंकना।

उ०—१ हसीया माकट सूकरा, दोउं की परि एक। गयद चले गय आपनी, कूकर लवौ अनेक। —अनुभववांणी

उ०—२ हाथी हींडत देख, कूकररिया लव-लव करै। वडपण तणो विवेक, क्रोध न आणी किसनिया। —किसनिया

४ मेंढक का टर्राना।

उ०—ओडामण गर जैत पीहू पपीहू बडा सिरदर। लवै दादुरा करै, झली बोहू झकर। —पा. प्र.

५ भेड़ की ऊन कतरना।

६ फड़कना।

उ०—१ आवेरू अईनि चींतवि, लोचन माहारू डाबि लवि। जोऊं रहि हसि टलवली, पुनरपि आव्यु पाछु वलि।

— नलाख्यांन

लवणहार, हारो (हारी), लवणियो—वि।

लवियोड़ो, लवियोड़ो, लव्योड़ो—भू. का. कृ.।

लवीजणो, लवीजबो—भाव वा.।

लवधवरण—देखो 'लब्धवरण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

लवधुलउ, लवधुलो–वि. [सं. लुब्ध] १ आसक्त, लुब्ध।

उ०—कोइल कलिरवि वासइ, मजरिया सहकार। कुसुम तणइ रसि लवधुला, भमर करइं झणकार। —प्राचीन फागु-संग्रह

लवन–सं. स्त्री.—छेदने की क्रिया या भाव।

उ०—रगाणी मुझ मतिए रंगइ, समकित नी सहिनाणी। कुमति कमलिनी लवन कपांणी, दुख तिल पीलण घांणी रे। —वि कु.

२ देखो 'लवण' (रू. भे.)

लवना—देखो 'लवल्या' (रू. भे.)

लवबांन—देखो 'लोबांन' (रू. भे.)

उ०—भरी सत मत्त गयद्दनि सोर, करौ फिर पीठ मदत्तिय मोर। हकी सब तोपन जुट्टि लगाय, धुनी लवबांन पताकनि छाय।

—ला. रा.

लवक–सं. पु.—एक पक्षी विशेष।

उ०—मन लवक के पंख है, उनमनि चढे अकास। पग रह पूरै साचकै, रोप रह्या हरि दास। —दादूबांणी

लवल–सं. स्त्री.—अग्नि की ज्वाला।

उ०—कोइ जांण इम कहै, लवल चंदण सम लग्गी। परसै सती सरीर, वणी तद नीर वरग्गै। —रा. रू.

लवलवी—देखो 'लबलबी' (रू भे.)

लवळी–सं. पु.—१ हरफलोरी नाम का वृक्ष या उसका फल।

२ एक विषमवर्ण वृत जिसके पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे चरण में क्रमशः १६, १२, ८ और २० वर्ण होते हैं।

३ एक लता विशेष।

उ०—नैरति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजे धण पयोधर। झोले वाइ किया तरु झखर, लवळी दहन कि लू लहर। —वेलि

लवलीन–वि. [सं. लय+लीन] १ तल्लीन, तन्मय, मग्न।

उ०—१ गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर, ताळी खुलि उठिया तपेसुर। जाणै निसा अमावस जळधर, भाद्रव मंमट घटा भयकर। —सू. प्र.

उ०—२ हथणी बरस हजार लग, खान पांन नहीं कीन। जितै कियौ गजराज जुध, हरि-चरणा लवलीन। —गज उद्धार

२ देखो 'लयलीन'

रू. भे.—लौलीण।

लवलेस–सं. पु. [स. लव+लेश] अत्यन्त अल्प परिणाम या मात्रा, किंचित्।

उ०—आवै इण भासा अमल, वयण सगाई वेस। दग्ध अगण बद दुगणरो, लागै नह लवलेस। —र. रू.

लवल्या–स. स्त्री. —१ लगन, तन्मयता, एकाग्रता।

२ अभिलाषा, इच्छा।

रू. भे.—लवणा, लवना।

लवाजमो, लवाजीवो–स. पु. [अ. लवाजिम]—१. राजा महाराजा की सवारी के साथ शोभा बढाने हेतु रहने वाला ठाट बाट व साज सज्जा का सामान (मा. म.)

उ०—१ लवाजमे सू कुवर जसवतसिंह जी नूं परणीजणै मेलिया। —ठाकुर राजसिंह जी री वारता

उ०—२ थारो घरांणो घणो आछो पण नवै लवाजमो नही। अर आज लवाजमो विकै छै। अबै थें खेती करो। —पचमार री बात

२ सामान, सामग्री।

उ०—१ जोधपुर मे चाकर रा पेटिया रा टका १२ रोज १ रा पावै। बीजो लवाजमो राणी हुवै सु बीजा मेहला सु बीवडा में टोमावै दस्तूर छै। —नैणसी

उ०—२ स्री कवरजी नु कंवरपदा रा गाव लवाजमो दीयो गांव वीसळपुर सु मे संवत १७२४ रा ऊनाळी था दीयो नै रु १ रोजीना माहावदी सु कर दीयो वागा वा लवाजमो सारो सिरकार था पावै तिण रो जोधपुर री जमैबधी मैं मंडियो छै —नैणसी

रू. भे.—लाजमो

लवार–स. पु.—१ पशु का छोटा बच्चा। (ह. नां. मा.)

उ०—१ सारी गउऐं निकस गई यमुना, लेकर संग लवारै। ग्वाल-बाळ सब द्वारै ठाड़ै ठांईदार तिहारै। —मीरां

उ०—२ तन खेती मे चरि चरि जावै, हे नही मेरे सारै रे। मिरधा एक पाच हैं हिरनं, लारि पचीस लवारै रे।

—अनुभववांणी

अल्पा.,—लवारियौ, लवारौ, लुवार, लुवारको, लुवारियौ, लुवारौ
२ देखो 'लुहार' (रू. भे.)
उ०—साज लोहरा सासरा, ताळा करण तयार। किसबी सारा कांमरी, लीजै सुगड़ लवार। —रमण प्रकाश

लवारको—१ देखो 'लवार' (रू. भे.)
२ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. लवारकी)

लवारणव-सं. पु. [सं. लवार्णव] ५१ क्षेत्रपालों में से ३१वां क्षेत्रपाल।

लवारखाती—देखो 'लुहारखाती' (रू. भे.)

लवारियौ, लवारौ—१ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'लवार' (अल्पा., रू. भे.)

लवावसप्पी, लवावसरपी-सं. पु—वह जो कर्म-बन्धन को उत्पन्न करने वाले कर्मों के अनुष्ठान से दूर रहता हो। (जैन)

लविंग, लवींग—देखो 'लवंग' (रू. भे)
उ०—१ आरासनउ चूनउ, इमी खांडी। कपूर लविंगा इलायची खदिर-वटिका सहित बीडा कीधां, मुख वासि दीधां। —व. स.
उ०—२ लीब लविंगह लसणीआ, लीबोई लोबान लूखट लामा लींबरू, लगिथगि लाबां पांन। —मा. का. प्र.

लवीरी—१ एक प्रकार की सब्जी।
उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावंती लुंकडी, लाहि लवीरी संगि। —मा. का. प्र

लवेस-सं. पु.—देखो 'लिबास' (रू. भे.)
उ०—जगदेव कहायौ, गैणौ, पोसाख, घोड़ौ, राजा री लाजमो नहीं नै पाळौ तौ इसे लवेस (लिबास) चालणौ आवै नहीं।
—जगदेव पंवार री बात
उ०—२ इया बळे देखनै कह्यौ भाभी जे हिवै ईडो थाहरै मुहडा आगै आणिस्या तौ थारै मुडा आगै तौ जीमस्यां ताहरा साहूकार हुआ बडो लवेस करि थाहेरै स करि वहिल उठ त्यार करि।
—चौबोली

लवै—देखो 'लव' १२
उ०—बोल्यौ—आ वात तौ वीलिया खवास री जोड़ायत रै जोग ई करी। थू साची अेकर तौ वैमाता ई आय भिडै तौ लवै ई नी लागण दे। —फुलवाड़ी

लवौ-सं. पु—१ पतली रस्सी (डोरी) से बधा पीतल या लोह का बना वह उपकरण जो इमारत बनाते समय दीवार मापने में काम आता है।
२ एक वृक्ष जिसकी कलम बनती है।
३ भूनने से फूला हुआ अनाज का दाना।
४ तीतर से छोटा उसी जाति का एक पक्षी विशेष।
उ०—१ दूसरी मांस न्यारी-न्यारी बणायजै छै। घणा मसाला दीजै छै। लवां री मास होसनाक सुधारै छै। —रा. सा. सं.
रू. भे.—लावौ

लस-सं. पु. [सं. लस्] १ एक वस्तु दूसरी के चिपकने का गुण, चिपचिपाहट।
सं. स्त्री.—२ लम्बी लकीर।
वि.—लम्बा, पतला और सकरा।

लसकर, लसकरि-स. पु. [फा. लश्कर] १ सेना, फौज।
उ०—१ झिलम टोप सूंधी सिर झडियौ, पटकर हूं धूडामणि पडियौ। करि जय घसै नगर मझि लसकर, अटकै नह झिळियौ वरियावर। —सू. प्र.
उ०—२ ताहरां रामसिंघ जी मुंह रा भारी तिण नूं कह्यौ क्यूं नही। आगै लसकर मांहि गया। —द. वि.
उ०—३ लाखां लसकर लार, धरमराज जिसड़ौ धणी। भारत वाळौ भार. भीमा अरजुन रै भुजां। —सरूपदास
२ बहुत से व्यक्तियो का समूह, दल।
उ०—१ लडालूंम डाळधा लमूटे, जाणै झबरक झूंटणा। अोयण मे लसकर लुगाया, छाणां चुगणा चूंटणा। —दसदेव
उ०—२ मिठड़ा सा भोजन बहू बहवडदे जिमावै, आयौ पितरां रौ लसकर जीमग्यौ। ठडड़ा सा पाणी बहू लाडलदे पियावै, आयौ पितरां रौ लसकर पी गयौ। —लो. गी.
३ फौज की साज-सज्जा का सामान।
उ०—४ सूरसिंहजी साहयबां कंवरजी स्रीगजसिंघ जी नै हुकम दीयौ के पातसाह सलामत आपनै जाळौर सांचोर इनायत कीया है सु थे सारो साथ लै जाळोर जाईजो। नै जाळोर जायनै अमलो कर जाळोर लीजो। तरै जोधपुर मु फौज लसकर लैर कवर जी स्री गजसिंघ जी नै सिरदारा मे राठौड़ राजसिंघ जी खींमावत सोबायत ले'र जाळोर आया नै गाव गुदरै डेरा किया। —नैणसी
४ सेना का पड़ाव, छावनी।
५ जहाज मे कार्य करने वालो का दल।
६ भाला, बरछा।
७ लुटेरा।
उ०—१ अधिक घण झाड उझाड अवगाहतां, लसकरा तसकरां पड़्या लारै। स्रीग गच्छराज री ध्यांन मन ध्यावतां विकट संकट सहू निकट वारै। —ध. व. ग्रं.
उ०—२ जागै जोगणी भय दुख नह व्यापै, पासे ईस पयारै। लसकर तसकर कोय न लागै, चार पहोर नीसतारै।
—माली सांदू

रू. भे.—लसकरी, लसक्कर, लस्कर, लहसंकर, ल्हसकर

अल्पा.—लसकरियौ, ल्हसकरियौ

लसकरियौ-सं. पु.—१ पति, खाविंद

उ०—१ जाय लसकरिया ने यूं कहै-थारै घर वनडी री व्यांव सौदागर महंदी राचणी। —लो. गी.

उ०—२ ऊंची तौ कीवै ढोला बीजळी, नीची तौ कीवै छै निवांण जी ढोला भोजी गोरी रा लसकरिया मोळ्ही लगायर कोठे चाल्या जी। —लो. गी

२ प्रियतम, प्रेमी।

३ लसकर में रहने वाला, सैनिक, फौजी।

४ शौकीन।

५ देखो 'लसकर' (अल्पा रू. भे.)

लसकरी-सं. पु.—१ सेनापति।

२ जहाज सम्बन्धी।

३ देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—सुरितांण तणा सेलार सक्ख, लखभूलई ऊपरि लूबि लक्ख। छेलियउ खेतसी खग्ग छोहि, लसकरी लाख ऊपरइ लोहि। —रा. ज. सी.

लसक्कर—देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—अटक पार हूंता जोरावर, श्राया गयद खरीदण श्रासुर। बिहु दूंणां सिरदार बहादर, लारा बार हजार लसक्कर —सू. प्र.

उ०—२ पड़ै जोध जरदेत, पडे बरहास सपक्खर। पडै बाण एक लक्ख, मीर 'जिहंगीर' लसक्कर। —गु. रू. ब.

उ०—३ बधियौ महबेचौ 'विजौ,' सारां सूं श्रवसाण। लेग लसक्कर खांन रा, श्रोया सेल प्रमांण। —रा. रू

लसरकौ-सं. पु.—१ रगड़, खरौंच।

२ धक्का, झटका।

३ लाक्षणिक अर्थ में किसी कार्य-सिद्धि हेतु दिया जाने वाला सहारा या मदद।

क्रि. प्र.—लागणौ

४ खुशामद, चापलूसी।

क्रि. प्र. लगाणौ

रू भे. 'लसरकौ'

लसण-स. पु.—१ प्याज के समान छोटी व सफेद गांठ व उसका पौधा

वि. वि.—एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियें (कूंपले) प्याज के समान होती है तथा इसकी जड़ गांठ की तरह होती है। मांसाहारी वर्ग इसका अधिक सेवन करते हैं। इसकी गंध बहुत उग्र होती है, इसी कारण हिन्दुओं में प्रायः वैष्णव इसका सेवन नहीं करते। वैद्यक में यह बहुत लाभदायक कहा गया है।

उ०—१ बीहै चंदण बावनौ, या लसण के संग। हरीया श्रांनि कुवासनौ, करै वास कुभग। —अनुभववाणी

उ०—२ गाजर मूला गिरमिरि, पिंडालू नही नाहि। लसण लसाई डूंगली, तिज परवत अवगाहि। —मा. कां. प्र.

२ जन्म से शरीर पर अंकित लाल रंग का दाग या चिन्ह, लक्षण।

३ मानक का एक दोष जिसे संस्कृत में 'अशोभक' कहते हैं।

४ धूमिल रंग का एक बहुमूल्य रत्न या पत्थर।

रू भे.—लसणि, लसन, लहण, लहसण, लहसुन, लहस्हन, ल्हसण।

अल्पा—लसणियौ, लसणीश्रौ, लसुणियौ।

लसणि-सं स्त्री—१ हाव-भाव।

उ०—१ आकरखण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सरपंच। चितवणि हसणि लसणि तणि संकुचणि, सुंदरि द्वारि देहुरा सच। —वेलि

२ देखो 'लसण' (रू. भे.)

लसणियाहिंग-सं. स्त्री. यौ—एक प्रकार की बनावटी हींग।

लसणियौ—देखो 'लसण' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ लसणिया नील झळक्क, दुजि वंस गोमेदक्क। चत्र श्रसी जाति उचार, जिण वार लूटि जुहार। —सू. प्र.

उ०—२ अचळ परोजा नीलवी, मुक्ताफळ ता माहि। लसत हसत से लसणिया, सोभा कही न जाय। —गजउद्धार

लसणी—१ एक प्रकार की गाय विशेष।

उ० कपळा कवळी ने बारै पुचकारै, लाखर लाखर श्रै श्राखर मन मारै। हासी बासीसी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लख द्वेद-सणी सारै। —ऊ. का.

२ घर, दर।

लसणीश्रौ देखो 'लसण' (अल्पा रू. भे.)

उ० - लीब लविंगह लसणीश्रा, लींबोई लोबांन। खूसट लासा लीबरू, लगिथगि लाबा पान। —मा. का. प्र.

लसणौ, लसबौ-क्रि श्र.—१ शोभित होना, शोभा देना।

उ०—१ वरि सिंह बाराह रै तुड केती, लसै ग्राह चक्री मुखी वाह लेती। लगां नागणी जागणी नीद लोपै, श्रगा दागणी लागणी भाग श्रोपै। —व. भा.

२ युद्ध स्थल से भाग जाना।

उ०—१ समर छिलोकर साम नू, लस श्रावै लबड़ाक। मूंछ थका मूंडत जिकै, नाक, थका बिन नाक। —बा. दा.

उ०—२ पाडियौ भीम खागा पछटि, गयौ खुरम लसि कुरग गति। गहतत एम जीतौ 'गजण', पूरब घर जोधांणपति। —सू. प्र.

उ०—२ लसियौ निबाब कटिया किलम, गह नृप घरि गजगाह रौ। लसकरीखान लूटै लियौ, सोबौ ग्रोरंगसाह रौ। —सू प्र.

३ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।

उ०—मूरख कथन न मांनियौ, लसियौ मूछ लजाइ। दोनूं रब न दियौ तखत, दोनूं रखत दिखाइ। —व. भा.

लसणहार, हारौ (हारी), लसणियौ—वि०।

लसिग्रोड़ौ, लसियोड़ौ, लस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लसीजणौ, लसीजबौ—भाव वा०।

लसन—देखो 'लसण' (रू. भे.)

उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावती लुकडी, लाहि लरीरी संगि। —मा. कां. प्र.

लसपस—देखो 'लचपच' (रू. भे.)

उ०—ढोला थां जोगी म्हा जोगी करियौ (रे) कसार, थांरै (नै) जीमण नै लसपस लापसी। —लो. गी.

लसरकौ—देखो 'लसड़कौ' (रू. भे.)

लसलसाट, लसलसाहट—स. स्त्री.—लसीला होने का भाव, चिपचिपाहट।

लसलसाणौ, लसलसाबौ—क्रि. ग्र.—लस से युक्त होने के कारण चिपकना, चिप-चिप करना।

लसलसाणहार, हारौ (हारी), लसलसाणियौ—वि०।

लसलसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लसलसाईजणौ, लसलसाईजबौ—भाव वा०।

लसलसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चिप-चिप किया हुग्रा।

(स्त्री. लसलसायोड़ी)

लसलसौ—वि. [ग्रनु] लसदार, लसीला, चिपचिपा।

लसाड़णौ, लसाड़बौ—देखो 'लसाणौ, लसाबौ' (रू. भे.)

लसाड़णहार, हारौ (हारी), लसाड़णियौ—वि०।

लसाड़िग्रोड़ौ, लसाड़ियोड़ौ, लसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लसाड़ीजणौ, लसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लसाड़ियोड़ौ—देखो 'लसायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री लसाड़ियोडी)

लसाणौ, लसाबौ—क्रि. स.—१ शोभित करना।

२ पराजित करके भागने में प्रवृत्त करना।

३ शर्मिंदा करना, फीका पटकना।

४ लिप्त करना।

उ०—जिहा सुद्ध ग्रासय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय। तिहां ग्यान दरसन थंभ ग्रनुभव, दिव्य ग्राउ लसाय। —वि. कु.

लसाणहार, हारौ (हारी), लसाणियौ—वि.।

लसायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लसाईजणौ, लसाईजबौ—कर्म वा.।

लसावणौ, लसावबौ, लसावणौ, लसावतौ—रू. भे.।

लसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभित किया हुग्रा। २ शर्मिंदा किया हुग्रा, फीका पटका हुग्रा। ३ लिप्त किया हुग्रा।

(स्त्री. लसायोड़ी)

लसावणौ, लसावबौ—देखो 'लसाणौ, लसाबौ' (रू. भे.)

लसावणहार, हारौ (हारी), लसावणियौ—वि.।

लसाविग्रोड़ौ, लसावियोड़ौ, लसाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लसावीजणौ, लसावीजबौ—कर्म वा.।

लसावियोड़ौ—भू. का. कृ.—देखो 'लसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लसावियोडी)

लसियोड़ौ—भू. का. कृ—१ शोभित हुवा हुग्रा, शोभायमान हुवा हुग्रा. २ पराजित होकर भागा हुग्रा. ३ शर्मिंदा हुवा हुग्रा, फीका पडा हुग्रा।

(स्त्री. लसियोडी)

लसी—सं स्त्री—१ चिपचिपाहट, चेप।

२ देखो 'लस्सी' (रू. भे)

लसीका—सं. पु. [सं लसिका] १ थूक, लार।

लसीलौ—वि.—१ चिप-चिपा।

२ सुन्दर, शोभायुक्त।

लसुणियौ—देखो 'लसण' (ग्रल्पा. रू. भे.)

लसूंबौ—स पु.—१ लालिमा।

उ०—नासिका मे वेसर ग्रसी छवि पावै छै, जांणै मुख मे मोती लसूंबौ छिटकावै छै। मानू फूका दे मदन जगावै छै। —पनां

लसोडौ—स पु—१ गोल-गोल पत्तियो वाला एक वृक्ष जिसके फल बेर के समान होते हैं।

२ उक्त पेड के फल।

रू. भे.—लिसोडा, लेसुवो, लेसूडो, ल्हेसवो।

लस्कर—देखो 'लसकर' (रू. भे)

उ०—१ इतरौ माल दरवेसा नू नही दियौ चाहिजै। लस्कर बिगर सांमान नही रहै। —नी. प्र.

उ०—२ नीठ से दीध दूजाण नेक, ग्राठमें दीह ताजीम एक। वढवा दल दिखणी तेण वार, ग्राविया लियां लस्कर ग्रपार। —वि. सं.

लस्सी—सं स्त्री.—छाछ, मट्ठा, दूध, दही मे पानी मिलाकर बनाया हुग्रा गाढा पेय पदार्थ।

रू. भे.—लसी।

लहंगौ—सं. पु.—कटि के नीचे के ग्रंग को ढकने वाला घेरदार स्त्रियो का पहनावा जो कमर पर इजारबन्द द्वारा कस कर पहना जाता है,

लहंगा, घाघरा (डि. को.)

उ०—हरी जरी का लहंगा सोवै, फुलकड़ी की सारी। झमवट ऊपर बिछिया सोवै, नथ सोवै मलका री। —मीरां

रू. भे.—लेहगो, लेंगो।

लंहुरी देखो 'लहरी' (रू. भे.)

लंहरियौ, लहरीयौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

उ०—मळकंति कठळ गोदरी, लहरीयां मोती सार। मांणिक मयरा तै सदळ सोहइ, ऊरि एकावळ हार। —रूकमणी मगळ

लहक-स. स्त्री —१ शोभा, सुन्दरता।

उ०—रतन मे राखड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरा बांहडी लहक लोड़ै। स्वाति नों बिंदलौ नासिका निरभयौ, भ्राज भ्राल्यंगन करन कोडै। —रूकमणी मगळ

२ लहकने की क्रिया या भाव।

३ ढंग या तरीका।

४ गायन की लय।

५ देखो 'लहको' (अल्पा, रू. भे.)

लहकणो, लहकबो-क्रि. अ. [सं. लसत+कृत प्रा लहक्किअ] १ किसी हलके पदार्थ, कागज, वस्त्र आदि का हवा मे फर फर शब्द करते उड़ना, फरहराना, फरफराना।

उ०—१ सगळा नर तिरण पासै आवै, देखि धजा लहकाणी। उत्तमकुमर तिहा निज वातां, भाखी चित्त सुहाणी। —वि. कु.

उ०—२ ध्वज पताका लहकई, पुस्प परिमळ वहकई। नाचइ पात्र, राज भवनि आवइं अक्षत पात्र। —रा सा. स.

२ लटकना, झूलना।

उ०—फूलहरौ प्रति फाबतौ, फूंदै लहकै फूल महकै परिमळ फल महा, इग्यारमी पूज अमूल। —ध व. ग्र

३ हिलते हुए लटकना, लुढकना।

उ०—१ नवजोबन नारी मिली, उरि लहकइ हे नवसरहार। हसगमरा अगलोयणी, मुहि बोलइ हे मगलचार। —हीराणद सूरि

उ०—२ सोल कला सुदरि ससिवयणी' चपकवन्नी बाल। काजल सांमल लहकइ वेणी, चचल नयरा विसाल। —हीराणद सूरि

४ हवा का चलना, झोंके आना।

५ मस्ती से चलना, मस्त चाल से चलना।

उ०—लुळती लफती लहकती, अलबेलरा छिब अच्छ। बालम रसियौ बरा रह्यौ, बेली छयौ बिरच्छ। —र. हमीर

६ आग की लपटें निकलना।

७ लगड़ाते हुए चलना।

८ लहलहाना।

९ अभिलाषा करना, चाहना।

१० कटाक्ष करना।

११ लपलपाना, लचकना।

लहकणहार, हारौ (हारी), लहकणियौ—वि०।

लहकियोड़ौ, लहकियोड़ौ, लहक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लहकीजणौ, लहकीजबौ—भाव वा०।

लहकूडलणौ, लहकुडलबौ, लहक्कणौ लहक्कबौ, लहरकणौ, लहरकबौ —रू भे.

लहकडउ-स. पु. [स. लसत+कृत प्रा. लहक्किअ] कटाक्ष।

लहकाड़णौ, लहकाड़बौ—देखो 'लहकाणौ, लहकाबौ' (रू. भे.)

लहकाड़ियोड़ौ—देखो 'लहकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहकाडियोडी)

लहकाणौ, लहकाबौ-क्रि. स (लहकणौ का प्रे. रू.) १ झोंके खिलाना, लहराना।

२ लटकाना, झुलाना।

३ हवा के झोंके देना।

४ आग की लपटे निकालना।

लहलहाना।

६ अभिलाषा कराना।

७ लगडाते हुए चलना।

लहकाणहार, हारौ (हारी) लहकाणियौ —वि०।

लहकायोड़ौ—भू० का कृ०।

लहकाईजणौ, लहकाईजबौ—कर्म वा०/भाव वा.।

लहकाड़णौ, लहकाड़बौ, लहकावणौ, लहकावबौ—रू. भे.।

लहकायोड़ौ-भू. का. कृ —१ लहराया हुआ. झोंके खिलाया हुआ. २ लटकाया हुआ, झुलाया हुआ. ३ हवा के झोंके दिया हुआ. ४ आग की लपटे निकाला हुआ ५ लगडाते हुए चला हुआ. ६ लहलहाया हुआ. ७ अभिलाषा कराया हुआ. ८ कटाक्ष कराया हुआ।

(स्त्री लहकायोडी)

लहकावणौ, लहकावबौ —देखो 'लहकाणौ, लहकाबौ' (रू. भे.)

उ०—तिमरी आविया, पइसारा मोटेइ मडाण कराविया, जांगी ढोल झालरि सख वादित्र वजाविया। बिहुं पासै पटकूल तरणा नेजा लहकाविया, पागि-पागि खेला नचाविया, तरिणया तोरण वंधाविया। —रा सा. स.

लहकावणहार हारौ (हारी), लहकावणियौ—वि.।

लहकाविओड़ौ, लहकावियोड़ौ, लहकाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लहकावीजणौ, लहकावीजबौ—कर्म वा.।

लहकावियोड़ौ—देखो 'लहकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लहकावियोडी)

लहकियोड़ो-भू. का. कृ.—१ लहरा हुआ, झोंके खाया हुआ. २ लटका हुआ, झुला हुआ. ३ हवा के झोंके में बहा हुआ. ४ आग की लपटें निकला हुआ. ५ लगडाते हुए चला हुआ. ६ लहलहाया हुआ. ७ अभिलाषा किया हुआ, चाहा हुआ।

(स्त्री. लहकियोडी)

लहकुडलणौ, लहकुडलबौ—देखो 'लहकणौ, लहकबौ' (रू. भे.)

उ०—वकुडियाली मूहडिह, भरि भुवणु भमाडइ। लाडी लोयण **लहकुडलइ**, सुर सग्गह पाडइ। —प्राचीन फागु संग्रह

लहकुडलणहार, हारौ (हारी), लहकुडलणियौ—वि०।

लहकुडलियोड़ो, लहकुडलियोड़ौ, लहकुडल्योड़ो—भू० का० कृ०।

लहकुडलीजणौ, लहकुडलीजबौ—भाव वा०।

लहकुडलियोड़ो— देखो 'लहकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लहकुडलियोड़ी)

लहकौ-स. पु.—१ झलक, आभास :

२ ढग, तरीका।

रू भे.—लहक, लैं'को।

लहक्कणौ, लहक्कबौ – देखो लहकणौ, लहकबौ' (रू भे.)

उ०—१ चचळि चडी चिहु दिमि चपइ, थर थर थाणादार उर कपइ। कमधज करि धरि लोह **लहक्कइ**, बिंबहर बुबअ बुबअ बक्कइ। —रणमल्ल छंद

उ०—२ सज्जणिया ववळाइ करि, गउखं चढी **लहक्क**। भरिया नयण कटोर ज्यउ, मुधा हुई डहक्क। —ढो मा

उ०—३ महा अणंदह्न पंछी डहक्कं गहक्कं मोर, खाट मो चहक्कं बणं हसै रूप खेल। सामीर री भूलपट्टा महक्कबे जेण समं, अच्छ धू **लहक्कं** जांगं चामीर री वेल। —र हमीर

लहक्कियोड़ो—देखो 'लहकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लहक्कियोडी)

लहचाळ—देखो 'लैं'चाळ' (रू. भे.)

लहजौ-सं. पु. [अ. लह्जः] १ बात करने या बोलने का ढग, तरीका।

२ स्वर, आवाज, लय (गायन मे)

३ अल्प काल, क्षण।

रू. भे.—लैं'जौ

लहण-वि.—१ लेने वाला।

उ०—१ अपणी खाटी सपति जगत कूं खुलावै। लख **लहण** सवा-लख विद्रवण विरद बुलावै। —सू. प्र.

२ देखो 'लसण' (रू. भे.)

लहणायत-सं. पु.—देखो 'लैणायत' (रू. भे.)

लहणियौ—देखो 'लैं'णौ' (अल्पा., रू. भे.)

लहणौ—देखो 'लैं'णौ' (रू. भे.)

उ०—१ घरमसीह कहै सात, सात दुख जाय न सहणा। दीसै घर मे दलिद, लोक वलि मागै **लहणा**। —ध. व. ग्र.

उ०—२ कवडी रा **लहणां** मही, राखे हट कर रोक। पाय क्राल माझल लिया, लूंड बजारी लोक। —बा. दा.

लहणौ, लहबौ—देखो 'लैं'णौ, लं'बौ' (रू. भे)

उ०—१ उपजै अहोनिस आप आप मे, रुखमणि क्रिसन सरस रति। कहै वेलि वर **लहै** कुमारी, परणी पूत सुहाग पति। —वेलि

उ०—२ आरोपित हार थगउ थयौ अतर, ऊरस्थळि कुचस्थळि आज। सु-जु मोती लहि न **लहइ** सोभा, रज तिणि सिर नाखइ गजराज। —वेलि

उ०—३ जिणि दीहे पाळउ पडइ, टापर पड तुरियाह। तियां दिहांरी गोरडी, दिन दिन लाख **लहांह**। —ढो. मा.

उ०—४ प्रीतम-हूती वाहिरी, कवडी ही न **लहांह**। जब देखू घर-आंगणइ, लाखे मोल लहाइ। —ढो. मा.

उ०—५ जिण दिन ढोलउ आवियउ, तिण अगलूणी रात। मारू मुहिणउ **लहि** कहउ, सखिया म् परभात। —ढो. मा.

उ०—६ अर ओर भी भाई भतीजा बडा बडा रजपूतवट रा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिघ री हजूरी रहै। बडी बडी रीझां मोजा हमेसा **लहै**। —प्रतापसिघ म्होकमसिघ री बात

उ०—७ नले जाण्यूं हू जीतीस सही, ए असभ हारवा आव्यु अही, कही भालण. 'अभिमान' ज वहि, पणि काल तणि गति को नवि लहि। —नळाख्यान

उ०—८ तइ दिख राजा नराइ साठ ताय पुत्री, साठ हजार कुंवर सिरदार। नव खंड रा भूपाल नमइ जिण, परग्रह **लहइ** तियइ कुण पार। —महादेव पारवती री वेलि

लहण्यौ—देखो लैं'णौ' (अल्पा., रू. भे)

लहयोड़ौ—देखो लियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लहयोडी)

लहर—स स्त्री. [स. लहरि, लहरी] १ तरल पदार्थो के ऊपरि तल में हवा लगने पर उस तल से उत्पन्न होने वाली वक्राकार रेखाए, तरग, हिलोर। (डि. को.)

उ०—१ जगजीत जोधाण के दरियाव कैसे। अभैसागर बाळसमद दोऊ, मानसरोवर जैसे। अम्रित के समुद्र तैसे **लहरू** के प्रवाह छाजै। —सू प्र.

उ०—२ हमा कहै रे रेडग, सायर **लहर** न दिट्ठ। ज्या नाळे'र न चक्खिया, (त्या) काचरिया ही मिट्ठ। —अज्ञात

पर्याय उमेल, उतकलिका, उरमी, बेक, भंगि, हिलोळ।

२ पौधो के समूह पर हवा के झोंके से उत्पन्न गति या कंपन ।
ज्यूं—चौधरी गहूं में उठती लहरां देख 'र घणौ राजी व्हैतौ ।
३ सहसा मन में जागृत होने वाली इच्छा, मन की मौज ।

उ०—प्रालम हाथ री रघुनाथ अवरिज, अवध भूप असंक । दिल गहर दीधी सरण हित दत, लहर हेकण लंक ।

—र. ज. प्र.

४ मन मे उठने वाली आवेग पूर्ण प्रवृत्ति, आवेश, जोश ।

उ०—लसकरां फिरै अग भाव चढती लहर, आगमां दाव अवरां अलोहै । समद कछवाहू तणौ बरण सुकज, 'माधहर' तणा खग काळ मुहोडै । —राव दुरजणसाल हाडा री गीत

५ क्षण, पल ।

उ०—सदा प्रसन्न कव सदन सीतळ नजर सुपेख्वै, मनवछत करै हेकै लहर मांय । न देखै भाव भगती दिसा 'करनला', सनातन धरम लेखै करै साय । —मा. बचनिका

६ मादक या विषाक्त पदार्थ के सेवन करने मे शरीर मे उत्पन्न प्रतिक्रिया, नशे की तरंग ।

उ०—विविध प्रकारे भोजन हुता, जीमता आई लहर । राय पण्सी जाणियौ, इण राणी दीधौ जहर । —जयवाणी

७ अनुराग, प्रेम ।

उ०—कहत ललिता बैद बुलाऊ, आवै नद को प्यारौ । वो आया दुख नाहिं रहेगो, है मोहि पतियारौ । बैद आयकर हात जो पकड़यौ, रोग हैं मारौ । परम पुरुस की लहर व्यापी, डस गयौ कारौ ।

—मीरा

८ पवन का झोका, वायु का झोका ।

उ०—१ उत्तर आजस उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि । सजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अग दाधि । —ढो. मा.

उ०—२ नैरति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजै धण पयोधर । झोले वाइ किया तरु झंखर, लवळी दहन कि लू लहर ।

—वेलि

९ गंध-युक्त वायु, महक ।

क्रि. प्र.—आणी

१० कृपा, महर ।

उ०—लहर कर लहर कर बिवक धर लांगडा, पहर कर कछोटी निज पगांमां । डाक डमकार समकार कर डैरवां । महर कर महर कर मांमा । —गजो खिडियो

११ आनन्द, सुखभोग ।

ज्यूं—लहर री लहरां लेवणी ।

१२ सिर के बालों, वस्त्रों की रगाई तथा खाट की बुनाई मे होने वाला वक्र रेखांकन ।

उ०—अगर खेवै है, सुगंध देवै है । सूंघौ सूंघीजै है, सीसियांरी सीसियां ऊधीजै है । चोटी करै है, तिण आगै नायण री लोटी फिरै है । गुथबा में पड़ै है लहर, तठै कहो कुण सकै ठहर ।

—र. हमीर

१३ महिलाओ के कान का आभूषण विशेष ।

१४ स्फुट गायन की क्रिया, रागणी करने की क्रिया ।

१५ पुराणो के अनुसार निष्फलीय शस्त्र के बोलने की ध्वनि ।

उ०—तद सख लहरां दीवी, राड तू ईयै नूं क्यौं मारै ? हूं थारै आफै आयौ छु । —बूढी ठग राजा री बात

रू. भे.—लहराण, लहरि, लहरी, लहरीय, लहिर, लहिरी, लै'र, लैर ।

अल्पा.—लहरकी, लहरो

लहरकणौ, लहरकबौ—देखो 'लहकणौ, लहकबौ' (रू भे)

उ०—मोठ बाजरी सूं खेत लहरकै, वण-वण हरियाळी छायी । रुत आयी, रे पपय्रिया, तेरे बोलण री रुत आयी । —लो. गी.

लहरकणहार, हारौ (हारी), लहरकणियौ—वि. ।

लहरकिग्रोड़ौ, लहरकियोड़ौ, लहरक्योड़ौ—भू. का कृ. ।

लहरकीजणौ, लहरकीजबौ—भाव वा. ।

लहरकियोड़ौ—देखो लहकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री लहरकियोडी)

लहरकौ—देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

लहरणौ, लहरबौ—१ घनघटा युक्त हो बरसना, वर्षा होना ।

उ०—सावण तो लहरयौ भादवो रे, बरसै ज्याकू कूट । म्हारा माहला सावण लहरयो रे । —लो. गी.

२ मडराना, झूमना ।

उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग विलास पावसौ प्रीत जताता । वेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजता, ज्यू मुख भोह विलास अधर घण पान करता । —मेघ

३ समुद्र मे तरंगें उठना, तरगित होना ।

४ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

उ०—अधरा रै रंग दीजै है, तिलक कीजै है । घूंमाळो गाघरौ पहरीजै है, लहरियौ ओढिया जिणमे तन मन लहरीजै है ।

—र. हमीर

५ तरल पदार्थ मे हवा के झोके से हल-चल होना, लहरें उठना ।

६ किसी लचीले पदार्थ का वायु के ससर्ग से हिलना, लहलहाना ।

७ किसी का लहरो के रूप मे उठना, चलना या आगे बढना ।

उ०—बाडा मे लाय लागी जिणरी लहरावती लपटा ठाकर रै माळियै लागण ढूकी ।

—फुलवाड़ी

८ शोभित होना, फबना।

९ मादक या विषैले पदार्थ के प्रभाव में आना।

१० अनुराग या प्रेम में लीन होना, अनुरक्त होना।

११ मन में उमंगे, इच्छाएं उठना।

१२ किसी वस्तु को वायु के वेग में उड़ते रहने के लिए छोड़ देना, तरंगित करना।

लहरणहार, हारौ (हारी), लहरणियौ—वि.।

लहरिग्रोड़ौ, लहरियोड़ौ, लहर्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लहरीजणौ, लहरीजबौ—भाव वा.।

लहराड़णौ, लहराड़बौ, लहराणौ, लहराबौ, लहरावणौ, लहरावबौ, लंराणौ, लंराबौ—रू. भे.।

लहरदार—वि. [सं. लहरिः+फा. दार] १ जिसकी बनावट लहरों जैसी हो।

२ जिस पर लहरो जैसी आकृति बनी हो।

रू. भे.—लैरदार, लैरियादार।

लहरनिध, लहरनिधि—स. पु. यौ. [सं लहरि+निधि] समुद्र, सागर।

उ०—दनुज आवियौ वळै हियै दोयणां, लाल मुख दसूं भटकै अगन लोयणा। राम सामौ धसै दभ रिण रोपनै, लहरनिध छळै जाणै हदां लोपनै। —र. रू.

लहरबाळ—वि.—बडा दातार, उदार-चित। महान उदार।

उ०—धन दे घर दे धाम दे, निबळां करै निहाल। दिल दधि मे दातार रे, लहरै लहरबाळ। —रैवतसिंह भाटी

लहरसख—सं. पु.—पुराणो के अनुसार वह शख, जो अर्थ-सिद्धि नही करता हो।

उ०—तद समुद्रजी कही, 'तौ भलां, यै हीरा मांणक छै, ले अर इसड़ौ तौ सख कोई नही।' तद कामदारै कही, महाराज एक लहरसंख छै, सो दीजै। —बूढी ठगराजा री वात

लहरांण—वि.—१ लहरों से युक्त।

उ०—रजधानी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमांण। सूघै महल सिंगारिया, सोरभी लहरांण। —रा. रू.

२ देखो 'लहर' (रू. भे.)

लहरराज—स. पु.—शेष नाग?

उ०—लगै सर स्रोण जगै लहराज, सजै अंग जाण कसूंबल साज। जमातिय जोध जमातिस जांन, वजै सुर सिंधव राग विधांन। —सू. प्र.

लहराड़णौ, लहराड़बौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)

लहराड़णहार, हारौ (हारी), लहराड़णियौ—वि०।

लहराड़िग्रोड़ौ, लहराड़ियोड़ौ, लहराड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लहराड़ीजणौ, लहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

लहराड़ियोड़ौ—१ देखो 'लहरायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लहरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहराड़ियोड़ी)

लहराणौ, लहराबौ—क्रि. स.—१ झंडा आदि का हवा में लहराना।

२ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)

लहराणहार, हारौ (हारी), लहराणियौ—वि०।

लहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लहराइजणौ, लहराइजबौ—भाव वा०/कर्म वा.।

लहरायोड़ौ—देखो 'लहरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहरायोड़ी)

लहरावणौ, लहरावबौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)

उ०—बादळ रा मन में भांत-भांत रै फूलां रा अणगिण बगीचा लहरावण लागा। —फुलवाड़ी

२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)

लहरावणहार, हारौ (हारी), लहरावणियौ—वि.।

लहराविग्रोड़ौ, लहरावियोड़ौ, लहराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लहरावीजणौ, लहरावीजबौ—कर्म/भाव वा.।

लहरावियोड़ौ—देखो 'लहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहरावियोड़ी)

लहरि—देखो 'लहर' (रू. भे.)

उ०—१ चिहुंर जाळ से वस्त्र, लहरि लगै केवांणह। ओढणि कमळणि पत्र, भ्रमर गुंजै नीसांणह। —गु. रू. बं.

उ०—२ स्रीमहाराज राजेस्वर, 'अभैसाह' नरनाह प्रमेसुर। आयौ सूत मागध कविंद्र के भाय, दान की लहरि समुद्र तैं सवाय। —रा. रू.

उ०—३ इम चहुवांण प्रबळ दळ ओपै, लहरि अजाद जांणि दधि लोपै। जाणै छपन कोडि जळ जाळां, मंडि उमडै बरसण घणमाळां। —सू. प्र.

उ०—४ पीव पीव मैं रटूं रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री। विरह-भवग मेरी डस्यौ कळैजो लहरि हळाहळ जागी री। —मीरां

उ०—५ भवग मिळै मळयागरी, लहरि विसम की मेट। साध सदा मिळ करत है, रांम नांम सुख भेट। —अनुभववांणी

उ०—६ निज मन बिसहर विरह विस, उर विच लागी आनि। पेम लहरि पल पल उठै, हरीया निरभै जानि। —अनुभववांणी

लहरियादार—वि.—वह जिसमे लहर के समान बहुत सी टेढी-मेढी रेखाएं हो।

लहरियौ—सं. पु.—१ लहर की तरह टेढी-मेढी रेखाओं का समूह।

ज्यूं—लहरिया भात बुणाई।

२ स्त्रियों के ओढने तथा पुरुषो के सिर पर बांधने का एक वस्त्र विशेष जिसमे रग-बिरगी धारियें होती हैं।

उ०—१ घरणे घेर घाघरै गरक पिसवाजी गोटा । लपदार लहरियो दुधक खुल रहा अगोटा । —र. हमीर

उ०—२ असी ए टका को म्हारो लहरियो जी, कोई मोहर-मोहर गज मांत राज, लहरयो, लेदयो जी । —लो गी.

३ राजस्थानी मे एक लोक गीत ।

उ०—और ही झूलराझूल लमझम करता 'फूलबाग' मे आवै है, लहरिया गावै है । — र. हमीर

वि.—लहरो वाला, लहरो युक्त ।

रू. भे.—लहरिओ, लहरीओ, लहरीयो, लहरयो, लेरियो, लैरियो, लैरयो, लैरो ।

लहरी-वि.—१ वह जिसमे लहर हो, लहर वाला ।

उ०—लहरी दरियाव अवग दत लाखां, कीरत मृग आयो गो कोस । पहुँडै तू राणा पारथीया, 'दीपा' इग कळजुग नै दोस । —ओपो आढो

२ समुद्र, सागर ।

उ०—खुरम समदो मच्छ जिम, लहरी लक्ख दळाह । चढियै पाणी सामुहो, सुरताणी फोजाह । —गु रू. ब

३ दातार, दानी ।

उ०—१ छोकरी आयिनै पूछियो । तरै एकरा चाकर कह्यो-साखि राठोड़, नीबो सिवालोत, लाखा रो लोडाउ, बडो भोकाउ, सैणा रो सेहुरो दुसमरा रो साल, जाता-मरता रो साथी, लाखा रो लहरी । —वीरमदे सोनगरा री बात

४ आवेश या जोशवाला, जोशीला ।

५ प्रफुल्लित रहने वाला, खुश-मिजाज ।

६ देखो 'लहर' (रू. भे.)

उ०—लहरी सायर-सदिया, वूठउ-संदउ बाव । बीछुडिया सजण मिळइ, वळि किउ ताढउ ताव । —ढो. मा.

लहरीओ—देखो 'लहरियो' (रू. भे.)

लहरीय—देखो 'लहर' (रू. भे.)

लहरीयो—देखो 'लहरियो' (रू. भे.) (रा. रा.)

लहरीरव, लहरीरवण—स पु. [स] समुद्र, सागर। (अ मा., ह ना. मा)

उ०—१ रटै भागीरथी सुणो लहरीरवण, लाल रग रुधिर चो नीर लागो । कळह तटि गवड है गै भडा कचरिया, भिडे पूरब तणो साह भागो । —अनिरुद्धसिंघ गौड री गीत

उ०—२ यारी अणी जोमणी ओपै लहरीरवण अजा किर लोपै । साम्है अणी गिरौं अरि सल्ला, मारहथा जोधा रिडमल्ला । —रा. रू.

वि.—१ वह जिसमें लहरें उठती हो ।

उ०—आतसबाजी गाडियां, आराबा अनमंघ । गडडै गोळी नाळिया किरि लहरीरव सिंध । —गु रू व.

२ उदार, दातार ।

उ०—लाखो लहरीरव नांम खडै नवपाट री रखपाळ । बह जाए महाबळ आघरव, उज्जल दीपियो विरदाळ । —ल. पिं.

लहरीस—स. पु. यौ. [स. लहरि + ईश] १ समुद्र, सागर ।

उ०—साकिया राज राणा सकळ, अकळ, पाण छिलियो असुर । लहरीस जाण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर । —रा. रू.

२ जोश या आवेश-युक्त

३ उमग या उत्साह वाला ।

लहरीसमंद—स पु यो.—समुद्र, सागर ।

वि – दानवीर उदार ।

उ०—सरणसाधार मदतार लहरीसमंद, करै अदतार नर मीढ केहा । रार लज धार संसार सारो रटै, अगट गढ बीसोरण हार तेहा । —गुलजी आढो

लहरो—स. पु.—देखो 'लघु' (रू. भे)

उ०—सिंह सिचाणो सापुरुस, ऐ लहुरा न कहाय । वडो जिनावर मारकै, छिन मे लेय उठाय । —अग्यात

२ देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे)

उ०—रिमझिम रिमझिम मेवलो वरसै अर्तै मे ही अचाणचूको पून रो एक लहरो आयो अर बादळी उडगी । —कन्हैया लाल सेठियो

लहरयो—देखो 'लहरियो' (रू. भे)

उ०—१ गोरे कचन गात पर अगिया रग अनार । लहगो सोहै लचकतो, लहरयो लपादार । —र हमीर

उ०—२ लहरयो तो लै दो गोरी का सायबा जी, कोई थारी घण ने लहरयो रो चाव जी लहरयो लै दो जी । —लो गी.

लहल—स. पु.—सगीत मे एक प्रकार का राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है ।

लहलहणो, लहलहबो – देखो 'लहलहाणो, लहलहावो' (रू भे.)

उ०—लहलहती नाचै लता, पवन सगीती गाय । पखा-बरदारी करै, रभ बिचै बणराय । —बा दा.

उ०—२ करइ उल्लास, लवेस्वरी कोटिग्वज तणा आवास । आनै दइ मन, गरूड राज भवन । उपारी अखंड । ध्वजपट लहलहई प्रचंड । —रा. सा सं.

लहलहणहार, हारो (हारी), लहलहणियो – वि० ।

लहलहियोड़ो, लहलहियोड़ो, लहलह्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लहलहीजणो, लहलहीजबो—भाव वा० ।

लहलहाड़णो, लहलहाड़बो—देखो 'लहलहाणो, लहलहाबो (रू. भे.)

लहलहाड़णहार, हारो (हारी), लहलहाड़णियो—वि० ।

लहलहाड़िओड़ो, लहलहाड़ियोड़ो, लहलहाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

लहलहाड़ीजणो, लहलहाड़ीजबो—कर्म वा० ।

लहलहाड़ियोड़ौ—देखो 'लहलहायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहाड़ियोड़ी)

लहलहाणौ, लहलहाबौ—क्रि. अ.—१ हवा के प्रवाह से पौधे के ऊपरी भाग का हिलना, लहराना।

२ किसी लचीली वस्तु का हवा के झोंके के साथ हिलना या उड़ना।

३ फूल-पत्तियों से हरा भरा होना, पल्लवित होना, खिलना।

४ सूखे हुए पौधे का नवीन पत्तों से हरा-भरा होना, पनपना।

५ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना।

६ दुबले शरीर का फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट होना।

क्रि स.—७ प्रफुल्लित करना, आनंदित करना।

८ दुबले पतले शरीर को फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट करना।

लहलहाणहार, हारौ (हारी), लहलहाणियौ—वि।

लहलहायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लहलहाईजणौ, लहलहाईजबौ—भाव/कर्म वा.।

लहलहणौ, लहलहबौ, लहलहाड़णौ, लहलहाड़बौ, लहलहावणौ, लहलहावबौ, लैलहाणौ, लैलहाबौ—रू. भे.।

लहलहायोड़ौ—भू का. कृ.—१ हवा के झोंके से पौधे का ऊपरी भाग हिला हुआ. २ कोई लचीला पदार्थ हवा के साथ हिला या उड़ा हुआ. ३ फूल-पत्तियो से हरा-भरा हुवा हुआ, पल्लवित. ४ सूखा हुआ पौधा नवीन पत्तो से हरा-भरा हुवा हुआ, पनपा हुआ. ५ प्रफुल्लित या आनंदित हुवा हुआ. ६ दुबला शरीर फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट हुवा हुआ. ७ प्रफुल्लित किया हुआ. ८ दुबले शरीर को फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट किया हुआ।

(स्त्री. लहलहायोडी)

लहलहावणौ, लहलहावबौ—देखो 'लहलहाणौ, लहलहाबौ' (रू. भे.)

लहलहावणहार, हारौ (हारी), लहलहावणियौ—वि.।

लहलहाविओड़ौ, लहलहावियोड़ौ, लहलहाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लहलहावीजणौ, लहलहावीजबौ—भाव/कर्म वा.।

लहलहावियोड़ौ—देखो 'लहलहायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहावियोड़ी)

लहलहियोड़ौ—देखो 'लहलहायोड़ौ' १ से ६ (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहियोड़ी)

लहल्लह—स. स्त्री.—युद्ध मे भैरव या युद्ध देवता की आवाज।

लहवाणौ, लहवाबौ—क्रि. अ.—छोटा होना, लघु होना।

उ०—पण थोड़ी उराकी छं। रवीयाए मद, ऐराक बीजं बड़ बीज, प्रात गाज, सापुरस वेरा पैंहिली तौ लहवाय लहवाय पीछे गरवाय गरवाय। —हाहुल हमीर री वात

लहवाणहार, हारौ (हारी), लहवाणियौ—वि।

लहवायोड़ौ- भू. का. कृ.।

लहवाईजणौ, लहवाईजबौ—भाव वा.।

लहवायोड़ौ—भू. का. कृ.—छोटा हुवा हुआ।

(स्त्री लहवायोडी)

लहसण—देखो 'लसरा' (रू. भे.)

लहसणौ, लहसबौ—क्रि. अ.—प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ घट मैं एक हृक है अला,लहसी भाग जिन्हांदा भला। औउं सोउ जाप अजपा, घट मैं किया संप-असपा।

—अनुभववांणी

क्रि स.—लेना प्राप्त करना।

लहसणहार, हारौ (हारी), लहसणियौ—वि०।

लहसियोड़ौ, लहसियोड़ौ, लहस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लहसीजणौ, लहसीजबौ—भाव वा०।

लहसियोड़ौ—भू. का कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ।

२ लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री. लहसियोड़ी)

लहसुन—देखो 'लसरा' (रू. भे.)

लहि—अव्य.—तक, पर्यंत।

लहिड़्यौ—स. पु—एक विशेष जाति का घोड़ा।

उ०—मल्हड़ा, हरीयड़ा, सरेखडा, टूककना, खेत्र खुरांसांणी। बाहडदेसना, बोरीया, लहिड़्या, गगेटिया, हसजादर, उडणभ्रमर, ऊघस्या फौरणा, चपल चरण विस्तीरण सालिहोत्र प्रतिस्टा सिद्ध। —का. दे प्र.

लहिर, लहिरी—देखो 'लहर' (रू. भे.)

उ०—१ तीन प्रकार रौ पवन वाजै छै। सीत, मद, सुगध अनेक परिमळ भोला खाई लहिर लै छै। —र. वचनिका

उ०—२ मलयाचल मूकी करी, मारुत आवियउ जेह। वैसाखि वासिग-जिसिउ, लहिर लगाडइ तेह। —मा. कां. प्र.

उ०—३ ढोला हू तुझ बाहिरी, झीलरा गइय तळाइ। ऊजळ काळा नाग जिउ, लहिरी ले ले खाय। —ढो. मा.

लहीखोळणौ—सं. पु—प्रसव के पाँचवे दिन स्नानादि स्वच्छता के रूप मे किया जाने वाला सस्कार।

लहुडौ—देखो 'लघु' (रू. भे)

लहु—सं. पु.—१ शीघ्र कार्य करने वाला।

२ हलका।

३ निस्सार ।

अव्य —तक, पर्यंत ।

देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—हेम वरनी हेमगिर, बाळी लहुवे वेस । कथ विहूणी कामणी, सांची कहि संदेस । —मा. वचनिका

लहुआ-सं. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा ।

२ सोलह मात्रा का मात्रिक छंद जिसके अन्त में गुरु हो ।

लहुड़ियौ, लहुड़ौ, लहुडउ, लहुडुं, लहुडौ—देखो लघु' (रू. भे.) (उ.र)

उ०—१ पुत्र दोय 'गजपति' रै, सूर दातार सधीर । वडौ 'अमर' लहुड़ौ 'जसौ', वडै नखत नरवीर । —सू. प्र.

उ०—२ तद बायर पूछीयौ, सु कहै नही । लहुड़ी बाहर री वारी हुती । तिका पूर्छ पिण कहे नही । —वात पीठवै चारण री

उ०—३ लिखीवट जे साहस बीर, मालदेव छइ लहुडउ वीर । जिसी प्रीति लखमण नइ रांम, राज अनरेइ एहवी माम ।

—कां. दे. प्र.

उ०—४ जणां मत्री मुसाहिबां मतौ उपाय बींरा लहुड़िया भाई नूं राजतिलक दीन्हू । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—५ पिंगळ राय कहावियौ, ढोला पाछो आव । मारू लहुडी बहिनडी, तोहि भणी परणाव । —ढो. मा.

(स्त्री. लहुड़ी लहुडी)

लहुवय—देखो 'लघुवय' (रू. भे)

उ०—सिरिवत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नदणो । बइरागि लहुवय लिद्ध संजय, भविय जण आणंदणो । —स. कु

लहू—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—१ गरलसहोदर ! गगनचर ! लछनधर लहू-द्रद्ध । आवि म माहरइ आंगणइ, उडुप अधारइ लद्ध । —मा का. प्र.

उ०—२ किवळौ बिच्छू कहैं, लहू लघु अंक लहावै । गिणै छद बस गुरु कवी, लघु चार कहावै । —र रू.

लहूअडउ, लहूडौ—देखो 'लघु' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—१ नान्हउ ए स्वांमी लहूअडउ लघु बाधव गुणे करी छइ वडउ । भाई तमारू स्वांमी एह एहसिउ तमे म देसिउ छेह ।

—नळ दवदंती रास

उ०—२ वडां वतू पहिलू करइ लहूडा पछइ लगार । तेहनइ सीस चडावीइ, माधव किसिउ विचार । —मा. का प्र.

लहेरी-सं. पु.—समुद्र, सागर ।

वि.—लहर वाला, लहरदार ।

उ०—अबै बिनती हेक 'हिंगोळ' वाळी, जिका घ्यांन दे कान कीजै धजाळी । लहैरी महैरांण भूपाळ 'लच्छौ', 'अखौ' दूसरौ रीझ खीजाळ अच्छौ । —मे. म.

लहैरी-स. पु.—एक छोटा सदा-बहार पौधा, जो पजाब, दक्षिण गुजरात और राजस्थान मे बहुत होता है ।

लहोड़ा-सं. पु.—१ शस्त्र-प्रहार ।

उ०—वीजै जी महाराणा जद जाम वगैरा भाई रै लहोड़ा लागा राव चद्रसेण री बेटी जामवती बाई बीजाजी रै लारै वळी ।

—मारवाड़ री ख्यात

२ देखो 'लोह' (रू. भे.)

३ देखो 'लघु' (रू. भे)

लह्य-स. पु.—१ एक ऋषि, जो भुज्यु ऋषि का पिता था ।

लह्यणौ, लह्यबौ—देखो 'लैंणौ, लैंबौ' (रू. भे.)

लह्यणहार, हारौ (हारी), **लह्यणियौ**—वि. ।

लह्योडौ—भू. का. कृ. ।

लह्यीजणौ, लह्यीजबौ—कर्म वा.

लह्योड़ौ—देखो 'लियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लह्योडी)

लांई-वि.—बायी, वाम ।

उ०—हो मेरी आंखि फरूकौ लांई, पीव मिळण कै ताई । पीव प्यारै कौ पथ निहारत, मन तन सु भई ठाढी । —अनुभववाणी

लांक-स. पु.—१ देखो 'लूग' (रू. भे)

२ देखो 'लक' (रू भे.)

उ०—जिसी कमल कोमल नाल तिसी बाहुलता, जिसिउ सिंह तणौ लांक तिसिउ मध्य देस, जिसा केलि ना स्तभ तिसा बे ऊरु... ।

—व. स.

लांकड़ी—देखो 'लाकी' (अल्पा., रू. भे.)

लांकी-स. स्त्री —लोमडी ।

रू भे —लूकी, लूकालु, लूगती, लोका

अल्पा.—लाकडी, लुकड़ी, लुकडी, लूकडी, लूकड़ी

वि —कायर, डरपोक ।

लांकीमूळौ-सं. पु —पत्र-पुष्पहीन एक प्रकार का उद्‌भिज जिसके अन्दर बदबू निकलती है ।

रू. भे.—लकीमूळौ

लांकीलौ-वि. (स्त्री. लाकीली) १ सुन्दर ।

उ०—लांकीलो चूड़ो पिण घणो रूड़ो चमकै है, देही तिका जांणै दामण हीज दमकै है । जिण अंग जावक सुधारौ ही भार है, इण नाजकता रो किसो पार है । —र. हमीर

२ रंगीन ।

लांको-सं. पु. (स्त्री. लांकी) नर-लोमड़ी ।

रू. भे.—लूंकी

लांखणौ, लांखबौ-क्रि. स.—गिराना, डालना, फेंकना ।

उ०—१ टलवलइ जिम निरजालि माछिली, वलवलइ अति अंगि वली वली । भखइ लांखइ लावर आकुलउ, विरहि विह्वल वातर वाउलउ । —सालिसूरि

उ०—२ पटोलै भूमि वाहिरियइ, चीतवीया पासा पड़इ, उं करतां पाथरु आइं, लक्ष्मी वारणि लांखइं अनइ ऊपरवाडि पयसइ, इसिउ दिहाडउ भलउ । —व. स.

लांखणहार, हारौ (हारी), लांखणियौ—वि० ।

लांखिओड़ौ, लांखियोड़ौ, लांख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लांखीजणौ, लांखीजबौ —कर्म वा० ।

लांखियोड़ौ-भू. का. कृ.—गिरायाहुआ, डाला हुआ, फेंका हुआ ।
(स्त्री. लांखियोड़ी)

लांग-स. स्त्री.—१ आवड़ देवी की एक बहिन का नाम ।

२ धोती या लंगोट बाधते समय आघो के बीच में से निकाल कर कमर मे खोसा जाने वाला लगोट या धोती का भाग ।

उ०—इत्यादिक मोथी आदति रा अळिया, थोथी थळवट रा थळिया बेथळिया । ढीली लांगां रा डेरा ढळकाता, टोघड़ टुकड़ा रा खेरा खळकाता । —ऊ. का.

३ धोती की किनार ।

उ०—तठा उपरायत सिरदारां देसौतां तळाव में झूलण री हास करै छै । लाल लांगी री पोतां पहरजै छै । घडनावां बणायजै छै । —रा .सा. स.

अल्पा, लागडी'

४ देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—तिण भांग साफ मसाला मंगायजे छै । जायफळ, लांग, इळायची, मिरच, विरहाळी अजूं नागकेसर भमर टटी तज तमाळ-पत्र तंबोळ प्रतसंघी । —रा. सा. सं

रू. भे.—लग

लांगड़-सं. पु. [सं. लांगलं] १ सूअर, वराह । (अ. मा.)

२ देखो 'लांगळ' (रू. भे.)

उ०—सीहरा कळाधारी अगर 'सांवतां', बळाकारी हरा घार बूतौ । मुरड आजड पड़ै खाय आंगड मठा, जकण लांगड़ ऊरड़ आय जूतौ ।
—आउवा ठाकर हरनाथसिंह रौ गीत

३ देखो 'लांगो' (मह., रू. भे.)

४ देखो 'लगड़ौ' (मह., रू. भे.)

लांगड़असव-सं. पु.—सूअर, वराह । (अ. मा.)

लांगड़ी—देखो 'लांग' (अल्पा., रू. भे.)

लांगड़ौ—१ देखो 'लांगो' (अल्पा., रू. भे) (अ. मा , डिं. को.)

उ०—१ गदा ले लड़ी लांगड़ौ अग्र गांमी, भले मात हिंगोळ हिंगोळ भांमी । मुणी मैं जिका आदि अनादि माई, अवत्तार ले मामड़ा धाम आई । —मे. म.

उ०—२ जांगड़ा झड़ां सत्र वीर सर गवीजै, ताप पड़ कागड़ा लक ताई । पर गढां सांगड़ा दयण आयौ ऊभज, नागध्रह लांगड़ा वीर नाई । —बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—३ नामी गिरदां लांगड़ा विना भ्रू-डंडां चढावै न कौ । तवां राम बना न कौ उडावै त्र-ताप । निसा राका विना वेळ सामंद्र बढावै न कौ, पातां नेस तौ विना कौ बढावै 'प्रताप' ।
—कीरतसिंह खिड़ियौ

२ देखो 'लगड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ भगवानदास भाराथ भल्ल, 'वगडी' तखत्त आखाडमल्ल । लांगड़ौ हणु जिम लियण बाथ, ओगम लागै अणभग नाथ ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ ओमडी भडीस ज्याग आयौ जिऊ चडीस जायौ, राजपत्री आयौ जीऊ थडीस व्याळ रेस । ओडडी असीसतौ लांगड़ौ कपीस आयौ, कोडंडी कसीसतौ क आयौ गुड़ाकेस । —हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ तैं पाट 'वाघ' वगडी तखत्त, 'वाघ' सुतन भड बांकड़ौ । भगवांन वहै असमांन भुज, हेक हणमत लांगड़ौ । —गु. रू. बं.

लांगटियौ-स. पु.—बाजरी के आटे को पांनी मे मिलाकर आंच पर पका कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ ।

लांगडौ-सं पु.—चकमक पत्थर के साथ लगी हुई छोटी सूत या खीप की रस्सी, जो आग चलाने के काम आती है ।

लांगण—देखो 'लाघण' (रू. भे)

लांगदार-वि.—लाग वाली ।

उ० —एक पग मे चादी री ताती भळकै अर एक कांन री ऊपरली लोळ मे खरा मोत्यां री मांमा-मुरकी लटकै । किनारी हाळी लांगदार धोती तथा पागडी में ताबै री मादळियौ बांधोड़ो है ।
—वसदोख

लांगळ-सं पु. [सं. लांगलं] १ खेत जोतने का हल । (डिं. को.)

२ एक देश का नाम ।

उ०—कीर कास्मीर द्रविड गउड जांड लाड लांगळ जांग ळखस पार स्व जादव नेपाल अग वंग कलिंग तलिंग, मागध''' । —व. स.

रू. भे.—लगळ, लांगड

लांगळचकर, लांगळचक्र-सं. पु [सं. लांगलम्+चक्र] फलित ज्योतिष में हल के आकार का एक चक्र जिसके द्वारा भावी फसल के बारे में जाना जाता है ।

लांगळधुज, लांगळध्वज—सं. पु. यौ. [सं. लांगल+ध्वज] बलराम, हलधर ।

लांगळी—सं. पु. [सं. लांगलिन्] १ बलराम, हलधर ।

२ नारियल का पेड ।

३ सर्प, सांप ।

४ पुराणों मे एक नदी का नाम ।

५ ऋषभक नामक अष्टवर्ग की औषधि ।

६ देखो 'लागूळी' (रू. भे.)

लांगळीस—सं. पु. यौ. [सं. लांगल+ईश] १ बलराम, बलभद्र ।

२ शिवलिंग ।

लांगूळ, लांगुल, लांगूल—स. पु. [सं. लांगुलं] १ पूंछ, दुम ।

उ०—गळइ घट गयंद-तणइ, पस्चिम बध्या पेस । लोडंता लांगुल छटा, आइसी अवनेस । —मा. कां. प्र.

२ बन्दर, वानर । (ह. नां मा.)

३ शिश्न, जिननेन्द्रीय । (डिं. को.)

[सं. लांगलं] ४ हल के आकार का एक प्रकार का शस्त्र ।

उ०—चाप चक्र, नाराच, अरद्धचन्द्र, असिपत्र, करपत्र, क्षुरप्र, क्षुरिका, करवाल, कुंत, सल्ल, बावल्ल, भल्ल, सत्थल, त्रिसूल, सक्ति, सर, तोमर, मुरधि, अरद्धमुरधि, परसु, पास, पट्टिस, दूस, लांगुल, मुसल, मुलठि, मुग्दर, लगुड गदा, दंड, भिड्माल, गांजीव, विस्फोटक, वज्र, तरवारि, प्रमुख सट्त्रिसद्डायुधानि । —व. स

५ देखो 'लगूर' (रू. भे)

लांगूळी—सं. पु. [सं. लांगूलिन्] १ बन्दर, वानर ।

२ लंगूर ।

३ हनुमान, पवनसुत ।

रू. भे.—लगूल, लागळी ।

लांगेरौ—सं. पु.—झड़-बेरी के पत्तो सहित कटे हुए सूखे कांटों व डठलो का समूह या ढेर ।

लांगोवर—स. पु.—एक मारवाड़ी गीत ।

लांगौ—सं. पु. [सं. लांगूलिन्] १ बन्दर, वानर ।

२ लगूर ।

३ हनुमान, पवनसुत ।

उ०—१ लायो जाय रोगहर लांगौ, पिलग सहतो सुण प्रबळ । देखे आग रीछ कपि दोळा, दुसह सझोळा रांमदळ । —र. रू.

उ०—२ लकाळ सेवग तूझ लांगौ, भ्रात लिछमण खळा-भागौ । पती-कुळ स्वारथी पांगौ, करण असह निकद । —र. ज. प्र.

४ भैरव ।

उ०—काळा गोरा कंवर, रगतमल लांगौ कळवौ । मांण भद्र हनुमांन, कोइलो नरसिंघ फळवौ । —मा. वचनिका

उ०—२ कळू मे वळ तांमापत्र करा दं, भरत खड सरा दै रोर भांगौ । अदत मन फिरा दै सुदत करदे अखां, लखां वन विराद तुरत लांगौ । —भैरूंजी री गीत

५ वीर, बहादुर ।

उ०—गाय गाय मरण बम्मा टोपला नांखिया गौरां, बांकीपालसाही जगा बजाड़ै बांणास । ऊगै दीह लांगौ 'सिंघ' आवियौ 'दलेल' वाळौ, लागां पाण कीधा बदीखाना नै खलास । —संकरदांन सामौर

६ देखो 'लंगडौ' (रू. भे)

उ०—करै उव राव दुसार कटार, वहै कंठि हार परी जिण वार । लांगौ हणमंत पराक्रम लेखि, वियै नह हार जति वप देखि । —सू. प्र.

रू. भे. लगौ

अल्पा. लंगड़ौ, लांगड़ौ

लांघड़ौ—देखो 'लंगडौ' (रू. भे.)

उ० - दूसरा जेम नह राचियौ देख नै, अरस री लांचियौ थकौ आयौ । लाघडो कपी ज्यूं राम लायौ लडै, लड़ै जिम 'जुहारौ' आत लायौ । —बुधजी आसियौ

लांघण—सं. पु. [स. लघन] १ भूखा रहने की अवस्था या किया ।

उ०—१ 'साखली आ मोहर आप कनै किण ही सूल वेळां कुवेळां नू कठैक छानी राखी हुती सु आज गुढा रा लोग नू लांघण पडतो जाण नै मोनू दी छै । —नैणसी

उ०—२ हरिया लांघण साधकै, जाचै किनी न जाय । यूं लाघणियौ केहरी, मूवां पछै न खाय । —अनुभववांणी

२ उपवास या व्रत करने की क्रिया ।

उ० – पछै देवी ऊपर लांघण पाच दस किया । देवी प्रसन्न हुई । कह्यौ.—तूठी, माग ।' —नैणसी

क्रि. प्र.—करणौ, पड़णौ, होणौ ।

३ लाघने या फादने की क्रिया या भाव ।

४ घोडे की एक प्रकार की चाल विशेष ।

५ सीमा के बाहिर होने की क्रिया या भाव ।

रू. भे —लघण, लंघन, लागण, लाघन ।

लांघणियौ, लांघणियौ—वि. [सं. लघन+रा. पु. इयौ] १ जिसने कुछ भी नहीं खाया हो, भूखा ।

उ०—१ अंगिआ ऊपरै फूला रा चौसर पहरिआ लांघणिआ सिंघ री कटी लक घडै चढ रहिआ छै । पान सारिखौ पेट पातळौ अग्नित सी नाभी कुडळी माहि पाणी पीता ढळकतौ दीसै छै । —रा. सा. स.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति हुमै राजान काम रा भूखिया, लांघणिया सीह ज्यौं आपाळि नै रहिया छै । जांणै

मदन-मयंद पछाड़ीजे छै । काछी जिमपुरि करि नै रहिया छै ।
—रा. सा. स.

उ०—३ हुरिया लांघण साघके, आवै किनी न आज । यु लांघणियौ केहरी, मूवां पर्छ न खाय । —अनुभववांणी

२ कूद कर या फलांग मार कर एक ओर से दूसरी ओर पंहुचने वाला ।

रू. भे.—लंघणियौ, लंघाणियौ

लांघणीक-वि. ।—१ जिसने कुछ न खाया हो, भूखा ।

२ कृशोदर ।

रू. भे.—लंघणीक

लांघणौ-वि. (स्त्री. लांघणी) १ जिसने कुछ नहीं खाया हो, भूखा ।

२ लांघने वाला, उल्लंघन करने वाला ।

लांघणौ, लांघबौ-क्रि. स. [स. लघनम्] १ डग भर कर, चल कर या किसी वाहन के द्वारा किसी स्थान को पार करना, दूसरे सिरे पर पहुँच जाना ।

उ०—१ जब देहळी भीतर रूखमणीजी आया । तब देहळी लांघता पग आधौ दीयौ । तठे जेहड़ि पग की स्रीकस्णजी की नजरि पड़ी । —वेलि टी.

उ०—२ थळ कतार लाघण थटै, लै जिहाज जळ अंत । मोळी डाळी वांणणी, बेटा धूत जणंत । —बां. दा.

२ छलांग भर कर या कूद कर किसी पदार्थ, नाला, कूप आदि के ऊपर से होकर दूसरे सिरे पर पहुँच जाना ।

उ०—१ सागर तीर मिळें सपाती, कहै लक मे सिया दिखाती । जामवंत हनुमत अराधै, सागर लांघण री विध साधै ।
—गी. रां.

उ०—२ लांघो चावल पीळो हो खाळ, डांवी देवी जीमणी (सिय) माळ । डावी महासत्ति फै करह, डावा सारस, स्यंघ, सियाळ ।
—बी. दे.

३ इस गति से जाना कि रास्ता शीघ्र पार करके गंतव्य स्थान पर पहूंचा जा सके ।

उ०—राजा नूं देख सो सूअर भागियो । राजा पीछौ कियौ । बन नदी परबत लांघतौ-लांघतौ सूअर एक बडी गुफा मांहीं पैठो ।
—सिंघासण बत्तीसी

४ किसी खाद्य-पदार्थ के ऊपर गुजरना, जो कि अनुचित माना जाता है ।

५ सीमा के बाहिर होना या जाना ।

६ व्यतीत करना या होना ।

७ त्यागना, छोड़ना ।

लांघणहार, हारौ (हारी), लांघणियौ—वि. ।

लांघियोड़ौ, लांघियोड़ौ, लांघ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लांघीजणौ, लांघीजबौ—कर्म वा. ।

लंघणौ, लघबौ—रू. भे. ।

लांघन – देखो 'लाघण' (रू. भे.)

लांघियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ डग भरकर, चलकर या किसी वाहन के द्वारा किसी स्थान को पार किया हुआ, दूसरे सिरे पर पहुँचा हुआ. २ छलांग भर कर या कूद कर किसी पदार्थ, नाला, कूप आदि के ऊपर से होकर दूसरे सिरे पर पहुंचा हुआ ३ इस गति से गया हुआ कि रास्ता शीघ्र पार करके गतव्य स्थान पर पहुँचा हुआ. ४ किसी खाद्य पदार्थ के ऊपर से होकर गुजरा हुआ, जो कि अनुचित माना जाता है. ५ सीमा के बाहिर गया हुआ. ६ व्यतीत किया हुआ या हुवा हुआ. ७ त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ ।
(स्त्री. लांघियोड़ी)

लांघियौ—देखो 'लांघणियौ' (रू. भे.)

उ०—झांमरै पूंछ रा, भुवरियै कं रा, चोळमै रंग रा, लांघियै सीह ज्यू लंका चढ़िया थका, भागा गाडा ज्यूं बठठाठ करता थका वेस्या ज्यूं झाला करता थका, मातै हाथी ज्यूं हुंकारा करता थका । इसा ऊट मेकजै छै । —रा. सा. सं.

लांगौ—१ 'लांगौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लंगड़ौ' (रू. भे.)

लांच-सं. स्त्री.— कमी, अभाव ।

२ दोष, कलक ।

३ घूस, रिश्वत ।

४ बाधा, कठिनाई ।

५ झुकाव ।

६ दगा, फरेब ।

उ०—क्षत्री लांच ग्राही हुसी, वचन कही नट जासी रे । दगा दगी घणा खेलसी, विस्वास घाती थासी रे । —जयवांणी

क्रि. वि.—७ किंचित शका ।

उ०—लाज न किम रण लांच लग, लग न वाही लांच । ऽमर चढू अस पट समँ, खाविंद पहरो खाच । —रैवतसिंह भाटी

लांछण, लांछन—देखो 'लांछन' (रू. भे.)

लांछौ-सं. स्त्री.—विलम्ब, देरी ।

लांचौ-सं. पु—१ उत्तम श्रेणी का घास, जो बुवाई करते समय विशेष परिश्रम करने पर बैलो के लिए संग्रहित किया जाता है, या सुरक्षित रखा जाता है ।

उ०—१ छूटौ बीजण कण लांचै खड़ छूटौ, छपनैं प्रळयागम पावन पड़ छूटौ । फीका चं:रा पड़ फीका द्रग फेरै, हाहा ऊंडा दिन भूडा भय हेरै । —ऊ. का.

उ०—२ करता मांचा दे लांचा कूतरिया, उतरता आसाढां मूंढा

ऊतरिया । सैंणा संकट में बंकट सब राया, घांटा घुटियोडा घूंघट घबराया । —ऊ. का.

२ खर्च में कमी पूर्ति के लिए लिया जाने वाला कर ।

उ०—महमंद बारै लोकां नै १८ कर लागा । ते कही (प्रथम) दांण, (बीजौ) पूछी, हळगत, भोम, भेट, तलार, सूंखडी घघां-मणी लाग, मळबी लाग, बळ, लांछौ, घोड़ा-बारण, कवारनी सूंखड़ी, पाघड़ी-बरोड़, ढोरनी चराई, बाड़ी नी लाग, काटी बाळी लाग ग्रोर काजीनी लाग । —नैणसी

वि.-(स्त्री. लांची) खराब, अशुभ ।

उ०—ताहरा पाबूजी कह्यौ जु-'म्हानूं सुगन लाछा हुआ छै । तैसू म्हे रातौरात घरां जावस्यां । —नैणसी

लांछण, लांछन-सं. पु. [स. लक्षण] १ दाग, धब्बा ।

२ निन्दनीय अथवा कुकर्म करने पर चरित्र पर लगने वाला कलंक ।

रू. भे.—लछण, लछन, लंछण, लछन, लांछण, लाछन ।

लांजड-सं. पु.—एक देश का नाम ।

उ०—देस संख्या; आविह अयोध्या नगरी, उत्तामहल, ग्राम ब्यारि कोडि, बलवत्ता देस ३ कोडि, खुरसांण ग्राम कोडि १, गाजणउ ३२ लक्ष, कनूज ३६ लक्ष, चौड १४ लक्ष, आबालू १४ लक्ष, द्रविड १२ लक्ष, विसु १ लक्ष, लांजड १ लक्ष, बइराट १० सहस्र । —व. स.

लांजौ—देखो 'लजौ' (रू. भे.)

लांठ-सं. पु.—१ गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं का समूह ।

उ०—१ हीर चीर हेम तार बडी मे विरांण होसी, लाखां द्रब विभौ सबै हाथी घोड़ा लांठ । गाम धाम भूठा जांणौ घर्ण भूठा लागा, नरां गार रै मिरग रै पड़ी वायरा री गांठ । —ग्रोपौ ग्राढौ

उ०—२ काचा करमां सू रैंगा गळ रीता, साचा सोनै रा बालळिया बीता । गोरा खाली हुय खालां री गाठां, लेग्यौ लूंठापण लाठा री लांठां । —ऊ. का.

२ देखो 'लांठी' (मह. रू. भे.)

लांठाई-सं. स्त्री.—१ जबरदस्ती ।

२ सीनाजोरी, ज्यादती ।

रू. भे.—लूठाई ।

लांठापण, लांठापणौ, लांठापौ-स. पु.—१ जबरदस्ती, बलात् ।

उ०—काचा करमां सू रैंगा गळ रीता । साचा सोना रा बाळ लिया बीता । गोरां खाली हुय खालां री बांठां । लैग्यौ लूठापण लांठां री लांठां । —ऊ. का.

२ सीनाजोरी, ज्यादती ।

रू. भे.—लूंठापण, लूंठापणौ

लांठौ-वि. [स, लुंठक. या लुंठाकः] (स्त्री. लांठी) १ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—वणावौ आप वातां वडी, साप हुवै किम सीदरौ । सनमंद थयौ लांठौ सदा, जाणा ठणको 'जींद' रौ । —पा. प्र.

२ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—१ पह बाळक धनवतपुर, लांठै लूट लियाह । काठै नदी कबेरजा, खेमा खडा कियाह । —बा. दा.

उ०—२ ताहरा साह कूकियौ, उतावळौ बोलियौ-रै ! लोकां देखौ, लांठौ थको खोसै छै । —पलक दरियाव री बात

मुहा.—लांठा रो डोको ई डाग फाडै=सबल आश्रित निर्बल भी सबलों से कम नहीं होते ।

३ वीर, बहादुर ।

उ०—लाभसी विगत लाठा भला, नगं नाच आयौ नहै । जिह-गीर' 'खुरम' उभै दळा, उभै कोस अंतर रहै । —गु. रू. ब.

५ उत्कंठा, लालसा

उ०—आपरो सरीर घणो निरोगो रै'वै, म्हारी आईज लांठी कामना । —फुलवाड़ी

६ दृढ, मजबूत ।

७ जो आकार, भार एवं विस्तार के अनुसार बडा हो, विशाल, भारी, विस्तृत ।

उ०—१ घूद रौ घेरौ सीना सू लांठौ । निचलौ तग हळको नै ऊपरलौ भारी । —फुलवाड़ी

उ०—२ जिण गांव री आ बात है उणरा ठाकर ग्रेक बांणिया माथै खीझ करै तौ वै उण रा पाडोस मे गांव-बाभी नै लांठी थाळी देय उण रै नाव पट्टौ कर दियौ । —फुलवाड़ी

उ०—३ सकर भगवान भाग री अेक लांठी लूदी गिट नै बोल्या—थारै साथै घूमणा में ग्रो ईज तौ डर है । —फुलवाड़ी

उ०—४ वेकळू रेत रा लांठा धोरा में बिरखा रौ पांणी रिसै ज्यूं उण राज री रैया रै ग्रतस मे सगळा अकरम अन्याव भरै, बुड़को ई नी ऊठै । —फुलवाड़ी

८ प्रतिष्ठित, सम्माननीय ।

उ०—लांठा लांठा मौतबिर वेळा कुवेळा दही दूध रौ मिस लेय गूजरी रै घरै आवता संकता कोनी । —फुलवाड़ी

९ जो आयु मे बड़ा हो, युवा, नौजवान ।

उ०—१ भूडण आंसू ढळकावती बोली—थांरी देह रै जोखौ व्हिया कीकर इण देह रौ आणद थिर रै' सकै । म्हैं तौ आ चील्हरा नै जाय म्हारौ फरजन उतारियौ । अबै थें आंनै पाळ-पोस लांठा करौ । —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं वानै घणा ई समझाया के अबै तौ सूवर साव साजौ सूरौ व्हैगौ है। पींडारौ व्है ज्यूं माच्योडौ है। अर भाचरिया ई भरपूर लांठा व्हैगा। --फुलवाडी

१० —दीर्घ, लम्बा।

उ०—१ सेठाणी ग्राडौ खोल बोली—बीरा, थारी ऊमर तौ लांठी। —फुलवाडी

उ०—२ सौरौ दौरौ दस बरसा रौ तौ गुडकौ पाड सका पण तीस बरस तौ म्हानैं जुग जिता लांठा लखावै। —फुलवाडी

११ अत्यधिक, अत्यन्त, बहुत।

उ०—१ पण इण सूं काई व्है। कंवर रै हाथा तोरण री जोग सजणौ, आ इज तौ सब सू लांठी खुशी री बात है। —फुलवाडी

उ०—२ म्हारै वास्तै इण सू लांठै हरख री बात दुनिया में दूजी की नी व्है सकै। —फुलवाडी

उ०—३ दोनां कांनला वैरी मचग्या। लोही सू लांठा रचग्या। —दसदोख

१२ महान, बडा, समर्थ, सक्षम।

उ०—साप पवन रै वेग ग्रायौ नै निजर रै वेग जावतौ दीस्यौ। मारण वाळा सू तारण वाळौ लांठौ। —फुलवाडी

१३ महत्वपूर्ण।

उ०—बिना सोच्या ई तुरत जवाब दियौ—ग्रदाता, ग्रौ काम ग्रापनै छोटौ निगै ग्रावै! इण सूं लांठौ काम तौ दुनिया मे ईं की दूजौ नी व्है सकै। —फुलवाडी

१३ श्रेष्ठ, उत्तम, बेहत्तर।

उ०—खरचणा रै सिवाय थें कोई दूजी बात जांणौ ई हौ! हजार वार समझाय दियौ तौ ई थारै समझ मे नी ग्रावै के इण दुनिया मे कमाई करणा सूं लांठौ की पुन्न नी है ग्रर खरचणा सू लाठौ की दूजौ पाप नी है। —फुलवाडी

१४ खराब, बदतर।

१५ जो सख्या, मान, मात्रा मे ग्रौरो से बढ कर हो।

१६ वयस्क, बालिग।

उ०—उणरी भोळप माथै हसता थका बोल्या—इत्ता लांठा व्हैगा तौ ई थारौ मन तौ टाबर री गळाई साव भोळौ। —फुलवाडी

१७ कठिन, मुश्किल।

१८ ग्रार्थिक दृष्टि से सम्पन्न, घनी।

रू. भे.—लूठौ, लौंठौ

लांठ—वि —१ जबरदस्त, जोरदार।

२ शक्तिशाली, बलवान।

३ देखो 'लंड' (मह, रू भे)

लांण—देखो 'लायण' (रू. भे.)

लांणत, लांणति—स. स्त्री.—१ धिक्कार, फटकार, भर्त्सना।

उ०—१ ताहरा वीसळदेजी विसनदास नू कह्यौ—'लांणत छै थानै! सागमराव थामे घणी कोवी। —नैणसी

उ०—२ झपटी नही ग्राख झबकाई, लेगी नह लपकाई नै। लख लांणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह ग्राई नै। —ऊ. का.

उ०—३ तरै देवडा कह्यौ, "ठाकुरा, ग्रापा ही रजपूत छा, ज्या री घरती पनरह दिन हुवा ग्रोर राठोड मारै-लूटै छै! लांणत छै थानै थे ही रजपूत कहावौ छौ ? —तीडै छाडावत री वात

रू भे.--नानत, नानती, लानत, लानती।

लांणौ—स. पु.—एक प्रकार का पौधा विशेष।

लांनत, लांनती—देखो 'लाणत' (रू. भे.)

उ० - १ पातर हू ता प्रीत कर, ग्राफू हळा ग्ररोग। ग्राखर पछताया ग्रठै, लांनत दे दे लोग। —बां. दा.

उ०—२ कहै कंथ नूं दुहु कुळ उजळी कामणी, गजा धजा फौजा लोह लागै। नीसरै तिकै नर तिका लांनत दियै, लाग्ला वस नूं लाज लागै। —वीर स्त्री रौ गीत

लांप—स पु —एक प्रकार का घास, जो सबसे घटिया, निकम्मा व ग्रनुपयोगी माना जाता है।

उ०—घण घण साचा घाय, नह फूटै पाहड निवड। जठै लांप फूस लग जाय, राड पडै जद राजिया। —किरपाराम

रू भे —लप

ग्रल्पा.—लापडी, लापडौ, लापळियौ, लापळौ

लांपड़ी, लांपड़ौ लांपळियौ, लांपळौ—देखो 'लाप' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ० खीपा पीपा फोग, मुरट बूई बरणावै। भुरट लांपडी लुळै, गजब वेला गरणावै। हरियौ भरियौ घान, ऊतरै सदा सनोलौ। ढिगला लगै ललाम, धोर घन देवण पोलौ। —दसदेव

लांपौ—स पु. [स. ज्वालाप] १ दाह क्रिया के समय ग्रारंभ मे जलाया जाने वाला पूला (पुग्राल) जिसे जलाकर चिता मे ग्रग्नि प्रज्वलित की जाती है।

उ०—१ तद ढोलैजी काठ भेळौ कर नैं ग्रारोगी चिणाई। पछै लांपौ देण रौ हुकम कियौ। —ढो. मा.

उ०—२ ग्रन्नण चन्नण चिता चिणाई, नारेळा मे दाग, ग्रारबार फिर जाट लोटियै, लापौ दियौ लगाय।

--डूगजी जवारजी री छावली

क्रि. प्र —देणौ, लगाणौ

मुहा.—लापौ लागणौ=नष्ट होना।

लापौ लगाणौ=नष्ट करना।

२ शव-दाह की ग्रग्नि

३ अग्नि, आग।

४ निर्लज्जतापूर्ण बात, अश्लील बात।

उ०— लोक सहूं लांपां लवइ, चित्त न राखि ठाहि। फागुण ना गुण स्या कहु? विहमा वसुधा माहि। —मा का. प्र

वि.— निर्लज्ज।

उ०—विण अपराधइं विप्र नइ, कहु-किम काढउ आज। जांघ उघाडउ आपणी, लांपा! तुम्ह नही लाज। —मा का. प्र

लांफु, लांफू, लांफो—वि.—१ सीधा-सादा, सरल स्वभाव का

उ०—ऊंची तो एरंड, बाटगे तोहि नाग, घणो भोळो लांफु, बहु बोलै तो लबोळ। घणु जीमै तो भूखो, थोडो जीमै तो अभोगियो। —सभा

२ लुच्चा, लफंगा।

लांब—स. स्त्री —अवधि की दृष्टि से लम्बाई।

उ०—हू बीसढयो तैं वेदिठा, म्हा तु बरस बारह की लांब। कद म्हारइ हीरा ऊगहई, नही तो गोरी! तिजहू पराण। —बी. दे.

लांबक भूंबक—स. पु. [अनु] गुच्छा।

उ०—१ सखी मोत्या रा लांबक भूंबका, किस्तुरी बादऊ माळ। जाय बादो छतरपतिया रै, मेहळा मे छतरपति सा। —लो गी.

वि - पूर्ण शृंगार युक्त (आभूषणो से सुसज्जित)।

उ०—लांबकभूंबक लाडली, अंग टेर अपार। जग पळमें हाली 'असा', सजीया सिणगार। —मयाराम दरजी री वात

रू. भे.—लूंबकभूंबक, लूमकभूमक।

लांबड़धकै—स. स्त्री.—नाराजगी प्रकट करने की क्रिया।

उ०— सेठ घरै आता ई पैंला तौ बीनणी माथै अणूता खीभिया उणनै घणी ई लांबड़धकै ली। —फुलवाडी

क्रि प्र —लैणी।

लांबछड़—देखो 'लामछड' (रू भे)

उ०—धुगियासी घणिया घरी, भुज बल 'पाल' भडाह। ले लळका लाहोरणी, छूटै लांबछडांह। —पा प्र

लांबलूंब, लांबालूंब—देखो 'लूबलूंब' (रू. भे)

लांबाहाथ—सं पु [स लंब+हस्त] १ ऐसा हाथ जिसकी पहुच या प्रभाव बहुत दूर तक हो।

२ वह दांव या चाल जिससे अधिकाधिक स्वार्थ सिद्धि होती हो।

रू. भे॰ - लबहत, लबहथ, लबहात, लबहाथ, लबाहात, लवाहाथ।

लांबी—१ देखो 'लांबीकाचळी'।

२ देखो 'लांबौ' (स्त्री.)

रू. भे.—लबी।

लांबीकाचळी, लांबोबांयांरी—स स्त्री—विधवा स्त्रियो के पहिनने के लिए लबी बाहो की कचुकी।

रू. भे.—लबीकाचळी

लांबेडणौ, लांबेड़बौ—देखो 'लबडाणौ, लंबड़ाबौ' (रू. भे.)

लांबेडणहार, हारौ (हारी), लांबेडणियौ—वि.।

लांबेड़िओडो, लांबेडियोडो, लांबेड़्योड़ौ—भू का. कृ.।

लांबेड़ीजणौ, लांबेड़ीजबौ—कर्म वा।

लांबेडियोडो—देखो लबडायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लांबेडियोडी)

लांबेड़ो—स. पु –किसी उद्दण्ड गाय, बैल, भैंस आदि के खेत में चरने देने के लिए बाधा गया लम्बा रस्सा।

वि वि.—ऐसे पशु को पुन शीघ्र पकडने के लिए इस प्रकार रस्सा बाधा जाता है।

मि — ओगावौ

लांबोडौ -देखो 'लाबौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—थ हे कुण? मत्र म् लांबोडौ जमदूत बोल्यौ - एक ऊठ वाळौ। —रातवासो

(स्त्री. लाबोडी)

लांबौ—वि [स. लब] (स्त्री लाबी) १ वह पदार्थ जिसके एक सिरे से दूसरे सिरे तक काफी अन्तर हो, लम्बा।

उ०—१ लाबा मारग दूरि घर, विच है औघट घाट। हरि दरसन किम पाईयै, हरिया दुरलभ वाट। —अनुभववाणी

उ०—२ घणै सोनै-रूपै मे गरकाब कीवी थकी। नकसदार जाणै गोडियै नागण लांबी कीवी छै। —रा सा स.

२ वह जो ऊचाई मे काफी ऊपर उठा हुआ हो।

उ०— ओ बवोई मे मजदूरी खातर आयोडौ हो। वाधियौ छः फुट रौ लाबौ पूजतौ जवान। —रातवासौ

३ वह जो अवकाश, काल आदि की दृष्टि से नाप या मान मे अधिक हो।

उ०—पण इण सू काई व्हे! दूजा मिनखा रै वास्तै तौ अेक पलक म् वेसी मौत री वगत नी व्है, पण म्हारी मौत री वगत तौ मित्तर बरसा घणौ लांबौ-लडाक व्हैगौ। —फुलवाडी

मुहा.—लाबौ होणौ—१ बहुत समय तक न लौटना। २ मृत हो जाना। ३ खिसक कर चले जाना।

लाबौ करणौ—१ किसी को खिसका देना। २ इतना मारना कि वह जमीन पर बेसुध लेट जाय। ३ किसी कार्य के समापन

में बहुत समय ले लेना। ४ विस्तार एवं आयतन की दृष्टि से किसी निश्चित माप का।

ज्यूं – दस गज लांबौ कपड़ौ, पांच गज लांबौ सांप, बीस गज लांबी पगड़ी।

५ जिसका विस्तार साधारण माप से अधिक हो, दीर्घ।

ज्यूं—लांबी कथा, लांबौ खर्च।

६ वह पदार्थ जो पूरे विस्तार मे फैला हुआ हो।

उ०—आज धरा दस ऊनम्यउ, काळी घड सखरांह। उवा धरा देसी ओळबा, कर कर लांबी बाह। —ढो. मा.

रू. भे.—लंबउ, लंबू, लंबौ

अल्पा.—लंबोडौ, लांबोड़ौ

लांबौ-तड़ंग—देखो 'लंबतड़ंग' (रू. भे.)

लांम-सं. पु.—युद्ध, लडाई।

उ०—घरा विरथा घरा गाजरा, छित नह संकै छूटाय। लांम लोटा झड़ झड लगा, फबै खाळ फंटाय। —रैवतसिंघ भाटी

लांमछड़-स. स्त्री.—प्राचीन समय की वह बदूक जो पलीता (आग की बत्ती) लगाने से चलती थी।

वि - वह जो बहुत अधिक लबा हो।

रू. भे.—लंबछड़, लमछड़, लांबछड़।

लांमरा—देखो 'लांवरा' (रू. भे.)

लांमणीजणौ, लांमणीजबौ—देखो 'लांवणीजणौ, लांवणीजबौ (रू. भे.)

लांमणीजणहार, हारौ (हारी), लांमणीजणियौ—वि।

लांमणीजिओडौ, लांमणीजियोड़ौ, लांमणीज्योड़ौ—भू का. कृ.।

लांमणीजियोड़ौ—देखो 'लांवणिजियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री लांमणीजियोड़ी)

लांमौ-स. पु—१ मंगोलिया या तिब्बत मे बौद्धो के धर्माचार्य, जो कई अंशो मे राजनैतिक नेता भी होते हैं।

२ ऊंट की तरह पागुर करने वाला घास-भक्षी एक जन्तु।

वि.—३ हल्का।

उ०—बात म बोलिसि लांमी, जा मीनति सिर नामि, इम भणिइ रति सुणि सांमी, पांमीइ सुख एह नामि। —आगम माणिक्य

४ देखो 'लांबौ' (रू भे.)

लांयणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे.)

उ०—घर घर लागौ लांयणौ, घर घर धाह पुकार। जनहरीया घर आपणौ, रखै सो हुसीयार। —अनुभववाणी

क्रि. प्र.—लगणौ, लागणौ।

लांवण-सं. स्त्री.—१ स्त्रियो के लहंगे, पेटीकोट या घाघरे का निचला भाग या किनारा।

२ ऋतुमती स्त्रियों के पास आने या स्पर्श मे कुछ वस्तुओं या बिमारियो में लगने वाला दोष जिससे उनमें विकार उत्पन्न हो जाता है।

ज्यूं—पापड़ां मे लांवण लागणी

क्रि. प्र.—करणी, झड़णी, झाड़णी लागणी, होणी।

रू. भे —लामरा, लांवरा।

लांवणीजणौ, लांवणीजबौ-क्रि. प्र.—१ ऋतुमती स्त्री के पास आने या स्पर्श से किसी वस्तु का विकृत हो जाना।

२ कुछ विशिष्ट बिमारियो में ऋतुमती स्त्री के निकट आने या सम्पर्क के कारण बिमारियों का उग्र रूप धारण कर लेना।

ज्यूं - आंखिया लांवणीजणी।

लांवणीजणहार, हारौ (हारी), लांवणीजणियौ—वि.।

लांवणीजिओड़ौ, लांवणीजियोड़ौ, लांवणीज्योड़ौ – भू. का. कृ।

लांमणीजणौ, लांमणीजबौ—रू. भे.।

लांवणिजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ऋतुमती स्त्री के पास आने से या स्पर्श से विकृत हुवा हुआ. २ कुछ विशिष्ट बिमारियों में ऋतुमती स्त्री के निकट आने या सम्पर्क से रोग का उग्र रूप धारण किया हुआ।

(स्त्री. लांवणीजियोडी)

लांवणौ—स पु—१ शादी या खुशी के अवसर पर सम्बन्धियो अथवा परिचित व्यक्तियो के यहा भेजी जाने वाली मिठाई या गुड़ आदि वस्तु।

२ देखो 'लवणौ' (रू. भे.)

लांवमुंहौ—स पु.—एक प्रकार का अशुभ घोडा।

लांहण—देखो 'लाहण' (रू. भे.)

उ०—२५१२ माहाजना री लांहण। —नैणसी

ला—१ रक्त खून। २ रग ३ नासिका ४ स्त्री के बाल ५ रति

६ लक्ष्मी। (एका.)

अ —७ कानून, नियम।

८ कुछ शब्दो के साथ लगने वाला प्रत्यय जो अभाव या कमी को सूचित करता है।

ज्यू – लाजवाब, लापरवाह।

९ देखो 'लाह' (रू. भे.)

लाइ—देखो 'लाय' (रू भे)

उ० - १ बाजै मीतळ बाय, लगै झळ लाइ री, वैरणि चमकै बीज, दाझ इरण ताइ री। —र. हमीर

उ०—२ आगै बिरह बलाइ जिका बणी लाइ रै डोळ, तिण मेटब

तूं 'रतना' आई पावस री छोळ। ओघंघा निघ भजण री जड़ी,
त्यांरै सामै ईं निघ हुई हाजर खड़ी। —र. हमीर

लाइक—देखो 'लायक' (रू. भे)

उ०—१ दुरस 'किसन' लख दोड़, लहै आदां जस लाइक। गाडण 'केसव' गुणे, अबे पंचम लख वाइक। —सू. प्र.

उ०—२ दादू लाइक हम नहीं, हरि के दरसन जोग। बिन देखे मर जाहिगे, पिव के विरह वियोग। —दादूवाणी

उ०—३ तू मरहट्टां लियै, तूंहिज सरहद्दा लाइक। तूं सरहद्दा धणी, तुहिज सरहद्दा नाइक। —गु रू. ब.

उ०—४ रूपक रख्यण लाइक लख्यण, पात्र परीखण लख्यपती। रीति रहावण क्रीति कहावण मोज महाघण मोट मती।—ल पिं.

लाइकी—देखो 'लायकी' (रू. भे.)

लाइणी—सं. पु.—अग्निकांड, आग।

रू. भे.—लायणी, लाईणी, लायणी

लाइणौ, लाइबौ—क्रि. स.—स्पर्श कराना, लगाना।

उ०—१ आज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ। विरह भुयंगम की डसी, लबबती गळ लाइ। —ढो मा

उ०—२ लाइयां लगरा पेखि पट्टाभरा, ढील मोळी पड़ै कुजरा डूंगरा। गज ऊधोळिया रज सू गूडळा, धोमसै पव दीपै फिरै धूंधळा। —गु रू ब

देखो 'लाणी, लाबौ' (रू भे.)

उ०—१ ससनेही सजण मिळघा, रयण रही रस लाइ। चिहुं पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई बिहाइ। —ढो मा.

उ०—२ दादू भांती पाये पसु पिरी, हाणों लाइ न बेर। साथ समोई हलियो, पोइ पसंदो केर। —दादूवाणी

उ०—३ सकल लाणइ तु गुण केवली, किम अम्हासि त बोलइ ते बली। इणि परिइ जगदीस्वरू ध्याइयइ, स्तवन नइ मिसि ऊलग लाइयइ। —जयसेखर सूरि

लाइणहार, हारौ (हारी), लाइणियौ—वि.।

लाइग्रोड़ो, लाइयोड़ौ,—भू. का. कृ.।

लाईजणौ, लाईजबौ—कर्म वा.।

लाइयोड़ौ—भू. का. कृ —१ स्पर्श कराया हुआ, लगाया हुआ।

२ देखो 'लायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाइयोडी)

लाइन—सं. स्त्री. [अं.] १ पंक्ति, कतार।

२ रेल की पटरी।

३ घरों की पंक्ति।

ज्यूं—पुलिस लाइन।

४ रेखा, लकीर।

५ प्रकृति, स्वभाव।

ज्यूं—किण लाइन रौ आदमी है।

६ पेशा, व्यवसाय।

ज्यूं—आप किण लाइन मे हो।

रू. भे.—लेण, लंण, लैन।

लाइब्रेरी—सं. स्त्री [अं.] पुस्तकालय।

लाइसेंस—सं. पु. [अं.] १ किसी कार्य करने हेतु दिया जाने वाला अनुमतिपत्र।

२ अनुमति, अनुज्ञा।

रू. भे —लैसंस

लाई—वि.—(स्त्री लाण, लायण) १ बेचारा, गरीब।

उ०—'लाई' बारह महीना-सू निकमौ बैठौ, घर-मे टाबर-टोळी कर 'र ५-६ जीव खावण वाळा। —वरसगाठ

[सं. लात] २ ग्रहण किया हुआ, अपनाया हुआ।

३ देखो 'लाही' (रू भे.)

४ देखो 'लाय' (रू भे.)

लाईणी—देखो 'लाइणी' (रू भे)

लाईरांड—वि —१ कमजोर, डरपोक।

२ बचारा, असहाय।

३ बिगडा हुआ, बेकार।

ज्यूं—लाईरांड मामलौ कर दियौ।

४ मूर्ख।

लाउबौ—देखो 'लावौ' (रू भे.)

लाऊड़ौ—देखो 'लासू' (रू भे)

लाऊभयौ, लाऊभाऊ—सं. पु —हर समय कुछ प्राप्ति करने की लालसा, लोभ।

लाएड़ौ—देखो 'लाडायौ' (रू भे)

लाकड़—१ लकडी का कुंदा।

२ देखो 'लकडी' (मह., रू भे.)

उ०—१ खड खूटा जगळे, खूटिगा लाकड ईंधण। पाणी खूटा द्रहे, कूंप वापी लेखै कुण। —गु. रू. ब.

उ०—२ हाकणहार 'पाल' सुत हुवै, अचरज गयण बहै अतरेख। लागवा सीस न ढोहे लाकड़, लाकडि लोहौ छोहौ लागेक।

—मानसिंह कल्याणोत कछवाहा रौ गीत

उ०—३ बळण लिया नह गोरघन काज लाकड़ बिया, दुजड़ लागी रहो कैतीक देह। भडा ज्या छडालां मांहि घट भांजियौ, छडा ज्या दागियौ भडा अण छेह। —गोरधनसिंह हाडा रौ गीत

लाकड़ि—देखो 'लकडी' (रू भे.)

उ०—१ हाकणहार पाळ सुत हूवे अचरज गयण वहै अतरेख। लागवा सीस न ढोहे लाकड, लाकड़ि लोहो छोहो लागेक।
—मानसिंघ कल्याणोत कछवाहा री गीत

लाकड़ियो—१ खूबकला नामक घास या औषधि।

२ देखो 'लकड़ो' (अल्पा., रू. भे)

लाकड़ी—देखो 'लकडी' (रू. भे)

उ०—गुण विन ठाकर ठीकरी, गुण विन मीत गँवार। गुण विन चदण लाकड़ी, गुण विन नार कुनार। —अज्ञात

उ०—२ नेंह पर्चा जाय लाकड़ी नाखे, घणा जोर सज विर्या घरा। चाडी करे कचेडी चढ़िया, नीर ऊतरै तुरत नरा।—बा. दा.

लाकड़ो—देखो 'लकडो (रू. भे.)

लाकड—देखो 'लकड़ो' (मह., रू. भे.)

उ०—१ तेल री कडाही उकळे छै। अगर रा लाकड हेठै धुखे छै। —चौबोली

उ०—२ दिन लागा गिर डुलै, पडै ऐवास अथी पर। तरवर लाकड होय, सूख जावै सिंधु सर। —पा. प्र

लाकडि—देखो लकडी' (रू. भे.)

लाकडियो—देखो 'लकडो' (अल्पा., रू. भे.)

लाकडी—देखो 'लकडी' (रू. भे.)

उ०—लाबी दाढी हाथ लाकडी धेड वाजइ जूजुवा सघाण। प्रवत्र जनोई गळइ पहर नइ, आयउ विप्र जाचण आपाण।
—महादेव पारवती री वेलि

लाकडो—देखो 'लकडो' (रू भे.)

लाकिनी—स स्त्री.—मास योगिनी, देवी का एक रूप।

लाकेट—स. पु [अ] गले की जजीर मे लटकता हुआ एक स्वर्ण आभूषण।

लाको—स. पु — आबादी के पास का चिन्हित ऊचा स्थान।

लाखकी—स. स्त्री. [सं] जानकीजी का एक नाम।

लाक्षणिक—स. पु.—१ लक्षण जानने वाला व्यक्ति।

२ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती है।

वि.—१ लक्षण सम्बन्धी।

२ लक्षणो से युक्त।

३ वह जिससे लक्षण प्रकट हो।

४ गौणार्थवाची।

५ जो शब्द की लक्षणा-शक्ति पर आधारित हो।

लाक्षा—स. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का लाल रग, महावर।

वि. वि.—प्राचीन काल मे यह स्त्रियो के शृगार की सामग्री था। इससे वे अपने पैर के तलवे और ओष्ट रंगती थी, जैसे आजकल गुलाल पैरो पर लगाती हैं।

लाक्षाग्रह—स. पु यौ. [स. लाक्षा+गृह] दुर्योधन द्वारा पाडवों को जलाने के निमित्त निर्मित लाख का घर।

वि. वि.—पाण्डु की मृत्योपरात जब पाण्डव हस्तिनापुर मे रहते थे तब दुर्योधनादि कौरव उनको अनेक कष्ट देते थे और मार डालने तक की कोशिशें करते थे। प्रजा को युवराज युधिष्ठर का आदर, प्यार देख दुर्योधन के हृदय में ईर्ष्या पैदा हुई। धृतराष्ट्र की अनुमति लेकर, जो पुत्र स्नेह से विवश थे, वारणावत में लाख, घास, वास आदि जल्दी से आग लगने वाली चीजो से बने, ऊपर से बहुत सुन्दर और मजबूत, लाक्षागृह पुरोचन मत्री की देखरेख में बनवाया और उसमे रहने के लिए पांचो पाण्डवो को भेज दिया। इस निष्ठुर कृत्य का पता विदुर को लगा और मय नामक असुर से उसमे मे निकलने हेतु रहस्य मय भू-गर्भ से एक मार्ग बनवाया और पाण्डवो को सूचना दी। जिस दिन लाक्षाग्रह मे आग लगने वाली थी उस दिन एक वृद्धा अपने पाचो पुत्रो के साथ अतिथि के रूप मे वहा आकर सोये। दुर्योधन की कुटिलता का पता लगने पर भीम अपने भाईयों व माता कुन्ती को गुप्त मार्ग से ले गये और जगल मे पहुचे। लाक्षागृह मे वह वृद्धा और उसके पांचो पुत्र जल मरे। छः लाशो को देखकर कौरवो ने समझ लिया कि पाण्डव कुन्ती सहित जल मरे हैं। मतान्तर से उस घर मे आग भीम ने लगायी थी और उस वृद्धा के साथ पुरोचन मंत्री भी जल मरा था। यह स्थान आज इलाहाबाद जिले में हडिया स्टेशन के पास गगातट पर है जिसका कुछ अश अब भी अवशेष है।

रू. भे —लाखहरइ, लाखहरु, लाखहरे, लाखाग्रह, लाखाघर

लाक्षातैल, लाक्षादितैल—सं. पु. [स.] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल।

लाखमण – देखो 'लक्ष्मण' (रू भे.)

उ०—जुडै राम लाखमणां काजि जैता, दुवै रूप मानिक्ख ज आख देता। पुणै फेरि बभीखणी जोडि पाणी, जोघा बंदरा यै नरां यै न जाणी। —सू. प्र.

लाख—स स्त्री. [स. लाक्षा] १ एक प्रकार का लाल पदार्थ जो कई प्रकार के वृक्षो की टहनियो पर लाख कीडो की प्राकृतिक क्रियाओ से बनता है। (डि को)

वि वि – यह औरतो के चूडियां बनाने के अतिरिक्त पत्थर व लोहे को जोडने व रग आदि बनाने के काम आता है।

यौ —लाखाग्रह।

रू भे. लाखा।

२ एक पेड विशेष।

उ०—रावण रांग रताजणी, रवणी नइ रद्राख। रुकरुदति रायसळि, रोहड रोहिणि लाख। —मा. का. प्र.

वि.—बहुत, अत्यधिक ।

उ०—१ दरजै लाचार होय बेटी नं कंवणो ई पड्यो—बिना किणी रै बतायां समभण री बात ही अको ई थे नी समझ सक्या तो पछै म्हारै लाख समझावणा सू ई आपरी समझ मे नी आवैला ।
—फुलवाडी

उ०—२ जोसीडा नै लाख बधाई रे, अब घर आये स्याम । आजि आनद उमगि भयो है, जीव लहे सुख धांम । —मीरा

२ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ लाखा एक लाख सा, जां लाख मेछ देखे । लाख जोड लीन्हे याते, कोड कूं न लेखे । —रा रू.

उ०—२ ढाल हुवै जीदै धर्कै, लाखां लोह लियाह । सादा रग तोनूं सदा, जूंभा जायलियाह । —पा. प्र.

लाखण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

लाखणउ—देखो 'लाखीणो' (रू. भे.)

उ०—उठी ! उठी ! गोरी करि सिंगार, लाखणउ काचवउ नवसर हार । पीहर नु चोळी नवरगी, बावन चदन अंग सउहाई ।
—बी दे.

लाखपत, लाखपति, लाखपती, लाखपत्ति, लाखपत्ती—देखो 'लखपति' (रू. भे)

उ०—उदै अरक्क ऊगहत, माळ लक्ख मड्ही, लीवन माह लाखपत्ति, कवि क्रोड दीधुही । —गु रू ब

लाखपसाउ, लाखपसाव—स. पु. यौ [स लक्ष+प्रसाद] चारण कवियो की कृत्तियो तथा उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रसन्न होकर राजा, महाराजाओ द्वारा दिया जाने वाला एक लाख रुपये का पुरस्कार या भेंट ।

उ०—१ जिणि देसे सजण वसइ, तिणि दिसि वजउ वाउ । उग्र लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो. मा

उ०—२ गाम आठ बारह गयद, पनरह लाखपसाव । गुण पाता रीझै 'गजण', दीधा दिल दरियाव । —सू प्र.

वि वि.—प्राचीन काल मे यह नकद रूप मे दिया जाता था, कालान्तर में लाख पसाव के पुरस्कार मे हाथी, घोडे, वस्त्र, आभूषण आदि के अतिरिक्त कम से कम एक हजार से पांच हजार तक की वार्षिक आय की जागीर भी होती थी जो कि पुरस्कार की पूर्ति हेतु होते थे ।

रू. भे.—लाखापसाउ, लाखापसाव ।

लाखबरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

लाखमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लाखर, लाखरी—देखो 'लाखेरी' (रू. भे.)

उ०—कपळा कवळी नै बारै पुचकारै, लाखर लाखर अै आखर मन मारै । हासी बासीसी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लख ईंदसणी सारै । —ऊ का.

२ देखो 'लाखेरौ' (रू भे)

लाखलखीणो—स स्त्री.—स्त्रियों के ओढने का बहुत मूल्यवान वस्त्र विशेष ।

लाखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

उ०—आठ यगण चोइस अखर, चवि मात्रा चाळीस । दूण भुजंगी छद दखि, लखपति लाखवरीस । —ल. पिं.

लाखहरड, लाखहरु, लाखहरे—देखो 'लाक्षाग्रह' (रू भे)

उ०—१ राति चालइ गाउ मागि, सुरगह कुणबि सउ, दियइ पुरोहितु दाउ, लाखहरइ, विसनरु ठवइ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ साघीउ पच्छेताण भीमि, पुरोहितु लाखहरे, मेल्हीउ दीघु पीयाणु, केडइ आवी पुणु मिळए । —सालिभद्र सूरि

उ०—३ धिगु रि धिगु रि धिग दैवविलासु, पंचह पडव हुइ वणवासु । उतइ लाखहरु परिजळइ उतइ भीमि जु केडइ मिळीइ ।
—सालिभद्र सूरि

लाखाणी—स पु—विवाह मडप मे भावरो के उपरात दुल्हे का विवाह मडप के बाहर जाते समय ढोली द्वारा गाया जाने वाले लाखा—फूलाणी नामक लोक गीत पर दिया जाने वाला पुरस्कार ।

उ०—पच्छम रा गावा वीद चवरी मूं परणीज उतरै जद, चारणा रै रीत ह, लाखो फूलाणी गवीजै, रुपियो गायक पावै । ऊ लाखांणी री रुपियो कहावै । —बा. दा. ख्यात

वि —लाख से सम्बन्धित

लाखापसाउ लाखापसाव—देखो 'लाखपसाव' (रू. भे)

उ० नोबत बजाय जीत्यौ नरिंद्र, विरदाय विरद बोले कविंद्र । रीझियो दिया कमधज राव सासण गजा लाखापसाव ।—वि. स.

लाखा—देखो 'लाख' १ (रू. भे) (डि को.)

लाखाग्रह, लाखाघर—देखो 'लाक्षाग्रह' (रू भे.)

उ०—१ किता वेर पाडव ऊपर कीध, लाखाग्रह कुंता काढे लीध । दूसासन कृष्ण गगेव 'दजोण', खपे कुरखेत अढार अखोण ।
—ह र.

उ०—२ लाखाग्रह री लाय, तै पडव राख्या त दिन । बडा किया बन माय, साथ न छोड्यो सावरा । —रामनाथ कवियो

लाखारस—देखो 'लखारस' (रू. भे.)

उ०—खासो टुकडी जामसाइ मुलतानी तपाइ सालु मुगीपटण ताम्बो लीसाप नासतो चुनडी चोरसो लाखारस दुदामी, जामावाड कचियो । —व. स.

लाखावट—स पु.—बाडमेर जिले के अन्तर्गत सिवाना नामक गाव के किले का नाम ।

उ०—जुध हुवणव लागो । बीजै दिन पाछिली पहर कोट लीधो ।

आदमी लाख कोम आया। उण पै'लां तियौ रै नांम पातिसाह लाखावट दियौ। —सातळ सोम री बात

उ०—२ 'माल' हरौ गढ सीस मरतै, मंजन गळिया मलोमळ। लाखावट तुहाळौ लोई, जाणै लवियौ गंग जळ। —बूदौ ग्रासियौ

लाखावत-सं. पु.—राठोड़ वंश की एक उप शाखा।

लाखिक—देखो 'लाखीक' (रू. भे.)

उ०—दुधार पटा खाडा दुवाळ, जमदूत अवाहे जम्म-दाढ। कटिया लाखिक लोटै केकांण, पाखरा सहित वढिया पलांण।
—गु. रू. ब.

लाखिराज-वि.—कर-मुक्त। (मा. म.)

लाखी, लाखीक-स. पु.—देखो 'लाखीकउ'

उ०—जै जया सबद विदण भणै, वयणे राजा बांमहा। लाखीक खड़े अकबर लियां, दुरगे दखण सांमहा। —रा. रू.

वि.—१ लाख रुपये के मूल्य का।

उ०—१ निकळै मिरड़ा लार, गँठेली सूकी साकळ। घर कोटा रै ध्येय, पड़ी लद लकड़या वाखळ। टेका कडिया बाघ, ढोवता घर पर ग्राखी। फोगा हुंदी फसल, गरीबा गायक लाखी। —दसदेव

उ०—२ देखनै राजा नै कहीयौ, घोड़ा सखरा आया राज, हजारी छै पण लाखी कोई नही। —हाहुल हमीर री वात

उ०—३ ज्या आगे केरजे, वडा लाखीक बछेरा, ज्या दरगह नित दियै, कोड सुख इद्रह केरा। —जगौ खिड़ियौ

उ०—४ लालीक बरीसण लाखोजी, भूपाळ मिरेहण भाखोजी। जाडेंज वडा गुण जाणंजी, प्राक्षौ प्रिथमाद प्रमाणंजी। —ल. पिं.

३ लाख की संख्या का।

उ०—साख साख मिळि भाख, लाख लाखीक लसक्कर। च्यारि चक्क नवखड, हिलै फौजा गज डंबर। —र. वचनिका

४ लाख रुपयो वाला, लखपति।

उ०—लाखीक मिळइ माडही लोक, चउहट्ट हाट माणिक्क चौक। अंतरी गउख ऊजळा ग्रोप, अम्मली कोट खाई अळोप।
—रा. ज. सी.

रू. भे.—लाक्खिक

५ देखो 'लखी' (१) (रू. भे.)

लाखीकउ, लाखीकौ-वि.—१ लाख रुपये के मूल्य का।

उ०—साम्हा भस साहसू, साह सझिया बण चूका। सार ग्रोप सावळां, धूप खेड़यौ बंदूकां। लाखीकां ऊपरा चढे भड़ लक्ख सचेळै। जाण जटी चल्लिया, कुभ सुरतटी सचेलै। —रा. रू.

२ सर्वश्रेष्ठ, अत्युत्तम।

उ०—पोतइ संखिणी पदमिणी बेउ लक्ष्मीनिधान कळस ग्राणइ, लाखीकउ दीवौ प्रज्वलइ, कोटि ध्वज लहलहइ······। —व. स.

३ लाख (लाक्षा) का।

लाखीणी-स. स्त्री.—१ नव-विवाहित दुल्हिन के चूड़े के नीचे पहिनी जाने वाली लाख की चूडी।

वि.—२ चुडे के नीचे लाख की चूडी पहिनी हुई नव-विवाहित कन्या।

लाखीणौ-वि. [स. लक्षम्] (स्त्री. लाखीणी) १ लाख रुपये के मूल्य का।

२ उत्तम गुण वाला, श्रेष्ठ।

उ०—१ लाडी लाखीणी धारा धूंधाती, पीवर उथां री पारां पय पाती। आखा-खीणा भड़ एवड़ ले आता, धाया धीणा रा गोधन रा धाता। —ऊ. का.

उ०—२ सुण रे सुवा लाखीणौ, तू म्हारै पीवर जाय रे।
—लो. गी.

उ०—३ सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही। लाखीणो ग्रा लोय, जग मे रहसी 'जेठवा'। —जेठवा रा दूहा

उ०—४ करहा लब कराड़िग्रा, बे बे ग्रगुल कन्न। राति ज चीन्ही वेलड़ी, तिण लाखीणा पन्न। —ढो. मा.

३ पवित्र, पावन, पाक।

उ०—१ सिधा सिधावौ सिध करौ, रहजो अपणी दाय। इण लाखीणी जीभ सूं, जावौ कह्यौ न जाय। —अज्ञात

४ बहुमूल्य, कीमती।

उ०—कड़िये कटारौ धरमी रे वाकड़ौ सोरठड़ी तरवार ग्रो, पाय लाखीणी धरमी रे मोजड़ी हलते राता छे पाव ग्रो। —लो. गी.

५ आल्हाद, हर्ष, खुशी सबधी, आराम सबंधी, सौखीय।

उ०—१ सुहाग री लाखीणी रात बीद बीदणी नै सील री बात बताई के वा घर-घर नी बासदी लावण सारू जावै ग्रर नी कदेई परीडौ रीतौ राखै। —फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रेडी लाखीणी राता मे दिन जातां काई वार लागै। चिमठ्या रै समचै दिन बीतण लागा। घणौ ई बिणज बध्यौ। घणी ई बोरगत बधी। घणौ ई मान बध्यौ। —फुलवाड़ी

६ दुर्लभ।

उ०—१ कवि एम समयसुंदर कहै, लाखीणौ अवसर लह्यौ। वासुपूज्य सरण आव्यउ वही, लाछन मिसि लागी रह्यौ। —स. कु.

७ अमूल्य।

उ०—थोडौ कुण करै भरोसौ थारौ, वीसां ई वाता लखण बुरा। लूंटै तो विन कुण लाखीणौ जोवन सरखौ रतन जुरा।
—ग्रोपौ ग्राढौ

रू. भे.—लखीणौ, लाखणउ

लाखूटी—देखो 'लाखोटौ' (रू. भे.)

लाखेक-वि.—एक लक्ष के लगभग।

लाखेटौ—देखो 'लाखोटौ' (रू. भे.)

लाखेर—१ देखो 'लाखेरी' (रू. भे.)

२ देखो 'लाखेरौ' (रू. भे.)

लाखेरियौ—देखो 'लाखेरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाखेरी-सं. स्त्री.—१ हल्का लाल रंग लिये हुए श्याम वर्ण की गाय या बकरी।

रू. भे.—लाखर, लाखरी, लाखेर

लाखेरौ-सं पु. [स्त्री. लाखेरी] १ हल्का लाल रंग लिये हुए श्याम वर्ण का घोड़ा या बैल।

रू. भे.—लाखर, लाखरि

अल्पा.—लाखेरियौ

लाखेसरी, लाखेस्वरी—देखो 'लक्षेसरी' (रू. भे.)

उ०—अनेक सत्रूकार सत धरम रा राखणहार खैराइतां रा करणहार धजबधी कोड़ीधज **लाखेसरी** दौलतिवंत चौरंग लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहुरामसद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै। —रा. सा. स.

लाखोटौ-स. पु.—१ तालाब के मुख्य घाट के बिल्कुल सामने (यानि विपरित दिशा मे) खोदी गई मिट्टी डालने से बना हुआ ऊंचा ढेर।

उ०—पीछोला री पाखती दीवाण रा मोहल कोट सहर छै, मोहला सू निजीक तळाव पीछोला मांहे **लाखोटा** री टोड तळाव वीच राणै अमरसिंह बादळ मोहल कराया छै। —नैणसी

२ किसी वस्तु को लाख से चिपकाने की क्रिया या ढंग।

उ०—सो इण तरै कागद लिख थैली मे घात **लाखोटौ** कर प्रोहित नू सोपीयौ। प्रोहित वहीर हुवौ। —कुंवरसी साखला री वारता

रू. भे.—लाखूटी, लाखेटौ।

लाखोफूलांणी-सं. पु.—लाखाफूलांणी नामक एक यादव की प्रशंसा मे गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—नाडा भरियोडा नैडा निजराता, गाडा गुडकाता पैडा रुड़पाता। **लाखंफूलांणी** भीणा सुर लेता, डीघा गाडीणा डब डब धुनि देता। —ऊ का.

लाखौ-स. पु—एक प्रकार का रंग विशेष।

लाग-स. स्त्री.—१ लगने की क्रिया या भाव।

उ०—तन जोबन दिन चार के, तु तन पहली त्याग। नही तौ तोकु त्यागसी, हरीया रहौ न लाग। —अनुभववाणी

२ अनुराग, प्रेम, मोहब्बत।

उ०—जिण भांत सूरज नै धूप, इण भात विरह नै लाग रौ एक रूप। लाग री सोभा हाती चढिया जिसी, लाग। बिना जिके पयादां समान जारी गिणती ही किसी। —र. हमीर

३ लगन, लौ।

उ०—दो कुळ त्याग भई बैरागण, आप मिळण की **लाग** (के काज) मीरा के प्रभु कब र मिळोगे, कुबज्या आई कांई याद। —मीरां

४ इच्छा, चाह।

उ०—मिथ्या द्रस्टि देव सू, धरियउ पूरउ राग। अरथ तणउ अनरथ कियउ, देखी नइ निज **लाग**। —वि. कु.

५ सम्बन्ध, सम्पर्क।

६ ईर्ष्या।

उ०—ओ दूहौ कुंवर कहीयौ ता पाछै लोग सरब कुंवर सुं **लाग** करै। तद लोका तौ राजा री छोटी राणी नु भखाया नै कही जो वीरभाण ना कढावौ तौ राज थारौ हुवै। —चौबोली

७ मौका, अनुकूल परिस्थिति।

उ०—पिरि कहूं जु पीहरि जाइ, आज छि ए **लाग**, सुख पामि सुदरि, मुझ मोकलु थाइ पाग। —नळाख्यान

८ नेग।

वि वि—देखो नेग'

९ दक्षिणा।

उ०—गुरूजी ने गुरा कर थापिया नै कयौ, इण देस मांहे मांहरी जेत होसी तौ माहरा पुत्र पोता माहरी साख रा होसी सौ राज नै गुरु कर मानसी नै व्याह रौ **लाग**, चवरी रौ लागभाग दीवौ, जोड़ो खीरोदक रौ, जायै परणियै गुरुजी नै देसी। —रा. व वि.

१० शाक विशेष मे दिया जाने वाला बेसन का मिश्रण या पुट।

११ लगान, भूमि-कर।

१२ किसी नशे आदि का व्यसन।

क्रि प्र.—लागणौ

१३ एक प्रकार का नृत्य।

१४ प्रतिस्पर्धा, होड।

वि. योग्य, काबिल।

क्रि वि—लिए, वास्ते। (वं. भा.)

लागट-स. पु.—वह ऊंट जिसके पैर और ईडर परस्पर रगड़ खाते हो। और पैर के निरन्तर रगड़ से होने वाला घाव।

रू. भे.—लागत

लागणियौ—देखो 'लागणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ राज एं तो मोत्या रा दातार जवांई म्हांनै घणांई

सवाबै। राज एँ तौ लागणिये नयनां रा बाई रा स्यांम। जवांई म्हांनै प्यारा लागौ हौ। —लो. गी.

उ०—२ आखी जगदीस्वर सांधरा अभिलाखी, राखी बांधरा री ईस्वर नह राखी। लोयरा लागणिया तरिणयां लजवाळा, कोमरा काजळिया रळिया रजवाळा। —ऊ. का.

(स्त्री. लागणी)

लागणौ–वि. (स्त्री. लागणी) १ मारने वाला, चोट पहुचाने वाला।

उ०—प्रेत रा सहूंसी सही साबात जागणी पाड़ें, मेळा सोभागणी थाळो भरोसौ अचूक। तोल अथागणी पावें सबदा दागणी तोप, वैरियां लागणी हूँयै नागणी बंदूक। —चडजी बारहट

२ आकर्षित करने वाला, मोहित करने वाला।

उ०—चोटी वाळी चमक लोइरणा लागणी, फणधर जिसड़ै फैल नवी काइ नागणी। अळका बळ अद्भुत्त छुवती छत्तिया, उभकती अंग अंग कता जरा तत्तियां। —र. हमीर

उ०—२ सोनै री आड निलाड रै ऊपर दीना। कुरजां री टोळी, सहेल्या री हबोळी। साथ लीना अै लागणा लोयरणा। —पनां

३ लगने वाला।

४ देखो 'लागट'।

अल्पा.—लागरिणयौ।

लागणौ, लागबौ–क्रि. अ —१ स्पर्श होना, छूना।

उ०—१ पिरण मन माहै आवटै, बळै घणौ, उणरौ डील दूबळौ हूतौ जाय, तिरण समै मेरारै को एक आधौ सु मिळण नु आयौ छै, तिणरै मेरौ पगै लागौ। —नैणसी

उ०—२ इम वागा लागा असमांणां, कूंता धमक भाट केवांणां जमदढ खंजर अम्होसम्ह जड़िया, लूथबथा जेठी जिम लड़िया।

—सू. प्र.

२ चिपकना, लिपटना।

उ०—१ छोहर परहर अवर नूं, मत संभरै अयांरा। तरु छडै लागी लता, पत्थर चे गळ जांरा। —ह र.

उ०—२ बीज न देख चहड़िया, प्री परदेस गयांह। आपण लीय भबुक्कड़ा, गळि लागी सहरांह। —ढो मा.

उ०—३ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हूँ लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही, मतिहि विछोहउ होइ। —ढो. मा.

३ पहुचना।

उ०—धर वहतां पुर मारता, माडल लागा आय। दूदौ साम्है पूरियौ, लडे अमांमै आय —रा. रू

४ खर्च होना, व्यतीत होना।

उ०—१ जोधपुरौ चढ़ियो जरां, ईसरा पुर अजमेर। लागी मिळतां खांन सूं, एक महूरत बेर। —रा. रू.

उ०—२ घड़ी दोय आवतां पलक दोय जावतां, सायब्यां में सारो दिन लागै ए मिरगानैणी थारै बिना जिवड़ौ भरयौ डोले।

—लो. गी

५ नियोजित होना।

उ०—१ जोधारौ लागा रहै, भाटी हरदासोत। मिळ देवीजर मारियौ, मेळ गया लख मौत। —रा. रू.

उ०—२ गोरी ए, बांका तो परण्या परदेस बांकी तो लागी नोकरी, ओ मेरी नार बांकी तो लागी, नोकरी, ओ मेरी नार —लो गी.

६ प्रस्फुटित होना, अंकुरित होना, खिलना।

७ फल फूल युक्त होना।

ज्यूं—मतीरौ लागणौ, बोर लागणा।

उ०—१ सायबा म्हारै छै बाग मे चपेलड़ी जी राज, जं के लाग्या छै धोळा धोळा फूल, प्यारा लागो भाभी नै देवर लाडला जी राज।

—लो. गी.

उ०—२ कासी करवत सिर सहै, गळै हिमाळै देह। हरीया निज फल दूरि है, लागै फूल वनेह। —अनुभववांणी

८ अनुभव होना, अनुभूति होना।

उ०—१ देवर, म्हारी धोती धोवै ए बलाय गोरै पूंचे पर सरदी लागज्यौ जी राज। —लो. गी.

उ०—२ चपा-केरी पांखडी, गुथू नवसर हार। जउ गळ पहरूं पीव बिन, तउ लागै अगार। —ढो. मा.

उ०—३ बिणजारा रे, लोभी, लादयौ छै मगरां जी बोझ, पेट में भटको लागियौ, बिणजारा रे। —लो. गी

उ०—४ भटको लागतां ई ठाकर अठी-उठी जोयौ।

—फुलवाडी

९ प्रतीत होना।

उ०—१ लागै साद सहामणउ, नस भर कुभड़ियांह। जळ पोइणिए छाइयउ, कहउ त पूगळ जाह। —ढो. मा.

उ०—२ फुरियौ भादरवौ फुरियौ नह फीको, नीरद रज आगै लागै नह नीको। —ऊ. का.

१० प्रवृत होना।

उ०—'रतना' मद मैं मत्त निसंक हुई थी तिण रा सकोज हू रुकण लागी, लाज रै भार आंखियां भुकण लागी। —र. हमीर

११ आरम्भ होना, शुरू होना।

उ०—१ तेतले समह-फूटेवा लागा कपाळ मडळ, भाजेवा लागा धनुरमंडळ। जाएवा लागा सिरखंड, पड़वा लागी खाडा तणी

कड। वाजिवा लागी सुभटनी काटकडी, नाचेवा लागा धड-कबंध पाड़िवा लागा ध्वज चिंध, प्रहार जरजर कुंवर पडई।

—रा. सा. स

उ०—२ प्रारंभ में कियो जेणि उपायौ, गावरण गुणनिधि हू निगुण। किरि कठचीत्र पूतळी निजकरि, चीत्रारै लागी चित्रण।

—वेळी

१२ प्रारम्भ होने के पश्चात लम्बी अवधि तक चलने वाला कार्य काल, समय।

उ०—१ लागंते वैसाख री, बीज भरी बळबड। रांम कियो मिळ 'केहुरी', करी जिही सतखड। —रा. रू.

उ०—२ उतरतो प्रासोज अर लागती काती। बाजरिया सांगोपाग पाकोड़ी। बास बास ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा। दाणा वेखो तो जाणे परड रा डोळा। —ग्रमरचूनड़ी

१३ फैलना, पसरना।

उ०—१ माया पसरी आग ज्यू, घर घर लागी जाय। जनहरीया दाझै नही, मन तन हरि सु लाय। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ आकास ऊपरै अबीर नै गुलाल री अबरै डबरी लाग रही छै। —रा. सा. स.

१४ किसी अनिष्ठ या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क मे आना।

उ०—भूत रो जमारो सारथक व्हियो। बीदणी नै लागण री बिचार आता ई भूत नै पाछौ चेतो व्हियो। लाग्या तो आ दुख पावैला। —फुलवाडी

उ०—२ म्हैं म्हारा मन सूं साची बात कीकर लुकावतो। इण पैं'ली घणी ई लुगाया रै डील मे लाग लाग वानै घणो ई दुख दियो, पण म्हारा मन री अंडी गत तो कदै ई नी बिगड़ी।

—फुलवाड़ी

१५ होना।

उ०—१ पाखती अरटोरी झींगड़ि चींग रडि पडि नै रही छै। इहा री खटाको लागिनै रहिग्रो छै। —रा. सा. स.

उ०—२ दारू रा वाव वीच-वीच खोजै छै। गोळिवा री खाटखड़ लागनै रही छै। —रा. सा. स.

उ०—३ आगणि जळ तिरप उरप अलि पिग्रति, मारुत चक्र किरि लियत मरू। रामसरी भुमरी लागी रट, धूया माठा चद धरू। —वेली

१६ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत होना।

उ०—१ माह महारस मयण सब, अति उलहइ अनंग। मो मन लागो मारवण, देखण, पूंगळ ढ्रंग। —ढो. मा.

उ०—२ मन भी लागा तन भी लागा, ज्यों बांमण गळ धागा रे मीरां के प्रभू गिरधर नागर, भाग हमारा जागा रे —मीरां

उ०—३ पच न डोल अबोल मुख, चंचळ होय न चित। जनहरिया मन थिर भया, लिव लागी नित प्रित। —ग्रनुभववांणी

१७ जुडना या होना।

उ०—हू थने पूछू बालमा, प्रीत कता मण होय। लागतड़े लेखो नही, टूटी टाक न होय। —लो. गी.

१८ अनुगमन (पिछे) होना।

उ०—पिया गया परदेस में, नैणा टपकै नीर। ओळूं आवै पीव री, जीवडो धरै न धीर। जी उमराव थारै लैरधा लागी आवू म्हाराराज। —लो. गी.

१९ अन्तर्गत होना।

उ०—अणहलवाडा पाटण नू गांव ४५६ लागै छै तिण में तगो १ गाव ५२ सीधपुर छै। रु. २५००० पचीस हजार उपजतां री नैड नै पाटण तो आगै वडी ठौड हुती। —नैणसी

२० पीछे पड़ना, होना।

उ०—१ गिगै-गोचर बतावै, भोळा नै भरमावै अर गूगा नै चरावै। लुगाया नै ठगै, पीमाळा नै ग्रेठै अर लारै लागै है। —दसदोख

२१ प्रभावित होना।

उ०—हरीया सो दिन वार धिन, आय मिळै सत सग। अब तो चढै न ऊतरै, लागा हरि का रग। —ग्रनुभववाणी

२२ अन्तिम अवस्था मे होना।

ज्यूं —सूरज आथमण लागो, जानवर मरण लागो।

२३ किसी वस्तु का दूसरी पर जडा जाना, टाका जाना, बैठाया जाना या सटाया जाना।

उ०—१ सू नमचा किण भातरा छै? बीटीवा चोगानिया, घणै वनात रा लपेटिया, सालू रा लपेटिया, बोयदार रा मढिया, चैत रा, कलाबूत रै काम रा, सोनैरूपै रै बळा रा, रूपै रा कुलावा लागा थका, सोनै री टूटी, रूपै री चिलमपोस छै। —रा. सा. स.

उ०—२ सू आभरण पहरै छै। जरकसी साडी, अतलसी घरणो, केसरी अगिया, घणै विराणपुरै री कोर पटै लागा थका।

—रा. सा स.

२४ आश्रित होना।

ज्यूं ढोली हरेक जात रै लारै लागोडा है।

२५ प्रज्वलित होना, जलना।

उ०—फेर हुकम हुवै छै। महताबांरी चांदणी हुवै। सू महिताबां पचास सब सावठी ही लागी छै। —रा. सा. सं.

२६ आदी होना।

ज्यू—चाय, दारू लागणौ।
२७ किसी तल पर किसी गाढे तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप मे पोता जाना।
ज्यूं—मेंदी लागणौ, रंग लागणौ, कीचड लागणौ।
२८ अभ्यस्त होना।
२९ किसी रूप मे सम्मिलित होना।
ज्यू—पोथी में परिसिस्ट लागणौ।
३० किसी आवरण या निरोध के कारण किसी विभाग या प्रकोष्ठ का ढक जाना या छिप जाना।
ज्यूं—आडौ लागणौ, आख लागणौ।
३१ किसी चीज का ऐसे क्रम से आना कि उसका यथोचित उपयोग हो सके।
ज्यू—हाट लागणौ।
३२ धारदार या नुकीले पदार्थ का शरीर मे गडना, धसना, चुभना।
ज्यूं-नख लागणौ, हळबाणी लागणी, छुरी लागणी, तरवार लागणी
उ०—१ दीठी रूपाळी म्हैं ई धणियां, पण इसी याही ज लोइणां री अंणियां। जिण भात खतग रा बाण लागां पछै हरै हीज प्राण।
—र हमीर

उ०—२ कुवरसी रैं हाथ रौ तीर जिण रैं लागै, सो घोडे रै माह पार नीसर जावै। असवार रै लागै जै माहा पाखरा भीजै नही। सो पूठ लागा मारता जावै छै। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ बस राखौ जीभ कहै इम 'बांकौ', कडवा बोल्या प्रभत किमी। लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिमी।
—बा दा.

३३ किसी पदार्थ का उपयोग मे प्रयुक्त होने पर अपना प्रभाव दिखाना।
ज्यू दवा लागणी
३४ मडराना, छा जाना।
उ०—सावळि काइ न सिरजिया, अबर लागी रहत। वाट चलता साल्ह प्रिय, ऊपर छाह करत। —ढो. मा.
३५ किसी विषय में या व्यक्ति पर किसी बात या वस्तु का आरोप या प्रयोग होना।
ज्यू—कलक लागणौ, धारा लागणी।
३६ लाक्षणिक रूप मे किसी मुख्यत धार्मिक क्षेत्र मे कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप मे जिम्मे पडना।
ज्यू—पाप लागणौ, दोष लागणौ, सूतक लागणौ।
३७ जान पड़ना, मालूम होना।
उ०—वा रै एक कानी मोटरा री लैण चाल री' धीरै धीरै। इसौ लागै जाणै कीडी नगरी जाग गयी। —अमर चूनडी
३८ किसी काम या बात का घटित होना।

ज्यू—गरंण लागणौ, भोग लागणौ, ढेर लागणौ।
३९ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता सिद्धि या स्थापना होना।
ज्यूं—होड लागणी।
४० किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक होना।
ज्यू—घर मे दो मण धान महीना रो लागै ला।
४१ पारिवारिक सम्बन्ध या रिश्ते के विचार से किसी के साथ किसी रूप मे सम्बद्ध होना।
ज्यू—भाई, बैन या देवर लागै।
४२ गणित के क्षेत्र मे कोई क्रिया ठीक और पूर्ण उतरना।
ज्यू—जोड लागणी
४३ आर्थिक क्षेत्र मे अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दायित्व देना या निश्चित होना, हिस्से लगाना।
ज्यू—ब्याज लागणौ, चूंगी लागणी
४४ पेड पोधों के सम्बन्ध मे किसी स्थान पर जमकर जीवित रहना, प्रफुल्लित होना, फूलना।
ज्यू—गुलाब लागणौ, नीब, पिंपळ, बड़लौ लागणौ
४५ घोडे, ऊट, बैल आदि के सम्बन्ध में किसी प्रकार के दबाव या सघर्ष के कारण घाव उत्पन्न होना, गलने या सडने की किसी क्रिया का आरम्भ होना।
ज्यूं—बलद रै खाधी लागणी, घोडा रै पीठ लागणी
४५ किसी पदार्थ मे ऐसे किटाणु उत्पन्न होना या बाहर से आकर सम्मिलित होना जिससे उक्त वस्तु किसी प्रकार मे नष्ट होती है।
ज्यू—गवां रै खुपरयौ लागणौ, आटा मे इलिया लागणी,
४६ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध मे तेज आच (आग) के कारण पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पैंदे मे जमना, चिपकना या सट जाना।
ज्यू—खीच लागणौ, दूध लागणौ, रोटी लागणी
४७ आघात होना, चोट पहुँचना।
ज्यू—सोनार रै घरै बडताई बारौत रो भचीड लागो।
४८ किसी के साथ ऐसा व्यवहार होना कि वह उससे कुढे या चिडे।
ज्यूं—भूडौ लागणौ।
४९ क्रमानुसार बारी आना, नम्बर आना।
ज्यूं—कचैड़ी मे मुकदमौ लागणौ, डाकखाना मे रजिस्टरी नै पारसल लागणी।
५० अकित या निश्चित होना।
ज्यूं—मौंर लागणी, आक लागणौ
५१ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध होना।

ज्यूं—ब्हौ उण लुगाइ रै लागोडो

५२ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श होने से जलन या खाज उत्पन्न होना।

ज्यू—मिरचा लागणी, कैवच लागणी।

५३ स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग होना।

५४ घोडे का घोडी से संभोग होना।

उ०—१ चौधरी कह्यो, सावण रै महीनै माहे समुन्द्र रै तीर घोडा बाधीजै अर रात री पोहरो दीजै। जद घोडी री पूछ महाकाल नीसरै तद जाणजै जळ घोडी लागौ।

—राव रिणमल राठौड ग्रावडियै री वात

उ०—मु काछेलां चारण समुद्र खेप भरण गया हुता, मु ईंयां एक घोडी लीवी लेनै समुद्र रै काठै ग्राय उतरिया। ताहरा नेजल घोडो नीसरनै घोडी नू लागो। —नैणसी

लागणहार, हारौ (हारी), लागणियौ—वि.।

लागिग्रोडौ, लागियोड़ौ, लाग्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लागीजणौ, लागीजबौ—भाव वा.।

लगणौ, लगबौ, लग्गणौ, लग्गबौ—रू भे.।

लागत—स. स्त्री.—१ व्यय, खर्च।

उ०—मेरा नै कह्यो:—ग्रठै उत्तम घर नही सो म्हैं थानै लागत दा छा अनै अठै उत्तम घर विनां रोटी पाणी री ग्रबखाई पड़ै।

—भि द्र.

२ किसी वस्तु के बनाने या किसी अवसर विशेष पर खर्च की जाने वाली धन-राशि

ज्यू—मकान बणावण मे दस हजार रीपिया री लागत है। लडकी रा ब्याव मे पाच हजार रिपिया री लागत है।

३ देखो 'लागट' (रू. भे.)

लागती—स. स्त्री.—सम्बन्ध, रिश्ता।

लागदार—स पु.—१ नेग लेने वाला, नेगदार।

उ०—ग्रौर ही इणी पईसौ-टको सारा नेगिया लागदारां नू दियो।

—नैणसी

२ कर या टेक्स वसूल करने वाला।

३ कर या टेक्स देने वाला।

लागबाग, लागभाग—स पु—१ लगान, कर, टेक्स।

२ दक्षिणा।

उ०—राणा री पुरोहित पालीवाळ १ मैं सिवड पुरोहित ग्रठी मू ग्रौर ४ ब्राह्मण जूना विद्या पात्र वेद पढै छै। लागबाग दीजै छै।

—राव रिणमल री वात

३ दस्तूर, नेग।

रू. भे.—लागवाग

लागमौ—देखो 'लाग'।

उ०—थोडी देर बाद फरीदै कयौ—माजी! तमाकू-री टक्कौ दिरावौ नी। "ग्ररे राड-रा! ग्रौ फेर कायरौ लागमौ लगायौ?

—वरसगाठ

लागलपेट—स पु—१ दुराव, छिपाव।

२ किसी बात मे अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा या लगा हुग्रा तत्व या भाग।

उ०—वा तौ ग्रावं ज्यू, जका बोल उकळिया, वै ई बिना लागलपेट रै पाधरा खळकाय दिया। —फुलवाडी

२ कपट, छल।

उ०—घणै हरख सू बिना लागलपेट रै बिदा किया।

—कुवरसी साखला री वारता

३ सम्बन्ध, लगाव।

लागव—स. पु—बैरी, शत्रु।

उ०—हाकणहार 'पाळ' सुत हुवै, ग्रचरज गयण बहै ग्रतरेख लागवां सीस न ढोहे लाकड, लाकडि लोहो छोहो लागेक।

- मानसिघ कल्याणोत कछवाहा रो गीत

लागवाग—देखो 'लागबाग' (रू. भे.)

ऊ०—१ फीटन को फट दीन्ही, मरम परम मेट दीन्ही, भूमि भूप भेट दीन्ही, ऐसौ उपकारी तू। लागवाग रेट कीन्ही, लूट काहू की न लीन्ही, भारी बुद्धि भीनी भूती, धन्य जसधारी तूं। —ऊ. का.

उ०—२ लागवाग दापै बिना, त्यासू हुवै न तान। कद इक कळह करावसी, 'जींद' तणी जवान। —पा. प्र.

लागियोड़ौ—भू का. कृ. (स्त्री लागियोडी) १ स्पर्श हुवा हुग्रा, छूग्रा हुग्रा. २ चिपका हुग्रा, लिपटा हुग्रा. ३ पहुँचा हुग्रा ४ खर्च हुवा हुग्रा, व्यतीत हुवा हुग्रा. ५ नियोजित हुवा हुग्रा. ६ प्रस्फुटित हुवा हुग्रा, ग्रकुरित हुवा हुग्रा ७ ग्रनुभव हुवा हुग्रा, ग्रनुभूति हुवी हुई ८ प्रतीत हुवा हुग्रा ९ प्रवृत्त हुवा हुग्रा. १० ग्रारम्भ हुवा हुग्रा, शुरू हुवा हुग्रा. ११ प्रारम्भ होने के पश्चात् लम्बी ग्रवधि तक चला हुग्रा कार्यकाल, समय, फैला हुग्रा, पसरा हुग्रा १२ किसी ग्रनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सबध हुवा हुग्रा या उसके सम्पर्क मे ग्राया हुग्रा. १३ हुवा हुग्रा. १४ मानसिक स्थिति का किसी ग्रोर प्रवृत्त हुवा हुग्रा १५ जुडा हुग्रा या हुवा हुग्रा. १६ ग्रनुगमन हुवा हुग्रा, पीछा हुवा हुग्रा १७ ग्रन्तर्गत हुवा हुग्रा. १८ पीछे पडा हुग्रा. १९ प्रभावित हुवा हुग्रा. २० ग्रन्तिम ग्रवस्था मे हुवा हुग्रा. २१ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर जडा हुग्रा, टाका हुग्रा, बैठाया हुग्रा या सटाया हुग्रा २२ ग्राश्रित हुवा हुग्रा २३ प्रज्वलित हुवा हुग्रा २४ ग्रादी हुवा हुग्रा. २५ किसी तल पर किसी

गाढे तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप में पोता हुआ. २६ अभ्यस्त हुवा हुआ. २७ किसी रूप मे सम्मिलित हुवा हुआ. २८ किसी आवरण या विरोध के कारण कोई विभाग या प्रकोष्ठ ढका हुआ या छिपा हुआ २६ किसी चीज का ऐसे क्रम से आया हुआ होना कि उसका यथोचित उपयोग हो सके. ३० धारदार या नुकीला पदार्थ शरीर में गढ़ा हुआ, धंसा हुआ, चुभा हुआ. ३१ किसी पदार्थ का उपयोग मे प्रयुक्त हुवे होने पर अपना प्रभाव दिखाया हुआ. ३२ किसी विषय में या व्यक्ति पर किसी बात या वस्तु का आरोप या प्रयोग हुवा हुआ. ३३ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से जिम्मे पड़ा हुआ. ३४ किसी काम या बात का घटित हुवा हुआ. ३५ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना हुवा हुआ. ३६ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक हुवा हुआ. ३७ पारिवारिक सम्बन्ध या रिश्ते के विचार से किसी के साथ किसी के रूप मे किसी के साथ सम्बद्ध हुवा हुआ. ३८ गणित के क्षेत्र मे कोई क्रिया ठीक और पूर्ण उतरी हुई. ३६ आर्थिक क्षेत्र मे अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दायित्व दिया हुआ, निश्चित हुवा हुआ या हिस्से लगा हुआ. ४० पेड़ पौधो के सम्बन्ध म किसी स्थान पर जम कर जीवित रहा हुआ, फला हुआ, फूला हुआ. ४१ घोडे, ऊट, बैल आदि के सम्बन्ध मे किसी प्रकार के दबाव या सघर्ष के कारण घाव उत्पन्न हुवा हुआ, गलने या सडने की किसी क्रिया का आरम्भ हुवा हुआ. ४२ किसी पदार्थ मे ऐसे किटाणु उत्पन्न हुवा हुआ या बाहर से आकर सम्मिलित हुवा हुआ जिससे उक्त वस्तु खाए जाने से या किसी प्रकार से नष्ट होती है. ४३ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध में तेज आच (आग) के कारण पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पेंदे में जमा हुवा हुआ, चिपका हुवा हुआ या सटा हुवा हुआ. ४४ आघात हुवा हुआ, चोट पहुंची हुई. ४५ किसी के साथ ऐसा व्यवहार हुवा हुआ होना कि वह उससे कुढे या चिडे. ४६ क्रमानुसार बारी आई हुई या नम्बर आया हुआ. ४७ अकित या निश्चित हुवा हुआ. ४८ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श हुवा हुआ होने से जलन या खुजली उत्पन्न हुवी हुई. ४६ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध हुवा हुआ. ५० अनुमरण हुवा हुआ. ५१ किसी स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग हुवा हुआ. ५२ घोडे का घोडी से संभोग हुवा हुआ. ५३ मल युक्त हुवा हुआ. ५४ मालूम हुवा हुआ ५५ मडराया हुआ, छाया हुआ ।

लागु, लागू—वि.—१ बैरी, दुश्मन ।

उ०—१ 'दला' री दौलताबाद टल्लै दिया, वाद भाजि दिखण नाद वागौ । दीह सिवरात री भांत दीठी दळां, लागुवां इसौ गुर कांन लागौ । —राव महेसदास राठौड़ री गीत

उ०—२ हाथि हुवौ संग्राम तणी हर, थियै कळह तौ प्रकट थियौ । लागुवां झडपा दियतां लागै, कमधज साबळ पनग कियौ ।

—नांदण बारहठ

उ०—३ ऊभै कुभ न लीनै असुरां, लागुवां पड़ियां पछै लयी । गढ गागरौणि गउ-त्री ग्रहता, गांगू का ऊपरै गयी ।

—कूंभा खीची री गीत

२ पीछे पड़ने वाला ।

उ०—१ राणी जगमाल राव मानसिंघ री जमांई हुवै । सु धरती री लागू हुवौ । सिरोही जगमाल विजय कीधी ।

—राव चंद्रसेन री बात

३ कायम, मुकर्रर ।

उ०—ठीक तौ थूं उण री बाप है । बडौ खतरनाक छोरौ है । उण माथै तीन सौ दो पूरौ लागू व्हियौ है, बचणौ मुसकल है ।

—अमर चूनड़ी

४ लगने योग्य ।

५ प्रयुक्त होने योग्य ।

लागोड़ौ—देखो 'लागियोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरभुजजी रै भोग लागोड़ौ थाळ सूरजमलजी रै भोग लागै, पछै औ थाळ ठाकुर जी रा रसोवडा दाखळ हुवै ।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ महल रै नीसरणी लागोड़ी राव ऊची खेंच लिवी । महल रा किंवाड आडा जडिया जिण सूं राव नूं मार सकिया नही ।

—बां. दा. ख्यात.

(स्त्री. लागोड़ी)

लाघव—स. पु [स. लाघव] १ लघु, छोटा ।

उ०—१ देवी कालिका मा नमो भद्र काळी, देवी दूरगा लाघव चारिताळी । देवी दाणवा काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिध सेवी ।

—देवि.

उ०—२ मुख मगळ नांम उचार सदा, तन के अघ ओघन दाघव रे । हनमत बिभीखन मान तनै, जिन कीन वडे, जन लाघव रे ।

—र. ज. प्र.

२ कमी, अल्पता ।

३ दस प्रकार के यति धर्मों के अन्तर्गत पांचवां यति धर्म ।

उ०—खंति मुति अज्जव मद्दव, लाघव पाचमो जाण । नित वखांण्या मुनिराज ने, भगवन स्री वरधमांन । —जयवांणी

४ हल्कापन ।

५ तेजी, शीघ्रता ।

६ हाथ की सफाई या चालाकी ।

७ संकिरता।

८ असम्मान, अप्रतिष्ठा।

लाड़वाड़, लाड़वाड़ियौ—देखो 'मारवाळ, लारवाळियौ' (रू. भे.)

उ०—फूलकंवर रै काना भणक पाड़्यां बिना ई वौ अठी-उठी भाई गमायतां सू ठसियौ भिड़ाय अेक अधबूढ बामणी सूं नातौ कर लियौ। नातायत बामणी रै साथै फूलकंवर रै साईनी अेक लाड़वाड़ छोरी आई लाडवाड़ री अेक आख मे छिम अर दूजोडी में फूलौ।
—फुलवाड़ी

लाड़ायौ—स. पु (स्त्री. लाडाई) १ कपड़ा, जूतादि पर मुह मार कर खाने की आदत वाला पशु।

२ बिना आमंत्रण या मनुहार के आकर भोजन करने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—लाएड़ौ, लाड़ेवौ लाड़ौ, ला'ड़ौ, लायेड़ौ, ल्या'ड़ौ,।

लाड़ेवौ—देखो 'लाडायौ' (रू. भे.)

लाड़ौ—१ वृद्ध, बूढा।

२ देखो 'लाड़ायौ' (रू. भे.)

लाचार—वि. [अ.] १ विवश, मजबूर।

उ०—माल्यां बळती ही। रजी रै कारण मिज्या साव परवारियोडी ही। दरजै लाचार होय सेठजी नै वहीर व्हैणौ ई पड्यौ।
—फुलवाडी

२ दीन, दुखी।

३ असमर्थ, असहाय।

लाचारगी, लाचारी—सं. स्त्री.—१ विवशता मजबूरी।

उ०—बेटी! म्हारी आ मुळावण थारै वास्ते अणूंती मूंघी पडैला, आ जाणता थका ई म्हैं थनैं बिला रा ऊंडा बेरा मे धरकावूं, थूं म्हारी इण लाचारी नै समझै है के नी। — फुलवाडी

२ असमर्थता।

उ०—दोडा दोडी कर गिण गिण दुख गेरै। हाथा जोड़ी कर जिण तिण मुख हेरै। छंदागारी छिब प्यारी पुळवती, कर कर लाचारी हारी कुळवती।
—ऊ. का.

३ दीनावस्था।

रू. भे.—लचारी

लाच्छ, लाच्छी, लाछ—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ धरम किया सुख होय, लाछ लिछमी धन पावै। धरम उतिम कुळ अवतरै, जळम दाळिद नही आवै। —बील्होजी

उ०—१ दसमौ वरस उतरतां ई तौ माईत पीळा हाथ करनै पराई करण री चिंता करण लागा। मी मागणै मावती अर नी गिगन में। छाछ अर लाछ मांगण री कंड़ी मेहणी। सगपण मावै सगपण आवण लागा। —फुलवाड़ी

लाछबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.) (डि. को)

लाछरी—स. पु.—वस्त्र विशेष।

उ०—पीतांबर चादर रक्तांवर नेत्रांबर खासरी सालूर चौलहिगं नीलुहुरा जरजरी मलबारी लाछरी अधोतरी अमरी गगापारी।
— व. स.

लाछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.) (डि. को.) ।

उ०—गज ग्राह विन्है ही तारिया, रीझै खीझै लाछवर। अजमाल चरण वदण करै, धन तो लीला चक्रधर। —गजउद्धार

लाछि—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ कखी विगजज आकर णि, पसू चौपदी घणी। अनेक संपदा उपाउ, लाछि चतुरागणी —गु रू. ब.

उ०—२ गोगी सग कातइ, लाछि वस्तु सातइ, नारद हेरउं करइ, नव खडि फिरइ, धनद यक्ष भडारउ करइं, इसिउ रावण नरेस्वर।
—व. म.

उ०—३ कहि कुण आपणा मदिर माहि, लाछि उवेखई आवती ग। तीणइ मानीय तैं सवि वात पुण, मनि ए इसु चीनवइ ए।
—हीराणद सूरि

उ०—४ गरथ पांमी गुण कीजै इम कहै गगौ, साहमी साधु सुपुत्र सतोखीजै सगौ। लाछि छै जे, लाछि, कहैं धरम लाहल्यौ, परिहा सची राख्या सैण अणा नै स्वाद सौ। —ध. व. ग्र.

उ०—५ सरम वाना सगळ कीध सजळ थळ, प्रगट पुहवी निपट प्रेम अघळा। लहकती लाछि वळि लील लोकी लही, सुध मन करै धरम-सीळ सगळा।
— ध. व. ग्र.

लाछिबर लाछिवर—देखो लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लाछी—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे)

लाछीबर, लाछीवर—देखो लक्ष्मीवर' (रू. भे)

लाछुबाई—स. स्त्री.—चारण वशोत्पन्न एक देवी विशेष।

लाज—सं स्त्री. [स लज्जा] १ अन्तकरण की वृत्ति विशेष जिससे स्वाभावत या किसी निन्दनीय आचरण की भावना के कारण दूसरो के समक्ष वृत्तिया सकुचित हो जाती हैं मुंह से बात नही निकलती, चेष्टा मन्द पड जाती है, सिर व दृष्टि नीची हो जाती है, लज्जा, शर्म।

उ०—१ नारायण रा नाम सूं लोक मरत औ लाज। बूडैला बुध बायरा, जळ बिच छोड जहाज।
—ह. र.

उ०—२ तद वार अंस पुरसा तणी आय वणी जग ऊपरा। महाराज तणै छळ मारवा, धारी लाज मुरद्धरा। —रा. रू

२ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

३ मर्यादा ।

उ०—१ कहियौं भीम हूंत कमधज्जै, सूर उदै आवो दळ सज्जै । दोनू तरफ लाज कुळ दाखौ, रूका जोर सरीखौ राखौ । —रा. रू

उ०—२ तन मन धन सब अरपन कीनू, छाडी छै कुळ की लाज । दो कुळ त्याग भई बैरागण, आप मिळण की लाज [के काज] । —मीरा

४ लगाम, नेकेल, बाग ।

उ०—१ सजि कसणा, करि लाज ग्रहि, चढियउ साल्हकुमार । करह करकउ स्रवण सुणि, निद्रा जागी नार । —ढो. मा

उ०—२ धावउ धावउ हे सखी, को दांवणि को लाज । साहिब म्हाकउ चालियउ, जइ कउ राखइ आज । - ढो. मा.

२ रस्सी ।

रू. भे.—लज, लज्ज, लज्जा, लज्ज्या, लज्या, लाजा, लाजि, लाजी ।

मह.—लाजो ।

लाजणो, लाजबो–क्रि अ.—लज्जित होना, शर्मिन्दा होना, सकुचित होना ।

उ०—१ बडो बोल खाटियो । तठा पछै रावत मेघ परणीजियो थो सु आयो । बात सुणी । गाढो लाजियो । —नैणसी

उ०–२ बहु सब दइ लाजती न बोलइ, कहिम्यइ वळै अनेरी काय । आगणइ काइ माहरइ आयउ, जाणइ परउ रिखीसर जाइ । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ दीवा मणि मदिरै कातिग दीपक, सुत्री समाणिया माहि सुख । भीतर थका बाहिर इम भासै, मनि लाजति सुहाग मुख । —वेलि

२ सम्मान, प्रतिष्ठा, स्तर या शोभा मे तुलनात्मक पतन होना । हल्का लगना, नीचा दिखना ।

उ०—१ जिस अवास की सीढियूं के ऊपर रगदार सबजू पसमीन पायदाज राजै । सो कैसो जिसकी सोभा के देखै तै नील घन सघन के वद्दळ लाजै । —सू प्र

लाजणहार, हारो (हारी), लाजणियो—वि० ।

लाजिओड़ो, लाजियोड़ो, लाज्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लाजीजणो, लाजीजबो—भाव वा० ।

लजणो, लजबो, लजाणो लजाबो, लजावणो, लजावबो, लज्जणो, लज्जबो, लज्जाणो, लज्जाबो, लज्जावणो, लज्जावबो—रू. भे ।

लाजम, लाजमी—देखो 'लाजिमी' (रू. भे.)

उ०—१ ताइया मिळ बंठोय बध तनू, मरणो हुव लाजम जग मनूं । परदेसिय 'बूडोय' 'जीद' परा, दुरही बित लेसिय 'देवळ' रा । —पा प्र

उ०—२ एक तो जिको कांम आरंभ करै तिण रो निरवाह करणो आपरै जुम्मै लाजमी जाणै । —नी. प्र.

लाजमौ–सं. पु.—१ सभ्यता, शिष्टता ।

२ देखो 'लवाजमो' (रू. भे)

उ०—१ तद खाफरी राजा रै दरबार बडै लाजमै पोमाख सूं जाय मुजरो कियो । —राजा भोज अर खाफरै चोर री बात

उ०—२ तरै जगदेव नै कहायो, कवरजी जान नै तयारी कीज्यो । जगदेव केहायो—गैणो, पोसाख, घोड़ो, राजा रो लाजमो नही नै पाळो तो इसै लवेस(लिबास) चालणो आवै नही । —जगदेव पवार री बात

उ०—३ तरै झाला रै वीहा हुवो सो झाली नू आणो आयो । झाली पीहर आई तरै लाजमै सू हलाई । —कुंवरसी साखला री वारता

लाजलज्जाळू—देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

उ०—लाजलज्जाळू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि । लीलावनी लुकडी, लाहि लवीरी संगि । —मा का प्र.

लाजवंत—देखो लजावत' (रू भे)

(स्त्री. लाजवती)

लाजवंती, लाजवती—देखो लजावती' (रू भे.)

उ०—आगळि पितमात रमती अंगणि, काम विराम छिपाडण काज । लाजवती अगि एह लाज विधि, लाज करती आवै लाज । —वेलि

लाजवरद–सं पु [स राजवर्त्तक] १ एक कीमती पत्थर या रत्न ।

२ विलायती नील जो गधक के मेल से बनता है और बहुत बढिया तथा गहरा होता है ।

उ०—लाजवरद सील सुपेद, जघाळ जुगत अत । रचि अमास नवरग, करै मधि चित्र देव कृत । —रा. रू

लाजवरदी–वि. [फा] लाजवरद के रग का, हल्के नीले रग का ।

लाजवाब–वि. [फा] १ जो उत्तर न दे सके, निरुत्तर

२ अनुपम, अद्वितीय, बेजोड ।

लाजा—देखो लाज' (रू भे)

उ०—१ ना कीज्यो सैणा नरा, काचो बीजो काम । राखै लाजा सतरी, राजा साचो राम । —र. ज प्र.

उ०—२ कान सुणै कुण कवीदा काजा, लाखा वात रहै किम लाजा पोढो नाथ धरम सत पाजा, राखी रीत रिडमला राजा । —भवूनसिघजी री गीत

लाजामुखी-सं. स्त्री.—मुख की शर्म या लज्जा।

वि.—लज्जित या शर्मिंदा रहने वाली।

लाजाळू देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

उ०—१ हीरा झिगमगता आटी खुल झुलनी, तिरछी झाकणिया बरछी सी तुलती। दुरबळ लाजाळू साळू मे दीखै, भामण भूबाळू ब्याळू बिन बीखै। —ऊ का

उ०—२ लाजाळू गुल चिमन मे, खग कुळि माहि बकोट। माव-डिया मिनखा महो, या तीना मे खोट। —बा दा.

लाजाळूपरा, लाजाळूपणो—देखो 'लजाळूपण' (रू. भे.)

लाजि—देखो 'लाज' (रू. भे)

उ०—केहरी तणा जमराण मचतै कदळि, दुश्रै कर जोडिया खडी दोहा। पुकारै जवानी, नेम दिस पधारो, लाजि आवै, हमै वाजि लोहां। —लिखमीदास व्यास

लाजिम, लाजिमी—वि [अ.] १ उचित, मुनासिब।

२ आवश्यक, जरूरी।

३ निर्भर।

उ०—सैणां ममलत पेस करजै नही, सैणा ममलत नू पेम कर दौलतमदा री कहियो छै पाछै बादसाह ऊपर लाजिम छै। —नी. प्र

रू. भे.—लाजम, लाजमी।

लाजियोड़ो—भू का कृ.—१ शर्म या लज्जा किया हुआ, लज्जित।

२ सम्मान, प्रतिष्ठा या स्तर मे निम्न (पतन) हुवा हुआ।

(स्त्री. लाजियोडी)

लाजी—स पु.—१ एक प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था।

उ० —मलय सिंगल कोसल नर मध्य, स्रीपर्वत द्राविड नइ वंध्य। वैरोट तापी लाजी धार, स्रीवेंदरभ पाटल अनि सार। —नळदवदती-रास

२ देखो 'लाज' (रू. भे.)

लाजूकाजू—स पु —बारात की सूचना कन्यापक्ष के घर पर देने के लिए जानेवाले, वर के बहनोई या भाणजे को कन्या पक्ष की ओर से दिया जाने वाला एक नेग। (दाहिमा ब्राह्मण)

लाजो—देखो 'लाज' (मह , रू. भे)

उ०—पूछै कारिज पय नमी, कहो आया किण काजो रे। 'लालचद' कहै तस अखीइ, जस मुख हुवै लाजो रे। —प. च चौ

लाट—स. पु —१ देश का नाम।

उ०—लाट बिरद सिधु देस सहु, केकइ परध जांण। साढा पचवीस देस भरत मे आरभ प्रधान। —अ स्त

२ गुजरात के एक भाग का नाम, जहां अब अहमदाबाद, भड़ौच आदि नगर हैं।

[अ लॉर्ड] ३ ब्रिटिश काल मे किसी प्रान्त या देश का सर्वोच्च शासक।

उ०—अलीमन सूर रो वस कीधो असत, रेस टीपू विजै अ बट रुडिया। लाट जनराळ जरनैल करनैल लख, जाट रै किलै जमजाळ जुडिया। —कविराजा बाकीदास

४ बहुत सी चीजों का वह समूह या विभाग जो एक साथ रखा, बेचा या नीलाम किया जा सके।

५ समूह, झुण्ड।

उ०—दस हजार जोडया दुभल, लाख लोक री लाट ज्या जोड़या माथै जबर, 'वीरम' घाती वाट। —वी. मा.

६ लाटानुप्रास नामक अलकार।

७ एक व्यावसायिक जाति या उसका व्यक्ति।

८ कसक।

उ० - बापड़ो बूढो सुमरो नवलजी देखतो ही रैय ग्यो। मोटी आस लेय'र बनै आयो हो जका माथै पाणी फिरग्यो। देख्यो—बियां रो जवाई आपरो ऊंट खेच पग 'र बारै चाल्यो जावै। पारबती घर मे गरळाई। नवलजी रै काळजै मे लाट ऊपडी—मेरी आज आ हालत जीवता ही हुयगी? —दसदोख

९ लूटने की क्रिया।

उ०—इतरै माहै ए तो मरण रूप ही ज बैठा हता। झट पागडा पग दीया। इण पागडै पग दीना नै घाडवी कतार नू लाट लडावै छै। —तिलोकसी वरसे भाटी री बात

क्रि प्र.—लडाणो

१० बडा सरदार।

[म लाट,] ११ पुराना कपड़ा, जीर्ण वस्त्र।

वि —१ शक्तिशाली जबरदस्त।

उ०—चोखो कमायो अर खायो, की रो ही डर-भौ नी राख्यो। दोजकी'र दगैगी बण्या, दुनिया रै ईरखै अैरख्या'र तण्या लाट हा, बामण-बाणिया सू के घाट हा। —दसदोख

२ देखो 'लाठी' (मह , रू भे.)

३ देखो 'लाठ' (रू. भे)

लाटणी—स. स्त्री खलिहान मे साफ किये हुए धान को वितरण करने का एक उपकरण विशेष।

२ खलिहान मे कृषिउपज मे से जागीरदार द्वारा अपना हिस्सा लेने की क्रिया या ढग।

लाटणो, लाटबो—क्रि स [स. लाटनम्] १ खलिहान मे से जागीरदार या शासक द्वारा कृषि उपज (अनाज) का निश्चित हिस्सा लेना या

वसूल करना ।

उ०—१ कदै तौ पड़्यौ काळ अभागौ, गिण-गिण काढ्यौ दो'रौ। कदै तौ ठाकर लाटी लाट्यौ कदै लाटग्यौ बो'रौ ।

—चेतमानखौ

उ०—२ अनत आतमा और न जावै खळै बहुत सुख पाया। निज तत तिकौ लाटता लीयौ, लाटै लोक धपाया। —ह. पु. वां.

२ कर्जदाता द्वारा कर्ज वसूल करना ।

उ०—कदै तौ पड़गौ काळ अभागौ, गिण गिण काढ्यौ दो'रौ। कदै तौ ठाकर लाटौ लाट्यौ, कदै लाटग्यौ बो'रौ। —चेतमानखौ

लाटणहार, हारौ (हारी), लाटणियौ—वि० ।

लाटियोड़ौ, लाटियोड़ौ, लाटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लाटीजणौ, लाटीजबौ—कर्म वा० ।

लाटरी—सं. स्त्री [अ] राशि या वस्तु के रूप मे पुरस्कार देने की वह योजना जिसमें तन्निमित्त बिके हुए टिकिट या कूपन की संख्या की चिट डालकर विजेता का नाम निश्चित किया जाता है ।

उ०—भोभर मे ठंडौ पाणी सौ पड़्यौ । लाटरी रै इनाम दाई कुँवर वेगी कांन खडा कर लीना। —दसदोख

क्रि. प्र.—आणी, खुलणी, खोलणी, लगाणी, लागणी ।

लाटसा'ब, लाटसाहब—स. पु [अ. लार्ड साहिब] दिल्ली का वाइसरॉय ।

लाटानुप्रास—स. पु.—एक अनुप्रास अलंकार जिसमे शब्दो की पुनरुक्ति होती है, पर अन्वय करने पर वाक्यार्थ में भेद हो जाता है ।

लाटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ खलिहान मे जागीरदार या शासक द्वारा कृषि उपज (अनाज) का निश्चित हिस्सा लिया हुआ या वसूल किया हुआ। २ ऋणदाता द्वारा खलिहान में कर्ज वसूल किया हुआ ।

लाटियौ—सं पु—उस चक्र की धुरी जिसके सहारे कुए से चड़स निकाला जाता है।

लाटूपाटू—वि—१ डरपोक, कायर ।

उ०—तठा पछै घोघै मोरबी रौ बिगाड़ किंयौ हुतौ, सु मोरवी वीरमगाम रा थाणा रौ साथ अजांणजक रौ घोघां माथै टूट पडियौ, माणस हजार तीन, तिण मांणस ७०० मारिया, बीजा लाटूपाटू हुता सु नास गया । —नैणसी

२ कमजोर, अशक्त ।

उ०—देखो, कै कैईरी होड तौ हुवै कोय नीं, सिरदार! पिण म्हारी जाण में तौ कैई सू लाटूपाटू को रैवां नीं। —वरसगांठ

३ साधारण ।

उ०—साहरा राजा साथ लाटूपाटू आदमी मेल राजा नूं मजल पोहचायौ और लोक सझनै उभौ रहियौ ।

— नरसिंघ राजा री बात

४ तुच्छ, नगण्य ।

लाटौ—स. पु.—१ खलिहान ।

उ०—छैवट चोधरण आय नै उणरी बिचार तोड़्यौ—आज यूं ठाडा होय नै कियां बैठा हौ ? रोटी खाय नै लाटै चालण री विचार कोय नी कांई ? —रातवासौ

२ खलिहान मे पड़ी अन्न-राशि ।

उ०—कदै तौ पड़्यौ काळ अभागौ, गिण गिण काढ्यौ दो'रौ। कदै तौ ठाकर लाटौ लाट्यौ, कदै लाटग्यौ बो'रौ। —चेतमानखौ

३ हिस्सा, बंटवारा ।

उ०—१ सूर खळां सिर साखती, हरीया आज'क काळि। लाटौ लूटै लोभीया, हकै आयौ हाळि। —अनुभववाणी

उ०—२ अगम लाटौ लीया निगम ससा नही, राज तपतेज डर नाहिं कोई। दास हरिरांम ऊ देस अदेजगर, आप कमाय अर खाय सोई। —अनुभववाणी

क्रि. प्र.—काढणौ, लाटणौ

मुहा.—लाटा ऊ ई नही धापै जका चारा ऊ कांई धापसी=अत्यन्त लोभी ।

लाठ—स. स्त्री—१ मोटा व ऊंचा खंभा या स्तम्भ ।

२ कपास से रूई पृथक करने के चरखे का एक काष्ट का मोटा उपकरण जिसके साथ एक लोहे की छड़ लगी रहती है। इसमें कपास फसाने से बिनौला भूमि पर गिर जाता है और रूई पृथक हो जाती है ।

३ काष्ट का एक प्रकार का मोटा व लम्बा लट्ठा जो कोल्हू की कूंडी के मध्य मे लगा रहता है, जिसके घूमने से तथा दबाव पड़ने से कोल्हू मे डाले हुए पदार्थ पेले जाते हैं।

४ रहट में बांगडी तथा डाबडी से सम्बद्ध लकडी का एक मोटा लट्ठा जिसके घूमने से डाबड़े मे लगी माल घूमती है।

वि. वि.—१ देखो 'डाबडौ'

२ देखो 'बांगड़ौ'

५ लकडी का मोटा लट्ठा जो कच्चे मकानो की छाजन मे लम्बा लगा रहता है।

उ०—फळसा टाटा ठाट, लाठ धरकोट बणावै। ढूंढा पड़वा छान, कोडवा ठाठ चढावै। —दसदेव

६ देखो 'लाट' (रू भे)

उ०—कठीर काटकै छूटै साकळा राटकै किना, मेळै बमू थाट कै अरेहा सत्रा मीच। केवाण झाटकै बाढ झाड़िया भूरिया कैंवां, त्रिभाडिया लाठ कै बूरिया घोरां बीच। —सकरदान सांमोर

७ देखो 'लाठी' (रू. भे)

लाडा–स. स्त्री.—एक जाति विशेष ।

उ०—मणीयार सोनार कुंभार ठठार लोहार तलाल पटोळिया पटसुत्रीया माली तबोली हरमेखलिया जोगी भोगी बहरागी नट बिट खुट खरड लाडा माठा रंगाचारय······। —व स.

लाठी–सं. स्त्री. [सं. यष्ठी, प्रा. लट्ठी] १ पतली लंबी लकड़ी ।

मुहा.—जिण री लाठी उण री भैंस=शक्ति सर्वोपरि ।

रू. भे.—लट्ठी ।

मह —लाट, लाठ ।

२ सुम पर होने वाला घोड़े का रोग विशेष । (शा. हो.)

लाठीझल, लाठीझल्ल—हाथ मे लाठी रखने वाला, लट्ठबाज ।

रू. भे.—लठीझल ।

लाठीबाज—देखो 'लट्ठबाज' (रू. भे)

लाठो—देखो 'लट्ठो' (रू. भे.)

उ०—लागड रा रस्सा ऊपर लेय चढ़िया वे ऊपर दोय लाठा सूं काठा बाधिया । —ठाकर जेतसी री वारता

लाड–सं. पु [सं. लाड्=थपथपाना, थपकी देना] १ बच्चो को प्रसन्न करने हेतु किया जाने वाला स्नेह पूर्ण व्यवहार, दुलार ।

उ०—जीओ, घण मुळ लै पिव पालिणैं, तौ दोय जणा मतौ ए उपाइयौ जी । जी पिया, जै म्हारै जलमेगो पूत, तौ किसड़ा लाड लडास्योजी । —लो. गी.

उ०—२ राजूलां रै अेक भतीजो आठ या दस बरसा रो छै । मुंहडै लाड लगायोड़ो, बडो लाड कुमायो ।

—सूरै खीवै कांधळोत री बात

२ प्यार, प्रेम ।

उ०—हित बिण प्यारा सज्जणां, छळ करि छेतरियाह । पहिली लाड लडाइ कइ, पाछइ परहरियाह । — ढो. मा.

क्रि. प्र.—आणो, करणो, लगाणो, लडाणो ।

३ एक देश का नाम ।

उ०—१ कीर कास्मीर द्रविड गउड जाड लाड लागळ आगळ खस पारस्व, आदव नेपाल अग वग कलिग···। व. स.

उ०–२ २७२ गाजण, ३४ कनूज, १८ लक्ष बागू मालवउ, ६ लक्ष गोड, ६ करु, ६ डाहल, ७० सहस्र गुजराति, ६ सहस्र सोरठ, ४० जेजाहुत, २४ सहस गगपार, २१ लाड देस, १४ सहस्र व्यालकुण नमियाड । —व स.

रू. भे.—लड्ड ।

लाडउ—देखो 'लाडौ' (रू. भे.)

उ०—गंगाजळ अधर भीलियइ भिलतउ, दोमति जिम वाजें दरबार । लाडउ नवउ किना लाडली, बळै सुघट मिळइ सुविचार ।

—महादेव पारवती री वेलि

लाडकड़ो, लाडकलो—देखो 'लाडको' (अल्पा. ,रू. भे.)

(स्त्री. लाडकडली, लाडकडी, लाडकली)

लाडकवायो–वि. (स्त्री. लाडकबाई) १ जिसका बहुत लाड या प्यार हो, प्यारा दुलारा ।

रू. भे.–लाडायो ।

लाडकियो—देखो 'लाडको' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बाघोडी कमरा श्रो बुजीसा, नही खोलै, लाजै म्हांरो लाडकियो मामाळ, भोमियाजी झगडै जूजिया । —लो. गी.

लाडकी–वि. स्त्री.—प्यारी, दुलारी ।

उ०—हू लूकिड रै लाडकी, दिहाडी दूरि पीयांण । माहरू भमइ तुहारडा, पजर पूठइ प्राण —मा. का. प्र.

लाडकोड–स पु —खुशी, हर्ष ।

उ०—१ बापडा बेदा बेटी नै जापी करायो हो, दोहितै जायै रा लाडकोड करता हा । — दसदोख

उ०—२ बरस तीन रै आतरै बळै कवर हुवो । तिण रो नाम जगधवळ दीधो । घणा लाडकोड कीजै छै । राजा री रीझां लीजै छै । —जगदेव पवार री बात

लाडको–वि. (स्त्री. लाडकी) जिसका बहुत अधिक प्यार या दुलार हो, प्यारा, दुलारा ।

उ०—१ मारै बेटो एकाएक होवण सू घणो लाडको ।

—रातवासो

उ०—२ घर रा काम काज सू निबड़नै उणां जेठूना जबरजी नै पकड लियो । खोळा मे बिठायनै लाड करण लागी—म्हारी लाडको बेटो, म्हारो समझणो बेटो, म्हारो नेनकियो वीरो, घणो हुसियार, घणो फूटरो, अर बुच्चकारता एक वाल्हो दे दियो ।

—अमर चूनड़ी

रू. भे.—लाडिकू, लाडिको ।

अल्पा.—लाडकड़ो, लाडकलो, लाडकियो ।

लाडखानी–स. पु.—कछवाहा वश की शेखावत शाखा के अन्तर्गत एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—जेसा सामळाती कासळी से लोग आयो, ऊनै लाडखानी मायपा का भी खिनायो । - सि. वं.

लाडगहेलो, लाडगे'लो–वि.—(स्त्री. लाडगहेली, लाडगे'ली) वह जो अधिक लाड के कारण नटखट या उद्दड हो गया हो ।

उ०– सोल स्रगार सज्या, बीजा काम तिज्या, सुजाण सहेली, लाडगहेली, हस गतइ चालती, गजगतइ माहलती । —व. स

लाडरौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—हैरांन हुआ हिंदू तुरक, आया लोह न आडडै। गजगाह 'भीम' गाजी' हुअौ, व्याहक लाडी लाडडै। —गु. रू. बं.

लाडण-सं. पु. [सं. लालन] १ सुन्दर पति।

उ०—१ लाडण वांनि चडावीउ ए, परिणेवा तोरणि आवीउ ए लाडी हिव सिणगारीइ ए, वर पीठी देह ऊतारीइ ए। —हीराणद सूरि

उ०—२ एक वार मोरी वीनतडी सुणि सुदर लाडण रे। लाडण नइ मांडण नारिनइ नाहलु ए। —नळदवदती रास

सं. स्त्री. [सं. लालन, प्रा. लाडणी] २ पत्नी।

उ०—लाडीय कोटं कुसुमह माल लाडीय लोचन अति अणियाल। लाडीय नयणे काजल रेह, सहजिहिं लाडण सोवन देह। —सालिभद्र सूरि

वि.—लाडला, प्यारा।

उ०—बिणजारी ए क लोभण, गोद लियौ लाडण पूत, घर-घर बूझत वा फिरै, बिणजारी ए। —लो. गी

लाडणउ, लाडणौ-सं. पु.—१ ऊट के तग के साथ लटकने वाला फूल के आकार का गुच्छा, २ औरतो के फेटिए (घाघरा) के नाडे के साथ भी गुच्छा रहता है।

२ देखो 'लाडलौ' (रू. भे)

उ०—१ समुद्र खारउ, बाउल कटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन बोलणउ, सुणह भसणउ ससउ नासणउ राणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ, साड आडणउ, कुमित्र फाडणउ, दरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, अगि ताती, धाहु राती। —व. स.

उ०—२ लाडेकोडे लाडणौ, लाडी परण्यौ जेह। विसमय पांम्यौ अति घणी, देखी कुंमरी तेह। —ढो. मा.

(स्त्री. लाडणी)

लाडणौ, लाडबौ-क्रि. स.—लाड करना, प्यार करना।

लाडबाई-स. स्त्री.—एक देवी का नाम।

लाडल-वि.—प्यारा, दुलारा।

उ०—१ भल खेलौ गनगौर सुदर गौरी, भल पूजो गनगौर। हो जी थानै देवं लाडल पूत, अंतस प्यारी भल खेलौ गनगौर। —लो. गी.

उ०—२ म्हारी लाडली बेटी थू दुहाग री चिंता मत करज्यै। —फुलवाड़ी

लाडलड़ौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे)

उ०—१ अेक आवै गूगळ की बास सुगधी, कुण सुवागण, गणपत पूजियो। गणपत पूजै लाडलड़ै री माय सुवागण, ज्यां घर विड़द ऊतावळी। —लो. गी.

उ० २ ढोली का चढ ढोलदं राणी गढ सरवरिये री पाळां जी। ज्यां सुणे म्हारे बाप के, राणी लाडलड़ी ननसाळां जी। —लो गी.

उ०—३ घी भर दिवलो बहू लाडलड़ी संजोवै, आयो पितरां री लसकर ज्यानणी। —लो. गी.

(स्त्री. लाडलडेती, लाडलड़ी)

लाडळडै—देखो 'लाडली' (रू. भे)

उ०—मिठड़ा सा भोजन बहू बहवड़दे जिमावै, आयो पितरां री लसकर जीमग्यो। ठडड़ा सा पाणी बहू लाडळडै पियावै, आयो पितरां री लसकर पी गयो।

लाडलियौ देखो 'लाडलौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाडलिवी-स. स्त्री. - एक प्रकार की लिपि।

लाडली-सं. स्त्री.—१ पत्नी, भार्या। (डिं. को.)

उ०—राणी रतनागर तणी, माणी 'पतै' अनूप। लूणी सिरखी लाडली, भोगै 'जसवत' भूप। —चिमलदांन रतनू

२ दुल्हिन, नव-वधु। (डिं. को.)

उ०—१ अेक आरतड़ै जस देई अो बिनायक, लाडली री भूआ भैण नै। अेक जीमडली जस देई अो बिनायक, लाडली री दादी माय नैं। —लो. गी.

उ०—२ छठो तो बासो फेरा की बसियो, फेरा मे बैठ्या लाडो लाडली। म्हारी लाडली को बीर बधज्यो, राईबर को बागो बीटळो। —लो. गी.

३ राधिका।

उ०—पुलिण रविसुता फहरावजे पीतपट, आवजे रासथळ व्रजनाथ आथ। कान कवार विहरि गळी व्रज कुंजरी, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —बां. दा.

स्त्री वि.—प्यारी, दुलारी।

लाडलौ-स. पु. (स्त्री. लाडली) १ पति (डिं. को)

२ दुल्हा। (डिं. को.)

वि.—प्यारा, प्रिय, दुलारा।

उ०—१ मूंडण आसू थांमती बोली—म्हारा लाडलौ, इण बात री सोच थैं आछो करियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ मात कहै सुत सांभळौ, संयम दुक्कर अपार। तूं लीला री लाडलौ, सुख विलसौ ससार। —जयवाणी

उ०—३ मेवाड ढूंढाड जोऊं ही हाड़ौती माळवौ मोळौ, दौळा काळ चक्र सौ किणी न आवै दाय। कालै किसौ तौ बिनां पायाळ

जाती काळ कांपा, लाडली पंगुळी चांपा अंगुळी लगाय ।
—सूरजमल मीसण

रू. भे.—लाडली, लाडणउ, लाडणी, लाडिलउ, लाडिलौ ।

अल्पा.,—लाडेलड़ी, लाडलियौ

मह.—लाडल, लाडेलौ ।

ाडवौ—देखो 'लाडू' (रू. भे.)

उ०—एकण नै तुस ढोकळा जी, पूरा पेट न थाय । एकण रै रहै लाडवा जी, बैठा भाणै के माय । —जयवाणी

ाडांणी—देखो 'लाडखानी'

उ०—जूटियौ ज्यूं रांम जोध लाडांणी त्रकूट ज्वाळा, धर्क वज्र गिरां परा लाडांणी सचीठ । जूटिया भाडांणी जांणै साकळा मयद जूमी, ऊठिया लाडांणी प्रळै काळ री अगीठ । —मुरारदान कवियौ

ाडायौ—देखो 'लाडकवायौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाडाई)

ाडिकूं, लाडिकौ—देखो 'लाडकौ' (रू. भे.)

उ०— (सेवि) सूता कठिण लागती, हंसपिछ तलाई, डाभ पा (थरी) नि सुयि छि एह लाडिका भाई । —नळाख्यान

ाडिलउ, लाडिलौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—१ आहे सुंदर रूप मुहामणउ, सिवा देवी मात मलहार । आहे नवयौवन भर आवियउ, लाडिलउ नेम कुमार । —स कु.

उ०—२ तुम वीरा मे बहनडी, लाडिलौ धणी साभरी को राव । तु उड़ीसा को धणी, थारउ उलिगाणउ घरि बेगि पठाव ।
—बी. दे.

उ०—३ तिण इण परि कीधौ हास जो, आवौ रै बाई वेस्या • लाडिली रे लो । —वि कु.

उ०—४ मीरां हरि की लाडिली जी, तुम मीरां के स्याम । मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दरसण द्यौ म्हारै रांम । सुरत निज नाम से लागी जी । —मीरां

उ०—५ हरिजन हरि को लाडिलौ, लीवलीण न दूजा लाड ।
—अनुभववांणी

(स्त्री. लाडिली)

ाडी—सं. स्त्री.—१ पत्नी, स्त्री । (डि. को.)

उ०—१ थांरी लाडी सा कागद मेहलियो, म्हारै सैजा रा सिणगार घरै आवौ अो जुझारजी, झगड़ै किण विध जूजिया ।
—लो. गी.

उ०—२ लाडीजी रा मूख रा बोलण री तरह, चलण री अनोखी देखी मा म्हैं । कांई चितवन रसराज नैणां री, उसी छै भूहा री रेख । —रसीलैराज रा गीत

२ दुल्हिन, नव-वधु । (डि. को)

उ०—१ वर लाडी मोतिया बधाया, अति आणंद विनोद अति । मगळाचार सिवपुरी माहैं, गूडी ऊछळी दैव गति ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ पुड़ करै पंखणी अपछर पूखणो । धार तोरण अणी बदं ग्वग घोड़ । विकट लाडी बणी बीद बाको त्रिबंक, 'मयंक' रो परणजै वाधियो मौड । —दुरसौ आढौ

३ राज्य के सामत व जागीरदार के घराने की सधवा के लिए आदर सूचक एव सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—कुवरजी लाडी जी माहिबा मुजरो करवाइयो छै ।
—कुवरसी साखला री वात

४ पुत्री, बेटी ।

उ०—म्हारी लाडी सात भाया की भैण म्हारा पिवजी, कोई ऊभी सोवै आगणै जी । टोळा माला हसती क्यूं ना हारथा म्हारा पीवजी, म्हारी राजकंवर क्यू हारिया जी । —लो. गी.

५ बच्चो के लिए उपयुक्त प्यार सूचक सम्बोधन । (बीकानेर)

वि.—प्यारी, दुलारी ।

उ०—प्रभणं पितु मात पूत मत पातरि, सुरनर नाग करै जसुसेव । लिखमी समी रुकमणी लाडी, वासुदेव सम सुत वसुदेव । —वेलि

लाडु, लाडू—स. पु.—१ गेंद के आकार की गोलाकार मिठाई ।

उ०—१ पछै पिरीमिया खाजा जाणै देहराना छाजा, चिहु सुणै साझा, गरमागरम ताजा । पीछै आया लाडु, तै किसी जान रा ?
—व स.

उ०—२ बोदा रै आडा बहै, सोदा मिळनै सैंग । भूकोडा भवता फिरै, लाडू खावै लैंग । —ऊ. का.

मुहा. (क) मन रा लाडू खावणा=मन ही मन किसी लाभ की कल्पना करना । (ख) लाडू री कोर की खारी की मीठी=लाडू की कौनसी कोर खारी और कौनसी मीठी=सतान मे से कौनसा प्रिय और कौनसा अप्रिय यानि बराबर ।

२ एक प्यार-सूचक सम्बोधन ।

उ०—लारली वेळा छुट्टी सूं रवानै व्हिया जद री बात है-पुणचो काठो पकड लियो अर बट्ट करती कांवळी वदार नाखी । इण उपरात ई हसनै बोल्या—वो रोज गावो जिकी चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणायदो नी लाडू । आज तो म्हूं सांचांणी चाकरी माथै वहीर व्हियो हू—

कालोड़ी तो काठळ राज ऊपडी, काई मोटोडी छाटां रो बरसै मेह,
भवर भल चढजो राज, चाकरी····

काई रैवौ तौ रांधू ए राज लापसी, कांई चढौ तौ बाजरियौ खीच,
भंवर मत चढजौ राजा चाकरी···।

म्हारी आंख्यां में पांणी आयग्यौ हौ तौ ई म्हैं मुळक नैं कह्यौ—गीत री छेली कडी तौ पूरी करता पधारौ—

एक टका री ए राज चाकरी, कांई लाख रुपियां री घर री नार,
भंवर मत चढजौ राज, चाकरी···।
—भ्रमर चूनड़ी

रू. भे.—लडू॰, लाडवौ।

अल्पा.,—लाडूडौ।

मह.—लाड्व।

लाड़ूड़ौ—देखो 'लाडू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ महला मे जाता गोरी रा सायबा, प्यारी घणा पै लाड़ूड़ा कुण मारचा म्हारा राज। —लो. गी

उ०—२ तीजौ मास उलरियौ ए जच्चा नीबूडै मन जाय। चौथौ मास उलरियौ ए जच्चा लाड़ूडै मन जाय ए। —लो. गी

लाडूव—देखो 'लाडू' (मह., रू. भे.)

लाडेलड़ौ, लाडेलौ—देखो 'लाडलौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ सुणौ नणद लाडेलड़ी, अे रै भावज का बोल, साळां लिखौ ना साथीडा, हस हंस लो रै तमोळ, इण साथीड़ा रै आगै, दौ गज मोतीड़ा रा हार। —लो. गी.

उ०—२ कंवर लाडेलड़ै रा बाबोजी भला छै, महंगै मुलाई ओ-राज। —लो. गी

उ०—३ बूझत बूझत नगर पईठ्या, पोळ बतावौ लाडेली रै बाप की, ऊंची सी मैड़ी लाल किंवाडी, केळ झबरकै राजीड़ा रै बारणै।
—लो. गी.

(स्त्री. लाडली, लाडिलडी)

लाडेसर-वि.—वह जो अधिक प्यार एव दुलार मिल जाने के कारण उद्दण्ड और नटखट हो गया हो।

उ०—बाळ भोळा हुयग्या, सगाई नी हुई। लोग लुक-लुक ठाली-भूली ठिठकारी बतावै। उलाडी, उभागी अर खुरड-पगी कैवै है। लाडेसर-बोछरड़ी, गतराडी तथा नुगरी। —दसदोख

लाडौ-सं. पु.—१ दुल्हा, बींद, वर। (डिं. को.)

उ०—१ मोटर धीरै धीरै हाक ड्राइवर बनडो छै नादांन क लाडौ छै नादान। —लो गी.

उ०—२ मह मह सुगंध चिहुस मळण, जीतण तप अहमइ जूई। जह मह बिवाह लाडां जुडण, हाडा घरघर गहमह हुई।
—वं. भा.

२ पति, प्रियतम।

उ०—लाडौ लाडी जाय लडावण, रात्यूं ओळग सारै। जन हरि-रांम फिरै मन फीटी, ध्यांन न हरि का धारै। —अनुभववांणी

३ मालिक, पति, स्वामी।

उ०—१ त्रूटै घाव तूंडं भिडै रुंडमुडं। लडै फोज लाडा, उडै लोह आडा। —सू प्र.

उ०—२ दहुंव पटां लागौ खग दांनै, गोडै खळ करणां गरद। लख दळ मिल्यां दळा चौ लाडौ, हाथी हाडौ मसत हद।
—महाराज छत्तरसिंघ रौ गीत

वि.—प्यारा, दुलारा।

उ०—बाळपणै पूख खावती खावती धापती ई कोनीं। आज पाछी हर आयगी। लाडी बेटी, थारी काली मासी नै थोड़ा पूख तौ खवाड़। —फुलवाड़ी

रू. भे.—लाडउ।

लाढ-सं पु.—प्रासुक आहार से निर्वाह करने वाला।

लाणौ, लाबौ-क्रि. स.—१ कोई वस्तु अपने साथ लेकर आना।

उ०—इण भात रौ पहलड़ो तोडै रौ घातौ, सू दारू केसरिया गुलाबिया रा दाव दीजै छै, मुजरा कीजै छै। मुनहारां हुवै छै। मतवाळा हुयजै छै। उपरा उण भात रा सूळा रौ थाळ बीच में लाया छै। —रा सा. सं.

२ प्रत्यक्ष करना, उपस्थित करना।

उ०—अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणे रग लाय। मारू पक्का अब ज्यू, झरइ ज लग्गं वाय। —ढो. मा.

३ उत्पन्न करना।

लाणहार, हारौ (हारी), लाणियौ—वि.।

लायोड़ौ—भू. का कृ.।

लाईजणौ, लाईजबौ—कर्म वा.।

लाइणौ, लाइबौ, लावणौ, लावबौ, ल्याणौ, ल्याबौ, ल्यावणौ, ल्यावबौ—रू भे.।

लात-स. स्त्री.—पाव, पैर।

२ पैर से किया जाने वाला आघात, प्रहार, पदाघात।

उ०—'रिणमाळ' ऊठि नरसिंघ रुख, पय ग्रहि लात पछाड़िया। लोहाळ अठारहि पिंड लगां, पिसण अठारह पाडिया। —सू. प्र.

उ०—२ हिरण्या डागळै री छत माथै लातै मारचा बगी जावै, लारली वातां काळजो बाळण नै लारै लागी आवै। —दसदोख

उ०—३ आ वात माळी कही। ताहरां माळी नू सातल चाबखे बायौ। लात सो भांज किमाड़ नै माहै बाग मे पैठौ। माळी तौ पाधरो राव सूजै कन्है पुकारू गयौ। —सातल जोधावत री वात

क्रि प्र.—पड़णी, मारणी, लगाणी, वाहणी।

मुहा.—१ लात खाणी=मार खाना, पिटना।

२ लात मारणी=(क) पशुग्रो का दूध दुहते समय पैर से लात मार कर दूर हट जाना।

(ख) तुच्छ समझ कर उपेक्षा या अवहेलना करना।

ज्यूं—नौकरी रै लात मारणी, सपत्ति रै लात मारणी।

३ लातां रा भूत बातां सू नी मानणा=विनम्र व्यवहार की अपेक्षा न करना।

रू. भे.—लत।

लातर-स. स्त्री – फटकार।

उ०—रांमा अभिरांमा कामातुर रोवै, हडमल हुडदगी सेजा मे सोवै। ललनां **लातरियां** लातरिया लारी, भडवी भगतणिया पातरियां प्यारी। —ऊ का.

लातरणो-वि. (स्त्री. लातरणी) १ थकने वाला, हैरान होने वाला।

२ पथ भ्रष्ट होने वाला।

३ शर्मिदा होने वाला।

४ हारने वाला।

५ फटकारने वाला।

लातरणो, लातरबो-क्रि. ग्र.—१ थकना, हैरान होना।

उ०—१ तो पिण स्वामीजी रात्रि मे बखाण बाचै जठै वाबेचा ढोलक बजावै। गावै। बखांण मे विघ्न पाडै। जद भाया कह्यो–महाराज! दूजी जायगां उतरो। स्वामीजी बोल्या–खेतमीजी नय विक्षित है सो देखा परीलह खमवा किसायक सेठा है। कितरायक दिना वेदो कियो पछै वाबेछा **लातर** गया। —भि. ५.

उ०—२ फेर स्वामीजी पूछ्यो—साधु आहार करै, सो चोखो के खोटो? जीवणजी बोल्यो—साधु आहार करै, ते खोटो काम, त्यागै ते चोखो काम। दिशा आदि जाता मिळै जद स्वामीजी पूछै जीवनजी! खोटो कांम कीधो के करणो है। इम बार बार पूछता **लातरियो**। —भि. द्र.

२ पथ-भ्रष्ट होना।

उ०—थिर नृप हिंदुस्थांन, **लातरग्या** मग लोभ-लग। माता भूमि मांन, पूजै रांण प्रतापसी। —दुरसो आढो

३ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

उ०—१ किण रो इ बेटो मारयो, किण रो भाई मारयो, किण रो ही बाप मारयो। सहर मे भयंकार मड्यो। नगरी ना लोक साहुकार नें निंदवा लागा तिण रै घरै जाय रोवा लागा—रै पापी थारै धन घणो हुतो तो कूवा मे क्यू नही न्हाख्यो। चोर छुडायनै म्हारा मनुस्य मराया। साहुकार **लातरियो**। सहर छोडनै दूजै गांम जाय वस्यो। —भि. द्र.

४ हारना।

५ फटकारना।

लातरणहार, हारो (हारी), लातरणियो—वि०।

लातरिग्रोड़ो, लातरियोड़ो, लातरयोड़ो—भू० का० कृ०।

लातरीजणो, लातरीजबो—भाव वा०।

लातरियोड़ो-भू. का. कृ (स्त्री. लातरियोडी) १ हैरान हुवा हुआ, २ पथ-भ्रष्ट हुवा हुआ. ३ शर्मिदा हुवा हुआ, लज्जित हुवा हुआ. ४ हारा हुआ ५ फटकारा हुआ।

लातरो-म. पु, (ब व. लातरा) हिंदवानी या ककड़ी का सूखा छिलका।

लाद-सं स्त्री.—१ किसी पदार्थ का वह बोझा जो पशु की पीठ पर लद कर ले जाता है।

२ ऊट पर भूमा के बधे हुए चार बोरो का समूह या घास के पुम्रालो का गट्ठर।

३ चमडे का बना बडा जल पात्र।

उ० बूठा बीतोडा जाभरकै जाता, **लादां** बिसनोई ऊटा पर लाता। ढाचा ल्याचा सू कळसा जळ ढारा, जोगी जाभै रा घुरता जमवारा। —ऊ. का.

४ देखो 'लीद' (रू भे.)

ग्रल्पा. रू भे.—लादडी।

लादक-स स्त्री.—सवारी के उपयोगी एव बोझा लादे जाने वाले पशु की पीठ।

उ०—उर ढाल ग्रैसा, कूकड कथ तैसा। ग्राख पाणी मोती तवा लिलाड का बेठा तवा, जळ ग्रजळ पीवै, कनोती लोय दीवै। मगर **लादक** ग्रछी, छोटी पडछी। पुठ बाथा न मावै, पूछी चवर दावै। फीचा धनख जैमी, काछ नारगी तैसी। ग्रैसा घोडे राव चाकरा रै हाथा मे काढणा। —रा. सा. स.

वि.—लादने या सवारी के उपयुक्त।

लादड़ी—देखो 'लाद' (ग्रल्पा, रू. भे)

उ०—सिर सेळा ज्यू सूळ ग्रमीरा दोरी डाढी, गरीबा रै ना गडै पांव जूत्या किन वाढी। भीठकिया भरणाय घणेरी उंवार घालै, तीजै दिन झडकाय **लादड़ी** भर लै हालै। —दसदेव

लादणभार-स. पु.– गधा, खर। (ग्र मा.)

लादणो, लादबो-कि. स.—१ किसी वाहन या पशु विशेष की पीठ को भार या वजन से युक्त करना।

उ०—१ ऊट भया बहु बोज उठाया, परदेसां कू **लाद** पठाया। चादी पडै कीडा बोह खावै, कडवा टाचै ज्यूं दुख पावै. —ऊदोजी नैण

उ०—२ वाणियो तो मुय रह्यो। सूता भाख फाटी। तद उठीया। तणां सारा सु पेंहली रळो उठि नै पोठीयो एकलै होज **लादीबी**। पछै वाणीया ही लादीयो। —रळै गढवै री बात

२ भारी वस्तुओं का वाहनों, पशुओं आदि पर रखना, चढाना या भरना।

उ०—बेहू पुरांणा छोडि अवांणां, बाळदि लादि सवेरियां। जम के आए पकड़ि चलाए, बारी पूगी तेरियां। —रैदास धत्तरवाळ

३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण युक्त करना, आच्छादित करना।

ज्यूं—गैणां सूं लादणौ।

४ किसी की इच्छा के विपरीत अधिक कार्य या दायित्व से बोझिल करना।

५ कुश्ती मे विपक्षी को अपनी पीठ पर उठा लेना।

लादणहार, हारौ (हारी), लादणियौ—वि०।

लादिओड़ौ, लादियोड़ौ, लादयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लादीजणौ, लादीजबौ—कर्म वा०।

लादियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी वाहन या पशु विशेष की पीठ को भार या वजन से युक्त किया हुआ। २ भारी वस्तुओं का वाहनो, पशुओ आदि पर रखा हुआ, चढ़ाया हुआ, भरा हुआ। ३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण युक्त किया, आच्छादित किया हुआ. ४ किसी इच्छा के विपरीत अधिक कार्य या दायित्व से बोझिल किया हुआ. ५ कुश्ती लडते समय विपक्षी को अपनी पीठ पर उठाया हुआ।

(स्त्री. लादियोडी)

लादियौ-स. पु.—१ घोड़ा-घोड़ी के मल (लीद) त्यागने का अवयव। (मेवाड़)

२ देखो 'लादो' (अल्पा. रू. भे.)

रू. भे.—लाद्यौ।

लादी-सं. स्त्री.—१ चौड़ा-चौकोर पत्थर।

२ लकड़ी, घास आदि का छोटा गट्ठर।

उ०—दळिया रांधं दळबळिया हळबांणं। बेचण बीदणिया इंध-णिया आणं। लादी भारी नै ओळावौ लेती, दुरबळ बारी नैं बोळावौ देती। —ऊ का

लादौ-सं. पु.—१ ऊंट, गधा या सिर आदि पर विक्रयार्थ लाया जाने वाला लकड़ियों (ईंधन) का गट्ठर।

उ०—१ काती भळं दाती फेरी, लासू वन रा वाडता। झाड़ जुगत लादां लदावै, ढिगला टोकी काढता। —दसदेव

उ०—२ लादौ नाखीजग्यौ। डोकरी पईसा देवण लागी। इत्ती-ई में दो लकडिया न्यारी पडी दीसी। गरज र' बोली—अे लकड़िया को नाखै नी काई? —वरसगांठ

२ वजन, बोझ।

३ ओस, शबनम।

क्रि. प्र.—नाखणौ, पड़णौ, भरणौ, लदणौ, लादणौ

अल्पा.,—लादियौ

लाद्यौ—देखो 'लादियौ' (रू. भे.)

लाधणौ, लाधबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हीलाकर हिणकै ईळा हय आधा, लीला भगवत री लीला नही लाधा। ढाळां ढाळातर सांतर ढळियोड़ा। बैठा नीरां-तर आंनर बळियोडा। —ऊ. का.

उ०—२ सार तरस्सै सूरमां, सारा साहसवत। सुजड़ै लाधै साम छळ, वाधै तेज अनंत। —रा. रू.

उ०—३ पधरावि त्रिया वांमै प्रभणावै, वाच परस्पर जथा विधि। लाधी वेळा मागी लाधी, निगम पाठकै नवै निधि। —वेलि

उ०—४ ज्याकूं जणा अेकण सागै घोड़ा सूं हेटै कूदया जाणै हीरा मोत्यां री कोई अमोलक खजानौ लाधग्यौ व्है। —फुलवाडी

उ०—५ भींटा बखेरघा, दांता माथै अलेवण चढायां, मांची माथै सूती उठती गुलाब री मां अगाड़ी तोड़ती लाधी। —दसदोख

उ०—६ बंभण मिसि वदै हेतु सु बीजो, कही स्रवणि संभळी कथ। लिखमी आप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाधै अरथ। —वेलि

लाधणहार, हारौ (हारी), लाधणियौ—वि०।

लाधिओड़ौ, लाधियोड़ौ, लाध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लाधीजणौ, लाधीजबौ—भाव वा०।

लाधियोड़ौ—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लाधियोडी)

लापड़—देखो 'लापड़ौ' (मह. रू. भे.)

उ०—बूटी लापड़ गीचाबर बिन बूटी, खाडी बाडी सब खाबण बिन खूटी। बैड़ां ब्यायोड़ी खंड़ा मे खासै। कोमळ काछड़िया बाछड़िया बासै। —ऊ. का.

लापड़कनौ-सं. पु. (स्त्री. लापडकनी) लबे कान वाला पशु।

लापड़ियौ—देखो 'लापडौ' (अल्पा, रू. भे.)

लापड़ौ-वि. (स्त्री लापडी) बडा और लम्बा (कान)

उ०—तठा उपरात करि नैं राजांन सिलामति काबळी कूतरा. लाहोरी कूतरा, विलाती कूतरा लोळमी, लाळमी जीभ रा, बछि में पूछ रा, लापड़ै कान रा, दाड़मी दत रा, सिघ रा हय रा, केहरी कंध रा······। —रा. सा. स.

स. पु —१ बड़े और लंबे कानो वाला पशु।

२ मोट को पानी मे डुबाने के लिए उस पर बाधे हुए पत्थर के

नीचे लगा हुआ चमड़े का टुकड़ा।

अल्पा.,—लापड़ियौ

मह.,—लापड़

लापता–वि. [अ. ला.+रा. अ. पता] १ वह जिसका पता न हो, खोया हुआ।

२ जान-बूझ कर कहीं छिपा हुआ, गायब।

उ०—जे किणी बरगोडिया रजपूत रै सागै उण री ब्याव व्हियौ व्हैतौ तौ नी वा इत्ता दिन मसा परवाण लापतै रै पाती अर न इण भांत लापतै रह्यां पछै पाछी गांव में पग धर सकती। —फुलवाड़ी

३ पत्र आदि जिस पर पता न लिखा हो।

लापर—देखो 'लोफर' (रू. भे.)

उ०—सीकरि की गादी न्याय नीति राज कीना। झूठा चोर लापर ने प्राण दंड दीना। —शि. वं.

लापरपण, लापरपणौ—देखो 'लोफरपणौ' (रू. भे.)

उ०—आखर बावन करै अेकठा, तैं कागळ लिख कीना त्यार। लापरपणौ कियौ तौ लडसूं, चिडसूं दियूं न कोडी च्यार। —बां. दा ख्यात

लापरवा–वि. [अ. ला+फा. परवाह] १ जिसे किसी बात की चिन्ता या फिक्र न हो, निश्चिन्त।

२ असावधान।

रू. भे.—लापरवाह।

लापरवाई–सं स्त्री. [अ. ला+फा. परवाह+रा प्र. ई.] निश्चिन्तता, बेफिक्री।

उ०—१ भाजण रा तणियोड़ा लिलाड़ में तिरछा सळ देख नै सेठ समझग्या के निसाणौ ठाणै लागौ है। वै झट माचा सूं ऊभा व्हिया। लापरवाई सूं बोल्या—नी मानै तौ बात को कोनी अर मानै तौ घणौ ई है। —फुलवाड़ी

२ असावधानी।

रू. भे.—लापरवाही।

लापरवाह—देखो 'लापरवा' (रू भे)

लापरवाही—देखो 'लापरवाई' (रू. भे)

लापळौ देखो 'लाप' (रू. भे)

लापसड़ी—देखो 'लापसी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ नणदळ-बाई रे लापसड़ी रधाय, ओ धण वारी रे हजा, देवरजी छिनगाळा रे घेवर छाटमा, ओ राज। —लो. गी

लापसी, लापी, लाफसी–सं. स्त्री. [स लप्सिका] गेहूं के दलिये का बनाया हुआ एक प्रकार का मीठा व्यंजन।

उ०—१ छट्ठे प्रहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार। —ढो. मा.

उ०—२ चपला की डार सूवा, पींजरौ बंधाऊं रे, अत घेवर सोलमा, लापसी परमाऊं रे। —मीरां

उ०—३ बडार रै नातै गांव नूत्यौ, सोनजी रात सुख री नींद सूत्यौ। लाफसी र' घी रौ घुवौ नूंतौ कर दियौ है। —दसदोख

रू. भे.—लपसी

अल्पा.,– लापसड़ी

लाब—देखो 'लाभ' (रू. भे.)

लाबाळी—देखो 'लबाळी' (रू भे)

लाभंकर—देखो 'लाभकर' (रू. भे.)

उ०—तिथ तेरस पख तरणि, वार सुभ करण चद्र वर। एकादस ग्रह अरक, लगन कन्या लाभंकर। —रा रू

लाभ–सं. पु [स लभ्] १ प्राप्ति।

२ हित।

उ०—लिया नाम मुख लाभ, व्याधि दुख आधि न व्यापै। कुळ मज्जण थिर करै, अरी बडपण ऊथापै। —रा. रू

३ सुअवसर।

उ०—'चतुर' कहै 'रामण' रौ, अहूं भुजा बळ आभ। मरण न पायौ धार मुंह तिको गमायौ लाभ। —रा रू.

४ फल, नतीजा।

५ उपकार, भलाई।

६ व्याज का धन।

७ व्यापार मे होने वाला मुनाफा।

८ आनन्द, मौज।

उ०—दुसमणां लाभ दाना दहण, खुली न काना खिडकिया। नर परम धरम बूझै नहीं, हुकौ सूझै हिडकिया। —ऊ का.

९ सात प्रकार के चौघडिये मे से चौथा चौघड़िया, जो शुभ माना जाता है।

१० फायदा, मुनाफा।

रू भे.—लाब, लाह, लाहू, लाहौ।

लाभकर, लाभकारक, लाभकारी—वि.—१ वह जिससे लाभ होता हो।

२ औषध आदि क्षेत्र मे गुण करने वाला, फायदेमन्द।

रू. भे —लाभंकर

लाभणौ, लाभबौ–क्रि. स [स. लब्ध] १ प्राप्त करना, पाना, मिलना।

उ०—१ ढोला, सायधण माणजे, झीणी पासळियाह। कइ लाभे हर पूजियां, हेमाळे गळियाह। —ढो. मा.

उ०—२ हरीया आधी लाभतां, सारी सुरित न धारि। लूखी सूखी खाय के, साई नाव सभारि। —अनुभववाणी

उ०—३ मांग्या लाभै अब घणा, मांगी लभै जवार । मांग्या साजन किम मिळै, गहली गूढ गिंवार । —अज्ञात

२ जानना, पहचानना ।

३ प्राप्त होना ।

४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति मे मिलना या देखना ।

क्रि. प्र.—५ सूझना, उपजना ।

६ लाभ होना, फायदा होना ।

लाभणहार, हारौ (हारी), लाभणियौ—वि. ।

लाभिप्रोड़ौ, लाभियोड़ौ, लाभ्योड़ौ—भू. का कृ. ।

लाभीजणौ, लाभीजबौ—कर्म वा /भाव वा. ।

लद्धणौ, लद्धबौ, लधणौ, लधबौ, लध्धणौ, लध्धबौ, लब्भणौ, लब्भबौ, लभणौ, लभबौ, लम्भणौ, लम्भबौ, लाधणौ, लाधबौ, लाहणौ, लाहबौ—रू. भे. ।

लाभस्थान-सं. पु. यौ· [स लभ्+स्थान] जन्मकुंडली मे लग्न से ग्यारहवां स्थान । (फलित ज्योतिष)

लाभांतराय-स. पु [स] जैन मतानुसार एक अन्तराय कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य के लाभ मे विघ्न पडता है ।

लाभियोड़ौ-भू का. कृ (स्त्री. लाभियोड़ी) १ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ, मिला हुआ. २ जाना हुआ, पहचाना हुआ. ३ प्राप्त हुवा हुआ ४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति मे मिला हुआ या देखा हुआ. ५ सूझा हुआ, उपजा हुआ ६ लाभ हुवा हुआ, फायदा हुवा हुआ ।

लाय-सं स्त्री. [स अलात, प्रा. अलाट] १ दावानल, आग, अग्नि ।

उ०—१ उण वेळा बळ अग्गळा, दळ राठौड दुबाह । मेघ थया सीसोदिया, लगी लाय अणथाह । —रा. रू.

उ०—२ अजा रै जगाई जका सवाई सवाई ऊठै, लाख दळा बिरोळै बुझायै न ज्वाळा लाय । कूरमा सीसोधां हाडा चहुवाणा सारां केता, धजा नेजा गजा सूधी ले गयौ धकाय ।

—राजाधिराज बखतसिंघ रौ गीत

क्रि. प्र.—लागणी

मुहा.—लाय लागणी=१ जलना, भस्म होना, अग्नि काड होना । २ नष्ट होना । ३ जल्दी होना । (मचना) ३ कुछ बिगाड़ या नष्ट होना ।

२ लपट, ज्वाला ।

३ जलने की क्रिया या भाव ।

४ प्रचण्ड गर्मी ।

उ०—आज पेमजी रै माथै सूं मुरळी दलाल री मांड्योडी मूळी हाळी मोवणी सीबी साफ हुवै, नीकळै है । जाणै आ मूळी तौ बसंत पांच्यूं री परमळ नी, उन्हाळै री लाय है । —दसदोख

उ०—२ जीवणदाता बादल्या, थां सू जीवण पाय । भल लूआ बाजौ किती, मुरधर सहसी लाय । —लू

रू. भे.—लाइ, लाई ।

लायक-वि [अ. लाइक] १ सुयोग्य ।

उ०—'मोटा तौ थे करसौ जद हुसा, हणै तौ (निसासा नाख'र) रुई सूं ई हळका अ'र धूड़ सूं ई हीणा हा ।" "कुण कैवै है ? था जिसा लायक सिरदार किता'क है ?" —वरसगाठ

२ उचित, ठीक ।

३ गुणवान, गुणी ।

४ समर्थ ।

उ०—डांडा ताभाडै केरड़िया ढीकै, रोटी पाणी नै टीगरिया रींकै । चित पर घोरारव आकर बरचावै, घर घर नर नायक लायक घबरावै । —ऊ. का.

५ भला, सीधा ।

स. पु —मत्री । (ना डिं को.)

रू भे.—लाइक, लायक्क

लायकी-स स्त्री. [अ. लायक+रा. प्र. ई.] लायक होने का भाव या अवस्था, योग्यता ।

उ०—आ थारी लायकी है । बाकी कणीई म्हारै चोक दीसिया पधारौ, पछै देखौ म्हारा भाई काई कैवै है ? —वरसगांठ

लायक्क—देखो 'लायक' (रू. भे)

उ०—डूगरपुर बासवाडाह देस, पाटवी राण राखीह पेस । लायक्क लूणपुर ग्रह लगाण, राय कुवर दीध छालक्क राण । —वि. स.

लायझळ-स स्त्री. यौ [स. अलात+ज्वाला] आग की लपट, ज्वाला ।

लायण देखो 'लाण' (रू. भे)

उ०—लिखमी घर मे दीया संजोया । पूजन सारू चावळ कूंकूं काढिया । अोर तौ लायण कनै हो-ई कांई । —वरसगाठ

लायणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे)

लायपाय-स· स्त्री.—१ चिन्ता, घबराहट बेचैनी ।

उ०—अेक पखवाडा ताई गाव रा कोई समचार नी आया तौ ठाकरसा रै ई लायपाय लागी । इत्ता दिन तौ दूजै तीजै समचारा रै साथै आदमी ई आवता पण आ पंद्रै दिना मे तौ कोई खबर ई नी ली । —फुलवाडी

२ प्राप्ति की लालसा ।

उ०—दुनिया रौ धन दुनिया रै पाखती ई रैवण दौ, बिरथा लायपाय में कौ आणी जाणी नी । —फुलवाड़ी

लायपूळो—वि —अति क्रोध-पूर्ण, उग्र ।

नीचे लगा हुआ चमड़े का टुकड़ा।
अल्पा.,—लापड़ियौ
मह.,—लापड

लापता-वि. [अ. ला.+रा अ पता] १ वह जिसका पता न हो, खोया हुआ।
२ जान-बूझ कर कहीं छिपा हुआ, गायब।
उ०—जे किणी घरगोड़िया रजपूत रै सागै उण री ब्याव व्हियौ व्हैतो तो नी वा इत्ता दिन मसा परवाग लापतं रै पानी अर न इण भांत लापतं रह्या पछै पाछी गांव मे पग धर सकती। —फुलवाडी
३ पत्र आदि जिस पर पता न लिखा हो।

लापर—देखो 'लोफर' (रू. भे)
उ०—सीकरि की गादी न्याय नीति राज कीना। भूठा चोर लापर ने प्राण दड दीना। —शि. वं

लापरपण, लापरपणौ—देखो 'लोफरपणौ' (रू भे.)
उ०—आखर बावन करै अेकठा, तै कागळ लिख कीना त्यार। लापरपणौ कियौ तौ लडसू, बिडसू दियू न कोडी च्यार। —बा. दा ख्यात

लापरवा-वि. [अ. ला+फा. परवाह] १ जिसे किसी बात की चिन्ता या फिक्र न हो, निश्चिन्त।
२ असावधान।
रू. भे.—लापरवाह।

लापरवाई-स स्त्री. [अ. ला+फा परवाह+रा अ. ई.] निश्चिन्तता, बेफिक्री।
उ०—१ भांवरा रा तणियोडा लिलाड मे तिरछा सळ देख नै सेठ समभग्या के निसांणी ठांणै लागी है। वै भट माचा सू ऊभा व्हिया। लापरवाई सू बोल्यां—नी मानै तौ बात की कोनी अर मानै तौ घणी ई है। —फुलवाडी
२ असावधानी।
रू भे.—लापरवाही।

लापरवाह—देखो 'लापरवा' (रू भे)

लापरवाही—देखो 'लापरवाई' (रू. भे)

लापळौ देखो 'लाप' (रू. भे)

लापसड़ी—देखो 'लापसी' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—१ नणदळ-बाभी रे लापसड़ी रधाय, भो घण वारी रे हजा, देवरजी छिनगाळा रे घेवर छाटमा, भो राज। —लो. गी

लापसी, लापी, लाफसी-सं. स्त्री. [स लप्सिका] गेहू के दलिये का बनाया हुआ एक प्रकार का मीठा व्यंजन।
उ०—१ छट्ठं प्रहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार। —ढो मा.
उ०—२ चपला की डार सूवा, पींजरौ बंधाऊं रे, घ्रत घेवर सोलमा, लापसी परमाऊं रे। —मीरां
उ०—३ बडार रै नातै गाव नूत्यौ, सोनजी रात सुख री नीद सूत्यौ। लाफसी र' घी रौ थवौ नूतौ कर दियौ है। —दसदोख
रू. भे.—लपसी
अल्पा.,- लापसडी

लाब—देखो 'लाभ' (रू. भे.)

लाबाळी—देखो 'लबाळी' (रू. भे)

लाभंकर—देखो 'लाभकर' (रू. भे.)
उ०—तिथ तेरस पख तरणि, वार सुभ करण चद्र वर। एकादस ग्रह अरक, लगन कन्या लाभकर। —रा रू.

लाभ-स. पु [स लभ्] १ प्राप्ति।
२ हित।
उ०—लिया नाम मुख लाभ, व्याधि दुख आधि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, अरी बडपण ऊथापै। —रा. रू
३ सुअवसर।
उ०—'चतुर' कहे 'गमग' रौ, ग्रहै भुजा बळ आभ। मरग न पायौ धार मुंह, तिको गमायौ लाभ। —रा रू.
४ फल, नतीजा।
५ उपकार, भलाई।
६ ब्याज का धन।
७ व्यापार मे होने वाला मुनाफा।
८ आनन्द, मौज।
उ०—दुममणा लाभ दाना दहण, खुली न काना खिड़कियां। नर परम धरम बूझै नहीं, हको सूझै हिडकियां। —ऊ का.
९ सात प्रकार के चौघडिये मे से चौथा चौघड़िया, जो शुभ माना जाता है।
१० फायदा, मुनाफा।
रू भे.—लाब, लाह, लाहु, लाहौ।

लाभकर, लाभकारक, लाभकारी—वि.—१ वह जिससे लाभ होता हो।
२ औषध आदि क्षेत्र मे गुण करने वाला, फायदेमन्द।
रू. भे —लाभकर

लाभणौ, लाभबौ-क्रि. स. [स. लब्ध] १ प्राप्त करना, पाना, मिलना।
उ०—१ ढोला, सायघण माणजे, भीणी पासळियाह। कइ लाभे हर पूजियां, हेमाळै गळियाह। —ढो. मा.
उ०—२ हरीया आधी लाभतां, सारी सुरित न धारि। लूखी सूखी खाय के, साई नाव सभारि। —अनुभववांणी

उ०—१ मांग्या लाभै जब चणा, मांगी लभै जवार । मांग्या साजन किम मिळै, गहली गूढ गिंवार । —अज्ञात

२ जानना, पहचानना ।

३ प्राप्त होना ।

४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति में मिलना या देखना ।

क्रि. अ.—५ सूझना, उपजना ।

६ लाभ होना, फायदा होना ।

लाभणहार, हारौ (हारी), लाभणियौ—वि. ।

लाभिओड़ौ, लाभियोड़ौ, लाभ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लाभीजणौ, लाभीजबौ—कर्म वा /भाव वा. ।

लद्धणौ, लद्धबौ, लघणौ, लघबौ, लध्धणौ, लध्धबौ, लब्भणौ, लब्भबौ, लभणौ, लभबौ, लम्भणौ, लम्भबौ, लाधणौ, लाधबौ, लाहणौ, लाहबौ—रू. भे. ।

लाभस्थान—सं. पु. यौ. [सं. लभ्+स्थान] जन्मकुंडली मे लग्न से ग्यारहवां स्थान । (फलित ज्योतिष)

लाभांतराय—स. पु [स.] जैन मतानुसार एक अन्तराय कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य के लाभ मे विघ्न पडता है ।

लाभियोड़ौ—भू का. कृ (स्त्री. लाभियोड़ी) १ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ, मिला हुआ. २ जाना हुआ, पहचाना हुआ. ३ प्राप्त हुवा हुआ ४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति में मिला हुआ या देखा हुआ. ५ सूझा हुआ, उपजा हुआ ६ लाभ हुवा हुआ, फायदा हुवा हुआ ।

लाय—स. स्त्री. [स अलात, प्रा. अलाट] १ दावानल, आग, अग्नि ।

उ०—१ उण वेळा बळ अग्गळा, दळ राठौड दुबाह । मेघ थया सीसोदिया, लगी लाय अणथाह । —रा. रू.

उ०—२ प्रजा रै जगाई जका सवाई सवाई ऊठै, लाख दळा बिरौळै बुझायै न ज्वाळा लाय । कूरमा सीसोघां हाडा चहुवाणा सारा केता, धजा नेजा गजा सूधी ले गयौ धकाय । —राजाधिराज बखतसिंघ री गीत

क्रि. प्र.—लागणी

मुहा.—लाय लागणी=१ जलना, भस्म होना, अग्नि काड होना । २ नष्ट होना । ३ जल्दी होना । (मचना) ३ कुछ बिगाड़ या नष्ट होना ।

२ लपट, ज्वाला ।

३ जलने की क्रिया या भाव ।

४ प्रचण्ड गर्मी ।

उ०—आज पेमजी रै माथै सूं मुरळी दलाल री माड्योड़ी मूळी हाळी मोवणी सीवी साफ हुवै, नीकळै है । जाणै आ मूळी तौ वसंत पांच्यूं री परमळ नीं, उन्हाळै री लाय है । —दसदोख

उ०—२ जीवणदाता बादल्या, थां सू जीवण पाय । भल लूआ बाजौ किती, मुरधर सहसी लाय । —लू

रू. भे.—लाइ, लाई ।

लायक—वि [अ. लाइक] १ सुयोग्य ।

उ०—'मोटा तौ थें करसो जद हुसा, हणै तौ (निसासा नाख'र) रुई सूं ई हळका अ'र धूड़ सूं ई हीणा हां ।" "कुण कैवै है ? था जिसा लायक सिरदार किता'क है ?" —वरसगांठ

२ उचित, ठीक ।

३ गुणवान, गुणी ।

४ समर्थ ।

उ०—डाढा तांबाड़ै केरडिया डीकै, रोटी पाणी नै टीगरिया रीकै । चित पर घोरारव आकर बरचावै, घर घर नर नायक लायक घबरावै । —ऊ. का.

५ भला, सीधा ।

स. पु —मत्री । (नां डि को.)

रू भे.—लाइक, लायक्क

लायकी—स. स्त्री. [अ. लायक+रा. प्र. ई.] लायक होने का भाव या अवस्था, योग्यता ।

उ०—आ थारी लायकी है । बाकी कणेई म्हारै चोक दीमिया पधारौ, पछै देखौ म्हारा भाई काई कैवै है ? —वरसगांठ

लायक्क—देखो 'लायक' (रू. भे)

उ०—डूगरपुर बासवाडाह देस, पाटवी राण रावीह पेस । लायक्क लूणपुर अह लगाण, राय कुवर दीध छालक्क राण । —वि. स.

लायझळ—स स्त्री. यौ. [स. अलात+ज्वाला] आग की लपट, ज्वाला ।

लायण देखो 'लाण' (रू. भे)

उ०—लिखमी घर मे दीया संजोया । पूजन सारू चावळ कूंकू काढिया । अोर तौ लायण कर्न हो-ई काई । —वरसगांठ

लायणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे.)

लायपाय—स. स्त्री.—१ चिन्ता, घबराहट बेचैनी ।

उ०—अेक पखवाडा ताई गाव रा कोई समचार नी आया तौ ठाकरसा रै ई लायपाय लागी । इत्ता दिन तौ दूजै तीजै समचारां रै साथै आदमी ई आवता पण आ पंद्रै दिना मे तौ कोई खबर ई नी ली । —फुलवाड़ी

२ प्राप्ति की लालसा ।

उ०—दुनिया रौ धन दुनिया रै पाखती ई रैवण दौ, बिरथा लायपाय मे की आणी जाणी नी । —फुलवाड़ी

लायपूळौ—वि.—अति क्रोध-पूर्ण, उग्र ।

लायल–वि· [ग्रं.] स्वामिभक्त, राजभक्त ।

लायलटी–सं. स्त्री. [ग्रं.] राजभक्ति, स्वामिभक्ति ।

लायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कोई वस्तु अपने साथ लेकर आया हुआ. २ प्रत्यक्ष किया हुआ, समक्ष उपस्थित किया हुआ. ३ उत्पन्न किया हुआ ।
(स्त्री. लायोड़ी)

लांसौ–देखो 'ल्हासियौ' (रू. भे.)

लार–सं. पु.—एक प्रकार की लाग विशेष जो किसान से खलिहान मे जागीरदार का हिस्सा ले लिए जाने के बाद ली जाती थी ।
क्रि. वि. [स. लहर] १ पीछे ।

उ०—१ लघु लघु सर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार । रामंति सरजू तटि रमै, कीळा राजकुमार । —सू. प्र.

उ०—२ कंवर रै साथ 'रतना' री निजर इण भात बहै है, भागीरथ रै लार गगधार बहै जिण भांत उपमा लहै है । बळै कितरी हेक दूर दूरबीण लगाई, सारा हौं बधती सनेह री सगाई । —र हमीर
मुहा.—लार छूटणी=सम्बन्ध टूटना ।
२ साथ, संग । (डि. को.)

उ०—जात पात कुल कुटम कबीलौ, साधु ही परिवार है । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, रमस्या साधा री लार है । —मीरा

३ लिए, कारण ।

लारड–सं. पु [ग्र. लार्ड] १ स्वामी, मालिक ।

२ अधिकारी, अफसर ।

३ इगलैण्ड के जागीरदारों या रईसो को सम्राट द्वारा दी जाने वाली एक आदर-सूचक उपाधि ।

लारंगौ–स. पु.—ग्राम-युवतियो के लम्बा अधोवस्त्र पहनने पर उसके ऊपर कसने की लम्बी डोरी ।

लारलड़ो—देखो 'लारलौ' (रू. भे.)

उ०—ज्यू लारलड़ा वह गया, वरतमांण वह ज्याय । काळ कळत मे कळ रह्या, ठीक न विसना ठाय । —ग्रज्ञात
(स्त्री. लारलड़ी)

लारलेवार—देखो 'लारवार' (रू. भे.)

लारलौ–वि (स्त्री. लारली) पीछे का, पिछला ।

उ०—१ देखो बिगडी देह, डोळ बिगड़गौ देखो । बिगड गई सब बात, लारलौ ले कुण लेखो । —ऊ. का

उ०—२ कदै ही इसौ जमानौ हो जको लुगाई नातै ल्यावता जद घर हाळा तो पं'लीपोत मूडो ही नीं देखता । थावर री रात नै चोर दांई घरां लेय'र बड़ता अर घर हाळा मिनख घर छोड'र बारै निकळ जाता । ऊंधी चाकी फिरांवता, लारली गळी ल्यांवता अर ब्याह-सावा मे अळगी राखता । —दसदोख
२ बीता हुआ, विगत ।

उ०—१ हिरण्यां डागळै री छत माथै लात मारयां बगी जावै, लारली बातां काळजौ बाळण नै लारै लागी आवै है । —दसदोख

उ०—२ कीरै सारै—माया तेरा तीन नांव, फरसियो, फरसौ अर फरसराम । लारला दिन भूलग्यौ । —दसदोख

उ०—३ अबै कीकर सळटणी आवै । कुण जांणै कुण दाव-घाव करयौ । मेड़ी तौ लारला चार बरसा सू भिळै ? इण नै नी अगेजिया तो हवेली री लाज ई भिळ जावैला । —फुलवाड़ी
३ बाद वाला, बाद का ।

उ०—१ इसौ विचार राजा कनकरथ नै ग्रेकात मे ले पूछियौ—महाराज साच कहौ, नेठ तौ साच कह्या तपावस होसी । लारली सरब बात कहौ । —पलक दरियाव री बात
४ बचा हुआ, ग्रवशिष्ठ ।

उ० आ लुगाया रै घणा नी तो छ हाथळ तो बणावणा हा । दो चूघं जिनै च्यारूं ई लारला चूं चूं करै । —फुलवाड़ी
५ पहले वाला, पूर्व का ।

उ०—१ लारला खुटाई जैडी तो म्हैं लुगाया होय नै ई नी खुटावा । —फुलवाडी

उ०–२ कहै कथ नूं दुहु कुळ उजली कामणी, गजा धजा फौजा लोह लागं । नीसरै तिके नर तिका लानती दियै । लारला वस ने गाळ लागै । —वीर स्त्री रौ गीत
६ पूर्व जन्म का ।

उ०—१ धूळ री कमाई खावणिया ग्रै लोग भाठा नै पूजै, मिनख नै धुरकारै, राजा नै परमेश्वर जाणै अर खुदोखुद नै लारलै करमा रौ फळ मानै । —फुलवाड़ी

उ०—२ पण कोई आगै होय मरणा वास्तै बकारै ई तौ ! अैडी मौत सू लारलौ जमारौ ई सारथक व्है । —फुलवाडी
७ नीचे का, निचला ।

उ०—चौधरी रै घरै मोटै मूज रै माचै माथै थाणेदार हुकमी-दीनजी होको डरडकाय रैया हा । लाबौ डील, बटवां बाळ, रंग तौ तवै रै लारलै पीदै नै ही लारै छोड रैयौ है । —दसदोख
८ अतिरिक्त, अलावा ।
ज्यूं—म्हारै साथै चालो जिकी बात करौ, लारली बात जावण दो ।
ग्रलग.—लारलड़ौ

लारवाळ, लारवाळियौ–स. पु.—विधवा स्त्री का वह लडका या लड़की जिसे वह पुनर्विवाह करने पर अपने साथ नए पति के घर ले जाती है ।

रू. भे.—लाड़वाड़, लड़वाड़ियौ, लारलेवाळ ।

लारां, लारा, लारि, लारियां, लारी, लारीयां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—१ कलह बिज ता दिन बढ्यौ, लारां 'घूंकल' लाय । आंणि मिल्यौ 'जगतेस' सूं, यम जुध करिय उपाय । —ला. रा.

उ०—२ हरीय मन हसती भया, जगत कूकरा लारि । हरिजन कै भावैं नही, भौंक रह्या झख मारि । —अनुभववांणी

उ०—३ हरिया केता वहि गया, कीया करम कै लारि । घिल घर्ष घन बीच मैं, ध्यांन सबै नही धारि । —अनुभववाणी

उ०—४ वाणी लिखि गया साध बिचारौ, मुकति हुवै मन मारियां । मारग में निति ही झखमारौ, लज मारी कुळ लारियां । —ऊ. का

उ०—५ लिया नव लाख थड सुचारण लारियां, खड्ग ऊभारिया खळा खावै । बीदगा विकट दुल पडै जिण बारिया, घावळी-धारिया तुरत धावै । —ठाकुर जुझारसिंह मेड़तियौ

उ०—६ भोजन करणी भूल खेलै, बूढा लारी खडभडै, हेठै हाळी चालौ भर्यौ, ब्ळा रुखाळी रडमड़ै । —दसदेव

उ०—७ बात विसटाळ फिरिया जिकण वारीयां, भटी कह 'दान' 'सादुळ' छक भारीया । धणी सुपां सरण मरण संक-धारीया, लाज मन धरै 'जेसाण' गढ लारीयां । —जसजी आढौ

लारै—क्रि. वि.—पीछे ।

उ०—१ अम्ह विसटाळ आवियौ, लगि ज्या हिज लारै । कटक सुणि अंगद कहै, पित तुझ प्रकारै । —सू. प्र.

उ०—२ सूकी मुदरांणीं झाड़ा रै सारै,लाधी बिदरांणी बाड़ा रै लारै । सद व्रत करतोडी बरणास्त्रम सेवा, काढे मरतोडी रेवा तट केवा । —ऊ. का.

उ०—३ म्है साच बोल जाता तौ पछै थांदो ई कांई बात रौ हौ । म्हा, व्हैगौ इण रै हाथा न्याव ? अेड़ो न्याव निवेड़न जोग अकल व्हैती तौ तडौ लिया लरड़ियां रै लारै ढरर-ढरर करतौ क्यू रबड़तौ । —फुलवाड़ी

२ बाद मे ।

उ०—पग पाछा पडै पूरी ललौ-चम्पौ राखै । नही तो लारै सूं लाबी पैरायदै । —दसदोख

३ मरणोपरान्त, मृत्योपरान्त ।

उ०—१ लारै एक लिछियै नाव रौ न्हांनौ पौतौ अर बीरी विधवा मा रैंयी । —दसदोख

४ कुछ कर लेने के बाद ।

उ०—लारै राख्योडा कामा खातर मरती विरियां रावण ही मोकळौ पिछतावौ करतौ मरयौ । —दसदोख

५ बढ कर ।

उ०—सचराई अर खामचीपणौ तौ मांसी सू लारै हौ । —फुलवाड़ी

६ साथ मे ।

उ०—१ बाधी मूठी बापड़ा ले जासी की लार । कृपण नै निसदिन कहै, ओ नाहर परमार । —भोपाळदान सांदू

उ०—२ 'गजन' बडो कै गेडंबर तद मुझ हुकम दियौ सुरतांण । लसकर खच्चर दौ लारै आज अटक पर फेरू आण । —मालौ सांदू

मुहा.—लारै आंणौ=पत्नी रूप होना ।
लारै लागणौ=पीछे पडना, आश्रित होना ।

रू. भे.—लरां, लारा, लारा, लारि, लारियां, लारी, लारीयां, लारोवरि, लारोवरी, लारौ, लारधा, लाहरा लाहरै, लैर, लैरां, लैरियां, लैरयां ।

लारै-लारै—क्रि. वि.—पीछे-पीछे ।

उ०—नाई रै लारै लारै सगळा लोग केई वेळा अदाता री जै जै कार बोली । अदाता रै माथै नसा री तौ जाणै भूत ई सवार व्हैगौ । —फुलवाड़ी

रू. भे.—लारोलार, लारोलारि

लारोलार, लारोलारि—क्रि वि.—१ एक के बाद एक, क्रमशः ।

उ०—१ सिलह संदूक सलीतै बहुं, लहं ऊट चलाए गिड्डं । लारोलार कतारा हल्ली, काती जाण कुरज्झा चल्ली । —गु. रू. बं.

उ०—२ हरीया जुग लोपै नही, कुळ अपने की कार । पूंछड बाध्यां ऊठ ज्यु, लारोलारि कतार । —अनुभववाणी

२ निरन्तर ।

३ देखो 'लारै लारै' (रू. भे.)

उ०—लारोलार लगावधो जी, छेटि म राखौ काय । केळवणी करघो इसी जी, जिम बाहिर न दीखाय । —प. च. चौ.

लारोवरि, लारोवरी—देखो 'लारै' (रू. भे)

उ०—लारोवरि अस चित्रांम कि लिखिया, निहळरता नरवरै नर । मांवण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर । —वेलि

लारौ—सं. पु.—१ पीछे पड़ने या पीछा करने की क्रिया या भाव ।

२ पीछा ।

उ०—१ रोणो-ई है तौ अेक दिन भेळो-ई, मनै रोय-धोय' र लारौ छोडौ । —वरसगांठ

उ०—२ खासी भाय ताई लारौ करघो । पण कुचमादी रौ की पतौ नी पड़यौ । —फुलवाड़ी

३ पृष्ठ भाग, पीछे का भाग ।

४ देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—अलंम सुधारी जम बहै लारी छाडौ सकळ विकारा। श्री संसार विहर की बाजी, देखौ सोचि विचारा। —ऊदौजी नैण

लारयां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—ए जी सरदार थारी बरण लारयां लागी आवै मेरी जान, उमराव जी श्रो रसिया। —लो. गी.

लालंबर, लालंबर-वि.—रक्तवर्ण युक्त, पूरा लाल।

उ०—कबर रै पलका पीक, अधरां काजळ री लीक। आळस अंग, भाल अलता री रंग। लालंबर नैण, चळविचळ बैण। हियै गडियौ हार, तुररा रा तूटा तार। —र हमीर

उ०—२ बोळ करै असमर रत बोहां, लालबर हुय पूरा लोहा। सत्र विहड खुरसांण सकाजा, मुजरी करूं एम महाराजा।

-- सू. प्र

उ०—३ लालबर नैण अनै मुख लाल, उपै वप तेज समुद्र उकाळ।

—सू. प्र

स. पु.—सूरज, सूर्य।

(मि. रातंबर)

लाळ-स. स्त्री. [स. लाला] १ पतला तार जैसा मुह मे से निकलने वाला थूक। (डि को.)

उ०—डाबी आख थोडी टेडी रेंवती अर डाबौ होठ ढीलौ रैवण सू हरदम लाळ पड़ती रैवती। —रातवासो

मुहा.—लाळ टपकणी, लाळ पडणी=मुह मे पानी आना, लालायित होना।

२ मन्दिर में लटकाया या किसी पशु के गले मे बाधे जाने वाले घण्टे के अन्दर बीच मे लटकने वाला धातु का गुटका, लगर या लोलक।

उ०—मांड पीवड़ कण राळजै लाळ विहुणी बाज छै घट। ईसी सकति तिहां देव की, चोर नाहर नही देव कइ पंथ —बी दे.

३ चौपाये पशुओं के मुह का एक रोग विशेष।

लाल-सं. पु.—१ पुत्र, बेटा।

२ बालक, लडका।

३ श्रीकृष्ण का एक नाम।

४ एक प्यार और वात्सल्य भरा सम्बोधन सूचक शब्द।

उ०—१ तेल फुलेल मद बाटळा श्रो भैरू, श्रोर चोख्याळा नाळेर, श्रो लाल। मैं छू धरम की बैनडी, श्रो भैरू, तू मेरी समरथ भाई श्रो लाल। —लो गी.

उ०—२ मुरला लाल, पे छो जवाई म्हारै माथै परली मैंमद श्रो, मेड़तिया श्रो लाल, कमधजिया श्रो लाल, पे छो जंवाई, म्हारै कांना परला कुडळ, मुरला लाल। —लो. गी.

उ०—३ या ल्यौ राजाजी थांरी नोकरी जी राज, यो ल्यौ साथीड़ा थारी देस रै पपइया रै लाल। —लो. गी.

उ०—४ पहली प्रीत करी पीतब सु, पीछै छाडि बिकारी। जन हरिराम करत हरिजी सु लाल पुकार हमारी। —अनुभववाणी

५ एक प्रकार का पक्षी विशेष जो प्रायः जलाशय के पास रहता है।

उ०—जांणै दूसरी घटा छै। दरखतां ऊपर मोर कुहक रह्या छै। सुवा केळ करै छै। तूती बोल रही छै। लाल हाक मार रह्यौ छै।

—रा. सा. सं.

६ ताश के पत्तो मे चार रगों मे से एक रग या उक्त रग का पत्ता।

७ भगियो (हरिजनो) के गुरु।

८ खेल मे पहले जीता हुवा खिलाडी।

स. स्त्री.—९ मानिक, रत्न।

उ०—म्हारै नवधा नथ सुहावणी, सावलडौ है मोत्यां बिचली लाल। म्हारै फूल झूमका फब रह्या, सावलडौ है झूमर री लूम।

—मीरा

अल्पा – लालडी

१० भूरापन लिए हुए लाल रग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया।

११ श्री करनीदेवीजी की बहिन का नाम।

१२ बच्चो के खेल विशेष में जीती हुई बाजी का नाम।

ज्यू—एक लाल माथै करणी।

[स. लालसा] १३ इच्छा, चाह।

उ०—स्वयवर छि तेहनु, तांहा जाय छि भूपाळ। पांमवू वसि दैवनि, आसा तणी छि लाल। —नळाख्यान

वि.—१ रक्त वर्ण का। (डि. को)

उ०—उड़त गुलाल लाल भयै बादळ, बरसत रग अपार रे। घट के सब पट खोल दियै हैं, लोकलाज सब डार रे। —मीरा

२ क्रोधयुक्त, आवेश मे।

मुहा.—लाल होणौ=क्रोध मे आना, आवेश मे आना।

३ खेल मे सबसे पहले जीता हुआ।

४ प्रिय, प्यारा।

उ० ऊंचौ घालूं पालणौ, यौ जळ जमना कै तीर। झोटौ देसी सायबौ, म्हारी लाल नणद कौ बीर। गीगा सोज्या मेरा लाल।

—लो. गी.

रू. भे —लल्ल।

लालकणेर, लालकनेर-स स्त्री.—एक पेड़ विशेष, जिसके फूल गुलाब के फूल जैसे होते हैं।

उ०—सोरभा केसर अगर, रहे जायफळ फूल लालकणेरां अर भमी, फिर कहुं कहू बबूळ। —गज-उद्धार

लालकबांण, लालकमांण-सं. स्त्री.—एक प्रकार का धनुष ।

उ०—१ मुंछा हाथ ज फेरिया, खेचू लालकबांण फोजां फेर पतस्याह की, तो राहब मुझि जांण । —राहब-साहब री बात

उ०—२ वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण। तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण बिन लालकमांण । —ढो. मा.

लालकी-स. स्त्री —जीभ, जिह्वा ।

उ०—दिल कहै न धारू देणहिक दोकडो लालकी भणता करै लपका । —ग्रग्यात

२ देखो 'लाली' (ग्रल्पा., रू भे.)

लालकेसियौ-सं. पु —एक प्रकार का अश्लील लोकगीत ।

वि.—रसिक ।

मि.—केसियौ ।

लालड़ी—देखो 'लाल' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—बाजी बुलावै है, सनस खुलावै है । प्यारी री लालड़ी प्रीतम रौ हीरौ । प्यारी री चूंदडी प्रीतम रौ चीरौ रात्यूं चौपड रमणी भेळी, प्यारी री ग्रांमकेरी प्रीतम रौ केळौ । पासौ जीतै न पासौ हारै, दोनूं बाता मतलब सारै । —र हमीर

लालड़ौ-वि (स्त्री. लालडी) लाल रग का ।

लालचंदन-स. पु.—मैसूर प्रान्त व ग्ररकाट मे बहुतायत से होने वाला लाल रग का चदन, जिसका पेड लम्बाई मे छोटा होता है, रक्तचंदन ।

लालच-स. पु. [स. लालसा] १ कोई वस्तु प्राप्त करने की ग्रत्यधिक लालसा या इच्छा, जो ग्रनुचित या ग्रशोभनीयता के कारण प्रकट न की जा सके, लोलुप्तापूर्ण लोभ ।

उ०—१ ज्यू ज्यू लालच खार जळ, सेवै दुरमत सण । 'बाका' ग्रत स्यूं त्यूं बधै, त्रसणा तणी तरग । —बां. दा.

उ०—२ मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनै सीतळ सतवाळी । लुच्चा ललचावै लालच धिन लागै, लोचण जळ-मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ. का.

उ०—३ कापुरसा फिट कायरा, जीवण लालच ज्याह । ग्ररि देखै ग्राराण मे, त्रण मुख माभळ त्याह । —बां. दा.

रू. भे.—लालच्च

लालचख, लालचक्ख-सं पु.(स्त्री. लालचक्खी, लालचखी) भैसा । (डिं. को.)

लालचट—देखो 'लालचुट' (रू. भे.)

लालचांच-सं. पु.—तोता, सुग्गा । (डिं को)

लालचियौ-वि.—१ लाल रंग वाला ।

२ देखो 'लालची' (ग्रल्पा. रू. भे) .

उ०—लालचिया निरधार तिहां रे, मांनि हुकम तिहां जाय मेरे । देखि दरीयौ इम कहै रे, खोदे कुण खुदाय मेरे । —प. च. चौ.

लालची-वि.—लालच करने वाला, लोभी ।

उ०—सगुरा सत सयम रहै, सन्मुख सिरजनहार । निगुरा लोभी लालची, भूचे विसय विकार । —दादूबांणी

ग्रल्पा, – लालचियौ ।

लालचीणी-स. पु.—सिर पर लाल छिटकिया व सफेद शरीर वाला एक प्रकार का कबूतर ।

लालचुट-वि.—ग्रत्यधिक लाल ।

उ०—पकै ठूठिया ईंट, चूनो, सुरखी हुळकीफूल चुट । ठंठेरा लुहारा सारा, लोह चढावै लालचुट । —दसदेव

रू भे. लालचट ।

लालचोळ-वि.—१ गहरा लाल ।

२ क्रोधित, ग्रावेशयुक्त ।

लालच्च—देखो 'लालच' (रू. भे.)

उ०—बादळ देखी जब ग्रावती, तब सुचित विसमु भयु, लालच्च नारि निरखुं हवइ, तु मोहि सूर साहस गयौ । —प. च. चौ.

लालजटा-सं. पु.—मुर्गा ।

उ०—लालजटा धुनी बोलियौ, स्याळ सुणै कर सोच । कांमण सारा कदे नर को, लस्यो वदन को लोच । —पनों

लालजी-स. पु —१ किसी सम्मानित घर के युवक, राजकुमार तथा कुमार के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।

उ०—१ रावजी बाता सुण राजी हुवा । जिसै मा री वडारण ग्राई, रावजी सु मुजरौ कर ग्ररज कीवी—लालजी नु भीतर बोलावै छै । —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ जदी छोकरी गई । सो ग्राप घोडा चढता था, जितरै जाय करि कह्या, 'लालजी, बाईजी बुलाती है ।' जदी पागड़ा में से पग काढया पीछा ग्ररु माही ग्राया, ग्राय करि सलांम करी । —राहब-साहब री बात

२ राजा के उप-पत्नी की सन्तान (पुरुष) के लिए प्रयुक्त होने या किया जाने वाला सम्मान-सूचक शब्द । (जयपुर)

३ पति के लघु भ्राता (देवर) व नणद के पुत्र (नांणदा) के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।

(चारण राजपूत)

लालटेण, लालटेन-सं. स्त्री [ग्रं] मिट्टी के तेल से जलने वाला वह उपकरण जिसमें तेल भरने का स्थान एव बत्ती लगी रहती है

तथा काच पारदर्शी पदार्थ का आवरण (गोला) लगा रहता है, कंदील ।

उ०—धोय जणा-अेक कईक ढळती औस्था-रौ अर अेक मोटियार जिकै रै हाथ में लालटेन, बारणौ खोल र हड़बड़ावता लाथालाथा दुर पड़्या । —वरसगाठ

लालन—सं. पु.—१ अत्यन्त स्नेह, लाड-प्यार ।

२ प्यारा बच्चा ।

रू. भे. लालन

लालणौ, लालबौ—क्रि. स.—१ लाड-प्यार करना ।

उ०—१ बेटी घर समुहुत पाउ चालइ, दारिद्र वाट देखाडइ, जाउ वाली ताउं, हुई लाली पाली । —व. स.

उ०—२ बेटी घर सम्महो पाउ चालइ, दरिद्र वाट दिखाड़इ । जा हुई वालि, ताउं हुइ लालि पाली । —रा. सा. स

२ देखो 'लोळणौ, लोळबौ'

लालणहार, हारौ (हारी), लालणियौ—वि ।

लालिओड़ो, लालियोड़ो, लाल्योड़ो—भू का कृ. ।

लालीजणौ, लालीजबौ—कर्म वा. ।

लालतातौ—वि—क्रोधित, नाराज ।

उ०—इतरै समय हुवां सो यक्ष आय कन्या पास बैठो । राजा खग लेय, सांम्हे यक्ष देख, लालतातौ हुवो । —सिंघासण बत्तीसी

लालधजा—स. स्त्री [सं. लालध्वजा] १ श्री करनीजी, भैरूंजी व हनुमानजी की ध्वजा ।

२ लाल रंग की पताका ।

लालन—देखो 'लालण' (रू. भे.)

उ०—पांन फूल नूं, जीव तूं कोमल केलि समान । ललूड़ी प्रति लाडली, लालन लीला थांन । —जयवांणी

लालपांणी—सं. स्त्री.—शराब, मदिरा ।

लालपिलखौ—स. पु.—सफेद दुम व सफेद डैनो वाला एक प्रकार का कबूतर ।

लालपोस—सं. पु.—हरिजन, भंगी ।

लालफूल—सं. स्त्री.—अनार, दाडम ।

लालबंब—वि.—अत्यधिक लाल रग का, गहरा लाल ।

लालबजार, लालबाग, लालबाजार—सं. पु.—वेश्याओं का मोहल्ला ।

उ०—सुंणी न दीठी आज अेसी संसार में, बण भगतण घण ठाट कै लालबजार में । —महादान मेहडू

लालबुझक्कड़—सं. पु.—वह जो किसी विषय में अनभिज्ञ होते हुए भी अनुमान या अटकल द्वारा समस्या का हल ढूंढता है ।

लालबुरज—स. पु.—कपड़ो की धुलाई करने पर अधिक कान्ति के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक प्रकार का पाउडर, नील ।

लालबेग—स. पु.—१ परो वाला एक लाल रग का कीड़ा विशेष ।

२ मुसलमान भंगी ।

३ मेहतरो (हरिजनो) के एक कल्पित पीर ।

लालबेगी—स. पु.—लालबेग का अनुयायी हरिजन ।

लालमन—सं पु.—१ श्री कृष्ण ।

२ लाल शरीर, हरे डैनै, गुलाबी चोंच व काली दुम वाला एक प्रकार का तोता ।

लालमिरच—सं. स्त्री यौ.—१ एक प्रकार का क्षुप के समान पौधा जिसके सफेद रग के फूल एव फली के आकार के फल लगते हैं जो अपक्व अवस्था मे हरे एवं पकने पर पीले होकर लाल हो जाते हैं। मिरच छोटी, बडी, देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकार की होती है ।

२ उक्त पौधे की फली खाने में तीक्ष्ण (चरकी) एव कटु स्वाद वाली होती है एवं जिसे सब्जी व नमकीन व्यंजनों में प्रयुक्त किया जाता है ।

लालमी—वि. [स लाला+रा. मी.] जिस से लारा टपकती हो, अधिक लारा युक्त ।

उ०—तठा उपरांत करि नै राजान सिलामति काबली कूतरा, लाहोरी कूतरा, बिलाती कूतरा, लोलमी, लालमी जीभ रा, वलि-मे पूछ रा, लापडे कान रा, दाडमी दत रा, सिंघ रा हथ रा, केहरी कध रा, भाफरै रोम रा, के विना रोम रा, इण भांत रा कूतरा । —रा. स. सं.

लालमुरगा—स. पु यौ—एक प्रकार का पौधा या उक्त पौधे के फूल मयूर शिखा, जो औषधि के काम मे आता है ।

२ एक प्रकार का पहाडी पक्षी जिसका शिकार किया जाता है ।

लालमूली—स स्त्री—शलगम, शलजम ।

लालमेह—स पु—रक्त प्रमेह नामक पुरुषो का एक रोग विशेष ।

लालर—स. स्त्री.—१ विधवा स्त्रियो के ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष ।

२ व्यर्थ की बकवाद ।

लालरणौ, लालरबौ—१ देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अै कितरा-अेक ठाकुर घरे हालिया । घोडै आया लालरता थका । तरै आपस मे घोड़ा ओळखै नही । औ कहै—वाह रौ ठाकुरे ! औ घोडो है । आपस मे लालरण लागा ।

—प्रतापमल देवडा री बात

उ०—२ लडखडाती पड़ती लालरती, मेल माण सिर संबर भरती । गी 'अभमळ' अगै पड़ गळियां, मरमट मूंक मरद्दां मिळिया ।

—द्वारकादास दधवाडियौ

उ०—३ वीरमदै छेड़यौ किना मुचकंद जगायौ । रिण हुवियौ

विकराळ, दोहू घाड़वियां दौड़ा, बहे गजर बाणास, धजर ऊर कूंत धमोड़ा। लोह छकै लालरं, रुधिर धकधकै वराळां, प्रोयण प्रंत्राळा उळकि, रंग कंठां वरमाळां। चाडता उरां तुरंग चपळ, बहसता बाबाडता, झाडता कलम सूधा झिलम पिसण खगां झट पाडतां। —पना

उ०—४ सेलां हियां दुसार, लोह वाहे लालरता। बीखरता बाबरां, भ्रगुट फाटा हीफरता। —सू प्र.

लालरणहार, हारौ (हारी), लालरणियौ—वि०।

लालरिप्रोड़ौ, लालरियोड़ौ, लालरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लालरीजणौ, लालरीजबौ—भाव वा०।

लालरयोड़ो—१ देखो 'लालरियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. लालरियोडी)

लालरियौ—स. पु. (ब. ब. लालरिया) १ खुशामद, जी हजूरी।

उ०—१ रोयनै प्राल्या री भरम गमावणौ। घणा नी, दोय बीसी टकां माथै चढायनै लाय दे तो पछै देख सगळाई कैडा लालरिया लेवै। —फुलवाडी

उ०—२ झाड दूं ढाणी झालरिया झाडै, पांणी पालरिया पीवण पछखाडै। लोरीदै पोलछ लालरिया लेती, दड़खिल खोड़ा नै हालरिया देती। —ऊ का.

लालरी—स. स्त्री.—चमडी।

उ०—माथउं धवलउं देह जाजरी, वाकउ वामउ झूबइं लालरी। घर हूंतउ नवि क्याहइ जाइ, सघल' कुटुंब ऊभीठउ थाइ। —वस्तिग

लालसर—स. पु.—लाल रग की गर्दन एव सिर वाला एक पक्षी।

लाळसा, लालसा—स. स्त्री. [स. लालसा] १ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा, लिप्सा, उत्सुकता।

उ०—जुजठळ वाळी मरजादा निभाई। बोल्यौ—म्हैं लुगाया री चाम रै मायली सूख्म जीव हूं। थारी प्रीत री धणी हूं। बिगाज प्रर कमाई बिचै म्हनै हेत-प्रीत री लाळसा वत्ती है। —फुलवाडी

२ गर्भिणी स्त्री के मन मे होने वाली अभिलाषा, साध।

रू भे.—लाला।

लालसागर—सं. पु.—अरब और अफ्रिका के बीच पडने वाला भारतीय महासागर का अंश, जिसका पानी कुछ ललाई देता है।

लालसाटी—सं पु.—वह पुनर्नवा जिसका पत्ता एक ओर से लाल रग का हो।

लालसिखी—स. पु.—मुर्गा।

लालसी—वि.—लालसा या अभिलाषा करने वाला।

लालसुरंग—वि.—गहरा लाल।

लाला—सं. स्त्री—श्री करमी देवी जी की बहिन।

उ०—पळासण अंग भखै भर पेट, भेळा उतभण सदा सिव भेट। लाला कर थापलि कंध लकाळ, फूला सिव संग भरावत फाळ। —मे. म.

लाला—सं. पु.—१ कायस्थों के लिए सम्मान सूचक सम्बोधन। (मा म.)

२ माहेश्वरी व अग्रवाल आदि महाजनों के लिए सम्मान—सूचक सम्बोधन। (गंगानगर, बीकानेर)

३ स्नेह सूचक सम्बोधन।

४ प्यारा, प्रिय।

ब. व.—५ अभाव, दारिद्रता।

उ०—बेमारी मे तो भळै दूध को खरच लागै। भाग आयग्यो, रोटयां री ही लाला पडग्या। —दसदोख

स. स्त्री - ६ ध्यान, समाधि।

७ देखो 'लालसा' (रू. भे.)

अल्पा. - लालू, लालूड़ो।

लालाटि—स. पु —१ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

२ देखो 'ललाट' (रू. भे)

लालाटिक—सं पु. [स. लालाटिकः] १ सावधान अनुचर।

२ निठल्ला।

३ एक प्रकार का आलिंगन विशेष।

वि [स लालाटिक] १ भाल सम्बन्धी।

२ भाग्य पर निर्भर रहने वाला।

३ निरर्थक, नीच, कमीना।

लालाभक्त—सं. पु.—एक नरक का नाम। (पौराणिक)

लालाभक्ष—सं. पु.—एक नरक विशेष जहा वे लोग भेजे जाते हैं जो भगवान को बिना भोग लगाये या अतिथियों को भूखा रखकर स्वयं पेट भर भोजन कर लेते हैं। (पुराण)

लालासरव, लालासव, लालाख्रव, लालास्राव—सं. स्त्री —१ मकड़ी। (डिं. को.)

२ मकड़ी का जाला।

३ मुह से लार गिरने की क्रिया।

लालिमा—सं. स्त्री —ललाई, सूर्खी, अरुणता।

लाळियोड़ौ—देखो 'लोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाळियोडी)

लाळियौ—स. पु.—१ छोटे बच्चो के वक्ष स्थल पर बाधा जाने वाला कपड़ा विशेष।

२ ग्वार के डंठल व पत्तियां।

३ देखो 'लाळौ' (अल्पा. रू. भे)

उ०—सू उण ही बादळां सूं घोडा रा लाळिया छांटजै छै। फेर बादळा बखोळ उणहीज तळाव रै पांणी सूं छांण भरजै छै।
—रा. सा सं.

लाळी—सं. स्त्री.—१ बाजरी व ज्वार की बालो पर दाना पड़ने से पूर्व आने वाला सफेद सा पदार्थ, फूबी।

२ भूसे का वह भाग जो अनाज निकालते समय हवा से उड़ कर दूर इकट्ठा हो जाता है।

३ देखो 'ल्याळी' (रू भे.)

उ०—डाबा लाळी जिमणी मलाळी तदळ भरु भाए, नीरमरि बहिंदू सबळी गाइ, सपळाणु छोडु, रासु धोरी। —व म

लाली—स. स्त्री —१ लाल होने का भाव या अवस्था, ललाई, सुर्खी।

उ०—सांवरिया म्हानै भांग पिलाई, मेरी अखिया मे लाली छाई। काहे री कूडी (राधा) काहे रा घोटा, काहे री सुवाफी बणाई।
—मीरा

उ०—२ इण अधरां रा मिठास री तौ बात कुण कहै, मूंगिया री लाली तौ यां री दलाली मे बहै। था छोटी मफाड किमडोक मोहै है, थौ मंदहास किणनूं न मोहै है। —र हमीर

२ प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—धन री धूड हुयगी, माया रा कोयला बणग्या। अळेवण अरजन रै पगा पूगी, लाली लेखै हुगी। —दसदोख

३ जीभ, जबान।

उ०—होटा रो सिणगार। लाली री भिकाळ। पण मन री तो मेद ई अगम। — फुलवाड़ी

४ रौनक, शोभा।

अल्पा.—लालकी।

लालुरणौ, लालुरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे)

उ०—१ लडै हिक लालुरता छकि लोह, पडै हिक पाडक ऊठै छोहि। आवै हिक वाहै खाग उभारि, मुखा हिक जोध कहै मारि मारि। —गु रू ब.

उ०—२ लालुरै हेक हेकां दिसा लोडता। काळ ना बाथ घातै जिसा कोडता। —हरि पिंगळ प्रबन्ध

उ०—२ भरस हूत ऊतरै, एक वर अच्छर वरिया। एक पडै लोहडै, लोह छक्का लालुरिया। —गु रू ब

लालुरणहार, हारौ (हारी), लालुरणियौ—वि०।

लालुरिओड़ौ, लालुरियोड़ौ, लालुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लालुरीजणौ, लालुरीजबौ—भाव वा०।

लालुरियोड़ौ—देखो 'ललरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लालुरियोडी)

लालू, लालूड़ौ—१ देखो 'लालौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ छला छोगाळां छक्का छूटोड़ा, फिरतां फिरतां रा फींफर फूटोडा। लालू लोका रा खाता जग खोणा, बाबा बैलां रा जाता पग जोणा। —ऊ. का.

उ०—२ लालूड़ा! हरि सूरज हरि चंद्रमा, लाला म्हारा रै हरी बिन घोर अधार। —गी. रां.

लालूवाड़—स स्त्री.—एक प्रकार की तलवार।

लाळौ—स. पु—१ घोडे के मुंह की मोरी मे नीचे की ओर लगी हुई कपडे की पट्टी जिसका दूसरा हिस्सा तग में लगा रहता है।

उ०—रूपा रा पागडा। सुरगी तग। फबती लगाम। भूलतौ लाळौ। —फुलवाड़ी

२ घोडे के मुह के दोनो छोर।

उ० - अरु साहिजादौ मोमण तळाव उपरि आय उतरचौ घोडी का लाळा छाटचा। अरु भाला परि हाथ दीया खडा है।
—राहब साहब री बात

अल्पा -- लाळियौ, लाल्यौ

लालौ—स. पु —१ पुत्र, बेटा।

उ० बरतै मोड मोडिया बेटौ, पैमद हेटौ बाप पडै। मूंडा हूत न बोलै मीठौ, लालौ बूढा हूंत लडै। —हिंगळाजदान कवियौ

२ लडका, शिशु।

३ बच्चो के लिए स्नेहपूर्ण सम्बोधन।

४ कायस्थ माहेश्वरी, अग्रवाल आदि जातियो के व्यक्तियो के लिए सम्मानसूचक सम्बोधन। (गगानगर, बीकानेर)

उ०—लालौ बरसा सू मानीजतौ आदमी, नगद पीसौ तौ खनै घणौ नी पण माण मुलाकात उतरादै इलाकै मे बड पीपळ दाई पाकी पड रैयी ही। मालमता अर जगा सेठाई रै पगां, सदा सुरगी रैती आई ही। —दसदोख

अल्पा ,— ललुडौ, ललौ, लल्लू, लाल्यौ

५ ल अक्षर या वर्ण।

उ०—लघुनीति लोभ लिग लिग लहरि, लाल लीख वलि लाल्हरा। ले आइ साथि साते लला, जिका काइ कीधी जरा। —ध. व. ग्र.

लाळयौ - देखो 'लाळौ' (अल्पा,. रू. भे.)

लाल्हरणौ, लाल्हरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू भे.)

उ०—तुरी करनाळ रणसीगौ बाज रह्या छै। सहनाय मांहै लभायची हुय रही छै। साथ सारौ अमला सूं लाल्हरतौ थको वहै छै। —रा. सा. स.

लाल्हरणहार, हारौ (हारी), लाल्हरणियौ—वि.।

लाल्हरिओड़ौ, लाल्हरियोड़ौ, लाल्हरयोड़ौ—भू का. कृ.।

लाल्हरीजणौ, लाल्हरीजबौ—भाव वा.।

लाल्हरियोड़ौ—देखो 'ललरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाल्हरिग्रोड़ी)

लाल्हरियौ—स. पु.—एक प्रकार का पौधा विशेष जिसे ऊंठ चाव से खाते हैं।

लाव—स. स्त्री.—१ चमड़े या जूट का बना मोटा रस्सा, जो प्रायः कूएं से चरस खींचने के काम आता है।

उ०—'ग्रणदौ' कूप पैंसतां 'ग्राऊ,' तूटी लाव तिसार। भुजंग रूप बण बीस-भुजाळी, जुड़ी बरत रैं जा'र। —किसोरसिंह बारहस्पत्य

स. पु.—२ लाभ।

उ०—१ नेन न पेम न प्रीत हरि, ग्राव न कहै सिधाव। हरिया परहरि हित विन, वा घरि लाव न साव। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ हरीया प्याला पेम का, पीया भरि भरि दाव। ग्रौर ग्रमल किस काम का, लीया लाव न साव। —ग्रनुभववाणी

लावक—स. पु [स. लावकः] एक प्रकार का पक्षी विशेष। (सभा)

वि—१ लाने वाला। २ काटने वाला।

लावकि—वि—योग्य, लायक।

उ०—ग्रल्पमाम निरलोम दाक्षिण्य पर दया पर मया पर क्षमा पर साचाबोली हितबोली मितबोली ऊपजावकि लावकि द्रावकि समयती मानयती सतीमिती ग्रनुरक्ति सक्ती···। —व स.

लावड़ौ—स. पु.—लोमडी।

उ०—लावड़ौ, हरणइ, सिंह, सियाळ, पहुत समीहोज्यौ लोवा सीयमाळ। घन हरिणाखी ईम कहई, निहचई ग्रोळग चालणहार। —बी. दे

लावण—सं. पु—१ गायन विशेष।

उ०—गायण तठै करै व्रत गावै, लावण बाणि ग्रनेक लगावै। छक छौह जोबना छाका, पुहपात्तणी वणी पौसाका। —सू प्र.

२ नमकीन पदार्थ।

उ०—रूप ग्रपूरब पेखीयौ, लावण लाडु भरी पकवान। सेना सहित राज जीमीयौ, राई भतीजौ भोज दे बहुमान। —बी. दे.

३ वह नमकीन पदार्थ जिससे लगाकर रोटी खाई जाय, लगावण।

वि.—१ नमकीन।

२ देखो 'लावण' (रू. भे.)

उ०—घर हाळी पर भूजं, दात भींचै। बापडो दांता मे लावण लिया रात-दिन पाणी पीसणौ करै। —दसदोख

लावणता—देखो 'लावण्यता' (रू. भे.)

लावणी—सं. स्त्री—१ गाने का एक प्रकार का छंद या गीत, ख्याल।

२ मतान्तर से तारक छंद का एक भेद विशेष जिसमे लघु गुरु का कोई भेद नहीं होता।

[सं. लव] ३ खेतो मे फसल काटने की क्रिया।

उ०—खेत जाय'र कदं ही ग्राखै नही देख्यौ जको लुगाई, निनांण-लावणी री मजूरी करै, भाजी वगै। —दसदोख

लावणियौ, लावणीयौ—स. पु.—एक प्रकार के बेर विशेष।

उ०—भमरा वे फळ परहरै, निस बद लाख कठोर। की राता दीसै नही ज्यूं लावणीया बोर. —ग्रज्ञात

लावणौ—स पु.—मागलिक ग्रवसर या बहू के पीहर से ग्रागमन पर कुटुम्बियों मे बाटा जाने वाला खाद्योपहार या मिष्ठान्न।

लावणौ, लावबौ—देखो 'लाणौ, लाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कड़ाछ्' र जर चाळै, बाळटी, दुकडिया वगै। हाथै ही लावै, हाफै ही उठावै। —दसदोख

उ०—२ ग्रर जे पछै ई थनै पतौ नीं पडियौ तो म्हनै किसौ मोल लावणौ है। —फुलवाड़ी

लावण्ण, लावण्य, लावण्यता—सं. पु. [स लावण्यता] १ सुन्दरता, सलोनापन।

उ०—सीख-पसा करि स्वामिनूं, सिउं करिवा ग्रधिकार। हूं मति-हीणी मानिनी लावण्य नही लगार। —मा. कां. प्र.

२ चातुर्य, सुघड़ता।

३ लावण का धर्म या भाव, नमकीनपन।

रू भे.—लावणह, लावणता, लावन्न, लावन्य

लावण्यवती—स स्त्री—१ रथतर कल्प के राजा पुष्पवाहन की पत्नी का नाम।

२ सुन्दर ग्रगो वाली स्त्री।

लावन्न, लावन्य - देखो 'लावण्य' (रू भे.)

उ०—नमौ लख कद्रप कोटि लावन्न, नमौ हरि मारण रूप मदन्न। बदन्न उलासित नेत्र बिसाळ, मुकुट्ट किरीट ग्रखै गळ माळ।—ह.र.

लावर—स. पु.—क्रोध युक्त वाणी, कटु-शब्द।

उ०—टलवळइ जिम निरजळि माछिळी, वळवळइ ग्रति ग्रगि वळी। झखइ लांखइ लावर ग्राकुळउ, विरहि विव्हल वांतर वाउळउ। —सालिसूरि

लावरी—स. पु.—कुत्ता, श्वान। (शेखावटी)

लावल्द—वि. [ग्र.] नि सतान।

लावल्दी—स. स्त्री.—नि सतानावस्था।

लावांणक—सं. पु.—एक प्राचीन स्थल विशेष जो मथुरा के पास है।

लावा—वि.—खराब, बुरा।

उ०—१ काळौ धवळ कहाय नह, घोळौ धवळ कहाय। जो काळौ धुर जूपणौ, लावा लखण न जाय। —बां. दा.

उ०—२ लावा लखण रौ दस दस सुत देवै। उत्तम लखणां री

प्रेकी उर लेवै । सिधुर वर वाकर मूंडण कर सांधै । वामा बीजळ मैं धावर गळ बांधै । —ऊ. का.

लावाळी–सं. स्त्री.—लम्बी लकड़ी का रहंट का एक उपकरण जो चक्र पर लगाकर बैलों की ओर बढाया जाता है ।

लावालूत्र–सं. स्त्री – इधर उधर की बात करने की क्रिया, लबालीपन ।

उ०—म करे रवि सांम्हो मलमूत्र, लखण म करीजे लावालूत्र । पाप तजै तु सकजै पूत्र, सांभाळिजे सुभ सास्त्र सूत्र ।

—ध. व ग्र.

लवारिस–स पु. यौ. [अ.] १ जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस नहीं हो ।

२ जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो ।

लावारिसी–वि.—जिसका कोई अधिकारी न हो ।

लावौ–सं. पु. [स. लवा] १ लावा नामक पक्षी ।

उ०—१ सित्तर खांन बहोतर मीरां, आइस दाखै सास अधीरा । इक पण करल बाज लख दावै, देखौ लावौ आंम्व दिखावै ।

—रा. रू.

उ०—२ लावौ तितर लार, हर कोई आका करै । सिहा तणी सिकार, रमणो मुमकल राजिया । —किरपाराम

[सं. लाभ] २ आनन्द, मौज ।

क्रि. प्र.—लेणौ ।

३ लाभ ।

४ बहु या पुत्री को ससुराल से लाने या ले जाने वाला व्यक्ति ।

५ ज्वालामुखी पर्वतो के मुख से विस्फोट होने पर निकलन वाला राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ द्रव पदार्थ ।

१ बुरा शकुन ।

रू. भे.—लउवौ, लाहौ ।

लास–सं. स्त्री.—१ मृत शरीर, शव ।

उ०—भाग सूं अचाचूंक री कोई पाडोसी कनै आयौ अर राजी री अधबळी लास नै उबारी । —दसदोख

२ काष्ठ-निर्मित पायेदार एक प्रकार का उपकरण जिसमे पशुओ को चरने हेतु भूसी डाली जाती है । (मेवात)

३ दल, समूह ।

उ०—वड रावत ऊससिया तिण वेळा, एम सुणे भुज आमळता ललकार हुवौ भड आवै लासां, छोडै तेज तुरी छिळता ।

—गु रू. बं.

३ देखो 'ल्हास' (रू. भे.)

४ देखो 'लासू' (रू. भे.)

उ०—लकड़ी धारी रीढ, लास रोमावळ लै'रा । ढिस्सा मठ ढमढेर, ईळ जळ ऊंडा बेरा । —दसदेव

रू. भे.—ल्हास

लासक–स. पु. [स] (स्त्री. लासकी) १ मोर, मयूर ।

२ मटका, घडा ।

३ नाचने वाला ।

४ एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे शरीर का कोई अंग बराबर हिलता-डुलता न हो ।

लासरियेगाळौ–स. पु.—वह युवक जिसके मूछो के बाल न निकले हों ।

लासरीक–वि [अ] बिना किसी सहायक के, निःसहाय ।

उ० तोहीन अदालत अल-कितीक, लिल्ला वजूद हैं लासरीक । मालुम मुलायजे करह माफ, आलिम हैं आलिमगीर आप ।

—ऊ. का.

लासलूसणौ–क्रि. वि.– पोछने की क्रिया, पोछ ।

ल्हासियौ—देखो 'ल्हासियौ' (रू. भे.)

लासू–स पु —फोग वृक्ष की पतली सलाख या टहनी, वृक्ष के तार ।

उ०—कातो भळे दाती फेरी, लासू वन रा वाडता । झाड़ जुगत लादा लदावै, ढिगला टोकी काढता । —दसदेव

रू भे —लास

अल्पा.,—लाऊडौ, लासूडौ, लाहुडौ, लाहूड़ौ

लासूड़ौ - देखो लासू' (अल्पा., रू भे)

उ०—पाळौ पडै अथोग, झडै लासूड़ा नीचै । आरत-बुभुक्षित पसू, खोड मे खारी बीचै । —दसदेव

लास्य–स. पु. [स] एक प्रकार का नृत्य विशेष जिसमे हाव-भावो व अंगविन्यासो से प्रेम की भावनाए प्रकट की जाती हैं ।

लास्यप्रिया–सं. स्त्री.—एक देवी जिसे लास्य नामक नृत्यविनोद प्रिय है ।

लाह–स. पु. (ब. व लाहा) १ घुड-दौड मे छलाग मारकर आगे निकल जाने वाला घोडा ।

सं. स्त्री.—२ छलाग, कूद ।

उ०—सो घोडी उछळती, लाहां भरती आवै छै सो जाणै आकास नूं ही ठोकरा मारती आवै छै । —सूरै खीवै काधळोत री बात

[स लाक्षा] ३ लाख, चपडी ।

४ देखो 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—१ हर मत छाडै रे हिया, लिया चहै जो लाह । दिल साचै तेडौ दिया, नेडौ लिछमी नाह ।

—र ज. प्र.

उ०—२ जन हरिदास हरि सुमरता, सब घरि सदा उछाह । तब थी सो मति अब नही, तब तोटा अब लाह । —ह. पु. वां.

उ०—३ ओडी सरखि जाणि नै, ते परणै हे यौवन नै लाह । बिचि माहै थई डोकरी, तिहा कीधो हे गघरव वीवाह । —वि. कु.

४ देखो 'ल्हास' (रू. भे.)

रू. भे.—ला

लाहुउरी—देखो 'लाहोरी' (रू. भे.)

लाहण-सं. स्त्री.—एक जाति विशेष । (नैणसी)

रू. भे.—लांहण, लाहिण, लाहीण ।

लाहणो, लाहबो—देखो 'लाभणो, लाभबो' (रू. भे.)

उ०—एक अमोलिक वसत का, विरळा विणजणहार । अनहुरीया सो विणजसी, लाहै अत न पार । —अनुभववांणी

लाहणहार, हारो (हारी), लाहणियो—वि० ।

लाहिम्रोड़ो, लाहिदोड़ो, लाह्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लाहीजणो, लाहीजबो—भाव वा० ।

लाहरणो, लाहरबो—देखो 'ललरणो, ललरबो' (रू. भे.)

उ०—इण भातरै चादणै में जीमण री होस माणजै छै । दारू सूं मतवाळा सिरदार लाहरता बोलै छै । —रा. सा. स.

लाहरणहार, हारो (हारी), लाहरणियो—वि० ।

लाहरिम्रोड़ो, लाहरियोड़ो, लाहरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

लाहरीजणो, लाहरीजबो—भाव वा० ।

लाहरां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

लाहरियोड़ो—देखो 'ललरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लाहरियोड़ी)

लाहरै—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—तिण समे मारवणीजी पिण ढोलाजी रै लाहरै ई ज हुवा । —ढो. मा

लाहा-स. स्त्री.—सोलंकी क्षत्रियो की एक शाखा ।

लाहानूंर-वि. [फा. लाह+अ नूर] कच्चे रेशम के चमकदार ।

उ०—फरासूं नै भाराम्‌ं बीच विछायत बणवाए । लाहानूंर मुसेद अजील की चौपस्मी गिलम्‌ की बिछायत करै । —सू प्र

लाहि-स. स्त्री.—१ वनस्पति विशेष ।

उ०—लाज लज्जाळू लक्ष्मणा, लूणी लसन लवगि । लीलावती लूंकडी, लाहि लवीरी सगि । —मा. का. प्र.

२ देखो 'लाही' (रू. भे.)

उ०—कतास अतलस खासु कमसू अहरव, मिस्रू अहरव, रेसमी अहरव, लाहि महीमुंदीसाही मलमलसाही प्रमुख नानाविध भातिना, नानाविध देस नां वस्त्र आणी समस्त परिवार, नगरलोक पहिरावी, नांमस्थापना कीधी । —व. स.

लाहिण—देखो 'लाहण' (रू. भे.)

उ०—पुज्य पाल्हण पुरि पहुंता सुभ दिनह, संघ सकल उच्छाहो जी संघ पाटण नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिल्यइ लाहो जी । —ऐं. जै. का. सं.

लाहियोड़ो—देखो 'लाभियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री लाहियोड़ी)

लाहियो—देखो 'ल्हासियो' (रू. भे.)

लाही-सं. स्त्री. [स. लाक्षा] १ लाख, चपडी ।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

रू. भे.—लाई, लाहि

लाहीण—देखो 'लाहण' (रू. भे)

लाहु—देखो 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—१ सुख अपूरब भोगवइ, नळ दवदंति नारि । इच्छा पहुचा-उइ मन तणी, लीह लाहु संसारि । —नळदवदती रास

उ०—२ उसण जळ मजन की कीजीइ, ताबूलन लाहु लीजीइ । एहवु सीआळू मझ सभरइ, नळजी वाहलू नवि वीसरइ । —नळदवदती रास

उ०—३ रत्नजटित तिलक चुवीस, आभरणे पूजी मूर्ति चुवीस बिहु भेदै तेणइ पूजा किद्ध, धरम प्रीछियानु लाहु लिद्ध । —नळदवदंती रास

लाहुड़ो, लाहूड़ो—१ देखो 'लासू' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लाहोरणी-स. स्त्री.—लाहोर में निर्मित एक प्रकार की बदूक ।

उ०—धुणियासी धणियां धरी, भुज बळ पाळ भडाह । ले मळकां लाहोरणी, छूटै लांबछडा । —पा. प्र.

लाहोरी-स. पु.—१ शिकारी कुत्ता विशेष ।

उ०—सौगंध लीघ सिकारियां, नह लाहोरी आय । थारो सेको एक बस, लूआं प्रांण सुकाय । —सू

२ लाहोर में निर्मित एक प्रकार की बदूक ।

वि.—लाहोर सम्बन्धी, लाहोर का ।

उ०—गुजराती कसमीरी कसूरी मारवाड़ी दखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजारमेखी घणी रंग रग री बनात मुखमल कळाबूती सोनै रूपै रा वणिया जीण हजार कीजै छै । —रा. सा. सं.

रू. भे—लाहउरी

लाहोरीनमक-सं. पु यौ.—सैंधा नमक ।

लाहौ—देखो १ 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—देई न दीन्ही वांटि, आदमगीरी अकलि कुं । लाहा लेवा गांठि, हरीया मैसै आप सिर । —अनुभववांणी

२ देखो 'लावो' (रू. भे.)

लाहौल—स. स्त्री. [अ.] घृणा एवं उपेक्षा सूचक शब्द या वाक्य।

लिंग—सं. पु. [सं. लिंगम् ३] १ चिन्ह, निशान।

२ न्याय-शास्त्र में वह वस्तु जिसके माध्यम से किसी प्रकार की घटना या उसके तथ्यों का अनुमान हो।

वि. वि.—न्याय-शास्त्र में ये चार प्रकार के कहे गये हैं—(क) संबद्ध (ख) व्यस्त (ग) सहवर्ती (घ) विपरीत

३ प्रमाण, साक्षी।

४ मीमांसा के अनुसार लिंग निर्णय के छः लक्षण:— उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, अर्थवाद उपपत्ति।

५ शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति जो पुरुष की जननेन्द्रिय के रूप में होती है।

उ०—लिंग कौं चढावै लाडू भाटे को लगावै भोग, भडवै पुजावै भग स्वामि सेल सोधा की। —ऊ. का

६ सांख्य के मतानुसार वह मूल प्रकृति जिसमें सारी विकृतिया फिर से लीन होती हैं।

७ जननेन्द्रिय, शिश्न। (डिं. को.)

उ०—करवाय मोल भजराजको, लिंग हाथ मांहै लियौ। सुभ-सींग कमध करतब समै, किसौ काम ग्रांछौ कियौ। —अज्ञात

८ व्याकरण मे शब्दों का वह वर्गीकरण जिससे यह ज्ञात किया जाता है कि कोई संज्ञा या सर्वनाम पुरुष जाति का वाचक है या स्त्री जाति का।

वि. वि.— संस्कृत, फारसी, मराठी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में तीन प्रकार के लिंग होते हैं— (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) नपुंसक लिंग। इसके अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू आदि कई भाषाओं मे दो ही प्रकार के लिंग होते हैं—स्त्री लिंग और पुलिंग।

९ देवता की मूर्ति या प्रतिमा।

१० वेदान्त में आत्मा का सूक्ष्म रूप।

११ लिंगायत लोगों द्वारा किसी आवरण मे आवेष्टित करके गले में लटकाई जाने वाली प्रतिमा या मूर्ति।

लिंगटी—देखो 'लीगटी' (रू. भे.)

लिंगतियौ—देखो 'रिंगतियौ, (रू. भे.)

उ०—"छक छक आयला बारणौ! क्यो माथौ लगावै है।" "हांजी, साक्षा लिंगतिया खेतरपाळ है।" —बरसगांठ

लिंगदेह—सं. स्त्री [सं.] अध्यात्म के अनुसार स्थूल शरीर के नष्ट होने पर मिलने वाला वह अन्नकोश रहित अति सूक्ष्म शरीर जिसमें ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां विद्यमान रहती हैं।

लिंगनास—स. पु. [सं.] नेत्र का एक रोग विशेष। —(अमरत)

लिंग पुराण—स. स्त्री [स.] १८ पुराणों में से एक पुराण, जिसमें शिव एवं उसके लिंग पूजा के माहात्म्य का उल्लेख है।

लिंग पूजा—सं. स्त्री.—शिव की पिंडी की पूजा।

लिंगसरीर—देखो 'लिंगदेह'

लिंगायत—सं पु.—१ एक शैव सम्प्रदाय।

२ शैव सम्प्रदाय का अनुयायी।

लिंगूर—देखो 'लगूर' (रू. भे.)

लिंगेंद्रिय, लिंगेंद्री—स. पु. [स. लिंगेन्द्रिय] १ जननेन्द्रिय, शिश्न। (अमरत)

लिंगोटी—देखो 'लगोटी' (रू भे.)

लिंघो—स पु —वस्त्र विशेष।

उ०—कवू नीलक को फीयो, उपरि चीर उढाइ। लिंघौ लुंगी भाति को, सुदर नें बहोत सुहाय। —व. स.

लिंडवा—स. पु.—एक नदी जो अलवर रियासत के प्रतापगढ व अजबगढ के नालो से निकल कर रेवाडी से आगे तक चली जाती है। (वीर विनोद)

लिंपणौ, लिंपबौ—देखो 'लीपणौ, लीपबौ' (रू. भे.)

उ०—लिंपइ ताव निकदनी, चदनि चदनी देहु। निज निज नाथ सभारिय, नारिय नवलउ नेहु। —जयसेखर सूरि

लिंपणहार, हारौ (हारी), लिंपणियौ —वि०।

लिंपिग्रोड़ो, लिंपियोड़ो, लिंप्योड़ो — भू० का० कृ०।

लिंपीजणौ, लिंपीजबौ—कर्म वा०।

लिंपियोड़ो—देखो 'लीपियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री लिंपियोडी)

लि—स. स्त्री —१ दासी। (एका.)

२ विछी।

३ सखी, सहेली।

स. पु —४ सर्प, साँप।

५ चूहा।

लिअण—वि.—देखो 'लियण' (रू. भे.)

उ०—लंक लिअण अण दन दीअण, वरण धण मह महण। नव कुमर अर निडर नर, सुपमरि हरियै लगे। —पि. प्र.

लिए—अव्य.—व्याकरण के अन्तर्गत सम्प्रदान कारक में प्रयुक्त होने वाला शब्द, हेतु, निमित्त।

लिकणी—स. स्त्री.—१ कुण्डी के आकार का पत्थर का बना वह पात्र जिसमें घर के बर्त्तन साफ करके पानी व जूठन डाली जाती है और जिसे कुत्ते आदि पशु चाटते हैं।

२ लिक लिक करने की क्रिया या भाव।

३ कुत्ता आदि के जलपान करते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि विशेष।

लिकणौ, लिकबौ–क्रि. स.—१ कुत्ता, सियार आदि का जिह्वा से जलपान करना।

२ देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

लिकणहार, हारौ (हारी), लिकणियौ—वि.।

लिकियोड़ौ, लिकियोड़ौ, लिक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिकीजणौ, लिकीजबौ—भाव वा.।

लिकाणौ, लिकाबौ—१ कुत्ते, बिल्ली आदि से जूठा करवा देना।

२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे)

लिकाणहार, हारौ (हारी), लिकाणियौ—वि.।

लिकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लिकावीजणौ, लिकावीजबौ—भाव वा.।

लिकावणौ, लिकावबौ—रू. भे.।

लिकायोड़ौ—१ कुत्ते बिल्ली आदि से जूठा करवाया हुआ।

२ देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिकायोड़ी)

लिकावणौ, लिकावबौ—१ देखो 'लिकाणौ, लिकाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)

लिकावणहार, हारौ (हारी), लिकावणियौ—वि।

लिकावियोड़ौ, लिकावियोड़ौ, लिकाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिकावीजणौ, लिकावीजबौ—कर्म वा.।

लिकावियोडौ—१ देखो 'लिकायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिकावियोड़ी)

लिकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कुत्ते, बिल्ली आदि का चाटा हुआ।

२ देखो 'लिखियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लिकियोड़ी)

लिकलिक—देखो 'लकलक' (रू. भे.)

उ०—१ राडां मे बुत्रारिया रा लोतर ई कोनीं। दो महींना सू लिकलिक करूं कै म्हारा डील में आतस घणी पांच सेर कड़कड खांड पांणी मे रळाय नै पीवूं तो की ठंडक वापरै। —फुलवाडी

उ०—२ अेकर आं दोनूं घणियां नै राजाजी रै हवालै कर दां। पछै राजाजी जांणै अर सेठजी जांणै। आपां बीच में क्यू लिकलिक करां। —फुलवाड़ी

लिक्खणौ, लिक्खबौ—देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे)

लिक्खणहार, हारौ (हारी), लिक्खणियौ—वि.।

लिक्खिग्रोड़ौ, लिक्खियोड़ौ, लिक्ख्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिक्खीजणौ, लिक्खीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खाडणौ, लिक्खाडबौ—देखो 'लिखाणौ लिखाबौ' (रू. भे.)

उ०—राजा कागळ मेळियौ, लिक्खाडै चढ कोट। जिम जांणै तिम मारलै कुमर करणैगिर कोट। —गु. रू. बं.।

लिक्खाडणहार, हारौ (हारी), लिक्खाडणियौ—वि.।

लिक्खाडियोड़ौ, लिक्खाडियोड़ौ, लिक्खाड्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिक्खाडीजणौ, लिक्खाडीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खाडियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिक्खाडियोड़ी)

लिक्खाणौ, लिक्खाबौ—देखो 'लिखाणौ लिखाबौ' (रू. भे.)

लिक्खाणहार, हारौ (हारी), लिक्खाणियौ—वि.।

लिक्खायोड़ौ—भू का कृ.।

लिक्खाईजणौ, लिक्खाईजबौ—कर्म वा.।

लिक्खायोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लिक्खायोड़ी)

लिक्खावणौ, लिक्खावबौ—देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)

लिक्खावणहार, हारौ (हारी), लिक्खावणियौ—वि.।

लिक्खावियोड़ौ, लिक्खावियोड़ौ, लिक्खाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिक्खावीजणौ, लिक्खावीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खावियोड़ौ—देखो 'लिखायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिक्खावियोडी)

लिक्खियोड़ौ—देखो 'लिखियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिक्खियोडी)

लिक्ख—देखो 'लीख' (रू. भे.)

लिखण—देखो 'लिखत' (रू. भे)

लिखणौ–सं. पु.—लिखने की क्रिया या भाव।

उ०—पछै हीराजी हेमजी स्वामी नें कह्यौः आप लिखणौ काइ करो। उदैराम जी स्वामी नै पाणी पावो। —भि. द्र.

लिखणौ, लिखबौ–क्रि. स.—१ किसी तिक्ष्ण या नुकीली चीज से कुछ अंकित करना।

२ कलम, पेन्सिल आदि के माध्यम से कागज पर अपने विचार, सिद्धात, लेख आदि को वर्णाक्षरो द्वारा अंकित करना, लिपिबद्ध करना।

उ०—माणस हवां त मुख चवां, म्हैं छा कूंझडियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दै पंखडियांह। —ढो. मा.

३ कूंची, ब्रुश आदि से चित्र बनाना।

उ०—लारोवरि अस चित्रांम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर। माखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर। —वेलि

४ किसी साहित्यिक कृति की रचना करना, साहित्य-सृजन करना। ज्यूं—बात लिखणी, गीत लिखणी

क्रि प्र ?१ किसी कारण एवं परिणाम के घटित होने पर सयोग की प्रतीति होना ।

ज्यूं—भाग में लिखा होना, प्रारब्ध में होना ।

उ०—थारै मन बैठूं थोळे हर, तापै सूनां तूंढ तठै । मोटा ग्रम्बर कवरण मेटवै, कुटी लिखी सो महल कठै । —ग्रोपो ग्राढो

लिखणहार, हारौ (हारी), लिखणियौ—वि० ।

लिखिग्रोड़ौ, लिखियोड़ौ, लिख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिखीजणौ, लिखीजबौ—कर्म वा० ।

लखणौ, लखबौ, लिक्खणौ, लिक्खबौ, लिहणौ, लिहबौ, लीखणौ, लीखबौ—रू० भे० ।

लिखत—सं. पु.—१ लिखने की क्रिया या भाव ।

२ लिखा हुआ, लिपि बद्ध ।

३ नियम ।

उ०—जद स्वांमी जी कह्यौ थारा नियम टोळा मे इसौ लिखत है—इकीस टोळा री थांमं ग्रावै तौ दिक्षा देइ माहै लेंगो ।

—भि. द्र.

४ कानूनी रूप से प्रमाणित माना जाने वाला दस्तावेज, लिखा हुआ प्रमाण-पत्र या सनद ।

५ भाग्य का लेख ।

रू. भे—लिखण, लीखत ।

लिखमण—देखो 'लखमण' (रू. भे.)

उ०—१ परस करत लिखमण चमर, सरस ग्रगर सामीर । इम सियजुत जन-मंछ उर, बसौ सदा रघुबीर । —र. रू.

उ०—२ वैद पतूसतूसू लंका वस, सो ग्रावै धारक सुरत । जिकौ बतावै जडी सजीवन, तौ लिखमण ऊठै तुरत । —र रू

लिखमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे) (ह. नां मा)

उ०—प्रभणै पितमात पूत मत पातरि, सुर नर नाग करै जसु सेव । लिखमी समी रुकमणी लाडी, वासुदेव सम सुत वसुदेव ।

—वेलि

लिखमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—सरब कांम नामै-लेखै रौ मुदार बेटै ऊपर ग्रौर देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिग्या सो सहर सू बाहिर ग्रधकोस देहरो तठै श्री लिखमीनाथ जी बिराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै । —पलक दरियाव री बात

लखमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण'

लिखमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—ग्राह ग्रूंण तज ग्राह, देह दिव्य पाई तुरत । निरखै लिखमी नाह, परसै पग पावन हुवौ । —गज उद्धार

लिखमीबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे)

उ०—ग्रकळ तुहिज कै कोइ ग्रवर, वोहोनांमी बूभव्व । लिखमीबर लेखै नही, समवड प्राणी सव्व । —ह. र.

लिखमीभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे)

लिखमीवंत—देखो 'लक्ष्मीवंत' (रू. भे.)

लिखमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू भे) (ह. ना. मा.)

उ० लिखमीवर ग्राया सुर लारै, वेळां चढै ग्रजोबळ बारै नरवर प्रथी खबर मुज पाया, चगथौ ग्रावै राह चलाया । —रा. रू.

लिखम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

उ०—लिखम्मी पग धरै उर लेह, रहै सिध बुद्ध पगां तळ बेह । नमै पग छाह गोतम्म नारद्द, वदै पग गरग कपिल्ल बेहद्द ।

—ह. र.

लिखवाई—देखो 'लिखाई' (रू. भे)

लिखांतर—देखो 'लेखांतर' (रू. भे.)

लिखाई—स. स्त्री —१ लिखने की क्रिया या भाव ।

२ लिखने का तरीका, ढग, लिखावट ।

३ लिखने की मजदूरी

४ चित्र ग्रकित करने की क्रिया या भाव ।

रू. भे. लिखवाई

लिखाड़णौ, लिखाड़बौ—देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)

लिखाड़णहार, हारौ (हारी), लिखाड़णियौ—वि० ।

लिखाड़िग्रोड़ौ, लिखाड़ियोड़ौ, लिखाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिखाड़ीजणौ, लिखाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लिखाड़ियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू.)

(स्त्री. लिखाड़ियोड़ी)

लिखाणौ, लिखाबौ—प्रे रू —१ किसी तीक्ष्ण या नुकीली चीज से कुछ ग्रंकित कराना ।

२ कलम, पेंसिल ग्रादि के माध्यम से वर्णाक्षर ग्रंकित कराना, लिपिबद्ध कराना ।

३ कूची, ब्रुश ग्रादि से चित्र बनवाना ।

४ किसी साहित्यिक कृति की रचना कराना, साहित्य सृजन कराना ।

लिखाणहार, हारौ (हारी), लिखाणियौ—वि. ।

लिखायोड़ौ—भू. का कृ ।

लिखाईजणौ, लिखाईजबौ—कर्म वा ।

लिक्खाड़णौ, लिक्खाड़बौ, लिखाड़णौ, लिखाड़बौ, लिखावणौ, लिखावबौ, लिहाड़णौ, लिहाड़बौ, लिहाणौ, लिहाबौ, लिहावणौ, लिहावबौ—रू. भे. ।

लिखापढ़ी—स. स्त्री. १ लिखने का कार्य, लिखाई ।

२ पत्र-व्यवहार, पत्राचार ।

३ लिखित संधि, शर्तनामा या अनुबन्धन ।

क्रि. प्र.—कराणी, व्हैणी, होणी

लिखावट, लिखावटि, लिखावटी—देखो 'लिखावट' (रू. भे.)

उ०—पाती चद्रसेणी भूप देणी धार लीनी । पातीवार तीनां की **लिखावटी** माड दीनी । —शि. वं.

लिखायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी तीक्ष्ण या नुकीली वस्तु से अंकित कराया हुआ. २ कलम पेन्सिल आदि से वर्णाक्षर अंकित कराया हुआ. ३ कूची ब्रुश आदि से चित्र बनाया हुआ. ४ साहित्य-सृजन कराया हुआ ।

(स्त्री. लिखायोड़ी)

लिखारौ—वि.—लिखने वाला, लेखक ।

लिखावट—स स्त्री.—लेखन प्रणाली, लिखने का तरीका, ढंग ।

२ किसी के हाथ से लिखे अक्षर, लिपि ।

३ लिखे हुए वाक्यो का समूह, लेख ।

उ०—लिखै है अेक म्रित-सजीवणी दवा रौ नुसखौ, प्रांण भर दै जिसौ साबर-मतर । ई **लिखावट** माथै ई तौ सगळौ दारमदार है । —वरसगाठ

रू. भे.—लखावट, लिखाबट, लिखाबटि, लिखाबटी

लिखावणी—स स्त्री.—लिखाने की मजदूरी, लिखाई ।

लिखावणौ, लिखावबौ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू भे)

उ०—पण उण मे अेक मोटी खोड आ ही के नी तौ वौ किणी आसांमी सू खातौ **लिखावतौ** अर नी किणी नै खातौ लिखतौ । —फुलवाडी

लिखावणहार, हारौ (हारी), **लिखावणियौ**—वि. ।

लिखाविप्रोड़ौ, लिखावियोड़ौ, लिखाव्योड़ौ—भू का. कृ ।

लिखावीजणौ, लिखावीजबौ—कर्म वा. ।

लिखावियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिखावियोड़ी)

लिखावत, लिखावतू—स. पु.—बादशाह एवं महाराजाओ द्वारा अपने सम्मानित व्यक्तियो के पत्र मे प्रयोग किया जाने वाला शब्द ।

उ०—पछै महेसदासजी जाळौर पायी, गढपती हुवा जिणसू लिखावट आगै न रही । प्रथीराज रै मनसब घणौ हौ जिण सू बचनात् नही नै **लिखावतू** लिखीजतौ । —बा. दा. ख्यात

लिखित—भू का. कृ.—१ लिखा हुआ, लिपि बद्ध ।

२ किसी प्रमाण या सनद के रूप मे लिखा हुआ ।

सं. पु.—१ एक मुनि, जो जैगीष्व्य के दो पुत्रो मे से एक था ।

२ चंपकापुरी के हुसध्वज राजा का एक दुष्ट कर्मा पुरोहित ।

लिखितकला—सं स्त्री—७२ कलाओ में से एक ।

लिखिमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लिखमीवंत—देखो 'लक्ष्मीवत' (रू. भे.)

उ०—**लिखमीवंत** खेतसी तणउ, अखइराज सोनिगिरउ भणउं । ब्राह्मण तणा कराव्या ज्याग, सवा लाख जिणि दीधा त्याग । —कां. दे. प्र.

लिखू—स. स्त्री—सप्तकोशी नदी की एक सहायक नदी का नाम ।

लिग—१ किंचित, थोड़ा ।

उ०—जमहरीया नही भाजिसी, मंदेसौ डिगमिग । पीव मिळै पर-मातमा, अनेसो नही लिग । —अनुभववाणी

लिगतर—स. पु—फटा पुराना जूता ।

उ०—थोड़ी ताळ पछै फाटोडा **लिगतरां** रा फटकारा बजावतौ अेक डोकरौ म्हारै पाखती आयनै ऊभग्यौ । —फुलवाडी

रू. भे.—लगतर, लिग्तर ।

अल्पा—लपतरौ, लिगतरौ, लिग्तरौ, लीतरौ ।

लिगतरौ—देखो 'लिगतर' (अल्पा. रू. भे)

लिगतौ—सं. पु [स्त्री. लिगती] कुत्ता, श्वान ।

वि.—पीछै पडने वाला पिछलग्घू ।

उ०—तनै ठा कोनी, अै लिगता है साळा, इयां नै घालसा तौ बीजा चार और आय जासी, इयै वास्तै टैम-बे-टैम को हिळावां नी । —वरसगांठ

लिगदौ—स. पु. (स्त्री. लिगदी) १ दुर्बल, अशक्त ।

२ गिलै चूर्ण का लौंदा ।

लिगन, लिगन्न—१ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

उ०—**लिगन्न** नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, सजाये ठीकांणा बेहू ब्याव का सामान । हगामा होकबा राग रग रा हमेस हुवै । अठी जान वाळी सोभा बणावै आजान । —बादरदांन दधवाड़ियौ

२ देखो 'लगन' (रू भे.)

लिगरियौ—१ देखो 'लगरघौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिगरू' (अल्पा, रू भे.)

उ०—ताहरां ईयै कही, 'साह तौ **लिगरू** रावळ जी रा खानैजाद छै सुकुनां री ईहा कही सु इहा री सोय हती पण ईहा भरीयै दरबार कही, इतरी इणा माहै चूक छै । —वरसै तिलोकसी री वात

२ एक प्रकार का बरसात मे होना वाला पौधा या घास विशेष ।

अल्पा,—लिगारियौ, लिगरघौ

लिगलिगाटिया-सं. पु.—१ बिलबिलाने की क्रिया।

उ०—माथै करोटिया, जकां में थोड़ो सामांन' र पूर-पल्लो मारग बैता-आदमियां नै लिगलिगाटिया करता कैता हा—"बाबूजी! आटो, येकांनै री आटो। भूखा हां दया करो।" —वरसगांठ

२ बक-झक।

लिगार, लिगारइ, लिगारि, लिगारी, लिगारं—देखो 'लगार' (रू. भे.)

उ०—१ मुकन' सुतन बळ मडक्रत, पड़ी न खड लिगार। 'रेणा-यर' 'रामंग' रू, सक हुवी गह सार। —रा. रू.

उ०—२ पाखलि करघा काठगढ खाई, नहीय लिगारइ माग। घोडा हाथी रहइ पाखरघा, किम लहैसइ लाग। —कां. दे. प्र.

उ०—३ हम सोई सत्ता सत्ता सोई हम हैं, ज्यूं अग्नि उस्ण इक सारी। सुखराम आपनां आप अनता, नहिं द्वेताद्वैत लिगारी —सुखरामजी महाराज

उ०—४ सु राव छोड़ करण पधारण लागा। तरै कूतरै कान फड़फड़ाया। तरै राव हेटा बैठा। लिगारै वळै उठीया तरै वळै कूतरै कान फड़फड़ाया। —राव लाखै री बात

लिगीक, लिगीयर—देखो 'लगार' (रू भे.)

लिग्तर—देखो 'लिगतर' (रू भे)

लिग्तरो—देखो 'लिगतर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—बूटी री नाव घोलतो घोलतो थोथोडी बेटी ई ढळग्यो कोई आध घडी रै उपरांत नाड देखतो देखतो वेदराज डोकरिया रा माथा में आवेस लिग्तरा री उतराई। —फुलवाडी

लिड़की-सं. स्त्री.—उद्दण्ड गाय के गले या सींगों से हर समय बंधी रहने वाली रस्सी।

लिड़ाणो, लिड़ाबो-क्रि. स.—१ बांधना या कसना।

उ०—सो किण भांति रा बाकरा जिके कडकती नळीरा, माहरै साद रा, मावळिए पेट रा, माडि बोर, काचर रा बरड़णहार, घणे कूंमट नै बावली री टीसीयां रा भाडणहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरणीमै रा बैसणहार, वालखसी बाकडा बिसे बोकडा, खोरडे खीलहरी रा चारीओडा, सौ ऊठा बिसे बोकडा मसका री भांति सो लिड़ाइ नै चातिआ छै। —रा. सा स.

२ लबखड़ से दग्ध करना, दागना।

लिचणी-स. स्त्री.—१ घुटने के पीछे का भाग जहां से पैर मोड खाता या झुकता है।

लिचपिच—देखो 'लचपच' (रू. भे.)

उ०—ल्यावणवाळा नै लिचपिच लापसी जी, काटणवाळां नै गुदळी खीर ओ क वरसै बरसोवण होळी पावणी जी। —लो. गी.

लिचपिचो—देखो 'लचपचो' (रू. भे)

लिचापिच्च—१ चिन्ता, उचाट।

उ०—लिचापिच्च लागी घडीताल भाजै, अही कोई रास्रै अठै अम्ह काजै। इसं संकटं जे जपै डैनराजै, सही पार पांमै तिके सुक्ख साजै। —ध. व. ग्रं.

लिच्छमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

लिच्छमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लिच्छमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण' (रू. भे.)

लिच्छमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लिच्छमीपति—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू भे.)

लिच्छमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू भे)

लिच्छवी-सं. पु.—१ एक ऐतिहासिक राजवश जिसका नैपाल, कौशल और मगध में राज्य था।

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

लिछपचती-वि—कोमल, मुलायम।

लिछमण, लिछमन—देखो लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—लिछमण बोलणा एक बार, म्हारी सिन्या का सिरदार। —गी. रां.

लिछमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे.)

उ०—१ म्हारै आगण आम, पिछोकडै मरवो यो घर सदा ए सुवा-वणो। तू तो चाल लिछमी जं घर चालां, जै घर रळी अै वधामणा। —लो. गी.

उ०—२ मोटियार हाथा पर थुकावतो रैतो, सो वास दातारी रा गुण गावतो कैतो—लुगाई के है, लिछमी है। —दसदोख

उ०—३ एक दिन लिछमी सेठ नै दरसण दिया। कह्यो सात पीढिया सूं इण घर रो ठायो नी छोडियो। —फुलवाडी

लिछमीकंत, लिछमीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू भे)

लिछमीनाथ, लिछमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—हर मत छोडै रे हिया, लिया चहै जो लाह। दिल साचै तेडो दिया, नेड़ो लिछमीनाह। —र. ज. प्र.

लिछमीपति—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ०—मामूली मजूरी पर काम कर' र जिण मकान में एक मजूर रातवासो लेणो चावै है। उणनै घेरघा ऊभी ही लिछमीपतियां री टोळी अर खनै ऊभी ही वारी आपरी पुळिस। —रातवासो

लिछमीबर, लिछमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—धरणीतळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियो, सरणागत वच्छळ हेलो नह सुणियो। लिछमीबर छानू कानू लै लीनू, दीनन बधु हुय दीनन दुःख दीनूं। —ऊ. का.

उ०—२ मरै न जम नै भोग, डरै न किण सू देखजो। लिछमीवर रा लोग, मरै न जलमे मोतिया। —रायसिंह सांदू

लिछमीस—देखो 'लछमीस' (रू भे.)

उ०—लिछमीस रांम ग्रणभग लखौ, परमेस पाळ अन दीन पखौ। हर पाप ताप दुख-ताप हरी, तिण पांय रेण रिख नार तरी।
—र. ज. प्र.

लिछम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे.)

लिछम्मीकत, लिछम्मीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू भे.)

उ०—ज्वाळानळ जाळण काळ-जवन्न, कियौ मुचकंद हुकम्म किसन्न। बाणासुर छेद भुजा बळवत, कीधौ बोह चीर लिछम्मीकत।
—ह. र.

लिछम्मीनाथ, लिछम्मीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—नमौ बपु दीरघ वामन वेख, भिलंग पुरदर भाजण भेख। नमौ नरसिंघ लिछम्मीनाह, बिसभर बिट्ठल आदि बराह। —ह. र.

लिटणौ, लिटबौ—क्रि. अ. - लोट-पोट होना, लुटना।

उ०—ऊटड़ा उगाळी सारै, झोक लिटै फिर फिर चरै। इण घिटाळ घसकै घणेरा, गोळ टौळ मीगण करै। —दसदेव

लिटणहार, हारौ (हारी), लिटणियौ—वि.।

लिटिग्रोड़ौ, लिटियोड़ौ, लिट्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिटीजणौ, लिटीजबौ भाव वा.।

लिटियोड़ौ—भू का. कृ.—१ लोटपोट हुवा हुआ, २ लुटा हुआ.

(स्त्री. लिटियोडी)

लिता—देखो 'लता' (रू भे)

उ०—कहियौ मैं के कहूं किसूं अघौ ते कहियौ। लिता पान घनश्व रांम, छबकाळौ लहियौ। —र. ज. प्र.

लित्त—स. पु.—तुरन्त की लिपी हुई जमीन लांघकर आहार आदि लेने का दोष। (जैन)

लिद्ध—देखो 'लद्ध' (रू. भे)

उ०—इसीय वाच गयणह पडी, तउ मइ लिद्ध कुमारि, सत्यवती नांमि हुसिए संतण घर नारि। —सालिभद्र सूरि

लिप—स. स्त्री.—१ प्लीहा, तिल्ली।

२ देखो 'लप' (रू. भे.)

लिपटणौ, लिपटबौ—क्रि. अ.—देखो 'लपटणौ, लपटबौ' (रू. भे.)

उ०—लोहा लिपट्या काठ नूं, धूम रह्या जळ मांय। बडा डूबण नांहि दै, जाकी पकडी बांय। —अग्यात

लिपटणहार, हारौ (हारी), लिपटणियौ—वि०।

लिपटियोड़ौ, लिपटियोड़ौ, लिपट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपटीजणौ, लिपटीजबौ—भाव वा०।

लिपटाड़णौ, लिपटाड़बौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लिपटाड़णहार, हारौ (हारी), लिपटाड़णियौ—वि।

लिपटाड़िग्रोड़ौ, लिपटाड़ियोड़ौ, लिपटाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपटाड़ीजणौ, लिपटाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लिपटाड़ियोड़ौ—१ देखो 'लिपटायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिपटाड़ियोड़ी)

लिपटाणौ, लिपटाबौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पल्लव फूल वसन आभूसण, इतर पराग लगायौ। बेल्यां मन सजधज अलबेल्या, पति तरु सू लिपटायौ। —लो. गी.

उ०—२ हल्दी तौ पीठी म्हारै अंग लिपटाई, महदी सूं राच्या म्हारा हाथ। छपन कोड जादू जान पधारया, दूल्हौ श्रीनंदकवार।
—मीरां

लिपटाणहार, हारौ (हारी), लिपटाणियौ—वि०।

लिपटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपटाईजणौ, लिपटाईजबौ—कर्म वा०।

लिपटायोड़ौ—देखो 'लपटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटायोड़ी)

लिपटावणौ, लिपटावबौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लिपटावणहार, हारौ (हारी), लिपटावणियौ—वि०।

लिपटाविग्रोड़ौ, लिपटावियोड़ौ, लिपटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपटावीजणौ, लिपटावीजबौ—कर्म वा०।

लिपटावियोड़ौ—देखो 'लपटायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री लिपटावियोडी)

लिपटियोड़ौ—देखो 'लपटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लिपटियोडी)

लिपणौ, लिपबौ—क्रि. अ.—किसी वस्तु का किसी तरल पदार्थ से लिपना या पुतना।

उ०—सील सतोस सदा रहै सीतल, आनद रूप रहै जांह तांही। पेम प्रवाह भयै तन भीतरि, और विकार लिपै नही कांही।
—अनुभववांणी

लिपणहार, हारौ (हारी), लिपणियौ—वि।

लिपग्रोड़ौ, लिपयोड़ौ, लिप्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपीजणौ, लिपीजबौ—भाव वा.।

लिपत—देखो 'लित्त' (रू. भे.)

उ०—पसरे तीनो लोक मे, लिपत नहीं धोखै। सो फल लागौ सहज में, सुदर सब लोकै। —दादूवांणी

लिपरको—सं. पु. [अनु.] १ भय या चिंता के कारण विशिष्ट अंगो में स्फुरण होने की क्रिया। लिप-लिप होने की क्रिया।

उ०—ओथि कुवर जी पधारै हुंता चढिया तठै सुरतांण, प्रिथीराज,

अमरी, गोपाळदास री ब्यारै दीठा भर मदनै री माडि फाटि भर लिपरका करणौ लागी । —द. वि.

२ देखो 'लपरको' (रू भे.)

लिपळी-सं स्त्री.—१ लार, थूक ।

२ टक्के धेले पर सभोग कराने वाली, व्यभिचारिणी ।

उ०—सरती सदनामी चाहत नहीं चोरी, हरती बदनामी गावत नहि डोरी । चित भव भाडा री चरचा नहि चावै । लिपळी राडा री अरचा नहि लावै । —ऊ. का.

लिपळौ-वि. (स्त्री. लिपळी) १ जो कभी किसी बात की ओर कभी अन्य बात की तरफ झुकने वाला, अस्थिर दिमाग वाला ।

उ०—दुनिया दातारा झूकारा देवै । लिपळा लोका नै लेखै कुण लेवै । —ऊ. का.

२ अविवेकी, मूर्ख ।

३ व्यभिचारी, जार ।

लिपवाड़णौ, लिपवाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लिपवाड़णहार, हारौ (हारी), लिपवाड़णियौ—वि. ।

लिपवाड़ियोड़ौ, लिपवाड़ियोड़ौ, लिपवाड़्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लिपवाड़ीजणौ, लिपवाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लिपवाड़ीयोड़ौ—देखो 'लिपायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपवाड़ियोड़ी)

लिपवाणौ, लिपवाबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लिपवाणहार, हारौ (हारी), लिपवाणियौ—वि. ।

लिपवायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लिपवाईजणौ, लिपवाईजबौ—कर्म वा. ।

लिपवायोड़ौ—देखो 'लिपायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लिपवायोड़ी)

लिपवावणौ, लिपवावबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाणौ' (रू. भे.)

लिपवावणहार, हारौ (हारी), लिपवावणियौ—वि० ।

लिपवावियोड़ौ, लिपवावियोड़ौ, लिपवाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिपवावीजणौ, लिपवावीजबौ—कर्म वा० ।

लिपवावियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लिपवावियोडी)

लिपसा—देखो 'लिप्सा' (रू. भे.)

लिपाई-स. स्त्री—१ लीपने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त कार्य का पारिश्रमिक या मजदूरी ।

लिपाड़णौ, लिपाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लिपाड़णहार, हारौ (हारी), लिपाड़णियौ—वि० ।

लिपाड़ियोड़ौ, लिपाड़ियोड़ौ, लिपाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिपाड़ीजणौ, लिपाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लिपाड़ियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपाड़ियोडी)

लिपाणौ, लिपाबौ-क्रि. स. (लिपणौ क्रि. प्रे. रू.) किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ से लेप कराना, पुताना ।

ज्यू—चौक लिपाणौ, घर लिपाणौ ।

उ०—लिपइ तावनिकदनि, वदनि देहु । निज निज नाथ सभारिय, नारिय नवलउ नेहु । —जयसूरि

लिपाणहार, हारौ (हारी), लिपाणियौ—वि० ।

लिपायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिपाईजणौ, लिपाईजबौ—कर्म वा० ।

लिपवाड़णौ, लिपवाड़बौ, लिपवाणौ, लिपवाबौ, लिपवावणौ, लिपवावबौ, लिपाड़णौ, लिपाड़बौ, लिपावणौ, लिपावबौ—रू० भे०

लिपायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी तरल पदार्थ से लेप कराया हुआ, पुतवाया हुआ ।

(स्त्री लिपायोडी)

लिपावणौ, लिपावबौ—देखो लिपाणौ, लिपाबौ (रू. भे.)

लिपावणहार, हारौ (हारी), लिपावणियौ—वि० ।

लिपावियोड़ौ, लिपावियोड़ौ, लिपाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिपावीजणौ, लिपावीजबौ—कर्म वा० ।

लिपावियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. लिपावियोडी)

लिपि-स. स्त्री [स.] १ वर्णाक्षर लिखने का ढग, लिखावट ।

उ०—लिपि लापर लेख लिखावन की, दुनिया विधि देख दिखावन की, परमातम को नही पावन की, वक्र वृत्तिय ब्रह्म बतावन की । —ऊ का.

२ लेख, हस्तलेख ।

लिपिभेद-स स्त्री.—७२ कलाओ मे से एक ।

उ०—दडलक्षण, रत्नपरीक्षा, कनक परीक्षा, टक परीक्षा वस्त्र-परीक्षा, लिपिभेद । —व स.

लिपियोड़ौ-भू. का कृ.—१ तरल पदार्थ से लिपा हुआ, पुता हुआ ।

लिपी-स. स्त्री—देखो 'लीपी' (रू. भे.)

लिप्त-वि. [स.] १ पुता हुआ, लिपा हुआ २ ढका हुआ, छिपा हुआ । ३ लगा हुआ, सलग्न ।

रू भे—लिपत

लिसर-स. स्त्री. [अनु] १ चलते समय फटी-पुरानी जूती से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—बापड़ी लिखर-लिखर कित्ता कोस सूं चलायनै आयो, उल्दी सू सीदौ देय उणनै सीख देवौ। —फुलवाडी

२ फटी पुरानी जूती।

लिखा—सं. स्त्री.—समय का एक मान जो प्राय एक मिनिट के बराबर होता है। (ज्योतिष)

लिप्सा—स स्त्री. [सं.] १ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा या अभिलाषा।

२ लालच, लोभ।

रू. भे.—लिपसा

लिप्सु—वि.—लोलुप, लालची।

लिफाफौ—सं. पु. [अ. लिफाफ] १ कागज का बना वह थैला जिसमे पत्र अथवा अन्य सामान डाला जा सके।

उ०—कारड तौ केतौ फिरै, हर कोइ नै हकनाक। जिण री व्है जिणनै कहै, लेवै लिफाफौ राख। —अग्यान

२ लाक्षणिक अर्थ मे ऊपरी तडक-भडक, बाह्य आडम्बर।

लिबरल—वि [अं] ऊंचे दिल का, असंकीर्ण।

उ०—अर इण वात माथै घर रा मिनखा मे फट पडग्यौ। दो दळ वणग्या है। एक लिबरळ अर दूजौ कजरवेटिव। —भ्रमर चूनड़ी

लिबाळी—देखो 'लबाळी' (रू. भे.)

लिबास—स. पु.—शरीर पर धारण करने के वस्त्र, पोशाक विशेष।

उ०—वांका लिबास तेरा सब जांनी घोडा बे। पायकी पनियाइया वीछु डाक बे। —रसीले राज

रू. भे. लवेस, लिवास

लियण—वि.—लेने वाला।

उ० —१ भगवानदास भाराथ भल्ल, 'वगड़ी' तखत आखाडमल्ल। लांगुडौ हणु जिम लियण बाथ, ओगम लागै अणभग नाथ। —गु. रू. बं.

उ०—२ परभोम पचावण, घर दियण, जम लियण, कळायरौ मोर। —रा. सा. सं.

रू. भे.—लिअण

लियणौ, लियबौ—देखो 'लैणौ,लैबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ढाढी एक संदेसडउ, ढोलइ लगि लइ जाइ। कण पाकउ करसण हूअउ, भोग लियउ घरि आइ। —ढो. मा.

उ०—२ आगणि जळ तिरप उरप अलि पिग्रति, मरुत चक्र किरि लियत मरू। रामसरी खुमरी लागी रट, घूमा माठा चद घरू। —वेलि

उ०—३ अंवा मदिर अति घणउ, आवि सुहावा कन। बीजळि लियइ झबूकड़ा, सिहरा गळि लागत। —ढो. मा.

लियणहार, हारौ (हारी), लियणियौ—वि.।

लियणिओड़ौ, लियणियोड़ौ, लियण्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लियणीजणौ, लियणीजबौ—कर्म वा.।

लियाकत—स स्त्री. [अ.] १ योग्यता, काबिलियत।

२ सामर्थ्य, शक्ति, उत्साह।

३ विद्वत्ता।

४ व्यवहार आदि मे शिष्टता, भद्रता, शालीनता।

रू. भे.—लयाकत, ल्याकत

लियाज—देखो 'लिहाज' (रू. भे)

लियोड़ौ—भू का. कृ.—१ लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ. २ हाथ मे पकड़ा हुआ, हस्तगत ३ खरीदा हुआ. ४ अधिकार या कब्जे में किया हुआ. ५ धारण किया हुआ ६ उधार के रूप में प्राप्त किया हुआ. ७ वहन किया हुआ. ८ पहुचाया हुआ. ९ सेवन किया हुआ, खाया हुआ।

(स्त्री. लियोडी)

लिराड़णौ, लिराड़बौ—देखो लिराणौ, लिराबौ' (रू. भे.)

लिराड़णहार, हारौ (हारी), लिराड़णियौ —वि।

लिराड़िओड़ौ लिराड़ियोड़ौ, लिराड़्योड़ौ—भू का कृ.।

लिराड़ीजणौ लिराड़ीजबौ—कर्म वा.।

लिराड़ियोड़ौ—देखो 'लिरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिराडियोडी)

लिराणौ, लिराबौ—कि स.—किसी पदार्थ को लेने में प्रवृत कराना।

२ किसी वस्तु को हस्तगत कराना।

३ कटाना, कटवाना।

उ०—तठा पछै कितरै हेक दिने राव मंडळीक री नाई नागही रै गांव गयौ हुतौ। तिण कना नागही बेटा री बहु पदमणी रा नख लिराया। —नैणसी

लिराणहार, हारौ (हारी), लिराणियौ—वि.।

लिरायोड़ौ—भू का. कृ.।

लिराड़णौ, लिराड़बौ, लिरावणौ, लिरावबौ—रू. भे.।

लिरायोड़ौ—भू का. कृ—१ प्राप्त कराया हुआ २ खरीदवाया हुआ. ३ धारण कराया हुआ. ४ अधिकार या कब्जे मे कराया हुआ।

लिरावणौ, लिरावबौ—देखो 'लिराणौ, लिराबौ' (रू. भे.)

लिरावणहार, हारौ (हारी), लिरावणियौ—वि.।

लिराविओडौ, लिरावियोड़ौ, लिराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिरावीजणौ, लिरावीजबौ—कर्म वा.।

लिरावियोड़ौ—देखो 'लिरायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लिरावियोडी)

लिलड़ी—देखो 'लीली' (रू. भे.)

उ०—बागो सोवै पाट को ए लिलड़ी हरे हरे सूत की, पीळै पीळै पाट की, घोर मखतूळ को, बादस्या नबाब म्हारो दुलीराजा, निरखण आई हो राज। —लो. गी.

लिलवट—देखो 'निलं' (रू. भे.)

उ०—भंवारं हो भंवारो गवरळ हे फिरै, हो जी वैरी लिलवट आंगळ च्यार, हे गवरळ रूड़ो हे नजारो तीखो हे नैणा रो। —लो गी.

लिलांम—देखो 'लीलांम' (रू. भे.)

उ०—जब लू मिल नांम तिलोचन बोल्यो, भांमण भीयड होम भिड़ै। करवा ग्रह काज इसो मोय आगळ, मांणस कोय लिलांम मिळै। —भगतमाळ

लिलाड़—देखो 'ललाट' (रू. भे)

उ०—१ जिण दीठां अतर न मावै खिण रो, इण मूछा री होड करै इसूं मूंडो किणरो। एक मिळै है लेख्यो, लिलाड़ देखो मावै अरघ चंद देखो। —र हमीर

उ०—२ लिलाड़ में सळ घाल्यां बीद आकडा री जोड-तोड बिठाव तो हो कै बीदणी बेहल री चादणी उघाड़ बारै जोयो। चिळको पड़ै जेडो आकरो तावडो। —फुलवाडी

लिलाड़ी—देखो 'ललाट' (अल्पा, रू. भे)

उ०—सो रन मे एक जवान रूपवंत भला स्वभावां बडी लिलाड़ी भगवांन मिळियो। —नी प्र

लिलाट, लिलार—देखो 'ललाट' (रू. भे)

उ०—१ मथुरा में कुब्जा कर राखी, म्हाजन की सी हाट। केसर चंदन लेपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट। —मीरां

उ०—२ बस्यो लिलाट राहु विग्रहतें, संकर भयक न राखि सकेह। सरणाई 'खेता' सीसोदा, लाल केणी नह कीयो लेह। —लाला हाडा री गीत

लिल्ला—क्रि. वि. [अ] ईश्वर के लिए, ईश्वर के नाम पर।

उ०—तोहीन अदालत अल-किलीक, लिल्ला वजूद है लासरीक। मालुम मुलायजे करहु माफ, आलिम हैं आलिमगीरआप। —ऊ. का.

लिवंग—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—साग सीसव सरघू घणा रै, बोर कदंब नारग नाग पुनाग रतांजणी रै, दीसता सार लिवंग। —कल्याण

लिव—सं. स्त्री—एकाग्रचित्तता से किसी बात की ओर ध्यान लगाना। ध्यान-मग्न होना।

उ०—१ पेम प्रीत का पागड़ा, लिव की कड़ लगाम। हरीया सासित, सुरति की, कीया निरत मुकांम। —अनुभववाणी

उ०—२ सता घर ही मे वइरागा, आपा उलट आप कु देखै, रहे रांम लिव लागा। —अनुभववांणी

रू. भे—लव।

लिवणो, लिवबो—देखो 'लंणो, लंबो' (रू. भे.)

उ०—१ तं तो सूतो नीद भरि, लिवै नचीतो घम। हरीया आया जोवता, एक जुरा एक जम। —अनुभववांणी

लिवणहार, हारो (हारी), लिवणियो—वि०।

लिविओड़ो, लिवियोड़ो, लिव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लिवीजणो, लिवीजबो—कर्म वा०।

लिवाड़णो, लिवाड़बो—देखो 'लिवाणो, लिवाबो' (रू. भे.)

लिवाड़णहार, हारो (हारी), लिवाड़णियो—वि०।

लिवाड़िओड़ो, लिवाड़ियोड़ो लिवाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

लिवाड़ीजणो, लिवाड़ीजबो—कर्म वा०।

लिवाड़ियोड़ो – देखो 'लिवायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिवाडियोडी)

लिवाणो, लिवाबो—क्रि. स.—१ लेने का कार्य अन्य से कराना।

२ हस्तगत कराना, पकड़ाना, थमाना।

३ मगाना।

लिवाणहार, हारो (हारी), लिवाणियो – वि.।

लिवायोड़ो - भू का. कृ.।

लिवाईजणो, लिवाईजबो—कर्म वा.।

लिवाड़णो, लिवाड़बो, लिवावणो, लिवावबो—रू. भे.।

लिवायोड़ो—भू का कृ.—१ लेने का कार्य अन्य से कराया हुआ. २ हस्तगत कराया हुआ, पकडाया हुआ, थमाया हुआ. ३ मंगाया हुआ।

(स्त्री. लिवायोडी)

लिवाळ – देखो 'लेवाळ' (रू भे.)

लिवावणो, लिवावबो—देखो 'लिवाणो, लिवाबो' (रू. भे)

लिवावणहार, हारो (हारी), लिवावणियो--वि०।

लिवाविओड़ो, लिवावियोड़ो, लिवाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लिवावीजणो लिवावीजबो – कर्म वा०।

लिवावियोड़ो—देखो 'लिवायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री लिवावियोडी)

लिवास—स. स्त्री.—१ छिपकली।

२ देखो 'लिबास' (रू. भे)

लिवासड़ो—देखो 'लिवास' (अल्पा. रू. भे.)

लिविंग—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—केवडीउ काथु लिविंग एलची बोश काठी जाइफल जावित्री करपूर कस्तूरी तणइ संयोगि चुमरां पानना बीड़ा इम सरव परिवार नइं भोजन तंबोल दीधा । —व. स.

लिखियोड़ौ—देखो 'लियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिखियोड़ी)

लिसब-सं. स्त्री.—यश, कीर्ति (ग्र मा.)

लिसोड़ा—देखो 'लसोड़ा' (रू. भे.)

लिह-वि.—चाटने वाला।

लिहणौ—देखो 'लैं'णौ' (रू. भे)

उ०—जीरण रिणउ खांघै पाजरै करि दीजइ, लिहणा देवा लोहडी यानी लाज न कीजइ, लेखउ करि लीजइ, राति जागीइ, दफ्तरी लिखइ । —व. स.

लिहणौ, लिहबौ-क्रि. स.—१ चाटना।

२ देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

उ०—वनीता-पति विदेस गय, मदिर मझे ग्रहरयणीए। बाळा लिहइ भुयंगो, कहि सुंदरि कवण चुज्जेण। —ढो. मा.

लिहणहार, हारौ (हारी), लिहणियौ—वि.।

लिहिग्रोड़ौ, लिहियोड़ौ, लिह्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिहीजणौ, लिहीजबौ—कर्म वा.।

लिहाड़ी-सं. स्त्री—मसाला पीसने की सिला।

लिहाज-सं पु. [अ.] १ आचार-व्यवहार में किसी के प्रति आदरवश रखा जाने वाला ध्यान, मान, मर्यादा।

उ०—लिहाज-लचका री की तौ माठ व्है। ग्रावै जिगनै ई हूंकारौ भर दो। —फुलवाडी

२ ध्यान, खयाल।

उ०—यूं मोनार री जात छाकटी गिणीजै। वां रै धंधै में सगी मा री ई लिहाज कोनी राखै। —ग्रमरचूनडी

३ सकोच।

४ लज्जा, शर्म।

५ पक्षपात, तरफदारी।

उ०—दीवाण जी रै हेलौ मारयां बिना कोई पंचायती करी तौ बारै जेड़ौ भूंडौ नी हैं। इण काम में कोई लिहाज नी बरतेला। —फुलवाड़ी

लिहाजा—देखो 'लेहाजा' (रू. भे.)

लिहाणौ, लिहाबौ-क्रि. स.—१ चटाना।

२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)

लिहाणहार, हारौ (हारी), लिहाणियौ—वि०।

लिहायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिहाड़णौ, लिहाड़बौ, लिहावणौ, लिहावबौ—रू० भे०

लिहाफ-स. पु [अ] १ सर्दी में ओढने का रूईदार मोटा भारी वस्त्र, रजाई।

रू. भे.—लेहाफ

लिहायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चटाया हुआ।

२ देखो 'लिखायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिहायोडी)

लिहालु-स. पु—कोयल।

उ०—कुडिनइ कारणि करि कुण, नर नींगमइ कोडि। लिहाला तणइ कारणइ कुण, ज्वालइ रे चंदन खोडकि। —मळयवदंती रास

लिहावणौ, लिहावबौ—१ देखो 'लिहाणौ, लिहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे)

उ०—देखि देखि न्रपनंदन दीसइ, एति सैन्य जिणि कीरति करि सीइ। चंद्र नांमु तुझ ग्राज लिहावउं, ताहरु यग्य समुद्रि वहावउं। —सालिसूरि

लिहावणहार, हारौ (हारी), लिहावणियौ—वि.।

लिहाविग्रोड़ौ, लिहावियोड़ौ, लिहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिहावीजणौ, लिहावीजबौ—कर्म वा०।

लिहावियोड़ौ—१ देखो 'लिहायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिहावियोडी)

लिहियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चाटा हुआ।

२ देखो 'लिखियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिहियोड़ी)

लींगटी-स. स्त्री.—१ रेखा, लकीर।

उ०—रिसता लोई री लींगटियां ग्राडी ग्रंवळी कुरपीड़ी ही —फुलवाड़ी

२ पंक्ति, लाइन।

३ रीति-रिवाज, प्रथा।

रू. भे—लिंगटी, लीगठी।

लींगी—देखो 'लूंगी' (रू. भे.)

लींड—देखो 'लीडौ' (मह. रू. भे.)

लींडी—देखो 'लीडौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

लींडौ-सं. पु.—१ मल-त्याग के समय बंधने वाली मल की बत्ती, विष्टा।

अल्पा.—लींडी
मह.—लींब
२ छोटे बच्चों में एक दूसरे को चिढ़ाते समय हाथ के अंगूठे का इशारा।
क्रि. प्र.—दिखाणी, बताणी

लींम—देखो 'लीन' (रू. भे)
उ०—भींणी माया लींम हुय, रही प्रांण सूं रचि। सिध सिन्यासी जोगमा, गए मुनि जन पचि। —अनुभववाणी

लींब-सं. पु.—१ नींबू, नींब
उ०—लींब लविंगह लसणीआ, लींबोई लोबांन। लूबठ लासा लींबक, लगिपगि लांबा पांन। —मा. कां. प्र.
रू. भे.—लीब

लींबड़ो-सं. पु.—देखो 'नीम' (अल्पा. रू. भे.)
उ०—१ लोक परासि लींबडु मधुरपणांनी माठि। काठि काठि कूपलि सिरइ, पणि अेकक क-काठि। —मा. का. प्र.
उ०—२ देवी बम्मरै डूगरे रत्न बन्नै, देवी धूंबडे लींबडे धन्न धन्नै। देवी भ्रमरै भाचरै छब्ब-छब्बै, देवी अबरै अंतरीखं अलंबै।। —देवि.

लींबक-सं. पु.—वृक्ष विशेष।
उ०—१ लींब लविंगह लसणीआ, लींबोई लोबांन। लूबट लासा लींबक, लगि पगि लांबा पान। —मा. कां. प्र.

लींबू-स. पु. [सं. नीम्बूक] नींबू।
उ०—आमइ नवी तिली नइ बिही, कोठी बड़ा तणी काचरी। आंबा सूरण केला हुआ, बीजोरां दाडम लींबूआ। —कां दे. प्र

लींबोइ-सं. स्त्री.—वृक्ष विशेष।
उ०—लींब लविंगह लसणीआ लींबोइ लोबांन। लूबट लासा लींबक, लगिपगि लांबा पांन। —मा. कां. प्र.

ली-सं पु.—१ भौंरा, भ्रमर। (एका.)
२ ईश्वर।
३ मिलन, संगम।
सं. स्त्री.—४ सखी, सहेली।
५ पृथ्वी।

लीअण—१ देखो 'लियण' (रू. भे)

लीक-सं. स्त्री.—१ लम्बा व पतला बनाया हुआ या अंकित किया हुआ चिह्न, लकीर, रेखा।
उ०—१ पइहिली ही पोति आणि गलै बांधी। ताकौ द्रस्टांत। जैसे कपोत कहतां कमेडा का कंठ की स्याह लीक देखीयै। —वेलि.
उ०—२ कंवर रै पलकां पीक, अधरां काजळ री लीक। आळस अंग भाल अलतारो रंग। —र. हमीर
२ सत्य वचन। (डि. को)
३ रास्ता, मार्ग।
उ०—लीक लीक गाडी वहै, कायर वनै कपूत। लीक तजै ऊबट वहै, सायर सिंघ सपूत।
४ पगडंडी।
५ सीमा, मर्यादा।
उ०—बंगलां'ळ प्रबळ मड वचळां, लाख उभै चढ़ि चल्लिया। मिटि जाणि लीक सातो महण, हैक समुन्दे हल्लिया। —रा. रू.
६ प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।
उ०—हूसक पाव हूमगत हसहम, अ्रसक अथा उदत। बाझ नारि कुल लीक विधुसक, कहत नपुंसक कंत। —ऊ. का.
७ प्रथा, रीति।
८ दोष, कलंक।
उ०—रांवण करतां राज, लीक लंका तै लागी। जीवतें किसनजी, द्वारका नगरी दागी। बाबा रवि चंद नह, राहु आवी नै रोकै। पाडव कोरव प्रसिद्ध, सहु पड़िया दुख सौकै। —ध. व. ग्रं.
९ गिनती, गणना।
१० मटियाले रंग की चिड़िया विशेष।
११ लम्बी व सकड़ी जमीन।
१२ देखो 'लीख' (रू. भे)
१३ देखो 'लीकी' (रू भे)
मुहा.—लोह री लीक=लोह की बनी रेखा, दृढ़ बात।
लीक कुटणी=पुरानी प्रथा पर चलना।
रू. भे.—लीह, ल्हीक
अल्पा. लीकटी लीकड़ी, लीगटी

लीकटो—देखो लीक' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—चिड़ी कमेडी चील, जूजळा गोह टिटणिया। सरप संवार सरीर, लीकड़ी कोर लिटणिया। —दसदेव

लीकड़ियो—१ देखो 'लीकी' (अल्पा, रू. भे.) (१)

लीकियो-स पु—१ लकड़ी पर लकीर या रेखा बनाने का औजार।
२ देखो 'लीकी' (अल्पा, रू. भे)

लीकी-सं. स्त्री.—१ संकडी व लम्बी कृषि उपयोगी भूमि का मालिक।
२ सकड़ी व लम्बी कृषि उपयोगी भूमि।
उ०—भीडर रा महाराज री मा बाई राज बाई जे मोटा पली तीनै लीकी पातसाह री दीवी है। —बां. दा. ख्यात
३ देखो 'लीक' (अल्पा, रू. भे.)

लीख-स. स्त्री [सं लिक्षा] १ जूं का अडा।

उ०—१ लारै बाळद री डेरी लीनोड़ी, दोळी दाळदरी घेरी दीनोड़ी। जूंवां लीखां रा जमियोड़ा जाळा, नीचा नमियोड़ा कड़ कोड़ा काळा —ऊ. का.

रू. भे.—लिकसा, लिक्स, लीक

लीखत—देखो 'लिखत' (रू. भे.)

लीखणौ, लीखबौ—देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

उ०—जद स्वामीजी बोल्यां; थारै बाप हुंडघा लीखी, थारै दादै हुंडघां लीखी, पाटा पाटी थेई संवेटघा कोई नही। —भि. द्र.

लीखीयौ—वि.—१ लिखा हुआ।

उ०—१ हरीया लीखीयौ भाग में, राम मता धन माल। एतौ नितप्रित सपजै, मेटै कौंण मजाल। —अनुभववांणी

लीग—स स्त्री. [अं.] दूरी का एक नाप।

लीगटी—देखो 'लीगटी' (रू. भे.)

लीड़ी—सं. स्त्री.—१ शरीर में दर्द के स्थान पर अग्निदग्ध लगाने की क्रिया या अग्निदग्ध से होने वाला निशान, चिन्ह, डाम।

रू. भे.—लीरड़ी।

२ रेखा, लकीर।

३ देखो 'लीरी' (अल्पा., रू. भे.)

लीड़ौ—सं. पु —देखो 'लीडी (मह, रू. भे.)

लीची—स. स्त्री.—१ एक सदा-बहार पेड़ जिसका फल मीठा होता है।

२ उक्त पेड़ का फल।

लीछम्मि, लीछम्मी - देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लीडर—स. पु. [अ.] मुखिया, नेता,

लीडीकट—वि.—रेखा के समान सीधा।

उ०—डार ग्रेकं पासं छं। ग्रेकल ग्रेक तरफ छं। सू ग्रेकल किण भातरो छं। जैरो बारह आंगळ लग लीडीकट छै। —गंगेव नींबावतरो दो-पहरौ

लीण—सं पु.—१ वर्षा ऋतु में आकाश में आच्छादित जल रहित बादल लीर।

उ०—१ राग सांमीर सारंग डांणी ग्रहे, बाइ ऊपडीया लीण जांणी वहे। —गु रू. ब.

उ०—२ जूमग्गो मुहे हुए दखणि जळा हीण। किरि बरखा रित चालिया, घणहर वूठै लीण। —गु. रू. ब.

२ उचित, योग्य।

उ०—लीण श्री अलीण, भीन चीन्ह तै लह्यो। लीण व्है अलीण, दोउ दीन तै गयौ। —ऊ. का.

३ देखो 'लीन' (रू. भे)

उ०—१ लीण हीण ज्या सौं गज लागै, ए कोई बळ साचूळ आगै। सेवै छत्रपति छोड समीसर, भोपै धजा जगत चै ऊपर। —रा. रू.

उ०—२ हंस गमणि हेजइं हीइं, राति दिवस सुख सग। रांणी लीण हुग्री तुरत, जिम चदन तरुहि भुजग। —प. च. चौ.

४ देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

लीणउ - देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

लीणता—देखो 'लीनता' (रू. भे.)

लीतरौ—देखो 'लिगतरौ' (रू. भे.)

लीद—सं. स्त्री—१ हाथी, घोड़ा, गधा आदि का मल।

उ०—१ हंसनै कंवण लागा—सेठा जे ताकड़ी चालणा सूं ई राजी व्हौ तौ तबेला में छोटा मोटा साठ घोड़ा घोड़ी है। नित दोनूं टक वांरी लीद जोख्या करो। फुलवाड़ी

मुहा.—लीद काडणी=कीसी को बुरी तरह पीटना, मारना।

रू. भे.—लाद

मह —लीदड़

लीदड़—देखो 'लीद' (मह., रू. भे.)

लीध, लीधुं, लीधु, लीधू, लीधौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—प्राणं सुर असुर नाग नेत्र नहि, राखियौ जइ मंदर रई। महण मथैमूं लीध महमहण, तुम्हा किणं सीखव्या तई। —वेलि

उ०—२ जिण राणी चवदै सुत जाए, सो पित हता तेज सवाए। दक्खिण लीध जीपि खग दावैं, कपाळिया भड तिकै कहावै। —सू. प्र.

उ०—३ खुरम प्रवाणा मेलिया, लीधा राठौडेय। 'गजबधौ' आयौ खडै, चडि तीन्है घोडेय। —गु. रू. बं.

उ०—४ 'केहर' 'अचळ' कमध तण, उर पण लीधौ एम। वरण त्रिविध्धि साह धड़, मरण तणौ द्रढ नेम। —रा. रू.

उ०—५ सुदरि चोरै मग्रही, सब लिया सिणगार। नक फूली लीधी नही, कहि सखि कवण विचार। —ढो. मा.

(स्त्री. लीधी)

लीधमिण—सं. स्त्री. [सं. ऋद्ध+मणि] १ मूंगा, प्रवाल। (अ मा.)

लीधियोड़ौ—देखो 'लियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लीधियोडी)

लीन—वि. [सं] १ बिल्कुल मिला हुआ, समाविष्ट।

२ अनुरक्त।

उ०—१ मीरा हरि मे लीन भई। सबकूं छांड भज्यौ साहिब कूं, गुरु की सरण गइ। —मीरां

उ०—२ कहा लीन सुकदेव था, कहां पीपा रेदास। दादू साचा क्यो छिपै, सकळ लोक परकास। —दादूवांणी

३ गुप्त, गायब।

उ०—जो कहां हिरण री खुरी, दीठा किणनूं सुहावै सुणताही लागै बुरी कदंब जो कहां समदरी सीप, तिका पिण न फाबै इणरै समीप। भेर जो मीठां छोटी सी मीन, तिका तो लाजां मरती हुई जल में लीन। —र. हमीर

४ किसी कार्य में निमग्न या तल्लीन।

उ०—१ सहज प्रमांणों सापरत, लहो एक रस लीन। मुकता चुगही हंस मिळ, मिळ बक चुनही मीन। —र. हमीर

५ चिपटाया हुआ, सटा हुआ।

६ देखो 'लीन्हो' (रू. भे.)

रू. भे.—लीण।

लीनता-सं. स्त्री.—१ लीन होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—लीणता।

लीनोड़ौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—लारै बाळद री डेरी लीनोड़ौ, दोळी दाळद री घेरी दीनोडो। जूंवा लीखा रा जमियोड़ा जाळा, नीचा नमियेड़ा कड़ कोड़ा काळा। —ऊ. का.

(स्त्री. लीनोड़ी)

लीनौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—मेरो मन हरी हर लीनौ राजा रणछोड। राजा रणछोड़ प्यार रंगीला रणछोड। —मीरा

लीन्ह, लीन्हउ, लीन्होड़ौ, लीन्हौ-भू. का. कृ. (स्त्री लीन्होडी) १ लिया हुआ।

उ०—१ लाखा एक लाख सा जो लाख मेछ देखे। लाख जोड लीन्हें यातें कोड कू न लेखे। —रा. रू.

उ०—२ रांणाजी विस रो प्यालौ भेज्यौ, म्हैं सिर लियौ चढाय। चरणाम्रत को नांम ज लीन्हौ, पीगी प्रेम अघाय। —मीरा

उ०—३ दादू नीकी बरियां आय करि, राम जप लीन्हा। आतम साधन सोध कर, कारज भल कीन्हा। —दादूवाणी

रू. भे.—लीण, लीणउ, लीध, लीधोडो, लीधौ, लीन, लीनोडो, लीनौ।

लीपणौ, लीपबौ-क्रि. स.—१ किसी तरल पदार्थ से लेप करना या पतली तह चढाना, पोतना।

उ०—१ घरि घरि के विखैं भीति। हींगुलुरी गारि सो लीपैं छै। फिटक की ईंटा सों भीति चुणैं छै। पाट बढीया छै सु चदण का छै। —वेलि

उ०—२ लीप्यौ-ढोळयो मोटो आंगणो, लुगाई-टाबर फिरै-घिरै सै हंसै बोले अर खेलै खावैं। —दसदोख

२ डूबना, लुप्त होना।

उ०—पिण कुमर ते नही राचसी, सुख माहे हो ग्रद्धि नहि थाय। जिम कमळ पांणी मे नीपजै, नही लीपै हो ऊंचौ रहिवाय। —जयवाणी

३ लिप्त होना।

लीपणहार, हारौ (हारी), **लीपणियौ** - वि०।

लीपियोड़ो, लीपियोड़ौ, लीप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपीजणौ, लीपीजबौ—भाव वा०।

लीपाड़णौ, लीपाड़बौ – देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपाणौ, लीपाबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे)

लीपाणहार, हारौ (हारी) **लीपाणियौ**—वि०।

लीपायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपाईजणौ, लीपाईजबौ—कर्म वा०।

लीपायोड़ौ – देखो 'लिपायोडो' (रू. भे)

(स्त्री लीपायोडी)

लीपावणौ, लीपावबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपावणहार, हारौ, (हारी), **लीपावणियौ**—वि०।

लीपाविप्रोड़ौ, लीपावियोड़ौ, लीपाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपावीजणौ, लीपावीजबौ—भाव वा.।

लीपावियोड़ौ—देखो 'लिपायोडो' रू भे)

(स्त्री लिपावियोडी)

लीपियोगूपियौ, लीपियोचूपियौ-वि.—लिपा-पुता, साफ-सुथरा।

लीपियोड़ौ-भू का. कृ.—१ लिपा हुआ. २ डूबा व छिपा हुआ. ३ लिप्त हुवा हुआ।

(स्त्री. लीपियोडी)

लीपी-स स्त्री.—१ किसी स्थान पर पानी के सूख जाने पर तले मे जमी हुई पपड़ी।

२ चूने के घोल को गड्ढे मे भरकर तैयार किया जाने वाला लेप।

रू. भे.—लिपी।

लीब – देखो 'लींब' (रू. भे.)

उ०—जउ तेहू मध्यस्थ कहवराइ तउ विख अनइ अम्रत तथा रत्न अनइ काच, आबउ अनइ लीब, साप अनइ फूलमाल, अघारउ अनइ अजआलू एहइ तोल तेहइ सरीखइ जि थिया। —सस्टीसतक

लीयण—देखो 'लियण' (रू भे.)

लीर-स. पु.—१ फटा हुआ, जीर्ण।

उ०—लीर-लीर व्हियोड़ौ कूघा वरणौ ई घाघरौ। —फुलवाड़ी

२ देखो 'लीरौ' (मह, .रू. भे.)

उ०—दु खी देख प्रभू द्रोपदी, दई चीर की लीर। दस हजार गज-बळ घटचौ, घटचौ, न दस गज चीर —अग्यात

लीरड़ी-सं. स्त्री.—देखो 'लीड़ी' (रू. भे.)

लीरड़ौ-सं. पु —देखो 'लीड़ी' (रू. भे)

उ०—सैंती सैंती पीड़ ताड़ौ, लपेट लकड़ी लीरड़ा। तीवे दिन वन पयांन करे त्याग दुवाई चीरड़ा। —दसदेव

लीरी-सं. स्त्री.—देखो 'लीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लीरौ-सं. पु.—१ वस्त्र का फटा, पुराना जीर्ण-क्षीण टुकड़ा, धज्जी।

उ०—१ कहै दास समरांम, हमैं तो चेतो बीरा। भूखां मरता मरौ, कमर में लटकै लीरा। —समराम

२ शरीर पर गर्म धातु से दागने पर बना हुआ चिन्ह, डाम।

३ ककड़ी, मतिरा आदि की फांक।

रू. भे.—लीड़ौ, लीर, लीरी, लीरड़ौ।

अल्पा.—लीड़ी, लीरड़ी, लीरी।

लीलंग-सं. पु.—१ हंस (नां मा.)

उ०—१ मांन सरोवर के मोळै भूल अनेक (क) लीलग आवै। —सू. प्र.

उ०—२ मोताहळ कमळ चुणतौ मांभी, असमरि मुंह साजतौ अरि। पै लीलंग 'पचायण' पेठौ, सेर तणैं दळ मानसरि। —पचायण करमसोत री गीत

उ०—३ भाखित वेद विचार, माळा अपकठ धरमधर आसन। चर थिर जत्रु दयाल, लीलंग वाहेणी नम। —मा. वचनिका

२ डिंगल के वेलिया साणोर (छोटा साणोर) छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे १६ लघु २४ गुरु कुल ६४ मात्राएं होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालो मे १६ लघु व २३ गुरू कुल ६२ मात्राए होती हैं।

वि.—लीला करने वाला।

रू. भे. - लीलग

लीलंगरित-सं. पु.—तोता, सुवा। (अ मा

लीलबर-स. पु. यौ. [सं. नील+अम्बर] नीला आकाश, नीलगगन।

उ०—मधुर बचन छबि चद मुख, ऊगमे उरज ऊतग। लीलबर ढाकै ललित, सुभ कंचन-गिर स्रग। —बगसीराम प्रोहित री बात

लील—देखो 'लीला' (रू. भे)

उ०—बसै न वाडी नाव न वासा, रहत उदास न लील निवासा। —अनुभववांणी

२ आनद, मगल, परमसुख।

उ०—रिखिदत्ता रांणी रूडी परि, पाल्यु निरमल सील रे। समयसुंदर कहइ मुगति पहूंती, लाधा अविचल लील रे। —स. कु

३ पानी पर जमने वाली काई।

४ हरियाली।

उ०—उन्हाळै दे ईल, लील चौमास खुलावै। सीयाळै न्यायास आखरयां सुखी सुळावै। —दसदेव

५ शरीर पर चोट या प्रहार से उभरा हुआ नीला चिन्ह।

उ०—दीवाण जी इण हालत मे काई जबाब देवता। ठौड़-ठौड़ लील जम्योड़ी। मूडौ सूज्योड़ौ। —फुलवाड़ी

६ श्याम स्तनो वाली गाय।

७ रग विशेष की घोड़ी।

८ सारस्वत नगर के वीरवर्मन राजा का पुत्र।

लीलग—देखो 'लीलग' (रू. भे.)

लीलगर—१ देखो 'नीलगर' (डि. को.)

उ०—१ हालौ न भुवाजी बाई चालो नी भतीजी आपां लीलगरां कै चाला मोरी भुवा ए, नींद घणेरी लीलगरी का बेटा भाई, मनै लीलौ डोरो रग दे ना बीरा मेरा रे, नीद घणेरी —लो. गी.

लीलगरी देखो 'नीलगरी'

उ०—लीलगरी का बेटा भाई, मनै लीलौ डोरो रंग दैना बीरा मेरा रे, नीद घणेरी। —लो. गी.

लीलगवाहणी-सं. स्त्री. यौ. [राज. लीलग+सं. वाहनी] हसवाहनी, सरस्वती (ह. नां मा.)

लीलड़-स पु.—ऊंट का एक रोग विशेष जिसमें ऊंट का मल या विष्टा पतला हो जाता है।

लीलड़ी-स स्त्री.—१ न्योहरा, खुशामद।

उ०—१ घरवाळा बासण तौ पड्या कूवा मे, पारकां रौ किसोक ओळभो आयौ। धण्या नै बुलाया, मूता हाथ जोड़'र गिड़गिड़ाया, लीलड़ी काढी। —दसदोख

उ०—२ भुवाळी खावतौ फिरै। घर-घर गेडा काटै। मिनखां नै रिरावै, लीलड़ी काढै। —दसदोख

उ०—३ ऊजळौ सुभाव, चड्‌ड चह्लो, गाव री बेटी पण सगळां सू गुघटौ। सूधी गऊ रा ऊपरला दात। किरगरांवती सी बोलै, लीलड़ी सी काढै। —दददोख

२ गहरे बैंगनी रंग का भ्रमर से कुछ बड़ा पक्षी जो फूलों की पत्तियां व पराग खाता है।

वि. वि.—यह पक्षी ग्रीष्म ऋतु में ही भारत मे आता है और सर्दी प्रारंभ होते ही उष्ण देशो मे चला जाता है। मादा लीलड़ी वैशाख से श्रावण तक पेड़ो की उच्चतम शाखा पर बय के नीड़ की तरह लटकता हुआ घोसला बना कर अडे देती है।

३ देखो 'लीली' (अल्पा, रू भे.)

उ०—लीलड़ी बाधो, भवर जी ल्हास पै जी, कोमी सेल धरी बम (अे जी अे) साळ आप पधारो मारूजी महल में जी। —लो. गी.

लीलड़ी—सं. पु.—१ सब्जी बनाने में प्रयुक्त होने वाला काला मोटा पापड़।
२ देखो 'नीली' (रू. भे.)
उ०—जिण घर धोडी लीलड़ी, ऊजळ चिनी नार। तिण घर सदा ऊजासणी, विवली तेल न बाळ। —अज्ञात

लीलणौ, लीलबौ—क्रि. अ.—नीला होना।
उ०—थांरी मारगियो लीलाणो। बरे पधारो हो राज, म्हारा साथीडा रै पावस मास प्रगटियो रे, काइ धरती उगळयो भंडार। —पाबू जी रा पवाडा
लीलणहार, हारौ (हारी), लीलणियौ—वि.।
लीलियोड़ौ, लीलियोड़ौ लील्योड़ौ—भू. का कृ.।
लीलीजणौ, लीलीजबौ—भाव वा.।

लीलपत—देखो 'लीलापत' (रू. भे.)

लीलभवाळ, लीलभुआळ, लीलभुवाळ—स. पु.—इन्द्र, सुरपति।
वि.—उदार, दातार।
उ०—१ पायै छंद प्रमोद रै, सोल मात्र सविसाळ। वाखांणै अठ-रह वरण, लखपति लीलभुआळ। —ल. पि.
उ०—२ दूजो भारमल तणो दीपक रीति री रखपाल। लाज घणा विरदाळ लाखो, भूप लीलभुवाळ। —ल. पि.
रू. भे.—लीलाभवाळ, लीलाभुआळ, लीलाभुवाळ

लीलरी—सं. स्त्री.—सल, झुर्री।
उ०—तेह पुरुस-अरजर हुवो जी सिथिल पड़ी छै जी काय। लीलरी पड़ी सरीर में जी चामड़ी हाड विराय। —जयवाणी

लीलवण—देखो 'नीलवण' (रू. भे.)

लीलविलास—सं. पु.—इन्द्र, सुरपति।
उ०—१ मागलि रहौ करि अरदास, जाहू भाण राउ लीलविलास। जउ साउर वडवांनल समइ, तउ कान्हउ तुरकानइ नमइ। —का. दे. प्र.
२ समुद्र, सागर।
३ अष्ट वर्ण सहित १२ मात्रा का छंद विशेष।
उ०—उगणत्रीस मात्रा उचित, जगण अंति पय जास। तवा इसी विधि आटको, लखपति लीलविलास। —ल. पि.
४ आनन्द, मगल।
उ०—जे विध सू यात्रा करै, सुर नर सेवक तास। राजसमुद्र गुप्तगावला, अविचल लीलविलास। —बू. स्तो
वि.—१ लीला करने वाला।
उ०—१ गायो रसायण लीलविलास, 'नाल्ह' कहइ सब पूरज्यो आस। रास रसायण उपजाई, गढ अजमेरा उतिम ठाई। —बी. दे.
२ दातार, उदार।
उ०—विदणां वरहास वगसै, वधारण जसवास। कुंअर देसल तणो काईम, वडो लीलविलास। —ल. पि.
रू. भे.—लीलाविलास

लीलांण—स. स्त्री.—हरियाली।

लीलांम—स. पु. [पुर्त्त, लेलम] १ वह सार्वजनिक बिक्री जिसमें अधिक कीमत बोलने वाले को वस्तु बेची जाती है। नीलाम।
२ इस प्रकार की चीज बेचने की क्रिया या भाव।
रू. भे.—नीलाम, ललाम, लिलाम

लीलांमघर—स. पु. यौ [पुर्त्त लेलम+राज. घर] १ वह स्थान जहां पर नीलाम की जाने वाली वस्तुओं की बोली लगायी जाती है जहा वह वस्तुएं रखी जाती हैं।
रू. भे.—'नीलामघर'।

लीलांमी—स. स्त्री.—१ नीलाम की जाने वाली वस्तु।
२ नीलाम करने की क्रिया या भाव।
रू. भे.—नीलामी।

लीला—स. स्त्री. [सं.] १ आनन्द, मौज।
उ०—१ मिर, संती जिणेसर सेवत ही सुख खाण। इण भव लहै लीला पर भव पद निरवाण। —ध. व. ग्र.
२ ऐसा कार्य जो केवल मन की उमंग से मनोरंजन के लिए किया जाय।
उ०—लखण बत्रीस सयुक्त। बाल लीला माहे राजकुंआरि दुलहिया रमै छइ। —वेलि
३ भगवान द्वारा विभिन्न अवतारो मे किए गये आचरण व कार्यों का प्रदर्शन या अभिनय करना।
ज्यूं—रामलीला, क्रस्णलीला।
४ रचना, बनावट।
उ० -१ कुदरत री इण लीला सू डरण री काइ जरूरत। —फुलवाडी
उ०—२ हीलाकर हिरणके ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नही लाधा। —ऊ. का.
५ चरित्रगान।
उ०—चाकर रहसूं बाग लगास्यूं नित उठि दरसण पास्यूं। ब्रंदावन की कुंज गलिन मे, तेरी लीला गास्यूं। —मीरां
६ नायिका का एक भाव, चेष्टा।
७ ईश्वरावतार द्वारा मनुष्योचित की जाने वाली क्रीडा
वि. वि.—भक्तिमार्ग के मतानुसार भगवान विभिन्न कार्य-सिद्धि हेतु या मनोरंजनार्थ अवतार धारण करके जो आचरण करते हैं उसे भगवान की लीला कहते हैं।

उ०—१ मणि ग्रहलोक प्रभा जग मंडित, इक पतनीव्रत धरम ग्रखंडित । कारज सुरा कर किय क्रीला, लीला समद मानखी लीला ।
—सू. प्र

८ विशेषक नामक छंद का दूसरा नाम ।

९ बारह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में एक जगण होता है।

१० एक प्रकार का वर्णवृत जिसके प्रत्येक चरण में भगण तगण और एक गुरु होता है ।

११ चौबीस मात्राओं का छंद विशेष जिसमे ७+७+७+३ पर विराम होता है और अन्त मे सगण होता है ।

१२ हरा घास ।

उ०—हीलाकर हिणकै ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नही लाधा । —ऊ का.

१४ निसाणी छंद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण दस गुरु और तीन लघु वर्ण हो ।

१५ पद्मराज की पत्नी जिसने अपनी पति की मृत्यु के पश्चात सरस्वती की कृपा से उसे पुनः जीवित किया ।

रू. भे.—लील ।

लीलाकरण–स. स्त्री.—स्त्रियो की ६४ कलाओ मे से एक ।

लीलाड़ी—देखो 'ललाट' (अल्पा., रू. भे)

उ०—पचै 'मुदधाड' पर 'बादरी' पीलाडी, कवर रै लीलाड़ी मांय करके । हारगा बीया सू हिलै ना हीलाडी, सीलाडी तो बिना नही सरके । —अमरदान लाळस

उ०—२ बा धणा देई हे सीख, मिरगानैणी राज । थारी ए लीलाड़ी ए प्यारी की पगथळी जी म्हारा राज । —लो. गी.

लीलाती–स. स्त्री. [स. लील्नायत] मनोरजन, आनन्द ।

उ०—महा कलपवृक्ष उल्हस पाम्या, आव्या माही क्षत्रि वराह । बाल मात्र वट सपुट पोढ्या लीलाती लक्ष्मीनाह ।
—रुक्मणी मगळ

लीलाधण–स. पु. यौ. [सं. लीला+राज. धण] १ भगवान, ईश्वर, लीला के स्वामी ।

उ०—१ लीलाधण ग्रहे मानुखी लीला, जगवासग वसिया जगति । पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतौ अनिरुध ऊखापति । —वेलि

लीलाधर–सं पु. यौ. [स. लीला+धर] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ जेह मगावू ते जई, सभाळ तू स्वामि । लीलाधर ते त्याविसिद्द, थीर म था तु थामि । —मा का प्र

लीलापत, लीलापति–स. पु. यौ. [सं. लीला+पति] १ लीला स्वामी, ईश्वर ।

२ इन्द्र ।

रू. भे.—लीलपत ।

लीलापुरसोत्तम–सं. पु.—श्री कृष्ण ।

लीलाबर–स पु. यौ. [स. लीला+वर] १ लीला स्वामी, ईश्वर ।

लीलाभवाळ, लीलाभुआळ, लीलाभुवाळ—देखो 'लीलभुवाळ' (रू. भे.)

उ०—खट भाख जाण तप तेज भाण । विप्र गऊ पाळ, लीलाभुआळ । —र. वचनिका

लीलामय–वि. [स] क्रीड़ा युक्त, लीला युक्त ।

लीलावंती—१—एक वृक्ष विशेष ।

उ०—लाज लज्जाळू लक्ष्मणा, लूगी लसन लवगि । लीलावंती, लुकड़ी, लाहि लवीरी संगि । —मा. का. प्र

लीलावती–स. स्त्री.—१ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की कन्या का नाम, जिसने अपने नाम पर गणित नामक पुस्तक बनायी थी ।

वि. वि —कुछ इसे भास्कराचार्य की पत्नी भी मानते हैं ।

२ एक देवी का नाम ।

३ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।

४ बत्तीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमे लघु गुरु का विचार नहीं होता ।

उ०— गुरु लघु विण नियम तीस बिमत्ता, लीलावती गुरु अंत कहै । जो रघुवर गावै सब सुख पावै, निभय जिका जम ताप नहै ।
—र. ज. प्र.

लीलावर–वि —लीला करने वाला ।

स पु.—१ विष्णु २ श्रीकृष्ण ।

लीलाविलास 'देखो 'लीलविलास' (रू. भे.)

लीलासच–वि.—१ क्रीडायुक्त, अद्भुत खेल करने वाला ।

उ०—किणै न दीठौ कानवौ, सुण्यौ न लीलासंच । आप कुंवारा ऊखलै बीजा छोडण बंध । —नागदमण

लीलासागर–स. पु. यौ [स लीला+सागर] लीला का समुद्र, भगवान कृष्ण ।

उ०—श्रीमद्भागोत स्रवण सुणी, रसना रटत हरी । मन डूबत लीलासागर मे, देही प्रीत धरी । —मीरां

लीली साड़ी–स स्त्री —१ देव स्थान पर जाते समय दुल्हा दुल्हिन को गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

लीलोती, लीलोतरी, लीलोत्री—१ देखो 'नीलोतरी' (रू भे.)

उ०—१ लीलोती चौबीस मांगी, गिणी न छोटी गावडी । जद नीम सगळासूं पैली, थारी ही सुभ नावडी । —दलदेव

१ हरी घास ।

लीलौ–स पु —१ हरा घास ।

उ०—हीलाकर हिणकै ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नही लाधा । —ऊ. का.

२ हरा रंग ।

उ०—पांन फूल नूं जीव तूं, कोमल केलि समान । ललूड़ी अति लाडली, लालन लीला पांन । —जयवाणी

३ देखो 'नीलो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ लीला किम ढीलो बहै, पथ पयाणो दूर । गोख उडीके गोरड़ी, जोबन में भरपूर । —अग्यात

उ०—२ कै लीला के कागड़ा करड़ा हरड़ा केक । मुसकी नुकरा मेटिया इसड़ा तुरग अनेक । —पे. रू.

उ०—३ आवे कुण लड़ ऊपरै, दीसे किणरो डोळ । जायो लीलो जोरवर, पीळो बधियो पोळ । —मुकनदांन खिडियो

उ०—४ गावे सखी बधावणा, मोत्यां भर भर थाळ । आंक दियो सिर ऊपरै, लीलो सुत लकाळ । —मुकनदान खिडिया

उ०—५ सैल करण गयो सायबो, हुय लीलो असवार । कै जगळ की मिरगल्यां, म्हारो लियो छै स्यांम बिलमाय । — लो. गी.

उ०—६ आव् लीली ऊपरा, लेवूं हाथ लगांम ।

—मुकनदांन खिड़ियो

उ०—७ लीली घोड़ी हांसली, अलबेली, असवार । कड़या कटारी, बांकड़ी, सोरठड़ी तरवार । —लो. गी.

उ०—८ उणहीज बंदूकां गिलोलां सूं मुरगाव्यांनै चोटां कीजै छै । तमासो हुयनै रह्यो छै । सिकार मुरगाबी अेकठी कर तळावसू बाहर पधारजं छै लीलीपोतां दूर कीजै छै ।

—गंमेव नीबावतरो दो-पहरो

(स्त्री. लीली)

लीलोचेर—देखो 'नीलोचेर'

उ०—बीदणी अपूठी होय मूडो उघाड़ बैठगी । ऊंची जोयो । पतळी-पतळी लीलोचेर लड़ाकूम सांगरियां ई सांगरिया ।

—फुलवाड़ी

लीबड़ो—देखो 'नीम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—साकर सेलडी नो स्वाद तजी नै, कडवो लीबडो घोळयां रे । चांदा सूरज नूं तेज तजीने, आगिया सगा थे प्रीत जोड़्यां रे ।

—मीरां

लीवलीण—देखो 'लयलीन' (रू. भे.)

उ०—हरिजन हरि को लाडलो लीवलीण न दूजा लाड । झूठे झामरझोर मे, उळझ रहे नर अध । —अनुभववांणी

लीह—देखो 'लीक' (रू. भे.)

उ०—१ लीह नदी छाडण लगी लागा छोळ उलार । लागा कांमण बाहरा, लागा गावण मलार । —र. हमीर

उ०—२ लीह नहीं लज्जा नही, नही रंग नहिं राग । ते मांणस हम छडियै, जिम अंधारै भाग । —अग्यात

उ०—३ अणबीह तूं नरसीह आोपै, लीह संतां नकूं लोपै । ईस वात अथात हाथ, श्रवण रंकां आथ । —र. ज. प्र.

लीहटी—देखो 'लीकटी' (रू. भे)

उ०—पंथी हाथ सदेसडउ, धण बिललंती देह । पगसूं काढइ लीहटी, उर आसूआं भरेह । —ढो. मा.

लीहवणी, लीहवबौ—क्रि. स.—झींगुर का ध्वनि करना ।

उ०—१ भीमरी भमती लीहवइ, स्रांवण नी चकचाळ । उहां सिर तिहा अमीयमइ, विरहणीआ मनि काळ । —मा. कां. प्र.

लुंकड़ी, लुंकडो—१ एक वृक्ष विशेष ।

उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूणी लसन लवंग । लीलावंती लुकडी, लाहि लवीरी सगि । —मा. कां. प्र.

२ देखो 'लाकी' (अल्पा , रू भे.)

उ०—घेरै सिकार मांहि ससा लुंकड़ी सीह गोझ स्याळ रींछ अनेक हिरण आदि दे अर भेळा हुया छै । —द. वि.

लुंकारियौ—देखो 'लूकार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बठै अघबूढी सी एक धिराणी, लाल लुंकारियौ ओढ्यां चूलै कनै बैठी कायर छोलै है । —दसदोख

लुंकालु—वि. कृश, पतला ।

उ०—स्वान तणी जिह्वा समांन पाय तल कूरमोन्नत चरण रक्तोत्पल सद्रश नख, हसगति, बइठी रोमराइ, गंभीर नाभि' मध्यदेसि चफली, ईट सद्रस कटि, लुकालु पेट, सुवरण्ण सद्रस सरीर कांति ।

—व स.

लुंगाड़, लुगाड़ौ—वि.—बदमाश, धूर्त, चालाक ।

लुंगी—देखो लूगी' (रू. भे.)

उ० —१ ओथि पातिसाह जी लघु-सका की । करि अर लुंगी पहिरी पहिर अर नदि माहै पधारिया । —द. वि.

उ०—२ कचू नीलक को कीयो, उपरि चीर उढाइ । लिघो लुंगी भाति को, सुदर ने बहोत सुहाय । —व. स.

लुंचन—सं स्त्री. [स. लुंचनम्] बाल उखाड़ने या नोंचने की क्रिया या भाव ।

रू. भे.—लोच

लुंचित—वि —१ नोंचा हुआ ।

उ०—दाडिमी बीज त्रिसतरिया दीसै निउछावरी नांखिया नग । धरणे लुंचित खग फळ चूंबित, मधु मुचति सीचति मग ।

—वेलि

२ उखेडा हुआ. ३ काटा हुआ ।

लुंचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ उखेडा हुआ. २ काटा हुआ. ३ नोंचा हुआ ।

(स्त्री. लुंचियोड़ी)

लुंछणौ, लुंछबौ—देखो 'लूंछणौ, लूंछबौ' (रू. भे)

उ०—खीरोदक **लुंछणइ** करी राजा, नाखइं चिहूं दिसि फिरी तिणि रसि रंजिउ भणइ नरेस, मूंकउ नाच हुआ आदेस।
—हीराणंद सूरि

लुंजी—देखो 'लूंजी' (रू. भे)

उ०—फीणा तौ बाट्या बनडा **लुंजी** रौ लचकौ इसड़ौ कलेवौ थारी माताजी करावै। —लो. गी

लुंठक—वि.—लुटेरा।

उ०—प्रहार पड़िया लग्ग मौ, **लुंठक** पडिया लग्ग। मह पड पाणि न मांगियो, मर मर ले खग मग्ग। —रेवतसिंह भाटी

लुंठि, लुंठी—स. स्त्री.—१-३६ प्रकार के दडायुधों मे से एक।

उ०—१ चक्र धनुस वज्र खड्ग कृपाणी तोमर कुंत त्रिसूल सक्ति पासु मुग्दर मसिका भल्ल भिंडमाल गुर्ज **लुंठि** गदा संख परमु पटसु यस्टि। —व. स.

२ घोड़े के लोटने की क्रिया।

लुंणणौ, लुणबौ—देखो 'लुलणौ, लुलबौ' (रू. भे.)

उ०—जां वाह्यौ ताही **लुंण्यौ** विण वाह्यौ न लुणाय।
—विल्होजी

लुंणणहार, हारौ (हारी), लुंणणियौ—वि.।
लुंणग्रोड़ौ, लुणियोड़ौ, लुण्योड़ौ—भू का. कृ.।
लुंणीजणौ, लुणीजबौ—कर्म वा.।

लुंणाणौ, लुंणाबौ—देखो 'लुणाणौ, लुणाबौ' (रू. भे.)

उ०—जा वाह्यौ ताही लुण्यौ विण वाह्यौ न **लुंणाय**।
—विल्होजी

लुणाणहार, हारौ (हारी), लुंणाणियौ—वि.।
लुंणायोड़ौ—भू. का. कृ.।
लुंणावीजणौ, लुंणावीजबौ—कर्म वा.।

लुंणायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फसल कटवाई हुई।

(स्त्री. लुंणायोड़ी)

लुंणावणौ, लुंणावबौ—देखो 'लुणाणौ, लुणाबौ' (रू. भे.)

लुंणावणहार, हारौ (हारी), लुंणावणियौ—वि.।
लुणावियोड़ौ, लुंणाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुंणावीजणौ, लुंणावीजबौ—कर्म वा.।

लुंणावियोड़ौ—देखो 'लुंणायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुणावियोडी)

लुंणियोड़ौ—देखो 'लुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुंणियोड़ी)

लुंपट—देखो 'लंपट' (रू. भे.)

उ०—संक्रम सुभ खस्टी द्रस्टी लुभ देती। **लुंपट** संपुट लरख घूंघट पट लेती। लुळ कर लकुटी ले त्रकुटी सळ लाती। भूली बाघण जी भ्रकुटी भळकाती। ऊ. का

लुंबक—सं. पु.—१ फलित ज्योतिष के २८ योगो में से एक योग।

लुंबभुंबाळी—१ देखो 'लूंबलूंबाळी' (रू. भे.)

लुंबणौ, लुंबबौ—देखो 'लूंबणौ, लूंबबौ' (रू. भे)

उ०—१ भरिया रंग सुरंग भाद्रवइ, **लुंबीया** ताइ ग्रंबर लगस। ग्रहर डसण ग्रोपिया ग्रनोपम, डसण जुडीया तबोळ रस।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ छिलता पहाड़ २ पाखती, ग्रघर झरंता चरण घरइ। ग्रंब तणा द्रख **लुंब** ग्राविया, कुंजर विच सारसी करइ।
—महादेव पारवती री वेलि

लुंबणहार, हारौ (हारी), लुंबणियौ—वि।
लुंबियोड़ौ, लुबियोड़ौ, लुंब्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुंबीजणौ, लुबीजबौ—भाव वा.।

लुंबाळौ, लुबालौ—वि. (स्त्री. लुबाळी) १ ग्रारामदायक।

उ०—कठै प्रीत साधा तणी, कठै राण्या रौ हेज जी। ग्रठै धरती सोवणी, कठै **लुंबाली** सेज जी। —जयवांणी

२ झूमा हुग्रा।

३ सूत या रेशम के धागों के साथ पिरोए हुए लाल व मोतियों से युक्त गुच्छा।

रू. भे.—लूंबाळौ।

लुंबनी—स. स्त्री [स] १ कपिलवस्तु के पास का एक वन जहां गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुंबेक—स पु.—वार व नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगो मे से पद्रहवा योग।

लुंमणौ, लुंमबौ—देखो 'लूंबणौ, लूबबौ' (रू. भे.)

उ०—रेसमी गुल.ब गेंद केवड़ा समुहेह छै। ग्रौर लीलडबर तरोवर पर बेलिडिया **लुंम** रहे छै। —बगसीराम प्रोहित री बात

लुंमणहार, हारौ (हारी), लुंमणियौ—वि.।
लुमिग्रोड़ौ, लुमियोड़ौ, लुम्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुमीजणौ, लुमीजबौ—भाव वा.।

लुंमियोड़ौ—देखो 'लबियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुमियोड़ी)

लु—सं स्त्री --१ पृथ्वी। (एका.)

सं पु—२ माली ।

३ काटना ।

४ संसार ।

वि.—भक्षण करने वाला ।

लुग्राब–सं. पु. [ग्र.] १—चिपचिपा पदार्थ ।

लुग्राबदार–वि. [ग्र + फा.] १ लेसदार, चिपचिपा ।

लुग्रारियौ, लुग्रारौ–स. पु. (स्त्री लुग्रारी) १ गाय का छोटा बच्चा ।

२ देखो 'लुहार' (ग्रल्पा., रू. भे.)

लुग्राळ–वि.—उष्ण ज्वाला की लपट ।

उ०—कहर बाज लोहाळ लुग्राळ झाटक कटक, तुटता वराळां जोम तार्थ । ग्ररक ग्रीखम तणो तेज तपीयौ 'ग्रजन' मेघ पाळागरां तणै माथै । —नाथौ सांदू

लुंजन–सं. पु.—एक प्रकार का कल्पित ग्रंजन जिसको ग्रांखों मे डालने से डालने वाले को सब कुछ दिखता है, परन्तु उसे कोई नही देख सकता ।

लुकंदर—१ देखो 'लकूंदर' (रू. भे.)

लुक–वि.—१ तेज प्रज्वलित ।

२ लुप्त, छिपा हुग्रा । (ग्र. मा)

लुकड़ी—देखो 'लांकी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ बाट काटे मंजारड़ी, सांमही छीक हुणह कपाळ । ग्राडी लुकड़ी ग्रावज्यो, गोरड़ी कउ प्रीय पाछौ हो वाळ । —बी दे.

लुकट–सं. पु. [सं. लकुट] १ डंडा, लकड़ी ।

२ बांसुरी ।

लुकणछाई–सं. स्त्री.—बच्चों का एक देशी खेल, जिसमे एक दल दूसरे छिपे हुए दल की तलाश करता है ।

लुकणौ, लुकबौ–क्रि. ग्र. [स. लुक] १ किसी गुप्त स्थान मे रहना या होना ।

उ०—१ वांरै विस्वास रा सगळा ग्रसवार ग्राप ग्रापरी ठांणी भेल्यां लुक्योड़ा बैठा हा । —फुलवाडी

उ०—२ करणौ फुल्यौ नीं समावै है, मन मन मे घणौ राजी हुवै है । ग्राखा कांम ग्रापरी कोटडी मे लुक-लुक करै है । —दसदोख

२ किसी वस्तु की ग्रोट या ग्राड मे ग्राने से दिखाई न देना ।

उ०—१ इण सारू म्हारा गाघरा रै ग्रोळै लुक जाग्रो नहीं तौ वैरी री कांई विसवास ग्रठै ग्रायनैं मार नांखै । —बी स टी

उ०—१ राता हव थोडी रही, बातां वह निसतार । सातां उठ सहेलियां, लुकौ कनातां लार । —मयाराम दरजी री बात

२ ग्रदस्य होना, मिटना ।

उ०—१ तेल-साबण लगावै, बंग-सलाजीत खावै, ग्रर घोटा पीवै है तो ही बुढापौ-वैरी लुक्यौ नीं चावै । —दसदोख

उ०—२ इण विध ग्रापरै पगां में लोगां नै माथौ निवाता देख्या, तौ कंवर री लुक्योड़ी जोस पाछौ बावडियौ । —फुलवाडी

उ०—३ दिवलौ वडी व्हैताई जिण भात लुक्योड़ो ग्रंधारौ साग ई प्रगट व्है जावै, उणी भात ग्रा सुणताई कवर री मूंडौ काळी धाक पडग्यौ । —फुलवाड़ी

४ बद होना, मिलना (पलक का)

उ०—भिडिया रत रण कुच भडा, दुरसहि रीभ दियेह । लुकी पलक तिण लाजहू, हव फिर घरत हियेह । —र. हमीर

लुकणहार, हारौ (हारी), लुकणियौ—वि० ।

लुकिग्रोड़ो, लुकियोडो, लुक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लुकीजणौ, लुकीजबौ—भाव वा० ।

लुक्कणौ, लुक्कबौ—रू० भे० ।

लुकधुको—देखो 'लुगधुगो' (रू. भे.)

लुकमान–स. पु. [ग्र. लुकमान] १ कुरग्रान मे वर्णित एक प्रसिद्ध वैद्य व वैज्ञानिक ।

उ०—कीधी लुकमांन स्रीहता ग्रवाजा नाळवाळी कुहा, छोहामाळ वाळी गुजा ऊतारै छाकोट । तसा प्रथीनाथ सोरभखी नराताळ-वाळी, चाड छाती छुटै प्रळै काळ वाळी चोट ।

—चुडौ जी बारहठ

२ तोप ।

उ०—इनने लुकमांन डकार लय, उडि धूम घरा ग्रसमान गयं । चहुँ ग्रोर नरुकन के दळयं, ऊलटै मनु सिंधु हिलोर लयं ।

—ला. रा.

३ बंदूक ।

लुकमीचणी–स स्त्री.—१ बच्चो द्वारा खेला जाने वाला ग्रांख-मिचौनी का खेल ।

उ०—१ इण सासरियै भाई रै साथै पैं'ली वार ग्रठै ग्राई तौ म्हनै ग्रो लखायौ के म्हैं लुकमींचणी री रमत रमू हू । —फुलवाड़ी

उ०—२ साथणिया री भूलरौ भाई-भतीजा नाडी री पाळ, गीत, गड्डा, ढूलिया भुरणौ लुकमींचणी—ग्रै सगळा सुख छिटकाय इण धणी री हाथ भाल्यौ । मा री खोळौ छोड पराया घर री हर करी ।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—लुकलुकमीचणी ।

लुकमौ–सं. पु. [ग्र लुक्म.] १ ग्रास, निवाला ।

उ०—१ भगड़ा तन भुकमाह, सोख न लुकमा साभिया । तुकमां पर तुकमाह, पतसाही पावै 'पता' । —जुगतीदान देथौ

उ०—२ ले लीधा लुकमाह, ग्रकल सला ग्रवसाण रा । तिण पुळ रा तुकमाह, पावै ग्रब लग त 'पता' । —जुगतीदांन देथौ

लुकम्मीनाळ—देखो 'लुकमांन' (२)

उ०—कड़क्कं लुकम्मीनाळां भड़क्कै गिरंद काळा, सोह सूरा फड़क्कै फीफरा सांडीस। पत्रांजं खड़क्कं पंगी धड़क्कै कायरां प्राण, बड़क्कै उरेब छुडा रडक्कै भू सीस। —बीमनजी

लुकलुकमींचणी—देखो 'लुकमीचणी' (रू भे)

उ०—तिण वखत इण मातरी समै है, पड़ताला पड़ती अमी नीठ खमै है। अठै बीज जिका आभानूं धमै है, किनां लुकलुकमींचणी री रामत रमै हैं। —र. हमीर

लुकवेस-स. पु.—कुंज (अ. मा.)

लुकसाज-स. पु.—चमकाया व सिझाया हुआ विशेष प्रकार का चमड़ा।

लुकाड़णौ, लुकाड़बौ—देखो 'लुकाणौ, लुकाबौ' (रू. भे)

लुकाड़णहार, हारौ (हारी), लुकाड़णियौ—वि०।
लुकाड़ियोड़ौ, लुकाड़ियोड़ौ, लुकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुकाड़ीजणौ, लुकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लुकाड़ियोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुकाड़ियोड़ी)

लुकाणौ, लुकाबौ-क्रि. स.—१ किसी गुप्त स्थान में रखना।

उ०—सात ताळा जड़चा ऊडोडा भवारा में मजूस लुकायोड़ौ है। —फुलवाड़ी

२ किसी वस्तु की आड या ओट में छिपाना।

उ०—म्हारी मरजी रा खास विस्वासी असवारा नै पांच-पांच, सात-सात री टोळियां वणाय नाकै रै नाकै ठौड़ ठौड़ लुकाय नै बैठांण दूंला। —फुलवाड़ी

३ अदृश्य करना, मिटाना।

४ गुप्त रखना।

पछै मासी उणनै डोकरा डोकरी रै जीमण वाळी सगळी बात मांडनै बताई। उछांट धुराधुर री बात उण सूं नी लुकाई। —फुलवाड़ी

लुकाणहार, हारौ (हारी), लुकाणियौ—वि०।
लुकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुकाईजणौ, लुकाईजबौ—कर्म वा०।
लकोणौ, लकोबौ, लकोवणौ, लकोवबौ, लुकाड़णौ, लुकाड़बौ, लुकावणौ, लुकावबौ—रू० भे०।

लुकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी गुप्त स्थान मे रखा हुआ। २ किसी वस्तु की आड या ओट मे छिपाया हुआ। ३ अदृश्य किया हुआ, मिटाया हुआ। ४ गुप्त रखा हुआ।

(स्त्री. लुकायोड़ी)

लुकावणौ, लुकावबौ—लुकाणौ, लुकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मिनख री भूख भागै इणी खाठी दुनियां में डाडाळ मै आपरौ जीव लुकावण री ई ठौड़ नीं लाधी। —फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी कह्यौ—भला आदमिया, आ भीडवाळी बात वळै काई है। ओळियाकडा, बातां लुकावण री थारी आ कांई कुबाण है? —फुलवाड़ी

उ०—३ म्हैं म्हारा मन सूं साची बात कीकर लुकावतौ। —फुलवाड़ी

लुकावणहार, हारौ (हारी), लुकावणियौ—वि०।
लुकावियोड़ौ, लुकावियोड़ौ, लुकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुकावीजणौ, लुकावीजबौ—कर्म वा०।

लुकावियोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुकावियोड़ी)

लुकियोड़ौ-भू का. कृ.—१ किसी गुप्त स्थान में रहा हुआ। २ किसी वस्तु की आड या ओट में आने से दिखाई न दिया हुआ। ३ अदृश्य हुवा हुआ, मिटा हुआ.

(स्त्री. लुकियोड़ी)

लुक्कणौ, लुक्कबौ—देखो 'लुकणौ, लुकबौ' (रू. भे.)

उ०—गूदळ व्योम ढंकै गरद, रवि लुक्कै चूर्मां रवण। आलम्म पयाणौ एण पर, कोप तेण झल्लै कवण। —रा. रू.

उ०—२ सीह किसी साराह सरभ रव सुणै सळक्कै। एकळ की ओपमा, लडै भागै यह लुक्कै। —रा. रू.

लुक्कणहार, हारौ (हारी), लुक्कणियौ—वि०।
लुक्कियोड़ौ, लुक्कियोड़ौ, लुक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुक्कीजणौ, लुक्कीजबौ—भाव वा०।

लुक्कियोड़ौ—देखो 'लुकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुक्कियोड़ी)

लुक्ख, लुक्खौ, लुख—देखो 'लूखौ' (रू. भे.)

उ०—१ आप निमित्त कढियो बाहिर, अथवा न काढ्यौ बहार। तीऊं खातै ऊवरै, पत वलै लुख आहार। —जयवांणी

उ०—२ लुख आहारी निकचनी गरव स्लाघावंत। अबूज पेट भरा कह्या, वलि वलि भगवत। —जयवांणी

लुखौ-वि.—देखो 'लूखौ' (रू. भे.)

उ०—१ लूण अलूंणौ घ्रत लुखौ, सील तेज पावक सरस। नव नाथ सिद्ध पूछै 'अलू', जोग स्रंगार क वीर रस। —अल्लूनाथ जी कवियो

लुगड़ौ—देखो 'लूगड़ौ' (रू. भे.)

लुगड़ियौ—देखो 'लूगड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

लुगड़ौ—देखो 'लूगड़ौ' (रू. भे.)

लुगधुगौ-वि. (स्त्री. लुगधुगी) कान्तिहीन, शोभाहीन।

उ०—पण राजाजी रै डर री ई पार नीं ही। वां री लुगधुगौ मूंडौ किणी री निजर सूं ई छांनी नीं रह्यौ। —फुलवाड़ी

२ कम पानी की या लपलपी सब्जी।

रू भे.—लुकधुकौ।

लुगदी-सं. स्त्री.—पदार्थ विशेष को सिला पर किसी तरल पदार्थ के साथ बांट कर या पीस कर बनाया हुआ लौंदा।

मुहा.—कूट'र लुगदी करणी=बुरी तरह पीटना।

लुगदी लागणी=किसी को कटु अप्रिय वचन कहना।

मह —लुगदौ।

लुगदौ-सं. पु.—देखो 'लुगदी' (मह., रू. भे.)

लुगाई-स. स्त्री.—१ स्त्री, औरत।

उ०—१ लुगाई रै रूप री अर पुरस रै प्रेम री था इण तौ छेहली मरजादा। —फुलवाड़ी

उ०—२ गाळ लुगायां गावही, नर मुख उचत न गाळ। अमल गाळ मनावर कर, का सुभ वचन उगाळ। —बां. दा.

२ पत्नी।

उ०—पूरा सौ रिपिया री मेळ। दोनूं लोग लुगायां रै हरख री पार नीं। —फुलवाड़ी

रू. भे.—लोगाई

अल्पा.,—लुगावड़ी, लोगावड़ी

लुगावड़ी—देखो 'लुगाई' (अल्पा., रू. भे.)

लुघ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मैं कब लुघ दीरघता जानि, का मुक्ति मांन बडाई ठांनि। मैं कब साझें असट जोग, मैं कब नानां करत भोग।

—अनुभववाणी

लुघता—देखो 'लघुता' (रू. भे.)

उ०—बडा होंन कू सब खसै, लुघता विरळा कोय। हरीया लुघता बाहिरी, राम न परसन होय। —अनुभववाणी

लुघवी—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मुहरि मंति लुघवी गुरभक्ति, बार विचार बितांण। पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनांण। —ल. पि.

लुघसंधानिक-स. पु.—१ तीर चलाने में दक्ष, कुशल।

उ०—तेहे घोडे किस्या किस्या खित्री चडीया। पंचवीस बरस अणहरा। पंचास बरस मांहि। लुघसंधांनीक विराग्रिवीर। —कां. दे. प्र.

लुघु—देखो 'लघु' (रू. भे.)

लुड़णौ, लुड़बौ-क्रि. अ.—मुड़ना, हटना।

उ०—इण दिस 'अजन' लिया दळ आयौ, सांभर बाळै कोट सभायौ। कर्यौ मुहमेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड़ मुड़ गयौ कोट मिठ लीधौ। —रा. रू.

लुड़कणौ, लुड़कबौ—देखो लुढकणौ, लुढकबौ' (रू. भे.)

लुड़कणहार, हारौ (हारी), लुड़कणियौ—वि०।

लुड़कियोड़ो, लुड़कियोड़ो, लुड़क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़कीजणौ, लुड़कीजबौ—भाव वा०।

लुड़काड़णौ, लुड़काड़बौ - देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लुड़काणहार, हारौ (हारी), लुड़काणियौ—वि०।

लुड़काड़ियोड़ो, लुड़काड़ियोड़ो, लुड़काड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़काड़ीजणौ, लुड़काड़ीजबौ—कर्म वा०।

लुड़काड़ियोड़ो—देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लुडकाड़ियोड़ी)

लुड़काणौ, लुड़काबौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लुड़काणहार, हारौ (हारी), लुड़काणियौ—वि०।

लुड़कायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़काईजणौ, लुड़काईजबौ—कर्म वा०।

लुड़कावणौ, लुड़कावबौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लुड़कावणहार, हारौ (हारी), लुड़कावणियौ—वि०।

लुड़काविंयोड़ो, लुड़कावियोड़ो लुड़कायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़कावीजणौ, लुड़कावीजबौ—कर्म वा०।

लुड़कावियोड़ौ—देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री लुडकावियोड़ी)

लुड़कियोड़ो—देखो 'लुढकियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लुडकियोड़ी)

लुड़की-सं. स्त्री.—दही में बनी हुई भांग।

लुड़खुड़ाणौ, लुड़खुड़ाबौ—देखो 'लडखड़ाणौ, लड़खड़ाबौ' (रू. भे.)

लुड़खुड़ाणहार, हारौ (हारी), लुड़खुड़ाणियौ—वि०।

लुड़खुड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़खुड़ाईजणौ, लुड़खुड़ाईजबौ—भाव वा०।

लुड़खुड़ायोड़ौ—देखो 'लडखड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुडखुडायोड़ी)

लुड़णौ, लुड़बौ देखो 'लुढणौ, लुढबौ' (रू. भे.)

लुड़णहार, हारौ (हारी), लुड़णियौ—वि०।

लुड़ियोड़ो, लुड़ियोड़ो, लुड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़ीजणो, लुड़ीजबो—भाव वा० ।

लुड़ाड़णो, लुड़ाड़बो—देखो 'लुढाणो, लुढाबो' (रू. भे.)

लुड़ाड़णहार, हारो (हारी), लुड़ाड़णियो—वि० ।

लुड़ाड़ियोड़ो, लुड़ाड़ियोड़ो, लुड़ाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लुड़ाड़ीजणो, लुड़ाड़ीजबो—कर्म वा० ।

लुड़ाड़ियोड़ो—देखो 'लुढायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़ाड़ियोड़ी)

लुड़ाणो, लुड़ाबो—देखो 'लुढाणो, लुढाबो' (रू. भे.)

उ०—चित गयो बहुं चालि दिस, एक पड़ो प्रणराय । हरीया वाड़ी फूल ज्यू, लेज्यो पींण लुड़ाय —अनुभववाणी

लुड़ाणहार, हारो (हारी), लुड़ाणियो—वि० ।

लुड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लुड़ाईजणो, लुड़ाईजबो—कर्म वा० ।

लुड़ायोड़ो—देखो 'लुढायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़ायोड़ी)

लुड़ियोड़ो—देखो 'लुढियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़ियोड़ी)

लुड़ींब-वि.—प्रिय, प्यारा ।

उ०—अट्ठं पहर अरस में, लुड़ींबा आहीन । दादू पर्से तिन्ह कै, असा खबर डीन्ह । —दादूवांणी

लुचाई, लुच्चाई—सं. स्त्री.—१ धूर्तता । २ नीचता । ३ कमीनापन ।

उ०—पण एक बात कांनजी रै बड़ी जोर की ही, वा श्रा कै.वानै लुच्चाई लफगाई अर चोरी जारी सू बड़ी चिढ़ ही ।

लुच्चो—वि. [स. लुच्] (स्त्री. लुच्ची) १ दुराचारी, कुमार्गी, लंपट ।

उ०—लुच्चा ललचावै लालच धन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण लिण लागै । —ऊ. का.

२ चोर, उचक्का ।

उ०—जिण भांत जहर सूं जहर दबै उणी ज भांत ए चोर गुंडा पुलिस सूं दबै । पुलिस जे मारकूट नी करै तो ए लुच्चा लफगा आभै रै फांडो कर दे । —अमर चूनडी

३ दुष्ट, कमीना ।

४ ढोंगी, पाखंडी, लफगा ।

लुटकणियो—स. पु.—किसी किसी बकरी के गर्दन के नीचे लटकने वाला अंग ।

लुटणो, लुटबो—क्रि. अ.—१ लुट जाना, लूटा जाना ।

उ०—उघड़ी छिब अदभूत, लुटी छिब लाज री । नोबत धुरी निहंग, मदन महाराज री । —र. हमीर

२ किसी प्रिय वस्तु का हाथ से निकल जाना ।

३ चोर या डाकू द्वारा लूटा जाना ।

४ परेशान होना, बरबाद होना ।

उ०—तलबां सूं लुटता तिकै मेट करी मां-बाप । कासीदी कोसां मुजब, 'पातल' रो परताप । —जुगतीदान देथो

५ शयन करना ।

उ०—अद कूख मे लुटिया बेटा ई आमळा रा गुलाम व्हेगा तो थै जैमतिया क्यू म्हारो ध्यांन राखै । —फुलवाड़ी

५ उपभोग करना, आनद लेना, रसास्वादन करना ।

उ०—२ इण भात मदन रस लुटिया, छछोहा छूटिया । गुलाब कळी बिकसी, भवर गुंजार निकसी । —र. हमीर

६ देखो 'लोटणो, लोटबो' (रू. भे.)

उ०—१ मा री आदेस सुणतांई छवूं बेटा मलापता आय उण रै पगा मे लुटण लागा । —फुलवाड़ी

उ०—२ परम गुरा के सरण में रहस्या, परणांम करा लुटकी । मीरा कै प्रभु गिरधरनागर जनम मरण सू छुटकी । —मीरां

लुटणहार, हारो (हारी), लुटणियो—वि० ।

लुटियोड़ो, लुटियोड़ो, लुट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लुटीजणो, लुटीजबो—भाव वा० ।

लुट्टणो, लुट्टबो—रू० भे० ।

लुटाणो, लुटाबो—क्रि. स. (लुटणो क्रि. का प्रे. रू.) १ किसी को ऐसी परिस्थिति मे डालना कि वह लूटा जाय ।

२ अपनी वस्तु व माल को दूसरों के समक्ष इस प्रकार डाल देना कि वह उसका अपने मनमाने ढंग से अधिकार कर सके, प्रयोग कर सके ।

३ बरबाद करना, अपव्यय करना ।

४ किसी वस्तु को सस्ती कीमत पर बेचना ।

५ दिल खोल कर दान देना, बांटना ।

उ०—रुपिया मुहर लुटाई रात, भगत हुआ सगळा परभात । निरख निरख दळ सिमरै नांम, राधा गोविंद सीतारांम । —रा. रू.

६ लुटने मे प्रवृत्त करना ।

७ बच्चे को देवता के चरणों में लुटाना ।

८ जमीन पर लोट-पोट कराना ।

लुटाणहार, हारो (हारी), लुटाणियो—वि० ।

लुटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लुटाईजणो, लुटाईजबो—कर्म वा० ।

लुटावणो, लुटावबो—रू० भे० ।

लुटायोड़ो—भू का. कृ.—१ किसी को ऐसी स्थिति में किया हुआ कि वह लुट जाय. २ अपनी वस्तु या सामान, दूसरे के समक्ष इस

प्रकार रखा हुआ कि वे मनमाने ढग से उसको प्रयोग मे ले ३ अपव्यय किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ सस्ती कीमत पर औरों को अपनी वस्तु दी हुई. ५ खुले दिल से बाटा हुआ, दान दिया हुआ ६ लोटने मे प्रवृत किया हुआ. ७ छोटे बच्चों को देवताओ के समक्ष लुटाया हुआ, ८ जमीन पर लोट-पोट कराया हुआ.

(स्त्री लुटायोड़ी)

लुटावणौ, लुटावबौ—देखो लुटाणौ, लुटाबौ' (रू भे.)

उ०—घर घर ओघट घाट, डाट मिस दीह कुटावै। दिल नहिं लेवै दाट, लाट गज हाट लुटावै। —ऊ का.

लुटावणहार, हारौ (हारी(, लुटावणियौ—वि० ।

लुटाविओड़ौ, लुटावियोड़ौ, लुटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लुटावीजणौ, लुटावीजबौ—कर्म वा० ।

लुटावियोड़ौ—देखो 'लुटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुटावियोड़ी)

लुटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ वह अवस्था या स्थिति जिसमे कोई प्रि५ वस्तु हाथ से छीनी गई हो. २ चोर या डाकू द्वारा लूटा हुआ. ३ अपव्यय किया हुआ, बर्बाद किया हुआ ४ अपनी वस्तु किसी को सस्ती कीमत पर दी हुई. ५ खुले दिल से बाटा हुआ, दान दिया हुआ।

६ देखो 'लोटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुटियोड़ी)

लुटेरौ—वि.—वह जो लूट पाट करता हो, डाकू, बागी।

लुट्टणौ, लुट्टबौ—देखो 'लुटणौ, लुटबौ' (रू भे)

उ०—स्रोण के फुहारे आसमान को छुटैं, लगी घख जमीं पर लोटए ज्यूं लुट्टैं। ऐसैं किसबूका हुनर करि मुजरे को आवै। कड़ै सूंनै की गुरज इनामूं में पावै। —सू प्र.

लुट्टणहार, हारौ (हारी), लुट्टणियौ—वि. ।

लुट्टिओड़ौ, लुट्टियोड़ौ, लुट्टयोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लुट्टीजणौ, लुट्टीजबौ—भाव वा. ।

लुट्टियोड़ौ—देखो 'लुटियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लुट्टियोड़ी)

लुडणौ, लुडबौ—देखो 'लुढणौ, लुढबौ' (रू. भे.)

उ०—लै मुख उडत नाग जिम लुडियौ, औ सिध सिंघल दीप दिस उडियौ। दीप सिंघल पदमण दरसाई, आकरखण मत्र पढै उडाई। —सू प्र.

लुडणहार, हारौ (हारी), लुडणियौ—वि. ।

लुडिओड़ौ, लुडियोड़ौ, लुडयोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लुडीजणौ लुडीजबौ—भाव वा. ।

लुडियोड़ौ—देखो 'लुढियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लुडियोड़ी)

लुढकणौ, लुढकबौ—क्रि अ.—१ गेंद की तरह बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना।

ज्यू—डूगर माथै सू भाटौ लुढकणौ।

२ गुडक जाना।

३ मर जाना।

४ परीक्षा मे असफल होना।

लुढकणहार, हारौ (हारी), लुढकणियौ—वि. ।

लुढकिओड़ौ, लुढकियोड़ौ, लुढक्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लुढकीजणौ, लुढकीजबौ—भाव वा. ।

लढकणौ, लढकबौ, लुड़कणौ, लुड़कबौ—रू. भे. ।

लुढकाड़णौ, लुढकाड़बौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लुढकाड़णहार, हारौ (हारी), लुढकाड़णियौ—वि. ।

लुढकाड़िओड़ौ, लुढकाड़ियोड़ौ, लुढकाड़योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लुढकाड़ीजणौ, लुढकाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लुढकाड़ियो ़ौ—देखो लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुढकाडियोडी)

लुढकाणौ, लुढकाबौ—क्रि. स.—१ किसी को इस प्रकार चलाना या गति देना कि वह गेंद की भाति चक्कर खाता हुआ नीचे चला जाय।

२ गुडकाना, लुढकाना ।

३ मराना।

४ परीक्षा मे असफल कराना।

लुढकाणहार, हारौ (हारी), लुढकाणियौ—वि. ।

लुढकायोड़ौ—भू का. कृ. ।

लुढकाईजणौ, लुढकाईजबौ—कर्म वा ।

लुडकाडणौ, लुडकाडबौ, लुडकाणौ, लुडकाबौ, लुढकाडणौ, लुढकाडबौ, लुढकावणौ, लुढकावबौ—रू. भे. ।

लुढकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ इस प्रकार चलाया या गति दिया हुआ कि वह गेंद की तरह चक्कर लगाता चला गया हो. २ गुड़काया हुआ, लुढकाया हुआ. ३ परीक्षा मे असफल किया हुआ।

(स्त्री लुढकायोड़ी)

लुढकावणौ, लुढकावबौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लुढकावणहार, हारौ (हारी), लुढकावणियौ—वि. ।

लुढकाविओड़ौ, लुढकावियोड़ौ. लुढकाव्योड़ौ भू का. कृ. ।

लुढकावीजणौ, लुढकावीजबौ—कर्म वा. ।

लुढकावियोड़ौ—देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लुढकावियोड़ी)

लुढकियोड़ी-भू. का. कृ.—१ गेंद की तरह बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरा हुआ. २ गुडका हुआ, लुढका हुआ. ३ मरा हुआ. ४ परीक्षा में असफल हुवा हुआ।
(स्त्री. लुढकियोड़ी)

लुढणौ, लुढबौ-क्रि. अ.—१ लटक कर बार बार इधर उधर हिलना, झूलना।
उ०—काचल कातरिया बाजू में काठा, भुतजळ भेटै जा भेटै अघ माठा। कर में कांकणिया जसदा गळ काठी, अदभुत मोरा पर लुढतोड़ी आटी। —ऊ. का.
२ लुढकना, गिरना।
३ मस्ती में झूमना।
लुढणहार, हारौ (हारी), लुढणियौ—वि०।
लुढिओड़ौ, लुढियोड़ौ, लुढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढीजणौ, लुढीजबौ—भाव वा०।
लुड़णौ, लुड़बौ, लुडणौ, लुडबौ—रू० भे०।

लुढाड़णौ, लुढाड़बौ—देखो 'लुढाणौ, लुढाबौ' (रू. भे.)

लुढाड़ियोड़ौ—देखो 'लुढायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुढाड़ियोड़ी)

लुढाणौ, लुढाबौ-क्रि. स.—१ लटका कर बार २ इधर उधर हिलाना, झूलाना।
२ गिराना, लुढकाना।
३ मस्ती मे झूमाना।
लुढाणहार, हारौ (हारी), लुढाणियौ – वि०।
लुढायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढाईजणौ, लुढाईजबौ—कर्म वा०।
लुड़ाड़णौ, लुड़ाड़बौ, लुड़ाणौ, लुड़ाबौ, लुढाड़णौ, लुढाड़बौ, लुढावणौ, लुढावबौ—रू० भे०।

लुढायोड़ौ-भू. का. कृ—१ लटका कर बार २ इधर उधर हिलाया हुआ, झूलाया हुआ. २ गिराया हुआ, लुढकाया हुआ।
(स्त्री. लुढायोड़ी)

लुढावणौ, लुढावबौ—देखो 'लुढाणौ, लुढाबौ' (रू. भे.)
लुढावणहार, हारौ (हारी), लुढावणियौ – वि०।
लुढाविओड़ौ, लुढावियोड़ौ, लुढाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढावीजणौ, लुढावीजबौ—कर्म वा०।

लुढावियोड़ौ—देखो 'लुढायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुढावियोड़ी)

लुढियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गिरा हुआ, लुढका हुआ. २ लटक कर बार बार हिला हुआ, झूला हुआ. ३ झूमा हुआ।
(स्त्री. लुढियोड़ी)

लुणणौ, लुणबौ-क्रि. स. [सं. लुञ्चनम्] १ काटना।
उ०—कल्पब्रक्ष मनोकामना पूरै, एकबार वावै, इकवीस बार लुणै। —रा. वं. वि.
२ भेड़ की ऊन को कतरना, काटना।
लुणणहार, हारौ (हारी), लुणणियौ—वि.।
लुणिओड़ौ, लुणियोड़ौ, लुण्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुणीजणौ, लुणीजबौ—कर्म वा।
लणणौ, लणबौ, लवणौ, लवबौ, लुणणौ, लुणबौ—रू. भे.।

लुणाई-स स्त्री [स लुञ्चन] १ भेड के बाल कतरने की क्रिया या भाव।
२ वह समय (मौसम) जब भेड के बाल (ऊन) कतरे जायें।
३ भेड के बाल कतरने की मजदूरी।

लुणाणौ, लुणाबौ-क्रि. स—१ कटाना।
२ भेड़ की ऊन कतराना, कटवाना।
लुणाणहार, हारौ (हारी), लुणाणियौ—वि०।
लुणायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुणईजणौ, लुणईजबौ—कर्म वा०।
लुणाणौ, लुणाबौ, लुणावणौ, लुणावबौ—रू० भे०।

लुणायोड़ौ-भू का. कृ.—१ कटाया हुआ।
२ भेड़ की ऊन कतरी (काटी) हुई।
(स्त्री. लुणायोडी)

लुणावणौ, लुणावबौ—देखो 'लुणाणौ, लुणाबौ' (रू. भे)
लुणावणहार, हारौ (हारी), लुणावणियौ—वि.।
लुणाविओड़ौ, लुणावियोड़ौ, लुणाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुणावीजणौ, लुणावीजबौ—कर्म वा.।

लुणावणौ, लुणावबौ—देखो 'लुणायोडौ' (रू. भे.)

लुणावियोडौ—देखो 'लुणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री लुणावियोडी)

लुणियोडौ-भू. का. कृ.—१ काटा हुआ।
२ ऊन कतरी हुई (भेड)।
(स्त्री. लुणियोडी)

लुतफ—देखो 'लुत्फ' (रू. भे.)

लुत—देखो 'लुत' (रू. भे.)

लुतकेस-वि —केश लुचन करने वाला (जैन)

लुत्थबत्थ—देखो 'लथबथ' (रू. भे)
उ०--दळ मुसळमांन बळवांन लळ, लुत्थबत्थ घप्पै लरत। घप्पै न युद्ध पद्धरपति, सूर वीर बकै भिरत। —ला. रा.

लुत्थि—देखो 'लोथ' (रू. भे.)

उ०—लंबै खेलह सिलहार के भट सेल भचक्कै। लंड चटक्कै जबरी लगि लुत्थि लटक्कै। —व. भा.

लुत्फ—सं. पु. [अ] १ आनन्द, मजा।

२ स्वाद, रोचकता।

रू. भे.—लुतफ

लुथबत्थ, लुथबथ, लुथबथ, लुथबुथ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—१ पाट तग बरग जट झाट लागां पड़ै, वहै धड़ लाग पड़ीया भ्रगट रड़वड़ै। हूर खड़ा बीर चोसट सहत हड़हड़ै, लुथबथ हुआ उमराव खामंद लड़ै। —किसनो आढो

उ०—२ लंगरा रठट्ठा झाट नागेस नमावां लागो, रिमा थाट भरावां धमाबा लागो रेण। लोहा लुथबुथा कूंतो गनीमा रमाबा लागो आराधा भमाबा लागो गजा भीमसेण।

— राठौड़ महेसदास री गीत

लुदराक, लुदराक्स, लुदराख—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

लुदरी—सं. स्त्री.—१ एक आभूषण विशेष। (अ मा)

२ देखो 'रुद्री' (रू भे.)

लुद्ध—वि. [सं. लुब्ध] लोभी, लालची।

लुद्राक, लुद्राक्स, लुद्राख—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

लुध्ध, लुध्धौ—वि [सं. लुब्ध] १ लालची, लोभी।

२ चाहने वाला, इच्छुक, अभिलाषी.

उ०—१ ऊलबै सिर हथ्थड़ा, चाहदी रस-लुध्ध। विरह-महाघण ऊमटयउ, थाह निहाळइ मुध्ध। —ढो मा.

उ०—२ उक्कबी सिर हथ्थडा, चाहती रस-लुध्ध। ऊची चढि चाढ्र वि जिउ, मागि निहाळइ मुध्ध। —ढो. मा.

उ०—३ थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारू आसा-लुध्ध। परदेसे चाचल धणा, विलउ न जाणइ मुध्ध। —ढो. मा.

लुप—देखो 'लप' (रू. भे.)

लुपकै लुपकै—क्रि. वि.—गुप्त रूप से, लुके-छिपे।

उ०—लुपकै छूपकै घी लोगा री, पधरावै भरि पारिया। पाप बिकणा भव पेलैमे, खूब करैला ख्वारिया। —ऊ का

उ० —२ लुपकै छुपकै राजमे, माडै रूळपट रोळ खावै न कोई खाणदै, डोफा देवै ढोळ। —नारायणसिंह सादू

लुपणौ, लुपबौ—देखो 'लुकणौ, लुकबौ'

उ०—चिलकतो भूपाट निजर सू लुपतो जावै। पवन प्रबोळी उणमणी सी, सायत दरसावै। —शक्तिदान कविया

लुपणहार, हारौ (हारी) लुपणियौ वि०।

लुपिओड़ौ, लुपियोड़ौ, लुप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुपीजणौ, लुपीजबौ—भाव वा०।

लुपत—देखो 'लुप्त' (रू. भे.)

लुपतोपमा—देखो 'लुप्तोपमा' (रू. भे.)

लुपियोड़ौ—देखो 'लुकियोड़ौ'

(स्त्री लुपियोड़ी)

लुप्त—वि. —१ छिपा हुआ।

२ गुप्त गोपनीय।

३ नष्ट, भग्न।

रू. भे.—लुत्त, लुपत

लुप्तोपमा—सं स्त्री. [सं.] उपमा अलंकार का चौथा भेद जिसमें उपमेय, उपमान धर्म और उपमावाचक में से किसी एक का लोप हो।

रू. भे —लुपतोपमा

लुब—सं पु —१ चाह, इच्छा, लोभ।

उ०—थित दाहन मेलन थेलिय की, चित चाहन चेलन चेलिय की। लुब लायन पाय पुजावन की, सुभ राय सु न्याय सुझावन की।

—ऊ. का.

२ कानो मे पहनने का स्त्रियो का आभूषण।

उ०—लुब झुलत कान प्रभा सुघरै दहुधा मनु कांमहि चक्र करै।

—सगुणा सत्रसाळ री बात

लुबको—सं. पु. (स्त्री लबकी) गाय का नव जात बच्चा।

लुबध—१ देखो 'लुब्धौ' (रू. भे.) (डिं को.)

उ०—जिम मधुकर नइ कमलणी, गगा सागर वेल। लुबधा ढोलउ-मारुवी, काम-कत्तहळ केल। —ढो मा.

२ देखो 'लुब्धक' (रू भे.)

लुबधक—देखो 'लुब्धक' (रू. भे.)

लुबधी, लुबधौ—वि —लोभी, लालची, इच्छुक।

उ०—भवरा लुबधी वासका, मोह्या नाद कुरग। इयौं दादू का मन राम सूं, ज्यौ दीपक जोत पतंग। —दादूवाणी

उ०—२ ललना मू लुबधौ थको, लोपि गमावै लज्जा लीक कि। जाय धन पिण जूजूओ, नीर रहै नहि फूटी नीक कि।

—ध. व. ग्रं.

लुबांन -देखो 'लोबान' (रू. भे)

उ०—१ पिया समीप रूपरासि दासि आसि पासियं, भरै प्रकास स्री उदोति दीप जोति भासियं। सुगध गध सार एण सार मेघसार ए, सवास अबरै लुबांन डबरै निसार ए। —रा. रू.

लुबुद, लुबुध—देखो लुब्ध' (रू भे.)

उ०—१ सर सरित निरमळ नीर संदर अमळ अंबर-ओपायं। किरि सुबुधि वधि सतसंग कारण, लुबुध होत विलोपय। —रा. रू.

लुब्ध-वि.—१ लोभ ग्रसित, लालची।

उ०—लालचं दांम खाटण लुब्ध, दुसमन सालणारां दसै। कर इता दूर धरमसी कहै, विद्या भणिया ने वसै। —ध. व. ग्रं.

२ मुग्ध, मोहित, ग्रासक्त।

३ ललचाया हुग्रा, ग्रभिलाषी।

रू. भे. लुबध, लुबुद, लुबुध।

लुब्धक-सं. पु. [स. लुब्ध] बहेलिया, व्याघ्र, शिकारी।

२ उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत तेजवान तारा।

रू. भे.—लुबध, लुबधक

लुब्धणौ, लुब्धबौ-क्रि. ग्र.—ग्रासक्त होना, निमग्न या तल्लीन होना।

उ०—परदारा सूं पापियउ, भोगवइ कांम भोग। विसयारस लुब्धउ थकउ, न बीहइ परलोग। —स. कु.

लुब्धणहार, हारौ (हारी), लुब्धणियौ—वि।

लुब्धियोड़ौ, लुब्धियोड़ौ, लुब्ध्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुब्धीजणौ, लुब्धीजबौ—भाव वा.।

लुब्धियोड़ौ-भू. का. कृ.—ग्रासक्त हुवा हुग्रा, तल्लीन या निमग्न हुवा हुग्रा।

(स्त्री. लुब्धियोड़ी)

लुभाणौ, लुभाबौ-क्रि. ग्र.—लोभ या लालच में पड़ना।

उ०—झाली सिहदेव तौ प्रथम भणी में ही लोह छक होय प्राणां रा पोलण में लुभायौ थको प्रमदा रौ प्राहुणौ ग्रपूठौ लड़ियो। —वं भा.

२ सुध-बुध भुलाना, मोह में पड़ना।

क्रि. स.—१ मोहित करना, ग्रासक्त करना।

२ किसी के मन मे लोभ या लालच पैदा करना।

३ मोह से युक्त करना, ग्रनुरक्त करना।

लुभाणहार, हारौ (हारी), लुभाणियौ—वि.।

लुभायोड़ौ—भू. का कृ.।

लुभाईजणौ, लुभाईजबौ—भाव वा., कर्म वा.।

लुभावणौ, लुभावबौ, लोबाणौ, लोबाबौ, लोभाणौ, लोभाबौ—रू. भे.

लुभायोड़ौ-भू का. कृ.—१ लोभ या लालच में पड़ा हुग्रा. २ सुध-बुध भूला हुग्रा. मोह में पड़ा हुग्रा. ३ किसी के मन में लोभ या लालच उत्पन्न किया हुग्रा. ४ मोह से युक्त किया हुग्रा।

(स्त्री. लुभायोड़ी)

लुभावणौ-वि. [स्त्री. लुभावणी] १ मोहित करने वाला, लुभाने वाला, मनोहर।

उ०—नैवा ग्रचिंत खबसूरत, इसी सुबावणी, इसी मनहरणी, इसी सुखदायी ग्रर इसी लुभावणी, लागै के बात छोडौ। —फुलवाड़ी

२ सुन्दर, खूबसूरत।

लुभावणौ, लुभावबौ—देखो 'लुभाणौ, लुभाबौ' (रू. भे.)

उ०—सिल-किस्तूरी-गंध समांणी घणा मिरगाळं, गंग बहावणहार, हेमाळ-सीस हिमाळं। लेत विसाणी मेघ सांवळो इसी लुभावं, भोळ नादियं कीच गुदळता सींग सुहावं। —मेघदूत

लुभावणहार, हारौ (हारी), लुभावणियौ—वि.।

लुभावियोड़ौ, लुभावियोड़ौ, लुभाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुभावीजणौ, लुभावीजबौ—कर्म वा.।

लुभावियोड़ौ—देखो 'लुभायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लुभावियोड़ी)

लुरड़णौ, लुरड़बौ-क्रि. स.—तोड़ना।

उ०—इण निमझर नै लुरड़ लुरड़ भेळी कर राखै, लुरड़ लाव सां-भाळ, साल भर सागां नाखै। दही रायतै छौंक, मोकळी निमझर देवै, ललचावै सुरराज भाज लप लबको लेवै। —द. दे.

लुरड़णहार, हारौ (हारी), लुरड़णियौ—वि.।

लुरड़ियोड़ौ, लुरड़ियोड़ौ, लुरड़्योड़ौ—भू का. कृ.।

लुरड़ीजणौ, लुरड़ीजबौ—कर्म वा.।

लुरड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—तोड़ा हुग्रा।

(स्त्री. लुरड़ियोड़ी)

लुरणौ, लुरबौ—देखो 'लुळणौ लुळबौ' (रू. भे)

उ०—काहे को देह धरी भजन बिन काहे को देह धरी। गरभवास की त्रास दिखाई, बाकी पीठ लुरी —मीरां

लुरणहार, हारौ (हारी), लुरणियौ—वि०।

लुरियोड़ौ, लुरियोड़ौ, लुर्योड़ौ - भू० का० कृ०।

लुरीजणौ, लुरीजबौ—भाव वा०।

लुरियोड़ौ—देखो 'लुळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लुरियोड़ी)

लुरियौ-सं. पु.—ऊंट की चाल या गति विशेष।

लुरी-स. स्त्री.—१ लम्बे कानो वाली बकरी।

२ ग्रत्यधिक शीतल वायु।

लुळणौ, लुळबौ-क्रि. ग्र.—१ झुकना, नीचा होना।

उ०—ग्रठी, 'रतना' सामी ग्राय लटकै लुळी, तठै पूरण प्रेम री गांठ पूरण खुली। कवर छातींह भिड़ मिळियो, सनेह रौ सामद्र पाजांहूं छिळियो। —र. हमीर

२ लपपच होना।

उ०—थोडा थोडूं चीर, आळ मांही लुळ जावै। अतर लगाऊ अंग, याद आगें घुळ जावै। —ऊ. का.

३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य की पूर्ति के लिए थोडा आगे बढते हुए नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना।

उ०—१ लागू हू पहलां लुळे, पीतांबर गुर पाय। भेद महारस भागवत, प्रामू जेण पसाय। —ह र.

उ०—२ पुन चेत आसोज रा स्वेत पाखा. लुळें मात नूं जातरी लोक लाखा। बदीजें किसूं कीरती हेक बाकं, थळी री दुती दाखती सैंम थाकं। —मे. म.

उ०—३ भरी रूप रग रस भगी, लुळ आवै जळ लेण। सरवर त्या निरखण सही, नीरज कियाक नेण। र. हमीर

४ नम्र भाव से आचरण या व्यवहार करना, अभिमान बल आदि को छोड विनीत और सरल होना।

उ०—बेटी री बाप सूको लक्कड तथा टूठ लुळे नहीं टूटणौ जाणें। —दसदोख

५ प्रवृत होना, उन्मुख होना।

उ०—१ कोइ आठ-दस हजार हाथ लाग्या। बस, मन री विरती आरथै खांनी लुळी। —दसदोख

उ०—२ लिछमी जी लुळताह, टुकीयक म्हां खानी हुता। (तो) भायां नै भ्रमताह. कदेइ कर देतो 'करन' —लखमीदांन बारहठ

६ मडराना, घुमडना।

उ०—१ सावण आयो सायबा, लुळ लुळ बरसे लूर। गोम्ब उडीकै गोरडी, जोबन में भरपूर। —नारायणसिंह सादू

उ०—२ घण रा सायबा रे, ओ तौ सावण लुळ्यौ घर आय। बेटी आट को रे, ओ तौ सांझ पड्या घर आय। —तेजाजी री लावणी

७ कोमलतावश इधर-उधर झुकना, सिमटना।

उ०—१ तंबोळ बिनां खाबा आहार विकार थावै, माडी मोडी कटारी री पडदळी समावै। उतर री वाव वाजै दखण नै लुळे चोवारी वाजै तो, बीच सूं भाज जावै। —बीची गगेव नीबावत री दोपहरी

उ०—२ थोथी करड़ावण राखणवाळा जगी रूंख चरड चरड उपळीजण लागा। लुळताई राखणवाळा कवळा बाटका अठी उठी लळाक लळाक लुळे पण व्हांरो की नी बिगडे। —फुलवाडी

८ गतिशील या स्थित व्यक्ति या पदार्थ का दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना, मुडना।

उ०—रायजादो लुळ-लुळ पाछो जोवै, जाणु म्हारी जान मे भाबोसा पधारै। —लो गी

९ प्रभाव कम होना।

उ०—इब तूं झुकग्या इब तूं लुळग्या, भिरोखै झाला दे रही मैं भागइली। भंवर री रस ले रही मैं भागइली। —लो. गी.

१० प्रभाव मे आना, प्रभावित होना।

उ०—किसूं व्याकरण अवर भाखा अनै पराकत, संसक्रित तणी वयूं फिरै सागे। लाख रा ठाकरा तणा माथा लुळे, आखरा तणा गजबोह आगे। —नवलजी लाळस

११ देखो 'रळकणौ, रळकबौ'

उ०—कडियां औ भैंरव कड़ियै, लुळता केस, पावा औ भैंरव पावै बाज्या घूघरा। —लो. गी.

लुळणहार, हारौ (हारी), लुळणियौ—वि०।
लुळिओड़ो, लुळियोड़ो, लुळ्योड़ो—भू० का० कृ०।
लुळीजणौ, लुळीजबौ—भाव वा०।
लळणौ, लळबौ, लुरणौ, लुरबौ—रू० भे०।

लुळताई—स. स्त्री.—१ लचीलापन, लचक, कोमलता।

उ०—थोथी करड़ावण राखणवाळा जगी रूंख चरड चरड उपळीजण लागा लुळताई राखणवाळा कवळा बाटका अठी-उठी लळाक लळाक लुळे पण व्हांरो की नी बिगडे। —फुलवाड़ी

२ विनम्रता, नम्रता।

उ०—अबै सगीजी थोडा और नेडा भिड'र लुळताई सूं बेटी री मा नै कयौ—"बीनणी नै वरी इसी चढासा जिको घणा भाइ देखसी। —बरसगांठ

लुळाड़णौ, लुळाड़बौ—देखो 'लुळाणौ, लुळाबौ' (रू. भे.)

लुळाड़णहार, हारौ (हारी), लुळाड़णियौ—वि०।
लुळाड़िओड़ो, लुळाड़ियोड़ो, लुळाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
लुळाड़ीजणौ, लुळाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लुळाड़ियोड़ो—देखो 'लुळायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. लुळाड़ियोड़ी)

लुळाणौ, लुळाबौ—क्रि स.—१ झुकाना, नीचा करना या कराना।

२ लथपथ करना या कराना।

३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य की पूर्ति हेतु नीचे की ओर प्रवृत्त करना या झुकाना।

४ नम्र भाव से आचरण या व्यवहार कराना या अभिमान बल आदि को छोड़ाना, विनीत बनाना।

५ प्रवृत या उन्मुख करना या कराना।

६ मडराना, घुमडाना।

७ कोमल वस्तु या पदार्थ को इधर उधर झुकाना, मोडना।

उ०—जच्चा राणी रै हळद, तेल अर गुळजी रै आटा री पीठी कर नै आखो डील मसळियौ। बाटा उतारी। हाडका लुळाया। —फुलवाड़ी

८ प्रभाव कम कराना।

९ गतिशील या स्थित व्यक्ति या बात को एक तरफ से हटा कर दूसरी दिशा की तरफ उन्मुख या प्रवृत्त कराना, मुड़ाना।

उ०—दीवांणजी री सकल अंडी बात में अणूंती भंवती ही। कंडी ई बात नै लुळाय कठी नै ई पुगाय देता। —फुलवाड़ी

१० मोड़ना।

उ०—औ तो साव इज पतळी। धोळी धोळो जाणै मादगी सू उठ्यो व्है। इणनै लुळायो कुण ! साव इज दोलड़ो कर न्हाकियो।

—फुलवाड़ी

११ देखो 'रळकाणौ, रळकाबौ'

लुळाणहार, हारौ (हारी) लुळाणियौ—वि०।

लुळायोड़ो—भू० का० कृ०।

लुळाईजणौ, लुळाईजबौ—कर्म वा०।

लुळाड़णौ, लुळाड़बौ, लुळावणौ, लुळावबौ—रू० भे०।

लुलाय—सं. पु. [स लुलाय:] भैसा।

उ०—कर चाप अठारटंकी करखै, परखा सर एलम की परखै। उडि बेध अकास हुवै डरता, छिक जाय लुलाय पखाल छता।

—मे. म.

लुळायोड़ो—भू का कृ.—१ झुकाया हुआ २ लयपथ किया हुआ. ३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य की पूर्ति के लिये थोड़ा आगे बढ़ते हुए नीचे की ओर प्रवृत्त किया हुआ, झुकाया हुआ. ४ नम्रता से आचरण या व्यवहार किया हुआ, अभिमान बल आदि को छोड़ा कर विनीत व सरल किया हुआ ५ प्रवृत किया हुआ. ६ मडराया हुआ, घुमड़ाया हुआ. ७ कोमल पदार्थ को इधर उधर झुकाया या मोड़ा हुआ. ८ गतिशील या स्थित व्यक्ति, पदार्थ या बात को दूसरी ओर उन्मुख या प्रवृत्त किया हुआ।

९ देखो 'रळकायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री लुळायोड़ी)

लुळावणौ, लुळावबौ—देखो 'लुळाणौ, लुळाबौ' (रू. भे)

लुळावणहार, हारौ (हारी) लुळावणियौ—वि०।

लुळावियोड़ो भू० का० कृ०।

लुळावीजणौ, लुळावीजबौ—कर्म वा०।

लुळावियोड़ो—देखो 'लुळायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. लुळावियोड़ी)

लुळियोड़ो—भू का कृ.—१ झुका हुआ. २ लयपथ हुवा हुआ. ३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य पूर्ति हेतु आगे बढ़ कर थोड़ा नीचे झुका हुआ या प्रवृत्त हुवा हुआ. ४ नम्रता से आचरण या व्यवहार किया हुआ, विनम्र हुवा हुआ ५ प्रवृत हुवा हुआ ६ कोमलतावश इधर उधर झुका हुआ ७ मडराया या घुमड़ाया हुआ. ८ गतिशील या स्थित व्यक्ति, पदार्थ या बात का दूसरी तरफ उन्मुख या प्रवृत हुवा हुआ. ९ प्रभाव कम हुवा हुआ. १० प्रभाव मे आया हुआ, प्रभावित।

(स्त्री. लुळियोड़ी)

लुलूलिया, लुलूसाही—स. पु.—१ मारवाड़ राज्यान्तर्गत चलने वाला एक सिक्का विशेष।

वि. वि. यह जोधपुर राज्यान्तर्गत महाराजा तखतसिंह जी के समय नाजर हरकरणं द्वारा चलाया गया था।

लुवणौ, लुवबौ—क्रि. स —पोंछना।

उ० —लेता य विसराम, सीचता कळी चमेली। बरस फुहारां बाग, वाहणी तीर सकेली। मगसी झूठण-लूब कपोळा नीर लुवंती। तिण भामणिया छाह करो जे फूल विणती। —मेघ

लुवणहार, हारौ (हारी), लुवणियौ—वि०।

लुवियोड़ो, लुवियोड़ो लुव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लुवीजणौ, लुवीजबौ—कर्म वा०।

लुहणौ, लुहबौ, लुणौ, लुबौ, लूअणौ, लूअबौ, लूणौ, लूबौ, लूवणौ, लूवबौ, लूहणौ, लूहबौ—रू० भे०।

लुवरड़ो, लुवरडौ—स. पु. (स्त्री. लुवरड़ी लुवरडी) बेटा, पुत्र।

उ०—थारी लुवरडी म्हारौ लुवरड़ो अब तो करो निगोडची ब्याव रायजादी ये लूर छैला प्यारी ये लूर जेसलमेरी ये। —लो. गी.

लुवार—१ देखो 'लुहार' (रू. भे.)

उ०—१ साज लोहा रा सांतरा, ताळा करण तयार। किसबी सारा कामरो, लीजै सुघड लुवार। —रमणप्रकास

उ०—२ रूप जेम बारंगणा, रस छंदा गारीह। सारी बातां सुलखणी, लीजै लुवारीह। —रमण प्रकाश

२ देखो 'लुवारौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुवारी)

लुवारियौ, लुवारौ—स. पु.—१ गाय का छोटा बच्चा।

उ०—दादीसासू पोतिया जुवाई नै देखण नै तरसी अर हाथ री कापती दो आगळयां एक आख रै ऐड़ै छेड़ै देय'र रसोई री बारी सूं उलळी, जांणै सुवाची गाय लुवारै टोघड़िये पर राभी है।

—दसदोख

२ देखो 'लुहार' (अल्पा, रू भे)

लुवियोड़ो—भू का. कृ —पोंछा हुआ।

(स्त्री. लुवियोड़ी)

लुह—सं. पु.—१ शस्त्र प्रहार।

उ०—हुवै असि ताम चढै सु दुभाळ, लुहा अवधूत दियै नदलाल।

—सू. प्र.

२ सूखा, रुक्ष।

उ०—अरस विरस अंत पंत लुह, ए चाल्या पच आहार। ए जीमी जीवै मुनि धन, मोटा अणगार। —जयवांणी

लुहण-वि.—चूसने वाला, शोषण करने वाला।

उ०—प्राण-लुहण तू माहरेजी, काळेजा नी कोर। तूं वज्र आधा-लाकड़ी जी, किम हुवै कठिन कठोर —जयवाणी

लुहणौ, लुहबौ—देखो 'लुवणौ लुवबौ' (रू भे)

उ०—प्रीथीराज माहली चाळ था बरछी लुही ऊजळी थका मायौ। —नैणसी

लुहणहार, हारौ (हारी), लुहणियौ—वि०।
लुहिग्रोड़ौ, लुहियोड़ौ, लुह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुहीजणौ लुहीजबौ—भाव वा०।

लुहार-सं. पु. [सं. लोहा+कार, प्रा. लोहार] (स्त्री. लुहारण, लुहारी) लोहे की चीजें बनाने या काम करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

उ०—१ ससी सास सम्हातां समरण, तन मन खुब तपावं। लोह लुहार तणी गति लागै, मारोमार मचावै। —ऊ का.

उ०—२ हर सिर घर लाल लुहारो नीसरीजी हर भर हटवाडै रै मांय। चढ़ल्या म्हारा अजब लुहारा दीवलौ जी। —लो गी

२ चौरासी चोहट्टों में से एक। (सभा)

रू. भे.—लवार, लुवार, लोहकार, लोहार

अल्पा,—लवारियौ, लवारौ, लुवारियौ, लुवारौ

लुहारखाती—बढ़ई जाति का वह व्यक्ति जो लोहार का पेशा भी करता हो। (मा. म.)

रू. भे.—लवारखाती

लुहाल-स. पु—श्याम घटा के शिखर पर उठने वाले बादल जो घटा को स्पर्श करते ही उनमे पानी ही पानी हो जाता है। (शेखावाटी)

लुहियोड़ौ—देखो 'लुवियोडौ' (रू. भे.)

लुही—देखो 'लोही' (रू भे.)

उ०—१ कटै पळ कमळ स्रीफल कीध, लुही घट काढ जिकौ घ्रत लीध। धुवै रणताळ सझाळ ग्रशोम, हका धुनि वेद करै इम होम। —सू. प्र

उ०—२ भयांनक हेक करै भाराथ, हिका ममतक्क पडै पग हाथ। बैणी-डंड हेकां चीखरियाह, लुटै भुंइ हेक लुही भरियाह। —गु रू ब

लूंक—देखो 'लूंग' (रू. भे.)

लूंकड़ी—देखो 'लाकी' (अल्पा., रू भे.)

लूंकार-सं. पु.—ऊन का बना मोटा वस्त्र जो ओढने के काम आता है तथा इकरंगा होता हैं। कशीदा नहीं होता।

लूंकी—देखो 'लाकी' (रू. भे.)

लूंकीमूळी—१ देखो 'लांकी मूळी' (रू. भे.)

लूंकौ-(स्त्री. लूंकी)—देखो 'लांकौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रगत तणौ परताप, नहीं पास्यो नर देही। जगमें बीजै जनम, हुस्यो भुगर कनसेही। लूकी छलड़ो किना, बूट इजगर कन वांधी। गोगी हुम्यौ क गोह, भेड भीलां घर जोगी। —अरजुनजी बारहठ

उ०—२ लूक्यां करै न लोप, वन केहर भेळा वसै। करै न सबळा कोप रको ऊपर राजिया। —किरपारांम

लूंग-सं. पु—१ शमी, बबूल वृक्ष के पत्ते जो ऊंट भेड़ व बकरियों को चराने के काम आते हैं।

उ०—१ मस्तक लीलो लूंग, धरण री धूड़ ठरावं। खेजड़ खेवा खाय, मरु मे छान छवावै। —दसदेव

उ०—२ ऊंचे मुख सू ऊट, चूट चट लूंगां लवके। गलर गलर गटकाय, डोलती डागां डबकै। —दसदेव

उ०—३ खेजड़ी रा लूंग ई इण तडा आगै नी ढबै, पछै बापडा माचरी काई जिनात। —फुलवाडी

२ बंदूक पर बारुद रखने का स्थान।

उ०—लखवार बूंद्कांय लूंग लिया, करि अंग भालोड़ दुसोर किया। घाह साहर ऊपर घोर घलै, सत वीमाय नाहर ठौर सलै। —पा. प्र.

३ एक पक्षी विशेष।

उ०—चरज सीचांण सो लाग आतुरी, बाज बहरू की झपट। कुही कुही लूंगू की उघ्रट। —सू. प्र.

रू. भे.—लूंक।

४ देखो 'लवग' (रू भे)

लूंगती—देखो 'लाकी' (रू भे)

लूंगाकरौ-स. पु—एक मारवाडी लोकगीत।

लूंगी-स स्त्री.—१ वह वस्त्र जो कमर से बाधा जाता एवं टखनो तक लटकता है।

२ सिर पर बाधने या बिछाने के काम आने वाला वस्त्र विशेष।

उ०—करसे रे पितळ रो पिलांण, लाल लूंगी रो चामियौ। कसणा कसुमल डोर, सरब सोना रा पागडा। —लो. गी.

३ स्त्रियो के ओढने का वस्त्र विशेष।

उ०—१ लूंगी लाज्यो जी, ओ जी म्हारा ईसरजी ओ उमराव, जटाधारी, लूंगी लाज्यो जी। लूंगी महगी ए, ओ ए म्हारी पालकड़ी ए गणगोर गढा री गणी, लूंगी महगी ए। —लो. गी.

४ एक राजस्थानी लोक गीत।

५ छोटे बच्चे का शिश्न ।

रू. भे.—लूंगी, लींगी, लोंगी ।

लूंचणौ, लूंचबौ—१ हड़पना ।

उ०—१ उजबक थका राजमें उभा, लाखां री धन लूंचै । गहर गभीर प्रमनमी 'भागो' पाछो जाब न पूछै । —बुधजी आसियो

लूंचणहार, हारौ (हारी), लूंचणियौ—वि० ।

लूंचियोड़ौ, लूचियोड़ौ, लूंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूंचीजणौ, लूचीजबौ—भाव वा० ।

लुंचणौ, लुंचबौ—रू० भे० ।

लूंचाड़णौ लूंचाड़बौ—देखो 'लूचाणौ लूचाबौ' (रू. भे.)

लूंचाणौ लूंचाबौ-क्रि. स.—हड़पवाना ।

लूंचाणहार, हारौ (हारी), लूंचाणियौ—वि० ।

लूंचायोड़ौ,—भू० का० कृ० ।

लूंचाईजणौ. लूंचाईजबौ— कर्म वा० ।

लूंचाड़णौ, लूचाड़बौ, लूंचावणौ, लूचावबौ - रू० भे० ।

लूंचायोड़ौ-भू का कृ.—हड़पाया हुआ ।

(स्त्री. लूंचायोडी)

लूंचावणौ लूचावबौ—देखो 'लूंचाणौ, लूंचाबौ' (रू. भे.)

लूंचावणहार, हारौ (हारी), लूचावणियौ वि० ।

लूंचाविप्रोड़ौ, लूंचावियोडौ, लूचाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

लूंचावीजणौ, लूंचावीजबौ—भाव वा० ।

लूंचावियोड़ौ—देखो 'लूंचायोडौ' (रू. भे)

लूंचियोड़ौ-भू का. कृ.—हड़पा हुआ ।

(स्त्री. लूंचियोडी)

लूंछण-सं. स्त्री.—१ किसी वस्तु या पदार्थ को सिर के ऊपर फेर कर दान देने की क्रिया या न्यौछावर करने की क्रिया ।

२ वस्त्र विशेष ।

उ०—खीरोदक ततखेव-मांहा, प्राप्या लूंछण अंग । पछइ पटुला पहिरणइ, नवहत्था नवरंग । —मा. कां. प्र.

लूंछणौ, लूंछबौ-क्रि. स —१ न्यौछावर करना ।

उ०—रत्न-कबल सिरि लूंछणा, तनु लूहवा तनु-सुख । अबला. आरीसु लेई रही, जमली जोवा मुख । —मा का प्र

लूंछणहार, हारौ (हारी), लूंछणियौ—वि० ।

लूंछियोड़ौ, लूंछियोड़ौ, लूंछ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूंछीजणौ, लूंछीजबौ कर्म वा० ।

लुछणौ, लुंछबौ - रू० भे० ।

लूंछियोड़ौ-भू का. कृ.—१ न्यौछावर किया हुआ ।

(स्त्री. लूंछियोड़ी)

लूंजी-सं. स्त्री—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष ।

रू. भे.—लुंजी ।

लूंटणौ, लूंटबौ—देखो 'लूटणौ, लूटबौ (रू. भे.)

उ०—थोडो कुण करै भरोसो थारी, वीसां वातां लखण बुरा । लूंटै कुण तो बिन लाखीणो, जोबन सरखो रतन जुरा । —ओपो आढौ

लूंटणहार, हारौ (हारी), लूंटणियौ—वि० ।

लूंटियोड़ौ, लूंटियोड़ौ, लूंटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूंटीजणौ, लूंटीजबौ—कर्म वा० ।

लूंटियोड़ौ—देखो 'लूटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लूटियोड़ी)

लूंठाई—देखो 'लाठाई' (रू भे.)

लूंठापण, लूंठापणौ, लूंठापौ — १ देखो 'लाठापणौ' (रू. भे.)

उ०—१ काचा करमां सू रै'गा गळ रीता । साचा सोना रा बाळ-लिया बीता । गोरा खाली हुय लालां री गांठां । लेग्यो लूंठापण लाठा री लाठा । —ऊ. का.

लूंठौ - देखो 'लांठौ' (रू. भे)

उ०—१ कद मरै कुटिळ भ्रो काळसू, कहै उडाऊं कागलो । लागगो लार लूंठौ लियण, भ्रांटो कोइक आगलो । —ऊ का

उ०—२ खळ दसखंध उपाडण खूटा, कीरत भुज जाहर चिहूं कूटा । लखण काज आगण गिर लूंठा टेक निवाह वाह किप-टूटा । —र. ज. प्र.

उ०—३ ए तो सगळी थोथी वातां है चौधरिया । असली बात तो कोई दूजी दीसै । भ्यान् राजा सूं काम कढावणो व्है'ला, लूंठौ इनाम लेवण री मसा व्हैला । —अमर चूनड़ी

लूंड—देखो 'लूंडौ' (मह रू भे)

उ०—कवडी रा लहण मही, राखे हट कर रोक । पाग कोख माझल लियां, लूड बजारी लोक । —बां. दा.

लूंडौ-(स्त्री. लुडो) — १ मूर्ख बेवकूफ ।

२ लुच्चा, लफगा ।

उ० — १ लूडा मुलक रा मेळा हुइ गया । सो एक तो मुगळ इसा वेग प्रौर एक पठाण सु मेळा सो दोनूं मुलक नू लूटै ।

—गोपाळदास गौड री वारता

देखो 'लौंडौ' (रू भे)

उ०—जदी लूंडीया आय हुरमां सुं मालुम करी बाई जी सायब खीज करि महल से नीचै आया अरु आतै ही बोलीया नहीं पोढा रहै । —राहब-साहब री बात

(स्त्री. लूंडिया)

लूण —देखो 'लवण' (रू. भे.)

उ०—भजियौ ज लूंण भूपाळ रौ, घणा रिजक सांमळ धणी। कहि समरीक ऊजळ करा, तिकौ लूंण सांभर तणौ। —सू प्र.

लूंणहरांम—वि. यौ. [स. लवण+अ. हराम] कृतघ्न, नमकहराम।

उ०—लांणत लूंणहरांम, 'जसवत' मे कीधी जका। कुळ बिवरा री कांम, सावत तो मे 'सावला'। —बळजी महडू

रू. भे.—लूणहरांम।

लूंणहरांमी—स स्त्री.—१ कृतघ्नता।

रू. भे.—लूणहरांमी।

२ देखो 'लूणहरांम' (रू भे)

उ०—लूंणहरांमी बहुत देख्या, बचन न माने तोरा। म्है तौ सांमधरम रे कारण अरजी करूं सवेरा।

—हरिरांमजी महाराज

लूंणियोड़ौ—देखो 'लुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लूंणियोड़ी)

लूंणी—सं. स्त्री —१ मारवाड़ की एक नदी का नाम।

२ वनस्पति विशेष जिसके छोटे २ लाल फूल लगते है।

उ०—लाज-लजालू लक्ष्मणा, लूंणी लसम लबंगि। लीलावती लूकडी लाहि लवीरी संगि। —मा. कां प्र.

सं. पु —३ मक्खन।

लूंणौ, लूंबौ— देखो 'लुवणौ, लुवबौ' (रू भे.)

लूंणहार, हारौ (हारी), लूणियौ—वि०।

लूंणियोड़ौ, लूंणियोड़ौ, लूण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूंणीजणौ, लूंणीजबौ—कर्म वा०।

लूंथ—देखो 'लोथ' (रू भे)

उ०—गळोबळ हेक घटा-बल गूंथ, लळावट हेक लुळ हुइ लूंथ। घळब्बळ हेक हुआ अन घोळ, धारां महि हेक दिये धमरोळ।

—गु. रू. बं.

लूंदौ—स पु —किसी गाढे गीले पदार्थ का ढेले की तरह बंधा हुआ गोलाकार पिड, लौंदा।

उ०—म्हनै थारै काकोसा रौ कागद पढनै सुणाय दो बीरा। म्हू थानै बिलावणौ करती बखत बूजी रै छांनै माखण रौ लूंदौ दू ला। —अमर चूंनडी

रू. भे.- लोदौ, लौंदौ।

लूंबियौ—सं. पु.—सध्याकाल का वह समय जब कुछ अंधेरे के कारण कोई स्पष्ट पहचाना न जा सके।

लूंब—स. स्त्री. [स. लबुक] १ रेशम या सूत के धागो का गुथा हुआ गुच्छा जो आभूषणों की शोभा वृद्धि के लिए लटकाया जाता है।

उ०—ऊंबण लागी नार नवेली, माथै ऊपर झटकी। बाजूबंद री लूंबां बै'री, ईढाणी मे अटकी। —चेतमांनजी

२ ऊंट घोडे आदि के चारजामों के इर्द-गिर्द लटकाया जाने वाला लाल व कोडियो का गुच्छा, झूमका।

उ०—कत सोभति रेसम लूंब करै, धुरवा किर फूलिय सझ धरै। अति उग्र तुरगम अग वियै, क्रम सोभत आवत डोर कियै।

—रा. रू.

३ बहुत सी वस्तुओ का ऐसा समूह जो एक साथ उगा, उपजा या बना हो।

उ०—१ बेदांनै वाला बेदाने अनार। चिलकोथं बेह और सेबूंका विस्तार। कपूर-गरभ केळीका जूथ केळूंकी झूंब। श्रीफळ बिदाम और नींबू के लूंब। —सू .प्र.

उ०—२ करतीया रौ झूंबकौ, मोतियां री लूंब हीरां रौ लच्छौ सरग री झूंब। —मयारांम दरजी री बात

४ सावन भादो मे अविच्छिन्न व निरन्तर होने वाली छोटी छोटी बूंदो की वर्षा, इस वर्षा के बादल।

उ०- १ केहरी दीठा कळा, खळ दल करसी खेह। लूंबां झड़ नह लग्गिया, लुवा न कानौ लेह। —बां. दा.

उ०—२ अगिणत दान निजर पह आगै। लूंबां किर सांवण झड लागै। —रा. रू.

उ०—३ लूंबा झड नदिया लहर, बक पंकत भर बाथ। मोरां सोर ममोलिया, सावण लायौ साथ। —बां. दा.

५ मकान मे दीपक रखने हेतु दीवार में लगाया हुआ पत्थर।

६ मकान मे छज्जे के नीचे लगे पत्थर पर खोद कर बनाए हुए गोले।

७ झूले की अवरोह गति।

उ०—पवन का परवाह, गुलाब की मूठ, सिधराजकी गोटकी, तारे की तूट। आतस की भमकी, चक्री की चाल, चपलाकी चमकी छाती की ढाल। सीचाणं की झड़प, हींडै की लूंब खगराज का बचा, खेतु मे खुब। —मयाराम दरजी री बात

लूंबड़ौ—स. पु.--नारियल वृक्ष का फल जिसके छिलके के अन्दर गिरि रहती है।

लूंबझूंब—१ सुसज्जित, शृंगारयुक्त।

उ०—१ कलाबातु सागता जरी रा लूंबझूंब किया, संगीत नाचणा भाव परीरा मारीख। आकरा झालिया पाव तुरी सावलां ऊठै, अढाई खुरीरा चाव छूरी रा आरीख।

—महाराजा बळूंतसिंह रो गीत

उ०—२ सो किण भातरा पलाण जिके समकरी नीपनी मोरबी पलाणी, दांमण चमकती, पिडामारी लगांमी आरसी आळीमारी

छातीआ पाखरां घातियां, पलांग मंडांण, जीण साकति साकतां लूंबझूंब करि नै सामण री बीजळी ज्यों पांवबै सिणगार पाखर घाति घोडि आणि हाजर किया छै।

—राजान राउत री बात-वणाव

२ आच्छादित, आवेष्टित।

उ०—लुळि लूंबझूंब कदंब होवत, संब के चिहुं फेर। तह डार भूलत मधुर कूजत, कोकिला तिहिं बेर। —वि. कु.

रू. भे.—लूंमझूम, लूमझूम

लूंबणो, लूंबबो—क्रि. अ.—१ किसी वस्तु का एक सिरा किसी दूसरी वस्तु से लगा हुआ हो तथा दूसरा सिरा अधर में लटकता हो, लटकना, लहूमना।

उ०—जे करती हुवै चोरी जारी, उणसूं प्रति नहीं कीजै यारी। बसत न लीजै चोरी वाळी, लूंबै मत तुं निबळी डाळी।

—ध. व ग्रं.

२ लिपटना, चिपटना।

उ०—बिरछां लूंबी बेलियां, फूली फली फबेह। सीतळ छाह सुहावणी, दणियर किरण दबेह। —र. हमीर

उ०—१ यों करता सील करी, तद 'रतना' आंखिया भरी। बाला लूबी, गळै बिलूंबी। बोलणी नह आयो, गळो गहरायो।

—र. हमीर

४ आक्रमण करना, हमला करना।

उ०—१ हे हेली म्हारै पती घरोघर मूं बैर बसाया है दिनोदिन रोजीना दुसमण आय धाड री धाड माथै लूंबै है। —बी. स. टी.

उ०—२ अरणभंग जोध असमांन दिस, ऊनरिया असमांन रा। कमधज्ज करणंगिरि लूंबिया, किरि लंका गढ वांनरा। —गु रू बं

उ० —३ सूता पर जुद्ध में म्हारा कत सू दस दस बीसां आदमी आयनै लडण वासतै लूंबिया तिकानै ऊठतै ही कत भजाय दीधा।

—बी. स. टी.

५ घेरना, आवेष्टित करना।

उ०—गढ लूंबी चहुंवळ मचि दमगळ, कोट वळवळ प्रळै जळ कळ। धोम झळवण मयण धूंधळ, काजि पळ मुख सकति कळकळ।

—रा. रू.

उ० —२ वांमै वार हाक लूंबिया वैरी, वागिया फारक वार वहै। ओवन कहै 'कमां' नीसरजै, करि भारथ कुळवाट कहै।

—करमसेन कल्यांणोत कछवाह री गीत

उ०—३ सु अठै वडो झगड़ो हुवो। आदमी आठ मा'राज रै हाथै ठौड़ रया अठै। अर, माराज पण घावां पूर हुवा। सबळसाल जी घावां पूर हुवा। दिखणी ब्याक कांनी लूंबिया है वा लोकनूं पण सांकड़े लियौ। —द. दा.

उ०—४ दारण 'कमां' लूंबिया ढोळा, 'भांनै' लिया दिवाळा ओळा। 'भांनै' तणा सुहड़ रिण आया, पड़िया तेरह अवर पुळाया।

—रा. रू.

६ लूटना,

उ०—पछै श्री रावजी री फौजां ठौड़-ठौड़ मेवाड़ में आय लूंबी। देसरो जळल आदा दीवांणजी नूं पहुंतो। दीवांणजी नै फिकर सबळी हुवो। —नैणसी

७ भूमना, उमड़ना।

लूंबणहार, हारो (हारी), लूंबणियो—वि०।

लूंबियोड़ो, लूंबियोड़ो, लूंब्योड़ो—भू० का० कृ०।

लूंबीजणो, लूंबीजबो—भाव वा०।

भूंबणो, लुंबबो, लुंमणो, लुंमबो, लूंमणो, लूंमबो, लूबणो, लूबबो, लूमणो, लूमबो—रू० भे०।

लूंबलूंबाळी—वि०—लूंबोवाली, जिसके लूंबे लगी हो, लूंमो से युक्त।

उ०—१ औरां रै मोचला ढोडा एलची ए, म्हारी अंबाजी रै नागर बेल। औरां रै पोडण हिंगळू ढोलियो ए, म्हारी अबा जी रै लूंबलूंबाळी सेज। —लो. गी.

लूंबालूंब—वि०—१ पूर्ण शृंगार से सुसज्जित, सजा हुआ।

रू. भे.—लांबलूंब, लांबालूंब,

लूंबाळो – देखो 'लूंबाळो' (रू. भे.)

उ०—सारा रै समंदा सूं कोडा मंगाया, जूनेगढ गूंथाया रे, म्हारी गोरबंद लूबाळो। —लो. गी.

लूंबियोड़ो—भू का कृ.—१ किसी वस्तु का एक छोर किसी में अटका हुआ हो तथा दूसरा छोर अधर मे लटका हुआ। २ भूमा या लिपटा हुआ। ३ आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ। ४ आक्रमण किया हुआ।

(स्त्री. लूंबियोड़ी)

लूंबो—सं. पु.—१ धन सम्पत्ति।

२ लाभ।

उ०—अमल गळै छै। तिण समीयै अलड़ो आय निकळियो। तरै भीलां दीठो नै कह्यो—श्रीमाता जी लूंबो दीधो।

—अलड़ा मुलड़ा भाटी री बात

लूंम—स. स्त्री.—देखो 'लूम' (रू. भे.)

उ०—सांवण मास सुहावणो, लागै भड़ जळ लूंम। उण बिन ही आसव तणी, सौरभ नह ले सूंम। —बां. दा.

लूंमणो, लूंमबो—देखो 'लूंबणो, लूंबबो' (रू. भे.)

उ०—रेसमी, गुलाब, गैंद, केवड़ा समूहे छै। और सीलडंबर तरोवर पर बेलिड़ियां लूंम रही छै। —बगसीराम प्रोहित री बात

लूंमणहार, हारौ (हारी), लूंमणियौ—वि० ।
लूंमियोड़ौ, लूंमियोड़ौ, लूंम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूंमीजणौ, लूंमीजबौ—भाव वा० ।

लूंमियोड़ौ—देखो 'लूंबियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. लूंमियोड़ी)

लूंमझूंम - देखो 'लूंबझूंब' (रू. भे)

लूंमी—देखो 'लूंब' (अल्पा., रू. भे)
उ०—ईंडी कवडाळी माथै पर ग्रोढी । झूंली झलकावळ मुखड़ै पर छोडी । झणकै झालरियौ झूमरियां झटकै । लूंमी मींगां री लूंणी तळ लटकै । —ऊ. का.

लू—स. पु.—१ लोप ।
२ काल । ३ प्रलय । ४ छेदन । ५ गुदा । ६ रुद्र । (एका.)
सं स्त्री —१ ग्रीष्म ऋतु मे चलने वाली बहुत गरम हवा ।
उ०—गियौ सियाळौ, ग्रायो ऊनाळौ । लू वाजइ छै, सीत लाजइ छै । पग दाझइ छै । तावड़ी तपीजइ छै । —सभा सिंगार
उ०—२ सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ ग्रगनी सूं बळता थका बीझावन रा हाथिग्रांरी पेटरी छाया विसरांम करै छै। भुयग सरप नीसरीग्रा छै । सो लू नै तावडै री ग्रगनि सूं बळता थका दौड़ि दौड़ि नै हाथीग्रां रै सीतळ सूंडाहळा माहै पेसि पेसि रहीग्रा छै । —राजान राउतरौ वात - वणाव
उ०—३ लू बाजै धरती तपै, मास ग्रासाढ़ौ जेठ । ग्रांख्या पावस ऊलरै, ऊभी मिंदर हेठ । —ग्रग्यात
क्रि. प्र.—लागणी, चालणी, बाजणी ।
रू. भे. —लूग्र, लूय ।
क्रि वि.—तक, पर्यन्त ।

लूग्र—देखो 'लू' (रू. भे.)
उ०—१ दूखण दीधं दुरजणी, ग्रोपं कवित ग्रसल्ल । लूग्र झलक्कै लागतै, ग्राबै स्वाद ग्रवल्ल । —ब. व. ग्रं.

लूग्रणो, लूग्रबौ—पोछना ।
उ०—वस्त्र कतायां ग्रटामल-भरी दुग्बळ ग्रभा ऊनरी । लूई ग्रामूं वांणी वकि, सोक प्रवाह सही नवि सकि । —नळाख्यान

लूग्रर—देखो 'लूर' (रू भे.)

लूग्रड़ी—देखो 'लाकी' (रू. भे.)

लूकमुल—स. पु.—एक देश का नाम ।

लूकौ—स. पु.—लुच्चा, बदमाश ।
२ लफंगा, चोर ।

लूखड़—स. पु.—वृक्ष विशेष ।
उ०—लीब लविगह लमणीग्रां, लींबोई लोबांन । लूखड़ लासा लीकड़, लगियगि लाबा पान । —मा. कां. प्र.

लूखाणौ, लूखासणौ, लूखाटणौ-स. पु.—१ मवेशी रखने वाले-परिवार की वह स्थिति जब कोई मवेशी दूध न देता हो ।
२ परिवार विशेष की वह स्थिति जब घर में दूध देने वाला मवेशी न हो ।

लूखौ—वि. (स्त्री. लूखी) १ जिसमें चिकनाहट न हो, ग्रस्निग्ध । चिकनाहट रहित ।
उ०—१ इण भांत मलूकदास रै तौ मास्तरी फाचरैं ग्राई पंण ग्राई । कठै तौ वे बी० डी० ग्रो० रा ऐंठा-चूंठा वासण मांजनै लूखा सूखा टुकडा खावण ग्रर कठै ग्रा सायबी भोगणी । —ग्रमर चूंनड़ी
२ पौष्टिक तत्त्व रहित भोजन या जिसमें पौष्टिक तत्त्व की कमी हो, सार रहित ।
उ०—हम जाणै पकवान ग्ररोगू, धापर मिलै न लूखौ धान । ग्रादम की विध करै 'ग्रोपला', भोळा जै रवियौ भगवांन । —ग्रोपौ ग्राढौ
३ नीरस, फीका ।
उ०—१ लाग खाडारी धारहू काई घटै, जिणमे कटिया हुवै जिकै हीज कटै । काइ धाया ग्रर काइ भूखा, लाग बिना सारा ही लागै लूखा । —र. हमीर
उ०—२ रहण कह्या राजनै, दुरस नह ग्रभता दावै । हलण कह्या हित हाण, जिका विण सही न ग्रावै । मिया दिया मोकलै, वणै किम लूखा वाइक । साथ हुवा सापरत, लोकलज रहै न लाइक । —र. हमीर
४ ग्रप्रिय, ग्ररुचिकर ।
उ०—माहिमा परमातम ग्रातम नहीं मालम । वाल्ही थण नै तज बिलखाणो बालम । भाई भाई, नै भूखौ तज भागौ । पग पग पुरसा नै लूखौ जग लागौ । —ऊ. का.
५ जिसमें नम्रता या शिष्टता का ग्रभाव हो ।
६ जिसमें दया, स्नेह ग्रादि मधुर प्रवृत्तियों का ग्रभाव हो ।
७ खुरदरा ।
रू. भे.—लुखंख, लुक्खौ ।

लूगड़ी—स स्त्री.—१ स्त्रियों के ग्रोढने का वस्त्र ।
उ०—झूठी झूमड़ी नै खाली ग्रांख ऊगडी कोन्या, झांक इसी रीस ग्रावै लेल्यू लूगड़ी उतार । —ऊ. का.
२ देखो 'लूगड़ौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

लूगड़, लूगड़, लूगड़ो, लूगड़, लूगड़ी–सं. पु —१ ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष ।

उ०—१ आज अपूजित देव छइ, पात्री लाचिन पुत्र । करि लेई कटकु । लूगड़ कछोटी कटि सूत्र । —मा. कां. प्र.

२ वस्त्र, कपड़ा ।

उ०–१ बरिहाहां री मांव लूटिजी । सासू रजाय रा लूगड़ा खोसणां । सु देवराज देखतां खोसणा —नैणसी

उ०–२ ताहरां बीजा ही ठाकुरां ही कहियौ-म्है पणि लूगड़ा पहिअर उठैहीज मुजरौ करिस्यां । —द वा.

उ०—३ न पावै राब मीठी कदै न जीमै, न पै'रै लूघड़ा कदै नीका । डाकियौ प्रसण जम जिम हैंला दियै, कसी विध आवसी नींद कीका । —ओपो आढो

रू. भे.—लुगड़ो, लुगडो

अल्पा.,— लुगड़ियौ, लूगड़ो, लूगडियौ, लूगडी

लूघा–स. पु —१ मुसलमानों की जाति विशेष ।

उ०—चडे सब्बदां-वेघ लूघा सिघाण । चडे तूणमें घातिया भूल बाण । —गु रू. ब.

२ ढीला-ढाला ।

उ०—धुर पेंड न झालै माथौ धूंणै, हाकूं केण दिसा हेराव । दत मोने राघव तै दीनो, पाछो लै तो लाखपसाव । चोडी पीठ साकड़ी छाती, करड़ उघड़ी लूघा कान । लाखाई बाता पाछो लीजै, कबर न दीजै दांन कुदांन । —ओपो आढो

लूचबांण–सं. पु.—एक प्रकार का कुत्ता ।

उ०—लाहोरी ताजी लूचबांण गिलजा पहाड़ी । जिकांरी मूडहथ मोह नाळ, हाथ भर नस, बड़ रै पांन जिसा कांन ।

—रा. सा. सं.

लूट—सं. स्त्री —१ बलपूर्वक किया जाने वाला किसी वस्तु का अपहरण, छीनने की क्रिया ।

उ०—तुरक पण मांणस घणा कांम आया, सु तुरक पाछा वळिया, लूट काई न की । —नैणसी

२ लूट में प्राप्त धन, असबाब ।

उ०—प्रगट गांम पुर घलै अप्रबळ, मार-लियौ बहुतां पुर मंडळ । ओपत साथां मिळै अलेखं, लूट तणी गिणती कुण लेखै ।—रा. रू.

३ विशेष परिस्थितियों में किसी की विवशता से अनुचित लाभ उठाने की क्रिया या भाव ।

क्रि. प्र.—मचांणी

लूटक–वि.—लूटने वाला, लुटेरा ।

लूटखसोट–सं. स्त्री.—लोगों को मारपीट कर माल असबाब छीनने का व्यापार या क्रिया ।

क्रि० प्र०—करणी, मचणी ।

लूटडू–सं. पु —लूटेरा ।

उ०—दूसरा वढेरा ठाकुर कहै, 'समक राखौ गांव तो पांच दस आपणा मारीया, उजाड़ीया चोकस जो उठा हीज सों पाछो घिरतै री मारग जाय चांपां । कटक उहा री माल वित सो अभरी हुवो छै। अर पाछै घिरतै नुं इसड़ो दबावां लूटडू लोक छै सु हालतो रहसी ।

—तीडै छाडावत री बात

लूटणौ, लूटबौ–क्रि स. [स. लुट्] १ चलते राहगीर से बलात् किसी वस्तु को छीनना ।

उ०—मिळ दळ प्रबळ राड़ग्रह मारै, सार असुर साचोर संघारै । मीर पचास सहर में मारै, पमंग दरक लूटै अणपारै । —रा. रू.

२ शहर, गांव, बाजार, बरात और मकान आदि में अनधिकार रूप मे घुस कर प्रवेश कर उसमें रखा माल असबाब उठा ले जाना ।

उ० —१ पड़ियौ हाको पड़गनां, लियौ भीमपुर लूट । रयण उगाड़ा रूलड़ा, काट दिया ज्यां कूट । —भोपालदान सांदू

उ०—२ आंगमियौ कमधां असुर, लूटीजै अजमेर । किलम सफीखा कापियौ, जवन थया सह जेर । —रा. रू.

उ० —३ मुहकम लग्गौ मेड़तै. ज्यां दणियर पर पेख । आपड़ियौ घर लूटतौ, वाहर गोहरसेख । —रा. रू.

३ बेईमानी या धोखे से किसी की वस्तु या धन को हड़पना, अधिकार में करना ।

४ किसी के हाथ से पड़ी या छूटी वस्तु पर कब्जा करना ।

५ रसास्वादन करना, सभोग करना ।

उ०—जाभ रूप लूटियौ विलास आठूं जांम । गेस, पुंज अली नामरी स पूतली पाखांण । भूला 'चन्द्रगर्भि' री न घामरी बाखांण भूला, बाम री न भूला भूला काम री बखांण। —र० हमीर

६ मोहित करना, वशीभूत करना ।

७ किसी दूसरे की वस्तु मनमाने ढग से उपयोग करना ।

८ उचित मूल्य से अधिक कीमत पर विक्रय करके ठगना ।

९ बरबाद करना, नष्ट करना, नाश करना ।

लूटणहार, हारौ (हारी), लूटणियौ —वि० ।

लूटिग्रोड़ौ, लुटियोड़ौ, लूट्योड़ौ —भू० का० कृ० ।

लूटीजणौ, लूटीजबौ—कर्म वा० ।

लूटमार–स. स्त्री.—लूटने व मारने का व्यापार या क्रिया ।

लूटाणौ, लूटाबौ—देखो 'लुटाणौ, लुटाबौ' (रू. भे.)

लूटाणहार, हारौ (हारी), लूटाणियौ—वि० ।

लूटायोड़ौ — भू० का० कृ० ।

लूटाईजणौ लूटाईजबौ—कर्म वा० ।

लूटायोड़ौ–भू० का० कृ०—देखो 'लुटायोड़ौ (रू. भे.)

लूटावणौ, लूटावबौ—देखो 'लूटाणौ, लूटाबौ' (रू. भे.)

लूटावणहार, हारौ (हारी), लूटावणियौ—वि०।

लूटावियोड़ौ, लूटावियोड़ौ, लूटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूटावियोड़ौ—देखो 'लूटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लूटावियोडी)

लूटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चलते राहगीर से बलात् किसी वस्तु को छीना हुआ. २ शहर, गांव, बाजार, बरात और मकान आदि में अनधिकार रूप से घुस कर प्रवेश कर उसमें रखा माल-असबाब उठा ले गया हुआ. ३ बेईमानी या धोखे से किसी वस्तु या धन को हड़पा हुआ, अधिकार मे किया हुआ ४ किसी के हाथ से पड़ी या छूटी वस्तु पर कब्जा किया हुआ. ५ रसास्वादन किया हुआ, सयोग किया हुआ. ६ मोहित किया हुआ, वशीभूत किया हुआ. ७ किसी वस्तु का मनमाने ढंग से उपयोग किया हुआ. ८ उचित मूल्य से अधिक कीमत पर विक्रय करके ठगा हुआ. ९ बरबाद किया हुआ, नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ।

(स्त्री. लूटियोड़ी)

लूटी—सं. स्त्री.—वह बकरी जिसके कान उसके शरीर के साथ चिपके हुए हों।

लूटेरौ—वि.—१ कूट-मार कर जबरन वस्तु छीनने वाला, लूटने वाला, लुटेरा, डाकू।

उ०—कान्हो साथ ले पाली ऊपर आयौ। मामथान जी नीसरिया। कानै पाली मारी। लूटेरू लोग वित्त ले चालता रह्या।

—नैणसी

२ किसी वस्तु का अनुचित मूल्य प्राप्त करने वाला।

३ मोहित या वशीभूत करने वाला।

लूठाणई—देखो 'लांठो' (रू. भे)

उ०—१ सार सुलक्षण जाणि करी, मवा निरंतर सेव। लूठाणइ तू लेखवइ, देव करीनइ देव।

—मा कां प्र

लूड—वि.—१ बदमाश, शैतान।

उ०—१ कौतिक लखे हुय विकराळ दीरघ रद किया, सालुल वले घड सरीर खावण कज सिया। लेखे असतरी प्रभू लूड सारग सर लिया, दोऊ कांन नासा दूर आछट कर दिया।

—र. रू.

लूडणौ, लूडबौ—क्रि. अ.—१ लड़खड़ाना।

उ०—१ कटीए कल्लरा लूडता लालरा भौमि होदव्मरा गज्ज मारंगरा।

—सू. प्र.

उ०—२ न जांणीय रात्रि न जांणिय दीस, न जांणीय पूरब न जांणीय पस्चिम, सहू एकाकार हुई, इसिइ समय (पर) दलइ बरतमांनि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूर्ण हुइ सुहुड सुहडइ लगुड हाथीआ लूडइ, रथावली ऊथालवइ।

—व० स०

लूडणहार, हारौ (हारी), लूडणियौ—वि०।

लूडियोड़ौ, लूडियोड़ौ, लूड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूडीजणौ, लूडीजबौ—भाव वा०।

लूडाणौ, लूडाबौ, लूडावणौ, लूडावबौ—रू० भे०।

लूडाणौ, लूडाबौ—देखो—'लूडणौ, लूडणौ' (रू. भे.)

लूडाणहार, हारौ (हारी), लूडाणियौ—वि०।

लूडायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लूडाईजणौ, लूडाईजबौ—भाव वा०।

लूडायोड़ौ—भू का. कृ.—१ लड़खड़ाया हुआ।

(स्त्री. लूडायोडी)

लूडावणौ, लूडावबौ—देखो 'लूडणौ, लूडबौ' (रू. भे.)

लूडावणहार, हारौ (हारी), लूडावणियौ—वि.।

लूडावियोड़ौ, लूडावियोड़ौ, लूडाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लूडावीजणौ, लूडावीजबौ—भाव वा.।

लूडावियोड़ौ—देखो 'लूडायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लूडावियोडी)

लूडियोड़ौ—भू. का. कृ—१ लडखड़ाया हुआ।

(स्त्री. लूडियोडी)

लूण—देखो 'लवण' (रू. भे)

उ०—१ लागै दाधै लूण ज्यान व्है जीव रो। बैरी बयण न बोल पपीहा पीव रो। घरहर की व्है गाज क गाज अमागळां। साबळ बीज सळाव बगत्तर बादळा।

—र. हमीर

उ०—२ बाबहिया नील-पखिया, बाढत दइ-दइ लूण। प्रिउ मेरा मद्ध प्रीउकी, तू प्रिउ कहइ स कूण।

—ढो. मा.

मुहा १ लूण खावणौ=किसी का अन्न खाना।

किसी के आश्रय मे पलना।

२ लूण-मिरच लगाणौ=किसी बात को बढाचढा कर तोड़ मरोड कर कहना।

३ बळघा माथै लूण बुरकणौ=किसी को चिढाना, चुभती बात कहना।

४ लूण उतारणौ, लूण उवारणौ=एक रस्म विशेष जिसमें विवाह के समय दूल्हे के पीछे बैठकर उसके ऊपर से नमक घुमाना जिससे दृष्टि-दोष आदि का असर न हो।

लूणका—सं. स्त्री.—१ भाला क्षत्रिय वश की एक शाखा।

२ देखो 'लूणी'

लूणणौ, लूणबौ—क्रि. सं.—१ भेड की ऊन कतरना।

२ फसल काटना।

उ० —१ साता सात कानी व्है, मलार ने चितूण्यौं। आंणि साभठा सा व्है, किसाणां ईख लूण्यौं।

—चि. चै.

लूणहार, हारी (हारी), लूणियौ—वि० ।
लूणियोड़ो, लूणियोड़ो, लूण्योड़ो—भू० का० कृ० ।
लूणीजणो, लूणीजबो—कर्म वा०

लूणपण लूणपणौ—सं. पु.—१ स्वामिभक्त होने का भाव । नमक-हलाल ।
उ०—१ लेय ढाल हथावय लोह लगै, प्रणियां तुल पायक पाल प्रगै । सज ऊभाय पैदल सांम हणो, परचांन उजाळत लूणपणौ ।
—पा. प्र.

लूणराव—सं. स्त्री.—१ भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।
उ०—१ गोपाळदेप्रोत, हड़वा, लूणराव, समा, सामेजा कंदल ।
—बा दा. ख्यात

लूणहरांम—वि.—देखो 'लूंणहराम' (रू. भे.)
उ०—१ तिण पातिसाह रो मामो ममरेजखांन तिणि एदल नू मारि प्रर टीकौ लियौ दिल्ली रौ । वरस एक राज कियौ । पातिसाह सेती लूणहरांम कियौ ।
—द. वि.

लूणहरांमी—स. स्त्री.—देखो 'लूणहरांमी' (रू. भे.)
उ०—१ तरै मांन कह्यौ—म्रै तौ सोहैं म्हारा कांम प्राया ।" तरै तुरका कह्यौ—ये लूणहरांमी की तिसी सजा ।
—नैणसी
उ०—२ नागजी खायो खजानै री मालरे, वैरी. लूणहरांमी हो गयौ, म्रो नागजी ।
—लो गी.
क्रि. प्र.—करणी ।

लूणाई—स. स्त्री.—१ भेड़ की ऊन कतरने की क्रिया या भाव ।
२ फसल काटने का कार्य ।

लूणागर—स. स्त्री.—१ लूनी नदी का एक नाम ।

लूणाणौ, लूणाबौ—१ भेड़ की ऊन कतराना ।
२ फसल कटवाना ।
लूणाणहार, हारौ (हारी), लूणाणियौ—वि० ।
लूणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूणावणौ, लूणावबौ—रू० भे० ।
लूणाईजणौ, लूणाईजबौ—कर्म वा० ।

लूणायोड़ौ—भू का. कृ—१ ऊन कतरा हुआ. २ फसल काटी हुई ।

लूणावणौ, लूणावबौ देखो—'लूणाणौ, लूणाबौ' (रू. भे.)
लूणावणहार, हारौ (हारी) लूणावणियौ—वि० ।
लूणावियोड़ौ, लूणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूणावीजणौ, लूणावीजबौ—भाव वा० ।

लूणावियोड़ौ—देखो 'लूणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लूणावियोड़ी)

लूणि—स. पु.—१ मांस, गोश्त ।
उ०—१ कोई दीह तांई थाव में लूणि न प्राया थिवदा वण सजोरा सेवसिंघ जी धांम पाया ।
—शि. वं.

लूणियौ—स. पु.—१ एक प्रकार का घास विशेष ।
२ मक्खन ।
वि.—१ नमक का बना, नमकीन ।

लूणियोड़ौ—भू का. कृ.—ऊन कतरा हुआ मेंढा ।
(स्त्री. लूणियोडी)

लूणी—सं स्त्री.—१ बच्चो का एक देशी खेल ।
२ लूनी नदी ।
वि. वि.—यह पुष्कर के पास से नागपहाड़ से निकल कर कच्छ के रन में समाने वाली मारवाड़ की एक प्रसिद्ध नदी है ।

लूणौ, लूबौ—देखो 'लुवणौ, लुवणौ' (रू. भे.)
लूणहार, हारौ (हारी), लूणियौ—वि० ।
लूणियोड़ौ, लूणियोड़ौ, लूण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूणीजणौ, लूणीजबौ—कर्म वा० ।

लूत—सं. स्त्री. [सं. लूता] १ मकडी, ऊर्णनाभ । (डिं. को.)
रू. भे.—लूता, लूतार ।

लूतरी—वि—दीठ, निर्लज ।
उ०—जाळ जीम बिलाला जामै, साडा मात सपूतरी । मत नाव खेड़ैया मयिहा, ल्यावण लोचै लूतरी ।
—वसदेव

लूता, लूतार—देखो 'लूत' (रू. भे.) (प्र. मा.)

लूब—सं. स्त्री.—कुंज ।
उ०—बाग प्रनेक बावडी, प्रद्भुत फूल प्रपार । कोयल मोर चकोर पिक, जपत भवर गुजार । जपत भवर गुजार, गुलाबां लूब में । लता फूल लपटात, सरोवर लूब मे ।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

लूबत्थ, लूबथ, लूबथाथ, लूबबूथ—देखो 'लबथब' (रू. भे.)
उ०— हुवे लोह हत्थ, बिन्है लूबत्थं । जड़े जमदाढं, करं पास काढं ।
—सू. प्र.
उ०—२ बंडा जुधां गयंदां ढाल वे खेत बेढीगारो, चाळवै ससत्रां पंजा बिरधै सचाळ । लूबबत्थां प्रगरेजां सूं सूर काळ रूपी लड़ै, उनागा खड़गां सीह, बिरद्दां उजाळ ।
—बुधजी सिढायच
उ०—३ दोनूं प्रोड लापा सू, उ खाली तेच हाथां । गोळी तीर सेला, उराख सूं लूबथाथां ।
—शि. व.
उ०—४ सीसोद कमधां सेफळा, बहि सेल झळहळ बीजळा हुय लूबबाथ हकारियां, कर खजर बाह कटारियां ।
—सू. प्र.

लूबड़ी—वि. [स. लुब्ध प्रा. लुद्धा] १ प्रासक्त, लुब्ध ।

उ०—१ आसौ आसा लूखड़ी, हुं मेकी ईणि कंति । मधुकर मालती परिहरी, पारधि धुठि भमंति । —प्रा. फा. सं

लूखड़ी—देखो 'लूंखड़ो' (रू भे)

लूम—सं. स्त्री—१ पूंछ, दुम । (डिं. को)

उ०—१ सखोड़ा उरा साकड़ा आमणोटा, मडै पीठ मंचा जिसा गात मोटा । जिका गोळ पींडा उभै चाक जोडे, तिका चांमरी लूम भा लूम तोडे । —वं. भा.

उ०—२ कसता बिडै मड कोदड कथा, बणावै अथा बेररै जेरबधा । मटाया मजाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नाग वाळी लखे दाग पावै । करै हालरा कालरा नाद कठां, प्रयीला मणी भालरा लूम गठा । व भा.

२ सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सभी शुद्ध स्वर लगते है ।

३ कपड़ा बुनने का करघा ।

४ देखो 'लंब' (रू भे)

उ०—१ एक समय जागीरदार उणारै बाग में बिगैर माळी री आग्या एक लूम दाख री लीवी । — नी प्र.

उ०— २ म्हारै सील को बाजूबंद थिरक रह्यो, सावलड़ो है बाजूबद री लूम । —मीरा

रू. भे.— लूम ।

लूमकझूमक—देखो 'लांबकभूंमक' (रू. भे)

लूमझूम—देखो 'लूंबझूंब' (रू. भे)

उ०—बणे लूमझूमां हुवा सज्ज बाजी, तुमारी खुरासाण माड़ेच ताजी । किता खेत कबोज बाल्हीक कच्छी, उडै फाळ लै लै फिरै ढाळ अच्छी । —व भा

लूमड़ी—देखो 'लोमड़ी' (रू. भे.)

लूमणौ, लूमबौ—देखो 'लूंबणौ, लूंबबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गह घूमी लूमी घटा, पावस उळट्या पूर । सावण महिने सायबा, कदे न राखूं दूर । —अज्ञात

उ०—२ नख नहिं निरखाती नायक, नखराळी, पिय जिय प्रतपाळी जाती पथ पाळी । घूरण नयणा बल काजळ जळ घूमै । लडथड़ आथडती प्रीतम गळ लूमै । —ऊ. का.

उ०—३ बाजरी रै लूमता सिट्टा नै देख मासी री मन थोडौ घणौ ढुळियौ । बालू बात रै अच बूबौ बेय बोली—पूत खाया नै कई जुग बीत्या । फुलवाडी

उ०—४ पवन चक्र बाजै पिछम, गळ लूमी कर गाढ । खेल महल मत छोडज्यो, आयौ मास असाढ । — अग्यात

लूमणहार, हारौ (हारी), लूमणियौ—वि० ।

लूमिओड़ौ, लूमियोड़ौ, लूम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूमीजणौ, लूमीजबौ—कर्म वा० ।

लूमाणौ, लूमाबौ—देखो 'लूंबाणौ, लूंबाबौ' (रू. भे.)

लूमाणहार, हारौ (हारी), लूमाणियौ—वि० ।

लूमायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूमीजणौ, लूमीजबौ—कर्म वा० ।

लूमावणौ, लूमावबौ—रू० भे० ।

लूमाळौ—देखो 'लूंबाळौ' (रू. भे.)

उ०—पावा पचडोरी पगरखिया पैरै, सूरत सिंघण सी बन जगळ बैरै । लोई ओढणनै साड़ी लूमाळी, फूटर लटकती नाड़ी फूदाळी । —ऊ. का.

लूम्यांरीडोरी—सं. स्त्री.—१ एक राजस्थानी लोक गीत ।

उ०—बाड बिचाळै पीळी, ऐ लूम्यांरीडोरी जैका भिरमिरिया पान, वारी ऐ लूम्यारीडोरी । —लो. गी

लूय—देखो 'लू' (रू भे)

उ०—महा पित्रुनउ आलउ, आव्यौ उन्हालउ लूय वाजइ कान पापडि दाभइ । —रा. सा स.

लूअर देखो 'लूर' (रू. भे)

लूर—स स्त्री —१ राजस्थान का एक लोकगीत जो फागुन मास मे स्त्रियां द्वारा चक्राकार वृत मे झूमझूम कर करतल ध्वनि के साथ नृत्य करते हुए गाया जाता है ।

उ०—होनी आयी, ऐ सहेल्या, मिळ खेला लूर होळी आयी ऐ कोई कोई ओढ्या भीणी चूनड । कोई कोई ओढ्या दिखणी चीर होळी आयी ऐ । —लो गी.

२ गणगौर के त्यौहार पर, गणगौर की परिक्रमा करती हुई, पातरियो द्वारा नृत्य के साथ गाया जाने वाला एक लोकगीत, जिसमें किसी विशेष पुरुष या राजा की कीर्ति का वर्णन रहता है ।

(बीकानेर)

३ लोक मंच पर, मारवाडी ख्याल करने वालो की ओर से, ख्याल की समाप्ति पर रात्रि के व्यतीत होने के समय, नृत्य के साथ गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

४ सावण मे तीज के त्यौहार के दिन तीजणियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

अल्पा.,—लूरड़ी ।

५ देखो 'लोर' (रू भे.)

उ० - १ है थट हमस हाहुस होय, कटका ग्यान सख न कोय । लैणा चलै वळ-वळ लूर, खान पठाण लसकर खूर । —गु. रू ब.

उ०—२ सावण आयो सायबा, लुळ लुळ बरसै लूर । गोख खडीकै गोरडी, जोबन मे भरपूर । —नारायणसिंह सांदू

रू भे —लूअर, लूवर, लूहर ।

लूरड़ौ—देखो 'लूर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ ग्रे मा, काकोजी नै कहकै मनै चूनड़ मंगा दे, मैं खेलण जास्यूं लूरड़ी।
—लो. गी.

लूलण-सं. पु.—१ शिश्न, मूत्रेन्द्रिय।

लूली—देखो 'लूलौ' (पु)

लूलू-वि.—मूर्ख, बेवकूफ।

उ०—धनधन जिण घर आसरौ। भला अरोगे भोग। पइसो हुवै न पास में, लूलू कर दे लोग।
—ऊ. का.

लूलोरा-स. पु.—१ परिहार वंश की एक शाखा, जो बाद मे मुसलमान हो गई।

लूलौ-सं. पु.—शिश्न, मुत्रेन्द्रिय।

अल्पा.—लूली।

वि. (स्त्री. लूली) १ जिसके हाथ-पाव कटे हुए हो।

२ जो कोई कार्य करने मे असमर्थ हो।

लूवणौ, लूवबौ—देखो 'लुवणौ, लुववौ' (रू. भे.)

लूवणहार, हारौ (हारी), लूवणियौ—वि०।

लूवियोड़ौ, लूवियोड़ौ, लूव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूवीजणौ, लूवीजबौ—भाव वा०।

लूवर—देखो 'लूर' (रू. भे)

उ०—१ ग्रो जी ग्रो, मनै पाली रौ पोमचियो रगा दं, मोरी माय। लूवर रमवा मैं जास्यू।
—लो. गी.

लूस-स. स्त्री.—१ सार तत्त्व।

उ०—गुण को प्रवाह, रूप को निधान, गुणवत की लूस जोबन को पेखणौ इसी उमा साखुली छै।
—लाली मेवाडी की बात

लूसणौ, लूसबौ-क्रि. स.—लूटना।

उ०—१ घरधां बाद मुहडा सू भागू, गामे घाली लाइ। गामि गामि लूसइ लूटावत, द्रूडी धाडा धाइ।
—कां. दे प्र.

उ०—२ कइ मइ कोइ मुनिवर संतापिउ, कइ उगती वेलि कापी रे। कइ मइ कहिना भडारज लूस्या, कइ लीधी वस्तु नापी रे।
—नळदवदती रास

उ०—३ जिहां भंडार भरया हुता, चोर पइट्ठा त्यांहि। सरवस लूसी नीसरिउ, झाली आणउ मांहि।
—मा. कां. प्र.

लूसणहार, हारौ (हारी), लूसणियौ—वि०।

लूसियोड़ौ, लूसियोड़ौ, लूस्योड़ौ - भू० का० कृ०।

लूसीजणौ, लूसीजबौ—कर्म वा०।

लूसाणौ, लूसाबौ-क्रि. स.—(लूसणौ क्रि. का प्रे. रू.) लुटाना, लुटवाना।

उ०—सोरठ मांहि सहू को नाठउ, भरघा देस लूसाई। भाजइ नगर अभंग आगिलां, आडई कोइ न थाइ।
—कां. दे. प्र.

लूसाणहार हारौ (हारी), लूसाणियौ—वि०।

लूसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लूसाईजणौ, लूसाईजबौ—कर्म वा०

लूहणौ, लूहबौ—१ बाल नोंचना, उखेड़ना।

उ०—आवइ आवासि आपणइ, अगि लूहंता केस। पुण्य हुई तु पामीइ, वेस्या-केरु वेस।
—मा. का. प्र.

२ देखो 'लुवणौ, लुववौ' (रू. भे)

उ०—१ ताहरा राजा ऊठि, हाथ झालि, उरौ खेचि गादी कन्हैं आण बैसाणियो। कुंवर री आंखी राणी लूही मुहडं ऊपरि हाथ फेरै है।
—पलक दरियाव री बात

उ०—२ कांमण तणा कपोल रौ, प्यारो लूहै पीक। अलबेलण पिया अधर री, लूहै काजळ लीक।
—र. हमीर

उ०—३ ताहरा लाखंजी घोडे ऊपर पछेवडी फेरी। पछेवडी सूं घोड़ौ लूह्यौ।
—नैणसी

लूहणहार, हारौ (हारी), लूहणियौ—वि०।

लूहियोड़ौ, लूहियोड़ौ, लूह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूहीजणौ, लूहीजबौ—कर्म वा०।

लूहर—१ देखो 'लूर' (रू. भे.)

ऊ०—१ गहणा मे लड़ाभूब हुयोडी लुगायां री लैण लूहर री ललकार मे जिण टेम सांमने वाळी लैण नै जवाब देवण आगै बढती तो उणा रै पगा रा धम्मीडा सू धरती धुजण लागती।
—रातवासौ

उ०—२ उण दिन सू इण चाकरी मे लाखणसी रौ ठिकांणौ बीदासर बराबर बाधियौ अरु मीरगढ रै नबाब नू पण इण मारियौ तिण सूं लाखणसी री लूहर गाईजै है।
—द. दा.

उ०—३ तरै सावणरी तीज ऊपरा चढियौ तिको पाछिलै पोहर घडी दोय दिन थकां महेवै तीज मिळी छै, तीजणिया लूहर गावै छै।
—जगमाल मालावत री बात

लूहियोड़ौ—देखो 'लुवियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लूहियोड़ी)

लैंग-स. पु.—१ वह पुरुष जिसके बाल-बच्चे व स्त्री आदि न हो।

उ०—बोदारे आडा बहै, सोदा मिळने सैंग। भूकोडा भंगता। फिरै, लाडू खावै लैंग।
—ऊ. का.

ले-स. पु.—१ दान २ तार ३ पुत्र, सुत ४ राम ५ दक्ष ६ वस्तु ७ मलिन ८ ढंग, तरीका ९ मेल, मित्रता। (एका)

अव्य.—१ तक, पर्यन्त।

लेइणौ, लेइबौ—देखो 'लैणौ, लैबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिम नामूं छूटूं जांणि ते वाणिक लेहणि वालि। तिम ध्याताए छूठा जमणी, रवि ससि नि कुंडालि। —मळाख्यांन

उ०—२ माडी मडि एकाएक मापड़े, वाग्यो एम रुखमणी वीर। अबळा लेह धणी मुंह मायो, मायो हूं पग मांड महीर।

—वेलि.

लेहणहार, हारो (हारी), लेहणियो—वि०।

लेइयोड़ो, लेइयोड़ो, लेयोड़ो—भू० का० कृ०।

लेईजणो, लेईजबो—कर्म वा०।

लेइयोड़ो—देखो 'लियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री लेइयोड़ी)

लेई-स. स्त्री.—१ आटा या मैदा को पानी के साथ घोलकर आग पर पका कर गाढा बनाया हुआ लसदार पदार्थ जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है।

२ गाय भैंस के दूध पीने वाले बच्चे का मल, विष्टा।

रू. भे.—लई

लेक्चर-स. पु. [अं.] १ व्याख्यान, भाषण।

लेक्चरबाजी-स. स्त्री.—२ खूब भाषण देने या करने की क्रिया।

क्रि. प्र.—करणी।

लेकण—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०—लेकण कर लाग राड़ रा लहणा, सिगबी तै लीधा सरताज। मांगै जकै ग्रजं नह मूकै, म्राठ गुणा देताई म्राज।

—बुधजी म्'सियो

लेखंगी-वि.—१ लिखने वाला, लेखक।

लेखउ-स. पु.—१ हिसाब।

उ०—'रतनिगु' ए 'पुनिगु' बेवि, दांणु दियंतउ नवि खिसए। माणिक ए मोतिए दांनि, कणय कापडु लेखउ किसए।

—ऐ. जै. का. सं.

लेख-सं. पु—१ लिखे हुए अक्षरो का समूह।

२ लिखावट।

३ पत्र, चिट्ठी।

उ०—१ लेखिणि कागल लेई-करि, लिखवा बईठी लेख। गुण गणतां गहिली थई, जाणउ रती न रेख। —मा. कां. प्र.

उ०—२ मया करनै मूकजो, कुसळ खेम मा लेख। लीलापति लख-जो वळी, समाचार सु विशेष। —डो मा

४ निबन्ध, रचना।

५ लिपिबद्ध किये हुए विचार, लिखी हुई बात।

[सं.] ६ देव, देवता। (ह. नां. मा.)

उ०—१ श्रीरघुनाथ समत्थ, हत्थ धारण धनु सायक। सेवक सरण सधार, लेख सेवै पद लायक। —र. ज. प्र.

उ०—२ दामोदर तूझ दसै द्रगपाळ, किता इक पार न जांणै काळ। उमा तौ पार प्रगम्म प्रलेख, ललम्मी तूझ न जांणे लेख।

—ह. र.

७ प्रारब्ध, भाग्य।

उ०—१ सुभ मझि ग्रसुभ लेख विध साखै, ग्रसुभ सगुन प्रथमी सह म्राखै। जोतिस सगुन बिहू विध जाणै, पोह ज्यां बरखै लेख प्रमाणै। —सू. प्र.

उ०—२ साभळि ध्यान धरै दुज साचो, तिणनूं बर बाळा त्रपु-राचो। करता ध्यान सकति इम कहियो, लेख प्रमाण सुपनि न्रप लहियो। —सू. प्र.

उ०—३ भई लेख ग्रेसी भइ, हर हर कर जिम्र हाय। कासी दिस कलिग्राणमल, चलैह भमम चढाय।

—कल्याणसिंघ बाढेल री बात

उ०—४ गैहणो पोसाख नहीं तो पिण रिणधवळ सूरज आगै चद्रमा दीसै त्यूं दीसै थो। पिण लेख सूं जोर नही।

—जगदेव पंवार री बात

८ लौकिक मान्यतानुसार विधाता द्वारा भाग्य में लिखा शुभाशुभ घटना-चक्र।

उ०—१ कह्यो न मानत क्यूं कह्यं, भूलत हौं द्रग देख। टळै नही तिल टाळियो, लिख्यो विधाता लेख। —गज उद्धार

९ समाचार।

१० प्रतिज्ञा-पत्र।

उ०—राणै समान वय रा विवाह री नरम कीधो सुणि कुमार चूंडै बडा प्रसभ रै प्रमाण पिता रो सबध करवाइ म्राप चित्तोड़ री गादी छोडण री लेख करि मारवाड रै अधीन कीधो।

—वं. भा.

११ परस्पर की हुई लिखापढी, लिखत।

उ०—इण कारण जिण रै जमी होइ सोही सूरवीर ठाकुर कहावै। परन्तु जैता ग्रवही सौं मीणां री चाल चोडि रजपूता री राह री राह में रहण री लेख करि सूपै तो यो सबध करण में म्रावै।

—वं. भा.

१२ पाप, कुकर्म।

उ०—बिलफत करै विसेस, प्यारी गळ लाग पिया रै। हो बिरचा मति हीण, किसका लेख किया रै। रग उछरग री रात, दुरंग जिण साथ दिखाई। ईस्वर गति ग्रलेख, पार किणही नह पाई।

—बख्तावरजी मोतीसर

रू. भे.—लेखउ, लेखब, लेखि, लैखब।

लेखउं—देखो 'लेखो' (रू. भे.)

उ०—१ जीरव्या रिणउं आंचे पांजरे करी दीजइ, जिहणा देवा लोहडीयांनी लाज न कीजइ, लेखउ कन्ी लीजइ। —व. स.

उ०—२ हरिद्रा तणउ रग, पाणी तणउ तरंग, दासि तणउ हेज, मांवा तणउ मउर, कलालनउ लेखउ मद्यप तणउं प्रतिपन्नउ। —व. स.

लेखक—सं. पु.—१ लिखने का कार्य करने वाला, वह जो लिखता हो। २ आजीविका या मनोरजन हेतु कहानी, उपन्यास आदि लिखने वाला।

३ किसी कृति का रचयिता।

अल्पा,—लइयौ, लेहियौ

लेखण, लेखणि, लेखणी—स. स्त्री.—१ लिखने या अक्षर बनाने की वस्तु, कलम, लेखनी।

उ०—१ अर जो तूं कागज दोन लेखण लै आवै तो तोनै लिख द्यां तद गुवाळ तीरें कागद दोत लेखण पेटी माहै थी सो काढ नें राजा हुजूर मेल्या। —गांम रा धणी री बात

उ०—२ मन जांणी पिऊ पै मिसरी, छाछ सोवनी मिळै न छाट। वळिया सौ पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा आंट। —ओपो आढो

उ०—३ वाळी मगि चढि चढि पथी जोवै भुवणि सुतन मन तसु मिळित लिखि राखै कागळ नख लेखणि, मसि काजळ आंसू मिळित। —वेलि.

२ लिखने की क्रिया या कला।

३ कै या वमन करने की क्रिया।

४ हिसाब करने की क्रिया।

५ खांसी नामक रोग।

६ बहत्तर कलाओ मे से एक।

७ समझने या जानने की क्रिया।

रू. भे.—लेकण, लेखण, लेखन, लेखिणि।

लेखणौ, लेखबौ—क्रि. स—१ लिखना।

उ०—१ 'अजन' तणौ लख जोस अपारौ, सोच करै जवना दळ सारो। पातसाह उर में भ्रम पायौ, लेखिस पुत्र 'अजीम' बुलायौ। —रा. रू.

उ०—२ कागळ नहीं क मस नहीं, नही क लेखणहार। सदेसा ही नाविया, जीवूं किसइ आधार। —ढो. मा.

२ समझना, जानना।

उ०—१ लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै, सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै। वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै, वे छंदा मिळ दंडक मत्त वखांणजै। —र. ज. प्र.

उ०—२ जिणसूं किणही नै फरमाय हाथ देखीजै। कै तो मारि आवां कै वकस आवां ही रजपूत लेखीजै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

३ सोचना, विचारना।

४ मानना, स्वीकार करना।

उ०—पेखियौ सहर जोधांण पत, सब जग धणी सपेखियौ। बप आभ परख व्याह वरण, लाभ नयण पण लेखियौ। —रा. रू.

५ देखना।

उ०—समप्रि भार धर गुणां सवाया, प्रोढै कंध धमळ धळ आया। भुजे ऐम कहि भार भळायौ, लेखि प्रीत सुत हियै लगायौ। —रा. रू.

६ हिसाब करना, गिनती करना।

उ०—चद्रकला ते विकला जांणी, घटत बढत नइ लेखइ। साहिब नइ तउ सदा सुरगी, वाधई कला विसेखइ। —वि. कु.

लेखणहार, हारौ (हारी), लेखणियौ—वि०।

लेखिओड़ो, लेखियोड़ो, लेख्योड़ो—भू० का० कृ०।

लेखीजणौ, लेखीजबौ—कर्म वा०।

लेखवणौ, लेखवबौ—रू० भे०।

लेखन—देखो 'लेखण' (रू भे.)

उ०—परीक्षासुद्ध रत्नजाति लीजइ, परदेसी वस्तुआं आय पूछीइ वाणुत्रना लेखना टीपणा सभालीइ। —व. स.

लेखप्रणाळी—स. स्त्री. यौ —१ लिखने की शैली, ढग तरीका।

लेखरिखम—स. पु. [सं. लेखर्षभ] १ इन्द्र, सुरपति। (ह. नां. मा.)

लेखवणौ, लेखवबौ—देखो 'लिखणौ, लेखबौ' (रू भे.)

उ०—१ 'लखौ' 'कमौ' आबागलौ, 'सूजौ' 'जैत' हराह। चीत भळावी दुरगसी, लेखवि प्रीत घराह। —रा. रू.

उ०—२ उठै हसन दळ लियां अभूता, हिलियौ महण क दक्खण हुता। भो वी समें दिवस खड़ि आयौ, लेखवतां मग मास न लायौ। —रा. रू.

उ०—३ ताणलो माण ताकै तिकौं, ऊभै मुख सूं आंमणो। लेखवै दुरस आगळ लखण, महण सरीखौ मागणो। —ब. क. ग्रं.

उ०—४ हमैं पीठी सिनान सारू भूखण बसतर खोलै है। तिण समैं इणरो रूप देख नायण 'रंभा' बोलै है। जो कमलां ऊपर हीरा देखवां तो नखां सहत यां पगां नै उपमा लेखवां। —र. हमीर

उ०—५ विण हणू लक परखण विभौ, सत्र जुरिण कुण मांडै समण। 'अभसाह' बिना पतिसाह प्रति, लेखवि और न अख जण। —रा. रू.

उ०—६ निलवटि कस्तूरी तिलक, मं करिसि मुखि। अयांण। ससिहिजि ससिहर लेखवी, करसि राहु-विनांण। —मा. कां. प्र.

लेखवणहार, हारौ (हारी), लेखवणियौ—वि०।

लेखवियोड़ौ, लेखवियोड़ौ, लेखव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेखवीजणौ, लेखवीजबौ—कर्म वा० ।

लेखवशि—वि.—१ भाग्यवश, प्रारब्धवश ।

उ०—पडहार धणा हणि सुजस पांमि, कमधज्ज लेखवशि थयौ कांमि । रच सींची महुरत हसै रेण, जिण कंवराज घर घडिग जेण । —सू. प्र.

लेखवि—सं. स्त्री.—१ पुष्प, सुमन । (ह. नां मा.)

२ लक्ष्मी ।

लेखवियौड़ौ—देखो 'लेखियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लेखवियोड़ी)

लेखसाल—१ पाठशाला ।

उ०—१ देवकुल अट्टालप्रासादप्राकार पोसधसाल लेखसाल हस्तिसाल तुरंगसाल, व्यायामसाल । —व. स.

उ०—२ वररुचि मांडी लेखसाल, पंडित छात्रप ठावि रे । छीलर जल यू हंसलु, कारणि किहू आविरे । । —प्राचीन फागु-संग्रह

लेखांतर—सं. पु. [स. लेख+अन्तर] भाग्य, प्रारब्ध ।

रू. भे.—लिखांतर ।

लेखापाखे—वि.—१ अपार, असंख्य ।

उ० १ लेखापाखे लूटिया, घोडा ऊंट दरब्ब । रौद्र अपार सवारिया सारे मार सरब्ब । —रा. रू.

लेखाफाड़, लेखाबही—स. स्त्री.—लेनदेन का हिसाब या लेखा रक्खी जाने वाली बही जिसमे सूद आदि जोड़ा जाता है ।

लेखारिखभ—सं. पु. [सं. लेखर्षभ] १ इन्द्र, सुरपति (ह. नां. मा.)

लेखि—देखो लेख' (रू. भे.)

उ०—१ ढोला रहिसि निवारियउ, मिळिसि थई कइ लेखि । पूंगळ हुइस ज आहुणउ, वसराहा जण देखि । —ढो. मा.

लेखिणि—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०—१ लेखिणि कागळ लेई करि लिखवा बईठी लेख । गुण गणतां महली थई, जाणउ रती न रेख । —मा. को. प्र.

लेखियोड़ौ—भू का. कृ.—१ लिखा हुआ. २ समझा हुआ, जाना हुआ. ३ सोचा हुआ, विचारा हुआ. ४ हिसाब लगाया या किया हुआ, गिना हुआ. ५ देखा हुआ. ६ माना हुआ, स्वीकार किया हुआ. ।

(स्त्री. लेखियोड़ी)

लेखिराति, लेखिराती—सं. पु. [सं. लेख्यराति] १ श्वान, कुत्ता ।

लेखूं—देखो 'लेखौ' (रू. भे.)

उ०—सुंदर मुख सोहामणूं रे, तेह हुवि किहां देखूं । एक वारि दु:ख पक्ख्ूं ए, क्रियहि नावि लेखूं । —नळाख्यांन

लेखे, लेखै—क्रि. वि.—१ हिसाब में, गिनती में ।

२ निमित्त ।

लेखैपासौ—सं. पु —१ बही का वह भाग जिस ओर खर्च की जाने वाली राशि अंकित की जाती है ।

लेखौ—स. पु —१ आय-व्यय का विवरण, खाता ।

२ समानता, सादृश्यता ।

उ०—एक मिळै है लेखौ लिलाड देखो भावै अरधचंद्र देखौ । आ उपमा सुणतां ही आवै रीस, कठै नाळेर नै कठै सीस । —र. हमीर

३ व्यवहार ।

उ०—सांचापण रहियौ सरस, लेखौ समझ लियोह । आप दियो जद आप नू, दिल म्हैं पहल दियोह । —र. हमीर

४ हिसाब, विवरण ।

उ०—१ नगद खजानै री लेखौ करो सो लेखौ कियां खजांनौ घणौ दीठै तरै उजीरां अमरावां कही – इतरो माल दरवेसां नू नहीं दियौ चाहिजै । लस्कर बिगर सामान नही रहै । —नी. प्र.

उ०—२ भागण म्हारै लोटाजी तिरिया, पिछवाड़े हसती तिराया जी । भोळा सा राजन लेखौ भी मांगै, दमड़ी को तेल कठै गयौ जी । —लो. गी.

उ०—३ देखो बिगडी देह, डोळ बिगड़गी देखौ । बिगड़ गई सब बात, लारलो लै कुण लेखौ । —ऊ. का.

५ गिनती, गणना ।

उ०—तीन बरसा मे वे तीन वेळा घरै आया । बीस···बीस दिन री छुट्टी मे । वा आगळिया माथै गिणण लागी ।···एक बीसी··· दो बीसी अर तीन बीसी···तीन बीसी दिना रा महीना कितरा महीना व्है । भगवान जाणै । किणनै लेखौ आवै । —अमरचूनड़ी

रू. भे —लेखउ, लेखू ।

लेखौ—स पु.—१ ऊंट का पतला विष्टा, मल ।

लेंचि, लेछी—देखो 'लेंची' (रू. भे.)

लेजम—सं. स्त्री. [फा.] १ एक प्रकार का धनुष ।

उ०—बंकि पटा फूलहथा, सोरि सिलकार कुसत्री । तस कसीस लेजमां, जजर गत्ती आजत्री । ज्यांन मढी बज्जर. भूर ढाढा चव फेरा । भौंह चढी मोसरा, होथ कड्ढी समसेरां । इसमां कुरांण कहि कहि अली, वदै वींद हूरां वरण । हाबस्स खेल जैहीं हरख, मुसलमान बहसैं मरण । —सू. प्र.

२ धनुष चलाने का अभ्यास करने के निमित्त बनी हुई नरम और लचकदार कमान ।

लेट–स स्त्री—१ लेटने की क्रिया या भाव ।

[अं.] २ देरी, विलम्ब ।

उ०—जिणदिन सूं म्हूं इणरी मा नै लार्थ बढायनै पुगायनै आयो हूं, उणदिन सूं लगायनै आजदिन तांई औ नितरोज मोटर मार्थ जावै अर उणरै आवणरी वाट उडीकै । मोटर पांच दस मिनट लेट भलाई व्हो पण इण रै आवण में जेज नीं व्है । —अमर चूंनडी

वि०—जिसे देरी हुई हो ।

लेटणौ, लेटबौ–क्रि.अ. [सं. लेटनम्] १ किसी खड़ी रहने वाली वस्तु या प्राणी का जमीन पर गिर पड़ना, या जमीन से सटना ।

उ०—कर विधान करवत ले कासी, ले व्रज रेणू लेटै । पग्यो न दिल प्रभुरै पद पकज, मिसत न त्यातिक भेटै । —र० रू०

२ शयन करना, नींद लेना ।

३ आराम करना, सुस्ताना ।

लेटणहार, हारौ (हारी), लेटणियौ—वि० ।

लेटिग्रोड़ौ, लेटियोड़ौ लेटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटीजणौ, लेटीजबौ—भाव वा० ।

लेटफीस–स स्त्री, यौ [अं लेट+फी] १ निश्चित अवधि के पश्चात् किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को प्रवेश हेतु दिया जाने वाला अतिरिक्त शुल्क ।

लेटरबाक्स–सं पु. यौ [अं. लैटर+बॉक्स] १ डाकखाने का वह डिब्बा, जिसमें बाहर भेजी जाने वाली चिट्ठियां आदि डाली जाती हैं ।

लेटाड़णौ, लेटाड़बौ—देखो 'लेटाणौ लेटाबौ' (रू भे)

लेटाड़णहार, हारौ (हारी), लेटाड़णियौ—वि० ।

लेटाड़िग्रोड़ौ, लेटाड़ियोड़ौ, लेटाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटाड़ीजणौ, लेटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लेटाड़ियोड़ौ—देखो 'लेटायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लेटाड़ियोड़ी)

लेटाणौ, लेटाबौ–क्रि. स. (क्रि. का. प्रे. रू.) १ किसी खड़ी रहने वाली वस्तु या व्यक्ति को झुका कर जमीन पर गिराना, या सटाना ।

२ शयन कराना, सुलाना ।

३ आराम करने में प्रवृत्त करना ।

लेटाणहार, हारौ (हारी), लेटाणियौ—वि० ।

लेटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटाईजणौ लेटाईजबौ—कर्म वा० ।

लेटाड़णौ, लेटाड़बौ, लेटाणौ, लेटाबौ, लेटावणौ, लेटावबौ । —रू० भे० ।

लेटायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ किसी खड़ी रहने वाली वस्तु या व्यक्ति को झुका कर जमीन पर गिराया हुआ, सटाया हुआ. २ शयन कराया हुआ, सुलाया हुआ. ३ आराम करने में प्रवृत्त कराया हुआ ।

(स्त्री लेटायोड़ी)

लेटावणौ, लेटावबौ—देखो 'लेटाणौ, लेटाबौ' (रू. भे.)

लेटावणहार, हारौ (हारी), लेटावणियौ—वि० ।

लेटाविग्रोड़ौ, लेटावियोड़ौ, लेटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटावीजणौ, लेटावीजबौ—कर्म वा० ।

लेटावियोड़ौ—देखो लेटायोड़ौ'

(स्त्री. लेटावियोड़ी)

लेटियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कोई वस्तु या व्यक्ति झुक कर जमीन पर गिरा हुआ या सटा हुआ. २ सोया हुआ, सुप्त ।

(स्त्री लेटियोड़ी)

लेठौ–स पु —कमी ।

लेड—देखो 'लेडौ' (रू. भे)

लेडकौ–स पु.—देखो 'लंडकौ' (रू. भे)

लेडौ (स्त्री लेडी)—१ मूर्ख, बेवकूफ ।

२ कायर राजपूत ।

उ०—फिट 'बीका' फिट कांधला, जगळधर लेडाह । 'दळाल' हुइ पगूं पकडियो, भाज गइ भेडाह । —अज्ञात

मह —लेड

लेण—देखो 'लाइन' (रू. भे)

लेणदार—देखो 'लैणदार' (रू. भे)

लेणरिल–सं पु. १ याचक, भिखारी । (अ. मा.)

लेन-देन —देखो 'लेण देण' (रू. भे.)

लेना–स. स्त्री.—१ भाटी वश की एक शाखा ।

उ०—भाटियां री खाप लिखते-जेचद, जेतुंग, बुध केलण सकपसी, सीहड़, लेना, छीकण । —बां. दा. ख्यात

लेप–सं. पु —१ कोई गाढी एवं गीली वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु पर लगाई या पोती जाने को हो ।

२ उक्त प्रकार की वह तह जो किसी दूसरी वस्तु पर लगाई या चढाई गइ हो ।

३ उबटन

उ०—ऊगटि-काजि ऊतावळुं, कीधु करदम-यक्ष । ललना लेप करइ रही, सेवा-विसइ समक्ष । —मा. कां. प्र

क्रि. प्र. करणौ, चढाणौ, लगाणौ

रू. भे. लेपन

लेपक—वि.—लेप करने वाला।

लेपकरम्म—सं. पु.— १ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

उ०—१ अंजन, लेपन, चित्रकरम्म, उपलकरम, लेपकरम्म लोहकरम्म। —व. स.

लेपड़ौ—देखो 'लेवड़ौ' (रू. भे.)

लेपणौ, लेपबौ—क्रि. स. [लेपनम्] १ किसी गाढ़ी व गीली वस्तु की तह चढ़ाना, पोतना, लेपना

लेपणहार, हारौ (हारी), लेपणियौ—वि०।

लेपियोड़ौ, लेपियोड़ौ, लेप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लेपीजणौ, लेपीजबौ—कर्म वा०।

लेपन—१ चौसठ कलाओं में से एक।

उ०—१ अंजन, लेपन, चित्रकरम्म, उपलकरम, लेपकरम्म। —व. स.

२ देखो 'लेप' (रू. भे.)

उ०—अग लेपन लगावीजै छै। अगे चोलीजै छै। —रा. सा. स

लेबल—सं. पु. [अ.] १ बोतल, पुस्तक, डिब्बा आदि पर लगी हुई कागज की वह छोटी चिट जिस पर उस वस्तु का नाम व विवरण लिखा होता है।

लेबौ—वि.—लटकता हुआ। (होठ)

उ०—खास रै खनै ऊभै पुजारी लेबौ होठ किया जरदा री पिचकारी छोडतां कह्यौ—सिवहरे सिवहरे घोर कळजुग आयगौ। इण गाम री पुन्याई अबै खतम हुंगी। —अमर चूनड़ी

लेमटौ—सं. पु.—१ बाजरी के आटे का बना खाद्य पदार्थ।

उ०—१ मैं अबै थोड़ी म्हारी काजळ वाली डबी मे मूंडौ तौ देखो किस्यौ व्है गयौ है, लेमटा री थर छै जिसौ। —रातवासौ

लेमन—स. पु.—१ नीबू के सत का वह शरबत जो हवा के जोर से बोतल में बन्द किया गया हो।

लेरियौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे)

उ०—१ ऊनाळा रा पोमचा, चौमासा रा लेरिया। सियाळा रा फागण्यां, छपावो म्हारा जोड़ीरा रतन सियाळौ राजन यूं ही गियौ जी —लो० गी०

लेळ—देखो 'लेलिह' (रू. भे)

लेलर, लेलरी—सं स्त्री—चूने की मिट्टी की दीवार में लगने वाला एक प्रकार का रोग या किटाणु जिसके कारण दीवार टूटने व खराब होने लगती है।

क्रि. प्र.—लागणौ

लेलक—सं. पु.—एक प्रकार का घास।

लेलहांन, लेलिह लेलिहांन—सं. पु.—१ सर्प, सांप (अ. मा., ह. नां. मा.)

लेली—१ देखो 'लंली' (रू. भे.)

२ देखो 'लैला' (रू. भे)

लेळौ—१ जिसके लार टपकती हो।

२ भोला।

लेव—सं. पु. [सं लेप] १ स्पर्श, असर।

उ०—१ गाईजे नवरंग फाग ए लागए नवि पाप लेव। सेवक सिवपुर माग ए, मागए भवि भवि सेव। —प्राचीन फागु-संग्रह

२ देखो 'लेवड़ौ' (मह रू. भे.)

लेवड़—देखो 'लेवड़ौ' (मह. रू. भे)

लेवड़ौ—स. पु. [स लेप प्रा. लेव + रा. प्र. ड़ौ] १ कच्ची या चूने की दीवार की पपड़ी।

रू. भे लेपड़ौ

मह —लेव, लेवड़

लेवणौ, लेवबौ—देखो 'लैणौ, लैबौ' (रू भे.)

उ०—१ बिरछा बेला पर चढणौं बुधि चाही, उर में अलबेला बेलण सुख आई। आणा लेवणनें मैवूळा आया, दरसण देवणनें मोमी मुळकाया। —ऊ. का.

उ०—२ नबी हुवोड़ा नीच, डबी भर लेवै डाकी। बैठ सभा रै बीच करै मगवार कजाकी। —ऊ. का.

लेवणहार, हारौ (हारी) लेवणियौ—वि.।

लेवियोड़ौ, लेवियोड़ौ, लेव्योड़ौ—भू. का कृ.।

लेवीजणौ, लेवीजबौ—भाव वा।

लेवाड़, लेवाड़ौ, लेवाळ—वि—१ लेने वाला।

उ०—१ वारं दाद हिंदवाद राज रीज वनां दाखौ, लाखां वाता गौरा दळां रटक्का लेवाड़। चद सूर साखी दाखी जहांन आवती चूंडा, मूंडै मूछां राखी, राखी जावती मेवाड़।

—सलूंबर रावत केसरीसिंह रौ गीत

उ०—२ खिजायौ त्रिनेण प्रळै काळ रौ रिमां धू खगे, पाखियौ नागेंद्र फतै पाव रौ प्रभाव। लेवाळ अतरौ गजां घाव रौ सुमार लागै, सेल मार रावरी कतान्त रौ सुजाव।

—राजा बलूंसिंघ रौ गीत

२ खरीददार, ग्राहक

रू. भे.—लिवाळ

लेवियोड़ौ—देखो 'लियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लेवियोडी)

लेवी—स स्त्री.—१ सरकार द्वारा अभावग्रस्त क्षेत्रों में अनाज भेजने हेतु या अन्य कारणवश की जाने वाली अनाज की वसूली।

लेवौ—सं. पु.—१ ऊनी वस्त्रों को खराब कर काट देने वाला एक सूक्ष्म कीड़ा।

उ०—१ पसू बाल की बणी पगरखी, पैर पैर सुख पावै। प्ररथ बाल धारी नहिं मावै, लेवौ प्ररथ लगावै। —ऊ. का.

लेस–वि. [सं. लेश] १ सूक्ष्म।

२ प्रत्यल्प, थोडा (डि. को)

उ०—१ रज तम गुण को लेस न राख्यौ, सत्वगुण लयो प्रभागी। सत्वगुण की सम्प्रदाय सबही, विवेक प्रादि लिया सागी। —सुखरांमजी महाराज

उ०—२ बात मुदी संविया बिगर, लागै लपट न लेस। इहकि न चित्त बुलावज्यौ, इण मे प्रौ प्रादेस। —र. हमीर

उ०—३ मन खडण की येहि उपाई, द्वैत प्रद्वैत उठाजी। से सरहे सो प्रपना प्रापही, लेस नही दूजाजी। —सुखरांमजी महाराज

३ किंचित, तनिक।

उ०—१ न दियै दुख लेस किणी जण नांमी, केसव वेस मजूर कियौ। मड पाव कळेस कळेस मिटावण, वेस कहै छज नेस दियौ। —भगतमाळ

४ प्रणु

५ एक प्रलकार विशेष जिसमे किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या प्रश मे रोचकता प्राती है।

६ देखो 'लैस' (रू. भे)

लेसाळ, लेसाळा—देखो 'नेसाळ' (रू. भे.)

उ०—१ जिहा भोगी करइ रेवाडी, इसी विसाल वाडी। जिहा पढइ छात्र चउसाल, तिहा इसी प्रनेक लेसाळ। —सभा

लेसाळियौ लेसाळीयउ—देखो 'नेसाळियौ' (रू. भे.)

लेसूड़ौ, लेसूवौ—देखो 'लसोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण ऊपर घणा बड़ा पीपळा बोर बकायण नीब नाळेर प्रांबा प्राबली सीसू सरेस खेजड़ जाळ प्रासपालो खिजूर गूंदी लेसूड़ौ केसूला खिरणी मोळसिरी। —रा. सा स.

लेस्या – स. स्त्री—१ जैन धर्मानुसार जीव की वह प्रवस्था जिससे कर्मों का प्रात्मा के साथ सम्बन्ध हो।

वि० वि०—यह छ: प्रकार की होती है।

लेहगौ—देखो 'लहगौ' (रू. भे.)

लेह–सं. पु. [सं. लेह्य] १ भोजन, प्राहार (प्र. मा.)

२ प्रानन्द, मजा।

उ०—१ हूंसज्यौ कसज्यौ खेलज्यौ, लीज्यौ जीवन लेह। पलक न न्यारा पोढज्यौ, नाजक धण रा नेह। —बगसीरांम प्रोहित री बात

३ चाटकर खाई जाने वाली वस्तु।

४ ग्रहण का एक भेद जिसमें पृथ्वी की छाया सूर्य को जीभ के समान चाटती हुई प्रतीत होती है।

रू. भे.—लेहण

लेहण—देखो 'लेह' (रू. भे.) (डि. को.)

लेहणौ—देखो 'लैणौ' (रू. भे)

लेहणौ, लेहबौ–क्रि स. [स. लेह] १ चाटना।

२ स्वाद, लेना, चखना।

लेहणहार, हारौ (हारी), लेहणियौ—वि.।

लेहिग्रोड़ौ, लेहियोड़ौ, लेह्योड़ौ—भू का. कृ.।

लेहीजणौ, लेहीजबौ—भाव वा.।

लेहल्ल - वि.—१ पकड कर रखने वाला।

लेहाफ—देखो 'लिहाफ' (रू. भे.)

लेहाल—देखो 'नेसाल' (रू. भे)

लेहासभा–स. स्त्री—१ लेखक मण्डली

उ०—१ प्रास्थानसभा श्रीगरणसभा व्ययकरणसभा धरम्माधिकरण-सभा देवकरणसभा पंडितसभा लेहासभा भाडाकार कोस्टाकार। —व. स.

लेहियोड़ौ–भू. का कृ.—१ चाटा हुप्रा. २ स्वाद लिया हुप्रा, चखा हुप्रा।

(स्त्री. लेहियोडी)

लेहियौ—देखो लेखय' (प्रल्पा. रू. भे.)

लेह्य–स. पु.—१ चाटने के लिए बना पदार्थ।

लैंगिक–स. पु. [स] १ वैशेषिक दर्शन के प्रनुसार लिंग द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान, प्रनुमान।

वि.—१ लिंग सम्बन्धी, लिंग का।

२ चिन्ह सम्बन्धी।

३ प्रनुमित।

लंगौ—देखो 'लहगौ' (रू. भे.)

उ०—गोरे कचन गात पर, प्रंगिया रंग प्रनार। लंगौ सोहे लचकतौ, लहरघौ लफादार। —र. हमीर

लंण—देखो 'लाइन' (रू. भे)

उ०—वे सगळाई पोत पोतारा ध्यांन में नीचा माथा कियोडा खाता-खाता चाल रह्या। वारै एक कांनी मोटरां री लंण चाल री धीरै-धीरै। इसो मार्गं जांणै कीड़ी नगरी जागग्यौ। —प्रमर चूंनडी

लंप–सं. पु. [प्र.] १ दीपक।

रू. भे.—लंप।

लैंसर—सं. पु. [अं.] १ रिसाले का एक भेद, जिसके व्यक्ति भाला लिए हुए घोड़े पर सवार रहते हैं।

लै—सं. पु.—१ राम २ प्रलय ३ उमया ४ रमा, लक्ष्मी ५ करुणा दया ६ अवसर मौका (एका)

७ ध्यान, लगन।

उ०—१ दादू द्रस्टै द्रस्टि समाइले, सुरतैं सुरति समाइ। समझैं समझ समाइले, लै सौं लै ले लाइ। —दादूवाणी

उ०—२ राम कहै जिस ध्यान सौं, अम्रत रस पीवै। दादू दूजा छाडि सब, लै लागी जीवै। —दादूवांणी

८ वश, अधिकार।

क्यूं—आ उणरै लै पड़ती बात है।

लैंकार—सं. स्त्री.—१ लयपूर्ण ध्वनि, मधुर ध्वनि।

उ०—१ बाळू बाबा देसड़उ, जहां पांणी सेवार। ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवइ लंकार। —ढो. मा

[सं. लय+कार] २ विनाश, संहार।

उ०—संघार मार लैंकार सेन, मिळ सार धार अधार मेन। धड मुंड खंड वे रुंड धक्क, करमाळ वहै किरि काळ चक्क। गु. रू. बं.

लैं'कौ—देखो 'लहकौ' (रू. भे.)

लैंखव—देखो 'लेख' (रू भे.)

लैंघाळ—स. पु.—१ तलहटी।

उ०—दोळी जिण डूरगरैं, बसियो नगर विसाळ। यूं बसियो अमरावती, मेर तणी लैंघाळ। —भोपाळदान सांदू

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

वि. वि.—इसके विषम चरणो में दस मात्राओ और आठ मात्राओ पर विश्राम होता है। सम चरणो में आठ मात्राए रखकर रगण के बाद 'जी' शब्द लगता है।

रू. भे.—लहुघाळ

लैंची—स. स्त्री.—१ चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

उ०—सचीयाय तु ही चांकल बिसेक, लोलीयै लाल लैंची तु लेख।

—रामदांन लाळस

रू. भे.—लेची, लेछी।

लैंजी—देखो 'लहजो' (रू. भे.)

लैंण—स. स्त्री.—१ तुरत ब्याई हुई गाय।

२ मृतक के बारह दिवसोपरान्त जाति में वितरित किया जाने वाला बरतन या पात्र।

३ बेचारी।

४ देखो 'लाइन' (रू. भे.)

लैंण क्लियर—स पु. [अं. लेनक्लियर] रेलगाड़ी के गार्ड या ड्राईवर को आगे रास्ता साफ होने की दी जाने वाली सूचना।

लैंणदार—स. पु—जिसका ऋण चुकाना हो।

लैंणदण—सं. स्त्री.—१ लेन और देन का व्यवहार, आदान-प्रदान।

२ व्यापारिक व सामाजिक क्षेत्र मे लेन-देन का व्यवहार।

३ ब्याज पर रुपया उधार देने व लेने का व्यवहार।

रू भे.—लेन देन, लैणौ दैणौ, लैन दैन

लैणायत, लैणायती—वि.—१ ऋण दाता, कर्ज देने वाला।

उ०—१ तठा उपराति करि नै राजांन सिलामति जिण भांत लैणायत दीठां दैणायत घटै तिम तिणि भाति दिन दिन निसि दीठं सूरज री तेज घटण लागो ने सूरज री तेज घटियो राति मोटी होण लागी। —रा. सा. सं.

उ०—२ सुणा नाग नर देव सकोई, विमगो दांन अखूंनी वात। कीधो किणी न कोई करसी, पदम जिसी लैणायत पात।

—महाराज पदमसिंह री गीत

रू. भे—लहणायत, लेणायत, लेणायती।

लैणार लैणियार—वि.—१ लेने वाला।

उ०—१ तकण समै कासी माहे बरस दंन माहे हेकण दन वैसाखी पूरणमासी करवत देग्रै। तठै करवत रा लैणार सारा बीजा ही कोहीं हूंता ते पण आंण मिळिया। —कल्याणसिंघ बाढेल री बात

रू. भे—लणियार, लणिहार, लणीहार।

लैणियौ—स पु—१ लाभ, मुनाफा।

२ कर्ज ऋण।

लैणौ—स. पु—१ ऋण, कर्जा।

२ लाभ, मुनाफा।

३ हित, भलाई।

रू. भे.—लहणौ, लिहणौ

अल्पा.,—लहणियौ, लहण्यौ

लैणौ दैणौ—देखो 'लैणदैण' (रू. भे)

उ०—थारै नै राजा रै काई लैणौ दैणौ रे चौधरी? थूं उणनै मतीरो क्यूं भेट करणो चावै। —अमर चूंनड़ी

लैणौ, लैबौ—क्रि प.—१ प्राप्त करना, पाना।

उ०—१ उणरै रूप री हाको चौफेर हवा में घुळग्यौ हो सोळै। बरस तो लैणा दूभर व्हैगा। मा री कूख में मायली पण माईतां रै आंगणै नीं माई। —फुलवाड़ी

उ०—२ लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि। दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि। —ढो. मा.

२ मोल लेना, खरीदना ।

उ०—१ ईडर को धर मडलगण, हूं तउ आंण न देसि । धरि बइठाही आवरण, मोल मुहंगा लेसि । —डो. मा.

उ०—२ धरि बइठा ही आविस्यइ, लाखे लियां लइंग । तिणमइ लेस्या टाळिमा, बांकड मुहा विड़ंग । —ढो मा.

३ किसी पदार्थ को उठाकर या व्यक्ति को बुलाकर कहीं से लाना या पहुंचाना ।

उ०—१ भरी रूप रग रस भरी, लुळ आवै जळ लेंण । सरवर त्यां निरखण सही, नीरज किया क नैण । —र. हमीर

उ०—२ मीर सिकारां नै हुकम हुवौ छै । बाज, जुररा, कुही, बहरी, सिकरा लगड़ चिपक तुरमती साथ लीजै छै ।

—खीची गंगेव नींबावत री दोपहरी

उ०—३ दूजै दिन माणस वडारण मा री छोकरी आदमी सव हेक आया भरमल नुं लेण नु । —कुवरसी साखला री वारता

४ सेवन करना, खाना ।

ज्यूं—दवा लेंणी, परसाद लेंणी ।

५ अधिकार या कब्जे मे करना ।

ज्यूं—जमीन लेंणी, गाव लेंणी ।

६ पहुंचना ।

ज्यूं—आपां नै अठासूं गाव लेंणो मुसकल ज्यूं त्यूं कर घर ताइ लेंणौ ।

७ वहन करना, उत्तरदायी बनना ।

८ किसी वस्तु या व्यक्ति का उपभोग या उपयोग करना, काम मे प्रवृत्त करना ।

ज्यूं—बळद नी हा तौ ट्रेक्टर सूं काम लेंणो हो । इण वगत में नोकर स काम लेंणो कठण है ।

९ अमूर्त बातो, विचारों, परामर्श आदि के सम्बन्ध में किसी रूप में प्राप्त करना ।

ज्यूं—सलाह लेंणी, मन रौ भाव लेंणौ, थाह लेंणी

विशेष:—'लेंणी' क्रिया का प्रयोग बहुत सी क्रियाओं के साथ सयोजक क्रिया के रूप में होता है जहां पर यह क्रिया उस क्रिया की पूर्ति या समाप्ति का सूचक होती है । जैसे—खा लेंणी, पी लेंणी उठा लेंणी, सुण लेंणी आदि । कुछ अवस्थाओं व परिस्थितियो मे यह इस बात का भी सूचक होता है कि कर्त्ता कोई बहुत ही कठिनता से, जैसे-तैसे अथवा भद्दे या बहुत ही साधारण रूप मे कोई क्रिया पूरी करने मे समर्थ होता है । जैसे—टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेंणी, थोड़ी घणी संस्कृत समझ लेंणी ।

मुहा.—लेंणी एक नै देणा दो—कोई सम्बन्ध न होना ।

लेंणी न कोइ देणी—सम्बन्ध विच्छेद करना ।

लेंणा रा देणा पड़णा—जान पर आ पड़ना ।

लेंणहार, हारौ (हारी), लेंणियौ—वि० ।

लियोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिरीजणी, लिरीजबौ - कर्म वा० ।

लहणौ, लहबौ, लह्णो, लह्बौ, लिवणौ, लियबौ, लिवणो, लिवबौ, लेवणो, लेवबौ, लेहणौ, लेहबौ—रू० भे० ।

लेंण—देखो 'लाइन' (रू. भे.)

लेंणदेंण—देखो 'लेंणदेण' (रू. भे.)

उ०—हियै हठी हमीरसौ अठी अमीर भैन में । दवा गंभीर देखिये, धमीर लेंणदेंण में । —ऊ. का.

लेंम-स पु.—किंचितकाल, अल्पकाल ।

लेंर-क्रि. वि —१ देखो 'लारै' (रू भे.)

उ०—१ मत ना अे रांणी ! मसळी मारी, मत ना काढी सेल जैपुर मिळी जोधपुर मिळगी, मिळगी बीकानेर दोय पगां नै आगां कोनी, भाई होग्या लेंर । —डूंगजी जवारजी री ळावळी

उ०—२ लागौं रै था सूं नेह पनाजी म्हांरी अब जोरा जोरी तौ निभावौ सावळडा थारी लेंर म्हारी मागी रे ।

- रसीलैराज रा गीत

उ०—३ गिरधी काळ कूट परी भग तुच्छी, परे बित्थुरे भूमिपै नाग बिच्छी । जटी भूत प्रेतं लिये लेंर लग्गी, हठी बीरभद्र तमासै उमग्गी । —ला रा.

२ देखो 'लहर' (रू. भे)

उ०—१ लेंर-लेंर मे धमचक लागी, पांणी जाय पाळ नें लड़ियो । काछब पूछयो माछळी, कांइ चूक पडी के घाटौ पड़ियो ।

—चेतमानखो

उ०—२ ठंडी बूठोड़ा री लेंर मीठा बटाउ रा गीत । भली भादरवा री रात, मिळौ मनडै रा मीत । —चेतमांनखो

उ०—३ नित भूधर सीत निवारन का, धिन जे गळ गूदर धारन का । कर ले घर लेंर कमडळ की, महिमां हर लै महिमडळ की ।

—ऊ. का.

रू. भे.—लैरा, लैरया ।

लेंरको, लेंरकौ - देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ बड़ला री जाडी छीया नैं पांणी रा ठाडा लेंरका ।

—फुलवाडी

लेंरदार—देखो 'लहरदार' (रू. भे.)

लेंरां- देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—कमधजिया लेंरां चालां ली, मोडी मोडी बांकड़ी तरै सु ।

ग्राय बड़ी है तुरी घर ग्रांगणा, लूंबाझूंमा वावण ग्राला।
—रसीलैराज रा गीत

लैराणौ, लैराबौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)
लैराणहार, हारौ (हारी), लैराणियौ—वि०।
लैरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लैराईजणौ, लैराईजबौ—भाव वा०।

लैरियादार—देखो 'लहरदार' (रू. भे.)

लैरियां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

लैरियौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

लैरी—देखो 'लहरी' (रू. भे.)

लै'रौ—१ देखो 'लहर' (ग्रल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)
उ०—१ पणिहारयां परवार, जाय सरवर जळ ल्यावण। भूलरियै झणकार, लसकरां लैरौ गावण। —दसदेव
उ०—२ लबालब जळ लैरौ भीजै, हरख बगै घर हाफती। चटकै नीर निचोय नारयां, कुड कुड़ती सी कापती। —दसदेव

लैरयां—१ देखो 'लारै' (रू. भे.)
२ देखो 'लैर' (रू. भे.)

लैरयौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

लैलहाणौ, ललहाबौ—१ देखो 'लहलहाणौ, लहलहाबौ (रू. भे.)
लैलहाणहार, हारौ, (हारी), लैलहाणियौ—वि०।
लैलहायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लैलहाईजणौ, लैलहाईजबौ—भाव वा०।

लैलहायोड़ौ—देखो 'लहलहायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लैलहायोडी)

लैला—स स्त्री.—१ ईरान के प्रसिद्ध ग्राशिक मजनू की प्रेमिका।
रू. भे.—लेली, लैली।

लैली—स. स्त्री.—१ एक प्रकार का पक्षी।
रू. भे.—लेली।
२ देखो 'लैला' (रू. भे.)

लैस—सं. पु.—१ बड़ी व लम्बी नोक वाला एक प्रकार का बाण।
२ भाला।
३ कपड़ो पर लगाने का बेल-बूटेदार फीता या बेल।
उ०—छैल दुपट्टा घो तो दुपट्टा री लैस घो तो। पीळी पीळी मोहरां घो तो, पूजू गणगोर। —लो गी
वि.—१ वर्दी व शस्त्रों से सुसज्जित।
उ०—जमदूत ठाकरां रै बिलकुल सामनै उभा हा—सस्तर पाती सूं लैस मूडा रै बुकनी दियोड़ा ग्रर हाथां मे नागी तरवारां लियोड़ा। —रातवासौ
२ सब प्रकार की सामग्री से सजा हुग्रा, पूर्णयुक्त।
रू. भे.—लेस, ल्हैस।

लौं—देखो 'लौ' (रू. भे.)
उ०—१ नभाग्नी वायु लौं जळ धरनि ग्रापू इन नहीं। महात्मन तेरे हैं ग्रवर, नहिं मेरे इन मही। —ऊ का.
उ०—२ गुडी लौं उडी गिद्धनी व्योम छायौ। नही दूर रत्ता रयां पथ पायौ। भिरी पक्खरां पक्खरा भीरि पूर। हय गज्ज गाहं भय चूरमूर। —ला. रा.

लौंक—स. स्त्री.—लचक।

लौंगी देखो 'लूगी' (रू. भे.)
उ०—माथै केसरीया पाग छै पैहरण लाल लौंगी छै। नै कहे छै, "रे रात तीतर बोलै छै। —लोवर छाडावत री बात

लौंड—देखो 'लोडो' (मह., रू भे.)

लौंडपण, लौंडापणौ—स. पु—१ बच्चों जैसी हरकत, छिछोरापन।

लौंडौ—स पु.- देखो 'लौंडो' (रू. भे)
(स्त्री लोडी)

लौंदौ- देखो 'लूदौ' (रू भे)

लौ—सं पु—१ मोह।
२ प्रीति।
३ मछली।
४ शिला।

लौ'—देखो 'लोह' (रू भे)
उ०—१ ऊजळ मळ सकुळ पीठी उबटांणीं, करडै लौ' सार्थ ग्ररण कूटाणी। कळिया कूळा री काई मे कळणी, विसहर सगत सूं पीपळिया बळणी। —ऊ का.

लोग्रड़ौ—१ देखो 'लड' (ग्रल्पा, रू भे.)
२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लोग्रण—देखो 'लोचन' (रू भे)
उ०—१ लोग्रण तेह खिसि पडउ, केय पर त्रीय उलहासी। चरण गेह तलि जाउ, जेणरिण पाछा नासी। —प. च. चौ.
उ०—२ 'कामकदला' कही कही, बडहड मूकइ धाह। पूरि वहिया पारिण वहइ, लोग्रण ना परवाह। —मा. कां. प्र.

लोग्रणडौ—देखो 'लोचन' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—लोग्रणडे लेखं नही, वाधिउ पूर-प्रवाह। दीन ववराइ वेहूं दुखी, दैवइ दीधु दाह। —मा. का. प्र.

लोग्ररकोरट-सं. पु. [ग्रं. लोग्रर कोर्ट] १ नीचे की अदालत।

लोइ—देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ पंचेन्द्रिय भव मनुस्यह तणु. ग्रारय देस उत्तम कुल गणु। साधु तणउ योग दोहिलु होइ, ग्यानद्रस्टि जोउ भवियां लोइ।

—नळदवदती राम

उ०—२ देस निवाणू सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कांमिणि दिखणि धर, हरि दीयइ तउ होइ। —ढो. मा.

२ देखो 'लोई' (रू भे.)

उ०—ग्रघळी पटाट पूर, गाउ दाउ गज्ज-ऊर। लोइ दीप में लोचन, कागरि सारीखा कन्न। —गु. रू. ब.

लोइण—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

उ०—१ दीठी रूपाळी म्हैं घणियां, पण इसी यांही ज लोइणां री ग्रणियां। जिण भात खतग रा बाण,लागां पछै हरै हीज प्राण।

- र. हमीर

उ०—२ चोटी वाळी चमक लोईणां लागणी, फणधर जिसडै फैल नवी काइ नागणी। ग्रलकां बळ ग्रदभूत छुवती छत्तिया, ऊभकती ग्रग ग्रग कता जण तत्तिया। —र. हमीर

लोइयौ-स. पु.—१ कच्चा मतीरा। (बीकानेर)

लोई-सं. स्त्री—१ ग्राटे की रोटी बेलने हेतु बनाया गोलीनुमा ग्रश।

२ स्त्रियो के ग्रोढने का एक खास रग में रगा हुग्रा ऊनी वस्त्र।

उ०—१ लोई ग्रोढण नै साड़ो लूमाळी, फूटर लटकंती नाडी फूंदाळी। पावा पचडोरी पगरखियां पैरै, सूरत सिंघण सी बन जगळ बैरै। — ऊ. का.

उ०—२ ग्रंबर धावळ ग्रांगी, सिर लोई सोहै। —मे. म.

उ०—३ लोई सिर फाबत धावळ ल क, चमू पर सावळ सूळ चमंक।

—मे. म.

३ देखो 'लोवड़ी' (रू. भे.)

मह.—लोवड़।

४ कबीर की पत्नी का नाम।

५ प्रसव के पश्चात स्त्री या बच्चे के की जाने वाली मालिश।

६ देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—खरी नीद में खाज, मूढ खिण बैठे मारै। नख लाबा सू निठुर, लोई काढै ललकारै। —ऊ. का.

मुहा.—लोई मरणौ=कायरता ग्राना।

लोई ठसणौ=खून जमना, ग्राश्चर्य चकित होना।

लोई पीवणौ=रक्तपान करना, परेशान या दुखी करना कष्ट देना।

लोई मरीजणौ=पशुग्रों से ग्रधिक परिश्रम लेने के बाद किसी बंद स्थान पर बांधने से रक्त संचार का बंध हो जाना।

रू. भे.—लोइ।

लोईभांण—देखो 'लोहीभांण' (रू. भे.)

लोईयाळ-वि—१ रक्त से भरा हुग्रा, रक्त-पूर्ण।

लोकंजन-स पु—एक प्रकार का कल्पित ग्रंजन जिसके लगाने से मनुष्य ग्रदृश्य हो जाता है।

रू. भे—लोपांजन।

लोक-स. पु.—१ संसार, जगत।

उ०—१ नारायण रा नाम सू, लोक मरत है लाज। बूडैला बुध बायरा, जळ बिच छोड जिहाज। —ह. र.

उ०—२ चैत मास री चांदणी, सरस बधी सग सोक। ग्रांण ग्राज खुसजाइला, लोम सरां सहू लोक। —र. हमीर

२ समाज।

उ०—नायण जिण मे गुण नही, लोक कुटव लहैह। पथ बह्यां इण प्रेम रै, परबस प्राण पडैह। —र. हमीर

३ ऐसी जगह या स्थान जिसका बोध देखने से होता है।

४ विभिन्न प्राणियो का विशिष्ट निवास स्थान।

ज्यूं—जीवलोक, मनुष्यलोक, देवलोक ग्रादि।

५ पुराणानुसार माने गये वह स्थान जहां भगवान के भक्त मरणोपरान्त जाकर रहते हैं।

वि. वि.—पृथ्वी, स्वर्ग, ग्रौर पाताल लोक ये तीन तीन लोक माने गये हैं, परन्तु ग्रागे चलकर विभिन्न विद्वानों के मतानुसार १४ लोक माने जाने लगे, जिनमे सात ऊर्ध्व लोक एवं सात ग्रध: लोक। भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक महर्लोक, जनर्लोक तपर्लोक ग्रौर सत्यलोक, ये सात ऊर्ध्व लोक हैं। ग्रतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल ग्रौर पाताल ये सात ग्रधःलोक हैं।

६ प्रजा, जनता।

उ०—१ तिण ऊपरै रजपूत बेसै तिको इसडी ग्राखडी पाळै, तिकी इज बेसै नही तौ तलाक छै। गाव री धणी पाटवी नै छै। ग्रौर लोक नचत वेठो व्यापारी नचित।

—रामदास वेरावत री ग्राखडी री वात

उ०—२ ग्रावे मीर गाव ऊतरियौ, धूजै लोक तुरक ग्रत धरियौ। इसडी ताल 'पाल' हर ग्राया, दुयणां निजर कूंत दरसाया।

—रा. रू.

उ०—३ कोटवाळ कन्है ग्रादमी गयौ, बोलाय ल्याया। कोटवाळ पत्र हूवियौ लोक भेळा हुग्रा। —खापरे चोर री वात

७ सेना, फौज।

उ०—१ अठै जादुराय रा असवार हजार छव मारया गया । तथा मा'राज रा अठै हजार तीनक लोक रयौ । —द. दा.

उ०—२ जोधांणै 'माल' अजेगढ 'जेतौ' 'कूंप' बीकपुर राज करै । लाखां लोक थठे ज्यां लारै, दिली आगरौ दहूं डरै ।
—जेता कूपा रौ गीत

उ०—३ जद कुंवर चांदसिंघ सिवसिंघोत नै किसनसिंघ सादावत दोनूं पांच हजार लोक ले चढिया । —बा. दा ख्यात

उ०—४ तद पाछा फिर खेतसी नूं मारियौ भुहर हुवौ लोक घणौ कांम आयौ ।

८ परिग्रह, परिजन ।

उ०—१ रांणीजी मास १।। दोढ बीकानेर रहि अर रांणीजी रै टीकै री पहिरावणी लोकां नू दे अर वळै राजाजी रा तेडाया ताहरां राजाजी विदा सिधाया । —द. वि.

उ०—२ तद चहुवांण मडळीक री घोड़ियां रा पूछ वाढिया, अर भैसिया रा मगर तेल सूं बाळिया । तरै ओ किसो मन में राखि अर आपरे लोकां में समचो कर अर आपरा मामा सूं चूक कियौ ।
—नैणसी

उ०—३ तद इयै राजा आंम्हां आपरा परघान मेल्हीया । कुंवर पासै आय पूछण लागा कैरो साथ छै । तद कुंवर रा लोकां कही कुंवर बीरभान छै फलांणा रो बेटो छै सु बापरै पासै आवै छै देसोटै गयौ हुतौ तिको आयौ छै । —चौबोली

९ व्यक्तियो का समुह, झुण्ड, दल ।

उ०—तद तलवाडै थी चहुवांण पीहर गई बाहड़मेर । लोक साथै घणौ हुतौ, सु चहुवांणा रै उजाड रोज घणो करे । —नैणसी

१० कृषक, किसान ।

उ०—१ खेड़ौ सूनौ बसीवान लोक को नहीं । गांगारडै रा लोक खेत खड़ै । —नैणसी

उ०—२ रा० मानसिंघ मुरारदास री बसी रा लोक खेत खड़ै ।
—नैणसी

उ०—३ खेत सखरा सेंवज गेहूं चिणा हुवै । सेभो नही काहुथ बासणी रा लोक बाहे । —नैणसी

११ साथ ।

उ०—पछै आप सारा लोकां सूं अरोगण पधारिया । त्या परीसारो हुओ । सारै साथ नूं सीरो, तरकारियां, भाजी, इण भांति परीसारो हुओ । लोक जीमियौ । आप ही अरोगिया । —नैणसी

१२ पति, स्वामि ।

१३ बतख की तरह का एक प्रकार का बड़ा पक्षी ।

१४ सात या चौदह की संख्या । ● (डि. को.)

रू. भे.—लोग, लोय

अल्पा.,—लोकडो, लोकौ, लोगड़ौ

लोकईस—स. पु. [स लोक + ईश्] ब्रह्मा (डि. ना. मा.)

लोकड़ौ—देखो 'लोक' (अल्पा, रू भे)

लोकचख—स. पु. यौ. [सं. लोक+चक्षु] १ सूर्य, भानु ।

लोकधारणी, लोकधारिणी—सं स्त्री. यौ. [स लोक+धारिणी] १ पृथ्वी, भूमि ।

लोकधुन, लोकधुनि—स. स्त्री यौ [स लोक+ध्वनि] १ अफवाह, जन रव ।

लोकनाथ—सं. पु. यौ. [स. लोक+नाथ] १ ससार का स्वामी, ईश्वर ।
२ राजा, नृप ।

लोकनीत, लोकनीति—स स्त्री. यौ. [स. लोक+नीति] १ पुरुषो की ७२ कलाओं मे से एक ।

उ०—१ न्रत्यकला, गजनीति, लोकनीति, धरम्मनीति, काव्यरीति साहित्यविद्या । —व. स.

लोकप, लोकपत, लोकपता, लोकपति, लोकपती—स. पु. [स. लोकप, लोकपति, लोकपिता] १ ब्रह्मा । (डि को)
२ ईश्वर, प्रभू ।
३ नृप, राजा ।

लोकपाळ, लोकपाल—स पु.—१ राजा, नृप ।

उ०—इंद्र समानि देव सपरिवार ते त्रायस्त्रिस इसिइ नामइं । दो दुगुदुग देव, ४ लोकपाल पद्मासिवा सुलसा अचला कालिंदी ।
—व. स.

२ ईश्वर, प्रभू ।
३ देखो 'दिकपाल' (रू भे.)

लोकपितामह—सं पु यौ. [सं लोक+पितामह] १ ब्रह्मा । (डि. को)

लोकबधु, लोकबंधू—सं पु. यौ. [स लोक+बंधु] १ सूर्य, भानु ।
(डि. को)

उ०—सको मोखियौ हाकडो नाम सिंधू । बहतौ थको रोकियौ लोकबंधू । चक्री पीवणो पाथ आई बचायौ । सुधाळी हुणे हेक हेरब खायौ । —मे म.

२ शिव, महादेव ।

लोकबळ—सं. पु. यौ. [स लोक+बल] १ जन-शक्ति ।

लोकमाता—स. स्त्री. यौ. [स. लोक+माता] १ जगत-जननी, लक्ष्मी ।

उ०—लोकमाता सिंधुसुता स्री लिखमी पदमा पदमालया प्रमा । अवरग्रहे अस्थिरा इंदिरा, रामा हरिवल्लभा रमता । —वेलि.

लोकलाज—स स्त्री यौ. [स. लोक+लज्जा] १ देखो 'लोकालाज' (रू. भे.)

लोकलीक—स. स्त्री. यौ.—१ लोक मर्यादा ।

लोकवौ—वि. लुप्त ।

उ०—सूं ऊंट किसा मांतरा छै, थापवीं तळी रा, सुपवीं नळी रा, माळे रा गोडा रा, बीलफळ इरकी रा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी बगला रा घाट बाजोट रा, बाथमें कांधे रा, कसतूरिया पटा रा कोरबे कांन रा, टोमकसै माथै रा, लोकबै नाक रा तजियै होठ रा।
—रा. सा. स

लोकव्यवहार–सं पु.—१ समाज में किया जाने वाला शिष्ट व्यवहार।
२ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।
उ०—केसबंधन वीणानिनाद वितंडावाद अकविचार लोकव्यवहार प्रहेलिका, स्त्री चतु: सस्टिकला। —व. स.

लोकस–सं. पु.—१ एक प्रकार का वृक्ष।
उ०—भाखर में गढ में कुवा तळाव, झरणा बावड़ी घणा छै। भाखर निपट सझाडी छै। थोहर, बोर, गूंदी गांगडी लोकस गूगळ निपट सझाड़ो छै। —बां. दा. ख्यात

लोकांतर–स पु. [स.] १ वह लोक जहां मरणोपरान्त जीव जाता है, परलोक।

लोका—देखो 'लांकी' (रू भे.)
उ०—लोका लह लाणति छुटकारा लेती, दीरघ कांनासू फिट-कारा देती। —ऊ. का.

लोकाई–सं. स्त्री.—१ प्रजा, जनता, जन समूह।
उ०—लारै लोकाईह, सह कोळूरी सालुळी। आजो आ आईह, वीरा कमळादे वही। —पा. प्र

लोकाचार–सं. पु. यौ [स लोक+आचार] १ समाज मे सम्बन्ध बनाये रखने हेतु किया जाने वाला व्यवहार।
२ पुरुषों की ७२ कलाओ में से एक।
उ०—लोकाचार, जनानुवृत्ति, फलंभ्र, खड्गक्षुरिबंधन, मुद्रऽमायो। —व. स.
३ वह व्यवहार जो दुनिया में सबके साथ मेलजोल बनाये रखने के लिए किया जाता है।
४ किसी की शव-यात्रा में सम्मिलित होने की क्रिया या भाव।

लोकाचारियौ–वि.—१ शव-यात्रा (लोकचार) में शामिल होने वाला।

लोकालाज—सामाजिक भय, शंका।
उ०—लोक कियौ मन मे, डाक चूक डेराह। लीधा लोकालाज हूं, फीके मन फेराह। —र. हमीर

लोकाट–सं. पु.—१ लम्बी तथा नुकीली पत्तियों वाला पौधा विशेष

लोकाधिप, लोकाधिपति, लोकाधिपती–सं. पु. [सं. लोकाधिपः लोका-धिपति] १ राजा, नृप।
२ ईश्वर, प्रभु।

रू. भे.—लोकाहिवई

लोकाध्यक्ष–स. पु. यौ. [सं. लोक+अध्यक्ष] १ संसार का अध्यक्ष, ईश्वर।
उ०—नमो अग्राह्याक लखन पुट साक सत नमो। नमो लोकाध्यक्षा-क्षत, विजय लक्ष्यापत नमो। —ऊ. का.

लोकाब–सं. पु —प्रजा, ससार के लोग।
उ० —मुख लोचन चोळ करै मयनू अलवै यम पालक लोकाब नूं। —पा. प्र.

लोकायक–सं पु —जगत, ससार।
उ०- हे पंचो ये पंच कहावो छो, लोकायक में पण पच परमेस्वर कहिजै छै। —पलक दरियाव री बात

लोकायत–स पु —१ समाज।
२ भारतीय दर्शन में एक प्राचीन भूतवादी नास्तिक सम्प्रदाय जिसे देवगुरु बृहस्पति ने दैत्यो का नाश करने के लिए चलाया था।
३ चार्वाक दर्शन जिसमें परलोक एवं परोक्षवाद का खंडन है।
४ दुर्मिल छद का एक नाम।

लोकालोक–स. पु.—१ एक पौराणिक पर्वत का नाम।
२ ससार, जगत।
उ०—ताहरी ज्योति सकल त्रिभुवन में, गावै सगला संत जी। केवल ग्यान करीनै देखे, लोकालोक अनत जी। —श्रीपाल

लोकीक—देखो 'लौकीक' (रू. भे.)

लोकेस–स. पु. [लोक+ईश] १ ब्रह्मा। (डि.को., नां. मा., ह. नां. मा.]
उ०—हिंदुवाण रौ घ्राण देसाण हुवौ। बणारौ अलकार आकार ऊगौ। बुरज्जा चहु जाण लोकेस बाका, अधी आभ रौ बीच भागै पताका। —मे. म.
२ राजा, नृप। (अ. मा.)
३ इन्द्र।
रू. भे.—लौकेस।

लोकेसर, लोकेस्वर–स. पु. [स. लोक+ईश्वर] ईश्वर, प्रभु।
२ राजा, नृप।
उ०—लेलइ कुळ की लाज, लाज लोपि लोकेसवर। स्वामि-कथन आयी सुणए, तणी भोजाउत भाजि। —अ. वचनिका

लोकैसणा–स. स्त्री. यौ. [स. लोक+एषणा] १ ससार में प्रतिष्ठा एवं यश की कामना।
२ स्वर्ग-सुख की कामना।

लोकोकत, लोकोकती, लोकोक्ति, लोकोक्ती–सं. स्त्री. [स. लोक+उक्ति]
१ कहावत, जनश्रुति।

उ०—बदा कनें ती बद बसै, नेका पासे नेक । मन री सारिसा मिळै, आ लोकोक्ति एक । —ऊ. का.

२ एक अलंकार जिसमें लोक-प्रसिद्ध कहावत का प्रसगवश वर्णन हो ।

लोकोत्तर—वि.—१ अलौकिक, विलक्षण ।

लोकौ—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धि बरं पाऊ । सबत अपनै रौ केवण सिरलोकौ, लौकिक लैयणनै सांभळ-ज्यौ लोकौ । —ऊ. का.

लोग—देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ जाडौ तौ पड़ियौ जी नणद बाई सहर मे, मारघा मारघा हुटवा जी लोग, किस बिध भुगताजी नणदबाई जाडै नै ।
—लो गी

उ०—२ लोगां रौ बतूळियौ पगां हालियौ । दोनू धणी गाथै बंध्योड़ा हा । सेठ ई खुर रगड़ता साथै चालता हा । —फुलवाड़ी

उ०—३ लेडी सूनौ खेत जागीदारां रा लोग लड़ै । —नैणसी

(स्त्री. लुगाई)

लोगड़ौ—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—गांम में घणौ दूध घणौ घी, कोठिया कणा रा में ऊन्हौ ठाडौ धान, राजा राजनै प्रजा चैन । नी कोई दुख भर नी कोई दुभाळ । लोगड़ा प्रभू आंनां दिन काटै । - अमर चूनड़ी

लोगाई—देखो 'लुगाई' (रू भे.)

लोड़—सं. पु—१ बलात्कार ।

२ लूटने की क्रिया ।

लोड़णौ, लोड़बौ—क्रि. स.—१ लूटना, खोसना ।

उ०—ल्यावै लोड़ि पराइयां, नहं दै आपणियांह । सखी अमीणा कंथ री, उरसां भूपडियांह । —हा झा.

२ हड़पना, छीनना ।

उ०—धन लोड़ै तोडै धरम, विध विध ओडै बात । जड सनेह छोडै जड़ण, गिमका मोडै गात । —बां दा.

३ प्राप्त करना, पाना ।

उ०—ओड बिराजै वर तरणि, मोड बिराजै सीस । कव आसीसै लोड़ धन, जीवौ कोड़वरीस । —रा. रू.

४ छूना, स्पर्श करना ।

उ०—लागै आज लोड़ती लहरां, ऊमडतै दरियाव उतंग । सूरज-तणौ हींदवा सूरज, पाणीपथौ कियौ पमग ।
—महाराणा राजसिंह री गीत

५ मस्ती से झूमना ।

उ०—बड सिरहूं नाळे वडवडती, विसरसि पूरति बिपरति वेस । लाडी आवै बगन लोड़ती, दोड़ाया बड़ चोदस देस ।
—रतनसिंघ राठौड़ री वेलि

लोड़णहार, हारौ (हारी), लोड़णियौ—वि० ।

लोड़िप्रोड़ौ, लोड़ियोड़ौ, लोड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लोड़ीजणौ, लोड़ीजबौ—कर्म/भाव वा० ।

लोडणौ, लोडबौ, लोड़णौ, लोड़बौ—रू० भे० ।

लोड़वड़ाई—स. स्त्री. यौ.—१ छोटे बड़े की आयु का अन्तर ।

ज्यू—इण दोना रै किती लोड़वड़ाई है ।

लोड़ाऊ—वि.—लुटाने वाला, उड़ाने वाला, खर्च करने वाला ।

उ०—उत्तर जाइजो दिक्खण जाइजो समद्रा जाइजो पार । मार-वणी रै नथ लाइजो मोती लाइजो चार । गाढा मारू छो जी राज लाखा रा लोड़ाऊ मारु-मारे नथ लायजो राज । —लो. गी.

रू भे.—लोडाउ, लोडाऊ ।

लोड़ियोड़ौ—भू. का. कृ—१ लूटा हुआ, खोसा हुआ. २ हड़पा हुआ, छीना हुआ. ३ प्राप्त किया हुआ. ४ स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ. ५ मस्ती मे झूमा हुआ ।

(स्त्री लोडियोडी)

लोड़ियौ—देखो 'लघु' (अल्पा., रू. भे)

उ०—ओलग थारै लोडियै वीर ने भेज पन्ना मारू । चतुर चोमासे राजन, घर बसोजी महारा राज —लो. गी.

लोडौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे)

२ देखो 'लड' (रू भे)

लोच—स स्त्री.—१ किसी वस्तु या पदार्थ का वह गुण जिससे वह दबाने अथवा मोडने पर दब या मुड़ जाती है एवं पुनः अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाती है । लचक, लचीलापन ।

२ कोमलता, नरमी ।

३ अभिलाषा, इच्छा ।

४ गूंधे हुए आटे का वह गुण जो लोई बनाते समय लंबी बधती है ।

२ सार, तत्त्व ।

लोचण—देखो 'लोचन' (रू. भे.) (डिं. को., ना डिं. को)

उ०—मोडै मुख मोडै हीलळ हतवाळी, पीतळ पैरणनैं सीतल सतवाळी । लुब्धा ललचावै लालच बिनलागै, लोचण मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ. का.

लोचणियौ—स. पु—१ प्रातः काल का नाश्ता ।

उ०—उठो म्हारा ओ ढोलाजी करो नीं लोचणियौ, लूंग सुपारी बनडी पांन री बिडली, इसडा लोचणियां थांरी ओळ्यां करावै । —लो. गी.

२ देखो 'लोचन' (श्रल्पा., रू. भे.)

लोचणौ, लोचबौ–क्रि. स.—१ सोचना, विचार करना।

उ०— वहतां बरस पच्यासियो, श्री गुजरात प्रथाह। उर लोचै असपति हुयए, सोचै महमदसाह। —रा. रू.

२ पक्षपात करना।

३ कोशिश या प्रयत्न करना।

उ०—जाळ नीम विलाला जामै, सांठां मात सपूतरी। मरु नाव खेवैया मयिहा, ल्यावण लोचै सूनरी। —दसदेव

लोचणहार, हारौ (हारी), लोचणियौ—वि०।

लोचियोड़ौ, लोचियोड़ौ, लोच्योड़ौ—भू० का कृ०।

लोचीजणौ, लोचीजबौ—कर्म वा०।

लोचन, लोचन्न–सं. स्त्री. [सं लोचन] १ आँख, नैत्र। (ह. नां मा.)

उ०—प्रगळी पटाट पूर, गाढ दाढ गज्ज-ऊर। लोह दीप में लोचन्न कांगरि सरीखा कन्न। —गु. रू. ब.

रू. भे —लोग्रण, लोइण, लोचण, लोयण, लोयणि, लोयन।

ग्रल्पा., रू भे —लोग्रणडो, लोचणियौ।

लोचपलोच–स पु.—ग्रावेष्टन करने या घेरने की क्रिया।

उ०—१ रसिया री तन रोगसू, सड जावे नह सोच। हेम रजत खातर हुवै, पातर लोचपलोच। —बा. दा.

उ०—२ गोरी मिलै गीत मह गावं, जतन रहावं जुवा जुवा। फेरू हुमे किता घर फिरसी, होरू लोचपलोच हुवा।

—ग्रोपो ग्राढौ

लोचालाचौ–स. पु.—१ शीघ्रता।

उ०— भिणीयाएं बारह कोस जायनै बकरो ग्वाघो लोचालाचौ घणी ही कियौ पण उरै बाकरो खावण न पाया। नरै री चोकिया ठांम-ठांम बैठी छै। —नैणसी

क्रि. प्र.—करणौ।

लोचियोड़ौ–भू का कृ —१ सोचा या विचारा हुआ. २ पक्ष किया हुआ. ३ कोशिश, प्रयत्न किया हुआ।

(स्त्री. लोचियोड़ी)

लोचून–सं पु. यौ. [सं. लोह+चूर्ण] १ लोहे का चूर्ण।

लोट–सं. स्त्री.—१ लोटने की क्रिया या भाव।

उ०—प्रणिया धार ग्रनेक ग्रावरत, पाडे मूंठज पांण गया। खडग परवाण खेडतै खेता, थाट रवद रण लोट थया।

—रांणा खेता री गीत

क्रि. प्र. लगाणी।

२ देखो 'लोटडी' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'लोट' (रू. भे.)

४ देखो 'लूट' (रू. भे.)

रू. भे.—लौट।

लोटड़ी–सं. स्त्री.—१ ग्वालों व किसानों के साथ में रखा जाने वाला मिट्टी का जल पात्र विशेष।

उ०—छोटी दीवडिया काखा तळ छाले, मोटी लोटड़ियां दाखां जळमालै। निरबळ चोरा डर बसियोडा नेड़ा, दुरबळ मौरां पर कमियोडा डेरा। —ऊ का.

मह, रू. भे —लोट।

लोटण–वि.—१ लेटने वाला।

२ एक विशेष जाति का कबूतर जो आकाश मे लुढकता हुआ उडता है। लकी कबूतर।

उ० - तिके सिर ईस लियै मुसताक, पड़ै छक जाणिक फूल पियाक किता घट फूट लुटै हिचकत, कबूतर लोटण जेम करत —सू. प्र.

रू. भे.—लोटीगण।

लोटणकरवौ, लोटणकरियौ–स. पु - १ प्रसिद्ध राजस्थानी लोकगीत।

उ०— कोठे भुवाऊं ढोडा इलायची रे म्हारा लोटणकरवा कोठे भुवाऊ नागर बेल ऐ जी ओ मिरगा नैणी रा ढोला, मारुणी उडीकै घर ग्राव। —लो गी.

लोटणौ, लोटबौ–क्रि. ग्र [स. लुट] १ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढकना, लुटना, घुडकना।

उ०—मामंत विछोहै ग्रग मार, होय जेम करै करनाल बार। पड सीस बिना लोटै पठाण, फिर ज्वार सिरै ढूका क्रमाण।

—रा. रू.

२ शयन करना, सोना (गर्भ मे)

उ०—बाबाजी रा पोता जीग्रो, बापूजी रा बेटा, माता जननी के ग्रोदर लोटिया। —लो गी.

३ विश्राम करना।

४ चाटुकारिता, खुशामद करना।

उ०—ग्रगर खेवै है, सुगध देवै है। सूघौ सूंघीजै हैं, सीसिया री सीसिया ऊबीजं है। चोटी करै है, तिण ग्रागै नायण ही लोटी फिरै है। गुंथबा मे पड़ै है लहर, तठै कहो कुण सकै ठहर।

—र. हमीर

लोटणहार, हारौ (हारी), लोटणियौ—वि०।

लोटियोड़ौ, लोटियोड़ौ, लोट्योड़ौ भू० का० कृ०।

लोटीजणौ, लोटीजबौ—भाव वा०।

लुटणौ, लुटबौ—रू० भे०।

लोटपोट–वि.—१ विपर्यस्त, ग्रस्त-व्यस्त।

उ०—इण भात कटारियां री घमरोळ पड़ै। लोटपोट हुवा तिको ग्रालात चक्र री सी लीक बधी न जांणजै भेळा छै क जुवा जुवा।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ कुलांच खाने की क्रिया।

उ०—१ छम लोटपोट उडि दोट सिर, धजर चोट ग्रग धोहडा।
नवकोट छ खंड वागा निडर, लाखकोट मझि लोहडां।

—सू. प्र.

उ०—२ बगतरै प्राग उडुंत बूंग, दवहरण जाण होळी दवूंग।
घण भूंभा बाथा पडै घोट, लोटीगण खावै लोटपोट।

—गु. रू. ब.

३ आनंदित, अत्यधिक प्रसन्न (प्रसन्नता से उन्मत्त)

उ०—कामणी थणीं किसनागर कस्तूरी भंवर अतर सांधे सूं गरकाब हुई थकी उवां राजा रा मजूकजादां रा मन रालती थकी लोटपोट हुइ रही छै। —राजान राउतरो बात-वणाव

४ ध्वस्त, नष्ट, विनाश।

उ०—चले चंदोल चैन में, हरोल दग्गती चलें। दरार हेत द्रुग्ग को विरार धुग्गती चलें। प्रकोट चोट मार कोट लोटपोट ह्वै जहां।
प्रवेस कोट रोक देन वप्प वप्परे कहां। —ऊ. का.

५ सुध-बुधहीन, मस्त, बेहोश।

उ०—तिसै दूजो प्यालो चावड़ी बळै भरियो। जांणियौ गोलो पजे सपणां छै। दारू पायौ तो खरौ पिण लोटपोट न हुवौ।

—जगदेव पवार री बात

रू. भे.—लटापोट, लौटपोट।

लोडमाळी-स स्त्री.—१ कच्ची दीवार को वर्षा से बचाने के लिए उस पर लगाया हुआ घास-फूस व कांटों का छप्पर। दीवार का छाजन।

लोडाडणौ, लोडाडबौ-क्रि. स.—देखो 'लोटाणौ, लोटाबौ' (रू. भे.)

लोडाणौ, लोडाबौ-क्रि. स.—१ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढ़काना, लुटाना, लुढ़ाना।
२ शयन कराना।
३ विश्राम कराना।
४ बुसामद कराना।
५ धराशायी कराना, गिराना।

लोडाणहार, हारौ (हारी), लोडाणियौ—वि०।
लोडायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लोडाईजणौ, लोडाईजबौ—कर्म वा०।
लोडाड़णौ, लोडाड़बौ, लोडावणौ, लोडावबौ—रू० भे०।

लोडायोड़ौ-भू. का कृ—१ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढ़काया हुआ. २ शयन कराया हुआ. ३ विश्राम कराया हुआ. ४ खुसामद कराया हुआ।

(स्त्री. लोटायोड़ी)

लोडावणौ, लोडावबौ—देखो 'लोटाणौ, लोटाबौ' (रू. भे.)

लोटावणहार, हारौ (हारी), लोटावणियौ—वि०।
लोटावियोड़ौ, लोटावियोड़ौ, लोटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लोटावीजणौ, लोटावीजबौ—कर्म वा०।

लोटावियोड़ौ—देखो 'लोटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लोटावियोड़ी)

लोटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पेट या कमर के बल धरातल पर लेटा हुआ, लुढका हुआ. २ शयन किया हुआ. ३ विश्राम किया हुआ. ४ धराशायी हुवा हुआ।

(स्त्री. लोटियोड़ी)

लोटियौ-सं पु.—१ मिट्टी का बना छोटा जल-पात्र।

उ०—सज्यां पड़ता लोटियौ हाथ ले जगळ गयौ सो सहर सूं निसर गयौ। —नांपै सांखले री वारता

२ देखो 'लोटौ' (ग्रल्पा, रू. भे.)

लोटी-स. स्त्री.—पीतल का बना एक विशेष बनावट का जल पात्र।

रू. भे.—लोटीका

लोटीका—देखो 'लोटी' (रू भे.)

उ०—रहि रहि वेहनडी वचन तू रोई ले लोटीका जळ मुख धोई।

—बी. दे

लोटीगण—देखो 'लोटण' (रू. भे.)

उ० —बगतरै प्राग उडुंत बूंग, दवहरण जांण होळी दवूंग। घण भूंभा बाथा पडै घोट, लोटीगण खावै लोटपोट। —गु रू. ब.

लोटौ, लोठौ-स. पु.—१ चांदी, तांबा, पीतल ग्रादि धातु द्वारा निर्मित जलपात्र विशेष।

उ०—१ हाथां हुर्कालया लटकंता लोटा, रिणरिण रीकता सुपनै मे रोटा। कोडी कोडी लै कळियोडा कूणा, ढाल भूंडोडा ढळियोड़ा वूंणा। —ऊ. का.

उ०—२ म्हैं उणरौ कह्यौ ज्यूं पे'ली बांया में सूं हाथ काढनै पछै उणनैं बाल्टी रै खनै बिठाय नै लोटौ भरनै उणरै माथा माथै कूडण लाग्यौ। —अमरचूनड़ी

उ०—३ म्हू उणरा हाथ-पग भिगोय नै डरतौ-डरतौ धीरै-धीरै मैल करण लाग्यौ। कांई भरोसौ रीसां बळतौ ग्रबकै लोठौ लेयनै माथा में नीं ठरकाय दे। —ग्रमर चूनड़ी

उ०—४ सकर कूई तो भंवर जी मैं बणूं जी, हां जी ढोला बण ज्याग्रू लोठौ-डोर प्यास लगे जद मारू जी भर पिग्रो जी।

—लो. गी.

ग्रल्पा,—लोटियौ।

लोडणौ, लोडबौ—१ साफ की हुई रूई की पूनियां बनाना।
२ कपास से रूई व बिनोलों को पृथक करना।

३ पत्थर पर मसाला पीसना।

४ मस्ती से झूमना।

५ देखो 'लोड़णौ, लोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ बंरका झुंडये, गिम्मने लोडयं, फोब हेमज्जयं भ्रिग्ग भमूंजय। —गु. रू. बं.

उ०—२ हाजर हिंदू वै तुरक लिये न पर मुंह लोडि। चीत बटावण हेक तूं, बीत बटावण कोडि। —गु. रू. ब.

लोडणहार, हारौ (हारी), लोडणियौ—वि०।

लोडिग्रोड़ौ, लोडियोड़ौ, लोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लोडीजणौ लोडीजबौ—भाव वा०।

लोडणौ, लोडबौ—रू० भे०।

लोडाउ, लोडाऊ—वि.—देखो 'लोडाऊ' (रू. भे.)

उ०—निबो सेवालीत। साख राठोड। घिणलारो धणी। लाखा री लोडाउ। रूळीयारा जोड। —वीरमदे सोनगरा री बात

लोडियोड़ौ—भू· का. कृ.—१ कपास से रूई व बिनौले प्रथक किये हुए

२ मस्ती मे झूमा हुआ।

(स्त्री. लोडियोडी)

लोडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—नरा मडोवर नर समद, खिति लोडौ खुरसाण। है केइ देस न हल्लडौ, दोइ तेहा वाखांण। —गु रू ब

२ देखो 'लोढौ' (रू. भे.)

उ०—गोरी पीडी पर उघड़ता गोडा, लबी बीखा दे लेतोड़ी लोडा। सैंणा साजनिया ऊमर भर सालं, घूमर देतोडी केता घर घालैं। —ऊ. का.

लोढ—स पु·—१ समूह, झुण्ड।

उ०—मिळ मावत लोढ कि बोढ मही, जमनां वळ वेळ समुद्र जही। —रा. रू.

२ वजन, भार

३ तरंग।

४ लोक वाहन।

५ देखो 'लोढौ' (मह, रू. भे)

लोढणौ, लोढबौ—देखो 'लोडणौ. लोडबौ' (रू. भे.)

लोढणहार. हारौ (हारी). लोढणियौ—वि०।

लोढिग्रोड़ौ, लोढियोड़ौ, लोढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लोढीजणौ, लोढीजबौ—कर्म वा०।

लोढियोड़ौ—देखो 'लोडियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लोढियोडी)

लोढियौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—रांधां बाईजी जिनवा रा भात, थारै बीरै की पोत बैठा-यस्यां। देस्यां बाई थांनै लोढियौ बीरौ साथ, भली ए जुगत सैं घर पुगायस्यां। —लो. गी.

२ देखो 'लोढौ' (अल्पा, रू. भे.)

लोढी—सं. स्त्री.—१ हाथी-दांत का वह खोखला एवं गोलाकार ढांचा जिसको चीर कर चूड़ा बनाया जाता है।

२ देखो 'लोढौ' (अल्पा, रू. भे)

लोढौ—स. पु.—१ पत्थर का वह लम्बा व गोल टुकडा जिससे, सिला पर कोई वस्तु रख कर पीसी जाती है।

२ मस्ती मे झूमते हुए गतिमान होने की क्रिया या भाव।

उ०—धुरवा धरणी लग लोढा लै धावै। झीमण जीमण नै मोढा जिम जावै। मोरां अनुमोदित लोरा लड़ लागी, नीझर नव नीरद भमना भय भागी। —ऊ. का.

रू. भे.—लोढो

अल्पा., रू. भे.—लोढी, लोढियौ

मह. रू. भे.—लोढ

लोणी—सं. स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी।

लोतर—स. पु.—शुभ लक्षण, ज्ञान।

लोतंभाळ—स पु—जजाल-चक्र।

उ०—जो रचना जगपती, लोतंभाळ भ्रमै त्रयलोक। सोई सत्य सद्रढ, रेखा मार भ्रक रजपती। —रा. रू.

लोथ—स. स्त्री.—शरीर, देह।

उ०—१ छूटं लंबछड, ताड़ तड़ तड, बाण छूट बड सोक सड सड़। फूट फिंफरड़ कळिज भडफड भ्रतड उथरड लोथ लड़थड़। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ कह केवियां तणी कत सूं कांमणी, करडा वचन भ्रणायर कोथ। कूरम तणां आवस्यौ कांकड, लडथड़ती भ्रावसी लोथ। —राजसिंघ भाखरोत री गीत

उ०—३ भर भौ भ्राप पूरी भरोसौ राखावौ ए गेन्यूं लोथां जमी माथै पडैला, भर पछै इज कोई ठाकर कांनी हाथ भ्रागै करेला। —भ्रमर चूनडी

२ शव, लाश

उ०—१ जठै मांहिली बदूकां छूटै छै। जको येक येक गौळी दस दस भ्रादम्यां में फूटै छै। लोथ पर लोथ पड़ै छै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ सेरखान भर समर, कहर परसै घर कदळ। लोथ लोथ ऊपरा, गरा भिड़जां गज तंडळ। —रा. रू

३ किसी गीली व गाढी वस्तु का भ्रंश, लौंदा।

उ०—१ भ्रगसा नेत्र, मीन जैसा चपळ। मूंह आंणे इद्र धनख छै।

कुच कुम्भ रै चंद ज्यूं, सोळहकळा सपूरण छै । पेट पींपळ रौ पांन छै । पाछा मारुरण री लोच छै । नाभी मंडळ गुलाब रौ फूल सो छै ।
—खीची गगेव नींबावतरी दो-पहरी

उ०—२ पेट गीवां की लोच, मिरगानैंणी राज । सूडी तौ कहिए ए रतन कचोळियां जी म्हारा राज । —लो. गी.

रू. भे.—लोचि ।

मह.,—लोयड़ो, लोयौ ।

अल्पा.,—लोयडी ।

लोयड़ी—देखो 'लोच' (अल्पा., रू. भे.)

लोयड़ो—देखो 'लोच' (मह., रू. भे.)

लोयबत्थां—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—सीह छूटो साकळा बीछूटो गाळा लेरा सही, भीडियां कपट्टा बट्टा भाजिगो भरम्म । बाहे साथ खाग झट्टा बिकट्टा सूं लोयबत्थां, केवियां किमा या कड़ै दड़ा ज्यूं करम्म ।
—गगाराम नामा री गीत

लोचि—देखो 'लोच' (रू. भे.)

उ०—१ 'अमर' लोचि आविया, बीर वारण बिकराळा । पाडि मळां जुधि पड़े, काळभाळा किरमाळा । - सू प्र

उ०—२ जोगणी उबक्कै पत्र हुबक्कै हुवाई जत्र लोचि छक्कै घुबक्कै लटक्कै गजा लोच । भुटक्कै अकारौ सेन बैंठगारौ क्रोधा भाय, जोधारौ हुबक्कै प्रजा रौ महाजोध । —बख्तसिंघ रौ गीत

लोयौ—देखो 'लोच' (मह., रू. भे.)

लोचन—स पु.—१ महादेव, शिव । (ना. डि. को)

लोद—१ देखो 'लोदी' (रू भे.)

२ देखो 'लोध' (रू. भे.)

लोदरवौ—सं. पु.—१ जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन नगर ।

रू. भे.—लोद्र ।

लोदी—सं. स्त्री.—१ मुसलमानों में पठानों की एक जाति ।

२ कपड़े से बंधी हुई गठरी ।

रू. भे.—लोद, लोधी ।

लोध—स. स्त्री. [स. लोध्र] एक पेड़ विशेष जिसके लाल व सफेद फूल लगते हैं तथा इसकी छाल लकडी व फूल औषध मे काम आते हैं ।
(डि को.)

उ०—सीला पोयरा पारा केसड़ा कुंदम राजै । लोध-रजां भल भामणियां रै मुखड़े साजै । चोटी कुरबक फूल सिरिसा करण सजावै । सीस कदवां फूल गोरियां घणी लुभावै । —मेघ

रू. भे.—लोद, लोध्र

लोधा—स. स्त्री —एक राजपूत वंश ।

उ०—वरसिंघदे वाघेलो गुजरात सौं गंगाजी री जात आयौ हुतौ, तद अठै बघवरी ठोड निबळा सा लोधा राजपूत रहैता, ठोड़ खाली दीठी, तरै गगाजी रा पुलण मनोहर देखनै अठै रहण री कीवी । —नैणसी

लोधी—देखो 'लोदी' (रू. भे.)

लोधेस्वर—स. पु. - एक तीर्थ का नाम ।

उ०—घट ही में गगा घट ही में जमना, घट घट है अबिनासी । घट ही मे पुसकर औ लोधेस्वर लछिमन कबर बिलासी । —मीरां

लोप—स पु.—१ क्षय, नाश ।

२ व्यतीत या गायब होने की अवस्था, लुप्त ।

उ० —सेवट अेक दिन औ लगडौ तौ व्हैणौ इज हो । अै चार वरस तो सपना रै उनमान लोप व्हैगा । भला सपना री कित्तीक वावस ! अर कित्तीक हगरी जड ऊंडी । —फुलवाडी

३ अभाव, कमी ।

४ व्याकरण के एक नियमानुसार शब्द के साधन में कोई वर्ण उडा या हटा दिया जाता है ।

लोपणौ, लोपबौ—क्रि स [सं लोपन] १ उल्लघन करना ।

उ०—बिलूख्यो निघी नीर की हाथ बांमे । पुरी मे सकौ सीर हम्मोज पामे । सजा हू छुडायौ आई राव सेखौ । लाई पुत्र पिम्रेस रौ लोप लेखौ । —मे म.

उ०—२ अवधरा धरणी रिग सीह भजरा असह, लीह सता तणी निकूं लोपै भरां किव भेद में । तई सामाथ प्रभ बधु दीना तणा अनाथा नाथ भुज जिरद ओपै । वर्णं कव वेदमे । —र. ज. प्र

२ पार करना, लाघना ।

उ० १ डाक्या टोडा टोडड़ी, लोपी नदी बनास । आडावळो उलांघियौ, अद छोडी घरा आस । जी उमराव म्हांनै कर दुखिया, चढ चाल्या म्हाराराज । —लो गी.

उ०—२ सुण बाल तरणौ सुत, मेले मारुत लोप धसे गढ लंक में जी । पेखे मल प्रारभ लोय अडीखंभ, कीध सांमग्री पकमे जी ।
—र रू

३ जब्त करना ।

उ०—सोजत था कोम ३ मूल कूण मांहे । कुंभार बांमण वसै । पहली बांभरण नु सासण थौ, सु मोटे राजा लोपीयौ । —नैणसी

४ मिटाना, साफ करना ।

५ अन्तर्ध्यान होना ।

लोपणहार, हारौ (हारी), लोपणियौ—वि० ।

लोपियोड़ो, लोपियोड़ो, लोप्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लोपीजणौ, लोपीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

लोपन—१ लुप्त करने की क्रिया या भाव ।

२ नष्ट करने की क्रिया ।

३ ढांकने की क्रिया ।

४ अवहेलना करने की क्रिया ।

लोपांजन—देखो 'लोकंजन' (रू. भे.)

लोपा—सं. स्त्री.—प्रयाग में एक देवी का स्थान ।

उ०—लोपा मुद्रा दोय देवी प्रयागे । —बां दा. ख्यात

लोपाड़णी, लोपाड़बौ—देखो 'लोपाणी, लोपाबौ' (रू. भे)

लोपाड़णहार, हारो (हारी), लोपाड़णियौ—वि० ।

लोपाड़ियोड़ो, लोपाड़ियोड़ौ, लोपाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लोपाड़ीजणौ, लोपाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लोपाड़ियोड़ो—देखो 'लोपायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लोपाड़ियोड़ी)

लोपाणौ, लोपाबौ—क्रि. स.—१ उल्लंघन कराना ।

२ पार करवाना, लंघवाना ।

उ०—मालदे नुं मुवा थोडा दिन हुवा था । सु चंद्रसेन कन्है साख साख रा सबळा रजपूत था । सु पहिला रामा री खबर आई । सु रामा नु'''नै घाटी लोपायी । नीठ रामो कुसलं गयो ।

—राव चंद्रसेन री बात

३ जब्त कराना ।

४ साफ करवाना, मिटवाना ।

लोपाणहार, हारो (हारी), लोपाणियौ—वि० ।

लोपायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लोपाईजणौ, लोपाईजबौ—कर्म वा० ।

लोपाड़णौ, लोपाड़बौ, लोपावणौ, लोपावबौ—रू० भे० ।

लोपायोड़ो—भू. का. कृ—१ उल्लंघन कराया हुआ । २ पार कराया हुआ । ३ जब्त कराया हुआ । ४ साफ कराया हुआ मिटाया हुआ ।

(स्त्री. लोपायोड़ी)

लोपामुद्रा—सं. स्त्री.—१ अगस्त्य ऋषि की पत्नी का नाम ।

लोपावणौ, लोपावबौ—देखो 'लोपाणी लोपाबौ' (रू. भे.)

लोपावणहार, हारो (हारी), लोपावणियौ—वि० ।

लोपावियोड़ो, लोपावियोड़ौ, लोपाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लोपावीजणौ, लोपावीजबौ—कर्म वा० ।

लोपावियोड़ो—देखो 'लोपायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री लोपावियोड़ी)

लोपियोड़ो—भू. का. कृ.—१ उल्लंघन किया हुआ. २ पार किया हुआ. ३ जब्त किया हुआ. ४ मराया हुआ. ५ अंतर्ध्यान हुवा हुआ ।

(स्त्री. लोपियोड़ी)

लोफर—स. पु. [अ.] १ आवारा व्यक्ति ।

२ धूर्त, कपटी ।

३ व्यभिचारी, लम्पट ।

४ बातूनी ।

रू. भे.—लापर ।

लोफरपण, लोफरपणो—स. पु.—१ आवारापन ।

२ धूर्तता, कपट ।

३ व्यभिचारिता, लम्पटता ।

रू. भे.—लापरपण, लापरपणो ।

लोब—देखो 'लोभ' (रू भे.)

लोबांन—स. पु. [फा] १ एक प्रकार का सुगंधित गोंद, जो जलाने के अतिरिक्त दवाओ में भी काम आता है ।

रू भे —लवबांन, लुबांन ।

लोबाणौ, लोबाबौ—देखो 'लुभाणी, लुभाबौ' (रू. भे.)

लोबाणहार हारो (हारी), लोबाणियौ—वि० ।

लोबायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लोबाईजणौ, लोबाईजबौ—कर्म वा० ।

लोबायोड़ो—देखो 'लुभायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. लोबायोड़ी)

लोबियाकाळ—स पु.—१ एक प्रकार का गहरा रंग ।

लोबी—देखो 'लोभी' (रू भे.)

लोभ—स. पु.—१ लालच, लिप्सा । (डिं. को.)

उ०—आसतखान मन धोखो आयो, लोभ बिना दुख बाग लगायो । असुरां तरां उकत उपजाई, वातां लालच तणी बताई । —रा. रू.

२ कृपणता, कंजूसी ।

३ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र, जो उसके अधरोष्ठ से उत्पन्न हुआ था ।

४ इच्छा, लालसा, चाह ।

उ०—दोनां री जिवड़ो जहूर, तिसड़ो ही सहूर, परस्पर री सारीखी ही सोभ, नै सारीखी ही देखण री लागी लोभ । —र. हमीर

रू. भे.—लोब

५ काला श्याम । * (डिं. को)

लोभणौ, लोभबौ—क्रि. स.—१ लोभ करना, लालच करना ।

२ देखो 'लुभाणी, लुभाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दकूळ पीत लोभयं सुरूप बीज सोभयं । निसंग पीठ रज्जयं, सुचाप पाणि सज्जयं । —र. ज. प्र.

उ०—२ कवण अखेवड़ विगर, अळं सागर सिर सोभै । कवण बिना सुखदेव, देव माया नह लोभै । —रा. रू.

लोभणहार, हारौ (हारी), लोभणियौ—वि॰ ।
लोभियोड़ो, लोभियोड़ौ, लोभ्योड़ो—भू॰ का॰ कृ॰ ।
लोभीजणो, लोभीजबौ—भाव वा॰ ।

लोभाऊ—वि.—देखो 'लोभी' (रू. भे.)

उ॰—सबा कोड़ लग आगै सयणाँ, पाव मगावै महापसाव । लोभाऊ दियौ लाखावत, सिव तणौ ग्रम सांमां-राव ।
—सांम ऊमड़ री गीत

लोभाणी, लोभाबौ—देखो 'लुभाणौ, लुभाबौ' (रू. भे.)

उ॰—ताहरां त्रिभुवणसी री भाई पदमसी हुतौ, तियै नूं मलायौ 'तूं त्रिभुवणसी नूं मारै तो तोनूं टीकौ देवां'। ताहरां पदमसी लोभाय नै जाइनै त्रिभुवणसी नूं पाटां मांहै सोमल नीव मांहै मेळियौ।
—नैणसी

लोभाणहार, हारौ (हारी), लोभाणियौ—वि. ।
लोभायोड़ो—भू का. कृ ।
लोभाईजणो, लोभाईजबौ—कर्म वा. ।

लोभायोड़ो—देखो 'लुभायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. लोभायोड़ी)

लोभाळ—देखो 'लोभी' (रू. भे.) (डिं. को)

लोभियौ—देखो लोभी' (अल्पा., रू. भे.)

उ॰—आक संसार रंजियौ घणौ आतमा, अलख न भेटियौ कदै आंधौ। घोभियै दीह घड़ियेक न घोभियौ। लोभियै पयांणौ कीयौ लाधौ।
—ओपौ आढौ
(स्त्री. लोभणी)

लोभी—वि. [सं. लोभ+इन्] (स्त्री. लोभण) १ जिसे किसी वस्तु पाने का लोभ हो, अभिलाषी ।

उ॰—१ लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि । दिन दिन जोबण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि ।
—ढो. मा.

उ॰—२ थारे भाभोसा नै चायै मवरजी धन घणौ जी, हां जी ढोला ! कपड़े री लोभण थांरी माय । सेजां री लोभण उडीकै गोरड़ी जी, थारी गोरी उडावै काग । अब घर आवौ जी थाई थांरी नौकरी ।
—लोकगीत

२ अधिक लालसा वाला, लालची ।

उ॰—सगुरा सत संयम रहै, सन्मुख सिरजणहार । निगुरा लोभी लालची, भूंचै विसय विकार ।
—दादूवांणी

३ कृपण, कंजूस । (डिं. को.)
४ मांगने वाला, याचक (अ. मा.)
५ प्रिय, प्यारा

उ॰—१ लोभी अणघट ले गयौ, प्राण दे गयौ देह । किसा अनाड़ी सूं कियौ, सखि मैं आज सनेह ।
—अग्यात

उ॰—२ नहीं बोल्यौ जावै निपट, लोभी आवै लाज । मथ तूटै बिजळी पड़ै, इतरौ हठ क्यूं आज ।
—अग्यात

रू. भे.—लोबी, लोभाऊ लोभाळ
अल्पा.—लोभियौ, लोभीडौ

लोभीगुण—सं. पु.— १ कवि (अ. मा.)

लोभीड़ो - देखो 'लोभी' (अल्पा., रू. भे.)

लोम—स पु.—१ शरीर के छोटे-छोटे बाल, रोमावलि ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ॰—चैत मास री चांदणी सरस बधी सग सोक । जांण आज लुभजाइला, लोम सरा सह लोक ।
— र. हमीर

लोमकरणी—स. स्त्री —१ हिमालय पर्वत में १७००० फुट की ऊंचाई पर पाई जाने वाली एक वनस्पति की सुगंधित जड़ । जटामासी

लोमड़ी—स स्त्री [स. लोमशा] १ कुत्ते या गीदड़ की तरह का छोटा हिंसक जानवर, जिसकी चालाकी प्रसिद्ध है ।

रू. भे —लूमड़ी ।

लोमपराज, लोमपद—सं. पु —अंग देस का एक सुविख्यात राजा जिसे रोमपाद, चित्ररथ एव दशरथ आदि नामांतर प्राप्त थे ।

लोमपादपुर—स पु.—भागलपुर का प्राचीन नाम ।

लोमविलोम—स.पु —साहित्य मे एक प्रकार का शब्दालंकार, जिसको सीधा पढने से जो अर्थ निकलता है वही अर्थ उल्टा पढने से भी निकलता है ।

लोमस, लोमसरिख—स. पु [सं. लोमश+ऋषि]पुराणानुसार एक दीर्घजीवी महर्षि जिनके शरीर पर अत्यधिक लोम (केश) होने के कारण इनका नाम लोमस पडा ।

उ॰—संनक संनक रिख तेडौ, लोमस आतस अस्वास्ति रे। सुक सनकादिक तेड़ौ, जख किन्नर ने कहावोरे।
—रुकमणि मंगळ

लोमहरसण—सं. पु. [स लोमहर्षन] सूतकुलोत्पन्न एक मुनि जो समस्त पुराणग्रन्थो का आद्य कथनकर्ता माना जाता है ।

लोय—स. स्त्री. [स. लोक] १ स्त्री, पत्नी ।

उ॰—'लाखों' अबौ घी अबी, अबी 'लखै' नी लोय । सांस बटाऊ पावणौ आवण होय न होय ।
—अग्यात

२ लक्ष्मी ।

उ॰—लाखां आवै लोय, सपनां ज्यूं आवै सरब । हुवै भगत ज्यूं होय, भगत परापत 'मोतिया' ।
—रायसिंह सांदू

३ लोकगीतों में प्रयुक्त सम्बोधन वाचक शब्द ।

उ॰ —१ दिखण दिसा सूं आई लोय, इसलांमी औ बादस्या ।
—लो. गी.

उ०—२ कुण रे खुदाया कुआ बावड़ी पिणियारी ओरे लोय कुण रे खुदाया समद तळाव बाल्हा जी । —लो. गी.

४ देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ जिण तिण आगळ जोय, पडिया काज न पातरै । लाभै सैणां लोय, मिसरी सरिखा 'मोतिया' । —रायसिंह सांदू

उ०—२ हर हर तणा हमीर नरेसुर, लाभ थका मूका रह लोय । एकण आस तुहाळी ऊपर, सीसोदा आवै सह कोय ।
—महाराणा हम्मीरसिंघ री गीत

उ०—३ लिखियौ लाभै लोय, पर-लिखियौ लाभै नहीं । पर सिर पदमहि जोय, जेविह विहवै अप्पियौ । —नैणसी

५ देखो 'लौ' (रू. भे.)

उ०—१ सारस मरता जोय, सारसणी मरसी सही । लाखीणी आ लोय, जग मे रहसी जेठवा । —जेठवा

उ०—२ काया दीपक मन बाट है, चित की जगेज लोय । अंतर घर के जोयले, ब्रह्म उजाळौ होय । —स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—३ पेट भार हिरण्या बहै, रह्यौ न ओटी कोय । रूआ रूआ नीसरै, लूआ धूआ लोय । —लू.

लोयण—देखो 'लोचन' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ राम न भूलौ बप्पड़ा, जे सिर छत्र प्रळोय । कर जीहा लोयण स्रवण, बियौ न आपै कोय । —ह. र.

उ०—२ मोज महण मूरत मयण, लोयण लाज अपार । 'जेहल' राज कुंवार जिम, कुण अन राजकुंवार । —बा दा

लोयणकमळ—स. पु. यौ. [स लोचन+कमल] विष्णु । (डिं. को.)

लोयणधूम्र—सं. पु—देखो 'धूमलोचन' ।

उ०—लोयण-धूम्र लुळाय, सुम्भ निसुम्भ सहारघा । रकत बीज मारोनि, मुंड चंडादिक मारघा । —मे. म.

लोयणि—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

उ०—नव नव पुर परि पणिनवा, नव नव भूखण भास । नव नव नारी नर नवा, लोयणि जोतु लास । —मा. कां प्र.

लोयन—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

लोयाणा—देखो 'लोहाणा' (रू. भे.)

लोयौ—स पु—आटे का लौंदा ।

लोर—सं. पु.—१ सावन-भादो मास में अविच्छिन्न व निरन्तर छोटी छोटी बूंदों की वर्षा करने वाले बादल या उक्त बादलों से होने वाली लगातार वर्षा, झड़ी ।

उ०—१ थानै थानै ए म्हारी बाड़ा री बडबेल, थानै ए कुण सींचंगो । सींचै सींचै, ए म्हारो सांवळिया रो लोर भावूड़े रो झड़ झेलेगो । —लो. गी.

२ तीक्ष्ण ध्वनि, टेर, रट ।

उ०—१ बाबहिया तूं चोर, थारी चांच कटाविसूं । राति ज दीन्ही लोर, मइ जाण्यउ प्री आवियउ । —ढो. मा.

उ०—२ बाबहिया तर-पंखिया, तइं किउं दीन्ही लोर । मइ जांण्यउ प्रिय आवियउ, ससहर चंद चकोर । —ढो. मा.

३ समूह, झुण्ड ।

उ०—पम्रकम्मर-रोर, लसक्कर लोर । क्रमै दळ कोम, गह-मह गोम । —गु रू. बं.

४ तरंग, लहर ।

५ खेत की सीमा पर प्राकृतिक रूप से पंक्तिबद्ध वृक्षों की कतार ।

रू भे—लूर, लोर ।

लोरियौ—स. पु.—१ चुम्बक का टुकड़ा जो किसी धातु के चूरे मे से लोहे के कण अलग करने के काम में आता है ।

लोरी—स. स्त्री. [स. लोल] १ बच्चों को थपकी देकर सुलाने की क्रिया या ढग ।

उ०—झाडूदं ढाणी झालरिया झाडै, पाणी पालरिया पीवण पछवाडै । लोरी दे पोलछ लालरिया लेती, दडखिल खोडा नै हालरिया देती । —ऊ. का.

लोळ—स स्त्री—१ कान के नीचे का हिस्सा ।

उ०—निज कुंभ सिभ जुग थण अनोप, उत्तग सिखर थण सिखर ओप । कर लोळ झुलत अति चपल कान, विलई मन आणिक उकतिवान । —रा. रू.

२ अग्नि की लपट

उ०—ग्रह झाळा गरजत, वधै लोळां बैसामर । नर पुर जन हरि नाम, उचरि समरत अगोचर । सती अंग पति संग उलसि रग पावक अंकित । रोम ग्रस्त पळ चरम होय वपु नाडि सांमि-हित ।
—रा. रू.

३ समूह, झुड ।

उ०—१ छिलै दधि छोळ, दळा वधि लोळ । पवगां पाई, पडै खड हाइ । —गु. रू. बं.

४ पतंग मे धनुषाकार लगने वाली बास की खपची ।

५ कानों मे धारण किया जाने वाला आभूषण ।

६ एक अस्त्र विशेष

७ मदिर व पशुओं के गले में बाधे जाने वाले घंटे के अंदर बीचों-बीच लटकने वाला धातु का गुटका, लगर ।

वि. वि.—लगर

वि०—१ चपल, चंचल (ह. ना. मा.)

उ०—१ कटी सु छीन केहरी प्रवीन पायका नहीं, विनीत बांनि बीनती नवीन नायका नहीं। सुचैन दैन सैन स्वीय रैन ये रुठै नहीं। अपांव लोळ गोमती इलोळ में उठै नहीं। —ऊ. का.

अल्पा. रू. भे.—लोळकी

लोळकी—देखो 'लोळ' अल्पा. (रू. भे.)

लोल–वि.—१ परिवर्तनशील

२ क्षणिक

३ मूर्ख, बेवकूफ

उ०—राज हंस सम राजवी, बैठा करै किलोल। काग सरीखो कूंअड़ो, आवि उभी लोल। —श्रीपाल

४ खेल, क्रीड़ा

उ०—सरसा सरोवर विमल जल सैं भरया है भरपूर। लख लोल करत हिलोल हरखित हंस पखि पडूर। —वि कु.

लोळणी, लोळबो–क्रि स.—१ मिट्टी या कीचड में लथपथ करना।

उ०—बाहळं बाहळं लाज बचाई, कादै लोळण काया। कांमरा वैण सांच कर कंथा, इण विध पाछा आया। —कायर रो गीत

२ मोड़ना, झुकाना।

३ फंसना, उलझना।

ज्यूं—कांटां, भूरटां में लोळीजणो।

४ दौड़ कर पकडना।

ज्यूं—गांववाळा चोरां नै बाजार में आवतां लोळ लिया, कुत्तां टोगडी नै लोळ ली।

लोळणहार, हारो (हारी), लोळणियो—वि.।

लोळियोड़ो, लोळियोड़ो, लोळयोड़ो—भू. का. कृ.।

लोळीजणो, लोळीजबो—कर्म वा।

लाळणो, लाळबो—रू. भे.।

लोलणो, लोलबो—१ तड़फना, लुटना।

उ०—हार श्रोड़ती, वलक मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकणीकलापुच्छोडती, माथउ फोडती, वक्षस्थल ताडती कुंतल-कलाप रोलती, प्रथ्वीतल लोलती। —व. स

२ देखो 'लोळणो लोळबो (रू. भे)

लोलणहार, हारो (हारी), लोलणियो—वि.।

लोलियोड़ो लोलियोड़ो लोल्योड़ो—भू का. कृ.।

लोलीजणो लोलीजबो—कर्म वा.।

लोळमी–वि.—१ मुड़ने वाली

उ०—१ तठा उपरांत करिनै राजान सिलांमति काबली कूतरा लाहोरी कूतरा, विलायती कूतरा, लोळमी लालमी जीभ रा वळिमें पूछ रा, लापड़े कान रा। —रा. सा. सं.

लोला–सं. स्त्री.—१ जीभ, जिव्हा। (डि. को.)

२ राठौड़ वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

लोळाणो, लोळाबो—१ मिट्टी या कीचड में लथपथ कराना।

२ मोड़ना, झुकाना।

३ उलझाना, फंसाना।

लोळाणहार, हारो (हारी), लोळाणियो—वि.।

लोळायोड़ो—भू. का. कृ।

लोळाईजणो, लोळाईजबो—कर्म वा.।

लोळावणो, लोळावबो—रू. भे.।

लोलाणो, लोलाबो—१ तड़फाना, लुटाना।

२ देखो 'लोळाणो, लोळाबो' (रू. भे.)

लोलाणहार, हारो (हारी), लोलाणियो—वि।

लोलायोड़ो—भू का. कृ.।

लोलाईजणो, लोलाईजबो—कर्म वा।

लोलावणो, लोलावबो—रू भे.।

लोळायोड़ो–भू का. कृ.—१ मिट्टी या कीचड मे लथपथ किया हुआ.

२ मोड़ा हुआ ३ उलझाया हुआ, फसाया हुआ.

(स्त्री. लोळायोड़ी)

लोलायोड़ो–भू का. कृ.—१ तड़फाया हुआ, लुटाया हुआ।

२ देखो 'लोळायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. लोलायोडी)

लोळावट–स. स्त्री—१ मुड़ने या झुकने की क्रिया।

उ०—जुध सीस पडत धडाहू जोळा, वीजळ धक्क चरक्क वहै। गळिबाह लोळावट होय गळोवळ, गूथाबत्थ सुभट्ट ग्रहै। —गु. रू. ब.

लोळावणो, लोळावबो—देखो 'लोळाणो, लोळाबो' (रू. भे.)

लोळावणहार, हारो (हारी), लोळावणियो—वि.।

लोळावियोड़ो, लोळावियोड़ो, लोळाव्योड़ो—भू का. कृ.।

लोळावीजणो, लोळावीजबो—कर्म वा.।

लोलावणो, लोलावबो—१ देखो 'लोलाणो, लोलाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'लोळाणो, लोळाबो' (रू. भे.)

लोलावणहार, हारो (हारी), लोलावणियो—वि.।

लोलावियोड़ो, लोलावियोड़ो, लोलाव्योड़ो—भू का. कृ.।

लोलावीजणो, लोलावीजबो—कर्म वा.।

लोळावियोड़ो—देखो 'लोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री लोळावियोड़ी)

लोलावियोड़ो—देखो 'लोलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लोलावियोड़ी)

लोलासन-सं. पु.—योग के ८४ आसनों में से एक, जिसमें पावों की स्थिति पद्मासन की तरह रखकर दोनों हाथों के करतलों(हथेलियों) को जमीन पर टिका कर उनके बल शरीर को ऊंचा उठाना होता है।

लोळियोड़ौ-भू. का कृ.—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ किया हुआ. २ मोड़ा या झुकाया हुआ. ३ उलझाया या फसाया हुआ।

(स्त्री. लोळियोड़ी)

लोलियोड़ौ—१ तड़फा हुआ।

२ देखो 'लोळियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री लोलियोड़ी)

लोली-सं स्त्री.—मस्ती मे सिर हिलाने की क्रिया।

उ०—तिण मांहे बादळा भांति भांति रा निजर आवै। तिण भांति केइक तौ गाहड़मल झोला खाई रह्या छै। केइक बाका पावड़ा रा लोली दे रह्या छै। केइक डाकी जमदूत।
—मा. वचनिका

लोलु-वि.—जिव्हा रस का शौकीन।

उ०—जिस्यु बहूत्रोलानी जीभनु लोलु, जिस्यु कागनु डोलौ। जिस्यु धजनु अचल तिसिउ संसार चचल वैराग्य। —व. स.

लोलुप-वि.—१ लोभी, लालची (डिं. को.)

२ उत्सुक, इच्छुक

लोलौ-सं. पु.—१ शिश्न, लिंग।

अल्पा. लोली।

स. स्त्री—२ भग, यौनि।

वि.—१ मूर्ख, अज्ञानी।

२ भोला, सीधा-साधा।

उ०—मुग्ध लोला तेह ना रजववा आवरजवा भणी।
—सष्टि शतक

लोळौ-स. पु.—१ बाण, शर।

उ०—दुरग अचीत घेरियौ देतां, पमणा आठ सहस पखरैता। वीरारस जागी गिर बागा, लोळा पुंज सिखर सिर लागा
—रा. रू.

२ बुत्ता, झासा।

३ मांस पिण्ड।

लोल्या-सं. स्त्री—१ वासना, इच्छा।

उ०—नींदई झकोल्या, मुकी संभोग नी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या —रा. सा. स.

लोव—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी बाई ये! मतै गया छै वे घोड़ा टारडा! तोड़ी बां लोवां री लगांम, आंमण की ये आई, बेड़ी रा तोड्या ये दुवकी दांवणा। —लो गी.

लोवड़—१ देखो 'लोई' (मह. रू भे.)

२ देखो 'लोवडी' (मह. रू भे)

उ०—बधु बचायौ व्याळ जहर सू, बैस जहाज तिराणी। रवि री रथ ऊभांता रोक्यौ, आडी लोवड़ आंणी। —रायौदास भाटी

लोवड़ियाळ, लोवड़ियाळी-वि—लोवडी नामक ऊनी वस्त्र धारण करने वाली।

सं. स्त्री—देवी।

उ०—१ पच पीर पैंकंबर लार पुळया, महमाय सू आय आघीट मिळया। भखिया नव पीर सताप भयौ, लोवड़ियाळ पगा पड़ रोण लग्यौ। —करणी जी रौ छंद

उ०—२ 'अभसाह' सहायति ईसरी लोवड़ियाळी लक्ख नव। रथ खेडि मिळी गिळवा रवद, रूप हद्द जै सद्द रव। —रा रू.

रू. भे.—लोवडियाळ, लोवडियाळी, लोहड़ियाळ लोहड़ियाळी

लोवडियाळ, लोवडियाळी - देखो 'लोवडियाळ, लोवडियाळी' (रू. भे)

उ०—'बांकौ' कहै टळै दिन विखमा, धणियाणी नै धायां। लोवडियाळ ताप नह लागै, ओलै थारै आया। —बा दा.

लोवड़ी-स स्त्री—१ लोवड़ी नामक ऊनी वस्त्र धारण करने वाली देवी के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

उ०—जपियौ नाथू जाप, कव चालक कदमां रह्यौ। उण कुळ री अब आप, लाज रूखाळै लोवड़ी। —गणेशदांन लाळस

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष जो ऊन का बना होता है।

उ०—१ चारणा वरण पर कृपा नित चोवडी, तोवडी नको मा सूल तोलै। दिपै हव सासणा अजादा दोवडी, एक इण लोवड़ी नणं ओलै। —खेतसी बारहठ

उ०—२ बरजती बाप रखावती ब्याह, अकन कुवारी रहती सखी। ओढण लोवड़ी काटती भाड, खेत कमाती जाट ज्यूं। —बी. दे.

उ०—३ बैणव बीजणिया बधण बिगताळ, लट्टू घोता रा खूजा लटकाळ। राती कानी री पोतड़िया रूडी, ऊनी लोवड़ियां बगलां मे ऊडी। —ऊ. का.

३ देखो 'लूकार'

उ०—मूगी छम लोवड़ियां लिया, विच विच चुनी चीवटा। खोठ मदीना खडा मोहे, सकड सदीना मीवटा। —दसदेव

रू. भे.—लोवडी, लोहडी

लोवडी—देखो 'लोवडी' (रू भे.)

उ०—नदरबारी पाघडी, पामडी लोवडी, वाद्दणबही लोवडी। पछेडी चूनडी, गजवडी बोरी आवडि हसवडि सुवरणवडि। —व. स.

लोवळवाळी-वि.—लोवड़ी नामक वस्त्र, ओढने वाली।

उ०—सबै लोवड़ियाळीयां, न जाणु बण काय। ऊजळदती मार-
बण, पवन उड़ावै पाय। —ढो. मा.

लोबाजियो—स. पु.—मुसलमानों की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

लोबा—सं. स्त्री.—१ लोमड़ी।

उ०—चाला चउरास्या न लाबी मार, झाड़ी झावळ्यी इंचणहार। कूद मल्हा लोबा सीयमाल, चाल्यो राजा जाई मोवाल। —बी. दे.

लोसक—स. पु.—ताना।

लौ'सार—देखो 'लोहसार' (रू. भे.)

लोह—सं. पु.—१ लोहा नामक प्रसिद्ध धातु (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—राम भणो भण रांम भण, अवरां रांम भणाय। जिण मुख रांम न ऊचरै, ता मुख लाह जडाय। —ह. र.

२ शस्त्र प्रहार।

उ०—१ अब मथण विक्रम वजबोहा, लागां लडै असीधर लोहा। धारण विस सिरदार नजर धरि, असि तोरियो सेरखां ऊपरि। —सू. प्र.

उ०—२ वोही तरफां लोह रा प्रभाव में कसर न राखी तथापि पश्चिम री अधीस जांणि वारसुंदरी रै स्वभाव अय लक्ष्मी री कटाक्ष ती भोळाराव री तरफ हुवो। —व. भा.

३ शस्त्र, हथियार।

४ तलवार।

उ०—स्रोन धार धर चलत, चलत लच्छ पक्ति पलच्चर। कानर बिमुहे चलत, चलत समुहे नर हैमर। चलत लोह उत्ताल, सूल सरगवा परिछन। चलत सोर साबत, मनहुं झंझूर बूंद घन। —ला. रा

मुहा०—१ लोह करणो=तलवार का प्रहार करना।
२ लोह झेलणो=युद्ध करना।
३ लोह लैणो=मुकाबला करना।
४ लोह मांनणो=हार स्वीकार करना।

५ लगाम, वल्गा।

उ०—१ खित पुडि पडी भांति खुराह, तीना ऊरवरव तुरांह। तपिए ताळुए उतंग, पीसै मुहे लोह पवंग। —गु. रू. ब.

उ०—२ पाइगाह मंडण चडण पाट, साहणी छोड सिणगार थाट। लाखीक तणी मुह दीध लोह, सोवन्न जोत नग जडत सोह। —गु रू. ब.

वि.—अत्यधिक कठोर।

७ काला, श्याम। * (डि. को.)

रू. भे.—लोव, लोहउ, लोहड़उ, लोहड़ी, लोहडो, लौहो, लौह।

मह.—लोहड़, लोहड़।

लोह अभिसार—स पु.—१ दशहरा पर किया जाने वाला तलवार का पूजन।

उ०—पावस चौमासो आया जक पडै थरै रहै जिंतरै चौमासो न आवै इतरै पैलां, सत्रुआं नै, घणी दहल पड़ै है—और भाजड़ री (भाग जांण री) बरोबर में तयारी हुवै है जदकै हुवां लोह अभिसार (दसरावै तरवार री पूजन) होवता ही। —बी. स. टी.

२ सामरिकरीति।

लोहउ—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—करहा माळवणी कहइ, सभळि बोल्य सच्च। तातउ लोहउ ताहरइ, वमण न लागो अच्च। —ढो. मा.

लोहकरम्म—स. पु.—पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

उ०—उपलकरम लेपकरम्म लोहकरम्म मणिकरम्म सुवरण्णकरम्म दासकरम्म। —व. स.

लोहकार—स. पु. [सं.] लुहार।

उ०—लोहकार उत्ताल मनहु अंरन घन गज्जिय। गजर मनहुं घरियार, जाम पूरन प्रति बज्जिय। —ला. रा.

रू भे.—लौहकार

लोहड़ - १ देखो 'लघु' (मह. रू. भे)

उ०—केहरि छोटो बहुत गुण, मोडे गयदा माण। लाहड़ बडाई की करै, नरा नखत परमाण। —हा झा.

२ देखो 'लोह' (मह., रू. भे)

लोहड़उ—देखो 'लोह' (रू भे)

उ०—इसउ नही हो ठाकुरे ! इसउ कीजइ-गळइ सात सइ सालिग्राम तुळसी की माळा घातिजइ अचळेसर का आवास-थइ लोहड़उ करता करता गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ। —अ. वचनिका

क्रि. प्र. —करणो

लोहड़ियाळ, लोहड़ियाळी—देखो लोवड़ियाळ' (रू. भे)

उ०—हिय माझळ होळीह, अर साबत सुण उठती। झलकत झख-झोळीह, लोहड़ियाळी पुणच लग। — पा. प्र.

लोहड़ी—देखो लोवडी' (रू. भे.)

लोहड़ो—देखो 'लोह' (मह. रू. भे.)

उ०—१ कान किसनावत। मोटं कुडळ माहे भाटिया सूं वेढ की तद पूरै लोहडै पड़ियो। —नैणसी

उ०—२ इण भांत कमधा अग्गळी, रूक वजायी रोहड़ै। वीरांण कि भारथ वावरै, ज्या घण तत्तै लोहड़ै। —रा. रू.

२ देखो 'लघु'

उ०—तरै जेसो मंडळीक री लोहड़ो भाई, तिण सारी धरती री भार संभायो। —नैणसी

लोहछक, लोहछछ, लोहछाक—वि.—शस्त्र प्रहारों से क्षत-विक्षत, घायल।

उ०—१ झाली सिंह देवती प्रथम भणी में ही लोहछक होय प्रांणां रा पोसरण मैं सुमायो थको प्रमदा री पांहुणी ग्रपूठी लड़ियौ।

—ब भा.

उ०—२ तडछिया जांहि गोडिया तांण, जमवढां टेवउ ऊठै जुवांण। लागै भड लोहै लोहछाक, धूमंति जांण पीयै ऐराक।

—गु. रू. बं.

उ०—३ या सुणतांही लोहछक होय पडियै थकै ही मलप लेर चालुक्य राज हमीर कैमांस री कांख में चंपिया आपरा स्वामी नूं झाटकियौ।

—वं. भा.

लोहड़िया—सं. पु.—राजलोक वर्ग विशेष का नाम।

उ०—लोहड़िया दीवटिया मसूरिया तखार तत्रपाल चामरधार बालउ ग्रतेउर कामतेउर।

—व. स.

लोहटोप—देखो 'लोहलटोप' (रू. भे.)

लोहड—१ देखो 'लोह' (मह., रू. भे.)

उ०—करहा माळवणी कहइ, संभळि बोल्यौ सब्ब। ताती लोहड लाहरइ, वळि लागी ना बब्ब।

—ढो. मा.

लोहडियाळ—शस्त्रों से सुसज्जित, लेस।

उ०—उडतांण ग्रहै कर मूठ ग्रड़ां, भड़ जीवांय लोहडियाळ भडां। मुरजाळाय जोर रखी मुजरौ, थण घोडांय सीस चलां गजरौ।

—पा. प्र.

लोहडौ—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—ग्ररस हूज ऊतरै एक वर ग्रच्छर वरिया, एक पडै लोहडै लोहछक्का लालुरिया।

—गु. रू. ब.

२ देखो 'लघु' (रू. भे)

उ०—मडोवर मुरधरा लेत लोहडा खुरसांणाह। नर समंद तै नाम, सहू सिर हिंदुसथांनह।

—गु. रू. ब.

लोहण—१ देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—तस जंत्र जंत्री तांणिया, वरमाळ गह गिरवांणिया। वण वहण लोहण सघण वण, हुय गजण कण २ ग्रसण हुण।

—र. रू.

२ देखो 'लोह' (रू. भे.)

लोहणौ, लोहबौ—क्रि. स.—पोंछना।

उ०—तठा उपरांयत पाळा झारा चळू करण रै पमा मंगायजै छै। चळू कीजै छै। कुरळा कीजै छै। हाथा लोहण नूं रूमाल हाजर हुवा छै।

—खीची गंगेव नींबांवत री दो-पहरी

लोहणहार, हारौ (हारी), लोहणियौ—वि०।

लोहिग्रोड़ौ, लोहिवोड़ौ, लोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लोहीजणौ, लोहीजबौ—कर्म वा०।

लोहतबंघण—देखो 'लोहितबंधण' (रू भे.)

लोहतम—सं. पु. [सं. लोह+उत्तम] १ स्वर्ण, सोना। (प्र. मा.)

लोहतरंग—सं. स्त्री.—लोहे का बना एक बाजा जो लोह के डंडों से बजाया जाता है।

लोहतोड़ौ—सं पु.—ऊंट। (ना. डि. को.)

लोहधात—स. स्त्री.—तलवार। (ग्र. मा.)

लोहबद्ध—स पु.—हथियार विशेष।

उ०—यत्रमुक्त मुक्तामुक्त दुस्फोट तरवारि ग्रानि तेल लोहबद्ध लुढि एवंविध ग्रायुध विसेसि ढांचा भरियां।

—व. स.

लोहमोगळ लोहमोगल—स. पु.—लोह की बनी अर्गला।

उ०—गढ गिरउ ग्रनइ विसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ, महागज तणा जिसा पाग तिसा कोसीसां गउई पोलि, निबिड कमाड, लोहमोगळ, विज्राहरी तणी पद्धति।

—व. स.

लोहमइग्रांगी—स पु. -कवच विशेष।

उ०—ग्रसवार ग्रसवारि, पायक पायकि, मथाइतु मथाइति, सरासरि खड्गा खड्गी, गदागदि केसाकेसि, दंतादंति, मुस्टामुस्टि एक ग्रगी लोहमइग्रांगी करी।

—व. स.

लोहमराट—देखो 'लौहमराट' (रू. भे.)

उ०—विढता वीर ति वाट चाल्या गड चाली हुवइ। कह लूंबइ कह खिलसता, लोहघा लोहमराट।

—प्र. वचनिका

२ दृढ, मजबूत।

लोहमिपोलि—स. स्त्री—लोहे की पोल या दरवाजा।

उ०—जे नगर माहइ चुरासी चुहुटा तणी उलि, बारै दरवाजै लोहमिपोलि।

—व. स.

लोहमीवाड़—सं स्त्री.—ग्रस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित।

उ०—बीस लाख ग्रसवार पाखरीग्रा लोहमीवाड़ किग्रां, बगतर, हाथल, टोप, झिलमे चिलकतां ऊपरै पूरी सिलहा किग्रा।

—राजान राउतरो वात-वणाव

लोहमै—वि. [स. लौहमय] लोहे का, लोह निर्मित।

उ०—पबै गिरां पगार पौळि, लोहमै कपाट ए। लिंगमेर सोस जांणि, ग्रोपियंत ग्राट ए।

—गु. रू. ब.

लोहर—स. पु.—एक देश का नाम।

उ०—डाहला, नवलख, लोहर नवलख, लाखनवलख हीरालूलि।

—व. स.

लोहलंगर—सं. पु.—१ जहाज का लंगर।

वि.—दृढ, मजबूत ।

लोहलटोप—सं. पु.—युद्ध के समय सिर पर धारण करने का लोहे का टोप ।

उ०—लोहलटोपा बंध धूपा, कडी दूपा कस्सए । माठी मलोजा मूठ तोजा, धल्ल मोजा तस्सए । —पा. प्र.

रू. भे.—लोहटोप ।

लोहलठ, लोहलाठ, लोहलाठियांणी—सं. पु.—शेर, सिंह ।

(ना डि. को)

वि.—दृढ, मजबूत ।

उ०—१ लोहलाठ कड़ाबध संधो खड़े आभ लागा, नागा धड़ा बंध आहुड़ै निघात । काळा कूभां के खड़ां नरिंद वाळा झड़ै किनां, पड़ै पब्बै माळा इद्रवाळा बज्रघात । —हुकमीचंद खिड़िया

उ० —२ लोभी पनां ग्रांगाड़ा सग्रांमा लोहलाठीयांणी, बागां फोजां फाड़ा पोडां झाठीयांणी बेस । पढी संधा मेवाड़ा ग्रारोह वीर पाटीयांणी, पांणीपथा काठीयांणी बाड़ा पमंगेस । —महादान महडू

उ०—३ खसंगा कराड़े झाट बागै राठरीठ लागै, जागै पाट प्रेत काळी मनाड जुम्राण । सतारा हजारां माठ लोहलाठ ग्रायौ सर्ज, 'रासा' रा तीन मै साठ भीमजे 'मारांण' । —पहाडखां ग्राढो

लोहवात—सं पु —१ एक प्रकार का वात रोग ।

उ०—ग्रथ रोगा, कास स्वास ज्वार भगदर गुल्मवात गल्लवात, रक्तवात भस्मवात उस्णवात ग्रग्निवात लोहवात लूतिवात ।

—द. स

लोहसकु—सं पु [सं. लोहशंकु] १ पुराणानुसार एक नरक का नाम ।

२ लोह का कांटा ।

लोहसार—सं. स्त्री —१ तलवार । (डि. ना मा)

२ लोह भस्म । (वैद्यक)

रू. भे. —लो'सार, लोहसार

लोहांण—देखो 'लोहाण' (रू. भे.)

लोहांबोह—शस्त्र प्रहार ।

उ०—पंखण समर बिचार धरै पुर, चुतरंग बर पूरै कुण चाड । लोहांबोह 'लालावत' लेतो, बळ करतो बाका घर बाढ ।

—सांगा री गीत

लोहाकार—देखो 'लुहार' (रू. भे.)

उ०—लोहाकार उताल मनहु घंरन धन गज्जिय । गजर मनहु घरियार, जाम पूरन प्रति बज्जिय । —ला. रा.

लोहागर—स. पु.—लोह निकालने का स्थान, लोह खान ।

उ०—किहा करीरतरु, किहा कल्पतरु, किहा लोहागर किहा वयरागर, किहा गुंजाफल, किहा मुक्ताफल, किहा काचखंड, किहा पाथरखड । —व. स..

लोहागिरी—सं स्त्री.— वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा ।

लोहायळ—सं. पु.—नाथ-सम्प्रदाय का संन्यासी ।

उ०—लोहायळ भ्रन घोलिए सुदर, नागायरूजण मैं नहु दासिक । मैं न मछंदर मैं न जळंधर, मैं हूं री गोरख तूं झरडा लख ।

—पा. प्र.

लोहार—देखो 'लुहार' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ ग्रासत सगत ऊधरां ग्राथां, जस जालम ग्रखमाल जिसौ । लोह द्रोयण ताछं लोहलगर, धी 'लालौ' लोहार यसौ ।

—लालसिंह राठोड़ री गीत

उ०—२ काळं सार बडे कारीगर, जींजरिया रण जुवा जुग्रा । पर लोहार किया सर पाथर, हालै साम्रब जेर हुग्रा । —तेजसी सादू

उ०—३ राव लाखणसी पिण सांभळियो जे सोनगिरी नें ले गयो । लोहारां नै बुलाया । इसौ भालो घड़ो तिण सु एथ बैठा निबळा नै मारा । —वीरमदे सोनगरा री बात

(स्त्री. लोहारण)

लोहाळ—स पु. शस्त्र प्रहार ।

उ०—'रिणमाल' ऊठि नरलिघ रुख, पय ग्रहि लात पछाड़िया लोहाळ ग्रठारहि पिंड लगा, पिसण ग्रठारह पाडिया । —सू. प्र.

लोहित—स. पु. [स] १ रगमाल । (ग्र मा.)

२ महादेव का त्रशूल ।

[स. लोहित] ३ रक्त, खून ।

४ मगलग्रह ।

५ सर्प विशेष ।

वि —१ रक्त से सना हुग्रा ।

२ लाल रग का ।

रू. भे —लोहित्त ।

लोहितक—स पु. [स] १ लाल मणि ।

२ मंगल ग्रह ।

लोहितचंदण—स पु —१ केसर । (ग्र. मा., नां मा.)

२ लालचंदन ।

रू. भे.—लोहतचंदण

लोहितभाळ—स. पु.—शकर, महादेव । (नां. मा.)

लोहितांग—स. पु [स.] मगल ग्रह । (ग्र. मा.)

लोहिताक्ष—स. पु —एक प्रकार का रत्न ।

उ०—हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरभ पुलक ग्रंक ग्रंजन ग्ररिस्ट चिंतामणि । —व. स.

लोहित्त—देखो 'लोहित' (रू. भे.)

उ०—हुवे वस्त्र लोहित्त मैंमत्त हाला, मसारा किसा पार सूळा निवाळा। मधू-मास आसोज में रास मंडै, तिहुँ लोक री डोकरी तेथि तंडै। —मे. म.

लोहिय—देखो 'लोही' (रू. भे.)

लोहियौ—स. पु.—लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला।

लोही—सं. पु.—रक्त, खून।

उ०—पछै राव जिए वड हेठै बैठो थो, सु वड लोही वूठो, तोही समझै नहीं। —नैणसी

रू. भे.—लुही, लोई, लोहू

अल्पा.,—लोहीड़ो

लोहीड़ो—देखो 'लोही' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—धरती नै सींचा म्हैं तो लोहीड़ै री धार। इतरी कीकर मागै म्रो बीघोडी सरकार। —चेतमानखां

लोहीझांण—वि - खून से लथ-पथ, तरबतर।

रू. भे. लोईझांण

लोहू—देखो 'लोही' (रू. भे.) (अ. मा.)

लौं—अव्य.—तक, पर्यन्त।

उ०—१ कोटि वरस लौं राखिये, वसा चदन पास। दादू गुण लीयें रहै, कदै न लागै बास। —दादूबांणी

उ०—२ तो बडारण कही, आज लौं तो ज्यूं री त्यूं छै। —नापे सांखलै री वारता

रू. भे.—लो, लौ।

लौंग—देखो 'लवग' (रू. भे.)

उ०—तेजपुंज आसप अरोगीजै छै। प्यार नै सोस दे दे नै प्याला दीजै छै। घणां लौंग पांन बीडा रा रस लीजै छै।
—राजांन राउत री वात-वणाव

लौंठौ—देखो 'लांठौ' (रू. भें.)

उ०—१ 'जोगौ' किए हि न जोग, सह जोगौ कीधौ सुकव। लौंठा चारए लोग, तारए कुळ खत्रियां तणा। —महाराजा मांनसिंह

उ०—२ जणा कुंवरसी दीठो जे लियां तो बणै नही। आगै लौंठा माणसा सूं कजियौ छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

लौंड—देखो 'लौंडो' (मह. रू. भे.)

उ०—तद वा देखनै कहियो। गोळी री तो न देणी। इण लौंड री भी मजबूती देखणी। —प्रतापसिंह म्होकमसिंह री बात

लौंडापण, लौंडापणौ—१ लौंडा होने का भाव, लड़कपन।

२ लौंडेबाजी के कार्य का भाव।

लौंडाबाज—देखो 'लौंडेबाज' (रू. भे.)

लौंडाबाजी—देखो 'लौंडेबाजी' (रू भे.)

लौंडी—स. स्त्री —दासी, सेविका।

लौंडेबाज—स. पु.—१ वह लड़का या पुरुष जो लड़कों के साथ प्रकृति विरुद्ध आचरण करता हो। (बाजारू)

२ (स्त्री) जो नवयुवको से प्रेम करती हो।

रू. भे.—लौंडाबाज।

लौंडेबाजी—सं स्त्री.—१ लौंडेबाज का कार्य।

२ लौंडेबाज होने की अवस्था या भाव।

रू. भे —लौंडाबाजी।

लौंडो—स पु. [स्त्री लौंडी, लौंडिया] १ लड़का, नवयुवक।

२ अबोध या नासमझ बालक।

३ ऐसा लड़का जिसके साथ लोग अप्राकृतिक आचरण करते हों।

मह.—लौंड।

लौंण—देखो 'लवण' (रू. भे.)

उ०—ज्यो जळ पैसे दूध में, ज्यो पाणी मे लौंण। ऐसे आतम राम सो, मन हठ साधै कौंण। - दादूबांणी

लौंद—स पु.—१ अधिमास, मलमास।

लौंदौ—देखो लूंदौ' (रू. भे)

लौ—स. स्त्री.—१ दीप-शिखा।

२ ज्योति।

३ आग की लपट, ज्वाला।

४ इच्छा, चाह।

५ लगन, चित्तवृत्ति।

उ०—जनम जनम को साहिब मेरो, वाही सो लौ लागी। अपणा पिया सग हिल-मिल खेलू, अधर सुधारस पागी। —मीरा

क्रि. प्र.—लागणी।

६ देखो 'लौं' (रू. भे)

७ देखो 'लय' (रू. भे)

रू. भे —लोइ, लोय, ल्यौ।

लौकिक, लौकीक—स. स्त्री. [सं. लौकिक] १ परम्परा।

उ०—१ खतरनाक उमर री लुगायां कई वार ठाकर री मौजूदगी नै भूल जावती अर लौकिक मरजाद नै तोड नाखती।
—रातवासौ

उ०—२ पराई लुगाई अर पराया मोट्यार साकं मन तांखड़ा तोड़ै पण लौकीक री मरजाद साकं ढकणो उघाड़णा नीं धकै।
—फुलवाडी

२ समाज।

उ०—सती सुमायां रै चरित रा चाळा म्हैं घणा कथा दीठा पर तौ सगळी लौकीक री व्है। —फुलवाड़ी

३ लोकवृत्तान्त, सांसारिक हाल।

उ०—निरभय नारायण सुधी सिर नाऊं, परहर ससय भय बुधी बर पाऊं। संवत अपनै री केवण सिरलोकी, लौकिक लेवण नै साभळज्यो लोकी। —ऊ. का.

४ व्यवहारिकपन, व्यवहार कुशलता।

वि.—१ लोक संबंधी. २ इस लोक से संबंध रखने वाला. ३ लोक व्यवहार से संबंध रखने वाला, व्यवहारिक।

लौकेस—देखो 'लोकेस' (रू. भे.)

लौड़णौ, लौड़बौ - देखो 'लोड़णौ, लोड़बौ' (रू. भे.)

लौड़णहार, हारौ (हारी), लौड़णियौ—वि०।

लौड़ियोड़ौ, लौड़ियोड़ौ, लौड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लौड़ीजणौ, लौड़ीजबौ—कर्म वा०।

लौड़ियोड़ौ—देखो 'लोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लौड़ियोड़ी)

लौडौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—इण वास्तै म्हनै तौ सुझै है की बाभी जी साहब म्हारै पती लौडी सौक बसावैला भरयात जुद्ध में मारीज अपछरा वरसी हू सत करनै जासूं जितरै लौडी सोक घर्कं मिळसी। —बी. स. टी.

(स्त्री. लौडी)

२ देखो 'लंड' (रू. भे.)

लौचणौ, लौचबौ—देखो 'लोचणौ, लोचबौ' (रू. भे.)

उ०—कहर म्लेच्छां सहर ढहर कव काटिवा, लहर दरियाउ निज धरम लौचै। हिन्दुओ राउ भ्राइ दिली लेसी उरै, सबल मन माहि सुलताण सोचै। —व. व. प्र.

लौचणहार, हारौ (हारी), लौचणियौ—वि०।

लौचियोड़ौ, लौचियोड़ौ, लौच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लौचीजणौ, लौचीजबौ—कर्म वा०।

लौट—देखो 'लोट' (रू. भे.)

लौटण—देखो 'लोटण' (रू. भे.)

उ०—लोण के फुंहारे आसमान को छूटै, लगी धख जमीं पर लौटण ज्यूं लुटै। ऐसे किसबूं का हुन्नर करि मुजरै को आवैं, कहै सूनैं की गुरज इनामूं में पावै। —सू. प्र.

लौडस्पीकर—सं पु. [अ. लॉउडस्पीकर] विपुल भाव, ध्वनि विस्तारक यंत्र।

उ०—सगळाई गांव वाळा मिळनै एक गांवसांऊ रेडियौ अर लौडस्पीकर ले आवौ। —अमरचूनड़ी

लौडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—'गोयरधन' गाहिम लोह-गहड़, सग्राम-चंद समोभ्रम सनद्ध। बाळा-पुर विढियौ बळ-प्रमांण, वड रावत लौडौ खुरासांण। —गु. रू. बं.

लौर—देखो 'लोर' (रू. भे.)

उ०—सारंग बैरी सातमां, मीठा गावै मौर। ऊभां बरसै बादळी, लूंबा-झूंबा लौर। —मयाराम दरजी री बात

लौलीण—देखो 'लवलीन' (रू. भे)

उ०—सहज मंडळ धमकही, वाजै भ्रनहद वीण। नोरंगी वांणी तन रतन, साध भगत लौलीण। —भ्रालम जी

लौह—देखो 'लोह' (रू. भे)

लौहकार—देखो 'लोहकार' (रू. भे.)

लौहड़ौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

लौहचारक—स. पु.—एक भीषण नरक का नाम। (पौराणिक)

लौहमराट—स पु —शस्त्र चलाने में प्रवीण, योद्धा।

उ०—१ भ्रारण कियौ उछाह, वीरातन वढ़ियौ। मारु लौहमराट, चमू सम्भ चढ़ियौ। भ्रारण मभ्र भ्रखडंत उडंडा भ्रोरिया। झिलमां बीजळ भ्राट, निराट निभ्रोरिया —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ 'माधावत' रांमसि लौहमराट, भपेटत मीर थटां खग भ्राट। समोभ्रम 'माडण' दारुण सूर हठी खळ मीर वरावत हूर। —सू. प्र.

रू. भे.—'लोहमराट'

लौहसार—देखो 'लोहसार' (रू. भे.)

लौहांण—स. पु —एक राजपूत वंश।

उ०—भिडिया तिकै मुंवा काइ भ्रमिया, जट लौहांण खत्री ओल-मिया, जुडि गज खेत पडे बोह जिसड़ा, इकसठ समर जीपियौ इसड़ा। —सू. प्र.

लौहित—देखो 'लोहित' (रू. भे.)

लौहित्य—सं. पु.—१ ब्रह्मपुत्र नदी का नाम।

२ एक पर्वत का नाम।

३ बरमा की सीमा पर स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम।

४ लालसागर का पुराना नाम।

लौहोडौ—देखो 'लघु' (रू. भे)

उ०—कमधज्जा नाहूल लसक्कर, लौहोडौ खुरसांण मंडोवर। हेरि कतार नगर हूनाडै, माडै डांण रांण मेवाडै। —गु. रू. बं.

(स्त्री लौहडी)

ल्याकत—देखो 'लियाकत' (रू. भे.)

ल्यां'ड़ौ—देखो 'लाड़ायौ' (रू. भे.)

ल्याणौ, ल्याबौ—देखो 'लाणौ, लाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ए मा ल्यावौ ल्यामौ पाचूं हथियार, तौ पांचूं ल्यावौ म्हारा कापड़ा जी। चग नै भेजांगा बाप कै जी। —लो. गी.

उ०—२ नागही नूं कहण लागौ, 'म्हांनूं थांहरी बहू दिखावौ' तरै नामही बहू नूं सिणगार ल्याई। बहू रा पग धरती लागै नहीं। —नैणसी

उ०—३ तरै भीम सांमी जाय पगै लागौ। आपरी डेरी नीबड़ी हुतौ, तठै साथै तेड़नै ल्यायौ। —नैणसी

ल्याणहार, हारौ (हारी), ल्याणियौ—वि०।

ल्यायोड़ौ—भू० का० कृ०।

ल्याईजणौ, ल्याईजबौ—कर्म वा०।

ल्यायोड़ौ—देखो 'लायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ल्यायोडी)

ल्याळ—देखो 'लाळ' (रू. भे.)

उ०—ब्याह रो नावौ काना पड़ियौ, हाथ सूं काच छूट'र टुकड़ा हुयग्या। दलाल सांमौ मूडौ ढीलौ करयौ, राफां तिड़ाई जद ल्याळ चाल पड़ी। —दसदोख

ल्याळी—स. पु.—भेडिया।

उ०—सू गाडर ल्याळियां आगै बच्चा नूं ले रही है, तारां नापै जी ल्याळियां नूं ताड़ दूर किया। —द. दा

रू. भे.—लाळी।

ल्यावणौ, ल्यावबौ—देखो 'लाणौ, लाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै गळै नै हारज ल्याव, म्हारा हंजामारू याही रेवौ जी। —लो. गी.

उ०—२ माजी! थे म्हारौ मुंह दीठौ जीवतै रौ। हिवै राखाइत म्हारै कनारै ल्यावौ। ज्यूं हूं हाथ लाऊ, ज्यूं इयै नूं मुगत हुवै। —नैणसी

उ०—३ ल्यावै लोड़ि पराइयां, नहं वे आपणियांह। सखी अमीणा कथरी, उरसां झूंपड़ियांह। —हा. झा.

ल्यावणहार, हारौ (हारी), ल्यावणियौ—वि०।

ल्यावियोड़ौ, ल्यावियोड़ौ, ल्याव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ल्यावीजणौ, ल्यावीजबौ—कर्म वा०।

[ल्या]वियोड़ौ—देखो 'लायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ल्यावियोड़ी)

[ल्यौ]—देखो 'लौ' (रू भे.)

उ०—१ दादू मरणा मांड कर, रहै नहीं ल्यौ लाइ। कायर भाजे जीव ले, आ रण छाडे जाइ। —दादूबांणी

उ० —२ दादू अहनिस सदा सरीर मे, हरि चिंतन दिन जाइ। प्रेम मगन लै लीन मन, अंतर गति ल्यौ लाइ। —दादूबांणी

ल्रपक—सं पु. [सं. लूपक] १ उनचास क्षेत्रपालो में से ४१ वां क्षेत्रपाल।

ल्रपतकेस—सं. पु. [स लूपतकेस] १ उनच्चास क्षेत्रपालो में से ४२ वा क्षेत्रपाल।

ल्हसकर—१ देखो 'लसकर' (रू. भे)

उ०—१ सांम्हा ल्हसकर मेळि (ल्हि) या, जाळंधर 'अगजीत'। लड़ आयौ ईबरांमखां, मिळण जवण स-जमीत। —रा. रू.

उ०—२ लूटीयौ ल्हसकर आण वासि कर छोडियौ आलिम। जीत्यौ पवाड़ौ धरम आडौ आवीयौ अत करम। —प. च. चौ.

ल्हसकरियौ—१ देखो 'लसकरियौ' (रू. भे.)

२ देखो, 'लसकर' (अल्पा रू भे)

ल्हसण—देखो 'लसण' (रू भे)

ल्हास—सं. स्त्री.—१ फसल की कटाई, बुवाई आदि के समय सामुहिक रूप से कार्य संलग्न व्यक्तियो को खिलाये जाने वाला भोज, भोजन।

उ०—अरि चारो जड़ हूत ऊपाडै, साकुर धौरि हाक सर। ल्हास करै फौजा बड लगर, क्रोध निनाणी हमल कर। —लालसिंह राठोड री गीत

क्रि प्र—करणी।

२ देखो 'लास' (रू भे)

उ०—घोडी म्हारी चद्रमुखी इदरलोका से आई हो राज। आई रतनाळी हो तीजण, ल्हास बधाई हो राज। —लो. गी.

रू भे.—ला, लास, लाह।

ल्हासक—वि. [स. लासक] १ खिलाड़ी, क्रीड़ा प्रिय।

२ इधर उधर हिलने वाला।

ल्हासणौ, ल्हासबौ—क्रि. अ.—१ भागना, दौड़ना।

उ०—धडच कनाता धार सूं, गौ रहवास मझार। नूरमली लख ल्हासतै मोर झली तरवार। —रा. रू.

ल्हासियौ—वि.—'ल्हास' मे जाकर काम करने वाला।

रू. भे.—लहासियौ, लासियौ, लाहियौ, ला'यौ

ल्हीक—देखो 'लीक' (रू. भे.)

ल्हेस—देखो 'लेस' (रू. भे.)

उ०—१ तरै जगदेव जी ल्हेस काढि चिलै आंगिण नै कह्यौ, नाहरी तूं रांड री जात छै, तूं हत्या मती चाढे, मारग सूं उठि नै डावी जीमणी टळि बैसि। —जगदेव पवार री बात

उ०—२ तिसै ल्हूंस री वीधी। तिकौ लांबी टीकै बाहि नै मूंळहारै नीकळी। —जगदेव पंवार री बात

ल्हूंसणौ—देखो 'लसोड़ौ' (रू. भे.)

ल्होड़—सं. स्त्री. [सं. लघु] १ छोटापन, लघुता।

२ दो पत्नियों में से छोटी।

ल्होड़ती—वि.—छोटी वाली।

उ०—पंचापीड़ा मेरी बडोड़ी से ल्होड़ती परणाधूं रे क लाडो मेरी ना चलै। —लो. गी.

ल्होड़ियौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—अद हरियाली ले घर आई मनै ल्हौड़ियै देवर देसी भैरी भूवा ए नींद घणेरी।

ल्होड़ौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—ल्होड़ौ-बड़ौ का वीय स्याळ मंगावौजी। सायबा, नवसराळां री आंणली छुणावौ। —लो. गी.

(स्त्री. ल्होड़ी)

ल्हौक्यौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—बिदली ती नणद गमाई, म्हारै ल्हौक्यौ देवर पाई हे नणदल बिदली ल्ये। —लो. गी.